सुखसागर का सूचीपत्र ।

चौथा स्कंध ॥

पांचवां स्कन्ध ॥

छठवां स्कन्ध ॥

नवां स्कन्ध ॥

दशवां स्कन्ध ॥

ग्यारहवां स्कन्ध ॥

बारहवां स्कन्ध ॥

इति ॥

मंगलाचरण।

उल्था श्रीमद्भागवत बीचबोली उर्दू के पहिले श्रीगणेशजीके चरणों को याद व ध्यान करता हूं जिनके ध्यान करने से सब कामना आदमी की पूरी होती हैं फिर आदि निराकार ज्योति परब्रह्म परमेश्वर को दण्डवत् करता हूं जिनकी मायासे सब जड़ व चैतन्यकी उत्पत्ति व पालन व नाश तीनोंलोक में होता है व सब जीवों में ब्रह्मासे लेकर चिउँटी तक उन्हीं के तेजका प्रकाश रहता है सबसे पहिले वही थे व महाप्रलय होने पर भी वही अविनाशी पुरुष स्थिर रहेंगे व श्रीकृष्णजी महाराज साँवली सूरत मोहनीमूरत पर न्यवछावर होकर उनके पैरोंपर शिर धरताहूं जिन्हों ने अपनी इच्छासे वास्ते भार उतारने पृथ्वी व मारने कंस व जरासन्ध आदिक अधर्मी राजा व राक्षस जो हरिभक्तों को दुःख देते थे व दर्शन देकर कृतार्थ करने अपने भक्त व सेवक वसुदेव व देवकी के यहां मथुरानगरी में सगुण अवतार लेकर अनेक लीला जगत् में इस इच्छासे की कि उस लीलाकी कथा व वार्त्ता संसारीलोग आपसमें कहि व सुनकर भवसागर-पार उतरजावें व विष्णु भगवान्के चरणों को दण्डवत् करता हूं जो सब जीवों की उत्पत्ति व पालन करते हैं व श्रीमहादेवजीके पांव पर मस्तक रखता हूं जो आयुर्बल बीतनेके उपरांत सब जीवों का नाश करते हैं व बाबा जवाहिरलाल सारस्वत ब्राह्मण रहनेवाले काशीपुरी अपने गुरुके चरणकमल को साष्टांग दण्डवत् करता हूं जिनकी कृपासे श्रीराधाकृष्णके चरणारविन्द में इस दासको प्रेम उत्पन्न हुआ व श्रीशारदा देवी व शेषनाग व नारदजीके चरणों पर शिर रखताहूँ जो आठोंपहर उस मुरलीमनोहर का गुणानुवाद गाते हैं व वसुदेव व देवकी व नन्द व यशोदाजीके चरणोंकी धूर अपने मस्तकपर चढ़ाताहूँ जिनके तप करनेसे श्रीपरब्रह्म नारायणने मर्त्यलोक में नरतन धारण करके अपने भक्तों को दर्शन दिया व श्रीवेद-व्यास व शुकदेवजीके शरण होताहूं जिन्होंने इस अमृतरूपी कथा श्री-मद्भागवत को जगत् में प्रकट किया व इन्द्रादि देवता व सनकादिक ऋषीश्वर व श्रीबलराम व राधिका व रोहिणीजीके चरणोंपर गिरकर ब्रज गोकुल व मथुरा देशपर न्यवछावर होता हूं जिस नगरीमें श्रीपरब्रह्म नारायणने अवतार लेकर बालचरित्र व रासलीला करके अपने भक्तोंको

सुख दिया व जितने ग्वाल बाल व गोपियाँ व व्रजवासी व गौ बछड़े व कीट व पतङ्ग व हिरणआदिक वनचर जलचर व नभचर जीव मथुरा व गोकुल के हैं सबको दण्डवत् करता हूँ व श्रीयमुनाजी के चरणों को जिसमें मुरली-मनोहर जलक्रीड़ा करतेथे व गोवर्द्धन पहाड़ जिसको नन्दलालजीने अपनी अँगुलीपर उठाया था व उस वनको जहाँपर मुरलीमनोहर गौ चराते थे व यमुना किनारेकी रेतको जहाँपर बाँकेविहारीने रासलीला किया था व उस कदमके वृक्षको जिसपर श्यामसुन्दर चढ़कर बैठते थे और सब सन्त व हरिभक्तों के चरणोंपर अपना शिर रखकर श्रीकृष्णदासानुदास मक्खन-लाल बेटा गंजनलालखत्री पंजाबी रहनेवाला काशीपुरी मुहल्ला ब्रह्मनाल नायब कोतवाल थाने कालभैरव यह इच्छा रखता है कि उल्था श्री-मद्भागवत बारहोंस्कन्धका जो पहिलेके महात्मा व हरिभक्तोंने भाषा दोहा चौपाई में बनाया है बीचबोली उर्दूके लिखूँ कि सब स्त्री व पुरुष लड़का व बूढ़ा छोटा व बड़ा व ज्ञानी व अज्ञानी उसके अर्थ को समझकर परमेश्वर के चरणों में प्रीति लगावें दोहा व चौपाई कि वह बोली व्रजकी है सब-लोग अर्थ कहे विना समझ नहीं सक्के जो उसे बूझकर परमेश्वर के चरणों में प्रेम लगावें और यह दास महाअज्ञानी संसारी मोह में फँसा हुआ इतनी बुद्धि कहाँ रखता है जो उस परब्रह्म परमेश्वरका चरित्र जिसके वर्णन करने में शेषनाग व गणेशजी व शारदादेवी थकित हैं व उनके अन्तको पहुँचने नहीं सक्के बारहोंस्कन्ध का उल्था करनेसकूं इसलिये आप सब देवता व ऋषीश्वर व महात्माओं के चरणोंपर जिनके नाम ऊपर लिखे हैं शिर अपना धरकर बड़ी अधीनताई से यह वरदान मांगताहूं कि आप-लोग दया करके ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि जिसमें यह पोथी श्रीमद्भा-गवत बीचबोली उर्दू जिसतरह इस दास की इच्छा है सम्पूर्ण होजावे यह पुराण सब वेदोंका सार वास्ते पारउतारने सब जीवोंके संसाररूपी समुद्रसे श्रीशुकदेवजी ने मर्त्यलोक में जहाज़ बनाया है विना पढ़ने व सुनने उसके जन्मलेना व जीना आदमीका कि यह चैतन्य चोला है संसार में अकार्थ समझना चाहिये कलियुगवासियों को संसारी माया मोह स्त्री व पुत्र द्रव्य व सुखमें फँसे रहनेसे किसी समय जैसा चाहिये वैसा साव-काश नहीं रहता जो मन अपना बीच भजन व स्मरण परमेश्वरके लगावें व कलियुग में आयुर्बल आदमी का बहुत कम होकर मरने का ठिकाना नहीं रहता जिसपरभी रात दिन कमाने खाने की चिन्तामें रह-

कर अपने मरने व परलोक का डर नहीं रखता इसलिये मनुष्यतन पाकर पहिले वह काम करना चाहिये जिसमें श्रीकृष्णजी महाराज त्रिभुवनपति जिन्होंने आदमीको अपनी महिमा से उत्पन्न किया है प्रसन्न होवें व अपना परलोक बने मनुष्यतन पानेका यही फल है कि आठपहर में किसी बेला परमेश्वर को अपने मनसे न भुलावे आदमीका चोला कलियुग में अनेक अपराध व पापोंसे भरा रहकर सिवाय बुराई के कोई भलाई इससे जल्दी नहीं होती इसीवास्ते परब्रह्म नारायण ने वेदव्यासजी का अवतार लेकर पोथी श्रीमद्भागवत को सब वेदों का सार निर्माण किया और श्रीशुकदेव जी महाराज ने यह अमृतरूपी कथा संसारी जीवोंके पाप छूटने व भवसागर पार उतरनेके वास्ते जगत् में प्रकट किया है जिसतरह अमृत पीने से जीव अमर होकर नहीं मरता उसीतरह जो कोई इस कथा को प्रीतिसे सुने वह आवागमन से छूटकर मुक्तिपदवीपर पहुँचता है इसलिये दास मक्खनलालने उल्था इस पोथी का सब छोटे बड़ों के समझने के वास्ते उर्दूबोलीमें संवत् १९०३ काशीपुरी में लिखकर सुखसागर नाम रक्खा व कहीं कहीं दोहा चौपाई सोरठा व कवित्त ब्रजकी बोली में जो बहुतप्यारी मालूम होती है जहां जैसा उचित देखा वहां वैसा लिखा और कुछ कथा ब्रजविलास की जिसमें रासक्रीड़ा बहुधा है सिवाय कथा श्रीमद्भागवत के इस पोथी में लिखीगई अब थोड़ासा समाचार अपना जिसतरह मुझे श्रीनारायणजीके चरणकमल में प्रेम उत्पन्न हुआ वर्णन करताहूं मैंने काशीपुरीमें जन्म लेकर यामिनी विद्या पढ़ी और बीसवर्ष की अवस्था में मुंशी वृन्दावन सरिश्तेदार अदालत फ़ौजदारी मिर्ज़ापुर के उपकारसे कि जो मेरे बाप के मामा थे मैं उसी जिलेमें बओहदे मुहर्रिरी थानेपर नौकर हुआ और तेईस वर्षकी अवस्थामें दारोग़ा होकर ऊपर थाने गोपीगंज परगने भदोई ज़मींदारी श्रीमहाराजाधिराज ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह बहादुर काशीनरेश जो चौदह गुणनिधान हैं बदल आया और बत्तीस वर्षकी अवस्थातक काम क्रोध मोह और लोभ संसारीजालमें ऐसा फँसारहा कि गुरुमुख भी नहीं हुआ सो गोपीगंज काशी और प्रयाग के मध्य रास्तेपर है इसलिये बहुतसे साधु और महात्माजन तीर्थयात्रा करने के वास्ते उसी मार्ग से आया जाया करते हैं सो मुझे उन सन्तों और महात्माओंके चरणों का दर्शन पाने व सत्संगसे यह अभिलाषा हुई कि गुरुमुख हूजिये जिससे अन्तकाल सुधरे तब ऐसा सोचकर काशीजी में

चलाआया और श्रीबाबा जवाहिरलालजी सारस्वतब्राह्मण छत्तीसगुण-निधान साक्षात् ईश्वर के अवतारका शिष्य हुआ सो उन गुरुनारायणने मुझे बारह अक्षरका मंत्र उपदेश दिया जब उस मंत्र जपने और गुरुके आशीर्वादसे मेरा हृदय शुद्ध हुआ और हरिचरणों में प्रेम उत्पन्न हुआ तब मैंने पोथी श्रीमद्भागवतका जो फ़ैज़ीने फ़ारसीमें उल्था की है पढ़ना आरम्भ किया जब उसके पढ़ने से मेरा प्रेम बढ़ा तब मुझे यह इच्छा हुई कि इसको उर्दूभाषा में जिसे सब कोई समझसकैं लिखूं सो मैंने पोथी श्रीमद्भागवतको महाराज फणीन्द्राचारी रहनेवाले गोपीगंज और पण्डित गोविन्दराम व मदनमोहनजी ओझा काशीवासी से जो छः शास्त्र और अठारहपुराणके जाननेवाले हैं मिलान करके उर्दू में उल्था किया सो श्यामसुन्दर व विश्वनाथजी और सब देवता काशीवासी की कृपा और दयासे उल्था सम्पूर्ण हुआ और इस दासको यह ग्रन्थ लिखने पढ़नेका अभ्यास रखनेसे जैसा सुख मिला उसका हाल क्या कहूं इन्द्रलोक का भी सुख सत्संगके सामने कुछ वस्तु नहीं है आदमी इस अमृतरूपी कथा को नित्य पढ़े व सुना करे तब उसको मालूम होगा कि इसमें क्या गुण और लाभ है जबतक आदमी इस कथाको नहीं पढ़ता व सुनता तबतक उसका सुख नहीं पाता ॥

दो० एक घड़ी आधी घड़ी और आधकी आध ।
तुलसी संगति साधुसे कोटि कटैं अपराध ॥

और यह दास कुछ संस्कृत व शास्त्र नहीं पढ़ाहै कदाचित् इस उल्था में कोई बात भूलगई हो तो आपलोग दया करके अपराध मेरा क्षमा करैं भूल व चूकमें महात्मालोग सदासे छोटों पर दया करते आये हैं ॥

स० श्रीभागवत कठोर बड़ी कछु बूझिपरै नहिं अर्थकी रीती ।
बूझे बिना नहिं प्रेम जगै बिन प्रेम जगे उपजै नहिं प्रीती ॥
प्रीति बिना नहिं काम सरै बिन काम सरे न सरै जगनीती ।
याही से बूझिबे हेत कहूं उर्दू में खुलासे से गोविंदगीती ॥

दो० व्यासदेव शुकदेवको विनय करों कर जोरि ।
हठवश उर्दू करत हौं क्षमो ढिठाई मोरि ॥
अपने चितके चैनको उर्दू बैन बनाय ।
भवसागर उतरन चहौं गोविंदको गुण गाय ॥

अथ भागवतमाहात्म्य ॥

पहिला अध्याय ।

भक्ति व ज्ञान व वैराग्य की कथा ॥

शौनकादिक अट्ठासीहजार ऋषीश्वरोंने बीचस्थान नैमिषारण्यतीर्थ के सूत पौराणिक शिष्य वेदव्यासजी से कहा कि तुम कोई कथा व लीला परमेश्वरकी ऐसी वर्णन करो जिसमें भक्ति व ज्ञान वैराग्य अधिक हो इस घोर कलियुगमें ज्ञान संसारी आदमियोंका राक्षसके समान होगयाहै इस लिये कोई सुखसे न रहकर सब किसीको ऐसा क्रोध व मोह व लोभ उत्पन्न हुआहै कि आठोंपहर उसी दुःखमें व्याकुल रहते हैं कि कोई ऐसा चरित्र भगवान्का वर्णन कीजिये कि कलियुगवासियोंको हरिचरणोंमें भक्ति व प्रीति उत्पन्न होकर सुख मिले यह बात सुनकर सूतजी बोले तुम लोगोंने बहुत अच्छी बात कलियुगवासियोंके उद्धार करनेवास्ते पूछी जो काल-रूपी सांप के मुँहमें पड़े हैं सो वह कथा श्रीमद्भागवत है जो शुकदेवजी महाराजने राजा परीक्षितसे कही थी जिस समय राजाको शृंगी ऋषि के शाप देनेके उपरान्त ऋषीश्वरों व मुनीश्वरोंकी सभामें शुकदेवजीने गंगा किनारे आनकर कथा श्रीमद्भागवत सुनाना आरम्भ किया उससमय देव-ताओं ने अमृतका कलश वहां लाकर शुकदेवजी से कहा महाराज यह अमृतका घड़ा आप लीजिये व हमलोगोंको कथारूपी अमृत पिला-इये यह बात सुनकर शुकदेवजी बोले तुम्हारा अमृत हमारे कामका नहीं है इस अमृत पीने से आयुर्दा आदमी की देवता के बराबर होती है और ब्रह्माके एक दिनमें चौदह इन्द्र बदलजाते हैं तुम्हारे अमृतसे उत्तम यह कथारूपी अमृत भगवान्का चरित्र है जिसके सप्ताह पढ़ने व सुनने से जीव अमर होकर कभी नहीं मरता व मुक्तिपदवी पर पहुँचकर आवा-गमनसे छूटि जाता है इसलिये राजा परीक्षित तुम्हारे अमृत पीनेकी इच्छा न रखकर भागवतरूपी अमृत पिया चाहता है इतनी कथा सुनाकर सूतजी ने कहा नारद मुनिको सनकादिक ने सप्ताहपारायण श्रीमद्भागवत का सुनाकर उस कथा सुनने की विधि भी बतलाई है यह बात सुनकर

शौनकादिक ऋषीश्वरोंने सूतजीसे पूंछा कि नारदमुनि दोघड़ीसे अधिक कहीं नहीं ठहरते थे वह सात दिन किसतरह एक जगह रहे जो उन्हों ने सप्ताहपारायण सुना व सनकादिक का दर्शन भी जल्दी किसी को नहीं मिलता वह नारदमुनिको कैसे मिले और यह सप्ताहयज्ञ कहांपर हुआथा इसका हाल बतलाइये यह वचन सुनकर सूतजी बोले एक समय सनकसनन्दन व सनातन व सनत्कुमार चारोंभाई घूमतेहुये बदरिकाश्रम में आये सो उन्होंने नारदजीको पहिले से वहां उदास बैठे देखकर पूंछा हे नारद मुनि आज तुम मलीनस्वरूप चिन्तामें किसवास्ते बैठे हो और कौन बातका शोच तुमको है नारदजीने चारा ऋषीश्वरोंको प्रणामकरके कहा हमें जिस बातकी चिन्ता है सो सुनिये हमने सब तीर्थ काशी व गोदावरी व गया आदि में जाकर देखा तो उन तीर्थोंपर कलियुगने सब जीवों को संसारी मायामें ऐसा फँसा रक्खा है कि सत्य व तप व आचार व दया व दान कलियुगमें सब जातारहा केवल अपने पेटपालनेकी चिन्तामें सब मनुष्य विकल रहकर झूठ बोलते हैं व अभागी व पाखंडी होकर माता व पिताकी सेवा नहीं करते स्त्री व साले व श्वशुरेकी आज्ञामें रहकर द्रव्यके लालचसे अपनी बेटी नीचकुल में बेचतेहैं जहां देखो वहांपर म्लेच्छ व शूद्रोंकी बढ़ती दिखलाई देकर ब्राह्मण व क्षत्री अपने कर्म व धर्मसे रहित देख पड़ते हैं मैं किसीको अपने धर्मपर स्थिर न देखकर जब चारों तरफ़से फिरताहुआ मथुरामें यमुना किनारे पहुँचा तब वहांपर यह आश्चर्यकी बात दिखलाईदी कि एक स्त्री युवती बैठी रोतीहै और दो मनुष्य बूढ़े उसकेपास अचेत पड़े हैं और वह स्त्री चारोंतरफ़ इस इच्छा से देख रही थी कि कोई आदमी मेरी सहायता करनेवाला आनकर प्राप्त हो जैसे उसने मुझे वहांपर देखा वैसे खड़ी होकर बोली महाराज आप एकक्षण ठहरकर मेरा दुःख सुनलीजिये मेरे बड़े भाग्यथे जो आपने मुझे दर्शन दिया जब मैंने उस स्त्रीसे पूंछा तू कौन है और यह दोनों पुरुष जो अचेत पड़े हैं इनका हाल बतलाओ तो उसने कहा कि मैं भक्तिहूं और यह दोनों मेरे बेटे ज्ञान व वैराग्यहैं व इन पांच सात स्त्रियोंको जो यहां बैठी देखते हो यह सब गंगा व यमुना व सरस्वतीआदि नदियां स्त्रियों का रूप धरकर मेरी टहल

करनेके वास्ते आईहैं मैंने द्रविड़देशमें जन्म लिया व करनाटक देशमें सयानी होकर थोड़े दिन दक्षिणमें रही व गुजरातमें जाकर बूढ़ीहुई थी अब वृन्दावन में आनेसे तरुण होगईहूं पर मेरे दोनों बेटे कलियुगवासियोंके घोर पापकरने से ऐसे बूढ़े व अचेत होकर पड़े हैं कि सामर्थ्य बोलनेकी नहीं रखते इनके दुःखसे मैं बहुत उदास रहती हूं यह बड़ी लज्जाकी बात है कि मेरे पुत्र बूढ़े होवें और मैं तरुण रहूं यह हाल देखकर संसारीलोग मेरी हँसी करते हैं इस का कारण बतलाइये जब स्त्रीरूप भक्तिने मुझसे यह हाल पूंछा तब मैंने अपनी बुद्धिसे विचारकर कहा अब घोर कलियुगके आवनेसे तेरी व ज्ञान और वैराग्यकी कुछ मर्याद नहीं रही केवल वृन्दावन आवनेसे तू तरुण होगई है पर तेरे बेटोंको कलियुगमें कोई नहीं जानता इसकारण वह ज्यों के त्यों बूढ़े व निर्बल बने हैं यह बात सुनकर उसने कहा जो कलियुग ऐसा दुष्ट है तो राजा परीक्षितने किस वास्ते दया करके प्राण उसका छोड़ा जिस पर दया करनेसे सब लोगोंका कर्म व धर्म जाता रहा उसे मार क्यों नहीं डाला तब मैंने उसको उत्तर दिया कि परीक्षितने कलियुगमें बड़ा गुण देखकर उसे नहीं मारा कि दूसरे युगोंमें हज़ारों वर्षतक यज्ञ व तप व दान व धर्म करने से भी परमेश्वर का दर्शन जल्दी नहीं मिलता था सो कलियुग में केवल भजन व कीर्त्तन करने से नारायणजी तुरन्त प्रसन्न होकर दर्शन अपना देते हैं पर कलियुगवासियों से सहज बात भी नहीं बनपड़ती इस लिये कलियुगने सब आदमियों का कर्म धर्म खोदिया है तीर्थमें ब्राह्मण प्रतिग्रह दान लेकर प्रायश्चित्त उसका नहीं करते व सब कोई काम व क्रोध व लोभ व अहंकार में भरे रहते हैं कलियुग का यही धर्म है इसमें केवल परमेश्वरका भजन व स्मरण उत्तम समझना चाहिये यह बात सुनकर भक्ति ने कहा तुम धन्य हो बड़े भाग्यसे तुम्हारे दर्शन मुझे प्राप्त हुये आप सब किसी का दुःख छुड़ाने के योग्य हैं सो कोई उपाय करके ज्ञान व वैराग्य को तरुण कर दीजिये जिसमें मेरा दुःख छूट जावे मैं तुमको बारंबार दण्डवत् करती हूं ॥

दूसरा अध्याय ॥

नारदजी को भक्तिका बोध करना और भक्तिके दुःख छुड़ाने वास्ते किसी साधुको ढूंढ़ना ॥

नारदजीने स्त्रीरूप भक्तिसे कहा अब तू अपनी चिन्ता छोड़कर श्रीकृष्णजीके चरणों में ध्यान लगा उनका स्मरण व ध्यान करनेसे सब दुःख तेरा छूटजायगा जिससमय राजा दुर्योधनकी सभामें दुश्शासनने द्रौपदी का चीर खींचकर नंगी करना चाहा था उससमय द्रौपदीके ध्यान करने से नारायणजीने चीर बढ़ाकर उसकी लज्जा रक्खी और जब गजेन्द्रका पैर ग्राहने पकड़ा और उसका प्राण बचानेवाला कोई नहीं रहा तब हाथीके स्मरण करतेही विष्णु भगवान्ने पहुँचकर गजेन्द्रका प्राण ग्राहसे बचाया हे भक्ति तू वैकुंठनाथको प्राणसे भी अधिक प्यारी है वह तेरे वास्ते नीच जातिमें भी जहां तेरा वास रहता है वहां आनकर उसका उद्धार करदेते हैं सतयुग और त्रेता और द्वापरमें सज्जनलोग बहुतसा यज्ञ व तप व दान व धर्म करने से मुक्ति पाते थे कलियुग में केवल तेरी कृपासे सब जीवोंका उद्धार होजाता है ज्ञान व वैराग्यको कोई नहीं पूंछता इसलिये तेरा दुःख छुड़ानेवास्ते बहुत अच्छा उपाय करके जगत्में तेरी महिमा प्रकट करेदेता हूं जिनके हृदयमें तेरा वास रहेगा वह लोग पापी होनेपर भी यमराजका कुछ डर न रखकर तेरी दयासे वैकुंठधामको चलेजावेंगे परमेश्वरका दर्शन यज्ञ और तप व व्रत व दान करनेसे जल्दी प्राप्त नहीं होता वह भक्ति करने से सहजमें मिलता है जिन्होंने हजारों वर्ष नारायणजीका तप किया था उन्होंने भक्ति पाई है परमेश्वर बहुत प्रसन्न होनेसे अपनी भक्ति देते हैं इस लिये वैकुंठनाथने सब बातोंपर भक्तिको श्रेष्ठ रक्खा है यह बात सुनकर भक्ति ने कहा हे नारदजी तुम धन्य हो जिसतरह आपने मुझे धैर्य दिया उसी तरह मेरे बेटोंको जो अचेत पड़े हैं जगावो जब मेरे उठाने व पुकारने से ज्ञान व वैराग्य ने आंख भी नहीं खोली तब मैंने वेदका वचन व गीता पाठ पढ़ना आरम्भ किया उसके सुनने से उन्होंने अपनी आंख खोलकर उठनेके वास्ते चाहा पर निर्बलतासे फिर अचेत होगये जब यह हाल देख कर मैं बहुत चिन्ता करनेलगा कि ज्ञान व वैराग्य किसकारण नहीं उठते

तब यह आकाशवाणी हुई कि हे नारद क्यों इतना शोच करतेहो विना सत्संग नहीं जागैंगे इनकी संगति करनेके वास्ते साधु खोजो यह वचन सुनतेही वहां से साधु ढूंढ़ता हुआ यहांतक पहुँचा पर कलियुग होने से कोई साधु इच्छापूर्वक नहीं मिला उसी चिन्ता में बैठाथा कि आपका दर्शन प्राप्त हुआ सो आपलोग ब्रह्मा के पुत्र बड़े योगी व ज्ञानी सदा बाल-अवस्था रहकर केवल कथारूपी धन अपने पास रखते हो और तुम्हारी तपस्याका फल कोई वर्णन नहीं करसक्ता किसवास्ते कि आपने जय और विजय वैकुण्ठके द्वारपालकोंको पृथ्वीपर गिरादिया ऐसी सामर्थ्य सिवाय तुम्हारे दूसरेमें नहीं है जिसतरह आपने दया करके अपना दर्शन मुझे दिया उसी तरह भक्ति व ज्ञान व वैराग्य का दुःख छुड़ाकर उनको सुख दीजिये जिसमें चारों वर्णके आदमी तुम्हारा यश गावें व कलियुगवासियों का मन शुद्ध व पवित्र होजावे यह बात सुनकर सनत्कुमार बोले हे नारदजी तुम उदासी छोड़कर कुछ चिन्ता मत करो जितने श्यामसुन्दरके दास हैं उन सबोंमें तुम श्रेष्ठ हो आपको भक्तिका दुःख छुड़ावनेके वास्ते उपाय करना उचितहै पिछले समयके महात्मा व ऋषीश्वरोंने ज्ञान व धर्मके अनेक संसारीमार्ग आदमियोंको वैकुण्ठ पहुँचानेके वास्ते बनाये हैं पर उन कठिन मार्गों पर किसीसे चला नहीं जाता और वह राह बतानेवाला गुरु भी जल्दी नहीं मिलता इसलिये जो कोई श्रीमद्भागवत सच्चे मनसे सुने उसको वह राह मिलसक्ती है जो कथा शुकदेवजीने राजा परीक्षितको सुनाई थी वही कथा सुननेसे भक्ति व ज्ञान व वैराग्यको भी सामर्थ्य होकर दुःख उनका छूटजायगा परमेश्वरके चरणों में प्रेम बढ़ने के वास्ते इससे उत्तम कोई दूसरी राह नहीं है यह बात सुनकर नारदजी बोले महाराज मैंने वेद व गीताका पाठ पढ़कर ज्ञान व वैराग्यको बहुत जगाया पर उन्हें उठनेकी सामर्थ्य नहीं हुई श्रीमद्भागवत कहनेसे किसतरह जागैंगे सनत्कुमारजी ने कहा हे नारद सब वेदोंका सार श्रीमद्भागवत समझना चाहिये उसके एक एक श्लोक व पदमें वेदों का अर्थ इसतरह भराहै जिसतरह दूधमें घी रहकर जबतक उसको उपायके साथ दूधसे नहीं निकालते तबतक घी का

स्वाद दूधमें नहीं मिलता उसीतरह सब वेद व पुराणको व्यासजीने मथन करके उसका तत्त्व श्रीमद्भागवतमें लिखाहै और नारदजी तुम जानबूझ कर क्यों भूलते हो चारश्लोक मूल श्रीमद्भागवतके नारायणजीने ब्रह्माको उपदेश किये और तुमने उनसे सुनकर वेदव्याससे कहा वेदव्यासजी ने उसे विस्तारपूर्वक लिखकर भागवतपुराण बनाया वही कथा सब किसी का दुःख छुड़ाने व संसाररूपी समुद्रसे पार उतारनेवाली है यह वचन सुनतेही नारदजी हाथ जोड़कर बोले आपने बड़ी दयाकरके यह हाल कहा व हमारे भाग्यथे जो आपका दर्शन मिला विना भाग्यके सत्संग नहीं मिलता अब यह बतलाइये इस भागवतरूपी ज्ञानयज्ञको किसतरह से कहां पर करना चाहिये और कितने दिनमें यह यज्ञ सम्पूर्ण होताहै॥

तीसरा अध्याय।

सनत्कुमारजी का श्रीमद्भागवतकी सप्ताह विधि व उसके सुनने से जो फल मिलता, वर्णन करना॥

सनत्कुमारजी बोले हे नारदमुनि तुमने बहुत अच्छी बात पूंछी हरद्वारमें गंगाकिनारे यह यज्ञ करनेके वास्ते अच्छा स्थानहै वहांपर वृक्षोंकी छाया घनी होकर बहुत से ऋषीश्वर व मुनीश्वर ज्ञानयज्ञके चाहनेवाले रहते हैं उस जगह तुम्हारे कथारूपी यज्ञ करनेसे ज्ञान व वैराग्य भी तरुण होकर जाग उठेंगे व भक्ति का सब दुःख छूटजायगा यह बात सुनकर नारदजी बोले महाराज विना तुम्हारे चले वह यज्ञ नहीं होसक्ता इसलिये आप भी हमारे साथ वहां चलिये यह वचन सुनतेही सनकादिक चारोंभाई व नारदजी बदरिकाश्रम से चलकर हरद्वारमें गंगाकिनारे आनपहुँचे उन्होंने ऋषीश्वरों व मुनीश्वरों से जो वहांपर थे कहा हम इस स्थानपर भागवतरूपी यज्ञ करते हैं जिसको कथारूपी अमृत पीना हो वह आनकर सुने यह समाचार सुनतेही भृगु व वशिष्ठ व च्यवन व मेधातिथि व गौतम व परशुराम व विश्वामित्र व मार्कंडेय व वेदव्यास व पराशर आदि जितने ऋषीश्वर व मुनीश्वर उस तीर्थपर रहतेथे वहां सब आये और सिवाय ऋषीश्वरोंके वेद जो मूर्तिमान् हैं व गंगाजी इत्यादि नदियां व गन्धर्व व किन्नर व यक्ष ये

नागआदिक चौदहोंभुवनके लोग कथारूपी अमृत पीनेवास्ते उस ज्ञान-यज्ञमें आकर इकट्ठे हुये जब नारदजीने सब किसीको बड़े आदरभाव से बैठाला तब वैष्णव व विरक्तों व महापुरुषोंने जयशब्द व शंखध्वनि करना आरम्भ किया देवतालोग अपने अपने विमानोंपर चढ़कर वहां कथा सुनने के वास्ते आपहुँचे व ज्ञानरूपी यज्ञपर फूल बर्षने लगे व सब श्रोता इस विचार में चित्त लगाकर बैठे कि देखें सनकादिक व नारदजी कौन लीला व कथा परमेश्वरकी कहते हैं उससमय सनत्कुमारने नारदजी से कहा हम तुमको वह कथा सुनाते हैं जो शुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहीथी वह पुराण अठारह हज़ार श्लोक होकर उनके पढ़ने और सुननेसे मुक्ति हाथमें खड़ी रहती है श्रीमद्भागवत सुननेके बराबर दूसरे पुराणके सुनने व हज़ारों अश्वमेध व वाजपेययज्ञ करनेसे फल नहीं मिलता काशी व गया व प्रयाग व कुरुक्षेत्र व पुष्करादि किसी तीर्थका स्नान कथा सुननेके बराबर फल नहीं रखता जबतक संसारीलोग यह कथा नहीं सुनते तबतक उनके अनेकजन्मका पाप गर्जताहै अमृतरूपी भागवत सुनतेही उनके पाप इस तरह छूटकर भागजाते हैं जिसतरह सूर्य निकलेसे कुहिरा नहीं रहता जो मनुष्य प्रतिदिन एक या आधाश्लोक भागवतका पढ़ा करे उसकी भी मुक्ति होजाती है व जो लोग नित्य भागवत पढ़कर औरोंको सुनाते हैं उनके करोड़ों जन्मका पाप जलकर भस्म होजाताहै जो कोई पोथी श्रीमद्भागवत सोनेके सिंहासनपर धरकर वैष्णव व साधूको दान देताहै उसे परमेश्वर अपनी ज्योतिमें मिलालेते हैं जिसने मनुष्यका तन पाकर भागवतकथा नहीं सुना उसे धिक्कार होकर चांडालके बराबर समझना चाहिये ऐसा पूत जननेसे उसकी माता बांझ रहती तो अच्छाथा कलियुगमें यज्ञ व तप व दान व धर्म आदमीसे कुछ न होकर उसका मन एकतरफ़ नहीं लगता इसवास्ते परब्रह्म नारायणने वेदव्यासजीका अवतार लेकर यह कथा बनाई है जो कोई सात दिनतक चित्त लगाकर इस पुराणका सप्ताह सुनै उसको यज्ञ व तप व व्रत व दान सबका फल प्राप्त होकर मुक्ति पदार्थ मिलताहै जब उद्धवने एकादशस्कन्धमें सब ज्ञान श्रीकृष्णजी से सुनकर कलियुगका

लक्षणजाना तब श्यामसुन्दरके चरणोंका ध्यानधरकर मुरलीमनोहरसे पूंछा हे दीनानाथ आप तो वैकुंठधाम को जाते हैं संसारीलोगोंका उद्धार किस तरह होगा तब त्रिभुवनपति बोले हे उद्धव तुम बदरिकाश्रममें जाकर तप करो तुम्हारी मुक्ति होजावैगी मेरे जाने उपरान्त एक भागवतरूपी मूर्ति हमारी जगत्में रहैगी जो मनुष्य सप्ताहभागवत सच्चे मनसे सुनैगा उसको हमारा दर्शन हृदयमें होजावेगा संसारीलोगोंका दुःख छुड़ानेवाला यह पारायण समझना चाहिये सिवाय इसके और कोई दूसरी वस्तु आदमीको मायारूपी जालसे छूटनेवास्ते उत्तम नहीं है इतनी कथा सुनाकर सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जब सनत्कुमारने सप्ताह पारायण श्रीमद्भागवतका सुनाना आरम्भ किया व सब कोई सुननेलगे तब उस अमृतरूपी कथाके प्रतापसे वह दोनों बूढ़े ज्ञान व वैराग्य जो अचेत पड़ेथे तरुण होकर उठबैठे व भक्तिका दुःख छूटगया व उनका दर्शन सब सभावाले पाकर गोविन्द व हरे व मुरारे कहनेलगे व भक्ति व ज्ञान व वैराग्यका दर्शन मिलने से उनको भक्ति उत्पन्न होकर कलियुगका दुःख जातारहा व सब किसीका मन सप्ताह कथा सुनकर शुद्ध व एकचित्त होगया ॥

चौथा अध्याय ।

नारायणजीका सब आदमी सप्ताह सुननेवालोंको दर्शन देना व आत्मदेव ब्राह्मणका इतिहास वर्णन करना कि जिसकी स्त्री बड़ी कर्कशा थी ॥

सूतजीने शौनकादिकसे कहा जब सब वैष्णव व ऋषीश्वर सप्ताह सुनकर एकचित्त होगये तब श्रीवृन्दावनविहारी सांवलीसूरति मोहनीमूरतिने पीताम्बर ओढ़े व करधनी व मुकुट व कुंडल जड़ाऊ पहिने केसर व चन्दनका खौर माथेपर लगाये उद्धव आदिक वैकुंठवासी भक्तोंको साथलिये उस ज्ञानयज्ञमें आनकर सबको दर्शन दिया अमृतरूपी कथा सुनकर पहिलेसे साधु व वैष्णवके हृदयमें श्याममूर्ति दिखलाई देनेलगीथी सो प्रकटमें भी सब किसी ने उसका दर्शनकरके अपनाअपना जन्म सुफलजाना व वैकुंठनाथको देखते ही जितने वैष्णव व ऋषीश्वर उस सभामें बैठेथे जय जय बोलकर उठखड़े हुये व मलयागिरि चन्दन व फूलोंकी वर्षा उनपर करनेलगे व धूप दीप

नैवेद्यसे पूजाकरने उपरांत शंखादिक बजाकर साष्टांगदंडवत् किया यह सब आनन्द देखकर नारदमुनि बोले हे सनत्कुमारजी आपने जो सप्ताहयज्ञ किया इसमें जिसने जिसने यह कथा सुनी वह सब पवित्र होकर मुक्तिपदवी पर पहुँचे अब और कौन कौन लोग यह अमृतरूपी कथा सुनकर भवसागर पार उतरैंगे उनका हाल वर्णन कीजिये सनत्कुमारने कहा जो कलियुग के मनुष्य बड़े पापी व दुष्ट व लालची व झूंठे व चुगुल व कामी उत्पन्न होकर अपने क्रोधसे आप जले मरते हैं वह लोगभी इस सप्ताहयज्ञ सुनने से पवित्र होकर मुक्तिपदवीको पहुँचैंगे और जो कोई कलियुगमें माता व पिताकी सेवा व अपने कर्म व धर्म से रहित व लोभमें डूबा रहकर झूंठा व चोर व ठग होगा वहभी यह कथा सुननेसे भवसागरपार उतर जावेगा अब हम एक कथा पुरानी तुमसे कहते हैं सुनो दक्षिणदिशामें तुंगभद्रा नाम एक नदी है उसके किनारे एक नगरमें आत्मदेवनाम ब्राह्मण बड़ा पंडित व तेजवान् व धर्मात्मा रहताथा उस ब्राह्मणकी स्त्री धुन्धुलीनाम बड़ी कर्कशा दिनराति संसारीमाया में फँसी रहकर अपने पतिको सब तरहका दुःख देतीथी पर वह ब्राह्मण ज्ञानी परमेश्वरकी इच्छा इसी तरह समझकर उसीके साथ अपने दिन काटता था जब उस ब्राह्मणके पुत्र न होकर बुढ़ाई आई तब उसने सन्तान होनेके वास्ते व्रत और नेम रखना आरम्भ करके बहुत गाय व सोना ब्राह्मणों को दान दिया तिसपरभी उसकी इच्छा नहीं पूर्ण हुई तब वह ब्राह्मण अपने मनमें बहुत उदास होकर घर से निकला और अपना शरीर त्याग करनेकी इच्छा रखकर वनमें चला गया जब दोपहरको प्याससे बहुत व्याकुल होकर तालावके किनारे स्नान करके पानी पिया व उसी जगह बैठकर सन्तान होनेवास्ते चिन्ता करने लगा तब परमेश्वरकी इच्छासे एक संन्यासी महापुरुष उस तालावपर आनपहुँचा जब ब्राह्मणने उसका तेज देखकर बड़े आदर भावसे अपने पास बैठाला तब उस महापुरुषने पूंछा कहो ब्राह्मणदेवता तुम इस वनमें किसवास्ते उदास बैठे हो अपने शोचका हाल हमैं बताओ यह वचन सुनते ही ब्राह्मण आंशू भरने उपरांत हाथ जोड़कर बोला महाराज मैंने पिछले

जन्म बड़े पाप किये थे इसलिये मेरे सन्तान नहीं हुई बेटा न होनेसे पितर लोग नरकमें जाते हैं यही दुःख समझकर अपना प्राण देने यहां आयाहूं जगत्में जिसके पुत्र न हो उसका जन्म लेना व जीना अकार्थ है व उसके धन व कुलपर धिक्कार समझना चाहिये व मैं ऐसा अभागीहूं कि मेरी पालीहुई गौ भी बांझहै व मेरा लगाया हुआ वृक्षभी नहीं फलता जो फल बाजारसे मोल लाताहूं वह भी सूखजाताहै जब वह ब्राह्मण यह सब बात उस महापुरुषसे कहकर बड़ा विलाप करने लगा तब वह संन्यासी ब्राह्मण को बहुत धैर्य देकर बोला मैं तेरे पुत्र होनेके वास्ते विचार करताहूं तू उदास मत हो फिर उस महापुरुषने ब्राह्मणकी कर्मरेखा देखकर कहा हे ब्राह्मण तेरे भाग्यमें सन्तान नहीं लिखी है इसलिये सात जन्मतक तेरे पुत्र उत्पन्न न होगा किसवास्ते इतना रोकर अपना प्राण देताहै संसारी माया सब झूंठी होकर जगत्में सिवाय दुःख के सुख नहीं मिलता व कलियुगमें पुत्रसे सबको सुख प्राप्त न होकर बेटा माता पिताकी सेवा नहीं करता अपनी स्त्री व साले व श्वशुरकी आज्ञामें रहकर माता पिताको दुःख देताहै स्त्री व पुत्र व भाईआदि सब अपने मतलबके साथी होते हैं तिसपर भी मायाका ऐसा हालहै कि अन्तसमय संसारीलोग अपना मन स्त्री व पुत्रोंमें लगाये रहकर परमेश्वरका स्मरण नहीं करते इसलिये उनको नरक में जाकर दुःख भोगना पड़ताहै हे ब्राह्मण तू पुत्रकी इच्छा छोड़कर हरि चरणोंका ध्यानकर इसमें तुझे बड़ा सुख मिलेगा यह बात सुनकर वह ब्राह्मण बोला महाराज मुझे पुत्र उत्पन्न होनेके सिवाय कुछ ध्यान व ज्ञान नहीं सूझता आप कृपा करके एक बेटा मुझको दीजिये नहीं तो तुम्हारे ऊपर प्राण देताहूं जब संन्यासीने ब्राह्मणकी यह दशा देखी तब फिर उसे समझाकर कहा हे ब्राह्मण सन्तानवास्ते राजा चित्रकेतुने दशहजार रानी से विवाह किया तिसपरभी बेटेका सुख नहीं पाया इसीतरहपर बहुतसे राजा पुत्रकी चाहनामें मर गये व मनोरथ उनका सिद्ध नहीं हुआ जो लोग भाग्यहीन हैं उनका उद्यमभी निष्फल होताहै इसलिये सन्तानकी चिन्ता छोड़दे यह बात सुनकर ब्राह्मणने कहा आप जितनी बात ज्ञानकी

कहते हैं मेरे चित्तमें एक नहीं धसती दया करके कोई ऐसा उपाय कीजिये जिसमें मेरे पुत्र हो इसतरहकी हठ देखके संन्यासीने एक फल उस ब्राह्मण को देकर कहा तू यह फल ले जाकर अपनी स्त्री को खिलादे परमेश्वरकी कृपा से तेरे पुत्र होगा जब वह महापुरुष फल देकर किसीतरफ चलागया तब आत्मदेव घर पहुँचने उपरांत वह फल अपनी स्त्रीको देकर बोला इस के खानेसे तेरे लड़का होगा यह बात कहकर ब्राह्मण देवता कहीं बाहर चलेगये इतने में एक सखी उसके पास आनपहुँची तब ब्राह्मणी ने उमसे कहा यह फल मेरे स्वामी ने पुत्र होनेके वास्ते कहीं से लाकर मुझे दियाहै पर मैं गर्भ रहने के डरसे न खाऊंगी गर्भवती स्त्रीका जी मतलाकर उससे भोजन नहीं खायाजाता गर्भ रहने से मुझे चलने फिरनेमें दुःख होकर घर के भीतर बैठना पड़ैगा व सखी सहेलियों की भेंट छूटकर गाने बजाने में विघ्न होगा व जनते समय बहुत दुःख होकर कदाचित् लड़का पेटमें टेढ़ा होजावे तो मेरा प्राण जातारहेगा व मेरा शरीर कोमलहै दुःख कैसे सहूंगी यद्यपि कुशल से लड़का भी हुआ तो उसके पालने में बड़ा कष्ट होगा बालक कपड़े व बिछौने को मल व मूत्रसे भ्रष्ट करदेता है उस दुर्गन्धि में मुझसे किसतरह रहाजायगा इन सब दुःखों के उठाने से बांझ व विधवा अच्छी होती हैं जिनको गर्भका दुःख उठावना नहीं पड़ता ऐसी ऐसी अनेक बातें उस ब्राह्मणीने अपनी सखीसे कहकर वह फल नहीं खाया उठाकर रखछोड़ा व अपने पति से झूठ कहदिया कि मैंने फल खालिया थोड़े दिन उपरान्त उस ब्राह्मणीकी बहिनने वहां आकर पूंछा हे बहिन तुम इन दिनों में बहुत दुबली व उदास मालूम होतीहो इसका क्या कारण है तब उसने अपनी बहिनसे कहा कि मेरे स्वामीने एक फल पुत्र होनेके वास्ते कहींसे लाकर मुझे दियाथा सो मैंने गर्भ रहनेके दुःखसे वह फल नहीं खाया व अपने पतिसे फल खानेका हाल झूंठ कहदिया व गर्भ मेरे नहीं है इस बातका उत्तर क्या देऊंगी इस कारण मैं उदास रहतीहूँ यह बात सुनकर उसकी बहिन बोली तू कुछ चिन्ता मत कर मेरे एक महीने का गर्भ है सो तू अपने पतिसे कहदे कि मेरे गर्भ रहा जब मेरे लड़का होगा तब मैं

वह बालक तुझे देकर उसको तेरा वेश प्रकट करके दूध पिलाया करूंगी इस बातकी खबर तेरे पतिको न होगी और जो फल तेरा स्वामी लायाहै वह तू अपनी गायको खिलादे यह बात सुनतेही उस ब्राह्मणीने प्रसन्न होकर वह फल गायको खिलादिया व अपनी बहिनको आत्मदेव से छिपाकर घरमें रक्खा जब दशवें महीने उसके बेटाहुआ तब उस ब्राह्मणीने अपने पति से कहला भेजा कि मेरे लड़का हुआ है यह हाल सुनतेही आत्मदेव ने मंगलाचार मनाकर ब्राह्मण व याचकों को बहुतसा दान व दक्षिणा दिया व ब्राह्मणीने अपने पतिसे कहा कि मेरे दूध नहीं उतरता व मेरी बहिन के दूध होताहै उसका बालक छः महीनेका होके जाता रहा तुम कहो तो उसे दूध पिलानेवास्ते बुलाकर यहां रक्खूं ब्राह्मणने कहा बहुत अच्छा बालक को किसीतरह पालना चाहिये जब इतनी बात ब्राह्मणने कही तब ब्राह्मणी की बहिन प्रकट होकर लड़केको दूध पिलानेलगी व ब्राह्मणने उस बालक का नाम धुन्धकारी रक्खा जब दो महीनेका धुन्धकारी हुआ तब गौकेभी उस फलके प्रतापसे एक लड़का बहुत सुन्दर मनुष्यरूपी जन्मा पर उस बालक के दोनों कान गौके समानथे उसको देखकर ब्राह्मण ने बड़ी प्रसन्नतासे गोकर्ण नाम रक्खा व दोनों लड़कों को अपना समझ अच्छीतरह पालन करनेलगा जब वह दोनों बालक सयाने हुये तब गोकर्ण पढ़लिख कर बड़ा पंडित व बुद्धिमान् व धर्मात्मा हुआ व धुन्धकारी महामूर्ख अधर्मी व चोर व जुआरी होकर कुकर्म करनेलगा जब वेश्यागमन करने में सब धन घरका खर्च करडाला तब धुन्धकारी अपने माता पिताको मारपीट के सब कपड़ा व बरतन घरसे लेगया व उसको भी बेचकर सब द्रव्य वेश्या को देडाला जब यह दशा अपने बेटेकी ब्राह्मण देवताने देखी तब रोकर कहनेलगे कि ऐसे अधर्मी पुत्र होनेसे जो मुझे दुःख होताहै मैं बिना सन्तान के बहुत अच्छाथा इस जीनेसे मेरा मरना अच्छाहै जिसमें महाकष्ट व दुःखसे छूटजाऊं यह हाल आत्मदेवका देखकर गोकर्णने कहा हे पिता संसारमें सिवाय दुःखके सुख किसीको नहीं होता तुम किसवास्ते इतनी चिन्ता करतेहो जगत् में राजा व प्रजा धनी व कंगाल जितने आदमी हैं

सबको एक दुःख लगा रहताहै जिसने संसारी माया छोड़कर परमेश्वरमें ध्यान लगाया उसको सुख होताहै इसलिये तुम अज्ञान तजकर स्त्री व पुत्र का मोह मन से तोड़ डालो व वनमें जाकर परमेश्वर का भजन करो तब तुमको सुख मिलैगा संसारी माया मोहमें फँसे रहनसे आदमी नरक भोग करताहै जब यह बात गोकर्णकी सुनकर ब्राह्मणदेवताको कुछ ज्ञान हुआ तब उसने गोकर्ण से कहा तुमने बहुत अच्छा सम्मत हमको बतलाया पर विना ज्ञान सीखे वनमें जाकर क्या करूं जो मेरे उद्धारका उपाय हो सोभी बतलादे यह वचन सुनकर गोकर्ण बोला हे पिता यह मन तुम्हारा संसार की माया मोहके बीचमें लगाहै इस मनको तुम उनकी तरफ़से खींचकर हरिचरणों में लगाओ वनमें अकेले बैठकर परमेश्वरका ध्यान करो व संसारीमाया व तृष्णाको छोड़देव यह बात साधन करने से बहुत सुख पाकर मुक्तपदवीपर पहुँचोगे यह ज्ञान सुनतेही आत्मदेवने प्रसन्न होकर संसारी माया छोड़ दी व वनमें जाकर परमेश्वरका स्मरण व ध्यान करनेलगा कुछ दिन बीते तन अपना त्यागकर मुक्तपदवीपर पहुँचा ॥

पांचवां अध्याय ॥

वेश्याके फांसीलगाने से धुन्धकारीका मरना व उसका समाइ सुनकर मुक्त होना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा कि जब वह ब्राह्मण वनमें चलागया तब धुन्धकारीने अपनी माताको मारपीट करके कहा द्रव्य घरमें कहां गड़ा है हमको बतलादे नहीं तो तुझको मारडालूंगा उसने मारनेके डरसे कहा कल बतलादूंगी उस समय यह बात कहकर ब्राह्मणीने बेटाके हाथसे अपना प्राण बचाया पर उसके घरमें कुछ द्रव्य नहीं था जो बेटेको बतलाती इसलिये मारपीटके डरसे वह रातको कुयेंमें गिरकर मरगई जब गोकर्णने धुन्धकारी का यह हाल देखा तब अपना रहना वहां उचित न जानकर वह तीर्थयात्रा करने बाहर चलागया व गोकर्ण ऐसा महात्मा व ज्ञानी हुआ कि दुःख व सुख शत्रु व मित्रको एकसा समझकर दिन रात्रि सिवाय भजन व स्मरण परमेश्वर के कुछ दूसरा उद्यम नहीं रखता था व गोकर्णके जानेके उपरान्त धुन्धकारी अकेला घरमें रहकर चोरी व ठगी करके

वेश्या को धन देनेलगा एक दिन वह कहीं से बहुतसा रुपया व गहना चुरालाया सो अपनी वेश्याको देकर उसके साथ सोया जब रातको धुन्धकारी नींदमें अचेत हुआ तब उस वेश्याके घरवालोंने आपस में सम्मत किया कि यह सदा चोरी व ठगीकरके दूसरेका धन लाकर हमको देताहै कहीं पकड़ा जायगा तो उसके साथ हमलोग भी दण्ड पावेंगे और ऐसा उद्यम रखनेसे यह अवश्य मारा जायगा इसलिये उत्तम है कि हमलोग इसको मारडालें उन्होंने आपस में यह विचारकरके धुन्धकारीको फांसी लगाकर अपने घरमें लटकादिया जब फांसी लगानेसे उसका प्राण नहीं निकला तब जलती जलती लकड़ियोंसे उसका मुँह जलाकर मारडाला व घरके भीतर गड़हा खोदकर उसे गाड़दिया जब उस वेश्याके अड़ोसीपड़ोसियोंने पूंछा कि धुन्धकारी जो तुम्हारे घरपर आताथा इन दिनों दिखलाई नहीं देता क्या हुआ तब उस वेश्याने कहा कहीं रोजगार करनेवास्ते गया है यह बात सच समझना चाहिये कि वेश्या किसीकी मित्र नहीं होती पहिले द्रव्य लेकर पीछे प्राण मारती है ऊपरसे उनकी जिह्वा अमृतरूपी रहकर पेटमें विष भरा रहता है व द्रव्य लेनेसे काम रखकर किसीकी प्रीति नहीं करती जब धुन्धकारी इसतरह मरकर प्रेत हुआ व गरमी बरसात व भूख प्यास व जाड़ा उसको बहुत सतानेलगा व गोकर्ण ने कहीं तीर्थमें किसी से सुना कि धुन्धकारी भाई तुम्हारा मरगया व उसकी क्रिया कुछ नहीं हुई तब गोकर्णने गयाजी में जाकर श्राद्ध उसका करादिया व जिस जिस तीर्थपर गोकर्णका जाना होता वहां वहां श्राद्ध धुन्धकारीका करदेते थे जब तीर्थ करनेउपरान्त गोकर्ण अपने स्थानपर आनकर रात्रिको सोये तब उन्होंने धुन्धकारी को प्रेतयोनिमें इसतरह देखा कि कभी वह बैल कभी हाथी कभी बकरा कभी भैंसा कभी मनुष्य कभी बड़ासा रूप कभी छोटारूप बनजाता था जब गोकर्ण ने उसको प्रेत जानकर मनमें धैर्य धरनेउपरान्त उससे पूंछा तू भूत या प्रेत या राक्षस कौन होकर कहांसे आयाहै अपना हाल हमसे बतला तब गोकर्ण की बात सुनकर धुन्धकारी बहुत रोया पर उसे बोलने की सामर्थ्य नहीं थी जो अपना हाल कहे जब गोकर्णने देखा

कि यह सिवाय रोनेके कुछ नहीं बोलता तब दयाकी राह मन्त्र पढ़कर जलका छीटा उसपर मारा तब वह बोला मैं तेरा भाई धुन्धकारीहूं अपने पापसे ब्रह्मतेज खोकर मैंने ऐसे भारी अधर्म किये हैं कि जिन पापों की गिन्ती नहीं होसक्ती मुझको वेश्याने फांसी लगाकर मारडालाथा इसलिये मुझे दानापानी कुछ नहीं मिलता हवा खाकर जीताहूं अब तुम आयेहो जिसतरह बनपड़े मेरा उद्धार करो यह बात सुनकर गोकर्णने कहा मैंने तेरे उद्धारके वास्ते गयाजीमें व सब तीर्थोंपर श्राद्ध किया तिसपर तू प्रेत-योनिसे नहीं छूटा तब धुन्धकारी बोला हजारों गयाश्राद्ध करो पर महा-पाप करनेसे मेरी मुक्ति नहीं होसक्ती कोई ऐसा उपाय करो जिसमें अपने पापोंसे छूटकर भवसागरपार उतरजाऊं यह वचन सुनकर गोकर्णने धुन्ध-कारी से कहा तू थोड़े दिन सन्तोष कर मैं तेरे उद्धारका उपाय करूंगा गोकर्ण यह बात धुन्धकारीसे कहकर सो रहा जब दूसरे दिन उस नगरके मनुष्य गोकर्णसे भेंट करनेके वास्ते आये तब उसने यथाउचित सबका स-न्मान किया फिर कई दिन उपरान्त गोकर्णने योगीश्वर व महापुरुष व पं-डितोंको अपने स्थानपर बुलाकर सभा करके उन लोगोंसे पूंछा कि इसतरह मेरा भाई मरकर प्रेतयोनिमें पड़ाहै उसकी मुक्ति होनेके वास्ते कोई उपाय बतलाइये यह बात सुनकर सब महापुरुष व पंडितोंने विचारकर गोकर्ण से कहा कि तुम सूर्यभगवान्की पूजा व ध्यान करके उनसे इसका उपाय पूंछो जैसी वह आज्ञा देवैं वैसा करो यह वचन सुनकर गोकर्णने सब पंडित व महात्माओंको बिदा किया व सूर्यभगवान्का मंत्र पढ़कर व स्तुति करके यह वरदान मांगा हे महाराज! धुन्धकारी की जिसमें मुक्ति हो वह उपाय बतलाइये सूर्यभगवान्ने उस मंत्रके प्रतापसे गोकर्णको दर्शन देकर कहा कि सप्ताहपारायण श्रीमद्भागवतका धुन्धकारीको सुनाओ तब उसकी मुक्ति होवेगी यह बात सुनकर गोकर्ण बहुत प्रसन्न हुआ व सब पंडित व योगीश्वर व महापुरुषोंको बुलाकर गोकर्णने सप्ताहयज्ञ श्रीमद्भागवतका आरम्भ किया सो उस नगर के बहुतसे मनुष्य बूढ़े लड़के व तरुण स्त्री

२.ष वास्ते सुनने कथाके वहां आये व धुन्धकारीभी एक बांसके ऊपर कि-

वह सात गांठका था बैठकर सुननेलगा व एक वैष्णव व महापुरुष को श्रोता ठहराकर गोकर्णजी अमृतरूपी कथा बांचनेलगे जब पहिले दिन सन्ध्या समय कथा सुननेवाले उठे तब एक गांठ उस बांसकी जिसपर धुन्धकारी बैठाथा फटकर उसमें बड़ा शब्द हुआ उसे सुनकर सब किसीने बड़ा आश्चर्य किया फिर दूसरे दिन कथा होने से दूसरी गांठ टूटकर इसी तरह सात दिनमें सातों गांठें उस बांसकी फटगईं बारहों स्कन्ध कथा सुनने के प्रतापसे धुन्धकारी प्रेतयोनि छोड़कर दिव्यरूप चतुर्भुजी मूर्ति श्याम-सुन्दरके समान होगया व पीताम्बर पहिनेहुये गोकर्णके पास जाकर नमस्कार करके बोला महाराज आपने मुझे बड़े पापोंसे छुड़ाकर कृतार्थ किया सिवाय श्रीमद्भागवतके कोई दूसरा उपाय इन पापोंसे छुड़ाने व मुक्ति देनेवाला नहीं है जो लोग संसाररूपी कीचड़में फँसे हैं वह इस कथा-रूपी तीर्थमें स्नान करनेसे पवित्र होकर भवसागरपार उतर जाते हैं जिस समय धुन्धकारी यह गोकर्ण से कहरहा था उसी समय एक विमान बहुत अच्छा आकाशसे वहांपर उतरा व धुन्धकारी उस विमानपर चढ़कर वैकुंठ को चलागया यह हाल देखकर दूसरे ऋषीश्वर व पंडितोंने जो उस सभा में बैठेथे गोकर्णसे पूंछा महाराज ! हमारे मनमें यह सन्देह हुआहै उसे आप छुड़ा दीजिये कि हम लोग बहुत आदमियों ने यह सप्ताहपारायण सुना इसलिये उचितथा कि कथा सुननेके प्रतापसे सबके वास्ते विमान आता व हमलोगभी वैकुंठको चले जाते यह क्या कारण है कि एक मनुष्य विमानपर चढ़कर वैकुंठमें चलागया और सबलोग यहां बैठे रहे यह बात सुनकर गोकर्णने कहा कथा सुननेमें इतना भेदहै जो मनुष्य मन लगा कर कथा सुनते हैं उनको सम्पूर्ण फल प्राप्त होताहै जो लोग कथामें बैठ-कर चित्त अपना बीच मोह स्त्री व पुत्र संसारी कामके लगाये रहते हैं उनको वैसा फल कथा सुननेका नहीं मिलता एकचित्त होकर सुनने से मुक्ति पाताहै यह वचन सुनतेही श्रोतालोगों ने लज्जित होकर गोकर्ण से कहा महाराज आप दया करके एक सप्ताह और सुनाइये जिसमें तुम्हारी कृपासे हमलोगभी भवसागरपार उतरजावें गोकर्णने उन लोगोंके कल्याण-

वास्ते श्रावणके महीनेसे दूसरा पारायण आरम्भ किया उस कथाको बहुत लोगोंने मन लगाकर सुना तब बहुत विमान आकाशसे आनकर वहां उपस्थित हुये और सब श्रोतालोग गोकर्णको धन्य धन्य कहकर बोले महाराज तुम्हारी कृपासे हमलोगोंका उद्धार हुआ और कथा सम्पूर्ण होने उपरांत श्रीकृष्णजी महाराज वैकुंठसे वहां पधारे व गोकर्णको अपने पास विमानपर बैठाकर गोलोकमें लेगये सब श्रोता भी इसीतरह विमानोंपर चढ़कर उसी तनसे वैकुंठको चले गये जिसतरह सब अयोध्यावासी रामचन्द्रजीके साथ सदेह वैकुंठमें गये जिस स्थानपर सूर्य व चन्द्रमा पहुँच नहीं सके उस जगह संसारी मनुष्य इस भागवतकथाके प्रतापसे पहुँच जाताहै जितना श्रीमद्भागवत सुनने और पढ़ने का माहात्म्य व पुण्य है तितना फल यज्ञ व तप व व्रत व तीर्थ व दानादिका नहीं होता सबसे इसका माहात्म्य अधिक समझना चाहिये ॥

छठवां अध्याय ॥

नारद मुनिका सनत्कुमारजीसे श्रीमद्भागवतकी सप्ताहयज्ञविधि पूंछना और सनत्कुमारजी का कहना ॥

नारदजीने सनत्कुमारसे पूंछा हे महाराज इस सप्ताहयज्ञ भागवतपुराण सुननेकी विधि बतलाइये कि कौन कौन वस्तु इसमें चाहिये और किसतरह से यह करना होताहै सनत्कुमारजी बोले यह बात तुमने बहुत अच्छी पूंछी सुनो इस सप्ताहयज्ञको बीच महीने भादों व क्वार व कार्त्तिक व अगहन के सुनना बड़ा पुण्यहै सिवाय इसके जब इच्छा हो और कोई पंडित व्यासजी अच्छे मिलजावैं तब सुनै शुभ कर्म करना किसी समय मना नहीं है पर जो कोई सप्ताह सुननेकी इच्छा करै उसे चाहिये कि अच्छा मुहूर्त्त पूंछकर अपने इष्टमित्रोंको कहला भेजे कि हमारे यहां सप्ताहयज्ञ होगा आप लोगभी सुनने वास्ते आना व जो लोग कि विरक्त होवैं उनको भी इस यज्ञमें बुलाना उचित है व जो स्थान घरमें या बाग या तीर्थपर अच्छा हो वह कथा सुननेवास्ते ठहरावै और वह जगह चांदनी व केला बन्दनवार आदि से अच्छीतरह अलंकृत करावे जिसतरह विवाहादिक

व यज्ञमें तैयार करते हैं और व्यासजीके बैठनेको बहुत अच्छा ऊंचा सिंहासन रखवादे व वैष्णवलोगोंको जो कथा सुनने आवें उनके वास्ते पृथक् पृथक् आसन बिछवादे व प्रातसमय से व्यासजी कथा बांचना आरंभ करें व श्रोतालोग स्नान व संध्याकरके कथा होनेसे पहिले वहां आवें व चित्त लगाकर कथा सुनें व पहिले दिन मुख्य मालिक कथा सुनने-वाले को गणेशजीकी पूजा करना चाहिये जिसमें बीच सप्ताहयज्ञ के कोई विघ्न न हो व एक ब्राह्मण विद्वान्को विष्णुसहस्रनामका वरण सात दिन वास्ते देकर बैठाल देना उचित है कि वह ब्राह्मण शालग्रामकी पूजा व विष्णुसहस्रनाम का पाठ करके एक एक नाम लेकर ठाकुरजीपर तुलसी-दल चढ़ावे व मुख्य श्रोता पहिले दिन पूजा व्यासजी व पोथी श्रीमद्भा-गवतकी सच्चे मनसे करके यथाशक्ति भेंट रखने उपरान्त हाथ जोड़कर कहे हे व्यासजी आप साक्षात् श्रीकृष्णजी महाराज व शुकदेवजीका रूप हैं मुझे अपना दास समझकर श्रीमद्भागवत यज्ञ आरम्भ करके मेरी इच्छा पूर्ण कीजिये जब व्यासजी कथा कहैं तब मन अपना संसारी काममें न लगावे और कथा सुनने उपरान्त परमेश्वरका भजन भी उस सभामें करना चाहिये व चार घड़ी दिन रहे तक कथा सप्ताहकी सुनाकरे व व्यासजी को भी उचित है कि जल्दी न करके अच्छी तरह समझा कर कहें जिसमें सब किसीको समझाई देवे दोपहरको दो घड़ीवास्ते सप्ताहकथा सुनना बन्द करके कुछ दूध या फल व्यासजी व श्रोतालोगों को खालेना चाहिये व सात दिन जबतकै सप्ताहयज्ञ सम्पूर्ण न होवे तबतक श्रोतालोगोंको एक बार सन्ध्यासमय भोजन करना चाहिये कदाचित् केवल फल या दूध व घी खाकर सात रोजतक रहजावै तो और अधिक पुण्य है निराहार न रहकर कुछ खालेना चाहिये सिवाय इसके सात दिनतक ब्रह्मचर्य रहना व स्त्री से भोग न करना व पृथ्वीपर सोना व पत्तलमें खाना श्रोतालोगों को उचितहै और सात दिनतक दाल व शहद व बासी अन्न व बैंगन व तरबूज व मसूर व मोथी व उड़द व पिआज व लहसुन व मूली व गाजर व कोहड़ा न खाकर अधिक भोजन न करें जिसमें आलस्य आवे व जबतक सप्ताह

कथा सुनैं तबतक क्रोध झगड़ा या किसीकी चुगली व निन्दा न करना चाहिये इस सात दिनमें कोई स्त्री रजस्वला होजावै तो वह कथा न सुने वा म्लेच्छादिक अशुद्धजात बीच सभा कथाके आनकर न बैठें उनको सुननेकी इच्छा होय तो दूर बैठकर सुनैं व श्रोतालोगोंको सत्य बोलना व दया रखना उचित होकर बीच कथाके शोर करना न चाहिये इसतरह सप्ताह कथा सुननेसे बड़ा फल होताहै कोई स्त्री निष्केवल बांझ होकर या ऐसी होवे कि एकबेर उसका लड़का होकर दूसरा बालक न हो या जिसका गर्भपात होजाताहै वह चित्त लगाकर इस सप्ताहयज्ञ को सुने तो उसके सन्तान होवे और इस कथा सुननेके प्रतापसे सबका मनोरथ पूर्ण होताहै व प्रतिदिन कथा सुनने उपरान्त तुलसीदल व प्रसाद सब श्रोताओं को देना चाहिये जब कथा संपूर्ण होजावे तब आठवें रोज सप्ताह होनेका होम दशम स्कन्धके श्लोक या गायत्रीमन्त्रसे आहुति देकर करे व अच्छे अच्छे पदार्थ ब्राह्मणोंको भोजन करावै व अपने सामर्थ्यभर द्रव्य व वस्त्र व भूषण व गऊ व पृथ्वी व वर्तन आदिक व्यासजीको देकर सच्चे मनसे पूजाकरके उनको विदा करना चाहिये इस कथाके सुननेसे अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थ मिलते हैं इतनी बात कहकर सनत्कुमारजी बोले हे नारद मुनि तुमको सुननेकी इच्छा हो तो हम दूसरा पारायण कहैं नारद मुनिने कहा धन्य मेरे भाग्य इस से क्या उत्तमहै जब सनत्कुमारने दूसरा पारायण आरम्भ किया और वहां सब ऋषीश्वर आनकर बैठे तब शुकदेवजी महाराज भी तीर्थयात्रा करतेहुये वहांपर आये सो सनत्कुमार आदिकने शुकदेवजीको देखकर बड़े आदरभावसे आसनपर बैठाला उस समय शुकदेवजी सप्ताहयज्ञकी तैयारी देखकर सब श्रोताओंसे बोले तुम लोग इस कथाको चित्त लगाकर सुनो यह कथा वेदरूपी वृक्ष का फलहै संसारमें दूसरे फल जो होतेहैं उनमें गुठली व छिलका रहकर इस फलमें अमृतरूपी रस भराहै इसलिये यह अमृत बारंबार पीना चाहिये इस कथाको श्रीनारायणजीने ब्रह्मासे कहा और ब्रह्माने नारद मुनिको बतलाया नारदजीने वेदव्यास हमारे पितासे कहा व व्यासजीने मुझे

पढ़ाया और मैंने राजा परीक्षितको सुनाया सो यह श्रीमद्भागवत अठारहों पुराणमें उत्तम होकर साधु वैष्णवको परम धन यहीहै स्वर्गलोकमें तपस्वियों व ब्रह्मलोकमें ब्रह्मा व कैलासमें महादेव व वैकुण्ठमें लक्ष्मीजी इस कथाको गावती हैं जिस समय शुकदेवजी श्रोतालोगोंसे यह बात कह रहेथे उसी समय वैकुंठनाथ ब्रह्मा व वरुण व कुबेरदेवता प्रह्लादादिक भक्तों को साथ लिये सप्ताहयज्ञमें आये उनको देखकर जितने लोग उस सभामें बैठेथे सबोंने उठकर दंडवत् व जयजयकार किया और नारद मुनि मारे हर्षके नाचने और गाने और प्रह्लादजी करताल व उद्धव भक्त मंजीरा और राजा इन्द्र मृदंग बजानेलगे उससमय नारायणजी त्रिलोकीनाथने सब किसीको अपने प्रेममें लीन देखकर उनसे कहा जिसके मनमें जो इच्छा हो सो वरदान मांगो तब नारदादिक हाथ जोड़कर बोले आपके दर्शन हमको प्राप्त हुये इससे अधिक कौन वस्तु है जो मांगें अपने चरणों की भक्ति हमलोगोंको दीजिये श्यामसुंदर यही वरदान सबको देकर वहांसे अन्तर्धान होगये और सप्ताहयज्ञ दूसरा सम्पूर्ण हुआ इतनी कथा सुनकर शौनकादिक अट्ठासीहज़ार ऋषीश्वरोंने सूतजीसे पूंछा कि शुकदेव महाराज ने यह कथा राजा परीक्षितको कब सुनाई व गोकर्ण और सनत्कुमारजीने कब कही थी इसका हाल बतलाइये सूत पौराणिकने कहा जब श्रीकृष्णजी महाराज द्वारकापुरी से वैकुंठको पधारे उसके तीनसौ वर्ष उपरान्त भादों महीना नवमीके दिन शुकदेव महाराज ने यह कथा राजा परीक्षितको सुनाना आरम्भ किया और सात दिनमें वह पारायण सम्पूर्ण हुआ उसके दोसौ वर्ष पीछे गोकर्णने सप्ताहकथा कही थी उसके तीनसौछः वर्ष बीते सनत्कुमारजीने नारदको सुनाया सो कथा हमने तुमसे वर्णन किया यह अमृतरूपी कथा आदर व प्रेम करके जो सुनै व पढ़ै उसको सब फल मिलते हैं ॥

इति श्रीभागवतमाहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

सुखसागर बारहों स्कन्ध

पहिला स्कन्ध ।

श्रीपरब्रह्म परमेश्वरके अवतार धारण करनेका व वेदव्यासजीको नारद-मुनिसे चार श्लोक सुनकर पोथी श्रीमद्भागवत बनाना और शृंगी-ऋषि करके राजा परीक्षितको शाप मिलना जिससे कि इस अमृतरूपी कथाका जगतमें प्रकट होना ॥

क० काशीको निवासी मक्खनलाल हौं गोपालजीकी लीला व्यासबानीकी जवानी कहा चाहत हौं । विद्या को विचार नाहिं कथाको शुमार नाहिं उर्दूजबानी कहत हिये लाज लावत हौं ॥ जाकी कृपा पायके पहाड़ चढ़ैं पंगुल और गूंगे वेद भाषै सोई कृपा नित्य ध्यावत हौं । कहैं गुणवन्त हरिनाम टेढ़ो सूधो भलो तासों सुनि हिये में गुण नेकही सराहत हौं ॥

दो० गंग यमुन गोदावरी सिन्धुसरस्वति संग । सकल तीर्थ तहँ बसतहैं जहँ हरिकथा प्रसंग ॥
नरनारायण गिरा अरु व्यासमुनिहिं परणाम । आशा मेरी पूजिहैं सबगुण पूरणधाम ॥
गूंग वेदको उच्चरै पंगु लांघि गिरि जाय । जासुकृपा बन्दौं तिन्हैं माधव होयँ सहाय ॥
गुरुपदपंकजहृदयधरि सप्तऋषिन शिर नाय । कहौं कथा श्रीभागवत यदुपति होयँ सहाय ॥
गुणावाद गोविंदके काटत सब जंजाल । याते भाषा भागवत विरचत माखनलाल ॥

पहिला अध्याय ।

श्रीनारायणजी महाराजकी स्तुति वर्णन करना व शौनकादिकों करके श्रीमद्भागवत कथाका पूंछना व सूतजी करके इस अमृतरूपी कथाका प्रारम्भ करना ॥

सूतपौराणिक शिष्य वेदव्यासने कथा श्रीमद्भागवत व्यासजीके मुख से जिस समय वह शुकदेव अपने पुत्रको पढ़ाते थे और शुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कही थी सुना था उसके थोड़ेदिन उपरान्त सूतपौराणिक नैमिषारण्य तीर्थ में जहां शौनकादिक अट्ठासीहज़ार ऋषीश्वर इकट्ठे हुये

थे गये और कारण इकट्ठे होने उन ऋषीश्वरोंका वहां पर यह था कि उस जगह सुदर्शनचक्र भगवान्‌का गिराहै इसलिये वह स्थान बहुत पवित्र रहकर कलियुग अपना प्रवेश वहां नहीं करने सक्ता था सो उन ऋषीश्वरोंने सूतपौराणिकसे कहा आपने वेदव्यासजीके पास रहकर सब पुराण पढ़े व सुने हैं सो कृपा करके हमको भी सुनावो जिसमें उसका पुण्य हो तब सूतजीने उन ऋषीश्वरोंसे कहा जो आदि निरंकार चौदहो-भुवन रचकर सब जीवोंका पालन करतेहैं और महाप्रलयके समय चैतन्य आत्मा सब जीवोंका फिर उन्हीं त्रिभुवनपतिकी ज्योतिमें समाजाताहै और वह परब्रह्म अपने तेजसे प्रकाशित रहकर ब्रह्मा और महादेव आदिक सब दे-वताओं को ज्ञान देते हैं और जिनकी मायामें जगत्‌का सब व्यवहार होता है उन्हीं आदिज्योतिका ध्यान धरकर व्यासजी कहते हैं कि संसारी व्यव-हार सब झूठा होकर परमेश्वरकी माया ऐसी बलवान्‌है जिसको कोई भुला-वने नहीं सक्ता और श्रीमद्भागवतमें ऐसा परमधर्म वर्णन कियाहै कि जिसमें कुछ कपट व लोभ न रहकर ऐसे निर्गुण धर्म लिखे हैं जिसके करने से तीनों दुःख और पाप संसारी मनुष्यका जो देवता और नवग्रह और शत्रु और मनके संकल्प विकल्पसे होता है छूटकर नहीं रहता दूसरे युगों में यज्ञ और तप ध्यान और पूजा बहुत दिन करने में बड़े परिश्रमसे श्याम-सुन्दरकी प्रीति उत्पन्न होती थी कलियुगमें केवल इस अमृतरूपी कथा पढ़ने और सुनने से तुरन्त परमेश्वरके चरणोंका वास हृदयमें होताहै इस-लिये श्रीमद्भागवतको सब वेदोंका सार कल्पवृक्षके समान समझकर शुक-देवजीने यह कथा जो राजा परीक्षितको सुनाई थी वही अमृतरूपी फल उस वृक्षका शुकदेवजी महाराज के मुखसे टपककर संसारमें प्रकट हुआहै सो सूतपौराणिक शौनकादि ऋषीश्वर और व्यासजी अपने चेलोंसे कहते हैं कि तुमलोग इस अमृतरूपी फलको जिसमें कुछ छिलका व गुठली नहीं है बारंबार कानोंके राह पिया करो जिसतरह संसारमें मीठे फलको सुवा काटकर खालेताहै उसीतरह शुकदेवजीने इस अमृतरूपी कथाको जो वैकुंठका सुख देनेवालीहै बहुत मीठी समझकर खालिया और अपने

मुखसे निकालकर जगत् में प्रकट किया यह बात सुनकर एक दिन शौनकादिक ऋषीश्वरोंने जब प्रातसमय स्नान व पूजा करचुके तब सूतजीको बड़े आदरभावसे बीचमें बैठालकर कहा आप सब वेद और पुराण जानते हैं इसलिये हमें अपना चेला समझकर जो पुराण सब वेद और शास्त्रका तत्त्व संसारी जीवोंके भवसागर पार उतरनेवास्ते उत्तम हो उसे अपने मुखारविंद से वर्णन कीजिये जिसे सुनकर जल्दी हमलोगों की मुक्ति हो व थोड़ा परिश्रम करने से फल अधिक प्राप्त हो और यह बतलाइये कि जिन परब्रह्म परमेश्वरके नाम लेने से संसारी जीवोंका उद्धार होजाता है उन्होंने कौन काम करनेवास्ते मर्त्यलोकमें देवकीजी के गर्भसे श्रीकृष्ण अवतार लिया और सगुणरूप धरकर बलरामजीके साथ जगत्में कौन लीला की थी और जब कलियुगके आदिमें श्यामसुन्दर वैकुंठको पधारे तब धर्म किसके शरण रहा और किसे सौंपगये थे उसका हाल वर्णन कीजिये परब्रह्म परमेश्वर की लीला और कथा सुननेसे आदमी चौरासीलाख योनिमें जन्म नहीं पाता और आवागमनसे छूटकर भव-सागर पार उतर जाताहै ॥

दूसरा अध्याय।

शुकदेवजीका वनमें तप करनेके वास्ते चलेजाना व फिर नारदमुनिके उपदेशसे अपने स्थान पर आना ॥

सूतजीने जब यह प्रश्न शौनकादिक ऋषीश्वरोंका सुना तब मनमें बहुत प्रसन्न होकर पहिले शुकदेवजीके चरणोंका ध्यान किया जिनके सत्संगसे उन्होंने श्रीमद्भागवत सुना था फिर वेदव्यासजी अपने गुरुके पदकमलको हृदयमें रखकर श्यामसुन्दर चतुर्भुजी मूर्तिको दंडवत् करके शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा तुमने बहुत अच्छी बात पूछी हम तुमको श्रीमद्भागवत कथा जिसमें सब लीला नारायणजीकी लिखीहैं सुनातेहैं चित्त लगाकर सुनो जिससमय शुकदेवजीने माताके पेटसे जन्म लिया उसी समय मुरलीमनोहरका तप करनेवास्ते नारबिवार समेत घरसे निकलकर वनका रस्ता लिया व उन्होंने मनमें विचारा कि यहां रहनेसे हमारा विवाह सबलोग

करदेंगे इसलिये अभीसे वनमें जाकर हरिभजन करना उचितहै जिमसे संसारी माया न लपटै जब व्यासजीने यह हाल पुत्रका देखा तब प्रेमवश होकर उसे फेरलानेवास्ते पीछे दौड़े और शुकदेवजीको बहुतसा पुकारकर कहा हे बेटा! खड़े होकर हमारी बात सुनलो पर शुकदेवजी महाराज इस तरह संसारसे विरक्त होकर हरिचरणोंमें प्रीति रखते थे कि उन्होंने खड़े होकर व्यासजीको उत्तर देना उचित न जानकर मनमें कहा देखो हमारे पिताको बुढ़ाई आवने पर भी संसारीमाया लगी है ऐसा विचारकर शुकदेवजीने वनान्तरीवृक्षों में प्रवेश करके कहा कोई किसीका पुत्र व पिता न होकर संसारकी गति सदासे इसीतरह पर चली आती है और यह शरीर बारंबार आवागमनमें फँसा रहकर जीवात्मा कभी नहीं मरता यह बात सुनकर व्यासजीको सन्तोष हुआ जिससमय शुकदेवजी वनको चलेजाते थे उसीसमय राहमें एक तालाबपर देवताओंकी स्त्रियां नंगी होकर नहाती थीं उन्होंने शुकदेवजीको देखकर कुछ लज्जा नहीं किया उसीतरह नंगी खड़ी रहीं जब पीछे से व्यासजी वृद्ध मनुष्य वहां पर पहुँचे तब उन स्त्रियोंने लज्जित होकर अपना अपना वस्त्र पहिन लिया यह हाल देखकर व्यासजी ने मनमें विचारा देखो शुकदेव हमारे बेटाको इन स्त्रियोंने देखकर परदा नहीं किया और हम बूढ़े मनुष्यको कि आंखोंसे कम दिखलाई देता है देखकर इन्होंने कपड़ा पहिन लिया इसका क्या भेदहै उन स्त्रियोंने दिव्य दृष्टिसे वेदव्यासके मनका हाल जानकर कहा हे व्यासजी आपको स्त्री व पुरुषका ज्ञानहै और शुकदेव महाराज परमहंस होकर कुछ स्त्री व पुरुषमें भेद नहीं जानते इसलिये हमलोगोंने उनसे कुछ लज्जा न करके तुम्हें देखकर कपड़े पहिनलिये यह बात सुनकर व्यासजीके मनका सन्देह मिटगया शुकदेव महाराज ऐसे तरण व तारण महात्माहैं शौनकादि ऋषीश्वरोंने यह स्तुति उनकी सुनकर मनमें कहा देखो सूतपौराणिक हम सब बूढ़े बूढ़े ऋषीश्वरों व मुनीश्वरोंकी कुछ उपमा न कहकर शुकदेवजी छोटे बालककी इतनी बड़ाई करते हैं जब यह बात समझकर ऋषीश्वरों का मुख मलीन होगया तब सूतपौराणिक उनके मनका हाल अपने ज्ञान

से जानकर बोले कि शुकदेवजी वास्ते भवसागर पार उतारने ऋषीश्वरों व मुनीश्वरोंके यह भागवत कथा जगत्में प्रकट किया इसलिये वह योगी और मुनिके भी गुरु हैं जब यह वचन सुनकर सबको बोध हुआ तब सूतजी ने ऋषीश्वरों से कहा कि कदाचित् कोई इस बातका सन्देह करै कि जब शुकदेवजी जन्मतेही परमेश्वरका तप करनेवास्ते वनमें चलेगये थे तो उन्होंने भागवतपुराण व्यासजीसे किसतरह पढ़ा उसका उत्तर यहहै कि जब शुकदेवजीने ऋषीश्वर और मुनीश्वरोंसे ज्ञानचर्चा किया तब उनको यह हाल मालूम हुआ कि जिसके साधन करनेसे हरिचरणों में प्रीति हो वही परमधर्म है इसलिये शुकदेवने नारदमुनिसे मिलकर पूंछा महाराज हमको कोई ऐसा ज्ञान बतलाइये जिसमें बीच चरण परमेश्वरके हमारा मन लगे तब नारदजी बोले इस बात का हाल तुम्हारे पिता अच्छा जानते हैं हमने उनको बतला दिया है यह बात सुनकर शुकदेवजी वनसे अपने पिताके पास चले आये और उनके चरणों पर गिरकर बोले आप मुझे कोई ऐसी विद्या पढ़ाइये जिसमें हरिचरणोंकी प्रीति हो तब व्यासजीने कहा सिवाय पढ़ने भागवत और कोई दूसरा उपाय इसका नहीं है यह बात सुनकर शुकदेवजी ने भागवतपुराण पढ़ना आरम्भ किया इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले जब शुकदेवजी भागवत कथा वेदव्यास हमारे गुरुसे पढ़ते थे तब मैं भी वहां था जो शुकदेव महाविरक्त रहकर एक क्षण कहीं कहीं ठहरते थे वह भागवत पढ़नेके लोभसे बहुत दिन तक व्यासजी की सेवामें रहे व उन्होंने भागवतको बड़े प्रेमसे पढ़ा और शुकदेवजीको संग परमहंस व ऋषीश्वरोंका बहुत प्यारा होकर उनके पास कुछ द्रव्य नहीं था जो देने के लोभसे किसीको अपने पास बुलाते इसलिये उन्होंने भागवत पढ़ा कि इस अमृतरूपी कथा सुननेकी इच्छासे योगीश्वर और मुनीश्वर और ऋषीश्वर लोग हमारे पास रहेंगे और इसी कथा का सदावर्त्त मैं दूंगा इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले हे ऋषीश्वरो इस कथाके सुनने से निष्काम भक्ति प्राप्त होती है व निष्कपट भक्ति होने से लोग विरक्त और ज्ञानी होकर मुक्तपदवी पर पहुँचते हैं इसलिये मनुष्यको चाहिये जो काम

यज्ञ व तप पूजा और व्रत शुभकर्म करै उसमें कुछ चाहना न रक्खै तौ उसके वास्ते यहां सुख होकर मरने उपरान्त परलोक बनता है व किसी बातकी कामना रखने से यह जीव आवागमनमें फँसा रहकर भवसागर पार नहीं उतरता और भक्तिकी बराबर दूसरा धर्म नहीं है यज्ञ और तप व दान व तीर्थ दूसरा धर्म जो मनुष्यलोग करते हैं उस धर्म करने में बड़े परि-श्रम से बीच चरण परमेश्वरके प्रेम उत्पन्न होताहै इसलिये इतना दुःख उठाना उचित न होकर मनुष्यको चाहिये कि सच्चे मनसे यह अमृतरूपी कथा सुनै और मन अपना माया मोह स्त्री व पुत्र झूठे व्यवहारसे विरक्त रखकर नारायणजी के चरणों में ध्यान और प्रीति लगावैं जो कोई मन अपना उस ज्योतिस्वरूप के चरणों में लगाकर परमेश्वरकी लीला और कथा सुनता है उसके हृदय में काम और क्रोध मोह व लोभका जो मैल जमाहै वह छूटकर मन उसका इसतरह शुद्ध होजाताहै जिसतरह सिकल करने से लोहेमें मुर्चा नहीं रहता तब उसके हृदयमें हरिचरणोंका वास होजाताहै इसलिये मनुष्य को अपनी मुक्ति बनानेवास्ते पहिले यह कथा सुननेका अभ्यास करना चाहिये परमेश्वर की बड़ी कृपा होनेसे मनुष्य का मन उनकी कथा व कीर्तनमें लगता है विना भक्ति किये कीर्तन व कथा परमेश्वरकी सुने मन शुद्ध नहीं होता और मनुष्यका स्वभाव भी राजसी व तामसी व सात्त्विकी होता है देवताकी पूजा भी तीन तरह पर होती है राजसी व तामसी व सात्त्विकी व शास्त्रमें तामस को काठसे और राजसको धुवांसे व सात्त्विक को आगसे दृष्टान्त देते हैं जो अर्थ आगसे निकलता है वह बात काठ व धूमसे नहीं प्राप्त होती इसलिये सात्त्विकी भक्ति व पूजा करनेवाले मुक्तिपदवी पर पहुँचते हैं व संसारमें जितना धर्म यज्ञ व तप व व्रतादिक काहै वहसब इसतरह परमेश्वरके रूपमें गत हो जाते हैं जिसतरह बरसात में नदी नालेका पानी बहकर समुद्रके बीच मिल जाता है ॥

तीसरा अध्याय।

बीचहाल अवतारों के जो जो अवतार श्रीपरब्रह्म परमेश्वरने वास्ते सुख देने हरिभक्त व मारने दैत्यों के धारण किये हैं॥

सूतजीने शौनकादि ऋषीश्वरोंसे कहा कि आदि निरंकार जगत्में अवतार धारण करनेवाले पुरुषका रूपहै सबके पहिले वही थे और वही मध्यमें रहकर महाप्रलय होने उपरान्त भी स्थिर रहैंगे वह अपने तेजसे आप प्रकाशितहैं और सब तेजको उसी ज्योतिकी परछाहीं समझना चाहिये जब महाप्रलय होने उपरान्त उसी आदि निरंकार ज्योति नारायण-जी को संसार रचनेकी इच्छा होती है तब वह अपनी मायासंयुक्त पुरुषका अवतार लेकर शेषनागकी छातीपर शयन करते हैं उन्हींको विराट्रूप कहाजाताहै जिनके हज़ार शिर हज़ार नाक हज़ार कान हज़ार भुजा और हज़ार चरण होतेहैं उनकी नाभीसे कमलका फूल निकलताहै और उस फूलसे ब्रह्माजी उत्पन्न होकर चौदहों लोककी रचना करते हैं उन्हींको सब अवतारोंका हेतु समझना चाहिये और उस परब्रह्म परमेश्वरके अव-तारोंका हाल इस तरह पर है पहिला अवतार सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार का धारण करिकै सदा पंचवर्षकी अवस्था ब्रह्मचारी रहे दूसरा अवतार वाराहजीका लेकर पातालसे पृथ्वीको लाये तीसरा अवतार यज्ञपुरुषका चतुर्भुजी धारण करिकै सब राजोंको यज्ञ करनेकी राह बतला कर कृतार्थ किया चौथा हयग्रीव अवतार शरीर आदमी व शिर घोड़ेका धारण करिकै ब्रह्माको वेद पढ़ाया पांचवां अवतार नरनारायणका लेकर बदरी केदारमें वास्ते राह दिखलाने तपस्याके संसारी जीवोंको तप करते हैं छठवां अवतार कपिलदेवमुनिका धरकर सांख्य योग ज्ञान अपनी माताको उपदेश किया सातवां अवतार दत्तात्रेयजीका अत्रिमुनिसे हुआ जिसने राजा अलर्क और प्रह्लाद भक्तको वेदान्त पढ़ाया आठवां अवतार ऋषभदेवजीका चित्रदेवी नाम इन्द्रकी कन्यासे प्रकट होकर जड़चर्या दिखलाया और उनके बेटे जयनदेवने सरावगियों का धर्म संसारमें फैलाया नवां अवतार राजा पृथुका वेणुके शरीर मथनेसे उत्पन्न हुआ

जिसने गऊरूपी पृथ्वी दुहकर सब ओषधी व अन्नादिक जो उसने अपने भीतर छिपाया था बाहर निकाला दशवां मत्स्य अवतार लेकर राजा सत्यव्रतको सप्तऋषियों समेत नौकापर बैठालके ज्ञान उपदेश किया और उसे अपनी माया का कौतुक दिखलाया ग्यारहवां कच्छप अतवार लेकर समुद्र मथनेके समय मन्दराचल पर्वत अपनी पीठपर लिया बारहवां अवतार धन्वन्तरिका एक कलशा अमृतका हाथ में लिये समुद्रसे बाहर निकले और तेरहवां अवतार मोहनी मूर्त्तिका धरकर दैत्योंको अपनी सुन्दरताई पर मोहित किया और अमृत का कलशा उनसे लेकर वह सब अमृत देवतों को पिलाया और चौदहवां अवतार नृसिंहजीका लेकर हिरण्य-कशिपु दैत्यको मारके प्रह्लाद अपने भक्त की रक्षा की पन्द्रहवां वामन अवतार धारणकरके तीनपग पृथ्वी राजा बलिसे दान लेकर देवतोंको दी मांगनेसे मनुष्य छोटा होजाताहै इसीवास्ते परमेश्वरने भी मांगनेके समय अपना छोटा रूप बनाया था सोलहवां अवतार हंसका लेकर सनत्कुमारको ज्ञान उपदेशकरके उनका गर्व तोड़ा सत्रहवां अवतार नारदजीका लेकर पञ्चरात्र वेद बनाया जिसमें सब वैष्णवधर्म लिखाहै अठारहवां अवतार हरिनाम लेकर गजेन्द्रको ग्राहके मुखसे छुड़ाया उन्नीसवां अवतार परशुराम जीका लेकर इक्कीसबार सब क्षत्री राजाओंको मारा और पृथ्वी उनसे छीनकर ब्राह्मणोंको दान दी और बीसवां रामचन्द्र अवतार धारण करके समुद्रका अभिमान तोड़कर रावणको मारा इक्कीसवां वेदव्यास अवतार लेकर सब वेदोंका भाग करके अठारह पुराण और महाभारत बनाया बाईसवां श्रीकृष्णावतार धारण करके कंस और कालयवन और जरासन्ध आदिक अधर्मी राजाओं को मारा और पृथ्वीका बोझ उतारकर वास्ते भवसागर पार उतरने कलियुगवासियों के जगत्‌में लीला की तेईसवां बौद्ध अवतार लेनेका यह कारणहै कि जब दैत्योंने शुक्र अपने पुरोहित से पूंछा कि देवता सदा इन्द्रासनका राज्य करते हैं कोई ऐसा उपाय बताओ जिसमें हमारा राज्य सर्वदा बनारहै शुक्रजीने कहा यज्ञ करनेसे देवतोंका राज्य रहताहै सो तुमलोग भी यज्ञ करो जब दैत्योंने शुक्राचार्य के उपदेशसे

वास्ते मिलने राज्य देवलोकके यज्ञ करना आरम्भ किया तब देवता घबराकर नारायणजीके पास चले गये व बहुत स्तुति करनेके उपरान्त हाथ जोड़कर बोले हे वैकुंठनाथ दैत्यलोग इसीतरह हमसे बलवान्हैं जब यज्ञ करनेसे उनको और अधिक बल होगा तब हमलोग उनको किसीतरह नहीं जीत सकेंगे जिसमें हमारेवास्ते भला हो वह उपाय आप कीजिये यह वचन सुनते ही आदिपुरुष भगवान्ने बौद्ध अवतार धरकर सेवड़ेका रूप बनालिया व मैला कपड़ा पहिरनेके उपरान्त चौंरी रस्सीको हाथमें लेकर जहां दैत्यलोग यज्ञ करते थे वहांपर गये दैत्योंने उनको देखते ही सन्मान करके पूंछा तुम्हारे हाथमें कौन वस्तुहै बौद्धजीने कहा जिसजगह मनुष्य बैठताहै वहां छोटे छोटेजीव उसके नीचे दबकर मरजाते हैं सो इस चौंरीसे जगह झाड़कर बैठना चाहिये फिर दैत्योंने पूंछा तुम्हारा कपड़ा किसवास्ते मैलाहै बौद्धजीने कहा कपड़ा धोनेसें भी बहुतजीव मरते हैं जब इसतरहकी बातें सुननेसे दैत्यों को मोह प्राप्त होकर मन उनका यज्ञ करनेसे फिर गया तब उन्होंने आपस में कहा कि यज्ञ करने से जीवहिंसा होगी तो यज्ञ करना हमारा निष्फल होकर उसमें और अधिक पाप होगा यह बात समझकर दैत्योंने परमेश्वरकी इच्छासे यज्ञ करना बन्द किया तब उनके धर्म का बल जातारहा और देवतालोग उनसे प्रबल हुये और कलियुगके अन्तमें चौबीसवां कलंकी अवतार लेकर धर्मकी वृद्धि व म्लेच्छ और अधर्मियोंका नाश करेंगे सो इन चौबीसों अवतारमें रामचन्द्र और श्रीकृष्णजीका अवतार पूर्णकलासेहै और संसारी जीवोंको उद्धार करनेवास्ते यहसब अवतार नारायणजीने धारण कियेहैं और जितने संसारमें ऋषीश्वर और मुनि और देवता व मनुष्य जीवधारी व जड़ व चैतन्यहैं सब में उन्हीं परब्रह्मका प्रकाश समझना चाहिये इसलिये कोई उनके अवतारोंकी गिनती नहीं करसक्ता और परमेश्वर अपनी मायासे जगत्को उत्पन्न करतेहैं परन्तु उसके वश नहीं होते इसलिये संसारीजीवोंके दुःखी होनेसे कुछ दुःख उनको नहीं पहुँचता और नारायणजी की लीला और नाम व चरित्रको कोई नहींजानसक्ता वही मनुष्य उनको कुछ पहिंचानताहै

जो परमेश्वरके भजनमें लीन रहकर उनके सिवाय दूसरेका भरोसा नहीं रखता उसीको परमेश्वरके जाननेवास्ते इच्छा रहकर संसारी मोह छोड़नेसे परमेश्वरका प्रकाश शरीरमें आताहै और बीच श्रीमद्भागवतके सब वेदोंका सार और परमेश्वरकी लीला व्यासजीने वास्ते भवसागर पार उतरने संसारी जीवोंके वर्णन कियाहै और शुकदेवजी अपने पुत्रको हरद्वारमें गंगाकिनारे ब्राह्मण और ऋषीश्वरों के बीचमें बैठकर पढ़ाया था व जब श्रीकृष्णजी महाराज द्वारकासे वैकुंठको पधारे उससमय धर्म का सूर्य डूबकर संसारसे सब शुभ कर्म जातारहा तब व्यासजीने इस भागवतको बनाकर धर्मरूपी सूर्य जगत्में प्रकट किया और जिससमय वेदव्यासजीनें यह कथा शुकदेवजी को पढ़ाया था उससमय वहां हम भी थे सो गुरुकी दया व कृपासे हमको भी यह अमृतरूपी कथा याद होगई जो तुमलोगों को सुनाते हैं॥

चौथा अध्याय।

व्यासजी का महाभारत और सत्रहपुराण सब वेदोंका तत्त्व बनाना॥

शौनकादिक ऋषीश्वरों ने सूतजीसे कहा आपकी आयुष परमेश्वर बहुत बड़ी करैं अवतारोंके हाल सुननेसे मन हमलोगोंका बहुत प्रसन्न हुआ अब चाहते हैं कि जो भागवत व्यासजीसे आपने सुना था और उसमें सब लीला और महिमा श्यामसुन्दर की लिखीहैं वह हमको सुनाओ और कौनसे युगमें किस स्थानपर शुकदेवजीने वह कथा राजा परीक्षित को सुनाई थी उनका हाल कहो किसवास्ते कि राजा परीक्षितको सांप के काटनेका डर था व हमलोग कालरूपी संसारसे जिसमें मृत्युकी अवधि नहीं होती डरतेहैं और एक बातका हमको बड़ा सन्देहहै जो शुकदेवजी इतने विरक्त रहकर एक क्षण कहीं नहीं ठहरते थे वह किसतरह सातदिन राजा परीक्षितके पास कथा सुनानेके वास्ते रहे और शुकदेव महाराज कोपीन पहिने विभूति लगाये अवधूत बने रहते थे उनको राजा परीक्षितने किसतरह पहिचाना कि यही शुकदेवहैं यह बात सुनकर सूतपौराणिकने कहा कि द्वापरके अन्तमें वेदव्यास हमारे गुरु नारायण-

रूपने यह विचारकर पराशर मुनि और सत्यवती से अवतार लिया कि सतयुगमें आयुर्बल मनुष्यकी लाखवर्ष व त्रेतामें दशहज़ार व द्वापर में हज़ार वर्ष होकर जबतक आयुर्बल पूर्ण नहीं होती थी तबतक वह नहीं मरता था सो कलियुगमें आयुर्बल मनुष्यकी एकसौ बीस वर्ष की होकर सब लोग पाप करनेसे उसके भीतर मरजावेंगे दूसरे युगोंमें मनुष्यलोग आयुर्बल अपनी बीच वेदपढ़ने और यज्ञ और तप करनेमें बिताते थे सो दीर्घायु होने और शुभ कर्म करनेसे वह काम अच्छीतरह सम्पूर्ण होकर उनको मुक्तिपदार्थ मिलता था और कलियुगवासी थोड़ी आयुष होनेसे तप करने और वेद पढ़ने नहीं सक्के और इतना धन भी नहीं रखते जो यज्ञ व दानादिक करके भवसागर पार उतरजावें और कलियुगवासी जीव संसारी सुखमें डूबे रहकर परलोकका शोच नहीं करते व स्त्री और द्रव्यके मोहसे मनुष्य मुक्तिपदवी न पाकर केवल हरिभजनसे उद्धारहोताहै इसलिये परब्रह्म परमेश्वरने कलियुगवासियों के सुख पाने और भवसागर पार उतरने के वास्ते वेदव्यास का अवतार लिया सो एक दिन व्यासजीने सरस्वती किनारे स्नान करने उपरान्त अकेले बीच ध्यान परमेश्वर के बैठकर विचार किया कि देखो कलियुगवासी प्रारब्धहीन व मूर्ख होकर ऐसी संगति नहीं करते जिसमें ज्ञानी होकर परमेश्वरको पहिंचानें जो बात ज्ञानकी सुनते हैं वह भी धारण नहीं करते और सदा आलस्यमें भरे रहकर संसारी तृष्णा नहीं छोड़ते यह बात विचारकर हमारे गुरुने ऋग्वेद और यजुर्वेद और साम और अथर्वणवेद इस इच्छासे बनाया कि कदाचित् संसारी मनुष्य थोड़ी आयुष होनेसे सब वेद न पढ़सकैं तो केवल एक वेद पढ़कर भवसागर पार उतरजावें जब व्यासजीने चारों वेद बनाकर शूद्र व स्त्रीको वेद पढ़ना उचित नहीं जाना तब उन्होंने उन चारों वेदका सार निकालकर महाभारत और सत्रहपुराण निर्माण किये जिनका पढ़ना और समझना सहज होकर सब छोटे बड़े शूद्र व स्त्री आदि उसके सुननेसे भवसागर पार उतर जावें सो ऋग्वेदके बांचनेवाले पैल ऋषीश्वर और सामवेद के पढ़नेवाले जैमिनि ऋषीश्वर और यजुर्वेदके बांचने

वाले वैशम्पायन और अथर्वण वेदके पढ़नेवाले अंगिराऋषीश्वर हुये और महाभारतपुराणको रोमहर्षण मेरे पिताने पढ़ाहै और इन ऋषीश्वरों ने अपने अपने चेलोंको जो वेद पढ़ाया था वही वेदकी शाखा समझना चाहिये महाभारतपुराण एकलाख श्लोकका पढ़ना और सुनना बड़ा पुण्यहै सो महाभारत और सत्रहपुराण बनाने पर भी व्यासजीके मनको बोध न होकर ऐसा विचारमें आता था कि अभी हमको और बनाना चाहिये पर कोई बात पक्की नहीं ठहरती थी कि अब हम कौनसी कथा बनावें कि जिसमें हमारे मनको धैर्य हो इसी चिन्ता में व्यासजी सरस्वती के किनारे बैठे हुये विचार रहे थे कि नारदजी बीन बजाते और हरिगुण गाते हुये वहां आये सो व्यासजीने नारदमुनिको बड़े आदरभावसे बैठाला ॥

पांचवां अध्याय।

नारदमुनिका वेदव्यासको यह बात समझाना कि तुम निष्केवल हरिचरित्रका एक पुराण बनाओ और व्यासजी से अपने पिछले जन्मका हाल कहना ॥

नारदमुनिने व्यासजीको चिन्तामें देखकर कहा इससमय तुम बड़े शोचमें दिखाई देते हो जिसतरह किसी मनुष्यको कोई कठिन कार्य आन पड़े और वह बात उससे न होसके तो हार मानकर उसकी चिन्ता करै सो तुमने एक वेद के चार वेद बनाकर महाभारत व सत्रह पुराण तैयार किये तिसपर भी तुम्हारा बोध नहीं हुआ यह वचन सुनकर वेदव्यास बहुत प्रसन्न हुये कि इन्होंने हमारे मनकी बातको जानलिया फिर व्यासजी अपनी चिन्ताका हाल नारदमुनिसे कहकर बोले आप दिनरात परमेश्वरके भजन में लीन रहतेहैं सो दयाकरके कोई ऐसा उपाय बतलाइये कि जिसमें हमारा चित्त शुद्ध होजावे यह बात सुनकर नारदमुनि बोले हे व्यासजी जिसतरह तुमने महाभारत और सत्रह पुराणमें परमेश्वरका गुणानुवाद थोड़ा सा लिखकर यज्ञ और तप व तीर्थ और दान व्रत और नेम व लड़ाई देवता और संसारी मनुष्योंका हाल वर्णन किया है उसतरह कोई पुराण निर्मल लीला और यश आदिपुरुष भगवान्का मन लगाकर नहीं बनाया इसकारण तुम्हारे चित्तको सन्तोष नहीं हुआ परमेश्वरकी

लीलाके सिवाय दूसरे पुराणोंके पढ़ने और सुननेमें परिश्रम बहुत व लाभ थोड़ा होकर उसका फल सदा स्थिर नहीं रहता वह सुख थोड़े दिन भोग कर फिर जन्म लेना पड़ताहै और श्रीपरमेश्वरकी कथामें चित्त लगजाने से जितना फल व सुख प्राप्त होता है वह हाल वर्णन नहीं होसक्ता और जिन लोगोंको संसारमें अनेक तरहके डर व दुःख लगेरहते हैं वह सब वज्ररूपी हरिकथा सुनने और पढ़नेसे छूटजाते हैं इसलिये जिस पुराण और भजनमें परमेश्वरकी लीला और नाम लिखा हो उसीको उत्तम समझना चाहिये जिस तरह नौका इच्छापूर्वक पवन चलनेसे अपने स्थानपर जल्दी पहुँचतीहै उसीतरह संसारीमनुष्य परमेश्वरका भजन और स्मरण करने से संसारमें वांछित फल पाकर मरनेउपरांत भवसागर पार उतर जाते हैं जैसा सुख भगवद्भजन व हरिचरणोंमें ध्यान लगानेसे प्राप्त होताहै वैसा आनन्द इन्द्र और कुबेर आदिक देवताओंको भी नहीं मिलता इसलिये मनुष्योंको उचित है कि अपने मनमें सन्तोष रखकर किसी प्रयोजन के बिना चाहे परमेश्वरका भजन व स्मरण किया करें संसार में सबतरहका सुख व दुःख पिछले जन्मके कर्मोंसे प्राप्त होकर हरिभजन करनेमें शूली का कांटा होजाताहै और हरिचरणोंका ध्यान मनमें रखने से संसारी माया छूटकर फिर उस मनुष्य को यज्ञ और तप व व्रत और दानादिक करनेका कुछ प्रयोजन नहीं रहता और जो लोग हरिभक्ति न रखकर केवल यज्ञ और तप और व्रत व तीर्थ करते हैं वह आवागमन से रहित नहीं होते शुभ कर्म करने से थोड़े दिन उसका सुख भोगकर फिर जन्मलेते हैं और बाजी बात वेद व पुराणोंमें तुमने इसतरह पर लिखी है जिसको मूर्ख नहीं समझेंगे जैसे आपने पितरोंका श्राद्ध करना मांस से लिखा है इसलिये मांस खानेवाले तुम्हारे वचनका प्रमाण मानकर मांस भोजन करके यह न समझेंगे कि व्यासजीका अभिप्राय मांससे यज्ञ और श्राद्ध करनेवास्ते है इस तरह की बात साधु व तपस्वी अच्छी न मानेंगे जो लोग हंसरूपी परमेश्वरके भक्त हैं वह वैकुंठनाथके भजन व स्मरण और हरिचरणोंके ध्यान में मग्न रहकर दूसरी बात नहीं चाहते जिसतरह हंस मानसरोवर

के किनारे रहकर दाने की जगह मोती चुगतेहैं और कौआ अशुद्ध जगह बैठकर विष्ठा आदिक अशुद्ध वस्तु खाताहै और अपनी बोली बोलकर मारे अभिमानके दूसरे पक्षीको अपने बराबर नहीं समझता और उसकी बोली हंस प्रिय नहीं करते उसीतरह हंसरूपी साधु और वैष्णव को परमेश्वर का गुण और चरित्र सुनना प्यारा लगताहै और जो पुराण श्यामसुन्दके नामकी स्तुतिसे रहित हैं वह उनको अच्छे नहीं लगते और काकरूपी मनुष्य उन बातोंका सुनना जिनमें केलि व क्रीड़ा संसारी सुख रहताहै अच्छा जानते हैं इसलिये तुम्हारे मनको सन्तोष नहीं हुआ अब तुम्हें चाहिये कि एक पुराण ऐसा बनाओ जिसमें सब लीला और गुण परमेश्वरका लिखा हो और उसके पढ़ने और सुननेसे मनुष्यों को पुण्य प्राप्त होकर मरने उपरान्त मुक्ति पदवी मिले व तुम्हारी चिन्तना छूटकर सन्तोष हो हे व्यासजी कदाचित् तुम को हमारे कहने का विश्वास न हो तो हम अपने पिछले जन्म का हाल कहते हैं सुनो उस जन्ममें हम एक दासीके पुत्र थे और मेरी माता एक ब्राह्मणके यहाँ काम काज करती थी और वह ब्राह्मण साधु और सन्तकी सेवा किया करता था सो बर्सात के दिनों में उस ब्राह्मणके स्थानपर साधु लोग आन कर टिके और उस ब्राह्मणने साधुओं के चौका और बरतन करनेवास्ते हमारी माताको रखदिया सो मैं भी बालक होने से अपनी माताके साथ उन साधुओं के आसनपर रहकर आठोंपहर उनका दर्शन किया करता था जिससमय साधुलोग आपस में बैठकर परमेश्वर की कथा और वार्ता कहतेथे उससमय मैं भी उनके पास बैठा रहता था और मुझ बालक अज्ञानको वह बातैं कथाकी बहुत प्यारी लगती थीं इसलिये मैं बड़े प्रेमसे उनको सुनता था और साधुलोग भोजन करके जो अपना अपना जूठन मुझको अपने हाथ से देते थे उसको मैं बड़े प्रेम से खाता था जब वह साधु बर्सात बीते अपने अपने स्थानको जानेलगे तब मैं बहुत सा रोया और मुझको यह इच्छा हुई कि मैं भी इनके साथ जाऊं तब उन्होंने मेरे ऊपर कृपा करके कहा हम तुझे मंत्र पढ़ाये देते हैं उसको जपाकर फिर वह

लोग मुझे बारह अक्षर का मंत्र उपदेश करके अपने स्थान को चले गये व मैं उस मंत्र को जपकर उन साधुओंकी आज्ञाप्रमाण श्रीकृष्ण और बलराम और प्रद्युम्न और अनिरुद्ध के चरणोंका ध्यान करने लगा जब उन साधुओं का जूठन खाने और मन्त्र जपने के प्रताप से मुझे ज्ञान उत्पन्न हुआ तब मनमें यह बात विचार किया कि वन में जाकर परमेश्वर का भजन करूं यहां किस वास्ते पड़ा रहूं पर मेरी माता मुझसे बड़ा स्नेह रखकर एक क्षणभर भी मेरा साथ नहीं छोड़ती थी इस लिये मैं उसको अकेले छोड़कर कहीं जाने नहीं सक्ता था सो परमेश्वर ने मेरे चित्तका हाल जानकर ऐसा संयोग किया कि हमारी माता सांप काटने से जो उसी ब्राह्मणका दूध दुहावने जाती थी राहमें मरगई जब लड़कों ने आनकर हमसे यह हाल कहा तब मैंने बहुत प्रसन्न होकर मन में विचार किया कि देखो परमेश्वर ने संसारी माया मोह से मुझे छुड़ाया यह विचारकर मैं उसी समय कि पांच वर्ष का था वहां से उत्तर दिशा को बड़ी बड़ी नदी और नाले व पहाड़ नांघता हुआ एक वन में चला गया सो बहुतसे सिंह व भालू और हाथी आदिक पशु मुझको वनमें दिखलाई दिये पर भगवान्‌की कृपासे मैं कुछ नहीं डरा और मेरा ध्यान परमेश्वर के चरणों में लगा था इससे मुझे कुछ भूख और प्यास भी नहीं लगी जब मैं बहुत दूर एक वनमें जहांपर मनुष्यादिक का आवागमन नहीं था पहुँचा तब वहां एक वृक्ष पीपल का नदी किनारे देखा जब मैंने उस वृक्ष के नीचे जड़पर बैठकर परमेश्वर के स्वरूपका ध्यान किया तब भगवान् का दिव्यरूप मुझको ध्यान में ऐसा देखपड़ा कि एक मनुष्य सुन्दर जिसके मुखारविन्द का प्रकाश सूर्यसे भी अधिक था चतुर्भुजी मूर्त्ति शंख व चक्र व गदा और पद्म अपने हाथों में लिये पीताम्बर और वैजयन्ती माला धारण किये किरीट और कुण्डल और मुकुट कानों में पहिने श्यामस्वरूप कमल नयन लम्बीभुजा घूंघरवाले बाल तापहारिणी चितवन मन्द मन्द मुसकराते और बिजुली की तरह चमकते हुये मुझको दिखलाई दिये उस रूप को देखते ही मैंने बहुत प्रसन्न होकर

चाहा कि इसी रूपको देखतारहूं जब वह स्वरूप मेरे ध्यान से गुप्त होगया और मैं बड़ा शोच करके रोनेलगा तब यह आकाशवाणी हुई तू चिन्ता छोड़कर मेरे भजनमें लीनरह तेरे मनमें अधिक प्रीति उत्पन्न होनेवास्ते हमने एक बेर अपना दर्शन तुझे दिया है दूसरे जन्ममें फिर हमारा दर्शन पावेगा और तू मेरे निजभक्तोंमें होकर मेरी कृपासे तुझको अपने पिछले जन्मोंका याद रहेगा ॥

छठवां अध्याय।

नारदजीका अपने पिछले जन्मका हाल कहना कि हरिभजनके प्रतापसे हमको दर्शन, श्यामसुन्दरका हुआ और मैंने जिसतरह शूद्रका तन छोड़कर ब्रह्माके यहां जन्म पाया ॥

नारदमुनिने व्यासजीसे कहा कि आकाशवाणी होनेउपरांत एक बाजा वीणाका नारायणजीने मुझको दिया वह वीणा लेकर हम परमेश्वरका भजन करनेलगे जब मैं प्रेमसे उसवीणाको बजाकर बीच भजन और ध्यान परमेश्वरके लवलीन होजाता तब वैकुंठनाथके प्रेममें डूबकर मुझे यह इच्छा होती थी कि नारायणजीने दूसरे जन्ममें दर्शन देनेको कहाहै कब यह तन मेरा छूटै और दूसरा जन्म लेकर परमेश्वरका दर्शन पाऊं जब इसीतरहइच्छा करते करते वह तन अपना छोड़दिया तब त्रिभुवनपतिकी कृपासे ब्रह्माजीका बेटा हुआ और उनके अंगूठेसे उत्पन्न होकर पिछले जन्मका सब हाल मुझको याद रहा इसलिये मेरे मनमें यह इच्छा हुई कि नारायणजीका भजनकरूं जिसमें फिर मुझे जल्दी वैकुंठनाथका दर्शन होवे इसवास्ते संसारी मायामोह और गृहस्थी के जालमें नहीं फँसा अब उस भजनकेप्रभावसे यह हाल मेराहै कि जिससमय परमेश्वरका ध्यान करताहूं उसीक्षण बांकेबिहारी मुझको इसतरह दर्शन देतेहैं जिसतरह कोई किसीका नेवता हुआ आजावै सो अब जहां इच्छा करताहूं वहां दर्शन उससांवली मूरतके मुझे होजातेहैं और जिसजगह तीनों लोकमें मेरी इच्छा चाहती है वहां चला जाता हूं किसी जगह मुझको जानेवास्ते मनहाई नहीं रहती सो हे व्यासजी तुम भी परमेश्वरकी लीला और गुणोंको वर्णन करो जिसमें तुमको भी परब्रह्म भगवान् के

चरणोंका दर्शन होवै और तुम्हारा चित्त उनके चरणोंका ध्यान छोड़कर दूसरी तरफ न जावै ॥

सातवां अध्याय।

नारदमुनिका व्यासजीसे चार श्लोकका हाल कहना और वेदव्यासका बदरिकेदार में जाकर तप करना और श्रीमद्भागवतपुराणका बनाना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा कि नारदमुनि अपने पिछले जन्मका हाल वेदव्यासजीसे कहकर बोले हे व्यासजी हमने चार श्लोक ब्रह्मासे और ब्रह्माने नारायणजीसे सुने हैं सो तुमको चाहिये कि उन्हीं चार श्लोकों की कथा विस्तारपूर्वक वर्णन करो परमेश्वरकी महिमा केवल मनुष्य तनमें मालूम होकर पशुपक्षी आदिको सिवाय खाने और भोग करने के दूसरा काम नहीं रहता जो कोई मनुष्यका तन पाकर परमेश्वरका भजन व स्मरण करके मायारूपी भवसागरसे पार उतर गया उसीका जन्म लेना सुफलहै और जिसने यह तन पाकर नारायणजीका स्मरण और ध्यान नहीं किया वह मनुष्य चौरासीलाख योनिमें जन्म लेकर बड़ा दुःख पाता है फिर नारदमुनिने वेदव्यासजीको चार श्लोकका अर्थ अच्छीतरह समझाकर कहा हे व्यासजी तुमको चाहिये कि पहिले परब्रह्म परमेश्वरके चरणों का ध्यान करो जब तुम्हारा अन्तःकरण पवित्र होकर वैकुंठनाथका चमत्कार तुम्हारे हृदयमें आवै तब तुम गुण व स्तुति नारायणजीकी वर्णन करना यह बात कहकर नारदमुनि वहां से विदा हुये इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले हे ऋषीश्वरो नारदजी धन्य हैं जिन्होंने संसारी जीवोंके कल्याणवास्ते वेदव्यासको उपदेश दिया जब नारदमुनिकी शिक्षासे व्यासजी सरस्वती नदीमें स्नान करने उपरान्त वदरिकाश्रमको जो श्रीनगरपहाड़की तरफहै जाकर बीचध्यान परमेश्वरके लीन हुये तब उन्होंने इस बातकी चिन्तना की कि मुझ अज्ञानकी क्या सामर्थ्य है जो थोड़ीसी महिमा उस परब्रह्म परमेश्वरकी वर्णन करनेसकूं उसीसमय एक तेज आदिज्योतिका उनके हृदयमें चमका तब व्यासजीने परमेश्वरकी कृपासे स्तुति करनेकी सामर्थ्य पाकर उन चार श्लोकोंको जो नारदमुनि

से सुना था विस्तारपूर्वक लिखा और उसका नाम श्रीमद्भागवत रखकर अपने पुत्र शुकदेवजी को पढ़ाया और शुकदेवजी महाराज ने राजापरीक्षितसे कहा जिसके पढ़ने और सुननेसे संसारी माया छूटजातीहै पीछेसे उसका हाल कहा जायगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब कुरुक्षेत्रमें अठारह अक्षौहिणी दल पांडव और कौरवोंका इकट्ठा होकर अठारह दिनतक बड़ा युद्ध हुआ और बहुत मनुष्य शूर वीर हाथी घोड़े सन्मुख मारेजाकर वीरलोक में पहुँचे और भीमसेनने अपनी गदासे धृतराष्ट्र के सब पुत्रों को मारनेउपरान्त राजा दुर्योधनकी जंघा तोड़कर उसको पृथ्वीपर गिराया और महाभारत होने के पहिले जिससमय दुर्योधनने राजा युधिष्ठिरसे सब धन और द्रौपदी उनकी स्त्रीको छल करके जुवेमें जीतलिया और उसने द्रौपदी के शिरके बाल खींचते हुये बड़ी सासत और अनीतिसे अपनी सभा में बुलाकर उससे कहा कि तू हमारी जंघापर आनकर बैठ उसीसमय भीमसेनने मन में प्रण किया था कि श्यामसुन्दरकी कृपा होगी तो मैं तेरी जंघा अपनी गदासे तोडूंगा सो श्रीकृष्णजी की अनुग्रह से भीमसेनने अपना प्रण पूरा किया जिससमय दुर्योधन पैरटूटा हुआ घायल और अकेला रणभूमि में पड़ा था उससमय अश्वत्थामा द्रोणाचार्य का पुत्र उसके पास आनकर बोला कि हम व तुम लड़कपन में एकसाथ रहकर खेलते थे सो तुमको शत्रुओंने यह दिन दिखलाकर इस दुर्दशाको पहुँचाया हमको जो आज्ञा देव सो करें दुर्योधन यह बात सुनकर अश्वत्थामासे बोला मैं अपने जंघा टूटने और सब भाई और बेटा और सेनापतियोंके मारेजानेकी कुछ चिन्ता नहीं करता जितना खेद मुझे पाण्डवों के जीते रहने और राज्य करनेका है सो तुम्हारे रहते हमारे शत्रु राज्य करें इस बात में तुमको भी बड़ी लज्जा समझना चाहिये यह बात सुनकर अश्वत्थामा बोला आप कहैं तो आजरातको मैं जाके सोते समय पांचोंभाई पांडवों का शिर काटकर तुम्हारे पास लादूं यद्यपि सोये हुये मनुष्यको मारना बड़ा पापहै परन्तु तुम्हारी प्रसन्नताके वास्ते हम ऐसा करेंगे दुर्योधनने कहा जो तुम उनका शिर काटलाओ

तो तुम्हारा बड़ा उपकार मानेंगे यह बात सुनकर अश्वत्थामा वहांसे चला व उसके पहुँचनेसे पहिले श्रीकृष्णजी अन्तर्यामी ने जाना कि आज रातको अश्वत्थामा पांडवोंके शिर काटनेवास्ते आवेगा इसवास्ते वैकुंठनाथने सन्ध्यासमय पांडवों से कहा कि आजरातको तुम पांचों भाई अपने डेरेमें न रहकर सरस्वतीकिनारे दूसरा डेरा खड़ा करके सोवो और सबलोगोंको इसी डेरे में रहनेदेव इसीलिये पांचोंभाई उस रातको दूसरे डेरे में जाकर सोये थे और अश्वत्थामाने उसीदिन अँधियारी रातमें पांडवोंके शिर काटनेकी इच्छा रखकर कृपाचार्य से सम्मत पूछा उन्होंने इस अधर्म करनेको बहुत मना किया पर अश्वत्थामा महादेवजीके वरदानका घमंड रखने से कृपाचार्य का कहना न मानकर पहररात रहे कृत्याको साथ लियेहुये पांडवोंकी सेनामें चलागया और उसी वरदान के प्रतापसे रुद्रस्तोत्र पढ़कर उसने सेनाके चारोंतरफ आग लगादिया और पांडवों के पहिले डेरे में जाकर द्रौपदीके पांचों पुत्रोंका शिर काटलिया जो उसी डेरे में युधिष्ठिर आदि पांडवों की शय्याके ऊपर सोये थे और प्रातसमय दुर्योधनके पास लाकर कहा कि हम पांचों भाई पांडवों का शिर काट लाये राजा दुर्योधन यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और एक एक का शिर अपने हाथमें लेकर दबानेलगा जब भीमसेनका शिर बतलाकर अश्वत्थामाने दुर्योधनके हाथमें दिया तब दुर्योधनने उससे कहा कि यह शिर भीमसेनका न होगा उसका शिर ऐसा नहीं है जो मेरे दबाने से टूटजावे इसलिये मुझको मालूम हुआ कि तू द्रौपदीके पांचों पुत्रोंका शिर काटलाया है जो पांडवोंके रूपके समान थे इनबिचारे लड़कोंको तैंने वृथा मारकर हमारे वंशका नाश किया जब यह बात समझकर दुर्योधनको हर्षहोनेके उपरान्त विस्मय प्राप्त हुआ तब वह उसीक्षण मरगया उसके जन्मपत्र में लिखा था कि उसका मरना हर्ष व विषादके मध्यमें होगा वही बात आगे आई सो अश्वत्थामा दुर्योधनका मरना देखते ही अर्जुन और श्रीकृष्णजी के डरसे इसतरह अपना प्राण लेकर वहां से भागा जिसतरह सूर्य देवता महादेवके डरसे भागे थे उसका हाल विष्णुपुराणमें इसतरह लिखा है कि

शिवजीने सुमाली दैत्यको एक रथ बहुत उत्तम और वेगसे चलनेवाला तेजवान् दिया था जब सुमाली दैत्यने सूर्य के पीछे अपना रथ चलाया तब उसरथके प्रकाशसे जहां सूर्य रात करते थे वहां दिन बनारहता था जब सूर्यने यह हाल देखकर बड़े क्रोधसे उसे मारगिराया तब सुमाली ने महादेवजी की शरणपुकारा उससमय भोलानाथने सुमाली की सहायता करके सूर्य का पीछा किया जब सूर्यदेवता महादेवके डरसे भागे तब शिव शंकरने त्रिशूल मारकर सूर्य का रथ काशीजी में गिरादिया उसी जगह पर लोलार्क तीर्थ हुआ जब द्रौपदीने अपने बेटों के शिर काटनेका हाल सुना तब उसने अति विलाप करके यह सौगन्द खाई कि जबतक अश्वत्थामा नहीं माराजावेगा मैं अन्नजल नहीं करूंगी जब राजा युधिष्ठिर और अर्जुन आदि पांचों भाई यह हाल सुनकर बहुत रोनेलगे तब द्रौपदीने अर्जुन से कहा कि अश्वत्थामा का मारना अपने आधीन समझो मैंने यह सौगन्द केवल तुम्हारे भरोसेपर खाई है जैसा उचित जानो वैसा करो यह वचन सुनकर अर्जुनने द्रौपदीसे कहा तू धैर्य रख मैं अश्वत्थामा का शिर काटकर तुझे ला देता हूं तुम उसी शिरपर खड़ी होकर स्नान करना तब तेरे कलेजेकी दाह मिटैगी इसतरह द्रौपदीको समझाकर तुरन्त अर्जुनने गाण्डीवधनुष हाथमें उठालिया और रथपर चढ़कर श्रीकृष्णजी से कहा जल्दी रथको चलाइये श्यामसुन्दरने ऐसे वेगसे अर्जुनका रथ हांका कि अश्वत्थामाके निकट जा पहुँचा जब अश्वत्थामाने रथको देखकर ब्रह्मास्त्र जो ब्रह्माने उसको दिया था अर्जुन पर छोड़ा और वह ब्रह्मास्त्र आगके समान जलता हुआ अर्जुनकी तरफ चला तब अर्जुन ने मुरलीमनोहरसे पूछा यह कैसी अग्नि हमारी तरफ दौड़ी हुई चली आती है श्यामसुन्दर बोले यह आग ब्रह्मास्त्र अश्वत्थामाकी समझकर तू भी अपना ब्रह्मास्त्र उसपर चलाव कि दोनों अस्त्र आपस में लपटकर वह आग तेरे पास पहुँचने न सके और अश्वत्थामाने जो अपना अस्त्र चलायाहै उसे बुझानेकी सामर्थ्य नहीं रखता और तू चलाना और फिर बुझालेना दोनों मंत्र जानताहै इसलिये चलाव यह बात सुनकर अर्जुन

ने भी अपना ब्रह्मास्त्र चलाया तब वह दोनों ब्रह्मास्त्र मिलकर आपसमें लिपटगये अर्जुनका ब्रह्मास्त्र अश्वत्थामाके अस्त्रको नहीं छोड़ता था कि वह अस्त्र अर्जुनके पास पहुँचनेसके जब थोड़ी देरतक दोनोंअस्त्र आपस में लिपटेरहे तब श्यामसुन्दरने अर्जुन से कहा कि तू जल्दी मन्त्र पढ़कर दोनों अस्त्रों को अपने पास बुला ले नहीं तो इस अग्नि से संसारी जीव जलमरैंगे यह वचन सुनतेही अर्जुनने मन्त्र के बलसे दोनों ब्रह्मास्त्र अपने पास बुलानेके उपरान्त रथ दौड़ाकर अश्वत्थामाको पकड़लिया पर अपने हृदय में दया और धर्मकी राह विचार किया कि यह ब्राह्मण मेरे गुरुका बेटाहै इसको मारना न चाहिये जब यह समझकर अर्जुनने उसका शिर नहीं काटा तब श्यामसुन्दर अर्जुन के धर्मकी परीक्षा लेनेवास्ते बोले हे अर्जुन अश्वत्थामाने सोयेहुये लड़कों के शिर काटे हैं इसलिये यह आततायी हुआ और तुमने इसके शिर काटने का प्रण किया था सो इसको मारडालो जिसमें द्रौपदीको संतोष हो यह बात सुनकर अर्जुनने कहा कि महाराज आप सत्य कहते हैं पर ब्राह्मणको मारना बड़ा पाप समझकर अभी इसको वध करना न चाहिये इसे बांधकर द्रौपदी के पास ले चलो जैसा वह कहे वैसा करना जब यह बात सुनकर श्यामसुन्दरने मानलिया तब अर्जुन हाथ व पैर अश्वत्थामा के बांधकर उसे द्रौपदीके सामने लाया जैसे द्रौपदी हरिभक्ताने अश्वत्थामाको बँधे हुये देखा वैसे अपने धर्म और दयाकी राहसे रुदन करनेलगी और श्रीकृष्णजीकी बहुत स्तुति कह कर अर्जुनसे विनयपूर्वक बोली हे स्वामी तुमने मेरी प्रतिज्ञा पूरी की अब इस ब्राह्मण का प्राण मारनेसे मेरे मरेहुये बालक जी नहीं सकें इसलिये अश्वत्थामा को छोड़देव यह अपने कर्मोंका दंड परमेश्वरसे पावेगा जिसतरह मैं अपने बेटों के मरनेका शोच करती हूं उसीतरह कृपीनाम अश्वत्थामाकी माता भी पुत्रमरनेका दुःख पावेगी और इसके पितासे आपने धनुषविद्या सीखी है इसलिये अश्वत्थामाको पूजनेयोग्य समझ कर जल्दी छोड़दीजिये इसे बांधकर रखना उचित नहीं है यह वचन द्रौपदी का सुनते ही राजा युधिष्ठिर और नकुल और सहदेवने प्रसन्न

होकर कहा द्रौपदी सत्य कहती है अश्वत्थामाको मारने से सिवाय ब्रह्महत्याके क्या मिलेगा जब यह बात द्रौपदी और युधिष्ठिर आदिकी भीमसेनको अच्छी नहीं लगी तब वह अपनी गदा पृथ्वीपर पटक कर अर्जुनसे बोला तुमने अश्वत्थामा के शिर काटनेका प्रण किया था सो अपनी प्रतिज्ञा झूंठी करना न चाहिये और जो तुम यह कहते हो कि इसके मारने से ब्रह्महत्या लगेगी सो इसमें ब्रह्मअंश व ब्राह्मण का कर्म नहीं रहा धर्मशास्त्रमें ऐसा लिखाहै कि जो कोई शरणआये और सोते हुये को या बालक और स्त्रीका वध करे या मतवाले व बौरहे को व हरिभक्त और परमहंसको मारकर दुःख देवै ऐसे मनुष्यको आततायी समझकर मारना और दंड देना राजाओं का धर्महै उनके मारनेका पाप नहीं होता और छःतरहके आततायी होते हैं एक जो आग लगावै दूसरा जो विष देवै तीसरा जो गुरुकी आज्ञा न मानै चौथा जो ब्रह्मअंश अधर्मसे लेवै पांचवां जो ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य होकर मदिरा पीवै छठवां जो प्राण मारकर अपना कुटुम्ब पालै उन लोगोंको अवश्य मारना चाहिये जब भीमसेनकी बात सुनकर अर्जुन विचारने लगा कि अब मैं क्या करूं तब श्रीकृष्णजीने कहा हे अर्जुन तुमने जो प्रण कियाहै उसको पूरा करो और भीमसेनका वचन रखकर द्रौपदीका कहना मानो और जो राजा युधिष्ठिर कहते हैं उनका भी वचन पालो और वेदमें ऐसा लिखाहै कि ब्राह्मणका प्राण न मारै और जो आततायी हैं उनको मारडालै इसलिये तुम ऐसी बात विचारकर करो जिसमें वेद और शास्त्रका वचन झूंठा न होकर सबकी प्रसन्नता रहै यह बात सुनकर अर्जुनने विचारा कि कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिसमें अश्वत्थामाका प्राण बचकर वह मरने के बराबर होजावै ऐसा विचारकर अर्जुनने अश्वत्थामाका शिर कि बालहत्या करने से उसका बल व तेज जातारहा था मुड़वाडाला व अपनी तलवारकी नोकसे चीरकर एकमणि बहुत अच्छी जो उसके शिर में थी निकाललिया और अपने नगर की सीमासे उसको बाहर निकलवाकर मरणतुल्य करके छोड़दिया ॥

आठवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी करके राजा दुर्योधनकी लोथको वीरों समेत जलाना जोकि महाभारतमें गये थे और राजा युधिष्ठिरको यज्ञ करने वास्ते समझाना और युधिष्ठिरको बोध न होना इसलिये भीष्मपितामहके पास लेजाना जोकि रणभूमि में पड़े थे॥

सूतजी बोले हे ऋषीश्वरो अश्वत्थामाके छोड़ने उपरान्त राजा युधिष्ठिर व श्रीकृष्ण महाराजकी आज्ञापाकर दुर्योधन आदिक कौरव और वीरोंकी लोथ जो रणभूमि में पड़ीथी उनके सम्बंधियोंने उठालिया व दग्धकर विधिपूर्वक क्रियाकर्म उनका किया जब श्यामसुन्दर व धृतराष्ट्र और पांचोंभाई पांडव और कुन्ती और द्रौपदी व गान्धारी आदि स्नान करनेवास्ते गंगाकिनारे गये तब जितनी स्त्रियां कौरव व पांडवोंके घराने में विधवा होगई थीं वह सब बड़े विलापसे अपने अपने पतिका गुण कह कहकर रोनेलगीं उसीसमय राजा युधिष्ठिर जो धर्मका अवतार थे बड़े शोच में डूबगये और अपने ऊपर धिकार देकर कहनेलगे कि हमारे ये पाप कभी नहीं छूटेंगे व किसतरह मेरा उद्धार होगा मेरे महाभारत करने से हज़ारों स्त्री हमारे कुल व परिवार की विधवा होकर रोती और कलपती हैं इनके रोने और आंशू गिरने से जितनी रेणुका पृथ्वी की भीगैगी उतने वर्ष तक मुझे नरकवास करना पड़ैगा मेरे लड़ाई करनेसे द्रोणाचार्य गुरु और भीष्मपितामह हमारे दादा व कर्ण मेरा भाई जिसके हाथसे हज़ारों ब्राह्मण नित्य दान व दक्षिणा पाते थे व हज़ारों मनुष्य मेरे गोत्री व नातेदार मारेगये मुझसे बड़ी चूक हुई जो मैंने महाभारत किया ऐसा अधर्म का राज्य मुझे न करना चाहिये इन बातोंको सुनकर कृष्ण महाराज व वेदव्यासजी आदिक ऋषीश्वर और ब्राह्मणोंने कईबार राजा युधिष्ठिर को समझाकर कहा इसीतरह सदा से पिछले राजा करते चले आये हैं पृथ्वी और राजगद्दी लेने के वास्ते बेटा बापको और भाई भाई को मारडालता है जिसतरह वह लोग राजगद्दी पाकर अश्वमेध यज्ञकरके उनपापोंसे छूटगयेहैं उसी तरह तुम्हारा पाप भी अश्वमेध और राजसूय यज्ञ करने से छूटजायगा यह बात श्यामसुन्दरकी सुनकर राजा युधिष्ठिर बोले हे ज्योतिः

स्वरूप यह कहना आपका केवल मन समझावनेवास्ते है नहीं तो यज्ञ करने में भी पशु आदिक अनेक जीव हमारे हाथसे मारे जावेंगे जिस तरह कोई मनुष्य कीचड़ को कीचड़से धोयाचाहै तो नहीं छूटता उसी तरह हमारे यज्ञ करनेसे इन विधवा स्त्रियोंकी कल्पना नहीं छूटैगी कदाचित् आप यह कहैं कि पहिले तुमने राज्य लेने के वास्ते इतना युद्ध किया अब राज्य क्यों नहीं करते सो मुझको समर करनेकी इच्छा न थी न जानें उससमय किसने मेरी मतिको फेरकर महाभारत कराया अब मैं राजसिंहासन पर नहीं बैठूंगा यह बात सुनकर मुरलीमनोहरने जाना कि हमारे समझाने से राजा युधिष्ठिर नहीं मानैंगे जिस समय श्यामसुन्दर इसी विचार में बैठे थे उसी समय ब्राह्मण ऋषीश्वरों ने आनकर श्रीकृष्णजी से कहा हे त्रिलोकीनाथ राजा युधिष्ठिरका चित्त राज्यकाज में न लगकर वह अभी इसी चिन्ता में रहते हैं कि हमने अपने भाई और नातेदार व ब्राह्मणों को माराहै सो आप उनका बोध करदीजिये श्यामसुन्दरबोले राजा मेरे समझाने सेनहीं मानते हमारी जानमें यह उचित है कि उनको भीष्मपितामह के पास जो रणभूमि में बाणशय्यापर पड़े हुये हमारे दर्शनोंकी इच्छा रखते हैं ले चलें तब वह राजा युधिष्ठिरको ज्ञान उपदेश करके धैर्य देवेंगे यह बात कहकर श्यामसुन्दरने राजाको बुलाके कहा हे धर्मराज तुम्हारी अभीतक चिन्ता नहीं छूटी और ब्राह्मण लोग कहते हैं कि इस पापके छुड़ानेवास्ते अश्वमेध यज्ञ करना चाहिये व हमारे समझानेसे तुम्हारा बोध नहीं होता इसलिये तुम हमारे साथ भीष्मपितामहके पास कि वे बड़े बुद्धिमान् हैं चलो जो वह आज्ञा देवैं सो करो राजा युधिष्ठिरने यह बात मानकर अपने चारों भाई व द्रौपदी व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको रथपर बैठाल लिया व श्यामसुन्दरके साथ जिसस्थानपर भीष्मपितामह रणभूमिमें पड़े थे लेगये ब्राह्मणलोग दाहिने व पांडव बायें व श्रीकृष्णजी भीष्मपितामहके सन्मुख बैठे और श्यामसुन्दरने इसवास्ते चरणके समीप बैठना अंगीकार किया कि भीष्मपितामह घायल पड़ेहुये मेरे दर्शनों की इच्छा रखते हैं मैं दूसरी ओर बैठूंगा तो उनको करवट लेने में बहुत कष्ट होगा और यह समाचार सुनकर नारदजी और

भरद्वाज व परशुराम आदिक बहुतसे ऋषि व मुनि भीष्मपितामहसे ज्ञान सुनने के वास्ते वहांपर गये और भीष्मपितामहने मानसी पूजन श्यामसुन्दर का किया ॥

नवां अध्याय।

भीष्मपितामहका राजा युधिष्ठिर को राजनीति धर्म समझाना व द्रौपदीका बोध करना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा जब सबलोग वहां बैठचुके तब श्रीकृष्णजी बोले हे भीष्मपितामह राजा युधिष्ठिर अपना मन राज्यकाजमें नहीं लगाकर कहते हैं कि हमने अपने भाई व बन्धु व नातेदार और ब्राह्मणोंको महाभारतमें मारा है जबतक इन सब पापोंसे हमारा उद्धार न होगा तबतक राज्य नहीं करेंगे भीष्मपितामहने यह वचन सुनते ही राज्यधर्म और आपद्धर्म और दानधर्म व मोक्षधर्म जिसका हाल शांतिपर्व और शल्यपर्व महाभारतकी पोथीमें विस्तारपूर्वक लिखा है राजा युधिष्ठिर से कहिकर संक्षेपमें यह ज्ञान बतलाया हे राजन् तुमको बाल्यावस्थासे दुःख प्राप्त होकर लड़कपनमें पिता तुम्हारे मरगये जब तुमको कुछ ज्ञान हुआ तब कौरवोंने तुम्हारे जलाने का उपाय करके भीमसेन तुम्हारे भाईके खानेके वास्ते विषका लड्डू बनाकर भेजा फिर तुम्हारा सब राज्य व धन छलसे जुआं में जीतकर तेरह वर्षका तुमको वनवास दिया सो वनमें तुमने अपने चारों भाई और द्रौपदी स्त्री समेत बहुत से दुःख उठाये कदाचित् कहो कि सच्चे व धर्मात्मा मनुष्यको दुःख नहीं होता फिर तुमको जो सत्यवादी व नीतिमान् हो किस वास्ते यह सब दुःख पहुँचा और कहते हैं कि बलवान् मनुष्यको दुःख व शोक नहीं प्राप्त होता सो तुम पांचों भाइयों में अर्जुन व भीमसेन बड़े शूर वीर हैं व द्रौपदी ऐसी पतिव्रता स्त्री तुम्हारे साथ थी फिर इन्होंने किसवास्ते इतना दुःख पाया सिवाय इसके जहां श्रीकृष्णजीके नामकी चर्चा रहती है वहां दुःख नहीं होता सो श्रीकृष्णजी परब्रह्म का अवतार आप रातिदिन तुम्हारी सहायता करते थे फिर तुमने किसवास्ते इतना कष्ट सहा सो हे राजन्

तुम इस बातको विश्वास करके जानो कि परमेश्वरकी इच्छानुसार जिसको जैसा होनहारहै उससे पृथक् दूसरी बात नहीं होनेसक्की दुःख व सुख पिछले जन्मोंके संस्कारसे भोगना पड़ताहै और परमेश्वरकी महिमा और भेदको कोई नहीं जानता कोई मनुष्य किसी कामके वास्ते परिश्रम करके अपने मनोरथको पहुँचजाता है और बहुत मनुष्य जन्मभर उद्योग और परिश्रम करनेसे भी अपने अर्थको नहीं पाते इसलिये सबका उत्तम व मध्यम परमेश्वरकी इच्छापर समझना चाहिये जो वह चाहते हैं सो होता है इसलिये बुद्धिमान् और ज्ञानी उसीको समझना चाहिये जो हर्ष व शोकको बराबर जानकर परमेश्वरकी इच्छापर आनन्द रहताहै और जो कोई नारायणजीकी आज्ञा ऊपर सन्तोष न रखकर थोड़े से दुःख पहुँचने में रोदेता है और जब उसको रोनेसे कुछ नहीं होता तब हार मानकर कहताहै कि नारायणजीकी इच्छा योंही थी उसे महामूर्ख जानना चाहिये हे राजन् मनुष्यके चिन्ता और परिश्रम करनेसे कुछ नहीं होकर सब काम हरीच्छासे होतेहैं जिसको होनहार कहते हैं और यह श्रीकृष्ण जो साक्षात् त्रिलोकीनाथ अपना स्वरूप छिपाकर जगत्में लीला करते हैं इनके भेदको कोई नहीं जानता और यह अर्जुनको अपना भक्त जान कर उसके सारथी हुये थे इनकी महिमा और बड़ाई कहांतक तुमसे वर्णन करूं हे राजन् जो लोग परमेश्वरकी इच्छापर आनन्दसे रहकर अपना जन्म तप व जप व हरिचरणोंके ध्यानमें काटते हैं उनके नाम सुनो उनमें एक महादेव सदा कैलास पर्वतपर बैठे हुये नारायणजीके तप व ध्यानके सिवाय संसारी व्यवहारसे कुछ काम नहीं रखते दूसरे नारदजी आठोंपहर मग्न व आनन्दमूर्ति रहकर जिस जगह उनका मन चाहताहै वीणा बजाकर ज्योतिस्स्वरूपका भजन व गुण गावते फिरतेहैं तीसरे कपिलदेव मुनि दिन रात श्रीपरब्रह्मका जप और ध्यान करके अकेले गङ्गासागरपर बैठे रहतेहैं चौथे शुकदेवजी जन्मसे संसारी माया मोहमें नहीं लिपटकर आठों पहर वैकुंठनाथकी कथा गाया करते हैं पांचवें राजा बलिने जब जाना कि श्यामसुन्दरकी इच्छा योंही है कि मैं राजसिंहासन पर न रहूं

तब सब राज्य अपना वामन भगवान्को अर्पण करदिया हे युधिष्ठिर तुम जानते हो कि मैंने अपने भाई और नातेदार और ब्राह्मणोंको माराहै सो ऐसा समझना न चाहिये तुम कौन हो तुम्हारा किया कुछ नहीं होसक्ता जो बात नारायणजीने चाहा सो किया और जब जो चाहेंगे सो करेंगे॥

चौ० उमा दारुयोषित की नाईं। सबहिं नचावत राम गोसाईं॥

इसलिये तुम गोत्रहत्या की चिन्ता अपने मनसे दूर करो व भगवान्की इच्छा इसीतरह समझो और यज्ञ करके अपना पाप छुड़ावो और प्रजाका पालन करना तुम्हारा धर्म है कदाचित् राज्य नहीं करोगे तो और पाप तुमको होगा इतनी कथा सुनाकर सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा जिस समय भीष्मपितामह यह सब ज्ञान व धर्म राजा युधिष्ठिरको समझाते थे उससमय द्रौपदी वहां बैठी हुई भीष्मपितामह की ओर देखरही थी जब उन्होंने सब धर्म कहते समय यह बात भी कही कि जिस सभामें धर्म का जाननेवाला मनुष्य बैठा हो व उस जगह दूसरा कोई अधर्मकी राह कुछ पाप करनेकी इच्छा करै तो धर्मात्मा मनुष्यको उचितहै कि दूसरेको पाप करनेसे बर्जि देवै कदाचित् वह मना करनेकी सामर्थ्य न रखता हो तो वहांसे उठजावे और परमेश्वरका ध्यान करै यह भीष्मपितामह का वचन सुनतेही द्रौपदीने राजा युधिष्ठिर व अर्जुनकी ओर देख पहिले मुसकरादिया व फिर मनमें लज्जित होकर विचार किया देखो राजा दुर्योधनकी सभामें भीष्मपितामहके सामने अधर्मकी राह मेरी यह दुर्दशा हुई और दुश्शासनने मुझको नंगी करने वास्ते मेरा चीर खींचा राजा दुर्योधनने मुझे अपनी जंघा पर बैठानेवास्ते कहा ऐसी दुर्दशा होने पर भी मेरा प्राण नहीं निकला व मैं अपना मुख लोगोंको दिखलाती हूं ऐसे जीनेसे मरजाती तो उत्तम था जब यह समझकर द्रौपदी बहुत उदास हो मनमें अपने को धिकार देनेलगी तब भीष्मपितामह ने द्रौपदी का मुख मलीन देखते ही उसके हृदयकी बात अपने ज्ञानसे जानकर कहा हे बेटी तुम अपने मनमें कुछ शोच मत करो यह सब धिकार मेरे ऊपरहै किसकारण कि जिससमय यह सब अधर्म तेरे ऊपर

हुआ था उस समय में भी वहां बैठा था जो मैं दुर्योधन को इस अनीति से मना करना चाहता तो उसकी सामर्थ्य नहीं थी जो ऐसा अधर्म तेरे ऊपर करता पर उस समय मेरे मनमें यह ज्ञान नहीं आया इससे बेटी तुम निश्चय जानो कि श्यामसुन्दरकी इच्छा इसी तरह पर थी जो बात वह चाहते हैं सो होतीहै उनकी इच्छा में किसीकी बुद्धि काम नहीं करती व इसका एक कारण और है सुनो कदाचित् कोई मनुष्य कैसा ही ज्ञानी व महात्मा हो अधर्मीकी संगति करनेसे उसका ज्ञान नष्ट होकर समयपर काम नहीं आता और जो लोग जिसका अन्न खाते हैं उसके समान उनकी बुद्धि होजातीहै सो हम उन दिनों राजा दुर्योधन अधर्मीका अन्न खाकर उसीके साथ दिनरात रहते थे इसलिये मुझे उस समय धर्म व अधर्म का विचार नहीं हुआ अब हमको छप्पनदिन दानापानी छोड़े व बाणशय्या पर पड़े होचुका इसलिये मेरे तनसे राजा दुर्योधनके अन्नका विकार व उसके संगका प्रभाव निकल गया तब मुझे इस बातका ज्ञान हुआ और हे बेटी इस तरह पर एक इतिहास महाभारत का कहते हैं सुनो पिछले युगमें राजा शिविके यहां एक परमहंस महात्मा बड़े ज्ञानवान् रहते थे और राजा उनकी सेवा अच्छी तरह सच्ची प्रीति से करता था उस राजाके नगरमें एक ब्राह्मणने अपनी बेटीका गहना सोनारको बनानेके वास्ते दिया सो उस सोनारने सोना बदलकर पीतलका गहना बनाया व उस पर सोनेका मुलम्मा करके ब्राह्मणको दिया व ब्राह्मणने विनाजांचे वह गहना सोनारसे लेकर अपनी बेटी को पहिनाया जब वह लड़की उसे पहिनकर अपनी सुसरालमें गई तब उसके पतिने पीतलका गहना देख कर मनमें खेद माना और उसे अपने घर न रखकर ब्राह्मणके स्थानपर बिदा करदिया व फिर अपने यहां नहीं बुलाया जब उस ब्राह्मणने बहुत उदास होकर राजाके पास नालिश किया तब राजा शिविने सोनारका अपराध सत्य जानकर सब अन्न व धन उसका लूटके अपने स्थानमें भेजवादिया सो एक दिन राजमन्दिरमें उसी अन्नकी रसोई तैयार हुई और उसमें परमहंसने भी भोजन किया इसलिये अधर्मी सोनारका अन्न

खानेसे परमहंसने ऐसा विचार किया कि कुछ वस्तु राजाकी चोरी करें यह बात विचारकर परमहंसने रानीका एक जड़ाऊहार बहुत उत्तम महल के भीतरसे कि उनको वहां जाने वास्ते मनहाई नहीं थी चुरालिया और कपड़ेमें लपेटकर अपने पास रखलिया व तीन दिनतक परमहंस राज-मन्दिरपर नहीं गया जब उपवास करने से सोनारका अन्न पेटमें नहीं रहा तब परमहंसको ऐसा ज्ञान उत्पन्न हुआ कि हमने हार चुरायाहै इस पापके बदले नरक भोगना पड़ेगा इसवास्ते अपने अधर्म का दंड इसी तनमें भोग करलेना उचितहै जिसमें परलोकका डर न रहै परमहंस यह बात विचारकर वह हार राजाके पास लेगया व अपनी चोरी करनेका हाल कहकर बोला हे पृथ्वीनाथ इस पापके बदले मेरे दोनों हाथ कटवा-डालिये कि हम अपने अधर्मका दंड इसी जन्ममें भोग करलेवें यह वचन सुनतेही राजाने उदास होकर पंडितोंसे पूंछा इसका क्या कारणहै जो परमहंसका चित्त उस दिन ऐसा बदल गया कि इन्होंने हार चुराया और आप उस हारको मेरे पास लाकर ऐसी बात कहते हैं ब्राह्मणों ने अपनी विद्यासे विचारकर कहा कि महाराज जिस रोज परमहंसने चोरी किया उस दिन किसी अधर्मी का अन्न खायाहोगा सो पूंछनेसे राजाको मालूम हुआ कि उसी सोनार पापीका अन्न खाने से परमहंस की बुद्धि बदल गई थी सो हे द्रौपदी एक दिन अधर्मीके अन्न खानेसे परमहंस महात्मा का ऐसा ज्ञान जातारहा कि उसने चोरी किया और मैं राजा दुर्योधन अधर्मीका सदा अन्न खाकर उसके साथ रहता था मुझे उस समय इतना ज्ञान नहीं आया कि दुर्योधनको तेरे ऊपर अधर्म करनेसे मना करता तो कौन बड़ी बात थी॥

दशवां अध्याय

भीष्मपितामहको श्रीकृष्ण महाराजकी स्तुति करना और श्यामसुन्दर के ध्यान में लवलीन होकर अपना शरीर त्याग करना॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा कि भीष्मपितामह ने यह सब ज्ञान पांडवों और द्रौपदी आदि से कहकर चतुर्भुजरूप परमेश्वरको

ध्यान अपने हृदय में रखलिया और श्रीकृष्णजी की तरफ देखकर बहुत स्तुति करके बोले हे ज्योतिस्स्वरूप परब्रह्म आप केवल अपने भक्तोंकी इच्छापूर्ण करनेके वास्ते अवतार धारण करते हैं जिसतरह आप दयाकी राह मेरे सामने बैठे हैं उसी तरह कृपा करके बैठेरहो जिसमें प्राण छोड़ते समय तुम्हारे चरणों का ध्यान मेरे हृदयमें बनारहे आप सबसे पहिले थे व महाप्रलयमें भी तुम्हारा नाश न होकर आपकी मायासे उत्पत्ति व पालन व नाश तीनों लोक का होता है व आप उत्पन्न होने व मरने से कुछ प्रयोजन न रखकर केवल पृथ्वीका भार उतारने व अधर्मी व दुष्टों को मारनेके वास्ते अपनी इच्छा से अवतार लेते हैं व तुम्हारे अवतार लेनेका यह कारणहै कि जिसमें संसारी लोग आपकी सांवली सूरति मोहनी मूरतिका ध्यान जो सब गुणोंसे भरी है अपने हृदयमें रक्खें व पापों से छूटकर भवसागरपार उतरजावें व तुम्हारी दया व कृपा अपने भक्तोंपर इतनी है कि अर्जुन अपने भक्त के प्राणकी रक्षा करने वास्ते उस के सारथी होकर आप आगे बैठे और अर्जुन को अपने पीछे बैठाला जिससमय मैं चोखे चोखे बाण अर्जुनपर चलाता था उससमय काल भी उन बाणों के सामने होता तो भागजाता सो आपने अर्जुनकी रक्षा करके उन तीरोंसे बचाया और उन बाणों का घाव अपने अंगपर उठाया सो मेरे बाणों के घावसे तुम्हारी सावली सूरतिपर रक्तके छीटे मूंगेके समान ऐसे शोभायमान दिखलाई देते थे जिसकी शोभा वर्णन नहीं होसक्की व आप अर्जुनको इसवास्ते धैर्य देते जाते थे जिसमें उसका पराक्रम कम न हो और आपके चन्द्रमुखपर टेढ़े टेढ़े घूंघरवाले बाल कैसे सुन्दर मालूम देते थे जैसे काले काले भँवरे कमलके फूलका रस चूसते हैं व तुम्हारे मुखारविंद पर धूर उड़कर पड़ने और पसीना होनेसे कैसा मालूम देता था जैसे फूलपर ओसकी बूंद रहतीहै और वह पसीना तुम अपने पीताम्बरसे पोंछकर दाहिने हाथ कोड़ा व बायें हाथमें रास घोड़ोंकी लिये हुये रथको जल्दीसे मेरीतरफ दौड़ाते थे सो मैं चाहता हूं वही स्वरूप आपका मेरी आंखोंमें बसारहे व तुम्हारे कमलरूपी चरण मेरे हृदयसे बाहर न जावें आप अपने

भक्तोंका ऐसा मान रखते हैं कि महाभारत होने के पहिले तुमने प्रण किया था कि हम शस्त्र नहीं चलाकर केवल रथवानी करके शंख बजावेंगे और हमने प्रतिज्ञा की थी जो मैं भीष्मपितामह कि आपको लड़ाई में विकल करके तुम्हारा प्रण छुड़ाकर तुमसे अस्त्र धराऊं सो आपने भक्त-पक्षकी राह से विचारा कि मेरा प्रण छूटजावे तो सन्देह नहीं पर मेरे भक्तकी प्रतिज्ञा न छूटै यह समझ कर जब मैंने अर्जुनके रथका पहिया तोड़कर घोड़ोंको मारडाला और उसके रथकी ध्वजा व धनुष काटके गिरा दिया तब आप क्रोध करके उसी रथका टूटा हुआ पहिया उठाकर मेरे मारनेके वास्ते दौड़े उससमय तुम कैसे सुन्दर मालूम देते थे जैसे श्याम घटा बिजुली के साथ बड़े धूमधामसे चढ़े दौड़ते समय तुम्हारा पीताम्बर जो ओढ़े थे पृथ्वीपर गिरपड़ा उसके गिरनेका यह कारणहै जब आपने प्रतिज्ञा छोड़कर शस्त्र धरा तब पृथ्वी यह समझकर मारे डरके कांपने लगी कि श्यामसुन्दने मेरा भार उतारने के वास्ते अवतार लियाहै कहीं वह भी अपना प्रण न छोड़ देवैं पृथ्वीके हृदयकी बात तुमने जानकर उसको धैर्य देनेके वास्ते अपना पीताम्बर गिरादिया कि तू मत डर अपने भक्तोंका प्रण रखनेके वास्ते मैंने अपनी प्रतिज्ञा छोड़ी है तेरा भार हम उतारेंगे जिसतरह कोई मनुष्य अपनी वस्तु दूसरेके बोध करनेवास्ते गिरौं धरदेताहै उसीतरह तुमने अपना पीताम्बर गिराकर पृथ्वीको धैर्य दिया और जब मैं चाहता था कि सब सेना पाण्डवोंकी मारकर हटा दूं तब तुम मेरे रथके चारों तरफ आनकर अपने अनेक रूप दिखलाते थे जिसमें मेरा चित्त घबड़ा जावै जब मैं अनेकरूप देखनेसे विकल होकर यह नहीं समझता था कि इसमें कौन रूप सत्य और कौन स्वरूप मायाका है तब फिर तुम अपने निजरूपसे रहिकर मेरी बहुत प्रशंसा करते थे जब मैं उन बातोंको समझता हूं तब मुझे बड़ीलज्जा आती है और अपनेको अपराधी समझकर आपके सामने अपना मुँह नहीं दिखलानेसक्ता आप दयालु अपने भक्तोंको ज्ञान देकर उनका मनोरथ पूर्ण करनेवाले हैं इसलिये तुमने मुझे जो मरनेके निकट पहुँचा था विना बुलाये आनकर अपना दर्शन

दिया नहीं तो मरती समय बड़े बड़े मुनि और ऋषीश्वर और ज्ञानियोंको ध्यानमें भी तुम्हारा दर्शन जल्दी नहीं मिलता किसवास्ते कि अन्त समय मनुष्यको इतना दुःख होताहै जितना कष्ट साठहज़ार बिच्छूके डंक मारनेसे एकबार होताहै इसलिये उससमय पीड़ासे मनुष्य अचेत होकर उसका चित्त ठिकाने नहीं रहता उससमय तुम्हारी कृपा होनेसे जिसका ज्ञान बना रहता है वह आदमी तुम्हारे चरणोंका ध्यान हृदयमें रखकर भवसागर पार उतरजाता है इसलिये मैं तुमसे यही चाहता हूं कि यह स्वरूप आपका मेरी आंखोंके भीतर बसकर तुम्हारे चरणों में मेरा मन लगा रहै यह स्तुति करनेउपरान्त भीष्मपितामह ने ध्यान ज्योतिस्स्वरूप का हृदय में रखकर श्यामसुन्दर और सब ऋषीश्वर और मुनीश्वरोंको दंडवत् करके अपनी आंख बन्द करलिया और योगाभ्यासके साथ अपना तन छोड़कर वैकुंठ-वास पाया उससमय देवतोंने आकाशसे उनपर फूलोंकी वर्षा किया ॥

ग्यारहवां अध्याय।

राजा युधिष्ठिरका राजगद्दी पर बैठना और भीष्मपितामहका क्रियाकर्म करना और परीक्षितके मारनेवास्ते अश्वत्थामाका ब्रह्मास्त्र चलाना जो उत्तरानाम अभिमन्युकी स्त्रीके पेटमें था व श्यामसुन्दरका परीक्षितकी रक्षा करना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा कि भीष्मपितामह के मरनेका शोच श्रीकृष्णजी व पाण्डवोंने बहुतसा किया फिर मुरलीमनोहरने राजा युधिष्ठिरको समझाया कि जिसतरह की मृत्यु संसारमें भीष्मपितामह ने पाई इस तरहकी मृत्यु दूसरेको पाना बहुत दुर्लभ है संसारमें जिसने तन धारण किया वह एक दिन अवश्य मरेगा इसवास्ते इनके मरनेका शोक छोड़कर हर्ष मानना चाहिये जो कोई मनुष्यका तन पाकर संसारी माया मोहमें फँसा रहै व परमेश्वरसे विमुख रहिकर जन्म अपना वृथा गँवावै उसके वास्ते रोना उचितहै सो भीष्मपितामह संसारमें भक्तिपूर्वक व धर्म-संयुक्त रहिकर शरीर त्यागने उपरांत वैकुंठको गये इसलिये इनके मरनेका शोक करना न चाहिये यह वचन सुनकर राजा युधिष्ठिरने अपने मनको धैर्य दिया व श्यामसुन्दरकी आज्ञा से भीष्मपितामहकी क्रिया और कर्म

किया जब मुरलीमनोहर व ऋषीश्वर और मुनीश्वरोंने राजा युधिष्ठिर को हस्तिनापुरमें लाकर राजगद्दीपर बैठाला तब श्रीकृष्णजी महाभारत होने व पृथ्वीका भार उतारनेसे बहुत प्रसन्न होकर बोले हे राजन् तुम प्रजाका पालन करके कुलपरिवार समेत राज्यका सुख भोगो और जो कुछ तुम्हारे मनमें शोचहै उसको छोड़ दो यह बात मुरलीमनोहरने राजाको समझा कर उनसे अश्वमेध यज्ञ कराया व कुछदिन वहां रहिकर राजा युधिष्ठिरसे कहा अब हम द्वारकापुरीको जावेंगे जिससमय श्यामसुन्दर द्वारका जाने की इच्छा रखते थे उसीसमय अश्वत्थामाने शिर मूड़ने और मणि निकाल लेने की लज्जासे ब्रह्मास्त्र राजा युधिष्ठिर आदि पांचों भाइयोंके जलानेवास्ते चलाया जब वह अस्त्र अपना पांच मुँह बनाकर पांडवोंकी तरफ आया व एक छोटासा अंगारा उस अस्त्रका उत्तरा के पेटमें जो गर्भवती थी घुसगया व उसके उदर में आग जलने लगी तब वह उस जलनेसे व्याकुल होकर नंगेशिर दौड़ी हुई कुन्तीके पास चलीगई जब कुन्ती ने उसको अपने साथ श्यामसुन्दरके पास लेजाकर उसके पेट में आग जलने का हाल कहा तब श्रीदुःखभंजनने सुदर्शन चक्रको आज्ञा दी कि तुम उत्तराके पेटमें जाकर ब्रह्मास्त्रकी गर्मी से रक्षा करो और आप भी श्रीकृष्णजी अंगुष्ठप्रमाण अपना रूप धरकर उत्तराके पेटमें चलेगये और गदा हाथमें लेकर वहां घुमाने लगे उससमय परीक्षितने सांवली सूरति मोहनी मूरतिका दर्शन पाने से चैतन्य होकर उनको दूसरा बालक अपनी माताके पेट में समझा जब अश्वत्थामाका ब्रह्मास्त्र जो युधिष्ठिर आदिकके जलानेवास्ते पांचमुँह बनाकर गया था श्यामसुन्दर की भक्ति रखने व सुदर्शन चक्रके रक्षा करने से उन पांचों भाइयों को जलाने की सामर्थ्य न रखकर फिर आया तब अश्वत्थामाने उस अग्निको मंत्रके बलसे बुझादिया व उत्तरा राजा विराट्की बेटी अपनी जातिके अभिमान से गुरुमुखभी न होकर हरिचरणों में अच्छीतरह विश्वास व प्रेम नहीं रखती थी इसलिये एक अंगारा ब्रह्मास्त्र का उसके पेटमें चलागया था सो कुन्तीके कहने से श्यामसुन्दरने उसकी भी रक्षा किया जब वैकुंठ

नाथ द्वारका जानेलगे तब कुन्ती व द्रौपदी व राजा युधिष्ठिर व अर्जुन व भीमसेन व नकुल व सहदेवने उनके सामने हाथ जोड़कर कहा हे दीनानाथ तुम्हारे जानेसे हम लोगोंको बड़ा दुःख मालूम होताहै अब हमारी रक्षा यहां कौन करैगा जितना सुख हमको तुम्हारे चरणोंके दर्शन पानेसे मिलता था उतना आनन्द इस राजगद्दी मिलनेसे नहीं है तुम्हारे चरण देखे विना हमलोगोंको धैर्य किसतरह होगा और कुन्ती हाथ जोड़ कर बोली हे महाप्रभु अब तक मैं तुमको अपने भाईका बेटा समझकर तुम्हारी महिमा नहीं जानती थी अब मुझे विश्वास हुआ कि आप परब्रह्म परमेश्वरका अवतार होकर संसारी जीवोंकी उत्पत्ति व पालन व नाश करतेहैं और मेरे बेटोंने महाभारतमें तुम्हारी कृपासे विजय पायाहै और आप सब ऋषीश्वर और मुनि अपने भक्तोंको दर्शन देने और भवसागर पार उतारने और धर्मकी रक्षा करने के वास्ते सगुण रूप धरते हैं नहीं तो तुमको क्या प्रयोजन था जो सब जीवोंके मालिक होकर मत्स्य और शूकरादिकका अवतार लेते तुमने वसुदेव व देवकीके घर जन्म लेकर उनको एक बेर कैदसे छुड़ाया मुझे और मेरे बेटोंपर जब जब कष्ट पड़ा तब तब तुमने दया की राह आनकर हमलोगों का दुःख दूर किया अब मैं ऐसा जानती हूं कि तुम हमलोंगोको राज्य देकर जाते हो इसलिये हमारी सुधि भूलिजावोगे सो मुझे राज्यकी इच्छा न होकर फिर उसीतरह विपत्ति व वनवास चाहिये जिसमें तुम्हारा दर्शन सदा होता था यह सुख व राज्य किस कामका है जहां तुम्हारा दर्शन न मिलै धन पानेसे अभिमान अधिक होकर तुम्हारा भजन नहीं बनिपड़ता इसलिये तुम दीन पर अधिक दयालु होते हो मनुष्यके वास्ते वह बात अच्छी होती है जिसमें परमेश्वरका ध्यान बना रहै राज्य व द्रव्य पानेसे मनुष्य संसारी सुखमें भूलकर परमेश्वरका प्रेम छोड़ देता है और आप सबके मालिक और ईश्वर होकर किसीका डर नहीं रखते सूर्य और चन्द्रमा तुम्हारी आज्ञासे दिन रात्रि फिरा करते हैं और अपने भक्तोंपर तुम ऐसी कृपा और दया करते हो कि यशोदांपर दयालु होकर तुम अपनी इच्छासे

ऊखलमें बँधिगये नहीं तो तीनों लोकमें कौन ऐसाहै जो तुम्हारी तरफ आंख उठाकर देखसके जहां कालादिक तुमसे डरकर कांपते हैं वहां तुम यशोदाकी छड़ीसे डरते थे यह सब लीला आपने अपने भक्तों के सुख देनेवास्ते संसारमें किया है अब मैं यह चाहती हूं कि बेटा व भाई आदि सब परिवारकी प्रीति मेरे मनसे छूटिकर आठोंपहर तुम्हारे चरणोंका ध्यान हृदयमें बनारहै जिसके प्रभावसे भवसागर पार उतरजाऊं जब यह बात कहकर कुन्ती श्यामसुंदरके जाने का शोच करके अतिविलापसे रोने लगी तब मुरलीमनोहर अपनी माया फैलाने के उपरांत मुसकराकर बोले हम तुमको नहीं भुलावेंगे तुम हमारी माताकी जगह हो हमको द्वारका से आये बहुतदिन हुये अब वहां जाकर सब किसीको देखेंगे सात्यकी व ऊधो हमारे साथी चलनेके वास्ते जल्दी करतेहैं यह वचन सुनके राजा युधिष्ठिरने अर्जुन से कहा हे भाई तुम अपनी सेना व शूरवीर साथ लेकर श्यामसुंदरको बड़े यत्नसे द्वारकामें पहुँचाय दो किसवास्ते कि मेरे शत्रु बहुत हैं और मुरलीमनोहर महाभारत की लड़ाई में हमारे सहायक थे ऐसा न हो जो कोई हमारा शत्रु राहमें उपाधि करै जब अर्जुन राजा युधिष्ठिरकी आज्ञा पाकर श्रीकृष्णजीके साथ द्वारका जानेवास्ते तैयार हुये और श्यामसुन्दर सब किसीसे बिदा होके रथपर बैठकर चले तब राजा युधिष्ठिर आदि सब हस्तिनापुरवासी त्रिभुवनपतिके स्नेहमें विलाप करते हुये उनके पीछे दौड़े व सब स्त्रियां वहां की रुदन करके आपसमें कहने लगीं कि देखो धन्य भाग्य व्रजकी अहीरिनियोंके हैं जो श्याम-सुन्दर त्रिभुवनपतिके साथ रासलीला करके अपना जन्म सुफल करती थीं और बड़े भाग्य रुक्मिणी आदि सोलहहजार एकसौ आठ स्त्रियोंके समझना चाहिये जो ऐसा सुन्दर मोहनीमूर्ति स्वामी पाकर उनके साथ भोग और विलास करतीहैं ऐसी ऐसी बातें एक दूसरीसे कहकर श्यामसु-न्दरपर फूल वर्षावती थीं व केशवमूर्ति उनकी बातें सुनके व सच्चाप्रेम देख कर अपनी तिरछी चितवनसे उनको देखते व सुख देते हुये चलेजाते थे उस दिन श्रीकृष्णजीके वियोगका दुःख जितना हस्तिनापुरवासियों को

हुआ उसका हाल वर्णन नहीं होसक्ता जब श्रीदीनानाथने देखा कि यह सब मेरे प्रेममें दूर तक चले आये तब अपना रथ खड़ा करके सब किसी को धैर्य देकर बिदा किया तब वह लोग पछताते हुये हस्तिनापुर फिरगये॥

बारहवां अध्याय।

पहुँचना श्रीकृष्णमहाराजका द्वारकापुरीमें व हर्ष मनावना सब द्वारकावासियों का॥

सूतजीने कहा जब सब कोई हस्तिनापुर फिर गये तब श्यामसुन्दर अर्जुनसे बोले कि रथको जल्दी चलाओ यह वचन सुनकर अर्जुनने रथ हांका जब सेना मोहनीमूर्तिकी विदर्भदेश व कुंडिनपुर व कुन्तिदेश व पंजाब व कश्मीरकी राहसे होती हुई चली तब राहमें सब देशके राजोंने आनकर अपने अपने देशकी सौगाति वृंदावनविहारीको भेंट दिया व उनका दर्शन करके अपना जन्म सुफल जाना व राहवाले श्यामसुन्दरका दर्शन पाकर इसतरह उनकी स्तुति करते थे कि देखो इन्हीं परब्रह्म परमेश्वर ने पृथ्वीके भार उतारनेवास्ते संसार में जन्म लियाहै जिनका दर्शन ब्रह्मा व महादेव आदि देवताओंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता उनका दर्शन हमलोगोंको बड़े भाग्यसे प्राप्त हुआ और इन्होंने कौरव व पांडवोंसे महाभारत कराके पृथ्वीका भार उतारा व अनेक मनुष्य कहते थे धन्य भाग्य यदुवंशियों के हैं जो इनको अपना नातेदार समझकर दिन रात्रि इनकी सेवामें रहते हैं इसीतरह सब छोटे बड़े उनकी महिमा व लीला कहिकर प्रसन्न होते थे जब तीसरे दिन द्वारकापुरीके निकट पहुँचकर पांचजन्य शंख अपना बजाया तब सब द्वारकावासी मुरलीमनोहर के आनेका हाल जानकर बहुत आनन्द होगये श्रीकृष्णजी सांब अपने पुत्र व अनिरुद्ध पौत्रको द्वारकापुरीकी रक्षा करनेके वास्ते छोड़गये थे यह दोनों शंखध्वनि सुनतेही अपनी सेना व यदुवंशी व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको साथ लेकर गावते व बजावते मुरलीमनोहरको आगे से लेनेके वास्ते गये व नगरमें ढिंढोरा पिटवा दिया कि सबकोई गली व सड़क व अपने अपने द्वारेपर मंगलाचार करें सो सब द्वारकावासियोंने नगर में चन्दनादिक सुगन्ध उड़नेके वास्ते छिड़कवादिया व अपने अपने द्वार

पर सब स्त्रियां अच्छा अच्छा गहना व कपड़ा पहिनकर आरती लेकर वृन्दावनविहारीके पूजा करनेवास्ते खड़ी होगईं व अनेक स्त्रियां सोलहों शृंगार करने उपरांत अपने अपने खिड़की व कोठोंपर बैठ व खड़ी होकर बांकेविहारीकी छवि देखनेके वास्ते इच्छा करने लगीं जिससमय वह सांवलीसूरति मोहनीमूरति बड़ी तय्यारी से द्वारकापुरीमें आये उससमय सब छोटे बड़ोंने उनका दर्शन पाकर फूलोंकी वर्षा किया व जिसतरह मुर्देके तनमें प्राण आजावें उसीतरह सबोंने नया जन्म पाकर हर्ष मनाया और मुरलीमनोहरने मिलतीसमय बड़ोंको दंडवत् व बराबरवालोंसे गले मिलकर छोटोंको आशिष दिया व प्रजालोगोंकी भेंट हाथसे छूकर उनका सन्मान किया और अपने मन्दिरमें जाकर माता व पिताके चरणोंपर शिर रक्खा वसुदेव व देवकी व राजा उग्रसेन पांडवोंकी विजय होना सुन कर बहुत प्रसन्न हुये और सब द्वारकावासियोंने दीनानाथसे कहा महाराज हमलोग तुम्हारे देखे विना अन्धे होरहे थे जिसतरह अँधियारी रातिमें विना चन्द्रमा आंख होनेसे भी कुछ दिखलाई नहीं पड़ता और आंखवाला चन्द्रमाको याद करता है वही हाल हमारा था व द्वारकावासी स्त्रियां श्यामसुन्दरको देखकर इसतरह प्रसन्न हुईं जिसतरह चकोर चन्द्रमाके देखनेसे आनन्द होजाताहै और जब श्यामसुन्दर महलों में पहुँचे तब रुक्मिणी आदि सब स्त्रियोंने अपने अपने महलमें खड़ी होकर उनका बड़ा सन्मान किया और उन्होंने जो नन्दलालजीके पीछे अच्छा गहना और कपड़ा नहीं पहिनती थीं उसदिन प्रसन्न होकर अपना अपना शृंगार किया और एक साइतमें श्यामसुन्दर अपना अनेक रूप धारण करके सब महलोंमें गये और सब छोटे बड़े द्वारकावासियों को सुख दिया ॥

तेरहवां अध्याय ।

परीक्षित का जन्म लेना और राजा युधिष्ठिर का हर्ष मानना व धृतराष्ट्र और गान्धारीका जंगलमें जाना व कथा माण्डव्यऋषीश्वरकी ॥

सूतजीने कहा हे ऋषीश्वरो दूसरे शास्त्र व पुराण सुननेसे बहुत दिन में परमेश्वरकी भक्ति उत्पन्न होतीहै और जब भागवत कथा सुननेकी

कोई इच्छा करै उसीसमय उसके पापोंका तीन टुकड़ा होकर एक भाग सुननेकी इच्छा करते व दूसरा जाते समय व तीसरा श्रवण करनेसे छूट जाताहै व दूसरे धर्म यज्ञ व्रतादिक सम्पूर्ण होनेसे उसके फल मिलतेहैं और भागवत जितना सुनै उतना फल पावै सो राजा युधिष्ठिरको हस्तिनापुरकी राजगद्दी होनेपर भी श्यामसुन्दरके दर्शन पावने विना कुछ अच्छा नहीं लगता था दिन रात उन्हींके चरणोंका ध्यान अपने हृदयमें रखकर राजकाज करते थे सो तुमलोग अब परीक्षितके जन्म लेनेका हाल सुनो जब परीक्षित उत्तराके पेटसे उत्पन्न हुआ तब आंख खोलकर चारोंतरफ इस इच्छासे ताकनेलगा कि जो स्वरूप मैंने माताके उदरमें देखा था वह कहांहै परन्तु इस भेदको किसीने नहीं जाना और राजा युधिष्ठिरने बड़े उत्साहसे नान्दीमुख श्राद्ध किया व मंगलाचार मनाकर ब्राह्मण व याचकों को मुँह मांगा दान व दक्षिणा दिया जब ज्योतिषी पंडितोंको बुलाकर जन्मलग्नका हाल पूंछा तब पंडितोंने विचारकर कहा यह बालक जन्म लेतेही आंख खोलकर सबकी परीक्षा लेता था इसलिये परीक्षित नाम रक्खो यह लड़का बड़ा प्रतापी व बलवान् और नीतिमान् और धर्मात्मा राजा होगा प्रजालोग इससे बड़ा सुख पावैंगे और तुम्हारा नाम और कीर्ति व यश इस बालकसे चारों दिशामें अधिक फैलेगा व बुद्धिमें बृहस्पति व धैर्यमें हिमाचल और गम्भीरतामें समुद्र शूरतामें परशुराम व दातामें महादेव व सुखविलास करने में इन्द्र व सत्य बोलनेवालोंमें तुम्हारे समान यह लड़का होकर राजऋषिमें इसकी गिनती होगी व अधर्मी व पापी कलियुगको दण्ड देकर प्रजाका पुत्र की तरह पालन करैगा व अन्तसमय जब एक बालक ऋषीश्वरका इसे शाप देगा तब तक्षक सर्पके काटनेसे इस बालककी मृत्यु गंगाकिनारे होगी यह बात सुनकर राजाने उदास होके ज्योतिषियोंसे पूंछा तुम सत्य बतलाओ किसी ब्राह्मणके क्रोधसे तौ नहीं मरैगा सांपकाटने से मरना हमारे कुलमें अच्छा होताहै ऐसा न हो जो किसी महात्मा व ब्राह्मण व साधु व संतके शाप व क्रोधसे मरे ज्योतिषियोंने कहा हे युधिष्ठिर यह लड़का तुम्हारे कुलमें हरिभक्त होकर साधु व

ब्राह्मण व महात्माओं की सेवामें रहेगा व मरतीसमय श्यामसुन्दरके चरणों का ध्यान हृदयमें रखकर तन त्याग करैगा ऐसा प्रतापी व परमेश्वरका भक्त आजतक तुम्हारे कुलमें दूसरा कोई नहीं हुआहै तुमको विपत्ति पड़ने से परमेश्वरकी भक्ति हुईथी और इसको लड़कपनसे हरिचरणों में भक्ति व प्रीति रहेगी यह बात सुनतेही युधिष्ठिर आदिक बहुत प्रसन्न हुये व ज्योतिषियोंको दक्षिणा देकर बिदा किया और आपसमें उन्होंने कहा पांचभाई में परमेश्वरने यह लड़का भाग्यवान् दिया है इससे हमारा नाम संसारमें स्थिर रहेगा यह बात समझकर सब छोटे बड़े आनन्द हुये व राजा युधिष्ठिर राजगद्दी और प्रजापालनका काम अच्छीतरह नीति और धर्मके साथ करनेलगे पर मनमें संसारी माया मोहसे वह विरक्त रहकर दिनरात यही इच्छा रखते थे कि परीक्षित सयाना होजावै तो उसको राजगद्दी पर बैठालकर वनमें चलेजायँ और परमेश्वरका भजन व स्मरण करके अपना परलोक बनावैं व धृतराष्ट्र अपने चाचा व गान्धारी चाचीको जिनके पुत्र महाभारत में मारेगये थे आदरपूर्वक रखकर उनकी आज्ञानुसार राजकाज करते थे व उन्हें दिन रात्रि इस बातका ध्यान बना रहता था कि किसीतरह दुःख धृतराष्ट्र और गान्धारी को न होवै दुःख पानेसे उनको दुर्योधनआदि अपने पुत्रोंके मारेजानेका बड़ा शोच होगा व धृतराष्ट्रने सेवा करना व आज्ञा मानना राजा युधिष्ठिरका देखकर कहा हे राजन् मैं मनसे कभी यह बात नहीं चाहता था कि तुम्हारे साथ शत्रुता करूं पर न मालूम कौन मेरी बुद्धि फेर देता था यह वचन सुनकर राजा युधिष्ठिर बोले हे चाचा दिनभर लड़ाई करके जब सन्ध्याको मैं डेरेपर आता था उससमय यह विचार करता था कि चारदिन के जीवनके वास्ते अपने भाईबन्धुको मारना उचित नहीं है काल्हिसे महाभारत बन्द करूंगा जब प्रातसमय सोकर उठता था फिर लड़ाई की तय्यारी करके युद्ध करता था इसलिये समझना चाहिये कि सबके भाग्यमें इसीतरह मृत्यु लिखी थी हरिइच्छामें कोई युक्ति नहीं लगती जो ईश्वरने चाहा सो किया ऐसी बातैं कहकर राजा युधिष्ठिर धृतराष्ट्र व गान्धारीका बोध करते

थे और राजा युधिष्ठिर के राज्यमें ऐसा धर्म था कि श्यामसुन्दरकी दयासे प्रजाकी इच्छानुसार पानी वर्षकर विना काल फूल व फल वृक्षोंमें लगे रहते थे व सब छोटे बड़े आनन्दसे रहकर बाघ व बकरी एक घाट पानी पीते थे जब उन्हीं दिनों में विदुरजी एक वर्षके उपरान्त तीर्थयात्रा करतेहुये यमुना किनारे मैत्रेय ऋषीश्वर के स्थानपर आये तब उन्होंने ऋषीश्वरसे मारेजाने का हाल दुर्योधन आदि कौरवों व युधिष्ठिरका राजगद्दीपर बैठना सुनकर बड़ा शोच किया और यह भी विदुरजीको वहां मालूम हुआ कि राजा युधिष्ठिर धृतराष्ट्र व गान्धारीको अपने स्थान में सुख व सन्मानसे रखतेहैं यह समाचार सुनकर विदुरने चित्तमें बड़ा खेद करके कहा देखो बड़े आश्चर्यकी बातहै कि धृतराष्ट्रका मन ऐसी विपत्ति पड़ने व राज्य छूटने व सौ बेटोंके मारेजानेमें भी अभीतक संसारी मायासे विरक्त नहीं हुआ व राजा युधिष्ठिरके यहां रहने के वास्ते चाहता है इस लिये हम धृतराष्ट्रको संसारी मोह छुड़ाने की राह दिखला देवैं तो इसमें उनका भला होगा जब ऐसा विचारकर विदुरजी ने परमेश्वरकी इच्छाके ऊपर सन्तोष किया व हस्तिनापुरमें राजमंदिर पर गये तब राजा युधिष्ठिर ने बहुत आदर व सन्मान करके हाथ जोड़कर उनसे कहा कि तुमने हमारे कुलमें श्यामसुन्दरके भक्त उत्पन्न होकर बड़ी कृपासे अपना दर्शन हमको दिया व अपने चरणोंसे कि तुम्हारे हृदयमें आठोंपहर परमेश्वरका वास रहताहै हमारा घर पवित्र किया हे विदुरजी तुमने हम पांचो भाइयों को लड़कोंके समान पालन करिकै बड़े दुःख में हमारी सहायता किया है जिससमय दुर्योधन आदि कौरवोंने हम लोगोंको लाहके कोटमें रखकर चाहा था कि जलाकर मारडालैं उससमय तुमने दयाकी राह पहिलेसे वहां सुरंग खुदवाकर हमारा प्राण बचाया बहुत अच्छा हुआ जो आप आये कहिये कौन कौन तीर्थोंपर गये थे प्रभासक्षेत्रमें भी गये हो तो कुछ हाल श्यामसुन्दरका वतलाओ जबसे मुझको राज्य देकर गयेहैं तबसे उनका कुछ समाचार नहीं पाया विदुरजीने दूसरे तीर्थोंका हाल वर्णन किया पर सब यदुवंशियोंका माराजाना व श्रीकृष्णजीके अन्तर्धान होनेका

समाचार इसलिये नहीं कहा कि अर्जुन आनकर सब हाल कहेगा कदाचित् मैं कहताहूं तो राजा युधिष्ठिरको बड़ा दुःख होगा अच्छे लोग यह कहगये हैं कि ऐसी बात किसीके सामने न कहना चाहिये जिसके सुनने से मन उसका दुःखित हो जब महल में स्त्रियोंने विदुरके आनेका हाल सुना तब द्रौपदी आदिने विदुरको परमेश्वर का भक्त जानकर दंडवत् किया व सब हस्तिनापुरवासी उनके आनेसे प्रसन्न होगये जब विदुरजी ने वहांसे धृतराष्ट्र के द्वारपर जाकर उन्हें व गांधारीको दंडवत् किया तब धृतराष्ट्र ने विदुरसे गले मिलने के उपरांत रोकर कहा हे भाई तुम्हारे जाने के पीछे मेरे ऊपर बड़ा दुःख पड़ा व हमारे सब बेटे मारेजाकर राजगद्दी नष्ट हुई यह बात सुनकर विदुरजी बोले हे भाई मुरलीमनोहर की इच्छा इसीतरह पर थी उन्होंने पृथ्वी का भार उतारने के वास्ते अवतार धारण किया था अब कहो राजा युधिष्ठिर तुम्हारी प्रीति व खानेपहिरने का सत्कार किसतरह पर करते हैं धृतराष्ट्र ने कहा राजा युधिष्ठिर मुझसे बड़ा प्रेम रखकर हमें अपने बाप और गान्धारीको माताकी जगह जानते हैं व अर्जुन भी हमारा बहुत आदर करता है पर भीमसेन राजा युधिष्ठिरके पीछे मुझे दुर्वचन सुनाकर यह कहता है कि जब दुर्योधन तुम्हारा बेटा राजगद्दीपर वर्त्तमान था तब तुमने विष मिलाकर लड्डू मेरे खानेको भेजा व पांचों भाईको लाहके कोटमें रखकर हमारे जलानेके वास्ते अग्नि लगवा दिया अब तुम अपना पालन हमसे चाहते हो तुम्हारे बराबर दूसरा कोई पापी और अधर्मी जगत् में न होगा यह वचन भीमसेनका मुझसे सहा नहीं जाता और यह बातें कहकर फिर मुझे धमकी देताहै कि राजा युधिष्ठिरसे मेरी चुगली खाओगे तो खाने विना तुमको मारडालूंगा यह हाल सुनकर विदुरजीने बड़ा खेद करके मनमें कहा देखो परमेश्वरकी माया ऐसी प्रबलहै कि इतनी दुर्दशा होनेपर भी धृतराष्ट्र व गांधारी घरको नहीं छोड़ते जिसतरह लालची मनुष्य पुराने कपड़ोंको त्याग नहीं करता और वह चिथड़ा उसके पास सदा नहीं रहकर एकदिन नष्ट होजाता है उसी तरह यह तन इनका सदा स्थिर नहीं रहेगा बुढ़ाई होने पर भी इनको

अपने तनकी प्रीति नहीं छूटती इसलिये इनको ज्ञान सिखलाकर संसारी मायासे विरक्त करदेना चाहिये जिसमें इनकी मुक्ति हो यह बात विचारकर विदुरजीने धृतराष्ट्र से कहा सुनो भाई यह बात भीमसेनकी सत्य जानकर अब तुमको राजा युधिष्ठिर के घरमें किसी तरह रहना उचित नहींहै तुमने अपने राज्य भोगनेके समय अधर्मसे कैसा कैसा दुःख भीमसेनको दिया था व दुर्योधन तुम्हारे बेटाने मध्यसभामें द्रौपदी उसकी स्त्रीको चीर खिंचवाकर नंगी करने चाहा व भीमसेनको विष देकर पांचो भाई पांडवों को लाहके कोटमें रखिके आगि लगवादिया व सब राज्य व धन उनका छलसे जुयेंमें जीतकर तेरहवर्ष वनवास दिया यह बात तुमको याद होगी अब तुम उन्हींके हाथ से इस शरीरको जो सदा स्थिर नहीं रहेगा पालते हो व तुम्हारा जन्मभर सन्तान व संसारी माया मोहमें बीतकर अब तुम बूढ़े हुये और सब पुत्र तुम्हारे मारेगये तिसपर तुम राजा युधिष्ठिरके घरमें रहकर कहतेहो कि राजा हमको अच्छीतर रखतेहैं व इतना दुःख उठाने पर भी तुम्हारा मन विरक्त नहीं होता हे भाई हमने सुना था कि परमेश्वरकी माया बड़ी प्रबलहै सो तुमको अपनी आंख से देखा कि सब बेटे व पोते तुम्हारे मारेजाकर राजगद्दी जाती रही व तुम भी मरनेके निकट पहुँचे और जिस भीमसेनने तुम्हारे बेटोंको मारा उसी के हाथ से रोटी लेकर खाते हो तुमको लज्जा नहीं आती तुम्हारे ऐसे खाने और जीनेपर धिकारहै जिसतरह कुत्ता लाठी मारनेसे भागकर टुकड़ा रोटीका देने से फिर उसको खा लेताहै इसीतरह तुम्हारी भी गति समझना चाहिये हे भाई बुढ़ाई आनेपर भी तुमको अपने जीनेकी आशा बनी रहकर तुम्हारा मन संसार से विरक्त नहीं होता व तुम सदा अमर न रहोगे इसलिये तुमको यहांसे उत्तराखंडमें चलना उचित है वहां हरिचरणों में ध्यान लगा कर अपना शरीर त्याग करो जिसमें तुम्हारी मुक्ति बने संसार में तुम्हारी यह गति हुई अब अपने परलोकको भी क्यों बिगाड़ते हो यह वचन सुन कर धृतराष्ट्रने कहा हे भाई तुम सत्य कहते हो हमारे मनमें भी इसी बात की इच्छा है पर हम स्त्री पुरुष दोनों मनुष्य आंखोंसे अन्धे लाचार हैं

किसतरह उत्तराखंड को जावें तब विदुरजी बोले हम दोनों मनुष्योंको अपना हाथ पकड़ाकर अच्छी तरह ले चलेंगे तुम हमारे बड़े भाई हो तुम्हारी सेवा हमको करना उचित है जब तक तुम जीवोगे तब तक मैं साथ रहकर तुम्हारी टहल अच्छी तरह करूंगा यह वचन विदुरका धृतराष्ट्र व गान्धारी मानकर दोनों मनुष्य आधीरातको विदुरजीके साथ राजा युधिष्ठिर से विना कहे उत्तराखंडको हरद्वारकी तरफ चले गये आगे आगे विदुरजी धृतराष्ट्रका हाथ पकड़े और गान्धारी अपने पतिका हाथ धरेहुये चलीगईं जब प्रातसमय राजा युधिष्ठिर स्नान और नित्य नियम करके माता व पिताको दंडवत् करनेके वास्ते उनके स्थानपर गये तब मकान सूना पाकर बड़ा शोच करके मनमें विचार किया कि वह लोग अपने बेटोंके शोकमें या मुझसे दुःखित होकर न मालूम कहां चलेगये या मेरा कुछ अपराध समझकर गंगामें डूबमरे जब राजा युधिष्ठिर यह बात कहकर रोने लगे व संजय से जो वहां पर था पूछा कि हमारे माता व पिता आंखोंके अन्धे जिन्होंने मुझे बड़े प्रेमसे पाला था कहां चले गये तुम उनका हाल कुछ जानते हो संजयने कहा मैं यह नहीं जानता वह कहांको गये पर विदुरजी उनसे कुछ बातें करते थे उन्हींके साथ वह गये हैं यह बात सुनकर राजा युधिष्ठिर राजसिंहासनपर आके बड़ी उदासी में बैठे थे कि उसी समय नारदजी वहां आये राजाने उनको दण्डवत् करके बड़े आदरसे बैठालकर पूछा महाराज हमारे माता व पिता न जाने कहां चलेगये कोई वनका पशु उनको खाजायगा या कहीं कुये में गिरकर मर जायँगे उनका हाल आपको कुछ मालूम हो तो बतला दीजिये हम जाकर प्रार्थना करके उनको फेरलावें वह खाने पीने विना दुःख पाते होंगे आपने बड़ी कृपा किया जो इस महाकष्टमें हमारे पास आये नारदमुनि यह बात सुनकर बोले हे राजन् यह मायारूपी संसार झूठा होकर जगत्में जो उत्पन्न हुआ वह एक दिन अवश्य मरेगा इसीवास्ते परमेश्वर ने इसका नाम मर्त्यलोक रक्खाहै सो तुम धृतराष्ट्र व गान्धारीके जानेका वृथा शोच करते हो दुःख व सुख किसीके आधीन नहीं रहता यह दोनों वस्तु परमे-

श्वरके हाथके बीचहैं जिस तरह खेलते समय बहुत से बालक एक जगह इकट्ठे होकर सम्पूर्ण खेल होनेके उपरान्त अलग होजाते हैं उसीतरह नारायणजी संसारको रचिकर फिर गुप्त करदेते हैं और जो तुम उनके खाने और पहिरनेका शोच करते हो यह भी परमेश्वर के आधीन समझो जब बालक गर्भमें रहताहै तब उसे कौन खानेको देता है जिसकी जीविका परमेश्वरने जहां बनादिया उसी जगह वह उसको पहुँचाता है इसलिये उनकी चिन्ता करना न चाहिये जिसतरह मनुष्य बैलको नाथकर जिधर चाहे उधर लेजाताहै उसका कुछ वश नहीं चलता उसी तरह संसारी मनुष्य अपनी स्त्री व बालक व धनके जालमें मायारूपी रस्सीसे बँधे हैं जिसके ऊपर परमेश्वर दयालु होकर किसी सन्त व महात्मासे भेंट करा देवें तब वह मनुष्य ज्ञान सीखकर इस मायारूपी फंदेसे छूटके मुक्तिपदवीपर पहुँचताहै सो हे राजन् तुम धृतराष्ट्र व गान्धारीके वास्ते कि वह बूढ़े होकर थोड़ेदिन उनके मरनेमें रहे हैं कुछ चिन्ता मत करो व वह दोनों तुम्हारे माता व पिता विदुरजीके ज्ञान सिखलावने से विरक्त होकर उनके साथ हिमाचल पहाड़के दक्षिण सप्तऋषीश्वरोंके स्थानपर चलेगये हैं वहां जाकर हरिचरणोंका ध्यान करके आजके सातवेंदिन अपना तन त्याग करेंगे अब उन्होंने संसारी माया तजिकर अपने शरीरका भी मोह छोड़ दिया इस समय तुमको उनका फेरलाना उचित नहीं है शोच उसके वास्ते करना चाहिये जो हरिभक्ति से विमुख हो और जो मनुष्य संसारी जालसे छूटकर परमेश्वरका ध्यान करे उसका शोच करना वृथा है इसलिये तुम कुछ चिन्ता न करके परमेश्वरको सबका मालिक समझो यह बात कह कर नारदजी वहांसे चलेगये व राजा युधिष्ठिरको धृतराष्ट्र व गान्धारीके जानेका शोच छूटकर नारदमुनिके उपदेशसे संसारी व्यवहार झूंठा मालूम हुआ इतनी कथा सुनकर ऋषीश्वरोंने सूतजीसे पूछा कि विदुरजीको धर्मराजका अवतार कहते हैं उनकी कथा किसतरह पर है कहिये सूतजीने कहा हम विदुरका थोड़ासा हाल कहते हैं सुनो मांडव्य ऋषीश्वरको झूंठी चोरी लगाकर किसी राजाने फांसी दिलवा दिया जब ऋषीश्वरको

धर्मराज के पास लेगये तब ऋषीश्वरने धर्मराजसे कहा हमने अपनी जानकारी में आजतक कोई काम बुरा चोरी आदि नहीं किया था कौन पाप करने के बदले हम फांसी दियेगये इसका हाल कहो धर्मराज बोले तुमने लड़कपनमें एक टींड़ी को कांटेकी नोकपर उठाकर मारडाला था उसी पापके बदले तुमने फांसी पाई है यह बात सुनकर ऋषीश्वर बोले हे धर्मराज लड़कपनमें पाप व पुण्यका ज्ञान न रहकर अज्ञानतासे बहुत अधर्म होताहै उस पापका दंड देना न चाहिये तुमने मुझे विना अपराध फांसी दिलवा दिया इसवास्ते हम परमेश्वरसे चाहते हैं कि तुम दासीपुत्र होकर सौवर्ष तक मर्त्यलोक में रहो उसी शापसे धर्मराज दासीपुत्र होकर सौवर्ष संसारमें रहे व जबतक धर्मराज विदुरका अवतार लेकर जगतमें थे तबतक सूर्य देवताने धर्मराजका काम उनके बदले किया था इसी कारण विदुरको परमेश्वरकी भक्ति बनी थी ॥

चौदहवां अध्याय।

अर्जुनका द्वारकासे पहुँचना और युधिष्ठिर करके श्यामसुन्दर का हाल पूछना ॥

सूतजीने कहा हे ऋषीश्वरो नारदमुनिके कहिजाने से सातदिन बीते धृतराष्ट्र व गान्धारीने अपना तन त्याग किया व विदुरजी उनकी क्रिया व कर्म करके तीर्थयात्रा करने चलेगये व राजा युधिष्ठिर नारदजीके ज्ञान समझानेसे संसारी व्यवहार झूंठा समझकर उदासीन चित्त परमेश्वर के ध्यानबीच रहा करते थे जब उन्हीं दिनोंमें श्रीकृष्णजी द्वारकापुरीसे गोलोकको पधारे तब उनके वैकुंठ जानेसे राजाको कलियुगके लक्षण मालूम होकर बुरे बुरे स्वप्ने दिखलाई देनेलगे व मनुष्यों के स्वभाव में अधर्म व क्रोध व लोभ व कपट अधिक होकर स्त्री व पुरुष पिता व पुत्र भाई व बन्धुमें झगड़ा होनेलगा यह सब लक्षण कलियुगका देखकर राजा युधिष्ठिरने भीमसेनसे कहा अर्जुन हमारा भाई सात महीने से श्यामसुन्दर प्राणप्यारेके समाचार लानेवास्ते द्वारकापुरी को गया है सो अभीतक नहीं आया इसका कुछ कारण मालूम नहीं होता व नारदजी हमसे कहिगये हैं कि मुरलीमनोहरने पृथ्वी के भार

उतारने वास्ते अवतार लिया था सो उन्होंने महाभारत कराके पृथ्वीका बोझ दूर किया अब थोड़ासा काम उनका मर्त्यलोकमें और रहगयाहै उसको संपूर्ण करके परमधामको जावेंगे सो अब मुझे संसारमें कुलक्षण देखनेसे जानपड़ताहै कि वह समय आन पहुँचा जिस श्यामसुन्दर की दयासे हमने अपने शत्रुओंको मारकर यह सब सुख व राजगद्दी पाया उनके विना मुझे दिनरात नये नये अशकुन दिखलाई देकर मेरी बाईं भुजा व आंख फड़कतीहै व कभी कभी हमारा शरीर कांपने व कलेजा धड़कने लगकर मनमें डर सा मालूम होता है व प्रातसमय सूर्यकी तरफ सियार खड़े होकर बोलते व दिनको तारे आकाशसे टूटतेहैं व जब मैं अहेर खेलने जाता हूं तब सौंजे मेरे बांयें तरफसे होकर निकल जातेहैं व मेरे चढ़नेके घोड़े व हाथी मुझको रोते दिखलाई देकर दिनरात कुत्ते रुदन किया करतेहैं व रातिको उल्लूकी बोली सुननेसे मुझे डर मालूम होकर चारों दिशामें अँधियारा सा देख पड़ताहै व इन दिनों भौंचाल आनेसे पृथ्वी वारंवार कांपकर थोड़ासा बादल आकाशपर होनेसे बि-जुली गिरतीहै व आंधी चलकर आकाशसे लोहू वर्षता है व सूर्यमें प्रकाश कम होकर नदी व नालेका पानी सीधा नहीं बहता व जब अग्निहोत्री लोग आहुति आगमें डालते हैं तब अग्निदेवता प्रसन्न होकर आहुति नहीं लेते व बछड़े गायोंका दूध प्रसन्न होकर नहीं पीते व गऊकी आंखसे आंशू बहिकर सांड़लोग गायोंसे प्रीति नहीं करते व देवतोंकी मूर्तिसे पसीना निकलकर मेरी सभामें अनावश्यक मनुष्य झूंठ बोलते हैं व लोगोंके स्वभाव में क्रोध व लोभ अधिक होकर केतु तारा आकाशपर निकलताहै व साधु महात्माका चित्त हरिभजनमें न लगकर शहर में किसी के घर मंगलाचार नहीं होता व हस्तिनापुर मुझको उजाड़सा दिखलाई देता है सो हे भीमसेन इन सब लक्षणोंसे मैं जानताहूं कि श्यामसुन्दर प्यारे मेरे प्राणकी रक्षा करनेवाले मृत्युलोक छोड़कर वैकुंठको पधारे जिससमय राजा युधिष्ठिर बैठे हुये ऐसा शोच कररहे थे उससमय अर्जुन द्वारकासे आनकर राजाके चरणोंपर गिरा व उसके सामने उदासीन चित्त

हाथ जोड़कर खड़ाहुआ व हाल अर्जुनका इसतरहपर है कि श्रीकृष्णजी ने वैकुंठजानेके समय दारुकसारथीसे अर्जुनको कहलाभेजा था कि तुम द्वारकापुरी से सब विधवा स्त्री व लड़के व बूढ़े व सब वस्तु यादवोंकी हस्तिनापुर ले जाना इसलिये अर्जुन उन सभोंको असबाब समेत द्वारकापुरीसे अपने साथ लेकर हस्तिनापुर आवते थे जब राहमें हस्तिनापुरके निकट भिल्ल पहुँचकर सब धन लूटनेलगे तब अर्जुनने गांडीवधनुष चढ़ाकर बहुतसे बाण उनको मारे पर उन तीरोंसे कुछ काम न होकर सब वस्तु डाकू लूट लेगये उस समय अर्जुन ने उदास होकर कहा देखो यह ऐसा समय हमारा आन पहुँचा जिस धनुष बाण से मैंने भीष्मपितामह व कर्ण व जयद्रथ ऐसे कितने शूरवीरोंको मारकर जीता था अब वही तीर कमान रहनेपर भी मैं डाकू लोगोंसे हार गया इससे मुझे मालूम हुआ कि वह सब पराक्रम मेरा केवल श्याममुन्दरकी कृपा से था अब श्रीदुःखभंजन मेरे रक्षा करनेवाले नहीं हैं इसलिये सब बल व तेज मेरा जाता रहा यही चिन्ता करने और मुरलीमनोहर के वैकुंठ जानेसे अर्जुन का मुख बहुत मलीन होगया था सो राजा युधिष्ठिर ने उसे उदास देखकर पूछा हे अर्जुन सब यदुवंशी व शूरसेन नाना व वसुदेव मामा व देवकी व राजा उग्रसेन व अक्रूर व बलदेवजी व प्रद्युम्न और अनिरुद्ध व चारुदेष्ण सब लड़केबाले मुरलीमनोहर व उद्धवभक्त व सब द्वारकावासी अच्छी तरहहैं व श्याममुन्दर मेरे प्राणप्यारे जिन आदिपुरुष भगवान् ने संसारी जीवों के मंगल करनेवास्ते यदुकुलमें अवतार लियाहै सुधर्मा सभा में आनन्दसे हैं हे अर्जुन तुम बहुत उदास दिखलाई देतेहो तुम्हें कोई रोग तो नहीं हुआ व तुम बहुत दिनतक द्वारकामें रहे हो तेरा अपमान तो किसी ने नहीं किया या किसी सभा में तेरा अनादर तो नहा हुआ या तुमने किसी को कोई वस्तु देने कहा था सो दे नहीं सके या किसी ब्राह्मण व महात्माका अपमान तो नहीं किया या कोई भूखा तुम्हारे घर आया था उसको भोजन नहीं दिया या कोई ब्राह्मण या बालक या बूढ़ा या रोगी या स्त्री शत्रुके डरसे तुम्हारे शरण आये और तुमने रक्षा उनकी नहीं किया इस

लिये तुम्हारा मुख उदास व मलीन है या तुम रजस्वला स्त्रीसे भोग करके किसी छोटे मनुष्यसे लड़ाईमें हार तो नहीं गये जिससे तुम्हारा तेज जाता रहा या अच्छी चीज भोजन करते समय तुमने बूढ़े व बालक देखेने वालोंको उसमेंसे न देकर अकेले तो नहीं खालिया या श्यामसुन्दर विहारी मर्त्यलोक छोड़कर वैकुंठधामको तो नहीं पधारे इसलिये तुम्हारी यह गति हुई है इसका हाल हमसे बतलाओ ॥

पन्द्रहवां अध्याय।

अर्जुन करके श्रीकृष्णचन्द्रजीके अन्तर्धान होनेका हाल राजा युधिष्ठिरसे कहना और परीक्षित को राजगद्दीपर बैठालकर द्रौपदी समेत पांचोभाई पांडवोंका उत्तराखंड में चलेजाना और अपना तन त्याग करना मुरलीमनोहर के ध्यान में ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा अर्जुन यह सब बात राजा युधिष्ठिर से सुनकर कुछ नहीं बोला पर श्यामसुन्दरके चरणों का ध्यान धरकर इतना रोया कि उसे हिचकी लगकर बात कहनेकी सामर्थ्य नहीं रही कुछ बेर बीते अर्जुनने मनको धैर्य देकर राजा युधिष्ठिरसे कहा हे पृथ्वीनाथ मैं क्या कहूं श्यामसुन्दर विहारी हमको ठगकर अन्तर्धान होगये मैं उनको अपना भाई मामूका बेटा जानता था कदाचित् हमलोग उन्हें परब्रह्म परमेश्वर जानकर उनकी सेवा करते तो भवसागर पार उतर कर आवागमनसे छूटजाते परमेश्वरकी माया ऐसी प्रबल है जिसमें लिपट कर हमलोगोंने उनको ही नहीं पहिंचाना जिसतरह एक बेर चन्द्रमा दक्षप्रजापति के शाप देनेसे बहुत दिनतक समुद्रमें जाकर रहे थे यह बात सब कोई जानते हैं कि चन्द्रमाके पास अमृत रहताहै और मछलियां बड़े बड़े जीव जलचर व मनुष्योंके खाजानेके डरसे सदा अमृत पीनेके वास्ते इच्छा रखकर चाहती हैं कि हमको अमृत मिलता तो मरनेसे निर्भय होकर अमर रहतीं सो चन्द्रमा हजारों वर्षतक मछलियोंके साथ समुद्रमें रहे जिस तरह उन्होंने चन्द्रमाको नहीं पहिंचानकर उसे एक जीव समुद्रका समझा उसीतरह हमलोगोंने भी श्रीकृष्णजीको पूर्णब्रह्म न जानकर यदुवंशी जाना अब वह बात समझकर हमको बड़ा शोच होताहै देखो मैं उन्हींकी

सहायता से बड़े बड़े राजा व वीरोंको महाभारतमें मारकर यह समझता था कि अपने पराक्रमसे इनको मारता हूं अब मुझे इस बातका विश्वास हुआ कि श्यामसुन्दरकी दयासे मैंने सबको जीता था जबसे वह मुझे यहां छोड़कर आप वैकुंठको चलेगये तबसे उनके विना मेरा पराक्रम कुछ काम नहीं करता देखो मैं वही अर्जुन और वही धनुष बाण और वही मेरी भुजाहैं जिनसे मैंने महादेव व गन्धर्व व इन्द्र व मय नाम राक्षसको लड़ाई में जीतकर भीष्मपितामह व कर्ण व जयद्रथ आदि बड़े बड़े शूर वीरोंको मारा और कैसे कैसे राजों से विजय करके यज्ञ करनेवास्ते द्रव्य लाया और अश्वत्थामाकी मणि निकाल लिया था सो अब वह शस्त्रादिक रहनेपर भी एक श्यामसुन्दर विना राहमें डाकुओंसे हारगया और वह लोग मुझे जीतकर सब धन व स्त्री आदि जो द्वारकासे अपने साथ लाता था लूट लेगये इसलिये मैं उदास हूं जिस स्थानपर हमको विपत्ति पड़ती थी उसी जगह सुदर्शनचक्र उनका हमारी रक्षा करता था अब उनके विना किसतरह मैं प्रसन्न रहूं जब महाभारतमें कर्ण आदि वीरोंने अनेक प्रकारसे मुझे मारनेके वास्ते चाहा तब मुरलीमनोहर रथ हांकते समय हमारे आगे खड़े होगये व मुझे अपने पीछे रखकर मेरी रक्षा किया व मुझको धैर्य देकर कहते थे तू मत डर भीष्म व कर्ण आदिक सब योद्धा मरेहुये हैं उन की कृपासे इसतरह मेरे शरीर पर कोई घाव शस्त्रादिकका नहीं लगता था जिसतरह कोई साधु व महात्माका अशुभ चाहे तो परमेश्वरकी दया से उनका कुछ नहीं बिगड़ता और श्यामसुन्दर हमारे शत्रुओंकी आयुर्बल अपनी चितवनसे क्षीण करते जाते थे जब लड़ते समय मैं कभी कभी उनसे खेद मानकर कहता था कि जल्दी जल्दी रथ क्यों नहीं हांकते तब वह दीनानाथ मुझे अपना भक्त व बालक जान कर कुछ बुरा नहीं मानते थे हे राजन् मैं उन्हींकी दया व कृपासे बड़े बड़े प्रतापी राजोंके सामने मत्स्य बेध कर द्रौपदीको स्वयंवरमें से लाया व तुम्हारे मना करनेपर भी उनका मन पाकर कौरवोंके सन्मुख प्रकट हुआ था व जब दुर्वासा ऋषीश्वरने कौरवों के भेजनेसे आधीरातको वनमें जाकर हमसे भोजन मांगके शाप देनेकी

इच्छा किया उस समय श्रीकृष्णजी दीनानाथ हमलोगोंको अपना भक्त जानकर वहां आये व ऋषीश्वरके शापसे बचाकर उनका आशीर्वाद दिलाया यह बातें याद करके मेरी छाती शोच व चिन्तासे फटीजाती है जैसे मुर्देको कपड़ा व गहना पहिना कर बैठालदेव वही हाल मेरा श्यामसुन्दरके चलेजानेसे समझना चाहिये हे पृथ्वीनाथ मैं उनके साथ थालीमें भोजन करनेके उपरांत एक शय्यापर सोता था और वह परब्रह्म नारायण होकर मेरा इतना आदर करते थे सो कहो अब इसतरहसे हमारी कौन रक्षा व सन्मान करैगा और किसके आश्रय व भरोसेपर हम उतना घमंड रक्खेंगे जब श्रीकृष्णजी महाभारत कराके यहांसे द्वारकापुरी गये तब उन्होंने मनमें विचार किया कि यह सब यदुवंशी हमारे कुलमें बड़े बलवान् उत्पन्न हुये हैं मेरे जाने उपरांत उपद्रव करके संसारी जीवोंको बड़ा दुःख देवेंगे इसलिये अपने सामने इन लोगोंका भी नाश करदेना उचित है पर अपने हाथ उनका मारना अधर्म समझकर दुर्वासा ऋषीश्वरसे शाप दिलवादिया तब छप्पन किरोड़ यदुवंशी इस तरह आपसमें लड़कर मरगये जिसतरह समुद्रमें बड़े जीव छोटे जीवोंको खाजाते हैं सो हे धर्मराज यह बात कहते हुये इसी समय मेरा प्राण शरीरसे निकलजाता पर श्याम-सुन्दरने दारुक नाम सारथी से यह बात मुझे कहलाभेजा था कि स्त्री व बालक आदिको द्वारकासे हस्तिनापुर लेजाकर मेरे वियोग का शोच मत करना व हमने गीतामें जो कुछ ज्ञान तुमको बतलायाहै उसीके अनु-सार शरीरको झूठा व चैतन्य आत्मा सत्य जानकर संसारी माया मोहमें मत लिपटना वही ज्ञान समझकर मैंने सन्तोष किया है नहीं तो अब तक मेरा प्राण निकलजाता सो हे पृथ्वीनाथ अब जीनेका कुछ सुख न रहकर इसीमें भलाहै कि हमलोग भी अपना तन तपस्यामें गलाडालें जब इतनी बात कहकर अर्जुन अतिविलाप करके रुदन करनेलगा तब राजा युधि-ष्ठिरने भीमसेन आदि अपने भाइयों समेत बड़े शब्दसे रोकर कहा हे अर्जुन हम अब जीकर क्या करैंगे और यह राजपाट हमारा किसकाम आवेगा अब हमें यहां रहना उचित नहीं है परीक्षितको राजगद्दी देने

उपरांत हमलोग बदरी केदारमें चलकर अपना शरीर त्याग करैं यह कहना युधिष्ठिरका पांचोभाई पांडवोंने मानलिया और जब रोनेका शब्द महलमें जाकर श्यामसुन्दरके अन्तर्धान होनेका हाल स्त्रियोंको मालूम हुआ तब कुंती व द्रौपदी आदिने रो पीटकर इतना शोच किया जिसका हाल वर्णन नहीं होसक्ता व कुंतीने उसी खेदमें श्यामसुन्दरके चरणोंका ध्यान धरकर तन अपना त्याग किया व राजा युधिष्ठिरने उपरोहित बुलाकर हस्तिनापुरकी राजगद्दीपर परीक्षितको बैठाल दिया व राज्य इन्द्रप्रस्थ व मथुराका वज्रनाभनाम बालकको जो श्यामसुन्दरके कुलमें बचगया था देकर राजा युधिष्ठिर व अर्जुन व भीमसेन व नकुल व सहदेव पांचोभाई व द्रौपदी उनकी स्त्रीने अपना अपना वस्त्र उतार डाला व एक एक लँगोटी व चादर पहिनकर राजमन्दिरसे बाहर निकले उस समय जो ब्राह्मण व कंगाल वहांपर आये उनको मुँहमांगा द्रव्य देकर उत्तराखंडको सिधारे व जो कुछ ज्ञान श्रीकृष्णजीने अर्जुनको गीतामें बतलाया था उसका चर्चा आपस में रखकर कुछ दिनतक श्यामसुन्दरका ध्यान व तपस्या किया फिर हिमालय में जाकर हरिचरणोंका ध्यान करते हुये पहिले नकुल उसके पीछे युधिष्ठिर आदि चारों भाई व द्रौपदीने अपना अपना तन गलादिया व विदुरजीने प्रभासक्षेत्र में जाकर अपना शरीर त्याग किया व राजा परीक्षित राजगद्दीपर बैठकर धर्म व प्रजापालन के साथ राज्य करनेलगे व अपने न्यायसे प्रजाको प्रसन्न रक्खा व तीनबार सारस्वत ब्राह्मण को गुरु बनाकर अश्वमेध यज्ञ कराके कलियुगको दंड दिया व विवाह अपना राजा विराट्की पौत्री से करके वह दान व धर्म में इतना खर्च रखते थे कि एक बेर यज्ञ करते समय उनके पास द्रव्य नहीं रहा तब श्यामसुन्दरका ध्यान करनेसे बहुत धन उनको मिलकर यज्ञ अच्छी तरह सम्पूर्ण हुआ इसीतरह जब राजा युधिष्ठिरको तीसरे अश्वमेध यज्ञ आरम्भके समय धनका प्रयोजन पड़ा तब नारदमुनि उनके कहनेसे मुरलीमनोहर को हस्तिनापुर में लाकर युधिष्ठिर से बोले हे राजन् पिछले युगमें राजा मरुतने ऐसा यज्ञ किया था जिसके यहां प्रतिदिन ब्राह्मणोंको एक एक

थाली और लोटा व लुटिया व सुनहरी चौकी भोजन करते समय नई देकर फिर वह सब जूंठे बर्तन नगरके उत्तर गड्हे में फेंकवादिये जाते थे यज्ञ होने उपरान्त जितना बर्तन सोनेका नया बचगया था वह आजतक उस नगरके दक्षिणतरफ गड़ाहुआहै तुम उन बर्तनोंको मँगवाकर अपना यज्ञ करो सो राजा युधिष्ठिरने वही बर्तन मँगवाकर यज्ञ में खर्च किया श्यामसुन्दर अपने भक्तोंकी सब इच्छा पूर्ण करते हैं इतनी कथा सुनकर शौनकादिक ऋषीश्वरोंने पूछा कि राजा परीक्षितने कलियुगको किस वास्ते दंड दिया सूतजीने कहा जब परीक्षित सातोंद्वीपके राजोंको जीतकर अपने आधीन करचुका तब उसने विचारा कि राजा युधिष्ठिर के राज्य भोगनेतक द्वापरयुग था अब कलियुग आया सो हम अपने राज्य में कलियुगको रहने न देवेंगे ऐसा विचारकर राजा परीक्षित यह हाल देखने वास्ते कि हमारे राज्य में कलियुगने प्रवेश किया या नहीं दिग्विजय करने निकले सो जिस देशमें पहुँचते थे वहां मनुष्योंको अपने कर्म व धर्मसे परमेश्वरका ध्यान और चर्चा के बीच न देखकर नारायणजीका गुण गावते थे किस वास्ते कि कलियुगने अभीतक वहां प्रवेश नहीं किया और राजा सब प्रजाको कहते थे कि तुमलोग इसीतरह अपने कर्म व धर्मपर स्थिर रहना और जिस जगह परीक्षितकी सेना पहुँचती थी उसके देश के राजा उनका तेज और प्रताप देखकर पहिलेसे आन मिलते और बहुतसी भेंट देकर विनय करते थे कि हमलोग राजा युधिष्ठिर और अर्जुन के समयसे तुम्हारे आधीन हैं यह बात सुनकर परीक्षित सब राजोंका सन्मान करके किसीको दुःख नहीं देता था और जो लोग उसके बड़ोंका यश गाते थे उनको शिरोपाव देकर बिदा करदेता था इसी तरह से राजा परीक्षित ने दिग्विजय करते हुये कुरुक्षेत्रमें नदी किनारे पहुँचकर क्या देखा कि वृक्षके नीचे एक बैल तीन पांव टूटेहुए एक पैरसे खड़ाहै व एक गा दुबली पतली रोती और कांपती हुइ उसके पीछे खड़ी रहकर दोनों आपसमें कुछ बात करते हैं यह हाल बैल व गायका देखते ही राजा अपने धर्म व दयासे एक वृक्षके ओटमें खड़ा होकर उनकी बातें सुनने लगा

और राजाने क्या देखा कि एक शूद्र श्यामरंग भयानकरूप राजाका वेष बनाये दूरसे उस बैल व गायकी तरफ़ चलाआताहै ॥

सोलहवां अध्याय।

धर्मरूपी बैल व गायरूपी पृथ्वीका बातचीत करना और राजा परीक्षितका वृक्षके ओटसे सुनना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा उस बैलरूपी धर्मने गाय-रूपी पृथ्वी से पूछा तुझको क्या दुःख प्राप्त हुआ जो रोती है कदाचित् तुझे मेरे तीनों पैर टूटजाने का शोच हो तो इसका यह कारण है कि कलियुगमें बहुत पापी मनुष्योंने उत्पन्न होकर धर्म और कर्म अपना छोड़ दिया और शुभ कर्म संसारसे उठगया व कलियुगवासी लोग चाहते हैं कि दमादसे रुपया लेकर अपनी कन्याका विवाह करें व पुत्रको इस विचारसे पालन नहीं करते कि तरुण होकर बाप के साथ झगड़ा करेगा और ब्राह्मण लोग वेद पढ़ने में आलस्य रखकर शूद्र आदमी वेद और पुराण पढ़नेकी इच्छा रखतेहैं और क्षत्रियोंने ब्राह्मणों की रक्षा व सेवा करना छोड़ दिया व राजा लोग पोतके बदले दोनों भाग अनाज़का प्रजा से लेकर कहते हैं कि अपना बेटा या बेटी बेंचकर और देव या इसवास्ते तू रोती है कि श्यामसुन्दरविहारी जो तेरे ऊपर अपना चरणकमल रखते थे संसारसे वैकुंठको पधारे और कलियुगमें अधर्मी राजा होकर तेरे ऊपर भोग करेंगे अपने मनका हाल हमसे बतलाव यह वचन सुनकर गऊने कहा तुम सब बात जानबूझकर मुझसे क्या पूछते हो जिस कारण तुम्हारे तीन पैर तप व क्षमा व दया के टूटकर केवल सत्य एक पांव रहगया है उसीलिये मेरा रोना भी समझो किसवास्ते कि मनुष्यका सुख धर्म व सचाईसे है जब मनुष्यने धर्म व सचाई और दया छोड़ दिया तब वह परमेश्वरके भेदको कभी पहुँचने नहीं सक्ता और यह बात नहीं जानता कि धर्म करनेसे ज्ञान होताहै और कोई मनुष्य कहतेहैं कि मन मेरा संसार से विरक्त नहीं होता सो बिन ज्ञान प्राप्त हुये संसारी मोह छूटना बहुत कठिनहै और मैं चारों वर्णके मनुष्य और राजा लोगोंका शोच करतीहूं कि

कलियुग आनेसे सब किसीको दुःख होगा और अधिक रोना मेरा इस वास्ते है कि वृन्दावनविहारी वैकुण्ठको पधारे जब मुरलीमनोहरके चरण-कमल रखनेसे शंख व चक्र व गदा व पद्मके आकार मेरे ऊपर पड़जाते थे तब मैं बहुत आनन्द होती थी ऐसा कौनजीव जगत्‌में है जिसने श्यामसुन्दर के अन्तर्धान होनेसे शोच नहीं उठाया और जो छत्तीसगुण उनमें थे उनका वर्णन तुमसे करतीहूं सत्य बोलना आचारसे रहना हृदय में धैर्य रखकर क्षमा करना संसारी माया मोहसे विरक्त रहना जो कुछ परमेश्वर देवैं उसमें सन्तोष रखना मीठा वचन बोलना इन्द्री व मनको वशमें रखना सब छोटे बड़ोंको बराबर जानकर किसीका अपमान न करना किसीके दुर्वचन कहनेसे बुरा न मानना किसी काममें जल्दी न करना सुनी हुई बात याद रखना अपना कहा हुआ वचन न भूलना ज्ञानको स्थिर रखना व मनमें वैराग्य रखकर स्त्री और पुत्रोंसे अधिक मोह न रखना व धन पाकर किसीसे अभिमानकी बात न बोलना बल अधिक होनेसे घमंड न करना सबसे श्रेष्ठ होना सब विद्याओंको जानना दूसरेका दुःख देखकर दुःखित होना किसीसे न डरना जो कोई अपना दुःख कहे उसका हाल प्रसन्न होकर सुनना और भूत भविष्य वर्तमान तीनों कालकी बातें जानना अपने मनका हाल किसीसे न बतलाकर समुद्रके समान गम्भीर रहना धर्मकी तरफ़से मन नहीं फेरना धर्म और वेदकी रक्षा करना संसार में ऐसी कीर्ति करना जिसमें सब कोई भला कहै आंखोंमें शील रखना किसी जीवको दुःख न देना जो कोई दीन होकर अपना अर्थ कहै उसकी इच्छा पूर्ण करना परमेश्वरका तप व ध्यान करते रहना सबसे अधिक बलवान् होना किसी शूरवीरको तीनोंलोक में कुछ माल नहीं समझना साधु व ब्राह्मण और महात्माका आदर करके परोपकार करना सो है बैल-रूपी धर्म श्यामसुन्दरको इन सब गुण होने पर भी कुछ अहंकार नहीं था और छत्तीसगुणों के सिवाय और बहुतसे शुभ कर्म उनमें थे जिस समय उनको याद करती हूं उस समय मेरा कलेजा फटिजाताहै देखो जिस लक्ष्मी के मिलनेवास्ते सब देवता व संसारी मनुष्य इतना तप और जप करते हैं

वही लक्ष्मी कमलवनको छोड़कर दिन रात श्यामसुन्दरकी सेवामें रहती हैं ऐसे मुरलीमनोहरकी मैं दासीहूं जब द्वापरके अन्तमें तुम्हारे दो पैर टूट गये और मैं कंसादिक राजोंके अधर्म करनेसे दुःखी हुई थी तब वैकुंठनाथने यदुकुलमें अवतार लेकर हमारा और तुम्हारा दुःख छुड़ाया और अपनी कीर्ति संसारमें फैलाई ऐसे परोपकारी पुरुषके वियोगका दुःख कौन सहसक्ता है यह गायरूपी पृथ्वी बैलरूपी धर्मसे कहती थी और राजा परीक्षित खड़ा सुनता था॥

सत्रहवां अध्याय।

कलियुगका बैलरूपी धर्म व गोरूपी पृथ्वीके पास आवना कलियुग व राजा परीक्षितसे बातचीत होना व परीक्षित का कलियुगके रहने वास्ते स्थान बतलावना॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा कि उसी समय वह शूद्र रथपर चढ़ा बहुत सी सेना साथ लिये राजोंका वेष बनाये काले कपड़े और मुकुट पहिने सोंटा हाथ में बांधे गाय और बैलके पास आनकर रथसे उतरपड़ा व बैल व गायको पैर से ठोकर मारकर धमकाने लगा उसका रूप देखकर वह दोनों ऐसे डरगये कि गाय आंखों से आंशू बहाने लगी व बैलने मल व मूत्र करदिया जब ऐसा अधर्म राजा परीक्षित से नहीं देखागया तब राजाने बाण निकालकर धनुषपर चढ़ाया व बड़ा क्रोध करके कलियुगसे कहा सातों द्वीपका राजा मैं हूं तू कौन देशका राजाहै जो हमारे राज्य में राजोंका वेष बनाकर मेरी प्रजाको दुःख देताहै राजाओं का ऐसा धर्म नहीं होता जो किसी को दुःख देवैं श्रीकृष्णजी महाराज त्रिलोकीनाथ मर्त्यलोकसे अन्तर्धान हुये व अर्जुन हमारे दादा गांडीवधनुष रखनेवाले वैकुंठको गये इसलिये तू पृथ्वी को विना राजाके समझकर गाय और बैलको ऐसा दुःख देताहै अधर्म करना छोड़ दे नहीं तो अभी तुझको मारे डालताहूं कलियुग यह बात सुनते ही राजाके डरसे चुपचाप खड़ा होगया तब राजाने बैलसे पूछा तुम कौन हो व तीनों पैर तुम्हारे किसने तोड़े तुम कोई देवता होकर मुझे भ्रम देनेके वास्ते तो नहीं आये हमने अपने राज्य में तुम्हारे बराबर किसी को दुःखी नहीं देखा अब तुम कुछ

शोच मत करो मेरे मिलनेसे तुम्हारा सब डर छूटगया व तुम्हारा दुःख मैं दूर करूंगा राजा यह वचन बैलसे कहकर फिर गायसे बोले तू मत रो अधर्मी व पापियोंका दंड देनेवाला मैं तय्यारहूं राजाओं का यही धर्म है कि चोर और कुकर्मी मनुष्यों को दण्ड देवें जिस राजाके देश में प्रजा दुःख पावे उसका चार गुण नाश होताहै एक उसकी कीर्ति न रहकर दूसरे आयुर्दाय कम होजाती है तीसरे ज्ञान छूटकर चौथे परलोक बिगड़ताहै राजाओं को ऐसा चाहिये कि जो उनके राज्यमें दुःखी हो उसका दुःख छुड़ादिया करें इतना धर्म राजाको रखनेसे फिर कुछ तप व जप करनेका प्रयोजन नहीं रहता इस वास्ते मैं इस शूद्रको मारडालूंगा यह संसारी जीवोंको बहुत दुःख देता है यह बात पृथ्वीसे कहकर राजाने बैलसे फिर पूछा तुम्हारा पैर किसने तोड़ा जल्दी मुझे बतलाओ उसके हाथ हम काट डालेंगे मैं श्रीकृष्णचन्द्रका दास होकर तुम्हारा दुःख नहीं छोड़ाऊं तो मेरे कुल में दोष लगेगा कदाचित् कोई देवता भी मेरे राज्यमें आनकर किसी को दुःख देवे तो उसे मारडालने सक्ताहूं मनुष्यकी क्या सामर्थ्य है जो किसीको दुःख देने सके यह बात सुनतेही बैलरूपी धर्म अपना शिर झुकाकर राजासे बोला पांडवों के वंशमें सब राजा इसी तरहपर धर्मात्मा होते आये हैं उनके राज्यमें किसीने दुःख नहीं पाया अर्जुन तुम्हारे दादा ऐसे धर्मात्मा व हरिभक्त थे जिनके श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथ सारथी हुये तुमको इसीतरह उचितहै कि सदा गरीब व दुःखीलोगों का सोच रक्खा करो और मैं वेद शास्त्रके वचनसे लाचार होकर यह नहीं जानसक्ता कि मुझको किसने दुःख दिया इसलिये मैं किसका नाम बतलाऊं जिसका नाम बतलाऊंगा उसका तुम संकोच करोगे अपने प्रारब्धका फल भोगता हूं यह बात जगतमें प्रकट है कि सब कोई अपने अपने अधर्मके बदले दुःख पाते हैं किसी को अपने मनके संकल्प विकल्प से दुःख होताहै कोई लोग कहते हैं कि मनुष्य सब दुःख व सुख परमेश्वर की इच्छासे भोगता है पर इस बातका विचार करना चाहिये कि परब्रह्म परमेश्वरको जिनकी इच्छासे सब जीव उत्पन्न होते हैं क्या प्रयोजन है जो किसी को

दुःख देवैं नारायणजी को इस बातका दोष लगाना उचित नहीं है कोई कहते हैं मनुष्य अधर्म करने से दंड पाताहै सो अधर्म करनेमें भी मनुष्यका कुछ वश नहीं रहता किस वास्ते कि मनुष्यकी इच्छापूर्वक सब बात नहीं होती कोई कहतेहैं दुःख शत्रुसे पहुँचताहै मित्र किसी को कुछ दुःख नहीं देता इसलिये उत्पन्न करना शत्रुका भी अपने अधीन समझना चाहिये किसवास्ते कि जबतक मनुष्य माताके पेटमें रहता है तबतक उसका शत्रु कोई नहीं होता जब मनुष्य उत्पन्न होकर सयाना होताहै तब लोगोंसे विरोध करके अपना शत्रु आप खड़ा करताहै इसकारण मैं किसीका नाम बतलाने नहीं सक्ता कि किसने हमको दुःख दिया है तुम अपनी बुद्धिसे जान लो जब परीक्षितने यह सब ज्ञान बैलरूपी धर्मसे सुनकर श्रीकृष्णजी के चरणोंका ध्यान किया तब उनको अन्तःकरणकी शुद्धताई से मालूम हुआ कि यह बैलरूपी धर्म व गौरूपी पृथ्वी व शूद्ररूप राजा कलियुग है व इसी शूद्रने धर्मका पैर तोड़कर पृथ्वी को दुःख दिया है व इस पृथ्वीके मालिक परमेश्वर थे सो परमधामको गये इसी कारण पृथ्वी चिन्ता करती है पापीका नाम लेनेसे पाप व धर्मात्माका नाम लेनेसे पुण्य होता है इसीवास्ते बैलरूपी धर्मने कलियुगको पापी समझकर उसका नाम नहीं बतलाया पहिले धर्म के चारों पैर तप व सत्य शौच और दयाके स्थिर थे कलियुग में अधिक पाप होने से तीनपैर धर्म के टूटगये उन तीनों पांवका नाम जिसकारण धर्मके तीन पैर तप व शौच व दया के टूट गये हैं अहंकार और परस्त्रीगमन और मदिरापान समझना चाहिये केवल सत्य एक पैर धर्मका रहगया उसको भी यह कलियुग तोड़ा चाहता है राजाने यह बात मनमें विचारकर बैल व गायको धैर्य दिया व क्रोधवन्त होकर तलवार निकालके कलियुगको मारने दौड़ा जब कलियुगने देखा कि यह धर्मात्मा राजा क्रोधसे भराहुआ मुझे मारने चाहता है और मैं ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो इसके साथ लड़नेसकूं ऐसा विचारकर कलियुग राजाके चरणोंपर गिरपड़ा व अपना जीव बचाने के वास्ते विनती करने लगा तब राजाने अपने धर्म व दया से तलवार नहीं चलाकर कहा हे कलि-

युग जहांतक राजा युधिष्ठिर व अर्जुन हमारे दादाका राज्य था वहां तुझे न रहना चाहिये तू अधर्म करनेवाला पापियोंका साथी होकर जिस राजाके देशमें रहेगा उस राजाका मन अधर्म करनेको चाहेगा तेरेमें लालच व अहंकार व झूठ व कपट व झगड़ा व काम व मोह भरा हुआहै इसलिये भरतखंडमें जहांतक निज हमारा राज्य है और वहां सब कोई अपने धर्म व कर्म से हैं मत रहो इस भरतखंडमें मनुष्य लोग तप व यज्ञ दान व धर्म व्रत व परमेश्वरकी पूजन करनेसे राजगद्दी व अनेकतरह का सुखपाकर मुक्तपदवीको पहुँचते हैं व उनको कभी दुःख नहीं होता ऐसी जगह तू रहकर विघ्न करेगा व तेरे रहनेसे पाप अधिक होगा मेरा कहना मान नहीं तो तेरा प्राण बचना दुर्लभहै कलियुगने हाथ जोड़कर गिड़-गिड़ाके राजासे विनय किया महाराज आप धर्मात्मा व न्याय करनेवाले हैं मेरी प्रार्थना सुनिये ब्रह्माजीने सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग चारयुगों को बनाकर उनकी अवधिका प्रमाण किया है सो सतयुग व त्रेता व द्वापर तीनोंयुग अपना अपना राज्य भोगचुके और मैं कलियुगहूं अब मेरे भोग करनेका समय आया मुझे आप आज्ञा देते हैं तू हमारे राज्य में मत रह सो सातों द्वीपमें आपका राज्यहै मैं कहां जाकर रहूं व जो ब्रह्मा-जीने चारोंयुगका प्रमाण किया है वह किसीतरह मिट नहीं सक्ता और हे पृथ्वीनाथ आप मेरे अवगुणों की तरफ देखतेहैं और गुणोंकी तरफ ध्यान नहीं करते सो मेरेमें एक गुण बड़ाहै वह आपसे कहताहूं सतयुगके बीच जिस राज्यमें एक मनुष्य पाप करता था उस राज्यभरके मनुष्य दंड पाते थे व त्रेता में एक मनुष्यके अपराध करनेसे गांवभर दंड पाता था व द्वापरमें अधर्म करनेसे परिवार भरको शासना होती थी व कलियुग में जो मनुष्य जिस अंगसे पाप करता है मैं उसको पकड़कर उसी अंगकी शासत करताहूं दूसरे युगोंमें मानसी पाप करनेसे मनुष्यको दंड मिलता था और कलियुगमें मानसी पाप न होकर मानसी पुण्यका फल मिलता है जब यह बात सुनकर राजा परीक्षितको दया नहीं आई तब फिर कलि-युग बोला हे पृथ्वीनाथ मेरेमें एक गुण और बहुत बड़ा है सतयुगमें जो

कोई परलोक बनानेवास्ते दशहजार वर्ष तप करता था तब उसकी इच्छा पूर्ण होती थी व त्रेतायुगमें जब मनुष्यलोग बहुतसी द्रव्य लगा कर हज़ारों वर्षोंतक यज्ञ करते थे तब उनका अर्थ सिद्ध होता था द्वापरमें सौ वर्षतक पूजन व ध्यान नारायणजीका करनेसे मनोकामना मिलती थी मेरे राज्य में जो कोई एक क्षण भी श्यामसुन्दर का ध्यान अपने सच्चेमनसे करे या उनका नाम लेकर कानोंसे लीला व कथा उनकी सुने वह अपने अर्थको पहुँचकर अनेक जन्मके पापोंसे छूटजाता है जब यह गुण सुनकर राजा परीक्षित उसपर बहुत प्रसन्न हुये तब कलियुगने कहा हे पृथ्वीनाथ दया करके मुझे जीवदान दीजिये और जहां कहिये वहां जाकर रहूं मैं आप से बहुत डरताहूं तुम्हारी आज्ञामें रहूंगा जब कलियुगने हाथ जोड़कर विनय किया तब राजाने उसे दीन जानकर अपना धर्म विचारा कि शरण आयेको कोई नहीं मारता ऐसा समझकर बोले हे कलियुग जिस जगह मनुष्य जुवा खेलतेहैं व जहां मदिरा पीनेके वास्ते बिकताहै व जिस स्थान पर वेश्या रहतीहैं व जहांपर जीवहिंसा करते हैं वहां जाकर तुम रहो यह सुनकर कलियुगने फिर राजासे दीन होके कहा इन चारों जगहों में मेरा कुल व परिवार समाने नहीं सक्ता तब राजाने दयालु होकर कहा जिस जगह सूम मनुष्यके पास द्रव्य व सोना हो और वह उसमेंसे दान व धर्म न करे वहां भी तुम जाकर बसो सिवाय इन पांचों जगहके कहीं प्रवेश करेगा तो हम तुझे मारडालेंगे कलियुगने राजाको धर्मात्मा व बलवान् देखकर उनका वचन मानके मनमें कहा जब राजाका चित्त धर्मकी तरफसे फिरेगा तब हम अवसर पाकर अपना अर्थ निकाल लेवेंगे यह बात विचार कर कलियुग राजासे बिदा हुआ व उसी पांचों जगह जहां राजा ने बतलाया था आनकर डेरा किया इतनी कथा सुनाकर सूतजीने शौनकादि ऋषीश्वरों से कहा जो कोई अपना भला चाहे वह इन पांचों बातोंसे किनारा रक्खे व राजाको यह बात कभी नहीं करना चाहिये किसवास्ते कि राजाके अधीन सब प्रजा रहती है जब कलियुगके जानेके उपरान्त राजा परीक्षितने उस बैलके तीनों पैर टूटे हुये अपने धर्म से अच्छे करके

गायको धैर्य दिया तब वह बैल अपना धर्मरूप व गाय पृथ्वीरूप होकर अपने अपने स्थानपर चलेगये व राजाने राजगद्दीपर आनकर यह ब्राह्मणों व ऋषीश्वरोंसे कहा वह लोग सुनकर बोले हे राजन् तुमने बहुत अच्छी बात किया अब तुम्हारे राज्यमें कलियुग अपना प्रवेश नहीं करने सक्ता फिर राजा परीक्षितने अपने राज्यमें ऐसा ढिंढोरा पिटवा दिया कि कोई जीवहिंसा न करे व मदिरा न पीवे व जुवा न खेले व द्रव्य पाकर यथाशक्ति दान देवे व परस्त्रीगमन न करे जो कोई देवता व साधु व सन्त व ब्राह्मण व गौ व वेद व शास्त्रको नहीं मानकर इन पांचों बातोंमें कोई काम करेगा उसका हम अन्न व धन लूटकर दंड देवेंगे सो परीक्षितके डरसे यह सब अधर्म उनके राज्यमें लोगोंने करना छोड़ दिया व राजा परीक्षित धर्म बढ़ाते हुये हस्तिनापुरमें राजकाज करनेलगे व सदा लीला व कथा परमेश्वरकी सुनकर उनके चरणोंमें ध्यान लगाये रहते थे व उनके राज्य में सब प्रजा भी अपने धर्मसे रहकर आनन्द थे॥

अठारहवां अध्याय।

परीक्षितका शिकार खेलनेके वास्ते वनमें जाना और राजाके मनमें कलियुगका प्रवेश करना इसलिये राजाका समीक ऋषिके गलेमें मराहुआ सांप डालना और समीक ऋषिके पुत्रकरके राजा परीक्षितको शाप देना॥

सूतजी शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहते हैं कि जबतक परीक्षितने राज्य किया तबतक उनके नीति व धर्मसे कलियुगने वहां प्रवेश नहीं पाया व राजा परीक्षित रथपर बैठकर प्रजाकी रक्षा करनेके वास्ते चारों दिशा अपने राज्यमें घूमते व एकछत्र राज्य करते रहे व कलियुग को कुछ माल न समझकर उसे पड़ारहने दिया इतनी कथा सुनकर शौनकादिक ऋषीश्वरोंने सूतजी से कहा आप परमेश्वरकी कथामें बड़े योग्य होकर अमृतरूपी रस हमलोगों को पिलाते हैं तुम्हारे सत्संगसे हमारा जन्म कृतार्थ हुआ कदाचित् आप ऐसा कहैं कि तुमलोग ऋषीश्वर हो तुम्हारा जन्म इसीतरह सुधर जावेगा सो निश्चय जानो जो सुख तुम्हारे सत्संगसे प्राप्त होताहै वह सुख स्वर्ग और वैकुंठमें नहीं मिलता जिस

तरह राजा परीक्षितने तन त्याग किया था अब उसका हाल वर्णन कीजिये सूतजीने कहा जब राजा परीक्षित वृद्धावस्थाको पहुँचे तब राजाने विचार किया कि जीवहिंसा करना घरमें मना था सो हमने छोड़ दिया व राजोंका ऐसा धर्म है कि वनमें शिकार खेला करें इसी बहानेसे उनको अनेक देश देखनेमें आतेहैं व जो हरिन वनमें बूढ़ा होजाता है उसे अहेर में अवश्य मारना चाहिये सदासे राजा लोग ऐसा करते आयेहैं यह बात विचारतेही एक दिन राजाने वनमें जाकर बहुतसे जीवोंको अहेरमें मारा फिर एक हरिनके पीछे जो घायल होकर भागा था मध्याह्न समय घोड़ा अपना दौड़ाया सो अपने साथियोंसे बिलग होगये जब राजाको गरम हवा बहनेसे बहुत प्यास मालूम हुई और पानी ढूंढ़ने वास्ते चारों तरफ फिरने लगे तब उस जगह भिंडी ऋषीश्वरकी कुटी दिखाई दी और वह ऋषीश्वर बड़े योग्य महात्मा सदा वनमें रहते थे व जो दूध बछड़ेके पीते समय गऊके थनसे टपकता था उसे पीकर परमेश्वरका भजन करते थे सो राजाने कुटीको देखते ही वहां जाकर ऋषीश्वरसे कहा मैं राजा परीक्षित अभिमन्युका बेटा बहुत प्यासाहूं दया करके थोड़ा पानी मुझे पिलावो इसी तरह कई बेर राजाने ऋषीश्वरसे पानी मांगा व ऋषीश्वर महाराज उस समय आंख बन्द किये प्राण अपना ब्रह्मांड पर चढ़ाये परमेश्वरके ध्यानमें ऐसे लीन बैठे हुये थे कि उनको अपने तनकी भी सुधि नहीं थी इसकारण उन्होंने राजा की बात नहीं सुनी और न उनको कुछ उत्तर दिया उस समय कलियुग ने जीवहिंसा करने से राजा के मनमें अपना प्रवेश करके कपट उत्पन्न किया जब राजाको धर्मात्मा व हरिभक्त होनेपर भी अधिक भूख व प्यास लगने से क्रोध उत्पन्न हुआ तब उसने यह विचारा देखो हम राजा सातोद्वीपके प्यासे होकर इस ब्राह्मणके द्वारेपर पानी मांगने आये सो इस ऋषीश्वर ने हमको देखके झूंठी समाधि लगा कर हमारी बातका उत्तर भी नहीं दिया पानीको कौन पूंछे इसको कुछ दंड देना चाहिये पर मैं पाण्डवों के कुलमें होकर ब्राह्मणोंको किसतरह दण्ड दूं जब ऐसा समझकर राजा घोड़ेसे उतरा तब उसने एक सांप मरा

हुआ उसी जगह पड़ा देखकर मनमें कहा सांप इसके गलेमें डाल देवें तो सर्पके डरसे ऋषीश्वर आंख अपनी खोलदेगा ऐसा विचारते ही राजाने क्रोधवश होकर उस सर्पको अपने धनुषसे उठाके भिंडी ऋषिके गले में डालदिया पर वह ऋषीश्वर परमेश्वरके ध्यानमें ऐसे लवलीन व मग्न थे जिनको सांप डालनेसे भी कुछ डर न होकर वह ज्योंके त्यों अपनी आंख बन्द किये हुये परमेश्वर के ध्यान में बैठे रहे व राजाने अपने स्थानपर आकर जैसे शिरपरसे मुकुट उतारा वैसे उसको ज्ञान हुआ और बड़े शोचसे मनमें कहने लगा देखो सोनेमें कलियुगका वासहै सो मेरे शिरपर था व शिकार खेलनेसे मेरी बुद्धि बदलगई जो हमने मराहुआ सांप ऋषीश्वरके गलेमें डालदिया अब मैं समझा कि कलियुगने मुझसे अपना बदला लिया इस पापसे किसतरह मेरी छुट्टी होगी जब कोई मनुष्य नारायणजीसे विमुख होकर गऊ व ब्राह्मणको दुःख देवे तो समझना चाहिये इसके बुरे दिन आये हैं सो मैंने आज ब्राह्मण को वृथा दुःख दिया इससे मुझको निश्चय होताहै कि मेरी आयुष् व धनकी हानि होगी यहां राजा अपने घरपर बैठाहुआ इसतरह शोच कररहा था व जिस स्थानपर भिंडी ऋषीश्वर ध्यानमें बैठे थे वहां जब ऋषीश्वरोंके लड़कोंने खेलते हुये यह हाल देखा तब एक बालकने भिंडी ऋषीश्वरके बेटे शृंगीऋषिसे जो कौशिकी नदीके किनारे लड़कोंमें खेलता था जाकर कहा तुम्हारे पिताके गलेमें राजा परीक्षित सांप डालगयाहै यह बात सुनते ही शृंगीऋषि जो ब्रह्मा से वरदान पाकर वचन अपना सिद्ध रखता था क्रोधमें भरगया व आंखें उसकी लाल होकर शरीर कांपने लगा उसी समय शृंगीऋषिने नदीकिनारे जाकर अपना हाथ व पांव धोया व आचमन करके हाथमें पानी लेकर शाप दिया कि आजसे सातवें दिन तक्षक सांपके काटनेसे राजा परीक्षित मरजावें ऐसा शाप देकर बोला श्रीकृष्णजी वैकुंठको पधारे इसलिये कलियुगवासी राजा धन व राज्यके मदमें अन्धे होकर ब्राह्मणों को दुःख देते हैं जिसतरह कोई मनुष्य द्वारके अगोरनेके वास्ते कुत्ता पाले और वह कुत्ता उसीको काटकर यज्ञकी थालीमें मुहँ डालदे उसीतरह राजा लोग नौकरे

समान ऋषीश्वरोंकी रक्षा करने के वास्ते रहते हैं सो अब कलियुगवासी राजोंका यह हाल है ब्राह्मणोंकी कृपा व आशीर्वाद से राजगद्दी पाकर उन्हींको दुःख देते हैं यह अर्जुन व युधिष्ठिरके कुलमें ऐसा अधर्मी राजा उत्पन्न हुआ जिसने मेरे बापके गलेमें सांप डालदिया व राजोंने ब्राह्मणोंको निर्बल जाना इसलिये हम अपनी सामर्थ्य उनको दिखलाते हैं शृंगीऋषि सब लड़कों को ऐसा वचन व शाप देनेका हाल सुनाकर ऋषिके पास आया व जब अपने पिताको परमेश्वरके ध्यानमें लीन और मरा हुआ सांप गलेमें पड़ा देखा तब सांप गलेसे निकालकर रोनेलगा व पिताका नाम लेकर पुकारा उसका शब्द सुनते ही भिंडीऋषिने समाधि खोलकर अपने बेटेसे पूंछा तू किसवास्ते रोताहै शृंगीऋषिने कहा राजा परीक्षित तुम्हारे गलेमें सांप डाल गया इसलिये मैं रोताहूं यह बात सुनकर भिंडीऋषि ने कहा हे बेटा तैंने कुछ शाप तो राजाको नहीं दिया तब शृंगीऋषि बोला मैंने इस अधर्म करनेके बदले राजाको यह शाप दियाहै कि सात दिन बीते तक्षक सांपके काटनेसे राजा मरजावै यह वचन सुनकर भिंडीऋषि बहुत उदास होगये व क्रोध करके अपने बेटेसे कहा हे मूर्ख तैंने बहुत बुरा काम किया जो ऐसे धर्मात्मा राजाको जिसके राज्यमें कलियुगने प्रवेश नहीं पाया था शाप दिया देखो वैकुंठनाथ श्रीकृष्णजीने उसकी रक्षा माता के पेटमें की व कौरवों व पांडवोंके कुलमें यही एक राजा बचा था जिसके राज्य में हम सब ब्राह्मण व ऋषीश्वर बहुत सुख व आनन्दसे रहिकर कोई पशु व पक्षी भी दुःखी नहीं था उसके न्यायसे गाय व बाघ एक घाटपानी पीते थे तैंने थोड़े अपराध में दंड उसको बहुत दिया उसका अवगुण लिया व गुणको छोड़ दिया परीक्षितके मरनेके उपरान्त अधर्मी राजा होंगे व उनके राज्यमें कलियुग अपना प्रवेश करके मनुष्योंसे पाप करावेगा देखो राजा मेरे स्थान पर आया तो मुझे उसको भोजन खिलाकर सन्मान करना उचित था यह बड़ी लज्जाकी बात हुई जो मैंने एक लोटा पानी भी उसे नहीं पिलाया और तैंने ऐसा शाप वैष्णव राजाको देकर श्रीकृष्णजी का अपराध किया राजाके मरने के उपरान्त संसार में सब लोग वर्णसंकर

होजावेंगे इस पापकी जड़ तू हुआ साधु व संत का यह धर्म है कि गुण को लेतेहैं और अवगुणकी तरफ नहीं देखते यह बात भिंडीऋषिने अपने पुत्रसे कहिकर परमेश्वरका ध्यान करके उनसे विनय किया हे वैकुंठनाथ मेरे अज्ञान बालकसे बड़ा पाप हुआ इसका अपराध क्षमा करो जो राजा गौव ब्राह्मण की रक्षा करताहै उसके मारनेका पाप दश ब्राह्मण मारने के बराबर होताहै व बिना राजा देशमें चोर पापी बहुत उत्पन्न होते हैं जिसने राजाको मारा उसने चोर व अधर्मियोंको बढ़ाया भिंडीऋषि ने ध्यान में ऐसा परमेश्वरसे कहिकर मनमें विचारा कि राजाको इस पाप का हाल कहला भेजना चाहिये जिसमें वह अपने परलोकका यत्न करै यह बात सुनकर संसारीलोग शृंगीऋषिको बुरा तो कहेंगे पर ऐसे धर्मात्मा राजाकी मुक्ति बनानेके वास्ते उसको जतादेना चाहिये ऐसा विचारकर भिंडीऋषि ने कुमुकनाम अपने शिष्यको बुलाकर कहा तू राजाके पास जा और हमारे तरफ़से आशीर्वाद देकर कहि दे कि शृंगीऋषि ने तुमको इसतरह शाप दियाहै इसलिये तुम्हारी अकाल मृत्यु होगी सो तुम चैतन्य होकर अपनी मुक्तिका उपाय करो इतनी कथा सुनाकर सूतजीने ऋषीश्वरोंसे कहा देखो जो राजा परीक्षित अश्वत्थामाके ब्रह्मास्त्रसे बचा व जिसने धर्म व पृथ्वी की रक्षा करके कलियुगको अपने आधीन किया वही राजा एक ब्राह्मणके शाप देनेसे मरगया ऐसा माहात्म्य ब्राह्मणका है व परीक्षितके मरनेके उत्परान्त कलियुगने सब जगह अपना प्रवेश करलिया व राजा परीक्षितने कलियुग का गुण समझकर उसे नहीं मारा व अवगुणकी तरफ़ ध्यान नहीं किया जो लोग धर्मात्मा व हरिभक्त होते हैं वह गुणको लेकर अवगुणकी तरफ़ नहीं देखते इन्द्रलोक व स्वर्ग व वैकुंठ व संसारमें कोई सुख सत्संगके बराबर नहीं होता व परमेश्वर का भेद व चरित्र ब्रह्मा व महादेव आदि देवता भी नहीं जानसक्ते दूसरे को क्या सामर्थ्य है जो जान सकै यह बात सुनकर शौनकादिक ऋषीश्वरोंने बहुत स्तुति करने के उपरान्त उनसे कहा आप धन्य हैं जो परमेश्वरका चरित्र व अमृतरूपी कथा हमलोगोंको कानोंकी राह पिलाकर कृतार्थ करते हैं यह बात सुनकर

सूतजी बोले आज हमारा जन्म लेना सुफल हुआ जो आप ऐसे ऋषीश्वर व मुनीश्वर मेरी बड़ाई करतेहैं हमारा जन्म ब्राह्मण व शूद्रसे मिलकर हुआ था सो आपलोग महात्मोंकी संगति करनेसे मेरा सब शोच दूर हो गया जो कोई मनुष्य तन पाकर परमेश्वरकी कथा सुनै व उनके नामका स्मरण व भजन करै संसारमें उसीका जन्म लेना सुफलहै देखो जिन चरणों का धोवन श्रीगंगाजी होकर तीनों लोकके जीवोंको तारतीहैं जो उन चरणों की भक्ति रखकर त्रिभुवनपतिका नाम लेवै व उनकी कथा कानोंसे सुनै उसकी बड़ाई कौन वर्णन करसक्ताहै मनुष्य जितनी देरतक परमेश्वरकी कथा सुनकर नाम स्मरण करतेहैं उतना काल उनके आयुर्बलमें क्षीण नहीं होता मेरी क्या सामर्थ्यहै जो परमेश्वरके गुणोंका वर्णन करसकूं जिसतरह आकाशमें पक्षी अपने पराक्रमभर उड़कर आकाशका अन्त कोई नहीं पासक्के उसीतरह ब्रह्मा व महादेव आदि देवता व ऋषीश्वरलोग अपने ज्ञान व सामर्थ्यभर परमेश्वरका ध्यान व स्मरण करते हैं पर उनके अन्तको कोई नहीं पहुँच सक्का ॥

उन्नीसवां अध्याय ।

राजा परीक्षितको शृंगीऋषिके शापदेनेका हाल मालूम होना और परीक्षितका गंगा-किनारे जाना और शुकदेव आदि ऋषीश्वरों का उस स्थानपर आना ॥

सूतजीने शौनकादि ऋषीश्वरों से कहा जिससमय राजा परीक्षित अहेर से आकर अपने धर्मका विचार करके चिन्ता में बैठे हुये मनमें कहते थे कि हमारे पीछे जो राजा होंगे वह मेरे अधर्म करनेका हाल सुनकर ऋषीश्वरों व ब्राह्मणोंका अनादर करके उनका डर नहीं रक्खेंगे सो इस पाप करने के बदले वह ब्राह्मण मुझको शाप देते या मेरा प्राण निकल जाता या कुछ हानि होती तो दूसरे राजा किसी ब्राह्मण व ऋषीश्वरको दुःख न देते उसी समय कुमुक नाम भिंडीऋषिके चेलेने वहां पहुँचकर कहा हे राजन् भिंडीऋषीश्वरने आशीर्वाद देकर तुमसे कहाहै कि मैं आपके आनेके समय परमेश्वरके ध्यानमें ऐसा मग्न था कि मुझे तुम्हारे आबै व पानी मांगनेकी कुछ सुधि नहीं हुई और तुमने क्रोध करके मेरे

गलेमें मराहुआ सांप डाल दिया सो मैं उससे बुरा न मानकर तुम्हें पानी न पिलानेसे बहुत लज्जितहूं परन्तु शृंगीऋषि मेरे बेटेने अपने अज्ञानसे तुमको शाप दियाहै कि सातदिनमें तुम तक्षक सांपके काटनेसे मरजाओगे इसलिये तुम अपनी मुक्ति बनाने का उद्योग करो जिसमें कर्म की फांसी से छूटो राजा यह बात सुन बहुत प्रसन्न हुआ व हाथ जोड़कर उस चेलेसे बोला शृंगीऋषिने मेरे ऊपर बड़ी कृपा किया जो मुझे शाप देकर इस मायारूपी समुद्रसे कि हम काम व क्रोधके वश होकर उसीमें डूबरहे थे बाहर निकाला व मुझको इतने दिनों में आजतक इस बातका ध्यान नहीं हुआ कि माया मोह से विरक्त होकर परमेश्वरका भजन व स्मरण करूं पर अब इस शापका डर मानकर मन मेरा विरक्त होगया सो तू मेरी दंडवत कहिकर ऋषीश्वर महाराज से विनयपूर्वक कहिदेना कि मैं अपने दंडको पहुचकर बहुत प्रसन्न हुआ परन्तु वह हृदयसे मेरा अपराध क्षमा करें राजा ने यह बात उस चेलेसे कहिकर उसको बहुतसा द्रव्य व रत्नादिक दक्षिणा देके विदा किया पर एक बातका खेद राजाको हुआ कि इस अधर्मके बदले उचित था कि तुरंत मेरा प्राण निकलजाता सात दिनतक जीकर इस पापी तनको रखना क्या प्रयोजन था इसलिये उचित है कि सात दिन जो मेरे मरनेमें हैं इस पापी तनको अन्न जल न दूं किसवास्ते कि जिस शरीरसे परमेश्वरका भजन व स्मरण न होवे वह तन किसी कामका नहीं होता ऐसा विचारकर राजा ने मनमें सोचा कि अब स्त्री व पुत्र व राज्य व धन का मोह छोड़कर परमेश्वरके ध्यानमें लीन होना चाहिये इतने दिन हमारे संसारी माया मोहमें वृथा बीतगये और मन मेरा विरक्त नहीं हुआ और जब मैं सातवें दिन तक्षक सांपके काटनेसे मरजाऊंगा तब यह राज्य और धन मेरा साथ छोड़देवेगा इसलिये उचित है कि मैं पहिले से इन सबकी माया मोह छोड़ दूं और गंगा किनारे जो तीनों लोकको तारती हैं सात दिन परमेश्वरका भजन व ध्यान करके अपनी मुक्ति बनाऊं किसवास्ते कि संसारमें जिसने जन्म लिया वह एक दिन अवश्य मरेगा इन्द्रादिक देवता भी अमर नहीं रहते संसारमें जैसा कर्म मनुष्य करता है वैसा दुःख व सुख

भोगकर चौरासी लाख योनिमें जन्म पाताहै सो हम इस सात दिनमें ऐसा कर्म करें जिसमें आवागमन से छूटकर भवसागर पार उतर जावें राजा ने यह बात विचारकर जनमेजय अपने बड़े बेटे को जो चौदह वर्षका था राजगद्दी पर बैठा दिया और राज्यकाजका काम मंत्रियों को सौंपकर जनमेजय से कहा हे बेटा गऊ व ब्राह्मणकी रक्षा करके प्रजाको सुख देना ऐसा कहकर राजाने मन अपना विरक्त करके भूषण व वस्त्र राजसी अंगसे उतारडाला व एक कोपीन पहिनकर गंगा किनारे चलेगये उस समय राजाने बहुतसा द्रव्य ब्राह्मणोंको दान देकर राज्य व परिवारका मोह इस तरह छोड़दिया जिस तरह कोई उबान्त करके उसकी तरफ आंख उठाकर नहीं देखता यह हाल सुनकर सब रानी व स्त्री व पुरुष नगरवाले रोते हुये राजा के पीछे गंगा किनारे पहुंचे व रानियों ने कहा महाराज तुम्हारे वियोगका दुःख हम लोगों से नहीं उठाया जावेगा राजा उन्हें विकल देख कर बोले स्त्री को चाहिये जिस बातमें उसके पतिका धर्म रहै वह काम करै उसके धर्म में विघ्न न डाले यह बात कहिकर सबको बिदा करदिया व किसी की तरफ आंख उठाकर नहीं देखा व हरद्वारमें गंगाकिनारे जाकर स्नान करके कुशासनपर उत्तरमुँह बैठकर मनमें ऐसा संकल्प किया जो सातदिन हमारी आयुष् है इस सात दिनतक कुछ अन्न जल न करूंगा राजाका यह हाल जिसने सुना वह विना रोये नहीं रहा व राजा श्रीकृष्ण-जीके चरणोंका ध्यान धरकर विचारने लगा कि यह सात दिन हरिचर्चा व सत्संगमें व्यतीत होयँ तो बहुत अच्छा है व राजाके शाप व विरक्त होनेका हाल ऋषीश्वर व मुनीश्वरलोग सुनकर उदास होगये अत्रिमुनि व वशिष्ठ व च्यवन व अरिष्टनेमि व भृगु व अंगिरा व पराशर व परशुराम व मेधा-तिथि व देवल व पिप्पलायन व भरद्वाज व गौतम व मैत्रेय व अगस्त्य व वेदव्यास व नारद व विश्वामित्र व कात्यायन व वामदेव व जमदग्नि आदिक बहुतसे ऋषीश्वर व महात्मालोग राजा परीक्षितको धर्मात्मा समझकर गंगा किनारे भेंट करने के वास्ते आये राजा ने उनको देखते ही दंडवत् व पूजा करके बड़े आदरभावसे बैठाया व सब किसीको आसन

देकर बोले महाराज मरतीसमय आप लोगों में से एक महात्माका भी दर्शन जिसको प्राप्त हो वह आवागमनसे छूटकर भवसागर पार उतर जावै सो मेरा बड़ा भाग्यहै जो मरतीसमय आपलोगोंने जिसतरह कृपा व दया करके मुझे दर्शन दिया उसीतरह दयालु होकर सात दिनतक यहां रहिये जिसमें तुम्हारे रहनेसे मेरा मन संसारी माया मोहकी ओर न जावै और आप लोगोंके सत्संगसे आठोंपहर चर्चा नाम परब्रह्म परमेश्वरकी बनीरहे व आपलोग कृपा करके मेरे भलेके वास्ते यहां आये हैं और कुछ इच्छा व परवाह नहीं रखते सो दया व कृपा करके कोई ऐसा उपाय बतलाइये कि इस सात दिनमें हम वह यत्न करके आवागमनसे छूट जावैं उन ऋषीश्वरोंमें से एकने कहा तीर्थ स्नान करना बड़ा पुण्य है दूसरे ऋषीश्वर बोले ब्राह्मण लोग इकट्ठे हुयेहैं यज्ञ करो जिसमें सब पाप तुम्हारा छूटजावै तीसरे ऋषीश्वर ने बतलाया कुछ तुम्हारे यहां द्रव्यहो उसे ब्राह्मणों को दान करदेव दान करनेसे उत्तम कोई दूसरा धर्म नहीं है चौथे ऋषीश्वरने कहा देवतोंका पूजन करने व मंत्र जप करनेसे सब पाप मिटजाते हैं इसी तरह सब ऋषीश्वरोंने अपने अपने ज्ञानपर्यन्त राजासे बतलाया परन्तु कोई बात पक्की नहीं ठहरी कि कौनसा काम करना चाहिये तब राजाने कहा आपलोगोंने जो बात विचार किया सो सब उत्तम है पर इन सब बातोंकी सामग्री इकट्ठी करनेको बहुत दिन चाहिये और मेरे मरनेमें केवल सात दिन रहे हैं कोई ऐसा उपाय बतलाइये जो इसी सात दिनमें पूर्ण होसकै इस बातको सब महात्मालोग विचार करने लगे इतनी कथा सुनाकर सूतजी ने कहा हे ऋषीश्वरो जिससमय नारदजी शाप देने का हाल सुनकर राजा परीक्षित के पास गंगाकिनारे जाते थे उससमय राहमें शुकदेवजी से भेंट हुई तब शुकदेवजी ने नारदमुनिसे पूंछा आप कहां जाते हैं नारदमुनि ने अपने जाने और राजा परीक्षित के शाप देनेका हाल सुनाकर कहा महाराज जो मुनि व ऋषीश्वर राजाके पास गये हैं वे लोग राजा को उत्तम राह जो मुक्त होनेकी है नहीं बतलाकर कोई ऋषि यज्ञ व कोई तप व कोई दानादिक धर्म करने के वास्ते कहैंगे पर थोड़े

दिन रहनेसे राजा परीक्षित उस काम करनेसे भवसागर पार नहीं उतरैगा इसलिये आप वहां जाके राजा को भगवत् गुण सुनाकर भवसागर पार उतार दीजिये यह बात सुनकर शुकदेवजीने पहिले वहां जाना अंगीकार नहीं किया तब नारदजीने उनको यह इतिहास सुनाया महाराज चलतीसमय मैंने रास्तेमें क्या देखा कि एक मनुष्य आंखवाला कुयें पर बैठा था उससमय एक अंधा राह भूलकर वहां चलाआया व उस कुयेंमें गिरकर मरगया और उस आंखवाले मनुष्य ने अंधेको देखनेपर भी कुयेंकी तरफ जानेसे नहीं मना किया सो उस देशके राजाने यह हाल सुनकर उस आंखवालेको पकड़ बहुतसा दंड देकर कहा तेरे आंख थी तैंने उस अंधे को कुयेंकी तरफ जानेसे क्यों नहीं बरजा सो आप बतलाइये उस आंख वालेने उचित किया या अनुचित यह इतिहास सुनकर शुकदेवजीने कहा हे नारदमुनि उस आंखवालेने बहुत अधर्म दंड देनेयोग्य काम किया कि उसके देखते वह अन्धा कुयेंमें गिरकर मरगया इसलिये वह उस पापका भागी हुआ तब नारदजी बोले हे शुकदेवमहाराज देखो राजा परीक्षित अपनी मुक्ति बनाने का रास्ता नहीं जानता और आप भगवत् भजन करनेके प्रतापसे सब राह जानते हैं कदाचित् उसको रास्ता नहीं दिखलाओगे तो उसके नरक जानेका पाप किसको होगा व तीनों लोकके राजा जो ईश्वर हैं वह तुमको इस पापके बदले दंड देवेंगे या नहीं यह बात सुनकर शुकदेवजी लाचार हुये व राजाके पास जाना अंगीकार करके नारदजी से कहा आप चलें मैं भी पीछे आताहूं सो जिस समय ऋषीश्वरलोग सात दिनमें राजाके मुक्त होनेका उपाय विचार कररहे थे उसी समय शुकदेवजी महाराज पन्द्रहवर्षकी अवस्था अतिसुन्दर परमहंस रूप बनाये आनन्दमूर्ति राजाके पास आये उनके तेजको देखकर सब ऋषीश्वर व मुनि जो बड़े बड़े महात्मा व बूढ़े वहां पहिलेसे बैठे थे उठ खड़े हुये व शुकदेवजी महाराजको बड़े आदर भावसे बीचमें ऊंचे सिंहासनपर बैठाया तब राजा परीक्षितके मनमें इस बातका संदेह हुआ कि देखो शुकदेवजीको छोटी अवस्था होनेपर भी बूढ़े बूढ़े ऋषीश्वरोंने उठकर बड़े आदरसे बैठाया सो इनके

प्रकाशसे मालूम होताहै कि यह गुणमें सबसे अधिकहैं ऐसा विचारकर राजा परीक्षित भी खड़ा होगया व उनको दंडवत् करके हाथ जोड़कर बड़ी अधीनतासे बोला हे कृपानिधान आपने बड़ी दयाकरके इस बेला जो मैं मरने के वास्ते गंगाकिनारे आया हूं मुझको दर्शन दिया व आप ऐसे महापुरुषका आना मेरे भाग्यसे हुआ जब शुकदेवजी सिंहासनपर बैठचुके तब पराशरमुनि शुकदेवजीके दादाने राजा परीक्षितका सन्देह मिटाने के वास्ते कहा हे राजा शुकदेवजी अवस्थामें छोटे व ज्ञानमें सबसे बड़े हैं व हमलोग जितने बड़े बड़े ऋषीश्वर व मुनियोंको यहां देखते हो सबको ज्ञानमें इनसे छोटा समझना चाहिये इसवास्ते हमलोगोंने उठकर इनका आदर किया था और यह तारणतरण हैं जबसे इन्होंने जन्म लिया तबसे विरक्तमन दिनरात परमेश्वरके ध्यानमें लीन रहकर श्यामसुन्दरका गुणानुवाद गाते हैं हे राजन् तेरा कोई बड़ा पुण्य सहाय हुआ जो इस समय यह आये सब कर्मोंसे जो उत्तम धर्म तेरे भवसागर पार उतरने के वास्ते होगा वह कहेंगे जिससे आवागमनसे छूटजावेगा इतनी कथा सुनाकर सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा कि तुमने जो पूंछा था कि शुकदेवजीको राजा परीक्षित किसतरह पहिंचाना उसका हाल तुमसे वर्णन किया राजा परीक्षित शुकदेवजीका हाल पराशरमुनिके मुखसे सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ व उसने शुकदेवजीका चरण धोकर विधिपूर्वक पूजन करके हाथ जोड़कर कहा महाराज आप विरक्तरूप संसारसे कुछ प्रयोजन नहीं रखते श्रीकृष्णजी महाराजने मुझको पांडवोंके वंशमें समझकर तुम्हारे मनमें दया उत्पन्न करदिया जो आप कृपा करके मुझको भवसागर पार उतारने के वास्ते यहां आये और आपके दर्शनसे मैं कृतार्थ हुआ जो कोई तुम्हारे चरण छुवे वह मुक्तपदवी पासक्ताहै सो मैं दीन होकर आपसे विनय करता हूं देवतालोगोंकी आयुष्का प्रमाण है कि इतने दिनोंमें मरेंगे और इस कलियुगमें मनुष्यके आयुर्बलका ठिकाना नहीं है कि कब मरेगा सो शृंगीऋषिके शाप देनेसे अब मेरे मरनेमें सातदिन और बाकी रहेहैं सो आप अपने मनके मालिकहैं तुम्हारे ऊपर किसीका वश नहीं चलता जो बिना

प्रसन्नता आपको एक क्षण भी रखसकै इसलिये मैं जल्दी करके आपसे पूंछताहूं कि मुझे भवसागर पार उतरने के वास्ते इस सातदिन में क्या करना चाहिये और हम संसारी जीव में स्त्री व पुत्रों के मोहमें फँसे रहकर कभी मनमें इस बातका विचार नहीं किया कि अन्तसमयका भी सोच करना चाहिये जिसतरह कसाई बहुतसी बकरियां अपने यहां रखकर उनमें से नित्य एक दो बकरी मारताहै व दूसरी और बकरियोंको कभी इस बात का डर नहीं होता कि हमारी भी एक दिन यही गति होगी बड़े हर्ष से प्रतिदिन दाना व घास व पानी खाती पीतीहैं उसी तरह हम संसारी लोग सदा माता व पिता व भ्राता व पुत्रका मरना आंख से देखकर कुछ नहीं डरते कि हमको भी एक दिन मरना होगा अधर्म करना छोड़कर परमेश्वर का भजन करें और यह सब हाल देखने पर भी अपना मन स्त्री और पुत्र झूठे व्यवहार और माया मोहमें फँसाये रहतेहैं अब नारायणजीने मेरे ऊपर कृपा करके मुझे माया मोहकी नींद से जगाया कि मन मेरा विरक्त हुआ जिसतरह शास्त्रका वचनहै कि कदाचित् कोई मनुष्य पांच दिन कार्त्तिकके अन्तमें एकादशीसे पूर्णमासीतक गंगास्नान करै तो उसे महीनेभर नहानेका पुण्य प्राप्त होताहै उसीतरह आप कोई ऐसा उपाय बतलावैं कि इस सात दिनमें जो मेरे मरने के हैं तुरन्त गुण करै व जब मनुष्य मरने के निकट पहुँचै तब उसको अपनी मुक्ति बनाने वास्ते क्या उपाय करना चाहिये किसवास्ते कि मरतेसमय गलेमें कफ इकट्ठा होनेसे परमेश्वरका नाम उच्चारण नहीं होसक्ता व यमदूतों के डरसे मल व मूत्र निकल आताहै इसलिये आपसे विनय करताहूँ कि कोई ऐसा धर्म बतलाइये जिसमें जल्दी मुक्ति होवे व दूसरे ऋषीश्वरोंने जो कुछ दान व यज्ञादिक उपाय बतलाया था वह भी शुकदेवजीसे कहदिया जब यह सब बात सुन कर शुकदेवजी महाराजने मुसकरा दिया व ऋषीश्वरों का कहना अच्छा नहीं लगा तब राजा परीक्षित फिर हाथ जोड़कर बोले हे कृपानिधान इस समय तुम्हारे विचारमें कथा पुराण सुनना या मंत्र जपना या किसी देवता व श्यामसुन्दरके चरणोंका ध्यान करना हो सो बतलाइये वैसा मैं करूं॥

दूसरा स्कन्ध ॥

शुकदेवजी करके श्रीमद्भागवत व परब्रह्म परमेश्वरके अवतार धारण करनेका हाल वर्णन करना ॥

दो० जासु कृपाते होतहै निपट अयान सयान । सो माखनके हियबसो नँदनन्दन भगवान ॥
जो द्वितीयके मध्यमें गूढ़ कहेउ शुकदेव । श्यामसुँदर सो कृपाकरि मोहिं बताओ भेव ॥

पहिला अध्याय ।

शुकदेवजी महाराज का राजा परीक्षितको धैर्य देना व श्रीमद्भागवतकी स्तुति वर्णन करना ॥

शुकदेवजीने राजा परीक्षितका वचन सुनकर कहा हे राजन् तुमने जो पूंछा कि अन्तसमय मनुष्य को अपनी मुक्ति बनाने के वास्ते क्या करना चाहिये सो बहुत अच्छी बात पूंछी है इसमें संसारी जीवोंका भी भला होगा हे राजन् जो अज्ञान मनुष्य परमेश्वर की महिमाको नहीं जानता और केवल सुख व विलास में डूबकर भ्रष्ट होरहा है उसके वास्ते सब दुःख समझना चाहिये किसवास्ते कि वह लोग संसारी विषय व सुखके पदार्थों की चाहना रखते हैं पर विना परमेश्वरकी कृपा व दया के उनको कुछ सुख नहीं मिलता वह इसी तरह अपनी आयुष् रातको स्त्रीप्रसंग व दिन को उद्यम व व्यापार में व्यतीत करते हैं उन्हें आठोंपहर संसारी कामसे छुट्टी नहीं मिलती कि किसी क्षण नारायणजीका स्मरण व ध्यान जो उन्हें उत्पन्न व पालन करते हैं करके अपना परलोक बनावें व धन व परिवार से अपना भला चाहते हैं देखो मनुष्य जिस स्त्री व पुत्रके माया व मोहमें फँसकर सब तरहका दुःख उठाताहै व झूंठ सत्य बोलकर द्रव्य उत्पन्न करके जिनको पालताहै उनका मरना भी अपनी आंखों से देखकर मनको इस महाजालसे विरक्त नहीं करता व मरनेउपरान्त कोई बेटा व भाई व बन्धु उसकी सहायता नहीं करसक्ते व पाप करनेके बदले आप नरकभोगताहै ॥

क० कहा कोशलेश सुख पायो प्रभुतनय पाय कहा सुख दीन्हों प्रह्लादहू के तातजू।
कहा सुख दिया प्रियराघवको दुखी किया कहा सुख सुकंठै दिया बालि बली भ्रातजू॥
कहा सुख दीन्हों धनहेतु भयो मथन सिंधु कहा सुख कौरवको दियो राज्य ख्यात जू।
निजानन्दकन्द बिन लहेउ सुख लेश किम कहेउ वसरबन्धुक्षण दुखको संघात जू॥

सो हे राजन् तुम्हारा जन्म भरतखण्डमें हुआ जे मनुष्य इस खण्डमें परमेश्वरका भजन व ध्यान करके वैकुंठका सुख पाते हैं उन्हीं लोगोंका संसारमें जन्म लेना सफल है देखो मुनि व ऋषीश्वर लोग संसारी माया छोड़कर वनमें श्यामसुन्दरका स्मरण व भजन करके अपना काल विताते हैं सो हे राजन् सुनो जिसकी मृत्यु निकट पहुँची हो उसको भवसागर पार उतरने के वास्ते सिवाय नारायणजीकी कथा व स्तुति सुननेके दूसरी बात उत्तम नहीं है और वह मनुष्य अपना मन स्त्री व पुत्र व धनादिक संसारी मायामें विरक्त रखकर इस बातपर स्थिर करै कि यह सब व्यवहार जगत्का झूठाहै व संसारी वस्तु सदा वर्त्तमान नहीं रहती व मरनेके उपरान्त कोई वस्तु उसके साथ नहीं जाती केवल वह अकेला जाताहै और स्त्री व पुत्र व धनादिक सब उसको छोड़देते हैं उसका साथ नहीं करते इस वास्ते बुद्धिमान् व ज्ञानीको उचित है कि उनके छोड़नेसे पहिले आप उन लोगोंको त्याग करदेवै व भगवान्की कथा शुद्ध मनसे चित्त लगाकर सुनै व मुरलीमनोहरके चरणोंमें ध्यान लगाकर उसी परब्रह्म परमेश्वरकी प्रीति उत्पन्न करै और जो कुछ कथा व लीला सुनै उसपर विश्वास रखकर कभी उसको झूठ न जानै व उसको सत्य जानकर किसी बातका सन्देह न करै तब वह मुक्ति पावैगा सो हे राजन् हम श्रीमद्भागवत जो सब पुराणोंसे उत्तम होकर उसमें केवल श्यामसुन्दरकी लीला व स्तुति लिखीहै और हमने अपने पिता व्यासजीसे उसको पढ़ा था तुमको सुनाते हैं जिस किसी की ऐसी इच्छा हो कि हम आवागमनसे छूटजावैं उसके वास्ते श्रीमद्भागवत सुनने के सिवाय कोई दूसरा उपाय उत्तम नहीं है सब शास्त्र सुननेका फल केवल भागवत सुननेसे प्राप्त होताहै व सब वेदोंका सार इसे समझना चाहिये जिसको यमराजकी फांसीसे छूटना हो वह भागवत सुनै परमेश्वर के चरणोंमें उसको प्रीति उत्पन्न होगी और जो मनुष्य स्त्री व लड़कों के

मोहमें फँसा रहता है कदाचित् वह भी कथा सुननेका नित्य अभ्यास करै तो निस्सन्देह उसका मन विरक्त होकर हरिचरणोंमें प्रीति उत्पन्न होके भवसागर पार उतरजावे व जिस स्थानपर यह कथा होती है उस जगह सब तीर्थ व देवतालोग सुननेवास्ते आकर इकट्ठे होते हैं व उसके सुननेसे अनेक जन्मका पाप छूट जाता है सो हे राजन् तुम भी इस कथाके सुनने से मुक्तिपदवी को पहुँचोगे कदाचित् तुम यह बात कहो कि तुम्हारे आने से पहिले यह सब ऋषीश्वर जो यहां वर्तमान थे इन्होंने किसवास्ते हमको भागवत कथा सुननेका सम्मत नहीं दिया इसका कारण यह समझना चाहिये कि अभीतक ऋषीश्वरोंका मन एक बातपर स्थिर नहीं था कभी यज्ञ करने के वास्ते व कभी जप व कभी तीर्थ व कभी दान व पूजाकी तरफ चलायमान होताहै और हम अपना मन रातदिन परमेश्वरके ध्यान व स्मरणमें लगाकर श्रीमद्भागवत पढ़नेके सिवाय दूसरी बातोंसे कुछ प्रयोजन नहीं रखते व अवधूतकी तरह अपनी आयुर्दाय संसार में काटकर आनन्दसे रहते हैं हे राजन् कदाचित् तुम यह जानते हो कि मेरे मरने में थोड़े दिन रहगये सो इस बातसे मत डरो तुमको अभी सातदिन मरनेमें हैं श्रीमद्भागवत चित्त लगाकर अच्छीतरह प्रेमसे सुनो तुम्हारी मुक्ति होगी खट्वांग नाम राजा दोघड़ीमें मुक्त हुआ था तुमको सातदिन बहुत हैं क्यों तुम घबड़ाते हो कदाचित् कोई अपने सच्चे मनसे परलोक बनाना चाहे तो अढ़ाई घड़ीमें मुक्ति पा सक्ताहै व संसारी माया मोहमें हजार वर्ष तक अपनी आयुर्दाय व्यर्थ बितावै तो मरनेउपरांत नरक भोगताहै यह बात सुनतेही राजाने हाथ जोड़कर कहा महाराज खट्वांग राजाने दो घड़ी में किस तरह मुक्ति पाई थी उसका हाल विधिपूर्वक वर्णन कीजिये शुकदेवजी बोले त्रेतायुगके आदिमें खट्वांग नाम राजा सातों द्वीपका बड़ा प्रतापी व बलवान् व नीतिमान् व धर्मात्मा अपने कर्म व धर्मसे अयोध्यापुरीमें रहता था उन्हीं दिनोंमें दैत्योंने इन्द्रादिक देवतोंको लड़ाई में जीतकर इन्द्रासनसे निकाल दिया तब बृहस्पति पुरोहित ने देवतोंसे कहा जब राजा खट्वांग तुम्हारी सहायता करके दैत्योंसे लड़ाई करैं तब

तुम्हारी जीत होगी यह बात सुनतेही इन्द्र देवतों समेत मर्त्यलोकमें राजा खट्वांगके पास आया व उससे अपना हाल कहकर सहायता चाही तब राजाने उनको दंडवत् करके कहा हमारा बड़ा भाग्य है जो तुमलोग हम से दैत्योंकी लड़ाई के वास्ते सहायता चाहते हो एक दिन इस शरीरका अवश्य नाश होगा कदाचित् आपलोगों के काम आवे तो इससे क्या उत्तम है ऐसा वचन कहकर राजाने अपने शस्त्र बांध लिये व इन्द्रादिक के साथ जाकर दैत्योंसे लड़ाई किया व उन्हें जीतकर फिर देवलोककी राजगद्दी इन्द्रको दिया जब देवतोंने राजाकी कृपासे विजय पाया व निडर होकर अपना राज्य करने लगे तब राजाने देवतों से विदा मांगी उस समय इन्द्रने प्रसन्न होकर कहा हे राजन् तुम हमसे कुछ वरदान मांगो यह बात सुनकर राजाने विचार किया कि हमने सहायता करके छूटा हुआ राज्य इनका दिला दियाहै इनसे कौन वस्तु मांगें इन्द्रने उसके मनका हाल जानकर कहा हे राजन् देवतोंको बीती हुई व होनेवाली बात सब मालूम रहती है हमलोग दैत्योंके उपद्रवसे कि वह हमसे बलवान् हैं व्याकुल थे इसलिये तुमसे सहायता चाही थी ऐसा वचन सुनकर राजा ने अपनी बुढ़ाई सोचके देवतों से पूंछा कि पहिले तुम यह बतलाओ कि मेरे आयुर्बलमें कितने दिनहैं तब मैं तुमसे वरदान मांगूं इन्द्रने विचारकर कहा हे राजन् तुम्हारी आयुर्दायमें केवल चार घड़ी हैं यह बात सुनते ही राजाने देवतोंसे कहा हम यही वरदान मांगते हैं कि मुझे इसी क्षण अयोध्यामें मेरे स्थानपर पहुँचादेव वहां कर्मभूमि हमारीहै अब मेरे मरनेका समय निकट पहुँचा वहां जाकर मैं ऐसा कर्म करूं जिसमें आवागमनसे छूटकर भवसागर पार उतरजाऊं इन्द्रने उसी समय एक विमान बहुत वेग से चलनेवाला राजाको दिया सो राजा उसी विमानपर चढ़कर दो घड़ीमें अपने स्थानपर पहुँचे हे राजन् उसने भरतखण्डको देवलोकसे अच्छा जाना जो मरनेवास्ते अयोध्यापुरीमें आया सो तुम विश्वास करके जानो कि भरतखंड बहुत अच्छा स्थानहै व राजाने अयोध्यामें आनकर उसी दोघड़ी में द्रव्यादिक सब वस्तु ब्राह्मणों को इच्छापूर्वक दान देकर अपने

बेटेको राजगद्दीपर बैठा दिया व स्त्री व पुत्र व राज्यका माया मोह मनसे तोड़कर वैराग्य धारण करके सरयूकिनारे जा बैठा व भगवान्‌जीके ध्यानमें लीनहोके योगाभ्याससे अपना तनु त्यागकर वैकुंठको सिधारा सो हे राजन् उसकी मुक्ति दो घड़ीमें हुई तुझे अभी सात दिन बहुतहैं सो तुम अपना मन संसारी मायासे तोड़कर पांच भूतात्मा व सब इंद्रियों को अपने वश में रक्खो व परमेश्वरके विराट्‌रूपका ध्यान कि सबलोक उसी रूपमें वर्तमानहैं करो सातोंलोक ऊपरके कमरसे ऊपर व सातोंलोक नीचेके कमर से नीचे उस आदिपुरुष के समझो व जितनी वस्तु तुम संसारमें देखते हो उस रूपसे कोई बाहर नहीं है यह बात विचारकर उस तेजके साथ जिसके प्रकाशसे सूर्य व चन्द्रमा प्रकाशित हैं ध्यान लगाओ व सब जीवोंमें उसी तेजका चमत्कार जानकर उसके सिवाय सब जगत्‌का व्यवहार झूठा समझो और जो कोई उसको सब जगह पर एकसा देखताहै उसे किसी शत्रुका डर नहीं रहता व मित्रसे भी सहायता की इच्छा नहीं रहती सब जीवोंमें उन्हींका प्रकाश उसको दिखाई देताहै श्रीकृष्णजीके चरणोंका ध्यान हृदय में रखकर श्रीमद्भागवत मन लगाके सुनो तुम्हारी मुक्ति होजावेगी और शुकदेवजी महाराजका अभिप्राय इन सब बातों से यह था कि तक्षक सांप का डर राजा के चित्तसे निकलजावे व जब राजा अपने मनमें विश्वास जाने कि नारायणजीके सिवाय दूसरी संसारी वस्तुमें कुछ प्रकाश नहीं है तब तक्षक का डर छोड़कर यह समझे किसको कौन काटताहै जब इसतरहका ज्ञान मनमें आया तब वह जीवन्मुक्त हुआ यह बात सुनके राजा परीक्षितने बहुत आनन्द होकर कहा महाराज मैं किसतरह बैठकर कौनसे रूपका ध्यान करूं शुकदेवजी बोले हे राजन् तुम कमलासन बैठो व एकचित्त होकर अपने हृदयमें परमेश्वरके छोटे रूपका ध्यान जिसको सूक्ष्मरूप कहते हैं करो कदाचित् अन्तःकरणमें उस स्वरूपका ध्यान न कर सको तो सब संसार परमेश्वरके विराट्‌रूपमें जानकर उसका ध्यान लगाओ व विराट्‌रूपका हाल इसतरह पर है पाताल परमेश्वरके पांव व रसातललोक घुटना व सुतललोक जंघा व वितल व अतललोक चूतड़ पृथ्वी

कमर व आकाश नाभि व ज्योतिश्चक्र जहां सूर्य व चन्द्रमा रहतेहैं छाती व महर्लोक गला व जनलोक मुख व तपलोक माथा व ब्रह्माका सत्य-लोक शिर उस आदिपुरुषकाहै इन्द्रादि देवता उनकी भुजा व दशोदिशा कान व अश्विनीकुमार नाक व सब सुगन्ध नाकका छेद व अग्नि मुख व आकाश आंखोंके रहनेका गड़हा व सूर्य आंख व दिन राति पलक भुजा व जल पांव व सब जगत्का स्वाद जिह्वा व यमराज दांत व माया उनकी हँसी व लज्जा ऊपरका होठ व लालच नीचे का होठ व धर्म छाती व अधर्म पीठ व सब वृक्ष शरीर के रोम व मेघघटा शिरके बाल व नदियां शरीरकी नसैं व पहाड़ तनकी हड्डी व समुद्र पेट व हवा श्वासा व मन चन्द्रमा व पानी मेहका वीर्य व प्रात व संध्या परमेश्वरका कपड़ा है और परमेश्वर के उस रूप में मनुष्य बुद्धिसे घोड़ा व गदहा व खचर व ऊंट नखसे व हरिण आदिक पशु जंघा से व पक्षी आदि जिह्वा से व गन्धर्व व विद्याधर व चारण व अप्सरा स्वरसे व भेड़िया आदि पैरकी फिल्लीसे व यज्ञादिक परमेश्वर के मर्म से उत्पन्न हुयेहैं सो मनुष्यके तनमें ज्ञान रहता है व दूसरी योनि पशु व पक्षी आदिमें ज्ञान नहीं होता इसतरह जो पर-मेश्वरका विराट्रूप है उसीको तुम ध्यान करो जब इसमें तुम्हारा मन लगजावै तब पीछे से छोटे स्वरूपका ध्यान करना ॥

दूसरा अध्याय।

शुकदेवजीका यह बात वर्णन करना कि परमेश्वरने अपने भक्तोंके वास्ते जो उनके नामपर वनमें जाकर उनका भजन करते हैं सब खाने व पहिरने का पदार्थ तैयार कररक्खा है ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् पहिला रस्ता परमेश्वरके ध्यान करनेका यही विराट्रूपहै पर जब पहिले अपना मन संसारी माया से विरक्त कर लेवै तब नारायणजीकी तरफ मन लगताहै व परमेश्वरका ध्यान करनेसे संसारी माया छूटिजातीहै और जो लोग बुद्धिमान् व ज्ञानी हैं वह आठो पहर हरिचरणोंमें ध्यान लगाकर संसारी व्यवहार से कुछ प्रयोजन नहीं रखते कदाचित् तुमको इस बातका शोच हो कि जब कोई मनुष्य गृहस्थी छोड़ के वनमें जाकर नारायणजीका तप व स्मरण करै तो उसको भोजन

व वस्त्र व बर्तन विना दुःख होगा तब परमेश्वरके भजन व ध्यानमें उसका मन किसतरह लगैगा सो नारायणजीने ऋषीश्वर व तपस्वी अपने भक्तों के वास्ते जो लोग विरक्त होकर उनके मिलने के लिये तप व योग करतेहैं पहिलेसे सब वस्तु तैयार कर रक्खाहै संसारमें मनुष्यको बड़े परिश्रम से सब वस्तु प्रयोजनकी मिलती हैं व वनमें परमेश्वरकी कृपा से विना परि-श्रम सब पदार्थ प्राप्त होतेहैं पृथ्वी सोनेके वास्ते तैयार समझकर वहां सुखसे सोवै नींद आवनेउपरांत जिसतरह पृथ्वीपर सुख होता है उसीतरह शय्या व तोशक पर भी समझना चाहिये व तकियेका काम टिहुनीसे निकल जाताहै व अनेक तरहके फल व मेवे खाने वास्ते वनमें लगे रहते हैं उनको आनन्दसे खाया करै उनसे पेट भरा रहकर दूसरी वस्तु के खानेकी इच्छा न होगी व उनको बर्तन भी न चाहिये उनके दोनों हाथोंसे अच्छा दूसरा बर्तन भी न होगा जिसको चोर व ठग लेने व लूटने व पुराने होनेका डर नहीं रहता व कपड़ा पहिरने के वास्ते वृक्षकी छाल उत्तमहै जिसके फटने व धुजानेका कुछ शोच नहीं रहता कदाचित् छालसे शरीर छिपाया न जावै जाड़ा मालूम हो तो नगर व गाँव के निकट घूरोंपर लत्ते व चिथड़े पड़ेरहते हैं उनको उठालाकर पानीसे धोके अपना तन छिपालेवे व पहाड़ों की दरोंको रहनेवास्ते स्थान समझै व तालाब नदी आदिकमें पानी पीकर उसीमें स्नान करै व जो मनुष्य वनमें जाकर परमेश्वरकी शरणमें रहताहै शेर व भालू आदिक जीवों से उसकी रक्षा परमेश्वर करते हैं व हे राजन् हम कुछ लालच व अपने प्रयोजनके वास्ते तुम्हारे पास नहीं आये नारद-जीने हमारे ऊपर तुम्हारा बोझा डाल दिया था इसलिये मैं आयाहूं और जो मनुष्य परमेश्वरके भजन व ध्यानसे विमुख रहताहै उसे वैतरणी नदी व नरकों का दुःख अवश्य भोगना पड़ेगा और जो लोग संसारी माया से विरक्त होकर परमेश्वर के ध्यान व स्मरणमें रहतेहैं उनको गृहस्थीके पास कि वह लोग अपने द्रव्यके घमंडमें अन्धे रहते हैं भोजन व वस्त्र मांगने के वास्ते जाना क्या प्रयोजन है धनीपात्र लोग उनको पहिचान नहीं सक्ते हरिभक्तोंका सब अर्थ परमेश्वर निकालदेते हैं सो मनुष्यको यह बात समझ

कर सन्तोष रखना चाहिये कि जिस नारायणने मुझे उत्पन्न किया वही जीविका देनेवालेहैं कभी भूंखा नहीं रक्खैंगे जब मैं माताके पेटमें था तब वही परमेश्वर मुझे भोजन पहुँचाते थे अब किसतरह मैं भूंखा रहूंगा व उन्हीं परमेश्वरने उत्पन्न होनेसे पहिले हमारी माताकी छातीमें मेरे पीने के वास्ते दूध तैयार कररक्खा था सो थोड़ा सा विचार करके समझना चाहिये कि कुचोंमें सब मांस रहताहै विना परमेश्वर की दया व कृपा उनमें दूध किसभांति उत्पन्न हुआ व यह हाल देखने परभी जो मनुष्य संतोष न रक्खे व परमेश्वरको भूलकर खाने पहिरनेका शोच करे उसे मूर्ख समझना चाहिये देखो जो कोई गाय व बैलआदि पशुओंको अपने द्वारपर बांधतेहैं वह लोग उनके घास व दानेका शोच रखते हैं नारायणजी जो सबकी जीविका देनेवालेहैं वह किसतरह अपने दासकी चिन्ता छोड़कर उसे भूंखा रक्खेंगे उससमय तो परमेश्वरने तुझको नहीं भुलाया जब तू एक बूंद पानीके समान था फिर परमेश्वरने अपनी महिमासे तेरे हाथोंमें दश आँगुली उत्पन्न करके दोनों कांधोंपर दो भुजा बनाईं अब तू किसतरह जानताहै कि नारायणजी मुझे भूलजावेंगे हे राजन् किसकी सामर्थ्य है जो परमेश्वरके गुणोंका हाल जानसकै पहिले नित्य श्वासा चढ़ावनेका साधन करैव योगाभ्यासकेसाथ अपना प्राण ब्रह्मांडपर चढ़ावे व फूल कमलका ध्यान हृदयमें कि जिसमें हजार पत्ते होकर मुँह उनका नीचे है अपने ध्यानमें उस फूलका मुख ऊपरको करै यह साधन करनेसे उसका मन इसतरह निर्मल होजायगा जिस तरह लोहा मुर्चा लगा हुआ सिकल करनेसे चमकने लगता है और जब मन शुद्ध होजायगा तब उस फूलमें उसको परमेश्वरका छोटा स्वरूप दिखलाई देकर ऐसा सुख मिलेगा जो उसने कभी नहीं पाया था और उस सुखपर वह मोहित होकर दूसरी वस्तुकी चाहना नहीं रक्खेगा जब वह इस पदवी को पहुँचा तब अच्छा योगीश्वर हुआ फिर उसको कुछ यज्ञ व तपआदि करनेका प्रयोजन नहीं रहता और वह परमेश्वर का चमत्कार सब जीवोंमें एकसा देखकर किसीके साथ शत्रुता व मित्रता नहीं रखता सो हे राजन् पहिले तुम विराट्‌रूपका ध्यान करो जब तुम्हारा मन

स्थिर होजावे तब अपने हृदयमें उसी कमलका ध्यान लगावो उस फूलमें तुमको अंगुष्ठप्रमाण चतुर्भुजीरूप परमेश्वरका श्यामरङ्ग नीलमणि ऐसा चमकता हुआ शङ्ख चक्र गदा पद्म चारों हाथमें लिये जड़ाऊ किरीट व मुकुट मस्तकपर व मकराकृतकुंडल कानों में व वैजयन्ती माला व वनमाला गलेमें व नवरत्न जड़ाऊ भुजापर व कर्धनी घुंघुरूदार कमरके बीच व पैरों में कड़ा पहिने व पीताम्बर बांधे उपरना ओढ़े हुये लम्बीभुजा बांके नयन तापहारिणी चितवन मन्द मन्द मुसकराते छातीमें भृगुलता का चिह्न तुमको दिखलाई देवैगा कदाचित् सम्पूर्ण रूपका ध्यान तुमसे एकबार न होसकै तो पहिले चरणोंसे आरम्भ करके एक एक अंग ध्यानमें लाओ धीरे धीरे सब रूप तुम्हारे ध्यानमें आजावेगा जब अच्छीतरह वह रूप तुम्हारे ध्यान में आजावे तब तुम श्वास खींचनेकी साधना करके अपना प्राण मस्तक पर चढ़ालेना जिस मनुष्यका प्राण ब्रह्मांड तोड़कर निकलजावे वह जीव सूर्य-मंडलमें होकर वैकुंठ पहुँचताहै फिर उसका आवागमन नहीं होता जो लोग यज्ञ व तप व दान व तीर्थादिक करके अपना तन त्याग करते हैं वह चन्द्रमाके द्वारपर होकर देवलोकादिमें अपने कर्मानुसार जाते हैं व अपने पुण्यके प्रमाण वहांका सुख भोगकर उनको फिर संसारमें जन्म लेना पड़ता है आवागमन से नहीं छूटते व मकरसे लेकर मिथुनकी संक्रांति छः महीनेतक सूर्य उत्तरायण रहतेहैं सो यह देवतोंका दिनहै इस छःमहीनेके मरनेवाले मनुष्य सूर्यके द्वार पर होकर वैकुंठको जाते हैं व कर्कसे धनकी संक्रांति छः महीने तक सूर्य दक्षिणायन समझना चाहिये यह देवतों की रात्रिहै इस छः महीनेके मरनेवाले लोग चन्द्रमाके द्वारपर होकर देवलोकादि में जैसा कर्म किया हो जातेहैं वहांका सुख अवधि-पर्यन्त भोगकर उनको फिर संसारमें जन्म लेना पड़ता है दोनों तरहके धर्मकी राह हमने तुमसे कहदिया इसके सिवाय कोई तीसरी राह नहीं है हे राजन् जो कोई मनुष्य के तनुमें परमेश्वरका भजन व स्मरण करके अपनी मुक्ति नहीं बनाता उसको फिर चौरासीलाख योनिमें जन्म लेना पड़ता है जो कोई इस तनुमें परमेश्वर को नहीं पहिचानता व आयुर्दाय

अपनी खेलकूद व संसारी मायामें फँसकर नष्ट कर देताहै उसकी वह गति समझना चाहिये जिसतरह कोई मनुष्य बड़े परिश्रमसे ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया तब उसको थोड़ासा परिश्रम अपना मनोरथ मिलनेवास्ते रह जाता है उसी तरह जब जीवने मनुष्यका तनु पाया तो जानो वह ऊंचे पहाड़ पर चढ़चुका कदाचित् उसने इस तनुमें थोड़ासा परिश्रम भजन व स्मरण परमेश्वर का करके अपना काम नहीं सँवारा तो जानो वह उस पहाड़से नीचे पृथ्वीपर गिर पड़ा फिर चौरासी लाख योनि में जन्म पाकर उस पहाड़के ऊपर वह पहुँचसक्ता है जिसने जन्म अपना व्यर्थ खोया वह मरनेके उपरान्त मनमें बहुत पछताकर कहेगा देखो मैंने क्या बुरा काम किया जो परमेश्वरको नहीं जाना व संसारी माया मोहमें लिपटकर नष्ट हुआ फिर वह बात हाथसे जाती रहेगी इसलिये मनुष्यको यह ध्यान रखना चाहिये कि प्रतिदिन आयुर्दाय मेरी क्षीण होकर मृत्युके दिन निकट चले आतेहैं जो दिन बीतगये वह फिर आ नहीं सक्ते यह बात आठोपहर मनमें विश्वास रखकर एक क्षणभी परमेश्वरको न भुलावे व नारायणजीके भजन व स्मरणमें अपना दिन काटे व जिसने मनुष्यके तनु में परमेश्वरका भजन नहीं किया वह पशुके समानहै जिस तरह ऊंट व बैलकी पीठपर बोझा लादकर एक समय उसे दाना व घास देतेहैं और वह उसीमें प्रसन्न रहकर दिन अपना काटताहै और यह नहीं जानता कि कहां सूर्य निकलते हैं व डूबतेहैं वही गति उस मनुष्यकी समझना चाहिये व हे राजन् परमेश्वर थोड़े ध्यान करनेमें मनुष्यसे प्रसन्न होकर उसको मुक्ति देते हैं व श्रीकृष्णजीने गीतामें अर्जुनसे कहाहै कि चारि समयमें मनुष्यलोग अवश्य मेरा स्मरण करते हैं एक जब मनुष्य रोगी होकर दुःख पाताहै दूसरे जिसको मेरे मिलनेकी इच्छा हो तीसरे जब किसीका कुछ काम अटके उसे कोई वस्तुकी मिलनेके वास्ते इच्छा हो चौथे ज्ञानी जो मुझे पहिचानकर मेरे भेदको पहुँचाहै वह लोग अपना अपना अर्थ सिद्ध होनेके वास्ते मेरा स्मरण व ध्यान करते हैं सो मैं चारों तरहके याद करनेवालोंसे प्रसन्न होताहूं पर ज्ञानीसे अधिक कि वह सदा

मेरे ध्यानमें रहताहै हे परीक्षित तू मनमें कुछ सन्देह मत कर इस सातदिन में अवश्य तेरी मुक्ति होगी हम श्रीमद्भागवत अमृतरूपी कथा कहते हैं तुम चित्त लगाकर सुनो भवसागर पार उतर जावोगे॥

तीसरा अध्याय।

शुकदेवजी महाराज का यह हाल वर्णन करना कि किसदेवता की आराधना करने से कौन फल मिलता है॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा जब राजा परीक्षितने यह सब हाल परमेश्वरके ध्यान करनेका सुना तब घबड़ाकर मनमें कहा किस तरहसे यह स्वरूप नारायणजीका मेरे ध्यानमें आवेगा इसी चिन्तामें राजाका मुख मलीन होगया तब शुकदेवजीने राजाको उदास देखकर ऐसा विचारा कदाचित् राजाके मनमें कोई इच्छा रहगई हो इसकारण राजाका मुख उदास होगयाहै सो मैं अपनी बातोंसे इसके चित्त का हाल मालूम कर लेताहूं यह विचारकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जो कोई अपना सत्य बढ़ाया चाहै वह ब्रह्माजीकी व जो अपनी इन्द्रियोंको पुष्ट किया चाहै वह राजा इन्द्रकी व जो प्रजा अधिक होनेकी इच्छा रक्खे वह दक्षप्रजापतिकी व जो द्रव्यकी इच्छा रक्खे वह देवीजीकी जो अपने रूपका तेज बढ़ाया चाहे वह अग्नि की व अन्न व हाथी व घोड़ा आदि मिलनेकी चाहना रक्खे वह आठ वसुदेवताकी व जो कामदेवकी वृद्धि चाहे वह रुद्रकी व जो कोई अपने तनुमें अधिक बल होनेकी इच्छा रखता हो वह इलादेवीकी व सुन्दरताई अधिक चाहे वह गन्धर्वोंकी व जिसे सुन्दर स्त्रीकी इच्छा हो तो उर्वशी अप्सराकी व जो मनुष्य यशकी इच्छा रखता हो वह जगत् भगवान्‌की व जो विद्या चाहे वह महादेवकी व जो अपने परिवारकी बढ़ती चाहे वह दिव्य पितरोंकी व जिसको अपने कुल व परिवारकी रक्षा करनी हो वह पुण्यजीवोंकी व जिसको राजगद्दीकी इच्छा हो वह मनुकी व जो कोई अपने शत्रुका नाश चाहै वह निर्ऋति-राक्षसकी व जो कोई अपने शरीरमें वीर्य बढ़नेकी इच्छा रखता हो वह चन्द्रमाकी व जो कोई अपनी आयुर्दाय अधिक चाहे तो अश्विनीकुमारकी

व जो स्त्री सुन्दर पति चाहे वह पार्वतीजीकी व जिसको किसी वस्तुकी इच्छा न होवे वह परमपुरुष नारायणजीकी व जिस किसीको सब वस्तु कि जिसका वर्णन ऊपर होचुका है व सिवाय उसके और जिस वस्तुकी इच्छा होवे वह श्रीनारायणजीकी पूजा करें उनकी कृपासे सब मनोरथ पूर्ण होते हैं सो हे राजन् जो मनुष्य अपना परलोक बनाने के वास्ते परमेश्वरको नहीं याद करता उसे कुत्ता व गदहा आदि पशुके समान समझना चाहिये जिसतरह शूकर विष्ठा खाताहै उसीतरह मदिरा पान करनेवाले मनुष्य को समझो जिस जीवने मनुष्यका तनु पाकर अपने कानों से परमेश्वरकी कथा व लीला व कीर्तन नहीं सुना और लोगोंकी निन्दा सुनने में मन लगाया उसका कान बिच्छू व सांपके बिलके समानहै व जिसने जिह्वासे परमेश्वरका नाम नहीं जपा उसकी जिह्वा मेढकके समान जानना चाहिये जो वृथा वर्षाऋतुमें चिल्लाया करता है व जिसका शिर देवस्थान या ब्राह्मण व साधुके आगे दंडवत् करने के वास्ते नहीं झुका उसका मस्तक बोझके समान तनुपर समझना उचितहै व जिसने धन पाकर अपने हाथसे दान नहीं दिया व हाथोंसे नारायणजी व देवता व साधु व ब्राह्मणकी सेवा व पूजा नहीं की वह हाथ काठकी करछी समान जानना चाहिये व जिन पैरोंसे तीर्थ यात्रा व दर्शन करने देवताओं के व साधु व ब्राह्मणके नहीं गया वे पांव वृक्षों की डाली समान हैं व जिसने आंखोंसे प्रत्यक्ष या ध्यानमें परमेश्वर व देवताका दर्शन नहीं किया उन आंखों को मोरपंख समान समझना चाहिये व जिस मनुष्यने परमेश्वरकी चढ़ी हुई तुलसीका पत्ता व साधु व ब्राह्मणों के चरणों की धूरि अपने शिर पर श्रद्धा व प्रेमसे नहीं चढ़ाया वह लोग जीते हुये मृतकके समान हैं व जिस किसी को हरिकथा व लीला व भजन सुनकर करुणाके जगह रोना न आवै उसका हृदय पत्थरके समान समझना चाहिये ॥

चौथा अध्याय।

राजा परीक्षित का शुकदेवजी महाराज से कथा व कीर्तन परब्रह्म परमेश्वर के वर्णन करने के वास्ते विनय करना ॥

सूतजीने कहा हे ऋषीश्वरो जब राजा परीक्षित को श्यामसुन्दर के ध्यान

का हाल व भागवतपुराणकी महिमा सुनकर सब शोच मनसे दूर होगया तब उसने बहुत आनन्द होकर राज्य व स्त्री व पुत्रोंकी प्रीति छोड़दी व शुकदेवजीसे हाथ जोड़कर कहा महाराज जो कुछ आपने वर्णन किया उसपर विश्वास करके मुझे बड़ा हर्ष प्राप्त हुआ व मैंने ध्यान अपना नारायणजीके चरणमें लगाया मुझको आज व सात दिनमें मरना दोनों बराबरहैं इस बातका डर मेरे मनसे जातारहा आपका सब पुराण व शास्त्र देखा व पढ़ाहुआहै व ब्रह्म आदिपुरुषका हाल आप अच्छीतरह जानते हैं जिसतरह नारायणजी इस संसारको रचकर पालन करनेके उपरान्त फिर उसका नाश करदेते हैं वह हाल सुनाइये व परब्रह्म परमेश्वरने सगुण अवतार लेकर जो जो लीला संसारमें की है वह वर्णन कीजिये यह बात सुनते ही शुकदेवजी प्रसन्न होकर पहिले श्यामसुन्दरके चरणोंका ध्यान जिनकी पूजा करने व नाम लेने व कथा सुननेसे मनुष्य पवित्र व ज्ञानी होताहै करके इसतरहपर स्तुति की हे दीनानाथ जितने योग व यज्ञ आदि हैं बिना कृपा तुम्हारे अपना फल नहीं देसक्ते सो मैं उन परमेश्वरको दंडवत् करता हूं जिनके चरणोंका ध्यान बड़े बड़े योगी व मुनि व सनकादि व ब्रह्मा व महादेव आदि देवता दिनरात्रि अपने हृदयमें रखते हैं व उनके चरित्र व लीलाको नहीं जानते व जिनकी दया व कृपासे शबरी व गिद्ध व गोपियां आदिक छोटे छोटे जीव मुक्तिपदवी पर पहुँचे व जो लक्ष्मीजी के पति हैं उनको नमस्कार करताहूं वही परमेश्वर अपनी कृपासे मेरी बुद्धिमें प्रकाश करके मेरा वचन सत्य करें व उनकी शक्तिसे मुझे उनका चरित्र कहने के वास्ते सामर्थ्य प्राप्त हो फिर शुकदेवजी ने वेदव्यासजी अपने पिता व गुरुके चरणोंका ध्यान व दंडवत् करके कहा हे राजन् कथा श्रीमद्भागवत जो वैकुंठनाथ ने ब्रह्मासे कही व ब्रह्माने नारद मुनिसे वर्णन किया व नारद मुनिने व्यासजीको बतलाया व व्यासजी हमारे पिताने मुझे पढ़ाया था वह सब मैं तुझे सुनाताहूं जो बात तुम सुनना चाहतेहो वह सब हाल उसीमें लिखाहै मन लगाकर सुनो ॥

पांचवां अध्याय।

शुकदेवजीको कथा श्रीमद्भागवत व ब्रह्मा व नारद का संवाद आरम्भ करना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् किसी युगमें एकदिन नारदमुनि ब्रह्माजी अपने पिता के पास दंडवत् करने के वास्ते गये उस समय ब्रह्माजी परमेश्वर के ध्यानमें बैठे थे नारद मुनिने उनको देखकर अपने मनमें इस बातका संदेह किया देखो सब संसार उत्पन्न करनेपर भी यह किसका ध्यान लगाये हैं इस ध्यान करने से मालूम होताहै कि कोई इनका भी मालिक होगा जिसका यह ध्यान करते हैं उसका हाल बूझना चाहिये यह बात विचारकर नारदजीने ब्रह्मासे ध्यान छूटनेके उपरान्त पूंछा आप कहते हैं जो कुछ जिसके भाग्यमें लिखाहै वही बात होगी और मैं देखताहूं कि आप इसतरह सब संसार रचकर फिर उसक नाश करदेते हैं जिसतरह मकड़ी अपने मुँहसे डोरा निकालकर फिर उसको खाजाती है सो आपके कहने व ध्यान करनेसे मुझे ऐसा जानपड़ता है कि आपसे भी कोई बड़े हैं जिसका ध्यान करके उसकी आज्ञानुसार सब काम सृष्टि रचनेका करते हो सो जिसका ध्यान आप करते हैं उसका नाम व गुण मुझे भी बतला दीजिये यह बात सुनकर ब्रह्माजी बोले हे नारदजी तुम धन्य हो जो परमेश्वरका चरित्र तुमने हमसे पूंछा नारायणजीकी माया ऐसी प्रबलहै जो तुम मुझको जगत्का कर्ता कहते हो मैं इस बात से बहुत लज्जित रहताहूं सो हे नारद मुझसे बड़े व मेरे मालिक भगवान्जी हैं जिनसे अनेक ब्रह्मा व ब्रह्मांड प्रकट होकर सारा संसार उन्हींकी माया से उत्पन्न होता है व मैं भी उसी परमेश्वरकी दया व कृपासे सब जगत्की रचना करता हूं देवता मनुष्यको उन्हींके प्रतापसे बुद्धि व ज्ञान प्राप्त होता है सुनो जब नारायणजीकी नाभिसे कमलका फूल निकलकर हम उस फूलसे प्रकट हुये तब मैंने बहुत शोच करके विचारा कि कहां से उत्पन्न होकर यहां आयाहूं जब मुझे कुछहाल इसका नहीं मालूम हुआ तब उन्हीं परमेश्वरका ध्यान करनेसे मुझे ज्ञान प्राप्त होकर यह बात जानपड़ी कि नारायणजीने मुझे उत्पन्न कियाहै व सूर्य व चन्द्रमा व तारागण आदिक उन्हींके तेजसे

प्रकाशित हैं व जितनी वस्तु संसारमें हैं सब उन्हींकी कृपा व मायासे प्रकट हुई हैं और यह जीव सबके शरीरमें उन्हींका प्रकाशहै व नारायणजी अपने तेजसे आप प्रकाशितहैं उसमें किसी दूसरेका तेज नहींहै व उनके आदि व अन्त व भेदको कोई पहुँच नहीं सक्ता कि उस परब्रह्म परमेश्वर का हाल वर्णन करनेसकै पर नारायणजीकी कृपासे जितना मुझे मालूम है सो तुमसे कहताहूं सुनो जब नारायणजीको इस बातकी चाह होती है कि हम अकेले हैं बहुतसे रूप होजावें तब उनकी इच्छासे बहुत रूप हो- जाते हैं जब मैं कमलके फूल से उत्पन्न हुआ तब मुझको नारायणजी ने आज्ञा दी कि तू संसारकी रचना कर उससमय मैंने मन में विचार किया कि किसतरह संसारकी उत्पत्ति करूं तब उन्हीं नारायणजी की मायासे सात्त्विक राजस तामस तीन गुण प्रकट हुये और मुझको अपने हृदयमें बुद्धिका चमत्कार दिखलाई दिया तब मैंने उन्हीं तीनों वस्तुकी सामर्थ्य से सारा संसार व पांचो तत्त्व उत्पन्न करके पृथ्वीको रचा व मिट्टी व आग व पानी व हवा व आकाश इन पांच तत्त्वों से सब जीवों का शरीर बनाया और जो पृथ्वी मैंने कमलके पत्तेसे बनाई थी वह पानीपर नहीं ठहरती थी हजार वर्ष तक बराबर हिलती रही जब हमने नारायण- जीसे पृथ्वी के हिलनेका हाल कहा तब उसी आदिपुरुषने अपनी शक्तिसे पृथ्वीको पानीपर स्थिर करदिया तो हिलना उसका बन्द होगया उसी शक्तिको ब्रह्मांड व विराट्रूप कहते हैं व वेदमें लिखाहै कि उस रूपके हजार शिर व हजार हाथ व हजार पांव व हजार आंख व हजार कान हैं॥

छठवां अध्याय।

ब्रह्माजी को नारदजीसे नारायणजी के विराट्रूप का हाल कहना॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् ब्रह्माजीने नारदसे कहा नारायणजी के विराट्रूपका हाल इसतरह पर है कि सातोंलोक ऊपरके कमरके ऊपर व सातोंलोक नीचेके कमरसे नीचे उनका तनु समझना चाहिये व अग्नि मुख व वृक्ष शरीर के रोम व दशोंदिशा कान व समुद्र पेट व सूर्य आंख व पहाड़ तनुकी हड्डी व नदियां शरीरकी नस व हवा श्वासा व इन्द्रादिक

देवता भुजा व अश्विनीकुमार देवता नाक व सब सुगंध नाकका छेद व आकाश आंखोंका गोलक व दिनरात पलकभांजना व जल पैर व जगत्का स्वाद जिह्वा व यमराज दांत व माया हँसी व लज्जा ऊपरका होंठ व लालच नीचे का होंठ व धर्म छाती व अधर्म पीठ व मेघघटा शिरका बाल व वर्षाका पानी वीर्य उनके विराट् रूपमें समझना चाहिये सिवाय इसके और सब व्यवहार जगत्के इसी रूपमें वर्तमानहैं इसलिये तपस्वी व ऋषीश्वरलोग नारायणजीका प्रकाश सब जगह एकसा समझ कर किसीको दुःख नहीं देते व हरा वृक्ष काटनेसे अवश्य समझना चाहिये कि परमेश्वरको दुःख पहुँचेगा संसारमें हानि व लाभ यश व अपयश दुःख व सुख परमेश्वर की इच्छासे होता है व जो कुछ श्राद्धादिक में पितरोंके नाम व यज्ञादिकमें देवतोंके नाम पर संसारी जीव देते हैं वह उसी परमेश्वरको पहुँचताहै व सब जीव जड़ व चैतन्य के उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाले वही अविनाशी पुरुष हैं उनपर कोई दूसरा मालिक नहींहै हे नारद जब संसार रचनेकी आज्ञा मुझे मिली तब मैंने नारायणजीकी दया व कृपासे दक्षप्रजापतिको उत्पन्न किया उससे बहुत मनुष्य हुये व उन्हीं नारायणजी के चरणोंका ध्यान अपने हृदयमें रखने से मुझे सामर्थ्य संसार रचनेकी है और वही परमेश्वर आदि व मध्य व अन्तमें सदा एकतरह पर रहकर घटने व बढ़ने व पुराने होनेसे रहितहैं व कोई संसारी वस्तु उनके रूपसे बाहर नहीं है व बुद्धि इतनी सामर्थ्य नहीं रखती जो उनकी स्तुति करसकै व नारायणजीने अपनी इच्छा व लीला करने व संसारी जीवोंके भवसागर पार उतरनेके वास्ते मर्त्यलोकमें चौबीस अवतार धारण किये हैं सो मनुष्यको चाहिये कि सदा उन अवतारोंकी लीला आपसमें चर्चा रखकर बीच ध्यान परमेश्वर के व नाम व स्मरणमें लीन रहैं तब अन्तःकरण उनका शुद्ध व पवित्र होकर उसमें परमेश्वरका प्रकाश चमकै व आवागमनसे छूटकर भवसागर पार उतर जावें देखो उन्हीं परमेश्वरका भजन व स्मरण करनेके प्रतापसे ऋषीश्वर व तपस्वीलोग जो कुछ किसीको शाप या आशीर्वाद देते हैं वह बात

उसी समय होजातीहै ऋषीश्वर व महात्मा लोग मुझसे वेदादिक सीख-कर संसारमें प्रकट करते हैं व परमेश्वरके वरदान देनेसे मेरा वचन झूठा नहीं होता व मन मेरा पापकी तरफ नहीं जाता व मेरी इन्द्रियां अधर्मकी चाहना नहीं करतीं सो उसी परमेश्वरका ध्यान करनेसे यह तीन गुण मेरेमें प्रकट हुये हैं व परमेश्वरने सब अंग मनुष्यका एक एक देवताको सौंपदियाहै सो एक एक रूप सब देवतोंका अपने लोकमें रहकर उनका प्रकाश सूर्यके समान जिसतरह पानी भरे बर्तनोंमें पड़ता है उसी तरह सब जीवोंके तनुमें समझना चाहिये व तीसरा उनका प्रकाश चित्र मूर्त्ति व देवमन्दिरोंमें रहता है व सूर्यका प्रकाश व चन्द्रमा की किरणें पड़नेसे चांदी व सोना व तांबाआदिकी खानि जगत्में प्रकट होती हैं व जो पाप व अधर्म मनुष्यसे होते हैं उनके प्रायश्चित्त धर्मशास्त्रमें लिखेहैं यह सब हाल कहकर ब्रह्माजीने जो चार श्लोक मूल श्रीमद्भागवतके नारायणजी के मुखारविन्दसे सुनेथे वह चारों श्लोक नारदजीसे कहकर बोले हे नारद वह परब्रह्म परमेश्वर निरंकाररूप किसी के देखनेमें नहीं आवते व उन को कोई हाथसे पकड़ने नहीं सक्ता व किसीको ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो उनके सब अवतारोंका हाल वर्णन करसके किसवास्ते कि सब जीवोंमें उन्हींकी ज्योतिका प्रकाशहै मैं परब्रह्म परमेश्वरके चौबीसों अवतारोंका हाल जो सगुण रूप संसारमें धारण कियेथे अपनी बुद्धिप्रमाण कहताहूं॥

सातवां अध्याय।

ब्रह्माजी का नारदजीसे चौबीसों अवतारोंका हाल वर्णन करना॥

ब्रह्माजीने नारदजीसे कहा कि पहिला अवतार सनक सनन्दन व सनातन व सनत्कुमार का मेरे नाकसे उत्पन्न हुआ है कि वह लोग तप व ध्यान परमेश्वर में लीन रहतेथे उस तपके प्रतापसे कई कल्प बीतने पर भी सदा पांच वर्षकी अवस्थाके बने रहते हैं दूसरा अवतार वाराहजीका इसलिये धारण किया कि जब मुझे संसार रचने के वास्ते आज्ञा हुई तब मैंने नारायणजीकी कृपा से कमल के पत्तेकी पृथ्वी बनाई सो हिरण्याक्ष दैत्य वह धरती उठाकर पातालमें लेगया जब मैंने वैकुंठनाथसे विनय

किया कि विना मेरे धरती उत्पन्न कियेहुये जीव कहां रहेंगे तब उन्होंने वाराहरूप धरकर पातालमें जाके हिरण्याक्ष को मारडाला व पृथ्वी को बाहर लाकर अपनी महिमासे जलपर स्थिर किया सो यह धरती कर्मोंका फल देनेवाली है जैसा कर्म शुभ या अशुभ कोई करै वैसा फल पावे तीसरा अवतार यज्ञपुरुष का लेके संसारी राजाओं को यज्ञ करनेके वास्ते राह बतलाकर कृतार्थ किया चौथा अवतार हयग्रीवका धारण करके पाताल में जाकर मधुकैटभ दैत्यको मारडाला और जो वेद वह दैत्य चुरा लेगयाथा उसे लाकर मुझे दिया पांचवां अवतार नारायणजी ने मूर्तिनाम कन्या धर्म ऋषीश्वरसे धारण करके वदरी केदारस्थान उत्तराखंड में बैठेहुये इस इच्छासे तप करते हैं जिसमें संसारीलोग मुझे तप करते देखकर आपभी परमेश्वरका तप व स्मरण कियाकरें छठवां अवतार कपिलदेव मुनिका ले के देवहूती अपनी माता को सांख्ययोग ज्ञान सिखलाकर मुक्ति दिया सातवां अवतार दत्तात्रेयजी का लेकर राजा यदुको ज्ञान सिखलाया जिसके प्रतापसे वह मुक्त हुआ व दत्तात्रेयजीने चौबीस गुरु किये थे उनका हाल एकादशस्कन्धमें लिखाहै आठवां अवतार ऋषभदेवजी का लेकर सरावगी व जैनधर्मियों की जाति संसारमें प्रकट की नवां अवतार राजा पृथुका लेकर बेन अपने पिताको नरकजाने से बचाया व गऊरूपी पृथ्वी को दुहकर सब औषधियां दूधके समान उसमें से निकालीं व पहाड़ों को जो जगह जगह पृथ्वी छेके थे उठाकर उत्तराखंडमें रखदिया व पृथ्वी संसारी जीवों के रहनेवास्ते खाली करके नगर व गांव बसाया दशवां मत्स्यावतार लेकर राजा सत्यव्रत को प्रलयका तमाशा दिखलाया ग्यारहवां कच्छपअवतार धारण करके समुद्र मथते समय मन्दराचल पहाड़ अपनी पीठपर लेकर चौदह रत्न उसमेंसे निकाले बारहवां अवतार धन्वन्तरि वैद्यका लेकर रोगोंके नाश करनेके वास्ते औषधी समुद्रसे निकालीं तेरहवां अवतार मोहनीका धरकर दैत्योंको अपने रूपपर मोहित किया व अमृत का कलशा जो उन्होंने धन्वन्तरि वैद्यसे विना देवतों के भाग देनेके छीन लिया था लेकर वह अमृत देवतों को पिलाया चौदहवां

नृसिंह अवतार धारण करके हिरण्यकशिपु दैत्यको मारा पन्द्रहवां वामन अवतार धरके तीन पग पृथ्वी बलिसे दान लेकर देवताओंको दिया सोलहवां अवतार हंसपक्षीका लेकर सनत्कुमारको ज्ञान सिखलाकर गर्व उनका तोड़ा सत्रहवां अवतार नारायण नाम लेकर ध्रुव भक्तको दर्शन दिया अठारहवां हरिअवतार धरकर गजेन्द्रका प्राण ग्राहसे बचाया उन्नीसवां अवतार परशुरामजीका लेकर जो जो दुष्ट पृथ्वीपर हरिभक्तों को दुःख देते थे उन्हें मार डाला व इक्कीसबार क्षत्री राजाओंको दूसरे क्षत्रियों समेत मारके पृथ्वी उनकी छीन कर ब्राह्मणों को दान करदिया बीसवां अवतार रामचन्द्रजीका धारण करके पापी रावणको दूसरे राक्षसों समेत जो गऊ व ब्राह्मणको दुःख देते थे मारडाला व लंकाका राज्य विभीषणको देकर हनुमान्जीको यश दिया व इक्कीसवां अवतार वेद-व्यासजीका धारण करके वास्ते भवसागर पार उतरने संसारी जीवोंके चार वेद व महाभारत और अठारह पुराण बनाये व बाईसवां अवतार श्रीकृष्ण जीका लेकर कौरव व पांडवोंसे महाभारत कराया व कंस व कालयमन व जरासन्धआदि अधर्मी राजाओंको मार कर पृथ्वीका भार उतारा व संसार में बहुतसी लीला की जिसका वर्णन दशमस्कन्ध में लिखाहै व तेईसवां बौद्धअवतार लेकर दैत्योंका यज्ञ करना वारण किया व कलियुगके अन्त में चौबीसवां अवतार कलंकी धारण करके तलवार हाथमें लियेहुये नीले घोड़ेपर सवार होकर अधर्मी व पापीलोगोंको मारेंगे व सतयुग का कर्म संसारमें आरम्भ करके धर्म की वृद्धि करेंगे हे नारद चौबीस अवतारका हाल अपनी बुद्धिके अनुसार हमने तुमसे कहा जो मनुष्य अज्ञानी होकर परमेश्वरको अच्छीतरहसे न जाने उसके वास्ते प्राप्त होने ज्ञान व पावने मुक्ति इन सब अवतारोंकी कथा व लीला अवश्य सुनना चाहिये व जिस मनुष्यने ज्ञानी होकर सब जीवों में परमेश्वरका प्रकाश एकसा देखा उसे ब्रह्मज्ञानी जानकर जीवन्मुक्त समझना उचित है हे नारद मैं ब्रह्मा संसार की रचना करनेवाला व विष्णुजी सब जीवोंका पालन व महादेवजी सब का नाश करते हैं यह तीनों अवतारभी नारायणजीके हैं व सारा संसार

परमेश्वरकी माया से महाजालमें प्रीतिसे अपनी स्त्री व लड़के व द्रव्य में फँसा रहताहै जिस मनुष्य पर नारायणजी बड़ी कृपा करते हैं वह सत्संग करके इस मायाजालसे छूटसक्ता है नहीं तो संसाररूपी जालसे छूटना बहुत कठिन समझो व इस महाजालसे छूटनेके वास्ते सिवाय भजन व नाम स्मरण व कथा सुनने व लीला अवतार परब्रह्म परमेश्वर के दूसरा कुछ उपाय नहीं है व अवतारों की लीलाका सुनना चारों वर्णको चाहिये व चतुश्श्लोक तत्त्वज्ञान श्रीमद्भागवतके जो हमने नारायणजीसे सुनेथे सो तुमसे कह उन्हीं परमेश्वरका भजन व स्मरण करनेसे तुम्हारेमें भी सब गुण प्रकट होवेंगे हे नारद कई बेर मेरेसे ब्रह्मा व तुमसे नारद संसार में उत्पन्न होचुके हैं इसका हाल सिवाय परब्रह्म परमेश्वरके दूसरा कोई नहीं जानता प्रत्येक कल्पमें सब जीव अपने कर्मानुसार फिर जन्म पावते हैं व जिस देशमें देवस्थान नहीं रहकर परमेश्वरकी कथा नहीं होती व जिस घरमें कोई यज्ञ व होम नहीं करता वहां कलियुगका वास अधिक होता है व वहांके मनुष्य क्रोध व लोभ व अहंकार में भरे रहते हैं व यही क्रोधादिक पापकी जड़ होकर मनुष्योंसे अनेक तरहका अधर्म कराते हैं व परमेश्वरकी मायाको थोड़ासा महादेवजी व दक्षप्रजापति देवता व सनकादिक व भृगु ऋषीश्वर व प्रह्लाद व राजा बलि व अम्बरीष व प्राचीनबर्हिषआदि जानते हैं व जिस जीवको अहंकार नहीं होता वही मनुष्य परमेश्वरकी मायासे छूटकर भवसागर पार उतरजाता है और जो लोग हरिभक्त होकर परमेश्वरकी शरणमें रहते हैं उनपर मायाका कुछ वस नहीं चलता नारदजी यह प्रताप नारायणजीका ब्रह्मासे सुनतेही बहुत आनन्द होकर बीण बजाते व परमेश्वर का गुण गातेहुये चलेगये ॥

आठवां अध्याय।

राजा परीक्षित का श्रीशुकदेवजीसे धर्म व वेद व पुराण व योगाभ्यास आदिकका हाल पूंछना ॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर मनमें इस बातका विचार किया देखो शुकदेवजी ने नारायणजीकी कथा सुनना चारों वर्णोंको कहा व

मुझे उनसे उत्तम नहीं जानकर चारों वर्णोंके बराबर समझा सो यह स-न्देह छुड़ानेके वास्ते पिछले राजाओंका हाल जिन्होंने परमेश्वरका भजन व स्मरण करके अपना तनु त्याग किया है इनसे पूंछना चाहिये ऐसा विचारकर परीक्षितने पूंछा हे महाराज अवतारोंका हाल सुनकर मेरा मन बहुत प्रसन्न हुआ अब मुझे यह इच्छा है कि सिवाय लीला अवतार नारा-यणजीके दूसरा हाल न सुनूं किसवास्ते कि इस कथा सुननेसे अन्तःकरण शुद्ध व पवित्र होकर परमेश्वरका प्रकाश हृदयमें प्रकट होता है व उस चम-त्कार होने से इस तरह से क्रोध व लोभ व अहंकार व कामदेवका मद शरीरमें नहीं रहता जिसतरह संसारी जीवों के स्थानमें राजाके आनेसे घर उनका शुद्ध व पवित्र होजाताहै सो आप कृपा करके यह हाल वर्णन कीजिये कि नारायणजी आदिज्योति निरंकार ने जो विराट्रूप धारण किया जिस स्वरूपमें सब संसारी वस्तु हैं व एकसे लेकर लाखों स्वरूप अनेक प्रकारके होजाते हैं इसका क्या भेद है व पिछले युगों में जिन राजाओं ने बीच स्मरण व ध्यान परमेश्वरके लीन होकर तनु अपना त्याग किया है व जितने तत्त्वहैं उनकी गिनती व परमेश्वरकी पूजाकी विधि व जिसतरह योगीलोग योगाभ्यास करके अपना शरीर छोड़ते हैं व वेदका जैसा धर्म व रूप हो व इतिहास पुराण का माहात्म्य व जैसे संसारमें प्रलय होतीहै व जिसतरह पर यज्ञादिक करते हैं व ब्रह्माण्ड व ऋषीश्वरोंका हाल जिसप्रकार जीव नरकसे निकलकर आते हैं व पाप व अधर्म करनेवालोंका मरनेके उपरान्त क्या हाल होता है और यह जीव संसारमें कौन काम करनेसे मायाजाल में फँसकर नष्ट होते हैं व कौन कर्म करनेसे मुक्ति मिलती है इन सब बातोंका हाल कृपा करके वर्णन कीजिये यह बात सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजन् तुझे यह सब हाल पूंछनेसे क्या प्रयोजनहै राजाने हाथ जोड़कर कहा महाराज मैं चा-हता हूं कि परब्रह्म परमेश्वर के सम्पूर्ण अवतारों की लीला सुनूं व अपना शरीर नारायणजीकी चर्चा व ध्यान में छोड़कर भवसागर पार उतरजाऊँ यह वचन सुन शुकदेवजीने कहा हे राजन् मनुष्यका तनु पाना बहुत

कठिन है जो कोई मनुष्यका तनु पाकर नारायणजीकी लीला व कथा नहीं सुनता उसको सिवाय पछितानेके और कुछ हाथ नहीं लगता और जो बात तुमने पूंछी है उसका हाल सुनो जब परब्रह्म परमेश्वर चाहते हैं कि संसार उत्पन्न करके जीवोंकी बढ़ती करैं व अपना स्वरूप आप देखकर मोहित होवें जिसतरह मनुष्य अपना मुख दर्पणमें देखताहै और शीशा उलटदेनेसे फिर कुछ दिखलाई नहीं पड़ता उसी तरह परमेश्वर सारा संसार अपनी इच्छा से उत्पन्न करने के उपरांत फिर उसका नाश करके अपने रूपमें मिला लेते हैं इसलिये जगत् में ज्ञानी उसीको समझना चाहिये जो मनुष्य नारायणजी के चौबीस अवतारों की कथा व लीला अपने सच्चे मनसे सुनकर उसपर विश्वास रक्खै व चिउँटी से लेकर हाथी तक सब जीवों में परमेश्वर का चमत्कार एकसा जानकर किसी को दुःख न देवे इतनी कथा सुनाकर सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जो हाल परीक्षितने शुकदेवजी से पूंछा है वही बात एकबार ब्रह्मकल्प में ब्रह्मा ने नारायणजी से पूंछी थी ॥

नवां अध्याय।

शुकदेवजीको ब्रह्माके उत्पन्न होने व चारश्लोक श्रीमद्भागवतका मूल हाल कहना जो श्रीनारायणजीने कहा था ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् जब एक कमल का फूल परमेश्वर की नाभि से निकला व उस फूल में से ब्रह्मा उत्पन्न हुये तब ब्रह्माने यह बात जानना चाहा कि मैं कहां से उत्पन्न हुआहूं जब बहुत विचारने पर भी यह भेद ब्रह्मा को नहीं मालूम हुआ तब हार मानकर उसी फूलपर बैठरहे इसलिये समझना चाहिये कि माया भगवान् की ऐसी प्रबल है कि जिस मायाकी रस्सी में ब्रह्मा भी बँधकर उनका भेद नहीं जानसके दूसरेकी क्या सामर्थ्य है जो परमेश्वरकी लीला व आदि अन्त को पहुँच सके फिर ब्रह्माजी ने उसी फूलपर बैठेहुये चार श्लोक मूल श्रीमद्भागवत के आकाशवाणी में सुना उसी आज्ञानुसार तप किया जब ब्रह्माजी को तप करने से हृदय में ज्ञान हुआ तब उन श्लोकों का अर्थ जानकर संसार की रचना किया व

उन चारों श्लोकों का अर्थ यह है हे ब्रह्मा जो सबके पहिले था वह मैं हूं मेरे सिवाय दूसरा कोई नहीं है व जो कुछ तुम देखते हो वह भी मुझे समझो व महाप्रलय के होने उपरान्त भी सिवाय मेरे और कुछ नहीं रहैगा सब संसारी वस्तुकी जड़ मैं हूं जिस तरह सोनेका गहना हाथ व पैर व नाक व कान व सब अंगों के पहिरने के वास्ते विलग विलग तैयार कराओ तो सब भूषणका नाम पृथक् पृथक् होता है जब वह सब गहना तोड़कर गलाडालो तब फिर केवल सोना रहजाता है वही हाल मेरा समझना चाहिये मैं अकेला रहकर जब चाहता हूं अपनी इच्छा से अनेक रूप धारण करके संसार में अपने बहुत नाम प्रकट करताहूं फिर जब इच्छा मेरी अकेले रहने के वास्ते होती है तब अकेला होजाताहूं और देखने व सुनने व बोलने व भले बुरे ज्ञान जानने की सामर्थ्य जो सब जीवों में है वह सब प्रताप मेरे प्रकाश से समझना चाहिये जिस तरह आकाश का घेरा सब जगह है उसी तरह मैं सबसे बलवान् होकर तीनों लोक व चौदहों भुवन को अपने वश में रखता हूं व मेरे सिवाय सब संसारी वस्तुओं को झूठी समझना उचित है व पांच तत्त्व से सब संसारी जीव उत्पन्न होते हैं जिस तरह संसारका सम्पूर्ण व्यवहार मेरे विराट्रूप में है उसी तरह सब के तनुमें ज्योतिका प्रकाश जिसे प्राण कहते हैं समझो जब तक वह चमत्कार सबके शरीर में रहता है तबतक चलने व फिरने व खाने व पीने व बोलने व इन्द्रियों के सुख भोगने की सामर्थ्य उसे रहती है जब वह प्रकाश शरीर से निकल गया तब वही तनु मृतक होकर गल सड़ जाता है व फिर उस शरीर से कुछ नहीं होसक्ता ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य व शूद्र चारों वर्ण में मेरा प्रकाश एकसा है ज्ञानकी दृष्टि से उनमें कुछ भेद नहीं जान कर इस तरह सब जीवों में नारायणजी का स्वरूप एकसा समझना चाहिये जिस तरह सूर्य की छाया सोने व चांदी व मिट्टी व लोह आदि के बर्तनों में बराबर पड़ती है व जिस तरह सोना व चांदी व काठ व पीतल अनेक रंग के दानों को एक तागे में पिरोने से माला होजाती है उसी तरह मेरा चमत्कार सब जीवों में तागा के समान समझो जब वह तागा माला का

टूटगया तब वह सब दाने बेआदर होजाते हैं सो हे ब्रह्मा तुम इसी तरह सब जगह मुझको जानकर जगत्की रचना करो संसारी माया में फँसकर आनन्द से नहीं रहोगे व तप करने से तुमको मेरा दर्शन होगा तुम मन में दया रखकर सब जीवों की रचना करना व सारा संसार तुमको मानकर ऋषीश्वर व ज्ञानीलोग तुम्हारी स्तुति करेंगे व संसार रचने में तुम्हें कुछ परिश्रम व दुःख नहीं मालूम होगा व तुम मेरे चतुर्भुजी छोटे स्वरूपका ध्यान जो महात्मा व ऋषीश्वर व नन्द व सुनन्दआदि दासोंके मध्यमें विराजमान है करना यह आकाशवाणी सुनकर ब्रह्मा नारायणजीका चरण छूने उपरान्त हाथजोड़कर बोले हे दीनानाथ मुझे यह वरदान दीजिये जिसमें आपको अपना मालिक जानता रहूं व संसारके उत्पन्न करने में मुझे आसक्ति न होवे ब्रह्माका यह वचन सुनतेही परब्रह्म परमेश्वरने उन्हें इच्छापूर्वक वरदान देकर कहा हे ब्रह्मा तुम मेरी आज्ञा याद रखकर संसारी व्यवहार परछाहीं के समान झूठा समझते रहना तो तुमको मेरी माया नहीं व्यापैगी ऐसा कहकर नारायणजी ब्रह्माके ध्यानसे गुप्त होगये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् अर्थ चारों श्लोक श्रीमद्भागवतका यही है जो मैंने तुमसे कहा व ब्रह्माजीने अपने दूसरे बेटोंको यह हाल नहीं बतलाया व नारदजीको ज्ञानी समझकर यह भागवत ज्ञान उनसे कहाथा सो नारदजीने व्यासजीको उपदेश किया व वेदव्यासजी हमारे पिताने उसको विस्तारपूर्वक लिखा व श्रीमद्भागवत नाम रखकर मुझे पढ़ाया व इसी ज्ञान को मैत्रेय ऋषीश्वरने यमुनाकिनारे विदुरजी से कहा था सो अब वही कथा मैं तुमको सुनाताहूं और हे राजन् जो मनुष्य अहंकारसे अपने को मैं समझकर परमेश्वरका माहात्म्य नहीं जानता वही संसार व परलोक में दुःख पाता है॥

दशवां अध्याय।

पंचतत्त्व से शरीर का तैयार होना व देवतोंका सब के अंगमें वास रहना॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् इस भागवतमें दश प्रकारकी कथा है उसका

पृथक् पृथक् हाल कहताहूं मन लगाकर सुनो संसारकी उत्पत्ति व जगत् का नाश होना संसारको स्थिर रखना सब जीवोंका पालन करना परमेश्वरकी लीला मन्वन्तरोंका हाल ईश्वर की कथा विरक्त मुक्ति नारायणजी सब जगत्के मालिक हैं हे राजन् इस नव लक्षणका हाल सुनकर वैसी करना केवल दशवें लक्षणके जाननेके वास्ते है जब आदिपुरुष परमेश्वर ने जो शेषनागकी छाती पर शयन करते हैं अपनेको अकेले देखकर मन नहीं लगनेसे चाहा कि हम अनेक तरहका रूप धारण करके देखें तब उन्होंने अपनी मायाको आज्ञा दिया कि वास्ते अधिक होने संसारके उपाय कर उसी समय उस मायाने स्वर्ग पाताल मर्त्यलोक बनाकर राजस तामस सात्त्विक तीन गुण प्रकट किया सो तामससे अहंकार व राजससे हाथ व पांव व वाक् व लिंग व गुदा पांच कर्मइन्द्रिय व सात्त्विकसे आंख व कान व जिह्वा व नाक व त्वचा पांच ज्ञानइन्द्रिय प्रकट हुईं सिवाय इस के तमोगुणसे पृथ्वी व आकाश व जल व अग्नि व हवा पांचों तत्त्व व सतोगुणसे शब्द व मूर्ति व स्वाद व सूंघना व बुद्धि सबके तनमें प्रकट हुईं व दशों इन्द्रिय शरीरकी एक एक देवताको सौंपी गईं मुँहमें अग्निदेवता जिह्वामें वरुण कानमें दिशा नाकमें अश्विनीकुमार हाथमें इन्द्र आंखमें सूर्य लिंगमें मित्रावरुण गुदामें यमराज पांवमें विष्णु बुद्धिमें ब्रह्माजीका वास रहताहै सब देवतोंने चाहा कि अपने सामर्थ्यसे हमलोग इस मूर्तिको जिलाकर बुलावें व हँसावें इसलिये उन्होंने अपने पराक्रमसे बहुत उपाय किया जब उनके सामर्थ्यसे वह मूर्ति हिल भी न सकी तब उन्होंने हार मानकर हवाकी तरफ जिसको स्वामी कहते हैं इशारा किया जब उस हवासे भी कुछ नहीं होसका तब सब देवता ध्यान चरण नारायणजीका जिनकी कृपासे वह मूर्ति तैयार हुई थी करके बोले हे जगत्कर्ता बिना दया व कृपा आपकी हमलोगोंसे कुछ नहीं होसका जब आदिज्योति निरंकार ने थोड़ासा अपना प्रकाश उस मूर्तिमें प्रवेश करके कहा तुम उठो तब उस तेजके बलसे सब देवतोंको अपने अपने स्थान पर सामर्थ्य उठने बैठने व बोलने आदिकी प्राप्त होकर वह मूर्ति चलने फिरने लगी सो

हे राजन् बीच शरीर मनुष्यके हरएक अंगमें देवतालोग वासकरके यह इच्छा रखतेहैं कि हाथसे दान देकर जिह्वासे परमेश्वरका भजन व स्मरण करके कानोंसे उनकी कथा व लीला सुनैं व पैरों से तीर्थयात्रा व देवस्थानपर जाकर आंखोंसे प्रकट व ध्यानमें परमेश्वरका दर्शन करें जिसमें हमलोगों काभी भला हो व मनुष्यके तनमें रजोगुण या तमोगुण या सतोगुण एक वस्तु आठों पहर वर्तमान रहती है व एक गुणके समय दूसरा गुण नटके खेलके समान छिपजाताहै और यह हाल हमने तुमसे ब्रह्मकल्पका कहा व इसी तरह सब कल्पमें संसारकी उत्पत्ति होती है॥

तीसरा स्कन्ध ॥

विदुरजीका उद्धव भक्तसे राह में भेंट होना व विदुरका मैत्रेय ऋषीश्वर से यमुना किनारे मिलना व जय विजय व कपिलदेव अवतारकी कथा ॥

पहिला अध्याय ।

श्रीकृष्णजी व विदुर आदिक का राजा दुर्योधन को राजा युधिष्ठरके राज्यभाग बांटदेने वास्ते समझाना और उसको किसीका कहना नहीं मानना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जो बात तुमने हमसे पूंछीथी इसी बातका उत्तर नारायणजीने लक्ष्मीसे कहाथा व लक्ष्मीजीने शेषनागको बतलाया व शेषजीने वात्स्यायन ऋषीश्वरको सुनाया व वात्स्यायनजीने मैत्रेय ऋषीश्वरको उपदेश किया व मैत्रेयजीने विदुरसे कहा इतनी कथा सुन कर राजा परीक्षितने पूंछा हे स्वामिन् विदुरजी व मैत्रेय ऋषीश्वरसे किस जगह पर भेंट हुई थी उन दोनों मनुष्य ज्ञानी व परमभक्त परमेश्वरके मिलती समय बड़ा आनन्द हुआ होगा उनका हाल सुनाइये शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जिस समय राजा धृतराष्ट्रने युधिष्ठिर आदि अपने भतीजों को दूसरा जानकर दुर्योधन आदि अपने पुत्रोंको प्यारा समझा व दुर्योधनने अर्जुन आदि पांचों भाई पाण्डवोंको लाहके कोटमें टिकाकर आग लगवा दिया व भीमसेन के खाने के वास्ते विषका लड्डू बनवाकर भेजा व अधर्मसे जुआ खेलकर सब राज्य व धन उनका जीतलिया व द्रौपदी ऐसी पतिव्रता स्त्री को राजसभामें नंगी करनेके वास्ते उसका चीर दुश्शासनसे खिंचवाया व युधिष्ठिरआदि पांचों भाइयों को तेरह वर्षका वनवास दिया व श्रीकृष्णजीकी इच्छा करनेसे सब जगह पर उनका प्राण बचा जब वनवास करके युधिष्ठिर आदि फिरआये तब भी उनका हिस्सा राजा दुर्योधन नहीं देता था इसलिये श्रीकृष्णजी व कृपाचार्य व विदुर आदिक सबको धृतराष्ट्रने बुला भेजा तो वहलोग कौरव व पांडवोंका झगड़ा छुड़ावने के वास्ते पंच होकर राजा दुर्योधनकी सभामें गये उस समय

श्रीकृष्णजी महाराज व भीष्मपितामह और द्रोणाचार्यने धृतराष्ट्रको समझाया कि हे राजन् तुम्हारे बेटे व भाईके बेटोंमें कुछ भेद नहींहै दुर्योधनआदि तुमको स्वर्ग में लेजाने नहीं सक्के व न युधिष्ठिर आदिक तुम्हें नरक पहुँचावेंगे इसलिये तुमको उचितहै कि संसारी व्यवहार झूठा समझकर युधिष्ठिरादिक पांचों भाइयोंके खाने व खर्च करने के वास्ते कुछ गांव उनको देदेव इस बातमें तुम्हारा यश होगा राजा धृतराष्ट्रने यह बात सुन कर उसपर कुछ ध्यान न किया जब विदुरजीने जो उस सभामें बैठेथे धृतराष्ट्र अपने भाईकी मति अधर्म पर देखी तब यथार्थ बात समझकर कहा कि हे भाई तुम युधिष्ठरादि का हिस्सा देडालो किसवास्ते कि वे साधुलक्षण किसीके साथ वैर नहीं रखकर सबको अपना मित्र जानते हैं व युधिष्ठिर व भीमसेन व अर्जुन व नकुल व सहदेव पांचों भाइयोंको ऐसी सामर्थ्य है चाहैं तो उनमेंसे एक मनुष्य दशों दिक्पालोंको लड़ाई में जीतलेवे सिवाय इसके श्रीकृष्णजी वैकुंठनाथ उनके सहायकहैं और तुम दुर्योधन अपने बेटाका मोह करके जो समझते हो कि मेरे सौ पुत्र बड़े बलवान् लड़नेवाले हैं सो श्यामसुन्दरके विमुख रहनेसे उनका किया कुछ नहीं होसक्ता इस अधर्म में तुम्हारा धन व धर्म दोनों नष्ट होगा व दुर्योधन तुम्हारा बेटा श्रीकृष्णजीसे वैर रखताहै इसलिये उसके साथ प्रीति करने व उसका कहा मानने में अपने वास्ते अच्छा न समझो व युधिष्ठिर आदि पांचों भाइयोंका हिस्सा राज्य बांटिदेव व दुर्योधनसे जो राज्य व धनके मदमें अंधा होरहा है राजसिंहासन छीनलेव इसीमें तुम्हारे कुल व परिवारका कल्याण है नहीं तो श्रीकृष्णजीसे वैर करनेमें तुम्हारा पता लगना कठिन है जब विदुरजीके समझाने पर भी धृतराष्ट्र कुछ नहीं बोले तब दुर्योधनने क्रोधकरके आज्ञा दी कि विदुरको मेरी सभासे बाहर निकाल देव यह हमारे कुलमें दासीपुत्र होकर सब बातों में पाण्डवोंका पक्ष करताहै व पालन इसकी हम करते हैं और सभामें हमारे बराबर बैठकर हमको ज्ञान सिखलाताहै यह आज्ञा दुर्योधनकी सुनकर जब उसके सिपाहियोंने विदुरजीको सभासे निकालना चाहा व धृतराष्ट्रने दुर्योधनको

ऐसा वचन कहनेसे कुछ मना नहीं किया तब विदुरजीने समझा कदाचित् कोई मुझे सभासे बांह पकड़कर उठा देगा तो अधिक अपमान होगा इसलिये आप यहांसे उठजाना उचितहै व वृन्दावनविहारी कौरवों का नाश करना चाहते हैं इसी वास्ते धृतराष्ट्र आदिक कौरवोंके मनमें अधर्म समाकर अच्छी बात समझाना इनको बुरा मालूम होता है ऐसा विचारकर विदुरजी वहांसे उठके द्वारेपर चले आये व उन्होंने यह समझके धनुर्बाणादिक शस्त्र अंगसे उतारकर वहां धरदिया कि शस्त्र समेत चले जानेमें दुर्योधनको इस बातका संदेह होगा कि यह पांडवोंकी तरफ जा मिला व उसी जगह विदुरजीने अपना वस्त्रभी उतार डाला केवल एक लँगोटी व चादर पहिनके हस्तिनापुरसे उत्तराखण्डमें तीर्थयात्रा करनेके वास्ते चले गये व दूसरा कारण शस्त्रादि रख देनेका यहहै कि विदुरजी परम भक्त होनहार के जाननेवाले समझे कि अब दुर्योधन आदि कौरवों का नाश होनेवाला है व मैंने उनके कुलमें जन्म लिया था इसलिये मुझे पहिलेसे अपना शस्त्र रख देना चाहिये जिसमें युद्ध करना न पड़े सो विदुरजीने वर्षदिन तक भरतखण्डकी तीर्थयात्रा करतेहुये यमुनाकिनारे पहुँचकर वहां सब देवतोंका दर्शन किया व समीप कुटी मैत्रेय ऋषीश्वर के बहुत दिनतक टिके रहे उन्हीं दिनों विदुरजीके पीछे हस्तिनापुरमें महाभारत होकर दुर्योधनआदि कौरव मारेगये व राजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजीकी कृपासे राजगद्दी पाया जब उद्धवभक्त श्यामसुन्दरके वैकुंठधाम जाने के उपरान्त द्वारकासे बदरिकाश्रमको जाते थे तब राहमें विदुरजीसे भेंट हुई सो दोनों मनुष्य परमभक्त परमेश्वरके आपसमें गले मिले व विदुरजी उद्धवभक्त से हाल मारेजाने दुर्योधन आदिक व राजासिंहासन पर बैठना युधिष्ठिरका सुनकर पहिले पछिताये फिर इच्छा श्यामसुन्दरकी इसी तरह पर समझकर संतोष किया॥

दूसरा अध्याय।

विदुरजीको उद्धवभक्त से श्यामसुन्दरका हाल पूंछना॥

शुकदेवजी बोले कि हे राजन् विदुरजीने उद्धवसे मिलनेके उपरांत

पूंछा हे उद्धव तुम श्रीकृष्णजीसे एक क्षण बिलग नहीं होते थे आज क्या कारण है जो मैं तुमको अकेले देखताहूं कहो श्यामसुन्दर मेरे प्राणप्यारे बलरामजी व प्रद्युम्न व अनिरुद्ध व साम्ब व शूरसेन व वसुदेव व देवकी व अक्रूर आदिक सब यदुवंशियोंसमेत अच्छे हैं व युधिष्ठिर व अर्जुन आदिक पांडव कुन्ती व द्रौपदी सहित धृतराष्ट्र मेरा भाई अन्धा जिसने बेटों के मोहमें फँसकर अपने नरक जानेका उपाय कियाथा सब लोग कुशल से हैं और मैं जानताहूं कि श्यामसुन्दरने पृथ्वीका बोझ उतारने के वास्ते अवतार लेकर धृतराष्ट्र आदिक कौरवोंका ज्ञान हरलियाहै व जो राजालोग अपने राज्य व सेना व धनका अभिमान करके अधर्म करते हैं उन्हीं लोगोंके मारने के वास्ते श्रीकृष्णजी वैकुंठनाथने अवतार लिया है सो तुम श्यामसुन्दर का हाल बतलाओ कि उनकी चर्चा करने में तीर्थ स्नानका फल मिलता है यह बात सुनतेही उद्धवभक्त आंखों में आंसू भरकर रोने लगे और कुछ उत्तर नहीं दिया जब विदुरजी ने उनको उदास व रोतेहुये देखकर जाना कि श्रीकृष्णजी अन्तर्द्धान होगये इसलिये मेरे पूंछने से उद्धव उनका ध्यान करके रोतेहैं एक क्षण उपरान्त उद्धवने आंखें पोंछकर कहा कि विदुरजी तुम केशवमूर्तिका हाल क्या पूंछते हो श्रीकृष्णरूपी सूर्य अस्त होकर कलियुगरूपी रात्रिने प्रवेश किया मैं अपने व दूसरे यदुवंशियों का अभाग्य तुमसे क्या कहूं परब्रह्म परमेश्वरने अपनी इच्छासे वसुदेवजीके घर जन्म लिया सो हमलोगोंने उनका माहात्म्य नहीं जानकर उनको भी एक यदुवंशी अपना भाईबन्द समझा था अब उनकी महिमा जानकर सिवाय पछिताने के कुछ हाथ नहीं लगता मैं उनकी बड़ाई तुमसे कहांतक वर्णन करूं उन्होंने सोलहहजार एकसौ आठ स्त्रियोंसे विवाह करके गृहस्थाश्रम का धर्म किया सो प्रयोजन उनका अवतार लेने व लीला करने से यह था कि जिसमें संसारी मनुष्य व अधर्मीलोग उस लीला व कथाको आपस में कह व सुनकर भवसागर पार उतरजावें देखो उन्होंने कैसे कैसे बलवान् दैत्य व राजाओंको मारकर मुक्ति दिया और वास्ते भार उतारने पृथ्वी के अपनी इच्छासे अवतार

लेकर कौरव व पांडवोंसे महाभारत कराया व दुर्योधन आदिक सब कौरवोंका नाश किया व युधिष्ठिर आदि पांचों भाई पांडव अपने भक्तोंकी रक्षा करके उन्हें राजगद्दी दिया व छप्पन करोड़ यदुवंशियों को दुर्वासा ऋषीश्वरसे शाप दिलवाकर आपस की लड़ाई में मरवाडाला सो वह बात याद करके मुझे बड़ा दुःख होताहै हे विदुर तुम निश्चय करके जानो जब से श्यामसुन्दर यदुवंशियोंको नाश करके वैकुंठको पधारे तबसे सचाई व धर्म संसारसे उठगया व मैंने बहुत बिनती करके उनसे कहा कि मैं जन्मभर आपकी सेवा व टहलमें रहा मुझेभी अपने साथ लेचलो पर नहीं लेजाकर बोले तू बदरीकेदार में जाकर मेरा ध्यान करके मुक्त हो और जो कुछ ज्ञान उन्होंने मुझे बतलाया उसका हाल ग्यारहवें स्कन्ध में लिखा है व तत्त्व ज्ञान मुझसे यह कहा कि हमको जानकर सब संसारका नाश समझो व जीवात्मा कभी नहीं मरता इसलिये मेरे वियोगका शोच न करना चाहिये मरना कैसा होताहै जिसतरह एक कपड़ेको उतारकर दूसरा वस्त्र पहिनलेवे उसी तरह यह जीव एक चोले को छोड़कर दूसरे तनमें प्रवेश करताहै॥

तीसरा अध्याय।

उद्धवजी का विदुरजीसे श्यामसुन्दरकी स्तुति व बड़ाई वर्णन करना॥

उद्धव ने विदुरसे कहा देखो श्यामसुन्दर ऐसे दीनदयालु थे कि जिस पूतना राक्षसीने उनका प्राण मारनेके वास्ते अपने कुचोंसे विष लगाकर दूध पिलाया उन्होंने उस राक्षसीको भी मारकर वैकुंठमें भेजदिया ऐसे दीनानाथका चरण छोड़कर दूसरे किसकी शरणमें जाना चाहिये उन श्यामसुन्दरने पृथ्वीके बोझा उतारनेके वास्ते अपनी इच्छासे संसारमें अवतार लेकर वसुदेवजीसे कहा तुम हमको नन्दजी के यहां लेजाकर छिपाय आवो यह सब लीला उनकी थी जिसमें कोई मुझे नारायणजी न जाने नहीं तो उनको किसका डर था कालको भी ऐसी सामर्थ्य नहीं थी जो उनका सामना करसक्ता व नन्दजीके घर जाकर कैसी कैसी लीलायें करके व्रजवासियोंको सुख दिया नन्दजी के बछरे व गायें चराकर जिस तरह आग लकड़ीमें गुप्त रहती है उसी तरह अपने को छिपाया और जो

जो दैत्य व राक्षस भेजेहुये कंसके उनके मारने वास्ते आये थे सबको मार कर भवसागर पार उतारा व इन्द्रका अभिमान तोड़ा गोपी व ग्वालोंको वैकुण्ठका दर्शन कराके अपना चतुर्भुजीरूप दिखलाया नन्दजीको सांप काटनेसे बचाया व गोपियोंके साथ रासमंडल किया शंखचूड़ व केशी व बकासुर व अघासुर आदि दैत्योंको मारकर वैकुंठ भेजा व जब अक्रूरके साथ मथुराको चले तब राहमें स्नान करते समय यमुनाजल में अक्रूरको अपने चतुर्भुजी स्वरूप का दर्शन दिया व मथुरामें पहुँचकर राजा कंसके धोबीको मारा व बाहुक दरजी को बीच बदले पहिरावने कपड़ों के प्रसन्न होकर वैकुंठ में भेजा व सुदामा माली पर खुश होकर ऐसा वरदान दिया कि तेरा धन कभी न घटै और कुब्जाको चन्दन लगानेके बदले टेढ़ीसे सीधी करके देवकन्यासमान रूप देकर उसकी इच्छा पूर्ण किया व धनुष महादेवजीका ऊखके समान तोड़कर कुवलयापीड़ हाथी को लड़कोंके खेल समान मारडाला और कुश्ती लड़कर चाणूर व मुष्टिक आदि पहलवान व राजा कंसको उसके आठ भाइयों समेत मारकर मुक्तपदवी दिया और जिस परमेश्वरकी सेवामें ब्रह्मा व महादेव व कालादिक सब रहते हैं उन त्रिलोकीनाथने राजा उग्रसेनको अपना भक्त जानकर उसकी आज्ञा सेवकोंके समान माना व जिसतरह बालक खेलते समय चिउँटी को मार डाले उसी तरह ऐसे ऐसे बलवान् दैत्य व राक्षस व राजाओंको मारकर अन्तर्धान होगये दशवें व ग्यारहवें स्कन्धमें हाल उस सब लीलाका लिखाहै हे विदुरजी ऐसे दीनानाथ जिन्होंने यह सब लीला संसारी जीवों के भवसागर पार उतरनेके वास्ते किया उनके चरणोंका ध्यान छोड़कर मेरा चित्त दूसरी तरफ नहीं जाता और वह सांवली सूरति मोहनी मूरति मुझे एक क्षण नहीं भूलती ॥

चौथा अध्याय।

उद्धवजीको विदुरजीसे श्यामसुन्दर की स्तुति व वियोगका हाल वर्णन करना॥

उद्धवने बीच विरहसागर श्रीकृष्णजीके डूबकर कहा कि हे विदुर श्यामसुन्दरके ज्ञान सिखलानेसे संसारी माया मोह मेरा छूटगया पर मुझ

को मुरलीमनोहरके वियोगका जितना दुःखहै वह कहा नहीं जाता तुम को सुनना हो तो मैत्रेय ऋषीश्वरसे जो उस समय वहां पर थे जो थोड़े दिनोंमें यहां आवैंगे भेंट करके पूंछ लेना वह सब हाल तुमसे कहेंगे और जिससमय मुरलीमनोहर अन्तर्धान होना चाहते थे उससमय मैत्रेय ऋषीश्वरने प्रभासक्षेत्रमें जाकर श्रीकृष्णजीको दंडवत् किया तब श्यामसुन्दर बोले हे मैत्रेयजी हमने तुम्हारे मनका सब हाल जाना तुम धैर्य रक्खो मेरी माया तुमको न व्यापेगी किसवास्ते कि तुम मेरे भक्त व पिछले जन्मके वसुदेवता और इस जन्ममें वेदव्यासजीके भाई व पुत्र पराशर मुनिके हो तुमको मेरी लीला प्रकट व गुप्त सब मालूम रहेगी और जो भागवत धर्म तुमको वात्स्यायन ऋषीश्वरने कहा है उसी धर्मको याद रखना भवसागर पार उतर जावोगे यह बात केशवमूर्तिसे सुनतेही मैत्रेयजीने बहुत प्रसन्न होकर कहा हे वैकुंठनाथ तुम्हारी लीला याद करके मुझे बड़ा असम्भव मालूम होताहै किसवास्ते कि ब्रह्मा व महादेव व कालकी सामर्थ्य नहीं है कि जो आपके सन्मुख आंख उठाकर देखसकैं सो तुम जरासन्ध व कालयमन के सामनेसे पैदल भागे थे तुम्हारे भेदको कोई जान नहीं सक्ता इसीतरह मैत्रेयजी बहुत स्तुति श्रीकृष्णजीकी करके वहां से चलेआये वह सब हाल जानते हैं तुमसे कहेंगे और मैं मुरलीमनोहर की आज्ञासे बदरिकाश्रम को जाताहूं वहां जाकर अपना तन त्याग करूंगा कदाचित् तुम यह कहो जब ज्ञान आया तब आंखोंमें आंसू भरने व शोच करनेका क्या कारणहै सो श्रीकृष्णजीकी दया व प्रीति याद करनेसे उनके वियोग का दुःख मुझे एक क्षण नहीं भूलता उसी ज्ञानके प्रतापसे अबतक मैं जीता हूं नहीं तो श्यामसुन्दरसे बिछुड़ते समय प्राण मेरा निकलजाता सो इतना हाल तुमसे कहताहूं कि श्यामसुन्दरने पृथ्वीका बोझ उतारनेके वास्ते अवतार धारण किया था सो उन्होंने बड़े बड़े अधर्मी दैत्य व राजाओंको मारकर कौरव व पांडवोंसे महाभारत कराया व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य व कृपाचार्य आदिक बड़े बड़े योद्धा व बुद्धिमान् व ज्ञानी व हरिभक्तोंके रहने परभी उस सेनामें अठारह अक्षौहिणीदल नाश करके

पृथ्वीका भार उतारा सो हे विदुरजी परमेश्वरकी इच्छा सबपर बलवान् है इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले हे ऋषीश्वरो जो लोग परमेश्वरकी कथा व कीर्तन में करुणाके स्थानपर रोदेते हैं उनके अनेक जन्मका पाप आंखोंकी राहसे बहकर निकलजाताहै सो मनुष्यके कल्याणवास्ते सिवाय सुनने कथा व लीला अवतार श्यामसुन्दर व करने स्मरण नाम परमेश्वरके दूसरी बात अच्छी नहीं होती व महाभारत होने उपरांत श्रीकृष्णजीने पच्चीसवर्ष तक संसारमें रहकर राजा युधिष्ठिरसे दोबार यज्ञ कराके जगत्में उनको यश दिया था॥

पांचवां अध्याय।

उद्धवजीका विदुरसे विदाहोना और बदरिकाश्रममें जाना व अपना तन योगाभ्यासके साथ त्याग करना॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् उद्धवने विदुरजी से कहा अब तुम हमको बिदा करो तो बदरिकाश्रममें जाऊँ विदुरजीने यह सब बात उद्धवकी सुनते ही आंखोंमें आंसू बहाकर कहा देखो श्यामसुन्दरने चन्द्रमाके समान संसारमें प्रकाश प्रकट करके पृथ्वी का बोझ उतारा व धर्म व गऊ व ब्राह्मणकी रक्षा करके गोलोकको चलेगये व हमलोगोंने अज्ञान व अभाग्य से उनका प्रताप नहीं जाना व हे उद्धव तुम आठोंपहर उनके पास रहते थे सो उनकी माया ऐसी बलवान् है कि आपने भी उनको नहीं पहिचाना इसलिये यह बात निश्चय समझना चाहिये कि विना कृपा मुरली-मनोहरकी उनके भेद व महिमाको कोई नहीं जानसक्ता कदाचित् हम लोग आप ऐसे भक्तोंकी सेवा व टहलमें रहें तो जन्म हमारा सफल हो पर विना कृपा व दया श्यामसुन्दर प्यारेके हरिभक्तोंका सत्संग नहीं मिलता इसलिये हम जानते हैं कि हमारे पिछले जन्म के पुण्य सहाय हुये जो आपका दर्शन मिला सूतजी शौनकादिक ऋषीश्वर व शुकदेवजी राजा परीक्षितसे कहते हैं कि उद्धवजी यह सब वार्ता करके विदुरसे विदा हुये व बदरिकाश्रममें जाके बीच ध्यान श्यामसुन्दरके लीन होकर साथ योगा-भ्यासके तन अपना त्याग दिया व वैकुंठधामको चलेगये व विदुरजी

तीर्थयात्रा करते मैत्रेयजी से मिलनेकी इच्छा रखकर रोते व शोच करते हुये हरद्वारमें आनकर ठहरे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित उद्धवजी सम्पूर्ण हाल अन्तर्धान होने श्यामसुन्दरका विदुरजीसे इसवास्ते प्रकट करके नहीं कहा जिसमें यह हाल सुनकर विदुरजी उनके विरहमें तन अपना छोड़ न देवें॥

छठवां अध्याय।

विदुरको मैत्रेय ऋषीश्वरसे यह बात पूंछना कि संसारकी उत्पत्ति किसतरह होती है॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् विदुरने जब हरद्वारमें मैत्रेय ऋषीश्वरसे भेंट करके उनको दंडवत् किया तब मैत्रेयजीने पूंछा हे विदुर तुम बहुत उदास दिखलाई देते हो इसका क्या कारणहै विदुरने हाल मिलने उद्धव व खबर पावना अन्तर्धान होने श्रीकृष्णजी व मारेजाने दुर्योधनादि कौरवान महाभारतमें व नाश होना सब यदुवंशियों का जिसतरह उद्धवसे सुनाथा मैत्रेय ऋषीश्वरसे कहकर बोले कि श्यामसुन्दर विहारी के वैकुंठ जानेका हाल सुनकर हमारी यह दशा हुईहै सो मैं यह इच्छा आपसे रखताहूं कि तुमने जो कुछ ज्ञान श्रीकृष्णजीके मुखारविन्दसे सुना है वह हाल वर्णन कीजिये जिसमें मेरा मनोरथ पूर्णहो यह बात सुनकर मैत्रेयजी ने कहा जो कुछ तुमको इच्छा हो वह बात पूंछो विदुरजी बोले मनुष्य सदा अपने सुख वास्ते उद्योग करताहै पर सुख न पाकर उसके विपरीत दुःख उठावताहै सो उस क्लेश का देनेवाला कौनहै इसका भेद कहो और यह बात बतलाओ कि नारायणजी सगुण अवतार किस वास्ते लेतेहैं व उनको संसार रचने व फिर उसका नाश करने से क्या लाभ होताहै और मैं अपने ज्ञानसे यह जानताहूं कि पाप छूटने के वास्ते व भवसागर पार उतरने हम सब जीवोंके इस विचारसे सगुण अवतार लेतेहैं जिसमें मनुष्य लोग उन अवतारोंकी कथा व लीला आपस में कह व सुनकर उनके प्रतापसे भवसागर पार उतरजावैं तिसपरभी अज्ञान मनुष्य परमेश्वर की कथा व लीला सुनने में प्रीति न रक्खैं व दिनरात संसारी मायामोहमें लिपटकर नष्ट होवैं तो अभाग्य उनका है इसमें परमेश्वर को क्या दोष

देना चाहिये और बतलाओ परमेश्वर किसतरह ब्रह्मारूप होकर जगत्की उत्पत्ति और विष्णुरूप धरकर सब जीवों को पालन व महादेवरूप धारण करके सब जीवोंका नाश करतेहैं और यह बात कहिये वह कौनसा उपायहै जिसके करने में नारायणजी मनुष्यसे प्रसन्न होते हैं व उनके खुश होनेसे मनुष्य संसारमें अपना मनोरथ पाकर मरनेके उपरान्त मुक्त होताहै व जगत्की रीति ऐसी है कि जब कोई मनुष्य किसी अपराधके बदले दंड पाताहै तब फिर वह जल्दी अधर्म नहीं करता और यह जीव कुकर्म व पाप करनेसे चौरासीलाख योनि व नरकमें बहुतसा दुःख भोग कर जब मनुष्य का तन पाताहै तब परमेश्वरकी मायामें लिपटकर अधर्म क्यों नहीं छोड़ता व दंड पानेपरभी ऐसा कर्म क्यों नहीं करता जिसमें जन्म व मरण से छूटजावै इसका क्या कारणहै सो आप कृपा व दयाकरके इन सब बातों का हाल वर्णन कीजिये जिसमें मेरे मनका सन्देह मिट जावै ॥

सातवां अध्याय।

मैत्रेयजी का श्यामसुन्दर की स्तुति व बड़ाई वर्णन करना ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् विदुरकी बात सुनकर मैत्रेयजी ने कहा हे विदुर तुम आप ज्ञानी हो और तुमको लड़कपनसे हरिचरणोंमें भक्ति उत्पन्न होकर कोई हाल तुमसे छिपा नहीं पर तुमने हमसे पूंछने की चाहना किया इसलिये मैं अपनी बुद्धिके अनुसार तुमसे कहताहूं जिसमें संसारी जीव भी यह हाल सुनकर भवसागर पार उतर जावें और तुम धर्मराजका अवतार कौरवों के कुलमें होकर परमेश्वरका सब गुण जानतेहो व माण्डव्य ऋषीश्वरके शापसे तुमने यह तन पाया श्रीकृष्णजी महाराज सब बातों में तुम्हारी मति लेकर काम करते थे व तुमको परमेश्वर की प्रीति व भक्तिहै इसलिये हम वह भगवद्धर्म तुमसे कहते हैं जो पराशर मुनि अपने पितासे हमने पढ़ाथा तुम मन लगाकर सुनो जो मनुष्य परमेश्वरसे विमुख हैं वह दुःखके सागरमें पड़े रहकर जन्म व मरनेसे छुट्टी नहीं पाते और जो काम अपने सुखके वास्ते करतेहैं उसमें उनको सिवाय

दुःखके कुछ सुख नहीं मिलता कदाचित् परमेश्वरका भजन थोड़ा थोड़ा भी करैं तो संसार के दुःखसे इसतरह छूटजावैं जिसतरह औषध खाने से दिनपर दिन रोग कम होताहै और मनुष्य संसारमें जैसा कर्म भला या बुरा करै वैसा फल पाताहै और जिसतरह मनुष्य अपने पुत्र व कन्या व स्त्री व संसारी मोहमें फँसकर उनसे अपना सुख व भला चाहताहै व सिवाय दुःखके सुख नहीं पाता उसीतरह कोयेमें का कीड़ा अपने रहने व सुखके वास्ते जाला इकट्ठा करके अन्त को वही जाला बटोरने से कोये में फँसकर मरजाताहै व निकल नहीं सक्ता वही हाल मनुष्य का भी समझना चाहिये और विना ईश्वर की कृपा उनकी मायासे मनुष्य का छूटना बहुत कठिन है उस मायासे छूटने के वास्ते परमेश्वर की कथा सुनना व उनके नाम का स्मरण करना मनुष्यको उचितहै और संसारके झूठे व्यवहारको सच्चा जानना यही माया ईश्वर की समझना चाहिये जब मनुष्य इन्द्रियोंके सुखको छोड़कर मन अपना विरक्त करके परमेश्वर का भजन व स्मरण करै तब उस मायासे छूटसक्ताहै जिसतरह स्वप्नेका दुःख जागने से नहीं रहता उसीतरह लोक व परलोकके दुःख हरिभजन करने से छूटजातेहैं और संसार की उत्पत्ति इसतरह परहै जब उस आदि निरंकार ज्योतिको कि वह रूप उनका कोई नहीं देखसक्ता इस बातकी इच्छा होती है कि संसार रचकर हम अपने रूपको आप देखैं जिसतरह कोई मनुष्य अपना मुख दर्पण में देखै तब वह आदि निरंकार पहिले एक ज्योति प्रकट करते हैं जिसको आदिपुरुष कहाजाताहै फिर एक महातत्त्व सबकी जड़ उत्पन्न करके उससे तीनगुण सत्त्व रज तम प्रकट करते हैं सतोगुणसे देवतोंके गुण और रजोगुणसे पांचों तत्त्व और तमोगुणसे पञ्चभूतात्मा उत्पन्न होकर उसी पांचों तत्त्वों से इन्द्रियआदि व मनुष्यका शरीर तैयार होताहै व एक एक अंगके एक एक देवता अधिष्ठाता होतेहैं आंख के देवता सूर्य व नाक के अश्विनीकुमार व जिह्वाके वरुणदेवता इसीतरह सब अंगके देवता उसका हाल दूसरे स्कन्ध दशवें अध्याय में लिखा है॥

आठवां अध्याय।

देवतों को नारायणजी की स्तुति करना ॥

मैत्रेयजीने कहा हे विदुर जब यह सब वस्तु संसार रचने की प्रकट हुईं तब सब देवतोंने संसारके उत्पन्न करनेकी आज्ञा पाकर अपना उद्योग किया जब वह काम उन्होंसे पूरा नहीं हुआ तब सब देवतों ने हार मानकर नारायणजीका ध्यान व स्तुति करके हाथ जोड़कर इसतरह पर कहा हे दीनानाथ संसारमें जो मनुष्य आपके तेजका प्रकाश सब जीवों में समझकर तुम्हारे चरणोंका ध्यान व पूजा करै वह जगत् की माया व दुःख से छूटकर सुख पाताहै व तुम्हारी कथा व लीला सुनने से उसके मनमें इस बातका विश्वास होताहै कि सबसे श्रेष्ठ व कर्त्ता धर्त्ता नारायणजी हैं सो विना कृपा तुम्हारी हम लोगोंसे यह काम संसारके रचनेका जो बहुत कठिनहै हो नहीं सक्ता तब उसी आदिनिरंकार उनके स्तुति करनेपर प्रसन्न होकर देवतों की तरफ़ जैसे कृपादृष्टि से देखा वैसे यह पांचों तत्व इकट्ठे होकर मांसका पिंड होगया उसीका नाम आदिपुरुष होकर उसके रहनेके वास्ते पाताललोक व भूर्लोक व वैकुण्ठलोक जिसको तीनों लोक कहते हैं निर्माण हुये और वही पुरुष मालिक आंख व कान व हाथआदिक इन्द्रियोंका हुआ व विराट्रूप उसी पुरुषको कहते हैं और सब व्यवहार जगत् का उसी रूपमें है उस पुरुषकी नाभिसे एक फूल कमल का निकला जिस फूलमेंसे ब्रह्मा उत्पन्न हुये व उसी पुरुषकी दया व कृपासे ब्रह्माने अपने मुखसे ब्राह्मण व भुजासे क्षत्रिय व जंघासे वैश्य व पैरसे शूद्र चारों वर्णको उत्पन्न किया ॥

नवां अध्याय।

मैत्रेय ऋषीश्वरका सब सृष्टिकी उत्पत्ति कहना ॥

इतनी कथा सुन विदुरजीने मैत्रेय ऋषीश्वरसे पूंछा महाराज वह अवतार आदिपुरुष का हुआ अब दूसरे अवतारोंका हालभी वर्णन कीजिये यह बात सुनकर मैत्रेय ऋषीश्वर बोले हे विदुर जिससमय महाप्रलय होनेसे चारोंतरफ़ जलमयी होकर कुछ दिखलाई नहीं देता था उस

समय वह आदिपुरुष जिसका वर्णन ऊपर करचुकाहूं शेषनागकी छातीपर शयन करतेथे उनकी नाभिसे एक फूल कमलका जिसमें बड़ा प्रकाश था निकला व उस फूलके नालसे ब्रह्माजी प्रकट होकर उसी फूलपर आनबैठे और यह विचारा कि हमको किसने उत्पन्न किया और यह कमलफूल किसकी सामर्थ्यमें खड़ाहै इसी चिन्तामें ब्रह्मा उस फूलकी नाल पकड़ेहुये हजारवर्ष तक पानी में थाह लेनेके वास्ते चलेगये जब उस फूलकी जड़ उन्होंने न पाया तब हार मानकर फिर उसी फूलपर आबैठे व इसी चिन्ता में व्याकुल थे इसलिये तुम जानो कि आदि में सब जीव मूर्ख रहते हैं पश्चात् नारायणजीकी कृपासे ज्ञान प्राप्तहोताहै जिससमय ब्रह्माजी शोचमें थे उसी समय यह आकाशवाणी हुई कि परमेश्वरका तप व ध्यान करो तब तुमको ज्ञान प्राप्त होगा यह आकाशवाणी सुनकर जब ब्रह्माने परमेश्वर का स्मरण व ध्यान किया तब ब्रह्माके हृदयमें ज्ञानका प्रकाश होकर उन्हें यह दिखलाई दिया कि एक पुरुष शेषनागकी छातीपर श्यामरूप अतिसुन्दर चतुर्भुज लक्ष्मीजी समेत सोया है व उसकी नाभि में यह फूल कमलका निकलकर हम इस फूलसे उत्पन्न हुये हैं और उस पुरुषने संसार के रचनेका अधिकार हमको दियाहै जब ब्रह्माजीको सब संसारीवस्तु उसी पुरुषके रूपमें दिखलाईदीं तब ब्रह्माने हाथ जोड़कर यह स्तुति उनकी किया कि हे त्रिलोकीनाथ जो मनुष्य आपसे विमुखहै उसको कभी सुख प्राप्त नहीं होता वह सदा संसारी मायामोहमें व्याकुल रहताहै और रातको सोती समय उसे अनेक चिन्ता लगी रहती हैं कि कल्ह हमको यह यह काम करनाहोगा एक कामसे छुट्टी पाया तो दूसरी बातकी चिन्ता होती है और तुम्हारे नामका स्मरण व चरणकमलकी भक्ति रखनेवाले लोग आपकी कृपा व दयासे अपने मनोरथका फल पाकर सदा आनन्दसे रहते हैं कदाचित् कोई कहे कि इच्छा साधु व वैष्णवकी किसतरह पूर्ण होसक्ती है सो जो लोग वनमें जाकर तुम्हारा तप व जप करते हैं उनमें जिससमय इच्छा स्त्री व धन व संसारी सुखकी होती है उसीसमय तुम्हारी कृपा से उनको इन्द्रलोकके सुख प्राप्त होजाते हैं सो मैं चाहताहूं कि तुम्हारे चरणोंके

नख जो सूर्यसे अधिक तेजवान् हैं सर्वदा मेरे हृदयमें बसेरहैं जिनके प्रकाश से मेरे अन्तःकरणमें अज्ञानका अँधियारा न होवे व तुम्हारा दर्शन योगी व ऋषीश्वरों को जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता सो आपने बड़ी दया करके मुझको अपना दर्शन दिया यह सब स्तुति करके ब्रह्माने उसी पुरुषसे विनय किया हे स्वामी आपने मुझको जीवों के उत्पन्न करने के वास्ते आज्ञा दी सो मुझसे विना शक्ति व कृपा तुम्हारी कुछ हो नहीं सक्ता कि संसारको उत्पन्न करसकूं मेरे हालपर दया कीजिये तब मैं वह कर्म करूं परन्तु ऐसा न हो जो बीचगढ़े अहंकारके गिरकर ऐसा समझूं कि जीवों का उत्पन्न करनेवाला मैं हूं तब उस पुरुषने जो शेषनागकी छातीपर शयन करते थे ब्रह्माकी तरफ आंख उठाकर कहा जैसा तू चाहता है वैसाही होगा पर तुम अपना मन बीचतप व स्मरण नाम परमेश्वरके लगायेरहो व काम व क्रोध व लोभ व अंहकारसे बचेरहना व सब इन्द्रियोंको अपने वशमें रखना जब यह अभ्यास करनेसे तुमको ज्ञान प्राप्त होगा तब मुझको अपना मालिक व उत्पन्न करनेवाला जानकर सब जीवोंमें मेरे तेजका प्रकाश बराबर देखोगे जिसतरह अग्नि काठमें रहती है पर विना उपाय किये प्रकट नहीं होती उसीतरह तुम मेरे चरणोंमें ध्यान लगाकर संसारकी रचना करो तुमको अहंकार न होकर ध्यान करते समय मेरे सब अंगका दर्शन मिलैगा व विना पढ़े सब विद्या याद होजावेगी व तुम्हे किसी जीव अपने उत्पन्न किये हुये के मरने का दुःख नहीं होगा तुम निस्सन्देह जगत्की रचना करो ॥

दशवां अध्याय।

ब्रह्माजीका देवता व पांचों तत्त्व व वृक्षादिकों का नारायणजीकी कृपासे उत्पन्न करना ॥

मैत्रेय ऋषीश्वर बोले हे विदुर वह पुरुष ब्रह्माजीको ध्यानमें दर्शन व धैर्य देकर अन्तर्धान होगये व ब्रह्माजीने उस पुरुष को कृपादृष्टि देखने से अपनेमें संसार रचने की सामर्थ्य पाकर उत्पत्ति करना जगत्का आरम्भ किया पहिले उन्होंने देवतों को पांचोंतत्त्व समेत जिसका वर्णन ऊपर होचुकाहै फिर अनेक रंगके वृक्ष व पशु व पक्षी उत्पन्न किये जब ब्रह्मा

देवता व वृक्षादिकी रचना करचुके तब उन्होंने कई मनुष्य जिनको दुःख व सुख दोनों बराबर रहता है अपनी इच्छा से मानसी सृष्टि उत्पन्न किया व कमलके फूलसे चौदह भुवन सातलोक ऊपर व सातलोक नीचेका बनाया उसके उपरान्त सतयुग व त्रेता व द्वापर व कलियुग चारोंयुग बनाकर वर्ष व महीना व पक्ष व वार व घड़ी व पलकप्रमाण किया जिनके बीतनेसे देवता व मनुष्य व दैत्य व राक्षस आदि सब जीवोंकी आयुर्दा पूर्ण होती है व देवता व दैत्य व राक्षस व मनुष्यकी योनि सामने व पशु व पक्षी आदिककी योनि पीछे होती है और ब्रह्मा की आयुर्दा का एक दिन चौदह मन्वन्तर निर्माण हुआ व एक मन्वन्तरमें इकहत्तर चौकड़ीयुग भोग करता है जिसकी सब नवसै चौरानवे चौकड़ी हुई यह बीत जावें तब एक दिन ब्रह्माकी आयुर्दामें समझना चाहिये व उसी दिनके प्रमाण तीसदिन का महीना व बारह महीनेका वर्ष होकर सौवर्षकी आयुर्दा ब्रह्माकी है व रातभी उनकी उसी दिनके बराबर होती है सो ब्रह्माजी दिनभर जीवोंकी उत्पत्ति करते हैं जब ब्रह्माका एक दिन बीतकर सन्ध्या होती है तब जगत् प्रलय होकर सब संसारी जीव नाश होजाते हैं जब रात बीतकर सवेरा होताहै तब फिर ब्रह्माजी सब जीवों को उन्हीं के कर्मानुसार वैसी वैसी योनिमें उत्पन्न करते हैं इसीतरह जब पचासवर्ष आयुर्दा ब्रह्माजीकी बीत जाती है तो उस को अर्द्धप्रलय कहते हैं और जब १०० वर्ष आयुर्दा ब्रह्माजीकी पूरी होकर तन उनका छूटजाताहै तब महाप्रलय होकर चारोंतरफ पानी के सिवाय और कुछ नहीं रहता एक वही आदिपुरुष अविनाशी अकेले रह जाते हैं और यह हाल एक ब्रह्माण्ड का कहागया व ब्रह्माण्डका स्वरूप गूलरके फलसमान समझना चाहिये व इसीतरहपर बहुत ब्रह्माण्ड होकर सबके मालिक व उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाले आदिपुरुष भगवान्‌जी हैं वह चाहें तो कई हजार ब्रह्माण्ड एक क्षणमें उत्पन्न करके फिर नाश उनका करदेवें इसका भेद कोई नहीं जान सक्ता वह नारायणजी उस समयमें थे जब कोई नहीं था और जब कुछ न रहैगा तब भी वही अवि- नाशी पुरुष स्थिर रहेंगे मृत्यु उनके पास नहीं आसक्ती वह सदा एक-

स्वरूप रहकर घटने व बढ़नेसे कुछ प्रयोजन नहीं रखते जो कुछ इस ब्रह्मांड में देखते हो सब उन्हींकी रचना है जो काम उत्तम व मध्यम किसी मनुष्यसे होता है सबका हाल वह जानते हैं व इस ब्रह्मांडको गूलरके फलसमान समझना चाहिये जिसतरह गूलरके फलमें छोटे छोटे मच्छड़ रहकर उस फलके तोड़तेसमय उड़जाते हैं उसी तरह ब्रह्मांड में सब जीव रहकर परमेश्वरके भेदको नहीं जानते जिनको सत्संग करनेसे ज्ञान प्राप्त होता है वह लोग संसारी व्यवहार व शरीरको झूठा समझकर सब जीवों में परमेश्वर का चमत्कार बराबर जानते हैं सो वह आदिपुरुष गूलर के वृक्षसमान हैं जिसतरह उस वृक्षमें हजारों फल गूलरका लगा रहताहै उसी तरह नारायणजीके सब रोम रोम में हजारों ब्रह्मांड बँधेरहते हैं इसकारण सब जीवोंमें उन्हींका प्रकाश समझना चाहिये ॥

ग्यारहवां अध्याय।

ब्रह्माजीका सनक सनन्दन सनातन व सनत्कुमार व रुद्रको उत्पन्न करना जो लोग अवतार नारायणजी के हैं ॥

मैत्रेय ऋषीश्वरने कहा हे विदुर जब ब्रह्माजीको देवता व मनुष्यादिक जिसका वर्णन ऊपर होचुका है उत्पन्न करनेपरभी सन्तोष नहीं हुआ तब उन्होंने सृष्टि बढ़ने के वास्ते सनक व सनन्दन व सनातन व सनत्कुमार को जो लोग नारायणजीके अवतारहैं अपने हृदयसे उत्पन्न किया और उन्हें कहा तुमलोग भी प्रजा उत्पन्न करो व वरदान हमसे मांगो सो देवें उन्होंने ज्ञानकी राह अपने मनमें विचार किया कि जो माता व पिता व भाई हरिभजन करनेसे मना करें उनको अपना मित्र समझना न चाहिये ऐसा विचारकर सनत्कुमारादि चारों भाइयोंने ब्रह्माजीसे कहा कि हम लोग यही वरदान मांगते हैं जिसमें सदा अवस्था हमारी पांच पांच वर्ष की बनी रहै व हमारा मन काम क्रोध मोह लोभ में न फँसकर पंचभूतात्मा के वश न होवे व अपने मन व इंद्रियोंपर हमलोग प्रबल रहें व युवा व वृद्धावस्था हमपर न व्यापै किसवास्ते कि पांचवर्षकी अवस्था में इंद्रिया अपना बल उसपर कर नहीं सक्तीं हमलोग हरिभजन करेंगे हमें जीव

उत्पन्न करनेकी आज्ञा मत दीजिये संसारके रचनेसे भगवद्भजनमें हमारा विघ्न होगा यह बात सुनकर ब्रह्माजीने उन्हें ऐसा वरदान दिया कि तुम लोग सदा पांचवर्षकी अवस्था रहकर सब इंद्रियां अपने आधीन रक्खोगे पर जो तुमने मेरे कहनेसे उत्पन्न करना जीवोंका अंगीकार नहीं किया सो बहुत अनुचित हुआ ऐसा कहकर जब ब्रह्माजीने अपने पुत्रोंपर आज्ञा न माननेसे क्रोध किया तब उनकी दोनों भौंहों से एक पुरुष श्याम व ललितरंगका उत्पन्न होकर रोनेलगा उसको देखतेही ब्रह्माजीने पूंछा तू किसवास्ते रोताहै तब उसने उत्तर दिया मैं चाहताहूं कि मेरा नाम धरकर मझे कोई काम बतलाओ ब्रह्माजीने कहा तूने उत्पन्न होतेसमय रुदन किया इसवास्ते मैंने तेरा नाम रुद्र रक्खा तू जीवोंकी उत्पत्ति कर सब देवतोंमें श्रेष्ठ होकर बीचसंसारके शिवशंकर व भोलानाथ व महादेव आदिक तेरे अनेक नाम प्रसिद्ध होंगे जब रुद्रने ब्रह्माजीकी आज्ञा पानेसे राक्षस व भूत व पिशाच आदिक जिनके स्वभावमें काम व क्रोध व लोभ व अहंकार भरा था अपनी इच्छासे उत्पन्न किये तब वह लोग ब्रह्माजीको अच्छे नहीं मालूम होकर उन्होंने कहा हे रुद्र तेरी उत्पत्ति क्रोधसे हुई है जबतक तेरे अन्तःकरण में सतोगुण नहीं आवेगा तबतक तुम्हारे उत्पन्न कियेहुये जीव अधर्मी होवेंगे इसलिये तुम पहिले जाकर परमेश्वरका तप करो जब तुम्हारे स्वभावसे तमोगुण छूटकर सतोगुण का प्रवेश उसमें होवे तब सतोगुणसे जीवोंकी उत्पत्ति करना तप करनेसे तुम्हें परमेश्वर का दर्शन मिलेगा यह बात सुनतेही रुद्र उत्पत्ति करना जीवोंका बन्द करके तप करने को चलेगये ॥

बारहवां अध्याय।

ब्रह्माजीका नारद व वशिष्ठ व अंगिरा आदि ऋषीश्वर व राजा स्वायम्भुव मनु व शतरूपाको उत्पन्न करना ॥

मैत्रेय ऋषीश्वर बोले हे विदुर ब्रह्माजीने उसके उपरान्त नारद व वशिष्ठ व अंगिरा आदिक कई ऋषीश्वर जिनके नामका वर्णन आगे

कियाजावेगा उत्पन्न करके सरस्वतीनाम एक कन्या अपने वचनसे उत्पन्न किया वह लड़की अतिसुन्दर उत्तम भूषण व वस्त्र धारण किये प्रकट हुई जिसका रूप देखतेही ब्रह्माने परमेश्वरकी मायासे मोहित होकर उसके साथ भोग करना चाहा तब नारदजी व अंगिरा आदिकने यह अधर्म देखकर ब्रह्माको समझाया हे पिता जब तुम जगद्गुरु होकर ऐसा पाप करोगे तब संसारीलोगभी यह हाल सुनकर अधर्म करेंगे इसलिये तुमको अपनी कन्यासे भोग करना न चाहिये जब ब्रह्माको अपने पुत्रोंके समझानेसे ज्ञान हुआ तब उन्होंने उसीसमय लज्जित होके वह शरीर अपना छोड़कर दूसरा तन धारण किया व ब्रह्माकी खोथसे एक अँधियारासा उठ कर वही कुहिरा संसारमें प्रसिद्ध हुआ जो प्रातःकाल दिखलाई देताहै फिर ब्रह्माने चारों मुखसे चार वेद उत्पन्न करके बनाना स्थान व वैद्यक व यज्ञ व दान व रागादि चारतरहकी विद्या व चारों आश्रम प्रकट किये जब ब्रह्मा ने देखा कि अकेले मेरे उत्पन्न करने से जीवों की वृद्धि नहीं होती तब उन्होंने अपने दहिने अंग से स्वायम्भुव मनु नाम एक पुरुष व बायें अंगसे शतरूपा नाम स्त्री उत्पन्न करके उन दोनोंका विवाह कर दिया और उनसे कहा तुम दोनों आपस में भोगविलास करके मनुष्य उत्पन्न करो यह वचन सुनकर स्वायम्भुव मनु बोले हे विधाताजी मैं तुम्हारी कृपा से बहुत मनुष्य उत्पन्न करूंगा पर उनके रहने वास्ते जगह चाहिये चारोंतरफ पानी भरा हुआ है सो वह लोग जलपर नहीं रहसक्के अभीतक आपने जिनको उत्पन्न किया सब कमलके फूल पर बैठेहैं मेरे उत्पन्न करने से अधिक होकर कहां रहैंगे यह बात स्वायम्भुवमनुसे सुनकर ब्रह्माजीने कहा पहिले तुम नारायणजी का तप करो पीछेसे मनुष्य की उत्पत्ति करो मैं उन लोगों के रहनेवास्ते जगहका उपाय करताहूं॥

तेरहवां अध्याय।

ब्रह्माजीका नारायणजीसे जीवोंके रहनेकी जगह वास्ते विनय करना व वाराह अवतार धरकर परब्रह्म परमेश्वरका पातालसे पृथ्वी का लाना॥

मैत्रेय ऋषीश्वर बोले हे विदुर जब स्वायम्भुवमनु ने पृथ्वी प्रकट होने

वास्ते चाहना किया तब ब्रह्माने आदिपुरुष परमेश्वरका ध्यान करके उनसे विनय किया कि हे महाप्रभु विना दया व कृपा तुम्हारे इस जीवका कोई काम सिद्ध नहीं होता यह अनेक तरह की इच्छा व चाहना मनमें करताहै सो जिसपर तुम दया करते हो वह अपना मनोरथ पाताहै और मैं तुम्हारी आज्ञासे जीवोंकी उत्पत्ति करता हूं पर वह लोग विना कोई आधार पानी पर किसतरह रहेंगे जितने जीव अबतक उत्पन्न हुये वह लोग फूल पर बैठे हैं सो आप जैसी आज्ञा दीजिये वैसा करूं नारायणजीने यह वचन ब्रह्माका सुनते ही उन को ध्यानमें दर्शन देकर कहा कि तुम इस बातका शोच मत करो मैं अभी अवतार लेकर पृथ्वी वास्ते रहने जीवोंके लादेताहूं ऐसा कहकर परब्रह्म परमेश्वर अन्तर्धान होगये व उन्होंने विचार किया कि पृथ्वीको हिरण्याक्ष दैत्य उठाकर पाताल में लेगयाहै वहांसे लाना चाहिये सो परमेश्वर की इच्छा से ब्रह्माजी को छींक आई ता उनके दहिने नाकसे एक शूकर बहुत छोटा मच्छड़ के समान जिसको वाराह कहते हैं गिरपड़ा जब वह शूकर क्षणभरमें हाथीके समान बढ़कर अपनी बोली में गर्जने लगा तब ब्रह्मा पहिले घबड़ाकर कहने लगे कि यह कौन जीवहै जो ऐसी जल्दी बढ़गया फिर ज्ञानकी राहसे उन्होंने मालूम किया कि मेरी विनय करने से वैकुण्ठनाथ यह रूप धरकर पृथ्वी लानेका उपाय करने आये हैं नहीं तो दूसरेको क्या सामर्थ्य थी जो एकक्षणमें इतना बढ़जाता यह बात विचारकर ब्रह्माने वाराहजीसे विनय किया महाराज आपने वाराहरूपी ईश्वर होकर अपना वचन पूरा किया यह बात ब्रह्माकी सुनतेही वाराहजी फूलपर से पानी में कूदपड़े व पातालमें जाकर जब हिरण्याक्ष दैत्यको वहां नहीं देखा तब वाराहजीने पृथ्वी को जो वहां पर बावन किरोड़ योजन लम्बी व चौड़ी रक्खी थी अपने दांतोंपर इसतरह उठा लिया जिसतरह हाथी अपने दांतों पर कमल का फूल उठालेवे जब वाराहजी पृथ्वी लिये हुये चले आते थे तब राहमें हिरण्याक्ष दैत्यसे जो बड़ा बलवान् होकर कोई देवता उससे लड़ने की सामर्थ्य नहीं रखता था लड़ाई हुई सो वाराहजी हिरण्याक्ष दैत्यको मारकर पृथ्वी पानी के ऊपर लाये ब्रह्मा पृथ्वीको देखतेही बहुत

प्रसन्न होकर परब्रह्म परमेश्वर से बोले आप जिसतरह बड़ी कृपा करके पृथ्वी लाये उसीतरह दया करके धरती को पानी पर रखकर स्थिर कर दीजिये जिसमें सब जीव आनन्दसे रहकर पृथ्वीपर यज्ञ व होम करैं जब वाराहजीने पृथ्वीको पानीपर रक्खा और वह मिट्टी होनेसे गलने लगी तब परब्रह्म परमेश्वरने कुछ अपनी शक्ति पृथ्वीको देखकर जलपर स्थिर करदिया सो वशिष्ठादिक जो लोग ब्रह्माजी व स्वायम्भुवमनु व शतरूपा से उत्पन्न हुये थे नारायणजी की स्तुति करने लगे व उस पृथ्वीपर रहकर परमेश्वर का स्मरण व यज्ञ व होम करना आरम्भ किया ॥

चौदहवां अध्याय।

मैत्रेय ऋषीश्वर का विदुरजी से यह बात कहना कि जय विजय द्वारपालक वैकुण्ठ से बीच पेट दितिके आनकर गर्भवास किया था ॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् इतनी कथा सुनकर विदुरजी ने मैत्रेय ऋषीश्वरसे पूंछा कि नारायणजीने हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु दैत्यके मारने वास्ते आप अवतार लिया क्या देवता लोग उनको नहीं मारसक्ते थे मैत्रेय ऋषीश्वर बोले हे विदुर हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु अवतार जय विजय वैकुण्ठ के द्वारपालकों का है सिवाय नारायणजी के दूसरा कोई उनको मार नहीं सक्ता था व उनकी कथा इसतरहपर है सुनो कश्यप ब्रह्माजी के बेटे दो स्त्री रखते थे एक दिति व दूसरी स्त्री का नाम अदिति था देवत बेटे अदिति व दैत्यलोग बेटे दितिके हैं जिन दिनों देवता इन्द्रासनका राज्य व सुख भोग करते थे उन्हीं दिनोंमें दैत्योंकी माताने अपने बेटोंकी राजगद्दी छूटजाने से सेवा कश्यपजी अपने पतिकी इस इच्छा से करना आरंभ किया कि जिसमें यह प्रसन्न होकर ऐसा बलवान् पुत्र मुझे देवें जो देवतों से राज्य छीन कर आप इन्द्रासन पर बैठे सो एक दिन दिति ने अपने पतिको प्रसन्न देखकर विनय किया कि मैं चाहतीहूं कि मेरे बेटे ऐसे शूर वीर उत्पन्न होवैं जो अदिति के बेटोंको युद्ध में जीत कर इन्द्रासन छीन लेवैं देवता लोग धर्मात्मा थे इसलिये कश्यपजी को उनकी हार मनसे नहीं भावती थी पर कश्यपजी ने दिति

अपनी स्त्री के सेवा करने से लज्जित व प्रसन्न होकर कहा जो तू चाहती है वैसा होगा यह बात सुनकर दिति बहुत प्रसन्न हुई फिर उन्हीं दिनों में जब दिति स्त्रीधर्म से शुद्ध हुई तब उसने संध्या समय भोग करने की इच्छा करके कश्यपजी अपने पतिके पास जाकर कहा कि इस समय मुझे कामदेव दुःख देरहाहै व मेरे सौत के बेटे राजसिंहासन का सुख भोगते हैं यह दुःख मुझसे सहा नहीं जाता सो मेरी चिन्ता दूर कीजिये यह वचन सुनकर मरीचि के बेटा कश्यपमुनि बोले हे दिति इससमय तेरे साथ भोग व विलास जो बहुत बुरा काम है नहीं करसक्ता सन्ध्या से चार घड़ी रात बीते तक व चार घड़ी रात रहे से प्रातःकाल तक सिवाय लेने नाम व करने ध्यान परमेश्वरके दूसरा काम न करना चाहिये किसवास्ते कि इससमय में महादेव व पार्वतीजी बैलपर चढ़कर सब जगह जाते हैं उन्हें जो मनुष्य जागता हुआ परमेश्वरके ध्यान व स्मरणमें दिखलाई देता है उसे आशीर्वाद देकर बड़ाई उसकी करते हैं व जो मनुष्य सोता हुआ या बीच कामकाज संसारी व्यवहारके लगा रहता है उसको ऐसा शाप देते हैं कि तेरा मनोरथ कभी पूरा न होय और तू यह बात कहै कि ब्रह्माके वंशमें तुम और वह दोनों उत्पन्न हुये हो इसलिये महादेवजी नातेदारी होनेसे तुम्हारा अपराध क्षमा करेंगे सो शिवजी हमारे मालिक व ईश्वरके तुल्यहैं धर्मके स्थानपर उनको किसीका संकोच नहीं रहता इसलिये तू चार घड़ी और धैर्य रख जिसमें परमेश्वरके भजन व स्मरणका समय बीतजावे उस समय दिति कामदेवके मदमें ऐसी मतवाली होरही थी कि अपने पतिके समझाने पर भी उसने सन्तोष नहीं करके लाज व शर्म छोड़दिया व जब कश्यपजीके शरीरका कपड़ा धरकर भोग करनेके वास्ते हठ किया तब कश्यपजीने हार मानकर उसके साथ भोगकरके कहा हे दिति इससमय तैंने जो यह अधर्म किया इस पाप करनेसे तेरे दो बेटा ब्राह्मण व ऋषीश्वरआदि सब जीवोंको दुःख देनेवाले ऐसे बलवान् उत्पन्न होंगे कि कोई देवता या दैत्य या मनुष्य उनसे लड़ाईमें सामना करनेसे जीत न सकेगा नारायणजी महाराज आप सगुण अवतार लेकर उनको मारेंगे दितिने

यह बात सुनतेही बहुत उदास होके अपने पतिसे हाथ जोड़कर विनय किया महाराज मेरी इच्छा यहथी जिसमें मेरे बेटे देवतोंको जीतकर अमरावतीपुरीका राज्य करके सुख भोगैं मुझको यह कामना नहीं थी जो मेरे बालक अधर्मी होकर ब्राह्मण आदिक जीवोंको दुःख देवें ऐसे पापी बेटे लेकर मैं क्या करूंगी यह वचन दितिका सुनके व उसे बहुत उदास देखने से कश्यपमुनि बोले हे दिति अब क्या करना चाहिये इससमय भोग करनेका प्रभाव यहीहै इसी वास्ते मैं मना करता था परन्तु कुकर्म करने के पीछे जो तू शोच करती है इस पछतानेसे एक पौत्र तेरा ऐसा परमभक्त ज्ञानी व तपस्वी उत्पन्न होगा जिसका नाम लेनेसे संसारी जीव भवसागर पार उतरजावैंगे व सब देवता व दैत्य उसका गुण गाकर नारदजी उसकी बड़ाई इन्द्रकी सभामें कहैंगे व परब्रह्म परमेश्वर अवतार लेकर रक्षा उसकी करैंगे यह वचन अपने पतिका सुननेसे दितिको कुछ धैर्य हुआ॥

पन्द्रहवां अध्याय।

सनत्कुमारजी को नारायणजी के जय विजय द्वारपालकों को शाप देना और दिति के गर्भ में उन दोनों का आना॥

मैत्रेय ऋषीश्वरने विदुरजी से कहा कि जिस समय कश्यपमुनिका वीर्य दितिके पेटमें पड़ा उसीसमय जय व विजय के तेज से जो गर्भ में आयेथे मन देवतोंका ऐसा घबड़ाया कि उनके हृदय में डर उत्पन्न होकर यह मालूम देनेलगा कि कोई बलवान् शत्रु हमलोगोंको मारनेके वास्ते चलाआता है जब अधिक विकलता से मन देवतों का कहीं नहीं लगकर प्रतिदिन बल उनका घटनेलगा तब इन्द्रादिक देवतोंने ब्रह्माके पास जाकर कहा कि महाराज आप जगत्कर्ता होकर सब जीवों के दुःख व सुखका हाल जो होनेवालाहै पहिलेसे जानते हैं सो इन दिनों हमलोगों का मन बहुत घबड़ाकर डरसे भरारहताहै इसका भेद बतला दीजिये यह वचन देवतोंका सुनकर ब्रह्माजी बोले हे इन्द्र जय व विजय द्वारपालक नारायणजीके जन्म लेने के वास्ते दितिके पेटमें गर्भवास कियाहै इसलिये उसके तप व तेजसे तुम्हारा बल हीन होकर तुमलोगोंका यह हाल हुआ यह

बात सुनकर देवतोंने कहा कि महाराज अभी उनके गर्भमें आनेसे हम लोगोंकी यह दशा हुई उन दोनोंके जन्म लेनेसे हमारी क्या गति होगी व हे महाप्रभु वैकुंठवासीलोग जन्म व मरणसे रहितहैं उन्होंने वैकुंठका सुख छोड़कर बीचतन दैत्यके किसवास्ते जन्म लेना अंगीकार किया इसका हाल वर्णन कीजिये जिसमें हमारा सन्देह छूटजावे तब ब्रह्माने कहा उनका हाल इसतरहपर है एक दिन लक्ष्मीजी बड़े प्रेमसे बहुत दासी रहते परभी अपने हाथ चन्दन व अंतर नारायणजी के शरीर व भुजामें लगाती थीं व परब्रह्म परमेश्वर वैकुंठमें जहां सब स्थान जड़ाऊ सोनेके बहुत अच्छे बनेहैं रत्नसिंहासनपर बैठेथे उससमय जगन्माताने यह विचार किया कि भुजा श्यामसुन्दरके देखनेमें बहुत सुन्दर व कोमल मालूम होते हैं पर मैंने आजतक इन भुजोंका बल कभी नहीं देखा न मालूम इनमें कुछ पुरुषार्थहै या नहीं नारायणजी अन्तर्यामीने उनके मनका हाल जान कर अपना पराक्रम लक्ष्मीजी को दिखलाने के वास्ते यह बात विचारा कि सिवाय जय व विजय जो मेरे द्वारपालक हैं दूसरा कोई एकक्षणभी हमारे भुजाका बल सह नहीं सक्ता जो मेरे साथ लड़सकै इसवास्ते इन दोनोंका दैत्ययोनिमें जो हमारे शत्रुहैं जन्म देवें व उनसे लड़ाई करके अपने भुजोंका पराक्रम लक्ष्मीजीको दिखलावें ऐसा विचारकर वैकुंठनाथने जय व विजय का ज्ञान बदल दिया कि उसी कारण तीनबेर उन्होंने बीचतन दैत्यके जन्म लिया व उनके जन्म लेनेका यह हेतुहै कि एकदिन सनक व सनन्दन व सनातन व सनत्कुमार चारोंभाई जिनको किसीसमय भीतर जानेके वास्ते मनहाई नहीं थी नारायणजीका दर्शन करनेके वास्ते वैकुंठ में गये उसी दिन परमेश्वरकी इच्छासे जिसका हाल ऊपर लिखा है जय व विजय द्वारपालक चतुर्भुजी स्वरूप ने सातवीं डेवढ़ी पर सनत्कुमार आदि ऋषीश्वरोंको भीतर जानेसे मना करके कहा कि विना पूंछे नारायणजीके महलबीच जाना उचित नहीं है यह नई बात सुनतेही सनत्कुमारजीने क्रोध करके कहा हे मूर्ख हमको वैकुंठनाथने भीतर जाने के वास्ते कभी नहीं मना किया होगा किसवास्ते कि वह सदा ब्राह्मणों

का आदर व सन्मान दूसरोंसे अधिक करते हैं यह सब तुम्हारी दुष्टताहै जो हमें रोकतेहो वैकुंठमें काम क्रोध मोह लोभ व्याप नहीं सक्ता पर तुमने हमारा अपमान करके हमें क्रोध दिलाया इसलिये हम परमेश्वरसे चाहते हैं कि तुम दोनों मर्त्यलोकके बीच जहांपर जीव काम क्रोध मोह लोभसे भरेरहते हैं दैत्ययोनिमें जन्म लेव यह शाप सुनतेही जय विजयका गर्व जातारहा तब दौड़कर सनत्कुमारजी के चरणपर गिरपड़े व रोतेहुये हाथ जोड़कर विनय की महाराज हमने जाना कि अब हमारे बुरेदिन आयेहैं इसलिये हमसे ऐसा अधर्म हुआ सो अपराध हमारा क्षमा करके अवधिका प्रमाण कर दीजिये कि दैत्ययोनिसे कब हमारा उद्धार होगा यह दीन वचन सुनकर सनत्कुमारजीने कहा मेरा शाप किसीतरह फिर नहीं सक्ता और न मालूम क्योंकर मेरे स्वभाव में क्रोधने प्रवेश किया सो तुम दोनों भाइयोंको तीनवार माता के पेटसे जन्म लेकर दैत्य होना पड़ेगा व तीनों बेर त्रिलोकीनाथ सगुण अवतार लेकर जब तुम्हें अपने हाथसे मारेंगे तब तुम उद्धार होकर फिर वैकुंठमें अपनी जगह आवोगे जिस समय सनत्कुमारजी जय व विजयसे ऐसा कहरहेथे उसीसमय वैकुंठनाथ यह हाल सुनकर सनत्कुमारजी का सन्मान करनेके वास्ते नंगे पांव लक्ष्मी समेत बाहर निकलआये और सनत्कुमारजी के चरणोंपर गिरकर कहा इन द्वारपालकोंसे बड़ा अपराध हुआ जो इन्होंने आपको रोंका मेरी लक्ष्मीको तुमसे कुछ पर्दा नहीं है अधर्म की जगह स्त्रीको पर्दा करना चाहिये यह अधीनता वैकुंठनाथकी देखकर सनत्कुमारजीने मनमें कहा देखो कैसी बड़ाई नारायणजीमें है जिस परब्रह्म परमेश्वर के चरणोंका ध्यान ब्रह्मा व महादेवआदि देवता व नारदमुनि आदिक ऋषीश्वर व ज्ञानीलोग अपने हृदयमें रखने से भवसागरपार उतरकर कृतार्थ होते हैं सो वही आदिपुरुष भगवान् तीनों लोकके मालिक व उत्पन्न करनेवाले जिनका भजन व स्मरण करनेसे हमने यह बड़ाई पाई हमारे चरणोंपर गिरकर इतनी अधीनता करते हैं क्यों न हो इसीवास्ते यह अपना नाम ब्रह्मण्यदेव रखकर ब्राह्मणोंका सत्कार बड़े प्रेमसे करते हैं नहीं तो इनका क्या प्रयोजनथा जो

मुझ ऐसे गरीब ब्राह्मणपर इतनी दया करते यह सब कृपा इस वास्ते करते हैं जिसमें संसारीलोग यह हाल सुनकर ब्राह्मणोंकी सेवा व सन्मान करें ऐसा विचारकर सनत्कुमारजीने त्रिलोकीनाथ से हाथ जोड़कर विनय की कि हे दीनानाथ मैंने क्रोधवश तुम्हारे सेवकोंको शाप दिया सो आप दयाकी राह मेरा अपराध क्षमा कर अपने चरणोंका ध्यान मुझे दीजिये जिसमें तुम्हारे चरणकमलों का ध्यान मन में रखने से फिर क्रोध हमको न आवै व कोई जीव मेरे हाथसे दुःख न पावै॥

सोलहवां अध्याय।

नारायणजीको सनत्कुमारका सन्मान करना व वैकुंठनाथकी सनत्कुमारको स्तुति करना॥

मैत्रेय ऋषीश्वरने कहा हे विदुर सनकादिक के मुख से सब हाल सुनकर परब्रह्म परमेश्वर बोले हे महाराज जय व विजय मेरे द्वारपालकों को अपराध करने के बदले जो दंड आपने दिया सो बहुत अच्छा किया और मैं इस शाप देनेसे बहुत प्रसन्न हुआ किसवास्ते कि इनके दण्ड पाने से दूसरा कोई ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंका अपमान नहीं करेगा व तुम्हारे स्वभावमें क्रोध नहींथा यह शाप मेरी इच्छासे इनको हुआ है आप किसी बातकी चिन्ता मनमें न करें और मैं इसवास्ते तुम्हारी विनती करताहूं कि यह दोनों मेरे द्वारपालकथे इनके अपराध करनेका अपयश मेरे ऊपर है इसलिये मेरा अपराध क्षमा कीजिये किसवास्ते कि संसारमें किसीका नौकर कोई काम भला या बुरा करे तो उसके मालिकका नाम उस बात के करनेमें धराजाता है व जो लोग साधु व महात्मा व ब्राह्मणका अपमान करते हैं उनका तन शत्रु होकर उन्हें नरकमें रहना पड़ताहै व नरक के लोगोंकोभी ऐसे मनुष्यकी संगति अच्छी नहीं लगती सो तुमलोग ब्राह्मण व ऋषीश्वर मेरे इष्टदेवताहो तुम्हारे चरणों की धूरका ऐसा प्रताप है कि लक्ष्मीजी चंचलस्वभाव होनेपरभी मेरे पास दिनरात बनी रहतीं व ब्राह्मणको मैं अपने तन व लक्ष्मीजी व वैकुंठसेभी प्यारा व अच्छा जानता हूं व संसारमें हम ब्राह्मणमुख व अग्निमुखसे भोजन करते हैं पर जैसा ब्राह्मणको अच्छे पदार्थ खिलानेसे प्रसन्न होताहूं वैसे अग्नि होम करनेसे

प्रसन्न नहीं होता ब्राह्मणोंको इच्छाभोजन खिलानेसे मेरा पेट तीनोंलोक के जीवों समेत भरजाता है इसलिये गृहस्थको ब्राह्मण खिलाना अवश्य चाहिये और मैं ब्राह्मणोंके चरणों की धूर लक्ष्मीजी समेत अपने शिरपर चढ़ाताहूं व ब्राह्मणका अपराध क्षमा करनेवाले लोग मुझे बहुत प्यारे मालूम देते हैं यह वचन वैकुंठनाथका सुनकर सनकादिक बोले हे महाप्रभु तुम्हारी लीला व इच्छा ब्रह्माजी हमारे पिता नहीं जानते हमलोगों की क्या सामर्थ्य है जो जानसकें आप सब चौदहोंभुवनके जीवोंके मालिक होकर जैसी तुम्हारी इच्छा होतीहै वैसा ब्रह्मादिक देवता करते हैं व आप से कोई दूसरा बड़ा नहीं है उनको बड़ा भाग्यवान् समझना चाहिये जिनके हृदयमें तुम्हारी भक्ति व वैकुंठजानेकी चाहना रहती है व जो लोग हरि-भक्तोंसे सत्संग रखकर उनकी सेवा करते हैं उनको वैकुंठ पहुँचनेमें सन्देह नहीं रहता व आपका वैकुंठ कैसाहै जिसमें काम व क्रोध व मोह व लोभ का प्रवेश नहीं होता वहां कल्पवृक्ष बहुतसे लगे रहकर बारहों महीने उन वृक्षोंमें ऐसे फूल व फल लगे रहते हैं जिसके देखनेसे चित्त प्रसन्न होकर शोच व दुःख छूटजाताहै व अच्छे अच्छे पक्षी हंस व मुरैला आदि वहां रहकर अनेक प्रकारकी मीठी मीठी बोलियां बोलते हैं व बहुत बड़े मकान सोनेके रत्नादिकसे जड़ेहुये बने हैं व उस जगह पहुँचनेसे मनुष्यकी सब इच्छा पूर्ण होजाती हैं सब तरह के सुख व पदार्थ उसको वहां मिलते हैं ऐसा कहकर सनकादिक नारायणजी व लक्ष्मीजीके स्वरूपका ध्यान करके ऐसे प्रेममें डूबगये कि आंसू बेप्रमाण उनकी आंखोंसे बहनेलगे व नारायणजीका स्वरूप इस तरहपर है कि श्यामरंग कमलनयन चतुर्भुज मोहनीमूर्ति किरीट मुकुट साजे अंग अंग पर भूषण विराजे कौस्तुभमणि व वैजयन्ती माला पहिने पीताम्बरकी कछनी काछे उपरना रेशमी ओढ़े चारो हाथों में शंख चक्र गदा पद्म धारण किये शंख व चक्रके दो हाथ ऊपर उठाये पद्म व गदा के दो हाथ नीचेको लटकाये घूंघरवाले बाल मन्दमन्द हास्य तापहारिणी चितवन उनके बाईंओर लक्ष्मीजी इस स्वरूपसे कि एक स्त्री बहुत सुन्दर बिजली ऐसी अंग की चमक पीताम्बर पहिने कानों

में कर्णफूल हाथोंमें कंगन व कड़ा पैरोंमें पायजेब व कड़ा गलेमें मोती व रत्नके हार शिरमें चूड़ामणि नाकमें नथ पहिने लक्ष्मीनारायणजी जड़ाऊ सिंहासनपर बैठे हैं जब ऐसे स्वरूपका ध्यान सनकादिकने किया तब वैकुंठनाथने कहा मैं तुमसे बहुत प्रसन्नहूं कुछ वरदान मांगो यह वचन सुनतेही सनकादिक हाथ जोड़कर बोले कि महाराज हम यही वरदान मांगते हैं कि तुम्हारे चरणोंकी भक्ति मेरे हृदयमें बनी रहकर आपकी कथा व लीला सुनने में सर्वदा इच्छा लगी रहै जब नारायणजी ने इच्छापूर्वक वरदान दिया तब सनकादिक वैकुण्ठनाथ को दंडवत् करने उपरान्त बिदा होकर चले गये॥

सत्रहवां अध्याय।

हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु का दिति के पेट से जन्म लेना व हिरण्याक्ष का वरुण देवता के स्थानपर जाना॥

मैत्रेय ऋषीश्वर ने विदुरसे कहा सनकादिक के जाने उपरान्त जय व विजय द्वारपालक इस इच्छा से वैकुण्ठनाथ के सामने खड़े रहे कि जिसमें नारायणजी आज्ञा करदेवें तो ऋषीश्वरों का शाप हमको भोगना न पड़े त्रिलोकीनाथ अन्तर्यामी उनकी मंशा जानकर बोले हे जय विजय मैंने अपनी इच्छा से तुम्हारा ज्ञान बदल कर यह शाप ब्राह्मणों से दिलवादिया है नहीं तो सनत्कुमारजी के स्वभाव में क्रोध नहीं था होने वाली बात विना हुये नहीं रहती व सनत्कुमार ऋषीश्वर अपना क्रोध क्षमाकरके तुम्हारे उद्धारका उपाय तीन जन्म बीते कह गये हैं सो तुम्हें तीन बेर दैत्ययोनि में जन्म लेकर भूलोक में अवश्य रहना होगा उस तन में मेरा ध्यान शत्रुभाव से करना मैं सगुण अवतार लेकर तुमको मारूंगा व तीन जन्म उपरान्त हम तुम्हें फिर वैकुण्ठमें बुलालेवेंगे ऐसा कहकर जय व विजयको वैकुण्ठ से गिरा दिया उन्हीं दोनों भाइयों ने वैकुण्ठ से आनकर दिति के पेटमें गर्भवास किया है सो तुमलोग चिन्ता मत करो उनके उत्पन्न होने से थोड़े दिनतक देवतों को दुःख पहुँचेगा फिर नारायणजी अवतार लेकर उन्हें मारडालेंगे व तुम लोगों को ऐसी

सामर्थ्य नहींहै जो उनको मार व जीत सको यह हाल ब्रह्माजी से सुनकर देवता अपने स्थान पर चलेगये व जय विजय दिति के पेट में पालन होने लगे व दिति सदा इस बातकी चिन्ता करके कहती थी ऐसे अधर्मी व दुःखदायी बेटे उत्पन्न होने से मुझे सिवाय दुःख के कुछ सुख नहीं होगा इससे वह न जन्मैं तो अच्छाहै सो परमेश्वरकी इच्छा से सौवर्ष तक वह दोनों दिति के पेटमें रहकर उत्पन्न हुए उन दोनों के जन्मसमय बहुत अशकुन संसार में प्रकट होकर ब्राह्मण व देवतों का कलेजा मारे डरके कांपने लगा व अग्निहोत्रियों की अग्नि जो कई पीढ़ीसे कुण्डमें थी वह बुझ गई व पृथ्वीपर भौंचाल आकर सब लक्षण कलियुग के दिखलाई देने लगे सो ब्रह्माजीने उन दोनों का नाम हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु रक्खा हिरण्याक्ष का शरीर बहुत लम्बा व चौड़ा कई योजन का था जब वह दोनों भाई सयाने भये तब ब्रह्माजीने उनसे कहा कि तुमलोग अपनी माताकी इच्छा से जाकर राज्य करो यह वचन सुनतेही हिरण्याक्ष अपने बलके घमंडसे उन्मत्त होकर गदा हाथमें लिये हुए अकेला घरसे निकला और वह अपने पुरुषार्थ के सामने किसी को कुछ माल नहीं समझता था इसलिये कुछ सेना साथ लेकर पहिले वरुणलोकमें चलागया व वरुणदेवताके द्वारपरजो समुद्रादिक और नदियोंके मालिक हैं खड़ा हुआ व समुद्रका पानी अपनी गदा से पीटने लगा व वरुणदेवताके द्वारपालकों से कहा कि तुमलोग जाकर वरुण देवतासे कहदो कदाचित् वह पुरुषार्थ रखता हो तो आकर हमारे साथ युद्ध करै यह सन्देशा हिरण्याक्षका सुनतेही पहिले वरुणदेवता को क्रोध हुआ फिर ब्रह्माजीका वचन यादकर व अपनी दशा मध्यम देखकर हिरण्याक्षको यह बात कहला भेजी कि आगे हमने बहुत से दैत्यों को लड़ाईमें मारा व जीता था अब हम बूढ़े हुये इस लिये तुझ तरुण दैत्य से नहीं लड़सक्ते तुम्हारे साथ युद्ध करनेवाला सिवाय नारायणजी के दूसरा कोई नहीं है थोड़े दिनों में तेरे ऐसे अधर्मी व पापी के मारनेवास्ते वैकुण्ठनाथ अवतार लेकर तुझे मारेंगे जब हिरण्याक्ष ने सुना कि मेरे लड़ने के वास्ते परमेश्वर का अवतार होगा तब बहुत

प्रसन्न होकर वरुण को कहला भेजा जब तुमने हमसे हार माना तो जो कुछ उत्तम मणि व रत्न तुम्हारे यहां हो सो हमें भेज दो वरुण ने हारमान कर बहुत से रत्न व मणि हिरण्याक्ष को भेज दिये व उससे बोले यह स्थान आपका है चाहो तुम रहो या किसीको देकर मुझे जहां आज्ञा दो वहां जाकर रहूं जब हिरण्याक्षने वरुण को अपने अधीन देखा तब भेंट लेने के उपरान्त उनको वहां अपनी ओर से बसाकर कुबेर देवता के स्थान में गया कुबेरदेवताने भी अपने दिन बुरे देखकर बहुत उत्तम रत्न व मणि उसको भेंट देकर कहा जो कुछ द्रव्य मेरे यहां है उसको अपना जानकर जैसी आज्ञा मुझे दो वैसा करूं हिरण्याक्ष उसेभी अपने वश जानकर यमपुरी में पहुँचा धर्मराज यमपुरी के स्वामीने भी ब्रह्माजीका कहना याद करके उसकी बिनती की व बहुतसी भेंट देकर उसके हाथ से अपना प्राण बचाया जब हिरण्याक्ष ने उसको भी अपने अधीन समझ लिया तब इन्द्रलोक में जाकर ललकारा इन्द्रनेभी मारे डरके राज्यसिंहासन का छत्र व चमर उसे भेंट देकर उसकी आज्ञा अंगीकार की जब हिरण्याक्ष ने देखा कि तीनों लोक में कोई ऐसा नहीं रहा जो मेरा सामना करसकै और मैं उसके साथ युद्ध करके अपनी इच्छा पूरी करूं तब उसने मनमें विचारा कि अब उसको ढूंढ़ना चाहिये जो मेरे साथ युद्ध करे हिरण्याक्ष यह बात विचार कर अपने लड़नेवालेको ढूंढ़ता हुआ आनन्द से चला जाता था राहमें उसने अचानक नारदजी को देख दंडवत् करने उपरान्त हँसकर पूंछा कहो मुनिनाथ तुम तीनों लोकमें घूमते फिरते हो सो कोई शूर वीर हमारे साथ युद्ध करने को बतलाओ नहीं तो तुम्हें मार डालैंगे यह बात सुनकर नारदजी बोले हे कश्यपनन्दन हम संसार में किसी को ऐसा नहीं देखते जो तुम्हारे साथ लड़ सके पर नारायणजी तेरे साथ लड़ सके हैं तब हिरण्याक्षने कहा तुम परमेश्वर का पता कहीं बतलाओ मैं उनसे जाकर युद्ध करूं हमने सुनाथा कि ब्राह्मण व तपस्वियों के स्थान पर वह रहते हैं सो वहां जाकर मैंने बहुतसे ऋषीश्वर व योगीश्वरों को दुःख दिया पर मेरे डरसे वह प्रकट न हुये तब नारदमुनि बोले हे हिरण्याक्ष

इससमय नारायणजी वाराहरूप धरकर पृथ्वी लाने के वास्ते पाताल में गये हैं तुम्हें लड़ना हो तो वहां जावो वह तुम्हारे साथ लड़ेंगे यह बात कहकर नारदजी चले गये॥

अठारहवां अध्याय।

हिरण्याक्ष को वाराह भगवान् का मारना॥

मैत्रेय ऋषीश्वरने कहा हे विदुर हिरण्याक्ष यहहाल नारदजीसे सुनतेही बहुत प्रसन्न होकरगदा हाथमें लिये हुये वाराहजीसे लड़नेकेवास्ते पातालकी ओर चला राहमें क्या देखा कि वाराहजी अपने दांतोंपर पृथ्वी फलके समान लिये हुये चलेआतेहैं उनको देखतेही हिरण्याक्षने हँसकर कहा हे वाराहचोर कहां जाताहै खड़ारह हमारे साथ लड़ाईकर वनमें हमने वाराहको देखाथा यह बड़े आश्चर्यकी बातहै जो पानीमें वह रूप दिखलाई दिया और तुम हमसे नहीं डरते कि हमारे पुरुषोंकी थाती पृथ्वी जो पातालमें रक्खी थी उसे चुराकर लिये जातेहो सो मेरे हाथसे तुम्हारा प्राण किसी तरह नहीं बचेगा व जिस कारण मैं तुमको ढूंढ़ता था वह मनोरथ मेरा पूर्ण हुआ व मैंने पहिचाना कि तुम नारायण हो इसीतरह कई बेर अवतार लेकर तुमने हमारे भाईबन्द दैत्यों को मारा है आज तुम्हें मारकर सब दिनों की कसर लेता हूं तुम्हारे मारने के उपरान्त योगी व ऋषीश्वरों को मारूंगा जिनके होम या यज्ञ करने से तुमको सामर्थ्य होती है यह सब दुर्वचन हिरण्याक्ष का सुनकर वाराहजी इसलिये थोड़ी देर कुछ नहीं बोले कि भले मनुष्यको दुर्वचन कहने से अशुद्ध बात कहनेवाले की आयुर्दा व तेज बल कम होजाता है जब वाराहजी ने जाना कि दुर्वचन कहनेसे तेज व बल हिरण्याक्ष का क्षीण होगया तब पृथ्वी को अपनी माया से पानी पर रखकर हिरण्याक्ष से कहा हे कश्यपनन्दन सत्य है मैं जल का शूकर होकर तेरे ऐसे गांव के कुत्ते को जो अपने को सिंह समझते हैं ढूंढ़ता फिरता हूं व जिसकी मृत्यु निकट पहुँचती है उसको भली व बुरी बात कहने का विचार नहीं रहता व यह पृथ्वी तुम्हारे पुरुषों की थाती मैं तेरे सामने जो तू अपने को बड़ा शूर वीर जानता है लाकर सन्मुख खड़ा

हूँ पहिले तू अपनी गदा जो हाथ में लियेहै मेरे ऊपर चला और जब तेरी गदा कुछ काम नहीं करेगी तब मैं अपनी गदा तुझे मारूंगा व यह तैंने सत्य कहा कि हमने हजारों वार अवतार लेकर दैत्यों को मारकर पृथ्वी का भार उतारा है वही गति तेरी भी होगी यह वचन सुनतेही हिरण्याक्ष ने क्रोध से वाराह भगवान् पर अपनी गदा चलाया सो नारायणजी ने उसकी गदा रोंककर अपनी गदा उसके मारा इसीतरह दोनों तरफ से गदायुद्ध होने लगा जब लड़ते लड़ते थोड़ा सा दिन रहगया तब ब्रह्मा ने आनकर वाराहजीसे विनय किया हे महाप्रभु आप हिरण्याक्षके मारने में किस वास्ते विलम्ब करके उसे खेल खिलाते हैं इस अधर्मी को जल्दी मारकर देवतों का डर छुड़ाना चाहिये सिवाय तुम्हारे दूसरा कोई ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो इसे मारसकै यह वचन ब्रह्मा का सुनतेही वाराह जी ने एक गदा हिरण्याक्ष के ऐसी मारी कि वह गिरपड़ा जब फिर उठ कर उसने अपनी मायासे अँधियारा उत्पन्न किया तब वाराहजीने सुदर्शन चक्रको जिसमें हजार सूर्य के समान प्रकाशहै बुलाकर उसकी माया हर लिया जब हिरण्याक्षने त्रिशूल चलाया तब सुदर्शनचक्रने त्रिशूल उसका काट डाला फिर वाराहजी ने एक तमाचा हिरण्याक्ष के ऐसा मारा कि वह मरकर गिरपड़ा उसके मरतेही देवतों ने प्रसन्न होकर वाराहजी पर फूल वर्षाये व अपना मनोरथ सिद्ध पाकर बाजे बजाये॥

उन्नीसवां अध्याय।

ब्रह्माजी का देवतों समेत वाराह भगवान् के पास आना व उनकी स्तुति करना॥

मैत्रेयजी बोले हे विदुर जब हिरण्याक्ष मारागया तब ब्रह्माने देवतोंसमेत वाराहजी के पास आनकर इसतरह पर स्तुति किया हे परब्रह्म परमेश्वर आपने वास्ते रक्षा करने देवता व ब्राह्मण व यज्ञके अवतार लेकर हिरण्याक्ष अधर्मी दुःख देनेवाले को मारडाला व पृथ्वी को पातालसे लाकर पानी पर स्थिर किया सो अब तुम्हारी कृपासे पृथ्वीपर सब जीव आनन्द से रह कर यज्ञ व पूजा व दान आदि करेंगे हिरण्याक्ष के समय में देवता व पितरों का भाग नहीं मिलता था अब वह लोग अपना अपना अंश यज्ञ

व होम में पाकर आनन्द से तुम्हारा स्मरण करैंगे जब देवतालोग स्तुति कर चुके तब पृथ्वी स्त्रीरूप होकर वाराहजीके सामने आई व उसने हाथ जोड़ कर कहा हे ज्योतिस्स्वरूप आपने दया करके मुझको पाताल से लाकर पानीपर स्थिर किया सब छोटे बड़े संसारी जीव अपने चरण मेरे ऊपर रखतेहैं सो आपने आदर करके अपने दांतों पर उठाया इसलिये मैंने अपने को कृतार्थ जाना किसवास्ते कि तुम्हारे चरणों की छाया सब जगत्पर पड़ती है सो मेरी छाया तुम्हारे शिरपर पड़ी पर मैं एक बात से बहुत डरती हूं कि कलियुगवासी मनुष्य बड़े पापी होके अपना कर्म व धर्म छोड़कर अशुभ कर्म करैंगे व हरिभक्तों के साथ शत्रुता रख कर तुम्हारी भक्ति से विमुख रहैंगे व अपने माता व पिता व भाईबन्द से झगड़ा करके साले व श्वशुर से प्रीति रक्खैंगे व स्त्री अपने पति से प्रीति नहीं रखकर दूसरे पुरुष को चाहैंगी व पुरुष अपनी स्त्री को पालन न करके वेश्या से प्रीति करैंगे व बेटा बाप का मरना विचार कर यह इच्छा रक्खैगा कि जब यह मरै तब धन हमारे हाथ लगकर वेश्यागमन करने या जुवा खेलने वास्ते सुविस्ता हो राजालोग अपना कर्म व धर्म छोड़कर प्रजा का धन लेके उन्हें दुःख देवेंगे व सब मनुष्य केवल अपने खाने व पहिरने व इन्द्रियों को सुखदेनेकी इच्छा रखकर अपने अर्थकी मित्रता रक्खैंगे इसलिये कलियुगवासियों को आपसके विरोध से बड़ा दुःख होगा जब ऐसे अधर्मी मेरे ऊपर अपना चरण रक्खैंगे तब मैं बहुत दुःखी होऊंगी इस बात से मेरी रक्षा आपको करना चाहिये यह वचन सुनकर वाराहजी बोले हे पृथ्वी तू इन बातों से मत डर जब जब अधर्मियों के उत्पन्न होने से तुझको दुःख प्राप्त होगा तब तब हम सगुण अवतार लेकर अधर्मियों को मारके तुझे सुख देवेंगे ऐसा कहकर वाराहजी वैकुण्ठ को पधारे व और सब देवता अपने अपने लोक को गये॥

बीसवां अध्याय।

मैत्रेय ऋषीश्वरका विदुरजीसे जगत्की उत्पत्ति कहना॥

शौनकादिक ऋषीश्वरोंने इतनी कथा सुनकर सूतजीसे पूंछा कि जब

वाराहजी पृथ्वी को पानीपर स्थिरकरके वैकुंठको गये उसके पीछे किसतरह संसारकी रचना हुई व मैत्रेय ऋषीश्वर व विदुरसे क्या संवाद हुआ सूतजीने कहा जब विदुरजी वाराहअवतारकी लीला सुनकर बहुत प्रसन्न हुये तब उन्होंने मैत्रेय ऋषीश्वरसे पूंछा कि महाराज ब्रह्मा ने संसारी जीवोंको किस तरह उत्पन्न किया मैत्रेयजी बोले जब पृथ्वी स्थिर होचुकी तब आदि निरंकारकी माया व इच्छासे पहिले चौबीस तत्त्व प्रकट होकर फिर एक पुरुष यक्ष नाम उत्पन्न हुआ जब उसे भूख व प्यास लगी तब वह कुछ पदार्थ भोजन न पाकर ब्रह्माजीको खानेवास्ते चला जब ब्रह्माजी ने क्रोध करके उसको अपने खानेसे मने किया तब ब्रह्माके क्रोध करने से एक पुरुष तमोगुणी रक्षनाम राक्षस प्रकट हुआ ब्रह्माने उन दोनोंको देखतेही कुछ भय मानकर जीवोंका उत्पन्न करना बन्द करदिया व मन में ऐसा विचारा कि हमारे इस तनसे सृष्टि रचनेमें अधर्मीलोग उत्पन्न होवेंगे जब मैं दूसरा तन धरकर सतोगुणसे जीवोंकी उत्पत्ति करूंगा तब ज्ञानी व धर्मात्मालोग उत्पन्न होंगे ऐसा विचारकर ब्रह्माने वह तन अपना छोड़के दूसरा शरीर धारण किया व अपने पहिले शरीरके दहिने अंगसे स्वायम्भुवमनु नाम एक पुरुष व बायें आधे तनसे शतरूपा नाम स्त्री उत्पन्न करके दोनों का विवाह करदिया जब स्वायम्भुवमनु ने ब्रह्माजी से कहा कि महाराज मुझे क्या आज्ञा होती है तब ब्रह्माने विचारा कि जिस शरीर से स्वायम्भुवमनु व शतरूपा उत्पन्न हुये हैं उस तन से परमेश्वर का तप व स्मरण नहीं किया विना हरिभजन किये धर्मात्मा व ज्ञानी मनुष्य उनसे उत्पन्न नहीं होवेंगे यह बात सोचकर ब्रह्माने स्वायम्भुवमनु व शतरूपासे कहा कि तुमलोग पहिले परमेश्वरका तप व स्मरण करके पीछे से संसारी जीवों की उत्पत्ति करो जिसमें धर्मात्मा मनुष्य उत्पन्न होवें उसीसमय स्वायम्भुवमनु व शतरूपा ब्रह्मा की आज्ञासे वनमें तप करने चलेगये उनके जाने उपरान्त ब्रह्माने भगवान्जी का ध्यान करके उनसे प्रार्थना किया कि हे दीनदयालु मेरा अपराध क्षमा करो व मुझसे संसार रचने में भूल होकर यह कठिन काम नहीं बन पड़ता हो तो उसके उत्पन्न करने की मुझे सामर्थ्य देव

जिसमें तुम्हारी आज्ञानुसार जीवोंकी उत्पत्ति होवे यह बात सुनकर ब्रह्मा जीको ध्यानमें नारायणजी ने ऐसा उपदेश किया हे ब्रह्मा अब तुम्हारा तन शुद्ध हुआ तुम संसारकी रचना करो धर्मात्मा व ज्ञानी मनुष्य उत्पन्न होवेंगे यह वचन वैकुंठनाथका सुनते ही ब्रह्माने प्रसन्न होकर नारायणजी की कृपासे मरीचि व कश्यप व अत्रि व अंगिरा व पुलस्त्य व क्रतु व भृगु व वशिष्ठ व दक्ष व नारद ये दश पुत्र उत्पन्न किये उन दशों ने ब्रह्माजी से पूंछा कि हमें जो आज्ञा हो सो पालन करें ब्रह्माजीने कहा तुमलोग पहिले परमेश्वरका तप करके पीछे से संसारी जीव उत्पन्न करो इस बातमें नारायणजी व हमारी दोनों की प्रसन्नता है यह वचन ब्रह्माका सुनकर नारद व अंगिरा व क्रतु तीन मनुष्यों ने कुछ उत्तर नहीं दिया और भृगु आदि सात बेटे प्रसन्न होकर दशों मनुष्य परमेश्वरका तप करनेवास्ते वन में चलेगये व ब्रह्माके जिस शरीरसे स्वायम्भुवमनु व शतरूपा उत्पन्न हुये थे उस तनकी हड्डी व चमड़ा जो पड़ाथा उसमें से एक अंधियारा प्रकट हुआ उस अंधियारेको यक्ष व रक्षने जो पहिले ब्रह्मासे उत्पन्न हुये थे स्त्री समझकर लेलिया॥

इक्कीसवां अध्याय।

नारायणजी का स्वायम्भुवमनु व शतरूपा व कर्दमऋषीश्वरको दर्शन देकर वरदान देना॥

मैत्रेय ऋषीश्वर बोले हे विदुर जब स्वायम्भुवमनु व शतरूपाने वनमें जाकर दशहजारवर्ष परमेश्वरका तप व ध्यान किया तब वैकुंठनाथने दर्शन देकर उनसे कहा मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं कुछ वरदान मांगो स्वायम्भुवमनु व शतरूपाने परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन पातेही बहुत स्तुति व पूजा करके हाथ जोड़कर कहा हे दीनानाथ अन्तर्यामी हमने संसार उत्पन्न करने व राजगद्दी का सुख भोगने के वास्ते तप किया है सो मैं बहुत भूल गया जो राज्यकी इच्छासे तप किया मुक्ति प्राप्त होने के वास्ते तप व स्मरण करना उचित था नारायणजी ने यह वचन सुनकर कहा हे स्वायम्भुवमनु जो मनोरथ मिलनेवास्ते तुमने तप कियाहै वह वरदान सिवाय उसके और जिस वस्तुकी तुम्हें इच्छाहो वह मुझसे मांगलेव तुम

को दूंगा जब ऐसी दया व कृपा वैकुंठनाथकी स्वायम्भुवमनु व शतरूपाने अपने ऊपर देखी तब हाथ जोड़कर बोले हम चाहते हैं कि तुम ऐसा पुत्र हमारे घर उत्पन्न होवे यह बात सुनकर परब्रह्म परमेश्वरने कहा मेरे समान दूसरा कोई नहीं है जो तुम्हारे यहां उत्पन्न होकर तुम लोगोंकी इच्छा पूर्ण करे इसलिये हम आप अवतार लेकर तुम्हारे नाती होवेंगे ऐसा कह कर नारायणजी अन्तर्धान होगये और स्वायम्भुवमनु व शतरूपाने ब्रह्मा जी के पास आनकर दण्डवत् किया व स्वायम्भुवमनु अपने पिता की आज्ञासे सब पृथ्वी का राज्य करने लगे सो स्वायम्भुवमनु व शतरूपासे दो बेटा उत्तानपाद व प्रियव्रत व तीन कन्या आकूती व देवहूती और प्रसूती नाम उत्पन्न हुईं व उत्तानपादके ध्रुवनाम पुत्र उत्पन्न हुआ व प्रियव्रत पहिले नारदजी के ज्ञान सिखलानेसे विरक्त होगये थे फिर उन्हों ने ब्रह्माजी के समझाने से सातों द्वीपका राज्य किया व स्वायम्भुवमनुने आकूती का विवाह रुचिनाम ऋषीश्वर से कर दिया व ब्रह्माजी के बेटे कर्दम ऋषीश्वरने अपने पिताकी आज्ञासे दशहजार वर्ष परमेश्वरका तप किया व जब नारायणजी ने प्रसन्न होकर दर्शन देने उपरांत उनसे कहा कि तुम वरदान मांगो तब कर्दम ऋषीश्वर दण्डवत् व पूजा स्तुति करके हाथ जोड़कर बोले हे ज्योतिस्स्वरूप अन्तर्यामी मैंने संसार उत्पन्न करने वास्ते तप किया है यह वचन सुनकर वैकुंठनाथ ने कहा कि मुझे पहिले से तुम्हारे मनका हाल मालूमथा सो मैंने तुझे इच्छापूर्वक वरदान दिया सिवाय इसके और जो जो चाहना करोगे वह सब वस्तु तुमको मिलजा- वैंगी व आजके तीसरे दिन स्वायम्भुवमनु तुम्हारे पास आनकर देवहूती अपनी कन्या तुझे विवाह देगा व हम तेरे यहां अवतार धारण करेंगे सो तुम विवाह करने से नाहीं मत करना ऐसा कहने उपरान्त वैकुंठनाथकी आंखों से यह बात समझकर आंसू बहनेलगे देखो कर्दम ऋषीश्वरने केवल विवाह होने वास्ते जो सदा स्थिर नहीं रहता दश हजारवर्ष तप किया यही पछतावा करने से जिस जगह परमेश्वरका आंसू गिरा था वहां बिन्दुसरनाम तीर्थ प्रकट हुआ और वह तालाब आजतक कुरुक्षेत्रके

पास वर्त्तमानहै आंसूगिरने उपरांत वैकुंठनाथने कहा कि जो कोई इस तीर्थ में स्नान करेगा सब पाप उसके छूटकर धर्म की तरफ मन उसका लगेगा यह बात कहकर परब्रह्म परमेश्वर वैकुंठको पधारे व कर्दमजी उनके आगमनकी आशा करनेलगे तीसरे दिन राजा स्वायम्भुवमनु व शतरूपा अपनी स्त्री व देवहूती कन्यासमेत जड़ाऊ रथपर चढ़कर पहिले बिन्दुसरतीर्थ में गये वहां स्नान करने के उपरान्त फिर कर्दम ऋषीश्वरके स्थान पर जाकर उन्हें दण्डवत् किया कर्दमजीने बड़े आदर भावसे उन्हें बैठाय बड़ाई उनकी करने लगे इतनी कथा सुनाकर सूतजीने शौन-कादिक ऋषीश्वरोंसे कहा कि स्वायम्भुवमनु व शतरूपा कदाचित् कर्दम जीका रमणीक स्थान देखनेसे बहुत प्रसन्न हुये जब स्वायम्भुवमनु व शत-रूपाने आपसमें कर्दमजीको देवहूती अपनी कन्या विवाहने वास्ते विचार किया तब स्वायम्भुवमनु कर्दम ऋषीश्वर के सामने खड़े होकर हाथ जोड़के बोले कि महाराज जब नारदजी के मुखसे आपका गुण सुनकर देवहूती मेरी कन्याको तुम्हारे साथ विवाह करने की इच्छा हुई तब उसने अपनी मातासे यह हाल कहा और अपनी स्त्रीसे उसका मनोरथ सुनकर देवहूती समेत तुम्हारे पास आयाहूं सो मेरी कन्या आपकी सेवा में रहैगी यह बात सुनतेही कर्दमजी मनमें बहुत प्रसन्न होकर बोले कि हे राजन् तुम्हारा कहना मुझे अंगीकारहै कदाचित् कोई मनुष्य कुछ वस्तु अपनी प्रसन्नतासे किसीको देवे तो अवश्य उसको लेलेना चाहिये नहीं तो पीछे दुःख होताहै इसलिये मैं आपकी आज्ञासे बाहर नहींहूं पर इस प्रतिज्ञासे कि जब तुम्हारी कन्याके सन्तान उत्पन्न हो लेगी तब गृहस्थी छोड़कर हरिभजन करने चला जाऊंगा स्वायम्भुवमनु ने ऋषीश्वर महाराजका कहना मानलिया व देव-हूती ऐसी सुन्दरीथी कि जिसपर रति कामदेव की स्त्रीको निछावर करडालै॥

बाईसवां अध्याय।

स्वायम्भुवमनुको देवहूती अपनी कन्याका कर्दम ऋषीश्वरसे विवाह करदेना॥

मैत्रेयजीने विदुर से कहा कि जब कर्दम ऋषीश्वर ने देवहूती के साथ विवाह करना अंगीकार किया तब स्वायम्भुवमनुने देवहूती का विवाह

कर्दमजीसे विधिपूर्वक करके कहा महाराज आपको सेना व द्रव्यादिक जिस वस्तुकी चाहना हो सो मैं तुम्हारे यहां पहुँचादूं किसवास्ते कि सब राज्य व धन मेरा ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंका है यह बात सुनतेही कर्दमजी हँसकर बोले कि हे राजन् हमको धन व सेना कुछ न चाहिये जब स्वायम्भुवमनु व शतरूपा अपनी कन्याको कर्दमजीके पास छोड़कर राजमंदिर पर जानेलगे उससमय देवहूतीने बहुत रुदन किया तब राजा व रानी उसे धैर्यदेने उपरान्त कर्दमजीसे बिदा हुये व देवहूती कर्दमजीकी सेवामें रहकर सब काम उनका पहिले बिना कहे करदेतीथी जिसमें किसी बातके वास्ते उनको कहना न पड़ै व राजा स्वायम्भुवमनुने बर्हिष्मती पुरीमें जहांपर वाराहजीके रोम गिरने व कुशा उगने व ऋषीश्वरोंके मंत्र पढ़ने से दैत्य नहीं रहसक्ते थे अपनी राजगद्दी पर जाकर विचार किया कि हमारे पास राज्य व द्रव्य बहुतहै व संसारमें मनुष्यलोग धन अधिक व्यर्थ होने से उसको अपने सुखके वास्ते जो सदा स्थिर नहीं रहता खर्च करते हैं व परलोकका डर नहीं रखते इसलिये मनुष्यको उचितहै कि परमेश्वर जिसको धन देवे उसे वह धन नारायणजी के नामपर शुभ कर्म में खर्च करना चाहिये यह बात विचारकर स्वायम्भुवमनुने हरसाल विधिपूर्वक यज्ञ करना व नित्य प्रातसमय बहुतसी गऊ व स्वर्णादिक ब्राह्मणोंको दान देना आरम्भ किया जब नित्यनेमसे छुट्टी पावें तब परमेश्वरकी कथा व लीला महात्मा व ऋषीश्वरोंसे सुना करें जिससमय कोई ब्राह्मण व महापुरुष न होवें उस समय आप कथा व कीर्त्तन नारायणजी का कहकर हरिचरणों का ध्यान मन में रक्खें इसीतरह इकहत्तर चौकड़ीयुग उन्होंने राज्य किया सो हरिभजन प्रताप से पराक्रम उनका मरते समयतक ज्योंका त्यों बनारहा कोई क्षण उनका बिना याद व चर्चा परमेश्वरके नहीं बीतता था उनके राज्यमें हरिइच्छा से जब प्रजालोग चाहना करते थे तब पानी वर्षकर बारहों महीने सब तरहका फल व फूल वृक्षों में लगारहता था व सब प्रजा आनन्द से रहकर परमेश्वरका भजन व स्मरण किया करते थे स्वप्ने में भी किसी को दुःख नहीं होता था॥

तेईसवां अध्याय।

कर्दमजीका अपने योगबलसे एक विमान बहुत उत्तम प्रकट करना
व उसीमें रहकर देवहूती के साथ विहार करना ॥

मैत्रेय ऋषीश्वर बोले कि हे विदुरजी देवहूती नित्य अपने पतिकी सेवा व टहल में रहकर एकदिन उनके सामने हाथ जोड़े खड़ीथी सो देवहूती के मनमें गृहस्थी का सुख व विलास करनेके वास्ते कुछ चाहना हुई तब कर्दम ऋषीश्वरने जो उसकी सेवा व पातिव्रतधर्म से बहुत प्रसन्न रहते थे अपने तपके प्रताप से जानलिया कि मेरी स्त्री को संसारी सुख भोग करने की इच्छा हुई है यह हाल जानकर मनमें विचार किया देखो इसने राजकन्या होकर आजतक कभी अपने वास्ते कुछ गहना व कपड़ा मुझसे नहीं मांगा इसलिये अब इसकी इच्छा पूर्ण करना चाहिये ऐसा विचारकर कर्दम ऋषीश्वर बोले हे राजकन्या मैं तुझसे बहुत प्रसन्नहूं तुझे जो इच्छा हो सो वरदान मांगले व इस बातका संदेह मत करना कि ये कहांसे पाकर हमको देवेंगे नारायणजी की कृपा से हम सब पदार्थ तुझे देसक्ते हैं यह वचन सुनतेही देवहूती हँसकर बोली कि हे स्वामी आप लोक व परलोक दोनों जगहका सुख देनेवाले हैं जब मैंने आप ऐसा महापति पाया तब कौन वस्तुकी मुझे कमी है मेरे पिताने आपको ऐसा ही महापुरुष व गुणवान् जानकर मुझे तुम्हारे अर्पण किया था एकबेर मुझे तुम्हारे साथ गृहस्थी का संयोग होना बहुतहै सदा भोग व विलास की चाहना करना अच्छा नहीं होता यह बात सुनकर कर्दमजी ने कहा तू संतोष रख मैं तेरी इच्छा पूरी करूंगा यह वचन अपने पति का सुनते ही देवहूती ने मनमें इस बातका शोच किया देखो मेरे पास कुछ गहना व कपड़ा स्थान आदिक संसारी सुख भोग करने योग्य न होकर मेरा शरीर मट्टी व धूर से भराहै किसतरह भोग व विलास होगा कर्दम ऋषीश्वर अन्तर्यामी ने उसके मन का हाल जानकर उसीसमय एक विमान सोनहरा जड़ाऊ बहुत लम्बा व चौड़ा जिसमें चारों तरफ मोतियों की झालर बँधी व मखमली बिछावन बिछे व झाड़ व फानूस लगे थे अपने

योगबलसे प्रकट किया व उस विमानमें अनेकतरहके मकान विलग विलग इन्द्रपुरी के समान बनेथे व अनेकप्रकारके फल व फूल वहां वृक्षोंमें लगे रह कर अनेक रंगके पक्षी उस विमानमें सोहावनी बोली बोलते थे व अच्छी अच्छी बावली व तालाव बने रहकर सब पदार्थ संसारी सुखका उसमें रक्खा था देवहूतीने उस विमान की शोभा देखकर मनमें ऐसा विचार किया कि धूर लगा हुआ मेरा शरीर इस विमान पर बैठने योग्य नहीं है यह संदेह देवहूती के मनका जानकर उसी समय कर्दमजीने अपने योगबलसे एक नारायणकुण्ड जिसमें बहुत निर्मल पानी भरा हुआ व कमल के फूलों पर भ्रमर गूंजरहेथे प्रकट करके देवहूतीसे कहा हे राजकन्या तू इस कुंडमें स्नान कर जब ऋषीश्वरकी आज्ञासे देवहूतीने उस कुण्डमें स्नान किया तब वह दिव्यरूप बहुत सुन्दर देवकन्यासमान बारहवर्षकी अवस्था होकर जड़ाऊ गहना व उत्तम वस्त्र पहिने उसमेंसे बाहर निकलआई व उसके साथ हजार दासीभी बहुत सुन्दर बारहवर्षकी गहना व कपड़ा अच्छा अच्छा पहिने अपने अपने हाथोंमें चमर व पानदान व अतरदान आदिक सब वस्तु लियेहुये उस कुंडमें से बाहर निकलकर बोलीं हे राजकन्या जो आज्ञा हो सो पालन करें उस समय राजकन्या ऐसी सुन्दर मालूम देतीथी कि जिस पर रति कामदेवकी स्त्रीको निछावर कर डालें जब कर्दम ऋषीश्वरने उस चन्द्रमुखी का रूप देखा तब अपने तनको निहारकर मनमें विचार किया कि मुझको भी उचित है कि अपना शरीर देवहूती के प्रसंग योग्य बनाऊं ऐसा विचारकर कर्दमजीने उस कुण्डमें स्नान किया सो वह भी दिव्यरूप अश्विनीकुमारके समान अति सुन्दर सोलहवर्षकी अवस्था होगये जब नारायणजीकी कृपासे दोनों मनुष्य तरुण हुये तब कर्दमजी देवहूतीका हाथ बड़े प्रेमसे पकड़कर उस विमानपर चढ़गये व सब दासीभी उसी विमान में जाकर अपना अपना काम करनेलगीं जो पदार्थ सुख व विलासके वैकुण्ठ व इन्द्रलोकमें रहतेहैं वे सब वस्तु परमेश्वरकी दयासे उस विमानमें कर्दम ऋषीश्वर व देवहूतीके वास्ते वर्तमानथे उस विमान पर बहुत दिनों तक कर्दमजी व देवहूतीने रहकर गृहस्थी का सुख उठाया जिस समय

चित्त उनका कहीं जाने के वास्ते चाहताथा उसी समय वह विमान पवन के समान उड़ता हुआ बीच इन्द्रलोक व वरुणलोक व कुबेरलोक व गन्धर्व लोक आदिक व मन्दराचल पहाड़ पर एक क्षण में चला जाताथा और उन दोनों के विहार करते समय देवकन्या व देवताआदि उस विमानकी सुन्दरताई व रचना देखकर बड़ाई भाग्य कर्दमजी व देवहूती की किया करतेथे जब इसी तरह कर्दम ऋषीश्वरको दशहजार वर्ष देवहूती से भोग व विलास करते हुये बीतकर नव कन्या उत्पन्न हुईं तब कर्दमजीने चाहा म संसारी भोग व विलास छोड़कर फिर तप व ध्यान नारायणजीका करूं ऐसा विचारकर देवहूतीसे कहा कि हे राजकन्या तुम कहो तो मैं परमेश्वर का भजन करने चला जाऊं अब मेरा चित्त गृहस्थी में नहीं लगता यह वचन सुनतेही देवहूती हाथ जोड़कर बोली महाराज हरिभजन करना बहुत अच्छी बातहै और मैं भी आजतक बीच सुख व विलास संसारी झूठे व्यवहार के भूलकर तुम्हारी सेवा व टहल करनेसे विमुख रही मुझे उचित था कि आपके चरणोंका ध्यान धरकर मुक्ति पाती सो संसारी सुख भोगने से नव कन्या जो उत्पन्न हुई हैं इनके विवाह करनेका शोच मुझे लगाहै इन्हें विवाहकर मैं भी बन्धनसे छूटती तो तुम्हारे साथ सेवा व टहल करने वास्ते चलती सो इन सब कन्याओं का विवाह करलीजिये तब मुझे भी साथ लेके वनमें चलकर हरिभजन कीजिये तुम्हारे चले जाने उपरान्त इनके विवाह करनेवास्ते कहां वर पाऊंगी अबतक मैंने अपना सुख व विलास समझकर तुम्हारी सेवा किया जो आपको परमेश्वर भाव जानकर तुम्हारी टहल करती तो परलोक अपना बनाकर आवागमन से छूटजाती मैंने अपने बापके यहां महात्मालोगों से यह बात सुनीथी कि जिसने मनुष्यतन पाकर हरिभजन व सत्संग नहीं किया व जो कोई मनुष्य तन पाके संसारी मायामोह में फँसकर भ्रष्ट हुआ उसका जन्म लेना अकार्थ समझना चाहिये परमेश्वरकी मायाने मुझे ठगलिया जो तुम्हारे ऐसे पति महापुरुष पानेपर भी मैंने हरिभजन नहीं किया संसारमें जो मनुष्य विना भोग लगाये शालग्राम व ठाकुरजीके भोजन करते हैं उन्हें जीतेहुये मृतक

के समान जानना चाहिये यह बात सुनकर कर्दम ऋषीश्वरने मनमें विचार किया कि परमेश्वरने मेरे यहां अवतार लेनेवास्ते वरदान दियाथा सो अभीतक जन्म नहीं लिया गृहस्थी छोड़ देने में यह बात रहजावेगी। कर्दम ऋषीश्वर यह वचन परमेश्वरका याद करके अपनी स्त्री से बोले कि हे राजकन्या तू अपने मनमें किसी बातका सन्देह मत कर तेरे गर्भ से नारायणजी अवतार लेवेंगे ऐसा कहकर कर्दम ऋषीश्वरने देवहूती के साथ भोग किया सो हरिइच्छा से उसीसमय उसके गर्भ रहा॥

चौबीसवां अध्याय।

कपिलदेव मुनिका देवहूती के गर्भ से अवतार लेना व कर्दम ऋषीश्वरका वनमें तप करने वास्ते चले जाना॥

मैत्रेयजीने कहा हे विदुर जब देवहूती के पेटमें कपिलदेव मुनिने गर्भ वास किया तब कर्दम ऋषीश्वर उसके मुखारविन्दका प्रकाश चमकता हुआ देखकर बोले हे राजकन्या तेरे गर्भ में परमेश्वर अवतार लेनेवास्ते आये हैं सो तू किसी बातकी चिन्ता मत कर अब हम तप करनेवास्ते जावेंगे तुम मेरी प्रीति कम करो यह वचन सुनतेही देवहूती बहुत प्रसन्न होकर बोली हे प्राणनाथ मैं इस बातका किस तरह विश्वास जानूं जिस समय देवहूती अपने पतिसे यह वचन कहरहीथी उसी समय ब्रह्मादिक देवताओं ने वहां आनकर देवहूती को निश्चय कराने वास्ते कहा हे राजकन्या तेरा जप व तप व नेम व धर्म सब सफल हुआ अब तेरे गर्भसे परब्रह्म परमेश्वर कपिलदेव मुनि नाम अवतार लेकर तुम्हारा यश व कीर्ति संसार में बढ़ावेंगे व उनके उत्पन्न होनेसे तुम्हारा नाम सदा संसार में स्थिर रहेगा व तुम्हारे हृदयमें जो अज्ञानताकी काटि जमी है उसको ज्ञानरूपी अग्निसे वह जलादेवेंगे तुम उनको अपना बेटा मत समझना वे आचारियों को सांख्य-योग ज्ञान पढ़ानेवास्ते अवतार लेते हैं जब धर्मकी हानि होजाती है तब वह संसार में अवतार लेकर धर्मकी बढ़ती व पाप का नाश करते हैं यह वचन कहने उपरान्त देवतालोग देवहूती व कर्दम ऋषीश्वरकी परिक्रमा लेकर अपने अपने लोकमें चलेगये व देवहूतीको हरिमन्दिर विचारकर

उसके दर्शन करने से बहुत आनन्द हुये जब दश महीने बीतनेउपरान्त कपिलदेव मुनि ने अवतार धारण किया तब कर्मद ऋषीश्वर सब लक्षण परमेश्वरका उनके अंगमें देखकर बहुत प्रसन्न हुये उस समय देवताओंने आनन्दकी दुन्दुभी बजाकर आकाशसे फूल बर्षाये व गन्धर्वोंने नारायणजीका यश गाया व अप्सरालोग आकाशमें आकर अपने अपने विमानोंपर नाचनेलगीं व तीनोंलोकमें मंगलाचार होकर चारों दिशामें प्रकाश होगया जब कर्दम ऋषीश्वरने उन्हें पूर्णब्रह्म जाना तब उनके सामने हाथ जोड़कर इस तरह पर स्तुति किया हे आदिपुरुष भगवान् तुम्हारा नाम लेने व दर्शन करनेसे संसारी जीव भवसागर पार उतरजाते हैं व आपका दर्शन बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वरों को जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता मेरा बड़ा भाग्य था जो आपने मेरे यहां बेटा होकर अवतार लिया कदाचित् अबभी मैं मुक्तिपदवीको न पहुँचूं तो मुझे बड़ा अभागी समझना चाहिये और हमने देवताओंके मुखसे सुना था कि आपने ज्ञान उपदेश करनेवास्ते अवतार धारण किया है सो दयाकरके मुझे ऐसा ज्ञान सिखलाइये कि जिस ज्ञानके प्रतापसे यह तन जो मट्टीका पुतलाहै सो छोड़ कर भवसागर पार उतरजाऊं जिस समय कर्दमजी यह स्तुति कर रहेथे उसी समय फिर ब्रह्माजी व सनक, सनन्दन, सनातन व सनत्कुमार ने वहां आनकर कपिलदेवजी से हाथ जोड़कर बिनती की महाराज जो बात आपने मुखारविन्दसे कहाथा वैसा करके अपना दर्शन हमलोगोंको दिया संसारमें कपिलदेव मुनि तुम्हारा नाम प्रसिद्ध होगा फिर ब्रह्माजीने कर्दमजी से कहा तुम अपनी नव कन्याओंका विवाह नव ऋषीश्वरों से करदेव सो कर्दमजी व देवहूतीने ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार कला नाम कन्याकी शादी मरीचि ऋषीश्वरसे व अनसूयाका विवाह अत्रि मुनिसे व श्रद्धाकी शादी अंगिरा ऋषीश्वरसे व हविका विवाह पुलस्त्य मुनिसे व गती नाम कन्याकी शादी पुलह ऋषीश्वरसे व योग्यका विवाह क्रतु ऋषीश्वरसे व ख्याति नाम कन्याकी शादी भृगु ऋषीश्वरसे व अरुन्धती का विवाह वशिष्ठ ऋषीश्वरसे व शान्ति नाम कन्याकी शादी अथर्वण

ऋषीश्वरसे करदिया सो सब यज्ञकी क्रिया अथर्वणवेदके प्रमाण से होती हैं विवाह करने उपरान्त ऋषीश्वरलोग अपनी अपनी स्त्री समेत कर्दमजी व देवहूतीसे बिदा होकर आनन्दपूर्वक अपने अपने स्थानपर गये व ब्रह्माजी व सनकादिक ऋषीश्वर कपिलदेव मुनिको दण्डवत् करके चले गये व कर्दमजीने अपनी कन्याओंको विदा करके कपिलदेवमुनिसे विनय किया हे महाप्रभु संसारमें यह जीव बारम्बार जन्म व मरणमें फँसा रहकर मुक्ति होनेकी इच्छा नहीं रखता व अनेक तरहका दुःख उठाकर इस अधर्मी दुःख देनेवालेको नहीं छोड़ता इसका क्या भेद है और आपसे यह पूंछताहूं कि कौन उपाय करनेमें यह मन जो बीच मायामोह कुल परिवार व संसारी सुखमें फँसकर नष्ट होरहाहै इस मायारूपी जालसे छूट सक्ताहै यह वचन कर्दमजीका सुनकर कपिलदेव मुनिने कहा हे ऋषीश्वर तुम्हारी इच्छा पूरी हुई जब मनुष्य संसारमें जन्म लेताहै तब तीन कर्ज देवऋण पितृऋण ऋषिऋण उसपर रहते हैं सो तुम यज्ञकरके देवऋण व वेद पढ़के ऋषिऋण व सन्तान उत्पन्न करके पितृऋण तीनों कर्जसे उऋण हुये अब हरिभजन करना तुम्हारे वास्ते बहुत अच्छी बात है और जो तुम मन अपना संसारसे विरक्त किया चाहतेहो सो धीरे धीरे साधन करनेसे संसारी प्रीति छूटजाती है सो तुम इस तनको झूठा जानो जिसतरह पानी में बुल्ला उठताहै उसमें मट्टी व पानी व आग व हवा व आकाश कोई वस्तु नहीं होती उसीतरह इस तनको निषिद्ध समझकर इसका अहंकार मत करो किसवास्ते कि प्राण निकलने उपरान्त यह शरीर किसी काम में नहीं आता इसलिये शरीरसे प्रीति करना न चाहिये प्रेम उस वस्तुसे करना होताहै जो सर्वदा स्थिर रहे और उसका नाश न होवे और जिसके प्रकाश रहने से इस तनमें चलने व सुनने व देखने व खाने व पीनेकी सामर्थ्य है उसका ध्यान करो और वह चमत्कार सब जीवों के तनमें मेरी शक्ति समझकर किसी वस्तुसे प्रीति मत लगाओ व मेरे प्रकाश को प्रतिदिन अपने शरीर में ध्यान धरकर देखो तब तुम्हारा चित्त शुद्ध होजावेगा और हे पिता यह सब ज्ञान संसारी जीव भूलकर केवल

अपने तन व धन व परिवारपर अहंकार करते हैं इसलिये मैंने धर्म व ज्ञान प्रसिद्ध करनेवास्ते यह अवतार धारण कियाहै व हे ऋषीश्वर काम व क्रोध व लोभ व मोह व मद व मत्सर छः शत्रु मनुष्यके शरीरमें रहकर यही सब संसारी जीवको भुलावा देकर नष्ट करते हैं व उन्हींके मदमें मनुष्य अन्धा होकर अधर्म करताहै और जो उनके वशमें न होकर उन्हें अपने अधीन रक्खे वह मनुष्य वन में बसै चाहै घर रहै उसे जीवन्मुक्त समझना चाहिये व जबतक मनुष्य अपने शरीर व स्त्री व पुत्र व परिवार को अपना जानताहै तबतक उसको मृत्यु व सब किसीसे डरहै जब उसे मेरी आज्ञानुसार ज्ञान प्राप्त हुआ तब वह कालादिक सबसे बेडर रहताहै इतनी कथा सुनाकर मैत्रेय ऋषीश्वरने विदुरजीसे कहा यह ज्ञान सुनते ही कर्दमजीने मन अपना विरक्त करके कपिलदेवजी से विनय किया महाराज अब मुझे कहिये तो वनमें जाकर तुम्हारे चरणोंका ध्यान करूं यहां रहनेसे मेरा मन संसारी माया में फँसारहैगा और आप यही ज्ञान अपनी माताको भी सुनाकर भवसागर पार उतार दीजियेगा यह बात सुनकर कपिलदेवजीने कहा हे पिता तुम वनमें जाकर हमारे स्वरूपका ध्यान धरना व साधु व महात्माकी संगति जिनकी मण्डली में सदा मेरी कथा व कीर्त्तन का स्मरण व चर्चा रहता हैं करना उनके सत्संग व मेरे ध्यानके प्रतापसे फिर मन तुम्हारा संसारी मायाकी तरफ नहीं दौड़ैगा॥

पचीसवां अध्याय।

कर्दमजीका वनमें जाना व बीच ध्यान परमेश्वरके अपना तन त्याग करना॥

मैत्रेयजी ने कहा हे विदुर यह वचन कपिलदेवजी का सुनतेही कर्दम ऋषीश्वर उन्हें दंडवत् व परिक्रमा करके वनमें चलेगये और जाते समय देवहूती से कहा तुझे जिस बातका सन्देहहो वह कपिलदेव मुनि से पूछ लेना यह वचन सुनकर देवहूती ऋषीश्वर महाराजके चरणोंपर गिरने उपरांत हाथ जोड़कर बोली आपने मुझे कपिलदेव मुनिको सौंपदिया इसलिये मैं साथ चलने से लाचार हूं व कर्दमजी वनमें जाकर बीच तप व ध्यान नारायणजी के लीन हुये व सब जीव व संसारी वस्तु में प्रकाश

परमेश्वरका ऊखके रसके समानहै कि कोई गांठ मिठाई व रससे खाली नहीं होती एकसा समझकर तन अपना साथ योगाभ्यासके त्याग दिया व उनके जानेसे देवहूतीको बड़ा शोक व दुःख हुआ पर ब्रह्माजीका वचन याद करके ज्ञानकी दृष्टिसे चित्तको धैर्य दिया व कपिलदेवजीके सामने हाथ जोड़कर कहा मैंने देवताओं से सुनाथा कि आदिपुरुष भगवान् यह संसाररूपी वृक्ष जो मायामोह के फल व फूलसे लदाहै इसके काटनेवालेहैं सो अब मुझे चाहना राजसीकी नहीं रही इसलिये मुझको अपनी शरण जानिके दया व कृपासे ऐसा ज्ञान सिखलाओ जिसमें अज्ञानता मेरी छूटजावे संसार में अज्ञान अँधेरेके समान समझना चाहिये जिसतरह मनुष्य अंधियारे में राह भूल कर ठोकर लगनेसे गड़हेमें गिरकर चोट खाताहै उसी तरह अज्ञान मनुष्य संसारी माया मोह में लिपटकर नष्ट होतेहैं व ज्ञानका दीपक हाथमें रखनेवाला मनुष्य अच्छीतरह अपनी कामनाके स्थानपर पहुँचकर भवसागर पार उतरजाता है व बीच गड़हे काम व क्रोध व लोभ व अहंकारके नहीं गिरता सो मैं चाहतीहूं कि आप इस प्रकृतिका हाल जिससे सारा संसार उत्पन्न होकर जिस तरह प्रकाश परमात्मा पुरुषका सब जीवोंके तनमें रहता है कृपाकरके वर्णन कीजिये यह वचन सुनतेही कपिलदेवजी बोले हे माता मैं इस हालके पूछनेसे बहुत प्रसन्न हुआ ऐसी बात सुननेकी इच्छा मुझसे योगी व ऋषीश्वर लोग रखते हैं व संसारी माया जालसे छूटनेके वास्ते मनुष्यको सिवाय ज्ञान प्राप्त होनेके दूसरी बात उत्तम नहीं है व माता व पिता व भाई व बेटा व मित्र उसीको कहना व समझना चाहिये जो ज्ञानकी बात बतलावे और जो माता व पिता आदिक अपने परिवारको ज्ञान नहीं सिखलाते उन्हें हित न जानकर शत्रु जानना उचितहै तुम तो आप ज्ञानीहो तुम्हारे भवसागर पार उतरने में सन्देह नहींहै पर तुम यह बात निश्चय करके जानो कि मेरी दया व कृपा हुये विना किसीको ज्ञान नहीं मिलता नहीं तो जो कोई चाहता ज्ञानी होजाता और हम ज्ञानका हाल तुमसे कहेंगे उसे जो मनुष्य साथ प्रीतिके सुनेगा वह कृतार्थ होकर भवसागर पार उतर जावैगा संसारमें ज्ञानीलोग

मुक्ति पावतेहैं व अज्ञानी मनुष्य मुक्तिपदवी पर नहीं पहुँचता व हे माता जो लोग काम व क्रोध व लोभ व अहङ्कार व मद व मत्सरके वश होकर संसारी मायामोहमें फँसजाते हैं उन्हें अवश्य नरक भोगना पड़ता है और यह मन उनकी संगति पाकर अशुभ कर्म करनेसे चौरासीलाख योनिमें जन्म लेके अनेक तरहका दुःख भोगताहै और जो मनुष्य उनको अपने वशमें रक्खै वह अपने तनसे उस पुरुषको पृथक् देखसक्ताहै व ज्ञान प्राप्त हुये विना काम व क्रोध आदिक वशमें नहीं होसक्ते व जो लोग विरक्त होकर वैराग्य धारणकरके भक्तियोगका अभ्यास रखतेहैं उनके वशमें भी काम व क्रोधादिक होजातेहैं व जो लोग मेरे चरणोंकी भक्ति सच्चे मनसे करते हैं उनकी मुक्ति होनेके वास्ते वह आनन्दकी राहहै सो तुम अपने पति व लड़कियोंके जानेकी कुछ चिन्ता मत करो गृहस्थीमें मन लगाना यही संसारकी फाँसी है मनुष्य जितनी प्रीति कुल परिवार व धनादिक झूठे व्यवहारकी करताहै जो उतनी प्रीति साधु व महात्मासे करै तो मुक्ति पदवीपर पहुँचजावे हे माता मनुष्यका तन कुछ देवतासे कम नहीं होता पर ज्ञानी होना चाहिये ज्ञानवान् मनुष्य देवतों से अच्छे होतेहैं उनकी बराबरी देवता नहीं करसक्ते व भक्तियोगकी पदवी यज्ञ व दान व तीर्थ व व्रतादिक सब धर्मोंसे उत्तम समझना चाहिये जबतक संसारी तृष्णा नहीं छूटती तबतक भक्तियोग मिलना कठिनहै व ज्ञान प्राप्त होनेवास्ते सत्संग चाहिये सो विना कृपा मेरी सन्त व महात्माकी संगति नहीं मिलती यह बात सुनतेही देवहूती प्रसन्न होकर इस इच्छासे चारों तरफ देखने लगी कि वह साधु व सन्त कैसे होतेहैं मुझे मिलैं तो उनका सत्संग करके भवसागर पार उतर जाऊं कपिलदेवजीने उसका यह हाल देखकर कहा हे माता साधु व सन्त व ज्ञानी के लक्षण हम तुमसे कहतेहैं सुनो उनको किसीके दुर्वचन कहनेसे क्रोध नहीं होता निन्दा व स्तुति करना दोनों उनके निकट बराबरहैं किसवास्ते कि वह सब तनमें परमेश्वरका प्रकाश एक सा देखतेहैं व दुःखी मनुष्यको देखकर उनके हृदयमें दया आती है व सब जीवोंके साथ मित्रता रखकर किसीसे शत्रुता नहीं करते व दिनरात हरिचरणोंमें ध्यान

अपना लगा कर मेरी कथा व कीर्त्तन सुननेका प्रेम उनको आठोंपहर बना रहताहै व खाने व पहिरने आदिक संसारी कामको अपना किया नहीं समझते सब बात भली व बुरी ऊपर इच्छा परमेश्वरके जानतेहैं व सुख व दुःखको एकसा समझकर मेरे मिलनेकी इच्छासे अपना घरदुआर कुल परिवार छोड़कर जिसजगह मेरी कथा व कीर्त्तनका स्मरण व चर्चा रहताहै वहां बड़े आनन्दसे रहते हैं और कथाके सुननेसे उनको ज्ञान प्राप्त होकर भक्ति उत्पन्न होतीहै व भक्ति होनेसे मैं उनको संसारी माया जालसे विरक्त करके उन्हें मेरा स्वरूप अपने तनमें ज्ञानकी आंखसे दिखलाई देता है व उनका मन मेरे चरणोंमें लगारहनेसे बरसात व धूप व जाड़ा उनको कुछ सताने नहीं सक्ता ऐसे सन्तोंकी संगति करनेवास्ते मुझे सदा इच्छा बनी रहतीहै पर वह साधु व सन्त ऐसे समदर्शी होवें जो सब जीव पशु व पक्षी आदिकमें परमेश्वरका चमत्कार एकसा समझकर भीतर व बाहर अपना एक तरहपर रक्खें ऐसे ज्ञानियोंकी मुक्ति होती है व काल व सूर्य व चन्द्रमा व यमराज व अग्नि व पानी व हवा आदिक सब मेरे अधीन रहकर विना आज्ञा कुछ काम नहीं करसक्ते व जो मेरी शरणमें आता है उसके ऊपर कुछ वश किसीका नहीं चलता यह वचन कपिलदेवजीका सुनके देवहूती ने कहा महाराज मुझ स्त्रीको यह ज्ञान प्राप्त होना बहुत कठिनहै अपनी भक्ति व पूजाकी सहज राह मुझे बतलाकर प्रकृतिका हाल कहिये यह बात सुन-तेही कपिलदेव मुनि बोले हे माता पहिले तुम प्रकृतिका हाल जो शरीर कहलाता है सुनो यही सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण तीनों मिलकर जो एक जगह रहते हैं उसे प्रकृतिका मूल जानकर मायाकी उस जड़को डालियां समझना चाहिये व चौबीस तत्त्व उन शाखोंके पत्ते हैं उसीसे सब जीवोंका तन बनकर उत्पत्ति संसारकी होती है व तुम आत्माको जिसे बोलता पुरुष कहते हैं इन चौबीस तत्त्वों से पृथक् जानो किस वास्ते कि वह आत्मा सदा एकरूप रहकर घटने व बढ़ने व जन्म लेने व मरने से रहित है व चौबीस तत्त्व जिनसे शरीर तैयार होता है सदा बनते व बिगड़ते रहते हैं जो मनुष्य अपने तन व इन्द्रियों के सुखको अपना

जानकर उससे प्रीति रखता है उसको अज्ञानी व जो मनुष्य अपने शरीर में आत्माको तनसे सदा बिलग जानता है उसे ज्ञानी समझना चाहिये व इसी चौबीस तत्त्वसे देवता व मनुष्य व जड़ व चैतन्यादिक सब जीवों की उत्पत्ति होती है इसलिये परमेश्वरको सबका मालिक व उत्पन्न करने वाला जानते रहना उचित है सो हे माता तुम अपने तन में आत्मा को चौबीस तत्त्व से पृथक् जानो तब तुम्हें ज्ञान प्राप्त होगा ॥

छब्बीसवां अध्याय।

कपिलदेवजीको प्रकृति का हाल कहना जिससे सब जीवोंका तन बनता है ॥

कपिलदेव मुनि बोले हे माता मैं चौबीस तत्त्वोंका लक्षण बिलग बिलग तुमसे कहताहूं जिनके जाननेसे आत्मा व शरीरका भेद पृथक् पृथक् मालूमहो सुनो जो प्रकाश नारायणजीका सब जीवोंके तनमें रहताहै उसीको आत्मा बोलता पुरुष कहते हैं उसका नाश कभी नहीं होता और वही पुरुष सब जीवोंका पालन करताहै उसका चमत्कार इसतरह बीच तन जीवोंके है जिसतरह कई बर्तन पानीसे भरकर धूप में धरदेव तो उन बर्तनों में सूर्यकी छाया पड़नेसे दूसरे सूर्य दिखलाई देते हैं जब वह बर्तन तोड़डालो तब फिर वह सूर्य उसमें नहीं देखपड़ते व उस बर्तन टूटने से सूर्य का नाश नहीं होकर वह प्रकाश फिर सूर्यमें मिलजाता है उसी तरह आत्मा का हालभी समझना चाहिये जिसको यह ज्ञान प्राप्त हुआ वह मनुष्य संसारी माया में नहीं फँसता सिवाय इसके जिसतरह काठमें अग्नि व तिलमें तेल होकर दिखलाई नहीं देता उसी तरह वह आत्माभी बीच तनके दृष्टि नहीं पड़ता पर ज्ञानकी आंखसे उसको अलग समझना चाहिये किसवास्ते कि जबतक वह बोलता पुरुष तनमें रहता है तबतक उसका संग पाकर यह शरीर उसीकी सामर्थ्यसे जितने काम चलने व बोलने व खाने व पीने व इन्द्रियों को सुख देनेके हैं सब काम करता है पर उस सुख का भोग उठानेवाला उसी आत्मा पुरुषको जो छोटा रूप प्रकाश परमेश्वरका अँगूठेके समान सब शरीरमें रहताहै समझना चाहिये किसवास्ते कि जब वह आत्मापुरुष शरीरसे बाहर निकलकर बिलग हो

जाताहै तब वह तन मृतक होकर सिवाय गल व सड़जाने के फिर उस शरीरसे कुछ काम नहीं होसक्ता इसी बातको जो प्रसिद्ध है विचारकर चौबीस तत्त्वसे आत्मा को पृथक् जानना चाहिये इसलिये जो लोग ज्ञानी हैं वह आत्मा पुरुषको अविनाशी व शरीरका नाश जानकर इस शरीर से प्रीति नहीं रखते व प्रकृतिका रूप पहिले अच्छीतरह मालूम नहीं होता जब सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण उसमें मिलजाते हैं तब उसका स्वरूप प्रकट होता है व परमेश्वर का छोटा रूप शरीरमें रहनेवाला विना योगाभ्यास कियें व ज्ञान प्राप्त हुये किसीको दिखलाई नहीं देता और वही पुरुष दूसरा कालरूप बनकर बाहर रहताहै उसीके जानने वास्ते यह सब यज्ञ व तप व दान व धर्म संसारमें बने हैं हे माता जिसने उस पुरुष को पहिंचानकर अपना मालिक व उत्पन्न करनेवाला जाना वह सब यज्ञ व तप आदिक शुभकर्म करचुका विना जाने उसके सब सुकर्म व्यर्थ होते हैं उसका जानना कुछ कठिन नहींहै वह सहजमें भक्ति व प्रेम करनेसे पहिंचाने जाते हैं सो तुम भक्तिकरके उस पुरुषको जानो फिर तुम्हें कोई दूसरी बात करनेके वास्ते प्रयोजन न रहकर संसारी शोच तुम्हारा छूटजावेगा सो मैं चारतरहकी भक्ति सात्त्विकी व राजसी व तामसी व नवधा तुमसे कहताहूं उसका हाल मन लगाकर सुनो परमेश्वरके मिलनेवास्ते सात्त्विकी भक्ति जलके समान निर्मलहै जिसमें सिवाय प्राप्त होने मुक्ति के दूसरी कामना नहीं रहती व राजसी भक्ति वास्ते मिलने स्त्री व द्रव्य व पुत्रादिक संसारी सुखके समझो व तामसी भक्ति इसवास्ते है जिसमें शत्रु मेरा मरजावे व नवधा भक्ति करनेवाले संसारी सुख व मुक्तिआदि किसी वस्तुकी चाहना नहीं रखते इस तरहकी भक्ति मुझे बहुत प्यारी मालूम होतीहै व भक्ति उसको कहते हैं कि मेरे चरणकमल का ध्यान जो अति सुन्दर व कोमलहै बड़ी प्रीति व सच्चे मनसे हृदयमें रक्खे व आठों पहर मेरे नामका स्मरण करै व पूजासमय मुझे नहीं भुलाकर हाथों से मेरी सेवा व पूजा व पैरों से तीर्थयात्रा किया करै और जो लोग सात्त्विकी व राजसी व तामसी भक्ति करते हैं मैं उनकी इच्छा व कामना भी पूरी करदेताहूं जिसमें परिश्रम

उनका व्यर्थ न जावे पर जो मनुष्य विना इच्छा नवधा भक्ति मेरी करता है उससे मैं बहुत लज्जित व प्रसन्न रहताहूं कि कौन वस्तु इसको देकर उसके बदलेसे उऋण होवें हे माता तुम नवधा भक्ति मेरी करो मुक्तिपदवी पर पहुँचोगी पर जो तुम अपनेको यह जानतीहो कि मैं राजा स्वायम्भुव-मनु व शतरूपाकी बेटी व कर्दमजी की स्त्री व राजा प्रियव्रत व उत्तान-पादकी बहिनहूं यह शरीरका नाता सब झूठा जानकर हरिभक्त व साधु व सन्तोंसे नाता लगावो व सब इन्द्रियोंका जो स्वाद व सुखहै उसकी चाह-ना परमेश्वरको अर्पण किये विना मत करो जब इसतरह तुम साधना करोगी तब तुम्हारे हृदयमें उस आदिपुरुषका रूप तुमको आपसे दिखाई देगा व हे माता यह ज्ञान उस मनुष्यको प्राप्त होसक्ताहै जो अपने धर्मपर स्थिर रहकर ज्ञानियोंका सत्संग रक्खे व जिस कामका फल बुराहै वह कर्म न करे व जो कुछ प्रारब्धानुसार उसे मिले उसपर संतोष रखकर अ-धिक लोभ न बढ़ावे व पेटभर न खाय जिसमें परमेश्वरका भजन व स्मरण करतेसमय आलस्य न आवे व जिस जगह तीर्थ स्थान व ज्ञानियोंका सत्संग अच्छाहो वहांपर रहै व जहां संगति अच्छी न हो वहां न रहै व परमात्माको अपने शरीर व सब जीवों में एकसा देखकर भूख व प्यास व दुःख व सुखको बराबर समझै ऐसे मनुष्यको जीवन्मुक्त कहतेहैं व जबतक ऐसा ज्ञान न प्राप्तहो तबतक अपने वर्ण व आश्रमके अनुसार धर्म व कर्म करता रहै उसके करनेसे धीरे धीरे ज्ञान प्राप्त होजाता है ॥

सत्ताईसवां अध्याय।

कपिलदेवजी का सांख्ययोग ज्ञान देवहूती से कहना ॥

कपिलदेवजी बोले हे देवहूती अब मैं सांख्ययोग ज्ञान तुमसे कहताहूं चित्त लगाकर सुनो पर तुम इस ज्ञानको बहुत अच्छा जानकर दूसरे किसीसे मत कहना यह ज्ञान जल्दी सब मनुष्योंको नहीं मिलता और संसारी व्यवहार तुम झूठा जानकर कभी सत्य मत समझना कदाचित् तुमको यह सन्देह हो कि जब संसारी व्यवहार सब झूठा है तो संसारमें जो यज्ञ व तप आ-दिक धर्म व पापकी बात मनुष्यलोग करते हैं वे भी झूठी होंगी सो पा

व पुण्यकी बात सत्य मानकर उसे झूठा कभी मत समझो जिस तरह कोई मनुष्य किसी स्त्रीसे जागते समय मिलनेकी चाहना रखकर उसी ध्यानमें सोजावे व स्वप्नमें उसी स्त्रीसे भोग करके वीर्य उसका गिरपड़े तो भोग करना उसका झूठा व वीर्यका गिरना सच्चा होताहै उसी तरह यह संसार झूठा होकर जो पाप व पुण्य मनुष्यलोग करते हैं उसके बदले सुख व दुःख अवश्य भोगना पड़ता है इस बातका एक इतिहास मैं कहताहूं सुनो एक मनुष्य लकड़ीका बोझ वनसे काटकर अपने शिरपर लिये हुये बेचने के वास्ते जाताथा जब वह धूपकी गर्मी से राहमें थकगया तब वृक्षकी छायामें बोझा अपना शिरसे उतारिकै एक कुआं पर पानी पीने उपरान्त बैठकर सुस्ताने लगा उससमय उसने क्या देखा कि एक सवार घोड़ा दौड़ाये उस कुआं पर पानी पीनेवास्ते चला आताहै उसे देखकर लकड़ी बेचनेवालेने मनमें कहा हम को भी घोड़ा मिलता तो सवार होकर चलते बोझा उठाने व पैदल चलनेसे पैर जलता है इसी विचारमें वह कुयेंकी जगत पर सोगया स्वप्नमें उसको घोड़ा मिला जब वह उसपर सवार होकर कुदाने लगा तब घोड़ेपरसे गिरपड़ा उसी स्वप्नावस्थामें सोता हुआ वह उछला तो बीच कुयेंके गिरपड़ा व कुयेंमें गिरनेसे हाथ व पैर उसका टूट गया सो हे माता उसको घोड़ा मिलना झूठा व कुयेंमें गिरनेमें चोट लगनी सत्य हुई इसीतरह संसारी सुख झूठा समझो पर मनुष्यको पाप करनेसे दंड अवश्य मिलताहै जब उस लकड़िहारे को निकालनेवास्ते लोगोंने उपाय किया तब उसने कुयेंमें से कहा मैं बीच स्वप्नके घोड़ेपर चढ़ाथा उस का यह फल पाया जो लोग नित्य घोड़ेपर चढ़ते हैं वह लोग न मालूम कैसे गहिरे कुयेंमें गिरकर दंड पावैंगे हे देवहूती जो मनुष्य संसारमें सवारी गहना व कपड़ा व स्त्री व मकानादिका सुख पाकर यह समझताहै कि यह सब सुख मैं अपने पराक्रम व कमाईसे भोग करताहूं व परमेश्वरकी दया व कृपासे वह सुख मिलना नहीं समझता उसे अवश्य दुःख भोगना पड़ेगा व जो मनुष्य उस सुखको परमेश्वरकी इच्छा व दयासे प्राप्त होना जानकर उसमें अधिक स्नेह नहीं रखता व अपने वर्ण व शरीरका धर्म

समझकर उस द्रव्यके अहंकार में किसी जीवको दुःख नहीं देता उसे दंड नहीं मिलता यह ज्ञान सुनकर देवहूती बोली महाराज आप कहगये हैं कि इस शरीरसे उस आदिपुरुषको पृथक् समझो सो यह बड़ी कठिन बात है आंखसे देखे विना उस पुरुषको प्रकृतिसे किस तरह बिलग जानूं वह पुरुष शरीरसे इसतरह मिलाहै जिसतरह दूधमें घी व अग्निमें प्रकाश रहता है इसका हाल पृथक् करके वर्णन कीजिये यह वचन सुनकर कपिलदेव मुनि बोले हे माता यह बात ज्ञानकी राह व आंखोंसेभी देखकर विचार करना चाहिये किसवास्ते कि जब मनुष्य मरजाताहै तब हाथ व पांव आदिक सब इन्द्रियां उसकी बनी रहती हैं परन्तु जब वह आत्मापुरुष परमेश्वरका चमत्कार शरीरसे निकल जाताहै तब उस तनसे कुछ काम नहीं होसक्ता यह बात प्रत्यक्षमें आंखोंसे देखकर जानना चाहिये कि उस आत्मापुरुष के न रहनेसे यह हाल शरीरका होजाताहै सो तुम यह गति मनुष्यकी देखकर आत्मापुरुषको शरीरसे पृथक् समझो व जिसतरह वेश्या-विषयी मनुष्योंके पास द्रव्य देख कर अनेक रंगसे उसका धन व धर्म दोनों लेलेती है उसी तरहसे मेरी माया धर्मात्मा पुरुषके पास जाकर अनेक रंग से उसको छलदेती है पर जो लोग मेरे चरणोंकी शरण में रहते हैं उनपर उस मायाका कुछ वश नहीं चलता किसवास्ते कि गंगाजी मेरे पांव का धोवनहैं उनमें स्नान करनेसे सब पाप मनुष्योंके छूटकर मन उनका शुद्ध होजाताहै व जो लोग साक्षात् मेरे चरणोंका ध्यान अन्तःकरणमें रखते हैं वह लोग फिर संसारी मायामोहमें नहीं फँसते जिसने पारस पत्थर पाया वह कांचके झूठे नग पर चाहना नहीं रखता व संसारमें सब इच्छा व कामना उसकी पूरी होकर मरनेउपरांत परलोक का सुख मिलता है जिस तरह बेटाके भोजन करनेसे बापका पेट नहीं भरता व द्रव्य दूसरेके पास रक्खा हुआ समयपर काम नहीं आता उसीतरह शरीरको आत्मासे अलग जाने विना ज्ञान नहीं प्राप्त होता व ऐसा ज्ञान जाननेवाले जीवन्मुक्त होते हैं यह सब ज्ञान सुनकर देवहूती बोली हे महाप्रभो मैंने आपके ज्ञान सिखलाने के अनुसार आत्माको प्रकृतिसे बिलग समझा पर तत्काल इस

मनका संसारी जालसे विरक्त होना व नारायणजी के चरणों में ध्यान लगना बहुत कठिन है जिस दिनसे तुम्हारे पिता तप करनेवास्ते गये हैं उसी दिनसे एक क्षण मुझे नहीं भूलकर मन मेरा उनके याद व ध्यानमें लगा रहता है कोई ऐसा उपाय बतलाइये जिससे सहजमें ज्ञान व मुक्ति प्राप्त होवै यह बात सुनकर कपिलदेवजी बोले हे माता हम सहज राह भक्तियोगकी तुमसे कहते हैं सुनो कदाचित् कोई परमेश्वरके मिलनेवास्ते मन अपना धीरे धीरे लगावे तो उसकी भी मुक्ति होती है जिसतरह कोई मनुष्य इच्छा जाने जगन्नाथजी या मथुरा या किसी दूसरे तीर्थकी करके घरके बाहर निकलकर एक एक पैग नित्य रस्ता चलै तो वह एकदिन ठिकानेपर पहुँचजाता है व जो रास्ता न चले तो किसतरह पहुँचेगा व जब राहमें चलतेसमय बटोही थककर किसीसे पूंछे कि ठिकाना टिकनेका कितनी दूर है जो स्थान टिकनेका निकट बतला देवै तो थकनेपरभी उसे सामर्थ्य चलनेकी होकर ठिकानेपर पहुँचजाता है व जगह टिकनेकी दूर बतलावने से आगे न जाकर उसी जगह टिकरहताहै उसीतरह हम तुमसे कहते हैं कि भक्तियोग पूजा व पाठ व व्रत व नेम व परमेश्वरकी कथा व कीर्तन सुनन सहज राहहै जो लोग चित्त लगाकर यह सब कर्म करैं वह भी मुक्ति पासक्तेहैं पर पूजा कई प्रकारकी होकर एक तामसी पूजाहै जिस-से यह प्रयोजन रखते हैं कि शत्रु मेरा मरजावै व अनेक मनुष्य वास्ते दिखलावने लोगों के देरतक माला फेरकर पूजा करते हैं जिसके देखनेसे संसारीलोग हमारा विश्वास करैं दूसरी राजसी पूजाहै जिसमें नारायणजी के नाम पर मनुष्योंसे कपड़ा व रुपया व मिठाई व सुगन्धादिक लेकर उसको अपने खर्चमें लाते हैं व मूर्ति शालग्राम व लक्ष्मीनारायणजी वास्ते प्राप्तहोने संसारी सुखके पुजाते हैं व दूसरेके घर जो ठाकुर व शालग्राम होते हैं उनसे भक्ति व प्रीति नहीं रखते व तीसरी सात्विकी भक्ति व पूजा मुक्ति चाहनेवास्ते करते हैं चौथी निर्गुण पूजा वहहै कि जिसमें मुक्तिकी भी इच्छा न रक्खै व जो यज्ञ व पूजा व दान व व्रत आदिक शुभ कर्म करै सब परमेश्वरके नाम पर अर्पण करदे व उसके बदलेमें कोई कामना

न चाहे और मेरी कथा व कीर्तन सुनते समय करुणाके स्थानपर रोदेवें व हर्षकी जगह प्रसन्न होकर मेरे ध्यानमें मग्न रहे उन भक्तोंसे मैं बहुत लज्जित रहकर यह विचार करताहूं कि कौनसी वस्तु उन्हें दूं जिसमें वह मुझसे प्रसन्न होवें और मैं उस सेवाके बदले उऋण होजाऊं इस तरहके भक्त मेरे जीवन्मुक्त हैं व चारों वर्णमें ब्राह्मण वेद पढ़ा हुआ मुझे बहुत प्यारा मालूम होताहै पर जो ब्राह्मण परमेश्वरमें प्रीति नहीं रखता उस ब्राह्मण से मैं शूद्र हरिभक्त व साधुलक्षणको अधिक प्यार करताहूं सो हे माता तुम मेरे चरणोंमें ध्यान लगाकर नारायणनामका स्मरण करो भवसागर पार उतरकर आवागमनसे छूटजावोगी और जो कोई परमेश्वरकी भक्ति व पूजासे विमुख रहकर उनका नाम कभी नहीं लेता वह मरनेउपरान्त बहुत दिनोंतक नरकमें दुःख पाकर बीचयोनि पशुआदिक के जन्म पाताहै व बहुत दिन उस योनिमें रहकर फिर मनुष्यका तन उसे मिलता है हे माता परमेश्वरकी भक्ति व ज्ञान प्राप्त होने व भवसागर पार उतरनेवास्ते केवल मनुष्यका चोला है जिसने इस तनमें परमेश्वरको नहीं जाना वह पीछे बहुत पछितावेगा॥

अट्ठाईसवां अध्याय।

कपिलदेवजी का देवहूती से मनुष्यकी उत्पत्ति कहना जिस दिनसे गर्भ में आनकर फिर मरता है॥

मैत्रेयजी बोले हे विदुर इतनी कथा सुनकर देवहूतीने कहा महाराज जो मनुष्य परमेश्वरसे विमुखहैं उनका मरने उपरान्त क्या हाल होगा कपिलदेवजी बोले हे माता संसारीलोग कुल परिवार व घर द्रव्यके जाल में फँसकर आयुर्दा अपनी व्यर्थ नष्ट करते हैं व मनुष्य तरुणाई में कमाई करके जिन लोगोंको खिलाता है बुढ़ाई समय वही लोग शत्रु होकर उसे दुःख देते हैं सो मैं हाल उत्पत्ति होने मनुष्यका जन्मसे मरण तक तुमसे कहताहूं सुनो जिस रोज स्त्रीको परमेश्वरकी कृपासे गर्भ रहना होता है उस दिन भोग करने के समय स्त्री व पुरुष दोनोंका वीर्य मिलकर खौलता है पांचवें दिन उसमें से बुल्ले के समान उठकर दशवें दिन बैरके समान

गांठि बँधिजाती है पन्द्रहवें दिन वह गांठि मांसका पिंड होकर कुछ गोला सा लम्बा होजाता है एक महीने में हाथ व पैर व शिरका चिह्न बनताहै व दूसरे महीनेमें अंगुलियां व तीसरे महीनेमें चमड़ा व हड्डी व चौथे महीने में शरीर पर रोयें व आंख कान आदि सब इन्द्रियोंके आकार बनजातेहैं व पांचवें महीने नारायणजीकी कृपासे जीवात्माका प्रकाश उसमें होकर उस को भूख व प्यास लगती है व छठवें महीनेमें शिर नीचे व पैर ऊपर रहनेके कारणसे मन उसका घबड़ाताहै व सातवें महीनेमें उसको अपने कई जन्म व आठवें महीनेमें सौजन्म पीछे का हाल याद होकर ज्ञान प्राप्त होने से वह मालूम करताहै कि पिछले जन्मों में हमने ऐसा कर्म करने से वैसा दुःख व सुख पायाथा यह बात समझकर वह परमेश्वरका ध्यान करके उनसे बिनती करताहै महाराज मैंने पिछले जन्म संसारी सुख व विलास व स्त्री व पुत्रके मोहमें फँसे रहने से नष्ट होकर जन्म व मरणसे छुट्टी नहीं पाया व संत व महात्मासे सत्संग नहीं किया इसलिये उलटा लटककर दुःख पाताहूं इस समय मेरे ऊपर सहायता व कृपा करके इस नरककुंडसे मुझे बाहर निकालिये तो अब मैं तन व मनसे बीच तप व सेवा तुम्हारीमें तत्पर रहूंगा पर ऐसी दया कीजिये कि जिसमें यह ज्ञान मुझे न भूले व बीच संसारके ऐसा काम करूं जिसमें जन्म व मरणसे छूटजाऊं जब नवां या दशवां महीना हुआ तब वायु जिसे प्रसूत कहते हैं जोर करके उसको बाहर गिरादेती है व बीच गर्भके कन्या बायें तरफ व पुत्र दाहिने कोखमें रहकर जब पृथ्वीपर बाहर गिरके रोता है तब परमेश्वरकी मायासे पहिले जन्मोंका ज्ञान उसे भूलकर याद नहीं रहता सो वह बालक छोटी अवस्था में भूख व प्यास लगनेसे दुःख पाकर सिवाय रोनेके बोल नहीं सक्ता व बिछौनेपर मल व मूत्र करने से जबतक कोई उसको नहीं उठाता तब तक उसी में पड़ा रहकर कष्ट पाताहै व माता व पिता उसके मल व मूत्रको लत्ता या पानीसे पोंछने व धोने उपरान्त उसे गोदमें लेकर प्रसन्न होतेहैं जब उस अवस्थासे सयाना होकर पांच वर्षका होताहै तब उसके माता व पिता विद्या सीखने वास्ते गुरुको सौंप देते हैं वहां भी विद्या सीखनेमें मार

पीट खानेसे दुःख पाकर अपनी इच्छापूर्वक खेलने नहीं पाता जब सोलह वर्षकी अवस्थामें तरुण होकर अच्छा अच्छा गहना व कपड़ा पहिनताहै तब अभिमानसे काम व क्रोध व मोहमें फँसकर अपनी बराबर दूसरे किसी को नहीं समझता कदाचित् दरिद्री व कंगाल हुआ तो दूसरेको अच्छा गहना व कपड़ा पहिने व उत्तम पदार्थ खाते देखकर डाहकी राहसे शोच करताहै व विवाह होनेउपरान्त स्त्री घर में आनेसे बीच चिन्ता कमाने व खानेके दिनरात विकल रहकर जन्म अपना व्यर्थ गँवाताहै व जो मनुष्य पहिले जन्ममें कुछ दान व धर्म नहीं किये रहता वह मनुष्य अधिक कङ्गाल होकर आठोंपहर पेट भरनेवास्ते चिन्ता व दुःख उठाताहै जब लड़के बाले उत्पन्न होते हैं तब उनकी प्रीतिमें फँसकर अनेक तरह झूठ सत्य बोलने से कमाई करके उनको पालन करता है व जबतक सामर्थ्य रहती है तबतक स्त्री व लड़कोंको अपना समझकर उनको पालन करनेवास्ते अपने प्राण पर सब तरहका दुःख उठाताहै और अपने कुल व परिवार में किसी मनुष्य के मरनेसे इतना रोताहै जिसका वर्णन नहीं होसक्ता व अपनी स्त्रीके वश में रहकर माता व पिताको कठोर वचन कहनेसे दुःख देता है व परलोक का डर नहीं रखता व जैसा मनुष्य स्त्रीके मोहमें फँसकर नष्ट होताहै वैसा दूसरी राह उसके परलोक बिगाड़नेवास्ते नहीं है ॥

दो० अहिविष तो काटे चढ़ै यह चितवत चढ़िजाय । ज्ञान ध्यान अरु धर्म को जरामूलसे खाय ॥
नारि पराई स्वप्न में भोगत अति सुख पाय । धर्मरु काम गँवायके आप रहै खिसिआय ॥

इसलिये जो मनुष्य अपना भला चाहे तो स्त्री के स्नेह में न फँसे सो हे माता तुम भी स्त्री हो मेरे कहेसे बुरा मत मानना धर्मशास्त्र के अनुसार यह ज्ञान तुमसे कहताहूँ और जब तरुणाई बीतकर बुढ़ाई आतीहै तब आंखोंसे कम देखकर कानोंसे सुनाई नहीं देता व सामर्थ्य कमाई करनेकी नहीं रहती तब घरमें पड़ा हुआ लम्बी लम्बी श्वास लेकर पछताता व कहताहै अब मैं अपने लड़कोंको किसतरह पालन करूंगा और जो कंगाल या दरिद्री हुआ तो वह उस समय खाने व पहिरने विना बहुत दुःख पाता है व जिसके बूढ़े तरुण कमाई करनेवाले हुये वह लोग अपनी स्त्रीसमेत उस बूढ़ेको शत्रु

के समान समझते हैं उस अवस्थामें जब वह बूढ़ा अपने टहल व कामको किसीसे कुछ कहताहै तब उसे घुड़कके दुर्वचन कहते हैं उस समय वह मनमें बड़ा खेद करके कहताहै देखो अब मैं बूढ़ा होकर कमाने योग्य नहीं रहा इसी वास्ते यह लोग जिनको जन्म भर मैंने पालन किया मुझे बे-आदर जानकर खाने पीनेकी सुधिभी समय पर नहीं लेते जिस तरह बैल जब बूढ़ा होकर बोझ उठानेकी सामर्थ्य नहीं रखता तब बनियें लोग नाथ उसकी काटकर वनमें छोड़ आते हैं ॥

दो० सींग झड़े अरु खुर घिसे पीठ न बोझा लेय । ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांधि भुस देय ॥

हे माता उस समय वह बूढ़ा यह सब दुःख देखकर परमेश्वरसे अपनी मृत्यु मांगता है पर आयुर्दा सम्पूर्ण होने विना मृत्यु नहीं आती व उसके बेटा व पतोहू पहिले आप भोजन करके पीछेसे भिक्षुकों की तरह कुछ उस कोभी खाने वास्ते देदेते हैं जब बुढ़ाई समय कुछ रोगादिक उसे होताहै तब कोई मनुष्य घरवाला उसकी सेवा न करके दो घड़ी उसके पास बैठनेका भी साथी नहीं होता वह बिचारा अकेला पड़ा रहकर जब किसीको भोजन व पानी मांगनेवास्ते बुलाताहै तब जान बूझकर चुप होजाते हैं व उसकी बातका उत्तर न देकर दुर्वचन उसे कहते हैं यह सब कष्ट व दुःख उठाकर जब उसके मरने का काल निकट पहुँचता है तब कफ व पित्त व वातसे गला उसका बन्द होकर शुद्ध श्वासभी नहीं निकलती उस समय अधर्म व पाप करनेवालोंको यमदूत कहते हैं कि जिनके लिये तैंने यह सब पाप बटोरा था उनको अब अपनी रक्षा करनेवास्ते बुलावो जब वह बोल बन्द होजाने से उसका उत्तर देने व किसी को बुला नहीं सक्ता तब अपनी करणी याद करके आंखोंसे सबको देखकर रोदेता है जब यमदूत अपना भयानक रूप दिखाकर धमकाते हैं तब उनके डरसे उसका मल व मूत्र निकलजाता है व सिवाय उसके दूसरेको वह दूत दिखलाई नहीं देते उस समय कुल परिवार वाले अपनी झूठी प्रीति जग दिखलाने वास्ते प्रकट करके रोते हैं इसलिये मन उसका और अधिक घबराता है व उस रोने व पीटनेके शब्दमें यमदूत उसे और बहुत दुःख देते हैं उससमय परमेश्वरका नाम व कथा व कीर्तन

उसको सुनाना व गंगाजल व तुलसी व शालग्रामजीका चरणामृत उसके मुखमें डालना व धूर चरण साधु व वैष्णवकी उसके शरीरपर लगाना उचित है सो किसीसे नहीं बनपड़ता केवल जाल व मकरका रोना जानते हैं ॥

उन्तीसवां अध्याय ।

यमदूतों का अधर्मी जीवोंको यमराजके पास लेजाना ॥

मैत्रेयजीने कहा हे विदुर इतनी कथा सुनकर देवहूतीने पूछा हे महाप्रभो उस मनुष्यके मरने उपरान्त क्या हाल होताहै सो वर्णन कीजिये कपिलदेव मुनि बोले हे माता यह सब दुःख उठाने उपरान्त यमदूतलोग उस जीवको कि मरने पीछे अंगूठे प्रमाण शरीर उसका बना रहकर सब इंद्रियों की शक्ति उसमें होती है अपनी फांसीसे बांधकर लोहेके मुद्गरोंसे मारते हुये यमपुरीमें जो मृत्युलोकसे निन्नानवे हजार योजनपर है यमराज के पास लेजातेहैं उस समय राहमें वह जीव भूख व प्यास लगने व न मिलने दाना व पानी अपने कियेहुये पापोंको स्मरण करके बहुत पछताता है और रास्ते में पृथ्वी आगके समान जलती हुई मिलती है जब वह उस धरतीपर नंगे पैर व नंगे शिर व नंगे शरीर चलनेसे थककर कहीं सुस्ताने को चाहताहै या राहमें अन्धकार रहने से चल नहीं सक्ता तब यमदूत उस को मुद्गरोंसे मारकर दम नहीं लेने देते उस समय वह जीव मृतकके समान अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ता है जिसतरह यहां संसार में राजा लोग कुकर्म करनेवालोंको दण्ड देते हैं उसी तरह वहांभी पाप करनेवाला मनुष्य राह में शासना पाकर परमेश्वरकी मायासे उस अंगूठेभर शरीरको अपना पहिला तन समझताहै व उस समय बहुत दुःखी होकर अपने कुल परिवारवाले व नौकरोंको याद करके पीछे फिरकर देखताहै कि इस महादुःख में कोई मेरी सहायता करनेवास्ते आता है या नहीं जब उसे वहांपर कुल परिवारवाला कोई नहीं दिखलाई देता तब वह बहुत सा पछताने व रोने उपरान्त कहताहै देखो जिनके पालनवास्ते यह सब पाप बटोरा था उनमें से कोई मनुष्य इस समय मेरी सहायता नहीं करता यह बात स्मरण करके उस जीवको बड़ा खेद होताहै पर उससमय सिवाय पछतानेके कुछ काम

नहीं करता व राह में सांप व बिच्छू आदिक अनेकतरहके जीव रहकर उसे काटते हैं जब इसीतरह बहुत सा दुःख देतेहुये यमदूतलोग उस मनुष्यको वैतरणी नदी में जहां मल व मूत्र व रक्त व पीब व कीड़े व बाल व नख व हड्डी व सड़ा मांस भरा हुआ चार कोशका फांट बहताहै चार घड़ीमें ले जाकर डाल देते हैं तब वह जीव उस नदीमें कीड़ोंके काटने व ठोकर मारने व मांस नोचने गिद्धों से बहुत दुःख पाकर अतिविलाप करके कहता है जो कोई मुझे इस नदीसे पार करता उसका मैं बड़ा यश मानता यह बात सुनकर यमदूत लोग अपनी गदा उसे मारते हैं यह सब दुःख उठाने उपरान्त यह जीव वैतरणीपार उतर कर जब चार घड़ी में यमराजके पास पहुँचताहै तब धर्मराजकी आज्ञासे चित्रगुप्त उसके कर्मोंका कागज देखकर जितने दिन जिस नरक भोगनेका दण्ड देना उचित होता है वहां उसे भेज देते हैं उस नरकमें जाकर वह बहुत दुःख उठाताहै व अवधि पूर्ण होने उपरान्त फिर वह जीव नरकसे निकलकर अशुद्ध व कुरूप जीवकी योनिमें जन्म पाता है व सदा रोगी रहकर कभी सुख नहीं पाता इसीतरह चौरासी लाख योनिमें भ्रमकर फिर उसे मनुष्यका तन मिलताहै सो हे माता यह चैतन्य चोला मनुष्यका मिलना सहज नहीं होता व रौरव आदि अट्ठाईस नरकहैं उसका हाल पांचवें स्कन्धमें आवेगा ॥

तीसवां अध्याय।

कपिलदेवजीका देवहूतीसे वर्णन करना कि यह पाप करनेसे मरने उपरान्त ऐसा दण्ड पाता है ॥

कपिलदेवजी बोले हे माता जो पाप करनेसे मनुष्य यमपुरीको जाकर नरक भोगते हैं उन पापोंके दंड पावनेका हाल तुमसे विलग विलग कहताहूं सुनो जो कोई किसी का धन बरजोरी लेलेता है उसे यमदूत बहुत ऊंचे पहाड़पर चढ़ाकर नीचे पत्थरकी चट्टानपर गिरा देते हैं सो उसका अंग अंग भंग होजाताहै व बड़े बड़े गिद्ध उसका मांस खाते व रौरव नाम जीव जोंकके समान लोहू पीने उपरान्त उससे कहते हैं कि जितना धन तुम ने दूसरेका लियाहै उतने कल्पभर तुम्हारी यही दशा होगी यह बात सुन कर वह जीव दुःख पानेसे बहुतसा पछताके शोच करताहै पर प्राण उसका

नहीं निकलता व जो मनुष्य अच्छे भोजन व कपड़ा बनाकर केवल आप खाता व पहिनताहै व अपने परिवार व साथवालोंको न देकर साधु व सन्त की सेवा नहीं करता उसको वहां बड़ी भूख मालूम होतीहै तब यमदूत उसीके तनका मांस नोचने उपरांत उसे खानेवास्ते देकर कहते हैं जिस तनका तुमने पालन कियाथा उसीको खाव व जो कोई सन्त व महात्माको दुर्वचन कहकर उन्हें टेढ़ी आंखसे देखताहै उसकी आंखें गिद्ध अपनी चोंच से फोड़ने उपरांत उसका मांस व शिरकी गूदी ठोकरोंसे निकाल देतेहैं व जो मनुष्य या हाकिम किसीको विना अपराध दंड देताहै उसे दो पत्थर की चट्टानमें रखकर कोल्हूके समान पेरतेहैं व जो कोई भोजनमें किसीको विष देता या आग लगावताहै उनको बहुत ऊंचे वृक्षपर जिसमें तलवारके समान पत्तेहैं चढ़ाकर ऊपरसे छोड़ देते हैं तब शरीर उनका कटकर टुकड़े टुकड़े होजाताहै व जो मनुष्य परस्त्रीगमन करता है उसके बदन से लोहे की स्त्री बनवाकर आगमें लाल करने उपरान्त लपटा देते हैं व जो कोई दूसरे की थाती बेईमानी से पचा लेता है उसको आगके समान जलती हुई पृथ्वीपर लोटाने व गर्म गर्म तेल शरीरपर छिड़काने उपरांत जलते हुये तेलके कड़ाहे में डाल देते हैं तिस परभी प्राण उसका नहीं निकलता व जो मनुष्य मच्छड़ आदिक को मारकर जीवहिंसा करता है उसको लालाभक्ष नरकमें जो पीब व मुँहके लारसे भराहै डालकर पानीकी जगह वही पिलवाते हैं व जो कोई न्याय व पंचायत व गवाहीमें पक्ष करके झूठ बोलता है उसको बहुत गहिरे अँधियारे कुयेंमें जो सांप व बिच्छू से भरा रहता है बारम्बार डालते व निकालते हैं सो सांप व बिच्छू के काटने से वह बहुत दुःख पाता है हे माता इसीतरह जो जैसा पाप करते हैं वैसा दण्ड उनको वहां मिलता है ॥

इकतीसवां अध्याय।

कपिलदेवजीका देवहूती से यह बात कहना कि नरक भोगने के उपरान्त जीव का क्या हाल होता है ॥

कपिलदेवजीने कहा हे माता जो लोग कभी परमेश्वरका नाम न

लेकर कुकर्म के सिवाय अच्छा काम कुछ नहीं करते उन्हीं मनुष्यों का वह गति होकर फिर वह पशुपक्षी आदिकका तन पाते हैं इसी तरह चौरासी लाख योनि में जन्म पाकर फिर उनको मनुष्यका तन मिलताहै पर वह लोग काने व कुबड़े व अंधे व रोगी व कुरूप व दरिद्री होकर संसारमें सब तरहका दुःख उठावते हैं व जो मनुष्य जगत्में सुन्दर व धर्मात्मा व हरि-भक्त व नीतिमान् व धनीपात्र दिखलाई दे उसे समझना चाहिये कि इसने स्वर्गसे आनकर मृत्युलोकमें जन्म लिया है हे माता यह दोनों बातें प्रत्यक्ष देखकर स्वर्ग व नरकसे आनेवालोंका हाल अच्छीतरह संसारमें ज्ञानी मनुष्यको मालूम होसक्ताहै व जिस मनुष्यके पाप व पुण्य दोनों रहते हैं वह जीव अपने कर्मका दण्ड भोगकर फिर मनुष्यका तन पाताहै व जिसका केवल पुण्य होकर पाप नहीं रहता वह जीव मरने उपरांत देवता व गन्धर्व का तन पाकर देवलोक व स्वर्गमें सुख भोग करताहै व हे माता यह जीव देवता या मनुष्य या कुत्ता व बिल्ली व शूकर आदिक जिस तनमें जन्म पाता है परमेश्वरकी मायासे उसी योनिमें सदा रहनेवास्ते इच्छा रखकर प्रसन्न रहताहै व मन उसका विना कृपा व दया परमेश्वरकी संसारसे विरक्त नहीं होता व जिस शरीरको अपना जानकर पालन करता है वह तन उस का स्थिर नहीं रहता सतोगुण व रजोगुण व तमोगुणका तीन तरह पर स्वभाव होकर जिसे रजोगुण अधिक रहताहै वह लोग राजसी कर्म करके सत्यलोक में जाते हैं और तमोगुणके अधिक रहने से पाप करनेवाला मनुष्य पातालमें नरक के बीच पड़ताहै व सतोगुणकी राह शुभ कर्म करने वाले मनुष्य देवलोकमें पहुँचते हैं व हे माता सब जीवोंकी गति तीन तरह पर जान कर जप व तप व दानादिक शुभ कर्म जो हैं उनको भी राजसी व तामसी व सात्त्विकी समझो जिसका जैसा स्वभाव होता है उसी बातमें मन उसका लगकर वैसा कर्म वह लोग करते हैं और यह जीव अपने स्वभावानुसार कर्म करके बारम्बार संसारमें जन्म लेकर दुःख व सुख भोगताहै व आवागमनसे रहित नहीं होता जिसतरह कुयेंसे पानी भरनेवास्ते एक रहँट चरखीका बनाकर उसमें मेटियोंका हार ऊपर से पानीतक पहिनाके

उस रहँट को घुमावते हैं तो एक मेटी ऊपरकी पानी गिरजानेसे खाली होकर दूसरी मेटियों में नीचे पानी भरजाताहै उसी तरह इस जीवकी गति समझना चाहिये कि एक तन से निकलकर अपने कर्मोंका फल शुभ या अशुभ जैसा किया हो भोगने उपरान्त दूसरे शरीरमें जाता है व जिस तन में जैसा कर्म करै उसीके अनुसार दूसरा चोला पाता यह बात सुनकर देवहूती ने कहा महाराज जब यही हाल है तो जीवका छुटकारा इस संसार से किसी तरह नहीं होसक्ता तब कपिलदेवजी बोले हे माता जन्म व मरण से छूटनेका उपाय हम तुमसे कहते हैं सुनो सत्य बोलना आचार से रहना सब जीवोंकी रक्षा करना विना प्रयोजन अधिक न बकना बुद्धिको नष्ट न करना कुसंगति व बुरे कामों से अलग रहना सदा चित्त प्रसन्न रखना जितना परमेश्वर देवैं उस पर सन्तोष करना किसीके पास द्रव्य देखकर डाह नहीं करना शुभकर्म करके संसारमें यश उठाना अयश किसी बातका नहीं लेना किसीपर क्रोध न करना धर्मसे कमाई करके अपना कालक्षेप करना व परमेश्वरके चरणोंमें प्रीति रखना नारायणजी को अपना मालिक उत्पन्न करने व जीवका देनेवाला जानते रहना किसी जीवको हिंसा करके दुःख न देना परनारीसे प्रसंग नहीं करना साधु व सन्त व ब्राह्मणोंकी सेवा करते रहना परमेश्वर की कथा व कीर्तन सुनना परमेश्वरके नामका भजन करना बड़ोंकी सेवामें रहकर कभी उनका अनादर न करना सब बात भली व बुरीको ऊपर इच्छा परमेश्वरके समझना अपने कर्म व धर्मपर वर्तमान रहना हे माता जो जीव मनुष्य तन पाकर इसतरहके कर्म करैं वह जीव आवागमनसे छूट कर भवसागर पार उतर जावेंगे पर यह सब गुण विना सत्संग किये व कथा पुराण सुने प्राप्त नहीं होते इसवास्ते मनुष्यको महात्मा व ज्ञानी लोगोंसे प्रेम रखना बहुत उचित है जितना सत्संग उनका करै उतना अधिकगुण उसको होगा अधर्मी लोगोंकी संगति करनेमें कदाचित् पहिलेसेभी कोई गुण उसमें होगा तो वह जाता रहेगा व संसार में परस्त्रीगामी व जुवांरी व लोभी व चोर व मद्यप व चुगुल व झूठ बोलने व अपना शरीर पालन करनेवाले होकर जो सुखके वास्ते अपना धर्म छोड़ देते हैं उन

लोगोंकी संगति कभी न करना चाहिये उन मनुष्योंसे एकक्षण संगति करनेमें बुद्धि भ्रष्ट होजाती है बनना चित्तका बहुत कठिन होकर भ्रष्ट होते उसको विलम्ब नहीं लगता व लोग परस्त्रीसे प्रसंग करते हैं उनके ज्ञान व धर्म दोनों नष्ट हो जाते हैं इसलिये अपनी बेटी व बहिनके पास भी अकेलेमें बैठना न चाहिये किसवास्ते कि मनुष्यका चित्त सब क्षण एकतरह का नहीं रहता व कामदेव का मद ऐसा बुराहै जो मनुष्यका ज्ञान हर कर उससे बहुत पाप कराता है एक समय ब्रह्माजी सब संसार व चारों वेदके उत्पन्न करनेवाले जो सदा ज्ञानी रहकर वेद के अनुसार धर्म व अधर्म का विचार रखते हैं सरस्वती नाम अपनी कन्या के पास अकेले में बैठे थे सो परमेश्वरकी मायासे उस कन्याकी सुन्दरताई देखकर ब्रह्माके मनमें पाप समाया जब ब्रह्माजी कामदेवके नशेमें मतवाले होकर अपनी बेटी से भोग करनेके वास्ते चले तब वह कन्या धर्मरूपी उनका यह हाल देखतेही बहुत लज्जित होकर हरिणीरूप धारण करके वहांसे भागी व ब्रह्माभी हरिण का रूप धरकर उसके पीछे दौड़े उस समय सनकादिक उनके बेटोंने जो परमेश्वर का अवतार हैं वहांपर आनकर ब्रह्माको बहुत समझाया तब ब्रह्माने ज्ञान प्राप्त होनेसे अति लज्जित होकर वह तन अपना छोड़के दूसरा शरीर धारण किया सो हे माता देखो ब्रह्माजीको जिनके बनाये हुये ऋषीश्वर व मुनि व प्रजापति आदिक सब संसारी जीव हैं कामदेवके वश होकर यह दशा हुई थी तो संसारी जीव जो सदा अज्ञानसे भरे रहतेहैं उनकी क्या सामर्थ्य है जो कामदेवके वेगको रोकसकें जिस तरह आंधी चलनेसे वृक्षके पत्ते व घास व तिनके उड़ने व हिलने लगते हैं उसीतरह जब कामदेव परमेश्वरकी मायासे अपना बल करताहै तब योगी व ऋषीश्वर आदि सब किसी का मन चलायमान हुये विना स्थिर नहीं रहने सक्ता व मेरी माया दो रूप अपना एक जड़रूप द्रव्य व दूसरा चैतन्यरूप स्त्रीको बनाकर बीच संसारके फैली है सो इन्हीं दोनों रूपमें संसारी लोग लपटकर नष्ट होतेहैं चैतन्यरूप माया तो छोड़भी सक्ती है पर जड़रूप माया नहीं छोड़ती उसके मोहमें सब मनुष्य फँसे रहतेहैं कदाचित् कोई पूछे कि

मनुष्य चैतन्य चोला होकर जड़रूप मायामें क्यों फँसताहै उसका उत्तर यह देना चाहिये जिसतरह अच्छा गानेवाला ताल व स्वरसे प्रवीण जब वनमें अलगोजा बजाकर गावताहै तब हरिण आदिक वनचर जीव उस शब्द पर मोहित होकर उस गानेवाले के पास आनके खड़े होजाते हैं और वह उन्हें पकड़कर बहुतसा दुःख देता है उसी तरह संसारी मनुष्य परमेश्वरका भजन व स्मरण जो सदैवके वास्ते सुखकी खानिहै छोड़कर जड़रूपी माया से अपना सुख चार दिन के आयुर्दायका उत्तम जानते हैं व मायारूपी जालमें लपटने से बहुत से दुःख पाकर पीछे पछताते हैं॥

बत्तीसवां अध्याय।

कपिलदेवजी का देवहूती को तीनतरह पर ज्ञान समझावना॥

कपिलदेवजी बोले हे माता हमने तुमसे स्त्री व द्रव्य दोनों को बुरा कहा सो तुम्हारे मनमें इस बातका सन्देह हुआ होगा कि संसारमें स्त्रीसे सब जीवोंकी उत्पत्ति होकर द्रव्यसे अनेक तरहका सुख प्राप्त होता है कदाचित् इन दोनों को छोड़दें तो संसारी काम किसतरह चलै इसका हाल मैं तुमसे कहताहूं सुनो हमने द्रव्य व स्त्री को छोड़देना गृहस्थाश्रमके वास्ते नहीं कहा है जो लोग गृहस्थी कर परमेश्वर के नाम पर साधु व वैरागी व संन्यासी होनेके उपरांत वन या तीर्थोंमें रहकर जन्म अपना बीच स्मरण व ध्यान परमेश्वर के बिताते हैं उन लोगोंको द्रव्य व स्त्री की संगति करना न चाहिये व जो मनुष्य गृहस्थाश्रम व अपने वर्णमें रहकर परमेश्वरका भजन करके भवसागरपार उतरा चाहै वह अपनी विवाहिता स्त्रीसे रूपवती या कुरूपा जैसी मिले प्रीति रखकर दूसरी नारीका प्रसंग न करे व दूसरी स्त्री मिलनेवास्ते चाहना न रखकर जितना धन थोड़ा या बहुत परमेश्वर उसको देवैं उतने में अपना परिवार पालन करके अधम व पापकी कौड़ी पर इच्छा न रक्खै व गृहस्थको उचितहै कि नित्य देवकर्म व पितृकर्म व ठाकुरकी पूजा व सेवा करनेके उपरान्त उनको भोग लगा कर भोजन किया करै व कथा व कीर्तन व लीला अवतार धारण करने परमेश्वर की सुनकर उसमें ध्यान अपना लगाये रहै व यथाशक्ति

साधु व सन्त व वैरागी व ब्राह्मण की सुधि भोजन व वस्त्र से लिया करे व जो काम उत्तम यज्ञ व तप व दान व व्रत आदिक करे उसका फल परमेश्वर के नामपर अर्पण करदेवै व अपने कुल परिवारके लोगोंको ऐसा जानता रहै कि संसारमें यह सब मेरे वास्ते पैरकी वेड़ी समान हैं मुझे ऐसी सामर्थ्य नहींहै जो इनके फंदेसे छूटसकूँ इस जालसे छुड़ानेवाले नारायणजीहैं इस तरह का विचार हृदय में रखकर ऊपरसे उनकी पालना किया करै गृहस्थ को मन विरक्त रखना चाहिये व वैरागी व संन्यासी के वास्ते संसारी सुख का त्याग करना उचितहै व हरिभक्त गृहस्थके लक्षण हम तुमसे कहतेहैं सुनो जिसतरह पानी में कमल का फूल जलसे पृथक् रहताहै उसीतरह हरिभक्त गृहस्थभी प्रत्यक्षमें गृहस्थीके बीच रहकर अपना मन संसारी मायासे विरक्त रक्खें व मनको बीच ध्यान परमेश्वरके लगाये रहैं तो गृहस्थभी मरने उपरान्त सूर्यमंडलमें होकर वैकुंठको जाते हैं व अज्ञान गृहस्थों का लक्षण सुनो वहलोग देवता व पितृ व पूजा व सेवा व दान व पुण्य कुछ न जानकर परमेश्वर के भजन व स्मरण व कथा व कीर्तनमें प्रीति नहीं रखते केवल अपना परिवार पालने व इन्द्रियों को सुख देनेमें जन्म अपना बिताते हैं पर विना ज्ञान व भजन व भक्ति परमेश्वरके उनको कुछ सुख व आनन्द प्राप्त नहीं होता वहलोग मरनेके उपरांत चन्द्रमंडलमें होकर पितृलोकको जाते हैं कुछ दिन वहां रहके फिर संसारमें जन्म लेकर अपने कर्मोंका फल भोगते हैं व उत्तरायण सूर्य शुक्लपक्ष में दिन के समय मरनेवाला मनुष्य सूर्यमंडलमें होकर वैकुंठको जाताहै व दक्षिणायन सूर्य कृष्णपक्षमें रात्रिके समय मरनेवाले मनुष्य चन्द्रमंडलकी राहसे देवलोकमें जाते हैं व वहांका सुख अपने कर्मानुसार भोगकर उनको फिर संसारमें जन्म लेना पड़ताहै व पापी मनुष्य नरकमें रहने उपरांत चौरासी लाख योनि में जन्म पाकर दुःख भोग करते हैं जबतक मनुष्य चाहना व इन्द्रियोंका सुख नहीं छोड़ता तबतक उसका शरीर अंगूठे के प्रमाण बना रहकर आवागमनमें फँसा रहताहै व मुक्त होजाने से वह शरीर उसका छूटकर फिर संसारमें जन्म नहीं लेता व हे माता सिवाय इसके और एक हाल मुक्त होने का कहताहूं सुनो

मेरी राजसीभक्ति करनेवाले मनुष्य कई जन्ममें मुक्त होते हैं व सात्विकी भक्ति करनेवाला मरने उपरान्त पहिले ब्रह्मलोकमें जाताहै अवधि बीते वहांसे गिरके दूसरे जन्ममें मुक्ति पावताहै व निर्गुण भक्ति करनेवाले मनुष्य तन छोड़ने उपरान्त सीधे वैकुण्ठधामको चलेजाते हैं सिवाय इसके और तीन राह मुक्त होनेकी हैं सुनो जो मनुष्य अपने वर्णानुसार जैसा वेदशास्त्रमें सब वर्णोंका धर्म लिखाहै कर्म करके बुरे कामोंसे न्यारा रहै दूसरे जो कोई परमेश्वर की पूजा व स्मरण साथ प्रेमके करै तीसरे जो मनुष्य परमेश्वरका चमत्कार सब जीवोंमें एकसा देखकर किसी के साथ शत्रुता न रक्खै तो वहलोगभी मुक्तपदवीको पहुँचते हैं जिसतरह ऊखके रससे मिश्री व शक्कर व गुड़ बनकर जड़ तीनोंकी ऊख है उसीतरह भक्ति व पूजा व योगादिक के पृथक् पृथक् राह होकर ठिकाना व पहुँचने सब राहोंका नारायणजीके चरणहैं सो हे माता गृहस्थ या ब्रह्मचारी या वानप्रस्थ या संन्यासी या योगी या यती कोई हो जिन्हें परमेश्वरके चरणों में प्रीति है वह मुक्तिको पहुँचते हैं व जो मनुष्य परमेश्वरसे प्रेम नहीं रखता उसको पिछले जन्मोंका पाप उदय जानना चाहिये कि अमृत छोड़कर खारा पानी समुद्रका पीके उसमें मीठा स्वाद ढूंढ़ताहै जिसतरह शूकर को घी व चीनी खिलाओ तो उसे अच्छा नहीं मालूम होकर विष्ठा प्यारा लगताहै उसीतरह जिस जगह परमेश्वर की कथा व कीर्तन हरिभक्त लोग कहते हैं उस जगहसे वह अधर्मी उठकर जहां राग व रंग व चुगुली व कुकर्म करनेवालोंकी संगति रहती है वहां आनन्द से मन लगा कर बैठता है ॥

दो० तुलसी पिछले पापसे हरिचर्चा न सुहाय। जैसे ज्वरके जोरमें भोजनकी रुचि जाय ॥

सो हे माता मेरे चरणोंमें प्रीति करनेवालेका चित्त संसारके बुरे कामोंसे जल्दी विरक्त होकर उसे अपना भला व बुरा दिखलाई देताहै और मैंने यह सब ज्ञान जो तुमसे कहा इसको अच्छीतरह याद रखकर कभी मत भूलना इस ज्ञानको स्मरण रखने से तुम्हें यह विमान छोड़ने व कर्दमजी व मेरे वियोगका दुःख नहीं रहैगा व कलियुगवासी लोग यह ज्ञान सुनकर उसी

के अनुसार करनेसे भवसागर पार उतर जावैंगे व इस ज्ञान के प्रतापसे तुम भी मुक्तिपर पहुँचोगी॥

दो० इसी ज्ञान उपदेश को कहै सुनै चितलाय। भवसागरसे पार है अन्त मिलै यदुराय॥

तेंतीसवां अध्याय।

कपिलदेवजी का पूर्व दिशामें जाना व देवहूतीका सरस्वतीकिनारे बैठकर मुक्त होना॥

मैत्रेय ऋषीश्वर ने कहा हे विदुर यह सब ज्ञान देवहूती ने सुनकर कपिलदेवजीको दण्डवत् करके विनती की हे दीनानाथ तुम्हारे ज्ञान उपदेशके प्रताप से मुझको संसारी माया व मोह कर्दमजीके वियोगका दुःख सब छूट गया व आप ऐसे जगत् उत्पन्न करनेवाले त्रिलोकीनाथ नारायण ने मेरे गर्भमें वास किया इसलिये मेरा अज्ञान छूटकर अब मुझे गृहस्थी की इच्छा नहीं रही महाप्रलय होनेके समय ब्रह्मादिक देवता तुम्हारी माया में समाकर नाश होजाते हैं और वह माया तुम्हारे रूपमें मिलकर रहतीहै व आप अविनाशी पुरुष बालकरूप अँगूठेप्रमाण होकर अकेले बरगद के पत्ते पर क्षीरसमुद्रमें शयन करते हो व अवतार धारण करना तुम्हारा केवल अपनी इच्छासेहै आप जिससमय जैसारूप चाहैं वैसा स्वरूप धारण करलेने सक्तेहैं जिसतरह पहिले आपने वाराह व मत्स्य व कच्छप व नृसिंह व वामनादिक अवतार अपनी इच्छासे धारण किये व अपना स्वरूप व लीला हरिभक्तोंको दिखलाने व सुख देने उपरान्त वैकुण्ठको चले गयेथे उसीतरह अब भी तुमने कृपा व दया करके मेरे गर्भसे उत्पन्न होकर मुझे ज्ञान सिखलाया व ज्ञानरूपी औषध देकर संसाररूपी भारी रोग मेरा छुड़ाया इतनी कथा सुनाने उपरान्त मैत्रेय ऋषीश्वरने कहा हे विदुर यह सब स्तुति देवहूतीसे सुनकर कपिलदेवजी बोले हे माता तुम इस सूर्यरूपी ज्ञानको बहुत उत्तम जानकर सदा याद रखना व सब किसीसे मत कहना जिसतरह सूर्यके प्रकाश से अन्धकार छूटजाताहै उसीतरह यह ज्ञान याद रखने से मनुष्यकी अज्ञानता छूट जावेगी व गुरु व ब्राह्मण व साधु व वैष्णव व हरिभक्तों को यह ज्ञान सुनाकर अधर्मी व मूर्ख व चोर व लोभी व मिथ्यावादी व चुगुल से मत कहना व जो मनुष्य गुरु और परमेश्वर से विमुख रहकर दूसरे का उपकार न माने

व गुरुकी बातपर विश्वास न रक्खै उसको भी यह ज्ञान सुनना न चाहिये अधर्मी व मूर्ख मनुष्योंको ज्ञान सिखलाना कैसा होताहै जैसे कोई रसायन सोना बनानेकी राख पानीमें डाल देवै यह बात कहकर कपिलदेवजी बोले कि हे माता अब मैं गंगासागरको जाताहूं तुझे जिस वस्तुकी चाहना हो सो मांगले यह वचन सुनकर देवहूतीने विनय किया कि महाराज जिसके तुम्हारे सदृश त्रिलोकीनाथ पुत्र उत्पन्न हो उसको फिर किस वस्तुकी इच्छा रहेगी यह वचन अपनी माताका सुनकर कपिलदेवमुनि पूर्वदिशा में चले गये व देवहूती ने मन अपना संसारीमायासे विरक्त करके विमानादिक को उसी जगह छोड़ दिया व सरस्वतीकिनारे बैठकर ध्यान चरण व स्मरण नाम नारायणजीका अपने सच्चे मन से करने लगी सो ध्यान करते करते शरीर उसका जलके समान बहकर सरस्वती नदी में मिलगया व चैतन्य आत्मा मुक्तिपदवीपर पहुँचा व जब कपिलदेवजी समुद्र किनारे गंगासागरमें पहुँचे तब समुद्रने विधिपूर्वक उनकी पूजा व परिक्रमा व स्तुति करने उपरान्त उन्हें बैठने वास्ते आसन दिया सो वह इसवास्ते वहां बैठकर योगाभ्यास करने लगे जिसमें कलियुगवासी लोगोंको जो योग व तप करने नहीं सकैंगे मेरे दर्शन करने से योगाभ्यास करने का फल प्राप्त हो सो वह स्थान बैठने कपिलदेव मुनिका गंगासागर में कलकत्ते नगर के पास अबतक वर्तमानहै बहुत लोग उनका दर्शन करने वास्ते कलकत्ते की राहसे वहां जाते हैं व कपिलदेवजीने वहां बैठकर जो शुकनामादिक ऋषीश्वरोंको सांख्ययोग पढ़ाया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे राजन् जो सांख्ययोग ज्ञान कपिलदेव मुनिने देवहूती से वर्णन किया था वही ज्ञान मैंने तुमको सुनाया व तत्त्व सांख्ययोग का यही है कि आत्माको अविनाशी व अपने शरीरका नाश समझकर मन अपना संसारी मायामें न लगावै व मैत्रेयजीने विदुरसे कहा मैंने कपिलदेव अवतारकी कथा तुमको सुनाई जो कोई इसको सच्चे मनसे कहै व सुनै वह मनुष्य संसारमें वांछित फल पाकर अन्तसमय मुक्तिपदवी पावैगा॥

दो० कर्दमसुतेअतिसरस करत जीव अभिमान। तजत न टूटी झोपड़ी कर्दम तज्यो विमान॥

चौथा स्कन्ध ॥

सतीका बीच यज्ञ दक्षप्रजापति के तन त्याग करना व पार्वती नामसे हिमाचल पर्वत के यहां जन्म लेना व ध्रुवभक्त व राजा पृथुकी कथा ॥

पहिला अध्याय ।

अत्रिमुनिका उत्पन्न होना व तप करना व अत्रिमुनिके यहां चन्द्रमा व दत्तात्रेय व दुर्वासाका जन्म लेना ॥

दो० नर नारायण गिरापति व्यासदेव शुकदेव । वारवार विनवौं तुम्हैं हरो विघ्न बुधि देव ॥

मैत्रेय ऋषीश्वरने कहा हे विदुर अब हम संसार उत्पन्न होनेका हाल कहते हैं सुनो ब्रह्माजीसे मरीचि नाम बेटा उत्पन्न हुआ उसके कश्यप व कलानाम दो पुत्र उत्पन्न होकर उसके आगे वहुत सन्तान हुई जिनका हाल छठे स्कन्ध में आवेगा अब मैं स्वायम्भुवमनु के सन्तान का हाल कहताहूं सुनो राजा स्वायम्भुवमनु के देवहूती आदि तीन कन्या व उत्तानपाद व प्रियव्रत नाम दो बेटे हुये सो देवहूती का विवाह कर्दम ऋषीश्वर से हुआ था जिनके यहां कपिलदेव भगवान्‌ने अवतार लिया उसका हाल मैं वर्णन करचुका अब दोनों बेटियों का हाल सुनो एक कन्या का विवाह दक्षप्रजापति से व दूसरी बेटी का विवाह रुचिप्रजापति से जब स्वायम्भुवमनु ने करदिया तब रुचिप्रजापति के उस कन्या से अत्रिनाम बेटा उत्पन्न हुआ व अत्रि से तीनि बेटे हुये इतनी कथा सुनकर विदुरजी ने मैत्रेय ऋषीश्वरसे कहा महाराज तीनों बेटा उत्पन्न होनेका हाल वर्णन कीजिये तब मैत्रेयजी बोले हे विदुर अत्रि ने भी ब्रह्माजीकी आज्ञासे संसार उत्पन्न करने की इच्छा रखकर मनमें ऐसा विचार किया कि मेरे पुत्रको भी संसारी जीव उत्पन्न करना होगा इसवास्ते पहिले परमेश्वरका तप करके पीछे से सन्तान उत्पन्न करैं जिसमें वह धर्मात्मा होवैं ऐसा विचारकर अत्रिमुनि ने अनसूया अपनी स्त्री समेत तप करना आरम्भ किया पर नाम किसी देवताका न लेकर कर्ता कहके तप करते थे जब सौ वर्ष तप करते बीत गये

तब ब्रह्मा व विष्णु व महादेवजी तीनों देवतोंने जायकर अत्रिमुनिको दर्शन दिया सो मुनीश्वर ने तीनों देवतों की पूजा व स्तुति करके कहा महाराज मैंने एक देवता का तप किया था आप तीन देवतोंने किस वास्ते मुझे दर्शन दिया अब मैं अपनी कामना किससे मांगूं यह वचन सुनकर विष्णु ने अत्रिमुनिको उत्तर दिया कि तू तप समय नाम कर्ता का लेता था सो हम तीनों मनुष्य कर्ता होकर एक एक काम उत्पत्ति व पालन व नाश जगत् का करते हैं व हम लोगों ने आदि ज्योति निरंकारकी महिमासे जन्म पाया है और यह निर्गुण निरंकार कुछ रूप व रेखा न रखकर किसी को अपना दर्शन नहीं देते व उन्हें कोई आंख से देखने नहीं सक्ता पर सब काम जगत् का उनकी आज्ञानुसार होकर हमलोग अपने अपने कामपर जिसका वर्णन ऊपर होचुका है उनकी ओरसे वर्तमान हैं जो तुझे इच्छा हो सो हमलोगों से वरदान मांग तुझको देवेंगे यह वचन सुनतेही अत्रिमुनि ने दण्डवत् करके उनसे कहा महाराज मैं पुत्र भाग्यवान् व धर्मात्मा चाहता हूं तब ब्रह्मा व विष्णु व महादेवजी अत्रिमुनि को उनकी इच्छापूर्वक वरदान देकर अपने अपने लोकमें चलेगये व अत्रिमुनि के यहां दत्तात्रेय विष्णु भगवान् की कृपा व दुर्वासा महादेवके आशीर्वाद व चन्द्रमा ब्रह्मा की दयासे तीनों पुत्रों ने जन्म लिया उसमें दुर्वासा बड़े क्रोधी आंख खोले उत्पन्न हुये सो दुर्वासा व चन्द्रमा व दत्तात्रेय से बहुत सन्तान हुई कि उनका नाम संस्कृत भागवत में लिखाहै इतनी कथा सुनाकर मैत्रेय ऋषीश्वरने कहा हे विदुर हाल सन्तान दूसरी कन्या स्वायम्भुवमनुका भी जो रुचिप्रजापतिसे विवाहीगई थी तुमको सुनाया अब तीसरी बेटी जो दक्षप्रजापति से विवाही थी उसके सन्तानका हाल सुनो दक्षप्रजापति के उस स्त्रीसे साठ लड़की उत्पन्न होकर उनमें सती नाम कन्या का विवाह महादेवजीसे हुआ था॥

दूसरा अध्याय।

दक्षप्रजापति का महादेवजी से बुरा मानना व महादेवजी को शाप देना॥

विदुर ने इतनी कथा सुनकर मैत्रेय ऋषीश्वरसे पूछा कि महाराज सती

जी ने अपना तन किसतरह त्याग किया था उसका हाल वर्णन कीजिये मैत्रेय ऋषीश्वर ने कहा कि सतीजी का विवाह होने उपरान्त एक दिन महादेव बहुत से देवता व ऋषीश्वरों समेत बीचसभा यज्ञ करने ब्रह्माजी के बैठे थे उससमय दक्षप्रजापति वहां पर आये सो सब किसी ने उठकर उन्हें बड़े आदर से बैठाला पर उससमय शिवजी जो अपनी आंख बन्द कियेहुये बीच ध्यान परमेश्वरके मग्न थे नहीं उठे व उन्होंने दक्षप्रजापति को दण्डवत् भी नहीं किया इस कारण दक्षने क्रोध करके कहा इनको लोग ज्ञानी व तपस्वी व सत्यवादी जो कहते हैं यह बात झूठ होकर इनका नाम वृथा देवतोंने महादेव रक्खाहै हमने भूलकर ब्रह्माजीके कहनेसे अपनी बेटीका विवाह महादेवसे जो एक लोकपालक तुल्यहैं किया ये इस विवाह योग्य नहीं थे मेरी कन्या विवाहने से देवतों में इनकी प्रतिष्ठा अधिक होकर इन्हें ऐसा अभिमान उत्पन्न हुआ कि मेरे दामाद होकर मुझे दण्डवत्भी नहीं करते मैंने सती कन्या महासुन्दरी व मृगलोचनी इसतरह पर महादेव भूतोंके राजाको जो दिन रात श्मशान पर बैठे रहते हैं विवाह दिया जिस तरह कोई मनुष्य शूद्रको वेद पढ़ावै यह दुर्वचन कहने उपरान्त दक्षप्रजापतिने उसी सभामें खड़े होकर ब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वरोंके सामने शिव जीको ऐसा शाप दिया कि आजसे कोई यज्ञमें महादेवका भाग न निकाले शिवजी ऐसा शाप सुनने परभी कुछ उत्तर न देकर उसीतरह चुपचाप बीच ध्यान परमेश्वरके बैठे रहे जब दक्ष ऐसा शाप देकर अपने घरको चले तब नन्दीगणने विचारा कि देखो शिवशंकर भोलानाथ हमारे स्वामीको विना अपराध इस ब्राह्मणने शाप दियाहै इसलिये मैं भी ब्राह्मणको शाप दूंगा यह बात विचारके नन्दीगणने सब सभावालों को सुना कर कहा कि हे दक्ष मैं तुझे व सब ब्राह्मणोंको शाप देताहूं कि ब्राह्मणलोग वेद व पुराण पढ़ने परभी अन्त अवस्थाका शोच न रक्खें व अपनी पूजा व पाठ व तप व जपका फल मनुष्यों के हाथ पैसा व रुपया लेकर बेंचें व विना प्रणाम किये सबको आशिष देवें व सब जगह भोजन करके धर्म व अधर्म का विचार न करें यह शाप नन्दीगणका सुनकर भृगु ऋषीश्वरने जो उस सभा में

बैठे थे कहा कि हे नन्दीगण तुमने बीच बदले अपराध करने दक्षप्रजापति एक ब्राह्मणके सब ब्राह्मणों को व्यर्थ शाप दिया इसलिये मैं भी महादेव के भक्त व सेवकों को शाप देताहूं कि वहलोग मद्य पीकर परलोकका डर न रक्खें व अपने शरीर पर राख मलकर कानों में बड़ा बड़ा छेद करावें व महादेवजी के समान योगियों का वेष बनावें व पूजा व पाठ करने का फल उन्हें प्राप्त न होवै जब यह शाप होचुका तब दक्षप्रजापति अपने स्थान पर आये व महादेवजी भी यह झगड़ा नन्दीगण व भृगु ऋषीश्वरका देखतेही नन्दी बैलपर चढ़कर कैलास को चले गये व समाधि लगाकर परमेश्वर का ध्यान करने लगे व सब देवता व ऋषीश्वरादिक भी उस सभा में यह हाल देखने से उदास व दुःखित होकर अपने अपने घर चले गये व दक्षप्रजापति ने अपने घर पहुँचकर यह विचार किया कि मैंने देवता ब्राह्मणों की सभामें ऐसा शाप दिया कि कोई महादेव का भाग यज्ञमें न निकालै परइस बातको पहिले मुझे आरम्भ करना चाहिये जबहम अपने घर यज्ञकरके सब देवता व ऋषीश्वर व ब्राह्मणोंको बुलाकर महादेवका भाग यज्ञ में न देवैंगे तब अधिक अपमान होकर कोई मनुष्यभी उनका भाग यज्ञमें नहीं निकालेगा ऐसा विचार कर दक्षप्रजापतिने वास्ते बढ़ने तेज व प्रकाश अपने यज्ञकी तैयारी करके सब देवता व दैत्य व ऋषीश्वर व तपस्वी व गन्धर्व व किन्नरादिक को नेवता भेज दिया ॥

तीसरा अध्याय।

सब देवता व ऋषीश्वर व गन्धर्वादिक का अपने अपने विमानोंपर चढ़कर दक्षप्रजापतिके यज्ञमें जाना व सतीजीका कैलास पर्वतपर से देखना ॥

मैत्रेयजी बोले हे विदुर जब दक्षप्रजापति के नेवता भेजने से सब देवता व दैत्य व ऋषीश्वर व मुनि व ब्राह्मण व गन्धर्व व किन्नरादि अपनी अपनी स्त्रियोंसमेत अच्छा अच्छा गहना व कपड़ा पहिरने व तैयारी करने उपरान्त उत्तम उत्तम विमानोंपर सवार होकर हँसते व खेलते व गाते व बजाते उनके यज्ञमें नेवता करनेचले तब सतीजीने कैलास पर्वतपर महादेवजीके पास बैठी हुई उनके जानेका शब्द सुनकर लोगों से पूछा कि आज आकाशमार्ग में

भीड़ दिखलाई देने का क्या कारण है यह बात सुनकर महादेवजीके गण बोले दक्षप्रजापति तुम्हारे पिता के यहां यज्ञ है इसलिये सब देवता व ऋषी- श्वरादिक अपनी अपनी स्त्रियोंसमेत वहां नेवता करनेजाते हैं ऐसा सुनते ही सतीजी ने मन में उदास होकर कहा कि देखो मेरे बापने अपने यज्ञ में और और लोगोंको नेवता भेजा व मुझे व महादेवजीको नहीं बुलाकर मेरा अपमान किया कदाचित् काम काजके भीड़में भूल गये होंगे सो माता व पिता व गुरु व मित्र के घर उत्सव हो तो विना बुलाये भी वहां जाकर काम व टहल करना चाहिये इसमें कुछ अपमान नहीं होता इसलिये वहां जाकर सबसे भेंट करके वह आनन्द देखना उचित है व मेरे न जाने से देवतादिककी स्त्रियां वहां इकट्ठी होकर आपसमें कहेंगी क्या भेद है जो दक्षप्रजापतिने सतीको नहीं बुलाया इसमें हमारे माता व पिताकी नाम धराई व मेरा अपमान होकर मरती समय तक इस बातका पछतावा मनमें रहजावेगा ऐसा विचारकर सतीने महादेवजीसे विनय किया कि हे महा- प्रभु मेरे पिताके यज्ञमें सब देवता आदिक अपनी अपनी स्त्रियां साथ लेकर नेवता करने जाते हैं कदाचित् मेरे माता व पिताने काम काजके भीड़में भूलकर आपको व मुझे नहीं बुलाया सो मेरा व उनका एकवास्ता होकर विना बुलाये जानेमें कुछ लज्जा नहीं है श्वशुरको पिता व गुरुके समान जानकर विना बुलायेभी उस यज्ञमें जाना उचितहै वहां पर मेरी सब बहिनें अपने अपने पतिके साथ आवेंगी मुझे बहुत दिनसे यह इच्छा थी कि कोई काम उत्सवका मेरे बापके यहां होवे तो मैंभी तुम्हारे साथ वहां जाऊं सो आप दया करके मुझे अपने साथ लिये हुये वहां चलिये सबसे भेंट होकर परमआनन्द दिखलाई देगा यह वचन सतीका सुनतेही महादेवजीने सब हाल शत्रुता दक्षप्रजापतिका सुनाकर कहा हे सती तेरा पिता मुझसे श- त्रुता रखता है कदाचित् वह मुझसे बुरा न मानता तो विना बुलाये भी हम जाते जो विना बुलाये उसके यहां जाऊं और वह मुझे देखकर न आदर करे व अपना मुँह फेर लेवे या कोई दुर्वचन कहै तो इसमें अच्छा नहीं किसवास्ते कि तीर व तलवारके घाव मलहम से भरजाते हैं पर जिह्वाका

घाव जो किसीके दुर्वचन कहनेसे कलेजे में पड़जाताहै वह किसीतरह अच्छा नहीं होता उसकी औषध मिलना दुर्घटहै इसलिये मैं तेरे पिताके यज्ञमें नहीं जाऊंगा जब शिवजीने जाना अंगीकार नहीं किया तव सती-जी विनयपूर्वक बोलीं कि आप नहीं जाते तो मुझको आज्ञा दीजिये मेरे वास्ते अपने माता पिताके घर विना बुलाये जानेमें कुछ लज्जा नहीं है यह वचन सुनकर महादेवजीने कहा हे सती दक्षप्रजापति अपने राज्य व धनके मदमें गर्वित होकर मेरी शत्रुतासे तेराभी अपमान करैगा तब तुम बहुतसा दुःख उठावोगी व तेरा निरादर होनेसे मुझेभी क्रोध उत्पन्न होगा मेरेजानमें तेरा जाना भी किसी तरह उचित नहीं है नारायणजीकी इच्छा से सतीने उनके समझाने परभी न मानकर फिर शिवजीसे कहा मेरे वहां न जाने में अपनी साठि बहिनोंके निकट मेरा अनादर होकर वह लोग मुझको ताना मारैंगी इसलिये मेरे विना गये नहीं बनपड़ती मुझे आज्ञा देव तौ जल्दी जाऊं शिवजीने ऐसा वचन सुनतेही मनमें विचार किया देखो सतीने आजतक कोई काम विना आज्ञा मेरी नहीं किया था आज यह जानेवास्ते ऐसा हठ करके मेरा कहना नहीं मानती इससे मुझे मालूम होता है इसके वास्ते वहां जानेमें अच्छा न होगा होनहार प्रबल होकर परमेश्वरकी इच्छामें किसी का वश कुछ नहीं चलता ऐसा विचारकर महा-देवजीने सतीसे कहा कि तू जा न चलीजा तेरी खुशी इसका फल देखैगी॥

चाथा अध्याय।

सती का अपने पिता के घर जाना व तन अपना उसी यज्ञमें त्याग करना॥

मैत्रेयजी बोले हे विदुर जब शिवजीके मना करने परभी अपने पिता के स्थान पर चली तब महादेवजीने कईगण अपने उसके साथ इस विचार से करदिये कि देखैं वहां क्या दशा होतीहै व सतीजीका जो खिलौना व पिटारी आदिक था उसेभी गणों के साथ भेज दिया जिसमें सतीके तन छोड़ने उपरान्त वह सब वस्तु देखकर मुझे दुःख न होवै जब सती बीच यज्ञ दक्षप्रजापतिके पहुँची तब वह सतीको देखतेही मुँह अपना फेरकर कुछ उससे नहीं बोला यह दशा अपने बापकी देखकर सती बड़े शोच से

मनमें कहने लगी कि देखो मैंने बहुत बुरा काम किया जो विना आज्ञा महादेवजीके यहां आई जैसा अपने पतिका कहना नहीं माना वैसा फल आंखोंसे देखा अब कोई ऐसा बहाना व कारण होजावे कि जिसमें जल्दी यहांसे फिर शिवजीके पास चलीजाऊं सिवाय माता सतीजीके और सब स्त्रियां जो वहां यज्ञमें आई थीं दक्षप्रजापतिके बुरा मानने से सतीके साथ प्रीतिपूर्वक नहीं बोलीं सती यह हाल देख दुःखसागरमें डूबीहुई बीच यज्ञ-शालाके बैठी थी जब आहुति देनेका समय आया और यज्ञ करानेवालों ने दक्षसे वास्ते आहुति देने महादेवजीके नामपर पूंछा तब दक्षप्रजापतिने शिवजीको दुर्वचन कहकर उनसे कहा हमने देवता व ऋषीश्वरोंकी सभा में महादेवको शाप दिया है कि कोई यज्ञमें उनका भाग न निकाले इस वास्ते तुमलोग महादेवके नामपर आहुति मत देव सतीजी यह कठोर वचन सुनने व नहीं देखने भाग शिवजीका यज्ञशालाकी दक्षिण दिशामें बीच क्रोधके भरगईं जब उनसे वह क्रोध रोका नहीं गया तब उन्होंने दक्षसे कहा हे पिता अज्ञान तुम शिवजीकी बड़ाई व महिमाको नहीं जानते वह सब देवतों में श्रेष्ठ होकर किसीके साथ शत्रुता नहीं रखते तुम व्यर्थ अपनी अज्ञानता से विना समझे उनके साथ वैर रखते हो महात्मालोग गुण को लेते हैं अवगुणकी तरफ नहीं देखते व शिवजी सब गुणों से भरेहुये केवल जगत् में लोगोंको दिखलाने वास्ते अपना रूप भयानक बनाये रहते हैं उसको तुमने देखा व उनके गुणोंको नहीं जाना सनकादिक व नारदादि उनके चरणों का ध्यान अपने हृदय में रखते हैं तुम्हारी पदवी ऐसी नहीं है जो उनसे बराबरी करनेसको तुम उन्हें जो तीनों लोकके जीवों में श्रेष्ठहैं बीच सभाके बैठे हुये दुर्वचन कहकर उनका अनादर करते हो ऐसा न चाहिये और तुम्हें क्या कहूं तुम मेरे पिता हो पर मैं तुम्हारे आगे इसी क्रोधमें यह तन अपना जो तुम से उत्पन्न हुआ था त्यागदेती हूं जिसमें तुम्हारे ऐसे अधर्मी व अज्ञान के साथ शिवजी का नाता न रहै तुम्हें पीछे से उनके साथ व्यर्थ शत्रुताई करने का हाल मालूम होगा ऐसा वचन कहने उपरान्त सती ने उसी जगह उत्तरमुँह बैठकर तन

अपना योगाभ्यासके अग्निसे जला दिया जब शिवजी के गणोंने जो साथमें आये थे यह हाल सतीका देखा तब क्रोध करके अपने अपने शस्त्र लेकर चाहा कि जो लोग यहां हैं उन्हें मार पीटकरके यज्ञ दक्षप्रजापति का विध्वंस करडालें उस समय भृगु ऋषीश्वरने जो उस सभामें बैठे थे उन गणोंकी इच्छा जानकर यज्ञकी रक्षा करनेवास्ते जैसे कुछ मन्त्र पढ़के अग्निकुण्डमें आहुति डाला वैसे अग्निपुरुष व वैताल व वीरभद्र तीनजने उस कुण्ड से निकलकर बोले कि हे ऋषीश्वर महाराज जो आज्ञा हो सो पालन करैं तब भृगु ऋषीश्वरने कहा कि महादेवके गण यह यज्ञ भ्रष्ट करने चाहते हैं सो तुमलोग उन्हें बाहर निकाल दो यह बात सुनतेही उन तीनोंने महादेवजीके गणोंको धक्का देकर यज्ञशालासे बाहर निकाल दिया ॥

पांचवां अध्याय ।

नारदमुनिका महादेवजीके पास आना व सतीजीके तन त्याग करने व गणोंके निकाले जाने का हाल कहना ॥

मैत्रेयजीने विदुर से कहा जिस समय सतीजीने अपना तन त्याग किया व महादेवजी के गण उस सभासे निकाले गये उसी समय नारद मुनि यह सब हाल देखते हुये शिवजीके पास कैलास पर्वतपर पहुँचे शिवशंकरने नारद मुनिको देखतेही दंडवत् करने उपरान्त बड़े आदरसे बैठाल कर पूंछा कहो मुनिनाथ कहां से आते हो नारदजी बोले कि महाराज आपको यह बात मालूम है या नहीं आज सतीने बीचयज्ञ दक्षप्रजापतिके तुम्हारी निन्दा सुननेसे तन अपना छोड़ दिया व भृगु ऋषीश्वर के मन्त्र पढ़ने से आपके गणलोग भी निरादर होकर उस सभासे निकाले गये इसका कुछ उपाय करना चाहिये ऐसा कहकर नारद मुनि चलेगये व शिवजीने सतीका मरना सुनतेही क्रोधवन्त होकर अपनी जटाके बाल नोचने उपरान्त जैसे पृथ्वीपर पटका वैसे एक मनुष्य वीरभद्र नाम महाबली उस जटासे उत्पन्न होकर हाथ जोड़के बोला मुझे जो आज्ञा हो सो करूं शिवजीने उसे देखते ही कहा तू अभी बहुत जल्द बीचयज्ञ दक्षप्रजापतिके चलाजा व शिर उसका काटने उपरान्त अग्निकुण्ड में डालकर जो

लोग उस सभामें बैठे हों उन्हें वहांसे बाहर निकालदे यह वचन सुनतेही वीरभद्र जिसका शरीर पहाड़के समान बड़ाथा त्रिशूल बाँधे हुये सेना भूत व प्रेतकी साथ लेकर वहां से चला व क्षणभरमें बीच यज्ञशालाके पहुँचा व शिर दक्षप्रजापति का काटकर अग्निकुण्ड में डालदिया व भृगु ऋषीश्वर की डाढ़ी नोच डाली व दूसरे देवता व ऋषीश्वर व गन्धर्व व ब्राह्मण व किन्नर आदि जो उस सभामेंथे उन्हें मार पीट करके सबका अंगभंग कर डाला व वहांसे लोगोंको बाहर निकालने उपरान्त स्थान यज्ञशालाका तोड़कर साकल्य आदिक सामग्री यज्ञकी फेंकदी जब शिर काटने परभी प्राण दक्षप्रजापतिका नहीं निकला तब मारे मूकोंके उसे मारडाला उस समय जितने स्त्री व पुरुष दक्षके यहां न्योता करने आये थे सब दुःखित होकर भागे व आपसमें कहने लगे देखो दक्ष महामूर्खने महादेवजी महात्मा पुरुषका जो सब देवतोंमें श्रेष्ठहैं जैसा अपमान किया वैसा फल पाया इसी तरह सब छोटे बड़े दुःख पाकर दक्षको गालियां देने लगे व जब वीरभद्रने यज्ञविध्वंस करने उपरान्त शिवजीके पास आनकर सब हाल कहा तब भोलानाथने मरना सतीका ऊपर इच्छा परमेश्वर के समझकर क्रोध अपना क्षमा किया और वह आनन्दमूर्ति फिर प्रसन्न चित्त बैठकर अपने चेलोंको ज्ञान सिखलाने लगे विष्णु भगवान् व ब्रह्माजी अन्तर्यामी पहिलेसे यज्ञविध्वंस होनेका हाल जानकर वहां नहीं गये थे॥

छठवां अध्याय।

भृगु आदि ऋषीश्वर व देवतों का ब्रह्माजी के पास जाना व वीरभद्रका हाल कहना॥

मैत्रेय ऋषीश्वरने कहा हे विदुर जब वीरभद्रने भृगु व देवता आदिक को मार पीट करके यज्ञशाला से बाहर निकाल दिया तब सब किसी ने रोते हुये ब्रह्माजी के पास जाकर अपना अपना हाल उनसे कहा ब्रह्माजी उनका वृत्तान्त सुनकर बोले कि तुम लोगोंने बहुत बुरा काम किया जो यज्ञमें बैठकर शिवजीकी निन्दा अपने कानोंसे सुनते रहे व महादेवजी का भाग यज्ञमें से बन्द करके अपना अपना अंश तुमलोगों ने लिया ऐसा अधर्म करना तुम्हें उचित नहीं था जैसा अपराध शिवजीका किया

वैसा फल पाया सुनो महादेवजी सब देवता व तीनों लोकके जीवों में श्रेष्ठ व परमेश्वरतुल्य हैं मैं उनका कुछ नहीं करसक्[illegible]र कोई मेरे साथ उन्हींके शरण में चलो विनती व स्तुति करे[illegible] अपराध उन से क्षमा कराऊं यह वचन कहने उपरांत ब्रह्माजी सब [illegible] व ऋषीश्वरों को साथ लेकर कैलास पर्वतपर गये उस पहाड़पर पत्थरकी जगह लाल व पन्ना व हीरा आदिक अनेक तरह के मणि व रत्न रहकर वह पहाड़ सो-रहसौ कोश ऊंचा व बारहसौ कोशके घेर में है और वहां बरगद आदिकके बहुत वृक्ष लगे रहनेसे धूपका प्रकाश नहीं होता व सदा ठंढी छाया बनी रहतीहै व अनेक रंगके फूल ऐसे लगे हैं कि जिसकी सुगन्ध कोशोंतक उड़ती है व अनेक प्रकारके फल बारहों महीने वृक्षोंमें लगे रहकर अमृत समान स्वाद देतेहैं व वहांपर तालाब व बावली व नहर व झरना पानी के ऐसे निर्मल भरे हैं कि जिसके देखनेसे आंखोंमें तरावट आजावे व ता-लाव व बावलीके किनारे अच्छे अच्छे पक्षी महासुन्दर मीठी बोली बोलने वाले सारस व तूती व कोकिला व मोर आदिक बैठे हुये चहचह मचाते हैं व उस जगह देवकन्या व गन्धर्व आदि आनकर जिस वस्तुकी इच्छा करतेहैं सब मनोरथ उनका सिद्ध होकर वह शोभा देखने से मन उनका मोहित होजाताहै और वह लोग सेतुगंगामें जो धारा हिमाचल पहाड़से उतरकर वहां आई है स्नान करके आनन्द होजाते हैं सो उसी पहाड़ पर एक वृक्ष बरगदका जो चारसौ कोश ऊंचा व तीनसौ कोश चौड़ा था उसके नीचे महादेवजी मृगछाला पर बैठे हुये जिस समय नारद मुनि व सनकादिक अपने चेलोंसे परमेश्वरका गुणानुवाद कह रहेथे और योग व तप व वेदादिक अपना अपना रूप धारण किये उनके सा-मने रहकर कोई ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता था जो दम मारने सके उसी समय ब्रह्माजी सब ऋषीश्वर व देवताओं समेत वहां पर जा पहुँचे शिवजीने ब्रह्माको देखतेही दण्डवत् करके बड़े आदर भाव से जब उन्हें अपने पास बैठाला तब ब्रह्माजी शिवशंकरको नमस्कार करने उपरान्त उनके सामने बैठे और देवतादिक जो ब्रह्माके साथ गयेथे शिवजी को

दण्डवत् करने उपरान्त यथायोग्य स्थानपर चारों तरफ बैठगये महादेवजी महात्माके [illegible] लेकर वह शोच व दुःख शत्रुता दक्षप्रजापति व तन त्यागकरने सतीका नहीं [illegible] का [illegible]लिये वह सब बातको ऊपर इच्छा परमेश्वरके समझकर उससमय [illegible]रचर्चामें ऐसे मग्नथे कि उन्हें इस बातका कुछ ध्यान नहीं हुआ कि ब्रह्माजी वास्ते क्षमा कराने अपराध देवतादिकके आये हैं व वीरभद्रने ऋषीश्वर व देवतोंकोभी मारपीट कियाहै इसवास्ते वह ब्रह्माके आवनेपरभी सब किसीसे हरिचरित्र कहते रहे तब ब्रह्माने बहुतसी स्तुति शिवजीकी कहकर उनसे विनय किया कि आप सब देवतोंके मालिकहैं इसलिये तुम्हारा नाम महादेव हुआ सो दक्षने आपकी प्रभुताई नहीं जानकर जैसा तुम्हारा अपमान किया वैसा फल पाया सो उसके निरादर करने से कुछ तुम्हारी बड़ाई कम नहीं होगई जिसतरह कोई मनुष्य चन्द्रमा पर थूके तो वह थूक चन्द्रमापर नहीं पड़ता उसी थूकनेवालेके मुँहपर गिरताहै वही हाल दक्षका हुआ अब मेरे विनय करनेसे दयालु होकर अपराध दक्षका क्षमा कीजिये व देवता व ऋषीश्वर आदिक जो उस सभा मेंथे वीरभद्र तुम्हारे बेटाने उनकोभी बहुतसा दुःख दिया कितनों के पैर तोड़डाले कितनों की आंख फोड़ डाली है सो वह लोग भी आपके भयसे घबड़ारहे हैं इसलिये उनको धैर्य देकर ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि जिसमें घायल शरीर उनका अच्छा होकर वहलोग ज्यों के त्यों होजावें और दक्षप्रजापति फिर तुम्हारी कृपासे जीकर यज्ञ अपना विधिपूर्वक सम्पूर्ण करै व सब देवता व ऋषीश्वर लोगभी वहां आनकर अपना अपना भाग यज्ञमें पावें व आपभी मेरेसाथ वहां चलिये मैं नारायणजीको भी विनय करके वहां ले आऊंगा और यज्ञ करने में जो साकल्य बच जाती है वही साकल्य आपका भाग होगा सो आप अपना पावेंगे यह सब बात ब्रह्माजीकी सुनकर शिवजीने कहा मैं किसीसे शत्रुता न रखकर अज्ञान के कहने का कुछ बुरा नहीं मानता सतीके प्राण देनेका हाल सुनकर मुझे क्रोध आगया था सो दक्षप्रजापति अपनी करणीको पहुँचा व सती के प्रारब्धमें इसीतरह तन त्याग करना लिखा होकर जो कुछ परमेश्वरकी

इच्छा थी वह बात हुई अब जो आज्ञादेव सो करूं जो कोई बड़ोंका कहना नहीं मानता वह पीछे से दुःख पावता है ॥

सातवां अध्याय ।

महादेवजी व ब्रह्मादिक देवतोंका बीच यज्ञशाला दक्षप्रजापति के जाना ॥

मैत्रेयजी बोले कि हे विदुर जब कैलास पर्वतसे शिवशंकर व ब्रह्माजी सब देवता ऋषीश्वरोंको साथलेकर दक्षप्रजापतिकी यज्ञशालामें गये और जो देवता आदिक वीरभद्रके डरसे भाग गये थे वहभी वहांपर आये तब शिवजीने जिन देवता व ऋषीश्वरका शरीर वीरभद्रके मार पीट करनेसे घायल होगया था उनका तन अपनी कृपादृष्टिसे अच्छा करदिया व भृगु ऋषीश्वरके बाल डाढ़ी के बकरे की डाढ़ी लगावने से फिर उसीतरह जमगये उस समय ब्रह्माने शिवजीसे कहा लोथ दक्षप्रजापतिकी जो पड़ी है इसको भी जिलाना चाहिये तब महादेवजी बोले शिर दक्षका जो अग्निकुंड में जलगया वह नहीं तैयार होसक्ता कहो तो यज्ञके बकराका शिर दक्षके धड़से लगाकर उसे जिलादेऊं-जब ब्रह्माने इस बातको माना तब शिवजी ने बकरे का शिर दक्षप्रजापतिके धड़से लगाकर उसे जिलादिया व शिवकी कृपासे स्थान यज्ञशाला का फिर ज्योंका त्यों होगया व दक्षप्रजापतिने महादेवजीको देखतेही उन्हें दंडवत् करके हाथ जोड़कर आधीनताई से विनय किया हे महाप्रभु मैंने आपकी बड़ाई व महत्त्व न जानकर जैसी क-रणी तुम्हारे साथ की वैसा फल पाया व आप अपनी बड़ाईसमझ कर कृपा करके यहां आये व मुझे अपनी प्रभुताईसे फिर जिलाया व मुझ अज्ञानका अपराध क्षमा किया सच है कि जिनको परमेश्वरने महत्त्व दियाहै वह लोग छोटे व मूर्ख मनुष्यकी बातपर ध्यान नहीं करते और जितने देवता व ऋषीश्वर व गन्धर्व व किन्नरादिक स्त्री व पुरुष दक्षके यहां नेवता करने आये थे वहलोगभी यह महिमा शिवजीकी देखकर इसी तरह स्तुति करने लगे जब महादेवजीकी आज्ञा से दक्षप्रजापति फिर यज्ञ करने बैठे तब ब्रह्मा व महादेव व विष्णु भगवान् ने सब देवता व ऋषीश्वर समेत उस सभा में बैठकर शास्त्रके अनुसार दक्षसे उस यज्ञको फिर आरम्भ कराया

यज्ञ सम्पूर्ण होतेही अग्निकुंडसे यज्ञपुरुष भगवान् चतुर्भुजी मूर्तिने वैजयन्ती माला व कौस्तुभमणि व फूलोंके हार गले में डाले गरुड़पर चढ़े प्रकट होकर दर्शन दिया उनको देखतेही जितने छोटे बड़े वहां बैठे थे उठ खड़े होगये व सबोंने उस पुरुषको साष्टांग दण्डवत् किया व दक्षप्रजापति हाथ जोड़कर यज्ञभगवान्से बोले कि हे वैकुण्ठनाथ इस यज्ञके आरम्भमें मुझसे महादेवका अपमान हुआ इसलिये यज्ञ मेरा विध्वंस होगया था अब मेरा भाग्य उदय हुआ जो आपने दर्शन देकर मुझे कृतार्थ किया व यज्ञ मेरा तुम्हारी कृपासे उसी तरह सम्पूर्ण हुआ अब दया करके ऐसा वरदान दीजिये कि जिसमें मुझको फिर दुर्बुद्धि न व्यापै फिर भृगु ऋषीश्वर बोले कि हे दीनानाथ मैंने ब्राह्मण व तपस्वी होनेपरभी अपने क्रोधको वश्य नहीं किया इस कारण मेरा यह दण्ड हुआ दयालु होकर ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि जिसमें क्रोध मेरा छूटजावे किस वास्ते कि जब तक काम व क्रोध व मोह व लोभ अपने अधीन नहीं होते तबतक तुम्हारी भक्ति नहीं प्राप्त होती जब इसीतरह ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व गन्धर्व व लोकपाल व किन्नर आदिक सब देवता व ऋषीश्वरोंने भी बहुतसी स्तुति उनकी की तब यज्ञपुरुष ने दक्षसे कहा तुझसे बहुत अनुचित हुआ जो महादेवजीका अपमान किया सुनो ब्रह्मा व विष्णु व महादेव तीनों देवतों को तुम एकसा जानो नाम जिस पुरुष निरंकार ज्योतिका लोग जपकर अपना मालिक व उत्पन्न करनेवाला जानते हैं उसीके ध्यानमें तुम भी लीन रहो तब तुमको ज्ञान प्राप्त होगा जिस समय यह बात यज्ञपुरुषने कहा उससमय आकाशसे उन पर फूलोंकी वर्षा हुई व सब लोगोंने जयजयकार किया तब यज्ञपुरुष सब किसीको इच्छापूर्वक वरदान देकर वैकुण्ठ को पधारे व ब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वरभी अपने अपने स्थानको गये व प्रजापति उसदिन से शिवजीको अपना ईश्वर जानकर उनकी सेवा करने लगे इतनी कथा सुनाकर मैत्रेयजी बोले कि हे विदुर धर्मकी मरिष्यानाम स्त्रीसे क्रोध व लोभ व मृत्युआदिक बहुत से लोग उत्पन्न हुये थे उनका नाम संस्कृत भागवतमें लिखाहै कि जो कोई इस अध्याय को चित्त

लगाकर कहै व सुनै वह सब पापोंसे छूटकर परमपदको पावेगा॥

आठवां अध्याय।

सतीका हिमाचलकेयहां पार्वती नामसे जन्म लेना व उनका महादेवजीके साथ विवाह होना॥

मैत्रेय ऋषीश्वरने कहा हे विदुर अब हम सतीजी की कथा जिसतरह दूसरा जन्म पार्वतीका लेकर महादेवजीको मिलीथीं वर्णन करते हैं सुनो सतीने तन छोड़ती समय महादेवजीके चरणोंका ध्यान हृदयमें रखकर ऐसा प्रण किया था कि अब फिर मेरा जन्म हो तो शिवजीकी सेवामें रहकर एकक्षण उनका साथ न छोडूंगी सो वह तन छोड़ने उपरान्त हिमाचल पर्वतके यहां पार्वती नाम से जन्म लिया जब वह सयानी हुई तब हिमाचलने अपनी कन्यासे पूछा कि तेरा विवाह किसके साथ करूं पार्वतीको अपने पिछले जन्मका हाल याद था इसलिये पार्वती हिमाचल से बोलीं कि मेरा विवाह महादेवजी के साथ करदेव उसने कहा शिवजी सब देवतोंके मालिक होकर मेरी कन्या किस तरह अंगीकार करैंगे तब पार्वतीने उत्तर दिया कि सिवाय महादेवजीके दूसरे से मैं विवाह नहीं करूंगी वह मुझे अंगीकार करैं तो मेरे पति होवैं नहीं तो वनमें जाकर तप करके यह तन अपना फिर छोड़दूंगी ऐसा कहके पार्वतीने इस इच्छासे कि महादेवजी के साथ मेरा विवाह हो वनमें जाकर तप करना आरम्भ किया सो एकदिन नारदजीने पार्वतीके प्रीतिकी परीक्षा लेनेवास्ते वहां जाकर पूछा हे पर्वतराजकी कन्या तुम इस वन में किस इच्छासे तप करके इतना दुःख उठाती हो पार्वतीने नारदजीको परमेश्वरका परमभक्त जान कर दण्डवत् करके विनय किया हे मुनिनाथ मैं महादेवजीसे विवाह होने वास्ते इच्छा रखकर तप करतीहूं यह वचन सुनकर नारदजी बोले हे पार्वती तुम बड़ी बौरही व मूर्ख हो शिवजी अपने शरीरमें राख व धूर लगाये सांप व बिच्छू लपेटे मुंडोंकी माला गलेमें डालेहुये भूत व पिशाच अपने साथ रखते हैं व उनको देखकर मनुष्य मारे डरके भागजाते हैं तुम उनसे विवाह करनेकी चाहना क्यों करती हो यह बात सुनकर पार्वतीने कहा वह कैसेही अवगुणोंमें भरे हों पर मेरा चित्त उन्हींसे प्रसन्न है ऐसा

सुनकर फिर नारदजी बोले कि हे पार्वती इन्द्र व गन्धर्व व कुबेर व वरुण आदिक अच्छे अच्छे देवतोंको तुम किसवास्ते नहीं चाहती हो यह वचन सुनतेही पार्वतीने हँसकर कहा हे मुनिनाथ मन एकहै दो चार नहीं होते सो एकचित्त मेरा शिवजीके चरणोंमें जा लगा वहांसे वह निकल नहीं सक्ता जो दूसरेकी तरफ लगाऊं मेरी इच्छा शिवजी पूर्ण करेंगे दूसरेकी चाहना मुझको नहीं है यह बात सुनकर नारदजी बहुत प्रसन्न हुये व पार्वती को आशीर्वाद देकर बोले तुम्हें महादेवजी अवश्य मिलेंगे तुम किसीके कहने व भुलावा देनेमें मत आना जब नारदजीने सच्ची प्रीति पार्वतीकी देखी तब उसी समय शिवजीके पास जाकर पार्वती का मनोरथ व प्रेम वर्णन किया जब महादेवजीने सुना कि सती हिमाचल पर्वतके घर जन्म लेकर मेरे साथ विवाह होनेवास्ते तप करती हैं तब उन्हेंभी प्रीति उसकी दशगुणी अधिक हुई इसलिये महादेवने हिमाचलसे जाकर कहा तू अपनी कन्याका विवाह हमारे साथ करदे हिमाचलने यह बात सुनतेही बड़ी प्रसन्नतासे मान लिया व यह संदेशा पार्वतीको जहांपर बैठी तप करती थीं जाकर कहा यह बात सुनतेही पार्वतीजी बहुत प्रसन्न हुईं उसीसमय हिमाचलने पार्वतीको वनसे लाकर विधिपूर्वक शिवजीके साथ विवाह कर दिया व बहुतसे रत्नादिक व वस्तु दहेजमें देकर वर व कन्याको विदा किया तबसे पार्वती जी एकक्षण महादेवजीसे अलग न होकर उनकी अर्धांगी बनी रहती हैं॥

नवां अध्याय।

उत्तानपाद के बेटे ध्रुवजीका तप करने वास्ते वनमें निकल जाना॥

मैत्रेयजी बोले हे विदुर राजा स्वायम्भुवमनुकी तीनों कन्याओंका हाल मैंने तुमसे वर्णन किया अब उनके बेटोंका समाचार कहताहूं सुनो स्वायम्भुवमनुके दो बेटे उत्तानपाद व प्रियव्रत उत्पन्न हुये सो प्रियव्रतकी सन्तानकी कथा पांचवें स्कन्धमें आवेगी व उत्तानपादके पुत्रोंका हाल इसतरह पर है कि स्वायम्भुवमनुके तन त्याग करने उपरान्त उत्तानपाद उनका बेटा राजा हुआ कदाचित् कोई इस बातका सन्देह करै कि स्वायं-

म्भुवमनुके राजगद्दीपर प्रियव्रतने राज्य किया उत्तानपाद किसतरह राजा हुआ सो हाल उसका इसतरह पर है कि प्रियव्रत राजा स्वायम्भुवमनुकी निज राजगद्दीपर बैठ उत्तानपाद उन्हींके देशमें दूसरे नगरका राजा हुआ था और उसके दो स्त्री सुनीति व सुरुचि नाम थीं सो राजाको दोनों स्त्री से सन्तान उत्पन्न होकर बड़ी रानीके बेटेका नाम ध्रुव व छोटी रानीके पुत्रका नाम उत्तम था सो राजा छोटी रानी व उसके बेटेसे बहुत प्रीति व बड़ी रानी व उसके पुत्रसे कम प्रेम रखते थे एक दिन राजा अपनी छोटी रानी समेत राजसिंहासन पर बैठे हुये उत्तम उसके बेटेको गोदमें लिये प्यार करते थे उसीसमय ध्रुव बेटा बड़ी रानीका जो पांच वर्षका था खेलता हुआ वहां पर पहुँचा व उसने चाहा कि हमभी राजाकी गोदमें जाके उत्तम अपने भाईके बराबर बैठें सो राजाने ध्रुवकी मातापर कम प्रीति रखने व छोटी रानीके डरसे कि वह उससमय वहां बैठी थी ध्रुवको अपने पास नहीं बैठाला यह देखकर छोटी रानीने ध्रुवसे कहा कि तैंने पिछले जन्म तप व स्मरण नारायणजीका नहीं किया इसलिये तू अभागी उत्पन्न हुआ कदाचित् तू पहिले जन्म में तप करता तो मेरे पेट से जन्म लेकर राजाकी गोदमें बैठनेयोग्य होता सो तुझे इस जन्ममें राजसिंहासन पर बैठना बहुत कठिन है अबभी तू जाके परमेश्वरका भजन व स्मरण कर जब तेरा भाग्य उदय हो तब तू मेरे पेटमें जन्म लेकर राजाके आसनपर बैठना किसवास्ते कि मैं पटरानी हूं सिवाय मेरे बेटेके दूसरी रानीका पुत्र राजसिंहासन पर नहीं बैठसक्ता राजा उत्तानपाद ने भी यह बात रानीकी सुनकर जब ध्रुवका कुछ आदर नहीं किया तब ध्रुवको यह बात सवतेली माताकी तीर के समान कलेजे में लगी इसलिये ध्रुव वहांसे रोता हुआ अपनी माता के पास आया सुनीति उसकी माताने उसे रोते देखकर अपनी गोदमें उठालिया व कहनेलगी हे बेटा तुझको किसने मारा जो तू इतना रुदन करता है ध्रुवको अधिक रोने से ऐसी हिचकी लग गई थी कि थोड़ी देरतक उससे बोला नहीं गया जब रोना उसका कम हुआ तब ध्रुव अपनी मातासे बोला कि इससमय हम राजाके पास गये तो वह उत्तम हमारे

भाईको गोदमें लिये बैठेथे सो हमने भी चाहा कि पिताकी गोदमें जाकर बैठें पर राजाने हमको अपनी गोदमें नहीं बैठाला तब उत्तमकी माताने हमसे कहा कि तू परमेश्वरका भजन व स्मरण पिछले जन्ममें नहीं करके प्रारब्धहीन उत्पन्न हुआ इसलिये तू राजाके गोदमें बैठने योग्य नहीं है अब भी जाकर परमेश्वरका तप करके मेरे पेटसे जन्म ले तब राजा के आसन पर बैठना सुनीति यह बात सुन कर बोली हे बेटा राजाकी छोटी रानी सच कहतीहै कदाचित् तू पिछले जन्म परमेश्वर का तप किये होता तो मेरे पेटसे जन्म न लेता इसलिये अब भी तू बीच शरण नारायणजीके जाकर तप व स्मरण उनका कर तो तेरा मनोरथ पूर्ण होगा पहिले ब्रह्माजी तेरे परदादा से भी कठिन काम उत्पन्न करने संसारका नहीं होसक्ता था जब उन्होंने तप व ध्यान नारायणजीका किया तब परमेश्वरकी कृपासे उनको ज्ञान प्राप्त हुआ व ज्ञानके प्रतापसे ब्रह्माने संसारकी रचना की व स्वायम्भुवमनु तेरे दादाने परमेश्वरका तप करके सन्तान धर्मात्मा पाया सो सब मनोरथ मनुष्यका नारायणजीकी कृपासे पूर्ण होता है परमेश्वरका तप करनेसे तेरी कामना भी प्राप्त होगी राजा मुझे अपनी दासी बराबर भी नहीं समझते जो बात मेरी सवति कहतीहै वही करते हैं मैं जानती हूं राजाके न रहने उपरान्त मेरी सवति तुझे देशसे निकाल देवेगी यह बात सुनते ही ध्रुवने अतिलज्जित होकर नारायणजी के खोजमें घरसे निकल कर वनका रास्ता लिया पर वह मनमें इस बातका शोच विचार करता जाता था कि मैं अज्ञान बालक परमेश्वरका पता किसतरह पाऊँ जो उनकी शरणमें जाकर अपनी कामनाको पहुँचूं उसी समय राहमें नारदजी ने आगे से आनकर मनमें विचारा कि यह बालक थोड़ी बात अपनी माता के कहनेसे दुःखित होकर परमेश्वरको ढूंढ़ने निकला है सो हम इसकी परीक्षा लेवें कि यह अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ है या नहीं ऐसा विचारकर नारदजी बोले हे राजकुमार अज्ञान तू किसवास्ते अपने घरसे निकल आया बाल्यावस्थामें तुझे ऐसा क्रोध करना न चाहिये बालकको कोई दुर्वचन कहकर फिर प्यार से बुलावे तो वह उसके पास चलाजाता है सो

तैंनें लड़कोंका स्वभाव छोड़कर वनका रास्ता लिया ऐसी बात करना तुझे उचित नहीं है हम तुझको तेरे बापके पास ले चलते हैं राजगद्दी या जिस वस्तुको तुझे इच्छा हो हम दिलवा देवेंगे और जो तू नारायणजीको ढूंढ़ताहै सो उनका मिलना सहज मत समझना बहुत से योगीश्वर व तपस्वीलोगोंने बीचखोज नारायणजीके तप व जप करके शरीर अपना जला दिया तिसपर भी उनको नहीं पाया तू वृथा उनको ढूंढ़ने क्यों जाता है और हम नारदमुनि परमेश्वरके भक्त व सेवक हैं तुझको तेरे पिताके पास ले जाकर जो कुछ हम कहैंगे सब बात हमारी तेरा बाप मानेगा ध्रुवने यह वचन नारदजीका सुनकर विचार किया मैंने सुना था कि नारदमुनि परमभक्त नारायणजीके हैं देखो हम अभी नारायणजीके खोजमें घरसे निकले सो ऐसे महात्मा व हरिभक्तका दर्शन पाया जब मैं बीच तप व स्मरण परमेश्वरके लीन होऊंगा तब न मालूम और कैसे कैसे अच्छे पदार्थ मुझे मिलैंगे यह बात विचारकर ध्रुवने नारदजी को दण्डवत् करके विनय किया महाराज आप परमभक्त नारायणजीके हैं इसलिये मेरी सहायता कीजिये जिसमें परमेश्वरके चरणोंतक जल्दी पहुँच जाऊं आपको परमेश्वरकी राहपर जानेसे मुझे फेरना उचित नहीं है जो रास्ता नारायणजीके मिलनेका सहज हो वह मुझे दिखलादेव और मैं क्षत्रियका देटाहूं अब विना दर्शन किये नारायणजीके फिर कर अपने घर नहीं जाऊंगा जब नारदजीने देखा कि यह लड़का बीचभक्ति परमेश्वरके सच्चा व ज्ञान सिखलावने योग्यहै तब नारदमुनिने ध्रुवसे कहा हे बेटा तुझे व तेरे ज्ञानको धन्यहै हम तेरी परीक्षा लेते थे अब तुझको नारायणजीके मिलनेकी राह दिखलाते हैं सुन तू यहांसे मथुरापुरी में जाकर यमुनाकिनारे जहां श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथ आठोंपहर रहते हैं कुशका आसन बिछाकर उत्तरमुँह बैठ महिमा व बड़ाई यमुनाजीकी वैकुंठसे अधिक है और तुम नित्य यमुनाजीमें त्रिकालस्नान करना वहां नहानेसे तेरे सब पाप जन्म जन्मांतरके छूटजावेंगे और हरसायत बीचध्यान नारायणजीके लवलीन रहना व स्वरूप उन का इसतरह पर है श्यामरंग कमलनयन चतु-

भुज मुकुट जड़ाऊ पहिने मकराकृत कुण्डल धारण किये चन्द्रमाकी तरह शोभायमान वैजयन्ती माला व कौस्तुभमणि गलेमें डाले मन्द मन्द मुसकराते हैं सो तुम नित्य स्नान करने उपरान्त आसनपर बैठकर ऐसे रूप का ध्यान मन लगाके करना और फल या दूब या जल जो कुछ मिले उसीसे धूप दीप आदिक परमेश्वरको कर देना व बारह अक्षरका मन्त्र नारदमुनिने ध्रुवको उपदेश करके कहा इसी मन्त्रको जपना व भोजन कम करके पानी थोड़ा पीना श्रीनारायणजी दयालु होकर तुझे दर्शन देवेंगे व कामना तेरी पूरी होकर तू बड़ी पदवीको पहुँचेगा हरिभजन करनेसे संसार व परलोक दोनों जगहका सुख मिलताहै ध्रुवने स्वरूप व ध्यान नारायणजी व मन्त्र जपनेका हाल नारदमुनि से सुनकर बहुत प्रसन्न होके कहा आपने बड़ी दयासे परमेश्वरके मिलनेका सहज मार्ग मुझे दिखला दिया मैं तो जानता था कि नारायणजी का घर किसी नगर या गांवमें न मालूम कितनी दूर होगा वहां जाकर उनको ढूंढ़ता सो आपने स्मरण व ध्यान करना उनका मेरे हृदयमें बतलादिया अब मैं तुम्हारी आज्ञानुसार जप व ध्यान करके परमेश्वरको मिलूंगा यह बात कहकर ध्रुव नारदमुनिको दण्डवत् करने उपरांत मथुराको चलागया व नारदजी ने वहांसे राजा उत्तानपादके पास आनकर क्या देखा कि राजा व ध्रुवकी माता दोनों रोते व चिन्ता करते आपसमें कहते हैं कि हमलोगोंने अपने पांचवर्षके बालकको जो कुछ ज्ञान नहीं रखता तप करनेका उपदेश देकर वनमें भेज दिया न मालूम वह विचारा कहांगया व उसकी क्या गति हुई होगी बड़े बड़े योगीश्वर व ज्ञानियोंको परमेश्वरका मिलना कठिनहै उस बालक अज्ञानको भगवान् किसतरह मिलेंगे व राजा अपनी छोटी रानीपर क्रोध करके कहते थे कि तैंने कठोर वचन कहकर मेरे बेटेको वनवास दिया जैसेनारदजी वहां पहुँचे वैसे राजाने दण्डवत् करके बड़े सन्मानसे उनको बैठाल कर पूंछा कि महाराज आप कहांसे आते हैं नारदमुनिने कहा हम अपना हाल पीछे से कहेंगे पर इस समय तुमको बहुत उदासीन व चिंतामें देखते हैं इसका कारण कहो राजा बोले हे मुनिनाथ मेरी छोटी रानीने ध्रुव मेरे बेटेको

जो अज्ञान बालक था ऐसी लगनी बात कही कि वह दुःखित होकर न जानें कहां निकलगया सो हम उसीके शोकमें व्याकुलहैं न मालूम उस बालक की क्या दशा हुई होगी कोई शेर व भालू आदिक उसे खालेगा मुझसे बड़ी भूल हुई जो स्त्रीके वश होकर उसका निरादर किया यह बात सुन कर नारदजी बोले हे राजा तुम चित्त अपना उदास मत करो तुम्हारा बेटा मुझे राहमें मिला था सो मैंनें बहुत उसको कहा व समझाया कि तू अपने घर मेरे साथ फिर चल परंतु उसने नहीं माना जब मैंने देखा कि परमेश्वर के तप व स्मरणमें इसका सच्चा प्रेम है तब हमने उसको नारायणजीके मिलनेका उपाय बतलाकर मथुराकी तरफ भेज दिया उसकी अब तुम कुछ चिंता मत करो वह ऐसी पदवीको पहुँचेगा कि आजतक तुम्हारे पुरुषोंको भी नहीं प्राप्त हुई है और ध्रुवने नारायणजीकी शरण पकड़ी अब उसको कोई नहीं दुःख दे सक्ता और तुमने अपनी अज्ञानतासे स्त्रीके वश होकर पुत्रका निरादर किया नारदजी यह बात कहकर ब्रह्मलोकको गये व राजा को नारदमुनिके कहनेसे धैर्य हुआ पर मन उसका ध्रुवकी तरफ लगा रह कर राज्यकाजमें नहीं लगता था और ध्रुव मथुरामें जाकर यमुनाकिनारे कुशके आसनपर बैठा व नारदजीकी आज्ञानुसार परमेश्वरका तप व ध्यान करनेलगा आदिमें ध्रुव तीसरे दिन एकसमय भोजन करता था एक महीने इसतरह नियम रखकर उसके उपरांत सातवें दिन थोड़ासा खानेलगा फिर तीन महीनेतक वृक्षकी पत्ती खाकर रहा चौथे महीने में पत्ती खाना भी त्याग करके पानी पीकर बिताया पांचवें महीनेमें पानी पीना भी छोड़कर जितनी हवा मुँहमें जाती थी उसीके आहारपर रहा व पांच महीनेतक एक पैरसे खड़े हुये उसी मंत्रको जपकर ध्यान नारायणजीके स्वरूपका किया सो शरीर ध्रुवका लकड़ीके समान सूखगया परंतु मुखारविंद उसका सूर्यकी तरह चमकने लगा छठे महीने ध्रुव बीचध्यान परमेश्वरके मुँह बन्द करके ऐसा लवलीन हुआ कि अन्तःकरण उसका श्यामसुन्दरके स्वरूपसे भर कर श्वास लेनेकी जगह भी न रही जब ध्रुवने इसतरह तप करके अपनी श्वास को रोकलिया तब तीनों लोकमें चलना हवाका बन्द होगया जब

पवन न चलनेसे सब जीव दुःखी हुये तब ब्रह्माने सब देवतों समेत नारायणजीके पास जाकर विनय किया हे त्रिलोकीनाथ हवा बन्द होने का क्या कारणहै श्यामसुन्दर बोले कि ध्रुवने अपने तपकी सामर्थ्यसे पवनको बांधलिया इसलिये यह दशा हुईहै सो अब हम जाके ध्रुवको अपना दर्शन देकर हवाको छोड़ देतेहैं ॥

दशवां अध्याय ।

श्यामसुन्दरका ध्रुवको नारायणरूप धारण करके दर्शन देना ॥

मैत्रेयजीने कहा हे विदुर श्रीभगवान् यह बात देवतोंके कहने उपरान्त जिस स्वरूपका ध्यान ध्रुव करता था उसी रूपसे गरुड़ पर सवार होकर ध्रुव के सन्मुख जाके क्षणभर खड़ेरहे पर उससमय ध्रुव अपनी आंख बन्दकिये परमेश्वरके ध्यानमें ऐसा लीन था कि नारायणजीके आनेका हाल न जानकर उसने आंख अपनी नहीं खोली तब श्यामसुन्दरने स्वरूप अपना ध्रुवके अन्तःकरण व ध्यानमेंसे बाहर खींचलिया तो जब ध्रुवने परमेश्वरका स्वरूप अपने हृदयमें न देखा तब घबराकर आंख खोलदिया तो क्या देख पड़ा कि जिस मूर्तिका ध्यान मैं करता था वही स्वरूप सांवली मूरति मोहनी मूरति मेरे सामने खड़ीहै तब ध्रुवने उस परब्रह्म परमेश्वरकी परिक्रमा लेकर दण्डवत् किया व उनके चरणों पर शिर रखकर चाहता था कि स्तुति नारायणजीकी करै फिर उसने ऐसा विचारा कि जिनकी महिमा ब्रह्मा व शेषनाग व गणेशजी वर्णन नहीं करसके मैं अज्ञान बालक किसतरह उनकी स्तुति करूं इसी विचारमें ध्रुव चुपचाप हाथ जोड़े परमेश्वरके सामने खड़ारहा व मुखारविन्द उनका बड़े प्रेमसे देखने लगा तब नारायणजीने जाना अभीतक ध्रुवको इतना ज्ञान नहीं है जो मेरी स्तुति करसके यह विचारकर त्रिलोकीनाथने कृपा व दयाकी राहसे जब शंख अपना ध्रुवके मुख व कपोलोंमें छुआदिया उसके छुआतेही ध्रुवके हृदयमें ज्ञान व बुद्धिका प्रकाश होकर उसको सब विद्या याद होगई तब ध्रुवने हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ जबतक तुम्हारी कृपा व दया न हो तबतक कोई आपके चरणोंका दर्शन नहीं पानेसक्ता ब्रह्मादिक देवतों को भी ऐसी

सामर्थ्य नहीं है जो आपका गुण वर्णन करसकैं और आप स्तुति करनेकी कुछ इच्छा न रखकर अपनी मायासे उत्पत्ति व पालन व नाश तीनों लोकका करते हैं और सब जीव ब्रह्मासे लेकर चिउँटीतक तीनोंलोक में तुम्हारी मायासे उत्पन्न हुये पर सबके मालिक परब्रह्म परमेश्वर त्रिलोकी-नाथ आपहैं ब्रह्माभी तुम्हारे भेदको नहीं पहुँचसक्ते जो कुछ स्तुति आपकी वर्णन करसकैं और संसार में स्त्री व पुत्रका मोह बबूररूपी वृक्ष व तुम्हारे चरणोंकी भक्ति कल्पतरुकेसमान समझनी चाहिये जिससे मनुष्यकी कामना सब पूर्ण होतीहैं और मैं माता व पितासे दुःखित होकर अपने अर्थके वास्ते तुम्हारी शरण आया था सो आपने दयालु होकर अपने दर्शन से मुझे कृतार्थ किया बड़ा भाग्य उन लोगोंकाहै जो निष्काम आपका तप व जप करते हैं व विना दया आपके किसीको ज्ञान नहीं प्राप्त होता जब इस प्रकारसे ध्रुवने बहुत स्तुति नारायणजी की करी तब श्यामसुन्दर बोले हे ध्रुव हम तुझसे बहुत प्रसन्न हुये कुछ वरदान मांग यह बात सुनकर ध्रुव बोला हे दीनदयालु जब तुम्हारे चरणोंका दर्शन मैंने किया तब दूसरी कौन इच्छा मुझे मांगनेकी बाकी रही केवल आपके चरणोंमें भक्ति व प्रेम चाहताहूं यह वचन सुनकर नारायणजी अन्तर्यामीने कहा हे ध्रुव तैंने राजगद्दी मिलनेवास्ते मेरा तप किया सो हमने तुझको राजसिंहासन दिया अब तू मेरी आज्ञासे नगरमें जा व जिसने तुझको ताना मारा था उसके सा-मने छत्तीस हजार वर्ष राज्य कर जो तुझे अभागी कहतीथी वह और उत्तम बेटा जिसके पास तुझे राजाने गोदमें नहीं बैठालाथा तेरी सेवा करेगा व तेरा बाप तुझे राजगद्दी पर बैठालकर तप करनेके वास्ते वनमें चलाजावैगा व उत्तम तेरे भाईको शिकार खेलनेके समय वनमें एक यक्ष कुबेरदेवताका नौ-कर मारडालैगा उसी चिन्तामें उत्तमकी माता भी वनमें जलकर मरजावैगी व जब तू शरीर त्याग करैगा तब हम ब्रह्मलोकसे भी ऊंचे ध्रुवलोकमें तुझे रहनेके वास्ते स्थान देवैंगे वहां तू महाप्रलय तक स्थिर रहैगा व चन्द्रमा व सूर्य व सब तारागण तेरी परिक्रमा किया करैंगे व महाप्रलयके अन्तमें तेरी मुक्ति होगी व मेरे भक्तोंकी कोई बराबरी नहीं करसक्ता व उनकी कोई

इच्छा बाकी नहीं रहती और तुम सदा हमारी कथा सुनकर पिछले धर्मात्मा राजाओं का हाल जानना जिससमय भगवान्‌जी ने यह वरदान ध्रुव को दिया उस समय देवतालोगोंने प्रसन्न होकर नारायणजी व ध्रुवके ऊपर फूल बरसाये व बड़ाई भाग्य ध्रुवकी किया जब नारायणजी यह वरदान देकर ब्रह्मलोकको सिधारे तब फिर हवा चलनेलगी व तीनोंलोकके जीवों ने पवन बहने से सुख पाया व ध्रुव वहांसे घरको चला पर राहमें यह चिन्ता व विचार करता जाता था कि देखो मुझसे बड़ी भूल हुई जो नारायणजीका दर्शन पाकर फिर मैंने राजगद्दी अंगीकार किया मुझे ऐसा मालूम होताहै कि देवतोंने भुलावा देकर मेरा ज्ञान हरलिया जिस में यह विरक्त होकर नारायणजी के शरणमें न रहे या पितरोंने यही बात समझा हो किस वास्ते कि यह वचन संसारमें प्रसिद्धहै कि जब कोई मनुष्य बीच ध्यान परमेश्वरके होताहै तब इन्द्रादिक देवता उसके भजन व स्मरण में विघ्न डालते हैं इसी तरह चिन्ता करता हुआ ध्रुव अपने नगरके निकट पहुँचकर एक बागमें ठहरा सो वहांके मालीने जाकर राजासे कहा राजा उसके कहनेका विश्वास न करके बोले कि ध्रुव घरसे बहुत उदास होकर परमेश्वरका तप करनेवास्ते निकला था किसतरह आया होगा उसीसमय नारदजीने वहां आकर कहा हे राजन् ध्रुव तुम्हारा बेटा नारायण जीका दर्शन पाकर अपने मनोरथको पहुँच आया सो तुम्हें यहां बैठें रहना उचित नहीं है चलो उसको आदर भावसे ले आवैं नारदमुनिके कहनेसे राजाको विश्वास होकर बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ सो राजाने एक हार रत्नका मालीको देकर उसी समय उत्तम अपने बेटा व दोनों रानी व नारदजी समेत बागमें जानेकी तय्यारी की व बाजन खुशीके बजाते हुये बड़ी धूम धामसे ध्रुवके पास चले जब नगरके लोगों ने सुना कि ध्रुव परमेश्वरसे मिल आया उसका दर्शन करना बड़ापुण्यहै तब उस नगरके स्त्री व पुरुष छोटे व बड़े अपनी अपनी तय्यारी करके गाते व बजाते वास्ते करनेदर्शन ध्रुवजीके गये जब सब कोई वहां पहुँचे तब उन्होंने सवारी पर से उतरकर ध्रुवजीका दर्शन जो अपने शरीर व शिरके बालोंमें राख व

धूल लगाये व जटा बढ़ाये बैठे थे किया जब ध्रुवने उन लोगोंको देखा तब नारदजी व राजाके चरणों पर गिरके दण्डवत् किया व राजाने बड़े प्रेमसे ध्रुवको गोदमें उठाकर छातीसे लगाया व अपने आंसूसे उसके मुँहको धोदिया फिर ध्रुवने पहिले छोटी रानीके पास जिसने उसको ताना मारा था जाकर साष्टांग दण्डवत् करके कहा हे माता तुम्हारे उपदेशसे मैं निकल गया था सो नारायणजीके दर्शन मिलने से सब मनोरथ मेरे पूर्ण हुये फिर ध्रुवने सुनीति अपनी माताको दण्डवत् करके जितने छोटे बड़े पुरवासी उनके दर्शनकेवास्ते आये थे यथायोग्य सबका शिष्टाचार किया फिर राजा उत्तानपाद ध्रुवको अपने साथ हाथीपर बैठालकर ब्राह्मण व याचकों को दान व दक्षिणा देते व द्रव्य लुटाते राजमन्दिरमें ले आये व हजामत बनवाकर स्नान करनेके उपरान्त बहुत उत्तम भूषण व वस्त्र उन्हें पहिनाया व नारदजी वहांसे ब्रह्मलोकको गये व राजाने लाखों ब्राह्मण खिलाकर बड़ी खुशी मनाया व पुरवासियोंने भी अपने अपने घर आनन्द मचाया व सुनीति ध्रुवकी माताको परमआनन्द प्राप्त हुआ इतनी कथा सुनाकर मैत्रेयजीने कहा हे विदुर जिसके ऊपर परमेश्वर प्रसन्न होते हैं उससे सब खुश रहते हैं और श्यामसुन्दरके विमुख रहनेसे पिता व भाई भी शत्रु हो जाते हैं व ध्रुवका चित्त धर्ममें तत्पर देखकर राजा उससे बहुत प्रसन्न रहते थे सो कुछ दिन उपरान्त राजाने हृदय में विचारा कि ध्रुव अब राज्य करने के योग्य हुआ अब इसे राजगद्दी देकर परमेश्वरका तप करते तो हमारा परलोक बनता ऐसा विचारकर राजाने अपने मंत्रियोंसे पूंछा जब सब किसीको यह बात भली मालूम हुई तब राजाने अच्छा मुहूर्त पूंछकर ध्रुव को राजसिंहासन पर बैठाल दिया व राज्यकाज उनको सौंपनेके उपरान्त आप वनमें जाकर तप व ध्यान नारायणजीका करनेलगे व ध्रुवजीने राजगद्दीपर बैठकर सातोंद्वीपका ऐसा राज्य किया जिनके धर्म व न्यायसे सब प्रजा आनन्द रहकर बाघ व बकरी एकही घाट पानी पीते थे व उनके राज्यमें कोई दुःखी व दरिद्री न होकर वक्त चाहने प्रजाके पानी बरसता था ध्रुवजीने उत्तम अपने भाईको राज्यकाज का अधिकार दिया था व

उत्तम भी ध्रुवजीकी आज्ञानुसार सब काम करके बड़े प्रेमसे उनकी सेवा करता था एक दिन उत्तम ध्रुवसे आज्ञा लेकर वनमें शिकार खेलने गया जब एक मृगके पीछे घोड़ा दौड़ता हुआ कुबेर देवताके विहारकी जगह जा पहुँचा और उसके साथियोंने वह स्थान मल व मूत्र करके भ्रष्ट कर दिया तब यक्ष कुबेरके नौकर बोले तुम संसारी मनुष्य होकर देवलोकमें किसवास्ते आये हो इसी बातपर उत्तम भी अपने राज्यके अभिमानसे कुछ दुर्वचन बोले इसी वास्ते एक यक्षने जो बलवान् था उत्तमको मार-डाला जब उसके साथियोंने आकर यह हाल ध्रुवसे कहा तब ध्रुवजी क्रोधवन्त होकर अपनी सेना समेत यक्षोंसे लड़ने चले व सुरुचि उत्तमकी माता यह हाल सुनकर रोती व विलाप करती उसकी लोथ ढूंढ़नेवास्ते वनमें गई सो आग लगनेसे वहां जलमरी और जिससमय राजा ध्रुव अ-पनी सेना समेत बीच वन यक्षोंके पहुँचे उससमय एक लाख तीसहजार यक्ष नौकर कुबेर देवताके अपने अपने शस्त्र लेकर राजा ध्रुवके सन्मुख आये तब राजाने अपने सेनापतियोंसे कहा तुमलोग पहिले अलग खड़े होकर युद्धका तमाशा देखो हमको लड़नेदेव ऐसा कहकर ध्रुवजी अपना रथ यक्षोंके सन्मुख लेगये यक्षोंने राजाको देखकर अपना अपना शस्त्र उनपर चलाया सो ध्रुवजीने उनका सब वार बचाया व अपना धनुष चढ़ाकर ऐसे बाण यक्षों को मारे कि उनमेंसे कुछ मरगये व बाकी लोग घायल होकर गिरपड़े व राजा ध्रुवकी विजय हुई यह दशा यक्षोंकी देखते ही एक यक्षने जाकर कुबेरसे सब वृत्तान्त कहा जब कुबेरने अपने नौकरोंके घायल होने व मारेजानेका हाल सुना तब अपनी सेना साथ लेकर लड़ने वास्ते संग्रामभूमि में आये व कुबेरने ध्रुवजी से कहा तू मनुष्य होकर देवतोंको दुःख देताहै मैं तुझे मारूंगा ध्रुवजी बोले मैं केवल परमेश्वरको देवता व मालिक जानताहूं जिनके बनाये हुये देवता व मनुष्य सब जीव हैं दूसरेको कुछ माल नहीं समझता फिर कुबेरने बहुतसे तीर ध्रुवको मारेसो ध्रुव ने वह सब बाण अपने तीरोंसे काटडाले तब कुबेरने ध्रुवजीसे कहा तुम्हारा गुरु धन्यहै जिसने ऐसी विद्या तुझे पढ़ाई तुम बताओ किसके चेले हो ध्रुवने उत्तर

दिया कि जिसके प्रतापसे तुम देवता हुये हो वही मेरा गुरु व मालिकहै यह बात सुनतेही जब कुबेरने क्रोधवन्त होकर नारायणशस्त्र ध्रुवके मारनेवास्ते उठाया और ध्रुवनेभी नारायणशस्त्र निकाला तब ब्रह्माजीने विचार किया कि नारायणशस्त्र चलने से बड़ा अनर्थ होकर संसारीजीव मारे जावेंगे व ध्रुव परमेश्वरके भक्त व कुबेरजी देवता हैं इन दोनोंमें कोई मर नहीं सक्ता ऐसा विचारकर ब्रह्माजीने स्वायम्भुवमनु ध्रुवजीके दादा व नारदजीसे कहा कि तुमलोग जाकर कुबेर देवता व ध्रुवजीको समझाके उन दोनोंमें सलाह करादेव उसी समय रणभूमिमें जहांपर ध्रुव लड़ रहेथे जाकर उन्हें प्रेमसे पुकारा जब ध्रुवजीने देखा कि स्वायम्भुवमनु हमारे दादा आये तब युद्ध करना छोड़कर रथ परसे उतरपड़े व स्वायम्भुवमनुको साष्टांग दण्डवत् किया ॥

ग्यारहवां अध्याय ।

ध्रुवजीका कुबेर देवतासे मिलाप करलेना व अपने पुत्रको राज्य देकर वनमें तपकरने वास्ते जाना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसे कहा कि जब ध्रुवने स्वायम्भुवमनुको दण्डवत् किया तब स्वायम्भुवमनु बोले हे ध्रुव तुम वैष्णव व परमेश्वरके भक्त हो सो हरिभक्तोंको क्रोध करना न चाहिये क्रोध करनेवाले अपनेको वैष्णव व साधु कहें तो यह कहना उनका झूठ समझो क्रोध करनेसे बहुत पाप होता है सो हे ध्रुव तुमने वैष्णव व राजा होने परभी कुछ न्याय नहीं किया किस वास्ते कि उत्तम तेरे भाईको जो उसकी मृत्यु आईथी एक यक्षने मारा उसके बदले तुमने एकलाख तीसहजार यक्षोंको घायल करके दुःख दिया उनमें कितने लोग मरगये यह बात तुमने अच्छी नहीं किया राजाको न्याय न करनेसे अधर्म होताहै और सबकोई अपनी मृत्युसे मरते हैं एक बहाना व अपयश दूसरेको होजाता है इसका एक इतिहास हम कहतेहैं सुनो कि सारस्वत आदि कल्पमें संसारी जीव बहुत उत्पन्न हुये व तबतक मृत्यु उत्पन्न नहीं हुई थी इसलिये जब पृथ्वी संसारी जीवोंके बोझेसे पानी में डूबने लगी तब ब्रह्माने एक कन्या मृत्युनाम उत्पन्न करके उसे समझा कर कहा तू संसारमें जाकर बूढ़े व रोगी मनुष्योंको मारडाल पर वह कन्या यह बात न अंगीकार करके परमेश्वरका तप करने लगी तब नारायणजीने

उस कन्या मृत्युरूपीसे कहा तू जगत्में जाकर आयुर्दा बीतने उपरान्त सब जीवोंको मार तुझे कुछ अपयश न होकर कोई कहैगा तपादिक रोगसे मरा कोई कहैगा सांप काटनेसे मरगया इसीतरह अनेक प्रकारसे दूसरेको दोष लगावैंगे यह बात नारायणजीकी सुनतेही जब उस कन्याने संसारमें आनकर लोगोंको मारना आरम्भ किया तब पृथ्वीका बोझ हलका हुआ सो तुमने परमेश्वरका भजन किया फिर उनकी सृष्टिको मारकर क्यों अपराध लेते हो ध्रुवने यह बात सुनतेही अतिलज्जित होकर लड़ना बन्द करके स्वायम्भुवमनुसे विनय किया महाराज मुझसे अपराध हुआ यह वचन सुनकर स्वायम्भुवमनु बोले हे ध्रुव तुम इस बातकी चिन्ता मत करो इनलोगोंके भाग्यमें इसी तरह मरना व दुःख पाना लिखाही था प्रबल होकर परमेश्वरकी इच्छानुसार सब बात होतीहै व नारदमुनिने कुबेरको समझाया देखो ध्रुवजीने स्वायम्भुवमनुके कहनेसे युद्ध करना छोड़ दिया तुमभी अपना क्रोध क्षमा करो सो कुबेरनेभी लड़ना बन्द किया फिर स्वायम्भुवमनु व नारदजीने कुबेरसे कहा पहिले तुम्हारे नौकरोंने उत्तम ध्रुव के भाईको वृथा मारा था इसलिये तुम अपने सेवकोंका अपराध उनसे क्षमा करावो कुबेरने यह बात सुनकर विनतीपूर्वक ध्रुवसे कहा हे राजन् हमारे नौकरोंसे अपराध हुआ जो तुम्हारे भाई को मारा उसके बदले जो चाहो सो हमसे दण्ड लेकर अपराध उनका क्षमा करो ध्रुव बोले आप देवताहैं हमको ऐसा आशीर्वाद दीजिये जिससे फिर मुझे क्रोध न होकर परमेश्वर के चरणोंमें भक्ति बनीरहे उत्तमके प्रारब्धमें इसीतरह मरना लिखा था कुबेर ने ध्रुवको इच्छापूर्वक वरदान देकर आपसमें मिलाप करलिया व स्वायम्भुवमनु व नारदजी इन दोनोंकी सलाह कराके जहांसे आये थे वहां चले गये कुबेरजी अपने स्थानपर पधारे व ध्रुवने अपने घर आकर विचार किया कि यह राज्य व धन व स्त्री व पुत्र संसारी व्यवहार स्वप्नेके समान झूठाहै व राजगद्दीपर रहनेसे काम व क्रोध व मोह व लोभ समय पाकर स्वभावमें प्रवेश करते हैं इसलिये इन लोगोंसे विरक्त होकर हरिभजन करना उचितहै ऐसा विचारकर ध्रुवजीने उत्कल अपने पुत्रको जो इला नाम स्त्री

से बहुत सुन्दर उत्पन्न हुआ था राजगद्दीपर बैठाल दिया व अपनी स्त्री समेत बदरिकाश्रममें जाकर बीच तप व ध्यान परमेश्वरके लीन हुये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले कि हे परीक्षित राजा युधिष्ठिर तुम्हारे दादा के यज्ञमें किसी ब्राह्मणने सोनेका थाल चुराया था सो लोगोंने कहा इस ब्राह्मणका हाथ काट डालो यह बात सुनके युधिष्ठिरने उस ब्राह्मणको राजा बलिके पास न्याय करनेके वास्ते भेज दिया तब राजा बलिने कहा कि जिस राजाके देशमें यह ब्राह्मण रहताहै उस राजाको दण्ड देना चाहिये राजाने इस ब्राह्मणको किसवास्ते इतना दान नहीं दिया जिसमें इसको चोरी करने की इच्छा न होती सो हे परीक्षित राजोंको इसीतरह पर धर्म रखना चाहिये उस ब्राह्मणका विधिपूर्वक हाल महाभारतमें लिखा है ॥

बारहवां अध्याय।

ध्रुवजीका अपनी दोनों माता सहित ध्रुवलोक में जाना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसे कहा कि जब ध्रुवका तनु त्यागनेका समय निकट पहुँचा तब श्रीभगवान्‌जीके गणोंने एक विमान बहुत अच्छा वहां लाकर ध्रुवसे कहा कि नारायणजीने यह विमान तुम्हारे वास्ते भेज दियाहै इसपर बैठकर ध्रुवलोकमें चलो यह बात सुनकर ध्रुवजीने विचारा कि सुरुचि मेरी छोटी माता जिसके ताना मारनेसे हम परमेश्वरका तप करके इस पदवीको पहुँचे वह गुरुके समान होकर मुझे कठोर वचन कहनेसे नरक भोगती है वहां मेरे अकेले जानेसे क्या धर्म रहैगा जो मैं सुख करूं व मेरी माता दुःख भोगै ध्रुवजी इसी शोचमें थे कि गणलोग उनके दिलका हाल जानकर बोले कि तुम किस चिन्तामें हो ध्रुवने कहा जिस माता पिताके ताना मारने से मैंने यह पदवी पाया सो हम चाहते हैं कि नारायणजी से कहकर उनकी मुक्ति करावैं गण बोले भगवान्‌जी ने आज्ञा दियाहै कि ध्रुवको उसकी दोनों माता समेत विमानपर बैठाल कर ले आवो सो वह दोनों पहिले तुमसे वहां पहुँचैंगी यह बात सुनतेही ध्रुवजी बड़े आनन्दसे अपनी स्त्रीसमेत दिव्यरूप होकर विमान पर चढ़के ध्रुवलोक में चले गये यह हाल देखकर देवतोंने ध्रुवजीके ऊपर फूलों की वर्षा किया व नारदजी उससमय प्राचीन

बर्हिष प्रचेतोंके बापको यज्ञ करते थे सो ध्रुवजीका विमान देखकर मारे आनन्दके नाचने लगे फिर नारदमुनिने यज्ञ कराने उपरान्त ध्रुवलोकमें जाकर कहा हे ध्रुव तेरा सब मनोरथ पूर्ण हुआ ध्रुवने नारदजीके चरणोंपर गिरके हाथ जोड़के विनय किया हे मुनिनाथ यह सब बड़ाई मुझे आपकी दया व कृपासे मिली तब नारदमुनि बोले कि जैसी कृपा तुझपर नारायणजीने किया ऐसी अटलपदवी दूसरेको मिलना कठिन है यह वचन कहकर नारदजी ब्रह्मलोकको चले गये व ध्रुवजी खुशी व आनन्द से रहकर वहां सुख भोगने लगे इतनी कथा सुनकर राजा परीक्षितने पूछा हे मुनिनाथ प्रचेतालोग कौन थे उनका हाल वर्णन कीजिये शुकदेवजी बोले हे राजा जब ध्रुवजी बदरिकाश्रमको गये तब उत्कल उनके पुत्रने बहुत दिनोंतक सातों द्वीपका राज्य करके सब प्रजाको प्रसन्न रक्खा फिर उन्होंनेभी ऐसा विचारा कि राज्य व धन व कुल व परिवार आदिक संसारी सुख स्वप्ने के समान हैं जिसतरह राजा ध्रुव मेरा पिता विरक्त होकर नारायणजीकी शरणमें जाके कृतार्थ हुआ उसीतरह मैं भी इस मायाजाल से छूटकर परमेश्वरका भजन करता तो क्या अच्छी बातथी पर घरवाले वैराग्य लेने व घर छोड़देनेके समय मना करैंगे इसलिये उत्तम बात यहहै कि मैं अपनेको बौरहोंकी तरह बनालूं जब सब लोग जानैंगे कि यह राज्य करनेके योग्य नहींहै तब उनके हाथसे अपना प्राण छुटाकर मैं परमेश्वरका स्मरण व तप अच्छीतरह करूंगा ऐसा विचारकर राजा उत्कल बौरहोंकी तरह बनकर बेप्रमाण बातें कहने लगा यह दशा उसकी देख कर घरवाले व कामदारों ने जाना कि यह विक्षिप्त होगया राज्य करने योग्य नहींहै तब सब किसीने सम्मत करके वत्सरनाम उसके छोटे भाईको जो ध्रुवकी दूसरी स्त्रीसे उत्पन्न हुआ था राजसिंहासन पर बैठाला व उत्कल बौरहोंके समान घरमें रहने लगा कुछ दिन इसीतरह बीते जब उत्कलने देखा कि कामकाज राजगद्दीका चल निकला तब उसने एक दिन घरसे निकलकर वनका रास्ता लिया व वनमें जाने उपरान्त बीच तप व ध्यान परमेश्वरके लीन होकर तनु अपना त्याग दिया॥

तेरहवां अध्याय।

बेनका राजा अंगके यहां ध्रुवजीके कुलमें उत्पन्न होना॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा कि अब हम ध्रुवके वंश का हाल जो उसके पीछे राजा हुये थे कहते हैं सुनो उसके वंशमें कई पीढ़ी उपरांत कि सबका नाम संस्कृत भागवतमें लिखाहै अंगनाम राजा हुआ उसके कोई बेटा नहीं था इसलिये उसने दुःखित होकर ब्राह्मण व ऋषीश्वरों से कहा कोई ऐसा उपाय करो कि जिसमें मेरे लड़का उत्पन्न हो ऋषीश्वरोंने राजासे यज्ञ कराके प्रसाद उसका राजाको देकर कहा तुम यह प्रसाद अपनी एक स्त्रीको खिला दो सो राजा ने सुनीथा अपनी रानीको खिला दिया उस प्रसादके प्रतापसे उसके लड़का हुआ उसका नाम ब्राह्मणोंने बेन रक्खा जब राजाने उस बालकको बहुत कुरूप शूद्रके समान देखा और ग्रह उसके बुरे मालूम हुये तब ब्राह्मणों से पूछा कि आजतक हमारे कुलमें कोई लड़का ऐसा नहीं उत्पन्न हुआ सब धर्मात्मा व सुन्दर होते आये हैं क्या कारण है जो यह बालक ऐसा कुरूप हुआ ब्राह्मण बोले कि यज्ञका प्रसाद भोजन करती समय तुम्हारी स्त्रीने मृत्युनाम अपनी माता व अधर्म अपने पिताको याद किया था इसलिये यह बालक अपने नाना व नानी के स्वभावपर कुरूप व अभागी उत्पन्न हुआ है यह वचन सुनकर राजाको चिन्ता हुई पर इच्छा परमेश्वरकी इसी तरहपर समझकर उस बालकका पालन करने लगे जब बेन सयाना हुआ तब शिकार खेलने वास्ते वनमें जाकर जानवरोंको जिनका मारना अधर्महै राजाके मना करने परभी मारने लगा व नगरके बालकोंको अपने साथ स्नान कराने वास्ते नदीकिनारे ले जाकर पानीमें डुबाकर मारडालता कभी वन में लेजाकर मुका व लात मारके उनका प्राण लेता था जब वह ऐसा अधर्म करने लगा तब वहांकी प्रजाने जाकर यह हाल राजासे कहा कि राजकुमारने हमारे लड़कोंको विना अपराध मारडाला राजाने कईबेर प्रजा को समझा बुझाकर बिदा करदिया और बेन अपने बेटेको सब तरहसे समझाया पर वह कहना राजाका न मानकर और अधिक उपद्रव करने

लगा तब एक दिन फिर उस नगरकी प्रजाने जाकर राजासे कहा कि हे पृथ्वीनाथ हम ऐसी अनीति होनेसे आपके देशमें नहीं रहसक्ते जब राजा ने प्रजाको अतिदुःखी देखा तब बेनको बहुत डाटके समझाया कि तू प्रजा को दुःख मत दे तिस पर वह न मानकर रोता रोता अपनी माताके पास जाके कहने लगा कि राजा मुझे वृथा धमकाकर मेरा कुछ आदर नहीं करते इसलिये मैं घरसे निकल जाऊंगा सुनीथा उसकी माता भी अधर्मिणी थी इसकारण वह बेनकी बात सुनकर बोली हे बेटा तेरे बापकी बुद्धि बूढ़े होनेसे मारीगई उसको बकने दे जो तेरा दिल चाहै वैसा कर सुनीथा इसतरह अपने पुत्रको धैर्य देकर जब उसके बदले अपने पति से झगड़ा करने लगी तब राजाने दुःखित होकर विचारा कि देखो पृथ्वीपति मैं होकर सब राजा मेरे अधीन रहतेहैं मैं चाहों तो बेनको उसकी माता समेत अपने देशसे निकालदूं पर इसमेंभी मेरी हँसी होगी व मनुष्य इन्हीं स्त्री व पुत्रके मोहमें फँसा रहकर परलोक का शोच नहीं करता सो वही लोग भली बात समझावनेसे बुरा मानतेहैं सो मैं किस वास्ते अपना जन्म अकार्थ खोऊं मेरे पिछले जन्मका पाप उदय हुआ जो ऐसे अधर्मी बेटेने मेरे यहां जन्म लिया उसके पाप करनेसे मैंभी नरक भोगूंगा जिस की माता धर्म व अधर्मका विचार नहीं करती उसका बेटा किसतरह से पापी न होवै अब ऐसे अधर्मियों की संगतमें रहना न चाहिये कुसंगमें रहनेसे कुछ सुख नहीं मिलता इससे वनमें जाकर परमेश्वरका स्मरण व तप करना उत्तम है मेरे पीछे जैसा चाहै वैसा हो राजाने यह विचारकर मन अपना विरक्त करलिया व आधी रातके समय रानीको सोईहुई छोड़ कर वनमें चलेगये व वीच तप व ध्यान परमेश्वरके लीन हुये और उस दिन राजाके निकल जानेका हाल किसीने नहीं जाना ॥

चौदहवां अध्याय।

बेनका राजगद्दीपर बैठना व ऋषीश्वरोंको हरिभजन करनेसे बर्जना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसे कहा कि जब राजा अंग बिना कहे रातको वनमें चलेगये तब प्रातःकाल मंत्रियोंको यह समाचार सुनकर बड़ा खेद हुआ और

बहुत ढूंढ़नेपर भी उनका ठिकाना नहीं लगा व विना राजाके उस देशमें चोर व ठग उपद्रव करने लगे जब ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंने विना राजाके प्रजाको दुःखी देखा और दूसरे किसी को राजा अंगके वंशमें न पाया तब लाचारीसे आपसमें सम्मत करके बेनको राजगद्दीपर बैठाला सो बेनने राजसिंहासन पर बैठतेही डाकू व चोरोंको पकड़कर मारना आरम्भ किया सो उसके राज्यमें चोरी व डाकूका नाम बाकी न रहकर वह सब अधर्म करनेवाले उसका राज्य छोड़कर ऐसे भाग गये कि जैसे सांपके डरसे चूहे भाग जाते हैं व जो राजा अपने देशका पैसा अंगको नहीं देतेथे वह लोगभी राजा बेनकी आज्ञा पालन करने लगे जब बेन सातों द्वीपका ऐसा प्रतापी राजा हुआ कि जिसका सामना करनेवाला कोई दूसरा संसारमें न रहा तब उसने राज्य व धनके अभिमानसे अन्धा होकर यह बात विचारा कि दूसरे देवताके नामपर यज्ञ व दान व जप व तप आदिक किसीको करना न चाहिये सब कोई देवता व पितरकी जगहपर हमारी पूजा किया करैं किस वास्ते कि सबको भोजन व वस्तु देकर मैं पालन करताहूं ऐसा विचारकर वह परमेश्वरको भूल गया व उसने अपने राज्यभरमें ढिंढोरा पिटवा दिया कि कोई मनुष्य यज्ञ व पूजा व श्राद्ध व होम व दान आदिक परमेश्वर व देवता व पितरोंके नामपर न करैं जिसको जो कुछ करना हो सो मेरा पूजन परमेश्वर व देवता व पितरोंकी जगह किया करैं जो कोई ऐसा नहीं करेगा उसको हम दण्ड देवेंगे इसतरह ढिंढोरा पिटवाने उपरान्त राजा बेन अपनी सेना साथ लेकर दूसरे राजाओंके देशमें दिग्विजय वास्ते चला जहां वह पहुँचता वहांके राजा अनेक प्रकारकी वस्तु भेंट देकर उससे मिलतेथे तब राजा बेन उनसे कहता था कि तुम हमारी आज्ञा मानो तो अपने राज्यभरमें ऐसा उपदेश करो कि कोई मनुष्य यज्ञ व दान व जप व तप आदिक किसी देवताके नामपर न करैं जिनको करना हो सो हमारी पूजा करैं वह सब लाचारीसे अपने प्राण व धन जानेका भय समझकर उसकी आज्ञा मान लेते थे जब राजा बेनके डरसे सातों द्वीपमें यज्ञ व दानादिक शुभ कर्म करना लोगोंने छोड़ दिया तब अधर्म व पापका

अधिकार होनेसे ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंका कर्म व धर्म छूटने लगा जब भृगु व वशिष्ठादिक ऋषीश्वरोंने इसतरह पर राजा बेनका अधर्म देखा व अपने जप व पूजामें विघ्न समझा तब सरस्वतीके किनारे बैठकर आपस में ऐसा विचार किया कि जिस देशमें राजा नहीं रहता वहांकी प्रजा अपने मनमाना पाप करतीहै किसीका डर नहीं रखती व चोर आदिक अधर्मी लोग सबको दुःख देतेहैं इसकारण धर्मकी हानि व पापकी वृद्धि होतीहै व सब अधर्मी व पापियोंको दण्ड देने व धर्मकी रक्षा करनेवाले राजा होतेहैं सो यह राजा बेन ऐसा अधर्मी उत्पन्न हुआ कि जिसने सम्पूर्ण धर्म संसारसे उठा दिया इसका क्या उपाय करना चाहिये ऐसा विचार कर ऋषीश्वरोंने आपसमें कहा हमलोगों ने उसको राजसिंहासन पर बैठाला है इसवास्ते एक बेर चलकर उसे समझाना चाहिये कदाचित् हमारे बर्जने से उसने अधर्म करना छोड़ दिया तो अच्छी बातहै नहीं तो उसका दूसरा उपाय करेंगे यह सम्मत करके भृगु व वशिष्ठादिक बहुतसे ऋषीश्वर व ब्राह्मण इकट्ठे होकर राजमन्दिर पर गये जब राजाने दण्डवत् करके उनको बैठाला तब ऋषीश्वर बोले हे राजा हम तुझे एक बात कहने व समझाने आयेहैं उसको अंगीकार करनेमें तेरा कल्याण है नहीं तो नष्ट होजायगा राजाने पूंछा कि वह कौनसी बातहै कहो तब ऋषीश्वरोंने कहा हे राजन् हमलोगों को तुम यज्ञ व तप आदिक करने से क्यों मना करते हो व संसारी मनुष्योंको शुभकर्म करनेसे मना करके कहते हो कि देवता व पितरोंकी जगह हमारी पूजा करो यह बात किसीको अच्छी नहीं लगती हमलोगों का यही धर्महै कि यज्ञ व होम व ध्यान नारायणजीका किया करें यह वचन सुनकर राजा बोला तुम्हारे वेद व पुराणमें लिखा है कि राजा नारायणजीका स्वरूपहै इसलिये तुम्हें हमारी आज्ञा मानना चाहिये और मेरा कहना न मानोगे तो तुम लोगोंको दण्ड दूंगा ऋषीश्वरोंने जब यह बात सुनी तब आपसमें सम्मत किया कि ऐसे पापी व अधर्मी राजा को मार डालना उचितहै ऐसा विचारकर किसी ऋषीश्वरने कुश व किसी ने जल हाथमें लेकर कुछ मंत्र पढ़के ऐसा शाप दिया कि राजा बेन

उसीसमय मरगया व ऋषीश्वरलोग अपने अपने स्थानपर चलेगये और सुनीथा बेनकी माताने यह हाल सुनकर बहुत विलाप किया व इस विचारसे लोथ उसकी नहीं जलाई कि ऋषीश्वर व ब्राह्मणोंको सब सामर्थ्य है कदाचित् पीछेसे प्रसन्न होकर इसे फिर जिलादेवैं इसी आश्रयपर अंतड़ी निकलवाकर पेट उसका धुलवा डाला व मसाला भरवाकर लोथ उसकी तेलमें रखछोड़ी जिसमें गलै सड़ै नहीं बेनके मरने उपरांत फिर यज्ञ व होमादिक शुभकर्म संसारमें होने लगे पर राजाके न रहनेसे फिर चोर व ठग प्रजाको दुःख देनेलगे व अधर्मियों ने निडर होकर मनमाना पाप करना आरम्भ किया यह दशा देखकर फिर ऋषीश्वर व ब्राह्मणोंने आपस में विचारा कि विना रहने राजाके संसारमें धर्म न रहकर सबलोग वर्ण-संकर होजावेंगे व राजनीतिमें लिखाहै कि जिस देशमें राजा न हो या जहां राजा अधर्मी और मूर्ख हो या जिस देशमें स्त्री राज्य करै या जिस स्थान पर कई राजा होवैं वहां बसने से धर्म नहीं रहता ऐसी जगह रहना उचित नहींहै इसलिये दूसरे राजाका उपाय करना चाहिये विना राजाके प्रजा सुख नहीं पावैगी व नारायणजीकी कृपासे बेनभी जीसक्ताहै पर वह अपने अधर्मको न छोड़ेगा इसलिये उसको जिलाना कैसाहै जैसे कोई सांपको दूध पिलावे पर यह ध्रुवभक्तके कुलमें राजगद्दीथी सो बेनके लोथ मेंभी कुछ उसके धर्मका अंश होगा इसवास्ते इस लोथमें से एक बालक उत्पन्न करके राजसिंहासन पर बैठालना चाहिये जिसमें प्रजा सुख पावै व धर्म की रक्षा हो सो चलकर बेनकी लोथ देखना उचितहै यह बात आपस में विचारकर भृगुआदिक ऋषीश्वरोंने कि उनको परमेश्वरका तप व जप करनेसे सब सामर्थ्य थी जाकर सुनीथा से पूंछा बेनकी लोथ कहां है यह बात सुनतेही सुनीथाने ऋषीश्वरोंसे दण्डवत् किया व बहुत प्रसन्नतासे लोथ बेनकी उनके सामने ले आई तब ऋषीश्वरोंने कुछ मंत्र पढ़कर राजा बेनकी जंघा मथानी से दहीके समान मथी जिसतरह दही मथनेसे मक्खन निकलताहै उसीतरह जंघा मथनेसे एक पुरुष नाटा व काला रंग अति कुरूप उत्पन्न होकर बोला हे ऋषीश्वरो मुझे क्या आज्ञा देते हो जब

ऋषीश्वरोंने देखा कि यह मनुष्य राज्य करने योग्य नहीं है तब उससे कहा तू वनमें जाकर भिल्लोंका राजा हो सो वह उनकी आज्ञासे वनमें जाकर भिल्लोंका राजा हुआ उसीके वंशमें मल्लाह व मुसहर आदिक उत्पन्न होकर आजतक संसारमें वर्तमानहैं व उस पुरुषके निकलतेही सब पाप सुनीथा का बेनके शरीर से बाहर निकल गया॥

पन्द्रहवां अध्याय।

ऋषीश्वरोंका उसकी दाहिनी भुजासे राजा पृथु व अरुचिनाम स्त्री को उत्पन्न करना॥

मैत्रेयजी बोले हे विदुर फिर ऋषीश्वरोंने वास्ते उत्पन्न होने एक राजा बहुत सुन्दर व नीतिमान्के दाहिनी भुजा बेनकी मथी तो उसमेंसे एक पुरुष अतिसुन्दर व तेजमान व विशाल शरीर व लम्बी भुजा व एक स्त्री रूपवती दो मनुष्य उत्पन्न हुये सो ऋषीश्वरों ने उस पुरुषका नाम पृथु व स्त्रीका नाम अरुचि रखकर उन दोनोंका विवाह आपसमें करके पृथुसे कहा तुम सातों द्वीपका राज्य करो व ऋषीश्वरोंने अपने ज्ञानकी दृष्टिसे जाना कि यह दोनों लक्ष्मीनारायणका अवतारहैं यह बात समझतेही ऋषीश्वरोंने बड़े आनन्दसे पृथुको राजसिंहासन पर बैठालने चाहा तब कुबेर देवता को बुलाकर कहा कि जिस सिंहासन पर बेन अधर्मी बैठता था वह राजा पृथुके बैठने योग्य नहीं है इसलिये तुम दूसरा सिंहासन बहुत अच्छा पृथुके बैठनेके वास्ते लावो उसी समय कुबेरदेवता एक सिंहासन जड़ाऊ बहुत उत्तम लेआये सो ऋषीश्वर व देवतोंने पृथुको राजसिंहासन पर बैठालकर दण्डवत् किया व वरुण देवताने छत्र व पवन देवताने चमर व नाग देवताने मणि व पृथ्वी ने खड़ाऊं व सरस्वतीने मोतियों का हार व महादेवने तलवार व विष्णुने सुदर्शनचक्र व पार्वतीजीने ढाल व त्वष्टा देवताने रथ व अग्नि देवताने धनुषबाण व समुद्रने शंख लाकर राजा पृथुको भेंट दिया इसीतरह और सब देवताभी उत्तम उत्तम वस्तु इन्द्रपुरी के समान लाकर राजा पृथुको भेंट देतेगये व इन्द्रपुरीसे अप्सरा लोगोंने आनकर राजाको नाच दिखलाया व गन्धर्वोंने गाना सुनाया व सिद्ध व चारण लोगोंने आकाशसे स्तुति करके राजा पर फूल बर्षाये व भाटोंने

आनकर राजा पृथुकी बड़ाईमें कवित्त पढ़के पिछले प्रतापी राजाओंकी उपमा दी उनका वचन सुनकर राजाने भाटोंसे कहा कि अभीतक मैंने कोई ऐसा बड़ाईका काम नहीं किया कि तुमलोग इतनी स्तुति करतेहो जिस किसीमें कुछ गुण नहीं होता भाटलोग अपने लोभके वास्ते उस मनुष्यकी बड़ाई इन्द्र के समान करते हैं यह बात अनुचितहै और जो मनुष्य इस तरह अपनी बड़ाई सुनके प्रसन्न होताहै उसे मूर्ख समझना चाहिये और जिस बातका अपने में गुण न हो व कोई दृष्टांत उसको देवै तो निस्संदेह समझना चाहिये कि यह हमारी हँसी करताहै सो हे भाटो जब हम कुछ अच्छा कम करें तब हमारी स्तुति करना अभी चुप रहो मनुष्य बड़ाई के योग्य नहींहै नारायणजीकी स्तुति करना चाहिये जिन्होंने मनुष्यको उत्पन्न करके उसे महत्त्व दिया व उसके हाथसे शुभ कर्म करातेहैं तब वह स्तुतियोग्य होताहै वह मनुष्य कदाचित् किसीको एक वर्ष या दश वर्ष भोजन वस्त्र दे तो उसे दुःख मालूम होताहै व स्तुतियोग्य भगवान्जीहैं जो सबको पालन करके संसार व वैकुण्ठका सुख देते हैं यह वचन सब किसीने सुनकर राजाकी बड़ाई की ॥

सोलहवां अध्याय।

भाटोंका विदा होना व राजा पृथुकी जन्मकुण्डली का फल पण्डितोंको कहना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसे कहा कि भाटोंने राजाका वचन सुनकर विनय किया हे पृथ्वीनाथ आप नारायणजीका अवतार हैं तुम्हारी बड़ाई करना भगवान्जीकी स्तुतितुल्यहै इसलिये अपनी जिह्वा पवित्र करनेके वास्ते तुम्हारी स्तुति करते हैं किसवास्ते कि हम लोगोंने अपना पेट पालनेवास्ते झूंठ व सच बहुत सी बड़ाई और लोगोंकी की है और आप ऐसे अच्छे अच्छे काम करेंगे कि आजतक किसी राजाने ऐसे कर्म संसारमें नहीं किये जब भाटलोग ऐसे वचन कहके राजासे द्रव्य लेकर अपने अपने घर चलेगये तब ज्योतिषी पण्डितोंने राजाकी जन्मकुण्डली बनाकर ग्रहोंका फल इसतरह पर वर्णन किया कि यह सातोंद्वीपके राजा होंगे व अपनी भुजाकी सामर्थ्यसे सब पृथ्वी के राजाओंको जीतकर उदयास्ताचल तक

राज्य करेंगे व पृथ्वीको गौके समान दुहकर उसे कन्यातुल्य व प्रजाको पुत्रकी बराबर समझेंगे और ब्राह्मण व ऋषीश्वर व साधु व सन्तको नारायणरूप जानेंगे व आठ महीने प्रजासे पृथ्वीका देन लेकर चारमहीने बरसातमें उनको अपने पास से भोजन व वस्त्र देवैंगे व विना अपराध किसीको दण्ड नहीं देंगे जब इन्द्र डाहसे उनके राज्य में पानी न बरसावैगा तब राजा पृथुके प्रतापसे प्रजाके इच्छा करने के समय वर्षा होगी व राजा पृथु सौ अश्वमेध यज्ञ वास्ते प्रसन्न होने भगवान्‌जी के विना इच्छा करैंगे जब निन्नानबे यज्ञ उनके अच्छीतरह सम्पूर्ण होकर सौवां यज्ञ आरम्भ होगा तब राजा इन्द्र अपने इन्द्रासन लेनेके डरसे योगीका रूप बनाकर श्यामकर्ण घोड़ा उनका चुरा लेजावैंगे जब बेटा राजा पृथुका घोड़ा इन्द्रसे छीन ले आवेगा तब इन्द्र उससे हार मानकर छलकरनेवास्ते अनेक तरह का रूप धारण करैंगे उनके रूप धारण करनेका हाल सुनकर कलियुगवासी मूर्खलोग भी दूसरों को ठगनेके वास्ते अनेक प्रकारका रूप धरैंगे व नारायणजी यज्ञशालामें प्रकट होकर राजा पृथुको दर्शन देवैंगे व सनकादिक ऋषीश्वर राजमन्दिरपर आनकर इनको ज्ञान सिखलावैंगे और यह राजा परस्त्रीको माता व दूसरेका धन मिट्टीसमान समझकर सदा परमेश्वरके भजन व स्मरणमें लीन रहैंगे ऐसा कहकर ज्योतिषीलोग राजा से दक्षिणा लेकर अपने अपने घर चलेगये व भृगु आदिक ऋषीश्वर और देवता राजाको आशीर्वाद देकर अपने अपने स्थानको पधारे ॥

सत्रहवां अध्याय ।

राजा पृथुका प्रजाके दुःख पानेसे धरतीपर क्रोध करना ॥

मैत्रेयजीने कहा हे विदुर जब देवता व ऋषीश्वर बिदा हो गये तब राजा पृथु साथ धर्म व नीतिके राज्यकाज करनेलगे सो एकदिन सब प्रजा ने उनके पास आनकर विनय की कि महाराज आप हमारे राजा व मालिक हैं शास्त्रके अनुसार आपको हमारी पालन जो मारे भूखके मरते हैं करना चाहिये जिसतरह वृक्ष भीतरसे खोखले होजाते हैं उसीतरह हम लोगोंका कलेजा व पेट मारे भूखके जलताहै अन्न व फल खानेसे सबलोग जीते हैं

सो राजा बेनके पाप व अनीति करनेसे पृथ्वीने सब अन्न व फल अपनेमें चुरा लिया जो अन्न हमलोग पृथ्वीपर बोते हैं सो नहीं उगता व जो वृक्ष पहिलेसे उगेहुयेहैं उनमें फल नहीं लगते इसलिये हमलोग अपने लड़के बालों समेत खानेविना मरते हैं सो आपको धर्मात्मा राजा समझ कर अपना दुःख कहा कोई ऐसा उपाय कीजिये कि जिसमें पहलेकी तरह अन्न व फल पृथ्वी से उत्पन्न हुआ करें यह बात सुनते ही राजा ने पृथ्वी पर क्रोध करके धनुषबाण अपना उठा लिया व बाण साधकर कहा कि अभी एक तीर मार के पृथ्वीको टुकड़े टुकड़े कर डालूं पृथ्वी राजाको ऐसे क्रोध में देखकर उसी समय गोरूप धारण करके डरती व कांपती हुई सामने आई और राजाने अपने ज्ञानसे पहिंचान लिया कि यह गोरूपी पृथ्वीहै तिस पर भी राजाने क्रोधवश होकर धर्म व अधर्मका विचार न करके जब उसे तीर मारनेकी इच्छा की तब गोरूपी पृथ्वी वहांसे भागकर सब लोकन में दौड़ी गई व राजा भी धनुषबाण लिये हुये रथपर बैठकर उसके पीछे खरेदे जाते थे जब उसे किसी जगह अपने प्राणका बचाव न दीखा तब राजाके सामने खड़ी होकर बोली कि हे पृथ्वीनाथ आप नहीं जानते वेद शास्त्रमें गो का मारना बड़ा पापहै राजाने जवाब दिया शास्त्र में ऐसा लिखाहै कि जिस किसीसे संसारीजीव दुःख पावैं उसका मारना पाप न होकर धर्म समझना चाहिये ब्रह्माजीने जो औषध व अन्न संसारीजीवोंके पालनहेतु प्रकट कियाहै उसको तैंने छिपा लिया राजाओंका यही धर्म है कि जो उनके प्रजाको दुःख देवै उसे मारडालैं यह बात सुनकर फिर गोरूपी पृथ्वीने कहा हे राजन् जब मुझको हिरण्याक्ष दैत्य पातालमें लेगया और वास्ते रहने जीवोंके जगह नहीं थी तब नारायणजी वाराह अवतार धारण करके मुझे पाताल से लाये और पानीपर स्थिर करके सब जीवोंको मेरे ऊपर बसाया कदाचित् तुम मुझे मार डालना चाहतेहो तो सब प्रजाको कहां रक्खोगे राजाने कहा मुझमें इतनी सामर्थ्य है कि तेरे मारने उपरांत अपने तपोबल व नारायणजीकी कृपासे महाप्रलयके पानीपर प्रजाको बसाऊंगा गो ने यह बात सुनकर अपने ज्ञानसे मालूम किया कि राजा

बड़े प्रतापी व परमेश्वरका अवतार हैं जो चाहेंगे सो करेंगे अब विना इसके शरण गये मेरा प्राण बचना कठिन है ऐसा विचारकर पृथ्वीने राजा से विनयपूर्वक कहा कि हे पृथ्वीनाथ आप कर्तापुरुष परमेश्वरका अवतार सब कर सकते हैं जो आज्ञा देव सो मैं करूं॥

अठारहवां अध्याय।

राजाका सब अन्न व औषध गोरूपी पृथ्वीको दुहिकर निकालना॥

मैत्रेयजी बोले हे विदुर गोरूपी पृथ्वीने राजासे कहा कि महाराज मैंने बेनके अधर्म करनेसे अन्न व औषध आदिक इसवास्ते अपनेमें छिपा लिया कि बेनके राज्यमें संसारी लोग होम व दान करना छोड़कर सब अन्न अपने खर्चमें लाने लगे व देवता व अग्निका भाग देना उन्होंने बन्द करदिया इसलिये अधर्मी लोगोंका पालन करना मैंने उचित नहीं जाना अब तुम धर्मात्मा राजा अवतार लेकर पहिलेकी तरह अन्न व फल उत्पन्न होना चाहते हो तो तुम वेदका मंत्र पढ़कर साथ योगाभ्यास के गोके समान मुझे दुहो जो कुछ मैंने गुप्त करलिया है और जिस चीजकी इच्छा तुमको होगी सब मेरेमें दूधकी तरह निकलैगी व पहाड़ोंका बहुतसा बोझ मेरे ऊपर बेठिकाने रक्खाहै आप उसे उठाकर एक तरफ धर दीजिये तो पृथ्वी बहुतसी खाली होजावे व अनेक जगह ऊंची नीची धरती जो गड़हेके समानहै उसे पाटकर बराबर करदीजिये तब मेरे ऊपर सब जीव आरामसे रहकर खेती आदिक व्यापार करके बड़ा सुख पावैंगे व किसीको दुःख न होगा व बरसात बीतने उपरांत भी वास्ते पीने जीव व सींचने खेतोंके सब जगह पानी रहैगा राजा पृथुने यह वचन सुनते ही अपने धनुषकी नोकसे पहाड़ोंको जो बीचमें जगह छेंकेथे उठाकर उत्तर दिशामें धरदिया सो तीन तरफ पृथ्वी खाली होगई व जिसजगह गड़हे थे वहां पर छोटे छोटे पहाड़ोंको रखकर अपने धनुषसे ठोंक दिया तो वह धरती भी बराबर हो जानेसे राजाने बहुत जगह नगर व किला व गांव जहां जैसा उचित जाना तैयार कराके वहां प्रजाको बसाया और जहां कहीं तालाब व बावली व कुवां आदिकका प्रयोजन था बनवा दिया जिसमें

सबजीवों को सुखमिले तब गोरूपी पृथ्वीने प्रसन्न होकर कहा हे पृथ्वी-नाथ अब मुझे दुहो पर दुहने का बर्तन व बछड़ेकी सूरत वास्ते निकालने अनेक वस्तुओंके जुदा जुदा बनाओ जिसमें सब पदार्थ मेरेमेंसे निकलें पहिले भृगु व दुर्वासा आदिक ऋषीश्वरोंने गोरूपी पृथ्वी को दुहा तो उसमेंसे वेद निकला ब्राह्मणोंने प्रसन्न होकर कहा हमलोगोंको यही चाहिये फिर देवता व गन्धर्व व दैत्य व राजा पृथुआदिकने उस गोको दुह कर अनेक प्रकारका फल व अन्न व औषधआदि सब वस्तु प्रयोजनकी उसमेंसे बाहर निकालीं पर दुहनेका बर्तन व बछड़ेका स्वरूप पृथक् पृथक् बनाया था हे विदुर पृथ्वी कामधेनु गायकेसमान है इसलिये सब किसीने अपनी इच्छापूर्वक गोरूपी पृथ्वीसे दुहिकर सबतरहकी वस्तु निकाल ली व देवता व ऋषीश्वरोंने पृथ्वी को आशीर्वाद दिया कि पहाड़ व समुद्रादिकका बोझ तुझे कुछ नहीं मालूम होगा परन्तु अधर्मी व पापी व साधु व ब्राह्मणके दुःख देनेवाले जब तेरे ऊपर अपना चरण रक्खेंगे तब तू उनके भारसे दुःखी होगी उस समय नारायणजी अवतार लेकर अधर्मियों को मारके तेरा बोझ दूर करेंगे यह वरदान देवता व ऋषीश्वरोंका सुनकर पृथ्वी अपना निजरूप धरके राजा पृथुको आशीर्वाद देकर अपने स्थान को चलीगई व संसारीजीव अन्न व फल उत्पन्न होनेसे प्रसन्न होकर अपने कर्म व धर्ममें लीनहुये और नगर व गांवमें सुखपूर्वक रहकर राजा पृथुको अशीर्वाद देनेलगे ॥

उन्नीसवां अध्याय।

राजा पृथुका सौ अश्वमेध यज्ञ करना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसे कहा कि जब सब प्रजा राजा पृथुकी आनन्द व खुस हुई तब राजाने ऋषीश्वर व ब्राह्मणोंको बुलाकर सौ अश्वमेध यज्ञका संकल्प किया व ब्रह्मावर्त्तमें स्वायम्भुवमनुके स्थानपर निष्काम यज्ञ करने लगे सो राजा पृथुके नीति व धर्म करनेसे घी व दूध व दही की नदी संसारमें प्रकट होकर बहने लगीं व रत्न व मोती व सोना व चांदी व तांबा आदिक की खानें समुद्र व पहाड़ोंमें विना खोदे प्रकट होगईं इसलिये

उनके राज्यमें कोई प्रजा दुःखी व दरिद्री नहीं था जब राजाने शास्त्रके अनुसार श्यामकर्ण घोड़ा छोड़कर सेना अपनी उसके साथ करदी तब वह घोड़ा सातों द्वीप में फिरकर चला आया किसी दूसरे राजाको ऐसी सामर्थ्य नहीं हुई जो राजा पृथुका घोड़ा बांधि सके सब राजा उनके आधीन रहकर अपने अपने देशका पैसा उनको देतेथे जब इसीतरह राजाने निन्नानवे यज्ञ सम्पूर्ण होने उपरान्त सौवां यज्ञ आरम्भ करके श्यामकर्ण घोड़ा छोड़ा तब इन्द्रने चिन्ता करके विचारा कि सौवां यज्ञ सम्पूर्ण होनेमें राजा पृथु मेरा इन्द्रासन छीन लेवेंगे इसलिये यह घोड़ा लेना चाहिये जिसमें सौ यज्ञ सम्पूर्ण न होने पावें ऐसा विचारकर इन्द्र अपने बेटेसे बोला कि तू जाकर यह घोड़ा किसी तरह पकड़के हमारे पास ले आव जब इन्द्रका बेटा वास्ते पकड़ने घोड़ेके आया तब उसके साथ बड़े बड़े योद्धा देखकर डरसे घोड़ा धरने नहीं सका व इन्द्रके पास जाकर कहा कि मेरी सामर्थ्य नहीं जो घोड़ा पकड़सकूं तुम्हें बलहो तो पकड़लाओ यह वचन सुनकर इन्द्रने विचारा कि राजा पृथु बड़े धर्मात्मा व बलवान्हैं उनसे सन्मुख लड़कर हम घोड़ा लाने नहीं सक्ते कुछ छल करके घोड़ा लाना चाहिये ऐसा विचारने उपरान्त इन्द्र योगीका रूप बन कर घोड़ेके पास गया जब राजाके नौकरोंने योगी समझकर उसको वहां जानेसे मना नहीं किया तब इन्द्र उस घोड़ेकी बाग पकड़कर आकाश-मार्गसे अपने लोकको लेचला जब राजाके मनुष्यों ने जो उड़नेकी सामर्थ्य नहीं रखते थे यह हाल देखा तब राजासे जाकर कहा कि महाराज एक मनुष्य योगीरूप बनकर घोड़ा आकाशमें उड़ालेगया यह वचन सुनतेही राजाने ब्राह्मणोंसे पूंछा कि तुमलोग अपनी ज्ञानदृष्टिमें विचार करो वह योगी कौन था जो घोड़ा हमारा लेगया ब्राह्मणोंने देवदृष्टिसे देखकर कहा हे राजन् घोड़ा तुम्हारा इन्द्र इसडरसे अपने लोकमें लियेजाताहै कि सौ यज्ञ सम्पूर्ण होनेसे इन्द्रासन मेरा छूटजावैगा यह वचन सुनकर राजा बोले मैं इन्द्रलोक लेनेकी कुछ इच्छा नहीं रखता परन्तु इन्द्र जो मेरा यज्ञ बन्द करना चाहताहै इसलिये घोड़ा अवश्य मँगवाना चाहिये यह बात ब्राह्मणोंसे कह

कर राजाने विजिताश्व अपने पुत्रको आज्ञा दी कि तू अभी जाकर घोड़ा ले आव व अत्रिमुनिको उसके साथ करदिया जब वह दोनों वहांसे उड़ते हुये इन्द्रलोक के पास पहुँचे तब ऋषीश्वरने घोड़ा लिये जाते देखकर विजिताश्वको दिखला दिया राजकुमारने इन्द्रको घोड़ासमेत देखतेही सरवन्त नाम बाण धनुष पर धरकर जैसेचाहा कि इन्द्रकी छातीमें मारें वैसे इन्द्र अपने प्राणके डरसे घोड़ा वहां छोड़कर अन्तर्धान होगया विजिताश्वने घोड़ा पृथुके पास लाकर हाल भागने इन्द्रका कह दिया जब इन्द्र घोड़ा छीन जानेसे बहुत लज्जित हुआ तब अपनी मायासे अँधियारा उत्पन्न कर के कईबार धोखा देके घोड़ा चुरा लेगया पर विजिताश्व पृथुका बेटा जाकर छीनलाया जब इन्द्रने कईबेर घोड़ा छीनजानेपर चुराना उसका न छोड़ा तब राजा पृथुने क्रोधवन्त होकर अपना धनुष बाण इन्द्रके मारने वास्ते उठाया उससमय यज्ञ करनेवाले ऋषीश्वरोंने राजाको समझाया कि हे पृथ्वीनाथ तुमने सौ अश्वमेध यज्ञका संकल्प कियाहै क्रोध करनेसे संकल्पमें विघ्न होगा व इन्द्र अमृत पीनेसे किसीतरह मर नहीं सक्ता जब ऋषीश्वरोंके समझानेसे राजाका क्रोध शान्त नहीं हुआ तब ब्रह्माजीने नारदमुनि समेत यज्ञशालामें आनकर राजासे कहा कि तुम इन्द्रके मारने की इच्छा मत करो तुम्हारे हाथ उसकी मृत्यु नहीं है तुम्हें इन्द्रासन लेनेकी इच्छा हो तो उसको इन्द्रपुरी से निकालकर वहांका राज्य भोगो व मुक्ति की चाहना रखतेहो तो सौवां यज्ञ मतकरो जितने यज्ञ तुमने किये हैं उन्हीं यज्ञोंके करनेमें परमेश्वर तुमको दर्शन देकर मुक्तिपदवी देवेंगे व तुम्हारे यज्ञ करनेका हाल संसारीलोग सुनकर शुभकर्म करैंगे व इन्द्रके भुलावा देनेका समाचार पाकर कलियुगवासीलोग पाखण्ड रचैंगे जब ब्रह्माजीके समझानेसे राजा पृथुने क्रोध अपना क्षमा किया तब ब्रह्माजी नारदमुनि समेत अपने लोकको गये तब राजा ब्राह्मणोंसे बोले मैं इन्द्रलोककी कुछ इच्छा नहीं रखता निन्नानबे यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्ण हुये एक यज्ञ बाकीहै वह मैं नहीं करूंगा यही पूर्णाहुति अग्निकुंडमें डालदेव जैसे ऋषीश्वरों ने मंत्रपढ़कर पूर्णाहुति किया वैसे ब्रह्माने नारायणजीके पास जाकर कहा

महाराज एक इन्द्रके सामने दूसरा कोई सौ यज्ञ करने नहीं सक्ता व राजा पृथु परमभक्तका संकल्प झूठा होना न चाहिये व आप सब बातके मालिक हैं जैसा उचित हो वैसा कीजिये यह वचन सुनतेही परमेश्वर त्रिलोकीनाथ ब्रह्मा व इन्द्रको अपने साथ गरुड़पर बैठालकर पूर्णाहुति डालनेके समय उस यज्ञशालामें पधारे उन्हें देखते ही राजा पृथु व सब ब्राह्मण व ऋषीश्वर खड़े होकर वैकुंठनाथको दण्डवत् करके स्तुति करने लगे॥

बीसवां अध्याय।

राजा पृथुका सब राजाओंको अपने मकानपर बुलाना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित नारायणजी राजा पृथुके स्तुति करनेसे प्रसन्न होकर बोले हे राजा तुम्हारे सौ यज्ञ सम्पूर्ण हुये हम तुमसे बहुत प्रसन्नहैं कुछ वरदान मांगो व तुम इन्द्रका अपराध क्षमा करके इससे किसी बातका विरोध मत रक्खो किसवास्ते कि आत्माको आत्मासे शत्रुता करना न चाहिये सब छोटे बड़े जीवों में आत्मा एक होकर शुभ व अशुभ कर्म करनेसे भला व बुरा कहलाता है सो तुम दया व धर्मसे रहकर प्रजाका पालन करो तुम्हें सनकादिक ऋषीश्वर आनकर ज्ञान उपदेश करेंगे यह वचन त्रिलोकीनाथसे सुनकर राजा पृथुने विधिपूर्वक उनकी पूजा करके हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनदयालु मैं किसीके साथ शत्रुता व इन्द्रलोक या दूसरी वस्तु लेनेकी कुछ चाहना न रखकर केवल यही चाहताहूं कि तुम्हारे चरणोंकी भक्ति व प्रीति मेरे हृदयमें बनीरहै व तुम्हारा यश गुण मुझे दशहजार कानोंके समान सुनिपड़े और आप लक्ष्मीजीसे भी अपने भक्तोंको अधिक प्यारा जानते हैं जिसने तुम्हारी भक्तिका सुख पाया वह मनुष्य संसारीमायामोहमें नहीं फँसता सो मुझे तुम्हारे चरणोंकी भक्ति व प्रीति चाहिये यह वचन सुनतेही नारायणजी प्रसन्न होकर बोले हे राजा तुम मेरे परम भक्तहो तुम्हारी सब इच्छा पूर्ण होंगी जब त्रिलोकीनाथ ऐसा कहकर वैकुंठ पधारे व ब्रह्मा स्थानपर गये और राजाका यज्ञ सम्पूर्ण हुआ तब ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको बहुतसा दान व दक्षिणा देकर बिदा किया व इन्द्रसे प्रीति रखकर साथ धर्मके प्रजापालन व राज्य करने लगे उनके

राज्यमें कभी ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंने किसीपर क्रोध नहीं किया व सब छोटे बड़े सुख व आनन्दसे रहते थे कुछ दिन उपरांत राजाने विचारा कि हमारे राज्य भरेमें सब छोटे व बड़े चारोंवर्ण परमेश्वरका भजन व स्मरण करके हरिकथा सुनते और अशुभ कर्मोंसे रहित होकर साधु व ब्राह्मणकी भक्ति करते तो अच्छा होता ऐसा विचारकर उन्होंने सातों द्वीपके राजा व ऋषीश्वर व ब्राह्मण व महात्मा व चारों वर्णके लोगोंको नेवता भेज दिया सो थोड़े दिनोंमें सब लोग राजा पृथुके यहां आनकर इकट्ठे हुये राजा ने उनका सन्मान किया कि सब प्रसन्न होगये ॥

इक्कीसवां अध्याय।

राजा पृथुका सब राजाओं से भगवद्भजन अपने अपने राज्यमें फैलावने के वास्ते कहना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसे कहा कि जब राजा पृथु सब राजोंका शिष्टाचार खिलाने पिलाने व नाचरंग दिखलानेसे करचुके तब सब राजा व प्रजा व ऋषीश्वरोंको सभामें बैठालकर बोले कि एक वस्तु हम तुमलोगोंसे मांगते हैं पर दबाव करके नहीं कहते तुमलोग दया करके अपनी प्रसन्नतासे हम को देव तो हम तुम्हारा बड़ा उपकार मानैंगे यह दीन वचन सुनकर सब राजाओंने हाथ जोड़कर विनय किया हे पृथ्वीनाथ हमारा तनु व धन स्त्री व पुत्र सब तुम्हारे ऊपर नेवछावर हैं जो आज्ञा देव सो करैं तब राजा पृथु बोले मैं चाहताहूँ कि सातोंद्वीपमें जितने मनुष्य छोटे व बड़े स्त्री व पुरुष चारों वर्णके हैं भक्ति व पूजा जप व स्मरण नाम नारायणजीका किया करैं जिस राजाके देशमें प्रजालोग जो धर्म या पाप करते हैं उसका छठवां भाग राजाको पहुँचताहै सो परमेश्वरका भजन व स्मरण करना व भक्ति व प्रीति उनके चरणोंमें रखना व अवतारोंकी कथा व लीला सुनना चारों वर्णको अवश्य चाहिये हरिभजन व भक्ति करना किसी वर्णके वास्ते पृथक् नहीं बनाहै चारों वर्ण में जो कोई सच्चे मनसे स्मरण व भक्ति करता है परमेश्वर उसपर दयालु होकर अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थ उसे देते हैं देखो शबरी भिल्लिनिका जूठा बेर दिया हुआ परमेश्वरने बड़े प्रेमसे खाया था इसीतरह बहुत मनुष्य हरिभक्त बड़ी पदवीको पहुँचे हैं दूसरे राजों

के वक्त में और और धर्म वर्ण व आश्रमके प्रसिद्ध थे अब हमारी इच्छा यह है कि मेरे समयमें परमेश्वरका नाम लेना व उनकी भक्तिका प्रचार होवे सो तुमलोग अपनी अपनी प्रजाको इसीतरह का धर्म उपदेश करो राजाको छठवां भाग अन्न जो खेतमें उपजताहै प्रजासे लेना चाहिये सो हमने अपना छठवां अंश प्रजाको छोड़ दिया उसीमें सबलोग होम व दान किया करैं सिवाय उसके और जिस किसीको द्रव्यकी चाहना हो वह मेरे यहांसे लेजाकर शुभकर्ममें खर्च किया करै हम इसमें बहुत प्रसन्नहैं जो धन धर्म में खर्च हो व दूसरेके काम आवै उसीको सफल जानना चाहिये व हरिभक्ति करनेसे मनुष्यकी सब कामना पूर्ण होकर मरने उपरान्त वैकुण्ठका सुख मिलताहै जिसतरह अग्नि काठमें रहकर उपाय किये विना नहीं निकलती उसीतरह परमेश्वर सबके हृदयमें रहकर विना भक्ति किये व ज्ञान प्राप्त हुये दिखलाई नहीं देते व परमेश्वरका जड़मुख अग्नि व चैतन्यमुख ब्राह्मण होकर नारायणजी जितना ब्राह्मणको भोजन खिलानेसे प्रसन्न होते हैं उतना यज्ञ व होम अग्निमें करनेसे प्रसन्न नहीं होते सो मैं उन्हीं ब्राह्मणोंके चरणों की धूरि अपने मस्तकपर चढ़ाताहूं जिनकी सेवा करनेसे मनुष्य तुरन्त अपना मनोरथ पाताहै जिस मनुष्यसे ब्राह्मण प्रसन्न हो उसको समझना चाहिये कि परमेश्वर इससे राजी हैं व जिसपर ब्राह्मण क्रोध करै उसे परमेश्वरका शत्रु जानना उचितहै यह बात सुनते ही सब ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंने राजाको आशीर्वाद देकर कहा जब आप ऐसा धर्मात्मा राजा हमलोगोंने पाया तब दुःख हमारे छूटगये सो सब राजाओंने अपने अपने देशमें आकर पृथुकी आज्ञानुसार धर्मका प्रचार करदिया जब राजा पृथु धर्मात्माके उपदेशसे सब संसारी मनुष्य सातों द्वीपमें हरिचरणोंकी भक्ति व स्मरण नाम परमेश्वरका करने लगे तब देवलोकमें यह समाचार सुनकर एकदिन सनकादिक ऋषीश्वरोंने ब्रह्माजी की सभामें कहा मर्त्यलोकमें राजा पृथु ऐसा धर्मात्मा उत्पन्न हुआहै कि जिसके उपदेश से हरिभजन व भागवत धर्म संसार में फैलगया उसके धर्मसे सबलोग कृतार्थ होंगे सो हमभी उस राजाको देखने जातेहैं ऐसा

कहकर वह चारों भाई पृथुसे भेंट करने वास्ते राजमन्दिरपर आये राजा उन्हें आकाशमार्ग से सूर्य के समान आते देखकर अपनी सभासमेत उठ खड़ा हुआ व दण्डवत् करके बड़े हर्ष व सन्मानसे सिंहासनपर बैठालकर चरण उनका धोया और विधिपूर्वक पूजन करने व चरणामृत लेने उपरान्त हाथ जोड़कर विनय किया महाराज मेरे पिछले जन्मका पुण्य उदय हुआ जो आपने विना बुलाये अपना दर्शन देकर मुझे कृतार्थ किया यह दीन वचन सुनकर सनत्कुमारजी बोले हे राजा परमेश्वरसे तेरी भक्ति सुनकर हम तुझे देखने वास्ते आयेहैं राजाने उनकी अतिदया अपने ऊपर देखकर पूंछा हे दीनबन्धु संसारी मनुष्य जन्म व मरणसे किसतरह छूटतेहैं सनत्कुमारने कहा हे राजा तुमने जगत्का भला करने वास्ते यह बात पूंछी है सो उसका उपाय हम बतलाते हैं सुनो जो कोई मनुष्य तनु पाकर अन्तःकरणमें श्यामसुन्दरके चरण व स्वरूपका ध्यान व जिह्वासे स्मरण व हरिचर्चा रखकर कानोंसे उनकी कथा व लीला साथ प्रीतिके सुना करै वह मनुष्य आवागमनसे रहित होताहै और प्रीति परमेश्वरमें दृढ़ होजानेसे फिर कम नहीं होती व साधु व महात्माके मिलने में दोनोंको लाभ होता है संसारीमें अपने शरीर व घर व स्त्री व पुत्रोंको अपना समझ कर उनसे प्रीति रखना यही दुःखकी फांसी जानो व परमेश्वरके चरणों का ध्यान करनेसे ज्ञान प्राप्त होताहै व काम क्रोध मोह लोभमें चित्त लगानेसे ज्ञान नहीं रहता यह बात विचारकर मनुष्यको उचितहै कि कुसंगसे अलग रहकर सन्त व महात्मोंकी सेवा किया करै जिसमें उसका कल्याण हो सिवाय इसके दूसरा कुछ उपाय मुक्ति होनेवास्ते नहीं है यह ज्ञान सुनकर राजाने विनय किया हे तरणतारण महाराज आप जिसतरह कृपा करके यहां आये उसीतरह दयालु होकर ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि जिसमें सब प्रजा मेरी हरिभक्त होजावै और यह ज्ञान जो आपने मुझे उपदेश किया इसके बदले तुम्हें कौनसी वस्तु देऊं कदाचित् अपना शिर देऊं तो वह ज्ञानकी बराबरी नहीं रखता व जब मैंने शिर झुकाकर आपको दण्डवत् किया तब शिरदेनेमें कुछ बाकी नहीं रहा और सब धन व राज्य अपना मैं ब्राह्मण

व वैष्णवका समझकर उन लोगों से जो बचता है उसको अपने अर्थ में लाताहूं इसलिये आपको कुछ दे नहीं सक्ता तुम्हारा ऋणीहूं सो आप दया करके कोई ऐसा उपाय करें जिसमें इस ऋणसे उऋण होजाऊं सनत्कुमार जीने कहा हे राजा जिसतरह कोई किसी का ऋणियां हो व पावनेवाला ऋणका कहै कि हमने तुझे छोड़ दिया तो वह उऋण हो जाता है उसी तरह हमनेभी ऋण छोड़कर तुम्हें उऋण करदिया सनकादिक ऐसा कह कर ब्रह्मलोकको चलेगये ॥

बाईसवां अध्याय।

राजा पृथुका तप करनेवास्ते अरुचि अपनी स्त्रीसमेत वनमें जाना ॥

मैत्रेयजी ने कहा कि हे विदुर सनकादिकके जाने उपरान्त राजा पृथुने उसीतरह साथ धर्म व प्रजापालनके बहुत दिनतक राज्य किया पर वह सदा साधु व ब्राह्मणकी सेवा व हरिभजन करके कथा व कीर्तन नारायण जीकी सुना करते थे व सातों द्वीपमें भगवद्भजन होता था जब राजाके अरुचिनाम स्त्रीसे विजिताश्व आदिक पांच पुत्र उत्पन्न हुये तब राजाने कुछदिन उपरान्त विचार किया कि देखो यह राज्य व धन सदा स्थिर न रहकर मरने उपरान्त साथ नहीं जाता इसलिये उत्तमहै कि मैं इनसे विरक्त होकर वनमें परमेश्वरका भजन व स्मरण करूं जिसमें मेरा परलोक बनै पृथुने यह बात विचारकर राजगद्दी विजिताश्व अपने बड़े बेटेको जो छ-त्तीस गुणोंका निधान था देदी व मन अपना संसारी मायासे विरक्त करके अरुचि अपनी स्त्रीसमेत वनमें जाकर बीच तप व ध्यान परमेश्वरके लीन हुआ राजा पृथुके चले जाने से सब प्रजाने बड़ा खेद किया ॥

तेईसवां अध्याय।

राजा पृथुका साथ योगाभ्यास के तनु त्याग करना व अरुचि उनकी स्त्रीका सती होना॥

मैत्रेयजी बोले हे विदुर राजा पृथुने बीच वनके जाकर गर्मीमें पं-चाग्नि तापा व बरसातमें बीच मैदानके बैठेरहे जाड़ेमें पानीके भीतर खड़े रहकर परमेश्वरका तप व स्मरण किया जब इसीतरह कुछ काल स्त्रीसमेत तप करते बीत गये तब एकदिन राजाने विचारा कि अब यह तनु छोड़

कर वैकुण्ठ में जाना चाहिये यह बात ठान के मध्याह्न समय राजा पृथुने बीच ध्यान आदि निरंकारज्योति साथ योगाभ्यासके बैठकर ब्रह्माण्डकी राह प्राण अपना निकालदिया तब अरुचि उनकी स्त्रीने यह हाल राजाका देखकर पहिले बहुत शोच किया फिर मनको धैर्य देकर उठी और वनमेंसे लकड़ी बटोरकर चिता बनाई व उस पर लोथ राजाकी धरकर आगि लगा दिया व अपने पतिका चरण देखती हुई सात परिक्रमा उस चिताकी किया और हाथ जोड़के बोली कि महाराज मैं तुम्हारे विना दूसरी जगह नहीं रहसक्ती मुझे अकेली छोड़कर कहां चले जहां आप जाते हैं वहां मुझकोभी अपने साथ सेवा व टहल करने वास्ते लेचलो जिसमें तुम्हारी सेवा करने से मेरा परलोक बने यह वचन कहने उपरान्त रानी भी उस चितामें कूदकर राजा के साथ सती होगई उससमय एक विमान बहुत अच्छा जड़ाऊ जिसमें मखमली बिछौना बिछे व मोतियों की झालरि लगी थी वैकुंठसे वहां पर आया सो राजा पृथु अपनी स्त्रीसमेत उसपर बैठकर वैकुंठको चलेगये ॥

चौबीसवां अध्याय।

देवतोंका पृथुकी स्तुति करना व विजिताश्व का साथ धर्मके राज्य करना ॥

मैत्रेयजी बोले हे विदुर जिस समय राजा पृथु अपनी स्त्रीसमेत विमान पर बैठकर वैकुण्ठको गये उससमय देवतालोग उनकी स्तुति करके आपसमें कहने लगे कि देखो आज तक इस तरहका राज्य व प्रजापालन व तपस्या किसी राजाने नहीं किया और न ऐसी पतिव्रता स्त्री अरुचि के समान दूसरी होगी व राजाने अपनी राजगद्दीके समय ऐसा धर्म बढ़ाया कि सातों द्वीपमें संसारीलोग हरिभक्त होगये और वह इसलिये राज्य-काज करते थे कि जिसमें अधर्मियों व पापियोंको दण्ड देनेसे पुण्य प्राप्त हो व राजा पृथु जो नारायणजीका अवतारथे संसारी राजाओंको धर्म उप-देश करने व पृथ्वीपर नगर व गांव आदिक बसाकर जीवोंको सुख देने के वास्ते शरीर धारण किया था इतनी कथा सुनाकर मैत्रेयजी बोले कि हे विदुर जब राजा पृथुका विजिताश्व बड़ा बेटा राजगद्दीपर बैठा तब उसने

अपने चारों भाइयोंको चारों दिशाका राज्य बांट दिया व निज राजगद्दी पर आप बैठकर साथ धर्म व प्रजापालनके राज्य करने लगा उसके राज्यमें भी सब प्रजा सुखी रहतीथी इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित एकबेर वशिष्ठजीने तीन तरह की अग्निको एक जिसमें ब्राह्मण हवन करतेहैं व दूसरी रसोई बनावनेकी व तीसरी जो काष्ठमें रहती है शाप दिया था कि तुम मर्त्यलोकमें जाकर बीच तनु मनुष्यके जन्म लेव सो उस शापसे उन तीनों अग्निने संसारमें आनकर राजा विजिताश्वके यहां शिखण्डिनी नाम स्त्रीसे जन्म लिया सो राजाने पावक व पुमान व शुचि उनका नाम रक्खा वह लोग थोड़े दिन संसारमें रहकर तनु छोड़ने उपरांत फिर अग्निदेवता होगये व राजा विजिताश्व के प्रसूति नाम दूसरी स्त्रीसे हविर्धान नाम बेटा उत्पन्न होकर विवाह उसका हविर्धानी नाम अग्निकी कन्या से हुआ सो हविर्धान के उसी स्त्री से प्राचीनबर्हिष आदि छः बेटे उत्पन्न हुये प्राचीनबर्हिषके यहां सत्यवती नाम स्त्रीसे जो अतिसुन्दरी थी दश बालक एक रूपके जिन्हें प्रचेता कहते हैं जन्मे शरीर उनका दश लड़कोंकी तरह जुदा जुदा होकर रूप व ज्ञान सबका एक था इसवास्ते दशोंका नाम प्रचेता रक्खा एकको बुलाओ तो दशौ बोलें उन में एक जो काम करै वही दशौ करैं एकके बीमार होनेसे दशौ मांदे हो जावैं प्रत्यक्षमें वह दशौ अलग अलग होकर बुद्धि व प्रारब्ध व कर्म व मृत्यु व जीवन सबका एकसाथ था जब उन्होंने अपने पिताकी आज्ञासे वनमें जाकर दशहजार वर्ष परमेश्वरकी तपस्या की तब महादेवजी व उनसे बहुत ज्ञानचर्चा हुई॥

पचीसवां अध्याय।

महादेव व प्रचेतों का संवाद॥

विदुरजीने इतनी कथा सुनकर मैत्रेय ऋषीश्वरसे पूंछा जो कुछ ज्ञानचर्चा महादेवजी व प्रचेतोंसे हुई थी वह वर्णन कीजिये मैत्रेयजीने कहा जब कि प्रचेतालोग उत्पन्न हुये तब प्राचीनबर्हिषने उन दशों पुत्रों को आज्ञा दी कि पहिले तुमलोग वनमें जाकर परमेश्वरका तप करो भगवान्

का दर्शन होने उपरांत नारायणी सृष्टि संसारमें उत्पन्न करना प्रचेतालोग यह वचन सुनतेही घरसे निकलकर पश्चिमदिशामें समुद्र के निकट चले गये उनको वहां एक स्थान बहुत रमणीक तालाब के किनारे दिखलाई दिया सो उन्होंने वहां बैठकर आपस में विचारा कि हम नहीं जानते नारायणजी कौनहैं और किसतरह उनका तप व स्मरण करना चाहिये वहलोग इसी चिन्ता में बैठेथे कि उसी समय कुछ बोली मनुष्य की उनको सुनाई देने लगी तब उन्होंने आपस में कहा यहां कोई दिखलाई नहीं देता यह कौन बोलता है यही चर्चा कररहे थे कि महादेवजी उसी तालाब में से निकलकर वहां आये उनके साथ देवतालोग स्तुति करते व गन्धर्व गाते थे जब प्रचेतालोग उनको नहीं पहिचानकर उसीतरह बैठेरहे तब शिवजी ने कहा हे प्रचेतो हम महादेव होकर तुमलोगों को ज्ञान सिखलाने वास्ते यहां आये हैं कि भजन व स्मरण नारायणजी का इसतरहसे करो जिसमें उनका दर्शन तुमको प्राप्त हो और मैं जिस तरह परमेश्वरको जानताहूं उसी तरह नारायणजीके भक्त मुझे प्यारे हैं सो मैं तुम्हें हरिभक्त समझकर ज्ञान सिखलाताहूं यह वचन सुनतेही प्रचेतों ने बड़े हर्षसे खड़े होकर शिवजीको दण्डवत् किया व बड़े सन्मान से बैठालकर विनयपूर्वक उनकी स्तुति करनेलगे तब शिवजीने हंसगुह्यस्तोत्र नारायणस्तुतिका प्रचेतोंको सिखलाकर कहा तुमलोग नित्य प्रातःकाल व सन्ध्यासमय और स्नान करने उपरान्त यह स्तोत्र पढ़कर नारायणजीकी स्तुति व चतुर्भुजी स्वरूपका ध्यान किया करो परमेश्वर तुम्हें जल्दी मिलेंगे सो हे प्रचेतो मैं दिन रात यही काम रखकर हरिभक्त व ज्ञानियोंका दर्शन किया करताहूं व जो लोग अपने अज्ञान से परमेश्वर के भजन व स्मरणमें चाहना नहीं रखते उनको ज्ञान सिखलाकर सौ जन्मतक कृतार्थ करदेताहूं बीच धर्म व वर्ण अपने जैसा ब्राह्मण व क्षत्री व वैश्य व शूद्रके वास्ते वेद व शास्त्रमें लिखा है दृढ़ रहकर वैसा कर्म करें व पाप व अधर्म के निकट न जावैं वे मनुष्य सौ जन्मतक महादेव रहकर फिर चतुर्भुजी रूप परमेश्वरको पातेहैं इसतरहका धर्म व हरिभक्ति करनेवाले मनुष्य दूसरी

बातका कुछ प्रयोजन नहीं रखतें महादेवजी यह ज्ञान प्रचेतोंको सिखला कर कैलासको चलेगये ॥

छब्बीसवां अध्याय।

नारदजीका प्राचीनबर्हिष प्रचेतोंके बापसे भेंट करना ॥

दोहा ॥ साधन यज्ञ अनेकसे सरै न एकौ काम। विना भक्ति भगवन्तकी जीव न लह विश्राम॥

मैत्रेयजीने कहा हे विदुर प्रचेतालोग साधु व वैष्णवकी बड़ाई व परमेश्वरके मिलने का उपाय महादेवजीसे सुनकर आनन्दपूर्वक बीच पढ़ने स्तोत्र व करने ध्यान नारायणजीके लीन हुये जब उनको दशहजार वर्ष हरिभजन करते करते बीत गये तब परमेश्वरने प्रसन्न होकर दर्शन देके बड़े हर्षसे उन्हें वरदान दिया तिसपर भी वे लोग संसारी व्यवहार झूठा समझकर उसीतरह परमेश्वरका तप व ध्यान करते रहे व प्राचीनबर्हिष उनके पिताने बहुत दिनोंतक संसारी सुख व राज्य भोगकर यह बात विचार की कि राज्य व द्रव्य भगवान्‌जीकी दयासे पाकर यह धन संसारीसुख में खर्च करना अच्छा नहीं होता उसे यज्ञ व दानादिक में खर्च करके अपना परलोक बनाना चाहिये ऐसा विचारकर राजाने इतना यज्ञ व दान करना आरम्भ किया कि शास्त्रानुसार मध्यदेश भरतखण्डमें जिस जिस स्थानपर यज्ञ करना उचित था कोई जगह विना यज्ञ किये बाकी नहीं रही पर राजाका मन विरक्त न होकर वास्ते सुख इन्द्रलोक व स्वर्गकी चाहना रखता था यह हाल उसका देखकर नारदजीने विचारा देखो राजा की आयुर्दा यज्ञ करते करते बीति जाया चाहती है केवल यज्ञ करनेसे इसका परलोक नहीं बनैगा यह राजा पृथु धर्मात्माके कुलमें उत्पन्न हुआहै इस वास्ते कुछ ज्ञान सिखलाकर इसे भवसागर पार उतारना चाहिये यह बात विचारकर नारद मुनि मर्त्यलोक में राजाके पास आये उन्हें देखतेही राजा ने बड़े हर्षसे दण्डवत् करने व आदरभावसे बैठालने उपरान्त हाथ जोड़ कर विनय किया महाराज मेरा भाग्य उदय हुआ जो आप ऐसे महात्मा पुरुषने कृपा करके मुझे दर्शन दिया नारदजी हँसकर बोले हे राजा सच बातहै तेरा बड़ाभाग्य था जो तू मनुष्य तनु पाकर भरतखण्ड के प्रजाओं

का राजा हुआ व तुमने इस भरतखण्ड कर्मभूमिमें यज्ञ आदिक बहुत धर्म व कर्म किया जहांकी इच्छा करके रास्ता चले उस ठिकाने पहुँचना चाहिये व कदाचित् चलते चलते रास्तामें आयुर्दा पूरी होजावै व अपने स्थानपर न पहुँचै तो उस राह चलनेसे सिवाय थकनेके क्या लाभ होगा यह वचन नारदमुनिका सुनतेही राजाने बड़ा आश्चर्य मानकर कहा देखो वेद व पुराणमें यज्ञ व दान करनेका बड़ा पुण्य वर्णन कियाहै उससे अधिक दूसरा धर्म नहीं लिखता व नारदजी ऐसा कहते हैं इसका क्या भेदहै राजा यह बात विचारकर चिन्ता करने लगे॥

सत्ताईसवां अध्याय।

राजा प्राचीनबर्हिषका जीवोंका स्वरूप देखना जिनको मारकर यज्ञमें हवन किया था॥

नारदजीने राजाके मनकी बात अपने ज्ञानसे समझकर विचार किया कि जबतक राजाको कुछ डर न दिखलावैंगे तब तक मन उसका यज्ञ करनेकी तरफसे फिर नहीं सक्ता ऐसा विचारकर नारद मुनिने अपने योगबलसे जितने पशु राजाने यज्ञमें मारे थे उन सबोंको आकाश में राजाके सामने लाकर खड़ा करदिया जब वे सब जीव राजाको घूरने लगे तब नारदजी बोले हे राजा यह सब जानवर तुमको क्या देखरहे हैं जैसे राजा ने आकाशकी तरफ आंख उठाकर उनको क्रोधसे अपनी तरफ घूरते देखा वैसे मारे डरके कांपता हुआ नारदजी से बोला हे मुनिनाथ मैंने इन सब पशुओंको मारकर यज्ञमें हवन किया सो ये सब किसवास्ते मुझे क्रोधसे देखते हैं आप कृपा करके इसका कारण वर्णन कीजिये जिसमें मेरा डर व सन्देह छूटजावे यह वचन सुनकर नारदजी बोले हे राजन् जिसतरह तुमने इन जीवों को मार के यज्ञ में हवन किया उसीतरह तुमको भी यह सब पशु एक एक जन्ममें मारकर बदला अपना लेवैंगे यह वचन सुनतेही राजाको इस बातका बड़ा शोच हुआ कि जितने जीव मैंने मारे हैं उतने जन्म मुझे लेनेपड़ैंगे तब इनके बदलेसे मैं उऋण होऊंगा मुझसे बड़ी चूक हुईजो इतने जीवोंको मारकर हवन किया ऐसा विचारकर राजा बोला महाराज जितने पण्डित व उपरोहित व मंत्रीलोग मेरे यहां हैं सबों ने

मुझको यह मत दिया था कि यज्ञ करनेसे उत्तम दूसरा धर्म नहीं है और आप मुझे इसमें डर दिखलाते हैं इसका कारण कहिये उस समय राजाके निकट एक पिंजरा मैना व एक पिंजरा तोतेका रक्खा हुआ देख कर नारदजी बोले हे राजन् यह तोता मैनासे बारम्बार कहताहै कि तू मुझको इस पिंजरेसे निकालदे तो मैं बन्दीसे छूटकर वनमें पक्षियोंके साथ विहार करूं व मैना कहतीहै हे तोते मैंभी चाहतीहूं कि कोई मुझे इस पिंजरेसे बाहर निकाल देता तो अपने साथियोंमें जाकर खुशी मनाती सो दोनों आपसमें एकदूसरेसे कहतेहैं पहिले तुम उड़ो पर उड़नेकी सामर्थ्य नहीं रखता जो दूसरे को पिंजरेसे बाहर निकालै यह बात सुनकर राजा बोला हे मुनिनाथ यह दोनों आप पिंजरे में बन्द हैं किसतरह एक दूसरेको निकालने सकैं जब उनमें एक पिंजरेके बाहर हो तब दूसरे के निकालनेका उपाय करै नारदजी बोले हे राजन् इसीतरह तुम्हारे पण्डित व उपरोहित व मन्त्रीलोग भी संसाररूपी मायाजालके पिंजरे में पड़े रहकर क्या सामर्थ्य रखते हैं जो तुम्हें इस संसाररूपीजालसे बाहर करसकैं यह बात सुनकर राजा समझा कि आजतक ऐसा ज्ञानी मुझको कोई नहीं मिला जिसका वचन सुनने में मुझे ज्ञान प्राप्त होता ऐसा विचारकर राजाने विनय किया महाराज आप कोई ऐसा उपाय बतलावें जिससे इन जीवों के हाथसे बचकर मुक्तिपदवी पाऊं यह बात सुनकर नारदजी बोले हे राजन् हम एक इतिहास तुमसे कहतेहैं सुनो एक पुरंजन नाम राजा अविज्ञात अपने मित्रसे बड़ी प्रीति रखता था व किसी दूसरेको यह बात नहीं मालूम थी व अविज्ञात सबतरह से राजाके खाने व पहिरने व सुख व आरामकी सुधि लेताथा एकसमय राजा पुरंजन अपनी इच्छासे अविज्ञात का साथ छोड़कर किसी दूसरे स्थानमें जानेवास्ते इच्छा करके चला सो वह पूर्व व पश्चिम व उत्तर तीनों दिशा में ढूंढ़ता व घूमता हुआ बहुत दिनतक व्याकुल रहा इच्छापूर्वक कोई स्थान रहनेयोग्य उसे नहीं मिला जब वह दक्षिणदिशामें पहुँचा तब एक मकान किलेके समान बहुत अच्छा नवदरवाजेका दिखलाई दिया उसके चारों तरफ नहर व बाग व फल व फूल व मेवोंके वृक्ष रहकर अनेक रंगके

पक्षी मीठी मीठी बोली बोलनेवाले बैठे हुये चहचहा मचा रहेथे वहां सब तरहका सुख देखकर राजा पुरंजन उस मकानमें रहनेके वास्ते इच्छा करके भीतर चला द्वारपर पहुँचकर क्या देखा कि एक युवती स्त्री महासुन्दरी अनेक प्रकारके भूषण व वस्त्र धारण किये वहां टहल रही है और दश सहेलियां उसके साथ सेवा व टहल करनेवास्ते थीं व उससे थोड़ी दूर आगे एक सांप पांच फणका दरवाजेपर बैठा हुआ दिखलाई दिया राजा पुरंजन उस स्त्रीको देखतेही उसके रूपपर मोहित होगया ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ।

राजा पुरंजनका उस स्त्रीसे विवाह करके सुख व विलास करना ॥

नारदजी बोले हे प्राचीनवर्हिष जब राजा पुरंजनका चित्त उस स्त्रीपर मोहित होगया तब उसके पास जाकर प्रेमसे पूंछा हे सुन्दरी तुम देवकन्या व लक्ष्मीके समान किसकी बेटी व स्त्री होकर किस इच्छासे यहां टहलती हो तुम्हारी आंखोंके बाणसे मन पुरुषोंका घायल होजाताहै और यह मकान किसने बनाया और इसमें कौन रहताहै यह मीठा वचन सुनतेही वह स्त्री मुसकराकर बोली हे राजन् मैं अपने माता व पिताका नाम नहीं जानती कि किसकी बेटीहूं व अभी तक मेरा विवाह नहीं हुआ इसलिये मुझेशादी करने की चाहनाहै व नहीं मालूम यहमकान किसने बनाया पर मैं यहां रहतीहूं जो कोई मेरे साथ विवाहकरै वह भी इस किलेमें रहै और यह सांप मेरे दरवाजेपर रक्षा करने के वास्ते रहताहै यह वचन सुनतेही राजा पुरंजनने बहुत प्रसन्न होकर कहा अय प्राणप्यारी मुझे अंगीकार करो तो मैं तुमसे ब्याह करनेमें बहुत प्रसन्नहूं तुम्हारे साथ विवाह करके इस स्थानमें रहकर भोग व विलास करूंगा वह सुन्दरी हँसकर बोली हे राजन् तुम्हारा ऐसा सुन्दररूप देखकर कौन स्त्री मोहित न होगी जब इसतरह दोनोंसे बातचीत हुई तब राजा पुरंजन उसके साथ किलेमें जाकर गन्धर्व विवाह करके भोग व विलास करने लगा व राजा ऐसा उसके साथ वश्य होगया कि दिन रात उसकी आज्ञामें रहकर विना पूंछे कोई काम नहीं करता था जब पुरंजनके उस स्त्रीसे बहुत बेटी व बेटे उत्पन्न हुये तब राजा उनका विवाह करने उपरान्त

एक दिन विना पूंछे उस स्त्रीके रथपर सवार हुआ व शिकार खेलने वास्ते वनमें जाकर बहुतसे पशु मारे इसलिये रानी क्रोधमें भरकर मैली धोती पहिनके कोपभवनमें पड़रही जब राजा शिकारमें दौड़धूप करने से प्यासा होकर अपने मकानपर आया तब उसने पानी पीने उपरान्त दासियोंसे रानी का हाल पूंछा सो उन्होंने कहा न मालूम आज कौनसा दुःख रानी को उत्पन्न हुआ जो गहना व कपड़ा उतारकर पृथ्वीपर पड़ी हैं यह वचन सुनतेही राजाने बड़े डर व शोचमें दौड़ेहुये रानीके पास जाकर प्रेमसे पुकारा जब वह मारे क्रोधके कुछ नहीं बोली तब राजा बड़ी विनतीसे उसका चरण दाबकर कहने लगा हे प्राणप्यारी तू किसवास्ते मुझसे नहीं बोलती मैंने कौन वस्तु तुझे न देकर किस बातमें तेरा कहना नहीं माना जो इतना दुःख उठाती है तेरी यह दशा देखने से मेरा कलेजा फटता है तुझे मेरी सौगन्द है जल्दी सच बतलादे तुझे किसीने दुर्वचन कहा हो तो अभी उसको दंड देऊं यह वचन सुनतेही रानी क्रोधसे बोली यह सब तुम्हारा कसूरहै जो विना मेरे पूंछे शिकार खेलने चलेगये थे इसीकारण उदासहूं तब राजा पुरंजन रानीके पांवपर गिरकर हाथ जोड़के बोला मुझसे चूक हुई जो विना पूंछे चला गया अब तेरी आज्ञा विना नहीं जाऊंगा मुझे अपना दास समझके इसबेर मेरा अपराध क्षमा कर तेरे ऊपर न्योछावर होताहूं तुम अपनी भुजासे मुझे बांधकर जो चाहो सो दण्ड करो जब ऐसी बिनती करनेसे रानी उठी तब राजाने अपने हाथसे उसका मुख धोकर शरीरकी धूरि झाड़ दी व उसको गहना व कपड़ा पहिनाकर बहुत दिनतक उसके साथ भोग व विलास किया पर मन उसका मायारूपी जगत्से विरक्त नहीं हुआ जिसतरह तुझे संसारी चाहना बनी है उसीतरह राजा पुरंजनको बुढ़ाई आने व इन्द्रियां शिथिल होनेपर भी संसारका मोह लगा था इतना हाल पुरंजनका सुनाकर नारद मुनि बोले हे प्राचीनबर्हिष मृत्युनाम कालकी बेटी अपना पति ढूंढ़नेवास्ते सब जगह जाती थी पर उसे मृत्यु जान कर कोई अंगीकार नहीं करता था सो वह एक दिन मेरे पास आनकर कहने लगी तुम मेरे साथ ब्याह करो जब मैंने नहीं माना

तब उसने क्रोध करके मुझे शाप दिया कि तुम एक मुहूर्त से अधिक किसी जगह नहीं रहकर दिन रात फिरते घूमते रहो अढ़ाई घड़ीसे सिवाय कहीं ठहरोगे तो तुम्हारा शिर दूखैगा जब उसने मुझको ऐसा शाप दिया तब मैंने उसे यह उपाय बतलाया कि तू जाकर प्रज्वार गन्धर्वकी बहिन हो जा उसके बड़ी सेनाहै वह नित्य एक पुरुष पकड़कर तुझसे भोग करनेके वास्ते दिया करैगा यह वचन सुनतेही वह कन्या प्रज्वार गन्धर्वसे जाकर बोली मैं तुम्हारी बहिन होने वास्ते आईहूं गन्धर्व बोला बहुत अच्छा तुम यहां रहो फिर प्रज्वारने जरानाम कुटनीको बुलाकर कहा तू इसके वास्ते एक मनुष्य युवा व सुन्दर ठहराव तो हम इसका ब्याह उससे करदेवें इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् कदाचित् कोई किसीको कुछ चीज अपनी खुशीसे दे और वह न लेवे या धन पाकर दान व पुण्य न करै वह मनुष्य पीछेसे दुःख पाता है व परमेश्वरने मृत्युकी अवधि इस वास्ते नहीं रक्खी जो मनुष्यको अपनी मृत्युका हाल मालूम होता तो वह अधर्म करना छोड़कर विरक्त होजाता इसलिये अपनी मायासे यह बात परमेश्वरने गुप्त रक्खी है ॥

उन्तीसवां अध्याय ।

प्रज्वारका अपनी सेना लेकर पुरंजनके मारनेके वास्ते जाना ॥

नारदजी बोले हे राजन् जब जरानाम कुटनीने जाकर प्रज्वार गन्धर्व से कहा कि राजा पुरंजन इसके विवाह करने योग्य है तब प्रज्वारने तीन सौ साठ गन्धर्व व तीन सौ साठ गन्धर्विनी सेनाको साथ लेके राजा पुरंजनसे लड़नेके वास्ते जाकर उसका किला घेर लिया तब वह सांप जो द्वारेपर पांच फणका रहता था गन्धर्वोंसे युद्ध करने लगा व उन्हें भीतर जाने नहीं दिया जब वह सांप अकेला लड़ते लड़ते थक गया तब उदास होकर कहने लगा देखो मैं इतने दिन शत्रुसे लड़ा पर मेरा स्वामी भोग व विलासमें ऐसा आसक्तहै जिसने कुछभी मेरी सहायता नहीं की जब इसतरह शोच करने व लड़नेसे वह सांप थकगया व एक खुखले वृक्ष में जा घुसा तब प्रज्वार गन्धर्व उस किलेमें आगि लगाकर भीतर चलागया

जब आगि लगनेसे पुरंजन व्याकुल होकर अपना प्राण बचाने न सका तब अपने कुटुम्ब की रक्षा क्या करेगा उस समय पुरंजनने उदास होकर विचारा कि किसीतरह मेरा प्राण बचता तो अच्छा था पुरंजनीका बचना तो बहुत कठिनहै उसी चिन्तामें राजा पुरंजन जल कर मरगया सो मलय-देशमें राजा विदर्भकी बेटी हुआ व कारण स्त्री होनेका यहहै कि मरती समय पुरंजनीमें उसका ध्यान लगा था इसलिये स्त्रीका तनु पाया व पांचाल देशमें मलयध्वज राजासे जो बड़ा धर्मातमा था ब्याह उसका हुआ सो बहुत दिनतक उसने गृहस्थी का सुख उठाया व सात बेटे व कई पोते उत्पन्न हुये॥

तीसवां अध्याय।

राजा मलयध्वजका मरना व पुरञ्जनका अविज्ञात अपने मित्रसे भेंट करना॥

नारदजीने कहा हे प्राचीनबर्हिष मलयध्वज बहुत दिन राज्य करके अगस्त्य मुनिसे ज्ञान सीखकर संसारीमाया से विरक्त होगये व राजगद्दी अपने बेटेको देदी व स्त्रीसमेत वनमें जाकर बहुत दिन हरिभजन करके जब शरीर अपना त्याग किया तब रानी चिता बनाने व लोथ राजाकी उसपर रखने उपरांत दाह करनेके वास्ते तैयार हुई पर मोहवश आगि नहीं लगाकर अतिविलाप करने लगी तब अविज्ञात उसके पुराने मित्रने वहां आनकर उसे पहिंचाना कि यह वही पुरंजनहै जिसने मेरा साथ छोड़कर पुरुषसे स्त्रीका तनु पाया यह दशा उसकी देखकर अविज्ञातने दया करके जब स्त्रीरूप पुरंजनसे पूंछा तू किस वास्ते इतना रोती है और यह तेरा कौन था जो मरगया मुझको तैंने पहिंचाना या नहीं तब रानी बोली मैं तुझे नहीं पहिंचानती व यह मेरा पति मरगयाहै जिसके शोचमें रोतीहूं यह बात सुन कर अविज्ञातने कहा तू पूर्वजन्म पुरंजन नाम पुरुष था और मैं अविज्ञातनाम तेरा मित्रहूं सो तू मेरा साथ छोड़कर घरसे निकल आया व एक स्त्रीके संग भोग व विलास संसारी सुखमें लिपटकर मुझे भूलगया इसलिये तैंने स्त्रीका तनु पाया इस मरनेका शोच छोड़के पुरुष तनु मिलने का उपाय करना चाहिये और हम व तुम दोनों मनुष्य हंसरूपी जीवात्मा

व परमात्मा मानसरोवर के किनारे के रहनेवाले हैं सो तू संसारी मोह में फँसकर नष्ट होगया यह जीव मेरी मायासे चौरासीलाख योनिमें अनेक प्रकारका तनु पाताहै यह वचन सुनतेही जब स्त्रीरूप पुरंजन को ज्ञान उत्पन्न हुआ तब उसने पतिका शोच छोड़कर लोथ उसकी जला दिया व अविज्ञातकी आज्ञानुसार हरिभजनमें लीन होकर वह शरीर छोड़ने उपरांत पुरुषका तनु पाया व अविज्ञातसे जा मिला इतनी कथा सुनकर प्राचीन-बर्हिष ने नारदजी से पूंछा कि महाराज मैं संसारी जीव इतना ज्ञान नहीं रखता जो इस कथाका अर्थ समभसकूं आप दयालु होकर विस्तारपूर्वक इसका हाल वर्णन कीजिये तब मेरी समभ में आवै यह वचन सुनकर नारदजी बोले हे राजा वह पुरंजन जीव और अविज्ञातनाम मित्र परमेश्वर को समभना चाहिये जो इस जीवकी रक्षा सब जगह नरक व गर्भादिकमें करते हैं पर किसीको दिखलाई नहीं देते और यह जीव परमेश्वरका स्मरण व ध्यान छोड़कर संसारी सुखमें फँसने व अपने ज्ञानसे जैसा जैसा कर्म करताहै वैसा वैसा जन्म चौरासीलाख योनिमें पाकर इच्छापूर्वक उस तनु में सुखी नहीं होता उसीतरह पुरंजन भी अविज्ञात का साथ छोड़कर चौरासीलाख योनिमें बहुत दिनतक भ्रमता रहा जिसतरह यह जीव मनुष्यका तनु पाकर प्रसन्न होताहै उसीतरह पुरंजनभी किलेको देखकर बहुत खुश हुआ था व जैसे उस किलेमें नवद्वारथे वैसे मनुष्यतनुमें कान व नाका-दिक नव छिद्र इन्द्रियों के हैं और शरीर मनुष्यका रथके समान है जिस पर बैठकर पुरंजन शिकार खेलने गया था उस रथके घोड़े इन्द्रियोंको समभना चाहिये जिसओर मन आदिक इन्द्रियां दौड़ती हैं वही मनुष्य करता और मनुष्यके अहंकारको यह सांप जो पुरंजनने किलेके दरवाजें पर देखाथा समभना उचितहै किसवास्ते कि मनुष्य बुढ़ाई समयभी अपना अहंकार नहीं छोड़कर कहताहै कि हम मरतेदम तक अपने लड़के बालों का पालन करेंगे और यह बात नहीं जानता कि सबके पालन करनेवाले परमेश्वरहैं मनुष्य की बुद्धिको वह स्त्री जिसपर पुरञ्जन मोहित हुआ था समभना चाहिये जिसतरह मरतेदमतक बुद्धि मनुष्यके साथ रहकर अपनी

इच्छापूर्वक उससे काम कराती है उसीतरह पुरंजनने भी उस स्त्रीके वश रहकर आयुर्दा अपनी बिताई व जैसे अज्ञान मनुष्य अपनी बुद्धि व करतब के समान परमेश्वर त्रिलोकीनाथ उत्पन्न व पालन करनेवालेको भूलकर व पुराणकी बातोंपर विश्वास न रखनेसे अन्तमें दुःख पाता है तैसे पुरंजन भी अविज्ञात अपने मित्रका साथ छोड़ने व बुद्धिरूपी स्त्री का संग करनेसे बहुत दुःखी हुआ था व जिसतरह मनुष्य परिश्रम करने परभी अपना मनोरथ न पाकर पछताताहै उसीतरह पुरंजनने भी जलने व मरने के समय चिन्ता की थी व मनुष्यके तनुमें काम क्रोध लोभ मोहादिक जो भरा रहता है उसको पुरंजनका परिवार समझना चाहिये जिसतरह बुढ़ाई मरनेवालेकी खबर कालके यहां जाकर देती है कि उसको मार लेव उसीतरह जरानाम कुटनीनेभी पुरञ्जनकी बुढ़ाई देखकर प्रज्वार गन्धर्वसे उसके मारनेके वास्ते कहा था और वह कालकन्या मृत्यु होकर प्रज्वार गन्धर्व को अन्त समयका विषमज्वर जानना चाहिये व उसके साथ जो तीनसौसाठगन्धर्वथे उन्हें दिन व गन्धर्वियोंको रात्रि जानकर वही कालकी सेना समझो जिस दिन व रात्रिके बीतनेसे आयुर्दा पूर्ण होने उपरान्त काल मारलेताहै व जिसतरह बुढ़ाई समय इन्द्रियोंमें सामर्थ्य न रहकर लोहू व मांस शरीरका सूखजाता है उसीतरह प्रज्वारगन्धर्वकी सेनाने जाकर पुरंजन का किला जलादिया था व मरते समय जिस चीजमें मनुष्यका ध्यान लगा रहता है मरने उपरांत वही तनु पाता है सो पुरंजनका चित्त मरतेसमय पुरंजनीमें लगाथा इसलिये वह स्त्री हुआ सो अबला होनेसे अपने पतिकी आज्ञामें रहकर दिन काटने पड़तेहैं व जबतक इस जीवकी मुक्ति नहीं होती तबतक इसी तरह चौरासी लाख योनिमें जन्म पाकर दुःखसे नहीं छूटता जब वह अविज्ञात नाम मित्र जो ईश्वरहै दयाकरके मनुष्यतनुमें किसी साधु व महात्मा से भेंट करादे व उस महात्माके ज्ञान उपदेश करनेसे मनुष्य हरिकथा व कीर्तन सुनकर अज्ञान छोड़के हरिचरणों में प्रीति करै तब ईश्वरका भजन व स्मरण करके जन्म व मरणसे छूटै जिसतरह पुरञ्जन अविज्ञात मित्रकी कृपासे पहिला तनु अपना पाकर मुक्त हुआथा सो हे राजा विना ईश्वरकी

दयासे साधु व महात्माका दर्शन व सत्संग मिलना कठिनहै व मनुष्य विना सत्संग व सेवाकरने हरिभक्तोंके संसाररूपी जालसे निकल नहीं सक्ता सो तुमने बहुत दिनतक राजगद्दी पर बैठकर संसारी सुख भोगा व बहुतसा यज्ञ व दान करके यश पाया अब तुम्हैं उचितहै कि मन अपना विरक्त करके हरिचरणोंमें प्रीति लगाकर परमेश्वरका भजन व स्मरण करो जिसमें तुम्हारा परलोक बनै व जबतक संसारी मोह छोड़कर हरिचरणोंमें भक्ति न करोगे तब तक आवागमनसे छूटना बहुत दुर्लभ है सो तुम परमेश्वर की कथा व लीला सुनकर साधुव महात्मासे सत्संग करोगे तब तुम्हारा अन्तःकरण शुद्ध होगा व इस दान व यज्ञ करनेसे संसारीलोग थोड़ेदिन देवलोकमें सुख भोगकर फिर जन्म लेनेसे दुःख पाते हैं और विरक्त होने व भक्ति करनेसे वैकुंठका सुख मिलताहै सो तुमको भक्ति करना चाहिये यह वचन सुनतेही राजाने हाथ जोड़कर नारदजीसे कहा महाराज यह ज्ञान आपने बहुत अच्छा बतलाया पर अभीतक हमारे बेटे जो तप करनेवास्ते गयेहैं नहीं फिरे वहलोग आवें तब उन्हैं राजगद्दी देके मैं वनमें जाकर परमेश्वरका तप व ध्यान करूं॥

इकतीसवां अध्याय।

नारदमुनिका एक बाग हरिण समेत अपने योगबलसे प्राचीनबर्हिषको दिखलाना॥

मैत्रेय ऋषीश्वरने कहा हे विदुर यह बात सुनतेही नारदजीने आश्चर्य मानकर विचारा देखो मैंने इतना ज्ञान राजाको सिखलाया पर यह विरक्त न होकर अभीतक इसे राजगद्दी का मोह लगाहै ऐसा विचारकर नारदमुनि अपने योगबलसे एक बाग आकाशमें तैयार करके बोले हे राजन् हमको एक बड़ा अचम्भा मालूम देताहै नेक ऊपर तो देखो जैसे राजाने आंख उठाकर देखा तो आकाशकी तरफ उसे एक बाग बहुत अच्छा फल व पुष्प लगा हुआ चारद्वारेका दिखलाई दिया और एक हरिण जंगली वह हरियाली देखकर कूदता व चौकड़ी मारता जब उस बागमें आनके घास व फल खानेलगा तब एक बहेलिया सब सामग्री शिकारकी साथ लिये उस हरिण को पकड़नेके वास्ते बागमें पहुँचा व उसने एक द्वारेपर जाल लगाकर दूसरे दरवाजेसे कुत्तेको ललकारा व तीसरे द्वारेपर आगि लगाकर चौथी

डेवढ़ीपर आप धनुषबाण साधकर खड़ा हुआ और वह हरिण यह दशा देखने परभी कुछ डर न मानकर खुशीसे पत्ती व फल खाताथा राजा उस बाग व बहेलिया व हरिणको देखकर बोला हे मुनिनाथ एक बात बड़े आश्चर्यकी दिखलाई देती है कि चारों द्वारे पर इस हरिणके मरनेका योग निकट पहुँचा तिसपर भी यह हरिण अपने मरनेका भय न रखकर आनन्दपूर्वक चरता है इस चरने से इसको क्या गुण होगा यह वचन सुनतेही नारदजी मुसकराकर बोले हे राजा तेरा भी तो यही हालहै बुढ़ाई आनेसे तेरी सब इन्द्रियोंकी सामर्थ्य जाती रही व मृत्युका दिन निकट पहुँचा व पहिले जो तुझे युवा अवस्थाकी आशाथी सो न रहकर अब बुढ़ापा अधिक होने से दिनरात तेरे बदन का लोहू व मांस इसतरह सूखा जाताहै जिसतरह पानी आगिकी गर्मीसे जलकर कुछ बाकी नहीं रहता व मृत्यु तुझे पीछेसे कुत्तेके समान रपेटे आनकर मरनेका दिन व्याधारूपी धनुषबाण लिये तेरे सामने खड़ा है उसके हाथसे तेरा बचाव नहीं होसक्ता और तू संसारी मायामोहके जालमें ऐसा लिप्त है कि यह सब हाल आंखोंसेभी देखकर तुझे अपने मरनेका कुछ डर नहीं होता व संसारी सुख व राजगद्दी की तृष्णा तुझको अबतक लगी है यह ज्ञान सुनतेही जब राजाके रोम खड़े होगये तब वह भय मानकर ऐसा समझा कि मेरा शरीर जला जाताहै यह दशा अपनी देखतेही नारदमुनिके चरणोंपर गिरकर बोला महाराज आपने बड़ी कृपा करके संसारी फन्देसे बाहर निकाला नहीं तो मैं इस माया व मोहके महाजालमें फँसरहाथा यह वचन कहकर राजाने विधिपूर्वक नारदजीका पूजन किया व उसी जगहसे संसारी मोह छोड़कर बदरीकेदारकी तरफ चला गया व हरिभजन करके मुक्तिपदवीको पहुँचा और नारदमुनि वहांसे चलेगये उसके बहुत दिनों उपरांत नारायणजी प्रचेतोंके तप व स्मरणसे प्रसन्न हुये तब अपने चतुर्भुजी रूपका दर्शन देकर उनसे कहा तुमलोग वरदान मांगो तब प्रचेतोंने दण्डवत् व स्तुति करके विनय किया महाराज हम यह वरदान मांगते हैं जिसमें बीचमाया संसारके न फँसें साधु व महात्माका सत्संग होकर तुम्हारे चरणों में हमारी भक्ति बनी रहै श्याम-

सुन्दर त्रिलोकीनाथने इच्छापूर्वक उन्हें वरदान देकर कहा तुमलोग गृहस्थ होकर अन्तसमय मुक्तिपदवी पाओगे जब ऐसा वरदान पाकर अपने घरको चले तब रास्तेमें क्या देखा कि नगर व गांव जो बसाथा वह सब उजड़कर वन होगया यह दशा देखकर प्रचेतोंने कहा कि वनके देवतोंने हमारा राज्य व देश उजाड़दिया सो योगकी अग्निसे उन्हें जलाया चाहिये जिसमें अपने कियेका फल पावें ऐसा विचारकर जब प्रचेतोंने वनकी तरफ क्रोध से देखा तब वह वन जलने लगा और वहां के देवता अपना अपना प्राण लेकर भागे व ब्रह्माके पास जाकर यह हाल कहा तब चन्द्रमा ब्रह्माकी आज्ञानुसार प्रचेतोंके पास आकर बोले तुमलोगोंने हरिभक्त होकर दश हजार वर्ष परमेश्वरका तप कियाहै तुम्हें विना अपराध ऐसा क्रोध करना न चाहिये इस वनसे सब ऋषीश्वर व मुनीश्वर व पशु व पक्षियोंको भोजन मिलकर अनेक जीवों की रक्षा होतीथी इसके जलाने से तुम्हें बड़ा पाप होगा व तुमने संसार उत्पन्न करनेकी इच्छासे परमेश्वरका तप कियाहै सो तुमलोग निम्लोचनानाम कन्यासे जो वृक्षोंकी बेटीहै ब्याह करो उससे तुम्हारे बहुत सन्तान होंगी यह वचन चन्द्रमाका सुनतेही वनके देवता वह कन्या प्रचेतोंके पास ले आये व चन्द्रमाके समझानेसे प्रचेतोंने अपना क्रोध क्षमा किया और अग्नि वनकी बुझ गई तब प्रचेतालोग उस कन्यासे गन्धर्व विवाह करके स्त्रीसमेत माहिष्मती अपने बापकी नगरीमें पहुँचे व राज्यकाज करने लगे व चन्द्रमा प्रसन्न होकर अपने लोकमें गये सो उसी कन्यासे प्रचेतों के दक्षनाम बेटा उत्पन्न हुआ जिसने परमेश्वरका तप करके मैथुनधर्म करनेसे बहुत जीव उत्पन्न किये जब कुछ दिनोंके उपरांत प्रचेता लोग अपने बेटेको राज्य देकर परमेश्वरका तप करनेवास्ते पश्चिम दिशा को चले गये तब राह में उनको नारदजी मिले सो उनके उपदेशसे प्रचेता लोग परमेश्वरका भजन व स्मरण करके साथ योगाभ्यासके तनु अपना छोड़कर गोलोक में पहुँचे इतनी कथा विदुरजी मैत्रेय ऋषीस्वरसे सुनकर हस्तिनापुरको चले गये ॥

दो॰ पतिकी निन्दा सुनतही तजी सती निजदेह। लखन गारी देत अब पतिको त्याग सनेह ॥
जो चौथे अस्कन्धको कहै सुनै चितलाय। लहै ज्ञान सुख सम्पदा पाप पहाड़ बिलाय ॥

पांचवां स्कन्ध ॥

राजा प्रियव्रत व जड़भरत व सातोंद्वीप व नवखण्ड व चौदहोंभुवन व सब नरकों का हाल ॥

दो० शेषशारदा विनयकरि गोविंदपद शिर धार। यह पञ्चम अस्कन्धकी कथा कहौं विस्तार ॥
क० चढ़े गजराज चतुरंगिनी समाजसंग जीति क्षितिपाल सुरपालसों सजत हैं।
विद्याअपार पढ़ि तीरथ अनेक करि यज्ञ और दान बहुभांतिसों करत हैं ॥
तीनकालमें नहाय इन्द्रियोंको वश लाय करि वनवास विषय वासना तजत हैं।
योग और यज्ञ जप तपको अनेक करैं विना भगवन्तभक्ति भव ना तरत हैं ॥

पहिला अध्याय।

परीक्षित का शुकदेवजीसे राजा प्रियव्रतका हाल पूंछना ॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजीसे विनय किया महाराज आपने तीसरे स्कन्धमें कहाहै कि स्वायम्भुवमनुके बेटा प्रियव्रतने नारदजीके उपदेशसे बालापन में विरक्त होके वनमें जाके परमेश्वरका तप कियाथा फिर गृहस्थ होकर राज्य भोगनेउपरांत तपकरके मुक्तपदवी पाया है ब्रह्ममूर्ति ज्ञान प्राप्त होनेपर फिर वह किसवास्ते गृहस्थीमें फँसा जबतक मनुष्य संसारी मोहमें फँसा रहकर स्त्री व पुत्र व धनको अपना जानता है तबतक वह ज्ञानी नहीं हुआ और ज्ञान प्राप्त होनेसे संसारी माया जिसकी छूटजाती है वह फिर किसवास्ते जान बूझकर मायाजालमें फँसैगा यह संदेह मेरा छुड़ा दीजिये शुकदेवजी हरिचरणोंका ध्यान करके बोले हे राजा तुमने बहुत अच्छी बात पूछी हाल उसका इस तरह पर है कि राजा प्रियव्रत ज्ञानी होनेपर भी पिछले जन्मके संस्कारसे प्रत्यक्षमें राजकाज करता रहा पर वह गृहस्थाश्रमसेभी विरक्त रहकर बीचमोह राज्य व धन व पुत्रादिकके नहीं फँसा कुछ दिनों उपरांत राजगद्दी छोड़कर बीचतप व ध्यान

परमेश्वरके लीन हुआ व जब पहिले नारदमुनिके उपदेशसे प्रियव्रत ज्ञानी होकर मन्दराचल पहाड़ पर तप करने चला गयाथा तब राजा स्वायम्भुव-मनुने वहां जाकर प्रियव्रतसे कहा हे बेटा तू राज्य व विवाह करके सन्तान उत्पन्न कर उसने उत्तर दिया हे पिता ब्याह करने व सन्तान उत्पन्न होनेसे मनुष्य बीचमोह व धन व परिवारके फँसकर नरकमें पड़ताहै इसलिये मैं राजगद्दी व संसारी सुख नहीं चाहता मुझे परमेश्वरका स्मरण व ध्यान अच्छा मालूम होताहै जब प्रियव्रतने स्वायम्भुवमनुका कहना नहीं माना तब वह उदास होकर बैठे थे कि उसी समय ब्रह्माजी सनकादिक ऋषी-श्वर व देवतोंको साथ लिये हंसपर चढ़कर वहां आये जब स्वायम्भुव-मनु व प्रियव्रतने उन्हें दण्डवत् करके आदरपूर्वक बैठाला तब ब्रह्माजी ने कहा हे प्रियव्रत तू ब्याह करना व राजगद्दीपर बैठना क्यों नहीं अंगीकार करता नारायणजी की आज्ञा इसतरह पर है कि क्षत्रियलोग राज्य करैं सो तुझे उनकी आज्ञा मानकर संसारी जीवोंको बढ़ाना चाहिये जिसतरह हम नारायणजीकी आज्ञानुसार संसारकी रचना करते हैं उसी तरह तूभी उनकी आज्ञा मानकर राजगद्दीपर बैठ व ब्याहकरके क्षत्रियोंको उत्पन्न कर जिसे हम देखते हैं कोई जीव उनकी आज्ञासे बाहर नहीं रहता जो कुछ जिसके भाग्यमें लिखाहै वैसा होगा श्यामसुन्दरने जिसे जो काम सौंपा है उसके सिवाय वह दूसरा काम नहीं करसक्ता जिसतरह बैलके नाक में रस्सी नाथकर जिधर चाहै उधर लेजावै उसका कुछ वश नहीं चलता उसी तरह सब जीव जड़ व चैतन्यकी गति समझना चाहिये किसीको ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो परमेश्वरकी आज्ञामें तिलभर घटाने बढ़ाने सकै इस लिये वेदकी आज्ञानुसार सब काम करना उचितहै व हे प्रियव्रत गृहस्था-श्रम कुछ बुरा नहीं होता जो मनुष्य काम व क्रोध व अहंकार व लालच व मन व इन्द्रियोंको अपने आधीन रखकर उनके वश न होवे उसको वन व गृहस्थी दोनों जगहका रहना बराबरहै व जिसने उनको अपने वश नहीं किया उसको गृहस्थी छोड़कर वनमें जाबैठनेसे क्या लाभ होगा कि शत्रु बलवान् अपने साथ रखताहै जबतक मनुष्य काम व क्रोधादिकको

अपने वश्य नहीं करता तबतक परमेश्वर उसको नहीं मिलते व मनुष्यपर तीन ऋण देवऋण व पितृऋण व ऋषिऋण रहतेहैं जबतक इन तीनोंसे उऋण नहीं होता तबतक उसे विरक्त होना न चाहिये व जब मनुष्य संसारी सुख भोगकर उसका स्वाद देखलेताहै तब फिर उस सुखकी वह चाहना नहीं रखता सो तुम पहिले राज्य करके फिर वैराग्य धारण करना जब इस तरह समझाने से प्रियव्रतने विवाह करना व राजगद्दीपर बैठना अंगीकार किया तब ब्रह्माजी व स्वायम्भुवमनुने बड़े हर्षसे प्रियव्रतको माहिष्मती पुरी में लाकर राजगद्दी दी शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित इसतरहसे राजा प्रियव्रत राज्यसिंहासन पर बैठकर हरिचरणों में ध्यान लगाके राज्य करने लगा जब उसने विवाह अपना बर्हिष्मतीनाम विश्वकर्माकी बेटीसे किया तब उस स्त्री से अग्नीध्रआदिक दश बेटे व यशवतीनाम कन्या उत्पन्न होकर उनमें तीन पुत्र बालयती होगये वेद पढ़कर परमहंसोंका सत्संग रक्खा व दूसरी स्त्री सान्तनीनामसे जो देवतोंने लाकर राजा प्रियव्रतको दियाथा उत्तम व तामस व रैवतनाम तीन बेटे उत्पन्न होकर चौदहों मन्वन्तरमें उनकी गिन्ती हुई सो प्रियव्रतने हजारों वर्षतक साथ धर्म व प्रजापालनके राज्य भोगकर प्रजाको पुत्रके समान सुख दिया व हरिइच्छासे उनकी इन्द्रियोंका पराक्रम कम नहीं हुआ कुछ दिन उपरान्त राजाने विचार किया यह सूर्यका रथ आठोंपहर फिरने में दिन व रात्रि होकर सुमेरु पर्वत की ओट में जाने से रात्रि होजाती है सो रात्रि को संध्या व पूजा व तर्पण व तप व दानादिक शुभ कर्म में विघ्न होकर अँधियारेमें कुकर्म करनेसे अधर्म होताहै इसलिये हमारे राज्यमें आठोंपहर दिनके समान प्रकाश बना रहकर रात्रि न होती तो अच्छाथा यह बात विचारकर राजा प्रियव्रतने ऐसा रथ एक पहिये का सूर्यके समान तैयार कराया जिस रथके प्रकाशसे आठोंपहर उनके राज्यमें उजियाला रहकर रात्रि होना बन्द होगया और प्रियव्रत ऐसे प्रतापी होनेपर भी आठ पहर नारायणजीके चरणोंमें चित्त लगाये रहताथा जब राजाने उस रथपर बैठकर सातबेर चारों तरफ पृथ्वीकी परिक्रमा करके एकछत्र राज्य किया तब उस रथके घूमनेसे

जो एक पहियेका था पृथ्वीपर सातों समुद्र व सातों द्वीप प्रकट होगये पहिले जम्बूद्वीप लाख योजनके घेरेमें होकर एक योजन चारकोशका समझना चाहिये और भरतखण्डादिक इसी द्वीपमें रहकर चारों ओर इस द्वीपका समुद्र खारे पानीकाहै दूसरा पाकरद्वीप दो लाख योजनके घेरे में होकर उसके चारों दिशामें ऊखके रसका समुद्र है तीसरा शाल्मलिद्वीप चार लाख योजनके घेरे में होकर उसके चारों ओर मदिराका समुद्र भराहै चौथा कुशद्वीप आठ लाख योजनके घेरेमें होकर उसके चौगिर्द घीका समुद्र भराहै पांचवां क्रौंचद्वीप सोरह लाख योजनके घेरे में होकर उसके चारों तरफ दूधका समुद्र है छठवां शाकद्वीप बत्तीस लाख योजनके घेरेमें होकर उसके चारों दिशामें मट्ठेका समुद्र भराहै सातवां पुष्करद्वीप चौंसठ लाख योजन के घेरेमें होकर उसके चौगिर्द मीठे पानीका समुद्र भराहुआ है देखो परमेश्वरकी महिमा से इतनी बड़ी लम्बाई व चौड़ाई भूगोलकीहै सो अज्ञान मनुष्य क्या सामर्थ्य रखता है जो स्तुति उसकी करसकै सो राजा प्रियव्रतने एक एक द्वीपका राज्य अपने बेटोंको बांटकर यशवती नाम अपनी कन्याका ब्याह शुक्राचार्यसे करदिया जिसके पेटसे देवयानी कन्या उत्पन्न हुई जब रात्रि होना उसके राज्यमें बन्द होगया तब स्वायम्भुवमनु व ब्रह्माने प्रियव्रतको समझाया कि जो बात परमेश्वरकी मर्यादसे होती है उसको मेटना न चाहिये तब उन्होंने फिरावना रथका बन्द किया इतनी कथा कहकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित इन सातों द्वीपका राजा व मालिक प्रियव्रतथा सो उसने इतने बड़े राज्यको झूठा समझ कर एक दिन बर्हिष्मतीनाम अपनी स्त्रीको रथपर बैठालके कहा एक इतिहास हम तुमसे कहतेहैं सुनो एक बालक अज्ञान दरिद्री अपने घरसे निकलकर किसी ऋषीश्वरके स्थान पर गया सो उस ऋषीश्वरने दयाकी राह उस बालक को ऐसी विद्या पढ़ाई कि उसे देवदृष्टि होकर पृथ्वीका गड़ाहुआ धन व सौकोस की चीज दिखलाई देने लगी सो कुछ दिन उपरान्त उस बालकके माता व पिता ढूंढ़तेहुये वहां पहुँचकर जब उसे पकड़के घर लेजानेलगे तब वह समझा कि घर जाने से यह गुण मेरा भूल जायगा ऐसा विचारकर वह

अपने घर नहीं जाताथा पर माता व पिताने हठसे घरपर लाकर विवाह उसका करदिया तब वह लड़का सब गुण अपना भूलकर संसारी जालमें फँसनेसे ऐसा नष्ट हुआ कि बोझा ढोकर अपना पेट पालनेलगा इतनी कथा सुनकर बर्हिष्मती बोली वह ऐसा गुण अपना छोड़कर गृहस्थीके जालमें क्यों फँसा तब प्रियव्रतने कहा वही हाल तो हमाराभी है कि नारदमुनिका ज्ञान छोड़कर संसारी जालमें फँसे हैं यह वचन सुनतेही बर्हिष्मती बोली कि महाराज अब विरक्त होना चाहिये प्रियव्रतने जैसे यह बात स्त्रीकी सुनी वैसे राज्य बेटोंको देकर संसारी माया छोड़दी व स्त्रीसमेत वनमें जाकर हरिभजन करके मुक्त हुआ जो लोग अपनेको परमेश्वरके शरणमें लेजाते हैं उनको सुख होता है॥

दूसरा अध्याय।

प्रियव्रतके बेटे अग्नीध्र का राजा होना व पूर्वचित्ती अप्सरा से विवाह करना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब राजा प्रियव्रत वनमें तप करनेवास्ते चलेगये तब अग्नीध्र उनके बड़े बेटेने राजगद्दी पर बैठकर विचारा कि पहिले परमेश्वरका तप व स्मरण करके पीछेसे ब्याह करें जिसमें सन्तान धर्मात्मा उत्पन्नहों व वेद व शास्त्रमें भी ऐसा लिखाहै कि चौबिस वर्षकी अवस्थातक स्त्रीका प्रसंग न करना चाहिये ऐसा विचारकर वह घरसे निकल खड़ा हुआ व मन्दराचल पहाड़पर जाकर एक रमणीक स्थानमें बैठके परमेश्वरका तप करनेलगा जब बहुत दिन उसको तप करते बीते तब राजा इन्द्रने अपना इन्द्रासन छीनलेनेके डरसे पूर्वचित्ती नाम अप्सरा महासुन्दरी को उनका तप भंग करनेवास्ते भेजा जब वह अप्सरा अपना साज व समाज लिये हुये जिस जगह पर अग्नीध्र बैठा हुआ तप करताथा वहां जाकर नृत्य करनेलगी और उसके गाने व नाचने व बाजेका शब्द सुनते हीं अग्नीध्रका ध्यान छूटकर आंख खुलगई तब वह उसके रूपपर मोहित होकर बौरहेके समान उससे पूंछने लगा हे मुनि तुम किस वनमें तप करते हो वहांपर कैसे फल व पुष्प होतेहैं तुम्हारे शिरके बाल बहुत सुन्दर होकर छातियोंमें दो अनार ऐसे ऊंचे ऊंचे क्या दिखलाई देते हैं व पूर्वचित्ती अपने

बालोंमें पुष्प जो गुहेथी उस सुगन्ध पर भँवरे गूंजतेहुये देखकर राजा बोले यह सब तुम्हारे चेले वेद पढ़नेवास्ते आये हैं व नाचती समय घुंघुरूकी झनकार सुनकर कहनेलगे तुम वेदोंका स्वर बहुत अच्छा उच्चारण करते हो व शरीरमें अगर व चन्दनादिक सुगन्ध लगे देखकर बोले तुम्हारे तपोवनमें नदीकी मट्टी इसीतरह पर होती है जो तुम अंगमें लगाये हो जिसके महकसे मेरा स्थान भरगया उस वनमें इसी रूपके सब ऋषि व मुनि रहते हैं मुझे तुम्हारा स्थान देखनेकी अभिलाषहै सो कृपाकरके मुझे दिखलायदेव व मेरे जानकारीमें तुम लक्ष्मी या नारायणजीकी मायाहो जो यहां आकर अपने नयनोंका बाण चलाके मुझ ऐसे हरिणको मारा चाहतीहो परमेश्वरने बड़ी कृपा करके तुम्हारा दर्शन दिया सो तेरा मोहनी रूप मुझको बहुत प्यारा मालूम देता है इसलिये अब मैं तुम्हारा पीछा नहीं छोडूंगा जब यह बात राजाकी सुनकर पूर्वचित्तीने जाना कि मेरे ऊपर अतिमोहित हुआ है तब वह मुसकराकर बोली हे राजन् हमारे तपोवनमें इसी रूपके सब ऋषि व मुनि रहकर वहां ऐसे कन्द मूल होते हैं जिनके खानेसे मनुष्य सदा तरुण व रूपवान् व कोमल बना रहता है जब तुम अपनी राजगद्दीपर चलकर कुछ दिन मेरे साथ रहो तब अपना स्थान तुम्हें दिखावें यहां पहाड़ पर मैं तुम्हारे साथ नहीं रहसक्ती यह वचन सुनतेही राजा तप व ध्यान परमेश्वरका छोड़कर अप्सरासमेत राजमन्दिर पर चलेआये व उसके संग विवाह करके दशहजार वर्षतक भोग व विलास व राज्यकाज धर्मपूर्वक किया जब राजाके नाभि व इलावृत्तादिक नव बेटे पूर्वचित्ती अप्सरासे उत्पन्न होकर जन्मतेही अपनी माताके आशीर्वादसे तरुण व तेजवान् व बलवान् होगये तब पूर्वचित्ती उनका विवाहकरके इन्द्रलोकको चलीगई व राजाने जम्बूद्वीपमें नवभाग करके एक एक हिस्सा जिसे नव खण्ड कहते हैं अपने नव बेटोंको बांटदिया व आप वनमें जाकर तप व ध्यान परमेश्वरका करनेलगे सो भरतखण्ड जिसमें बहुतसे नगर व देशहैं नाभि बड़े बेटेने पाया व राजाको पूर्वचित्तीके वियोगका ऐसा शोक हुआ कि उसीकारण शरीर अपना त्यागदिया व गन्धर्व तनु पाके उससे जा मिले ॥

तीसरा अध्याय।

राजा नाभिके यहां ऋषभदेवजी का अवतार लेना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब राजा अग्नीध्र तप करने वनमें चलागया तब नाभि आदिक उसके नव बेटे अपने अपने खण्डमें साथ धर्म व प्रजापालनके राज्य करने लगे कुछ दिन उपरांत राजा नाभि बड़े बेटेने मेरुदेवी अपनी स्त्रीसमेत सन्तानकी इच्छासे वनमें जाकर बहुत दिन परमेश्वरका तप किया फिर रानीसमेत अपने घर आनकर ब्राह्मण व ऋषीश्वरों को बुलाके यज्ञ करनेलगा जब यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्ण हुआ तब नारायणजी सांवलीमूरत मोहनीमूरतने शंख चक्र गदा पद्म धारण किये किरीट मुकुट कुण्डल वैजयन्ती माला पहिने तापहारिणी चितवन मन्द मन्द मुसकराते हुये अग्निकुण्डसे निकलकर अपना दर्शन दिया उन्हें देखतेही राजा नाभि व ऋषीश्वर आदिक जितने मनुष्य यज्ञशालामें बैठेथे दण्डवत् करके खड़े होकर उनकी स्तुति करने लगे व देवतोंने आकाशसे उन पर पुष्प बरसाये व राजाने हाथ जोड़कर विनय किया हे त्रिलोकीनाथ आपने मुझ गरीबकी इच्छा पूर्ण करनेके वास्ते दयालु होकर दर्शन दिया किसकी ऐसी सामर्थ्य है कि जो तुम्हारी महिमा वर्णन करसके हरिचरणों में भक्ति करनेवालेको चारों पदार्थ मिलते हैं सो मुझे ऐसा वरदान दीजिये जिसमें तुम्हारा ऐसा बेटा मेरे उत्पन्न हो यह वचन सुनतेही यज्ञभगवान् प्रसन्न होकर बोले हे राजन् तुमने मेरा ऐसा पुत्र होनेके वास्ते चाहना रखकर तप व यज्ञ कियाहै सो हम आप तेरे घर अवतार लेवैंगे यह कहकर वैकुंठको पधारे व राजाने ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको दक्षिणा देकर बिदा किया व जैसे चरु प्रसाद यज्ञका मेरुदेवी अपनी रानीको खिलाया वैसे उसके गर्भ रहा तब ब्रह्माजीने देवतों समेत गर्भस्तुति करनेके वास्ते राजमन्दिरपर आनकर कहा हे राजन् तेरा भाग्य उदय हुआ जो आदिपुरुष भगवान् तेरे यहां पुत्र होकर अवतार लेंगे जब ब्रह्मादिक सब देवता गर्भस्तुति करके अपने अपने लोकको चलेगये तब दशवें महीने परब्रह्म परमेश्वरने रानीके गर्भसे अवतार लेकर अपनी सांवलीमूरत चतुर्भुजीमूरत किरीट

कुंडल मुकुट साजे नवरत्न भुजबन्द वनमाला विराजे कौस्तुभमणि वैज-यन्ती माला गले में डाले राजा नाभि व मेरुदेवीको दर्शन दिया वैसे वह दोनों आनन्द व प्रसन्न होकर दण्डवत् करने उपरान्त स्तुति उनकी करने लगे व देवतोंने अपने अपने विमानपर बैठकर आकाशसे उनपर पुष्प बरसाये व अप्सरोंने नाच दिखलाकर गन्धर्वोंने गाना सुनाया व ब्रह्माने आनकर ऋषभदेवजी उनका नाम रक्खा जब ब्रह्मादिक देवता दण्डवत् व स्तुति करके वहांसे अन्तर्धान होगये तब परब्रह्म परमेश्वर बालकरूप होकर रोने लगे ॥

चौथा अध्याय।

राजा नाभिका सहित स्त्री के वनमें जाकर तप करना व ऋषभदेवजीका गद्दीपर बैठना ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् जब ऋषभदेवजी छत्तीसगुणनिधान आदि-पुरुष भगवान्ने राजा नाभिके यहां जन्म लिया तब राजाने उन्हें परमेश्वर का अवतार समझकर बड़े हर्षसे इतना दान व दक्षिणा ब्राह्मण व याचकों को दिया कि उसके राज्यमें कोई मनुष्य कंगाल न रहकर सब धनवान् होगये व राजा व रानी ऋषभदेवजीकी बाललीलाका सुख देखने से अपना जन्म सफल जानकर मारे प्रसन्नताके कपड़ों में नहीं समाते थे जब ऋषभ-देवजी सयाने होकर राजगद्दीपर बैठनेयोग्य हुये तब राजाने अपने मंत्री व प्रजाको उनसे प्रसन्न देखकर विचारा अब इनको राजगद्दीपर बैठालकर मुझे परमेश्वरका भजन करना चाहिये ऐसा विचारतेही राजाने ज्योति-षियों से शुभमुहूर्त पूंछकर ऋषभदेवजी को राजसिंहासनपर बैठालदिया व आप स्त्रीसमेत बदरीकेदारमें जाकर तप व ध्यान परमेश्वरका करनेलगे कुछदिन उपरांत योगाभ्यासके साथ अपना तनु छोड़कर भवसागर पार उतरगये व ऋषभदेवजीने साथ धर्म व प्रजापालनके ऐसा राज्य किया जिसके राज्य में बाघ व बकरी एक घाट पानी पीतेथे और कोई प्रजा दुःखी व कंगाल न थी देवता उनकी स्तुति देवलोकमें कियाकरते थे जब राजा इन्द्रने सब छोटे व बड़ोंके मुँहसे उनका यश व प्रताप सुना तब डाहसे भरत-खण्ड उनके राज्यमें पानी नहीं बरसाया जब ऋषभदेवजीको हाल मालूम

हुआ तब उन्होंने इन्द्रके अज्ञानपर हँसकर अपने योगबलसे ऐसा करदिया कि उनके राज्यमें जिससमय प्रजालोग पानी चाहतेथे उसीसमय नारायण जीकी कृपासे जल बरसताथा जब इन्द्रने यह महिमा व प्रताप ऋषभदेवजी का देखा तब उन्हें परमेश्वरका अवतार जानकर अपना अपराध क्षमा करानेके वास्ते जयंती नाम अपनी कन्या उनको विवाहदी सो ऋषभदेव जीके उसी स्त्रीसे सौ पुत्र उत्पन्न होकर उनमें नव बालक विरक्त होगये व वनमें जाकर परमेश्वरका तप व ध्यान करनेलगे उन्हींको नवयोगीश्वर कहते हैं जिन्होंने राजा जनकको ज्ञान उपदेश किया था उसकी कथा ग्यारहवें स्कंधमें आवैगी व नव बालक नवखण्डके राजा होकर भरत नाम बड़ा बेटा उनका अपने पिताकी निज राजगद्दीपर बैठा व इक्यासी बेटे ब्राह्मणों के समान वेद पढ़ने व तप करनेलगे एक समय ऋषभदेवजी ने सब प्रजा को यज्ञमें बैठालकर अपने पुत्रोंको यह ज्ञान उपदेश किया हे बेटो संसारमें जितने जीव जड़ व चैतन्य देखतेहो एक दिन सबका नाश होकर केवल नारायणजी अविनाशी पुरुष स्थिर रहेंगे व उन्हींकी शक्ति शरीरमें रहनेसे सब जीव चलते फिरते हैं सो तुम लोग उसी परमेश्वरका ध्यान हृदयमें रखकर संसारीजीवों से मोह तोड़के ज्ञानी व महात्मालोगोंका सत्संग रक्खो कि जिसमें तुम्हारी मुक्ति हो कुसंग करने से मनुष्य तुरन्त नष्ट होजाताहै उनसे सत्संग मत करो जब तक संसारीसुख स्वप्नके समान झूठा नहीं समझता तब तक उसे सुख मिलना कठिन है जगत्में द्रव्य व स्त्री दो रस्सी मायारूपी ऐसी फैली हैं जिसमें सारा जगत् बँधकर नष्ट होताहै जो मनुष्य इनदोनोंसे अलगरहै वह इस मायाजालसे छूटसक्ताहै पर इन दोनोंसे बचना व संसारी मोह छोड़ कर परमेश्वर में चित्त लगाना सहज नहीं होता पर इसका एक उपाय हम तुमसे कहते हैं सुनो सन्त व महात्माकी संगति करना यही जड़ उसकी है बिना सत्संग ज्ञान मिलना संसारको झूठा जानना व परमेश्वरके चरणों में प्रीति होना कठिनहै साधु व महात्माओं की संगति करने से धीरे धीरे मनुष्य का मन विरक्त होकर परमेश्वरकी तरफ लगजाताहै सिवाय इसके एक बात मुख्य कहताहूं उसको तुम विश्वास

करके जानो संसारमें नरक व मोक्षके दो दरवाजे हैं सन्त व महात्माकी संगति व सेवा करना मोक्षका द्वार है परस्त्रीप्रसंग व चोर व जुआरी व विषयी व मद्यपका संग करना नरक का दरवाजा समझना चाहिये॥

पांचवां अध्याय।

ऋषभदेवजीका अपने बेटोंको ज्ञान सिखलाना व सन्त महात्मोंके लक्षण कहना॥

ऋषभदेवजीने कहा हे बेटो जिन सन्तों व महात्मोंकी संगति व सेवा करनेसे मोक्षका द्वार खुलजाताहै उनके लक्षण सुनो मन उनका सदा एकसा रहकर किसीके दुर्वचन कहनेसे उनको क्रोध नहीं होता भीतर व बाहर उनका समान रहकर हृदयमें कपट नहीं होता व हरिभक्तोंसे अधिक प्रीति रखते हैं रात्रि दिन हरिकथा व वार्ता करने व सुनने में उनको सन्तोष न होकर आलस्य नहीं आता अपने घर व परिवारमें अतिथिके समान रहकर केवल अपना पेट भरने व अर्थ निकालने से प्रयोजन रखते हैं लाभ व हानि होनेसे कुछ हर्ष व चिन्ता नहीं करते अतिथिका एक लक्षण यह है जिसतरह कोई परदेशी कंगाल दूसरे ग्राम या नगरमें पहुँचै व एक दिन किसीके घर भोजन करके दूसरे रोज वहांसे चलाजाय तो भोजन देनेवाले से उसे कुछ मोह उत्पन्न नहीं होता दूसरा लक्षण अतिथिका सुनो जैसे पक्षी किसी मकानमें खोता बनाके दाना पानी खाकर वहां रहते हैं पर उस घरके गिरने व बनाने व जलजानेका कुछ शोच उन्हैं नहीं होता तीसरा लक्षण अतिथिका यह है कि जिसतरह खीरेका फल ऊपरसे एक होकर उसके भीतर तीन चार फांक अलग अलग रहती हैं उसी तरह अतिथि ज्ञानवाला गृहस्थ भी प्रकटमें स्त्री व पुत्रका मोह रखकर अन्तःकरणसे उनको अपना शत्रु जानताहै ऐसे विरक्त गृहस्थको भी जो किसी जीवको दुःख नहीं देता साधु व महात्मा समझना चाहिये सो तुम ब्राह्मणको बहुत बड़ा व उत्तम जानकर दयापूर्वक प्रजाकी पालना करो इसतरहका ज्ञान रखनेवाला यमदूतोंकी फांसी में नहीं बांधाजाता ऋषभदेवजीने यह ज्ञान अपने बेटोंको समझाकर कुछ दिन उपरान्त विचारा कि अन्तसमय यह राज्य व परिवार मेरे साथ न जाकर सब मेरा संग छोड़ देवैंगे इसलिये

पहिलेसे इनका साथ छोड़देना उत्तमहै ऐसा विचारकर भरत नाम अपने बड़े बेटे को राजगद्दी पर बैठालदिया व आप विरक्त होकर जड़भरतका रूप बनालिया व पहाड़पर जाकर परमेश्वरका तप व भजन करनेलगे लक्षण जड़भरतका यह है कि मल व मूत्र करनेपर भी नियम व आचार स्नानादिकका कुछ न रक्खै व भोजन व वस्त्रका उद्योग छोड़देवै कदाचित् कोई भोजन खिलादे तो खालेवै नहीं तो निश्चिन्त बैठे रहकर अपने कपड़ेतक की सुधि न रक्खै सो ऋषभदेवजी ने यही लक्षण धरकर स्नान करना व पूजाआदिक सब छोड़दिया तिसपर भी उनका रूप देखकर देवकन्या मोहित होजाती थीं व चालीस कोसतक उनके मल व मूत्र की सुगन्धि पहुँचती थी उसीसमय अष्टसिद्धिने उनके पास आकर अपने अपने गुणोंको वर्णन किया पर ऋषभदेवजीने उनकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा॥

छठवां अध्याय।

आदमियों को ऋषभदेवजीका चलन देखकर सरावगी धर्म का प्रकट करना॥

राजा परीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले हे मुनिनाथ ऋषभदेव जो नारायणजीका अवतार थे मन आठोंसिद्धिका अपनी ओर खींचकर उन्हें विरक्त क्यों नहीं करदिया जो मनुष्य काम क्रोध मोह लोभ मन व इन्द्रियों को अपने वश न रखता हो उसे अष्टसिद्धिकी ओर देखने से डर व खटकाहै सो ऋषभदेवजी उन सबको अपने अधीन कियेथे उन्होंने किस वास्ते अष्टसिद्धिकी ओर नहीं देखा यह वचन सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजन् यह मन चंचल काम व क्रोधादिक बड़े बड़े बलवानोंकी कुसंगति पावनेसे वश में नहीं रहता उनमें एक कामदेव ऐसा बलीहै जिसके मदमें मनुष्य अन्धा होकर अपना भला व बुरा नहीं समझता और यही कामदेव बीच तप व ध्यान बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वरोंके विघ्न डालकर हजारों वर्षका तप एक क्षणमें नष्ट करदेताहै मन चंचल बिजुली व पारेके समान कभी एक ठिकाने नहीं रहता इसलिये मनका विश्वास न रखना चाहिये जिसतरह पुंश्चली स्त्री अपने पतिको भुलावा देकर दूसरे पुरुषके पास

जाती है उसीतरह यह मन व इन्द्रियां अष्टसिद्धिका कुसंग पानेसे चैतन्य होकर कुकर्म की इच्छा करती हैं यह विचारकर ऋषभदेवजी ने उनकी ओर नहीं देखा था जिसमें कामदेवको रोंकना न पड़ै जड़भरतरूप रहने में शास्त्रके अनुसार धर्म रखने व षट्कर्म करनेका प्रयोजन नहीं रहता इसलिये बहुत मनुष्योंने चलन ऋषभदेवजीका देखकर स्नान करना व वेद पढ़ना छोड़ दिया तभीसे ओसवाल व सरावगीका मत जो लोग वेद व शास्त्रको नहीं मानते संसारमें प्रचार हुआ वही लोग जैनधर्मी कहलाकर मरने उपरांत अवश्य नरक भोगते हैं व सो ऋषभदेवजी उसी अवस्थामें अग्नि लगनेसे जलकर परमधामको चलेगये ॥

सातवां अध्याय।

भरत नाम बेटा ऋषभदेवजी का राज्य करना व वनमें तप करनेवास्ते फिर जाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित भरत नाम बड़ा बेटा ऋषभदेवजीका जो उनकी जगह राजा हुआ उसने धर्मपूर्वक राज्य करके प्रजाको पुत्र समान जाना व विवाह अपना पंचजनी नाम विश्वरूपकी कन्यासे किया व राजा भरतके उसी स्त्रीसे धूम्रकेतु आदिक पांच पुत्र बहुत सुन्दर व प्रतापी हुये जब राजाने बहुतसे यज्ञ करके फल उनका परमेश्वरको अर्पण करदिया तब उन्हें ईश्वरकी चतुर्भुजी मूर्तिका दर्शन ध्यानमें होनेलगा इसीतरह दशहजार वर्ष राज्य व सुख भोगकर संसारीव्यवहार झूंठा समझा व विरक्त होकर राजगद्दी बेटोंको सौंपदी व आप वनमें पुलहाश्रम नदी किनारे जहांपर नारायणजी शालग्रामरूप से रहते हैं बैठकर भगवतभजन करनेलगे वह पत्तोंकी कुटीमें कन्द मूल खाकर जैसे आनन्द करते थे वैसा सुख उन्हें राजगद्दीपर नहीं मिलता था वेदकी आज्ञानुसार ब्राह्मण व क्षत्रियको नित्य पूजा शालग्रामकी करनी उचितहै एक दिन राजा भरत मध्याह्नसमय नदी किनारे बैठेहुये सूर्य देवताका ध्यान कररहे थे सो एक हरिणी गर्भवती अपने गोलसे फूटकर जैसे वहां पानी पीनेलगी तैसे ही एक बाघ बोला उसकी बोली सुनते ही हरिणी भागी तो नदीका सेतु नांघते समय बच्चा उसके पेटसे गिरपड़ा सो वह बच्चा अपना जीता छोड़-

कर उसी जगह मरगई राजा भरतने यह दशा देखकर विचार किया कि यह बच्चा यहां पड़ारहनेसे कोई जानवर इसे खाले या मारेभूख व प्याससे मरजावे तो मुझे पाप होगा परमेश्वरने उसका बोझ मेरे ऊपर डाल दिया इसलिये रक्षा करनी चाहिये ऐसा विचारकर राजाने धर्म व दयाकी राह उस बच्चेको उठालिया व पानीसे धोकर अपनी कुटीमें ले आये व गौ का दूध पिलाकर उसे पालनेलगे॥

आठवां अध्याय।

उस बच्चेका खो जाना व राजा भरतजी का उसी शोचमें तनु त्याग करना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजा जब उस बच्चेके पालनेसे अधिक मोह हुआ तब भरतजी अपने हाथसे हरी घास छीलकर उसको खिलाने व अपने पास सुलानेलगे जब दिशा फिरने व स्नान करनेवास्ते कहीं बाहर जाते तब उसे अपने साथ रखते व पूजा व तप करते समय उसको अपने पास बैठाले रहते थे प्रतिदिन भरतजीने इतनी प्रीति उस बच्चेसे बढ़ाई कि उनके जप व ध्यानमें बाधा होनेलगी जब वह बच्चा कहीं चलाजाता तब उसके वास्ते बहुत उदास होते थे अनायास एक दिन वह बच्चा छूटकर वनमें चलागया व अपने गोलमें मिलजानेसे फिरकर कुटीपर नहीं आया जब राजा भरतने बहुत ढूंढ़नेपर भी उसे न पाया तब बड़ा शोच करके कहने लगे देखो मुझसे बड़ी चूक हुई जो अकेला छोड़देने से वह भाग गया मैं ऐसा जानता कि वह चला जायगा तो किसवास्ते उसे अकेला छोड़ता परमेश्वर मुझपर दयालु होकर मेरा भाग्य उदय करै जिसमें फिर वह बच्चा मेरे पास चला आवै वह बच्चा डाटनेसे मुनीश्वरोंके बालक समान डरता था व पृथ्वी तू उसे अकेला देखकर उठालेगई है सो मेरे बच्चेको बतलादे जब इसीतरह शोच व विलाप करते रात्रि होगई तब कहा हे चन्द्रमा तुम उस बच्चेको अवश्य देखते होगे जहां मेरा बच्चा हो तुम कृपा करके बतलादेव जिसमें वह मिलजावे नहीं तो मेरा प्राण निकलने चाहताहै जैसा शोच अपने पुत्र मरनेका भी कोई नहीं करता वैसी चिन्ता भरतजीने बच्चेके वास्ते करके उस दिन स्नान व पूजा और भोजन कुछ

नहीं किया व उसी शोचमें मरगये सो मरते समय ध्यान व प्राण उनका उस बच्चेमें लगा था इसलिये वह तनु छोड़कर हरिणका जन्म पाया ॥

नवां अध्याय।

भरतजीको हरिणका तनु त्याग करना व एक ब्राह्मण के यहां जन्म लेना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजा भरतजी हरिणका जन्म पाकर वनमें रहने लगे परन्तु हरिभजनके प्रतापसे वह अपने पूर्वजन्मका वृत्तान्त जानते थे इसलिये अपनी अज्ञानता समझकर मनमें कहा देखो मैंने हरिचरणोंका ध्यान छोड़कर जैसी प्रीति उस बच्चेसे की वैसी अपनी स्त्री व पुत्रसे कभी नहीं की थी व उसके मोहमें फँसकर ऐसा नष्ट हुआ कि मनुष्यसे हरिण का तनु पाया भरतजी पिछली बात शोचकर किसी हरिणी आदिक से कुछ प्रीति न करके कहते कि न मालूम इनकी संगति करनेसे फिर मेरी क्या गति होगी यह बात समझकर भरतजीने किसी जीवको दुःख देना व हरी घास खाना छोड़ दिया जो फल पत्ता सूखकर गिर पड़ता था उसे खाकर हरिणके तनुमें भी परमेश्वरका ध्यान व स्मरण करते थे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले कि हे राजा मृत्युसे मनुष्यको प्रतिक्षण डरना चाहिये न जाने किस समय मृत्यु आजावै व एक हरिणके बच्चे से मोह करने में ऐसे महात्माकी यह गति हुई दूसरा कौन गिन्ती में है जो कोई परमेश्वरका ध्यान छोड़कर मायारूपी जालमें फँसेगा उसकी यह गति होगी सो भरत उस तनुमें दिन रात इसी बातका शोच करते थे कि जल्दी यह शरीर मेरा छूटै तो मनुष्य तनु पाकर परमेश्वरका भजन करूं इसी तरह कुछ दिन बिताकर एक रोज नदी पार उतरने लगे सो वह रूखे पत्ते खानेसे निर्बल होगये थे इसलिये सोता नांघते समय पुलहाश्रम नदी में डूबकर एक ब्राह्मण अथर्वण वेद पढ़नेवालेके पुत्र हुये नाम उनका भरत रक्खा जब सयाने हुये तब पूर्व जन्मका वृत्तान्त याद करके संसारी मोहमें न फँसे और दिनरात परमेश्वरमें ध्यान लगाये रहे अपने पिताके डाटनेपर भी पढ़ने में जी नहीं लगाया तब उस ब्राह्मणने अन्तसमय दूसरे बेटों से जो विद्यावान् थे कहा हे बेटा मैंने बहुत चाहा कि भरत तुम्हारा

भाई कुछ पढ़े पर उसने पढ़ने में चित्त नहीं लगाया इसकारण मूर्ख रहा सो तुमलोग मेरे अन्तसमयकी वात मानकर ऐसा उद्योग करना कि जिस में वह पढ़कर चतुर होजावै जब वह ब्राह्मण यह कहकर मरगया तब उसके बेटों ने भरतके पढ़नेवास्ते बहुत उपाय किया पर नहीं पढ़ा जड़भरत रूप बनकर ऐसा चलन पकड़ा कि कोई खिलादे तो खाना पिलादे तो पीना नहीं तो कुछ शोच न रखकर दिन रात्रि परमेश्वरके ध्यानमें मग्न रहना इससमय भी ऐसा चलन रखने से जड़भरत कहलाते हैं भरतके भाइयोंने यह हाल देखकर उससे अपना मन मोटा करलिया पर भोजन उसको देदिया करते थे जब उन्होंने देखा कि यह कोई कर्म घर व गृहस्थी का न करके वृथा खाताहै तब उसे अपना खेत अगोरनेवास्ते बैठालकर कहा तुम देखाकरो जिसमें इस खेतका अनाज कोई न लेजावै व पशु पक्षी भी खाने न पावैं जड़भरतने कुछ रखवारी उसकी न की वहां आनन्दपूर्वक बैठकर परमेश्वरका स्मरण व ध्यान करनेलगे एक राजा भीलोंका जो उस देशमें रहता था उसने मान्ता मानी कि हे भद्रकाली मेरे बेटा हो तो मैं मनुष्यका बलिदान तुम्हें चढ़ाऊं जब भद्रकालीकी कृपासे उसके पुत्र उत्पन्न हुआ तब उसने एक बालक बलिदान देनेवास्ते मोल लेकर पालन किया जब वह बालक अपने बलिदान दियेजानेका हाल सुनकर भाग गया तब राजा अपने नौकरोंसे बोला कि कुछ रुपया देकर एक मनुष्य बलिदान देनेवास्ते ढूंढ़ ले आवो जब वह लोग खोजते हुये रात्रिके समय उस खेतपर पहुँचे तब उन्होंने वहां जड़भरतको हृष्टपुष्ट देखकर बलिदान देनेवास्ते पकड़लिया व रस्सी गले में बांधकर राजाके मन्दिरमें लेगये वह राजा जड़भरतको देखकर बड़े हर्षसे बोला कि तुम ऐसा अच्छा मनुष्य बलिदान देनेवास्ते लाये हो कि जो अपने मरनेका कुछ डर न रखकर आनन्दमूर्ति दिखलाई देताहै भद्रकाली इसका बलिदान लेकर बहुत प्रसन्न होवैगी व राजाके पुत्र पुरोहित व ब्राह्मण महामूर्ख कुछ वेद व शास्त्रका हाल नहीं जानतेथे कि ब्राह्मणका बलिदान देना होताहै या नहीं सो इस बातका विचार न करके जड़भरत का क्षौर बनवाय व उबटन व फुलेल लगाकर

स्नान कराया व बलिदान देनेवास्ते उसको नया कपड़ा व गहना पहिनाया व इत्र व चन्दन शरीरमें मलकर बहुत अच्छा भोजन उसे खिलाया उससमय जड़भरतने प्रसन्न होकर मनमें कहा कि जबसे मेरे माता व पिता मरे हैं तबसे मुझे किसीने ऐसा पदार्थ नहीं खिलाया था आज बहुत अच्छा व्यंजन यह लोग प्रीतिसे खिलाते हैं जब भोजन कराने उपरान्त जड़भरतके गलेमें उत्तम फूलोंका हार पहिनाकर भद्रकालीके सामने खड़ा किया तब ब्राह्मणोंने राजाके हाथमें नंगी तलवार देकर कहा मारो जैसे राजाने खड्ग मारनेको हाथ उठाया वैसे जड़भरतने यह बात विचारकर शिर अपना उसके आगे झुका दिया कि पूरी व मिठाई खाते समय मैंने अपना मुँह फैलाया था अब तलवार खानेके समय गर्दन सामने से हटाना उचित नहीं है व भद्रकालीने उसको शिर झुकाते देखकर विचारा ये सब ब्राह्मण ऐसा ज्ञान नहीं रखते जो राजाको बलिदान देनेसे मनाकरैं व इस ब्राह्मण हरिभक्तके दुःख देनेमें ऐसा न हो कि जो नारायणजी मुझे कुछ दण्ड देवें इसकी रक्षा नहीं करती तो मुझे पाप होगा किसवास्ते कि कोई मनुष्य अपने सामने किसीको विना अपराध दुःख देवे तो उसकी रक्षा करनी चाहिये नहीं तो देनेवालेको पाप लगताहै ऐसा विचारकर भद्रकालीने बड़ा क्रोध किया व खड्ग व खप्पर हाथमें लियेहुये चिल्लाकर ऐसा डपटा कि वह शब्द सुनतेही राजा अपने पुरोहित समेत बहिरा होकर ऐसा मूर्च्छित होगया कि तलवार गिरपड़ी तब भद्रकालीने उसी खड्गसे राजा व पुरोहितका शिर काटलिया व दोनोंका शिर गेंदके समान उछालकर इस इच्छासे नाचनेलगी कि जिसमें जड़भरत प्रसन्न होकर मुझे कृपा व दयाकी दृष्टिसे देखैं तो मेरा भला हो व इनके दुःखी होने से मेरा कल्याण न होगा जब भद्रकालीके नृत्य करनेपर भी उसीतरह माथा झुकाये खड़े रहे तब भद्रकालीने स्तुति करके उनसे कहा हे ब्रह्मदेव आप कृपा करके मेरा अपराध क्षमा करैं किसवास्ते कि जब किसीका भक्त व सेवक दूसरेका अपराध करताहै तब उसके मालिकका नाम धराजाताहै सो आप ऐसा विचार न करैं कि यह राजा भद्रकालीका भक्त था यह मेरा बड़ा शत्रुहै जिसने

आपसे महात्माको दुःख देना चाहा व राज्य व धनके मदमें अन्धा होकर तुम्हें नहीं पहिचाना जड़भरतने यह वचन सुनतेही मुसुकराकर कहा आत्माका कभी नाश नहीं होता इसलिये अपना शिर कटने से मैं नहीं डरता पर तेरा भक्त इस पाप के बदले नरक भोग करैगा इस बातका शोच मुझेहै जड़भरत ऐसा कहकर वहांसे चले आये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् तुम निश्चय करके जानो कि जो मनुष्य मन अपना परमेश्वरमें लगाये रहताहै उसे कोई दुःख देने नहीं सक्ता॥

दशवां अध्याय।

राजा रहूगण करके जड़भरत को अपने सुखपाल में पकड़कर लगाना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजा दूसरा हाल जड़भरतका सुनो एक दिन राजा रहूगण सिन्धुसुवीर नाम अपने नगरसे शिविकापर चढ़कर कपिलदेव मुनिके पास ज्ञान सीखने जाता था राहमें एक कहार उसकी सवारीका मांदा होगया उसीओर कहीं जड़भरत भी परमेश्वरके ध्यानमें आनन्दसे बैठे थे दूसरे कहारोंने जड़भरतको हृष्टपुष्ट देखकर पकड़के शिविकामें लगादिया जड़भरत आनन्दपूर्वक राजाकी पालकी उठाये चलेजाते थे व इस अपमानका कुछ शोच उनको नहीं था पर धरतीको देखते चिउँटी आदिक जीवोंके दबने से बचाते हुये पांव रखते थे इसलिये जब कईबेर शिविका हिली तब राजाने क्रोधसे कहारों की ओर देखकर कहा कि तुमलोग पालकी क्यों हिलाते हो कहार बोले हमारा कुछ अपराध न होकर यह नया कहार शिविका हिलाताहै यह बात सुनते ही राजाने जड़भरतसे कहा हे कहार तू हृष्टपुष्ट दिखलाई देताहै अभी इतना रास्ता नहीं चला जो थकगया अपने प्राणका डर न रखकर मरनेकी इच्छा रखताहै जो पालकी हमारी अच्छी तरह नहीं लेचलता जड़भरत यह वचन सुनकर चुप होरहा व कुछ उत्तर राजाको न देकर मनमें कहा देखो इस शरीरको कर्मानुसार दुःख व सुख मिलताहै व परमात्मा इन दोनोंसे बिलग रहकर सदा एक रीति से रहते हैं जब जड़भरत चुप हो रहे तब फिर राजा क्रोध करके बोला कि हे कहार तू हमारी बातका उत्तर क्यों नहीं देता यह वचन

सुनकर जड़भरतने विचार किया कि यह अपनेको बड़ा ज्ञानी समझताहै इससे अभिमान इसका तोड़ना चाहिये ऐसा विचारके जड़भरत हँसकर बोले हे राजा तुमने कहा कि तू बहुत राह नहीं चला व थकगया जो मनुष्य वृथा फिरताहै वह दुःख पानेसे अवश्य मांदा होगा क्यों ऐसा कर्म नहीं करता कि जिससे जन्म व मरणसे छूटजावे व आपने कहा दुर्बल न होकर मोटा दिखाई देताहै सो हे राजा परमात्मा जिसको जीव कहते हैं वह सदा चैतन्य रहकर न मोटा होताहै न दुर्बल सदा एकसा रहता है कदाचित् उसे दुबला कहो तो वह ऐसा सूक्ष्मरूप है कि किसीको दिखलाई नहीं देता व मोटा समझो तो उसके विराट्रूपमें सारा संसार व चौदहों लोक वर्तमान हैं और यह शरीर नाश होनेवाला कभी पुष्ट व कभी कृशित रहता है जिसने इस अनित्य शरीरमें प्रीति लगाई उसे इन बातों का विचार करना चाहिये व जो तुमने कहा तू मरनेकी इच्छा रखताहै सो मेरे निकट जीना व मरना दोनों बराबर होकर विना मृत्यु आये कोई नहीं मरता व हे राजन् प्रकाश परमेश्वरका बीच तनु मेरे व तुम्हारे व सब जीवोंके एकसा है इसलिये स्वामी व सेवक सम जानताहूं व तुम इसी शरीरतक राजा हो मरने उपरान्त हम व तुम दोनों बराबर होजावेंगे इस लिये तुमको यह सामर्थ्य नहीं है कि जो आत्मा अविनाशी पुरुषको दुःख दे सको इस झूंठी कायाको चाहो सो दण्ड देव दुःख व सुख हर्ष व विषाद शरीरको होताहै व परमात्मा तनुमें पृथक् रहकर दुःख व सुखसे कुछ प्रयोजन नहीं रखते यह वचन सुनते ही जब राजाको ज्ञान प्राप्त हुआ तब वह शिविकासे उतरपड़ा व जड़भरतको दण्डवत् करके बोला कि महाराज मैंने संसारीजालमें फँसे रहनेसे तुमको नहीं पहिचाना सत्य बतलाओ तुम ऋषीश्वर या कोई महापुरुषका अवतार होकर अवधूतोंकी तरह अपना भेष बदले फिरते हो आप कृपा करके अपना भेद बतलाइये व मुझे ज्ञान सिखलाकर भवसागर पार उतार दीजिये मैं महादेवके त्रिशूल व यमराज व चन्द्रमा व सूर्य व अग्निआदिक किसी देवताका भय न मानकर ब्राह्मण के शापसे बहुत डरताहूं सो अपराध मेरा क्षमा कीजिये यह बात सुनकर

जड़भरतने कहा हे राजा यह जीव अपनी करणीसे कभी देवता होताहै कभी आदमी व मनुष्य तनुमें कभी राजा होताहै कभी भिखारी यह गति इस शरीर की समझकर परमात्माको जिसे जीव कहतेहैं उन सबसे पृथक् जानना चाहिये इतना ज्ञान कहने उपरान्त जड़भरतने अपने पूर्व जन्म का सब वृत्तान्त राजा रहूगणसे वर्णन किया ॥

ग्यारहवां अध्याय।

जड़भरत करके राजा रहूगणको ज्ञान उपदेश करना ॥

जड़भरतने कहा हे राजा अज्ञानता मनुष्यकी देखो वह अपने कानों से जिन स्त्री व पुत्रादिकका दुर्वचन सुनकर दुःख पाताहै तिसपर भी चित्त उसका उनकी ओरसे नहीं फिरता व झूंठ सत्य बोलकर किसी प्रकारसे दश रुपया कमाके उन्हीं लोगोंको पालन करताहै व छः चोर व ठग आठों पहर मनुष्यके साथ रहकर इसतरह उसके शुभ कर्मोंको चुरालेते हैं कि जिसतरह राहमें चोर व ठग धनपात्रके साथ लगकर अवसर पाके उसे लूटलेते हैं व चूहा घरमें रहने से खाने पीने पर भी वस्त्रादिक काट डालते हैं जिसके घरमें चूहा न हो उसकी वस्तु नष्ट नहीं होती और उन छहोंमें एक चोर मनको समझो जिसके चलायमान होनेसे मनुष्य कुकर्म करके नष्ट होताहै दूसरे पांच चोर व ठग काम क्रोध लोभ व मोह व इन्द्रियां हैं जिनके अधीन होकर अशुभ कर्म करनेसे धर्म मनुष्यका क्षीण होजाता है इसलिये मनुष्यको चाहिये कि इन छहों चोर व ठगोंको अपने अधीन रखकर उनके वश्य न होवै जब जड़भरतने यह बात रहूगणसे कही तब राजाने फिर उन्हें दण्डवत् किया ॥

बारहवां अध्याय।

राजा रहूगणको मनुष्य तनुकी स्तुति करना ॥

राजा रहूगणने जड़भरतसे इतना ज्ञान सुनकर विनय किया महाराज मनुष्ययोनि से दूसरा चोला उत्तम नहीं होता जिससे तुम्हारे ऐसे महात्मा व ज्ञानीका मुझे दर्शन मिला है जन्म मनुष्यका देवतोंसे भी अच्छा समझना चाहिये कदाचित् देवता परमेश्वरका तप करैं तो सिवाय मुक्तिके

दूसरा मनोरथ उनको नहीं मिलता भरतखण्डका मनुष्य जिस अर्थ के वास्ते हरिभजन करै वही फल उसको प्राप्त होताहै इसलिये मैं मनुष्य तनु को देवतोंसे उत्तम जानकर दण्डवत् करताहूं जड़भरत यह वचन सुनकर बोले हे राजा यह सब बातें मैंने तुझसे कहा उसका अर्थ तैंने समझा या नहीं राजा बोला कि महाराज मैं संसारीजीव अति मूर्ख अज्ञान हूं इसलिये यह ज्ञान अच्छीतरह नहीं समझा आप दयालु होकर विस्तारपूर्वक कहिये तब मैं समझ सक्ताहूं यह वचन सुनते ही जड़भरत हँसकर बोले हे राजन् यह बात कठिनहै ऐसा ज्ञान यज्ञ व पूजा व तप करने व विरक्त होने व वनके रहने व पंचाग्नि तापने व जलमें बैठने व दान देनेसे नहीं प्राप्त होता यह सब कर्म करनेसे मनुष्यको इस बातका अंहकार होताहै कि मैंने ऐसे शुभ कर्म किये हैं मेरी बराबर दूसरा कौन होगा शुभ कर्म करनेपर भी अहंकार रखनेसे वह नष्ट होजाताहै व जबतक अभिमान छोड़कर सन्त व महात्माके चरणोंकी धूर अपने मस्तकपर नहीं लगाता तबतक यह ज्ञान उसको नहीं मिलता व विना कृपा परमेश्वरके सन्त व महात्माका दर्शन दुर्लभहै व हे रहूगण तुम समझतेहो कि हम राजाहैं सो मैं भी पिछले जन्ममें भरतनाम सातोंद्वीपका राजाथा पर वहां रहनेसे अपना भला न समझकर राजगद्दी छोड़दिया व वनके बीच नारायणजीके शरण जाकर हरिभजन करनेलगा सो तुमको अभी तक अपनी राजगद्दीका अभिमान बनाहै इसलिये दूसरे जीवोंपर दया नहीं रखते जिसतरह प्रकाश परमेश्वरका तुम्हारे तनुमें है उसी तरह ईश्वरका चमत्कार इन कहारों में भी समझना चाहिये व ज्ञान की दृष्टि से यह लोग व सब जीव परमेश्वरके तुम्हारे समानहैं सो तुम अपने शरीरके सुख वास्ते इन्हें दुःख देतेहो सो बहुत अनुचित है यह ज्ञान सुनतेही राजा रहूगण मारे डरके कांपने लगा व जड़भरतसे हाथ जोड़-कर बोला महाराज मैं ब्राह्मणके शाप से डरताहूं ऐसा न हो कि जो आप क्रोधकर मुझे कुछ शाप देवें॥

तेरहवां अध्याय।

जड़भरत करके एक धनी बनियेका इतिहास राजा रहूगणसे कहना॥

रहूगणकी बात सुनकर जड़भरतने कहा हे राजा मत डर तुझे शाप नहीं दूंगा सुनो ज्ञानी व महात्मालोग संसारी सुख स्वप्नवत् झूठा समझकर इस शरीरसे प्रीति नहीं रखते व परमात्मा कायासे इसतरह अलग है कि जिस तरह वृक्षपर पक्षी बैठा हो व उस पेड़के काटने से पक्षीको कुछ दुःख नहीं होता कदाचित् पक्षी व्यर्थ उस वृक्षको अपना जानकर रोवे तो उसका शोच करना वृथाहै जो कोई शरीरको अपना समझकर संसारी सुखमें मन लगाता है उसे सिवाय दुःखके सुख नहीं होता जब उसने विरक्त होकर परमेश्वरमें ध्यान लगाया तब उसको सुख मिलताहै व परमेश्वरकी भक्ति करनेसे हृदयमें ज्ञानका दीपक प्रज्वलित होकर काम व क्रोधका अन्धकार उसके अन्तःकरणसे छूटजाताहै यह ज्ञान सुनतेही राजा रहूगणने हाथ जोड़कर कहा महाराज मैंने आपको पहिंचाना तुम ब्राह्मणहो जिसतरह रोगीका दुःख अमृत पीनेसे छूटजाताहै उसीतरह आप संसारी मनुष्योंको जो मायामोह में फँसकर नष्ट होरहेहैं अपना दर्शन देकर कृतार्थ करते हैं सो मुझेभी अपना दास जानकर दर्शन दिया यह बात सुनकर जड़भरत बोले हे राजन् मैं एक इतिहास कहताहूं तू उसके सुननेसे भवसागर पार उतरजावेगा सुनो एक बनियां धनपात्र बहुत वस्तु व्यापार की अपने साथ लेकर किसी दिशावरको चला व उसने कृपणतासे मालकी रक्षा करने के वास्ते कोई चाकर अपने साथ नहीं रक्खा इसलिये छः चोर उसके संग हो लिये व उन चोरोंके और भी सहायक उनके पीछे पीछे चले थोड़ी दूर नगरसे बाहर जाकर वह बनियां राह भूलके ऐसे वनमें पहुँचा जहां कोसों तक बस्ती नहीं थी जब वनमें बाघ व भालू कटीले वृक्ष व नदी व नाले अधिक होनेसे उसका राह चलना कठिन हुआ तब वह बनियां मारे डरके उस वनसे पार होने वास्ते संध्यातक बराबर चलागया पर बस्ती कहीं न मिली और उसी वन में रात होगई जब बनियां रातको एक नाले में अपने मालसमेत पहुँचा तब वही छः चोर और उनके सहायक सब माल उसका

लूटनेलगे उसीसमय उस बनियेंने रोकर मनमें कहा भला कुछ माल भी बचजाता तो उसे बेंचकर फिर व्यापार करते वह बनियां ऐसा विचारकर जिस वस्तुका बचाव करता था उसे सब चोर लूटतेथे जब सब माल उसका चोर लूटलेगये तब वह बनियां घबड़ाकर उस वनमें अपने टिकनेको स्थान ढूंढ़नेलगा पर कोई जगह उसके रहनेके वास्ते नहीं मिली सो वह व्याघ्र व हाथी आदिककी बोली सुनकर डरसे कांपता हुआ राह चला जाताथा जब कहीं पृथ्वी पर सांप व बिच्छू देखता तब ठोकर खाकर गिर पड़ताथा व कहीं पैरमें कांटे चुभतेथे जहां वृक्षके नीचे सुस्ताने लगता तो वृक्षपर उल्लूका शब्द सुनकर वहां से भी भागता कभी वनमें आग लगी देखकर उसके डरसे दूसरी ओर दौड़ताथा उसी विपत्तिमें भागतेहुये एक सूखे कुयें में गिरपड़ा उस कुयेंपर बरगदका वृक्ष होकर एक डाली उसकी कुयेंमें लटकतीथी जब वह बनियां आधे कुयें में पहुँचा तब वह डाली उसके हाथ लगी उसे पकड़कर लटक गया व उस कुयेंमें एक सांप नीचे बैठाथा सो अँधियारीरातमें बिजुली चमकनेसे उसने देखा कि कुयेंमें एक सांप फन काढ़े बैठाहै व जिस डालीको पकड़ेथा उस डालीको ऊपरसे दो चूहे श्याम व श्वेतवर्ण के काटते हैं तब बनियांने विचारा कुयें में कूदपडूं तो सांप के काटनेसे मरजाऊं नहीं कूदता तो डाली कटजानेसे गिरकर सांपके मुँहपडूंगा इसी शोच में व विचारमें बनियां पड़ारहा व उसी बरगदके वृक्षमें एकछत्ता शहदका लगाथा डाली हिलनेसे एक एक बूंद टपककर जो उस बनियांके मुहमें गिरतीथी ऐसी विपत्तिमें वह बनियां शहद चाटकर बहुत प्रसन्न होता था इसीतरह बनियांकी आयुर्दा उस कुयेंमें लटकेहुये बीत गई व उसके निकालनेवाला कोई वहां न पहुँचा जब एकदिन उन दोनों चूहोंने ऊपर से डाली काटदिया तब वह बनियां कुयेंमें गिरकर सांप काटनेसे मरगया इतनी कथा सुनकर राजाने जड़भरतसे कहा महाराज मुझे बड़ा आश्चर्य मालूम होताहै कि वह बनियां एक बूंद शहद खाकर प्रसन्न रहा व डाली पकड़कर ऊपर क्यों नहीं चढ़आया यह वचन सुनकर जड़भरत बोले हे राजन् इसीतरह पर तुम्हारी व संसारी मनुष्योंकी दशाहै कि सब मनुष्य

अनेक तरहका अपना उद्यम करके कुटुम्ब पालन करते हैं पर घरवालोंको किसी तरहका सन्तोष न होकर प्रतिदिन अधिक लोभ बढ़ता जाता है और अपने उद्यमसे उनको किसी साइति छुट्टी नहीं मिलती जो दोघड़ी परमेश्वर अपने उत्पन्न व पालन करनेवाले का स्मरण व ध्यान करैं जब कोई उनसे हरिभजन करनेकी चर्चा करताहै तब कहते हैं हमको अपने उद्यम व गृहकार्यसे छुट्टी नहीं रहती किससमय परमेश्वरका भजन व ध्यान करैंसो हे राजन् इस जीवको बनियां समझो व काम व क्रोध व लोभ व मोह व मद व मत्सरता यही छः चोर आठोंपहर मनुष्यके साथ रहते हैं व परिवारवालों को उन छवोंका सहायक समझना उचितहै और जीवको इसलिये बनियां कहना चाहिये कि उसने धर्म व ज्ञान बढ़ानेवास्ते भरतखण्डमें मनुष्यका तनु पाया जिसतरह उत्पन्न होकर साधु व महात्मा का सत्संग व हरिभजन करके संसारी मायाजालमें फँसगया इसीकारण जो कुछ उसके पूर्वजन्मका धर्मथा वहभी परिवारवालोंने छुशलिया उसीतरह बनियांने अपने मालकी रक्षा करनेवास्ते नौकर नहीं रक्खा इसलिये चोरोंने उसको लूटलिया कदाचित् वह भरतखण्डमें जन्म लेकर साधु व महात्माका सत्संग करके ज्ञान सीखता तो किसवास्ते बनियेंके समान मायाजालमें फँसकर नष्ट होता जैसे वह बनियां अपने टिकनेके वास्ते स्थान ढूंढ़ते समय व्याघ्रादिक के डरसे भागताथा वैसे संसारीसुख चाहनेवाले दुःख भोगते हैं व मनुष्य अपने कुटुम्बकी बीमारी व मरना देखने व अपने शरीरके रोगसे व कभी धन मिलनेवास्ते दुःख पाकर आठोंपहर चिन्ता में फँसा रहताहै जिसतरह उल्लू व व्याघ्रादिक बनियेंको डरपातेथे उसीतरह जब परिवारवाले झगड़ा करके घुड़कते हैं तब मनुष्य बड़ा दुःख पाताहै व स्त्रीकी संगति अन्धकार समझना चाहिये जिस जगह ज्ञान व वेदपुराणका वचन सब भूलजाताहै जब मनुष्य बूढ़ा होकर कुछ कमाई नहीं करसक्ता तब परिवारवाले उसे दुर्वचन कहकर भोजन व वस्त्रका दुःख देते हैं व कुछ उसका आदर नहीं करते जिसतरह मनुष्य महादुःखमें भी मरनेका कुछ डर न रखकर दिन रात कमानेका शोच किया करताहै उसीतरह बनियां कूयेंमें सांप व चूहे

देखने पर भी मरनेका भय नहीं रखताथा सो मनुष्यके वास्ते संसार व परिवारमें रहना यही अँधियारा कुवां समझो व जैसे कर्म पिछले जन्म किये हैं उसे बरगदकी जड़ समझना चाहिये जिसे पकड़कर जीताहै व दो चूहे काले व सपेद जो जड़ काटतेथे वही दिन व रातहैं जिसके बीतने से आयुर्दाय घटजाती है और बनियेंने जो सांप कुयें में देखाथा उसे काल समझो जिसतरह एक बूंद शहद चाटकर बनियां प्रसन्न होताथा उसीतरह अज्ञान मनुष्य बुढ़ाई व सब तरहके दुःख होने पर भी अपने कुटुम्बमें बैठकर मग्न होते हैं वही शहदकी बूंद समझना चाहिये सो हे राजन् जगत्को वही वन दुःख देनेवाला जानो संसारी मायाजाल में फँसनेवाला उसी बनियेंके समान दुःख पाकर नष्ट होगा जिसतरह तू जगत्की मायामें लपटाहै उसीतरह वह बनियां स्त्री व पुत्रके मोहमें फँसकर नष्ट हुआथा जो कोई वेद व शास्त्रके अनुसार चले वह अपना मनोरथ पासक्ताहै नहीं तो सब छोटे बड़े इसी मायारूपी वनमें भूलकर नष्ट होरहे हैं विना सत्संग किये मोहरूपी वनसे बाहर निकलना बहुत कठिन है॥

चौदहवां अध्याय।

यह ज्ञान सुनकर रहूगण का प्रसन्न होना व तप करनेवास्ते वनमें चलेजाना॥

जड़भरतने जब इसतरहका ज्ञान रहूगणको बतलाया तब राजा प्रसन्न होकर जड़भरत के चरणोंपर शिर रखकर विनयपूर्वक बोला कि आपने अति दयाकरके मुझे जो मायामें भूल रहाथा यह ज्ञानरूपी रास्ता दिखलाया यह वचन सुनकर जड़भरत बोले कि तुम इस ज्ञानके प्रकाशसे संसारीजालमें नहीं फँसोगे यह बात सुनतेही राजाने विरक्त होकर उसी जगह पालकी अपनी छोड़दी व वनमें जाकर हरिभजन करके मुक्त हुआ व जड़भरत अपना शरीर योगाभ्यासके साथ त्यागकर परमधामको चले गये व जड़भरतके सुमतनाम बेटेने जो राजगद्दी पर बैठाथा जैनधर्मका मत संसारमें फैलाया उनके वंशमें प्रतिहार आदिक उत्पन्न होकर शुभ कर्म करके परमपदको पहुँचे॥

पन्द्रहवां अध्याय।

शुकदेवजीका राजा परीक्षित से पृथ्वी आदिक का विस्तार कहना॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर पूंछा कि हे स्वामी आप दयालु होकर पृथ्वी व सूर्यादिक लोकोंका हाल विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये शुकदेवजी बोले हे राजा पहिले सातों द्वीपोंका हाल संक्षेपसे कहा है अब फिर विस्तारपूर्वक कहते हैं सुनो पृथ्वीमें सातद्वीप होकर सब द्वीपोंकी धरती पृथक् पृथक् बँटी है व जम्बूद्वीप लाखयोजन भूमि होकर सब पृथ्वी सातोंद्वीपकी पचासकरोड़ योजनहै उससे चौथाई धरती लोकालोक पर्वतके नीचे दबी रहकर तीनभागमें सातोंद्वीप व समुद्रहैं सो राजा प्रियव्रत इन सातों द्वीपोंके मालिकने एक एक द्वीप अपने सातों बेटोंको बांटदिया व आप वनमें जाकर बीच तप व ध्यान परमेश्वरके लीन हुये व प्रियव्रतके अग्नीध्रनाम बेटेने जम्बूद्वीपके नवखण्ड करके एक एक खण्ड अपने पुत्रोंको बांटदिया व जौन जौन नाम उनके बेटोंके थे वही नाम उन नव खण्डोंके प्रकट हुये पहिला उत्कलखण्ड १ दूसरा हिरण्यखण्ड २ तीसरा भद्राश्वखण्ड ३ चौथा केतुमालखण्ड ४ पांचवां इलाव्रतखण्ड ५ होकर उस खण्डके मध्यमें एक पर्वत सुमेरु नाम सोनेका लक्ष योजन ऊँचा व सोलहहजार योजन लम्बा व आठहजार योजन चौड़ा व बत्तीसहजार योजनके घेरे में है छठवां नाभिखण्ड ६ सातवां किम्पुरुषखण्ड ७ आठवां भरतखण्ड ८ नवां नरहरिखण्ड ९ है व ब्रह्माण्ड कमलफूलके समान गोल होकर एक एक पर्वत नवों खंडोंके सिवानेपर वर्तमानहै व सुमेरुपर्वतके चारोंओर चारि पहाड़ पर दूध व शहद व पानी व रसका कुण्ड भराहै व चार बाग बहुत अच्छे फल व पुष्प लगे हुये कुबेर व महादेव व इन्द्र व वरुण देवताओंके वहां पर ऐसे बने हैं कि जहां जाने व स्नान करनेसे देवपत्नी जवान होजाती हैं व सुमेरु पर्वतके शिखरपर ब्रह्मपुरी दशहजार योजन लम्बी व चौड़ी जड़ाऊ बनीहै वहां पर भांति भांतिके पक्षी रहकर मीठी मीठी बोली बोलते हैं हे राजन् वहांकी शोभा हम तुमसे कहांतक वर्णन करें देखने से मालूम होती है॥

सोलहवां अध्याय।

शुकदेवजी का राजा परीक्षितसे लोकालोक पर्वतकी कथा कहना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् इसतरह जम्बूद्वीपमें नवखण्ड होकर हर एक खण्डके रहनेवाले सब अवतारोंकी पृथक् पृथक् पूजा करते हैं व इन सातों द्वीपोंके बाहर लोकालोक पर्वत है उसके उधर अँधेरा होकर सूर्य व चन्द्रमाका प्रकाश नहीं रहता वहां योगीलोग जाने सके हैं व संसारी लोग वहां जानेकी सामर्थ्य नहीं रखते और आठ हाथी बड़े बलवान् जिनको दिग्पाल कहते हैं सब पृथ्वीके आठों ओर रहकर धरतीको अपने नीचे ऐसा दबाये हैं कि हिलने नहीं देते व सुमेरु पर्वत पर चार पुरी कुबेरपुरी १ वरुणपुरी २ इन्द्रपुरी ३ यमपुरी ४ हैं और सूर्यका रथ दोपहर पीछे इन चारों पुरियोंमें प्रातःकाल व दोपहर व सन्ध्या व आधीरातके समय एक एक जगह पहुँचता है व ब्रह्माकी पुरीसे गंगाजी निकल कर सुमेरुपर्वतके नीचे गंगोत्तरीमें आई हैं ॥

सत्रहवां अध्याय।

शुकदेव स्वामी का गंगाजीकी महिमा वर्णन करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित गंगाजीकी उत्पत्ति विस्तारपूर्वक कहता हूं सुनो जब नारायणजीने वामन अवतार लेकर तीन पैग पृथ्वी राजा बलिसे दानलिया सो विराट् रूप धारण करके एक पगसे सातों लोक नीचेके व दूसरे पगसे सातों लोक ऊपरके नाप लिये तब ब्रह्मा दाहिना चरण परब्रह्म परमेश्वरका अपनी पुरीमें पहुँचते ही त्रिविक्रम अवतार होना जानकर उठ खड़े हुये व ब्रह्माने अपने कमण्डलुमें से पानी विरजा नदीका जो ब्रह्मरूप परमेश्वरके आंशू गिरनेसे वैकुंठमें प्रकट हुई थी लेकर उन चरणोंको धोया व चरणामृत लेकर वह जल अपने शिर व आंखोंमें लगाया और वह चरण धोते समय जो पानी सुमेरु पर्वत पर गिरा था वह नीचे आनकर मन्दराचल पहाड़के सिवाने पर थँभरहा फिर वहां से चार धारा होकर वह जल बहा तो एक धारा सुमेरुके पश्चिम व दूसरी सुमेरुके दक्षिण व तीसरी सुमेरुके उत्तर दिशा बहकर समुद्रमें मिल

गई चौथी धारा जो पूर्वको बही थी वह भगीरथके तपोबलसे इलावृत खण्डको बाईं दिशा छोड़ती हुई नरनारायण पर्वतसे उतरके गंगोत्तरीसे होकर भरतखण्डमें आई उसी धाराका नाम संसारमें गंगाजी प्रकट हुआ व माहात्म्य गंगाजीका इस तरह परहै जो कोई गंगास्नान व जलपान व दर्शन करनेके वास्ते अपने घरसे जानेकी इच्छा करताहै उसके करोड़ों जन्मके पाप छूटजाते हैं और वह मनुष्य इस इच्छासे जितने पग चलकर गंगाजीतक पहुँचताहै एक एक पग धरनेके बदले उसको सौ सौ राजसूय यज्ञ व अश्वमेधके फल मिलते हैं यह वचन सुनते ही परीक्षितने सन्देह मानकर शुकदेवजी से पूंछा कि महाराज जब मनुष्यको गंगास्नान करने जानेसे यज्ञोंके फल मिलते हैं तो युधिष्ठिर हमारे दादाने किसवास्ते इतना रुपया खर्च करके यज्ञ किया था व दूसरे राजा लोग क्यों यज्ञ करते हैं यह वचन सुनकर शुकदेवजी बोले कि हे राजन् हम एक इतिहास तुमसे कहते हैं सुनो एक समय महादेवजी पार्वतीको साथ लेकर मकर महीने में गंगास्नान करनेके वास्ते प्रयागराजको जाते थे तब राहमें पार्वती जीने बहुत लोगोंको जाते हुये देखकर महादेवजीसे गंगास्नान का माहात्म्य पूंछा तब शिवजीने कहा हे पार्वती जो कोई गंगा नहाने अपने घरसे चले उसको एक एक पग चलनेमें सौ सौ अश्वमेध यज्ञ का फल मिलकर करोड़ों जन्मके पाप छूटनेसे वह देवता समान होजाताहै यह वचन सुनने व यात्रियों को देखनेसे पार्वतीजीने यह सन्देह किया देखो लाखों मनुष्य नीच जाति गंगाजीसे नहाकर चलेजाते हैं सो इन लोगोंकी गंगास्नान करने से अभीतक कुरूपता भी नहीं गई देवताका तनु किसतरह पावैंगे महादेवजी ऐसा कहते हैं सो इतने यात्रियों को ऐसा फल किसतरह मिलेगा ऐसी शंका मानकर पार्वतीजी फिर विनयपूर्वक बोलीं कि महाराज आपने गंगाजीका माहात्म्य इस तरह पर वर्णन किया औरइन यात्रा करनेवालोंका रूप देखनेसे मुझे इस बातकी प्रतीत नहीं होती महादेवजी बोले इसका भेद हम तुमसे क्या कहैं चलो आंखसे दिखलादेवें ऐसा कहकर जब शिवजी गंगाके निकट जिस रास्तेसे यात्री चले जाते थे पहुँचे तब

वहां कोढ़ीरूप बनकर बैठ गये व पार्वती से कहा तू दिव्यरूप अति सुन्दरी होकर मेरे शरीरकी मक्खी उड़ाव और जो कोई स्नान करनेवाला तुझसे पूंछे तो उससे यह बात कहना कि हमारा पति कोढ़ी होगया सो एक पण्डित ने कर्मविपाककी पोथी देखकर बतलाया है कि जिस किसीने सौ अश्वमेध यज्ञ किये हों वह इनको अपने हाथ से छूदे तो इन का कोढ़ छूट जावे सो यहां लाखों मनुष्य नहाने आये हैं इसवास्ते इनको यहां लाकर बैठी हूं कि जिसने सौ यज्ञ किये हों वह इनको छूदे तो यह तन इनका अच्छा होजावे जब पार्वतीजी देवकन्याके समान बनकर मक्खी उड़ाने व यही बात कहनेलगीं तब बहुतसे यात्री उनका रूप देखते ही मोहित होकर उनके चारों ओर खड़े होगये उनमें कोई पार्वतीको अपने साथ चलनेवास्ते कहकर कोई उनसे हँसी व ठट्ठा करनेलगे व कितनोंने अनेकतरह का डर व लोभ उन्हें दिखलाया व ज्ञानी लोगोंने कहा इस स्त्रीको धन्य है कि जो इस दशामें भी अपने पतिकी सेवा नहीं छोड़ती जो स्त्री अपने स्वामीको काना, कुबड़ा, कोढ़ी, लँगड़ा, अन्धा, दरिद्री, कुरूप कैसा ही हो परमेश्वरके समान जानकर आनन्दपूर्वक उसकी सेवा करै व परपुरुषको कुभावसे न देखै उसे पतिव्रता कहना चाहिये उसी समय एक कंगाल ब्राह्मण दुर्बल उनको देखते ही निकट आनकर दण्डवत् करके पार्वतीजीसे बोला कि हे माता तुम किस इच्छासे यहां भीरमें बैठी हो कहीं एकान्तमें अपने पतिको लेजाकर उसकी सेवा करो कि जिसमें मक्खी आदिक बैठनेसे यह दुःख न पावे यह वचन सुनकर पार्वती बोलीं मेरे पतिके कर्मविपाकमें ऐसा निकलाहै कि जिसने सौ अश्वमेध यज्ञ किये हों वह इनको छूदे तो शरीर इनका अच्छा होजाय इसी इच्छा से मैं इन्हें यहां लाकर बैठीहूं कि इस पर्वमें लाखों मनुष्य आवैंगे किसीने तो सौ अश्वमेध यज्ञ किये होंगे जिसके छूनेसे हमारे स्वामी का रोग छूटजावेगा यह बात सुनकर वह ब्राह्मण बोला यह कौन बड़ी बातहै तुम तो सौ अश्वमेध करने कहती हो मैंने लाखों अश्वमेध यज्ञ किये हैं जिनकी गिनती तुम नहीं करसक्तीं यह वचन सुनतेही पार्वतीजी

विनयपूर्वक बोलीं कि महाराज आप दया करके इनको छूदीजिये जैसे उस ब्राह्मणने शिवजी के अंगमें अपना हाथ लगाया वैसेही महादेवजी दिव्यरूप अश्विनीकुमारके समान होगये तब यह हाल देखकर पार्वती व सब यात्रियोंको इस बातका सन्देह मालूम हुआ कि यह ब्राह्मण तीस वर्ष का कंगालहै व सौ अश्वमेध करने में सौ वर्ष व बहुतसा द्रव्य व सेना दूसरे राजाओंके जीतनेवास्ते चाहिये इसने किसतरह सौ यज्ञ किये होंगे शिव जी अन्तर्यामी ने उनका सन्देह छुड़ानेवास्ते यात्रियोंके सामने उस ब्राह्मणसे पूंछा कि महाराज तुमने इतनी अवस्थामें लाखों यज्ञ किसतरह किये होंगे तब वह ब्राह्मण बोला सुनिये महाराज यज्ञ की विधि व उसका फल शास्त्रानुसार होता है व उसी शास्त्रमें गंगास्नानका माहात्म्य ऐसा लिखते हैं कि जो कोई गंगास्नान करनेको अपने घरसे चले उसको एक एक पग चलने में सौ सौ अश्वमेधका फल मिलताहै सो मैं अपने घरसे नित्य गंगास्नान करनेको कोस भर हजारों पग चलकर आताहूं उस हिसाबसे लाखों कौन चीज हैं कई करोड़ अश्वमेध यज्ञ हम करचुके होंगे इसमें आश्चर्य कौनहै यह बात सुनकर महादेवजीने पार्वती व यात्रियों से कहा ब्राह्मण सच कहताहै शिवजी ऐसा कहकर अपने स्थानको चले व राहमें पार्वतीसे बोले कि देखो तुमको जो सन्देह था सो हमारे कहेके प्रमाण इस ब्राह्मणको गंगास्नानके फल मिलते हैं और सब यात्री वेदके वचन पर विश्वास नहीं रखते इसलिये यह फल उनको नहीं प्राप्त होसक्ता इसवास्ते वेद व शास्त्र सुनकर निश्चय करना चाहिये जिसके सुनने व पढ़नेसे मनुष्यको शुभ अशुभ कर्मका ज्ञान होता है सो हे परीक्षित राजा युधिष्ठिर तुम्हारे दादाको वेद व शास्त्रका विश्वास था पर उनको बहुत द्रव्य होने से यह इच्छा हुई कि इसी बहाने से श्यामसुन्दरको अपने यहां रखकर ऋषीश्वर व मुनीश्वरों का सत्संग करूं व धन मेरा शुभकर्म में लगकर मुझे यश मिलै इस कारण यज्ञ किये थे॥

अठारहवां अध्याय।

शुकदेवजीका यह बात वर्णन करना कि कौन कौन खण्डमें किस किस अवतारकी पूजा होती है ॥

शुकदेवजी बोले कि हे परीक्षित हमने नवोंखण्डकी कथा तुमसे वर्णन की अब परमेश्वरके अवतारोंका हाल व जिस जिस खण्डमें जो जो अवतार नारायणजीने लिये थे और वहांके सब लोग अवतार पर अधिक प्रीति रखकर उनकी पूजा करते हैं सुनो भद्राश्वखण्डमें वृन्दश्रवानाम राजाथा वहां हयग्रीव अवतार परमेश्वरने धारण किया सो उस खण्डमें राजा व प्रजा उसी रूपकी पूजा व उन्हींका मन्त्र पढ़कर स्तुति करते हैं व नरहरिखण्डमें नृसिंह अवतार नारायणजीने लिया था वहां नरहरिवर्ष नाम राजा अपनी प्रजा समेत उसी रूपकी पूजा करताहै और प्रह्लाद भक्त उनके पुजारीने मंत्रसहित स्तुति करके नृसिंहजीसे यह वरदान मांगा कि महाराज आप अपने जीवों को जिस जिस योनिमें चाहैं जन्म देकर उन पर ऐसी कृपा रक्खैं कि जिस से उनको उसी तनुमें तुम्हारे चरणोंका ध्यान बना रहै यह बात सुनकर नृसिंहजी बोले कि हे प्रह्लाद तुम अपने वास्ते जो चाहो सो मांगलो पर संसारीजीवोंके वास्ते जो माया मोहमें फँसे हैं ऐसा वरदान मत मांगो तब प्रह्लाद फिर हाथ जोड़कर बोले महाराज संसारमें जो लोग कुकर्म करते हैं अपनी दयासे उनका अधर्म छुड़ा दो अपने चरणोंकी भक्ति उन्हें देकर वैकुंठमें बुला लो यह वचन सुनकर नृसिंहजीने कहा हे प्रह्लाद सब जीवों को वैकुंठकी चाहना नहीं होती जिसे सत्संग प्यारा हो उसे ज्ञान मिलताहै व कलियुगवासियोंको सत्संग अच्छा नहीं लगता वह संसारीमायामें फँसे रहतेहैं जो परमेश्वरकी भक्ति रखताहै उसके पास सब गुण आपसे इसतरह जाते हैं कि जिस तरह नीची पृथ्वीपर पानी बहकर बटुर जाताहै यह बात सुनकर प्रह्लादने कहा महाराज संसारमें कोई ऐसाभी मूर्ख होगा जिसे वैकुंठ जानेकी इच्छा न होगी आप वैकुंठ अपना किसीको दिया नहीं चाहते लालच करतेहैं मुझे इसबातमें लज्जा मालूम होतीहै कि संसारी लोग ऐसा कहैंगे कि प्रह्लादके स्वामी लालची हैं यह वचन सुनते ही नृसिंहजी हँस

कर बोले हे प्रह्लाद तुम जगत्में जाकर जिसे अतिदुःखी पावो उसे वैकुण्ठ चलनेके वास्ते कहो देखो वह क्या कहताहै जब उनकी आज्ञानुसार प्रह्लाद नगरमें आनकर किसी दुःखी जीवको ढूंढ़ने लगा तब उसे एक शूकर अति रोगी चहलेमें फँसा देखपड़ा उसे महादुःखी देखकर प्रह्लादने कहा तू यहां रहकर क्यों इतना दुःख उठाताहै वैकुण्ठ चल वहां तुझे बड़ा सुख मिलेगा नृसिंहजीकी आज्ञासे तुझे बुलाने आयाहूं यह बात सुनकर शूकरने पूंछा कि वैकुण्ठमें क्या सुख है जब प्रह्लादने वैकुण्ठका सुख वर्णन किया तब वह शूकर बोला मैं अकेला वहां नहीं चलसक्ता कुटुम्ब समेत कहो तो चलूं तुम नृसिंहजीसे पूंछ आवो यह वचन सुनतेही प्रह्लादने जाकर नृसिंहजीसे पूंछा वे बोले बहुत अच्छा सबको लेआवो जब फिर प्रह्लादने आनकर उस शूकरसे परिवार समेत चलनेके वास्ते कहा तब उस शूकरकी स्त्रीने प्रह्लाद से पूंछा कि वैकुण्ठमें विष्ठा हमारे खानेवास्ते है या नहीं प्रह्लादने कहा वहां नरक न होकर और सब अच्छे अच्छे पदार्थ भोजन करनेके हैं तब शूकर व शूकरी आपसमें सम्मत करके बोले कि हमें यहां बड़ा सुखहै हमलोग वैकुण्ठमें न जावैंगे यह बात सुनकर प्रह्लादने कहा तुम बड़े मूर्ख हो जो वैकुण्ठमें नहीं चलते जब यह बात सुनकर वह शूकर प्रह्लादकी ओर घूमने लगा तब वह दूसरा जीव वैकुण्ठमें लेजानेवास्ते ढूंढ़ते हुये एक वृद्ध मनुष्य के पास जाकर कहनेलगा कि अब तुम बूढ़े हुये वैकुण्ठमें चलकर वहांका सुख भोगो यह बात सुनकर वह बोला कि अभी मुझे संसारमें जीकर अपने बेटोंका मुण्डन व विवाह करके नाती पोते देखने हैं तुम्हारे कहनेसे अभी मरजावें तुम यहां से चले जाव हमारे बेटोंके सामने ऐसा वचन कहते तो वह तुम्हें दण्ड देते जब प्रह्लादने उस बूढ़ेकी बात सुनकर हार माना तब नृसिंहजीके पास जाकर विनय किया महाराज संसारमें सब छोटे व बड़े अपने अज्ञान से माया मोहके जाल में फँस रहे हैं इसलिये कोई मनुष्य वैकुण्ठ जानेकी चाहना नहीं करता यह वचन सुनकर नृसिंहजी बोले हे प्रह्लाद जगत्में जिस जीवने जो तनु पाया वह उसी योनिमें मग्न रहता है व इच्छा उसकी किसी तरह पूरी नहीं होती आंख कान आदिक सब

इन्द्रियां शिथिल होजाती हैं पर मन उसका संसार छोड़ने वास्ते नहीं चाहता यह बात सुनकर प्रह्लादने नृसिंहजीको दण्डवत् करके विनय किया महाराज यह सब तुम्हारी मायाहै जिसको आप दया करके ज्ञान देतेहैं वह मनुष्य वैकुण्ठ जानेकी चाहना करताहै नहीं तो सब किसीको ज्ञान प्राप्त होना बहुत कठिनहै और केतुमालखण्डमें कामदेव भगवान्ने अवतार लिया था वहां पर लक्ष्मीजी प्रजासमेत मन्त्र पढ़कर उनकी स्तुति व पूजा करती हैं व रमणकखण्डमें परमेश्वरने मत्स्य अवतार धारण किया था वहां रमणक नाम राजा अपनी प्रजासमेत मत्स्यरूपकी पूजा करताहै और हिरण्मयखण्डमें कच्छप अवतार नारायणजीने लिया था वहां हिरण्मय नाम राजा अपनी प्रजासमेत उसी रूपकी पूजा व स्तुति मन्त्र पढ़कर करता है और कुरुखण्ड में भगवान् ने वाराह अवतार धारण किया था वहां कुरु नाम राजा अपनी प्रजासमेत उसी रूपकी पूजा मन्त्र पढ़कर करताहै व पृथ्वी वहां पुजारी रहकर कहती है कि आप हिरण्याक्ष दैत्यको मारकर मुझे रसातल लोकसे ले आये हैं॥

उन्नीसवां अध्याय।

शुकदेवजीका राजा परीक्षितसे शेष खण्डोंका हाल कहना॥

शुकदेवजी बोले हे राजा किम्पुरुषखण्डमें रामचन्द्रजी विराजते हैं व हनुमान्जी वहां पुजारी होकर रघुनाथजीकी मन्त्रसे पूजा व स्तुति करके कहते हैं महाराज आपने केवल संसारीजीवोंको शुभमार्ग दिखलाने व कृतार्थ करने वास्ते नरतनु धारण किया कुछ रावणादिके मारनेको अवतार नहीं लिया था आप चाहते तो अपनी इच्छासे राक्षसोंका वध करदेते व आपने वनमें जानकीजीके वियोगसे विलाप किया था सो संसारी जीवोंको यह दिखलायाहै जब मेरे ऐसे ईश्वर परब्रह्मको गृहस्थी करनेमें दुःख हुआ तो जगत्में जितने जीवहैं सबको स्त्री व पुत्रादिकसे दुःख प्राप्त होगा व आपने नरतन इसवास्ते धारण किया कि जिसमें तुम्हारी शरण आनेवाला ऐसा सुन्दर रूप छोड़कर दूसरेको किसवास्ते भजैगा व परमेश्वरने भरत-खण्डमें यह बात विचारकर नरनारायणका अवतार लिया कि इस खण्डके

प्रजालोग कलियुगमें तप व जप नहीं कर सकैंगे इसवास्ते मैं तपस्वीरूप होकर बदरी केदारमें बैठारहूं जो कोई मेरा दर्शन करैगा उसको अपने दर्शनसे तपका फल देकर पवित्र करके मुक्तिपदवी देऊँगा इसलिये आज तक बदरिकाश्रममें बैठकर तप करते हैं और वहां नारदजी पुजारी सांख्य-योगसे मन्त्र पढ़कर पूजा व स्तुति करके कहते हैं हे दीनानाथ सब ज-गत्की उत्पत्ति व पालन व नाश करनेवाले आपहैं व सातों द्वीपमें भरत-खंड मध्यदेश सब पृथ्वीकी जड़ बहुत पवित्र होकर इस खण्डमें जो जीव जैसा कर्म करै वैसा फल दूसरे लोकमें जाकर भोगताहै इसलिये भरतखण्ड कर्मभूमिका पाप व पुण्य किया हुआ खेत के समान बढ़ाताहै व सिवाय भरतखण्डके दूसरे जो आठ खण्डहैं वहां सदा त्रेतायुगके समान रहकर कलियुग अपना प्रवेश नहीं करसक्ता वहांके रहनेवाले देवतोंकी तरह स्त्रियोंको साथ लेकर भोग व विलास किया करते हैं उनको वहां सदा वसन्त ऋतु व इन्द्रलोकके समान सुख बनारहकर दुःख किसी बातका नहीं होता व चारों वर्णका विचार केवल भरतखण्डमें है व दूसरे खण्डके लोग इतना सुख होने पर भी भरतखण्डके मनुष्योंको अपनेसे अच्छा व भाग्यवान् जानतेहैं व भरतखण्डके जीव थोड़ासा स्मरण व भजन नारायणजीका करनेसे भवसागर पार उतरजाते हैं व दूसरे खण्डों व द्वीपोंमें यह बात नहीं प्राप्त होती सो आपने बड़ी कृपा करके कलियुगवासियोंको दर्शन देने वास्ते इसखण्डमें अवतारलिया तिसपर भी कलियुग के मनुष्य ऐसे कपट व आलस्य व अभिमान में भरे रहैंगे कि उनको संसारी मायामें फँसे रहनेसे तुम्हारे दर्शन करनेकी छुट्टी नहीं मिलैगी जिसपर आप अनुग्रह करैंगे वही तुम्हारे चरणों को आकर देखैगा हे परीक्षित जब देवतालोग स्वर्गसे अपने अपने विमानों में बैठकर मन्दराचल पर्वतपर विहार करने वास्ते आते हैं तब भरतखण्डके मनुष्योंको देखकर अपनेको तुच्छ समझ के कहते हैं कि हमलोगों को यह सामर्थ्य नहीं है कि जो इससे उत्तम पदवीको पहुँचसकें व भरतखण्डके जीव शुभ कर्म करनेसे जितनी बड़ी पदवीको चाहें पहुँच जावें सो हे राजा जिसने भरतखण्डमें मनुष्यतनु

पाकर जन्म अपना संसारी मायामोहमें खोया व हरिभजनसे विमुख रहा उसका जन्म लेना अकार्थ हुआ उस मनुष्यकी वह गति समझना चाहिये जैसे कोई द्रव्य प्राप्त होनेवास्ते बड़े परिश्रमसे ऊँचे पर्वत पर चढ़कर धनके पास पहुँचै फिर अपनेको विना मिलने द्रव्यके पहाड़परसे नीचे गिरादेवे तौ उसका सब परिश्रम वृथा होकर हाथ पैर टूटजावैं तब सिवाय पछितानेके फिर उस बूंदसे भेंट नहीं होती इसलिये उचितहै जो जीव भरतखण्डमें मनुष्यका तनु पावै वह हरिभजन करके भवसागर पार उतर जावै व जो अपने अज्ञानसे ऐसा नहीं करता वह पीछे बहुत दुःख पाताहै इस भरत-खण्डमें चित्रकूट व गोवर्धन आदिक बहुतसे पर्वत व कौशिकी व सरस्वती आदिक अनेक नदियां भी ऐसी हैं कि जिनका नाम लेने व दर्शन करने व नहानेसे सब पाप मनुष्यका छूटकर काया उसकी शुद्ध होजाती है इस कारण देवतालोग कहते हैं कि भरतखण्डके जीवोंने पिछले जन्म के पुण्य से यहां जन्म पाया जिस खण्डके जन्म लेने व परमेश्वरका भजन करनेसे मनुष्य तुरन्त मुक्त होजाता है व इलावृतखण्डकी कथा नवें स्कन्धमें आवैगी उस खण्डमें शिवजी पार्वतीको साथ लिये सोलहहजार सहेलियों समेत सदा विहार करके शेष भगवान्की पूजा व स्तुति मन्त्र पढ़कर करते हैं व नाभिखण्ड भरतखण्डमें मिला है ॥

बीसवां अध्याय।

शुकदेवजीका विस्तारपूर्वक सातोंद्वीपकी कथा राजा परीक्षितसे कहना ॥

शुकदेवजी बोले कि हे राजा नवों खण्डोंकी कथा हमने तुमसे वर्णन की अब सातों द्वीपों का हाल सुनो जम्बूद्वीपके बीच नवखण्ड होकर इस द्वीपमें एक वृक्ष जामुनका बहुत बड़ा लाखयोजन ऊँचाहै इसकारण जम्बू-द्वीप नाम हुआ व उस वृक्षकी छाया लाखयोजन के घेरेमें पड़ती है व उसके फल काले काले हाथीके समान बड़े होते हैं व उस फलका रस पृथ्वी पर गिरनेसे सूर्यका तेज पाकर सोना होजाताहै व चारों ओर इस द्वीपके खारे पानीका समुद्रहै व नवखण्डके जो राजाथे उन्होंने एक एक खण्डके छः छः भाग करके अपने अपने बेटों को बांट दिया व उन नवखण्डोंके

सिवानेपर एक एक पहाड़ वीचमें होकर सुमेरुपर्वतके नीचे रस व शहद व घी की तीन नदी बहती हैं सो देवता व गन्धर्व आदिकोंकी स्त्रियां उन नदियोंमें जाकर स्नान करके वह रस पीती हैं तो उनको अबलता व वुढ़ाई नहीं होती व जम्बूद्वीप में राजा सगरके साठिहजार बेटोंने श्यामकर्णघोड़ा यज्ञका ढूंढ़नेके वास्ते जो पृथ्वी खोदा था उस खोदनेसे सिंहलद्वीप आदिक सात टापू और प्रकट हुये हैं दूसरे पाकरद्वीपमें एक वृक्ष पाकरका दो लाख योजन ऊंचा व उसके फल बहुत बड़े होकर उसकी छाया दो लाख योजन के घेरेमें पड़ती है इसलिये पाकरद्वीप नाम हुआ व उसके चारों ओर रसका समुद्र भराहै जो कोई उस वृक्षके नीचे जाकर भूषण व वस्त्र व भोजन आदिक जिस वस्तुकी इच्छा करे उसी समय वह पदार्थ उस वृक्षसे मिलताहै व उसी द्वीपमें अमृत नामादिक सातखण्ड हैं तीसरा शाल्मलिद्वीप वहां सेमलका वृक्ष चारलाख योजन ऊंचा होकर उतने घेरेमें उसकी छाया पड़ती है इसकारण उसका शाल्मलिद्वीप नाम हुआ उस द्वीपमें चौगिर्द किनारे किनारे आठ पर्वत होकर उन पहाड़ोंपर यक्ष व गन्धर्वादिक जाकर गाते बजाते हैं व वहां पर तालाब व बाग व मकान अच्छे अच्छे विहार करनेवास्ते बने हुये हैं व सूर्य नामादि सातखण्ड उस द्वीप में हैं उसके चारोंदिशामें मदिराका समुद्र भराहै चौथा कुशद्वीप यहां कुशका वृक्ष आठलाख योजन ऊंचा होकर उसकी छाया उतने घेरेमें पड़ती है इसलिये उसका नाम कुशद्वीप हुआ उसके चारोंओर घीका समुद्र भराहै उसवृक्षके नीचे कुण्ड व तालाब ऐसे बने हैं कि जिनमें स्नान करने व जल पीनेसे भूख व प्यास सब छूट जाती है व जो बूढ़ा व रोगी मनुष्य उसमें स्नान करे तो रोग उसका छूटकर हृष्टपुष्ट होजावे व सकत नामादिक सातों खण्ड उस द्वीप में हैं पांचवां क्रौंचद्वीप जिसमें क्रौंच नाम पर्वत सोलह योजन ऊँचाहै इसलिये उसका नाम क्रौंचद्वीप हुआ उस पहाड़पर गरुड़जी बैठकर वहांसे सब द्वीपोंको देखके बहुत मग्न होते हैं व उसके चारोंओर दूधका समुद्र भराहै व व्यास नामादिक सातखण्ड उस द्वीपमें हैं छठवां शाकद्वीप वहां शाकका वृक्ष बत्तीसलाख योजन ऊंचा होकर उतने घेरेमें

उसकी छाया पड़ती है व चौगिर्द उसद्वीपके मट्ठेका समुद्र होकर देव द्विज नामादिक सात खण्ड उस द्वीपमें हैं सिद्ध व तपस्वीलोग उस वृक्षके नीचे बैठकर हरिभजन करते हैं व उस वृक्षका गिराहुआ पत्ता खानेसे उनका पेट भरा रहकर भूख व प्यास नहीं लगती सातवां पुष्करद्वीप वहां एक वृक्ष कमलका चौंसठलाख योजन ऊंचा व उतने घेरेमें उसकी छाया रहकर वहां केसरिकी सुगन्ध आती है उसके चारों दिशामें मीठे पानीका समुद्र रहकर उस वृक्षके नीचे मानसरोवर तालाबहै वहांपर हंसपक्षी रहकर मोती चुगतेहैं व क्रमरात आदिक सातखण्ड उस द्वीप में हैं हे परीक्षित राजा प्रिय-व्रतने इन सातों द्वीपोंका राज्य झूठा समझकर छोड़ दिया व हरिभजन करके मुक्ति पाई॥

इक्कीसवां अध्याय।

शुकदेवजी को राजा परीक्षितसे विस्तार आकाश व सूर्यादिक का कहना॥

शुकदेवजी बोले कि हे राजा जितना विस्तार सातों द्वीपोंका हमने तुमसे कहा उतना आकाशभी लम्बा व चौड़ा है जिसतरह चनेकी दोदाल ऊपर व नीचे होती हैं उसीतरह आकाश व पृथ्वीको समझना चाहिये व सूर्य निकलनेसे तीनोंलोकमें प्रकाश होकर छः महीने सूर्य उत्तरायण व छः महीने दक्षिणायन रहते हैं व सुमेरु पर्वतसे होकर तीन मार्ग सूर्यके रथ जानेवास्ते बने हैं उत्तरायणमें ऊंचे रास्तेपर होकर रथ उनका जानेसे प्रकाश जगत्में अधिक होता है व दक्षिणायन में नीचे मार्गसे होकर जाने व तारागणोंके ओर परनेसे तेज उनका कम होजाता है व मकरसे लेकर मिथुन तक सूर्य उत्तरायण व कर्कसे लेकर धनकी संक्रांति पर्यंत दक्षिणा-यन रहते हैं उत्तरायण सूर्यमें दिन बढ़कर राति घटती है व दक्षिणायनमें दिन छोटा होकर रात्रि बढ़ती है व सूर्य एकराशि पर महीनाभर रहते हैं व एकदिन रातिमें नौकरोड़ लाख योजन सूर्यका रथ सुमेरुपर्वतके चारोंदिशा में फिरताहै व सुमेरुके पूर्व इन्द्रपुरी व दक्षिण यमपुरी व पश्चिम वरुणपुरी व उत्तर कुबेरपुरी है व सूर्य अपने निकलने के स्थानसे उसी के सम्मुख अस्त होते हैं व एक पहिया उनके रथ का चलकर दूसरे पहियाकी धुरी

सुमेरुपर्वतपर ध्रुवलोकसे दबी है व सूर्यका रथ छब्बीस लाख योजनके विस्तारमें होकर सात घोड़े एक ओर व एक घोड़ा दूसरी ओर जोता रहता है व यक्षलोग उस रथको पीछेसे ढकेलते हैं व रस्सीकी जगहपर सांपोंसे धुरी आदिक उस रथकी बांधी रहकर अरुण सारथी हांकताहै व बालखिल्यादिक साठिहजार ऋषीश्वर जिनके शरीर अंगूठेके प्रमाण हैं उस रथके आगे सूर्यके ओर मुँह किये स्तुति करतेहुये पिछले पांव दौड़े चले जाते हैं ॥

बाईसवां अध्याय।

शुकदेवजीका चन्द्रमा व मंगलादिक ग्रहोंका हाल राजा परीक्षित से कहना ॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर पूछा हे मुनिनाथ आपने कहा कि सूर्यका रथ सुमेरुपर्वत व ध्रुवलोकके चारोंओर फिरताहै व चन्द्रमा व दूसरे ग्रहोंका हाल नहीं कहा सो उसको भी दया करके बतलाइये शुकदेव जी बोले कि हे राजन् चन्द्रमाका रथ ग्यारह लाख योजन लम्बा व चौड़ा सूर्यके रथसे लाख योजन ऊंचे रहकर जितना रथ सूर्यका एक महीनेमें फिरताहै उतना चन्द्रमा अपने रथपर अढ़ाई दिनमें चलते हैं व चन्द्रमाके रथसे लाखयोजन ऊँचे मंगलका रथ व उससे लाखयोजन ऊंचे बुधका रथ और उनसे लाखयोजन ऊपर बृहस्पतिका रथ व उससे लाखयोजन ऊंचे शुक्रका रथ व उससे लाख योजन ऊपर शनैश्चरका रथ व उससे लाख योजन ऊंचे राहुका रथ सत्रहलाख योजनके विस्तार में रहकर सब रथोंकी धुरी ध्रुवलोकमें लगी रहती हैं व राहुका रथ चन्द्रमा व सूर्यके बराबर आने से ग्रहण लगता है व सूर्यका रथ सुमेरुपर्वतपर कहीं कहीं रुकजाने से तीसरे वर्ष एक महीना मलमास अधिक होकर संक्रांति बराबर रहती है पांच प्रकारके वर्ष होते हैं एक संक्रांति की गिन्तीसे सूर्यका वर्ष दूसरा शुक्लपक्ष की द्वितियासे चन्द्रमाका वर्ष तीसरा चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे संवत्का वर्ष चौथा नक्षत्रोंकी गिन्तीसे पांचवां बृहस्पतिकी गतिसे जो दूसरी राशि पर बदल जाते हैं समझना चाहिये व सूर्य क्षत्री व बृहस्पति व चन्द्रमा ब्राह्मण व मंगल वैश्य व बुध शूद्रवर्ण व राहु म्लेच्छके वास्ते शुभकारक व अच्छे होते हैं व शुक्र जैसे स्थानमें पड़ते हैं वैसा फल चारों वर्णको देकर किसी

वर्णके साथ मित्रता व शत्रुता नहीं रखते व शनैश्चर व राहु केतु चारों वर्णोंको दुःख देते हैं ॥

तेईसवां अध्याय ।

शुकदेवजीका ध्रुवलोक की स्तुति परीक्षित से कहना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् सुमेरु पर्वतसे तेरह लाख योजन ऊंचा ध्रुवलोक होकर वहां पर सदा ध्रुवजी सप्तऋषियों समेत सुख व आनन्दसे रहते हैं वशिष्ठ १ भृगु २ कश्यप ३ अंगिरा ४ अगस्त्य ५ अत्रि ६ पुलह ७ यह सात ऋषीश्वर तारारूपसे दिन रात ध्रुवजीकी परिक्रमा लेकर इसतरह नहीं हिलते कि जिसतरह तेल निकालते समय बैल चारों ओर घूमताहै व कोल्हू नहीं हिलता व ध्रुवलोकके नीचे कालचक्र फिरकर अश्विनी आदिक सत्ताईस नक्षत्र ध्रुवलोकके आस पास विना आश्रय हवाके सहारेपर इसतरह चलते हैं कि जिसतरह मेघ व बादल आकाशमें पवनके अनुसार चलता है इस वास्ते ध्रुवलोकको सूइसके समान होनेसे शिशुमारचक्र भी कहते हैं जिसतरह बैठते समय सूइस कुम्हारके चाक समान होजाता है वही रूप ध्रुवलोकका समझना चाहिये किसवास्ते कि चौदह नक्षत्र दहिने व चौदह नक्षत्र उसके बायें ओर होकर उस चाकके घूमनेके वक्त वह सब उसीके आश्रयसे घूमते हैं उसकी पूंछमें प्रजापति व अग्नि व इन्द्र व धर्म व पूंछकी जड़में धाता विधाता व कमर में सप्तऋषीश्वर ऊपरके ओठमें अगस्त्यजी व नीचेके ओठमें यमराज व राहु मंगल व मूत्रस्थानमें शनैश्चर व कांधेपर बृहस्पति व आंखों में सूर्य व हृदयमें परमेश्वर व मनमें चन्द्रमा व नाभिमें शुक्र व दोनों छातीमें अश्विनीकुमार व श्वासमें बुध व गलेमें राहु व केतु व सब तारागण बदन के रोम रोम में होकर वह शिशुमारचक्र नारायणजीका स्वरूप है इसलिये सब देवता व ब्रह्माण्डको उसी रूपमें समझना चाहिये जो कोई प्रातः व संध्याकालमें यह कथा पढ़कर ध्यान इस रूपका करै उसके सब पाप छूट कर अशुभ ग्रहका फल न होगा ॥

चौबीसवां अध्याय ।

चौदहों लोकका वर्णन करना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित ऐसा भी किसी पुराणमें लिखाहै कि सूर्य से दशहजार योजन नीचे राहुका रथ रहकर जब उसके सम्मुख सूर्य व चन्द्रमा का रथ आजाता है तब ग्रहण लगकर सूर्य व चन्द्रमाको अतिभय प्राप्त होता है जिसकी कथा विस्तारपूर्वक अष्टमस्कन्धमें आवेगी पर सुदर्शन चक्रकी रक्षासे राहु कुछ उनका करने नहीं सक्ता उसके बारहयोजन नीचे सिद्ध व चारण व विद्याधर आदिक देवतोंके रहनेका स्थान होकर उसके बारहलाख योजन नीचे यक्ष व राक्षस व पिशाचलोग रहते हैं उन के सौ योजन नीचे पृथ्वी मर्त्यलोककी है व हंस व बाज व गिद्ध आदिक बड़े उड़नेवाले पक्षी बारहयोजनसे अधिक जानेकी सामर्थ्य नहीं रखते व सातों लोक ऊपरका सात खण्डके घरसमान होकर सात लोक नीचे का उसीके तुल्य समझना चाहिये व (नीचेके सातोंलोकोंके नाम) अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ पाताल ७ होकर सातोंलोक नीचेके दश दश हजार योजन विस्तारसे हैं (ऊपरके सातों लोकोंके नाम) भूर्लोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ महर्लोक ४ जनलोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ होकर जितना सुख भोजन वस्त्र व भोगादिक का वहां रहताहै उससे अधिक नीचेके लोकोंमें समझना चाहिये अतल लोकमें मयनाम दैत्य रहकर माया व इन्द्रजालकी विद्या बहुत जानता है दैत्यलोग वह विद्या उससे पढ़कर किसीको कुछ माल नहीं समझते व उस लोक के रहनेवाले सब दैत्य व दानव अपनी अपनी स्त्रियोंसमेत अमृत पीकर आनन्दपूर्वक भोग व विलास करते हैं अमृत पीनेमें उनको मरने व बूढ़े होनेका डर नहीं रहता व अच्छी अच्छी औषधी खानेसे कुछ रोग उनको नहीं होता व उनकी आयुर्दायकी कुछ अवधि नहीं है जब अधिक दैत्य उत्पन्न होनेसे वहां जगह नहीं रहती तब हरिइच्छासे सुदर्शन चक्र वहां जाकर कुछ दैत्योंको मारडालता है तब वह समाने योग्य बचकर आनन्दपूर्वक वहां रहते हैं उसके नीचे वितललोकमें मयदानवका

बेटा असुर बलवान् जिसने छानबे माया इन्द्रजालकी बनाई हैं रहताहै व भानमती आदिक उसी मन्त्रको सीखनेसे एक साइतिमें वृक्ष फलसमेत लगाकर दिखला देती हैं यह सब इन्द्रजालकी विद्या समझना चाहिये और वक्लेने जमुहाई असुर बलवान् के मुखसे पुंश्चली अतिसुंदर स्त्रियां निकलकर तीनों लोकमें फिरती हैं व इच्छापूर्वक एक पुरुषको उठालेजाकर उसे औषधीके कुण्डमें डाल देती हैं जब वह कुंडमें स्नान करनेसे रूपवान् होकर उसे दशहजार हाथीका बल व कामदेवमें बड़ी सामर्थ्य हो जाती है तब वह पिछली अवस्था भूलने उपरान्त अपनेको बड़ा बलवान् व भोगी ईश्वरके समान समझकर उन तीनों पुंश्चलियों से भोग व विलास करता है व उसी वितललोकमें हाटकेश्वर महादेव रहते हैं जिनका वीर्य अग्निने मुँहसे खाकर गुदाके रास्ते बाहर निकाल दिया था उसीसे बहुत अच्छा सोना उत्पन्न हुआ जिस सुवर्णका भूषण देवतोंकी स्त्रियां पहिनती हैं व मर्त्यलोकका सोना उसकी बराबरी नहीं करसक्ता उसके नीचे तीसरे सुतललोकमें राजा बलि दैत्य विरोचनका बेटा राज्य करता है जिस बलिको वामन भगवान्ने इन्द्रादिक देवतोंके कल्याणके वास्ते वहां भेज दिया था सो वह अपने गुरु व कुल परिवारसमेत वहां रहकर आठों पहर परमेश्वरका दर्शन पाने से अपना जन्म सुफल जानताहै देखो राजा बलि ने शुक्राचार्य गुरुके वर्जने परभी तीनपग पृथ्वी वामन भगवान्को दान दिया इसी कारण नारायणजी त्रिलोकीनाथ आठोंपहर उसके द्वार पर गदा लिये बने रहते हैं व सुतललोक में वैकुण्ठके समान सुख रहताहै व उसी तीनपग पृथ्वीदानके प्रतापसे राजा बलि अगिले मन्वन्तरमें इन्द्रपुरीका राज्य पावेगा दान देना ऐसा अच्छा होता है उसके नीचे चौथे तलातललोकमें त्रिपुर बली दानव महादेवजीका परम भक्त रहकर वहां राज्य करताहै व शिवजीकी कृपासे उसको कुछ मरनेका डर नहीं रहता उसके नीचे पांचवें महातललोक में कद्रू व तक्षक व कालीय आदिक बड़े बड़े सर्प अपने कुटुम्ब समेत जिनके अनेक शिर व फन हैं रहकर वहांका राज्य करते हैं वहलोग मृत्युका भय न रखकर गरुड़जी से डरा करते हैं

उसकेनीचे छठवें रसातललोकमें विराट्कुल दानव अपने परिवारसमेत रह-
कर आनन्दपूर्वक वहांका राज्य करताहै उसके नीचे सातवें पाताललोक में
वासुकि आदिक बहुत बड़े बड़े नाग रहकर शेषजी हजार मस्तकवाले अति
तेजवान् वहां रहते हैं कि जिनके एक मस्तकपर पृथ्वी सरसोंके समान रक्खी
रहकर हजारों नागकन्या महासुन्दरी दिन रात उनकी सेवा करतीहैं व शेषजी
आठोंपहर परमेश्वरका गुण हजार मुख व दो हजार जिह्वासे गाते हैं तिसपर
भी उनके भेद व आदि व अन्तको नहीं पहुँचते व शेषजीके अंगपर एक शय्या
अतिसुन्दर सांगोपांग रक्खी है उसपर चतुर्भुजीरूप भगवान् जगत्को सुख
देनेवाले तीस हजार योजनके शरीरसे लक्ष्मीसमेत शयन करते हैं व नीचेके
सातों लोकमें सूर्य व चन्द्रमाका प्रकाश न जाकर वहांपर ऐसे मणि व रत्ना-
दिक हैं कि जिनके तेजसे दिन रात उजियाला बना रहताहै और वहां सुद-
र्शन चक्रकी तड़पसे स्त्रियोंका गर्भपात होजाता है इसलिये वहांके लोग
अधिक न होकर देवतोंके समान सुख भोगनेसे बूढ़े व दुर्बल नहीं होते॥

पच्चीसवां अध्याय।

शेषनागकी महिमा वर्णन करना॥

शुकदेवमुनिने कहा शेषनागजीभी ग्यारहों रुद्रोंमें संकर्षणनाम एक रुद्र
हैं महाप्रलयमें उनके मुँहसे अग्नि निकलकर तीनों लोकको जला देतीहै व
चौदहों भुवन उनके एक मस्तकपर रक्खे रहकर इतना बोझ उनको कुछ नहीं
मालूम देता व नित्य देवता व नागोंकी हजारों कन्या आनकर उनकी पूजा
में बनी रहती हैं तिसपर शेषजीको कामदेवकी चेष्टा नहीं होती वह केवल
संसारके कल्याणके वास्ते काम क्रोध मोह लोभ मन व इन्द्री आदिकको
अपने अधीन रखकर उनके वश नहीं होते व बड़े बड़े योगी व मुनि उनके
चरणोंका ध्यान व स्मरण आठों पहर किया करते हैं व शेषजी दिन रात सि-
वाय कहने कथा व कीर्तन वैकुण्ठनाथके दूसरा काम नहीं करते जो कोई
मुक्तिकी चाहना रखता हो वह शेष भगवान्का ध्यान व स्मरण करके उनकी
शरण पकड़े तो संसारमें वांछित फल पाकर भवसागर पार उतरजावे शेषजी
से अधिक किसी दूसरे देवताकी पूजा परमेश्वर के मिलनेके वास्ते उत्तम

नहीं होती और कहां तक उनकी स्तुति तुमसे कहैं कि जिनका कुछ अन्त नहीं है हे राजा जहांतक इस जीवके रहने व जानेकी गति है सो वर्णन किया सिवाय इसके और कहीं जीव जाने व जन्म लेने नहीं सक्ता ॥

छब्बीसवां अध्याय।

शुकदेवजीका हाल व नरकोंका नाम वर्णन करना ॥

राजा परीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले हे शुकदेवस्वामी आपने कई जगह कहा है कि पाप करनेवाले नरकमें जाकर बड़ा दुःख पाते हैं और शुभकर्म करनेवाला स्वर्गादिकका सुख भोगता है और चौदहों लोककी कथा कहनेपर भी आपने किसी जगह नरकका वर्णन नहीं किया इससे मुझे नरकका नाम केवल भय दिखाने वास्ते मालूम होता है मुझसे इतनी अवस्थामें यही एक अपराध हुआ कि जो ब्राह्मणके गलेमें मरा हुआ सर्प डाल दिया इस पापके बदले मुझे नरक जानेका डर लगाहै सो नरकका कोई भिन्न लोक पृथ्वी व पानीपर होकर उसके नाममें कुछ भेद तो नहीं है उसे वर्णन कीजिये यह वचन सुनतेही शुकदेवजी हँसकर बोले कि हे राजा तू नरकमें जाने योग्य नहीं है इसलिये वहां का हाल तुझसे नहीं बतलाया अब कहते हैं सुनो नरक सुमेरु पर्वतसे निन्नानबे योजन दक्षिण धरतीसे नीचे पानीके ऊपरहै सो धृतपृष्ठ आदिक चारों वर्णके दिव्य पितर उस नरकका दुःख देखकर अपने कुल व परिवारवालोंको मना करनेवास्ते उस के द्वारेपर बने रहते हैं कि जिसमें कोई हमारे परिवारका ऐसा कर्म न करे कि उसे नरकमें आना पड़े व यमराज सूर्य के पुत्र यमपुरीके राजाहैं व तामिश्र रौरव नामादिक अट्ठाईस नरक होकर उनके दक्षिण संयमनी नाम एक पुरीभी नरकके समानहै सो धर्मराज जिन्हें यमराजभी कहते हैं मरने उपरान्त पापीको नरक व धर्मात्माको स्वर्गमें भेज देते हैं व अपने कर्मानुसार वहां जीव दुःख व सुख भोगकर फिर संसारमें जन्म पाताहै व अति कष्ट पानेपर भी नरकमें प्राण नहीं निकलता और जौन पाप करनेसे जिस नरकमें वहलोग जाते हैं उसका हाल सुनो जो मनुष्य दूसरे का धन व स्त्री छलबलसे लेलेता है उसे यमदूत बांधके मुद्गरोंसे मारते हुये तामिश्रनाम

नरक महाअन्धकारमें लेजाकर डाल देते हैं वहां उसे कुछ भोजन व पानी नहीं मिलता जो कोई किसी स्त्रीके पति या रक्षकको किसी बहानेसे बाहर भेजकर उसके साथ भोग करताहै उसकी आंखें फूटजाती हैं व मरनेके उपरान्त उसको यमदूत मुद्गरोंसे मारतेहुये लेजाकर उसका अंग अंग काटिके अन्धतामिश्र नरकमें डाल देते हैं जो मनुष्य अधर्मकी कमाईसे अपना परिवार पालन करके अभिमानसे कहता है कि मैं इनको भोजन देता हूं उसको यमदूत रौरव नरकमें डालकर सांपोंसे कटवाते हैं जो कोई किसी मनुष्य व पशु व पक्षीको अपने भोजनके वास्ते या शत्रुतासे मारताहै यमदूत उसको महारौरव नरकमें डालदेते हैं तब वह बड़े बड़े सर्पोंके काटनेसे महादुःख पाताहै जो मनुष्य केवल अपने तनसे प्रीति रखके उसको सुख देनेवास्ते अपना धर्म व कर्म छोड़कर ब्राह्मण व वेद व शास्त्रको नहीं मानता उसे यमदूत कालसूत्र नरकमें जहां सड़ा हुआ मांस भरा है डालकर उसका मांस बड़े बड़े गिद्धोंको खिलाते हैं जो कोई हरिण व पक्षी आदिकको बांधकर या पिंजड़ेमें बन्द रखताहै उसे यमदूत कुम्भीपाक नरक पीब भरे हुये में डालकर गरम गरम तेल उसके बदनपर छिड़कतेहैं जो मनुष्य अपने माता व पिताको दुर्वचन कहकर भोजन व वस्त्रका दुःख देताहै उसको यमदूत लेजाकर एक पटपर जहां दशहजार योजन लम्बी पृथ्वी तांबेके समान पीटीहुई अग्नि ऐसी जलती है नंगे पैर दौड़ाते हैं जब वह पैर जलने व क्षुधा तृषासे वहां अतिदुःख पाकर कुछ अन्न व जल नहीं पाता तब अचेत होकर गिरपड़ता है जितने रोम पशुके अंगपर रहते हैं उतने हजार वर्ष उस जलती हुई धरतीपर तड़फता है जो लोग शास्त्रमार्ग छोड़कर अपने मन या किसीके देखनेसे कुराह चलते हैं उनको यमदूत बीच असिपत्र नरकके जहां वृक्षों में तलवार ऐसे पत्ते हैं लेजाकर जब उन दरख्तोंपर चढ़ाके गिरा देतेहैं तब शरीर कटजानेसे उन्हें बड़ा दुःख प्राप्त होताहै जो राजा किसीको बिना अपराध दण्ड करके ब्राह्मणको फांसी देताहै उसे यमदूत शूकरमुख नरकमें लेजाकर तेलके समान पेरते हैं तब वह जीव कोल्हूमें पेरने व शूकर ऐसे जानवरोंके काटनेसे बड़ा दुःख पाताहै जो कोई अपनी

कमाईमें देवता व पितरका भाग न देकर केवल अपना पेट व परिवार पालता है उसको यमदूत अन्धकूप नरक में डाल देते हैं वहांपर वह सांप व बिच्छू व जोंक आदिक के काटनेसे बहुत दुःखी होताहै जो कोई उत्तम पदार्थ अकेले खाकर अपने साथी व देखनेवालोंको नहीं देता उसे यमदूत कृमिभोजन नरक हजारयोजनके कुण्डमें जो कीड़ोंसे भराहै डालकर वही कीड़े खिलाते हैं जो कोई किसी ब्राह्मणका धन व खेत चुराकर या बरजोरीसे लेलेताहै उसको यमदूत संदंशननरक में जहां बिच्छू भरे हैं डालकर लोहेका गज आगसे लाल करके उसका अंग दागदेते हैं जो कोई परस्त्रीसे भोग करता है या जो स्त्री अपना पति छोड़कर दूसरे पुरुषके पास जातीहै यमदूत उस के तनुमें जलती हुई लोहेकी मूर्ति लपटाकर नानाप्रकारके दुःख देते हैं जो कोई नीच ऊँच वर्णका विचार न रखकर परस्त्रीगमन करता उसे यमदूत वज्रकंटक व शाल्मलि नरकमें डालकर बड़े बड़े कांटे लोहेके उसके शरीर में चुभाते हैं जो मनुष्य राजा या कामदार होकर किसीका धर्म जबरदस्ती बिगाड़ देताहै उसे यमदूत वैतरणी नदीमें जहां लोहू व पीव व मल मूत्रादिक भराहै डालकर भोजनकी जगह वही खिलातेहैं तब पापी जीव अपने कर्मोंको समझकर वहां बहुत पछिताताहै जो कोई दासी पालकर उससे भोग करताहै उसे यमदूत लालाभक्ष नरकमें डालकर मुँहकी लार व पीव पिलाते हैं जो कोई राजा या बड़ा आदमी अहेरादिक खेलकर पक्षीको मारताहै उसे यमदूत दशहजार योजन ऊँचे लेजाकर वहांसे पत्थरकी चट्टान पर गिरा देतेहैं जो मनुष्य देवी आदिक देवतोंका नाम करके अपने भोजन वास्ते जीवहिंसा करते हैं उन्हें यमदूत विश्वासन नरकमें डालकर मुद्गरोंसे इसतरह कूटते हैं कि जिसतरह उखलीमें धान कूटे जाते हैं व आग लगानेवाले मनुष्यको यमदूत सारमेयादन नरकमें डालकर हजारों कुत्तों से कटाते हैं जो कोई किसी से द्रव्य लेकर झूठा न्याय करे या मिथ्या साखी भरता है उसे यमदूत दशहजार योजन ऊँचे ले जाकर शिर नीचे व पैर ऊपर करके रक्तभरे हुये विश्वासन नरकमें गिराते हैं व उसको सूखी पृथ्वीपर जल दिखलाई देकर पानी भरा हुआ सूखा दृष्टिपड़ताहै जो ब्राह्मण व क्षत्रिय

व वैश्य वेदका अधिकारी होकर देवतोंके बहाने या अपने सुखवास्ते मद्य पीता है उसे यमदूत क्षारकर्दम नरक लोनामिट्टी भरे हुयेमें डालकर गलाया हुआ शीशा पिलाते हैं जो ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य विना प्रसाद यज्ञके पशुका मांस खाता है वही जीव गिद्धरूप होकर उसका मांस खाते हैं व उन्हें सिवाय रक्तके पानी पीनेवास्ते नहीं मिलता जो कोई साधु व सन्त या कंगाल या अपने सेवकको विना अपराध दुर्वचन कहकर सताता है व अन्धे मनुष्यको पूछनेसे भी राह नहीं बतलाता उसे यमदूत रक्षोगण भोजन नरकमें जहां राक्षस काटते हैं डालकर पांच पांच सात सात मुँहके सांपोंसे कटाते हैं जो मनुष्य मंगन व वैरागीको भिक्षा मांगते समय टेढ़ी आंख दिखलाकर झिड़क देताहै उसे यमदूत शूलप्रोत नरकमें डालकर बड़े बड़े गिद्ध व सांपोंसे कटाते हैं व कुछ भोजन व पानी नहीं देते इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे राजन् जो मनुष्य वेद व शास्त्रसे विमुख होकर थोड़ा या बहुत कुकर्म करताहै व परमेश्वरकी कथा व स्मरणमें प्रीति नहीं रखता वह अवश्य नरकमें जाकर अपने कर्मानुसार दुःख पाताहै मनुष्यका तनु वेद व शास्त्रसे विपरीत चलनेवास्ते नहीं होता अपना शरीर दूसरी योनिमें भी पाल सक्ताहै इसलिये मनुष्यको सन्त व महात्मा की सेवा व संगति करके ज्ञान सीखना चाहिये व ज्ञानी होनेपर सब जीवों में परमेश्वरका चमत्कार एकसा समझकर दूसरे जीवोंकी रक्षा व पर उपकार करना उचितहै जिसमें परलोक बनै अज्ञान मनुष्य जबतक कथा व पुराण न सुनै व अनजानमें उससे नरक भोगने योग्य कोई पाप भी होजावे व ज्ञानप्राप्त होनेपर फिर वह कुकर्म करना छोड़कर परमेश्वरका भजन व स्मरण करै तो नारायण दीनदयालु सब अपराध उसका क्षमाकरके उसे देवलोक व वैकुण्ठ का सुख देते हैं व पहिले पाप करने के कारण वह नरकमें नहीं जाता व हे राजा तुम मत डरो इस भागवतकथा सुननेके प्रताप से तुम्हारा अपराध ब्राह्मणके गलेमें सांप डालनेका छूट गया अब तुम्हें मुक्ति प्राप्त होकर वैकुण्ठका सुख मिलेगा और जो कोई इस स्कन्धकी कथा सच्चे मन सुनै व पढ़ै वह सब पापोंसे छूटकर भवसागरपार उतर जायगा॥

छठवां स्कन्ध ॥

अजामिल ब्राह्मण अधर्मीका मुक्त होना व देवतों व दैत्योंकी उत्पत्ति ॥

दो० लिखौं बड़ाई नामकी जाको वार न पार । जिहि सुमिरेसे होतहैं कोटिन जिव निस्तार ॥

पहिला अध्याय ।

अजामिल ब्राह्मणकी कथा ॥

इतनी कथा सुनकर राजा परीक्षित शुकदेवजीसे बोले कि महाराज आपने दूसरे स्कन्ध में मनुष्यके वैकुंठ जाने के वास्ते प्रवृत्तिमार्ग व निवृत्तिमार्ग दो राह बतलाकर यह कहाथा कि परमहंस व योगीलोग निवृत्तिमार्ग से सूर्यमंडलमें होकर पहिले ब्रह्मपुरी को जाते हैं कुछ दिन वहां ब्रह्माके साथ रहकर उनकी मुक्ति होती है और जो जीव मायाके गुणोंसे वारंवार जन्म व मरणको प्राप्त होतेहैं वह जीव प्रवृत्तिमार्गसे पहिले चन्द्रमण्डलमें जाकर अपने कर्मानुसार स्वर्गादिकका सुख भोगने उपरान्त फिर संसारमें जन्म लेते हैं व आपने विस्तारपूर्वक कथा चौदहोंलोक व स्वर्ग व नरक धर्म व अधर्म करने वालोंकी गति जो पापके बदले नरकका दुःख व पुण्यके प्रतापसे स्वर्गका सुख भोगते हैं सुनाया व सब वृत्तान्त राजा स्वायंभुवमनु व प्रियव्रत व उत्तान-पाद व देवहूती व ध्रुवआदिक उनकी संतान व सातोंद्वीप व नवोंखण्ड व सातोंसमुद्र व विस्तारपृथ्वी व भूमण्डल आदिकका वर्णन किया अब मैं ऐसा उपाय सुना चाहताहूं कि जिस धर्म करनेसे पापी व अधर्मी लोगभी पवित्र होकर स्वर्गका सुख पावैं सो आप दया करके बतलाइये जिसमें कोई बीच नरकके न जावै यह वचन सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजा जो लोग मनसा वाचा कर्मणासे जानबूझकर पाप करैंगे उन्हें उस अधर्मके बदले उन नरकोंका दुःख जो मैंने कहाहै अवश्य भोगना पड़ैगा इसवास्ते मनुष्य को चाहिये कि यह तनु पाकर हरसाइत अपनी मुक्ति होनेका उपाय करता रहै जो कोई इस तनुमें इसका शोच नहीं करता वह जन्म अपना अकार्थ

खोकर पीछे बहुत पछताताहै मनुष्यसे कोई पाप छोटा या बड़ा किसी प्रकार का होजावै तो उसका प्रायश्चित्त थोड़ा या बहुत शास्त्रानुसार कर डालै जिस तरह रोग विना औषध खाये नहीं जाता उसी तरह पापभी विना प्रायश्चित्त किये नहीं छूटता यह बात सुनकर परीक्षितने विनय किया महाराज जानबूझकर पाप करनेवाला जो एक वेर प्रायश्चित्त करनेसे शुद्ध होकर फिर अधर्म करैगा तो उसका उद्धार प्रायश्चित्त करनेसे किसतरह होसक्ताहै यह वचन सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजा पाप व पुण्य दोनों एकएक कर्म होकर शुभकर्म करनेसे पाप छूटताहै पर फिर अधर्म न करै जिसतरह रोग छूटने वास्ते औषध खाकर संयम नहीं करता या थोड़े दिन बराबर करके फिर खट्टा मीठा खाने लगताहै तो खाना और नहीं खाना कुपथ्य पथ्यका दोनों बराबर होकर रोग उसका नहीं छूटता और अधिक होजाताहै जिस तरह हाथी नहाने उपरांत फिर धूरि उठाकर अपने मस्तकपर डाललेवै तो उसके स्नान करनेसे क्या गुण होगा व जैसा उद्धार ज्ञान प्राप्त होनेसे होताहै वैसा शुभकर्म करनेसे जल्दी पाप नहीं छूटता पर संयम करनेवाले का रोग नहीं बढ़ता इसलिये शुभकर्म करना उत्तम होकर कुछ दिन बीते उसका कल्याण होजाताहै सिवाय इसके पापोंको नाश करनेवास्ते ब्रह्मचर्य व व्रत रहकर सुधर्म व तप करना व इन्द्रियोंको अपने वश व मनको संसारी मायामोहसे विरक्त रखकर सच बोलना व मनसा वाचा कर्मणासे किसीका बुरा न चहकर वित्तसमान परउपकार करना व किसी जीवको दुःख न देना चाहिये यह सब उपाय करनेसे भी पाप कटजाते हैं पर जैसा परमेश्वरके चरणोंमें भक्ति व प्रीति रखने व उनका नाम जपने व कीर्तन सुनने से अनेक जन्मके पाप छूटकर मनुष्य तुरन्त मुक्ति पाताहै वैसा तपआदिक करनेसे शुद्ध नहीं होता जिसतरह प्रातःकाल कुहिरेका अंधेरा सूर्यदेवता के प्रकाश करनेसे नाश होजाताहै उसीतरह वासुदेव व श्रीकृष्णजीका नाम लेनेसे बड़ेबड़े पाप अनेक जन्मके न मालूम कहां भाग जाते हैं जैसे पृथ्वीपर वृक्ष व फल आदिक उपजते हैं वैसे मनुष्य परमेश्वरका भजन व भक्ति करने से मनवांछित फल पाताहै इसलिये मनुष्य को संसार में

परमेश्वरकी प्रीति उत्पन्न होनेवास्ते सिवाय सत्संग व सेवा करने साधु व महात्माके दूसरा मार्ग अच्छा नहीं होता व उनकी संगति व टहल करने से बहुत शीघ्र मन मनुष्यका संसारसे विरक्त होकर मुक्ति पाता है व जो लोग परमेश्वरसे विमुखहैं वह प्रायश्चित्त करनेसे भी किसीतरह शुद्ध नहीं होते जिसतरह मदिराका घड़ा गंगाजलके धोनेसे पवित्र नहीं होसक्ता जिसने एक वेरभी अपना चित्त श्रीकृष्णजीके चरणोंमें लगाया वह स्वप्न में भी यमराज व यमदूतों को नहीं देखता जानो वह सब प्रायश्चित्त कर चुका सो हम एक कथा माहात्म्य नारायण नामकी जिसमें विष्णु भगवान् व यमदूतोंका संवादहै कहते हैं सुनो पिछले युगमें अजामिलनाम ब्राह्मण रहनेवाला कन्नौजका एक दासीसे प्रीति रखकर चोरी व ठगी व जुवा व फांसीका उद्यम करता था उस दासीसे उसके दश बेटे उत्पन्न हुये सो उसको अपने छोटे पुत्र नारायणनामसे बड़ा प्रेमथा इसलिये खाते पीते उठते बैठते चलते फिरते उसकी याद मनमें रखता था जब इसी चलन व व्यवहारमें अट्ठासी वर्ष की अवस्था हुई व उसके मरनेका समय आया तब तीन यमदूत भयानकरूप मुद्गर व फांसी लिये हुये उसका प्राण लेनेवास्ते आये व गलेमें फांसी डालकर खींचने लगे तब अजामिलने उनका भयानक रूप देखतेही घबड़ाकर जैसे नारायणनाम अपने पुत्रको चिल्लाकर पुकारा वैसे अन्तसमय नारायण नाम लेनेके प्रतापसे विष्णु भगवान्की आज्ञानुसार चार दूत श्यामरंग चतुर्भुज शंख व चक्र व गदा व पद्म धारण किये बड़े तेजवान् सुवर्णकी छड़ी लिये हुये उसके पास पहुँचकर यमदूतों से बोले तुम हमारे सामने इसको दुःख देकर धर्मराजके यहां नहीं लेजा सक्के यह बात सुनकर यमदूतोंने कहा सुनो मित्र इस ब्राह्मणने बहुत पाप इस संसार में किये हैं सो अधर्मी व पापोंका दण्ड धर्मराज सदा करते हैं इसलिये हम उनकी आज्ञानुसार इसे नरकमें लेजावेंगे तुम्हें नारायणजीके दूत होकर ऐसे अधर्मीके पास आना व हमको लेजानेसे मना करना उचित नहीं है यह वचन सुनकर विष्णुके दूत बोले तुमलोग धर्मराजके दूत होनेपरभी यह नहीं जानते कि किस मनुष्यको सुख देना चाहिये व

कौन मनुष्य दुःख देने योग्यहै इसलिये धर्म व अधर्मका वृत्तान्त व रूप हमें बतलाओ कि किस पाप करनेवालेको दंड देना चाहिये व कौन कर्म करनेसे मनुष्य सुख देने योग्य होताहै यमदूत बोले जो वचन वेद व शास्त्र में शुभकर्म लिखाहै उसे धर्म और जो अशुभ लिखाहै उसको अधर्म समझना चाहिये किसवास्ते कि वेद व शास्त्रका वचन नारायणजीकी आज्ञानुसार होकर पाप व पुण्य करनेके साक्षी सूर्य व चन्द्रमा व अग्नि व दिन रात्रि व दिशा व वायु आदिक देवताहैं उन्हीं लोगोंसे धर्मका हाल बूझकर मनुष्यको दुःख व सुख दिया जाताहै ऐसा कोई जीव संसारमें नहीं होगा जिसे चलते फिरते उठते बैठते पाप व पुण्य न होवै सो यह अजामिल ब्राह्मण के घर जन्म लेकर विद्या पढ़ने उपरांत शास्त्रानुसार गुरु व माता व पिता व विष्णु भगवान् व अग्नि व सूर्यदेवताकी भक्ति रखकर अपने कर्म व धर्मसे रहता था एक दिन पिताकी आज्ञानुसार जंगलसे लकड़ी व पत्ता व पुष्पादिक तोड़कर लिये चला आता था राहमें क्या देखा कि एक भिल्ल अपनी स्नेही वेश्याको साथ लिये दोनों मतवाले होकर आपसमें हँसते व कलोल करते हैं इस ब्राह्मणको देखतेही वह वेश्या मतवाली कामदेवके वश होकर उसके गलेमें लपट गई तब वह ब्राह्मणभी कामासक्त होकर उससे भोग करने उपरांत उसको अपने घर ले आया व अपनी माता व पिता व बाला स्त्री व गुरु व धर्म व कर्मको छोड़ दिया व उसके साथ रहकर मांस व मदिरा खाना पीना आरम्भ किया सो थोड़े दिनों में सब धन अपने पिताका फूंककर फिर चोरी व ठगी व जुवा व फांसीका उद्यम करके अपना कुटुम्ब पालने लगा इसवास्ते हम ऐसे महापापी को यमराजके यहांसे लेने आये हैं जिसमें अपने कुकर्मोंका वहां दण्ड पाकर शुद्ध होजावै ॥

दूसरा अध्याय।

विष्णुके दूतोंको परमेश्वर के नाम की महिमा वर्णन करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् यमदूतों से अजामिलके अधर्म करनेका हाल सुनकर विष्णु भगवान्के दूत बोले कि धर्मराजके यहां बड़ा अन्धेरहै

कुछ न्याय नहीं होता किसवास्ते कि उनके दूत विना अपराध साधु-लोगों कोभी दुःखदेते हैं जब धर्मराज सब पाप व पुण्यका हाल जाननेपर भी ऐसा अन्याय करैंगे तो संसारी काम जिसमें कोई अपने धर्म व अधर्म का हाल नहीं जानता किसतरह चलैगा जिसके विश्वासपर कोई गोदमें शिर रखकर सोवै वही उसका शिर काटले या माता व पिता अपने पुत्र को विषदे तो रक्षा उसकी कौन करसक्काहै तुम लोगोंने नारायणनामकी महिमा नहीं सुनी जो मनुष्य जानकर या धोखे व भय व हँसीसे भी परमेश्वरका नाम लेताहै उसके सब बड़े बड़े पाप सोना चुराने व गो ब्राह्मण व तपस्वी व माता पिताके मारडालने व गुरुकी स्त्रीसे भोग करने व मदिरा पीने व गुरुको दुर्वचन कहनेके अन्तसमय परमेश्वरका नाम लेनेसे छूट जाते हैं सो इस ब्राह्मण ने मरते समय नाम नारायणका अपने मुखसे निकाला कदाचित् उसके पुत्रका नाम था तो क्या सन्देहहै उसी नाम लेनेके प्रतापसे अनेक जन्मका पाप छूटकर वह ब्राह्मण वैकुण्ठ जाने योग्य हुआ उस नाम लेने व पाप छूटने उपरांत फिर इसने कोई अपराध नहीं किया जो दण्ड देने योग्य हो व नारायण नाम लेनेसे अधिक कोई प्रायश्चित्त पापोंका छुड़ानेवाला संसारमें नहीं होता कदाचित् किसी यज्ञ व तप व होमआदिकमें भूल हो जावै तो राम व कृष्णका नाम लेनेसे वह शुद्ध होजाताहै कोई तीर्थ व व्रत व नियम व तप व जप व यज्ञ व होम व दान व धर्म रामनाम लेनेके तुल्य नहीं होसक्का जो मनुष्य नारायण नाम चार अक्षर मुखसे निकालताहै उस को परमेश्वर अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों पदार्थ देते हैं बड़े बड़े योगी व मुनीश्वरों ने परमेश्वरके नामका माहात्म्य सबसे श्रेष्ठ लिखा है उनका नाम लेने व कथा सुनने व भक्ति करनेसे अनेक जन्मके पाप छूटजाते हैं जिस तरह संसारमें दश बीस मनुष्य एक जगह बैठे हों व उनमेंसे किसीका नाम लेकर कोई पुकारै तो वह मनुष्य उसकी ओर आंख उठाकर अवश्य देखताहै उसीतरह परमेश्वर त्रिलोकीनाथने अजामिलके नारायण नाम पुकारनेपर आंख उठाकर देखा था जिसतरह मनुष्यका रोग दवा जानकर व अजानमें दोनों तरह खानेसे छूटजाता है व एक चिनगारी आगिकी बड़े ढेर रुई व

लकड़ीको क्षणभरमें जलादेती है उसीतरह एकबेर नारायणनाम लेनेसे अनेक पाप रुई व लकड़ीके समान जलकर छूटजाते हैं व परमेश्वरने वेदमें ऐसा कहा है कि जो कोई मेरा नाम लेवे उसे मैं कृतार्थ करदेताहूं जिसतरह वनमें व्याघ्रकी बोली सुनकर हरिण भाग जाते हैं उसीतरह रामनाम मुखसे निकलतेही पाप मारे डरके शरीरसे निकलकर भाग जाते हैं जब विष्णु भगवान्‌के दूतोंने ऐसी ऐसी बातें कहकर यमदूतोंको वहांसे निकाल दिया व चारभुजावाले दूतोंका दर्शन करनेसे अजामिलको ज्ञान व वैराग्य उत्पन्न हुआ तब वह महिमा नाम परमेश्वरकी सुनने व समझने उपरान्त बहुत पछताकर कहने लगा कि देखो मैंने ब्राह्मणके घर जन्म पाकर अपना कर्म व धर्म छोड़दिया व दासीके वश रहकर आयुर्दा अपनी कुकर्ममें बिताई इन साधुओंके आनेसे मेरा प्राण बचा नहीं तो यमदूत न मालूम मुझको कैसा दुःख देते जिस नारायणनाम लेनेके प्रतापसे मेरा कल्याण हुआ अब आयुर्बलपर्यन्त परमेश्वरका नाम जपकर अपना जन्म सुधारूंगा जब अजामिल इसतरह पछताने लगा व पार्षद विष्णु भगवान्‌के वहांसे अन्तर्धान होगये तब अजामिल ने उसीसमय चित्त अपना संसारी मायामोह से विरक्त करदिया व पार्षदोंके दर्शन करने के प्रतापसे एक वर्षकी आयुर्दा उसको और मिली सो वह हरद्वारमें जाकर अपने सच्चे मनसे परमेश्वरका ध्यान व स्मरण करने लगा जब उसको वहां एक वर्ष ध्यान व भक्ति करते हुये बीता तब वैकुण्ठसे अतिउत्तम विमान उसके पास आनकर उतरा सो वह उस विमानपर चढ़कर गाता बजाता वैकुण्ठको चलागया व चतुर्भुजी रूप होकर वहां रहने लगा यह हाल देवता व ऋषीश्वर देखकर उसकी बड़ाई करनेलगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् देखो ऐसे महापापीने बेटाके धोखे नारायणजीका नाम मुखसे लिया था सो ऐसी पदवी को पहुँचा जो कोई संसारसे विरक्त होकर हरिभजन करताहै उसकी गति क्या कहना चाहिये उनका भक्त नरकमें नहीं जाता॥

तीसरा अध्याय।

यमदूतोंको जाकर अजामिलका वृत्तान्त धर्मराजसे कहना॥

परीक्षितने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजीसे पूंछा कि महाराज यमदूतों ने अजामिलके पाससे जाकर यमराजसे क्या कहा व धर्मराजने क्या उत्तर दिया सो दया करके बतलाइये शुकदेवजी बोले हे राजन् यमदूतोंने धर्मराज से जाकर कहा कि संसारमें अनेक मनुष्य न्याय करनेवाले हमें दिखलाई देते हैं जब बहुत लोग न्याय करेंगे तब आपसके झगड़े से कोई पापीको वैकुण्ठमें व कोई धर्मात्माको बीच नरकके भेज देंगे हमलोग आजतक केवल आपको यह न्याय करनेवाला जानकर तुम्हारी आज्ञासे सब जीवों को ले आते थे व कर्मानुसार उनको फल मिलता था आज हमलोग आप की आज्ञासे अजामिल पापीको लेनेगये थे जैसे उसने हमें देखकर नारायण नाम अपने पुत्रको पुकारा वैसे चार पार्षद चतुर्भुजीरूपने आनकर उस पापीको हमसे छीनलिया इस लिये कहे देते हैं कि इसका यत्न कीजिये जिसमें हमारा अपमान न हो यह वचन सुनतेही यमराजने ब्रह्मरूप भगवान् का ध्यान करनेके उपरांत दूतोंसे कहा तुमलोग नारायण नामकी महिमा नहीं जानते उस नामका माहात्म्य निर्ऋती व इन्द्रादिक अठारह देवता व भृगुआदिक ऋषीश्वर अच्छी तरह न जानकर हम व ब्रह्मा व राजा जनक व मनु व भीष्मपितामह व प्रह्लाद व राजा बलि व शुकदेव व नारद व महादेव व कपिलदेवजी व सनकादिक चारोंभाई निज भक्त उनके अच्छी-तरह जानते हैं देखो नामका वह प्रताप है कि जो अजामिल ऐसा महा-पापी अपने बेटेके धोखे नारायणनाम लेकर तुम्हारी फांसीसे छूटगया सो हम व ब्रह्मा व महादेव व इन्द्रादिक सब देवता परमेश्वरकी सेवामें रहकर उनकी आज्ञानुसार सब काम करते हैं व भगवान्की इच्छासे उत्पत्ति व पालन व नाश तीनों लोकका एकक्षणमें होकर उनकी माया में सारा जगत् बँधा रहता है व उनके दूत सब जगह रहकर भक्तोंकी रक्षा करते हैं पर किसी देवता व मनुष्यको दिखलाई नहीं देते जिन्होंने अजामिलको तुमसे छुड़ादिया तुम इस बातमें कुछ खेद न मानकर अपना बड़ा भाग्य

समझो जो उनका दर्शन तुमने पाया उनके दर्शन देवता व ऋषीश्वरोंको जल्दी नहीं मिलते यमदूतोंने यह माहात्म्य नारायणजीके नामका सुन कर धर्मराजसे विनय किया जब परमेश्वर नाम लेनेसे ऐसा फल होताहै तब वेदशास्त्रमें पाप छुड़ानेके वास्ते तपआदिक कठिन कठिन प्रायश्चित्त क्यों लिखे हैं धर्मराज बोले जो मनुष्य नाम की महिमा नहीं जानता उस के वास्ते सब तप व यज्ञआदिक लिखा है जिसमें मन उसका चित्तभक्ति व पूजा परमेश्वरके लगे नहीं तो नारायणनाम लेनेसे उत्तम दूसरा कोई कर्म नहीं है यज्ञ व तप आदिक करनेमें एक पाप छूटकर परमेश्वरका नाम लेने से अनेक प्रकारके पाप नाश होते हैं भगवान्ने कलियुगवासियोंको केवल भय दिखलानेके वास्ते यज्ञ व तप आदिक कठिन कठिन प्राय-श्चित्त बना दिये हैं जिसमें संसारी जीव उस डरसे अधर्म न करैं नहीं तो मनुष्य निर्भय होकर ऐसा विचारता कि पहिले संसारी सुख भोगने के वास्ते पाप करलेवैं पीछेसे परमेश्वरका नाम लेकर शुद्ध होजावेंगे यह वचन सुनकर यमदूत बोले कि महाराज ऐसाहै तो आप हमको क्यों भे-जते हैं तब धर्मराजने कहा हम उस मनुष्यको लेनेके वास्ते तुमको आज्ञा देते हैं कि जिसने जन्मभर परमेश्वरका नाम न लेकर कभी लीला व कथा उनकी नहीं सुनी हो उसे महापापी समझना चाहिये व जो नारायणजी की शरणमें जाता है उससे पाप न होकर परमेश्वर उसको अशुभ कर्मोंसे बचाये रखते हैं सो तुम लोग आजसे ऐसे पापीको विचारकर लाया करो जो परमेश्वरसे विमुख हो व जो लोग हरिभजनमें लीन रहकर शालग्राम का चरणामृत नित्य लेते हैं उनके पास कभी मत जाना वह लोग कुन्दन के समान शुद्ध रहकर मुक्ति पाते हैं ऐसा कहकर धर्मराजने परमेश्वरका ध्यान करके अपने दूतोंका अपराध उनसे क्षमा कराया व यमदूतोंने यह बात सुनते ही भय मानकर आपसमें ऐसी सम्मति किया कि आजसे कभी उस मनुष्यके पास जो हरिचर्चा रखताहै जाना न चाहिये इतनी कथा सुनकर परीक्षितने विनय किया हे मुनिनाथ अजामिल महापापी के मुख से मरते समय नारायणजीका नाम किसतरह निकला शुकदेवजी बोले

हे राजन् एक दिन चार साधु तीर्थयात्रा करते हुये अजामिलके गांवमें सन्ध्यासमय पहुँचे व उन्होंने अपने टिकनेके वास्ते किसी हरिभक्तका स्थान लोगोंसे पूंछा तब उस गांववालोंने ठट्ठेसे अजामिल अधर्मीका घर बतला दिया जब साधुलोग वहां गये तब अजामिलकी वेश्याने उन साधुओंको अच्छा गृह टिकनेके वास्ते देकर धुनीपानी से उनकी सेवा की प्रातःकाल चलते समय साधुओं ने उस वेश्यासे जो गर्भवती थी कहा तेरे पुत्र हो तो नारायण नाम रखियो उनकी आज्ञासे अजामिलने उस बेटेका नाम नारायण रक्खा सो उन साधुओंकी कृपासे मरतेबेर अजामिलके मुखसे नारायण का नाम निकला था सन्त व महात्मा की सेवा वृथा नहीं जाती जो लोग साधु व वैष्णवकी संगति व टहल करते हैं उनको कोई दुःख नहीं देसक्ता यह सुनकर परीक्षित अति प्रसन्न हुये और शुकदेवजीने कहा कि हे राजन् हमने यह कथा अगस्त्यमुनिसे सुनी थी सो तुम्हें सुनाई परीक्षितने हाथ जोड़कर विनय किया आपने बड़ी कृपा व दया करके नारायणनामका माहात्म्य मुझे सुनाया॥

चौथा अध्याय।

दक्ष का प्रचेतों के यहां उत्पन्न होना॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर विनय किया महाराज आपने देवता व दैत्यादिककी उत्पत्ति संक्षेपमें कही थी अब उसे विस्तारपूर्वक सुना चाहताहूं यह सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजन् प्राचीनबर्हिषके दशपुत्र प्रचेतानाम समुद्रके किनारे जाकर महादेवजीके ज्ञानोपदेशसे परमेश्वरका तप व ध्यान करनेलगे व उनके जानेके उपरान्त नारदमुनिकी आज्ञानुसार प्राचीनबर्हिष राजगद्दी सूनी छोड़कर वनमें हरिभजन करने चला गया तब उसका बहुतसा देश दूसरे राजोंने दबालिया व अनेक नगर व गांव उजड़ कर जंगल होगये जब प्रचेतोंको हरिभजनके प्रतापसे परमेश्वर का दर्शन मिलचुका तब एकदिन नारदजी रमतेहुये जाकर वृत्तान्त उजड़ने नगर व उपजने जंगल व दबालेने दूसरे राजोंका उनसे कहदिया वह बात सुनतेही क्रोधसे ऐसी अग्नि समान श्वासा उनके नाकसे निकली

कि जिसकी ज्वालासे वन जलने लगा यह दशा देखतेही चन्द्रमाने नि-
म्लोचा नाम कन्याको जो विश्वामित्र और मेनका अप्सराके संयोगसे
हुई थी लाकर प्रचेतोंसे उसका विवाह करदिया जैसे प्रचेतोंने आंख उठा-
कर उस कन्याको देखा वैसे हरिइच्छासे उसके गर्भरहकर दशवें महीने
दक्षनाम पुत्र उत्पन्न हुआ तब प्रचेतोंने अपने पिता का नगर व देश बसाने
और सृष्टि बढ़ानेकी उसे आज्ञादी सो दक्षने मानसी सृष्टिसे बहुत मनुष्य
उत्पन्न किये वहलोग स्त्री व पुरुषके भोग न करनेसे अधिक नहीं होते थे
इसलिये दक्षने सृष्टि बढ़ानेके वास्ते मन्दराचल पर्वत पर जाकर कुछ काल
परमेश्वरका तप व ध्यान करके इसतरह हंसगुह्यस्तोत्रसे स्तुति उनकी की
कि मैं उस पुरुषको नमस्कार करताहूं जिसका वीर्य कभी नहीं घटता व
मायाके गुणोंमें वह वीर्य पड़कर जड़को चैतन्य करताहै व इस जीवात्मा
से जो स्नेह रखकर सब इन्द्रियोंका हाल जानताहै व इन्द्रियां उसका भेद
नहीं जान सकीं उस परब्रह्म परमेश्वरको दण्डवत् करताहूं कि जिसकी
कृपासे शरीर व प्राण व मन व बुद्धि यह सब अपना अपना कर्म करके
ज्ञानीलोग जिनके चरणोंका ध्यान आठों प्रहर हृदयमें रखकर उन्हें प्रणाम
करते हैं उस अविनाशी पुरुषका चरण धरताहूं व यह जगत् जिससे उत्पन्न
हुआ व उसीका रूप होकर जिसके आश्रय पर रहताहै और जो इस संसार से
पृथक् रहकर अपनी मायाका उसमें प्रवेश रखताहै उस ईश्वरको दण्डवत्
करताहूं जब दक्षने ऐसी स्तुति करके नारायणजीको प्रसन्न किया तब वह
सांवलीसूरत गरुड़पर बैठ चतुर्भुजीमूर्ति शंख व चक्र व गदा व पद्म लिये
तापहारिणी चितवनि तेजवान् पीताम्बर धारण किये किरीट कुण्डल मुकुट
साजे वैजयन्ती माला व वनमाला विराजे कौस्तुभमणि पहने नारदजी
आदिक भक्त व सोलह पार्षद संग लिये मन्द मन्द मुसुकराते दक्ष के सन्मुख
प्रकट हुये ऐसा सुन्दररूप देखतेही जब दक्षने अतिहुलाससे उनको साष्टांग
दण्डवत्किया तब भगवान्जी उसे अपनाभक्तजानकर बोले हे प्रचेताके पुत्र
तू अपनी तपस्या से सिद्ध हुआ और हम तेरी स्तुति करनेसे बहुत प्रसन्न
हुये व ब्रह्मा व महादेव आदिक जो मेरे भक्त हैं उनको मैं अपना मित्र

जानताहूं और तप मेरा हृदय व यज्ञ मेरा शरीर व धर्म मेरा आत्मा व देवता मेरे प्राण होकर इस जगत्का उत्पन्न करनेवाला मैं हूं व ब्रह्माने भी तपके प्रतापसे सृष्टिकी रचना कियाहै सो तुमभी असिक्नीनाम कन्या पंचजन्य प्रजापतिसे विवाह करनेके उपरान्त मैथुन करके संसार उत्पन्न करो मानसी सृष्टिसे विरक्त होकर तप करनेके वास्ते चले जातेहैं उनको किसी से प्रीति नहीं रहती स्त्रीपुरुषके भोग करनेसे मोहनी सृष्टि बहुत उत्पन्न होकर संसारी मायामें इसतरह लपटे रहैंगे कि जिसतरह गुड़में चिउँटा लपटा रहताहै व आजसे सब जीव मैथुन करनेसे जगत्में उत्पन्न होकर अपने अपने कर्मोंका फल भोग करैंगे ऐसा कहकर नारायणजी वहांसे अन्तर्धान होगये व दक्ष उस कन्यासे विवाह करके घर आनकर राज्यकार्य करनेलगे॥

पांचवां अध्याय।

उसी स्त्रीसे दशहजार पुत्रों का उत्पन्न होना ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् दक्षकी उसी स्त्रीसे मैथुन करके जब दशहजार पुत्र हुये तब दक्षने सबका नाम हर्यश्व रखकर उनसे कहा कि पहले तुम लोग परमेश्वरका तप करके पीछे से संतान उत्पन्न करो यह वचन सुनतेही वह दशोंहजार बालक पश्चिम दिशामें नारायणनाम तीर्थ पर जाकर जब परमेश्वरका तप व ध्यान करनेलगे तब नारदमुनिने दयाकी राह उन लोगोंको भवसागर पार उतारना विचारकर उनसे कहा कि तुम लोग जानते हो उत्पन्न करनेवाला सब जगत्का एक पुरुषहै उसके समान दूसरा नहीं होसक्ता व सब जीवों में उसीके तेजका प्रकाश रहताहै जिसकी शक्ति से सब जीवोंको चलने व फिरनेकी सामर्थ्य होती है व महाप्रलय होने पर भी केवल वही अविनाशी पुरुष स्थिर रहताहै सो तुम लोग संसार किस तरह उत्पन्न करोगे अभी तुम बालक हो पृथ्वीका अन्त व एक पुरुष उस स्थानको जहांका गया हुआ कोई नहीं फिरता तुमने नहीं देखा व भूरवन्ती स्त्रीको जो नित्य नये पुरुषकी इच्छा करती है तुम न जान कर व्यभिचारिणी स्त्रीके पतिकोभी नहीं पहिंचानते व एक नदीमें दोनों तरफ धारा चलती है उसे भी तुम नहीं जानते पचीस मंत्रका गृह बना हुआ व एक

हंसी जो है उसे भी तुमने नहीं देखा व चोखी धारके चक्रको भी तुम नहीं जानते हो इसलिये इन सब बातोंको विचारकर संसारको उत्पन्न करना व अपने पिताकी आज्ञा भी रखना जब नारदजी यह ज्ञान पहेली के समान बतलाकर चले गये तब बालकों ने आपस में बैठकर अपने ज्ञानसे उन सब बातोंका यह अर्थ विचारा कि पृथ्वी जीव होकर उसका अन्त मोक्षहै जबतक उसको हम न जान लेवें तबतक सृष्टिकी वृद्धि क्या करेंगे और वह पुरुष नारायणजी को समझना चाहिये उनकी कृपा व दर्शन हुये विना हम क्या करसक्ते हैं और वह स्थान वैकुण्ठ है जहांका गया हुआ फिर संसारमें जन्म नहीं लेता विना उसके देखे हमसे क्या होसकेगा और भूरवन्ती स्त्री को बुद्धि समझो उसको विना एकचित्त किये हम संसारी जीव कैसे उत्पन्न करेंगे और व्यभिचारिणी स्त्रीका पुरुष जीवहै सो वह संसारी मायामें फँस गया है उसको अलग किये विना संसार हमसे नहीं उत्पन्न होता व दोनों तरफ बहनेवाली नदी मायाको समझना चाहिये देखो जगत् में एक मरकर दूसरा जन्म लेता है व एक घरमें ढोलको बजाकर हर्षसे लोग गाते हैं व दूसरे के यहां शोक व विलाप होता है जबतक उस मायाका भेद हमें न मालूम हो तबतक संसार हमसे नहीं उत्पन्न होसक्ता व पचीस तत्त्वों का बना हुआ यह शरीर होकर इसमें परमेश्वरका प्रकाश है विना देखे व जाने उस ईश्वरके हमारा किया कुछ न होगा व हंस वेदशास्त्रको समझो जिसका वर्णन बंध व मोक्ष का बनानेवालाहै विना उसके जाने हम जगत् की उत्पत्ति नहीं करसक्ते व चोखी धारका चक्र मृत्युको जानना चाहिये कि जो सब जगत्का नाशकर्त्ता है विना उसके जाने हमें सृष्टि बढ़ानेकी सामर्थ्य न होगी इन सब बातोंको विचारकर उन्होंने संसारका उत्पन्न करना उचित नहीं जाना जब ज्ञान प्राप्त होने से अन्तःकरण उनका शुद्ध होगया तब वह लोग फिरकर अपने घर नहीं आये परमहंस होकर जीवन्मुक्त होगये जब बहुत दिन बीतने परभी वह फिरकर नहीं आये तब दक्ष ने जाना कि नारदमुनि ने ज्ञान सिखलाकर उन्हें विरक्त कर दिया ऐसा विचारकर दक्षने हजार बेटा और उसी स्त्री से उत्पन्न करके सबलनाम रखे

कर उनसे कहा कि पहिले परमेश्वरका तप करके पीछे से संतान उत्पन्न करो जब वह लोग भी उसी जगह जहां उनके भाई गये थे जाकर पहुँचे तब नारदमुनि ने वहां आकर उनको ऐसा ज्ञान बतलाया कि वह भी संसारीमाया छोड़कर परमहंस होगये यह हाल सुनतेही दक्षने क्रोधवान् होकर कहा कि देखो नारदमुनि ने हमारे ग्यारहहजार बेटों को ज्ञान सिखलाकर विरक्त कर दिया संसार में मनुष्य किसतरह अधिक होवैंगे दक्ष इसी क्रोधमें बैठेथे कि नारदजी उसी समय वीणा बजाते हुये वहां आये उनको देखतेही दक्षने विना दण्डवत् किये कहा हे नारदमुनि तुमने हमारे अज्ञान लड़कों को बहकाकर विरक्त कर दिया मुझे बहकाओ तो मैं जानों कि तुम बड़े ज्ञानी हो परमेश्वर के पार्षदों में होकर तुमको हमारे साथ शत्रुता करना उचित नहीं है तुम केवल यती व सत्यवादी होकर धर्म वेद व शास्त्र को नहीं जानते मनुष्य को देवऋण पितृऋण ऋषिऋण तीनों ऋणसे अवश्य उऋण होना चाहिये सो मेरे बालक अभीतक इन तीनों ऋणोंसे नहीं छूटे तुमने किस वास्ते उनको ज्ञान सिखलाकर विरक्त कर दिया क्या तुम स्त्री व पुत्रादिका गृहस्थाश्रम में रहना अच्छा नहीं जानते जो गृहस्थ शास्त्रानुसार अपना कर्म व धर्म रक्खै वह निस्संदेह योगी व परमहंसोंकी गतिको पहुँचताहै तुमने वेद व शास्त्रका धर्म निषिद्ध जाना इस लिये मैं परमेश्वर से चाहता हूं कि तुम दोघड़ी से अधिक एक जगह न रहो कदाचित् ठहरो तो तुम्हारा शिर दूखै ऐसा शाप दक्षने नारद को दिया व नारदजी को भी शाप देनेकी सामर्थ्य थी पर उन्होंने दक्षको हरिभक्त जानकर उन्हें कुछ शाप नहीं दिया व आनन्दपूर्वक वहां से चले गये तब दक्षने ब्रह्मासे जाकर कहा कि नारदमुनि तुम्हारा पुत्र हमारे बेटों को ज्ञान सिखलाकर विरक्त कर देता है संसारीसृष्टि किसतरह बढ़ैगी यह सुनकर ब्रह्माजी बोले कि तुम कन्या उत्पन्न करो उन्हें घरमें रहने से नारद ज्ञान उपदेश नहीं कर सकैंगे व स्त्री को जल्दी ज्ञान नहीं प्राप्त होता वह अपने अर्थको अच्छा जानती हैं उनसे संसारीजीव अधिक होंगे॥

छठवां अध्याय।

दक्षका उसी स्त्री से साठि कन्या उत्पन्न करना ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् फिर दक्षने ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार उसी असिक्नी नाम स्त्री से साठि कन्या उत्पन्न किया उनमें दश कन्या धर्म व सत्ताइस चन्द्रमा व सत्रह कश्यप व दो भूत व दो अंगिराऋषीश्वर व दो कृशाश्व प्रजापति को विवाह दिया उन्हीं सब कन्याओं से बहुत जीव देवता व मनुष्य व दैत्य व दानव व पशु व पक्षी उत्पन्न हुये सो हम उन सब कन्या व उनकी सन्तान का नाम संक्षेप से कहते हैं सुनो धर्मकी दशों स्त्री का नाम भानु १ व लम्बा २ व ककुब ३ व जामी ४ व विश्वा ५ व साध्या ६ व मृत्युवती ७ व वसू ८ व मुहूर्ता ९ व संकल्पा १० था भानुका बेटा ऋषभ उनसे इन्द्रसेन लम्बाका पुत्र विद्युत उनसे मेघ ककुबका बेटा संकट उनसे विकट होकर किकीटसे किलेके देवता उत्पन्न हुये जामीका पुत्र स्वर्ग उनसे नन्दप जन्मा विश्वाका बेटा विश्वदेवा साध्याका पुत्र साध्यगण उनसे अर्थसिद्ध हुआ मृत्युवती का बेटा इन्द्र व उपेंद्र होकर वसूके अष्टवसु देवता जन्मे मुहूर्ता से मुहूर्तों के देवता संकल्पाका पुत्र संकल्प उनसे कामनाम बेटा हुआ स्वरूपानाम भूतकी एक स्त्रीसे गरुड़ व रुद्र उत्पन्न हुये उसमें ग्यारह रुद्र मुख्य हैं रैवत १ अज २ भव ३ भीम ४ वाम ५ उग्र ६ वृषाकपि ७ अजैकपाद ८ अहिर्बुध्न्य ९ बहुरूप १० महान् ११ अंगिराकी सुधानाम स्त्री से पितर लोग उत्पन्न हुये कृशाश्व प्रजापति की अरुचिनाम स्त्रीसे धूम्रकेश पुत्र हुआ और चन्द्रमाकी स्त्रियोंका नाम अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद, रेवती, सत्ताइसों नक्षत्र होकर दक्षके शाप देनेसे चन्द्रमाके क्षयीका रोग होगया था इसलिये उनसे सन्तान नहीं हुई इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा कि दक्षने चन्द्रमा अपने दामाद को किस वास्ते शाप देकर अपनी बेटियोंके वंशकी हानि की सो कहिये शुकदेवजी

बोले एकसमय कृत्तिकाने अपने पितासे जाकर कहा कि चन्द्रमा हमें नहीं चाहकर रोहिणी मेरी बहिनसे बहुत प्रीति रखते हैं यह बात सुनतेही दक्ष ने चन्द्रमाको शाप दिया तुझे क्षयीका रोग होजावे सो उसी कारण चन्द्रमा हजार वर्ष तक समुद्रमें पड़े रहे जब चन्द्रमाने दक्षकी बहुत स्तुति की तब दक्षने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया कि यह रोग तेरा छूटकर पन्द्रहरोज कला तुम्हारी घटै व पन्द्रहरोज बढ़ै इसी कारण चन्द्रमाकी कला घटती बढ़ती है व कश्यपकी विनता स्त्रीसे गरुड़ व अरुण व कद्रूसे सर्पादिक व पतङ्गीसे पक्षीआदि व यामिनीसे टिड्डीआदिक व नेर्मीसे जलचर व सरमासे कुत्ते आदि पांच नखके जीव व ताम्रासे गृद्ध व बाजआदिक व क्रोधवसासे बिच्छूआदि व मनीसे अप्सरा व इलासे वृक्षादिक व सुरसासे राक्षसआदि व अरिष्टासे गन्धर्व आदिक व काष्ठासे घोड़ेआदि सब खुरवाले पशु व दनु से दानवआदि व दितिसे हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष दैत्य व अदितिसे सूर्य व त्वष्टादिक देवता उत्पन्न हुये व सिवाय इन सत्रह स्त्रियोंके दो स्त्री उनकी पुलोमा व कालिकानाम थीं सो पुलोमासे पुलोमादि व राक्षस व कालिकासे काले काले दैत्योंने जन्म पाया व विप्रचित्ती दानवके सिंहिका स्त्रीसे राहुनाम दैत्य उत्पन्न हुआ जिस राहुका शिर नारायणजीने सुदर्शन चक्रसे काट डाला था व सूर्यके श्राद्धदेव व धर्मराज दोपुत्र व यमुनानाम कन्या सवर्णा स्त्रीसे जो विश्वकर्माकी बेटीथी उत्पन्न हुये जब वही सवर्णा अपनी छाया मायारूपी छोड़कर चलीगई व उसने जाकर घोड़ीका स्वरूप धारण किया तब सूर्यको उस छायाके गर्भसे शनैश्चर व सावर्णिमनु दो पुत्र और उत्पन्न हुये व जब सूर्यने सवर्णा अपनी स्त्री घोड़ीरूपसे जाकर भोग किया तब उससे अश्विनीकुमार हुये व त्वष्टादेवताका विवाह जयानाम कन्या दैत्यकी बेटीसे हुआ था सो उससे एककन्या व विश्वरूपनाम बेटा हुआ जिस विश्वरूपको इन्द्रादिक देवतोंने बृहस्पतिजीके रूठिजाने से अपना पुरोहित बनाया था इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा कि महाराज सवर्णा अपनी छाया छोड़कर किसतरह चली गई थी इसका वृत्तान्त कहिये शुकदेवजी बोले हे राजन् सवर्णा सूर्यदेवता अपने पतिका तेज नहीं सह

सकी थी इसलिये उसने एकस्त्री अपने समान मंत्रके प्रतापसे बनाकर उस से कहा मैं अपने पिता के घर जातीहूं तू मेरे बदले यहां रहाकर पर यह भेद मेरे पतिसे मत कहना उसने उत्तर दिया कि जब तक मेरे शिरके बाल पकड़कर सूर्यदेवता मुझे न मारेंगे तब तक मैं नहीं कहूंगी जब सवर्णा यह बात मायारूपी स्त्रीको समझाकर अपने पिताके यहां गई तब विश्वकर्मा ने क्रोध करके कहा तू विना आज्ञा अपने स्वामीके चली आई है इसलिये तुझे न रक्खूंगा जब सवर्णाने यह वचन अपने पिताका सुना तब निराश होकर कुरुक्षेत्रमें चली गई और घोड़ी रूप बनकर वहां रहने लगी व मायारूपी सवर्णाके शनैश्चर व सावर्णिनाम दो पुत्र उत्पन्न हुये सो वह अपने वेटोंसे अधिक प्रेम रखकर धर्मराज व श्राद्धदेव सवर्णाके वेटों को कम चाहती थी सो छायाने धर्मराजको एकदिन लातसे मारा यह बात सुनकर जब सूर्य देवताने छायाके शिरके बाल पकड़के उसे मारा तब उस ने सब वृत्तांत सवर्णाके चले जानेका कहदिया यह समाचार सुनकर जब सूर्य देवता सवर्णाको ढूंढ़ते हुये कुरुक्षेत्रमें पहुँचे और घोड़ा बनकर उससे भोग करना चाहा तब सवर्णा घोड़ीरूपने मुख अपना फेर लिया इसलिये उनका वीर्य घोड़ीके गर्दन व नाक पर गिरा सो गर्दनके वालसे अश्विनी व नाकसे कुमार उत्पन्न हुये हे राजा इसतरह पर सवर्णा अपनी छाया छोड़ गई थी यह कथा सुनकर परीक्षित बहुत प्रसन्न हुये॥

सातवां अध्याय।

बृहस्पति पुरोहितका इन्द्रादि देवतोंसे रूठना॥

परीक्षितने इतनी कथा सुनकर विनय किया हे मुनिनाथ इन्द्रने बृहस्पति जी पुरोहितको किसवास्ते उदास करके विश्वरूपको अपना पुरोहित बनाया था उसे विस्तारपूर्वक कहिये शुकदेवजी बोले हे राजा एकदिन इन्द्र बड़े अहंकारसे राजगद्दी पर बैठा था व बहुतसे देवता व ऋषीश्वर व गन्धर्व व किन्नरआदिक उस सभामें वर्तमान थे उसी समय बृहस्पतिजी वहां आये सो राजा सदा सन्मान करके अपनी गद्दीपर बैठालता था उसदिन अभिमान से इन्द्रने उनका आदर नहीं किया इसलिये बृहस्पति रूठकर अपने

घर चलेगये तब इन्द्रने बड़ा शोच करके कहा कि देखो मुझसे बड़ी चूक हुई जो मैंने राज्य व धनके मदसे उनका निरादर किया जिनके आशीर्वाद व कृपासे मुझे यह सब सुख प्राप्त हुआ उनके क्रोध करने से यह सब नष्ट हो जायगा इसलिये उनके पास चलकर बिनती करके अपना अपराध क्षमा कराना चाहिये जिसमें मेरा कल्याणहो ऐसा विचारकर इन्द्र उसी समय उनके घर गया जब बृहस्पतिजीने अपने योगबलसे जाना कि इन्द्र यहां आते हैं तब क्रोधवश भेंट करना उचित न जानकर अन्तर्धान होगये जब इन्द्रने बृहस्पति को घरपर नहीं पाया तब वहांसे उदास होकर फिरआये जब यह समाचार दैत्योंने सुना तब वृषपर्वा दैत्योंके राजाने शुक्रजीकी आज्ञासे अपनी सेना लेके इन्द्रपुरीको घेरलिया जबलड़तेसमय देवतोंको बृहस्पतिजीके रूठजानेके कारण दैत्योंसे हार मालूम हुई तब उन्होंने ब्रह्मा जीके पास जाकर सब वृत्तान्त कहा ब्रह्मा बोले कि तुमसे यह बड़ा अपराध हुआ जो बृहस्पति अपने पुरोहितका अपमान किया तुम्हारा कल्याण इसीमें है कि त्वष्टा ब्राह्मणका विश्वरूपनाम बेटा बड़ा तपस्वी व ज्ञानी है उसे अपना पुरोहित बनाओ तो तुम्हारे वास्ते अच्छा होगा यह वचन सुनते ही इन्द्रने त्वष्टाकेपास जाकर हाथजोड़के विनयपूर्वक कहा मैं तुम्हारे पास भीख मांगने आया हूं सो आप दयालु होकर मेरे पुरोहित हूजिये व ऐसा उपाय कीजिये जिसमें हमारा राज्य बनारहै त्वष्टाने उत्तर दिया कि पुरोहित होने से तपोबल घट जाता है पर तुम बहुत बिनती करते हो इसलिये विश्वरूप मेरा बेटा पुरोहित होकर तुम्हारी सहायता करेगा सो विश्वरूपने अपने पिताकी आज्ञानुसार पुरोहित बनकर ऐसा यत्न किया कि हरिइच्छा से इन्द्र वृषपर्वाको युद्धमें जीतकर अपने इन्द्रासन पर स्थिर हुआ ॥

आठवां अध्याय।

जिस कवचके प्रतापसे इन्द्रने दैत्योंको जीताथा उसका माहात्म्य शुकदेवजीका वर्णन करना॥

परीक्षितने इतनी कथा सुनकर पूंछा हे शुकदेवस्वामी विश्वरूपकी थोड़ी कृपाकरने से इन्द्रने किसतरह दैत्योंको जीतकर राज्य अपना स्थिर रक्खा शुकदेवजी बोले हे राजन् विश्वरूपने ऐसा नारायणकवच इन्द्रको

सिखला दिया कि जिस कवचका मंत्र पढ़कर अंगपर फूंकदेने और वह कवच लिखकर भुजा पर बांधने से किसी शस्त्रका घाव नहीं लगता जिस तरह शूरवीर अपने अंगकी रक्षाके वास्ते जिरह व बख्तर पहिन लेते हैं उसी तरह कवच समझना चाहिये सो राजा इन्द्र वही मंत्र अपने शरीरपर फूंककर लड़ने के वास्ते चढ़ा था उसीके प्रतापसे दैत्योंको जीता यह सुन कर परीक्षितने विनय किया कि महाराज जिस कवचमें ऐसा गुण व प्रताप है उसे विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये शुकदेवजी बोले हे राजा जिससमय किसी मनुष्य पर कुछ भय आनकर प्राप्तहो उस समय हाथ पांव धोकर आचमन करके उत्तर मुँह बैठे व आठ अक्षरके मन्त्रसे अंगन्यास व कर-न्यास करके बारह अक्षरका मंत्र पढ़कर यों कहै जलमें मत्स्यावतारसे रक्षा करके पातालमें वामनअवतारसे रक्षकहो और जहांपर किला व जंगलहै वहां नृसिंहावतार सो रक्षा करैं मार्गमें यज्ञभगवान् रक्षा करैं विदेश व पर्वत में रामचन्द्रजी रक्षक होकर योगमार्ग से दत्तात्रेयजी रक्षा करैं देवताके अप-राधसे सनत्कुमार रक्षक होकर पूजाके विघ्नमें नारदजी सहायक होवें कु-पथ्यसे धन्वन्तरि वैद्य रक्षाकरके अज्ञानसे वेदव्यासजी व अधर्म से कलंकी भगवान् सहायता करैं व गोविंद व नारायण व बलभद्र व मधुसूदन व हृषीकेश व पद्मनाभ व गोपीनाथ व दामोदर व ईश्वर व परमेश्वर जो भगवान्के नामहैं वह आठों पहर सब अंग व इन्द्रियोंकी रक्षा करें व वैकुण्ठ-नाथका शंख व चक्र व गदा व पद्म व गरुड़जी अनेक भयसे रक्षक होवैं सो यही कवच विश्वरूपने इन्द्रको बतलाकर कहा हे इन्द्र इस नारायण-कवच धारण करनेवाले मनुष्यका सब भय छूटजाताहै यही कवच गरुड़जी पढ़कर वैकुण्ठनाथको अपने ऊपर बैठाके उड़ते हैं जिसके प्रतापसे कोई उनको जीतने नहीं सक्ता एकसमय कौशिकनाम ब्राह्मण इस कवचका अभ्यास रखनेवाला मरुदेश में मरगया सो हड्डी उसकी वहां पड़ीथीं एक दिन चित्ररथ गंधर्वका विमान उड़ता हुआ चला जाताथा जैसे विमान की छाया उस हड्डीपर पड़ी वैसे विमान उलटगया जब बालखिल्य ऋषी-श्वरके उपदेशसे उस गन्धर्वने उन हड्डियोंको सरस्वती नदीमें प्रवाह किया

तब उसका विमान फिर उड़नेलगा सो हे राजन् ऐसा नारायणकवच हमने तुम्हें सुनाया कि जो इस कवचको पढ़ाकरै उसके सामने युद्ध में कोई नहीं ठहरसक्ता ॥

नवां अध्याय ।

इन्द्रका विश्वरूप अपने पुरोहितको मारना ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् विश्वरूपके तीन मस्तक थे एक मुँहसे वह सोम-वल्लीलताका रस यज्ञमें निकालकर पीताथा व दूसरे मुखसे मदिरा पीकर तीसरे मुखसे अन्नादिक भोजन करताथा सो इन्द्रने राज्यपर बैठकर कुछदिन उपरांत विश्वरूपसे कहा मैं तुम्हारी दया से यज्ञ करना चाहताहूं जब विश्वरूप की आज्ञानुसार यज्ञ आरम्भ हुआ तब एकदिन किसी दैत्यने विश्वरूपके पास जाकर कहा कि तुम्हारी माताभी दैत्यकी कन्याहै इस कारण हमारे कल्याण वास्ते एक आहुति दैत्योंके नामपरभी यज्ञमें दियाकरते तो उत्तम होता जब विश्वरूप कहना उस दैत्यका मानकर आहुति देते समय दैत्योंका नाम भी धीरेसे लेनेलगा व इसीकारण देवतोंका तेज यज्ञकरने से नहीं बढ़ा तब इन्द्रने यह वृत्तांत जानतेही क्रोधित होकर तीनों शिर विश्वरूप के काटडाले सो मद्यपान करनेवाला भँवरा व सोमवल्ली पीनेवाला कबूतर व अन्न खाने-वाला शिर तीतरनाम पक्षी संसार में उत्पन्न हुये व विश्वरूप के मरतेही इन्द्रका स्वरूप ब्रह्महत्या के घेरलेने से बदल गया जब देवतोंके वर्षदिन पुरश्चरण करने परभी वह महापाप ब्रह्महत्याका नहीं छूटा तब इन्द्रादिक देवतों के बिनती करने से ब्रह्माजीने उस हत्याके चार टूक करके एकभाग पृथ्वीको दिया इसीकारण कहीं कहीं धरती ऊसर होती है वहां पूजा व पाठ न करना चाहिये व यह वरदान पृथ्वीको दिया जहांपर गड़हा हो कुछ दिनमें वह आपसे भरजावै दूसरा भाग वृक्षोंको देनेसे कोई कोई वृक्ष गोंद व लाही लगकर सूखजाते हैं सिवाय गुग्गुल के और सब गोंद अशुद्ध समझना चाहिये और यह आशीर्वाद दिया कि वृक्ष काटडालने परभी जड़ बनी रहने से फिर तय्यार होजावे व तीसराभाग स्त्रियोंको दिया उसी कारण स्त्री महीने महीने रजस्वला होकर पहिले दिन चाण्डालिनी दूसरे

दिन ब्रह्मघातिनी तीसरे दिन रजकी के समान रहकर चौथे दिन पवित्र होती हैं व यह वरदान उन्हें दिया कि जिसमें सदा उनका कामदेव बना रहै इसलिये गर्भवती स्त्रीकाभी मन भोगकरने वास्ते चाहता है व चौथा भाग जलको देने से पानी पर काई व फेन व बुल्ले आदिक होते हैं व यह वरदान जलको दिया कि जिस वस्तु में पानी डालदेव वह अधिक होजावे सो इन्द्र चारों जगह हत्या बटजानेसे शुद्ध होकर अपना राज्य करने चला जब त्वष्टाको विश्वरूपके मारेजानेका हाल पहुँचा तब उसने बड़ा क्रोध करके ऐसा मंत्र पढ़कर हवन किया जिसमें एकपुरुष इन्द्र का मारनेवाला उत्पन्न हो सो परमेश्वरकी इच्छानुसार सरस्वतीने उस मंत्रका अर्थ इस तरहपर उलट दिया कि इन्द्रके हाथसे वह माराजावे हवन सम्पूर्ण होने के समय अग्निकुण्डमें से एक दैत्य अतिबलवान् पर्वतके समान कालावर्ण गदा व खड्ग हाथमें लिये हुये निकला जितनी दूर एक तीर जाता है इतना शरीर उस दैत्यका नित्य बढ़ता था इसीवास्ते त्वष्टाने उसका नाम वृत्रासुर रक्खा व उसे आज्ञा दी कि इन्द्र ने तेरे भाईको मारा है सो तू जाकर अपने भाईका बदला ले जैसे यह बात त्वष्टाके मुखसे निकली वैसे वृत्रासुर ने एक क्षण में इन्द्रके पास पहुँच कर ललकारा उसका भयानक रूप देखने व ललकार सुनने से सब देवता घबड़ा गये जब वृत्रासुरने चाहा कि इन्द्रको मुँहमें डालकर निगल जाऊं तब इन्द्रादिक सब देवतोंने उसके सामने आकर अपने अपने शस्त्र उस पर चलाये जब वृत्रासुर उनके सब हथियार निगल गया तब इन्द्र देवतों समेत वहांसे भागा व बीचशरण नारायणजीकी जाकर विनय किया कि हे दीनानाथ मैं तुम्हारी शरण आयाहूं मेरा प्राण इस दैत्य के हाथसे बचाइये हम लोगों का किया कुछ नहीं होसक्ता जिस तरह श्रावण भादों में कुत्तेकी पूंछ पकड़ कर मनुष्य गंगापार नहीं जासक्ता उसीतरह हमारा भजन व स्मरण करने से कोई भवसागरपार नहीं उतरता यह स्तुति सुनतेही परमेश्वर दीनदयालु ने इन्द्रादिक देवतोंको अपना भक्त जानकर चतुर्भुजीमूर्त्तिसे सोलह पार्षद साथ लिये हुये उनको दर्शन दिया इन्द्रादिक देवतों ने वैकुण्ठनाथ को

देखतेही दण्डवत् करके विनय की कि महाराज जो यज्ञरूप आपका है उसको हम नमस्कार करते हैं व वेद व शास्त्र तुम्हारी श्वासासे उत्पन्न होनेपर भी आपका आदि व अन्त नहीं जान सके सो हम लोग नारायण वासुदेवरूपको दण्डवत् करते हैं व जो चरणकमल आपके बड़े बड़े योगी व परमहंसोंके हृदयमें आठोंपहर रहते हैं उन चरणोंको हमारी दण्डवत् अंगीकार हो हे भगवन् दीनानाथ सब देवता व मनुष्य तुम्हारे बनाये हैं वृत्रासुरके मारनेवास्ते कोई उपाय कीजिये नहीं तो वह देवता व मनुष्यादिक सब जीवोंको मार डालेगा हम लोग तुम्हारे दास होकर ऐसे दुःखी हैं वृत्रासुर के भयसे आनन्दपूर्वक निद्रा नहीं आती व अपने समय पर तुम्हारी कृपासे सब बढ़ते हैं इस समय देवतोंको बढ़ाना चाहिये सो विपरीत उसके वृत्रासुर बढ़ा है इसलिये हमें दीन व दुःखी जानकर दयालु हूजिये यह वचन सुनकर नारायणजी बोले हे इन्द्र तैंने अज्ञानतासे ब्राह्मण को जो मारा था उसी का यह सब भोगहै वृत्रासुर दैत्यके शरीर पर कोई शस्त्र नहीं लग सक्ता तुम लोग दधीचि ऋषीश्वरकी हड्डी जिसने बहुत तप कियाहै मांगकर उस हड्डीका वज्र बनाओ तो उस तपके प्रतापसे वह वज्र वृत्रासुरके अंगको काटेगा ऐसा कहकर वैकुण्ठनाथ अन्तर्धान होगये॥

दशवां अध्याय।

दधीचि ऋषीश्वरके पास इन्द्रादिक देवतों का हड्डी मांगनेके वास्ते जाना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित इन्द्र नारायणजीका वचन सुनतेही सब देवतों समेत दधीचि ऋषीश्वरके यहां गया व दण्डवत् करके विनय किया हम लोग आपके पास भिक्षा मांगने आकर अपने कल्याण के वास्ते तुम्हारे शरीरका हाड़ चाहते हैं यह बात सुनकर ऋषि बोले हे इन्द्र तुम अपने मनमें विचार करो थोड़ासा दुःख तनुपर पहुँचनेसे कैसा क्लेश होता है इसलिये तुमको अपना अंग ऐसा दूसरेका भी समझना चाहिये जिस तरह सब कोई अपना तनु प्यारा जानकर उसको सुख देने व मोटा करने के वास्ते अनेक यत्न करते हैं उसी तरह मुझे भी अपना शरीर प्यारा है इसलिये क्यों ऐसा दुःख मुझे देने आये हो इन्द्रने उत्तर दिया कि आप

यह वचन सत्य कहते हैं पर मैं नारायणजीकी आज्ञानुसार हड्डी मांगने आयाहूं जिसतरह हरा वृक्ष अपनी छाया व फल व पुष्पसे सब जीव व पशु व पक्षी आदिकको सुख देता है और किसीके डाली काटने पर भी दुःख नहीं मानता उसी तरह वैष्णव व ऋषीश्वर भी शरीर अपना केवल परोपकार वास्ते समझते हैं उनका तनु दूसरे के काम आवे तो देनेसे नहीं मुकरते जब इन्द्रने ऐसा ज्ञान कहकर बहुत बिनती की तब ऋषि बोले हे इन्द्र यह शरीर नारायणजी ने दिया है कदाचित् वह आप आनकर ऐसा कहते तो भी मैं अपनी प्रसन्नतासे न मानता पर ऐसा समझकर तुम्हारा कहना माना कि यह तनु सदा स्थिर न रहकर एक दिन अवश्य इसका नाश होगा इससे क्या उत्तम है जो तुम्हारे काम आवे सो मैं योगाभ्यास साधकर परमेश्वरके ध्यानमें बैठताहूं तुम एक गाय बुलाकर शरीर मेरा चटाओ जब सब मांस शरीरका चाटने उपरांत केवल हड्डी रह जावें तब उस हाड़को लेकर अपना मनोरथ सिद्ध करना पर मुझे तीर्थस्नान करने की अभिलाषा है तुम आज्ञा देव तो तीर्थस्नान कर आऊं तब हड्डी मेरे शरीर की लेना देवतोंने कहा हम इसी जगह सब तीर्थोंका जल ला देते हैं आप स्नान कर लीजिये ऋषीश्वरने कहा बहुत अच्छा सो देवतोंने क्षण भरमें सब तीर्थोंका जल वहां ला दिया जब वह ऋषीश्वर स्नान करने उपरान्त योगाभ्याससे प्राण अपना ब्रह्माण्डमें चढ़ाकर परमेश्वर के ध्यान में लीन हुये तब इन्द्रने एक गाय मँगाकर नोन लगाके उनका शरीर चटवाया जब उस गाय ने सब मांस चाट लिया व केवल हड्डी रहगई तब इन्द्रने वह हड्डी लेकर विश्वकर्माको शस्त्र बनाने वास्ते दिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेव जी बोले हे राजन् देखो दधीचि ऋषीश्वरको दाता समझकर राजा इन्द्र भिखारी होगया इसलिये दाताका नाम सब लोग लेकर सूम व लालची का नाम कोई नहीं लेता सो देना बहुत अच्छा होता है जब विश्वकर्माने उस हड्डीका वज्र नाम शस्त्र अतितेजवान् बना दिया तब इन्द्र वह वज्र लेकर वृत्रासुरसे लड़नेवास्ते आया वह दैत्य इन्द्रको देखकर बोला यह मेरे सामने से भाग गया था आज न मालूम किस कारण फिर लड़ने आया

है ऐसा विचारकर वृत्रासुरने निर्मोची व द्विमूर्द्धा व विप्रचित्ती आदिक दैत्योंको अपने साथ लेकर देवतोंसे बड़ाभारी युद्ध किया जब गदा व तीर व तलवार व त्रिशूल व भुशुण्डी आदिक नव शस्त्र दैत्योंके टूट गये तब वह लोग पर्वत व वृक्ष उखाड़कर मारने लगे पर ईश्वरकी दयासे देवतोंने दैत्योंको मारकर हटादिया जब वृत्रासुरके साथी हार मानकर भागे व देवतों ने उनको पीछेसे खेदा तब वृत्रासुरने दैत्योंको भागते देखकर कहा कि तुम लोग युद्धसे मत भागो एक दिन अवश्य मरनाहै मृत्युके हाथसे कोई नहीं बचैगा सो घरमें मरना उत्तम न होकर दो तरह की मृत्यु मंगल समझना चाहिये एक योगाभ्यास करके तनु छोड़ना व दूसरे युद्धमें सन्मुख मारा जाना इसलिये तुम लोग फिरकर लड़ाई करो भागना उचित नहीं है ॥

ग्यारहवां अध्याय।

इन्द्र व वृत्रासुरका युद्ध होना ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् जब वृत्रासुरके समझाने पर भी कोई कोई दैत्य कहीं फिरकर भाग गये तब वृत्रासुरने बड़े क्रोधसे ललकारकर कहा हे इन्द्र भागे हुये को मारना कुछ शूरता नहींहोती पहिले मैंने सब देवतोंको जीतकर भगा दिया था अब क्या हुआ जो मेरे साथी भागे जाते हैं तुम खड़े रहो मैं अकेला सबको मारूंगा जब सब देवता उसकी ललकारसुनकर भयसे पृथ्वी पर गिरपड़े तब वृत्रासुरने लातोंसे सबको इसतरह रौंदडाला कि जिसतरह कमलवनको हाथी रौंदडालता है इन्द्रने यह दशा देवतों की देखकर जैसे अपनी गदा उसपर चलाई वैसे वृत्रासुरने वह गदा छीनकर ऐरावतहाथी के मस्तक पर ऐसी मारी कि हाथी साठि पग पीछेको हटगया तब इन्द्रने अमृत लगाकर घाव उसका अच्छा कर दिया जब फिर इन्द्र अपनेको सँभाल कर वृत्रासुरके सन्मुख आया तब वृत्रासुरने कहा आज बड़ा उत्तम दिन है जो तू अपने भाई व गुरु व ब्राह्मणका मारनेवाला हत्यारा मेरे सन्मुख हुआ सबके बदले आज तुझे देवतोंसमेत अपने त्रिशूलसे मारकर भूतनाथ के नामका यज्ञ करूंगा अब तू मेरे सामनेसे जीता फिर नहीं जासक्ता कदाचित् तुझको अपनी रानी व राज्य प्याराहो तो मेरे सामनेसे भागजा मैं

अपने भाई का बदला लेने आयाहूं तेरे मारने से मुझे संसारमें क्या यश मिलैगा व कदाचित् तू ने मुझको मारलिया तो मैं तुरन्त परमेश्वरके चरणों के पास पहुँचकर यहां राज्य करनेसे वहां अतिसुख पाऊंगा जिसतरह पक्षी का बच्चा विना पंख उड़ने नहीं सक्ता अपने माता व पिताके आश्रमपर दानापानी पाता है व दूध पीनेवाला बालक व बछवा अपनी माताके भरोसे रहकर पतिव्रता स्त्री अपने स्वामी की चाहना रखती है उसीतरह श्यामसुन्दरके चरणों का ध्यान मैं रखताहूं इसलिये मुझे इन्द्रासनकी गद्दी लेने व राज्य करनेसे मारेजाने में अतिआनन्द है जो लोग अपनेको बलवान् व ज्ञानी जानते हैं उनको मूर्ख समझना चाहिये परमेश्वर सब बातों के मालिकहैं यह बात कहकर वृत्रासुर ईश्वरके चरणोंका ध्यान करनेलगा व गदा छीन जानेसे इन्द्रसे लज्जित होगया ॥

बारहवां अध्याय।

वृत्रासुर का वज्रसे माराजाना जो दधीचि ऋषीश्वरकी हड्डी का बनाथा ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् यह सब ज्ञान कहकर वृत्रासुरने बड़े क्रोध से अपना त्रिशूल इन्द्रपर चलाया सो इन्द्रने उसका शस्त्र बचाकर वही वज्र जो हड्डीसे बनाथा ऐसा मारा कि वृत्रासुरकी दाहिनी भुजा कटकर गिरपड़ी तब उसने बायें हाथसे परिघनाम शस्त्र मारकर वह वज्र इन्द्रके हाथसे गिरा दिया जब इन्द्र मारेडरके फिर वह वज्र पृथ्वीपरसे उठाने न सका और खड़ा रहगया तब वृत्रासुर बोला हे इन्द्र तू मत डर मुझसे शूरवीरों की तरह युद्ध कर कदाचित् मैंने तुझको मारलिया तो इन्द्रपुरीका राज्य करूंगा व तेरे हाथसे मारागया तो वैकुण्ठमें जाकर सुख भोगूंगा इसलिये मैं मृत्युसे नहीं डरकर दोनों बातमें प्रसन्नहूं व मारना व मरना कुछ मेरे व तेरे वश न हो कर हानि व लाभ संसारी जीवोंका परमेश्वरकी आज्ञानुसार नटके खेलसमान होता है जिसतरह नट चाहै उसीतरह कलाबाजी लेवे सो तू हर्षसे वज्र उठाकर मुझे मार कि जिसमें तुरन्त ईश्वरके चरणोंके पास पहुँचजाऊँ इन्द्रने यह वचन सुनकर अतिप्रसन्नतासे कहा हे वृत्रासुर तेरी बुद्धि धन्यहै जब इन्द्रने ऐसा कहकर उसी वज्रसे उसकी बाईं भुजाको भी काटडाला तब

वृत्रासुर दौड़कर इन्द्रको हाथी समेत निगलगया पर नारायणकवचके प्रतापसे इन्द्र नहीं मरा व वज्रसे कोखा उसका चीरकर वाहर निकलआया व परमेश्वरकी कृपासे कुछ दुःख इन्द्र था हाथीको नहीं पहुँचा जब फिर इन्द्रने उसी वज्रसे सौवर्षमें गला काटकर वृत्रासुरको मारडाला तव उसके तनुसे एक तेजसा निकलकर वैकुण्ठमें चलागया सो सब देवता उसके मारेजानेसे हर्षित हुये पर इन्द्र प्रसन्न नहीं हुआ॥

तेरहवां अध्याय।

ब्रह्महत्याके डरसे इन्द्रका भागना॥

राजा परीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले हे मुनिनाथ इन्द्र ऐसे वली शत्रुको मारकर क्यों नहीं प्रसन्न हुआ शुकदेवजी बोले हे राजन् वृत्रासुर दैत्यको त्वष्टा ब्राह्मणने उत्पन्न किया था इसलिये वृत्रासुरके मरतेही वृद्धारूप ब्रह्महत्याने जिसकी योनिसे रक्त वहकर अंगमें सड़ी मछलीकी दुर्गन्ध आतीथी लोहेका गहना पहिनेहुये इन्द्रके पास आनकर उसे निगलने चाहा तव इन्द्र उसके डरसे भागा व वृद्धारूप हत्याने उसका पीछा किया जब इन्द्रने अपना वचाव उसके हाथसे कहीं न देखा तब वह पूर्व व उत्तर के कोनेपर मानसरोवर तालावमें जाकर कमलनालमें छिपरहा और वह हत्या भ्रमररूप होकर उस फूलके चारोंओर गूंजनेलगी इसकारण इन्द्र उस के भयसे वाहर नहीं निकलसक्ता था जब वह क्षुधा व तृषासे अतिदुःख पाने लगा तव लक्ष्मीजीने उसका पालन किया जब इन्द्रके छिपे रहनेसे इन्द्रासन सूना होगया तव ऋषीश्वरोंने वहांका राज्य राजा नहुषको जो बड़ा धर्मात्मा व प्रतापी था देना विचारकर उससे कहा हमलोग तुझे इन्द्रासनपर वैठाला चाहते हैं राजाने उत्तर दिया कि मुझे देवलोकमें राज्य करनेकी सामर्थ्य नहीं है यह वचन सुनकर ऋषीश्वर बोले कि हमलोग अपने तप व जपका फल तुझे देवैंगे तव वहांके राज्य करने योग्य होजायगा जब ऋषीश्वरोंने थोड़ा थोड़ा पुण्य अपने तपका नहुषको देकर उसे इन्द्रासनपर वैठाल दिया तव उसने इन्द्राणी पर मोहित होकर उससे कहला भेजा कि अब मैं इन्द्रकी जगहपर राजाहूं तू मेरे पास क्यों नहीं आती

यह बात सुनतेही इन्द्राणी पतिव्रताने जो सिवाय अपने स्वामीके दूसरेको नहीं चाहती थी नहुषके भयसे बृहस्पति गुरु के पास जाकर विनय किया महाराज राजानहुष मनुष्य होकर मुझे भोगकरनेवास्ते बुलाता है जिसमें पतिव्रताधर्म बचे वह यत्न कीजिये बृहस्पतिजी बोले तू राजा नहुष से कुछ दिनकी अवधि कर मैं इन्द्रको फिर गद्दीपर बैठालनेका उपाय करता हूं सो उनकी आज्ञानुसार इन्द्राणीने कुछ दिनोंकी अवधि करके उसे प्रसन्न किया व बृहस्पतिने अग्निको इन्द्रका पता लगानेवास्ते भेजा सो अग्निदेवताने बृहस्पतिसे आनकर कहा इन्द्र ब्रह्महत्याके भयसे मानसरोवर तालावमें छिपा है जब इन्द्रका समाचार आनेतक अवधिके दिन बीतगये व फिर नहुषका मनुष्य इन्द्राणीको बुलाने गया तब उसने बृहस्पतिजीकी आज्ञानुसार राजाको कहला भेजा कि मनुष्य सौ यज्ञ राजसूय व अश्वमेध करनेसे इन्द्र होता है सो तुम विना यज्ञ किये राज्य देवलोकका करते हो इस लिये तुम सुखपालमें बैठकर ब्राह्मणोंके कंधेपर मेरे यहां आवो तब मैं तुम्हारे पास रहूं राजाने कामवश होकर कुछ पाप व पुण्यका विचार नहीं किया बहुतसे ऋषीश्वर व ब्राह्मणों को अपने सुखपालमें बरजोरी लगाकर इन्द्राणी के स्थान पर चला ब्राह्मणोंने कभी बोझा नहीं उठाया था इसकारण जल्दी नहीं चल सक्ते थे जब राजा ने काम के मदमें अन्धा होकर ऋषीश्वरों को चरणसे ठोकरमारके कहाकि जल्दीजल्दी चलो तब ऋषीश्वरोंने उसका अधर्म देखकर राजाको शाप दिया कि तू सर्प हो जा यह वचन उनके मुख से निकलतेही वह सर्प होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा व इन्द्राणीका पातिव्रतधर्म परमेश्वरने बचाया तब बृहस्पतिजीने मानसरोवर तालाब पर जाकर कहा हे इन्द्र तुम कमलनालसे बाहर आवो इन्द्रने दण्डवत् करके विनय किया कि महाराज मैं ब्रह्महत्याके भयसे बाहर नहीं आसक्ता यह बात सुनकर बृहस्पतिजी बोले कि तू मत डर अश्वमेध करनेसे यज्ञपुरुष अनेकप्रकारका पाप छुड़ा देते हैं सो मैं भी यज्ञ कराके तेरा अपराध छुड़ा दूंगा इन्द्रने बृहस्पतिजीकी आज्ञानुसार तालावसे निकल कर अश्वमेध यज्ञ किया तब वह ब्रह्महत्या छूटनेसे फिर दिव्यरूप होकर देवलोकका राज्य करने लगा॥

चौदहवां अध्याय ।

शुकदेवजी करके वृत्रासुरके पूर्वजन्म की कथा वर्णन करना ॥

परीक्षितने इतनी कथा सुनकर पूंछा हे शुकदेवस्वामी साधु व वैष्णव परमेश्वरके भक्त होते हैं वृत्रासुर दैत्यको जिसे त्वष्टाने क्रोधसे उत्पन्न किया था युद्धमें मरते समय किसतरह उसे ऐसा ज्ञान हुआ था कि सब हर्ष व विषाद नारायणजी की इच्छासे होता है शुकदेवजी बोले हे राजन् जिस कारण वृत्रासुरको अन्तसमय ज्ञान उत्पन्न हुआ उसकी कथा सुनो पूर्व जन्म में वृत्रासुर चित्रकेतु नाम सातों द्वीपका राजा होकर साथ धर्म व प्रजापालनके राज्य करता था व सब छोटे बड़े उस राज्य में अपने कर्म व धर्मसे रहकर मग्न थे पर राजा चित्रकेतुके करोड़ स्त्री होने पर भी पुत्र नहीं हुआ इसलिये वह आठोंप्रहर शोचमें रहता था सो एक दिन अंगिरा ऋषीश्वर अपनी इच्छा से राजमन्दिर पर आये सो राजाने बड़े आदर व सन्मान से बैठाकर उनका पूजन किया जब ऋषीश्वरने उसको उदास देखकर पूंछा कि तुम इतने बड़े धर्मात्मा व प्रतापी राजा होकर मलीनरूप क्यों दिखलाई देते हो तब राजाने हाथ जोड़कर विनय किया कि महाराज तुम्हारे आशीर्वाद से सब सुख मुझे हैं पर सन्तान न उत्पन्न होने से दुःखी रहताहूं जिसतरह कोई भूखे प्यासे मनुष्यके शरीर में चन्दन आदिक लगावै तो सुगन्ध सूंघने से भूख प्यास उसकी नहीं जाती उसी तरह विना पुत्र यह सातों द्वीपका राज्य व सुख मुझे अच्छा नहीं लगता जैसे आप दयालु होकर यहाँ आये हो वैसे यह चिन्ता मेरी दूर कीजिये यह बात सुन कर ऋषीश्वर बोले हे राजन् तुम्हारे भाग्यमें सन्तान नहीं लिखी है तुम किसवास्ते इतना शोच करते हो हम तेरे भवसागरपार उतरनेका उपाय बतला देते हैं तू परमेश्वरका भजन कर जिसमें तेरी मुक्ति हो राजा बोला महाराज विना पुत्र मुझे ज्ञान व ध्यान अच्छा नहीं लगता अंगिरा ऋषीश्वर ने उसे अतिअभिलाषा पुत्रकी देखकर कहा हे राजन् जो तुम ऐसा हठ करते हो तो तुम्हारे एक पुत्र होगा पर उसके होने में पहले तुझे बड़ा हर्ष होकर पीछे से तू महादुःख पावैगा राजा बोले महाराज एक बेर मुझे

बेटेका सुख दिखला दीजिये फिर जो चाहै सो हो यह बात सुनकर अंगिरा ऋषीश्वरने पुत्र होनेके वास्ते राजासे यज्ञ कराया व पूर्णाहुति अग्निकुण्ड में डालकर जो कुछ साकल्य बचा वह प्रसाद राजा को देकर कहा इसे तू अपनी एक रानी को खिलादे जैसे राजाने वह साकल्य अपनी बड़ी स्त्री कृतद्युती नाम को खिला दिया वैसे हरिइच्छासे रानीके गर्भ रहकर दशवें महीने पुत्र उत्पन्न हुआ सो राजाने बड़े हर्ष से छः अरब गौ विधिपूर्वक ब्राह्मणों को दान दिया और सब मंगलामुखी छोटे बड़े को मुँहमाँगा द्रव्यादिक देकर इसतरह प्रसन्न किया कि जिसतरह श्रावण भादोंमें पानी बरसकर प्रजाको सुख देताहै व चित्रकेतुको उस बालकसे इतनी प्रीति हुई कि जिसके प्रेम में दिन रात राजा बड़ी रानीके मन्दिरमें पुत्रके पास रहनेलगे जब दूसरी रानियोंने देखा कि राजा बालकके मोह से आठोंप्रहर हमारी सवति के पास रहते हैं वे हमलोगों को आँख उठाकर भी नहीं देखते व उसके वश होकर हमैं अपनी लौंड़ी बराबर भी नहीं समझते फिर सवतियाडाहसे सब रानियोंने आपसमें यह सम्मत किया कि जिसमें यह बालक मर जावे तो राजा हमलोगों से भी प्रीति करेंगे ऐसा विचारतेही एक दिन अकेला पाकर राजा की किसी रानीने उस बालक को जहर खिला दिया सो वह लड़का मर गया पहले कृतद्युती रानी उसे सोया हुआ जानकर जब जगाने के वास्ते गई तब उसको मरा हुआ देखकर अति विलाप करने लगी जब राजाने वह समाचार सुना तब रोता पीटता वहाँ जाकर पृथ्वीपर गिर पड़ा व बारह प्रहरतक ऐसा अचेत रहा कि उसे अपने तनकी सुधि नहीं रही जब राजकुमारका मरना व राजा के अचेत होनेका समाचार सुनकर नगर में हाहाकार मचगया तब सब छोटे बड़े रुदन करते राजमन्दिरपर आये उस बालक के मरनेका जितना शोच राजा व बड़ी रानी व दास व दासी व नगरवासियों को हुआ वह वर्णन नहीं होसक्ता इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् स्त्रियां अपने पति व कुलका भला नहीं चाहकर केवल अपनेही तनका सुख चाहती हैं इसलिये ज्ञानी मनुष्यको स्त्री की बात पर विश्वास करना व उसके वश होना उचित नहीं है ॥

पन्द्रहवां अध्याय।

नारदजी व अंगिरादि ऋषीश्वरोंका राजमन्दिर पर आना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जब समाचार चित्रकेतुके अचेत होने का चारोंतरफ फैला तब नारदमुनि व अंगिरा ऋषीश्वर आदिक यह सुनकर राजाको बोध करने आये व उन्होंने चित्रकेतुको उठाकर कहा हे राजन् तू किसवास्ते इतना विलाप करताहै वह बालक तुझसे क्या प्रयोजन रखता था यह सब संसारी जीव अपने पूर्वजन्मों का बदला लेनेके वास्ते जगत् में आनकर इकट्ठे होते हैं जब उस फल का बदला मिलकर अन्तसमय आन पहुँचता है तब फिर वह लोग बिलग हो जाते हैं इसलिये मरने का कुछ शोच न रखकर सब बातोंको पिछले जन्म के संस्कार से जानना चाहिये और संसार स्वप्नवत् है जिसतरह मनुष्यको स्वप्नमें अनेक वस्तु दिखलाई देकर जागने के उपरांत कुछ नहीं मिलता तब वह जानता है कि यह सब स्वप्न की बात झूठी थी उसी तरह संसार में जब तक मनुष्यको ज्ञान नहीं प्राप्त होता तबतक वह अज्ञानरूपी निद्रामें अचेत रहताहै सो तुम इस बातको समझकर शोच अपना छोड़देव उससमय राजाने पुत्रके शोकमें डूबेरहने से किसी ऋषीश्वरको नहीं पहिचानकर उनसे पूंछा कि तुमलोग कौन हो तब अंगिरा ऋषीश्वरने नारदमुनि आदिक ऋषीश्वरोंका नाम बतलाकर राजासे कहा मैं वही अंगिरा ऋषीश्वरहूं जिसने तेरे यहाँ पुत्र होनेका उपाय करके प्रथम तुमसे कहदिया था कि बेटा उत्पन्न होने में तुझे हर्ष व विषाद दोनों होंगे सो अब तू अपने मनको धैर्य देकर मेरे वचनका विश्वास मान कि सब हानि व लाभ परमेश्वरकी इच्छानुसार होकर उसमें कोई तिलभर घटाने बढ़ाने नहीं सक्ता इसलिये तुम हरिचरणों में ध्यान लगाकर अपनी मुक्तिका यत्न करो व इस झूठे संसारकी माया छोड़दो जिसमें तुम्हारा कल्याण हो व नारदजीने भी इसी तरहपर बहुत ज्ञान समझाकर कहा कि हे राजन् हम तुझको एक मन्त्र बतलाये देते हैं उसे तुम सात दिनतक जपो तुम्हें शेषभगवान् का दर्शन मिलेगा॥

सोलहवां अध्याय।

नारदमुनि के उपदेश से राजा चित्रकेतुको ज्ञान प्राप्त होना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित राजा चित्रकेतु बड़ी रानी समेत उस बालकके शोकमें ऐसा व्याकुल था कि ऋषीश्वरों के समझाने पर भी शोच उसका नहीं छूटा पर उसने आंख खोलकर जब अंगिरा व नारद मुनिको पहिंचाना तब उनका चरण अपने आंसुओं से धोकर विनयपूर्वक कहा कि महाराज एकबेर किसी तरह इस बालकको जिलादेव तो मुझे धैर्य हो यह वचन सुनते ही नारदमुनिने अपने योगबलसे उस बालकके जीवात्माको बुलाकर आकाश में खड़ा करदिया व राजा व रानीके सम्मुख उससे कहा कि तुम अपने शरीरमें आनकर माता व पिताका शोच दूर करके इन्हें सुख देव और सातों द्वीपका राज्य करो तब वह जीवात्मा चित्रकेतुको गाली देकर बोला यह मेरे किस जन्मके माता पिता होकर मैं कौन जन्मका बेटाहूं संसारी व्यवहार सदासे योंही चलाआता है जिस तरह मनुष्य रुपया व मोहर हाथमें रहने से उनको अपना जानते हैं पर वह किसीका नहीं होजाता उसीतरह जीवात्मा भी चौरासीलाख योनिमें भ्रमता है पर वह किसीके आधीन नहीं होता इसलिये मेरा व इनका कुछ नाता समझना न चाहिये पूर्वजन्ममें हम व चित्रकेतु दोनों मनुष्य राजा होकर आपसमें लड़ते थे जब मैं अपनी सेना कटजाने से भरखण्डके वन में जाकर छिपा तब उसने वहां आनकर मेरा शिर काटलिया था उसी कारण इस जन्ममें हमने पुत्र होकर इसे दुःख दिया और यह सब रानियां चित्रकेतुकी पिछले जन्म करोड़ चिउँटिनियां होकर एक मांदमें रहती थीं सो हमने दतवनि करती समय पानी उनके बिलमें गिरादिया सो वह सब मरगईं इसी कारण उन्होंने इस जन्ममें मुझे विष देकर अपना बदला लिया इसीतरह सब जीव संसारमें जन्म लेकर एक दूसरे से अपना पलटा लेते हैं ऐसा कहकर वह जीवात्मा चला गया और यह बात उससे सुनते ही जब राजा व रानीका सब शोच छूटगया तब उन्होंने कहा कि मनुष्यतनमें जन्म पाकर सुकर्म करना चाहिये यह पुत्र मेरा शत्रु था इसके मरनेका

अब कुछ शोक नहीं है व राजाकी दूसरी स्त्री जिसने उस बालकको विष दिया था यह हाल देखकर बहुत पछताई व नारदजी अंगिरा ऋषीश्वरसे पूंछकर शास्त्रानुसार प्रायश्चित्त उसका किया व राजा चित्रकेतु उसी समय घर व राज्य छोड़कर वनमें इसतरह चलागया कि जिसतरह हाथी चहलेमेंका फँसा हुआ निकल जाता है जब राजा यमुनाकिनारे जाकर नारदजीका बतलाया हुआ मन्त्र जपने लगा व उस मन्त्रके प्रतापसे सातवें दिन शेषजीने उसको दर्शन दिया व राजाने शेषजीको दण्डवत् करके विधिपूर्वक पूजा व स्तुति उनकी की तब शेषभगवान्ने प्रसन्न होकर चित्रकेतुको उसी तनसे विद्याधरोंका राजा बनाकर ऐसा वरदानदिया कि सदा तुझे हरिचरणोंमें भक्ति बनीरहै व एक दिव्य विमान क्षणभर में सब जगह पहुँचनेवाला उसे देके शेषजी अन्तर्धान होगये व चित्रकेतु विद्याधरों का राजा होकर अपनी स्त्रियोंसमेत विमानपर बैठके सैर किया करता था॥

सत्रहवां अध्याय।

पार्वतीजीका चित्रकेतुको शाप देना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित एक दिन चित्रकेतु अपनी स्त्रियोंसमेत विमानपर बैठकर सैर करने निकला सो कैलासपर्वतपर जहां महादेवजी पार्वतीको अपनी जंघापर बैठाले हुये भृगु आदिक ऋषीश्वरों से ज्ञान उपदेश कररहे थे जापहुँचा व उन दोनोंको नमस्कार करके हँसकर कहनेलगा कि देखो उन्होंने तपस्वी व ब्रह्मज्ञानी व जगद्गुरु होने परभी ऐसी लज्जा छोड़दी कि विषयी मनुष्यके समान स्त्रीको सभामें जंघापर बैठाले हैं संसारी जीवभी अपनी स्त्रीको अकेले में लेकर बैठता है ऐसा वचन सुननेपरभी हँसकर महादेवजी चुप होरहे परन्तु पार्वतीजीने जब उसे हँसते देखकर यह बात सुनी तब क्रोध करके बोलीं कि हम ऐसे निर्लज्जोंका समझानेवाला यह विद्याधर उत्पन्न हुआहै जिनको ब्रह्मा व सनत्कुमार व शुकदेवजी नहीं उपदेश करसक्ते उन्हें यह नारदका मन्त्र सुनकर अभिमानसे ज्ञान बतलाता है इस मूर्खको नारायणजी की सेवा में रहना न चाहिये यह कहकर पार्वतीजी चित्रकेतु से बोलीं हे बेटा अब तुम

दैत्ययोनि में जन्म लेकर कुछ दिन इस हँसनेका दण्ड भोगो यह वचन सुनतेही चित्रकेतुने उस शापको अपने मस्तकपर चढ़ालिया व विमानपर से उतरकर पार्वतीजीको दण्डवत्करके बोला कि हे माता तुम्हारा शापमैंने हर्षसे अंगीकार किया परमेश्वरकी इच्छा इसी तरहपर थी संसार में मनुष्य दुःख व सुख दोनों भोगता है इसलिये मैं शाप व वरदान व नरक व स्वर्ग दोनोंको समान जानताहूं मुझे ऐसी सामर्थ्य नहीं है कि जो महादेवजी को ज्ञान सिखलाऊं मैंने इसवास्ते इतना कहा कि जिसमें संसारीलोग यह हाल सुनकर ऐसे निर्लज्ज न हों चित्रकेतु ऐसा कहके होना इस शापका हरिइच्छासे जानकर आनन्दपूर्वक चलागया तब शिवजी बोले हे पार्वती तैंने परमेश्वरके भक्तोंका माहात्म्य व स्वभाव देखा इतना बड़ा शाप सुनकर दुःखी न हुआ सो मुझे हरिभक्तों के समान दूसरा कोई प्यारा नहीं लगता इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् वही चित्रकेतु पार्वतीजीके शाप से वृत्रासुर दैत्य हुआ इसवास्ते परमेश्वरने उसे अपना भक्त जानकर अन्तसमय ज्ञान दिया था सो वह असुरतन छोड़ने के उपरान्त वैकुण्ठमें जाकर परमेश्वरकी सेवा करनेलगा हे राजन् यह कथा चित्रकेतुकी कहने व सुननेवाला भवसागरपार उतर जाता है॥

अठारहवां अध्याय।

शुकदेवजीका सवितादेवता आदिक की कथा कहना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित अब मैं सवितादेवता आदिककी सन्तान की कथा कहता हूं सुनो सवितादेवता पृष्णीनाम स्त्रीसे अग्निहोत्र आदिक तीन बेटे व सावित्री आदिक तीन कन्या व भगदेवताके सिद्धिनाम स्त्रीसे दो पुत्र व एक कन्या व धातादेवतोंके यहां उरगादिक चार बेटी व पूर्णमास आदिक चार बालक अग्निदेवताके कृत्तिकानाम स्त्रीसे पुरीष आदिक बेटे व वरुणदेवताकी चर्षणीनाम स्त्रीसे वाल्मीकि आदिक ऋषीश्वर दो पुत्र उत्पन्न हुये व मित्रावरुण देवताका वीर्य उर्वशी अप्सरा को देखकर गिरपड़ाथा सो वह वीर्य घड़े में रखने से अगस्त्य व वशिष्ठजीने जन्म पाया व इन्द्रकी पुलोमा स्त्री से जयन्तआदिक तीन पुत्र व वामन-

भगवान्के कीर्तिनाम स्त्रीसे सुभगनाम बालक व कश्यपके दितिनाम स्त्री से हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष दो पुत्र व हिरण्कशिपुके कयाधूनाम स्त्री से सिंहिकानाम कन्या व सिंह्लाद व प्रह्लाद व अह्लाद चार सन्तान उत्पन्न हुये वह कन्या विप्रचित्ती दैत्यको ब्याही गई जिससे राहु उत्पन्न हुआ सिंह्लादका बेटा पंचजन होकर प्रह्लादका पुत्र वातापीदानव हुआ जिसको अगस्त्यजीने मारा व अह्लादके महिषासुर व वाष्कल दो बेटे होकर प्रह्लाद से विरोचन उत्पन्न हुआ व विरोचनके देवीनाम स्त्रीसे राजा बलि होकर उससे बाणासुरआदिक सौ पुत्र हुये व कश्यपके दितिस्त्रीसे मरुद्गणनाम उंचास बालक उत्पन्न होकर इन्द्रके समान देवता होगये इतनी कथा सुन-कर परीक्षितने पूंछा कि महाराज दितिके पुत्र दैत्यादिक किसतरह देवता हुये वह वर्णन कीजिये शुकदेवजी बोले हे राजन् जब परमेश्वरने वाराह व नृसिंहअवतार लेकर हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष दितिके दोनों पुत्रोंको मारडाला तब दितिने बहुत उदास होकर कहा देखो मेरे दोनों बालक इन्द्रने मरवाडाले अब मैं ऐसा उपाय करूं कि जिसमें इन्द्रका मारनेवाला पुत्र मेरे हो इसी इच्छापर दिति अपने स्वामी की सेवा प्रेमसे करनेलगी सो एकदिन कश्यपजीने प्रसन्न होकर उससे पूंछा कि हे दिति मैं तेरे ऊपर बहुत हर्षितहूं तुझे जो इच्छाहो सो वरदान मांगले तब दिति हाथ जोड़-कर बोली कि महाराज तुम प्रसन्न होकर वरदान देनेके वास्ते कहते हो तो एक पुत्र मुझे ऐसा दीजिये कि जो इन्द्र को मारकर अमर रहै यह बात सुनतेही कश्यपजीने उदास होकर मनमें विचारा कि देखो मैं वरदान दे चुका अब क्या करूं इन्द्र परमेश्वरका भक्त है उसका प्राण लेना न चाहिये व मेरा वचनभी झूठा नहीं होसक्ता इसी तरह अति शोच करके कश्यपजी ने कहा हे दिति तू अगहनमास का व्रत रक्खे तो तेरे ऐसा पुत्र उत्पन्न हो यह सुनकर दिति बोली कि महाराज मुझे उसकी विधि बतला दीजिये मैं यह व्रत करूंगी तब कश्यपजीने कहा हे दिति अगहन महीना शुक्ल-पक्षसे उस व्रतको आरम्भ करके प्रतिदिन ब्रह्मचर्य रहना चाहिये व इस व्रत में दिनको सोना व नंगी होकर स्नान करना व नीचजातिसे बोलना व

शिरका वाल खुला रखना व झूठ बोलना मना होकर आठोंप्रहर शुद्ध रहना चाहिये व लक्ष्मीनारायण व सावित्री स्त्रियोंकी पूजा नित्य विधिपूर्वक वर्षदिन तक करना व व्रत रखना उचित है तू भी यह व्रत रक्खे तो तेरे ऐसा पुत्र उत्पन्न होकर इन्द्रको मारके अमर रहै पर नारायणजी ऐसा न चाहैंगे तो तेरे व्रतमें विघ्न हो जावेगा यह वचन सुनतेही दिति अति प्रसन्न होकर उसी तरह व्रत रखने लगी इन्द्रने यह वृत्तान्त सुनते ही अतिभय मानकर मनमें कहा कि अब मेरे मरनेका संयोग हुआ किसी तरह बच नहीं सक्ता ऐसा विचारके इन्द्र ब्राह्मणरूप बनकर जिस जगह दिति यह व्रत करती थी वहां पर चलागया व दिन रात उसकी सेवा व टहल करने लगा तब दिति उसकी सेवासे अति प्रसन्न रहने लगी पर ज्यों ज्यों व्रत सम्पूर्ण होनेके दिन निकट पहुँचते जाते थे त्यों त्यों इन्द्र अधिक शोच करता था जब उस व्रतके सम्पूर्ण होनेमें पांच चार दिन रहगये तब परमेश्वर की इच्छासे एक दिन दिति शिरका वाल खुला छोड़कर जूठे मुँह सोगई यह दोनों बातें व्रतमें अशुद्ध विचारकर इन्द्र अपना छोटा रूप बनाकर वज्र लिये हुये दितिके पेटमें घुसगया व वहां जाकर गर्भमें जो वालक था उस के सात भाग करडाले तब वह सातो रोनेलगे फिर इन्द्रने एक एकके सात सात टुकड़े किये पर नारायणजी की इच्छासे कोई नहीं मरा व उन सातों के उंचास बालक होकर रुदन करके बोले हे इन्द्र तुम हमें मत मारो हम लोग तुम्हारी सहायता करैंगे यह दशा देखकर इन्द्र उन लड़कों से बोले हे भाई अब तुम मत रोवो मरुतनाम होकर मेरे साथ रहोगे फिर इन्द्र उंचासों बालक समेत गर्भकी राह बाहर निकलकर इन्द्ररूप होगया जब दितिने जागकर इन्द्रको उंचास बालकों समेत खड़े हुये देखा तब उससे पूंछा कि हे इन्द्र मैंने एक पुत्र होनेके वास्ते संकल्प किया था उंचास बालक किस तरह उत्पन्न हुये यह वचन सुनकर इन्द्र डरता व कांपता हुआ बोला हे माता जब मैंने तुमको जूठे मुँह व खुले बाल होजानेसे व्रतमें अशुद्ध देखा तब अपना प्राण बचानेके वास्ते तुम्हारे बालकको मारना विचारकर पेटमें घुसगया व मैंने अपने वज्रसे उस बालकके उंचास भाग किये

पर तुम्हारे व्रत व पूजाके प्रतापसे वह उंचासों अमर होकर जीतेरहे सो अब मैं इन बालकोंके साथ तुम्हारे गर्भसे निकला इसकारण वह सब हमारे होकर इन्द्रपुरीमें मेरे साथ रहैंगे यह बात सुनतेही दिति अति प्रसन्न होकर बोली हे इन्द्र तूने ब्राह्मणरूप धरके मेरी बड़ी सेवा की इसलिये अब मुझे तेरे मरनेकी कुछ इच्छा नहीं है और यहलोग भाई के समान तेरे साथ रहकर समयपर काम आवैंगे जब यह वचन सुनकर इन्द्रको अपने मरनेका भय छूटगया तब वह बड़े हर्षसे दितिको साष्टांग दण्डवत् करके उंचासों बालकसमेत इन्द्रलोकमें जाकर राज्य करने लगा हे राजन् इसतरह दिति के पुत्र देवता होगये थे यह कथा सुनकर राजा परीक्षित अति प्रसन्न हुये ॥

उन्नीसवां अध्याय।

शुकदेवजी का उस व्रतकी विधि कहना ॥

परीक्षितने इतनी कथा सुनकर पूंछा कि महाराज इस व्रतमें ऐसा प्रताप है उसकी विधि बतलाइये शुकदेवजी बोले हे राजन् जो स्त्री इस व्रतको रक्खा चाहै वह अपने स्वामीसे आज्ञा ले अगहनबदी अमावसको नहाकर पहिले मरुतदेवताकी कथा सुनै फिर शूकरकी खोदी हुई मिट्टी शरीरमें मलकर स्नान करै व मार्गसुदी प्रतिपदासे व्रत रखना आरम्भ करके ब्रह्मचर्य रहै व शास्त्रानुसार नित्य लक्ष्मीनारायणकी पूजा कर हाथ जोड़ उनके मंत्रसे स्तुति करै फिर सावित्री स्त्री को पूजकर खीरकी आहुति अग्नि में देवै व ब्राह्मणको खीर खिलाकर पीछे आप वही आहुति से बची खीर खावे इसीतरह नित्य वर्षदिन तक बराबर व्रत व पूजन करके कार्त्तिकशुक्ल पूर्णमासीको विधिपूर्वक उद्यापन करे और ब्राह्मण व कंगालों को ऐसा भोजन खिलावै कि जिसमें कोई विमुख न जावै व उद्यापन करानेवाले आचार्यको शय्यादान व गो व द्रव्यादिक देकर प्रसन्न करे इसतरहसे व्रत रखनेवाली स्त्री देवताके समान पुत्र पाकर सदा सावित्री रहती है व संसारमें अपना मनोरथ पाकर मरने के उपरान्त मुक्ति पाती है इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् हमने पुंसवननाम व्रत व मरुतोंके जन्मकी कथा तुमको सुनाई यह माहात्म्य व्रतका परीक्षित सुनकर अतिप्रसन्न हुये॥

सातवां स्कन्ध ॥
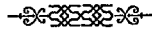
हिरण्यकशिपुको नृसिंह भगवान्का मारना ॥

दो० लिखौं कथा प्रह्लाद की जाकी भक्ति अपार । वाकी रक्षाके लिये भे नरहरि अवतार ॥

पहिला अध्याय ।

शुकदेवजी का जयविजयकी कथा वर्णन करना ॥

राजा परीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले हे शुकदेव स्वामी परमेश्वर के निकट दैत्य व देवता बराबर होकर फिर किसवास्ते नारायणजी देवतों की सहायता करके दैत्योंको मारते हैं इसबातका मुझे निर्गुणके गुणों में सन्देह है सो छुड़ा दीजिये जिसतरह किसी के दो पुत्र होवें वह दोनों पर समान प्रीति रखताहै उसी तरह देवता व दैत्य परमेश्वरकी इच्छासे उत्पन्न होकर दोनों एकसमान हैं किसकारण नारायणजी देवतोंपर दया रखकर दैत्योंका आदर नहीं करते यह वचन सुनकर शुकदेवजी बोले कि हे राजन् तुमने यह बहुत अच्छीबात भगवान्की भक्ति बढ़ानेवाली पूंछीहै जो कथा मैंने नारदमुनिआदिक ऋषीश्वरोंसे सुनीथी वह तुमसे कहताहूं सुनो परमेश्वर निर्गुणरूपको सबसे न्यारे समझना चाहिये पर उनकी मायासे तीन गुण सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण प्रकट हुये इसलिये सतोगुणकी पारीमें देवतोंको बढ़ाकर रजोगुणके समय दैत्योंका प्रताप अधिक करते हैं व तमोगुणकी पारी में मनुष्यका भाग्य उदय होताहै सो एकसमय राजा युधिष्ठिरने शिशुपालकी मुक्ति राजसूययज्ञमें देखकर नारदजीसे पूंछा कि महाराज जिस शिशुपालने श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथको दुर्वचन कहा उसकी जिह्वाके सौ टुकड़ा होजाना उचितथा सो उसने मृत्युपाई यह बड़े आश्चर्य की बातहै तब नारदमुनि बोले कि हे राजन् परमेश्वर सबको एकसा जानते हैं जो मनुष्य अपना मन काम क्रोध लोभ मोह व किसीप्रकारसे उनमें लगावै वह उन्हींका रूप इसतरह होजाताहै कि जिसतरह भृंगी कीड़े को

देखने से दूसरे कीड़े उसीका रूप होजाते हैं देखो गोपियोंने नारायणजी को अपना पति जानकर प्रीति की व शिशुपाल व रावण आदिकने शत्रु समझा व यदुवंशियोंने भाई बन्धु व युधिष्ठिर आदिक पाण्डवोंने ईश्वर जानकर उनमें चित्त लगाया सो उनकी कृपासे सब कृतार्थ होगये एक शिशुपाल की मुक्ति होनेमें क्या सन्देहहै और यह दोनों शिशुपाल व दन्त-वक्र तुम्हारे मौसीके बेटे जयविजयनाम द्वारपाल कहें ब्राह्मणके शापसे उन्हों ने वैकुण्ठसे गिरकर दैत्ययोनि में जन्म पाया व तीनों जन्म परमेश्वरसे शत्रु-भाव रखने में नारायणजी के हाथसे मारे जाकर अब तीसरे जन्म मुक्त हुये यह सुनकर युधिष्ठिर बोले हे मुनिनाथ वैकुण्ठमें रहनेवालोंका शरीर व प्राण संसारी मनुष्य ऐसा न रखकर उन का चैतन्यरूप होताहै वैकुंठवासी पाप नहीं करते सो उन्होंने बिना अपराध किये किसवास्ते दैत्यका तनु पाया और हिर-ण्यकशिपु दैत्यके यहां प्रह्लाद ऐसा परम भक्त किसतरह उत्पन्न हुआ उसका व-र्णन कीजिये नारदमुनि बोले हे राजन् एक दिन सनकादिक परमेश्वरके दर्शनके वास्ते वैकुण्ठमें गये सो जय विजयने ईश्वरकी आज्ञानुसार उन्हें भीतर नहीं जानेदिया व पांच पांच वर्षके बालक जानकर अपमान किया तब उन्होंने क्रोधवश जयविजयको शाप देकर कहा कि हमलोग नारायण जीका दर्शन करने आये थे सो तुम्हारे रोकदेने से तीन क्षण दर्शन मि-लने में विघ्न हुआ इसलिये तुम दोनों यहां रहने योग्य नहीं हो वैकुण्ठसे गिरकर दैत्ययोनि में जन्म लेव तीसरे जन्म उद्धार होकर फिर वैकुण्ठ में आवोगे सो हे युधिष्ठिर वही दोनों भाई शापके मारे हिरण्याक्ष व हिरण्य-कशिपुनाम दैत्य दितिसे उत्पन्नहुये सो हिरण्याक्षने युवाहोकर ऐसा विचारा कि देवतालोग पृथ्वीपर यज्ञ व होम होने से अपना भाग पाकर बलवान् होते हैं सो मैं पृथ्वी उठाकर पातालमें लेजाऊं तब किसतरह कोई यज्ञ ह-वन करैगा यज्ञका भाग न पाने से सब देवता भोजन बिना दुर्बल होकर मरजावैंगे जब हिरण्याक्ष ऐसा विचारकर पृथ्वी को पातालमें लेगया तब नारायणजी ब्रह्माके विनय करने से वाराह अवतार लेकर पातालमें चले गये व हिरण्याक्षको मारके पृथ्वीको लाकर फिर ज्योंका त्यों स्थिर कर

दिया व नृसिंहअवतार लेकर प्रह्लादभक्तका प्राण बचानेवास्ते हिरण्यकशिपु को मारा जब वह तनु छोड़कर उन दोनों ने विश्रवामुनि के यहां केसी नाम स्त्रीसे जन्म पाया व रावण व कुम्भकर्ण कहलाये तब नारायणजी ने रामचन्द्र व लक्ष्मण अवतार लेकर उनका वध किया अब उन्होंने क्षत्रियवर्ण होकर तीसरा जन्म तुम्हारी मौसीके घर लिया सो उसी विरोधसे शिशुपाल क्रोधरूप होकर परमेश्वरका भजन करता था अब श्रीकृष्णजी ने सुदर्शन चक्रसे मारकर उसे मुक्त किया सो वह दोनों भाई शिशुपाल व दंतवक्र श्यामसुन्दर के हाथसे मारेजाकर फिर वैकुण्ठमें अपने स्थानपर पहुँचे इतनी कथा सुनकर युधिष्ठिरने नारद मुनिसे पूंछा कि महाराज प्रह्लाद ऐसे परमभक्त व गुणवान्से हिरण्यकशिपुने किसवास्ते शत्रुता रखकर उसको दुःख दिया कि उसीकारण हिरण्यकशिपु मारागया व प्रह्लाद ऐसा परम-भक्त दैत्यकुलमें किस तरह उत्पन्न हुआ इसको बतलाइये ॥

दूसरा अध्याय ।

नारदजीको हिरण्यकशिपुकी कथा कहना ॥

नारदजी युधिष्ठिरकी बात सुनकर बोले कि हे राजन् जब हिरण्याक्ष दैत्य वाराहजी के हाथसे मारागया तब हिरण्यकशिपु क्रोधित होकर अपने साथी दैत्योंसे बोला कि हे विप्रचित्ती व शतबाहु आदिक मेरा वचन सुनो देवतोंने जो हमसे लघुहैं विष्णु भगवान् को फुसलाकर मेरे भाईको मरवा डाला नारायणजी बालकोंके समान बड़े अज्ञानी हैं जो कोई उनकी बि-नती करताहै उसीकी सहायता करतेहैं इस लिये मैं अभी हिरण्याक्षके नाम पर पानी न देकर विष्णु भगवान्को त्रिशूलसे मारूंगा और उन्हींके रक्तसे अपने भाईको तिलांजलि दूंगा दुर्बल देवतोंको क्या मारूं जब मैं नारायण जी इतने बड़े शत्रुको जो सब देवतों की जड़हैं मारलूंगा तब सब देवता विना मारे आपसे मरजावैंगे इसकारण तुमलोग उस मूल उखाड़ने का यह उपाय करो कि जिस जगह ब्राह्मण या ऋषीश्वरोंको यज्ञ व हवन करते देखो तो यज्ञ उनका विध्वंस करडालो और जहां गो व ब्राह्मणको पावो मारडालो व संसारमें किसीको तप व जप व हरिभजन करने मत देव

यह वचन सुनतेही दैत्यलोग सब जगह ढूंढ़ ढूंढ़कर गो व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको मारनेलगे जब हिरण्याक्षकी माता व स्त्री व बेटोंने उसके मरनेका अतिशोच किया तब हिरण्यकशिपुने इसतरह उनको समझाया कि मेरा भाई शत्रुके सम्मुख युद्धमें मारागया इसलिये तुम्हें उसका शोच करना न चाहिये जीव कभी नहीं मरता और शरीर किसीका सदा स्थिर नहीं रहता इसलिये मरनेका शोच अज्ञानी मनुष्य करतेहैं इसका एक इतिहास कहताहूं सुनो उत्तरदेशमें सुयज्ञ नाम एक राजा रहता था जब वह भी इसीतरह युद्धमें मारा गया तब उसकी रानियोंने मोहवश लोथके पास बैठकर ऐसा विलाप किया कि सूर्य अस्त होनेपर भी लोथ उसकी नहीं जलाई तब यमराज पांचवर्ष के बालक बनकर वहां आये व राजाके जाति भाई व रानियोंको समझाकर कहा बड़ा आश्चर्य है कि तुम लोग ज्ञानी होकर इतना बड़ा खेद करते हो संसारकी गति देखो जहां से जीव आया था वहां चला गया व तुमलोग भी उसीजगह अवश्य जावोगे फिर रोना तुम्हारा वृथाहै जिसके वास्ते तुम रोते हो वह शरीर ज्योंका त्यों यहां पर पड़ाहै व जो इस कायामें बोलने व खाने पीनेवाला सामर्थी पुरुष था उसको तुमने कभी आंखसे नहीं देखा फिर किसकारण शोच करते हो सब जीवोंकी रक्षा प्रारब्ध अधीन समझना चाहिये देखो मैं पांचवर्ष का बालक अकेला वनमें फिरताहूं विना मृत्यु आये नहीं मरता व मेरे माता व पिताने मुझको छोड़ दियाहै इसलिये मुझको किसीकी प्रीति नहीं है जिसने गर्भ में मेरा पालन किया था वही अबभी रक्षा करेगा जिसतरह वृक्ष लगानेवाला अपने पेड़को सींचकर उसकी रक्षा करता है व वृक्ष अपनी रक्षा आप नहीं करसक्ता उसीतरह नारायणजी सब जीवोंका पालन व रक्षा करते हैं कदाचित् तुमलोग ऐसा कहो कि राजा युद्धमें न जाता तो क्यों मरता सो यह बात निश्चय करके जानो कि जब मृत्यु आती है तब मनुष्य लोहेके कोटमें भी बन्द रखनेसे नहीं बचता जिसतरह घर बनकर कुछ दिनउपरान्त फिर गिर पड़ता है उसीतरह शरीरका धर्म बनना व बिगड़ना होकर यह सदा स्थिर नहीं रहता व जीव सदा अमर होकर

आकाशके समान रहता है जिसतरह दश वर्तन पानी से भरकर धूपमें रखदेव तब सूर्यकी छाया पड़ने से दूसरे सूर्य दिखलाई देतेहैं जब वह वर्तन तोड़ डालो तब फिर वह प्रकाश सूर्य में मिलजाने से उन वर्तनों में देख नहीं पड़ता जिसतरह उन वर्तनों के टूटने से सूर्यका नाश नहीं होता उसीतरह इस जीवको भी समझो जैसे आगि लकड़ी में नहीं दिखलाई देती उसीतरह यह जीव बोलता पुरुष शरीरमें रहकर दृष्टिमें नहीं आता जबतक वह जीवात्मा शरीर में था तबतक राजा जीता रहा अब तुम जितना चाहो उतना रुदन करके अपना प्राण भी दे डालो पर उससे भेंट नहीं होसक्ती कर्मोंके फलसे न मालूम वह जीव कहां चला गया कदाचित् तुमलोग रोतेरोते मरजावोगे तो अकालमृत्यु होकर नरक में दुःख भोगना पड़ैगा जैसे कुरंगपक्षी बच्चोंके मोहसे जालमें फँसकर नष्ट हुआ था वही गति तुम्हारी भी होगी जब ऐसा ज्ञान सुनकर रानियोंका शोच मिटा तब उन्होंने राजाको दग्ध किया व यमराज बालकरूप वहांसे अन्तर्धान होगये सो तुम लोग भी यही ज्ञान समझकर हिरण्याक्षके मरने का शोच मत करो यह बात हिरण्यकशिपुसे सुनकर दिति हिरण्याक्षकी माता व रुधाभानु स्त्री व शकुनआदिक उसके वेटोंने धैर्य धरा॥

तीसरा अध्याय।

मंदराचल पर्वत पर जाकर हिरण्यकशिपु का तप करना॥

नारदजी बोले हे युधिष्ठिर जब हिरण्यकशिपुके समझाने से उनका शोक कम हुआ तब दितिने कहा कि हे बेटा नारायणजीने देवतोंकी सहायता करके तेरे भाई को माराहै सो तू भी देवतों को मारकर अपने भाईका बदला ले हिरण्यकशिपु बोला हे माता हिरण्याक्षको परमेश्वरने माराथा इसलिये मैं उनको मारकर अपने भाईका बदला लेऊँगा पर मैंने यह उपाय विचाराहै कि पहिले ब्रह्माका तप करके उनसे ऐसा वरदान लेऊँ कि जिस में मैं कभी न मरूं तब नारायणजीका सामनाकरके उन्हें मारूंगा यह कह कर हिरण्यकशिपु अपनी मातासे विदा हुआ व मन्दराचल पहाड़ पर जाकर तप करनेलगा जब उसने सौवर्षतक ऊर्ध्वबाहु एक पैरके अंगूठेसे

खड़े रहकर ब्रह्माजीका तप किया और तप करतीसमय अपना अंग नहीं हिलाकर सूर्य भगवान्को देखता रहा तब उसके चारों ओर मट्टी जमा होने व घास उगनेसे सर्प व बिच्छूने अपना बिल बना लिया और तपके प्रताप से उसका ऐसा तेज बढ़ा कि नदी व पर्वत व समुद्र जलने लगे जब देवतों को उसकी ज्वाला पहुँची तब उन्होंने ब्रह्माजीके पास जाकर कहा कि महाराज हिरण्यकशिपुके तपोबल से हमें अतिकष्ट होताहै सो आप जाकर उसे वरदान देके तप करना छुड़ाइये नहीं तो हिरण्यकशिपु तुम्हारे उत्पन्न किये हुये जीवोंको अपने तेज से भस्म करके दूसरी सृष्टि बनाया चाहताहै यह वचन देवतोंका सुनतेही ब्रह्माजी भृगु आदिक ऋषीश्वरोंको अपने साथ लेकर हिरण्यकशिपुके पास गये व उसका तेज देखकर ब्रह्माजीने कहा हे कशिपुनन्दन तैंने बड़ाभारी तप करके मुझे अतिप्रसन्न किया ऐसा दूसरेसे नहीं होसक्ता जो सौ वर्षतक विना अन्नजल किये जीता रहै अब तुझे जिस वरदानकी इच्छा हो सो मांग यह कहकर जैसे ब्रह्माजीने अपने कमण्डलुका जल उसपर छिड़क दिया वैसे उसके शरीरका मांस जो दीमक लगनेसे केवल हड्डी रहगई थीं ज्योंका त्यों बलवान् व पुष्ट होगया व सुवर्ण के समान चमकने लगा तब हिरण्यकशिपुने दण्डवत् व स्तुति करके ब्रह्मा जीसे हाथ जोड़कर विनय किया महाराज तुम जगद्गुरु होकर सब जड़ व चैतन्यकी उत्पत्ति करते हो आप यज्ञोंका विधान व धर्मों की रक्षा करने वाले निर्गुणरूपहैं यह स्वरूप अपना केवल संसारकी रचना करनेवास्ते धारण करते हो जो आप दयालु होकर मुझे वरदान देनेवास्ते कहते हैं तो मुझको ऐसा वरदान दीजिये कि जिसमें तुम्हारा उत्पन्न किया हुआ कोई जीव जड़ व चैतन्य देवता व दैत्य व मनुष्यादिक मुझे मारने न सकै और मैं न दिनको मरूं न रातको और न पृथ्वीपर मरूं न आकाशमें व कोई शस्त्र मुझे न लगै और युद्धमें कोई मेरा सामना न करसकै और योग व तप करनेसे जो सिद्ध होतेहैं वह सिद्धाई मुझको होजावै और मैं देवता व दैत्य व मनुष्यादिक सब जीवोंका राजा होकर मेरे योग तपकी सामर्थ्य कभी न घटै ॥

चौथा अध्याय।

हिरण्यकशिपुको ब्रह्माजी का वरदान देना॥

नारदजी बोले हे युधिष्ठिर ब्रह्माजीने हिरण्यकशिपुकी बात सुनकर विचारा कि इस दैत्य अधर्मीको ऐसा वरदान देना न चाहिये पर मैं नहीं देता तो यह तप करना नहीं छोड़ेगा इसवास्ते वरदान दिये देते हैं फिर नारायणजीकी दयासे यह मारा जावेगा ऐसा विचारकर ब्रह्माजीने कहा हे हिरण्यकशिपु तैंने अतिकठिन वर मांगाहै पर तेरे तपके प्रताप से यह वरदान मैंने तुझको दिया अब तू सातों द्वीपका राजा होगा ऐसा कहकर ब्रह्माजी अपने लोकको चलेगये व हिरण्यकशिपु अतिप्रसन्न होकर अपनी माताके पास आया व वरदान पानेका समाचार उससे कहकर बोला कि अब मैं सब देवतोंको मारकर तीनों लोकका राज्य करूंगा दिति ऐसे वरदान पानेकी वार्ता सुनकर बहुत प्रसन्न हुई व हिरण्यकशिपु अपने भुजा के बलसे सब देवता दैत्य व गन्धर्व व सिद्ध व चारण व किन्नर व ऋषीश्वर व तपस्वी व भूत व प्रेत व पिशाच व प्रजापति व मनु व सातों द्वीप के राजाओंको जीतकर तीनोंलोकका राज्य करनेलगा जब उसको यह इच्छा हुई कि कोई शूरवीर मिलै तो उससे युद्ध करूं तब सब देवता उसके भयसे भागे और ब्रह्माजीके पास जाकर कहा महाराज हिरण्यकशिपुने सब राज्य देवलोकका छीन लिया तिसपर भी दिनरात हमारा प्राण लेनेका गाहक रहताहै अब हमलोग क्या करें ब्रह्माजी ने उत्तर दिया इन दैत्योंकी दशा अच्छी होकर तुम्हारे दिन खोटे आये हैं इसलिये तुम लोग कहीं पर्वतकी कन्दरा में छिपकर हरिचरणों का ध्यान स्मरण करो जब तुम्हारी सायत अच्छी आवैगी तब वह अपनी करणीको पहुँचकर फिर तुम्हारा राज्य होगा यह वचन सुनतेही देवतालोग कहीं पर्वत की कन्दरामें छिप रहे व अपने दिन काटकर परमेश्वरका ध्यान करने लगे जब वहां रहने से देवतालोग अतिदुःखी हुये तब क्षीरसमुद्रके किनारेजाकर बहुत दीनतासे नारायणजी की स्तुति की उस समय आकाशवाणी हुई कि हिरण्यकशिपु धर्म व वेद व तुम्हारा विरोध कर चुका जब प्रह्लादभक्तको वह दुःख देगा तब मैं उसे

मारूंगा यह वचन सुनतेही देवता फिर कन्दरा में आनकर हरिभजन करने लगे व हिरण्यकशिपु आप इन्द्रासन पर बैठकर इन्द्रपुरी व स्वर्गादिक का सुख भोगता था व इन्द्रकी अप्सरा अपना अपना नाच उसको दिखलाकर गन्धर्वलोग गाना सुनाते थे व ऋपीश्वर व तपस्वी आदि उसके आधीन रहकर पृथ्वी व समुद्र व पर्वत व वृक्षादिक अनेक तरहके रत्न व फल व पुष्प हिरण्यकशिपु को भेंट देते थे उसके प्रताप व भय से बारहों महीने वृक्षादिकों में फल व पुष्प लगे रहकर घी व दूध की नदी बहनेलगीं व हिरण्यकशिपु अपनी मायासे वरुण व कुबेरादिक दशों दिक्पालों का रूप धरकर मद्यपान किये अप्सराओंसे भोग व विलास करताथा व ऋषीश्वर व मुनि गो व ब्राह्मण उसके हाथसे बहुत दुःख पाते थे इसी तरह कुछ दिन बीते तब हिरण्यकशिपुके चार पुत्र उत्पन्न हुये सो तीन बालक दैत्योंका कर्म करते थे व चौथा पुत्र प्रह्लादनाम सब से छोटा चलन व स्वभाव अपना देवतोंके समान रखकर आठोंपहर सन्त व महात्मों की सेवा व हरिभजनमें रहताथा व सब जीवोंमें परमेश्वरका चमत्कार एकसा जानकर किसी जीवको दुःख नहीं देताथा व इन्द्रीजित् व सत्यवादी होकर छोटोंको पुत्रसमान व बड़ोंको पिता व ईश्वरतुल्य जानता था व बालकोंके समान न खेलकर सत्संगमें अतिप्रीति रखता था इसलिये महात्मा लोग उसकी बड़ाई करते थे ऐसे पुत्रसे हिरण्यकशिपुका विरोध होगया इतनी कथा सुनकर युधिष्ठिरने पूंछा कि हे मुनिनाथ पूत कपूत होते हैं पर माता पिता अपने बेटेका अनभल नहीं चाहते इस विपरीत का कारण बतलाइये ॥

पांचवां अध्याय।

प्रह्लादको पढ़नेके वास्ते हिरण्यकशिपुका बैठालना ॥

नारदजी ने कहा हे युधिष्ठिर शुक्राचार्यके पुत्र सण्डा व मर्क नाम हिरण्यकशिपु व दैत्योंके लड़कोंको पढ़ाया करते थे जब प्रह्लाद पांच वर्ष का हुआ तब हिरण्यकशिपुने उसे उनको सौंपकर कहा कि हमने तुम्हारे पितासे पढ़ाथा प्रह्लादको तुम हमारा धर्म सिखलाओ जब प्रह्लाद वहां और

लड़कोंके साथ पढ़ने लगा तब सण्डा व मर्कने हिरण्यकशिपुकी आज्ञानुसार प्रह्लादसे कहा कि तू नाम हिरण्यकशिपुका जपा कर जब प्रह्लादने गुरुके समझाने व डाटने परभी सिवाय लेने नाम राम व नारायण व विष्णु के हिरण्यकशिपुका नाम मुखसे नहीं लिया तब गुरुने उसके पिताके पास जाकर सब वृत्तान्त कहदिया इसलिये हिरण्यकशिपुने एकदिन प्रह्लाद को अपनी गोदमें बैठाकर पूंछा हे बेटा जो तुमने अपने गुरुसे आजतक पढ़ा हो वह हमें सुनाओ प्रह्लाद बोला हे पिता मैंने सिवाय राम नामके जिनका चर्चा व भजन आठोंपहर करना चाहिये और कुछ नहीं पढ़ा है मेरे जानमें साधु व महात्मोंका सत्संग उत्तम है और मैं नवधा भक्ति परमेश्वरकी अच्छीतरह जानताहूं व नाम उस नवधा भक्तिका यहहै श्रवण परमेश्वर की कथा सुनना कीर्तन ईश्वरका गुणानुवाद वर्णन करना स्मरण भगवान्का नाम जपना पादसेवन नारायणका चरणपूजना अर्चन ठाकुरकी मूर्तिको विधिपूर्वक पूजकर भोग लगाना वन्दन परमेश्वरको बारम्बार दण्डवत् करना दास्य ईश्वरकी भक्ति रखकर भजन गाना सख्य परमेश्वरसे मित्रता व प्रीति रखना आत्मनिवेदन अपना तन मन धन सब भगवान्को अर्पण करके साधु व सन्त व महात्मोंकी संगति व सेवा करना सब वेद व शास्त्रका सार यही है जो हमने तुमसे कहा व गृहस्थी में रहनेसे सिवाय दुःखके सुख नहीं होता वनमें जाकर हरिभजन करना सब बातों से उत्तम समझना चाहिये प्रह्लादकी बात सुनतेही हिरण्यकशिपु क्रोधित होकर बोला हे मूर्ख तू नहीं जानता कि नारायणने वाराह अवतार धरकर हिरण्याक्ष मेरे भाईको मारडाला था सो तू मेरे शत्रुका नाम लेकर उसकी स्तुति करताहै अभी तू बालक अज्ञान होकर मेरा कहना नहीं मानता सयाने होनेपर क्या दशा होगी हे बेटा अपना धर्म छोड़कर दूसरेका धर्म करना व बालकोंको साधु व सन्तकी संगति रखना अच्छा नहीं होता इसलिये तुम साधु व वैरागीका कहना न मानकर अपने गुरु की आज्ञानुसार पढ़ा करो यह सुनकर प्रह्लाद ने कहा मैं उस परमेश्वरको नमस्कार करताहूं कि जिनकी मायासे तुम अपने व दूसरोंमें भेद जानते

हो विना कृपा व दया ईश्वरकी किसीको ज्ञान नहीं मिलता जो कोई शास्त्र पढ़कर परमेश्वरकी भक्ति न रखता हो उसका पढ़ना वृथा है यह वचन ज्ञान भरा हुआ सुनतेही हिरण्यकशिपुने बड़े क्रोधसे कई दैत्योंको बुलाकर कहा कि विष्णु भगवान् दैत्यकुल के वास्ते कुल्हाड़ा है व प्रह्लाद मेरा बेटा उस कुल्हाड़ेका बेंट उत्पन्न होकर मेरा कहना नहीं मानता व मेरे शत्रुका नाम जपकर उसकी बड़ाई करता है सो बड़े लोग प्रथमसे ऐसा कहगये हैं कि जिस अंगमें रोग होकर और अंगका उससे खटका रहै तो उस अंगको काटडालना चाहिये इसवास्ते ऐसे पुत्रका मारना उत्तम समझकर तुमलोग इसको मारडालो यह वचन सुनते ही दैत्यलोग प्रह्लादको वहांसे खींचते हुये बाहर लेजाकर तलवार व तीर व त्रिशूल व गदासे मारनेलगे प्रह्लाद आंख वन्द किये मन अपना हरिचरणोंमें लगाये चुपचाप बैठारहा जब परमेश्वरकी दयासे किसी शस्त्रका घाव प्रह्लादके अंग पर नहीं लगा तब उन दैत्योंने प्रह्लादको पर्वतके ऊपर लेजाकर वहांसे ढकेल दिया तिसपरभी उसके शरीरमें कुछ चोट नहीं लगी फिर दैत्योंने प्रह्लादको बहुत लकड़ियोंके मध्यमें बैठाकर आग लगादिया जब सब लकड़ी जलकर भस्म होगई व श्यामसुन्दरकी कृपासे प्रह्लाद ज्योंका त्यों बीचध्यान नारायणजीके मग्न बैठारहा तब हिरण्यकशिपुने यह महिमा देखकर मनमें कहा देखो बड़ा आश्चर्य है जो प्रह्लाद ऐसे उपाय करनेपर भी नहीं मरता अब मैंने प्रह्लादसे अधिक शत्रुता उत्पन्न की इसलिये नारायणजी उसकी रक्षा करनेवास्ते अवश्य आवैंगे तब उन्हींको मारकर हिरण्याक्षका वदला लूंगा ऐसा विचारकर हिरण्यकशिपुने सण्डा व मर्क से कहा कि हमने प्रह्लादको बहुत दण्ड दिया है अब तुम्हारी आज्ञानुसार पढ़ैगा यह बात सुनतेही प्रह्लादने प्रसन्न होकर मनमें कहा अब मैं पाठशालाके बालकोंको ज्ञान सिखलाऊंगा जब गुरु हिरण्यकशिपुकी आज्ञा से फिर प्रह्लादको पाठशालेमें लेआया तबउसने पूंछा हे प्रह्लाद तुझे वनमें जाकर हरिभजन करना किसने उपदेश दिया है या तैंने अपने मनसे यह बात कहा था तब प्रह्लादने उत्तर दिया हे गुरुजी जो लोग मायारूपी

गृहस्थीके अंधियारे कुयेंमें पड़े रहकर परमेश्वर से विमुखहैं उनको ज्ञान प्राप्त न होकर हरिचरणोंकी भक्ति नहीं मिलती उन्हें गदहे व कुत्तेआदिक पशुके समान समझना चाहिये जबतक संसारी मनुष्य सन्त व महात्माके चरणोंपर शिर अपना रखकर उनकी सेवा मनसा वाचा कर्मणासे नहीं करता व परमेश्वरकी कथा व कीर्तन नहीं सुनता तबतक उसको ज्ञान नहीं प्राप्त होता विना दया व कृपा परमेश्वरकी ज्ञान मिलना बहुत कठिनहै सो मैंने श्यामसुन्दर की दयासे ज्ञान पाकर यह बात कही थी इतनी कथा सुनाकर नारदजी बोले हे युधिष्ठिर देखो सण्डा व मर्क शुक्राचार्य महात्माके पुत्र ज्ञानी व पण्डित होकर दैत्योंकी संगति करने व उनका अन्न खानेसे नारायणजी की महिमा भूल गये थे माया परमेश्वरकी ऐसी बलवान् है सो जबतक कि गुरु पाठशालामें बैठे थे तबतक प्रह्लाद मनमें यह विचार करता था कि जब गुरु यहां से उठकर कहीं बाहर जावें तब मैं पाठशाला के सब बालकों को ज्ञान सिखलाऊं जब गुरु वहांसे उठकर आप बाहर गये तब प्रह्लादने लड़कों की ओर देखकर यह विचार किया कि अभीतक बाल्यावस्था होनेसे इन बालकोंको काम क्रोध मोह लोभ नहीं व्यापाहै इस समय इनको समझाना ज्ञानका तुरन्त प्रवेश करैगा इतनी कथा सुनाकर नारदमुनिने युधिष्ठिरसे कहा कदाचित् कोई पूंछे कि प्रह्लादको उन्हें ज्ञान सिखलानेसे क्या प्रयोजन था उत्तर इस बात का यह है कि प्रह्लादने अपने हृदयमें दया व धर्म रख कर परउपकारके कारण यह चाहा था कि जिसमें यह लोग भी ज्ञानी हो कर मेरी संगतिसे कृतार्थ होजावेंगे यह विचारकर जबप्रह्लाद ने लड़कोंको अपने पास बुलाया तब सब बालक उसे राजकुमार जानकर उसके निकट चले आये॥

छठवां अध्याय।

पाठशालाके बालकों को प्रह्लाद का ज्ञान सिखलाना॥

प्रह्लादने सब बालकों को अपने निकट बैठाकर कहा कि सुनो मित्रो अभीतक बालापन होने से तुमको काम क्रोध लोभ मोह नहीं व्यापा और मन तुम्हारा संसारीमायाजालमें नहीं फँसा इसलिये तुम जिस बातपर चित्त

अपना लगावो वह कामना तुम्हें तुरन्त प्राप्त होसक्ती है सो मैं तुम्हारे कल्याणके वास्ते एक उपाय बतलाताहूं सुनो अभी से मन अपना परमेश्वर के ध्यानमें लगावो व इस बातका विश्वास मानो कि मनुष्य संसारी तृष्णा रखने व स्त्री व पुत्र व धनका मोह करने से सदा दुःखी रहकर जन्म व मरण से नहीं छूटता व इसीकारण हरिचरणों में प्रेम नहीं होता व परमेश्वर से विमुख रहने व जन्म अपना वृथा खोनेवाला मनुष्य अवश्य नरक भोगताहै इसलिये तुम्हें हरिभजन व स्मरण करना उचित होकर संसारीजाल में फँसना न चाहिये परमेश्वरको पहिचानने व हरिभजन करने व नारायण नाम लेने व भवसागरपार उतरने वास्ते यही चैतन्य चोला समझो व कुत्ते व बिल्ली आदिक पशुयोनि में यह प्राप्त न होकर केवल पेट भरने व भोग करनेका ज्ञान रहताहै इसलिये मनुष्य तन पाकर एक क्षण भी परमेश्वरको भूलना न चाहिये व तुमलोग यह बात अच्छी तरह जानते रहो कि जप व पूजा किसी देवताका परमेश्वरके तप व स्मरण समान नहीं होता देवता लोग जप व पूजन करने में प्रसन्न होकर छोड़ देते हैं व नारायणजी अपने भक्तों पर चूक होने से भी क्रोध नहीं करते उन्हें सब जगह वर्तमान जानकर कहीं ढूंढ़ने के वास्ते जाना न चाहिये जिस समय प्रेमपूर्वक उनका ध्यान करो उसी समय वे प्रकट होकर रक्षा करते हैं सो तुमलोग अपनी इन्द्रिय व मनके वश न हो और क्रोध व तृष्णा छोड़कर सतोगुणसे सब जीवों पर दया रक्खो व मनसा वाचा कर्मणासे हरिचरणोंमें ध्यान लगाकर परमेश्वर का नाम स्मरण करो तब तुमको बड़ा सुख मिलैगा कदाचित् तुमलोग मेरे कहनेका विश्वास न मानकर ऐसा कहो कि यह हमारे साथ का बालक होकर हमें ज्ञान सिखलाता है इसने कहांसे पाया सो मैं अपने मनसे यह ज्ञान तुमको नहीं बतलाकर नारदमुनिके वचन अनुसार कहताहूं यह बात सुनकर लड़कोंने कहा हे प्रह्लाद अभी हमलोग बालकहैं वृद्धापनमें परमेश्वर का भजन व स्मरण कर लेवेंगे तब प्रह्लाद बोले सुनो इन्द्रियोंको सब योनि में सुख मिलता है और परमेश्वर का भजन दूसरे तनमें नहीं होसक्ता जो तुम यह समझते हो कि इस जन्ममें संसारीसुख भोग करलेवें फिर मनुष्य

तन पाकर हरिभजन करैंगे सो मनुष्य चोला वारम्वार मिलना दुर्लभ होकर दुःख व सुख पूर्वजन्मोंके संस्कार से मिलताहै व संसारीसुख थोड़े दिन रहकर हरिभजन करनेसे महाप्रलय तक अनेकप्रकारके आनन्द प्राप्त होते हैं जिसतरह आंधी वृक्ष व पत्तोंको उड़ा लेजाती है उसीतरह तुम्हारे दादा व परदादा आदिक पुरुषोंको कालरूपी आंधी मारकर उड़ा लेगई व एक दिन तुम्हारी भी वही दशा होगी जब मायारूपी जालमें फँस गया तव उससे निकल नहीं सक्ता सो तुमलोग भी जव स्त्री व पुत्र के मोह में फँस जावोगे तव परमेश्वरका भजन तुमसे नहीं होगा जिसतरह गाय भैंस आदिक वनमें घास चरने के लालचसे कुयें व मड़ारमें गिरकर चोट खाती हैं उसीतरह मनुष्य मायारूपी अन्धकूपमें गिरनेसे दुःख पाता है जो कोई संसारी मोह छोड़कर हरिचरणों में प्रेम लगावे वह मायारूपी कुयें से बाहर निकल सक्ता है संसारीसुख कांचके समान जानकर हरिभजन व भक्ति करनेसे पारसपत्थर ऐसा आनन्द समझना चाहिये यह वात सुनकर लड़कोंने प्रह्लादसे पूंछा कि तुम्हें नारदजी कहां मिले थे सो वतलाओ ॥

सातवां अध्याय।

प्रह्लादका उपदेश लड़कों को मानना ॥

नारदजी बोले कि हे युधिष्ठिर उन बालकों की बात सुनकर प्रह्लादने कहा कि जव हिरण्याक्ष हमारे चाचाको वाराहजी ने मारडाला व हिरण्यकशिपु मेरा पिता तप करने वास्ते मन्दराचल पर्वतपर चला गया तव इन्द्रने अवसर पाकर नमुचिआदिक दैत्योंको युद्धमें अपने बलसे मारके भगादिया व दैत्योंकी स्त्रियोंको पकड़कर देवलोक में ले चला जव रास्तेमें नारदजी से भेंट हुई तव उन्होंने इन्द्रसे कहा कि तुम इन सव स्त्रियों को क्यों लिये जाते हो इन्द्र बोले हे मुनिनाथ दैत्योंने भी हमारा राज्य छीनकर हमें अति दुःख दियाहै इसीवास्ते हम भी अपना वदला उनसे लेते हैं यह वचन सुनकर नारदमुनि बोले हे इन्द्र इन स्त्रियों में हिरण्यकशिपुकी स्त्रीको जिसके गर्भमें प्रह्लाद हैं तू छोड़ दे प्रह्लाद हरिभक्त होकर देवतोंकी सहायता करैगा तव इन्द्रने उसे नारदमुनि को सौंप दिया व मुझे गर्भ में हरिभक्त सुनकर

उसकी परिक्रमा करके इन्द्रलोक को चला गया व नारदजीने मेरी माता को ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंके स्थानपर जहां वह लोग तप व स्मरण करते थे लाकर रक्खा सो वही ऋषीश्वर भोजन व वस्त्र देकर उसकी रक्षा करतेथे जब कभी मेरी माता अपने स्वामी व परिवारको याद करके रोतीथी तब नारद मुनि आदिक ऋषीश्वर उसे अनेक ज्ञान समझाकर कहतेथे कि हे कयाधू तू चिन्ता मत कर संसारमें कभी दुःख होता है कभी सुख सो तू सन्तोष रख कुछ दिनोंमें हिरण्यकशिपु तेरा पति मन्दराचलसे आनकर तीनोंलोक का राज्य करैगा व तू रानी होगी मैंने अपनी माताके गर्भमें यह ज्ञान सुनकर याद रक्खा था जो तुम्हें सुनाया तुमलोग मेरा वचन सत्य मान-कर उसीके अनुसार करो व नारदजी ने ज्ञान समझाते समय यहभी कहा था कि इस स्त्रीको यह ज्ञान प्राप्त न होकर जो बालक गर्भमें है वह याद रक्खैगा सो मैं वही ज्ञान कहताहूं सुनो मनुष्य पर बाल युवा वृद्धा तीन अवस्था बीततीहैं व परमेश्वर परमात्मा पुरुष जिनका तेज सबके शरीरमें रहकर जीवात्मा कहलाता है वह सदा एकरूप रहकर घटने व बढ़नेसे रहित है व हर्ष व विषाद उनके नहीं होता जो कोई परमेश्वरको इसतरह जाने वह मनुष्य सदा सुखी रहता है कि जिसतरह न्यारिया मिट्टी आन-कर सोनेका चूर निकाल लेता है व मिट्टीसे कुछ प्रयोजन नहीं रखता उसीतरह मनुष्यतनमें परमेश्वरका भजन व स्मरण करके मुक्तिपदार्थ जो सोनेके समान है प्राप्त करले व शरीरको मिट्टी समझकर छोड़दे जो लोग धन व कुटुम्बादिकसे सुख चाहते हैं वह आनन्द सदा स्थिर नहीं रहता व हरिभजन करनेका सुख प्रतिदिन बढ़कर कभी नहीं घटता महाप्रलय तक बना रहता है इसलिये तुमलोग काम क्रोध मोह लोभको जीतकर भगवान्की भक्ति करो उसीमें तुम्हारा बेड़ा पार लगेगा व स्त्री पुत्र राज्य व सेना व कोट व गज तुरंगादिक कुछ काम न आनकर मरती समय कोई बचाने नहीं सक्के कि एकक्षण भी रोक रक्खै और वह सब माया मोह छोड़कर संसारमें रहजाते हैं कोई उसका संग नहीं देता व कोट आदिक गिरानेसे भी जल्दी नहीं गिरते और यह शरीर एक क्षण में नाश होकर मरने

उपरान्त किसी काम नहीं आता व मनुष्य आठों पहर अपने सुखकी वस्तु चाहता है पर विना दया व कृपा ईश्वरकी वह सुख उसे नहीं मिलता जब अपना शरीर संग नहीं जाता तब धन व कुटुम्बादिक उसका साथ क्यों करसक्के हैं व परमेश्वर जैसे भक्ति व स्मरणसे प्रसन्न होते हैं वैसा यज्ञ व तप व दान व व्रतादिक करनेसे सुखी नहीं होते व मैंने जो नारदमुनिसे सुना था उसपर विश्वास किया सो तुमलोग देखो उसी ज्ञानके प्रतापसे कुछ बल हिरण्यकशिपु तीनोंलोकके राजाका जो उसने मेरा प्राण लेनेवास्ते अनेक उपाय किया था नहीं लगा कदाचित् यह कहो कि हमलोग दैत्य बालक मांसाहारी व मद्यपान करनेवाले हैं हमारा तप व भजन नारायणजी किसतरह अंगीकार करेंगे सो ऐसा विचार न करके मेरी बातका विश्वास मानो देवता व दैत्य व मनुष्य जो परमेश्वरका तप व स्मरण करै वही उनको प्यारा है देखो मैं भी दैत्यका पुत्र होकर नारायणजीके शरण गया तो मेरा प्राण बचा नहीं तो मेरे पिताने प्राण लेनेमें कुछ धोखा नहीं लगाया था कदाचित् तुम्हारे माता व पिताभी हरिभजन करनेसे बरजकर तुम्हें दुःख देवेंगे तो परमेश्वरकी सहायतासे उसी तरह उनका बलभी तुम्हारे ऊपर कुछ नहीं चलेगा यह ज्ञान सुनकर सब लड़के बोले कि हे प्रह्लाद हमलोगोंने तुम्हारा उपदेश माना आजसे गुरुकी झूठी बात न मानकर तुम्हारी आज्ञानुसार सब काम करेंगे ॥

आठवां अध्याय।

नारायणजी का नृसिंह अवतार लेना व हिरण्यकशिपुको मारना ॥

नारदजीने कहा हे युधिष्ठिर जब प्रह्लादके ज्ञान उपदेशसे सब लड़के भी गुरुका पढ़ाना छोड़कर नाम नारायण व विष्णु व रामका लेने लगे और सण्डा व मर्कने घरसे आनकर यह दशा उनकी देखी तब गुरुने हिरण्यकशिपुका भय मानकर लड़कोंसे कहा तुम लोग क्या कहते हो उन्होंने उत्तर दिया कि इस तनमें जो बात हमको करना चाहिये सो करते हैं तुम्हारी झूठी झूठी बातें पढ़कर किसवास्ते अपना जन्म अकार्थ खोवैं जब गुरुके धमकाने व हिरण्यकशिपुके भय सुनाने पर भी लड़कोंने राम

नाम लेना नहीं छोड़ा तब गुरुने जाना कि इन सब बालकोंको प्रह्लादने ज्ञान सिखलाकर अपना ऐसा बना लिया यह बात विचारकर जब गुरुने प्रह्लादपर अतिक्रोध करके धमकाया व प्रह्लाद हँसकर चुप होरहा तब संडा व मर्क प्रह्लादआदिक बालकोंको हिरण्यकशिपुके पास लेजाकर बोले महाराज तुम्हारे पुत्रने सब बालकोंको ऐसा बहका दिया कि वह लोग सिवाय नारायणनाम लेनेके दूसरी बात मुखसे नहीं कहते यह वचन सुनतेही हिरण्यकशिपु क्रोधित होकर बोला हे प्रह्लाद मैंने तुझे बहुत दण्ड देकर समझाया कि नारायणका नाम मत ले पर तू मेरा कहना नहीं मानता इससे मैंने जाना कि तेरी मृत्यु निकट पहुँची है जिस तरह ऋषीश्वर व योगियोंको इन्द्रियां दुःख देती हैं उसी तरह तू मेरा शत्रु उत्पन्न हुआ इसलिये तेरा वध अपने हाथसे करूंगा देखूं कौन राम व नारायण तेरा प्राण बचाता है यह सुनकर प्रह्लाद भक्त बोला हे पिता तुम विश्वास करके मानो जिसकी शक्तिसे सब जीव तीनोंलोकमें वर्तमान हैं और तुम राज्य करते हो व वही अविनाशी पुरुष सबसे बलवान् सर्वत्र रहते हैं उनसे अधिक संसारमें कोई उत्तम व पवित्र व मालिक न होकर उन्हींको सब जीवोंकी उत्पत्ति व पालन व नाश करनेवाला समझना चाहिये जो कुछ वह चाहते हैं सो होता है उनकी इच्छामें किसीको श्वास लेनेकी सामर्थ्य नहीं रहती वही आदि निरंकार मेरी रक्षा भी करेंगे व हे पिता अपनेको तीनोंलोक का राजा समझकर सब जीवोंको अपने आधीन जानते हो जब तुमने अभीतक मन व इन्द्री व काम व क्रोध आदिक को अपने वश्य नहीं किया व उनके आधीन रहकर नष्ट होरहे हो तब दूसरे को क्या अपने वश्य करोगे तुम्हें उचित है कि राजसी स्वभाव व अधर्म करना छोड़कर मन व इन्द्रियोंको अपने आधीन रक्खो और हरिचरणोंका ध्यान व स्मरण किया करो तब संसाररूपी महाजालसे छूटकर भवसागर पार उतर जाओगे सुनो जिसकी मृत्यु निकट पहुँचती है उसकी बुद्धि ठिकाने नहीं रहती सो मैं जानताहूं तुम्हारी मृत्यु आन पहुँची इसी कारण तुम परब्रह्म अपने उत्पन्न करनेवालेको भूल गयेहो यह ज्ञान सुनतेही हिरण्यकशिपु बड़ा क्रोधकरके

बोला कि हे प्रह्लाद मुझसे बलिष्ठ तेरा नारायण कहां है उसे तुरन्त बुलाओ जो आनकर तेरी रक्षा करै प्रह्लादने कहा वह ईश्वर सर्वत्र अपने भक्तों की रक्षा करनेवास्ते रहते हैं तब हिरण्यकशिपु उनके मारनेवास्ते खड्ग निकालकर और खंभेकी ओर आंख दिखलाके प्रह्लाद से बोला इसमेंभी तेरा नारायण है प्रह्लादने कहा परमेश्वर खंभेमें भी मुझे दिखलाई देते हैं हिरण्यकशिपु भी ईश्वरका भय मनमें रखता था इसलिये डरता हुआ खम्भेकी ओर देखकर बोला कि हे प्रह्लाद मुझे नारायणजी इसमें नहीं दिखलाई देते तूने झूठ किसवास्ते कहा अब तुझे मारता हूं जो तेरा सहायक खंभे में या जहां हो उसे तुरन्त बुला कि वह आनकर तुझे मेरे हाथसे छुड़ावै यह वचन सुनतेही जैसे प्रह्लादने परमेश्वरका स्मरण व ध्यान करके खंभे की ओर देखा वैसेही नारायणजी नृसिंह अवतार शरीर मनुष्य व मस्तक सिंह ऐसा धरकर उस खंभेमें दिखलाई दिये सो हिरण्यकशिपुने वह स्वरूप देखतेही एक मुका बायें हाथसे ऐसा मारा कि खम्भा फट गया और उसके भीतरसे नृसिंह भगवान् दश योजनका शरीर धारण किये अपने भक्की बात सच करनेवास्ते प्रकट हुये और बड़े क्रोधसे ऐसा ललकारा कि तीनों लोक में वह शब्द सुनतेही ब्रह्मा व इन्द्र व देवता व दैत्य व मनुष्यादिक जीव मारे डरके कांपने लगे हिरण्यकशिपुने उनका तेज देखतेही घबड़ा कर मनमें कहा यह आश्चर्यवत् रूप मैंने आज तक कभी नहीं देखा था व ब्रह्माने मुझे ऐसा वरदान दिया है कि तू मनुष्य व देवता व दैत्य व पशु व पक्षी आदिक किसीके हाथसे नहीं मरेगा सो यह रूप ऐसा प्रकट हुआ जिसे न मनुष्य कहना चाहिये न पशु व ब्रह्माने कहा था कि तू न दिनको मरैगा न रातको सो यह सन्ध्या समय है इसे न दिन कहना चाहिये न रात और मैंने ब्रह्मासे यह वरदान मांगा था कि कोई जीव तुम्हारा उत्पन्न किया हुआ मुझे मार न सकै सो वह स्वरूप ब्रह्माने नहीं बनाया है इसलिये मैं जानता हूं कि ब्रह्माका वरदान झूठा न होकर यह मुझे अवश्य मारैगा हिरण्यकशिपु इसी शोच व विचार में खड़ा था कि उसके साथी दैत्य नृसिंहजीके डरसे भाग गये जब हिरण्यकशिपु उनके सन्मुख

आनकर अपनी गदा उनपर चलाने लगा तब नृसिंहजी उसकी गदा पकड़कर इसतरह उससे लड़ने लगे कि जिसतरह पहलवान लोग अपने चेलों को कुश्ती लड़ाते हैं व बिल्ली चूहेको पकड़कर खेल खिलाती है जब इन्द्रादिक देवतोंने जो नृसिंह भगवान्का दर्शन करने वहां आये थे यह दशा देखने से संदेह मानकर मनमें कहा कदाचित् हिरण्यकशिपु इनसे नहीं मारा गया तो हमलोगों का दुःख किसतरह छूटैगा तब नृसिंहजी अन्तर्यामीने देवतोंके मनकी बात जानकर हिरण्यकशिपुको पकड़ लिया व उसकी सभाका जो स्थान था वहां डेवढ़ीमें ले आये व लड़कोंके समान अपने जंघेपर लेटाके पेट उसका नखोंसे फारडाला उस समय हिरण्यकशिपु हँसने लगा तब नृसिंहजीने पूछा कि तू क्या हँसता है तब हिरण्यकशिपु बोला कि लड़ती समय जब इन्द्रने अपनी गदा मुझे मारी थी तब वह गदा मेरे अंगसे चोट खाकर टूट गई व मुझको कुछ दुःख नहीं पहुँचा सो अब नखोंसे मेरा पेट फाड़ा जाता है यही बात समझकर मुझे हँसी आई अब मैंने जाना कि यह सब मेरे दिनोंका फेर है जो इसतरह मरताहूं ऐसा कह कर जब हिरण्यकशिपु मरगया तब नृसिंहजी उसकी आंतड़ी मालासमान अपने गलेमें पहिनकर राजसिंहासन पर बैठे उस समय उन्हें महाक्रोध उत्पन्न हुआ जब नृसिंहजीका क्रोध देखकर तीनोंलोकके सब जीव कांपने लगे तब देवतों ने ब्रह्मासे कहा तुम जाकर स्तुति करो कि जिसमें क्रोध उनका शान्त हो सो ब्रह्माने नृसिंहजीके पास जाकर दण्डवत् व परिक्रमा करके विनय किया हे त्रिलोकीनाथ आप आदिपुरुष सब जीवोंको उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाले हैं कोई ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो तुम्हारी स्तुति जिसका आदि व अन्त नहीं है वर्णन कर सकै अब हिरण्यकशिपु मारा गया क्रोध अपना क्षमा कीजिये जब स्तुति करने पर भी नृसिंहजीने क्रोधदृष्टिसे ब्रह्माको देखा और वह मारे डरके फिर आये तब महादेव ने देवतोंके कहनेसे नृसिंहजीके पास जाकर इस तरह पर स्तुति की हे दीना-नाथ आपने अपने भक्तकी रक्षावास्ते अवतार लिया है सो हिरण्यकशिपु मारा गया अब क्रोध अपना शान्त कीजिये एक छोटे दैत्यको मारकर

इतना क्रोध न करना चाहिये महाप्रलयमें तुम्हारे क्रोध से तीनोंलोक का नाश होजाता है अभी वह समय नहीं आया इसलिये क्षमा करना उचित है नहीं तो इस क्रोधकी अग्नि से सब जीव भस्म हुआ चाहते हैं जब शिव जी के स्तुति करने पर भी क्रोध उनका नहीं शान्त हुआ तब इन्द्रने हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनदयालु हिरण्यकशिपुके मारे जाने से सब देवता सुखी हुये व होममें देवतोंका भाग वह आप लेता था अब तुम्हारी दयासे हमलोग अपना अपना अंश पावैंगे सो क्षमा कीजिये जब इन्द्रके स्तुति करनेसे भी क्रोध उनका नहीं गया तब लक्ष्मीजीने शृंगार किये कमलका पुष्प लिये वहां जाकर हाथ जोड़के कहा महाराज मैंने आजतक ऐसा तेजमान स्वरूप तुम्हारा कभी नहीं देखा था इसलिये यह रूप देख कर मुझे भय प्राप्त होता है सो यह स्वरूप अपना अन्तर्धान कीजिये जब लक्ष्मीजीके स्तुति करने पर भी नृसिंहजीने क्रोध अपना क्षमा नहीं किया तब वरुण व कुबेर व गन्धर्व व विद्याधर आदिक देवतोंने आपसमें विचारकर कहा यह अवतार नारायणजीने केवल प्रह्लाद भक्तका प्राण बचाने वास्ते लियाहै उसीके विनती करने से क्रोध उनका क्षमा होगा ऐसा विचारकर ब्रह्मादिक देवतों ने प्रह्लादसे कहा कि तुम जाकर नृसिंहजी का क्रोध क्षमा कराओ नहीं तो तीनोंलोक नाश हुआ चाहते हैं यह वचन सुनकर प्रह्लाद बोले बहुत अच्छा योगी का बेटा योगी से नहीं डरता सो उनकी आज्ञानुसार प्रह्लाद साष्टांग दण्डवत् करता हुआ नृसिंहजी के पास गया और परिक्रमा लेकर उनके चरणोंपर अपना शिर धर दिया उस समय प्रह्लादका हृदय मारे हर्ष के ऐसा गद्गद होगया कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता व प्रह्लाद उस स्वरूपका कुछ डर न मानकर बड़े प्रेम से हाथ जोड़कर स्तुति करनेलगा॥

नवां अध्याय।

नृसिंहजी का क्रोध शान्त होना॥

नारदजी बोले हे युधिष्ठिर जैसे प्रह्लादने नृसिंहजी के चरणों पर शिर रखकर स्तुति की वैसे उन्होंने क्रोध क्षमा करके प्रह्लादका शिर प्रेमसे उठा

कर उसको अपनी गोद में बैठा लिया व उसके मस्तक पर हाथ फेरकर बोले हे बेटा तू मत डर क्या चाहता है जब यह वचन कहते हुये नृसिंहजी के नेत्रों में आंसू भर आये तब प्रह्लाद भक्त उनके प्रेमसे रुदन करता हुआ हाथ जोड़कर बोला हे दीनानाथ मेरा जन्म दैत्यकुल में जो मांसाहारी व मद्यप हैं हुआ सो मैं बालक अज्ञान तुम्हारी स्तुति जिनका आदि व अन्त कोई नहीं जानता विना आज्ञा आपकी नहीं करने सक्ता और हे दीनदयालु मुझ अधर्मी कुलके बालक पर दयालु होकर आपने रक्षा की इसलिये अपने बराबर दूसरेका भाग्य नहीं समझता व आप उत्पत्ति व पालन व नाश करनेवाले तीनोंलोकके हैं व ब्राह्मण चारों वर्ण में उत्तम होकर शूद्रको सब से छोटा जानते हैं पर मेरी समझसे ब्राह्मण उसीको जानना चाहिये कि जो आपका तप व स्मरण करै और जो ब्राह्मण तुमसे विमुख रहकर तुम्हारे चरणोंकी भक्ति नहीं रखता वह नामके वास्ते ब्राह्मण है व जो शूद्र हरिचरणों में भक्ति व प्रीति रखकर तुम्हारे नामका स्मरण व भजन करते हैं मैं उन शूद्रोंको ब्राह्मणसे श्रेष्ठ जानता हूं व आप संसारमें केवल हरिभक्तोंके सुख देने व अधर्मियोंको भवसागर पार उतारनेवास्ते सगुण रूप धरते हैं जिससे संसारी लोग तुम्हारे सगुण रूपका ध्यान करके और उन अवतारोंकी लीला आपसमें कह व सुनकर उसके प्रतापसे मुक्ति पावैं व मनुष्य लोग अपने सुख व कल्याणके वास्ते तुम्हारा तप व भजन करते हैं नहीं तो आपको किसीसे अपनी स्तुति व तप करानेका क्या प्रयोजन है किस वास्ते कि आप सर्वगुणनिधान होकर किसी बात का अवगुण नहीं रखते व संसारी वस्तुकी आपको कुछ इच्छा नहीं है तुम्हारे भक्त ऐसी सामर्थ्य रखते हैं कि जो बात शुभ या अशुभ किसीको कहें उसी समय वैसा होजाता है आपकी महिमा कौन वर्णन कर सक्ता है आप चाहते तो हिरण्यकशिपुका नाश अपनी इच्छासे कर देते सो हे दीनानाथ आप जितना भक्ति करनेसे प्रसन्न होते हैं उतना तप व यज्ञ व दानादिकसे प्रसन्न नहीं होते जो ब्राह्मण सब वेद व पुराण जाननेवाला तुम्हारी भक्ति न रखता हो उस ब्राह्मणसे डोम हरिभक्तको उत्तम समझना चाहिये यज्ञ व तपादिक

करनेसे केवल अपना भला होता है व भक्ति करनेवालेके सात पुरुषा वैकुण्ठमें जाते हैं आप ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व लक्ष्मीजीके स्तुति करनेसे नहीं प्रसन्न होकर मुझ अज्ञान बालकके विनय करनेसे आपने क्रोध क्षमा किया इसलिये मैंने अपनेको बड़ा भाग्यवान् जाना व हे त्रिलोकीनाथ जिस तरह सांपके मारनेसे मनुष्य प्रसन्न होते हैं उसी तरह संत व महात्मा लोग हिरण्यकशिपुके मारे जानेसे आनन्द हुये और मैं तुम्हारे इस तेजवान् रूप व दांत व नखसे कुछ भय न मानकर संसार-रूपी मायासे अति डरता हूं सो दया करके मुझेइस मायारूपी अन्धे कुयें से बाहर निकालकर अपनी शरणमें रक्खो व हे त्रिलोकीनाथ आपने मेरे शिरपर हाथ रखकर मुझे कृतार्थ किया ऐसा दीनदयालु संसारमें कोई दूसरा नहीं है सो आपका यह स्वरूप देखकर सब देवता डरते हैं व मैं इस रूप का भय न मानकर बहुत प्रसन्न हूं किसवास्ते कि आपने यह अवतार धरकर मेरा प्राण बचाया है फिर मैं क्यों डरूं जिस तरह वनमें सब जीव बाघसे डरते हैं व बच्चा उसका कुछ भय न मानकर उसे अपना पिता व रक्षा करनेवाला जानता है उसी तरह मैं भी तुमको अपना पिता समझकर इस भयानकरूपसे कुछ नहीं डरता पर देवतोंका डर छुड़ानेवास्ते दया करके अब इस स्वरूपको अन्तर्धान कीजिये ॥

दशवां अध्याय।

प्रह्लाद पर नृसिंहजी का दया करना ॥

नारदजीने कहा हे युधिष्ठिर प्रह्लादकी स्तुति सुनकर नृसिंहजी बोले हे प्रह्लाद मैं तुमसे अति प्रसन्न हूं कुछ वरदान मांग प्रह्लादने हाथ जोड़कर विनय किया हे त्रिलोकीनाथ मैंने संसारी सुख भूलोंक व देवलोक दोनों जगहका देखा पर वह सुख सदा स्थिर नहीं रहता एक दिन उसका नाश होजाता है कदाचित् आप यह कहें कि तू बालक अज्ञान क्या जानता है तैंने कहां देखा था सो हे महाप्रभु हिरण्यकशिपु मेरा पिता तीनों लोकका राजा ऐसा प्रतापी था जो इन्द्र व वरुण व कुबेरादिक देवतोंसे हँसकर यह बात कहता था कि ऐसा काम तुमने क्यों किया तो वह लोग डरकर भाग

जाते थे अब उसी हिरण्यकशिपु को देखता हूं कि मरा पड़ा है जानो कभी नहीं था जब अपना शरीर स्थिर नहीं रहता तो संसारी वस्तुका क्या विश्वास है कि उसे मांगूं जिसतरह अज्ञान बालकको दीपक दिखलाकर उसके माता पिता फुसलाते हैं उसी तरह वरदान देनेवास्ते कहकर आप भी मुझे ललचाते हैं संसारमें तीनों लोकके राज्यसे उत्तम कोई वस्तु नहीं होती सो मैं उसकी भी चाहना नहीं रखता किसवास्ते कि यह तन मेरा सदा स्थिर नहीं रहेगा फिर किस आश्रय पर आपसे कोई वस्तु लूं मुझे यही एक इच्छा है कि जन्म जन्मान्तर दिन रात सन्त व महात्मों की संगतिमें रहकर तुम्हारे नामका स्मरण व चरणोंकी भक्ति करता रहूं व एक क्षण भी तुम्हारी याद मुझे न भूले सिवाय इसके अपने वास्ते और कुछ चाहना नहीं रखता दूसरी इच्छा यह है कि जो लोग अपने अज्ञानसे बीच अँधेरे कुयेंमें माया मोह स्त्री व पुत्र व धन संसारीसुखके लटके हैं उनको ज्ञानरूपी रस्सी पकड़ाकर इस कुयेंसे बाहर निकाल के भवसागर पार उतार दीजिये जिसमें उनका कल्याण हो कदाचित् आप यह कहें कि जिन्होंने जैसा जैसा कर्म शुभ या अशुभ किया है वैसा वैसा फल भोग करैंगे सबकी मुक्ति नहीं होसक्ती सो मेरे तप व भजन शुभकर्मोंका जो फल हो वह उन्हें देकर कृतार्थ कीजिये व उनके अधर्म व पाप करनेके बदले जो उचित हो सो दण्ड दीजिये मैं उसे भोग करूंगा पर वह लोग वैकुण्ठका सुख पावें व हे महाप्रभु मनुष्य अपने अभाग्य व अज्ञानता से तुम्हारी कृपा व दया व पालन करनेपर विश्वास न करके किसी उत्तम पदार्थ मिलने से जानता है कि यह वस्तु मैंने अपने पराक्रमसे पाई और यह नहीं जानता कि सब पदार्थ नारायणजी देकर मेरा पालन व रक्षा करते हैं कदाचित् मनुष्य के परिश्रम से कोई वस्तु मिलती तो संसारका द्रव्य व सुन्दर स्त्री व सब पदार्थ सुखके अपने घर ले आता हे दीनदयालु संसारी मनुष्य दिनरात दुःखसागरमें पड़ा रहकर पहिले अपने पेट भरने की चिन्तामें कि विना भोजन किये रहा नहीं जाता व्याकुल रहता है दूसरे सैकड़ों स्त्री से भोग करने पर भी मन उसका न तृप्त होकर सदा

नवीन स्त्रीकी चाहना रखता है ऐसे मूर्ख मनुष्यको ज्ञान देकर भवसागर पार उतार दीजिये जबतक तुम्हारी दया व कृपा नहीं तबतक छूटना उस का मायारूपी जालसे कठिन है कदाचित् आप यह कहें कि तुझे इन लोगों की मुक्ति होनेसे क्या लाभ होगा सो मेरे विनय करनेका यह कारण है कि तुम्हारी एक बेर की कृपादृष्टिसे उन बिचारोंका जो दुःख-सागर में पड़े हैं भला होजायगा यह बात आपकी प्रभुताई से कुछ दुर्लभ नहीं बड़े लोग छोटोंपर सदासे कृपा करते आये हैं जिसतरह समुद्रमें से कोई मनुष्य एक कटोरा पानी लेकर अपनी प्यास मिटाले तो समुद्र सूख नहीं जाता उसी तरह तुम्हारी थोड़ी कृपा करनेमें उनका कल्याण होकर आपका कुछ नहीं घट जावेगा ॥

दो० तुलसी पक्षिन के पिये सरिता घटै न नीर। धर्म किये धन ना घटै जो सहाय रघुबीर ॥

यह वचन सुनकर नृसिंहजी बोले हे बेटा मैंने क्रोध अपना क्षमा किया तुझे अपने वास्ते जो इच्छा हो मांगले पर दूसरोंकी मुक्ति जो चाहता है सो सब जीवोंको वैकुण्ठ जानेकी इच्छा नहीं होती ॥

दो० मायारूपी जाल में सबकी है यह चाल। अपनी अपनी खालमें सबी जीव खुशहाल ॥

इतनी बात सुनकर प्रह्लाद बोला हे जगत्पालक मैं निष्काम भक्त होकर किसी वस्तुकी चाहना नहीं रखता संसार में जब कोई मनुष्य किसी के पास जाकर कुछ मांगता है तब उसके मुखका तेज क्षीण होजाता है व विना इच्छा किसीके पास न जाने व भेट करने में उसका तेज बना रहताहै कदाचित् तुम्हारी इच्छा निज करके देनेवास्ते हो तो ऐसा वरदान दीजिये जिसमें मुझे किसी वस्तुकी चाहना न रहै तृष्णा रखनेसे धर्म नहीं रहता व लज्जा छूट जाती है व जिनको लालच व चाहना नहीं रहती वे राजा इन्द्र व मंगन दोनों को समान जानते हैं व जो कोई परमेश्वरका तप व भजन करके उससे कुछ मांगता है उसे मजदूरके तुल्य समझना चाहिये इसलिये मैं कुछ नहीं मांगता तुम्हारी इच्छा पर प्रसन्न हूं यह वचन सुनते ही नृसिंहजी बोले हे बेटा तू मेरा बड़ा मित्र व भक्त है इसलिये मैं चाहता हूं कि तू अपने पिता के सिंहासनपर बैठकर इकहत्तर चौकड़ी राज्य कर

कदाचित् तेरा दूसरा भाई राज्य करैगा तो संसारी जीव कहैंगे कि प्रह्लाद ने हरिभक्त होने पर भी राज्य नहीं पाया व तुझे मेरी आज्ञा पालना चाहिये व तू धैर्य रख हमारी कृपा से तुझे काम क्रोध लोभ मोह यह सब विकार राजगद्दीके नहीं व्यापेंगे व मेरे चरणों में प्रीति बनी रहैगी जिसतरह मेरे परमभक्त लोक व परलोक किसी सुखकी चाहना नहीं रखते उसीतरह तुझ को भी कुछ तृष्णा न रहकर महाप्रलय तक संसारमें तेरा यश स्थिर रहैगा ऐसा कहकर जब नृसिंहजी गायके समान प्रह्लाद का अंग चाटने लगे तब प्रह्लादने उनकी आज्ञा मानकर विनय किया हे महाप्रभु मेरा पिता अपने अज्ञानसे तुम्हारे साथ शत्रुता रखकर भक्तिहीन था इसलिये तुम्हें अपने भाईका मारनेवाला समझकर उसने दुर्वचन कहा है सो आप उसका बेटा समझकर मुझसे कुछ बुरा न मानियेगा जो कोई परमेश्वर व वेद व शास्त्र व सन्त व महात्माकी निन्दा करता है वह इस महापाप करनेसे अति दुःख पाकर जल्दी कृतार्थ नहीं होता इसवास्ते मेरा पिता नरक भोग करैगा सो आप मेरे ऊपर दयालु होकर उसका उद्धार कीजिये यह बात सुनकर नृसिंहजीने कहा हे प्रह्लाद तू अपने पिताका कुछ शोच मत कर वह अधर्म करने के बदले नरकको न जावेगा जिस कुलमें तेरा ऐसा हरिभक्त उत्पन्न हुआ उस कुलवाले स्वप्नमें भी यमदूतोंको नहीं देख सक्ते हमने तेरे इक्कीस पुरुषा नरकसे निकालकर स्वर्गमें भेज दिये तेरा पिता किस तरहसे नरक भोगेगा मेरे भक्तोंके सात पुरुषा नरक से निकलकर स्वर्गवास करते हैं वेद व शास्त्रमें मगहदेशको मरने वास्ते अशुद्ध लिखा है पर वहां भी मेरे भक्तों के जाने व रहनेसे वह धरती पवित्र होकर उसका दोष मिट जाताहै अधर्मी व पापी होने पर भी तुझे अपने पिता का दाहकर्म व श्राद्ध करना चाहिये जब प्रह्लाद नृसिंह भगवान् की आज्ञानुसार दग्ध व श्राद्ध हिरण्यकशिपु का कर चुका तब नृसिंहजीने प्रह्लादको राजसिंहासन पर बैठाकर तिलक लगाया उस समय सब दैत्य व देवतों ने वहां जाकर प्रह्लादको यथायोग्य दण्डवत् कर आशीर्वाद दिया व ब्रह्मादिकदेवतों ने नृसिंहजीको दण्डवत् व स्तुति करके विनय किया हे कृपानिधान आपने बहुत अच्छा किया व

हिरण्यकशिपु अधर्मीको मारा जो दयाकी राह वरदान मुझ ब्रह्माका स्थिर रक्खा यह बात सुनकर नृसिंह भगवान् बोले हे ब्रह्मा फिर तुम किसी दैत्य को ऐसा वरदान मत देना सर्पको अमृत पिलाना न चाहिये ऐसा कहकर नृसिंहजी वहांसे अन्तर्धान होगये व प्रह्लादने ब्रह्मा आदिक देवता व शुक्राचार्य पुरोहितका विधिपूर्वक पूजन करके सब देवतों को विदा किया व आप आठोंपहर हरिचरणोंका ध्यान रखकर साथ धर्म व प्रजापालन के राज्य करनेलगा उसके राज्यमें देवता व ऋषीश्वर व गौ व ब्राह्मण व सन्त व महात्मा आनन्दपूर्वक रहकर परमेश्वरका भजन व स्मरण करते थे कोई जीव दुःखी नहीं था इतनी कथा सुनाकर नारदजी बोले हे युधिष्ठिर तुमने हिरण्यकशिपु व प्रह्लादके विरोध होनेका हाल जो मुझसे पूछा था सो मैंने वर्णन किया वही हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष दूसरे जन्म में रावण व कुम्भकर्ण हुये व तीसरे जन्म शिशुपाल व दन्तवक्र होकर जब श्रीकृष्णजी के हाथसे मारे गये तब वैकुण्ठमें जाकर जय विजय द्वारपाल परमेश्वरके हुये जो कोई परमेश्वरकी कथा व लीला कहता व सुनता है वह कर्मोंकी फांसीसे छूटकर स्वप्ने में भी यमदूतों को नहीं देखता हे युधिष्ठिर तुम बड़े भाग्यवान् व पूर्वजन्मके तपस्वी व धर्मात्मा हो देखो जिस परब्रह्म परमेश्वर के चरणोंका ध्यान ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता आठोंपहर अपने हृदय में रखकर उनकी आज्ञापालन करते व बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वर जिनका दर्शन ध्यान में भी जल्दी नहीं पाते वही श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथ तुम्हें अपना भक्त जानकर तुम्हारी आज्ञामें बने रहतेहैं इसीवास्ते भक्तवत्सल इनका नाम संसारमें प्रकट हुआ है एकबेर महादेवजीने भी इन्हीं श्यामसुन्दर की सहायतासे त्रिपुर नाम दैत्यको मारा था उसी दिनसे शिवजी त्रिपुरारि कहलाते हैं इतनी कथा सुनकर युधिष्ठिरने पूछा हे मुनिनाथ इसकी कथा वर्णन कीजिये नारदजी बोले एक समय देवतोंने दैत्योंको युद्धमें जीत लिया तब सब दैत्य ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार कि उनका तप दैत्योंने किया था मय नाम दानवकी शरणमें गये सो उसने दैत्योंको अपनी माया व इन्द्रजाल के मन्त्रसे तीन किला चांदी व सोने व लोहे के विमानके समान

बना दिये कि वह तीनों किले आकाशमार्गमें कभी दिखलाई देकर कभी अन्तर्धान होजाते थे जब पुर नाम दैत्योंका राजा बहुत दैत्य उसी विमान में साथ लेकर देवतों से लड़ने वास्ते चढ़ा तब इन्द्रादिक देवतों ने उसके सन्मुख जाकर अपने अपने शस्त्र उस पर चलाये जब देवतों के हथियार उस कोटकी दीवार में लगकर टूट गये तब दैत्यों ने अपने शस्त्र मारकर उनको हटा दिया जब दैत्यलोग तीनों लोक जीतने पर भी उस किलेमें दिन रात रहकर मनुष्य व देवतोंको ढूंढ़ ढूंढ़के मारने व दुःख देने लगे तब सब देवतों ने शिवजी की शरण में जाकर उनसे सहायता अपनी चाही जब महादेवजी उनके सहायक होकर दैत्यों को युद्धमें मारने लगे तब मय दानवने अपनी मायासे उस कोट में एक कुण्ड अमृतका बना दिया सो जितने दैत्योंको महादेव मारकर गिराते थे उन्हें वह दानव उठाकर उस अमृतकुण्डमें डाल देता था तब फिर वह लोग जीकर शिवजीसे लड़ने लगते थे जब इसी तरह कई दिनतक महादेवजीने दैत्योंसे लड़कर उनको मारा और वह लोग अमृतकुण्डके प्रतापसे कम नहीं हुये तब शिवजी ने दैत्योंकी यह दशा देखकर अपना धनुष बाण पृथ्वी पर पटक दिया व नरायणजीका ध्यान करनेलगे तब श्यामसुन्दर दीनदयालुने महादेवजी को उदास देखा तब ब्रह्माको बछड़ा बनाया व आप गायरूप धरके उस कुण्डपर जाकर अमृत पीने वास्ते मुह लँबाया वैसे किसी दैत्य रखवारी करनेवालेने कहा यह गौ अमृत पीती है इसको मारना चाहिये दूसरेने उत्तर दिया कि यह गाय बछड़ा अति सुन्दर है पीने दो कितना पीवैंगे जब नारायणजीने अपने गायरूप की सुन्दरताई दिखलाकर सब दैत्य रखवारी करनेवालोंको मोह लिया व क्षण भर में सब अमृत उस कुण्डका पीकर वहांसे अन्तर्धान होगये तब दैत्यलोग अमृतकुण्ड सूखा देखतेही मय नाम दानवके पास जाकर रोने लगे जब कुण्डके सूखनेका समाचार मय दानव ने सुना तब उसने दैत्योंसे कहा हे भाई कोई जीव आप परमेश्वर नहीं हो सक्ता जो हरिइच्छा टालने सकै यह वचन कहने उपरांत मय नाम दानव नारायणजीको दैत्यों से विमुख देखकर उस विमानसे बाहर चला गया व

श्यामसुन्दरने महादेव के पास जाकर उन्हें धैर्य दिया व एक रथ व धनुष बाण देकर उनसे कहा अब अमृतकुण्ड दैत्योंका सूख गया है तुम इस रथ पर बैठकर इसी धनुष बाणसे युद्ध करो तुम्हारी विजय होगी यह वचन सुनतेही महादेवने बड़े हर्षसे नारायणजीको दण्डवत् करके विनय किया हे दीनदयालु विना कृपा तुम्हारी मुझसे क्या होसक्ता है जिसतरह आप देवतोंकी रक्षा सदा करते आये हैं उसी तरह आज भी कृपालु होकर मेरी सहायता की जब धनुष बाण देकर वैकुण्ठनाथ चले गये तब शिवजीने उसी धन्वा पर एक बाण रखकर चलाया तो उस बाण के लगतेही माया-रूपी तीनों कोट पुरनाम आदिक दैत्योंसमेत जलकर भस्म होगये व श्यामसुन्दरकी दयासे महादेवने विजय किया व इन्द्रादिक देवता अपना राज्य पाकर प्रसन्न हुये हे युधिष्ठिर देखो ऐसा प्रताप श्रीकृष्णजीका है यह महिमा श्यामसुन्दरकी सुनकर युधिष्ठिर ने अपने को धन्य करके जाना व इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित नारायणजी अपने भक्तों की अवश्य रक्षा करते हैं ॥

ग्यारहवाँ अध्याय ।

नारदजीका राजा युधिष्ठिरसे चारों वर्ण व चारों आश्रमका धर्म कहना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित इतनी कथा सुनकर राजा युधिष्ठिर नारदमुनिकी बहुत स्तुति करके बोले हे मुनिनाथ आप दयालु होकर वह धर्म चारों वर्ण व चारों आश्रमका वर्णन कीजिये जिस धर्म करनेमें नारायण जी प्रसन्न होते हैं तब नारदमुनिने कहा हे राजा जिस किसी में यह सब गुण हों उसको तुम जानना कि इस धर्मात्मासे परमेश्वर प्रसन्न हैं उस मनुष्यको पहिंचानने वास्ते यह सब लक्षण उसमें देखना चाहिये पहिले वह सत्यवादी होकर झूठ न बोलै दूसरे वह अन्तःकरण में दया रखकर जिसे दुःखी देखै अपने सामर्थ्यभर उसका दुःख छुड़ानेवास्ते उपाय करै तीसरे अपने वित्तानुसार दान देकर अकेले भोजन न करै जो पदार्थ उत्तम मिलै उसमें से पहिले ब्राह्मण आदिक चारों वर्णको देकर पीछे से आप खावै चौथे अपना चित्त परमेश्वर के भजन व स्मरण में लगाये रखकर नवधा

भक्ति उनकी करता रहै पांचवें अति लालच छोड़कर सन्तोष रक्खे व संसारी मायासे विरक्त रहकर साधु व महात्माकी भक्ति व सेवा करै छठवें परमेश्वर अवतार की लीला व कथा प्रेमपूर्वक कह व सुनकर जीवहिंसा छोड़ दे सातवें इन सब बातों में जितना बन पड़े उतना ध्यान रक्खै जो मनुष्य इन शुभ कर्मों में से कोई बात नहीं करता वह पशु के समान है हे युधिष्ठिर परमेश्वरकी भक्ति चारोंवर्ण व चारों आश्रम को करना चाहिये जो ब्राह्मण अपने कर्म व धर्म वेद पढ़ने व संध्या करने में सावधान रहकर परमेश्वर की भक्ति न रखता हो तो उसका वेद पढ़ना व संध्या करना सब वृथा समझो इसीतरह से क्षत्रिय व वैश्य व शूद्र तीनोंवर्ण गृहस्थ व ब्रह्मचारी व वानप्रस्थ व संन्यासी चारों आश्रमको ध्यान व स्मरण व भक्ति नारायणजी की सच्चे मनसे करना चाहिये जिसमें बेड़ा उनका पार लगै व धर्म चारों वर्णका विलग विलग है उसकी कथा सुनो ब्राह्मण उसे कहना चाहिये जिसका सब संस्कार विधिपूर्वक जन्म लेने व मुण्डन व जनेऊ व विवाह करने के समय हुआ हो और वह पालन अपना खेतमें का गिरा हुआ अन्न चुनने व भिक्षा मांगने से किया करै व चलन भीख मांगनेका ऐसा है जो भिक्षा विना मांगे मिलै वह भीख अमृत तुल्य है जो मांगनेसे पावै उसको भिक्षासमान कहते हैं यह दोनों तरहकी भीख उत्तम होकर किसीको दुःखी करके जो लेते हैं वह भिक्षा मांसके तुल्य होती है सो ब्राह्मणको नित्य वेद व शास्त्र पढ़ना व चर्चा उनकी आपसमें रखकर दूसरों को विद्या पढ़ाना चाहिये व आप यज्ञ व होम करना व दूसरोंसे यज्ञ व होम कराना व दान लेना व दूसरेको दान देना ब्राह्मणका धर्म है व क्षत्रिय वर्णका धर्म ऐसा लिखते हैं कि यज्ञ व होम आप करै व ब्राह्मणके हाथसे भी करावै व वेद व शास्त्र आप पढ़कर दूसरोंको भी पढ़ावै आप दान देकर दूसरेसे दान न लेवै व नौकरीका उद्यम रखकर साधु व ब्राह्मणका भक्त होवै व शूरवीर व धर्मात्मा होकर अपने मन व इन्द्रियों को वशमें रक्खै व वैश्य वर्ण व्यापार करै वणिजविद्या में निपुण रहै व देवता व ब्राह्मण में आधीनताई से भक्ति रख कर क्षत्रिय व ब्राह्मणकी बराबरी न करै व शूद्र सेवा व टहल ब्राह्मण

आदिक तीनों वर्णकी जो उससे उत्तम हैं करके अपना कुटुम्ब पाले व शूद्र को वेदके मंत्र से यज्ञ व होम करना न चाहिये व ब्राह्मण देवतातुल्य होते हैं इसलिये उनको नौकरी व सेवा मनुष्यकी करना अत्यन्त वर्जित है कदाचित् कोई कहै कि द्रोणाचार्य ऐसे महात्माने किसवास्ते दुर्योधनकी नौकरी की थी सो उनका यह वृत्तान्त है कि एक दिन अश्वत्थामा बेटा द्रोणाचार्य का लड़कपन में किसी बालकको दूध पीते देखकर अपने पितासे कहा मैं भी दूध लूंगा द्रोणाचार्य को दरिद्रतासे इतनी सामर्थ्य नहीं थी जो दूध मोल लेकर उसे देते इसलिये उन्होंने सफेद मिट्टी जिससे लड़के लिखते हैं पानी में पीसकर दूध की जगह अपने बेटा को दिया जब अश्वत्थामा ने उसे दूध समझकर पी लिया तब द्रोणाचार्यने मनमें कहा देखो मेरे ऐसे जीने पर धिक्कार है कि पावभर दूध पुत्रके पीनेवास्ते मेरा किया नहीं होसका इसी दुःखसे द्रोणाचार्य राजा दुर्योधनके पास जाकर रहने लगे पर उन्हों ने महीना बांधकर उससे नहीं लिया हे युधिष्ठिर चारों वर्णका धर्म हमने तुमसे कहा अब स्त्रियोंका धर्म सुनो वह अपने स्वामीको देवता व परमेश्वर तुल्य जानकर उनकी आज्ञामें रहैं व मीठे वचन बोलकर किसी को कठोर बात न कहैं व अधिक लोभ न रखकर अपने स्वामी व बड़ोंकी टहल शुद्ध मनसे करैं व अपने रहनेका स्थान पवित्र रक्खैं थोड़ा या बहुत जो कुछ भूषण व वस्त्र परमेश्वर दे उसको पहिनकर मगन रहैं व सिवाय सचके मिथ्या वचन अपने स्वामी से न कहकर सन्तोष रक्खें और जो स्त्री अपने कर्मोंके फलसे विधवा होजावे उसको किसी वस्तुसे पेट भर लेना और वस्त्रसे तन ढांपकर परमेश्वरका भजन व ध्यान करना उचित है विधवा स्त्रीको भोजन आदिकमें स्वादकी इच्छा रखना व उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर शृंगार करना न चाहिये जो स्त्री अपने धर्म व कर्मसे रहिकर ऐसा करती हैं वह स्त्रियां भी मरने उपरांत वैकुण्ठमें जाकर लक्ष्मीसमान अपने स्वामी के साथ सुख व विलास भोगती हैं व चारोंवर्णकी स्त्री पुरुष को चोरीआदिक कुकर्मोंसे रहित रहना चाहिये व नित्य स्त्री व पुरुषके भोग करनेमें जल्दी सन्तान नहीं होती इसलिये ज्ञानी मनुष्यको उचित है

कि जब स्त्री रजस्वला होकर चौथे दिन स्नान करै उस दिन स्त्रीप्रसंग करने से सन्तान धर्मात्मा उत्पन्न होती है दिनके मैथुन करनेसे तेज व बल व धर्म नाश होकर आयुर्दा क्षीण होजाती है व जो कोई रजस्वला होने पर चौथे दिन अपनी स्त्रीके पास न जाकर परस्त्रीगमन करता है उसे महापापी व अधर्मी समझना चाहिये सिवाय इन चारों वर्णके और जो वर्णसंकर आदिक हैं उनको ऐसा उचित है कि उनके कुलमें जिसतरह से धर्म व कर्म चला आता है उसी तरह वह लोग अपना धर्म रक्खें॥

बारहवां अध्याय।

नारदजीका चारों आश्रमका धर्म वर्णन करना॥

नारदजी बोले हे युधिष्ठिर चारों वर्णका धर्म हमने तुमसे वर्णन किया अब चारों आश्रमका धर्म जो उन्हें करना चाहिये सुनो ब्रह्मचारी का धर्म यह है कि जब किसीकी इच्छा ब्रह्मचर्य लेनेके वास्ते हो और उसके माता व पिता आज्ञा देवैं तब वह बीस वर्षकी अवस्था में उसी इच्छा से गुरु के घर जाकर रहै व एकाग्र मनसे उनकी सेवा करै और गुरुकी आज्ञानुसार पढ़कर उनकी टहल व सेवा करना पढ़नेसे उत्तम समझै व प्रातःकाल व सन्ध्या समय गुरु नारायण व सूर्य व अग्निआदिक देवतों का पूजन विधिपूर्वक किया करै व जटा शिरपर रखकर शिर व दाढ़ी आदिक किसी अंगका बाल कभी न मुड़ावै और जो भिक्षा माँगकर लावै सब गुरुके आगे रक्खै जब गुरु आज्ञा दे तब भोजन करै व क्रोध करना व दुर्वचन कहना छोड़कर गुरुकी निन्दा न करै व अतर व फुलेल व चन्दन आदिक सुगन्ध व सुरमा व मिस्सी लगाना व मांस खाना व मद पीना त्यागकर पांच वर्ष ब्रह्मचर्यसे गुरु के घर रहै पर उनकी स्त्रीसे हँसकर न बोलै दूरसे दण्डवत् करलेवै व कभी स्त्रीका प्रसंग न करै व उसके साथ बात करना व स्त्रीका गाना सुनना छोड़कर उनके पास अकेलेमें न बैठे जिसमें इन्द्रियां व मन उसका चलायमान न होवे स्त्रीको अग्नि व पुरुषको घृत समान समझना चाहिये सो घी अग्निका साथ पाकर विना पिघले नहीं रहता कदाचित् बीस वर्ष की अवस्थामें चित्त उसका गृहस्थी करनेवास्ते चाहै तो

उत्तमकुलमें विवाह करके गृहस्थ धर्म से रहै व विवाह करनेकी इच्छा न हो तो जन्मभर गुरुके घर रहकर किसी स्त्रीको कुदृष्टि से न देखै व धर्म वानप्रस्थका यह है कि जब गृहस्थीमें पचास वर्षकी अवस्था हो तब अपनी स्त्रीसमेत वनमें जाकर परमेश्वरका तप व स्मरण करै व सिवाय कन्द मूल व फलादिकके खेतका बोया हुआ अन्न न खावै व कन्द मूल आदिक न मिलै तो वृक्षका पत्ता खाकर रहै पर फल व पत्ता वृक्षमेंसे न तोड़कर पृथ्वीका गिरा हुआ खावे व वनमें स्त्री समेत अकेली जगह रहकर छाल का वस्त्र पहिने व जो अतिथि व मंगन आजावै उसको भी वही फल व कन्द मूल खिलाकर उसी फलादिक से होम किया करै व क्षौरादिक छोड़कर वर्षा में बीच मैदानके बैठे व जाड़े में जलवास करके गर्मी में पंचाग्नि तापै इसतरह का तप एक वर्ष या दो वर्ष या चार वर्ष या आठ वर्ष या बारह वर्ष जहां तक बन पड़े वहां तक करके ब्रह्मका विचार करता रहै तो वह ब्रह्मरूप होजाता है॥

तेरहवां अध्याय।

नारदजी को राजा युधिष्ठिर से संन्यासधर्म की कथा कहना॥

नारदजी बोले हे युधिष्ठिर वानप्रस्थ पचहत्तर वर्षकी अवस्था में संन्यास लेकर दण्ड कमण्डलु धारण करै व धर्म संन्यासीका यह है कि पहिले जिसतरह ब्राह्मणोंने वेदमंत्रसे उसके गलेमें जनेऊ पहिनाया था उसीतरह मंत्र पढ़कर जनेऊ गलेसे उतार डालै व पूर्व आश्रमका धर्म छोड़दे व किसी नगर व गांवमें एक रात्रिसे अधिक न रहै पर भिक्षा मांगनेको बस्ती में जाकर जो कुछ साधारणसे दूध भिक्षा मिलै उसे लेकर शास्त्रानुसार कर्म अपना करता रहै व कुछ वस्तु आदिक अपने पास न बटोरै अकेला रहकर दण्ड व कमण्डलु एकक्षण न छोड़े व सब जीवोंपर दया रखकर हरिचरणोंका ध्यान करता रहै व परब्रह्मका प्रकाश जड़ व चैतन्य सब तन में एकसा समझै व किसीको चेला न मूड़े व मठादिक अपने रहनेके वास्ते न बनवाकर बस्तीके बाहर रहै व भोजन व वस्त्रका शोच न रखकर वेद व शास्त्र पढ़ने व सुननेका अधिक अभ्यास रक्खे व संसारको स्वप्नवत

समझकर मरनेकी चिन्ता व जीनेका हर्ष न करै इतनी कथा सुनाकर नारदजी बोले कि हे राजा हमने ब्रह्मचर्य व वानप्रस्थ व संन्यासका धर्म तुमसे कहा अब एक संन्यासी का इतिहास कहते हैं सुनो प्रह्लादजी राज्य पर बैठकर एक समय अपने देशमें सैर करने वास्ते निकले जिस स्थान पर किसी ज्ञानीका समाचार मिलता था वहां जाकर उसके साथ हरिचर्चा बड़े प्रेमसे करते थे सो एक दिन रेवानदीके किनारे पहुँचकर क्या देखा कि एक अवधूत दत्तात्रेय नाम अति पुष्ट व तेजस्वी नंगे शिर नदीके तटपर पड़ा हुआ परमेश्वरके ध्यानमें लीन है प्रह्लाद उस अजगरमुनिको देखते ही शिबिका परसे उतर पड़ा व उसके निकट जाकर बोला हे परमहंस मूर्ति तुम हमको बड़े गुणवान् व महात्मा दिखलाई देकर कुछ भोजन व वस्त्रादिक अपने पास नहीं रखते व संसारी व्यवहारसे रहकर कुछ उद्यम नहीं करते और न कुछ किसी से मांगते तिसपर भी बहुत मोटे दिखलाई देते हो व जगत् में हम देखते हैं कि विना उद्यम किये किसीको द्रव्य न मिलकर विना धन संसारी सुख नहीं मिलता व संसारीजीव अनेक उद्यम करने पर भी दुर्बल रहते हैं इसका क्या कारण है सिवाय इसके और जो कुछ ज्ञान परमेश्वरने आपको दिया हो वह भी थोड़ा कहो यह बात सुनतेही अजगरमुनि उठ बैठे व प्रह्लादको हरिभक्त जानकर बोले कि हे प्रह्लाद तुमने जो पूछा कि तू कुछ उद्यम नहीं करता व मोटा दिखलाई देता है इसका हाल सुनो मैंने जगत् में उद्यम करके बहुत द्रव्य कमाया पर मेरी तृष्णा नहीं छूटी जब मैंने देखा कि लोभरूपी कमण्डलु मेरा किसी तरह नहीं भरता व जितना द्रव्य अधिक बटोरता हूं उतनाही लोभ प्रति दिन बढ़ता है तब मैंने विचारा कि मनुष्यतन पाकर किसवास्ते जन्म अपना अकार्थ खोऊं कदाचित् इसीतरह संसारीमायामें फँसा रहकर एकदिन मर-गया तो नरकमें जाकर अवश्य दुःख भोगूंगा इसलिये संसारी तृष्णा छोड़-कर आठों पहर परमेश्वरके ध्यानमें मग्न रहता हूं जिनके हृदय में हरिचरणों का वास रहता है वहलोग अशोच रहकर पुष्टहोते हैं व संसारीचिन्ता रखने से मनुष्य दुर्बल होता है व बाहरका अन्धकार सूर्य के प्रकाशसे मिटकर

भीतर अन्तःकरणका अँधियारा परमेश्वरकी भक्ति करने से छूटजाता है व जो तुमने यह कहा कि तू कोई वस्तु अपने पास न रखकर किसीसे कुछ नहीं मांगता सो मैंने बहुत धनपात्रों को देखा है कि वह लोग द्रव्य बटोरने से सदा चिन्तामें रहकर प्रथम भय राजाकी रखते हैं ऐसा न हो कि जो कोई कलंक लगाकर हमारा धन छीन लेवे दूसरे चोर व डाकूके डर व खटके में रातको अच्छी तरह निद्रा नहीं आती तीसरा भय अपने नातेदारों का लगा रहता है और वह लोग इसी विचारमें दिनरात रहते हैं कि किस तरह इनका द्रव्य हमको मिलै इसी कारण धन बटोरनेवालों को सुख नहीं मिलता जिसतरह मक्खियां अति परिश्रमसे छत्ते में शहद बटोरकर कृपणतासे उसको नहीं खातीं जब बहुतसा मधु उसमें इकट्ठा होता है तब कोल व मुसहर आदिक उस छत्ते में अग्नि लगाकर शहद अपने घर लेजाते हैं उन मक्खियों को शहद बटोरनेमें सिवाय दुःखके कुछ सुख नहीं मिलता उसी तरह द्रव्य बटोरनेवालोंको भी अति दुःख होकर वह धन उनके काम नहीं आता इसीवास्ते मैं संसारी मोह छोड़कर विरक्त होगया जिसतरह अजगर सर्प चलने की सामर्थ्य न रखकर एक स्थान पर पड़ा रहता है व परमेश्वर उसी जगह उसको आहार पहुँचाते हैं उसीतरह मैं भी पड़ा रहकर दिनरात परमेश्वर के ध्यान में मग्न रहता हूं जो कुछ प्रारब्धानुसार कोई दे जाता है उसे खाकर सन्तोष रखता हूं॥

दो० अजगर करै न चाकरी पक्षी करै न काम। दास मलूका यों कहै सबके दाता राम॥

हे प्रह्लाद कदाचित् कोई दयासे खीर पूरी मुझे देगया तो उसे खाकर कुछ बखान उसका नहीं करता व जो कोई दुर्वचन कहकर साग रोटी अलोनी खिला जाता है उससे भी कुछ खेद नहीं मानकर यह समझता हूं कि यह सब मेरे कर्मानुसार होता है व किसी दिन भोजन न मिलने व उपास करने पर भी प्रसन्न रहकर यह जानता हूं कि आज मेरे भाग्य में भोजन नहीं लिखा था व कभी कोई मेरे अंगमें चन्दनादिक सुगन्ध लगाके उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर हाथी व घोड़ा व सुखपालपर बैठा देता है व कभी पृथ्वीपर धूरि में पड़ा रहता हूं सो मुझे उसके मिलनेका हर्ष व छूटने का

विषाद कुछ नहीं होता इसीतरह हम आनन्दपूर्वक जन्म अपना काटते हैं सो हे प्रह्लाद यह जीव चौरासीलाख योनि में भ्रमकर मनुष्यतन पाता है जो कोई भरतखण्डमें चैतन्य चोला मनुष्यका पाकर हरिभजन व स्मरणमें विमुख रहा उसे बड़ा अभागी व मूर्ख समझना चाहिये प्रह्लाद यह ज्ञान सुनकर अति प्रसन्न हुआ व अजगरमुनिसे विदा होकर अपने घर आया ॥

चौदहवां अध्याय ।

नारदजी का राजा युधिष्ठिर से गृहस्थाश्रमका धर्म कहना ॥

नारदजी ने कहा हे युधिष्ठिर अब हम गृहस्थाश्रमधर्म कहते हैं सुनो जब ब्रह्मचारी वेद आदिक पढ़कर गृहस्थी करना चाहै तो वह अपने देश के राजासे जाकर कहै हम विद्या पढ़ चुके अब तुम्हारे नगरमें गृहस्थाश्रम होकर रहैंगे तब राजा को उचित है उसके विद्या की परीक्षा लेवै व अपने कोश से द्रव्यादिक देकर उसका विवाह उत्तम कुल में करादेवै व गृहस्थ होने उपरांत वह ब्राह्मण अपने धर्मानुसार उद्यम करके अपना कुटुम्ब पालै व चारों वर्णके गृहस्थको चाहिये कि प्रतिदिन यथाशक्ति दान व पुण्य करें जिसके घर कोई वस्तु दान देनेकी न हो उसको जिस समय कुछ भोजन करनेवास्ते मिले उसमें से कुछ देदे व गृहस्थ व ब्रह्मचारी व वानप्रस्थ व संन्यासीके भोजन व वस्त्रकी सुधि अवश्य लेना चाहिये किसवास्ते कि इन तीनों आश्रमको धनादिक बटोरना वर्जित है व गृहस्थाश्रमको नित्य पितरों का श्राद्ध व तर्पण करके अमावस व पूर्णमासी व संक्रांति व द्वादशी व व्यतीपात व वर्षगांठिके दिन अवश्य कुछ दान देना चाहिये व ब्राह्मण कुरुक्षेत्र व गया व काशी व प्रयाग व मथुरा व अयोध्या व हरद्वार व बैजनाथ व जगन्नाथजी आदिक तीर्थों पर रहते हैं उनके द्रव्यादिक दान देने से सौगुना मिलता है पर ब्राह्मणको नारायणरूप समझकर दान देवै व गृहस्थ प्रतिदिन कथा व लीला परमेश्वरकी सुनकर हरिचरणोंका ध्यान व स्मरण रक्खे ऐसा जानता रहै कि आत्मा सब जीवों में एकसा है जिस तरह सोने व मिट्टी का बर्तन पानी भरकर रख देव तो चन्द्रमा व सूर्य की छाया दोनों बर्तनमें बराबर पड़ती है उसीतरह जीवात्मा परमेश्वरके प्रकाश

को ब्राह्मण व क्षत्रिय व चाण्डाल व पशु व पक्षीआदिक सबके तनमें समान समझकर किसी जीवको दुःख देना न चाहिये आत्मा में कुछ ब्राह्मण व क्षत्रिय व शूद्रवर्ण का भेद नहीं होता व गृहस्थको धर्मकी कमाई से देवतों के नामपर यज्ञ व होम करना व मंगन व कंगालोंको भोजन व वस्त्र देना और अपने कुटुम्ब व परिवारवालोंको पालना उचित है पर मनसे घरवालों को ऐसा समझै कि जिसतरह रातको चारोंदिशाके पथिक एक जगह वास करके प्रातःकाल बिलग होजाते हैं फिर उनका साथ नहीं रहता उसीतरह संसारी जीव अपने अपने कर्मों के फल से उत्तम व नीच कुल में जन्म ले कर इकट्ठे होते हैं व पूर्व जन्मों के संस्कार से अपना अपना बदला लेकर मरने उपरान्त न मालूम किस योनिमें चले जाते हैं इसलिये उनसे अधिक प्रीति न रक्खै व काम क्रोध मोह लोभ अपने शत्रुओं को जीतकर पति-व्रता स्त्रीके समान हरिचरणों में ध्यान लगाकर मुक्त होवै नहीं तो फिर यह तन मिलना बहुत कठिन है व अधर्म व पाप करनेसे नरकोंका दुःख अ-वश्य भोगकर सदा आवागमनमें फँसा रहैगा व मरतीसमय हाथी व घोड़ा व द्रव्यादिक कुछ संग नहीं जाता इसलिये धन पाकर दान व धर्म करना चाहिये जो सूमलोग धन जोड़कर मरजाते हैं उनको यमपुरी में चोरोंके समान दण्ड मिलता है व जिन परिवारवालों को झूठ सच बोलकर जन्म भर पालता है उस दुःखमें वह लोग कुछ सहायता नहीं करते व अपना शरीर भी गल सड़कर कुछ काम नहीं आता इसलिये मनुष्यको अपना परलोक बनानेवास्ते ब्राह्मणको देवता तुल्य समझकर अच्छा भोजन खि-लाना व उसकी सेवा करना उचित है इसमें परमेश्वर अतिप्रसन्न रहते हैं व गृहस्थको अपने परिवारवालों का जो कोई मरजावै क्रिया व कर्म अ-वश्य करना चाहिये व तीर्थपर रहनेसे मन मनुष्यका अधर्म की तरफ नहीं जाता और किसी जगह रहने में चित्त पापकी तरफ दौड़ता है व कलि-युगवासी जीव परमेश्वरका भजन व स्मरण करने व कथा व लीला सुनने से कृतार्थ होते हैं ॥

पन्द्रहवां अध्याय ।

गृहस्थाश्रम की कथा ॥

नारदजी बोले हे युधिष्ठिर गृहस्थाश्रमको देवता व पितरोंके नाम पर यज्ञ व श्राद्धादिक में अच्छे कुलीन क्रियावान् वेद व शास्त्र जाननेवाले हरिभक्त ब्राह्मणको भोजन कराना चाहिये ऐसा ब्राह्मण खिलानेसे अति-पुण्य होता है जिसतरह अच्छी धरती पर थोड़ा अन्न बोनेसे बहुत उत्पन्न होकर ऊसर पृथ्वीपर कुछ नहीं उपजता सो देवकर्म व पितरकर्ममें तीन ब्राह्मणसे कम कभी न खिलावे व यज्ञ श्राद्धमें जीवहिंसा न करै देवता व पितरलोग जीवहिंसा करने से प्रसन्न नहीं होते और सब यज्ञोंसे ज्ञानयज्ञ कथा व कीर्तन परमेश्वरकी कहना व सुनना अतिउत्तम व पवित्र है और सब कर्मोंमें बड़ा धर्म यह जानो कि मनसा वाचा कर्मणासे किसीका अन-भल न चाहे और सन्तोष रक्खै जिनको सन्तोष नहीं होता वह बड़े बड़े पण्डित व ज्ञानीभी नरकवास करते हैं व गृहस्थको प्रतिज्ञा किसी बातकी न करना चाहिये जो गृहस्थ अपने धर्मसे विपरीत चलकर और ब्रह्मचारी अपने व्रत व धर्मको छोड़देता है व जो वानप्रस्थ अपने तपसे धर्मको न मानकर जो संन्यासी लालच रखकर अपनी इंद्रियोंका सुख चाहता है वह लोग नामके वास्ते आश्रम का रूप बनाये हैं पर उस धर्मका फल उनको नहीं मिलता व हे राजन् चारों वर्ण व चारों आश्रमको ऐसा उचित है कि चैतन्य चोला पाकर दोतरहका कर्म करें एक प्रवृत्ति व दूसरा निवृत्ति सो शास्त्र की आज्ञानुसार प्रवृत्तिकर्म करनेवाला जीव चन्द्रमण्डल की राहसे देवलोकादिकमें जाकर अपने कर्मोंका सुख भोगता है और अवधि बीतने पर फिर संसारमें जन्म लेकर आवागमनसे छुट्टी नहीं पाता व निवृत्तिकर्म करनेवाले सूर्यमण्डलके मार्गसे वैकुण्ठमें पहुँचकर जन्म व मरणसे छूट जाते हैं सो हमने दोनों राह तुझको बतलादिया जो गृहस्थ हमारे कहने व शास्त्रानुसार अपने कर्म व धर्मसे रहै वह परमहंसपदवी को गृहस्थाश्रम में भी पानेसक्ता है व जो कोई संन्यास व वैराग्य लेकर फिर गृहस्थीकी चाहना करै उसको कुत्तेके समान जो उबांत करके खालेता है समझना

चाहिये परमेश्वरकी मायामें संसारी मनुष्य लपटकर नष्ट होरहे हैं जिस तरह रथका घोड़ा जोता हुआ जिधर चाहे उधर खींचकर लेजावे रथका कुछ वश नहीं चलता उसीतरह रथरूपी शरीरका मन चंचल घोड़ा अपने कर्मों से जिस लोकमें चाहै वहां लेजाने सक्ता है इसलिये मनुष्यतनमें शुभ कर्मकरके वैकुण्ठ व स्वर्गका सुख भोगना चाहिये व ज्ञानसे अधिक पदवी है जिस भक्ति व भजनके प्रतापसे मैं ब्रह्माका पुत्र हुआ वह कथा सुनो पिछले महाकल्पमें हम उपवर्ण नाम गन्धर्व महासुन्दर उत्पन्न होकर गाना अच्छा जानते थे व अतिसुन्दर होने से अनेक स्त्रियां मुझे चाहती थीं सो मैं भी उनपर मोहित रहकर उनके साथ भोग व विलास करता था सो एक दिन मैं बीचसभा विश्वसर्जेदेवताके जाकर गाने लगा पर चित्त मेरा एक स्त्रीसे उन दिनों में बहुत फँसा था इसलिये उससमय गाना मेरा नहीं बन पड़ा व अंगिरा ऋषीश्वरका कुरूप देखकर मैंने हँसदिया इसी अपराधसे उस देवताने मुझे शाप देकर कहा तू शूद्र होजा उसी शापसे मैं दूसरे जन्म एक ब्राह्मणकी दासीका पुत्र हुआ वहांपर सत्संग व हरिभजन करनेके प्रतापसे फिर मुझे नारदपदवी मिली सो हे युधिष्ठिर तुम बड़े भाग्यवान् हो जिनका नाम लेने व भजन करनेसे मनुष्य कृतार्थ होकर ऐसी पदवी को पहुँचता है वही श्रीकृष्ण परब्रह्म परमेश्वर दिन रात तुम्हारे सम्मुख रह-कर तुम्हें अपना बड़ा जानते हैं ऐसा भाग्य दूसरेका होना अतिदुर्लभ है व हमलोग ऋषीश्वर देवतादिकभी उन्हींका दर्शन करनेवास्ते तुम्हारे पास आया करते हैं सो श्यामसुन्दरके दर्शन व पूजा करनेसे तुम्हारी मुक्ति होने में कुछ संदेह नहीं है यह वचन सुनतेही राजा युधिष्ठिर व अर्जुन ने श्रीकृष्णजीके प्रेममें डूबकर बड़ा शोच करके मनमें कहा देखो परमेश्वर त्रिलोकीनाथको हमने अपना भाई जानकर उनसे नातेदारोंके समान काम लिया जब ऐसा विचारकर दोनों भाई श्यामसुन्दरके चरणोंपर शिर रखकर रोने लगे तब श्यामसुन्दरने सैनमें नारदमुनिसे कहा कि तुमने किसवास्ते मेरा भेद खोल दिया अब यह लोग नातदारीकी प्रीति छोड़-कर मुझे ईश्वरभाव समझेंगे नारदजी बोले हे दीनानाथ आजतक यह

लोग तुम्हारी मायामें लपटे थे अब इनका मोह छुड़ाकर इन्हें कृतार्थ कीजिये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित यह सब महिमा व बड़ाई श्यामसुन्दरकी सुनतेही राजा युधिष्ठिरने अतिप्रसन्न होकर बड़े प्रेमसे श्रीकृष्णजी व नारदमुनिकी विधिपूर्वक पूजा की व उसी दिनसे युधिष्ठिर श्यामसुन्दरको पूर्ण ब्रह्म जानकर उनका ध्यान व स्मरण करने लगे व नारदमुनि वहांसे ब्रह्मलोक को चले गये ॥

आठवां स्कन्ध ॥

परमेश्वरको हरिअवतार लेकर हाथीका प्राण बचाना व वामन अवतार धरकर राजा बलिसे तीनपग पृथ्वी दान लेना ॥

पहिला अध्याय ।

शुकदेवजीका मन्वन्तरोंकी कथा कहना ॥

राजा परीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले हे शुकदेव स्वामी राजा स्वायम्भुवमनुके वंशका हाल मैंने सुना अब मन्वन्तरोंका नाम व जिस जिस मन्वन्तर में परमेश्वर ने जो जो अवतार लिये थे उनकी कथा सुना चाहता हूं सो कहिये शुकदेवजी बोले हे परीक्षित स्वायम्भुवमनु से लेकर आज तक छःमन्वन्तर बीते हैं सो पहिले मन्वन्तरकी कथा जिसमें वही स्वायम्भुवमनु राजा होकर दो पुत्र तीन कन्या उत्पन्न किये थे तीसरे व चौथे व पांचवें स्कन्धमें तुमसे वर्णन कर चुके हैं उन्हींकी तीसरी कन्या आकूती नाम जो रुचिप्रजापति को ब्याही गई थी उसी मन्वन्तरमें यज्ञभगवान्ने अवतार लिया सो एक समय राजा स्वायम्भुवमनु सुभद्रा नदी के तट पर एक पगसे खड़े होकर तप करते थे उस समय राक्षसोंने आनकर उनके तप में विघ्न करना चाहा तब उन्हीं यज्ञभगवान्ने राक्षसोंके हाथसे स्वायम्भुवमनुको बचाकर तीनों लोककी लक्ष्मीसमेत राज्य भोगा यह सब कथा पहिले मन्वन्तरकी है दूसरा स्वारोचिष नाम मनु अग्निका पुत्र हुआ उसमें देवता आदिक मनुके बेटे व रोचननाम इन्द्र व तुषिता आदिक देवता व ऊर्जस्तम्भ आदिक सप्तऋषि हुये व शिरस ऋषीश्वरके यहां विभवनाम परमेश्वरने अवतार लेकर अट्ठासी हजार ऋषीश्वरों को ज्ञान उपदेश किया तीसरा उत्तमनाम मनु राजा प्रियव्रतका पुत्र हुआ उसमें पवन आदिक मनु के बेटे व सत्यजितनाम इन्द्र व सत्य आदिक देवता व परमेश्वर आदिक सप्तऋषि हुये व धर्मकी सुनीता स्त्री से सत्यसेन नाम परमेश्वरने

अवतार लेकर पापी व दुष्टोंका नाश करके सत्यको स्थिर किया चौथा तामस नाम मनु उत्तमका भाई हुआ उसमें पृथु आदि मनुके बेटे व विसख नाम इन्द्र व सत्यक आदि देवता व ज्योतिधर्म आदिक सप्तऋषि भये व हरिमेधा ऋषीश्वरके यहां हरिनाम परमेश्वरने अवतार लेकर ग्राहसे गजेन्द्रको छुड़ाया इतनी कथा सुनकर परीक्षितने विनय किया महाराज जिस तरह परमेश्वर ने गजको ग्राहसे छुड़ाया था उसकी कथा वर्णन कीजिये॥

दूसरा अध्याय।

शुकदेवजीका गजेंद्र व ग्राहकी कथा कहना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित परमेश्वर अविनाशी पुरुष जन्म लेने व मरनेसे रहित हैं ब्रह्माआदिक देवताभी उनके आदि व अन्तको न जान कर निरंकाररूप उनका प्रकट नहीं देखने सके जब कभी हरिभक्तोंपर दुःख पड़ता है तब वह अपने भक्तकी रक्षा करनेवास्ते सगुणअवतार लेकर संसारमें एक नाम अपना प्रकट करदेते हैं उसीतरह हाथीका प्राण बचाने वास्ते भी हरिने अवतार धारण किया था व कथा उसकी इसतरह पर है एक पर्वत त्रिकूट नाम दशहजार योजन लम्बा व चौड़ा व ऊंचा क्षीर समुद्रके मध्यमें होकर तीन शिखर सोने व चांदी व लोहेके रखता था व उस शिखरमें अनेक रंगके उत्तम रत्न ऐसे जड़े थे कि जिसका प्रकाश सूर्य से अधिक था व उस पहाड़पर देवता व गन्धर्वादिक अपनी अपनी स्त्रियों समेत रहकर विहार करते थे और वहां संगमरमरके कुण्ड बने रहकर अनेक रंगके पक्षी मीठे मीठे शब्द बोलते थे व ऐसे उत्तम बगीचे अनेक रंग के पुष्प व फल लगेहुये वहां बने थे जिसके देखनेसे मन सबका मोहि जाता था व योजन पर्यन्त उन पुष्पोंकी सुगन्ध उड़ती थी वहां पर एक तालाब बहुत बड़ा कमल फूला हुआ होकर उसमें कच्छ मच्छ व ग्राहादिक रहते थे सो एकदिन गजेंद्र सब हाथियोंका राजा जो उस पर्वतपर रहता था जेठमहीनेमें दोपहर के समय प्यासा होकर हजार हथिनी व कई हजार बच्चोंको साथ लिये उस तालाबपर जल पीनेवास्ते चला सो मद बहनेसे चारोंओर उसके भँवरे गूंजते थे जब वह अपने उमंगसे कि दश

हजार हाथीका बल रखता था रास्तेमें झूमता व वृक्षोंको गिराता व पत्तों को खाता हुआ तपनका मारा तालावमें जाकर घुसा व जल पीके अपनी हथिनी व बच्चों को शूंड़से पानी पिलाकर उनके साथ कलोल करने लगा तब उसके उद्धारका समय निकट पहुँचने से एक ग्राहने जो उससेभी बलवान् था आनकर हाथीका पिछला पैर जलके भीतर पकड़ लिया सो हाथी व ग्राहसे युद्ध होने लगा कभी गजेंद्र अपने बलसे ग्राहको खींच-कर सूखेमें लेआता व कभी ग्राह उसको खींचकर पानीमें लेजाता था जब इसीतरह उन दोनों को लड़ते लड़ते हजार वर्ष बीतगये व कोई हथिनी व बच्चा अपने अपने परिश्रम करने पर भी गजेंद्रको ग्राहसे छुड़ाने नहीं सका तब अधैर्य होकर उन्होंने समझा कि अब हाथी जीता नहीं बचेगा इसके साथ हमलोग अपना प्राण क्यों देवें जब ऐसा विचारकर हाथीको वहां अकेला छोड़कर वनमें चलेगये तब गजेंद्रने जिसका प्राण कण्ठमें आलगा था उन्होंके चले जानेसे घबराकर विचार किया देखो इस महा-दुःखमें कोई मेरा साथी न होकर हथिनी व बच्चोंनेभी मुझे अकेला छोड़ दिया व उनकी सहायतासे भी कुछ गुण न हुआ इससे मैंने जाना कि मेरे पूर्वजन्मके पापोंने ग्राहरूप होकर मेरा पैर पकड़ा है जैसा कर्म मैंने किया था वैसा फल भोगता हूं और यह सब देवता व गन्धर्वादिक अपने अपने विमानपर बैठे हुये मेरे युद्धका कौतुक देखते हैं इनमेंसे भी कोई मेरा प्राण नहीं बचाता इसलिये मैं शीघ्र शरण उस परब्रह्मके जो कालको आदिले सबके मालिक हैं जाऊं तो मेरा प्राण बचे ऐसा विचारकर हाथी नारायणजीके चरणोंका ध्यान सच्चे मनसे करने लगा ॥

तीसरा अध्याय।

गजेंद्रका परब्रह्मकी स्तुति करना ॥

शुकदेवजी बोले कि हे परीक्षित उससमय गजेंद्रने पूर्वजन्मके पुण्यसे परमेश्वर को ध्यानमें नमस्कार करके कहा मैं उन भगवान्की शरणहूं कि जिनकी कृपा से संसारी जीव चैतन्य होते हैं और जीवोंकी जड़ वही है व सारा जगत् उन्हींसे उत्पन्न होकर उनके आश्रय पर रहता है और वह

परमेश्वर महाप्रलयमें भी नाश न होकर सदा स्थिर रहते हैं जिसतरह बालक नट व भानमतीके खेलवाड़को नहीं पहिचानते उसीतरह ब्रह्मादिक देवताभी उनके आदि व अन्तको नहीं जानते जैसे अग्निकी चिनगारी उड़ती हैं और सूर्यका प्रकाश छिद्रमें से रजके समान दिखलाई देता है वैसे जिन परब्रह्म के सामने देवता लोग चिनगारी व रजतुल्य हैं मैं उन्हीं परमेश्वरको दण्डवत् करता हूं व जिनके बहुतसे नाम व स्वरूप होकर प्रकटमें कोई रूप उनका दिखलाई नहीं देता और वह आप मुक्तरूप होकर सब कार्य करते हैं उनको मैं नमस्कार करताहूं जिस परमेश्वर के शरणागत मेरे ऐसा पशु गया व जो अविनाशी पुरुष मुझे इस फंदे से छुड़ाने व अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों पदार्थ देनेवाले हैं उन्हें स्त्री व पुरुष व नपुंसक न कहना चाहिये व सब जीवों में उन्हींका तेज रहता है ऐसे सब जगद्व्यापक रामके मैं शरणहूं जो परमेश्वर सब गुणों से भरे रहकर योगीश्वरोंको योग व तप करनेका फल देते हैं वही दीनानाथ इस समय मेरी रक्षा करें सिवाय उनके अब मैं किसीका भरोसा नहीं रखता हे दीनदयालु महाप्रभु मैं इस ग्राहके मुँहसे छूटनेको यह स्तुति नहीं करता मायारूपी संसारी जाल से निकलने वास्ते यह कहताहूं इसलिये मुझ दीनपर दयालु होकर मेरा दुःख दूर कीजिये व हे परब्रह्म परमेश्वर तीनों लोकके उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाले सिवाय तुम्हारे दूसरा कोई ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो दीनोंका दुःख छुड़ाने सकै व हे जगद्गुरु जब तक मनुष्य अपनी सामर्थ्य व परिवारवालोंका बल आप रखता है तबतक उसकी कुछ इच्छा पूर्ण नहीं होती सो मैं भी तुम्हारी मायामें लपटकर अपनी हथिनी व बच्चोंका भरोसा रखने से इस दुर्दशाको पहुँचा अब उनका आसरा छोड़कर तुम्हारी शरण आया सो हे दीनदयालु मुझे अपने मरनेका कुछ भय न होकर केवल इस बातका अति शोच है कि संसारी लोग ऐसा कहैंगे कि गजेंद्रका दुःख नारायणजीके शरण जानेसे भी नहीं छूटा इस बातकी लज्जा रखकर मेरा कष्ट दूर कीजिये नहीं तो तुम्हारी शरणमें कोई न जावेगा आप अन्तर्यामीसे अधिक क्या बिनती

करूं हे परीक्षित यह स्तुति सुनते ही परमेश्वर अन्तर्यामी हरिअवतार ने गजेंद्रको महादुःखी जानकर उसी समय सुदर्शनचक्र अपना उठालिया व गरुड़पर बैठकर वैकुण्ठसे चले जब गजेंद्रने जिसके कण्ठमें प्राण आ-गया था देखा कि वैकुण्ठनाथ सुदर्शनचक्र हाथमें लिये गरुड़पर चढ़े आ-काशमार्गसे मेरी रक्षा करनेको चले आते हैं तब उसने एक पुष्प कमल का सूंड़से तोड़लिया और ऊंचे उठाकर पुकारा हे नारायण हे जगद्गुरु हे दीनानाथ हे भगवन्त हे दुःखभंजन हे श्यामसुन्दर हे ज्योतिस्वरूप मैं तुम्हारे शरणागत होकर दण्डवत् करता हूं जल्दी मेरी सुधि लेव जैसे त्रिलोकीनाथने यह दीन वचन उस दुखियारे का सुना वैसे सुदर्शन चक्र समेत गरुड़ पर से कूदकर पैदल दौड़े और वहां पहुँचतेही सुदर्शन चक्र से ग्राहका मुख चीरकर मारडाला व हाथीको तालाब से खींचकर बाहर निकाल दिया ॥

चौथा अध्याय।

ग्राहका गन्धर्व तन पाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिस समय ग्राह मारा गया उस समय देवतोंने आनन्दपूर्वक दुन्दुभी बजाकर पुष्पोंकी वर्षा हरिभगवान् पर की ऋषीश्वर आदिक उनकी स्तुति करने लगे और वह ग्राह परमेश्वरके स्पर्श करतेही एक पुरुष महासुन्दर राजसी भूषण व वस्त्र पहिने हुये आनकर नारायणजीके चरणोंपर गिरपड़ा व उसने स्तुति व परिक्रमा करके हाथ जोड़कर विनय किया महाराज मैं पिछले जन्म हूहूनाम गन्धर्व था सो एक दिन अपनी स्त्रियोंको विमानपर बैठाकर विहारको निकला व वनमें एक तालाब बहुत अच्छा देखकर स्त्रियोंसमेत उसमें जलविहार करनेलगा उसी जगह देवल ऋषि भी नहाते थे सो मैंने अपनी अज्ञानता व स्त्रियोंके कहनेसे उन ऋषिका उपहास विचारकर स्नान करते हुये गोता मारा व पैर ऋषीश्वरका पकड़कर पानीके भीतर खींच लेगया जब वह गिर पड़े तब पैर उनका छोड़कर तालावसे बाहर निकल आया व अपनी स्त्रियों समेत हँसने लगा तब देवलऋषिने क्रोधित होकर मुझे शाप दिया कि हे

गन्धर्व तैंने हँसीसे हमारा पैर ग्राहके समान पकड़कर खींचा था इसलिये परमेश्वरसे चाहताहूं कि तू ग्राहतनमें जन्म लेकर पशु व मनुष्योंका पैर जलके भीतर पकड़ाकर यह शाप सुनतेही मैंने अति लज्जित होकर उन से कहा मैंने अपने किये का फल पाया पर अब यह बतलाइये कि इस शापसे मेरा उद्धार कब होगा तब ऋषीश्वर बोले कि तू कई हजार वर्षतक ग्राहयोनिमें रहकर एक दिन गजेन्द्रका पैर पकड़ेगा जब वैकुण्ठनाथ वास्ते छुड़ाने हाथीके आनकर तुझे सुदर्शन चक्रसे मारेंगे तब फिर गन्धर्व तन पावेगा सो उन ऋषीश्वरकी कृपासे आज आपका दर्शन जो ब्रह्मा व महादेव आदिकको जल्दी नहीं मिलता सो मैं पाकर कृतार्थ हुआ अब आज्ञा दीजिये तो अपने लोकको जाऊं जब वह गन्धर्व परमेश्वरसे बिदा होकर दंडवत् करके विमानपर बैठकर अपने लोकको चला गया तब हरि भगवान्‌की आज्ञासे उस गजने भी वह तन छोड़कर मुक्ति पाई व इन्द्रदमन राजाका स्वरूप चतुर्भुजी होगया और दण्डवत् व स्तुति करने व परिक्रमा लेने उपरान्त हाथ जोड़कर बोला कि हे दीनानाथ मैं पूर्वजन्म इन्द्रदमन नाम राजा होकर दिन रात हरिचरणोंमें ध्यान लगा राजकाज करता था एक दिन जप व ध्यान करते समय अगस्त्यमुनि मेरे घर आये थे सो मैं अपने अज्ञानसे उनका आदर न करके ज्योंका त्यों बैठा रहा तब अगस्त्य जी क्रोध करके बोले हे राजा किस शास्त्रमें ऐसा लिखाहै कि जब ब्राह्मण व ऋषीश्वर व वैष्णव किसी के स्थान पर आवें और मालिक घर का उनका आदर व सन्मान न करके मतवाले हाथीकी तरह बैठारहै इसलिये परमेश्वर से मैं चाहता हूं कि तू हाथीका तन पावै यह शाप सुनतेही मैंने लज्जित होकर उनसे विनय किया हे मुनिनाथ मैंने अपने करतबका फल पाया पर यह बतलाइये कि उस तनसे मेरी छुट्टी कब होगी यह सुनकर मुनिने कहा कि जब ग्राह तेरा पैर तालाबमें पकड़ेगा तब वैकुंठनाथ तेरी सहायता करने आवैंगे और ग्राहको मारकर तुझे मुक्ति देंगे सो मैं अगस्त्यमुनिकी दयासे तुम्हारा दर्शन पाकर कृतार्थ हुआ जब इसतरह बहुत सी स्तुति इन्द्रदमनने हाथ जोड़कर किया तब नारायणजी प्रसन्न होकर बोले हे इन्द्रदमन

जो कोई मुझे व तुझे इस पर्वत व क्षीरसमुद्र व कौस्तुभमणि व शंख व चक्र व गदा व पद्म मेरे शस्त्र व मत्स्य व कच्छप आदिक मेरे अवतार व गंगाआदि तीर्थ ध्रुव व प्रह्लादादिक जो मेरे भक्त हैं उनको पिछली रात उठकर ध्यान करे उसे अशुभ स्वप्नेका फल नहीं होगा व जो संसारी जीव इस गजेंद्रमोक्ष स्तुतिको मेरे निमित्त करेंगे उनको मैं अन्तसमय इसीतरह मुक्ति दूंगा कि जिसतरह तेरा उद्धार किया है ऐसा कहिकर हरिभगवान्‌ने इन्द्रदमनको अपने गरुड़ पर बैठालिया व शंख बजाकर वैकुंठमें चलेगये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले कि हे परीक्षित जिसतरह हाथीको ग्राहने पकड़ा था उसीतरह सब संसारी जीव कालरूपी मुखमें पड़े हैं जब गजेंद्रने दीन होकर नारायणजीको पुकारा तब परमेश्वरने उसे ग्राहके मुखसे छुड़ाया उसीतरह जब मनुष्य परमेश्वरका ध्यान व स्मरण करें तब जन्म मरणसे छूटकर भवसागर पार उतर सक्के हैं व जो कोई विपत्तिमें गजेंद्रमोक्ष कथाका ध्यान करेगा नारायणजी उसका दुःख अवश्य दूर करेंगे॥

पांचवां अध्याय।

शुकदेवजीका कच्छपअवतारकी कथा कहना॥

शुकदेवजी बोले कि हे परीक्षित हर मन्वन्तरमें जो इकहत्तर चौकड़ी युग पर होता है नारायणजी एक अवतार लेकर धर्मकी रक्षा करते हैं चौथे मन्वन्तरमें हरिअवतार हुआ यह उसकी कथा तुमको सुनाया और पांचवां मनु रैवत नाम तामसका भाई हुआ उसमें बलि विंध्यादिक मनुके बेटे व विभव नाम इन्द्र व ऊर्ध्वबाहु आदिक देवता व हिरण्यरोमादिक सप्तऋषि हुये व शुभर ऋषीश्वरकी वैकुण्ठ नाम स्त्रीसे वैकुण्ठ भगवान् का अवतार हुआ और सुमेरु पर्वतपर सत्यलोकके सामने दूसरा वैकुण्ठ लक्ष्मीजीके रहने वास्ते बनाया उस अवतारके गुणको कोई वर्णन नहीं करनेसक्ता छठवां चाक्षुष नाम मनु हुआ उसमें पुर आदिक मनुकेबेटे व मित्ररूप नाम इन्द्र व अभू आदि देवता व हर्यश्व देवआदिक सप्तऋषि हुये व विराजकी देवसम्भूता नाम स्त्रीसे अजित नाम अवतार परमेश्वरका हुआ जिन्होंने चौदह रत्न निकालने वास्ते देवता व दैत्योंसे समुद्रका मथन कराया व

आप कच्छपका अवतार धरा व मन्दराचल पर्वतको जो मथानी बनानेसे डूबा जाता था अपनी पीठपर उठाया इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे शुकदेवस्वामी भगवान्‌ने किसतरह पहाड़ अपनी पीठपर लेकर समुद्र मथन कराया व उससे चौदह रत्न निकालकर देवतोंको अमृत पिलाया सो कथा दया करके सुनाइये मन मेरा हरिचरित्र सुननेसे तृप्त नहीं होता यह सुनतेही शुकदेवजीने अतिप्रसन्न होकर कहा हे राजा देवता व दैत्य दोनों भाई कश्यपजीके पुत्र होकर आपसमें शत्रुता रखते हैं कभी इन्द्र दैत्योंको जीतकर देवतों समेत राज्य करता है व कभी दैत्यलोग देवतोंको जीतकर तीनों लोक का राज्य करते हैं जिसतरह यहां संसारी जीव पृथ्वीपर चलते हैं उसीतरह देवलोकादिक में भी धरती होकर ऋषीश्वर व महात्मालोग आकाशमार्ग से वहां चलते फिरते हैं सो एक समय जब इन्द्र राजसिंहासन पर था ऐरावतपर चढ़कर कहींको चला जब रास्ते में दुर्वासा ऋषीश्वरको जो अपने चेलों समेत चले आते थे देखकर इन्द्रने दण्डवत् किया तब ऋषिने बड़े हर्षसे एक पुष्पकी माला जो गलेमें पहिने थे उतारकर इन्द्रके पास भेज दिया जब उसका चेला माला लेकर इन्द्रके पास गया तब इन्द्र ने वह माला उससे लेकर हाथीके मस्तकपर धर दिया व अभिमानसे यह बोला कि इससे सुगंधित और उत्तम पुष्प देवलोकमें होते हैं व हाथीने वह माला सूंड़से गिराकर पैरके नीचे मल डाला जब उस चेलेने जाकर यह बात ऋषीश्वरसे कह दिया तब दुर्वासा क्रोध करके बोले हे इन्द्र तैंने राज्य व धनके मदसे मेरी माला का निरादर किया इसलिये तेरा राज्य व धन नष्ट होजावै जब दैत्योंने दुर्वासा ऋषीश्वरके शाप देनेका समाचार सुना और युद्ध करके उनका राज्य छीन लिया तब इन्द्रने देवतों समेत भाग कर ब्रह्माजीसे विनय किया हे महाप्रभु दुर्वासाके शापसे मेरा राज्य व धन जाता रहा कुछ सहायता कीजिये ब्रह्माजी बोले मैं रक्षा करनेकी सामर्थ्य नहीं रखता चलो नारायणजीसे बिनती करैं उनकी दयासे तुम्हारा दुःख छूटेगा यह वचन कहनेपर ब्रह्माने इन्द्रादिक देवतोंको अपने संग लेलिया और क्षीरसमुद्रके तटपर जाकर यह स्तुति परमेश्वरसे की कि हे दीनानाथ

मैं तुम्हारी कृपासे सब जीवोंको उनके कर्मानुसार चौरासीलाख योनिमें जन्म देताहूं पर आप अपनी इच्छासे देवता व ब्राह्मण व हरिभक्तोंका दुःख छुड़ाने वास्ते अवतार लेते हैं उसमें मेरा कुछ वश नहीं चलता सो इन दिनों दुर्वासा ऋषिके शापसे देवतोंका राज्य दैत्योंने छीन लिया इसलिये सब देवता दुःखी होकर तुम्हारे शरण आये हैं आप दयालु होकर इनका दुःख निवारण कीजिये सिवाय तुम्हारे कोई दूसरा मालिक व बड़ा नहीं है जिससे जाकर अपना दुःख कहैं संसारमें आपका नाम दीनदयालु प्रकटहै सो उन्हें दीन जानकर दयालु हूजिये व शरण आये की लाज रख कर सहायता कीजिये ॥

छठवां अध्याय ।

परमेश्वर का ब्रह्मादिक देवतों को दर्शन देना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब ब्रह्मादिक देवतों के स्तुति करने से वैकुण्ठनाथ प्रसन्न हुये तब उन्होंने हजार सूर्यके समान तेजस्वी रूपसे गरुड़पर आकर देवतोंको दर्शन दिया वह प्रकाश देखतेही सिवाय ब्रह्माके और सब देवतोंकी आंखें झपगईं व सुदर्शन चक्रादिक आठों शस्त्र उनके अपना अपना रूप धारण किये चारोंओर खड़े थे सो ब्रह्माने दण्डवत् व परिक्रमा करके हाथजोड़कर विनय किया हे दीनानाथ जल व थल व अग्नि व वायु व आकाश सब आपही हैं हम व महादेव व दक्षप्रजापति आदि देवता तुम्हारे सामने चिनगारी समान हो कुछ सामर्थ्य नहीं रखते व आप सर्वदा आनन्दरूप हैं कौन ऐसा है जो तुम्हारे आदि व अन्त व महिमाका वर्णन करसके जिसमें देवतों का कल्याण हो वह कीजिये तब परमेश्वने जलविहार करना विचारकर कहा हे ब्रह्मा इन दिनों दैत्योंकी दशा बली होकर दुर्वासाके शापसे देवतोंके दिन निर्बलहैं अब मेरे निकट यह उचित है कि सब देवता दैत्योंके पास जाकर उनसे प्रीति करके क्षीरसमुद्र मथें व मन्दराचल पर्वत की मथानी बनाकर उसमें वासुकि सर्पकी रस्सी लगावें उस समुद्रमें से अमृत आदि चौदह रत्न अति उत्तम निकालकर वह अमृत देवतोंको पिलाऊंगा कि उसके पीनेसे देवता अमर होकर दैत्योंको जीतके

अपना राज्य पावैंगे यह बात सुनकर देवतोंने विनय किया महाराज दैत्य लोग हमसे बलवान् हैं जब अमृत छीनकर पीलेवैंगे तब हमारा क्या वश चलैगा परमेश्वर बोले कि तुम लोग धैर्य रक्खो हम किसी उपायसे अमृत तुम्हैं पिला देवैंगे दैत्योंको सिवाय परिश्रमके कुछ लाभ न होगा तुम उन से प्रीति करके अपना अर्थ निकाल लेव जिसतरह सर्पने जालमें फँसकर चूहेसे मित्रता करके अपना कार्य सिद्ध किया था उसका इतिहास महाभारतमें विस्तारपूर्वक लिखा है जो लोग परमेश्वरकी शरणमें रहते हैं उन का सब मनोरथ सिद्ध होताहै जो बात दैत्यलोग कहैं उसे मान लेना अधिक लोभ न करना जिसमें तुम्हारी उनकी प्रीति बनीरहै यह आज्ञा देकर नारायणजी वैकुण्ठको पधारे व जब देवता उनकी आज्ञासे बलिके पास जो उन दिनों दैत्योंका राजा था पहुँचे तब राजा बलिने मनमें कहा देखो इन्द्र व वरुण व कुबेरादिक देवता जो मेरे साथ सदा शत्रुता रखते थे आज विना शस्त्र गहे मेरी शरण आये हैं इसलिये जो बात यह लोग कहैं वह माननी चाहिये ऐसा विचारकर राजा बलिने देवतोंसे पूछा कि तुम लोग किस इच्छासे यहां आये अपना वृत्तान्त कहो तब इन्द्र बोला कि हम तुम दोनों देवता व दैत्य कश्यपजीके पुत्र आपसमें भाई हैं सो मैंने विचारा कि कोई ऐसा उपाय करें जिसमें वृद्धापन व मृत्यु न आवै और बहुत सन्तान उत्पन्न हों इसी इच्छासे मैं ब्रह्माके पास गया था ब्रह्मा हमलोगोंको नारायणजीके यहां लेगये उन्होंने हमारी विनय सुनकर कहा कि तुम लोग राजा बलि आदिक अपने भाइयोंको साथ लेकर क्षीरसमुद्रको मथन करो व मन्दराचलकी मथानी बनाकर वासुकि नागकी उसमें रस्सी लगावो जिसतरह दही मथनेसे घी निकलताहै उसीतरह क्षीरसमुद्र मथन करने से अमृत आदिक चौदह रत्न निकलैंगे सो तुमलोगोंको वह अमृत पीने से बुढ़ापा व मृत्युका खटका छूटकर सदा तरुणाई बनी रहैगी इसीवास्ते हम लोग आये हैं कि इस काममें तुमलोग हमारे साथ प्रीति रखकर सहायता करो कि जिसमें देवता व दैत्य दोनों भाई अमृत पीकर अमर होजावें हे राजा बलि तुम सब देवतोंके मालिक होकर रहना हम तुम्हारे आधीन

रहेंगे यह सुनकर राजा बलि व दूसरे दैत्यों ने कहा कि इस काममें हम लोग तुम्हारा संग देंगे पर अमृत आदि जो वस्तु समुद्रसे निकले उसको बांट लेवेंगे देवता बोले बहुत अच्छा तुम्हारा कहना हमें अंगीकारहै फिर सब देवता व दैत्योंने जाकर बड़े परिश्रमसे मन्दराचलको उखाड़ा जब उसे समुद्र किनारे लेचले तब कई देवता व दैत्य घायल होकर मर गये तब उन्होंने हार मानकर पर्वतको रास्ते में धर दिया व देवता व दैत्योंने अपना अभिमान टूटनेसे परमेश्वरका ध्यान करके विनय किया हे वैकुण्ठनाथ विना दया करने व आवने आपके यह पर्वत हमलोगों से समुद्र तक नहीं पहुँचसक्ता जैसे भगवान् अन्तर्यामी ने उनका दीन वचन सुना वैसे गरुड़पर बैठकर वहां आये तब देवता व दैत्यों ने दण्डवत् व स्तुति करके कहा कि महाराज हमलोगोंसे यह पर्वत क्षीरसमुद्रतक नहीं पहुँचने सक्ता थोड़ी दूर लेआने में कई देवता व दैत्य घायल हुये व मरगये यह वचन सुनतेही परमेश्वर दीनदयालु ने अमृत दृष्टिसे देखकर घायल व मरेहुओं को अच्छा करके जिला दिया व बायें हाथसे मन्दराचलको उठाकर गरुड़ की पीठपर धरलिया व सब देवता व दैत्योंको भी उसी गरुड़ पर बैठाकर एक क्षणमें समुद्र किनारे जा पहुँचे जब पर्वत उतारकर वहांसे गरुड़ को बिदा किया तब देवता व दैत्य उनकी स्तुति करने लगे ॥

सातवां अध्याय।

क्षीरसमुद्रका मथना ॥

शुकदेवजी बोले कि हे परीक्षित जब परमेश्वरने समुद्र किनारे पहुँचकर देवता व दैत्योंको वासुकि नागके लाने वास्ते आज्ञा दी तब उन्होंने पाताल में जाकर उनसे कहा कि नारायणजीकी आज्ञासे मन्दराचलमें तुम्हें लपेटकर समुद्र मथा जावेगा सो तुमको बुलाने आये हैं चलो यह सुनकर वासुकि नाग बोला कि पर्वत में लपेटनेसे मेरे कोमल अंगको दुःख होगा इसलिये मैं नहीं चलसक्ता देवता व दैत्योंने उत्तर दिया कि परमेश्वरने बुलाया है सो उनकी आज्ञा मानकर अवश्य चलना चाहिये यह वचन सुनतेही जब वासुकि नाग लाचारीसे नारायणजीके पास गया तब वैकुंठ

नाथ बोले हे वासुकिनाग तुम कुछ शोच मत करो तुम्हें कुछ दुःख न होगा व अमृत निकालनेमें तुमभी भाग पावोगे जब देवता व दैत्योंने वासुकि नागसे पर्वत लपेटकर समुद्रमें डाल दिया व मन्दराचल पानी पर नहीं ठहरकर डूबने लगा तब देवता व दैत्योंने परमेश्वरसें विनय किया हे महा-प्रभु पहाड़ पानीमें डूबा जाताहै हमारा बल कुछ काम नहीं करता समुद्र किसतरह मथें यह वचन सुनतेही नारायणजीने एकरूप अपना कच्छप अवतार लाखयोजन लम्बा व चौड़ा समुद्रमें धारण करके वह पर्वत अपनी पीठपर उठालिया जब वह पहाड़ जलपर ठहर गया तब भगवान्‌जी ने देवता व दैत्योंसे कहा कि पहिले तुम लोग गणेशजीका पूजन कर लो जिसमें तुम्हारा मनोरथ सिद्ध हो व उत्पत्ति गणेशजीकी इस तरह पर है कि एक दिन पार्वतीजी बैठी हुई महादेवके पंखा हांकती थीं सो उनके बालक उत्पन्न हुआ सो पार्वतीजी उसपर प्रेमसे देखने लगीं तो पंखा हाथ से गिरपड़ा इसी कारण शिवजीने क्रोधित होकर एक त्रिशूल उस बालक को ऐसा मारा कि शिर उसका कटकर न मालूम कितनी दूर गिरा यह दशा देखकर पार्वतीजीने कहा कि यह मेरा पुत्र था तुमने क्यों मारा अब फिर इसको जिला दो नहीं तो मैं भी अपना तनु छोड़दूंगी यह वचन सुनकर महादेवजी बोले कि इस बालकका मस्तक बहुत दूर चलागया वह नहीं आसक्ता उत्तर दिशा शिर करके जो जीव मरा पड़ा हो उसका शिर ले आवो तो मैं इसे जिलादूं खोजनेसे एक हाथी उत्तर शिर किये मरा महादेव जीके गण ले आये जैसे उस बालकके धड़में वह शिर जोड़कर महादेवजी बोले उठ बैठ वैसे वह बालक जीकर उठ खड़ा हुआ तब शिवजीने उसका नाम गणेशजी रखकर ऐसा वरदान दिया कि आज से तीनों लोक में जिसके यहां शुभ कार्य हो वह प्रथम गणेशजी को पूज कर पीछे दूसरा काम करे तो कार्य उसका अच्छी तरह सम्पूर्ण होगा उसी दिनसे सबलोग गणेशजी को पूजते हैं सो श्यामसुन्दरकी आज्ञा पाकर देवता व दैत्यों ने भी पहले गणेशजीकी पूजा की फिर नारायणजीकी आज्ञासे देवतोंने शिर वासुकिनागका पकड़कर दैत्योंसे पूंछ धरने वास्ते कहा तब दैत्य लोग

अभिमानसे बोले कि हम किस बात में तुमसे कमहैं जो अशुद्ध अंग पूंछ को पकड़ें यह सुनकर परमेश्वरने देवतोंसे कहा तुम्हीं लोग पूंछ पकड़ो सो दैत्य लोग शिर व देवता व नारायणजी पूंछ वासुकिनागकी पकड़ कर समुद्रको दहीके समान मथने लगे उससमय घूमना मन्दराचल का कच्छपरूप भगवान्को कैसा मालूम होता था कि जैसे कोई पीठमें खुज-लाताहै जब दैत्य लोग समुद्र मथते समय शिर वासुकिनागका खींचने लगे तो उसके फुफकारसे ऐसी ज्वाला निकली कि शिर उनका जलने लगा तब दैत्योंने फिर चाहा कि हम लोग पूंछ पकड़ें उस समय नारायणजी बोले कि जो बात तुमने अपनी इच्छासे अंगीकार किया वह छोड़ना न चाहिये जब देवता व दैत्य समुद्र मथते मथते थक गये तब उन्होंने नारायणजीसे विनय किया कि हे त्रिलोकीनाथ अब हमें सामर्थ्य नहीं रही जो समुद्र मथन करें यह वचन सुनतेही जब परमेश्वरने कुछ बल अपना उनको देकर धैर्य दिया तब वह लोग नवीन बल पाकर फिर समुद्र मथने लगे सो प्रथम ऐसा विष हलाहल समुद्र से निकला कि जिस की गरमी पाकर सब जलचर समुद्रके व्याकुल होगये व देवता व दैत्योंने भी घबड़ाकर कहा कि हे वैकुण्ठनाथ इस विष रखनेका कहीं ठिकाना कीजिये नहीं तो हम लोग इसकी गर्मीसे मरा चाहते हैं तब भगवान्जी बोले इस गरलको सिवाय महादेवजीके दूसरा कोई अंगीकार नहीं कर सक्ता तुम लोग उनकी बिनती करो यह वचन सुनतेही दैत्य व देवतोंने महादेवजीसे हाथ जोड़कर कहा हे महाप्रभु इस विषसे तीनोंलोक के जीव जलकर मरने चाहते हैं इसको अंगीकार कीजिये सिवाय तुम्हारे दूसरेमें ऐसी सामर्थ्य नहीं है कि जो विषकी गर्मी सहनेसकै यह बात सुनकर शिवजीने विचारा कि मैं वैष्णव हूं जो कोई दूसरेका दुःख देखकर उसका कष्ट न निवारण करे उसे वैष्णव कहना न चाहिये इसलिये इनका कष्ट छुड़ाना उचित है यह शोचकर शिवजीने पार्वतीकी ओर देखा तब पार्वती जी बोलीं हे स्वामी देवता लोग शरण आये हैं जिसमें इनका कल्याण हो सोकीजिये व नारायणजीने भी शिवजीसे कहा सब कोई देव होकर आप

महादेव हैं इसलिये प्रथम जो वस्तु समुद्रसे निकली है वह आपको भेंट चाहिये सो तुम इसे अंगीकार करो सब जीवोंका दुःख हरना आपको उचितहै तब महादेवजी प्रसन्न होकर बोले सच है इस गरलको सिवाय मेरे दूसरा कोई पीने नहीं सक्ता इसे पेटमें उतार जाऊं तो रामचन्द्रजी को जो मेरे हृदयमें रहते हैं दुःख पहुँचेगा इसलिये कण्ठमें इस विषको रक्खे रहना उचितहै ऐसा कहकर शिवजीने वह विष जो फेनके समान समुद्रसे निकला था एकीबेर सब मुँहमें डाल लिया सो खाती समय थोड़ासा विष पृथ्वीपर गिरपड़ा था उसीसे सिंगिया व बच्छनाग आदिक उत्पन्न होकर आजतक संसारमें प्रकटहैं व महादेवजी वह जहर अपने कंठमें रक्खे रहे इसी कारण गला उनका बाहरसे नीला रहकर नीलकंठ नाम प्रसिद्ध हुआ व नारायणजीने अमृतदृष्टि से देवता व दैत्योंको देखा तो सब गर्मी जहरकी उनके अंगसे दूर होगई व देवतोंने शिवजीकी बहुत स्तुति की ॥

आठवां अध्याय।

कामधेनु गौ व अमृत आदिक समुद्रसे निकलना ॥

शुकदेवजी बोले कि हे राजन् जब फिर देवता व दैत्य परमेश्वर की आज्ञासे समुद्रको मथन करने लगे तो दूसरी बेर कामधेनु गौ अतिसुन्दर समुद्रसे निकली तब नारायणजीने कहा इस गायसे संसारी वस्तु जो माँगो सो मिलती है यह सुनकर देवता व दैत्योंने उस गौको लेने चाहा तब वैकुंठनाथ बोले यह गऊ ब्राह्मण व ऋषीश्वरों को देनी चाहिये वह लोग वनवास करके कन्दमूलादिक खाकर दिन रात हरिभजन करते हैं और ब्याह व यज्ञादिकमें उनको राजासे भिक्षा माँगनी पड़ती है यह गाय उनके पास रहैगी तो वह लोग निश्चिन्त रहकर परमेश्वरका ध्यान करेंगे वेद व शास्त्रमेंभी ऐसा लिखा है कि जब मनुष्य कोई काम अपने अर्थ वास्ते करे तो पहले उस लाभमेंसे ब्राह्मणको अवश्य कुछ देना चाहिये जिसमें उसका मनोरथ सिद्ध हो यह वचन कहके भगवान्जी वह गौ वशिष्ठ व दुर्वासा आदिक ऋषीश्वरोंको देकर बोले कि तुम इस गौ को देवलोक में रक्खो जब ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको किसी वस्तुकी चाहना हो तो गायको

अपने स्थानपर ले आकर उससे वह जो पदार्थ चाहैं लेवैं व फिर गौको वहां पहुँचा देवैं गौ देकर जब फिर समुद्र मथने लगे तब नारायणजी ने कहा अब जो समुद्रसे निकलै उसमें एक वस्तु दैत्य व एक देवता लेवें तीसरी बेर उच्चैःश्रवानाम घोड़ा श्वेतवर्ण अतिसुन्दर निकला सो दैत्योंने कहा कि यह घोड़ा राजा बलि के चढ़ने योग्यहै नारायणजीने वह घोड़ा दैत्योंको देदिया जो चौथी बेर ऐरावत हाथी श्वेत वर्ण चौदन्त प्रकट हुआ वह देवतों को दिया तब दैत्योंने कहा कि हाथी हमको दीजिये देवता हमसे घोड़ा फेर लेवैं श्यामसुन्दर बोले जो बात ठहरगई उससे फिरना न चाहिये पां- चवीं बेर कौस्तुभमणि अति तेजवाली और महासुन्दर निकली उसे देख- कर नारायणजी बोले यह हम लेवेंगे जब दैत्योंने व देवतोंने प्रसन्न होकर कहा बहुत अच्छा तब त्रिलोकीनाथने वह मणि पिरोकर गलेमें पहन लिया छठवीं बेर पारिजातकनाम एक वृक्ष निकला तब नारायणजी बोले इस वृक्ष से जो मांगो सो देगा उसे दैत्योंने लिया कदाचित् कोई कहे कि वह वृक्ष इन्द्रलोकमें किसतरह गया सो जानना चाहिये कि जब चौदहरत्न समुद्रसे निकलने उपरांत देवता व दैत्योंमें युद्ध हुआ तब देवता दैत्योंको जीतकर वह वृक्ष देवलोकमें लेगये सातवीं बेर रम्भानाम अप्सरा महासुन्दरी क्षीर- सागरसे निकलकर किसी को नहीं मिली वेश्या होकर रही आठवीं बेर लक्ष्मीजी अतिसुन्दरी उत्तम भूषण व ललित वस्त्र पहिने व दहिने हाथ में कमलका पुष्प व बायें हाथमें माला लिये समुद्रसे निकलीं उनका रूप देखतेही सिवाय नारायणजीके सब देवता व दैत्योंने उनपर मोहित होकर मथना समुद्रका छोड़दिया व उनके चौगिर्द आनकर चाहा कि इन्हें लेलेवैं तब लक्ष्मीजी बोलीं मुझे बजोरी कोई नहीं लेसक्ता जिसमें सब गुण होंगे उसके पास मैं अपनी इच्छासे रहूंगी मेरे निकट देवता व दैत्य दोनों एक से हैं तुम सब देवता व दैत्य व तपस्वी व ऋषीश्वर व ब्राह्मण व गन्धर्वा- दिक अपनी अपनी पांति बांधकर बैठो उनमें जिसपर मेरा मन चाहेगा उसके गलेमें जयमाल डालकर उसे पति बनाऊंगी जब उनकी आज्ञानुसार वह सब पांति बांधकर बैठे तब पहिले लक्ष्मीजी दैत्योंको देखकर बोलीं

राज्य इन लोगोंका सदा स्थिर नहीं रहता और यह लोग अभिमानी हो पाप करते हैं इसलिये इनकी संगति करना न चाहिये फिर तपस्वी व ऋषीश्वरोंको देखकर कहा यह लोग महाक्रोधी होकर थोड़ा अपराध करने परभी बड़ा भारी शाप देते हैं फिर ज्ञानियों को देखकर बोलीं यह लोग नियम व आचारसे न रहकर अपने मनमाना कर्म करते हैं फिर देवतों को देखकर कहा यह लोग निर्बल होकर जब इन्हें कुछ विपत्ति पड़ती है तब नारायणजीके शरणमें जाकर उनसे सहायता लेते हैं इसलिये इनको अंगीकार करना उचित नहीं है उसीसमय पृथ्वीने अतिउत्तम रत्नजटित सिंहासन लाकर उसपर लक्ष्मीजीको बैठाला व गंगा व यमुना व नर्मदा आदिक तीर्थ स्त्रीरूप होकर स्वर्णके कलशोंमें अपना अपना जल लेआये व कामधेनु गौने दूध व दही व गोबर व गोमूत्र व घृत मिलाकर पंचगव्य बनाया तब पृथ्वीने पंचगव्य व तीर्थोंके जलसे लक्ष्मीजीको स्नान कराया व अतिउत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर यथायोग्य उनका शृंगार किया तब लक्ष्मीजी ब्रह्माको देखकर बोलीं यह बूढ़े हैं फिर इन्द्र व वरुण व कुबेर देवतोंको देखकर कहा इनको आठोंपहर अपनी पदवी बढ़नेकी इच्छा बनी रहती है फिर लोमश आदिक ऋषीश्वरोंको देखकर बोलीं इन लोगोंकी इतनी बड़ी आयुर्दा है कि कितने ब्रह्मा इनके सामने मरजाते हैं सो दीर्घ आयु होनेमें निर्बल होकर अशुभ कर्म करनेसे नहीं डरते व मृत्युका भय नहीं रखते कि जो मनुष्य मरने से डरता है उससे कुकर्म नहीं होता फिर लक्ष्मीने नारायणजीके सन्मुख जाके उनका रूप व तेज और बल व गुण देखकर कहा यह त्रिलोकीनाथ सब गुणोंसे जैसा मन मेरा चाहता था भरे हैं पर एक दोष इनमें भी है कि संसारी वस्तुकी इच्छा व किसीका मोह नहीं रखते व कृपा व दया इनकी कुछ जप व स्मरणके आधीन नहीं है देखो उद्धवभक्त जो जन्मभर इनकी सेवा में रहा उसको इन्होंने आज्ञा दी कि तुम बदरिकाश्रममें जाकर तप करो तब तुम्हारी मुक्ति होगी और वह केवट जिसने इनके पैरमें बाण मारा था उसको विमानपर बैठाकर उसी समय वैकुण्ठमें भेज दिया यह सब दोष होनेपर भी इनसे उत्तम त्रैलोक्य

में दूसरा कोई नहीं है इसवास्ते मैं इन्हींका चरणकमल दावकर अपना जन्म स्वार्थ करूंगी यह कहकर लक्ष्मीजी ने वही माला जो हाथमें लिये थीं वैकुण्ठनाथ के गलेमें डाल दिया तब भगवान्जी बोले तू आठों पहर हृदयमें बसी रहैगी यह देखते ही देवता व दैत्योंने अति हर्ष से कहा हे लक्ष्मीजी तुमने बहुत अच्छा किया जो नारायणजीके गलेमें माला डाली उसी समय समुद्रने मनुष्यरूप होकर वेदानुसार लक्ष्मीजी का विवाह नारायणजीसे करदिया व विश्वकर्माने आभूषण व पृथ्वीने मोती व रत्नकी माला व नागों ने कुण्डल लाकर लक्ष्मीजीको पहिनाया व ब्रह्मा व महादेवआदिक देवतों ने आनन्दपूर्वक लक्ष्मीनारायणपर पुष्पोंकी वृष्टि की व दैत्य व देवतोंने दुन्दुभी आदिक बड़े हर्ष से बजाया व इन्द्रकी अप्सरों ने आकाशमार्ग में आनकर नाच दिखलाया व गन्धर्वों ने गाना सुनाया उससमय तीनों लोक में मंगलाचार हुआ व लक्ष्मीजी के दर्शन से देवता व दैत्यों के अंगमें बल आगया फिर नारायणजी की आज्ञा से देवता व दैत्य समुद्र मथने लगे तब नवीं बेर कन्यारूप होकर वारुणी समुद्रसे निकली उसको दैत्योंने लेलिया दशवींबेर एक पुरुष अतिसुन्दर व तेजस्वी धन्वन्तरिनाम वैद्य परमेश्वरके अवतार एक यज्ञका भाग लेनेवाले एक हाथ अमृतका कलशा व दूसरे हाथमें एक हरीतकी लिये हुये समुद्रसे निकले उनको देखते ही देवता व दैत्योंने प्रसन्न होकर कहा कि इस अमृतके वास्ते हमलोगोंने इतना परिश्रम किया था सो निकला यह कहतेही एक दैत्यने दौड़कर वह कलशा धन्वन्तरि वैद्यसे छीन लिया तब देवता बोले इसमें आधा भाग हमारा भी है दैत्योंने अधर्मसे उत्तर दिया कि हमारे पीने से जो बचेगा सो तुमको भी देवैंगे जब देवतोंने हार मानकर यह समाचार नारायणजीसे कहा तब वैकुण्ठनाथ बोले तुम्हारे कहनेसे यह लोग अमृत न देवेंगे पर मैं अपनी मायासे कोई उपाय करके अमृत तुम्हें पिला दूंगा तुम शोच मत करो उनके कहने से देवतोंको धैर्य हुआ व दैत्य अमृतका कलशा धन्वन्तरिसे छीन लेगये तब जो दैत्य उनमें बलवान् थे एक दूसरेसे वह कलशा छीन लेता था किसी दैत्यको इतना सावकाश

नहीं मिलता था कि जो उस अमृतको पीनेसके जिससमय नारायणजी मोहनी मूर्ति स्त्रीरूपसे अतिसुन्दर व उत्तम भूषण व वस्त्र पहिने प्रकट होकर जहांपर देवता व दैत्य थे उस ओर चले इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् मोहनीरूप उसे कहते हैं कि जिसका रूप देखनेसे देवता व दैत्य व मनुष्य व योगीश्वर व मुनि व यती सब मोहित होकर विह्वल होजाते हैं वही स्वरूप परमेश्वरने धरा था ॥

नवां अध्याय ।

मोहनीरूप भगवान्का दैत्योंसे अमृतका कलशा लेना ॥

शुकदेवजी बोले कि हे परीक्षित जब देवता व दैत्योंने उस मोहनीरूप स्त्रीको अपनी ओर आते देखा तब वह लोग उसके रूपपर मतवाले होकर अमृत पीना भूल गये यह दशा देखकर जब वह रूपवती दैत्योंकी ओर कटाक्ष करती चली तब उन्होंने अतिप्रसन्न होके आपसमें कहा देखो हमारा भाग्य उदय हुआ जो ऐसी महासुन्दरी जिसके बराबर तीनों लोकोंमें दूसरी स्त्री न होगी हमारी ओर चली आती है हमलोग अमृत पीनेका झगड़ा जो आपसमें रखते हैं उसे निपटानेवास्ते इस स्त्रीको पंच मानकर कलशा अमृतका उसके सामने धर देवें जो वह अपने धर्म से सबको बांटकर पिला देवै उसे पीलें आपसका झगड़ा अच्छा नहीं होता यह सम्मत करके दैत्योंने कलशा अमृतका मोहनीरूप भगवान् के पास लेजाकर कहा हे महासुन्दरी इस अमृत पीनेवास्ते हमलोगोंमें विरुद्ध है इसलिये अपनी इच्छासे तुम्हें पंच मानकर चाहते हैं कि यह अमृत तुम अपने हाथसे बांटकर सबको पिलादो जब मोहनीरूप भगवान् उनकी बातोंपर कुछ ध्यान न करके आगे चले व दैत्योंने उनके चरणोंपर गिरकर अमृत बांटनेवास्ते अति बिनती की तब मोहनीरूपने दैत्योंकी ओर देखकर मुसकरा दिया जब वह मुसकान देखकर दैत्यलोग अचेत होगये तब मोहनीरूप भगवान् ने दैत्योंको अपने रूपपर मोहित देखकर कहा कि तुमलोग मुझ वेश्या स्त्रीसे कहां की जान व पहिचान रखकर मुझे अमृत बांटनेवास्ते पंच मानते हो ज्ञानीको वेश्याका कभी विश्वास न करना चाहिये और जो तुम अमृत

बांट देनेके वास्ते ऐसा हठ करते हो तो मेरे निकट अमृत निकालनेमें तुम्हारा व देवतोंका परिश्रम बराबर है तुम्हारी प्रसन्नता हो तो मैं आधा आधा अमृत दोनोंको पिलादूं व तुमलोग अधर्मसे अमृत जो लेने चाहते हो ऐसी झूंठी पंचायत मैं नहीं करती यह वचन सुनकर दैत्योंने कहा हे प्राणप्यारी तुम सत्य कहती हो हमलोग अधर्मसे सब अमृत अकेले पीना चाहते थे अब हम ने तुमको अपना पंच माना इसकारण हम तुम्हारी आज्ञा पालन करेंगे जो चाहो सो करो जब मोहनीरूप भगवान्ने जाना कि दैत्यलोग अच्छीतरह हमारे वश होचुके तब दैत्य व देवतोंसे कहा तुम लोग स्नान करके पवित्र होकर अग्निमें आहुति देव व दोनों पृथक् पृथक् पंक्ति बांधकर कुशके आसनपर बैठो तो मैं अमृत बांटकर पिलादूं जब मोहनीरूप भगवान्के कहनेसे देवता व दैत्य अच्छे अच्छे भूषण व वस्त्र पहिनकर पृथक् पृथक् बैठे तब मोहनीरूप भगवान् दैत्योंसे बोले कि मैं पहिले देवतोंको अमृत देकर पीछे तुम्हें पिलाऊंगी दैत्योंने कहा हमें तुम्हारा कहना सब अंगीकार है यह सुनतेही मोहनीरूप भगवान्ने कलशा अमृत का उठा लिया और देवतोंकी पंक्तिमें जाकर उन्हें अमृत पिलाना और दैत्योंकी ओर तिरछी चितवनसे देखना आरम्भ किया सो दैत्यलोग उसी चितवन के मदमें मतवाले होकर पीना अमृतका भूलगये जब मोहनीरूप भगवान् सब देवतोंको अमृत पिलाते हुये पंक्तिके अन्तमें जहां सूर्य व चन्द्रमा बैठे थे पहुँचे तब राहुनाम दैत्यने कलशा देखकर विचारा कि इस स्त्रीने हमलोगों को अपने रूपपर मोहित करके सब अमृत देवतोंको पिला दिया व दैत्योंको अमृत पीनेसे निराश रक्खा जब ऐसा विचारकर उस दैत्यने अपना स्वरूप देवतोंके समान बना लिया और सूर्य व चन्द्रमाके मध्यमें बैठकर अमृत पिया तब सूर्य व चन्द्रमाने चिल्लाकर मोहनीरूपसे कहा कि यह दैत्य है जैसे यह वचन मोहनीरूप भगवान्ने सुना वैसेही बचा हुआ अमृत चन्द्रमा पर गिराकर सुदर्शन चक्रसे राहुका शिर काट लिया पर वह दैत्य अमृत पीनेके प्रतापसे नहीं मरा शिर व धड़ उसका अलग अलग दो स्वरूप होकर उठ खड़ा हुआ सूर्य व चन्द्रमाने मोहनीरूपसे कहा कि

महाराज अब इसे मत मारो छोड़देव जितने भाग इसके होंगे अमृत पीनेके प्रतापसे उतने स्वरूप होकर यह जीता रहैगा यह सुनकर मोहनीरूप भगवान्ने राहुसे कहा कि तैंने देवतोंमें बैठकर अमृत पिया इसलिये अब तू दैत्योंका लक्षण व स्वभाव छोड़दे सूर्यादिक सात ग्रहोंके साथ रहकर अपनी पूजा लियाकर उसी दिनसे नवग्रह भये उसके मस्तक को राहु और धड़को केतु कहते हैं सूर्य व चन्द्रमाके बतलानेसे मोहनीरूप भगवान्ने राहु दैत्य का शिर काट लिया इसी कारण उसने शत्रुता रखकर अमावास्याके दिन व पूर्णिमा की रातको जब अतिप्रकाश सूर्य व चन्द्रमामें होताहै तब वही राहु व केतु आनकर उनको निगलने चाहते हैं जिसको चन्द्रग्रहण व सूर्यग्रहण कहते हैं उससमय भगवान्जी की आज्ञानुसार सुदर्शन चक्र उनकी रक्षा करते हैं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् मोहनीरूप भगवान्ने अमृत पिलाकर सुदर्शन चक्रको वास्ते रक्षा करने सूर्य व चन्द्रमाके यहां छोड़ दिया और आप अन्तर्धान होकर वैकुण्ठको पधारे और त्रिलोकीनाथने यह विचारकर दैत्योंको अमृत नहीं पिलाया कि वह लोग अमृत पीने से अमर होकर संसारी जीवोंको दुःख देवेंगे इनको अमृत पिलाना ऐसा है कि जैसे कोई सर्पको दुग्ध पिलावै ॥

दशवां अध्याय।

देवता व दैत्योंसे युद्ध होना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् अमृत निकालनेमें परिश्रम देवता व दैत्यों का बराबर था पर नारायणजी जिसको देते हैं वह पाताहै जिसतरह मनुष्य अपने लाभके वास्ते बहुत उद्योग करते हैं उनमें जिसपर भगवान्की कृपा होती है वह अपना मनोरथ पाता है नहीं तो विना इच्छा परमेश्वरके सब परिश्रम उनका व्यर्थ जाता है उसीतरह दैत्योंकी दशा हुई सो हे राजन् जब मोहनीरूप भगवान् वहांसे अन्तर्धान होगये तब दैत्यलोग चैतन्य होकर कहने लगे कि वह सुन्दरी सब अमृत देवतोंको पिलाकर कहां चली गई उन दैत्योंमें जो बुद्धिमान् थे उन्होंने कहा कि कलशा अमृतका तुम्हारे हाथ लगा था तुमलोगोंने अपनी अज्ञानतासे एक स्त्रीके रूपपर मोहित

होकर अमृत उसे देदिया और वह मोहनीरूप नारायण थे जिन्होंने देवतों की सहायता करने वास्ते हमें धोखा देकर अमृत लेलिया यह समझतेही दैत्यलोग क्रोधित होकर देवतोंसे युद्ध करनेवास्ते तैयार हुये देवतोंने भी लड़ाई की तैयारी की देवतोंकी ओर राजा इन्द्र ऐरावत हाथीपर चढ़ा और चन्द्रमा व सूर्य व वरुण व कुवेरादिक सेनापतियों को अपने साथ लिया वह लोग उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिने व अनेक प्रकारके शस्त्र लिये रथ व गज व वाजी व विमानादिक पर बैठकर रणभूमिमें आये व दैत्यों की ओरसे राजा बलि अतिउत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर प्रभासनाम विमान आकाशगामी पर जो मयदानवने उसको बनादिया था सवार हुआ व हयग्रीव व द्विमूर्धा व विप्रचित्ती व कालनेमि आदिक उसके सेनापतियों ने उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर अनेकरंगके शस्त्र बांध लिये और बाघ व पक्षी व मछली व विमानादिक पर चढ़कर युद्धमें आये उससमय दोनों सेनामें मारू बाजा बजने व अनेक रंगकी ध्वजा फहरानेसे कैसी शोभा मालूम देती थी कि जैसे दूसरा क्षीरसमुद्र वहां प्रकट हुआ व इतनी सेना दोनों ओर थी कि जिसकी कोई गिन्ती नहीं कर सक्ता था फिर देवता व दैत्य अपनी बराबरवाले जोड़ीको देखकर सवारसे सवार व पैदल से पैदल लड़ने लगे इसतरह दोनों ओरसे तलवार व भुशुण्डी व चक्र व तीर व सांग व त्रिशूलादिक शस्त्र चलने लगे कि जिसतरह सावन भादों में अतिवर्षा होती है राजा इन्द्र व बलिसे सांग व वज्र व त्रिशूलादिक अनेक रंगके शस्त्र चलकर ऐसा देवासुरसंग्राम हुआ जिसमें रक्त नदी के समान बह निकला व शस्त्रोंसे घटा छाकर तलवारें बिजुलीके समान चमकती थीं जब युद्धमें परमेश्वरकी कृपासे देवतोंने बहुत दैत्योंको मारडाला व इन्द्र ने मारे बाणोंके राजा बलिको घबड़ा दिया तब उसने सन्मुख लड़नेकी सामर्थ्य न रहनेसे मायायुद्ध आरम्भ किया और अपना विमान आकाश में लेजाकर देवतोंकी सेनापर शस्त्र व पर्वत व अग्नि व रक्त व पीब आदिक वर्षानेलगा व नंगी नंगी राक्षसियां खड्ग व खप्पर लिये देवतोंकी सेनामें आन पहुँचीं व चारों ओर से समुद्रका पानी चढ़ा आता दिखलाई

देने लगा यह दशा देखतेही देवतोंने घबड़ाकर नारायणजीका स्मरण करके उनसे सहायता चाही तब दीनदयालु अन्तर्यामी अपने भक्तों का दुःख देखकर उसी समय गरुड़पर चढ़े और चतुर्भुजी रूपसे शस्त्र धारण किये देवतोंकी सेनामें आये और उन्हें धैर्य देकर कहा तुम लोगोंने अमृत पिया है मरनेसे निडर होकर दैत्योंके साथ लड़ो वह तुमको नहीं जीतने सकेंगे तब भगवान्‌जीका दर्शन पाने व उनके धैर्य देनेसे सब देवता अधिक बल पाकर फिर दैत्योंसे लड़ने लगे जब नारायणजीको देखते ही कालनेमि दैत्य बाघपर चढ़ा हुआ उनकी ओर दौड़ा और एक त्रिशूल उनपर चलाया तब वैकुण्ठनाथने वह त्रिशूल पकड़कर चक्रसे उसका शिर वाहन समेत काटडाला जब कालनेमिका मरना देखकर माली व सुमाली दैत्य ज्योतिस्स्वरूपके सन्मुख लड़ने आये तब श्यामसुन्दरने उनका शिर भी चक्रसे गिरादिया फिर माल्यवान् दैत्यने आनकर एक गदा नारायणजी व दूसरी गरुड़को मारी सो महाप्रभुने उसका मस्तक सुदर्शनचक्रसे काटलिया ॥

ग्यारहवां अध्याय ।

देवतों की विजय होना ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् वैकुण्ठनाथके आते ही दैत्योंकी सब माया इसतरह जाती रही जिसतरह स्वप्नेका दुःख जागनेसे छूटजाता है व देवतों को बड़ा भरोसा होकर राजा बलि व इन्द्रसे फिर सन्मुख युद्ध होने लगा तब इन्द्रने कहा हे राजा बलि तुम नटोंके समान छल करके मेरा राज्य लेना चाहते हो शूरवीरों की तरह सन्मुख होकर धर्मयुद्ध करो आज दैत्योंको मारकर सब दिनका वैर तुमसे लेऊंगा यह वचन सुनतेही राजा बलि बोला हे इन्द्र अभी चार दिन हुये तुम हमारे सामनेसे भाग गये थे आज ऐसा अभिमान तुम्हें करना उचित नहीं है दिन किसीका सदा एकसा नहीं रहता अज्ञान मनुष्य थोड़ा दुःख व सुख होनेसे अभिमान करते हैं व विजय व पराजय परमेश्वरके आधीन है इससे मेरा व तेरा किया कुछ नहीं होसक्ता ऐसा कहकर राजा बलिने इन्द्रको बाणोंसे व्याकुल किया तब इन्द्र

ने अपने वज्र से बलिको मारा तो वह इस तरह आकाशसे विमान समेत पृथ्वीपर गिरा जिसतरह पंख कटा हुआ पहाड़ गिरपड़े यह दशा राजा बलिकी देखते ही यक्षनाम दैत्यने बाघ अपने वाहनको दौड़ाकर एक गदा इन्द्र व दूसरी ऐरावत हाथी के मस्तक पर ऐसी मारी कि वह हाथी व्याकुल होकर घुटनेके बल बैठगया तब इन्द्र हाथीसे उतरकर रथपर चढ़ा जब मातलि सारथी की फुरती देखकर यक्ष दैत्यने एक त्रिशूल मातलिको मारा तब इन्द्रने वज्रसे यक्षका शिर काटडाला उसके मरनेका समाचार नारदजी से सुनकर नमुचि व बलि व पाकनाम तीन दैत्य महाबली इन्द्रसे लड़ने आये उन्होंने इन्द्रको दुर्वचन कहकर इतने बाण मारे कि इन्द्र रथ समेत इसतरह छिपगया जिसतरह सूर्य बदलीमें दिखलाई नहीं देते जब यह दशा देखकर देवता घबड़ागये तब इन्द्रने अपने वज्रसे बलि व पाक दोनों दैत्योंको मारकर फिर वही वज्र नमुचिपर चलाया व उस वज्रसे नमुचिका शिर नहीं कटा तब इन्द्रने बहुत घबड़ाकर मनमें कहा देखो जिस वज्रसे मैंने वृत्रासुरको मारकर पहाड़ोंकी भुजा काटी थीं उस वज्रसे नमुचि का मस्तक नहीं कटा इससे मालूम होता है कि मेरे वज्रकी सामर्थ्य जाती रही यही शोच विचार इन्द्र कररहा था उसी समय यह आकाशवाणी हुई हे इन्द्र नमुचिको वरदान है कि किसी गीली या सूखी वस्तुसे यह नहीं मरेगा कोई दूसरा उपाय इसके मारनेका करो यह आकाशवाणी सुनते ही इन्द्रने समुद्रका फेन वज्रमें लपेटकर उसपर चलाया तो उसका शिर कट गया जब इसी तरह दूसरे देवतोंने भी दैत्योंको मारा तब ब्रह्माजीने विचारा कि देवता व दैत्य दोनों मेरी सन्तान होकर देवता सब दैत्योंको मारा चाहते हैं ऐसा समझकर नारदजीसे कहा तुम जाकर देवतों को समझादो कि अब न लड़ैं उसीसमय नारदमुनिने जाकर देवतोंसे कहा कि तुमने सेनापतियों को मारडाला अब सब दैत्योंको किसवास्ते मारते हो और दैत्यों को समझाया अभी दिन तुम्हारे खोटे हैं मत लड़ो जब नारदमुनिके समझानेसे देवता और दैत्योंने लड़ना छोड़दिया तब इन्द्रादिक देवतोंने परमेश्वरकी दयासे विजय पाकर दुन्दुभी बजाई और अप्सराओं

ने नाच दिखलाकर गन्धर्वोंने गाना सुनाया जब नारायणजी वैकुण्ठ को गये तब सब देवता परमेश्वरका यश गाते हुये अपने अपने लोकमें जाकर सुख व आनन्द करने लगे व इन्द्र अपने राजसिंहासन पर बैठा व जब नारदमुनिकी आज्ञासे दैत्य लोग व राजा बलि व जिन दैत्योंका शिर पड़ा था और सब घायल दैत्यों को उठाकर अस्ताचलमें शुक्राचार्यके पास लेगये तब शुक्रने संजीवनीविद्यासे सब दैत्योंको जिलाकर राजा बलिको बहुत धैर्य दिया तब राजा बलिने हँसते हुये हाथ जोड़कर कहा महाराज आपकी दयासे मैं कुछ शोच नहीं रखता कभी हमारी जय होती है व कभी देवतोंकी अब देवतोंके दिन अच्छे हैं इसलिये उनकी विजय हुई जब हमारी दशा अच्छी आवैगी तब हम लोग भी तुम्हारे आशीर्वाद से देवलोकका राज्य पावैंगे यह सुनकर शुक्रजीने राजा बलिके धैर्य व ज्ञान की बड़ाई की इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् तुमने कथा अमृत निकालने व पिलानेकी जो पूंछी थी सो हमने सुनाई ॥

बारहवां अध्याय।

शुकदेवजी का परीक्षितसे मोहनीरूपकी सुन्दरता वर्णन करना ॥

इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे शुकदेवस्वामी मोहनीरूप कैसा सुन्दरथा कि जिसे देखकर सब देवता व दैत्य ऐसा मोहित होगये कि दैत्यों को अमृत पीना भूलगया शुकदेवजीने कहा हे राजन् हम उस रूपका वर्णन कहांतक तुमसे करें वह मोहनीरूप ऐसा सुन्दर था कि जिसे देखकर महादेवजी भी जिन्होंने कामदेवको भस्म किया था मोहित होगये थे देवता और दैत्य और मनुष्यादिक कौन गिनती में हैं जो अपनेको सम्हाल सकैं यह कथा इसतरह पर है एक दिन पार्वतीजीने शिवशंकरसे कहा विष्णु भगवान्ने जिस स्त्रीरूपसे दैत्योंको मोहि लिया था उस रूपको मैं देखा चाहती हूं यह सुनते ही शिवजी पार्वतीसमेत नन्दीगण पर चढ़कर वैकुण्ठ में नारायणजीके पास गये तब विष्णु भगवान्ने आदरपूर्वक उन्हें बैठाकर पूंछा आज किधर चले तब महादेवजीने उनकी स्तुति करके विनयपूर्वक कहा हे दीनानाथ जिस स्वरूपसे आपने दैत्यों को मोहि लिया था

उस मोहनीरूपको मैं भी देखा चाहता हूं वैकुण्ठनाथ बोले हे महादेवजी मोहनीरूप के देखने से कामवश होकर विह्वल हो जावोगे शिवशंकर ने उत्तर दिया दैत्यलोग अपने मन और इंद्रियोंके आधीन रहकर कामदेवके वश्य होरहे थे इसवास्ते उनकी वह दशा हुई व मैं अपनी इंद्रियोंको वश्य रखता हूं इसलिये मोहनीरूप देखकर उस पर मोहित न हूंगा व पार्वती भी उस रूपको देखना चाहती हैं जिसतरह आप हमारी विनती सदा मानते थे उसीतरह यह इच्छा भी पूर्ण कीजिये यह सुनकर ज्योतिस्स्वरूप बोले हे भोलानाथ तुम हमारे निर्गुणरूपके चाहनेवाले हो जो घटने व बढ़ने व खाने व पहिरनेसे रहित होकर किसीको दिखलाई नहीं देता सो तुम उसी रूपको देखा करो व सगुणरूप मेरा उसे देखना उचित है जिसे निर्गुणरूप देखने का ज्ञान न हो जिसमें सगुणरूप देखकर निर्गुणरूपसे प्रीति उत्पन्न करै और जो अज्ञानी मेरे निर्गुणरूपको नहीं देखने सक्ता उसे मैं अपने सगुणरूपका दर्शन देकर ज्ञानी बनाताहूं कि वह थोड़ासा प्रेम करने से अपना मनोरथ पावे जब यह सब बात सुनने पर भी शिवजीने मोहनीरूप देखनेवास्ते हठ किया तब वैकुण्ठनाथ हँसकर बोले कि तुम व पार्वती दोनों ओटमें जाकर बैठो हम तुमको मोहनीरूप दिखलावेंगे पर चैतन्य रहना यह कहकर नारायणजी वहां से अन्तर्धान होगये जब महादेव व पार्वती आड़में जाकर बैठे तब श्यामसुन्दरकी इच्छासे उसजगह एक बाग व अच्छा कुण्ड व बावली व अनेक रंगके पक्षीसंयुक्त प्रकट होगया उससमय शिवजी व पार्वती बड़ी अभिलाषासे चारोंओर देखकर आपसमें कहते थे देखा चाहिये कि वह रूप किधरसे प्रकट होता है व पार्वतीजी अपनी सुन्दरताके सामने दूसरी स्त्री को तुच्छ समझती थीं इसलिये वह मोहनीरूप देखनेकी अति चाहना रखकर यह विचारती थीं कि देखूं वह रूप मुझसे अच्छा है या नहीं इसी इच्छासे पार्वती बारम्बार उठकर बागमें चौगिर्द देखती थीं जिस समय महादेव व पार्वती मोहनीरूप देखने के वास्ते बहुत आशा रखते थे उसी समय अकस्मात् एक दिशासे मोहनीरूप स्त्री अति सुन्दर उत्तम भूषण व वस्त्र पहिने प्रकट हुई व मुखारविन्द उसका बिजुलीके समान चमकता था

व जड़ाऊ करधनी घुंघुरूदार पहिने गेंद कपड़ेका बहुत अच्छा व गोल रेशमसे सिया हुआ जिसे लड़केलोग खेलतेहैं अपने हाथमें लिये आकाश में उछालकर फिर रोंक लेती थी सो गेंद उछालते व आकाश व पृथ्वी नीचे ऊपर देखने के समय अनार फल सदृश छाती उसकी दिखलाई देती थी तब देखनेवालोंका मन चलायमान होजाता था सो वह मोहनी उस बाग में चारों ओर गेंद खेलती फिरती थी जैसे महादेवजीकी और उसकी आंख सन्मुख हुई व उस मोहनीने नयन मटकाकर मुसकरा दिया वैसे शिवजी उसका रूप व चितवन देखते ही कामातुर होकर उस पर मोहित होगये और मृगछाला जो पहिने थे उसे उतारकर फेंक दिया व पार्वतीजीको वहां अकेली छोड़कर उस मोहनीरूपके सन्मुख नंगे चलेगये और वह रूपवती महादेवपर कुछ स्नेह न रखकर आगेको चली तब शिवशंकर उस मोहनी रूपके पीछे इसतरह विह्वल होकर दौड़े कि जिसतरह सांड़ गायके पीछे दौड़ताहै व कामदेवने अपना अवसर पाकर शिवजीसे बदला लिया जब महादेवजी मोहनीरूप के निकट पहुँचे व उसने घूंघट काढ़कर अपना मुँह छिपा लिया तब भोलानाथ मुँह छिपा लेनेसे अतिव्याकुल होकर मन में कहने लगे देखो मुझसे बड़ी भूल हुई जो इसके निकट आया कि मुखा-रविन्द देखनेसे भी विमुख रहा व पार्वतीजीने भी वहां जाकर उस स्त्री की सुन्दरताई देखी तो अपने रूपको उसके सामने हजार भागमें एकके तुल्य नहीं पाया व पांव उस मोहनी का मोतीके समान चमकता देखकर अति लज्जासे मनमें कहा ऐसी सुन्दरी मैंने कभी नहीं देखी थी इसके सामने मेरी कुछ गिनती नहीं है जब महादेवजी कामातुर होकर अति व्याकुल हुये व बाग ज्ञानकी हाथसे छूटगई तब शिवजीने दौड़कर उस मोहनी को अपने गलेसे लगा लिया सो वह छिटककर आगे को चली जब गोद में लेने से शिवजी अति विह्वल होगये तब वह उसके पीछे पकड़नेके वास्ते दौड़े पर वह मोहनी इसतरह चमककर निकल जाती थी कि दौड़नेपर भी शिवजीका हाथ उसके अंगतक नहीं पहुँचता था उसीसमय वह सुन्दरी एक बेर महादेवजीकी दृष्टिसे अन्तर्धान होकर एक क्षणमें फिर प्रकट हुई

तब शिवजीने झपटकर उसे पकड़ लिया पर वह महादेवको झटककर फिर बिलग होगई जब इस खींचाखींचीमें वस्त्र मोहनीरूपका ढीला होकर गिर पड़ा तब शिवजीने उसे नंगे देखा और कामवश होकर उसे गोद में उठा लिया व मोहनी भगवान्‌की इच्छानुसार उसे गोद में लिये हुये उसीतरह ऋषीश्वर व मुनीश्वरोंके स्थानपर भटका किये जब शिवजी बहुत दौड़नेसे थककर ऋषीश्वर व मुनीश्वरोंके निकट अति लज्जित हुये व मोहनीरूप को गोद में लेने से ज्ञान व धैर्य उनका छूटकर वीर्य गिरपड़ा तब मोहनी भगवान् यह दशा उनकी देखकर वहांसे अन्तर्धान होगये सो जहां जहां महादेवजी का वीर्य गिरा था वहां सोना व चांदी व पारेकी खानि उत्पन्न हुई व वीर्य गिरने व अन्तर्धान होने मोहनीरूपसे महादेव अति लज्जित व उदास होकर एक वृक्षके नीचे बैठगये और यह इच्छा करने लगे कि कदाचित् फिर वह मोहनी प्रकट होवे उसी समय पार्वतीजी वहां पहुँच गईं उन्हें देखतेही महादेवने अति लज्जित होकर मन में कहा कि देखो मैं काम व क्रोध व मोह व लोभको अपने वश जानकर हजारों वर्ष समाधि में बैठा था सो इस मोहनीरूपके देखनेसे सब ज्ञान भूलकर विह्वल होगया और उसके पीछे बौड़होंके समान दौड़तारहा व अपना धैर्य व बड़ाई छोड़ कर मुनि व ऋषीश्वरोंके निकट अपना उपहास कराया इससे मुझे मालूम होता है कि मैंने कामदेव को अपने वश रखना कहकर नारायणजी से मोहनीरूप देखने का हठ किया था इसीवास्ते गर्वप्रहारी भगवान् ने ज्ञान हरकर मेरी यह दशा की संसार में जो लोग अपने ज्ञान का गर्व रखते हैं उनको मूर्ख समझना चाहिये परमेश्वर की माया ऐसी प्रबल है कि जिससे कोई नहीं छूटने सक्ता ऐसा विचारकर महादेवजी अति चिन्ता करनेलगे जब परमेश्वर ने देखा कि भोलानाथ मेरे परमभक्त अति लज्जित होकर उसी शोच में अपना तनु छोड़ना चाहते हैं तब विष्णु भगवान् चतुर्भुजी स्वरूपसे शिवजी के पास आनकर प्रकट हुये व महादेवका हाथ पकड़कर आदरपूर्वक बोले हे सदाशिव तुम कुछ चिन्ता मत करो यह मोहनीरूप देखने से योगी व मुनि आदिक किसी का ज्ञान

एक ठिकाने नहीं रहता व मायारूपी स्त्री की चाहनासे बड़े बड़े ऋषीश्वर व महात्मा व संसारीजीव अपना धर्म व कर्म छोड़ देते हैं तुम संसारी जीवों से बिलग नहीं हो इस मायारूपी समुद्रमें चैतन्य रूप कौन नहीं डूबा इस सागरसे कोई बाहर नहीं निकलने सक्ता देखो शुम्भ निशुम्भ दैत्य दोनों भाई कैसे बलवान् थे जब भवानीरूपी मेरी माया उनके पास गई व उन दोनों भाइयोंने चाहा कि यह सुन्दरी हमारे पास रहै तब मायारूपी भगवतीने उन दोनों से कहा कि तुम दोनोंमें जो अधिक बलीहो उसके पास मैं रहूंगी सो दोनों भाई मायारूपी भवानीके वास्ते आपसमें लड़कर मरगये सिवाय उनके और बहुतसे देवता व दैत्य व मनुष्य व ज्ञानीलोगों ने कामदेवके मदमें नष्ट होकर कामरूपी शत्रुसे हार मानी है इसलिये स्त्रीरूपी मायाको अति प्रबल समझना चाहिये पर तुमको मेरी माया नहीं व्यापैगी किसवास्ते कि तुम सदा मेरी चर्चा व ध्यानमें रहते हो कदाचित् तुम कहो कि इससमय मोहनीरूप माया क्यों मेरे ऊपर व्यापी उसका यह कारण है कि तुमने मेरे निर्गुण रूपका ध्यान छोड़कर अपने को हमसे बिलग समझा व मेरी मायाका कौतुक देखना चाहा इसलिये तुम्हारी यह गति हुई अब तुम धैर्य रक्खो फिर मेरी माया तुमको नहीं व्यापैगी जब नारायणजीने इसतरह शिवजीका बोध किया तब वह धैर्य धरकर वैकुण्ठनाथको दण्डवत् करके बिदा हुये व कैलास पर्वतपर आनकर पार्वतीजीसे कहा तैंने नारायणजीकी मायाका चरित्र देखा मैं इन्हीं ज्योतिस्स्वरूपका ध्यान जो मेरे इष्टदेव हैं आठोंपहर करता हूं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जो मनुष्य समुद्रमथनकी कथा सुनकर कोई उद्यमका आरम्भ करै तो उस व्यापारमें उसका मनोरथ पूर्ण होता है॥

तेरहवां अध्याय।

शुकदेवजी का आठ मन्वन्तरों की कथा राजा परीक्षितसे कहना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित एक मन्वन्तर इकहत्तर चौकड़ी युगपर्यन्त इन्द्र राज्य करता है व हरमन्वन्तरमें परमेश्वर एक अवतार धारण करते हैं व दुःखदाई और अधर्मियोंको मारकर धर्मकी रक्षा करते हैं व चिरञ्जीव

ऋषीश्वरकी आयुर्बल एक मन्वन्तर होकर ब्रह्माके दिनमें चौदह इन्द्र राज्य भोगते हैं सो छः मन्वन्तरकी कथा हमने तुमसे वर्णन की अब सातवां मनु विवस्वान्का पुत्र श्राद्धदेव नाम जो वर्तमान है इस मन्वन्तरमें इक्ष्वाकु आदि मनुके दश बेटे व आदित्य आदिक देवता व अगस्त्य व अत्रि व वशिष्ठ व विश्वामित्र व गौतम व जमदग्नि व भरद्वाज सप्तऋषि व पुरन्दर नाम इन्द्र होकर कश्यपजीके अदिति नाम स्त्री से वामन अवतार परमेश्वर का हुआ था उसकी कथा हम पीछेसे विस्तारपूर्वक कहेंगे आठवां सावर्णि नाम मनु निर्मेकादिक उसके पुत्र सुतपालादिक देवता व बलि नाम इन्द्र व दीप्त नाम आदिक सप्त ऋषीश्वर होंगे और नारायणजी सार्वभौम नाम अवतार लेकर राज्य इन्द्रलोकका इन्द्र से छीनिकै राजा बलिको देवेंगे नवां दक्षसावर्णि नाम मनु व भूतकेतु आदि उसके पुत्र मरीचि आदिक देवता व अभूतनाम इन्द्र व द्युतिआदि सप्तऋषि होंगे और ऋषभ नाम भगवान्का अवतार होगा दशवां ब्रह्मसावर्णि नाम मनु व भूषणआदिक उसके बेटे हविष्मन्त आदिक सप्तऋषीश्वर व सत्यादिक देवता व स्वायम्भुव नाम इन्द्र होकर परमेश्वर अमूर्ति नाम अवतार लेवेंगे ग्यारहवां धर्मसावर्णि नाम मनु व अनागत आदिक उसके पुत्र व विहंगम आदि देवता व वैधृतनाम इन्द्र व अरुणादिक सप्तऋषीश्वर होकर नारायणजी धर्मसेतु नाम अवतार धारण करेंगे बारहवां रुद्रसावर्णि नाम मनु व देववामन आदिक उसके बेटे व राजधामा इन्द्र व हरित आदिक देवता व तपमूर्ति आदिक सप्तऋषीश्वर होकर सुधा नाम भगवान्का अवतार होगा तेरहवां देवसावर्णि नाम मनु व चित्रसेन आदिक उसके बेटे व सुकर्मआदि देवता व दिवस्पति नाम इन्द्र व निर्मेक आदिक सप्तऋषि होकर परमेश्वर योगीश्वर नाम अवतार लेवेंगे चौदहवां इन्द्र सावर्णि नाम मनु व उरुगम्भीर आदि उसके बेटे व पवित्र आदिक देवता व शुचि नाम इन्द्र व अग्निबाहु सप्तऋषीश्वर होकर बृहद्भानु नाम परमेश्वरका अवतार होगा हे राजन् ये चौदह मन्वन्तर ब्रह्माके एक दिनमें भोग करते हैं उनकी कथा हमने तुमसे वर्णन की व सब कल्पोंमें यही मनु अदल बदलकर राज्य भोगते हैं॥

चौदहवां अध्याय।

इन्द्रादिक देवतों की कथा ॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजीसे पूछा कि महाराज आपने बहुत अच्छी कथा परमेश्वरकी मुझे सुनाई अब दयालु होकर यह कहिये कि मनु आदिक अपने राज्यमें क्या काम करते हैं शुकदेवजी बोले हे राजन् हर मन्वन्तरमें मनु व मनु के बेटे परमेश्वरकी आज्ञानुसार पृथ्वी पर दिग्विजय व धर्मका प्रचार करते हैं व देवतालोग यज्ञोंका भाग व आहुति व पूजा लेते हैं व राजा इन्द्र दैत्योंको मारकर तीनों लोकके जीवों की रक्षा करते हैं व सप्तऋषीश्वर योग साधकर जो वेद गुप्त होजाता है उसे संसारमें प्रकट करते हैं व भगवान् आप अवतार धारण करके दुष्ट व अधर्मियोंको मारकर गौ व ब्राह्मण व हरिभक्तोंकी रक्षा करते हैं व चौदहों मन्वन्तरमें यही बातें होती हैं और यज्ञ प्रलयमें वही परमेश्वर कालरूप होके सब जीवोंको मारडालते हैं व संसारी मनुष्य अपने बड़े व छोटेका मरना देखनेपर भी ईश्वरकी मायामें लपटकर अपनी मृत्युका विचार नहीं करते जिसतरह तालाब का पानी प्रतिदिन सूखता जाता है व मालूम नहीं होता उसी तरह आयुर्दा मनुष्यकी घटती जाती है पर वे अपने मरने से निडर रहकर परलोकका शोच नहीं करते इसलिये मनुष्यको उचित है कि दिन रात अपना मरना विचारकर कुकर्म न करै व परमेश्वरका ध्यान व स्मरण करता रहै जिससे परलोक बनै इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जो लोग इन चौदहों मन्वन्तरकी कथा सुनकर प्रातःसमय उनको याद व ध्यान करते हैं उनको धर्म व ज्ञान प्राप्त होता है व देवता आदि परमेश्वरकी शक्ति हैं उनका ध्यान करने से भी पाप छूटजाता है ॥

पन्द्रहवां अध्याय।

राजा बलिको शुक्रगुरुकी कृपासे इन्द्रलोकका राज्य छीनलेना ॥

राजा परीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले हे स्वामी प्रथम आपने कहा कि नारायणजी ने वामन अवतार धारण करके राजा बलिसे भीख मांगी व राज्य उसका छलसे लेकर देवतोंको दिया इस बातका मुझे बड़ा संदेह

है कि राजा बलिको ऐसी सामर्थ्य थी जो परब्रह्म परमेश्वरने उससे भिक्षा मांगकर दानलिया व दान लेनेउपरांत फिर किसवास्ते यज्ञ करते समय उसे बांधा इसको विस्तारपूर्वक कहिये शुकदेवजी बोले हे राजन् जब नारायणजीकी कृपासे देवतोंने अमृत पीकर दैत्योंको लड़ाईमें जीतलिया और अपनी राजगद्दी पाई व राजा बलिने दैत्यों समेत अस्ताचलमें रहकर बहुत दिनों तक सेवा टहल अपने गुरुकी प्रेमपूर्वक की तब शुक्राचार्य गुरु अति प्रसन्न हुये और राजा बलिको प्रयागक्षेत्रमें लाकर उससे विश्वजित् नाम यज्ञ कराया यज्ञ सम्पूर्ण होतेही अग्निकुण्डमेंसे एक रथ सुनहरा व चार घोड़े व एक शंखकी ध्वजा व एक धनुष व तर्कस जिसके तीर नहीं घटते थे व खड्ग व दिव्य कवच निकला व एक माला फूलकी प्रह्लादभक्तने राजा बलि अपने पोते को दी व शुक्राचार्य गुरुने एक शङ्ख राजा बलिको देकर कहा तुझे अपने योगबलसे वरदान देते हैं कि तुम इन्हीं घोड़ोंको इस रथमें जोतो और यही ध्वजा लगाकर चढ़ो और यह दिव्य कवच अपनी भुजापर बांधकर यही धनुष बाण उठालो और यह माला पहिनके मेरा दिया हुआ शङ्ख बजाकर देवतोंपर चढ़ाई करो नारायणजीकी दयासे तेरी विजय होगी राजा बलि यह वरदान पाकर अति प्रसन्न हुआ और शुक्राचार्य की आज्ञानुसार शुभ साइतिमें अपने गुरु व दादाको दण्डवत् करके उसी रथपर चढ़ा व अनेक शूरवीरोंको संग लेकर बड़ी धूमधामसे इन्द्रपुरीको घेरलिया हे राजन् इन्द्रकी अमरावती पुरीमें अति उत्तम स्थान व बाग व तड़ागादिक सोनहुले रत्नजटित रहकर सब स्त्री व पुरुष सोलह वर्षके किशोर अवस्था बने रहते हैं और वहां के सब जीव नीरोगित रहकर बहुत अच्छा भूषण व वस्त्र पहिनते हैं व सब स्त्री व पुरुष आपसमें आनन्दपूर्वक भोग व विलास करके जड़ाऊ विमानोंपर चारोंओर सैर व विहार किया करते हैं हे राजन् उस स्थानकी बड़ाई कहां तक कहूं वहाका वृत्तान्त देखने से मालूम होता है पर लालची व क्रोधी व कुकर्मी व अहंकारी व अपना शरीरपालन करने व मांस खानेवाले मनुष्य वहां जाने नहीं सक्के जब राजा बलिने वहां पहुँचकर वही शंख बजाया तब इंद्रादिक देवता वह

शब्द सुनकर मारे भयके कांपउठे पर लाचारीसे जब राजा बलिके सन्मुख लड़ने वास्ते आये तब उसके तेजसे देवतोंका अंग जलने लगा सो देवता लोग अमृत पीनेपर भी दैत्योंसे हारमानकर भागगये व राजा बलि तीनों लोकका राज्य देवतोंसे छीनकर इन्द्रासन पर बैठा व देवतोंने जाकर बृहस्पतिजीसे पूछा महाराज हमलोगोंकी पराजय किसवास्ते हुई बृहस्पति बोले शुक्राचार्यके आशीर्वाद व वरदान देनेसे दैत्योंने विजय पाई है तुम्हारे ऐसे सौ इन्द्र इकट्ठे होकर राजा बलिका सामना करैं तो उस शक्रके प्रतापसे हारजावेंगे सिवाय परब्रह्म परमेश्वरके दूसरा कोई उसका सामना नहीं करसक्ता जो कोई गुरु व ब्राह्मणकी सेवा विधिपूर्वक करता है उसके सब मनोरथ पूर्ण होते हैं यह वचन सुनतेही देवता अधैर्य होकर झुरैला व हरिण आदिक का रूप धरके वहांसे भागे व किसी जगह छिपकर अपने दिन काटनेलगे जब राजा बलि तीनोंलोकका राज्य पाकर अतिप्रसन्न हुआ तब उसने अपना तेज व बल बढ़ानेके वास्ते भरतखण्डमें यज्ञ करना विचारकर शुक्राचार्य गुरुसे विनयपूर्वक कहा महाराज आप कोई ऐसा उपाय करैं जिसमें सदा मेरा राज्य स्थिर रहै शुक्रजी बोले हे राजा बलि तुम सौ वर्षतक बराबर यज्ञ करो व बीचमें किसी साल विघ्न न होकर सौ यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्ण होजावैं तब तुम्हारा राज्य सदा स्थिर रहनेसक्ताहै विना सौ यज्ञ किये इन्द्र भी देवलोकका राज्य नहीं पाता यह वचन सुनतेही राजा बलिने गुरुकी आज्ञानुसार हरसाल यज्ञ करना आरम्भ किया जब निन्नानबे यज्ञ अच्छीतरह होकर सौवां यज्ञ सम्पूर्ण होनेके निकट पहुँचा तब राजा बलि बहुत प्रसन्न हुआ व उसने इतना दान व दक्षिणा ब्राह्मण व कंगालों को हर यज्ञमें दिया कि किसी को कुछ इच्छा नहीं रही और कोई मंगन उसके द्वारसे विमुख नहीं फिरा व संसारमें बड़ी कीर्ति उसकी फैलिगई ॥

सोलहवां अध्याय।

अदितिको इन्द्रके राज्य पानेवास्ते अपने पति कश्यपजीकी सेवा करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब इन्द्रने यह समाचार पाया कि राजा बलि अपना राज्य सदा स्थिर रहनेके वास्ते सौ यज्ञ करना चाहता है तब

उसे बड़ा शोच हुआ व अदिति देवतोंकी माता अपने बेटोंका राज्य छूट जानेसे सदा चिन्ता में रहा करती थी जब उसने देवतोंसे वृत्तान्त सौ यज्ञ करने राजा बलिका सुना तब उसको अधिक शोच उत्पन्न हुआ सो एक दिन वह उसी चिन्तामें डूबी हुई कश्यपजी अपने पति के पास चुपचाप बैठीथी उसे उदास देखकर कश्यपजीने पूछा हे अदिति आज हम तुझे बड़े शोचमें देखते हैं इसका क्या कारण है तेरे द्वारेपरसे कोई मंगन व अतिथि भूखा तो फिरकर नहीं चलागया या तैंने किसी ब्राह्मणको दान देने कहाथा सो नहीं दिया इसलिये तेरा मुख मलीनहै यह वचन सुनतेही अदिति हाथ जोड़कर बोली हे स्वामी मेरे द्वारेसे कोई अभ्यागत भूखा फिरकर नहीं गया पर मैं अपने बेटों का जिनका राज्य दैत्योंने छीनलिया व उनकी स्त्रियां भागकर पहाड़ों की कन्दरामें छिपी हैं दिनरात शोच करती हूं उसी कारण मेरा तेज हीन होगयाहै सो आप दयालु होकर कोई ऐसा उपाय कीजिये जिसमें देवता फिर अपना राज्य पावें तब कश्यपजी बोले देवता व दैत्य दोनों मेरी सन्तान होकर अपने अज्ञानसे यह नहीं समझते कि जो नारायणजी चाहते हैं सो होताहै मेरा किया कुछ नहीं होसक्ता कोई किसी का बाप व बेटा न होकर यह सब परमेश्वरकी माया समझना चाहिये देवतों के राज्य भोगने के समय दिति तेरी सवति रोती है व जब दैत्य लोग राजा होते हैं तब तू उदास होतीहै मुझे किसी तरह छुट्टी नहीं मिलती सो तू बीचशरण परमेश्वरके जाकर उनका व्रत रख तो तेरा मनोरथ पूर्ण होगा यह बात सुनकर अदितिने विनय किया महाराज मुझे बतलादो परमेश्वरका व्रत किस तरह करना होगा तब कश्यपजी बोले तुम फाल्गुन सुदी प्रतिपदासे नित्य शिवव्रत जो ब्रह्माने मुझे बतलाया था रखकर ब्रह्मचर्य रहो सिवाय दूधके और कुछ भोजन न करके पृथ्वीपर सोया करो व शूकर की खोदी हुई मिट्टी प्रतिदिन अंगमें लगाके स्नान किया करो व उसी मिट्टी की मूर्ति नित्य बनाके वासुदेव मंत्रसे विधिपूर्वक पूजा किया करो और एकसौ आठ आहुति खीरसे अग्निमें होम करके उसी खीरका भोग लगाय बारह दिनतक यह व्रत रखकर दिनरात नारायणजी के चरणोंका

ध्यान किया करो फाल्गुन सुदी द्वादशीको उद्यापन उसका करके ब्राह्मणों को अच्छे अच्छे पदार्थ खिलाय व बहुतसा दान व दक्षिणा आचार्य व ब्राह्मणपूजा व होम करानेवाले को देव व आनन्दपूर्वक उसे बिदा करके रातको जागरण करो तब तुम्हारी कामना पूर्ण होगी यह व्रत सब यज्ञादिकों से उत्तम होता है॥

सत्रहवां अध्याय।

अदितिका कश्यपजीकी आज्ञानुसार व्रत आरम्भ करना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित अदितिने उसी तरह व्रत रखकर शुद्ध अन्तःकरण से परमेश्वरके चरणोंका ध्यान किया तब व्रत सम्पूर्ण होने उपरान्त आदिपुरुष भगवान्ने प्रसन्न होकर चतुर्भुजीरूपसे जड़ाऊ मुकुट पहिने वैजयन्तीमाला गलेमें डाले मन्द मन्द मुसकराते हुये उसको दर्शन दिया जब अदितिने उस मोहनीमूर्ति को देखतेही अति हर्ष से दण्डवत् व पूजा व परिक्रमा करके स्तुति की तब नारायणजी ने कहा तू क्या चाहती है जो कुछ इच्छा हो सो वरदान मांग अदिति हाथ जोड़कर बोली हे महाप्रभु अन्तर्यामी मुझे यही अभिलाषा है जिसमें दैत्योंसे राज्य छूटकर इन्द्रादिक देवता मेरे बेटोंको इन्द्रासन मिलै वह उपाय कीजिये यह बात सुनकर नारायणजी ने कहा हे अदिति तू चाहती है कि जिस तरह इन्द्राणी आदिक तेरी पतोहू दुःख पाती हैं उसी तरह दैत्यों की स्त्रियांभी कष्ट पावैं सो राजा बलिने सौ यज्ञ करके मुझे प्रसन्न किया और वह गुरु व ब्राह्मणकी भक्ति रखता है इस कारण मैं उसका राज्य बरजोरी छीनकर नहीं लेसक्ता धर्मात्मा व हरिभक्तों पर मेरा कुछ वश नहीं चलता पर तैंने भी मेरा व्रत रखकर मुझे अति प्रसन्न किया है इसलिये तेरेवास्ते छल करके राजगद्दी दैत्यों से लेकर देवतों को देवेंगे यह वचन सुनकर अदिति ने विनय किया महाराज मैं चाहती हूं तुम मेरे गर्भ से अवतार लेकर देवतों की सहायता करो जिसमें वे लोग अपना राज्य पावें आदिपुरुष बोले बहुत अच्छा तेरा मनोरथ पूर्ण होगा ऐसा वरदान देकर अन्तर्धान होगये व उसी दिन अदितिके कश्यपजी से गर्भ रहकर मुखारविंद उसका सूर्यके

समान चमकनेलगा जब दशवें महीने बालक होनेका समय निकट पहुँचा तब ब्रह्मा व महादेवादिक देवतोंने अदितिके स्थान पर आकर गर्भस्तुति करके विनय किया हे वैकुंठनाथ आप देवतोंके छुड़ाने वास्ते अवतार लेते हैं सिवाय तुम्हारे और कौन उनकी सुधि लेनेसक्ता है यह स्तुति सुनते ही आदिपुरुष भगवान्ने भादों सुदी द्वादशी मध्याह्न समयमें चतुर्भुजी रूप से प्रकट होकर अपने माता व पिता व देवता आदिक जो लोग वहां थे सबको दर्शन दिया उनको देखतेही सब छोटे बड़े प्रसन्न होकर दण्डवत् करने लगे फिर उसी समय परमेश्वरने वामनरूप अपना अति सुन्दर छोटा अंग जिस तरह कोई बालक ब्रह्मचर्य होकर अपने घरसे विद्या पढ़नेवास्ते बाहर निकलै उसी तरह धारण कर लिया जब कश्यप व ब्रह्मा आदिक देवतोंने उनका वामनतनु देखा तब उन्होंने कोपीन व अंगौछा व करधनी व दंड व कमण्डलु व छत्रादिक सब वस्तु ब्रह्मचर्यकी वहां ला दीं व ब्रह्माने वेदानुसार उनका यज्ञोपवीत किया व देवतों समेत स्तुति व परिक्रमा करके उनपर फूल बर्षाते हुये अपने अपने स्थानको चले गये व अप्सरों ने अपने अपने विमानों पर आनकर आकाशमें से नाच दिखाया व गन्धर्वों ने गाना सुनाया और कश्यपजीने उनकी बहुत स्तुति की उस समय तीनों लोक में आनन्द व मंगलाचार होगया॥

अठारहवां अध्याय।

वामनजी का राजा बलिकी यज्ञशालामें जाना व तीन पग पृथ्वीदान उनसे मांगना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित वामन भगवान्ने यज्ञोपवीत होने उपरांत स्वरूप अपना ब्रह्मचारीके समान बना लिया व दण्ड कमण्डलु हाथमें लेकर कश्यप व अदितिके स्थानसे बाहर निकले पृथ्वीदान लेनेकी इच्छा रखकर नर्मदा किनारे को जहांपर राजा बलि यज्ञ करता था चले उस समय पृथ्वी यह विचारकर कांपने लगी देखो परमेश्वर त्रिलोकीनाथ चौदह भुवनके मालिक होकर आप पृथ्वी मांगनेके वास्ते जाते हैं जब वामन भगवान् अति तेजवान् रूपसे यज्ञशालामें पहुँचे तब बड़े बड़े ऋषीश्वर व ब्राह्मण व राजा बलि व शुक्राचार्यादिक जितने लोग वहां बैठे थे उनका

प्रकाश देखकर उठ खड़े हुये व इस सूरतका नाटा मनुष्य कभी उन्होंने नहीं देखा था इसलिये वामनरूपको देखकर आश्चर्य करने लगे व राजा बलि ने वामनजीको जड़ाऊ सिंहासन पर बैठाकर हाथ जोड़के विनय किया हे ब्रह्मचारी महाराज मैंने गुरु व ब्राह्मणके आशीर्वादसे निन्नानबे यज्ञ सम्पूर्ण किये और यह सौवां यज्ञ करता हूं बहुत अच्छा हुआ जो इस यज्ञमें आप ऐसे महापुरुषके चरण आये व तुम्हारा दर्शन पानेसे मेरा भाग्य उदय हुआ और पितृलोग कृतार्थ हुये सो हे बालकरूप ब्रह्मचारी जिस तरह आप विना बुलाये दयालु होकर यज्ञमें पधारे हैं उसी तरह आपको गो व स्थान व बाग व हाथी व घोड़ा व द्रव्य व रथ व पालकी व गांव व पृथ्वी व नगर आदिक जिस वस्तुकी इच्छाहो सो कहिये मैं तुम्हारे भेंट करूं व तुम्हें विवाहकी अभिलाषा हो तो अच्छे कुलमें विवाह करदूं व हे ब्रह्मरूप तुम्हारा अंग छोटा दिखलाई देताहै पर मुखारविन्दके प्रकाशसे आप मुझे महापुरुष मालूम होते हैं जो कुछ मांगो सो देसक्ता हूं अपने प्राणतक देने में भी लोभ नहीं करूंगा यह वचन सुनकर वामनजी बोले हे राजन् तुम्हारी बुद्धि व बड़ाईके आगे यह सब बात कौन कठिनहै तुम प्रह्लाद भक्त के वंश में जो कश्यपजीका पोता था उत्पन्न होकर शुक्राचार्य ऐसा महात्मा गुरु रखते हो क्योंकर तुम धर्मात्मा न हो सो मैं बहुत लोभ न रखकर केवल तीन पग पृथ्वी तुमसे दान लेने चाहता हूं जहां आसन कुशका बिछाकर हरिभजन करूं यह बात सुनतेही राजा बलि हँसकर बोला हे ब्रह्मचारी आपने मुझसे क्या थोड़ी वस्तु मांगी किसवास्ते इतनी भूमि मांग नहीं लेते जिसमें तुम्हारा स्थान तैयार हो व खेती करके प्रसन्नता से अपना प्रतिपाल करो और फिर तुम्हें संसारमें किसी वस्तुकी इच्छा न रह कर दूसरे किसीसे कुछ मांगना न पड़े तब भगवान्जी बोले हे राजन् अपने प्रयोजन भर मांगना अच्छा होकर लोभ से अधिक लेना प्रतिग्रह दान समझना चाहिये सो हम संतोषी ब्राह्मण होकर सिवाय तीन पग पृथ्वी और किसी वस्तुकी इच्छा नहीं रखते व तुम्हारी गिनती बड़े दानियों में है जो तुमने मुझे इच्छापूर्वक दान मांगने वास्ते कहा नहीं तो

दूसरे संसारी मनुष्य अपनी सामर्थ्य प्रमाण दान देते हैं हे विरोचनके पुत्र तुम्हारे पुरुषा ऐसे दानी व शूरवीर हुये हैं जिन्होंने कभी दान देने से हाथ व रणभूमिसे मुँह अपना नहीं फेरा व उस कुलमें कोई लालची व अधर्मी नहीं होकर हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष तुम्हारे परदादे ऐसे प्रतापी हुये जिन्होंने देवतों को जीतकर तीनों लोकका राज्य किया था यह बात सुनकर राजा बलि बोला तुम ब्राह्मणके बालक होकर अपना अर्थ सिद्ध करना नहीं जानते तुम्हारे मुखारविन्दका प्रकाश देखने व बातों से मैं आपको बड़ा महात्मा समझता हूं पर तीन पग पृथ्वी मांगने से तुम मुझे दरिद्री मालूम होते हो मेरे द्वारेपर जो ब्राह्मण व मंगन आता है फिर उसे जन्म पर्यंत दूसरी जगह जाने व मांगने का प्रयोजन नहीं रहता इसलिये मुझे तुम्हारे ऐसे महात्मा पुरुषको तीन पग पृथ्वी दान देते हुये लज्जा मालूम होतीहै वामनजीने कहा हे राजन् लोभ बहुत निषिद्ध होकर अधिक तृष्णा रखने से ब्राह्मणका तेज व धर्म नहीं रहता व संतोष रखने से ब्राह्मण का तेज व बल व गुण अधिक होताहै व लालची मनुष्य देश विदेश फिर कर करोड़ों रुपया कमावै व तीन लोकका राज्य पावै व बहुतसे बेटे व नाती उसके उत्पन्न होवैं तिसपर भी उसकी इच्छा पूरी नहीं होती जिस तरह आगि में घी डालने से अग्निकी ज्वाला बढ़ती है उसीतरह लोभी मनुष्य बहुत मिलनेपर भी तृष्णा बढ़ाते जातेहैं सन्तोष रखनेसे तीन पग पृथ्वी हमको बहुत है कदाचित् सन्तोष मुझे न होगा तो सातों द्वीप का राज्य मिलनेसे भी मेरी चाहना नहीं छूटैगी इसलिये मैं सिवाय तीन पग भूमि के और कुछ नहीं चाहता व विना सन्तोष किये संसारमें सुख नहीं होता अधिक तृष्णा रखना दुःख की जड़ समझना चाहिये॥

दो० अर्ब-खर्बलों द्रव्यहै उदय अस्तलों राज। तुलसी जो निज मरण है तो आवै केहि काज॥

उन्नीसवां अध्याय।

बलिका वामनजीको तीन पग पृथ्वीदान देने वास्ते तैयार होना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित यह बात वामनजी से सुनकर राजा बलि ने कहा बहुत अच्छा चरण अपना आगे लाइये मैं उसे धोकर तीन पग

भूमि संकल्पदूं जैसे वामनजीने पांव अपना आगे बढ़ाया वैसे राजा बलि ने चरण उनका धोकर वह जल अपने शिर व आंखों में लगाया व वेदानुसार उस चरण को साथ धूपदीपादिक के पूजकर अपनी स्त्री से संकल्प करनेवास्ते पानी मांगा जब रानी विन्ध्यावली झारी गंगाजलकी उठा लाई व राजा तीन पग पृथ्वी दान देनेवास्ते तैयार हुये तब शुक्राचार्य अपने ज्ञानसे वामनजीको पहिचानकर उठे व राजा बलिके पास जाकर कानमें कहा हे राजन् तुमने इनको नहीं पहिचाना इन्हें छोटासा ब्रह्मचारी मत समझो यह आदि पुरुष भगवान् देवतों की सहायता करनेवास्ते आप वामनअवतार धरकर तेरा राज्य लेने आये हैं तीन पग दान लेनेके बहाने से तीनों लोक लेकर देवतों को दे देवैंगे तू इनके छलमें मत आव कदाचित् तुम ऐसा कहो कि तीन पग भूमि देनेवास्ते इन्हें कहि चुका हूं तो उत्तर उसका यह है कि राजा जो कुछ देश व धन रखता हो उसमें पांच भाग होना चाहिये एक वास्ते धर्म व दूसरा यश व तीसरा अपने प्रयोजन व चौथा स्त्री व पुत्र पांचवां सेवकोंको होताहै इसलिये पांचवां भाग अपने देश व धनमें दान करना उचित होकर ऐसा नहीं कहा है जो सब राज्य व धन देकर पीछेसे दुःख उठावे यही बात वामनजीसे कहि देव नहीं तो अपने दो पगमें चौदहों भुवन तेरा राज्य यह नाप लेवैंगे व तू तीसरा पग भूमि नहीं देने सकैगा धन जाने व गो ब्राह्मणकी भलाई होने स्थानपर झूठ बोलना अधर्म नहीं होता इसलिये तू अपने वचनसे फिरजा तुझे पाप न होगा यह बात सुनतेही राजा बलिने चारघड़ी तक शोच करके विचारा कि शुक्रगुरुका कहना न मानना मेरेवास्ते अच्छा नहीं मालूम होता व ब्राह्मण से बात हारकर अपना वचन छोड़ देना उससे अधिक निषिद्ध है उन्हीं नारायणजी ने हिरण्यकशिपु मेरे परदादे को जिसने मुँहमांगे वरदान ब्रह्मासे पाये थे मारकर राज्य उसका छीन लिया सो वही त्रिलोकीनाथ मेरे घर आनकर तीन पग पृथ्वी भिखारीके समान दान मांगते हैं इसलिये मुझको अपना राज्य व धन व प्राण इनके ऊपर निछावर कर देना उचितहै कदाचित् मैं शुक्रगुरुकी आज्ञानुसार दान देनेमें वचन छोड़

दूंगा तो इनमें यह भी सामर्थ्य है कि मुझे मारकर सब राज्य व देश मेरा छीन लेवेंगे तब क्या गुण निकलैगा और जो नारायणजीकी इच्छा होगी वैसा होकर उसमें तिलभर घटने व बढ़ने नहीं सक्ता इसलिये जो मैंने तीन पग पृथ्वी दान देनेका वचन किया है उससे फिरना न चाहिये॥

बीसवां अध्याय।

राजा बलिका वामनजी को तीनपग पृथ्वी संकल्प कर देना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित राजा बलि यह बात विचारकर शुक्राचार्यसे बोले महाराज आप कहते हैं कि तुम इस ब्राह्मणको पृथ्वीदान मत देव सो ब्राह्मणसे झूठ बोलना बड़ा पाप होताहै मैं वास्ते राज्य व धन व संसारी सुखके जो सदा स्थिर नहीं रहता किसतरह झूठ बोलूं कि राज्य व द्रव्य अकेला मेरा न होकर इसमें लड़केवाले व सेवकोंका भी भाग है मरती समय इन लोगोंमें से कोई मेरा साथ नहीं देगा और इस झूठ बोलने के बदले मुझे नरक भोगना पड़ैगा इसलिये राजगद्दी वास्ते कि वह मेरे साथ न जावेगी जो कुछ मैंने वचन हारा उससे फिर नहीं सक्ता चाहे मेरा राज्य जावै या रहै देखो हिरण्यकशिपु मेरा परदादा व प्रह्लादभक्त मेरे दादा तीनों लोकके राजा होकर देवता जिनकी आज्ञा पालते थे वह लोग भी स्थिर नहीं रहे और राज्य उनका जाता रहा जिसतरह विरोचन मेरा बाप राज्य व धन छोड़कर मरगया उसीतरह मैंभी एकदिन राज्य व द्रव्य छोड़कर मर जाऊंगा फिर किसवास्ते झूठ कहूं आप मुझे इस ब्राह्मण को पृथ्वी दान देने से मना न कीजिये किसवास्ते कि जो मनुष्य शुभकर्म करते हैं महाप्रलय तक नाम उनका स्थिर रहता है व कोई जीव सदा अमर नहीं रहता देखो दधीचिने वास्ते कल्याण इन्द्रादिक देवतोंके अपने शरीरकी हड्डी उनको देडाली व राजा शिविने कबूतरका प्राण बचाकर उसके बदले अपने अंगका मांस काट दिया था सो आजतक उन लोगोंका यश संसारमें छा रहा है इसलिये मैं राजगद्दी जाने या नरक भोगने से नहीं डरकर केवल अपयश से बहुत डरता हूं संसारी लोग कहैंगे कि राजा बलिने वामनजीको दान देनेको कहा था सो लालचकी राह वचन अपना छोड़ दिया

सिवाय इसके गृहस्थका यही धर्म है कि ब्रह्मचारी व वानप्रस्थ व संन्यासी जो उसके द्वारे पर आवैं उन्हें विमुख न फेरै कुछ देकर प्रसन्न करै सो आप ऐसा कीजिये जिससे मेरा गृहस्थधर्म बना रहै और तुम आप कहते हो कि यह नारायणजी हैं सो जिन परमेश्वरके केवल प्रसन्न होने वास्ते सब संसार इतना यज्ञ व तप व दान व होम करताहै जब वही त्रिलोकी-नाथ आप मेरे घर आनकर भिखारी के समान तीन पग पृथ्वी दान मांगते हैं तो किसतरह न देवैं इसवास्ते मेरे निकट इनको दान देकर आशीर्वाद लेना व अपने प्राणतक इनपर निछावर कर देना उचित है और यह मेरा राज्य लेकर देवतोंको दे डालैंगे तो इससे भी मेरा यश महाप्रलय तक स्थिर रहेगा और लक्ष्मीपति इस शरीर व तीनोंलोक के मालिक होकर मुझसे दान मांगते हैं इसलिये इनको बड़े हर्षसे दान देकर इनका हाथ नीचे करना चाहिये व लालची मनुष्य नरकमें पड़ते हैं इस कारण तुम्हारी आज्ञा न मानकर अवश्य दान दूंगा जब शुक्रजीने देखा कि राजा बलि मेरा कहना नहीं मानता तब क्रोध करके उसे शाप दिया कि राज्य व धन दोनों तेरा जाता रहै जब राजा बलिने उस शापका कुछ भय नहीं माना और बड़े हर्षसे वामन भगवान्को संकल्प देकर विनय किया हे त्रिलोकी-नाथ तीन पग पृथ्वी आप नाप लीजिये तब वामनजीने स्वस्ति कहकर विराट्रूप अपना इतना लम्बा व चौड़ा धारण किया कि सातलोक कमर के नीचे व सातलोक कमरके ऊपर हो गये और उस रूपमें सारा ब्रह्माण्ड व देवता व दैत्य व मनुष्य व पर्वत व समुद्र व नदी व वन व आकाश व पातालादिक तीनों लोककी वस्तु दिखलाई देने लगीं व शंख व चक्र व गदा व पद्म उनके हथियार व गरुड़जी व नन्द व सुनन्दादिक सोलह पार्षद अपना अपना रूप धारण किये किरीट कुण्डल व मुकुट जड़ाऊ पहिने वहां आनकर प्रकट होगये व जामवन्त भालूने इक्कीस परिक्रमा विराट्रूपकी लेकर दोहाई वामनजीकी फेरदी इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब राजा बलि शुक्र पुरोहितका कहना न मानकर वामनजीको पृथ्वी संकल्प देने लगा तब शुक्रजी एकरूप अपना बहुत

छोटा बनाकर बीच टोंटी उस झारीके जो राजा वलि संकल्प देनेवास्ते हाथमें लिये था घुसगये व उन्होंने राह गिरने पानीका इस इच्छासे बन्द करदिया कि पानी न गिरैगा तो राजा वलि किसतरह संकल्प देगा व वामन भगवान् अन्तर्यामी यह हाल जानकर जो कुशा लिये थे वही उस टोंटीमें डालकर उसका छेद खोलने लगे जब उस कुशाकी नोकसे एक आंख शुक्राचार्य की फूटगई तब शुक्रजी काने होकर टोंटीसे बाहर निकल भागे सो हे राजन् जो लोग किसी को दान देने आदिक शुभकर्म करनेसे बर्जतेहैं उनकी यही गति होती है व दूसरा कारण फोरदेने आंखका यह समझना चाहिये कि परमेश्वरने दो आंखें मनुष्यको इसवास्ते दी हैं जिसमें एक आंखसे संसारी सुख देखकर दूसरी आंखसे परलोकका भला अनभला देखै सो शुक्रजी संसारी सुख अच्छा जानकर अन्तसमयका शोच भूल गये थे इस लिये परमेश्वरने एक आंख फोड़कर उन्हें आगेको चैतन्य कर दिया यह बात सुनकर सब किसीको परलोकका शोच करना चाहिये॥

इक्कीसवां अध्याय।

नाप लेना नारायणजीका अपने विराट्रूपसे एक पगमें सातों लोक ऊपरके व दूसरे पगसे सातों लोक नीचेके॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित वामनजीने अपना विराट्रूप बहुत लम्बा व चौड़ा बढ़ाकर एक पगसे सातोंलोक ऊपरके व दूसरे पगसे सातों लोक नीचेके नाप लिये जब दहिना चरण नारायणजीका ऊपरके सातों लोक नापते समय ब्रह्मपुरीमें पहुँचा तब ब्रह्मादिक देवता वह चरण देखते ही उठ खड़े हुये व विरजा नदीके पानीसे उसको धोकर चरणामृत लिया और वह जल अपने शिर व आंखों में लगाकर शेष चरणोदक एक कमण्डलु में रख छोड़ा कि उसी पानीसे गंगाजी प्रकट हुई हैं व ऋषीश्वर लोग जो वहां बैठे थे उन्होंने चरणोदकको अपनी आंखों में लगाकर बहुत स्तुति की व सब देवतों ने अपना मनोरथ पाकर बड़ी खुशी मनाई व अनेक तरहके बाजन बजाकर जयजयकार किया व उस चरणोदक की विधिपूर्वक पूजा करके आनन्द मनाया व अप्सरों ने बड़े हर्ष से

नाचना व गन्धर्वों ने गाना आरम्भ किया व विप्रचित्ती आदिक दैत्योंने विराट्रूप वामनजीको देखतेही घबराकर राजा बलिसे कहा देखो इस ब्रह्मचारी नाटे मनुष्यने कैसा छल किया तुम कहो तो इसे पकड़लें राजा बलिने दैत्योंको उत्तर दिया यह परमेश्वर त्रिलोकीनाथ जो कुछ करेंगे सब अच्छा होगा इनसे विरोध न करना चाहिये यह बात राजा बलि की सुनकर अपने अज्ञानसे सब दैत्योंने आपसमें कहा देखो हमारा राजा धर्मात्मा बैठा हुआ यज्ञ करता था सो इस ब्राह्मणने आनकर छलसे सब राज्य उसका लेलिया अब हमारा राजा और हमलोग कहां रहैंगे राजा बलिने जन्मभर हमारा पालन किया आज इस ब्राह्मण छलीको मारकर पृथ्वी छीन लेवैं तब राजा बलिके अन्न व जलसे उऋण होजावैं राजा दान देचुके हैं वह लड़ने वास्ते नहीं कहैंगे सब दैत्य यह सम्मत करके अपने शस्त्रसहित नारायणजीके अंगमें लिपट गये तब त्रिलोकीनाथकी आज्ञानुसार सुदर्शनचक्र व पार्षदोंने दैत्योंको मारकर हटा दिया जब दैत्यलोग भागकर राजा बलिके पास आये तब उसने परमेश्वरकी इच्छा ऐसी समझके व शुक्राचार्य गुरुका शाप विचारकर दैत्योंसे कहा तुमलोग युद्ध मत करो दुःख व सुख प्रारब्धसे होता है जब तुम्हारी सायत अच्छी आवेगी तब फिर राज्य पावोगे इस समय देवतोंका भाग्य उदय हुआ है इसलिये तुम्हारा लड़ना व्यर्थ होगा यह वचन सुनतेही जब दैत्य लोग लड़ना छोड़कर भाग गये तब नारायणजी बोले हे राजन् तुमसे तीन पग पृथ्वी दान लिया है और नापनेमें तुम्हारा सम्पूर्ण राज्य मेरे दोपग से अधिक नहीं ठहरा सो तीसरा पग पृथ्वी संकल्प करनेका प्रमाण देव॥

बाईसवां अध्याय।

वामनजीका राजा बलिको सुतललोकका राज्य देना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब वामनजीने तीसरा पग पृथ्वी मांगी व राजा बलि जो वामन भगवान्के सामने शिर नीचे किये खड़ा था मारे डरके कुछ नहीं बोला तब फिर वामनजीने डाटकर कहा हे बलि कदाचित् तू तीसरा पग भूमि नहीं देने सका तो यही बात कहो कि हम

न देवेंगे यह वचन सुनतेही राजा बलिने हाथ जोड़कर विनय किया हे त्रिलोकीनाथ मैं अधर्मी नहीं हूं जो अपना वचन छोड़ूं तब वामनजी बोले कि पहिले तैंने अहंकारसे यह बात कही थी जो कुछ मुझसे मांगो सो देऊं कंगाल ब्राह्मणके समान तीन पग पृथ्वी क्या मांगतेहो सो अब तू तीन पग पृथ्वी नहीं देने सका राजा बलि वामनजीके तेज व डरसे यह नहीं कहने सका कि दान मांगनेके समय स्वरूप आपका छोटा था अब चरण अपना तुमने इतना बढ़ाया किसतरह देवें जब थोड़ी देर तक राजा बलिने कुछ उत्तर नहीं दिया तब वामन भगवान्ने क्रोध करके गरुड़ से कहा राजा बलिको बांधो तो तीसरा पग भूमि देगा जब गरुड़ने राजा बलि को बांधकर पृथ्वी पर गिरा दिया तब जो लोग वहां पर थे उन्होंने आश्चर्य मानकर कहा देखो राजा बलिने सब राज्य व धन अपना वामनजीको देदिया तिसपर उन्होंने इसको बांधा है यह बात अच्छी नहीं की यह सुनकर नारद व सनत्कुमारजी बोले वामन भगवान् दया की राह राजा बलिकी परीक्षा लेते हैं कि यह अपने धर्मपर सच्चा है या नहीं जब फिर वामनजीने एकपग भूमि तीनबेर मांगकर कहा हे राजा बलि तू इन्द्रसे ऊपर रहने वास्ते चाहना रखता था सो शुक्राचार्य गुरुके शापसे तुझे नीचे नरकमें जाना पड़ेगा तब राजा बलि हाथ जोड़कर बोला हे वैकुण्ठनाथ मैं अपने वचनसे नहीं फिरकर दण्डवत् करता हूं सो आप चरण अपना मेरे मस्तकपर रख कर शरीर मेरा तीसरे पग पृथ्वीके बदले नाप लीजिये व कदाचित् आप यह कहें कि चौदहलोक तेरा राज्य दोपग नापमें ठहरा केवल तेरा अंग एकपगके बराबर नहीं होसक्ता सो आप देखिये जिस तरह मनुष्यका सब अंग बराबर न होकर नाक छोटी होने परभी बड़ी पदवी रखती है उसी तरह यह अंग मेरा जो मालिक सब धन व राज्य तीनों लोकका था सो एकपग भूमिसे अधिक पदवी रखता है व हे जगत्पालक तुम्हारा नाम लेने से मनुष्य नरकको नहीं जाता जब आप साक्षात् ईश्वर मेरे सामने खड़ेहैं तब मैं किसतरह नरक जाऊंगा व तुम्हारा दर्शन करनेसे संसारमें मेरी कीर्ति अधिक होगी जिसतरह आप हरिभक्तोंपर दयालु होकर उनको

अशुभ कर्मोंसे बचाये रखते हैं उसीतरह प्रह्लाद अपने भक्तके कुलमें जान कर अहंकार मेरा जो राज्य व धन व सन्तान व बलके मदमें अन्धा होरहा था तोड़ दिया और कृपा व दयासे अपना चरण यहां लाकर गुरुके समान उपदेश देकरके मुझे कृतार्थ किया कदाचित् आज मैं लोभवश अपना राज्य तुम्हें दान न देता तो मरती समय यह सब राज्य व धन मेरे साथ न जाकर संसारमें केवल अपयश मुझे प्राप्त होता और यह भी मेरा अज्ञान है जो अपने को दान देनेवाला समझता हूं किसवास्ते कि सब यह लक्ष्मी व पृथ्वी आपकी होकर विना कृपा तुम्हारी कोई मनुष्य राज्य व द्रव्य पाने नहीं सक्ता है परीक्षित जिससमय राजा बलि यह सब बात वामन भगवान् से कह रहा था उसी समय प्रह्लाद भक्त आकाशसे उतरे और वामनजीको दण्डवत् करके हाथ जोड़कर कहा हे त्रिलोकीनाथ आपने बड़ी कृपा की जो बलिसे तीन पग पृथ्वी दान मांगा नहीं तो आपको जो तीनोंलोक व सब संसारी वस्तुके मालिकहैं किसी से कुछ मांगना क्या प्रयोजनहै व राजा बलि जो कुछ तुम्हारा दिया हुआ अपने पास रखता था सो सब उसने आपको अर्पण किया अब सिवाय अपने शरीरके कोई वस्तु उसके पास नहीं रही सो आप दया करके इसे अपना सेवक व भक्त जानकर छोड़ दीजिये व विंध्यावली स्त्री राजा बलिकी हाथ जोड़कर बोली हे दीनानाथ आपने अच्छा न्याय किया जो इन्हें बांधकर दण्ड दिया किसवास्ते कि सब वस्तु संसारमें तुम्हारी होकर आप तीनों लोककी रचना केवल अपने खेलवास्ते करते हैं इसलिये राजा बलिको अहंकारसे यह बात कहना उचित नहीं था कि जो कुछ तुम मांगो सो मैं दूं उसी समय ब्रह्माने भी वहां आनकर वामन भगवान्को दण्डवत् करके विनय किया हे परब्रह्म परमेश्वर राजा बलिने शुभकर्म करनेसे जो धन व राज्य पाया था सो सब आपको दान देकर यज्ञोंका पुण्यभी तुम्हारे अर्पण किया व अपने धर्म से न फिरकर बांधनेपरभी कुछ विषाद नहीं लेआया व अपना शरीरभी तुमको भेंट देता है फिर उसे बांधकर रखना कौन न्याय करते हो जब आप दीनानाथ होकर ऐसा करेंगे तब फिर तुम्हारी शरण

कौन आवैगा जो मनुष्य आपको एक पत्ता तुलसी व फल व पुष्प व जल चढ़ाकर गुग्गल आदिक सुगन्धसे तुम्हारे नाम पर अग्निमें धूप देताहै आप उसको अपना भक्त जानकर संसारी महाजाल से छुड़ाके भवसागर पार उतार देते हैं सो राजा बलिने सब धन व तनु अपना तुम्हारे अर्पण किया फिर इसे छुट्टी क्यों नहीं देते जब प्रह्लाद भक्त व विंध्यावली व ब्रह्मा ने इस तरह वामनजीसे विनय किया तब वैकुंठनाथ बोले मैंने अपनी कृपा व दया से राजा बलिकी परीक्षा लेकर उसका गर्व तोड़ दिया व तुम लोग इस बातका विश्वास मानो जिस किसीपर मेरी कृपा होती है उससे इतनी वस्तु छीन लेता हूं एक जात्यभिमान दूसरा धन तीसरी विद्या चौथा गर्व इस बातका कि जन्म भरमें उसने जो शुभकर्म दानादिक किया हो उसे हर समय स्मरण रक्खै और अपने बराबर किसी दूसरे को नहीं समझकर लोगोंके सामने कहै कि यह शुभकर्म मैंने कियाथा सुनो राजा बलिका धन व राज्य सदा स्थिर नहीं रहता और कीर्ति इसकी महाप्रलय तक बनी रहेगी व इसके उपरांत आठवां मन्वन्तर जो आवेगा उसमें राज्य इन्द्रलोकका हम राजा बलिको देवैंगे मेरे भक्त लोग किसी बातका अहंकार नहीं करते यह कहने उपरांत वामनजी ने चरण अपना राजा बलिके शिरपर धरके कहा अब तीसरा पग पृथ्वी मेरा पूरा हुआ तब बलिने हाथ जोड़कर विनय किया हे महाप्रभु तुम्हारा नाम भक्तवत्सल है इसलिये आपने मुझे अपना दास जानकर मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण की यह वचन सुनतेही वामन भगवान् अति प्रसन्न होकर बोले हे राजन् तू उदास मत हो मैंने राज्य सुतललोकका जो पाताल में है तुम्हें दिया उसी जगह तू अपने परिवार समेत जाके आनन्दपूर्वक वास कर वहां मैं भी वामनरूप से सदा तेरे द्वारपर रहकर रक्षा करूंगा व आज से तेरी बुद्धि दैत्योंके समान नहीं होगी ॥

तेईसवां अध्याय।

राजा बलिका सुतललोक में जाना ॥

बोले हे परीक्षित यह वचन वामनजीका सुनतेही राजा

बलि बन्धन से छुट्टी पाकर अति हर्षित हुआ व वामन भगवान् से हाथ जोड़कर बोला महाराज आप जो आज्ञा दें उसीपर मैं प्रसन्न हूं व जिन चरणोंका दर्शन महादेव व ब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वरों को ध्यान में नहीं मिलता वे चरण आपने मेरे शिरपर रक्खे उन्हें मैं दण्डवत् करता हूं और अपने समान इन्द्र व कुबेर व वरुणादिक किसी देवताका भाग्य नहीं समझता यह बात वामनजीसे कहकर राजा बलिने प्रह्लाद भक्तको प्रणाम किया तब प्रह्लादने आंखों में आंसू भरकर राजा बलि अपने पोतेको गले लगा लिया व उसके ज्ञानकी बड़ाई की व हाथ जोड़कर वामनजी से कहा हे वैकुंठनाथ राजा बलिका बड़ा भाग्य है जैसे राजा बलिपर आप दयालु हुये वैसी कृपा ब्रह्मा व महादेवपरभी नहीं की किसवास्ते कि उन से कभी कोई वस्तु नहीं मांगी व तुम्हारे चरणकमलको जिसका ध्यान ब्रह्मादिक देवता व बड़े बड़े ऋषीश्वर आठों पहर हृदयमें रखते हैं राजा बलिने अपने हाथसे वह धोकर चरणामृत लिया नहीं तो हम दैत्योंका जो मांस खाने व मद पीनेवाले अधर्मी हैं ऐसा भाग्य कहां उदय हो सक्ता है इससे मैंने जाना आप नीच जातिका विचार न करके केवल अपने भक्तों की कामना पूर्ण करते हैं व जिसतरह कल्पवृक्ष सबको इच्छापूर्वक फल देता है उसीतरह आपने त्रिलोकीनाथ होकर अदिति अपने भक्तकी चाहनापूर्वक भीख मांगना अंगीकार किया दूसरा कौन ऐसा दीनदयालु होगा यह स्तुति सुनकर वामनजी बोले हे प्रह्लाद हमने बलिको सुतल-लोकका राज्य दिया सो तुमभी वहां जाकर उसके पास रहो और मैं भी राजा बलि के द्वारपर गदा लिये आठों पहर बना रहूंगा हमारा मुखार-विन्द देखने व तुम्हारे सत्संगसे उसको कुछ नहीं मालूम होगा कि इतने दिन कहां बीत गये अबतक तुम हमारा दर्शन ध्यानमें पाया करते थे आज से मेरी व तुम्हारी भेंट नित्य सन्मुख हुआ करैगी जब यह वचन सुनकर राजा बलि व प्रह्लादभक्त वामन भगवान्को दण्डवत् करके अपने परिवार समेत सुतललोकमें चले गये तब शुक्र पुरोहित ने आनकर वामनजी को दण्डवत् करके विनय किया हे महाप्रभो मुझे ब्राह्मण व पण्डित होने पर

भी संसारीमाया प्रवेश करनेसे कैसी कुबुद्धि आई कि मैंने राजा बलि को भूमिदान देनेसे मना किया पर भाग्य उसका बलवान् था जो मेरा कहना न मानकर अपने वचनसे नहीं फिरा सो आप मेरा अपराध क्षमा करके आज्ञा दीजिये तो मैं भी सुतललोक में जाकर राजा बलिके पास रहूं व ऐसा वरदान देव जिसमें फिर मुझे ऐसी कुबुद्धि न आवे यह सुनकर वामन भगवान् बोले बहुत अच्छा तुमभी सुतललोकमें जाकर राजा बलि के पास रहो पर फिर कभी ऐसी दुर्बुद्धि उसको मत देना और तुम अपने चेलेका सौवां यज्ञ सम्पूर्ण कर लेव तब शुक्रजी बोले हे ज्योतिस्स्वरूप जहां तुम्हारा नाम लेने से यज्ञ सम्पूर्ण होता है वहां जब आपका चरण आया तब उसके सम्पूर्ण होने में क्या सन्देह है पर तुम्हारी आज्ञानुसार पूर्णाहुति यज्ञमें डाले देता हूं जब शुक्रजी पूर्णाहुति देकर आपभी सुतललोक में चले गये तब ब्रह्मादिक देवता वामन भगवान्का नाम उपेन्द्र रखकर व उन्हें विमानपर बैठालकर स्वर्गलोक में पधारे व जब वामनजीने वहां पहुँचकर राज्य इन्द्रपुरीका देवतोंको दिया तब देवता लोग वामन भगवान् व अदितिका यश गाते हुये आनन्दपूर्वक अपने अपने लोकमें चले गये व इन्द्र अपना राज्य पाकर इन्द्राणीके साथ भोग व विलास करने लगा वामन भगवान्जी वैकुण्ठको पधारे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् तुमने जो वामन अवतार की कथा हमसे पूंछी थी उसे वर्णन किया जो कोई अपने सच्चे मनसे इस कथा को कहै व सुनैगा उसे मुक्ति पदवी मिलेगी॥

चौबीसवां अध्याय।

मत्स्यावतारकी कथा॥

राजा परीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले हे शुकदेवस्वामी मेरा मन सुनने कथा अवतार नारायणजीसे नहीं भरा इसलिये मत्स्यावतारकी कथा सुना चाहता हूं कि इतने बड़े ईश्वरने छोटा अवतार मछलीका क्यों लिया शुकदेवजीने कहा हे राजन् आदिपुरुष भगवान् जन्म व मरणसे रहित होकर केवल इसवास्ते अवतार लेते हैं जिसमें हरिभक्त लोग उन अवतारों की

लीला कह व सुनकर भवसागर पार उतरजावें और जब गौ व ब्राह्मण व देवता व पृथ्वी व धर्म व हरिभक्तों पर दुःख पड़ता है तब वह छोटे व बड़े जीवका विचार नहीं रखते व कथा मत्स्यावतारकी इस तरहपर है एकबेर जगत् प्रलय होनेमें ब्रह्मा रात्रिको अचेत सोये थे जब उनको दिनमें जम्हाई आई तब हयग्रीव दैत्य उसी समय वेद उनके मुखसे निकालकर पातालमें लेगया सो ब्रह्मा ने जानकर नारायणजीसे विनय किया कि महाराज हयग्रीव दैत्य वेद चुरा लेगया सो विना वेदके संसारी काम नहीं होसके और वह दैत्य महाबलवान् है इसलिये हम और देवता लोग उसे जीत नहीं सकेंगे आप वेद लाने वास्ते कुछ उपाय कीजिये व सत्यव्रत श्राद्धदेवके बेटेने राजगद्दी छोड़कर दशहजार वर्ष तप करके महाप्रलय देखने की इच्छा की तब नारायणजीने ब्रह्माके विनय करनेसे लाना वेदका व इच्छा पूर्ण करना राजा सत्यव्रत अपने भक्तकी आवश्यक जान कर मत्स्यावतार लिया था सो एकदिन राजा सत्यव्रत कीर्तिमाला नदी में नहाने गया जब स्नान करके राजाने तर्पणके निमित्त जल दोनों हाथ में उठाया तब उसे एक मछली बहुत छोटी अंजलीमें दिखाई देकर बोली हे राजन् मैं बहुत दुःखी दीन होकर तेरे शरण आई हूं कदाचित् तू मुझे फिर जलमें डाल देगा तो बड़ी बड़ी मछली मुझे खा जावेंगी इसलिये तुझ से यह चाहती हूं कि मुझे नदीमें न डालकर मेरा पालन कर राजा यह वचन सुनतेही आश्चर्य मानकर मनमें कहने लगा देखो यह मछली मनुष्यसमान बोलती है इसलिये अवश्य रक्षा करनी चाहिये ऐसा विचार करके राजाने उस मत्स्यको अपने कमण्डलु में धरकर कहा तू धैर्य रख मैं तेरा पालन करूंगा जब राजा सत्यव्रत उस मत्स्यको अपने स्थानपर ले आये सो क्षण भरमें वह मत्स्य बढ़कर कमण्डलु में फँस गई तब फिर उस ने कहा हे राजन् कमण्डलुमें मुझे दुःख मालूम होता है कहीं चौड़ी जगह रक्खो जब राजाने कमण्डलु तोड़कर मछलीको घड़े में रक्खा व एक पहर बीते भोजन करके फिर जाकर देखा तो मछली वहां भी बढ़कर फँसी हुई बोली हे राजन् इस घड़ेमें भी मेरा अंग नहीं समाता फिर राजा ने

एक बड़े मट्ठके में उसे रक्खा वहांपर मछली और अधिक बढ़ी तब एक गड़हा खुदवाके पानीसे भरवाकर रखादिया जब गड़हा भी मत्स्यके शरीर बढ़नेसे भरगया तब उसे तालाबमें लेजाकर रक्खा थोड़ी देरमें वह मत्स्य इतना बढ़ा कि तालाबमें भी अंग उसका नहीं समाया तब राजाने तालाब को नदी तक खुदवाकर उस मत्स्यको वहां पहुँचा दिया जब दूसरे दिन फिर राजा स्नान करने गये तो देखा कि मछली से सब नदी भरी है तब राजाने उस मत्स्यको बड़े परिश्रम से समुद्रमें लेजाकर कहा हे मत्स्य समुद्रसे बड़ा कोई स्थान तेरे रहनेवास्ते नहीं है अब तू यहां रह व मुझको बिदा कर जब उस मत्स्यका अंग समुद्रमें भी बढ़कर दशहजार योजन लम्बा व चौड़ा होगया तब उस मत्स्यने सत्यव्रत से कहा हे राजन् तू अपनेको बड़ा ज्ञानी व धर्मात्मा समझके मुझे समुद्रमें छोड़कर अपने घर चला जाता है मुझसे भी जो बड़ी बड़ी मछली हैं वह मुझको खाजावेंगी यह सुनतेही राजाने ज्ञानकी राह जाना कि यह मत्स्य परमेश्वरका अवतार मालूम होता है किसवास्ते कि मछली तुरन्त इतना नहीं बढ़सक्ती सो इनकी पूजा किया चाहिये ऐसा विचारतेही राजाने बहुत स्तुति करने उपरान्त उस मत्स्यसे हाथ जोड़कर विनय किया हे मत्स्यरूप भगवान् मैंने तुमको नहीं पहिंचाना कि आप नारायणजीका अवतार हैं मेरा बड़ा भाग्य था जो तुम्हारा दर्शन पाया यह बात ज्ञानभरी हुई सुनकर मत्स्य भगवान् बोले हे राजन् तैंने क्या समझकर कहा था कि हम तेरा पालन व रक्षा करैंगे इसी वास्ते मैंने अपना शरीर बढ़ाकर थोड़ीसी महिमा अपनी तुझे दिखलाई जिसमें तू मेरा पालन व रक्षा करनेसे हार माने और अहंकार तेरा टूट जावे मनुष्यको ऐसा उचित है कि किसी कामको ऐसा न कहै कि मैं करदूंगा सब बातमें ऐसा कहना चाहिये कि परमेश्वर चाहैंगे तो यह काम हो जावेगा मेरे भक्त अहंकार का वचन नहीं बोलते व हे राजा तू विश्वास करके जान जिस बातको परमेश्वर चाहते हैं वह बात होती है विना इच्छा नारायणजीकी मनुष्यका किया कुछ नहीं हो सक्ता यह सुनकर राजाने कहा हे वैकुण्ठनाथ आपने मछलीका तनु छोटी योनिमें किस

वास्ते धरा तब मत्स्य भगवान् बोले हे राजन् मैं तनु धरने व मरने दोनों से रहित रहकर अपने भक्त व सेवकों की इच्छा पूर्ण करने वास्ते कभी कभी सगुण अवतार लेकर अपना नाम प्रकट करता हूं सो इन दिनों ब्रह्माकी विनय करनेसे वास्ते लाने वेद व इच्छा पूर्ण करने तेरी जो तू महाप्रलय का कौतुक देखना चाहता था हमने मत्स्यरूप अवतार लिया है और मैंने वाराह व कच्छप व नरसिंह अवतार जो लिया था उससे छोटा न होकर रामचन्द्र व श्रीकृष्ण अवतार लेने में कुछ पदवी मेरी नहीं बढ़ी सदा समान रहकर घटने व बढ़नेसे रहित हूं तुझे महाप्रलय देखनेकी इच्छा है तुझे आजसे सातवें दिन संसारमें चारों ओर पानी दिखलाई देगा व उस जलमें एक नौका पर सप्तऋषि बैठे हुये प्रकट होके तेरा हाथ पकड़कर उस नावमें बैठा लेवैंगे व उस नौकाके पास पानी पर एक सर्प प्रकट होगा सो तुम लोग एक कोना रस्सी नौका की मेरे सोनेके सींगमें जो दश हजार योजन लम्बा निकलेगा व दूसरा टुकड़ा रस्सीका उस सर्पकी पूंछसे बांधोगे जब वह नौका पानीपर घूमेगी तब तू महाप्रलयका चरित्र देखकर सप्तऋषियों समेत मुझसे ज्ञान पूछेगा व जो ज्ञान मैं तुम लोगोंसे कहूंगा उस ज्ञान सुनने के प्रताप से तेरी मुक्ति होगी इस सात दिन में तुम सब औषध का बीज इकट्ठा करके उस समय अपने पास रखना मत्स्यरूप भगवान् यह कहकर वहां से अन्तर्धान होगये और राजा सब औषधियों के बीज अपने पास रखकर नित्य ऊपर किनारे कृतमाला के महाप्रलय देखने वास्ते आन बैठता था जब सातवें दिन राजा नित्य नियम करके वहां बैठा तब उसने क्या देखा कि चारों ओरसे नदीका पानी उमड़ा आता है व आकाश से भी इतना जल वर्षा कि सम्पूर्ण पृथ्वी उस जलमें डूबकर राजा उस जलमें गोता खाने लगा और घबड़ाकर मनमें कहा मत्स्य भगवान्ने एक नौका प्रकट होनेवास्ते कहा था सो अभीतक दिखाई नहीं देती जब मैं डूब जाऊंगा तब वह नौका प्रकट होकर क्या करैगी इसी चिन्तामें था कि दूरसे एक नावपर सप्तऋषियों को बैठे हुये देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ जब वह नौका निकट पहुँची तब सप्तऋषीश्वरों ने हाथ

राजा को पकड़ कर उस नौका में बैठालिया व धैर्य देकर बोले हे राजन् तू नहीं डूबेगा राजा ने दण्डवत् करके उनसे पूछा मत्स्यरूप भगवान् क्यों नहीं आये सप्तऋषि बोले तुम ईश्वर का स्मरण करो मत्स्यरूप भगवान् भी तुरन्त आते हैं जैसे राजा ने प्रेमपूर्वक ध्यान नारायणजीका किया वैसे मत्स्यरूप भगवान् ने राजा को दर्शन दिया जब वासुकि सर्प श्याम रंग वहां जल में प्रकट हुआ व सप्तऋषीश्वर व राजा ने एक कोना रस्सी नौका की कि वह रस्सी भी सर्प की थीउस मछली के सींग में व दूसरा टूक वासुकि नागकी पूंछसे बांधा तब वह मछली उस नावको पानी में फिराने लगी व राजा ने इच्छापूर्वक महाप्रलय का कौतुक देखकर मत्स्यरूप भगवान् से विनय किया महाराज आपने दयालु होकर चरित्र महाप्रलय का मुझे अच्छी तरह दिखाया अब मैं यह चाहता हूं कि आप मुझको ज्ञान सिखलाकर भवसागर पार उतार दीजिये जिसमें जन्म मरण से छुट्टी पाऊं किस वास्ते कि संसारी मनुष्य वह कर्म करता है जिस कारण सदा महाजालमें फँसा रहै व जो कोई तन पाकर परलोक अपना नहीं बनाता वह फिर कुत्ता व शूकर आदिक चौरासी लाख योनि में जन्म लेकर दुःख पाता है व संसारी मनुष्य रात्रि दिन स्त्री व पुत्र व धनके मोह में फँसा रहता है और किसी समय नारायणजी को जो बेड़ा उसका पार लगावैंगे स्मरण नहीं करता व परमेश्वर अपनी दया व कृपा से जिसका मनोरथ पूर्ण करते हैं वह अपने अज्ञान से उस काम को कहता है कि मैंने परिश्रम से किया व घर व द्रव्य व स्त्री व लड़कों को अपना जानकर उनकी प्रीति में अपना जन्म अकार्थ करता है और यह नहीं समझता कि पूर्वजन्मों के संस्कार से सब जीव अपना बदला लेने के वास्ते संसार में आकर इकट्ठे होते हैं सो हे दीनानाथ छूटना इस कुबुद्धि व प्राप्त होना ज्ञान का सिवाय कृपा व दया आपके हो नहीं सक्ता जब तक मनुष्य संसारी मायासे विरक्त नहीं होता तब तक आवागमन से नहीं छूटता व जिस पर आप दयालु होकर ज्ञान देते हैं वह भवसागर पार उतर जाता है नहीं तो वारम्बार जन्म लेकर दुःख पाताहै सो मुझे अपना दास जानकर ऐसा ज्ञान दीजिये जिसमें भवसागर

पार उतरजाऊं यह सुनकर मत्स्यरूप भगवान् ने जो ज्ञान राजाको उपदेश किया वह सब ज्ञान व योग साधने व उत्पत्ति होने दैत्य व प्रश्नोत्तर सप्तऋषीश्वरोंका विस्तारपूर्वक मत्स्यपुराणमें लिखा है वही ज्ञान सुनने से राजा सत्यव्रत परमज्ञानी होगया फिर मत्स्यरूप भगवान् बोले हे राजन् तू आंख अपनी बन्द करले जैसे राजाने आंख बन्द करके फिर खोला तो अपने को उसी नदीके तट आसनपर बैठे हुये पाया व जलादिक महाप्रलयका कौतुक फिर न दिखाई दिया और यह चरित्र व महिमा नारायण जी की देखकर आश्चर्य माना व मनमें समझा कि मत्स्यरूप भगवान् ने अपनी माया से मेरी इच्छानुसार यह कौतुक दिखलाया फिर राजा सत्यव्रत ज्ञान प्राप्त होनेसे हरिचरणोंमें ध्यान लगाकर मुक्त हुआ व मत्स्यरूप भगवान् पातालमें जाके अपनी गदासे हयग्रीव दैत्य को मारकर चारों वेद ले आये व ब्रह्माको देकर वैकुंठ को पधारे इतनी कथा सुनाकर शुकदेव जी बोले हे राजन् चौदहों मन्वन्तर में जो जो अवतार परमेश्वर लेते हैं उनकी कथा तुमसे वर्णन की और चौदहों मन्वन्तर ब्रह्माके एक दिन में बीत जाते हैं व इतनी बड़ी रात भी उनकी होती है उसी दिन व रात के प्रमाणसे सौ वर्ष ब्रह्मा जीते हैं व छः महीने उत्तरायण सूर्य दिन देवतों का होकर छः मास दक्षिणायन सूर्य रात उनकी होती है व पन्द्रह दिन शुक्लपक्ष दिन देवतों का व पितरों का कृष्णपक्ष रात उनकी समझना चाहिये व शुक्लपक्ष को शुभ और कृष्णपक्ष को अशुभ कहते हैं उसी दिन रातके प्रमाण से आयुर्दा देवता व पितरों की सौ वर्ष की होती है इतनी कथा सुनकर राजा परीक्षितने विनय किया हे महाप्रभो कथा चौदहों मन्वन्तर व अवतार लेने परमेश्वरका जिसके सुनने से संसारी जीव भवसागर पार उतर जाते हैं तुम्हारे मुखारविन्द से मैंने सुना और आप भूत व भविष्य व वर्तमान तीनों काल के ज्ञाता हैं इसलिये मैं चाहता हूं कि आपके मुख से सूर्यवंशी व चन्द्रवंशी राजों की कथा जो पूर्वमें होगये हैं सुनों शुकदेवजी यह बात सुनकर बोले कि हे राजन् तुमने बहुत अच्छी बात पूछी हम कहते हैं सुनो कदाचित् कोई ऐसा कहै कि शुकदेवजी ने

वैष्णव होकर संसारी राजों का वृत्तान्त किस वास्ते कहा सो उन्होंने दो गुण समझकर यह कथा कही थी एक यह जो पहिले राजा धर्मात्मा व ज्ञानी संसारी माया से विरक्त होकर मुक्त हुये हैं उनकी कथा सुनने से राजा परीक्षित को राज्य छोड़ने व शरीर त्यागने का शोच नहीं होगा दूसरे परब्रह्म परमेश्वर ने रामचन्द्र अवतार बीच कुल सूर्यवंश व कृष्ण अवतार चन्द्रवंशमें हरिभक्तोंके सुखदेने के वास्ते धारण करके अनेक लीला की हैं वह लीला व कथा सुनके संसारी लोग सब पापोंसे छूटकर मुक्ति पावैं ॥

नवां स्कन्ध ॥

सूर्यवंशी व चन्द्रवंशी राजाओं की कथा ॥

पहिला अध्याय।

श्राद्धदेव मनु की कथा ॥

राजा परीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले हे शुकदेवस्वामी मैंने सब मन्वन्तरोंकी कथा तुम्हारे मुखारविंदसे सुनी व वृत्तान्त राजा सत्यव्रतका जिसे मत्स्यरूप भगवान् ने ज्ञान बतलायाथा सुनकर अति प्रसन्न हुआ अब मैं यह सुना चाहताहूं कि किस किस राजाने कौन कौन मन्वन्तरमें राज्य किया व अब श्राद्धदेव मनु सूर्यका बेटा जो राज्यपरहै उसके सन्तान की कथा विस्तारपूर्वक कहिये यह बात सुनकर शुकदेवजी बोले कि हे राजन् विधिपूर्वक उसका हाल कोई सैकड़ों वर्षमें भी नहीं कहसक्ता इसलिये संक्षेपसे मैं उनकी कथा कहता हूं सुनो जब महाप्रलय होकर संसारमें चारों ओर पानी भरगया केवल नारायणजी स्थिर रहकर उनको यह इच्छा हुई कि यह जगत् उत्पन्न करके अपना रूप आप देखैं तब एक पुष्प कमलका वैकुण्ठनाथकी नाभि से प्रकट हुआ और उस फूलसे ब्रह्मा उत्पन्न होकर नारायणजीकी आज्ञानुसार मनु नाम पुत्र उत्पन्न किया व मनुके हृदयसे मरीचिने जन्म लिया और उससे कश्यप नाम बालक उत्पन्न हुआ व कश्यपसे सूर्यने जन्म पाकर श्राद्धदेव मनु पुत्र उत्पन्न किया जब श्राद्धदेवके यहां सन्तान नहीं उत्पन्न हुई तब उसने वशिष्ठ ऋषीश्वर से विनय किया कि आप कोई ऐसा उपाय करैं कि जिसमें मेरे पुत्र उत्पन्नहो वशिष्ठजी बोले यज्ञ करने से तेरे सन्तान होगी जब उसने वशिष्ठजी की आज्ञानुसार यज्ञ आरम्भ किया तब मनुकी स्त्रीने वशिष्ठजीके साथी ब्राह्मणसे जो अग्निकुण्डमें घीकी आहुति डालता था कहा मैं चाहतीहूं कि मेरे कन्या अति सुन्दर उत्पन्नहो उस ब्राह्मणने बेटी उत्पन्न होनेके वास्ते मंत्र पढ़कर

आहुति यज्ञमें दी इसलिये कन्या उत्पन्न हुई जब ऋषीश्वरने इला उसका नाम रक्खा तब श्राद्धदेव बोला कि महाराज मैंने पुत्र उत्पन्न होनेके वास्ते यज्ञ किया था सो बड़ा आश्चर्य है मंत्रका फल विपरीत होकर कन्या उत्पन्न हुई वशिष्ठजी बोले हे राजन् तेरी स्त्रीने बेटी होनेके वास्ते इच्छा रखकर आहुति देनेवाले ब्राह्मणसे कहदियाथा इसलिये पुत्री उत्पन्न हुई जब यह वचन सुनकर राजा मनु चिन्ता करने लगा तब वशिष्ठजी बोले हे राजन् तू उदास मत हो मैं परमेश्वरसे विनय करके इस कन्याको पुत्र करदूंगा यह वचन सुनतेही राजा प्रसन्न होगया व वशिष्ठने परमेश्वर का ध्यान लगाकर जब अपने ब्रह्मतेजसे स्तुति उनकी की तब वैकुण्ठनाथ दर्शन देकर बोले तुम क्या चाहते हो वशिष्ठजीने हाथ जोड़कर कहा महाराज मैं चाहताहूं कि यह कन्या पुत्र होजावे परमेश्वर बोले बहुत अच्छा ऐसाही होगा यह वचन नारायणजीके मुखसे निकलतेही जब वह कन्या सुन्दररूप बेटा होकर खेलने लगा तब राजाने उसका नाम सुद्युम्न रखकर बड़ी खुशी मनाई व ब्राह्मण व याचक लोगोंको मुँहमांगा दान व दक्षिणा देकर उसे राजगद्दी पर बैठा दिया जब वह साथ धर्म व प्रजापालनके राज्य करने लगा तब एकदिन परमेश्वकी इच्छानुसार उत्तरदिशा इलाव्रत खण्डमें अहेर खेलने गया तो एक हरिणके पीछे घोड़ा दौड़ता हुआ अम्बिका वनमें जापहुँचा वहां पहुँचतेही राजा स्त्रीरूप होकर उसकी सवारीका घोड़ाभी घोड़ी होगया व जितने सेवक राजाके साथ उस वनमें पहुँचेथे सब स्त्री होगये यह दशा अपनी देखतेही वह लोग लज्जित होकर एक दूसरेसे अपना चरित्र नहीं कह सक्ताथा जब किसीका कुछ वश नहीं चला तब इच्छा परमेश्वरकी इसीतरहपर जानकर सबोंने धैर्य धरा इतनी कथा सुनकर राजा परीक्षितने पूछा हे मुनिनाथ वह लोग उस वनमें जाकर किसकारण स्त्री होगये थे इसका वृत्तान्त कहिये शुकदेव जी बोले हे राजन् एक दिन उस वनमें महादेव व पार्वती नंगे होकर आपस में विहार व क्रीड़ा कर रहेथे उसी समय सनकादिक चारों भाई उनका दर्शन करने व कथा सुनने के वास्ते वहां जाकर जैसे दोनोंको

दण्डवत् किया वैसे पार्वतीजी ने उन लोगोंको देखतेही महालज्जित होकर आंखें अपनी नीची करलीं सो ऋषीश्वरलोग उदास होकर वहांसे नर नारायणका दर्शन करनेके वास्ते बदरी केदारको चले तब पार्वतीने महादेवसे कहा कि आप कोई स्थान विहार करनेके वास्ते न बनवाकर मुझे वनमें लज्जित करतेहैं आज मारे लज्जाके मुझसे अपना मुँह किसी को नहीं दिखलाया जाता यह सुनकर शिवजी बोले हे प्राणप्यारी तुम उदास मतहो हम इस वनको ऐसा शाप देतेहैं कि आजसे जो कोई देवता व दैत्य व मनुष्य या पशुआदिक पुरुष इस वनमें आवेगा वह स्त्री होजा- वेगा इसीकारण राजा सुद्युम्न स्त्री होगयाथा सो भोलानाथ सदा पार्वतीके संग वहां विहार करते हैं व सोलहहजार सहेली गिरिजा देवीकी सेवामें आठों पहर बनी रहती हैं वहां सिवाय महादेवके दूसरा पुरुष नहीं जासक्ता जब राजा सुद्युम्न स्त्री होने से मारे लज्जाके अपने घर जा न सका तब अपने साथियों समेत व्याकुल होकर उसी वनमें चारोंओर फिरनेलगा उस वनके दक्षिण सिवानेपर बुध बेटा चन्द्रमाका बैठाहुआ तप करताथा जब अचा- नकमें राजा सुद्युम्न स्त्रीरूप से उसी जगह जा निकला व बुध तपस्वी होने पर भी उसके रूपपर मोहित होगया और सुद्युम्न स्त्रीरूपका भी मन उसपर चलायमान हुआ तब दोनोंने आपस में गन्धर्व विवाह करलिया और वहां रहकर भोग व विलास करनेलगे जब बुधकी आज्ञानुसार सुद्युम्न के साथ की स्त्रियां पर्वतपर चलीगईं तब उन्हें गन्धर्व उठाकर अपने लोकको लेगये जब सुद्युम्न स्त्रीरूपके पुरूरवा नाम बेटा बुधसे उत्पन्न हुआ तब एक दिन सुद्युम्न ने वशिष्ठगुरुका ध्यान करके उन्हें याद किया जब वशिष्ठ ऋषी- श्वर अन्तर्यामी उसके पास आनकर प्रकट हुये तब सुद्युम्न अपना वृत्तान्त उनसे कहकर हाथ जोड़के बोला हे मुनिनाथ ऐसी कृपा कीजिये कि जिसमें फिर मुझे पुरुषका तन मिले यह वचन सुनकर वशिष्ठजी बोले तू धैर्य धरमैं तेरे वास्ते उपाय करता हूं जब वशिष्ठ ऋषीश्वरने सुद्युम्न पर दयालु होकर गौरीशंकर का ध्यान करके स्तुति की तब भोलानाथ व गिरिजादेवी द- र्शन देकर बड़े हर्षसे बोले तुम क्या चाहते हो वशिष्ठजीने दण्डवत् करके

विनय की हे महाप्रभु आप कृपा करके सुद्युम्नको फिर पुरुष बना दीजिये यह वचन सुनकर पार्वतीजी बोलीं कि सुद्युम्नके स्त्री होजानेको शाप शिवशंकरने अम्बिकावनको दिया है वह मिट नहीं सक्ता पार्वतीके यह कहने पर भी शिवजी दयालु होकर बोले हे वशिष्ठमुनि सुद्युम्न एक महीना पुरुष व एक महीना स्त्री रहेगा यह वरदान देकर महादेवजी पार्वती समेत अन्तर्धान होगये व राजा सुद्युम्न उसी समय पुरुष होकर पुरूरवा बेटेको साथ लिये हुये अपनी राजगद्दी पर चला आया सो एक महीना पुरुष रहकर राज्यकाज करता व दूसरे मास स्त्रीरूप रहने से रोगके बहाने राजमन्दिर में रहता था जब पुरुष होने पर सुद्युम्नको अपनी स्त्री से तीन पुत्र और उत्पन्न हुये तब उसने कुछ दिन राजगद्दी का सुख भोगकर मन अपना संसारी मायासे विरक्त करलिया व राज्य दक्षिणदेश का अपने तीनों पुत्रोंको जो स्त्रीसे उत्पन्न हुये थे देदिया और अपनी निज राजगद्दी पर पुरूरवा बेटेको जो बुधसे उत्पन्न हुआथा बैठाकर आप वनमें चलागया और कुछ दिन हरिभजन करके मुक्त हुआ सो राजा पुरूरवासे चन्द्रवंशी व सुद्युम्नके दूसरे बेटों से सूर्यवंशी कुल जगतमें प्रकट हुआ है॥

दूसरा अध्याय।

श्राद्धदेवके और सन्तानोंकी कथा॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब राजा सुद्युम्न वनमें अपना शरीर त्यागकर मुक्त हुआ तब श्राद्धदेव उसके बापने और सन्तान उत्पन्न होने के वास्ते परमेश्वरका तप किया जब परमेश्वरकी इच्छानुसार उसके श्रद्धा नाम स्त्रीसे दश पुत्र और हुये तब उसने बड़े पुत्रका नाम इक्ष्वाकु रक्खा व दूसरा बेटा पृखन्धरनाम हुआ वह वशिष्ठगुरुकी गौवें दिनको चराकर रातसमय उनकी रखवारी करता था एक दिन बरसातमें रातको बाघने एक गौको पकड़ा सो गायका चिल्लाना सुनकर पृखन्धर उठा व उसने बिजुलीकी चमकमें शेरको देखकर तलवार उसपर चलाई सो वह खड्ग बाघका एक कान काटकर गायके लगा इस कारण वह गौ मरगई प्रात समय वशिष्ठजीने उस गौ को देखकर पृखन्धरसे कहा तैंने गौ तलवारसे

मारडाली इसलिये तू शूद्र गोपाल होजा सो गुरुके शापसे पृषध्रने वह तन अपना छोड़कर अहीरके यहां जन्म पाया सो उस तनमें ब्रह्मचर्य रह कर हरिभजन करने लगा और वनमें आग लगने से अपनी इच्छापूर्वक जलकर मुक्त हुआ व कविनाम तीसरा बेटा राजाका परमहंस होगया व करुषनाम चौथे पुत्रसे कारुषजाति क्षत्रियोंने उत्पन्न होकर उत्तर दिशाका राज्य किया व दृष्टिधृक्नाम पांचवें बेटेके वंश में धारिष्टजाति क्षत्रिय उत्पन्न हुये वह लोग अपनी क्रिया व कर्मसे ब्राह्मण होगये व नृगनाम छठवें पुत्रके वंशमें सुमन्तआदिक से अग्निनाम तक क्षत्रिय रहकर अग्नि के वंश में ब्राह्मण उत्पन्न हुये व नभगनाम सातवें बेटेकी सन्तानमें नाभ आदिक से लेकर कई पीढ़ी उपरान्त मरुत्नाम ऐसा प्रतापी व चक्रवर्ती राजा हुआ कि जिसके समान किसी दूसरे राजाने यज्ञ नहीं किया उसके यज्ञमें सब बर्तन भोजन करने व जल पीने व वस्तु रखने के वास्ते सुवर्ण के बने थे व उसने सब देवता व ब्राह्मणों को अपने यज्ञमें इतना दान व दक्षिणा दिया कि किसीके कुछ इच्छा न रही व उसके वंशमें तृणविन्दु नाम राजा लम्बुका अप्सराका पति हुआ व उसी अप्सरा से इड़विड़ानाम कन्या उत्पन्न होकर विश्रवा ऋषीश्वरको ब्याही गई जिससे कुवेरदेवता उत्पन्न हुये व तृणविन्दु राजा के शालनाम एक पुत्रने वैशालीपुरी बसाई उसके वंशमें हेमचन्द्र व सोमदत्तादिक बहुत से धर्मात्मा राजा हुये थे॥

तीसरा अध्याय।

श्राद्धदेव मनुके सन्तान उत्पन्न होनेकी कथा॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित उसी श्राद्धदेव मनुका पुत्र शर्यातिनाम राजा था उसके यहां सुकन्यानाम एक पुत्री अतिसुन्दर उत्पन्न हुई इस लिये राजा उससे वड़ी प्रीति रखकर आठोंपहर उसको अपने साथ रखता था एक दिन राजा ने अपनी रानी व कन्या समेत अहेर खेलनेवास्ते वन में जाकर जहां पर च्यवन ऋषीश्वरका स्थान था डेरा किया जब वह कन्या अपनी सहेलियोंको साथ लेकर उस डेरेके निकट फिरने लगी तब उसने एक ढेर मिट्टीका जिसमें दो छेद चमकते थे देखकर लड़कों के

समान उन दोनों छेदोंमें कांटा चुभादिया जब उससे कि वह दोनों आंख च्यवन ऋषीश्वरकी थीं रक्त बहने लगा तब राजकन्या मारे डरके घबड़ाकर वहां से सहेलियों समेत अपने डेरेमें चलीआई ऋषीश्वर महाराज के दुःख पाने से उसी समय राजाकी सेना में सब मनुष्य छोटे बड़े व ऊंट व घोड़ा व हाथी आदिक का मल व मूत्र बन्द होगया और पेट में पीड़ा होने लगी तब राजाने यह दशा सबकी देखतेही अतिव्याकुल होकर वनवासियोंसे पूछा यह कैसा स्थान है कि हमारी सेनाके लोग पीड़ित होरहे हैं वहांके लोगों ने कहा कि यह स्थान रहने च्यवन ऋषीश्वरका है यह बात सुनते ही राजा उन ऋषीश्वरका स्थान ढूंढ़ता हुआ उस जगह जहांपर लोहू बहता था जा पहुँचा तब उसने रक्त देखकर अपने ज्ञानसे मालूम किया कि इसी टीले में शरीर च्यवन ऋषीश्वरका मिट्टीसे ढँपगया है और वह बीचध्यान परमेश्वरके ऐसे लीन हैं जो अपने तन की सुधि नहीं रखते और यह रक्त उनकी दोनों आंखमें कांटा चुभा देनेसे बहता है यह वृत्तान्त देखकर राजा अपनी सेनावालों से कांटा चुभाने का हाल पूछने लगा तब राजकन्या बोली हे पिता यह अपराध अजानमें मुझसे हुआ है राजा यह बात सुनकर प्रथम बहुत उदास हुये फिर उसी टीलेके पास खड़े होकर बड़े शब्द से स्तुति उन ऋषीश्वरकी की व अपने हाथ से वह मिट्टी जिससे ऋषीश्वर महाराज का अंग ढँप गया था हटाया जब च्यवन ऋषीश्वर वह शब्द सुनकर समाधि से जागे और सावधान हुये तब राजा ने उन्हें दण्डवत् करके हाथ जोड़कर विनय की हे मुनिनाथ यह अपराध अजान में मेरी पुत्री से हुआ जो उसने तुम्हारी आंख में कांटा चुभादिया इसी कारण मैं अपनी कन्या को तुम्हें अर्पण करता हूं आप ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि जिसमें मेरी सेना का दुःख छूटजाय च्यवन ऋषीश्वर ने राजा के स्तुति करने से प्रसन्न होकर ऐसा वरदान दिया कि सब किसी के पेटकी पीड़ा छूटगई तब राजा अपनी कन्या च्यवन ऋषीश्वरके पास छोड़कर वहां से सेना समेत राजमन्दिर पर चले आये व च्यवनऋषीश्वर फिर बीच ध्यान परमेश्वर के समाधि

लगाकर चौदह वर्ष तक आंख बन्द किये बैठे रहे व राजकन्या भी उतने दिन विना अन्नजल उनके सामने हाथ जोड़े खड़ी रही और वह ऐसी सुन्दर थी कि इन्द्रने उसके पास आकर कहा कि तू यहां किस वास्ते इतना दुःख सहती है मेरे साथ चल हम तुझे इन्द्राणी बनाकर सुख देवेंगे इसी तरह कुबेरादिक कई देवतों ने आकर उसे अनेक प्रकार से अपने साथ चलने को कहा पर उस कन्या पतिव्रता ने किसी की ओर आंख उठाकर कभी नहीं देखा च्यवनऋषीश्वर को अपना पति व परमेश्वर समझकर उनके चरणों में ध्यान लगाये खड़ी रही जब उसको चौदह वर्ष खड़े हुये बीते तब च्यवनऋषीश्वर ने समाधि से जागकर क्या देखा कि राजकन्या उसी तरह हाथ जोड़े सम्मुख खड़ी है व उसके शरीर में केवल हाड़ व चाम रहगया ऐसा पातिव्रत धर्म उसका देखकर च्यवनऋषीश्वर अति प्रसन्न हुये व उसी दिन परमेश्वर की इच्छानुसार अश्विनीकुमार वैद्य वहां आये और ऋषीश्वर को दण्डवत् करके विनय किया जो आज्ञा हो सो तुम्हारी टहल करें च्यवनऋषीश्वर बोले हमारी आंख अच्छी करके मुझे तरुण करदो तो मुँह मांगी वस्तु तुम्हें देवें जब अश्विनीकुमार ने औषध का कुण्ड बनाकर ऋषीश्वर को उसमें स्नान कराया तो उसीसमय च्यवन ऋषीश्वर की आंखें अच्छी होकर वह अतिसुन्दर वयस सोलह वर्ष की अवस्था होगये तब राजकन्या उन्हें देखकर अति प्रसन्न हुई व च्यवन ऋषीश्वर ने आदरपूर्वक अश्विनीकुमार से कहा कि जो मांगो सो देऊं यह वचन सुनकर अश्विनीकुमार बोले महाराज हम दवाई देवतों की करते हैं इसलिये देवता लोग अपनी पंक्ति में हमको भोजन करने के वास्ते नहीं बैठालते और सोमयज्ञ में मेरा भाग नहीं देते सो आप दयालु होकर ऐसा कर दीजिये कि जिसमें मैंभी भाग पाऊं ऋषीश्वर बोले तू धैर्य धर तेरा मनोरथ पूर्ण होगा जब अश्विनीकुमार वरदान पाकर आनन्दपूर्वक वहां से बिदा हुये तब ऋषीश्वर ने राजकन्या से कहा मैं तपस्वी संसारी सुखकी कुछ इच्छा न रखकर सदा विरक्त रहता हूं पर तेरे पातिव्रत धर्म से हम अति प्रसन्न हैं इसलिये संसारी सुख के सब पदार्थ संयुक्त तेरे साथ भोग व विलास

करैंगे ऐसा कहकर ऋषीश्वर महाराज अपने योगबल से उसी जगह एक मकान सुवर्ण का रत्नजड़ित बाग व तड़ागादिक समेत ऐसा प्रकट किया कि जिसमें हरिइच्छा से सब वस्तु संसारी सुखकी रक्खी थीं तब ऋषीश्वर ने राजकन्या से कहा कि तू इस तड़ाग में स्नान कर जैसे उसने तालाब में गोता मारा वैसे सोलह वर्ष की देवकन्या समान सुन्दरी होगई व हजार दासी रूपवती भूषण व वस्त्र पहने हुये उसके साथ तालाब में से प्रकट हुईं जब उन्होंने राजकन्या को उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहना कर सोरहों शृंगार उसका किया तब च्यवन ऋषीश्वर राजकन्या से अपना विवाह करके भोग व विलास करने लगे कुछ दिन बीते एक रोज राजा शर्यातिने अपनी स्त्री से कहा जिस दिन से हम अपनी प्राणप्यारी कन्या वन में ऋषीश्वर को सौंप आये हैं तब से कुछ समाचार उसका नहीं पाया और विना प्रयोजन उनको अपने घर बुला नहीं सके सो मैं चाहता हूं कि अपने यहां यज्ञ करके इस बहाने से च्यवन ऋषीश्वर को कन्या समेत अपने घर बुलावैं तो पुत्री का समाचार भी मालूम होवै व उसे देखकर अपनी आत्मा ठंढी करैं जब रानी ने भी यह बात पसंद की तब राजा यज्ञ की तैयारी करके आप च्यवन ऋषीश्वर को बुलाने गये और उनके स्थान पर पहुँचकर क्या देखा कि वहां कुछ टीला व झोपड़ी न होकर एक मकान जड़ाऊ बाग समेत बना है उसे देखते ही राजा ने आश्चर्य मानकर मन में कहा कि देखो इस वनमें ऐसा स्थान किसने बनाया जिस समय राजा वहां खड़ा हुआ यही विचार कर रहा था उसी समय राजकन्या दासियों समेत तालाब पर स्नान करने वास्ते महल से बाहर निकली सो राजा को देखते ही उसने बड़े हर्ष से गले मिलना चाहा पर राजा ने उसको गले न लगाकर मनमें विचारा कि कदाचित् वह ऋषीश्वर मरगये हों व इसने कोई दूसरा पति बनाकर यह सब विभव प्रकट किया है जब राजा ने इस संदेह से उसको अपने गले नहीं लगाया तब राजकन्या बोली कि हे पिता तुमने मुझे नहीं पहिंचाना जो गले न लगाया राजा बोले तेरे माता व पिता का उत्तम कुल है तैंने दूसरा पति बनाकर अपने को कलंक लगाया यह वचन सुन-

कर वह बोली आप ऐसा सन्देह न करैं मैंने दूसरा पति नहीं किया यह सब विभव जो देखते हो ऋषीश्वर महाराज ने जिन्हें मुझे सौंप गये थे अपने योग बल से प्रकट किया है यह वचन सुनते ही राजा ने बड़े हर्ष से अपनी कन्या को प्यार किया व जब मन्दिर में जाकर च्यवन ऋषीश्वर को अश्विनीकुमार के समान अतिसुन्दर व तरुण देखा तब आनन्दपूर्वक दण्डवत् करके उनसे विनय किया महाराज मैं सोमयज्ञ करने की इच्छा रखकर चाहता हूं कि आप भी दया करके उस यज्ञ में चलिये च्यवन ऋषीश्वर यह बात मानकर स्त्री समेत राजमंदिर पर गये रानी अपनी बेटी व दामाद को देखकर हर्षित हुई जब च्यवन ऋषीश्वर ने राजा के यहां यज्ञ आरम्भ किया और सब देवता व ऋषीश्वर आदिक वहां आये तब च्यवन ऋषीश्वर ने देवतों से कहा यज्ञ में अश्विनीकुमार को भी भाग देव यह वचन सुनकर इन्द्र बोले अश्विनीकुमार वैद्य रोगियों को छूते हैं इसलिये उनको यज्ञ का भाग देना न चाहिये च्यवन ऋषीश्वर बोले हे इन्द्र मैं अश्विनीकुमार को यज्ञ का भाग देने के वास्ते वचन हारचुका हूं इसलिये उन्हें अवश्य भाग दूंगा यह वचन सुनते ही इन्द्र क्रोधित होकर बोले हे ऋषीश्वर तुम हमारा कहना नहीं मानकर अश्विनीकुमार को यज्ञ में भाग देवोगे तो तुमको मारडालूंगा ऐसा कहकर जैसे इन्द्रने च्यवन ऋषीश्वर के मारनेके वास्ते गदा उठाई वैसे ऋषीश्वरकी आज्ञा व परमेश्वरकी इच्छानुसार इन्द्रका हाथ उसीतरह उठा हुआ रहगया व उसने गदा मारने के वास्ते बहुत चाहा पर हाथ उसका नीचेको नहीं झुका जब इन्द्र अपने करतबसे लज्जित होकर हाथ उठे रहनेमें दुःख पानेलगा तब सब देवता व ऋषीश्वरोंने जो वहांपर बैठेथे इन्द्रसे कहा तुमने च्यवनऋषीश्वर महात्मा पुरुष से जैसा अनुचित किया वैसा दण्ड पाया अब तुम उन्हींसे अपना अपराध क्षमा करवावो तब तुम्हारा हाथ नीचेको झुकेगा जब इन्द्रने हार मानकर इस तरहपर विनय किया आप महात्मा पुरुषहैं मैं तुम्हारी महिमा न जानकर अपने फलको पहुँचा अब दयालु होकर अपराध मेरा क्षमा कीजिये और अश्विनीकुमारको यज्ञमें भाग दीजिये हम सब देवतोंको

आपका कहना अंगीकार है जब च्यवनऋषीश्वरने इन्द्रको दीन देखकर अपने हाथसे उसका हाथ झुकादिया तब हाथ इन्द्रका नीचे झुककर ज्योंका त्यों होगया जब च्यवनऋषीश्वर व देवतोंने अश्विनीकुमारका भाग यज्ञ में देकर उसको अपनी पंक्तिमें बैठाके खिलाया व यज्ञ राजाका अच्छी तरह सम्पूर्ण होकर अश्विनीकुमार अतिप्रसन्न हुये तब सब देवता व मुनि व च्यवन ऋषीश्वरादिक अपने अपने स्थानपर चलेगये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जो कोई बीच शरण परमेश्वरके जाकर उनका तप व स्मरण करता है उसे लोक व परलोक दोनों जगह सुख मिलता है व कोई दुःख दे नहीं सक्ता है व मनुष्य जो कुछ सुखसे कहै या जिस वस्तु की चाहना करै नारायणजी सब वचन व मनोरथ उसका सिद्ध करते हैं सो हे परीक्षित उसी श्राद्धदेवके वंशमें रेवतनाम राजा बड़ा प्रतापी होकर उस के यहां रेवतीनाम एक कन्या अतिसुन्दरी व बुद्धिमती उत्पन्न हुई जब राजाने उस कन्याको विवाहने योग्य देखा तब मनमें विचारा कि जगत्की रचना करनेवाले ब्रह्माजी हैं मैं उनसे जाकर पूंछूं जिस राजकुँवरका वह रूप नाम बतलावैं उसीसे अपनी कन्या विवाहदूं ऐसा विचारकर राजा अपनी कन्यासमेत ब्रह्मलोकमें गये तब ब्रह्माने उनको बड़ा राजा समझकर आदरपूर्वक बैठाला उससमय ब्रह्माकी सभामें गन्धर्वलोग गातेथे इसलिये राजाने कुछ कहना उचित न जानकर विचार किया जब गाना बन्द हो जावै तब मैं अपना मनोरथ कहूं इस इच्छासे थोड़ीदेर वहां राजा बैठारहा जब गन्धर्व गाचुके तब राजाने ब्रह्मासे विनय किया जो राजकुमार तुम्हारे जानमें अतिसुन्दर हो उसको बतला दीजिये तो मैं इस कन्याका विवाह उससे करदूं ब्रह्माजी बोले जबसे तुम मेरे यहां आये तबसे संसारमें सत्ताईस युग बीतगये जो राजा तुम्हारे सामने मर्त्यलोकमेंथे वे सब मरगये अब उनके वंशमें कोई दूसरा राजा धर्मात्मा बीच संसारके न रहा इसवास्ते तुम अपनी कन्या वसुदेवजीके पुत्र बलभद्रनामको जो शेषनागका अवतार हैं विवाह देव सो राजा रेवतने ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार रेवती अपनी कन्या बलरामजीको विवाह दिया व राजा आप वनमें जाकर हरिभजन

करके मुक्त हुआ व रेवती सतयुगकी कन्या इकीस हाथ लम्बीथी इसलिये बलभद्रने अपने हलसे दबाकर उसका अंग अपने बराबर छोटा करलिया॥

चौथा अध्याय।

राजा अम्बरीषकी कथा॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित राजा शर्याति के सन्तानमें अम्बरीष राजा ऐसा वैष्णव व परमभक्त उत्पन्न हुआ कि जिसपर ब्राह्मणका शाप नहीं लगा इतना सुनकर राजा परीक्षितने पूछा महाराज यह बड़े आश्चर्य की बात है जो ब्राह्मणका शाप मिथ्या होवै व परमवैष्णव राजाको ब्राह्मण ने किसवास्ते शाप दिया इसका वृत्तान्त कहिये शुकदेवजी बोले हे राजन् इसकी कथा इसतरह पर है कि राजा अम्बरीष इन्द्रियोंका सुख छोड़कर तप व पूजा नारायणजीकी सच्चे मनसे करके हरिचरणोंमें ध्यान लगायेहुये राज्य करता था व उसके यज्ञमें देवतालोग ऋषीश्वर व ब्राह्मणोंका तनु धर कर अपना अपना भाग लेते थे और वह दिन रात मुखसे परमेश्वरका स्मरण व हाथोंसे ठाकुरजीकी पूजा व सेवा व आंखोंसे हरिचरणोंका दर्शन ध्यान में करके कानों से कथा व लीला अवतारोंकी सुनकर संसारी व्यवहार स्वप्नवत् जानताथा इसलिये नारायणजी दीनदयालु उसको अपना परमभक्त जानकर उसके राज्य व देशकी रक्षा सुदर्शनचक्रसे करतेथे व राजाकी स्त्रीभी परम वैष्णवी व पतिव्रताथी सो राजा व रानी दोनों मनुष्य परमेश्वर की भक्ति अपने हृदयमें रखकर दशमीको संयम व सब एकादशी निर्जल व्रत करतेथे व द्वादशीके दिन राजा साठकरोड़ गौ विधिपूर्वक ब्राह्मणों को दान देकर और उनको भोजन खिलाके आप द्वादशी में व्रत पारण करता था सो एकबेर एकादशीके दूसरे दिन दो घड़ी द्वादशी थी उसी दिन प्रातसमय दुर्वासा ऋषीश्वरने अट्ठासी हजार ऋषीश्वरोंको साथ लिये वास्ते परीक्षा लेने धर्म के द्वादशीको राजा अम्बरीषके मकान पर आकर भोजन मांगा राजाने ऋषीश्वरका सन्मान करके विनय किया महाराज भोजनका पदार्थ बना है दुर्वासा बोले हम स्नान करआवैं तब भोजन करैं ऐसा कहकर यमुनाकिनारे स्नान करने चलेगये और वहां जान

बूझकर पूजा व स्नान में विलंब किया जिसमें द्वादशी बीत जावे जब दुर्वासा न आये और द्वादशी बीतनेलगी तब राजाने घबड़ाकर ब्राह्मणोंसे पूछा दुर्वासा ऋषीश्वर स्नान करके नहीं फिरे व द्वादशी बीता चाहती है त्रयोदशीमें व्रत पारण नहीं होता सो क्या करना चाहिये ब्राह्मणोंने आज्ञा दी द्वादशीमें ठाकुरजीके चरणामृत से अपना व्रत पारण करलेव चुल्लूभर जल पीना भोजनकी गिनतीमें नहीं है राजाने ब्राह्मणोंकी आज्ञानुसार द्वादशीमें चरणामृतसे पारण करलिया एक क्षणभर जब द्वादशी बीतगई तब दुर्वासाऋषीश्वर स्नान करके आये जब राजाने बड़े हर्षसे उनको भोजन करनेवास्ते कहा तब ऋषीश्वर बोले हे राजन् तू सदा अपने व्रतको द्वादशी में पारण करताथा आज इससमय द्वादशी बीतगई तैंने पारण किया या नहीं राजाने कहा महाराज मैंने कुछ भोजन नहीं करके ब्राह्मणों की आज्ञानुसार चरणामृतसे पारण करलिया है यह वचन सुनतेही दुर्वासा क्रोधित होकर बोले तैंने हमको द्वादशी में भोजन खिलाना कहकर बिना आये हमारे व्रत पारण करलिया ऐसा तुझे नहीं चाहिये था ऐसा कहकर क्रोधवश दुर्वासाने एक लट अपनी जटासे नोचकर पृथ्वीपर पटकी तो उसी समय कृत्यानाम स्त्री शस्त्र लिये प्रकट होकर राजाको मारने दौड़ी सो हे परीक्षित दुर्वासा ने बिना अपराध राजाको मारने चाहा इसलिये नारायणजीने अधर्म दुर्वासा ऋषीश्वरका समझकर सुदर्शनचक्र को आज्ञा दी कि तू अभी जाकर राजाकी रक्षा व सहायता कर जिसमें उसको दुःख न पहुँचे सो उसी समय सुदर्शनचक्र वहां आनकर प्रकट हुआ जब सुदर्शनचक्रके प्रकाशसे अंग कृत्याका जलने लगा और वह व्याकुल होकर भागी तब सुदर्शनचक्र दुर्वासा ऋषीश्वरको जलाने चला जब दुर्वासाभी वहां से अपना प्राण लेकर भागे व सुदर्शनचक्र ने उनका पीछा किया तब वह भागकर वरुण व कुबेर व इन्द्रलोकादिमें इस इच्छा से गये कि कोई देवता हमारी रक्षा करै पर किसी देवता को ऐसी सामर्थ्य नहीं हुई जो ऋषीश्वर को बचा सकै जब दुर्वासाने अपना बचाव कहीं नहीं देखा तब ब्रह्मलोकमें दौड़े गये ब्रह्मा उनको देखते ही बोले हे दुर्वासा तुम ने उन आदि पुरुष भग-

वान्के भक्तका अपराध किया है जो ईश्वर हम सबके मालिक होकर पलक भांजते भरमें तीनों लोकका नाश कर सक्ते हैं मैं तुम्हारी रक्षा नहीं कर सक्ता तब दुर्वासा वहां से भी निराश होकर महादेवकी शरण गये तब शिवशंकर बोले हे दुर्वासा परमेश्वरकी मायासे हम सब लोग उत्पन्न हुये हैं पर उनकी मायाका भेद मैं व नारद व सनकादिक व ब्रह्मा व कपिलदेव आदिक कोई नहीं जानसक्ते तुम उन्हीं परब्रह्मके शरण जाव तो बचोगे मुझे सामर्थ्य नहीं है जो तुम्हारी रक्षा करसकूं जब दुर्वासाने देखा कि सिवाय परमेश्वरके कोई दूसरा तीनों लोकमें मेरा रक्षक नहीं है तब वैकुण्ठनाथके शरण गये व स्तुति करके विनयपूर्वक कहा मैंने तुम्हारे भक्तका अपमान किया इसलिये सुदर्शनचक्र मुझे मारा चाहता है सो मैं आपकी शरण आया शरण आयेकी लाज रखकर मेरी रक्षाकीजिये यह बात सुनकर वैकुण्ठनाथ बोले हे दुर्वासा हम त्रिलोकके मालिक हैं परन्तु अपने भक्त पर मेरा कुछ वश नहीं चलता उसके अधीन रहता हूं मुझको अपने भक्त जैसे प्रिय हैं वैसा मैं लक्ष्मीजी व अपने तनुको भी प्यारा नहीं जानता जिस तरह पतिव्रता स्त्री अपनी सेवा से पति को वश करलेती है उसी तरह मैं अपने भक्तोंके अधीन रहता हूं व निर्गुण भक्त सब संसारी सुख त्यागकर सिवाय ध्यान हरिचरणोंके दूसरी कुछ इच्छा नहीं रखते व मुझे अपना इष्टदेव मानकर मनसा वाचा कर्मणा से चाहते हैं इसलिये मैं उनका वचन मिटा नहीं सक्ता व मुझे अपने वचन टलजानेका कुछ शोच नहीं होता पर मेरे भक्त का कहा कोई मिटा नहीं सक्ता सो हे दुर्वासा मेरे भक्त बड़े दयावान् होकर क्रोधको अपने वश रखते हैं व किसीका अनभला नहीं चाहते कदाचित् राजा अम्बरीष अपने अन्तःकरणसे क्रोध करता तो तुम उसी जगह भस्म होजाते यहां तक नहीं पहुँचते हम तुम्हारी रक्षा नहीं कर सक्ते तुम राजा अम्बरीष मेरे भक्त की शरण जाव वही तुम्हारी रक्षा करैगा नहीं तो सुदर्शनचक्र से न बचोगे॥

पांचवां अध्याय।

राजा अम्बरीषके पास दुर्वासाऋषिका आना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब दुर्वासा वैकुण्ठनाथसे भी निराश हुये तब वह अतिलज्जित होकर राजा अम्बरीषके पास आये और दण्डवत् करके खड़े हुये राजा यह दशा उनकी देखतेही अपने धर्म व दयासे कि शत्रुका भी क्लेश नहीं देख सक्ते थे बहुत स्तुति करने उपरान्त रोकर बोला हे सुदर्शनचक्र ऋषीश्वरको ब्राह्मण जान कर इनकी रक्षा करो किसवास्ते कि तुम्हारे मालिक ब्रह्मण्यदेव होकर मैं भी ब्राह्मण की भक्ति रखता हूं इसलिये मुझसे ऋषीश्वर का दुःख नहीं देखा जाता व मैंने आज तक जो धर्म किया हो उसके फलसे दुर्वासा कुछ दुःख न पावें यह वचन अम्बरीष का सुनते ही सुदर्शनचक्र ने तेज अपना ठण्ढा करलिया तब राजाने दुर्वासासे जो आँख नीचे किये खड़े थे हाथ जोड़कर कहा महाराज सब पदार्थ बने हैं चलकर भोजन कीजिये सो दुर्वासा ने छत्तीस प्रकार का व्यञ्जन बड़े आनन्दसे भोजन किया हे परीक्षित दुर्वासा सुदर्शनचक्रके भयसे आकाश व पाताल में एक वर्ष पर्यन्त भागा किये व राजा अम्बरीष वर्ष दिन बराबर उसी जगह वैसे ही खड़ा रहकर इस बात की चिंता करता रहा देखो मेरे वास्ते ऋषीश्वर इतना दुःख पाते हैं सो वर्ष दिन तक वही भोजन जो दुर्वासाके वास्ते बना था हरिइच्छा से ठंढा नहीं हुआ जब ब्राह्मणोंको भोजन कराके राजाने भी प्रसाद पाया तब दुर्वासा ऋषीश्वर अति अधीनताई से बोले हे अम्बरीष मैं आज तक हरिभक्तों की महिमा नहीं जानता था कि परमेश्वरके भक्त सबसे प्रबल हैं तुम धन्य हो जो मुझ अपराधी के वास्ते वर्षदिन तक खड़े रहकर चिन्ता करते रहे व सुदर्शन-चक्र की स्तुति करके तुमने मेरा प्राण बचाया मुझे सामर्थ्य नहीं है जो हरिभक्तोंका माहात्म्य वर्णन करसकूं जब दुर्वासा राजासे विदा होकर चले गये तब और सब ब्राह्मण व ऋषीश्वर जो वहां थे राजाकी स्तुति करने लगे उनका वचन सुनकर राजा बोला मैं कौन गिनती में हूं यह सब परमेश्वर के सुदर्शनचक्रका प्रताप था जिसने मुझे कृत्याके हाथसे बचाया

देखो परमेश्वरकी इतनी कृपा होने पर भी राजा अम्बरीष कुछ अभिमान न रखकर भक्तिके तुल्य इन्द्रलोकका सुख नहीं समझता था इतनी कथा सुना कर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित यह थोड़ी सी महिमा अम्बरीषकी मैंने तुम को सुनाई है उसकी भक्ति व गुणों का सब वृत्तान्त कोई वर्णन नहीं कर सक्ता सो कुछ काल बीते राजा अम्बरीषने विरक्त होकर राजगद्दी अपने छोटे पुत्रको दे दिया व आप वन में जाकर हरिभजन करके मुक्त हुआ॥

छठवां अध्याय ।

राजा इक्ष्वाकु का अपने पुत्रपर क्रोध करना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित अम्बरीषके वंशमें इक्ष्वाकुनाम राजा बड़ा प्रतापी होकर एक दिन शशाद अपने बड़े बेटेसे बोला तू वनमें जाकर अहेर मार लेआव तो मैं पितरोंका श्राद्ध करूं सो राजकुमार वनमें खरगोश मारकर भूख लगनेसे थोड़ा मांस उसका खालिया शेष मांस अपने बाप के पास ले आया जब राजा श्राद्ध करनेवास्ते बैठे तब वशिष्ठ ऋषीश्वर अपने योगबल से जानकर बोले हे राजन् इसमें से थोड़ा मांस तेरे पुत्र ने खालिया है इसलिये यह मांस श्राद्ध करनेयोग्य नहीं रहा यह वचन सुनते ही राजा ने शशाद को अपने नगर से बाहर निकाल दिया तब वह वन में जाज्वल्य ऋषीश्वर की कुटी पर जाकर हरिभजन करने लगा जब कुछ काल बीते राजा इक्ष्वाकु मर गये तब वशिष्ठ ऋषीश्वर ने शशाद को वन से लाकर राजगद्दी पर बैठा दिया उसके वंश में पुरंजय नाम राजा बड़ा प्रतापी व बलवान् हुआ सो एकबेर देवतों को दैत्यों ने युद्ध में जीत लिया जब इन्द्रने जाकर ब्रह्मा से अपने विजय का उपाय पूछा तब ब्रह्माजी बोले हे इन्द्र तुम मर्त्यलोक से राजा पुरंजयको अपनी सहायता के वास्ते बुलावो तो तुम्हारी विजय होगी यह वचन सुनते ही इन्द्र ने राजा पुरंजय के पास जाकर विनय किया कि आपको हमारा सहायक होकर दैत्यों से लड़ना चाहिये पुरंजय बोला हे इन्द्र मुझे तुम्हारी सहायता करने में कुछ सन्देह नहीं है पर दैत्यों से लड़ते समय मुझे इतना बल उत्पन्न होगा कि यह हाथी व घोड़ा मेरा बोझ उठा नहीं सकैंगे इसलिये तुम बैलरूप होकर

मुझे अपनी पीठ पर उठाओ तब मैं दैत्यों से लडूंगा जब इन्द्र ने अपने अर्थ साधने के वास्ते बैलरूप धरा तब राजा ने उस पर चढ़कर दैत्यों को युद्ध में जीत लिया जब राजा की सहायता से इन्द्रादिक ने अपना राज्य पाया तब पुरंजय फिर मर्त्यलोक में आनकर अपना राज्य करने लगा उसके वंश में सावस्तनाम राजा महाप्रतापी होकर सावस्ती पुरी बसाई उसका पोता राजा कुवलयाश्व ऐसा बलवान् उत्पन्न हुआ जिसने उतंग ऋषीश्वर की सहायता करके धुन्धनाम दैत्य को मारडाला व उस दैत्य के मुख से ऐसी ज्वाला निकली जिस अग्नि से इक्कीस हजार पुत्र राजा कुवलयाश्व के भस्म होगये दृढ़हास आदिक तीन बेटे उसके बचे सो दृढ़हास का पुत्र निकुम्भ होकर उसके वंश में युवनाश्व नाम राजा ऐसा प्रतापी व बलवान् हुआ जिसके आधीन सातों द्वीप के राजा रहते थे पर वह सन्तान न होने से सदा उदास रहता था एक दिन राजा ने ऋषीश्वरों से विनय किया महाराज आपलोग कोई ऐसा उपाय करें जिसमें मेरे पुत्र हो सो ऋषीश्वरों ने पुत्र होने के वास्ते राजा से यज्ञ कराके एक कलशा पानी का मंत्र पढ़कर यज्ञशाला में इस इच्छा से रक्खा कि प्रातःकाल रानी को यह जल पिलवावेंगे तो उसके पुत्र होगा जब रात को राजा व ऋषीश्वर लोग उसी यज्ञशाला में सोये और परमेश्वर की इच्छानुसार राजा को तृषा लगी तो उसने धोखे से वह जल पीलिया तब प्रातःकाल ऋषीश्वर लोग यह वृत्तान्त जानकर बोले हे राजन् तुम्हारे भाग्य व नारायणजी की इच्छा में किसी का वश नहीं है तेरे पेट से एक बालक उत्पन्न होगा राजा यह वचन सुनकर पहिले उदास हुआ फिर इच्छा परमेश्वर की इसी तरह जानकर सन्तोष किया जब पेट राजा का गर्भवती स्त्री के समान प्रतिदिन बढ़ने लगा और दशमहीने बीते तब ऋषीश्वरों ने दहिनी कोख राजाका चीरकर पेटमें से लड़का निकाल लिया व घाव सीकर हरिइच्छा से राजा को चंगा कर दिया जब उस बालकने रोकर दूध मांगा तब इन्द्रने अपना अँगूठा अमृत भरा हुआ उसके मुख में डालकर चुसाया तो पेट उसका भरगया व इन्द्र ने अँगूठा डालते ही समय उसे मान्धाता

पुकारकर कहा था कि इसका पालन मैं करूंगा इसलिये ऋषीश्वरोंने उसका नाम मान्धाता रक्खा सो वह सातों द्वीपका ऐसा प्रतापी व बलवान् राजा हुआ कि जिससे रावण आदिक सब दैत्य व राक्षस डरते थे व उसने यज्ञ करके ब्राह्मणों को बहुत दान व दक्षिणा दी इस कारण तेज व बल उसका अधिक हुआ व मान्धाता के यहां मुचकुन्दादिक तीन पुत्र व पचास कन्या हुईं सो उसने पचासों पुत्री अपनी सौभरि ऋषीश्वर को ब्याह दीं इतनी कथा सुनकर परीक्षित ने पूंछा महाराज मान्धाता ने पचास कन्या एक ऋषीश्वर को क्यों ब्याह दिया था शुकदेवजी बोले हे राजन् सौभरि ऋषीश्वर यमुनाकिनारे जलमें बैठे तप करते थे साठ हजार वर्ष तप करने उपरान्त एक दिन ऋषीश्वर ने मछली को अपने बच्चों के साथ यमुना-जलमें क्रीड़ा करते देखा तब वृद्ध होने पर भी मन में यह विचारा कि गृहस्थाश्रम बहुत अच्छा होता है जब ऋषीश्वर को इच्छा गृहस्थी करने की हुई तब उन्होंने राजा मान्धाता के पास जाकर कहा हमको एक कन्या अपनी देव राजाने शाप के भय से यह उत्तर दिया महाराज मेरे पचास पुत्री हैं आप राजमन्दिर में जावें जो कन्या तुमको अंगीकार करे उसका ब्याह तुमसे करदूं यह वचन सुनकर सौभरि ऋषीश्वर ने विचारा कि मुझ वृद्ध मनुष्य को यह सब राजकन्या किसतरह अंगीकार करेंगी तरुण स्त्री वृद्ध मनुष्यको नहीं चाहती हैं ऐसा विचारकर ऋषीश्वर ने तपोबल से अतिसुन्दर व तरुण स्वरूप अपना बना लिया कि जिसे देखकर अप्सरा मोहित होजावें जब वह ऋषि रूप अपना अश्विनीकुमार के समान बना-कर राजमन्दिर में गये तो उनकी सुन्दरताई देखतेही पचासों राजकन्या लाज छोड़कर उनपर मोहित होगईं तब राजा मान्धाता ने विधिपूर्वक पचासों कन्या ऋषीश्वरको ब्याह दीं व ऋषीश्वर महाराज सबको अपने स्थानपर लाये और उन्होंने अपने योगबलसे पचास विमान रत्नजटित बाग व तड़ागादिक सब वस्तु संयुक्त बना दिये और सौभरि ऋषीश्वर प-चास रूप धरकर एक एक स्त्री से बिलग बिलग विमानोंमें भोग व विलास करने लगे वे विमान ऋषीश्वरकी इच्छानुसार उड़कर इन्द्रलोकादिक में

चले जाते थे और उन विमानों की शोभा देखकर देवता व देवकन्या व मान्धाता आदि ईर्षा संयुक्त उनकी बड़ाई करते थे जब इसीतरह सुख व विलास करते हुये उन ऋषीश्वर के पचास हजार पुत्र हुये व उनका इतना वंश बढ़ा कि जिसकी कुछ गिनती नहीं होसक्की तब उन्होंने बहुत दिन संसारीसुख भोग करके एक दिन मनमें विचारा कि देखो इतने दिन हमने सुखभोगा तिसपर भी मन नहीं भरा व मैंने अपने अज्ञान से हरिभजन व स्मरण छोड़ दिया और संसारी माया में फँसकर नष्ट हुआ कदाचित् इसी तरह मायाजालमें फँसा हुआ मरगया तो परलोक मेरा बिगड़ जायगा इसलिये फिर परमेश्वर का तप व भजन करना चाहिये ऐसा विचारते ही सौभरि ऋषीश्वरने मन अपना संसारी मायासे विरक्त करलिया व पचासों स्त्रीसमेत वनमें चलेगये व योगाभ्यास के साथ अपना तनु त्याग दिया तब पचासों स्त्रियां उनकेसंग सतीहोकर पतिसमेत सत्यलोकमें चलीगई ॥

सातवां अध्याय ।

राजा त्रिशंकु व मुनि की कथा ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित मान्धाताके मरने उपरांत अम्बरीषनाम बड़ा बेटा उसकी गद्दीपर बैठा उसके वंशमें हारीतनाम ऐसा प्रतापी राजा हुआ जिसने नागों की सहायता करके गन्धर्वोंको मारा तब नागोंने बड़े हर्षसे अपनी बहिन उसको व्याहकर यह वरदान दिया जो लोग तुम्हारे नामका स्मरण करैंगे उनको कोई सर्प दुःख न देगा हारीतके वंशमें त्रिशंकुनाम राजा उत्पन्न हुआ और वशिष्ठ गुरुके पुत्रोंने उसे ऐसा शाप दिया कि चांडाल होगया व फिर विश्वामित्रके वरदानसे उसको स्वर्ग मिला इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे स्वामी इसकी कथा विस्तारपूर्वक कहिये शुकदेवजी बोले हे परीक्षित त्रिशंकु राजा एक दिन वशिष्ठगुरुसे बोला आप मुझे कोई ऐसा यज्ञ करावैं कि जिसमें इसी शरीरसे स्वर्ग को चला जाऊं यह सुनकर वशिष्ठजीने कहा हमको ऐसा यज्ञ कराना नहीं आता जब त्रिशंकुने जाकर वशिष्ठके बेटोंसे यही बात कही तब उन्होंने उसे शाप दिया कि तू गुरुका वचन झूठ समझकर फिर हमारे पास पूंछने आया इसलिये

चांडाल होजा सो त्रिशंकु जब रातको सोकर प्रातसमय उठा तो अंग उसका काला होकर कपड़े नीले होगये इसलिये लोगोंने उसका छूना बन्द कर दिया तब वह घबड़ाकर बीचशरण विश्वामित्र ऋषीश्वर के जो वशिष्ठजी से शत्रुता रखते थे जाकर बोला महाराज गुरुके बेटोंने मुझे शाप देकर चांडाल बनादिया व मेरी इच्छा स्वर्गमें जानेकी थी सो पूरी नहीं हुई इसवास्ते तुम्हारी शरण आयाहूं जिसमें मेरी कामना पूरी हो वैसा कीजिये यह वचन सुनतेही विश्वामित्र हँसकर बोले हे राजन् शाप देनेसे तेरा स्वरूप जो चांडाल के समान होगया है वह किसी तरह बदल नहीं सक्ता पर मैं तुझको इसी रूपसे स्वर्गमें पहुँचा दूंगा ऐसा कहकर विश्वामित्रने सम्पूर्ण पृथ्वीके ऋषीश्वरोंको अपने यहां बुलाया उसमें सौपुत्र वशिष्ठगुरुके नहीं आये इसलिये विश्वामित्रने उन लोगोंको शाप देकर डोम बना दिया व राजा त्रिशंकुसे यज्ञ कराया जब उसमें किसी देवता ने आहुति नहीं ली तब विश्वामित्रने क्रोधित होकर अपने कमण्डलुके पानी से त्रिशंकुको स्नान कराके कहा कि तू मेरे तपोबलसे स्वर्गमें चला जा सो वह चांडाल होने परभी विश्वामित्रके योगबलसे स्वर्गको चढ़गया व इन्द्रासन पर जाकर थोड़ी देर बैठा जब इन्द्रने देखा कि चांडाल मनुष्य इन्द्रासन पर बैठा है तब एक लात मारकर उसको गिरा दिया और देवतोंने त्रिशंकुसे कहा तू चांडालहै इसलिये शिर नीचे व पैर ऊपर करके गिर चांडालका ठिकाना स्वर्गमें नहीं है गिरती समय चिल्लाकर पुकारा हे विश्वामित्र महाराज मुझे इन्द्रने लात मारकर इन्द्रासन से गिरा दिया मेरी सहायता कीजिये यह वचन सुनतेही विश्वामित्र ने त्रिशंकु से कहा तू उसी जगह रह जब ऋषीश्वरकी आज्ञानुसार वह उसी स्थानपर ठहर गया व विश्वामित्र अपने योगबलसे उसके रहने वास्ते जगह नवीन स्वर्ग तय्यार करके दूसरे देवता बनाने लगे तब देवतोंने घबड़ाके विश्वामित्रकी शरण जाकर विनय किया महाराज दूसरे देवता बनानेसे हमलोगोंका अपमान होगा विना आज्ञा नारायणजीकी नई बात करना उचित नहीं है यह वचन सुनकर विश्वामित्र बोले मैं त्रिशंकुको स्वर्ग देनेके वास्ते वचन हार चुकाहूं इसलिये यह

नया स्वर्ग मेरा बनाया हुआ उसके रहनेवास्ते स्थिर रहेगा पर दूसरे देवतों की रचना न करूंगा जब देवता हार मानकर बोले बहुत अच्छा तब विश्वामित्रने दूसरे देवता नहीं बनाकर अपना स्वर्ग बनाया हुआ रहने दिया सो आजतक राजा त्रिशंकु उसी स्वर्गमें उलटे लटके हैं व उसके मुखसे जो लार बहती है उसीकी कर्मनाशा नदी प्रकट हुई जिस नदीमें पैर डालने से सब पुण्य मनुष्यके क्षीण होजाते हैं व त्रिशंकुकी छाया मगधदेश पर पड़ती है इसलिये मगधको मरने वास्ते अशुद्ध कहते हैं त्रिशंकुका पुत्र हरिश्चंद्र नाम राजा बड़ा प्रतापी हुआ और उसने पुत्र होने वास्ते वरुण देवताकी मानता मानी थी कि मेरे बेटा हो तो उसी बालकका तुम्हें बलि-दान चढ़ाऊं जब वरुण देवताकी कृपासे रोहितनाम बेटा उसके हुआ तब राजाने प्रेमवश उसे बारह वर्षतक बलिदान नहीं दिया जब वरुण देवताने बलिदान देने वास्ते अतिहठ किया और उस बालकने समझा कि घर रहने से एक दिन अवश्य बलिदान दिया जाऊंगा तब वह अपना प्राण बचाकर तीर्थयात्रा करने चला गया व वरुणने बलिदान न पानेसे क्रोधित होकर हरिश्चन्द्रके जलंधरका रोग उत्पन्न किया जब राजा उस रोगसे मरण तुल्य होगया तब रोहितने यह वृत्तान्त सुना कि मेरे पिता वरुण देवताके क्रोध से मरा चाहते हैं तब उसने कहा मेरे ऐसे जीनेपर धिक्कार है जो मेरा पिता मेरे वास्ते मारा जावे ऐसा विचारकर जब वह बलिदान होनेके वास्ते अपने घर आने लगा तब राहमें उसने सुनःसेफ विश्वामित्र के भांजेको देखा तब रोहितने सुनःसेफके माता व पिता को जो अति कंगाल होकर तीन पुत्र रखते थे कहा सौ गौ हमसे लेकर एक पुत्र हम को देदेव यह वचन सुनकर अजयकीर्ति पिता सुनःसेफका बोला बड़ा बेटा मुझे बहुत प्याराहै उसे न दूंगा व उसकी स्त्री बोली मैं छोटे पुत्रको बहुत प्यार करतीहूं उसे न बेचूंगी यह वचन अपने माता व पिताका सुन कर सुनःसेफ मँझले पुत्रने कहा मेरा मोह माता व पिता नहीं रखते इसलिये मैं रोहितके हाथ बिकजाताहूं जब यह वचन सुनकर अजयकीर्ति व उस की स्त्री चुप होरही तब रोहितने सौ गौ विधिपूर्वक उन्हें देकर सुनःसेफको

मोल लेलिया व उसे अपने बदले वरुण देवताका बलिदान देनेके वास्ते साथ लेकर घरको चला तब राहमें विश्वामित्र ऋषीश्वर मिले जब उन्होंने अपने भांजे को देखकर अपने योगबल से जाना कि यह बलिदान होने वास्ते जाता है तब उसे ऋचा वेदकी बतलाकर कहा कि तू इसे नित्य पढ़ाकर तेरी मृत्यु न होगी सो ऋषीश्वर की आज्ञानुसार उसने वह ऋचा पढ़ना आरम्भ किया जब राजकुमार सुनःसेफ को साथ लिये हुये राजमंदिर पर पहुँचा तब हरिश्चन्द्र अपने बेटे को देखकर अतिप्रसन्न हुआ व उसने विश्वामित्रादिक ऋषीश्वरों को बुलाकर वरुण देवताका बलिदान देनेके वास्ते यज्ञ आरम्भ किया व मनमें विचारा कि राजकुमार के बदले सुनःसेफ को बलिदान देकर रोहितको बचालूंगा व वरुण देवता अपना बलिदान लेकर मुझे भी आराम कर देवेंगे जब यज्ञ करते समय सुनःसेफ को बलिदान देने का समय आया तब विश्वामित्रने बहुत स्तुति करके वरुण देवता को प्रसन्न किया और अपने भांजे को बलिदान होने से बचालिया व वरुणने राजा हरिश्चन्द्र को वरदान देकर उसका रोग छुड़ा दिया जब रोहित व सुनःसेफ दोनों के प्राण बचे और वरुण देवता प्रसन्न होगये तब विश्वामित्रने हरिश्चन्द्रको ऐसा ज्ञान उपदेश किया जिसके प्रतापसे वह मुक्त हुआ व रोहित उसकी राजगद्दीपर बैठकर धर्म-पूर्वक राज्य करने लगा ॥

आठवां अध्याय ।

राजा सगर की कथा ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित रोहितके वंश में राजा चम्पक हुआ जिसने चम्पापुरी बसाई व चम्पकके वंशमें आहुक नाम राजा बड़ा प्रतापी होकर उसने पुत्र होनेके वास्ते हजार विवाह अपने किये, पर हरिइच्छासे किसी रानीके सन्तान नहीं हुई इसलिये राजा आहुक उदास रहता था सो एक दिन नारद मुनिने राजमन्दिरपर आनकर पूंछा हे राजन् तुम उदास क्यों दिखलाई देते हो आहुकने हाथ जोड़कर विनय किया कि महाराज मैं आपको परम भक्त समझकर अपना दुःख कहता हूं हजार विवाह

करने पर भी पुत्र नहीं हुआ यही चिन्ता मुझे दिन रात रहती है यह वचन सुनते ही नारदजीने दयालु होकर एक फल आमका जो हाथमें लिये थे राजाको देकर कहा जिस रानीको चाहो यह आम खिलादो परमेश्वर की दयासे बालक होगा राजाने वह फल लेकर अपनी बड़ी स्त्री को जिसकी उस दिन बारी थी खिला दिया सो रानी के उसी दिन गर्भ रहगया पर बालक उत्पन्न नहीं हुआ था कि उन्हीं दिनों में दूसरे राजोंने जो बलवान् थे राजा आहुकको युद्ध में जीतकर सब नगर उसका अपने आधीन कर लिया तब वह अपनी रानियों समेत भागकर वनमें चला गया व ऋषीश्वरोंके स्थानके निकट झोपड़ी बनाकर रहने लगा सो राजा बड़ी रानी के गर्भवती होनेसे उसपर अतिप्रीति रखकर आठों पहर उसीके पास रहता था इसलिये राजाको दूसरी रानियां सवतियाडाह से आपस में कहने लगीं देखो अभी बड़ी रानीके पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ तिसपरभी राजा रात दिन उसीके पास रहते हैं हमारी ओर आंख उठाकर कभी नहीं देखते बालक होने पर न मालूम हमलोगों की क्या दशा होगी इसलिये रानीको विष देना चाहिये जिसमें वह पेटके बालक समेत मरजावै जब उन्होंने यह सम्मत करके किसी वस्तुमें विष मिलाकर गर्भवती रानी को खिला दिया और वह विषकी ज्वाला से व्याकुल हुई तब उसने अवरव ऋषीश्वरकी कुटी में जो उसी जगह रहते थे जाकर विनय किया महाराज मैं तुम्हारे शरण आई हूं मेरा प्राण बचाइये यह दीन वचन सुनकर ऋषीश्वर बोले हे रानी तू मत डर परमेश्वरकी कृपासे नहीं मरेगी व जो बालक तेरे पेटमें है वहभी जीता बचकर विषसमेत उत्पन्न होगा यह आशीर्वाद सुनकर अति प्रसन्न हुई व ऋषीश्वरकी दया व हरिइच्छासे विषने अपना बल नहीं किया व गर्भ भी ज्योंका त्यों बनारहा जब कुछ काल बीते राजा आहुक अपमृत्यु से मरगया व उसकी सब स्त्रियां सती होने लगीं तब अवरव ऋषीश्वरने गर्भवती रानी से कहा तू मत सती हो तुझसे एक बालक बड़ा बलवान् व तेजस्वी उत्पन्न होकर चक्रवर्ती राज्य करेगा यह सुनकर वह रानी नहीं सती हुई और सब रानी राजाके साथ जलकर सत्यलोकको

चली गई व गर्भवती रानी उसी जगह कुटी बनाकर रही दशवें महीनें उसके एक बालक अतिसुन्दर व तेजस्वी उत्पन्न हुआ और उस बालकके साथ वह विष भी पेटसे निकला संस्कृतमें विषको गरल कहते हैं इसलिये अवरव ऋषीश्वरने उस बालकका नाम सगर रक्खा जब वह बालक बड़ा हुआ तब उसने सेना बटोरी और हरिइच्छा व ऋषीश्वर के आशीर्वादसे दूसरे राजोंको जीतकर अपने पिताकी राजगद्दी छीनली व राजसिंहासनपर बैठकर साथ धर्म व प्रजापालनके राज्य करने लगा व राजा सगर ऐसा प्रतापी हुआ जिसने तालजंघ व यवनाम आदिक म्लेच्छ राजोंको अपनी भुजा के बलसे युद्धमें जीतकर मार डाला व अवरव ऋषीश्वर अपने गुरुकी आज्ञानुसार बहुत म्लेच्छोंका शिर व डाढ़ी व मूंछ मुड़वाकर यह यश अपना संसार में प्रकट किया व सातों द्वीपके राजोंको अपने आधीन करके अपने दो विवाह किये सो राजा सगरके केशिनी रानी से असमंजस नाम एक पुत्र होकर सुमतीनाम दूसरी स्त्री से साठ हजार बेटे उत्पन्न हुये व असमंजसके एक अंशुमान नाम पुत्र बड़ा प्रतापी व अति सुन्दर उत्पन्न हुआ सो असमंजस पूर्वजन्मका योगी था इस कारण प्रजा को दुःख देना आरम्भ किया इसलिये राजा सगरने प्रजाके कहने से असमंजसको बनवास देदिया और अंशुमान अपने पोते को जो धर्मात्मा था पास रक्खा कुछ दिनों उपरांत राजा सगरने सौ अश्वमेध यज्ञ करना विचारकर निन्नानवे यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्ण किया जब सौवां यज्ञ आरम्भ करके शास्त्रानुसार श्यामकर्ण घोड़ा छोड़ा और साठों हजार बेटोंको उस की रक्षा करनेके वास्ते संग करदिया तब इन्द्रने मनमें विचारा कि मनुष्य सौ यज्ञ करनेसे इन्द्र होता है सो राजा सगर सौवां यज्ञ सम्पूर्ण करके मेरा इन्द्रासन छीन लेवेगा व मुझे ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो राजासे सन्मुख लड़कर श्यामकर्ण घोड़ा छीन लाऊं और यज्ञ उसका विध्वंस करूं इसलिये छल करके श्यामकर्ण घोड़ा लेना चाहिये ऐसा विचारकर इन्द्र वह घोड़ा किसी छलसे चुरा लेगया और जहां कपिलदेव मुनि बैठे तप करते थे ले जाकर उनके पीछे बांध दिया व आप इन्द्रलोकको चलागया जब राज-

कुमारोंने घोड़ा अपना नहीं देखा तब उन्होंने चौदहों लोकमें जाकर वह घोड़ा बहुत ढूंढ़ा पर कहीं पता उसका न पाया जब खोजनेसे निराश हुये तब राजा सगरके पास जाकर सब वृत्तान्त कहके विनय किया महाराज आप आज्ञा देवें तो पृथ्वी खोदकर घोड़ा ढूंढ़ें राजा बोले बहुत अच्छा खोजना चाहिये सो उन्होंने अपने पिता की आज्ञानुसार घोड़ा ढूंढ़नेके वास्ते इतनी पृथ्वी खोदी कि छोटे छोटे सात समुद्र भरतखंड में प्रकट हुये जब वे लोग घोड़ा खोजते हुये कपिलदेव मुनिके स्थान पर गये तो क्या देखा कि कपिलदेव मुनि बैठे तप करते हैं और घोड़ा उनके पीछे बँधाहै तब साठों हजार राजकुमार चिल्लाकर बोले हमने अपना चोर पकड़ा जब उनके चिल्लानेसे कपिलदेव मुनिका ध्यान खुलगया तब उन्हों ने आंख उठाकर क्रोध से उन लोगोंकी ओर देखा तो उसी जगह साठों हजार राजकुमार जलकर भस्म होगये जब राजा सगर ने बहुत दिनतक कुछ समाचार अपने बेटोंका नहीं पाया तब अंशुमान पोतेको बुलाकर कहा तू जाकर अपने चाचों व घोड़ेकी सुधि लेआ यह वचन सुनतेही अंशुमान घरसे निकला और उनका पता लेता हुआ जहांपर वे जलगये थे जा पहुँचा जब उसने वहांपर कपिलदेव मुनिको बीचध्यान परमेश्वरके बैठे देखा और दण्डवत् व परिक्रमा करके स्तुति उनकी की तब कपिलदेव मुनि प्रसन्न होकर बोले हे राजकुमार तू घोड़ा अपना लेजा पर तेरे चाचा लोग जो मेरे क्रोधसे जलकर मरगये हैं वे अभी मुक्त नहीं होसक्ते जब गंगाजी आनकर अपने जलसे उनकी हड्डी व राख बहावेंगी तब उनका उद्धार होगा यह वचन कपिलदेव मुनिका सुनतेही अंशुमान उनको दण्डवत् करके श्यामकर्ण घोड़ा अपना वहांसे लेकर राजा सगरके पास आया व सब वृत्तान्त जो कपिलदेव मुनिसे सुना था कह दिया राजा सगरने मरना अपने बेटों का ऊपर इच्छा परमेश्वरकी समझकर सन्तोष किया व सौवां यज्ञ अपना सम्पूर्ण करके व ऋषीश्वरोंसे ज्ञान सुनकर संसारी माया छोड़दिया व अंशुमान अपने पोतेको राजगद्दीपर बैठाकर वनमें चलागया व हरिचरणोंमें ध्यान लगाकर मुक्त हुआ ॥

नवां अध्याय।

मृत्युलोकमें गंगाजीके आनेकी कथा॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् अंशुमान उनके पोतेने कुछ दिन राज्य-काज साथ धर्म व प्रजापालनके करके दिलीप नाम अपने बेटेको राज-गद्दी देदी व आप वनमें जाकर अपने चाचोंकी मुक्तिवास्ते गंगाजीका तप करते करते मरगया पर गंगाजी प्रसन्न नहीं हुईं कुछ दिन उपरान्त राजा दिलीप भी गंगाजी के आनेवास्ते तप करने लगा व उसी इच्छामें उसनेभी तनु अपना त्याग किया पर गंगाजीने दर्शन नहीं दिया राजा दिलीपका बेटा एक भगीरथ नाम बालक था जब उसने खेलते समय अपने साथी बालकोंके मुखसे सुना कि मेरे बाप व दादा गंगाजीके लाने वास्ते तप करते करते मरगये तिसपर भी वह नहीं आईं तब भगीरथने कहा प्रथम मैं गंगाजीको लाकर पीछेसे राजगद्दी पर बैठूंगा यह बात मनमें ठान कर यहभी वनमें चला गया व प्रेमपूर्वक हरिचरणोंका ध्यान करने लगा तब गंगाजीने प्रसन्न होकर स्त्रीरूपसे भगीरथको दर्शन दिया और कहा तू क्या चाहता है भगीरथने गंगाजीको देखते ही दंडवत् व परि-क्रमा व स्तुति करके हाथ जोड़कर विनय किया हे माता मेरे पुरुषालोग कपिलदेव मुनिके शापसे जलकर राख होगये हैं इसवास्ते चाहता हूं तुम मृत्युलोकमें चलकर उस राखको अपनी लहरसे बहावो तब वह लोग कृतार्थ होवैंगे यह बात सुनकर गंगाजी बोलीं हे राजकुमार मुझे भूलोकके आनेमें दो बातका संदेह है एकतो आकाशसे गिरती समय पृथ्वी मेरा भार न सह सकैगी ऐसाही कोई प्रतापी बलवान् हो जो मेरे जलका वेग अपने शरीरमें लैसकै दूसरे पापी व अधर्मीलोग मुझमें स्नान करने से मुक्ति पाकर वैकुण्ठ जावैंगे व उनके पापका अंश मुझे पहुँचेगा इन दोनों बातोंका उपाय करो तो आसक्ती हूं यह सुनकर भगीरथ बोले हे जगता-रिणी मैं शिवजीसे विनय करता हूं वह तुमको अपने शिरपर लेवैंगे व हरिभक्त व तपस्वी व मुनि व महात्मा व ऋषीश्वरोंके स्नान करनेसे पापी व अधर्मीलोगोंके नहानेका पाप तुमको नहीं लगेगा यह बात मानकर

गंगाजी वहांसे अन्तर्धान होगई व भगीरथ बीचतप व ध्यान महादेवजी के लीन हुआ जब शिवशंकर प्रसन्न हुये और भगीरथको दर्शन देकर बोले तू क्या चाहता है तब भगीरथने दण्डवत् व परिक्रमा करके विनय किया हे महाप्रभु मैंने वास्ते कृतार्थहोने अपने पुरुषोंके गंगाजीसे मृत्यु: लोकमें आनेको विनय किया था सो गंगाजीने कहा कोई मुझे अपने ऊपर लेकर मेरे जलका वेग उठावे तो मैं आऊं इसलिये चाहता हूं कि आप पहिले गंगाजीको अपने मस्तकपर लेवैं तब उनका वेग पृथ्वी सहसकैगी महादेवजीने प्रसन्न होकर भगीरथकी विनती मान ली जब जल गंगाजीका आकाशसे गिरा व शिवजीने अपने शिरपर लिया तब कुछकाल गंगाजी शिवशंकरकी जटामें घूमती रहीं पृथ्वीपर नहीं गिरीं जब भगीरथने फिर स्तुति शिवजीकी वास्ते प्रकट होने गंगाजीके की तब महादेवजीने एक रथ भगीरथको देकर कहा तू इसपर बैठके गंगाजी के आगे आगे जाकर अपने पुरुषों की राह दिखलादे यह कहकर शिव-शंकरने अपनी जटा निचोड़के गंगाजीको बाहर निकाला और उसी रथ पर भगीरथ चढ़ा जहां कि उसके पुरुषोंकी राख पड़ी थी वहां गंगाजीको लिवा लाया जब गंगाजी उस राखपर होकर बहीं तब सब पुरुषा उसके देवतारूपसे विमानपर बैठकर स्वर्गको चलेगये व भगीरथ बड़े हर्षसे राज मन्दिरपर आया व ब्राह्मण व कंगालोंको बहुतसा दान व दक्षिणा देकर राजगद्दी पर बैठा व उसने बहुतकाल धर्मपूर्वक राज्य किया उसके वंशमें राजा ऋतुपर्ण बड़ा प्रतापी राजा नलका मित्र हुआ जिसने घोड़ा चढ़ना राजा नलसे सीखकर उसे जुआ खेलना बतलाया था ऋतुपर्णका पुत्र सुदास नाम बड़ा प्रतापी राजा एकदिन अहेर खेलने वास्ते वनमें गया और वहां उसने हिरण्यरूप राक्षसको मारडाला उस राक्षसके भाईने राजा से बदला लेने की इच्छा की पर वह राजासे सन्मुख लड़नेकी सामर्थ्य नहीं रखता था इसलिये वह ब्राह्मणरूप से राजाके पास जाकर बोला मुझे रसोई बनानी अच्छी आती है यह वचन सुनकर जब राजाने उसे रसोई बनाने वास्ते नौकर रखलिया और वह राक्षस ब्राह्मणरूप वहां रहने लगा।

तब एकदिन राजा सुदासने वशिष्ठ ऋषीश्वरको नेवता देकर अनेक प्रकार का व्यंजन व मांस वनवाया तो उस राक्षसने मनुष्यका मांस वनाकर सव पदार्थ समेत वशिष्ठजी के सम्मुख धरदिया वशिष्ठगुरुने अपने योगवल से वह मांस पहिंचानतेही राजा पर क्रोध करके कहा हे राजन् तू मुझे राक्षस समझकर मनुष्यका मांस मेरे खानेवास्ते लाया है इसलिये मैं नारायणजी से चाहता हूं कि तू वारह वर्षतक राक्षस होजा व मनुष्यका मांस खाया कर ऐसा शाप देकर वशिष्ठजी उठ खड़े हुये उससमय राजाने कि वह भी अपने तपोबलसे शाप देने की सामर्थ्य रखता था कहा मेरी जानकारी में किसी ने मनुष्यका मांस वशिष्ठ ऋषीश्वरके खानेवास्ते नहीं रक्खा था मुझे वृथा ऋषीश्वरने शाप दिया इसलिये मैं भी उनको शाप देता हूं जब ऐसा कह-कर राजाने शाप देनेवास्ते पानी हाथमें उठाया तव रानी राजाका हाथ पकड़कर बोली आपको ब्राह्मण व गुरुसे बरावरी करना न चाहिये वशिष्ठ जीने क्रोधवश शाप दिया तो अच्छा किया फिर दयालु होकर वरदान देवैंगे तुम इनको शाप मत देव राजाने रानीके समझानेसे वशिष्ठजीको शाप देना उचित न जानकर वह जल हाथका अपने पैरपर डाल दिया सो दोनों पैर राजाके काले होगये उस दिन से राजा सुदासका नाम कल्माषपाद लोग कहने लगे और सव अंग राजाका ज्योंका त्यों वना रहा पर ज्ञान उसका शाप देनेसे राक्षसोंके समान होगया इसलिये वह मनुष्यों को पकड़कर मांस उनका खाने लगा पर स्त्रीको नहीं खाता था सो एक दिन राजाने वनमें किसी ऋषीश्वरको स्त्रीसमेत देखकर उसे खानेकी इच्छा किया तव वह स्त्री विनती करके वोली हे राजन् अभीतक मैंने अपने स्वामीसे इच्छापूर्वक संसारीसुख नहीं भोगा मुझे सन्तान होने की इच्छा वनी है इसलिये तू मेरे पतिको मत खा कदाचित् तू न माने तो मुझे भी खाले जव राजाने अपने राक्षसी धर्मसे उसकी विनती न मान-कर ऋषीश्वरको खालिया तव वह ब्राह्मणी हाड़ अपने स्वामीके बटोरकर सती होगई व जलती समय उसने राजाको यह शाप दिया जब तू स्त्री प्रसंग करैगा तब मर जावेगा जब वारह वर्ष शापके दिन वीत गये और

ज्ञान राजा का शुद्ध हुआ तब वह अपना राज्य करने लगा एक दिन राजाने रानी से प्रसंग की इच्छा की पर रानी शापका समाचार सुनचुकी थी इसलिये उसने राजाको बहुत समझाकर भोग करने नहीं दिया फिर एक रोज वशिष्ठ गुरु ने अपनी इच्छासे राजमन्दिरपर आनकर राजा व रानी को ऐसा वरदान दिया कि विना भोग किये तुम्हारे पुत्र होगा यह आशीर्वाद देकर वशिष्ठ ऋषीश्वर अपने स्थान पर चले गये व उनकी कृपासे विना प्रसंग किये उसी दिन रानीके गर्भ रहकर सातवें वर्ष अश्मक नाम पुत्र हुआ उससे मोलकनाम बालक होकर परशुराम जीके क्रोधसे बचा सब क्षत्रियोंकी जड़ वही है उसका बेटा राजा खट्वांग ऐसा प्रतापी व धर्मात्मा हुआ जिसने देवतों की सहायता की और दैत्यों को युद्धमें जीतकर मुक्त हुआ उसकी कथा विस्तारपूर्वक दूसरे स्कन्धमें लिखी है॥

दशवां अध्याय।

कथा रामावतार की॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित खट्वांग के वंशमें राजा दशरथ बड़े प्रतापी व तेजस्वी हुये जिन्होंने अयोध्यापुरी में धर्मपूर्वक राज्य किया व उनके यहां रामचन्द्रजी परब्रह्मका अवतार कौशल्या रानीसे व लक्ष्मणजी शेषनाग का अवतार व शत्रुघ्न सुमित्रा स्त्री से व भरत कैकेयी रानी से उत्पन्न हुये उन्हीं रघुनाथजीका चरित्र व लीला तुमने ऋषीश्वरोंके मुख से सुना होगा फिर हम उनकी कथा संक्षेपसे कहते हैं सुनो जिन्होंने बाल-पनमें मारीच व सुबाहु राक्षसको मारकर विश्वामित्र ऋषीश्वरके यज्ञकी रक्षा की व उन्हीं त्रिलोकीनाथने लक्ष्मणजी अपने भाई समेत विश्वामित्र गुरुके साथ जनकपुरमें जाकर जो धनुष महादेवजीका किसी राजा से नहीं उठता था उसे ऊखके समान तोड़कर परशुरामजीका गर्व मिटाया व सीताको ब्याहकर अयोध्यामें लाये और अपने पिताकी आज्ञानुसार लक्ष्मण व जानकी समेत चौदहवर्ष वनवास किया जब पंचवटी में शूर्प-णखा रावणकी बहिनकी नाक व कान काट लिया तब खर व दूषण व त्रिशिरा भाई शूर्पणखाके चौदह हजार राक्षस समेत रामचन्द्रजीसे लड़ने

आये सो उनको सेना समेत मारडाला जब रावणने शूर्पणखाके नाक व कान काटने व खर व दूषण आदिक अपने भाइयों के मारे जानेका समाचार सुना तब वह योगी का वेष धरकर सीताजीको हर लेगया जब मार्गमें जटायु गृध्र हरिभक्तने रावणको रोंका तब लंकापतिने जटायुसे बड़ा युद्ध करके अग्निवाण मारकर उसे गिरादिया व सीताजी को समुद्र पार लेजाकर अशोकवाटिकामें रक्खा जब रामचन्द्रजी मारीच राक्षसको जो मायारूपी हरिण बना था मारकर अपने स्थानपर आये व जानकीजी को नहीं देखा तव नरदेह धारण करनेसे अति विलाप करते हुये दोनों भाई सीताजीको खोजते चले जब राहमें जटायुसे सुना कि लंकापति रावण जानकी को हर लेगया है तब रघुनाथजीने गृध्र को परमभक्त जानकर उसका संस्कार अपने हाथसे किया फिर आगे जाकर कबन्ध राक्षस को मारा व कबन्धके मुखसे सुग्रीव वानर का समाचार सुनकर जानकीजीको ढूँढ़ने वास्ते उसके साथ मित्रता की और बालि वानर को मारकर किष्किंधा का राज्य सुग्रीव को दिया व उसकी आज्ञानुसार हनुमान् आदिक करोड़ों वानर व भालु सीताके खोजनेवास्ते चारों दिशाओंमें गये व हनुमान्‌जीने लंकामें जाकर उस पुरीको जला दिया और वहांसे आनकर जानकीजी के कुशलानन्दका समाचार रघुनाथजीको सुनाया तब रामचन्द्रजीने बड़ी भारी सेना भालू व वानरों की साथ लेकर लंकापर चढ़ाई की व समुद्र किनारे पहुँचकर नल व नील वानरों से उसमें सेतु बँधाया जब विभीषण रावणके भाईने वहां आनकर रघुनाथजीका दर्शन किया तब रामचन्द्रजीने उसी जगह लंकाके राज्य का तिलक विभीषणके लगाया व जब उसी पुलकी राह सेना समेत पार उतरकर लंकाको घेर लिया तब लक्ष्मणजी सुग्रीव व हनुमान् व अंगद व नल व नील व जामवन्त भालू आदिक सेनापतियों को साथ लेकर राक्षसों से युद्ध करके उन्हें मारडाला जब कुम्भकर्ण भाई व इन्द्रजीत बेटा रावणका मारागया व उसने आप चढ़ाई करके रामचन्द्रजी से बड़ा युद्ध किया तब रघुनाथजीने अग्निबाण रावणके हृदय में मारकर उसे मुक्त पद दिया जब विभीषण रामचन्द्रकी

आज्ञानुसार रावण का दाह कर्मादिक कर चुका तब उसे रघुनाथजीने राज्य लंकाका दिया जब विभीषण राजसिंहासन पर बैठा तब वह सीता जीको जड़ाऊ सुखपालपर बैठाकर रामचन्द्रजी के पास ले चला उस समय सब भालू व वानरोंकी यह इच्छा हुई कि हमलोग जानकीजी का दर्शन करके नेत्रोंको सुफल करते तो अच्छा होता रघुनाथजी अन्तर्यामी ने विभीषणको आज्ञा दी कि जानकीजी से कहदेव पैदल हमारे पास आवैं यह वचन सुनतेही सीताजी सुखपालसे उतर कर रघुनाथजीके पास आई तब सब भालू व वानरोंने उनका दर्शन पाकर अपने अपने नेत्रोंको सुख दिया जब लक्ष्मणजी सीता माताके चरणों पर गिरे तब जानकीजीने उन्हें आशीर्वाद दिया फिर रामचन्द्रजी विभीषण व हनुमान् आदिक सेनापति व सीताजीको अपने साथ पुष्पक विमानमें बैठाकर लंकासे चले जब तीसरे दिन प्रयागराज पहुँचे तब वहांसे हनुमान्जीको यह कहकर अयोध्यापुरी में भेजा कि तुम पहिलेसे जाकर भरतजीको हमारे आनेका समाचार देव व एक दिन अवधिका रहगया है मैं अपनी अवधिपर नहीं पहुँचूंगा तो भरतजी अपना तनु त्याग कर देवैंगे यह वचन सुनतेही हनुमान्जीने अयोध्यामें जाकर रघुनाथजी का आगमन भरतजी से कह दिया यह समाचार सुनकर भरतजीको बड़ा हर्ष हुआ और हनुमान्जीको आशीर्वाद देकर वशिष्ठ गुरु व पुरवासी व सेनासमेत रामचन्द्रजीको आगेसे लेने गये व रघुनाथजी पहिले वशिष्ठ गुरुके चरणोंपर गिरे फिर उठकर भरतजी व शत्रुघ्नको अपने गले लगाया और वहांसे अयोध्यावासी व अपने साथियों को अनेक वाहनोंपर बैठाकर अयोध्यापुरीमें पहुँचे व रामचन्द्र व लक्ष्मणजी ने सीतासमेत राजमन्दिरमें जाकर अपनी माताको दण्डवत् किया व वशिष्ठजीकी आज्ञासे शुभ मुहूर्त में राजसिंहासन पर बैठे व धर्मपूर्वक राज्य करने लगे उससमय त्रेतायुग था सो रामचन्द्रजीके धर्म व प्रतापसे उनका राज्य सतयुग के समान होगया ॥

ग्यारहवां अध्याय।

सीताजीको बाल्मीकिजी के स्थानपर भेजनेकी कथा॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित रामचन्द्रजीने राजगद्दी पर बैठकर संसारी जीवों को धर्ममार्ग दिखलाने वास्ते अनेक यज्ञ किये और सब द्रव्य व राज्यादिक अपना ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको संकल्प करके एक धोती व अँगोछा व एक सारी व सुमंगला नाम यंत्र सीताजीके अंगपरका अपने पास रखलिया तब नारदजी आदिक ऋषीश्वर व ब्राह्मणोंने उनको आशीर्वाद देकर कहा महाराज आपने त्रिलोकीनाथ होकर अपने स्वरूपका ध्यान जो हमलोगोंको दिया है उसीमें हमलोग मग्न रहते हैं यह राज्य लेकर क्या करैंगे हमलोगों को इसके बदले गोदान दीजिये कि अग्निहोत्रादिक किया करैं जिसमें हमारा धर्म बनारहै सो रघुनाथजी ने ब्राह्मणों को दया व कृपासे उनको गौआदिक विधिपूर्वक दान देके फिर देश अपना ब्राह्मणों से लेलिया और राज्य करनेलगे सातोंद्वीपके राजा और सब देवता व दैत्यादिक उनकी आज्ञा पालते थे व प्रजालोग पुत्रके समान उनसे पालन होकर आनन्दपूर्वक हरिभजनमें रहते थे एक दिन रात्रिको रघुनाथजी वेष बदल कर अपनी कीर्ति की परीक्षा लेने वास्ते अयोध्यापुरी में निकले सो एक धोबीने अपनी स्त्रीसे लड़ते हुये यह कहा तू विना कहे मेरे एक रात्रि कहीं वाहर रहआई सो तू अब मेरे घर रहने योग्य नहीं है इसलिये अपने यहां न रक्खूंगा जहाँ तेरी इच्छा हो चली जा मैं राजा रामचन्द्रजी नहीं हूं जो सीता उनकी स्त्री वर्ष दिन तक रावणके यहां रहीं फिर उन्हें अपने घरमें लाकर रखलिया जब रामचन्द्रजी यह लोकनिन्दा अपने कानसे सुनकर राजमन्दिरपर आये व उसी चिन्तामें रात्रिभर निद्रा न आई तब प्रातःकाल शत्रुघ्नसे कहा सीता गर्भवतीको वन में लेजाकर छोड़ आओ जब शत्रुघ्न यह वचन सुनतेही अचेत होगये और उनकी आज्ञा न मानी तब यही बात रघुनाथजीने भरत से कही जब उन्होंनेभी यह वचन त्रिलोकीनाथ का पालन न किया तब रामचन्द्रजीने लक्ष्मणको बुलाकर कहा मैंने भरत व शत्रुघ्नसे सीताजीको वनमें छोड़

आने की आज्ञा दी थी सो नहीं मानी तुम यह बात जाकर सीताजी से कहो तुमने ऋषीश्वरों की स्त्रियों व गंगाजी की पूजा करने वास्ते मानता मानी थी सो चलकर पूजा उनकी करना चाहिये जब वह तुम्हारे साथ जावें तब तुम उनको निकट स्थान बाल्मीकि ऋषीश्वरके इसी बहाने से छोड़ कर चले आवो जानकीजीको घरमें रखने से प्रजालोग मेरी निन्दा करते हैं हमारा कहना न मानोगे तो मैं मरजाऊंगा जब लक्ष्मणजीने ऐसा वचन सुना और उत्तर देना उचित न जाना तब सीताजीसे जाकर कहा कि तुम हमारे साथ चलकर पूजा गंगाजी व ऋषिपत्नियोंकी जो मानता मानी थी कर आवो यह वचन सुनतेही सीताजी अतिप्रसन्न हुईं व अनेक प्रकारका भूषण व वस्त्र ऋषिपत्नियों के वास्ते लेकर लक्ष्मणजीके साथ रथपर चलीं उससमय बहुत अशकुन हुये पर जगन्माता ने कुछ विचार नहीं किया जब लक्ष्मणजी गंगापार उतरे व निकट स्थान बाल्मीकि ऋषीश्वरके पहुँचकर रुदन करने लगे तब जानकीजीने पूंछा हे लक्ष्मण तुम्हारे भाई अच्छीतरह हैं तुम क्यों रोते हो यह वचन सुनतेही लक्ष्मणजीने अतिव्याकुल होकर सब वृत्तान्त कह दिया व हाथ जोड़कर विनय किया हे माता मैं तुमको यहां वनमें छोड़ने आया हूं यह बात सुनतेही जगन्माता अचेत होकर गिरपड़ीं व अतिविलाप करके लक्ष्मणजीसे कहा बहुत अच्छा जो आज्ञा रघुनाथजीकी होवै सो तुम करो मेरी ओर से रामचन्द्रजी को हाथ जोड़कर कह देना मुझसे जो अपराध हुआ हो क्षमा करें किस वास्ते कि मैं अनेक जन्मकी उनकी दासी हूं फिर लक्ष्मणजी गर्भवती जानकी माता को रोते हुये बाल्मीकि ऋषीश्वरके स्थानपर छोड़कर चले आये व ऋषीश्वरने उनको अपनी कन्याके समान रक्खा सो कुछ दिन बीते उसी जगह सीताजी के लव व कुश दो बालक अतिसुन्दर व तेजस्वी व प्रतापी व बलवान् उत्पन्न हुये जब अश्वमेध यज्ञ करते समय रघुनाथजीने फिर लक्ष्मणको सीताके बुलाने वास्ते भेजा तब जानकीजीने लव व कुश दोनों पुत्र अपने लक्ष्मणजीको सौंप दिये व अयोध्यापुरी में जाकर उसी जगह पृथ्वी में समागईं यह सुनकर रघुनाथजीने बड़ा शोच व विलाप किया और

सीताको त्यागने उपरान्त रामचन्द्रजी ब्रह्मचर्य रहकर यज्ञादिक किया करते थे व ग्यारह हजार वर्षतक उन्होंने अयोध्यापुरीका राज्य भोगकर प्रजाको बड़ा सुख दिया व लक्ष्मण व भरतजी व शत्रुघ्नके चित्रकेतु व सुबाहु नाम आदिक दो दो पुत्र उत्पन्न हुये सो रघुनाथजीने जो अपने भाइयोंका अति आदर करते थे देश उत्तरका भरतजी व पश्चिमका शत्रुघ्न व पूर्वका लक्ष्मणजीको बांटदिया था और सब स्त्री व पुरुष अयोध्यावासी रघुनाथजीका दर्शन पाकर जैसा प्रसन्न रहते थे वैसा सुख इन्द्रपुरीमें किसीको नहीं मिलता उनके राज्यमें पशु व पक्षी आदिक कोई जीव दुःखी नहीं था इसी तरह राज्य अयोध्यापुरीका धर्मपूर्वक किया और अन्तसमय अपने पुत्रको राज्य अयोध्यापुरीका देकर वैकुंठमें पधारे और अयोध्यावासी सब जीवोंको उसी शरीरसे विमानपर बैठाकर अपनेसाथ लेगये उन रामचन्द्रजीका नाम लेनेसे करोड़ों जीव भवसागर पार उतर जाते हैं और विस्तारपूर्वक कथा उनकी रामायणमें लिखी है व रामचन्द्रजी के निकट समुद्रमें सेतु बांधना व रावण आदिक राक्षसोंका वध करना कुछ कठिन नहीं था वह अपनी भृकुटी फेरनेसे एक क्षणमें चौदहों लोककी रचना व नाश करसक्ते थे यह सब लीला व चरित्र उन्होंने संसारीजीवोंको केवल गृहस्थाश्रममार्ग दिखलाने वास्ते किया था देखो जब ऐसे ईश्वरको गृहस्थी करने में स्त्रीके कारण दुःख हुआ तो संसारमें स्त्री व गृहस्थीसे सबको दुःख प्राप्त होगा॥

बारहवां अध्याय।

कुशके वंशकी कथा॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित राजा कुशके वंशमें अतिथि व पुण्डरीक व सुदास आदिक कई पीढ़ी उपरान्त मरु नाम राजा बड़ा प्रतापी हुआ और वह मरु आजतक उत्तर दिशामें कलापग्राममें बैठा हुआ तप करता है कलियुगके अन्त में फिर सूर्यवंशी धर्मात्मा राजा उससे उत्पन्न होकर अपना वंश चलावैंगे और उसी मरुके वंश में बृहद्बल नाम राजा बड़ा प्रतापी हुआ जिसको भीमसेन तुम्हारे दादाने महाभारतमें मारा था इतने

लोग राजा इक्ष्वाकुके कुलमें बड़े प्रतापी राजा होचुके हैं अब जो लोग उनके वंशमें आगे होंगे उनका नाम सुनो बृहद्वलके वंशमें सहदेव व सुमन्त आदिक कई राजा प्रतापी होकर बहुत पीढ़ी तक उनका राज्य संसारमें स्थिर होगा हे राजन् कलियुगमें यहांतक सूर्यवंशियोंका राज्य होकर कुल उनका उत्तम रहैगा ॥

तेरहवां अध्याय ।

राजा निमि को वशिष्ठ ऋषीश्वर का शाप देना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित राजा निमि इक्ष्वाकुके बेटेने एक समय वशिष्ठऋषीश्वर अपने गुरुसे यज्ञ कराने वास्ते कहा तब वशिष्ठजी बोले राजा इन्द्रके यहां से हमें ज्ञानयज्ञ करानेका नेवता आया है पहिले वहां यज्ञ करा आऊं पीछे से तुमको यज्ञ करादूंगा जब ऐसा कहकर वशिष्ठ ऋषीश्वर इन्द्रपुरीमें यज्ञ कराने चलेगये तब राजा निमिने विचारा देखो जीनेका एक क्षण भी भरोसा नहीं रहता कदाचित् वशिष्ठजी के फिरआने तक यह तनु मेरा छूटजावे तो यह इच्छा रहजावैगी ऐसा विचारते ही राजाने गौतम जीको पुरोहित बनाकर यज्ञ करना आरम्भ किया उसी समय वशिष्ठगुरु इन्द्रको यज्ञ कराके राजमन्दिर पर आये जब वशिष्ठऋषीश्वरने दूसरे पुरोहितको यज्ञ कराते देखा तब बड़े क्रोधसे राजा निमिको शाप देकर कहा तू विना हमारे आये यज्ञ कराने लगा इसलिये तनु तेरा छूटजावै यह वचन सुनकर राजा बोला हे वशिष्ठजी तुम यजमानका यज्ञ कराना छोड़कर लोभसे इन्द्रके यहां चलेगये थे इसलिये तुम्हारा शरीर भी स्थिर न रहै सो वशिष्ठ ऋषीश्वर व राजा निमि दोनोंने आपसके शापसे अपना अपना तनु छोड़दिया कुछ काल बीते मित्रावरुण देवताका वीर्य उर्वशी अप्सराका रूप देखकर गिरपड़ा सो वह वीर्य घड़े में रखने से वशिष्ठ व अगस्त्य मुनि उत्पन्न हुये व राजा निमिके जीनेवास्ते गौतम आदिक ऋषीश्वरोंने फिर यज्ञ किया जब देवतोंने प्रसन्न होकर पूछा तुम क्या चाहते हो तब ऋषीश्वरोंने विनय किया आपलोग ऐसी दया करैं जिसमें यजमान हमारा जीउठे सो देवतोंने ऐसा आशीर्वाद दिया कि राजाके शरीरमें प्राण

आगया तब राजा देवता व ऋषीश्वरोंसे हाथ जोड़कर बोला महाराज अब मुझे यह तनु जिसका एक दिन अवश्य नाश होगा न चाहिये ऐसी कृपा करो जिसमें सदा स्थिर रहूं यह सुनकर देवता व ब्राह्मणोंने राजा को आशीर्वाद दिया कि तुम विना अंग होकर सब जीवोंके पलकमें रहो यह वरदान देकर सब देवता अन्तर्धान होगये सो उसी दिनसे जीव राजा निमिका सबके पलक में रहता है फिर उन सब ऋषीश्वरोंने शरीर राजाका दहीके समान मथकर उसमें से एक बालक अति सुन्दर व तेजस्वी जनक नाम उत्पन्न किया जिसने मिथिलापुरी बसाई उसके वंशमें देवरात आदिक बहुत राजा होकर कई पीढ़ी उपरान्त शीरध्वज नाम बड़ा प्रतापी राजा हुआ जिसको यज्ञशाला जोततीसमय हल लगनेसे सीताजी कन्या मिलीं जिनका व्याह रामचन्द्रजीसे हुआ था शीरध्वजके वंशमें धर्मध्वज आदिक बहुतसे प्रतापी राजा हुये नाम उन राजाओंका दूसरा होकर वह सब जनक विदेही कहलाते थे सो उनके वंशमें सब राजा योगीश्वर व ज्ञानी उत्पन्न होकर धर्मपूर्वक राज्य करके अन्तसमय मुक्त हुये यह सब सूर्यवंशी राजाओंकी कथा हमने तुमको सुनाई॥

चौदहवां अध्याय।

चन्द्रवंशी राजाओं की कथा॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् अब हम चन्द्रवंशकुलकी उत्पत्ति कहते हैं सुनो नारायणजीके नाभिकमलसे प्रथम ब्रह्मा उत्पन्न हुये व ब्रह्माके नेत्रसे अत्रिमुनि ने जन्म लिया और उनसे चन्द्रमा होकर ब्राह्मण व तारागण व औषधी व वृक्षादिक के राजा हुये उन्होंने बृहस्पतिजीको गुरु बनाकर राजसूय यज्ञ आरम्भ किया व उस यज्ञमें बृहस्पति की स्त्री तारा नाम जो अति सुन्दरी थी छल करके छीन लिया जब तारा के वास्ते दैत्योंने चन्द्रमा की ओर व देवतोंने बृहस्पति की ओर सहायक होकर आपस में महायुद्ध किया तब ब्रह्माकी आज्ञानुसार चन्द्रमाने बृहस्पतिकी स्त्री दे डाली सो ताराको चन्द्रमाके वीर्यसे गर्भ था जब बृहस्पतिके क्रोध करनेसे ताराने अपना लड़का गर्भ से गिरा दिया तब उस बालकका रूप

देखकर बृहस्पतिने चाहा यह बालक हम लेवें व चन्द्रमाने इच्छा की यह मैं लूं जब उस बालकके लेनेवास्ते फिर बृहस्पति व चन्द्रमासे झगड़ा होने लगा तब ब्रह्माने तारासे पूछा यह बालक किसके वीर्यसे है सो तारा ने चन्द्रमाका वीर्य बतलाया इसलिये ब्रह्माकी आज्ञासे वह पुत्र चन्द्रमाने पाकर उसका नाम बुध रक्खा व बुधके इला नाम स्त्री से पुरूरवा नाम बेटा बड़ा प्रतापी व तेजस्वी व सुन्दर उत्पन्न हुआ सो राजा पुरूरवाके यश व बल व धर्मकी बड़ाई उर्वशी अप्सराने इन्द्रकी सभा में सुनी थी जब एक दिन उर्वशी अप्सरा ऊपर स्थान तप करने मित्रावरुणके जा निकली व उसका रूप देखकर मित्रावरुणका वीर्य गिर पड़ा तब मित्रावरुणने शाप दिया कि तैंने हमारे स्थानपर आनकर मेरे तपमें भंग किया इसलिये तू मर्त्यलोक में जाकर रह जब वह अप्सरा उस शापसे भूलोकमें आई तब वह राजा पुरूरवाके पास रहना विचारकर उसके बाग में गई और एक हिंडोला जड़ाऊ वृक्षमें लटकाकर झूलने लगी व दो गन्धर्वोंको भेड़ा बनाकर अपने साथ रक्खा जब राजा मालीसे उसका समाचार पाकर बाग में आया तब उर्वशी अप्सराका रूप देखकर उसपर मोहित होगया जब राजा ने हठ करके उर्वशी को अपने पास रहनेवास्ते कहा तब वह महासुन्दरी बोली हे राजन् तुम तीन बातकी प्रतिज्ञा करो तो मैं तुम्हारे पास रहूं राजा बोले जो तुम कहो सो करूं उर्वशी बोली एक तो मेरे दोनों भेड़े कभी दुःख न पावें दूसरे नित्य नवीन घृत भोजन को देना तीसरे कभी अपनी इन्द्री नंगे होकर मत दिखलाना जब इन तीनों बातों में विपरीत होगी तब मैं यहां से चली जाऊंगी राजाने तीनों बातें मानकर उसको अपने पास रक्खा व आठोंपहर उसके पास रहकर भोग व विलास करनेलगा सो छः पुत्र राजाके उर्वशी से उत्पन्न हुये व उर्वशी अप्सरा मित्रारुणके शापसे मर्त्यलोकमें राजाके पास रहनेलगी जब मन देवतोंका उर्वशी अप्सरा का नाच देखने को चाहा तब राजा इन्द्रने गन्धर्वोंको आज्ञा दी कि किसी तरह उर्वशी को यहां लाना चाहिये जब गन्धर्वोंने जाकर उर्वशी से कहा तुझे इन्द्रने याद किया है तेरे विना इन्द्रकी सभामें शोभा नहीं होती यह

वचन सुनतेही उर्वशी बड़े हर्ष से चलनेवास्ते तैयार हुई तब गन्धर्वों ने उर्वशीकी आज्ञानुसार अपनी मायासे नया घृत बदलकर पुराना घृत उर्वशी को खिला दिया व रातको गन्धर्वलोग दोनों भेड़े उर्वशी के चुराकर आकाशमें ले उड़े उस समय उर्वशीने राजा पुरूरवाको जो उसके पास सोया था जगाकर कहा मेरे दोनों भेड़े कोई चुराकर लिये जाता है तुम जल्दी छीन लेआओ तुम भी अपने को शूरवीर जानते हो तुमसे स्त्री बली होती हैं यह वचन सुनते ही राजा घबड़ाकर भेड़ों के पीछे नंगा उठ दौड़ा तब उर्वशीने उसको नंगे देखकर कहा हे राजन् मेरा तेरा यही प्रण था जब मैं तुझे नंगा देखूंगी या मेरे दोनों भेड़े दुःख पावेंगे या जिस दिन मुझे नया घृत खानेको नहीं मिलेगा तब मैं तेरे पास न रहूंगी सो आज तीनों बातें विपरीत हुईं इसलिये अब मैं तेरे पास नहीं रहसक्ती ऐसा कहती हुई बिजुलीके समान चमककर वहां से उड़ गई सो गन्धर्वोंने उसे इन्द्रलोक में पहुँचा दिया व राजा पुरूरवा उसके चलेजाने से अति व्याकुल होकर वन व पहाड़में उसे ढूंढ़ने निकला सो पैदल चलने व कांटे चुभनेसे ऐसा दुःखी हुआ कि उसको अपने तनुकी सुधि नहीं रही इसतरह राजा उसके विरह में व्याकुल होकर चारों ओर फिरता था सो एकदिन फिरता हुआ कुरुक्षेत्र में जाकर सेमलवृक्षके नीचे खड़ा हुआ व उसी जगह उर्वशी अप्सरा भी बहुत सखी अपने साथ लिये हुये सरस्वतीकुण्डमें स्नान करती थी और कोई उन्हें नहीं देख सक्ता था पर अप्सरालोग देवदृष्टिसे उसको देखती थीं उस समय तिलोत्तमा नाम सखी ने उर्वशी से पूछा तुम मर्त्यलोकमें आनकर कौन पुरुषके पास रहती थीं उसको मैं भी देखा चाहती हूं उर्वशी ने राजा पुरूरवाको दिखाकर कहा मैं इसी के पास रहती थी तिलोत्तमा राजा को देखकर बोली तुम्हारे विरहमें यह बहुत व्याकुल व मलीन दिखलाई देता है एक बेर तुम अपना रूप इसे दिखला दो तो ज्ञान व कांति इसका अच्छा होजाय यह बात तिलोत्तमासे सुनकर उर्वशी ने अपना रूप राजाके सामने प्रकट किया उसे देखतेही राजा पुरूरवा का चित्त ठिकाने होकर रूप उसका इसतरह बदल गया कि जिसतरह मुर्दके

तनु में प्राण आजावे तब राजा ने उर्वशीके सामने बहुत रोकर कहा हे प्राणप्यारी तू मुझे किसवास्ते छोड़कर चलीगई तेरे विरहसे मेरी यह दशा होकर खाना पीना राजपाट सब छूटगया यह वचन सुनकर उर्वशी बोली हे राजन् तुम पुरुष होकर अपनी इन्द्रियोंके वश ऐसे होगये जो मेरी बिनती करते हो तुम अपनी इन्द्रियोंको वश करो जो मनुष्य अपनी इंद्रियों को आधीन नहीं रखता वह मायारूपी स्त्री के मोहमें फँसकर नष्ट होता है वही दशा तुम्हारी हुई व मैं स्त्री किसी पर मोहित न होकर सिवाय अपने सुखके दूसरे का प्रेम नहीं रखती जबतक कोई पुरुष मेरे पास रहता है तब तक उसकी प्रीति करती हूं कदाचित् मैं हजार वर्षतक एकपुरुषके पास रहकर जब दूसरे पुरुषके निकट जाऊं तब फिर मुझे पहिले पुरुषसे कुछ प्रीति नहीं रहती क्षणभरमें उसे भूलकर उसका प्राण लेने में भी मुझे कुछ दुःख नहीं होता और मैं ज्ञान उपदेश किसीका कुछ न मानकर अपने मनमाना काम करती हूं इसीतरह सब स्त्रियोंका स्वभाव समझना चाहिये राजा उर्वशी पर ऐसा मोहित था कि इतना समझाने पर भी उसे कुछ ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ जब राजाने उर्वशी से भोग करनेकी इच्छा की तब वह दया करके बोली हे राजन् जब वर्ष दिन उपरांत दूसरे वर्षका पहिला दिन लगेगा तब तेरे पास आनकर एक रात रहूंगी ऐसा कहकर उर्वशी वहां से लोप होगई जब उर्वशीके मिलने व एक वर्ष की अवधि करने से चित्त राजाका सावधान होगया तब वह राजमन्दिर पर आया और शीश-महल अपना सजवाकर अवधि का दिन गिनने लगा जब वर्षवें दिन वह अप्सरा अपनेवचन प्रमाणआई और एकरातराजाकेपास रहकर प्रातसमय इन्द्रलोकको चली तब पुरूरवा उसका पांव पकड़कर रोने लगा उस समय उर्वशी बोली हे राजन् मैं यहां रह नहीं सक्ती तुझे मेरी चाहना अन्तःकरण से हो तो मैं एक मन्त्र बतला देती हूं तुम वह मंत्र जपकर गन्धर्वोंकी तपस्या करो जब वे प्रसन्न होकर तुझे यज्ञ करनेवास्ते आज्ञा देंगे और तू उस यज्ञ करनेसे गन्धर्वलोकमें आनकर फिर मुझे पावेगा तब मैं तेरे साथ आनन्दपूर्वक रहूंगी यह कहके उर्वशी दो ऋचा वेदकी राजाको बतलाकर

इन्द्रपुरीको चली गईं व राजा वही मंत्र जपकर गन्धर्वोंका तप करने लगा जब वह ऋचा जपनेसे गन्धर्वोंने प्रसन्न होकर राजा को दर्शन दिये व एक बटलोही अग्निसमान उसे देकर यज्ञ करनेका उपाय बतलाके वहांसे अन्तर्धान होगये तब राजाने उनकी आज्ञानुसार वह बटलोही वनमें ले-जाकर गाड़दी जब उस बटलोही मेंसे एक वृक्ष पीपल व शमीका मिलकर उगा व राजाने वे दोनों लकड़ी रगड़के उसमेंसे आग निकालकर यज्ञ किया तब राजाको इतना बल हुआ कि वह गन्धर्वलोक में जा बसा व गन्धर्वों के देने से फिर उर्वशी को पाकर उसके साथ आनन्दपूर्वक रहने लगा॥

पन्द्रहवां अध्याय।

पुरूरवा के सन्तानकी कथा॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित राजा पुरूरवाके उर्वशीके पेटसे छः बालक जो राजगद्दी पर उत्पन्न हुये थे उनमें बड़े पुत्रका नाम आयु था उसके वंश में जह्नुनाम ऐसे महात्मा हुये जिन्होंने गंगाजीको अपनी अंजली में उठाकर पी लिया जब देवतोंने अति बिनती की तब अपनी जांघ चीर कर बाहर निकाल दिया उसी दिन से गंगाजीका नाम जाह्नवी प्रकट हुआ व राजा जह्नुके वंशमें गाधि नाम राजा बड़े प्रतापी व महात्मा होकर उनके यहां सत्यवती नाम कन्या महासुन्दरी व बुद्धिमती उत्पन्न हुई गाधि ऋषिसे ऋचीक नाम ऋषीश्वर ने जाकर कहा तुम अपनी कन्या हमको विवाह दो गाधि बोला जो कोई हजार घोड़े श्यामकर्ण मुझे ला दे उसे मैं अपनी कन्या दूंगा यह वचन सुनतेही ऋचीक ऋषि बड़ा परि-श्रम करके हजार घोड़े श्यामकर्ण वरुणदेवताके यहां से लाया और वह सब घोड़े गाधिको देकर सत्यवती से अपना विवाह किया तब गाधिकी स्त्रीने ऋचीक अपने दामाद से कहा कोई ऐसा उपाय करो जिससे मेरे पुत्र हो और सत्यवतीने भी अपने पतिसे सन्तान होने की इच्छा की सो ऋचीक ऋषीश्वरने अपनी सासु व स्त्रीके सन्तान होने वास्ते यज्ञ करके जो साकल्य यज्ञ करने से बचा था उसमें एक पिण्डी अपनी स्त्री व दूसरी सासु को बालक होनेकी इच्छासे बनाकर उन दोनोंको खानेवास्ते

दिया और आप ऋषीश्वर महाराज स्नान व संध्या करने गंगा किनारे चले गये तब उनकी सासुने अपनी पिण्डी जिसे संस्कृतमें चरु कहते हैं बदल आनकर बेटीको खिला दी व उसका चरु लेकर आप खालिया जब ऋषीश्वरने अपने घर आनकर अपने तपोबलसे यह हाल जाना तब सत्यवती अपनी स्त्रीसे कहा तुझसे बड़ी चूक हुई जो अपना चरु माताको देकर उसका चरु आप खा लिया इस कारण तेरा पुत्र महाबली व क्रोधी होकर तेरा भाई बड़ा धर्मात्मा व ब्रह्मज्ञानी उत्पन्न होगा यह वचन सुनतेही वह विनयपूर्वक बोली महाराज आप ऐसा कीजिये जिसमें मेरा पुत्र क्रोधी न हो तब ऋषीश्वरने दूसरा मंत्र पढ़कर अपनी स्त्रीसे कहा तू धैर्य रख तुझसे ज्ञानी व धर्मात्मा बेटा होकर पोता तेरा महाबली व बड़ा क्रोधी होगा सो सत्यवती से जमदग्नि ऋषीश्वर बड़े महात्मा होकर उनके रेणुका नाम स्त्रीसे चार पुत्र उत्पन्न हुये व उन चारों में सबसे छोटे परशुरामजी ईश्वरका अवतार थे जिन्होंने पापी व अधर्मी क्षत्रियों को इक्कीस बेर मारकर उनके कुलका नाश किया इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा महाराज क्षत्रियों ने कौन ऐसा अपराध किया था जिस कारण परशुराम जीने उन्हें वध किया शुकदेवजी बोले हे राजन् जमदग्नि ऋषीश्वर परशुराम के पिता से रेणुका ब्याही गई थी व सत्यानाम रेणुकाकी बहिन से सहस्राबाहु अर्जुनका विवाह हुआ था व सहस्रार्जुन सातों द्वीपका ऐसा प्रतापी राजा था जिसके यहां आठों सिद्धियाँ बनीरहती थीं और वह कर्म व धर्म अपना ऋषीश्वरों के समान रखकर पवनके समान क्षण भरमें सब जगह जानेकी सामर्थ्य रखता था सो वह अपनी हजारों स्त्री साथ लेकर नर्मदा नदीमें जलविहार करने गया व उसने अपने हजार भुजा से जो तप करके पाई थीं नर्मदा नदीका पानी बहनेसे रोक दिया सो वह जल उलटा बहकर जहां पर रावण बैठा था वहां इकट्ठा हुआ जब रावण वह जल देखकर अभिमानपूर्वक सहस्रार्जुनसे लड़ने आया तब सहस्राबाहु ने अपने बलसे रावण को पकड़ लिया व उसे अपने मकानपर लेजाकर कभी कभी उसके दशों मस्तकों पर दीपक जलाके सब स्त्री व लड़कोंको

दिखलाया करता था जब रावणने बहुत बिनती करके उसे अपना मालिक जाना तब सहस्राबाहु ने उसको छोड़ दिया इस तरहकी सामर्थ्य उसमें थी सो एक दिन रेणुका सत्या अपनी बहिन के यहां ब्याहादिकमें नेवता करने गई जब रेणुकाने अपनी बहिनसे कहा एक बेर तुमभी हमारे यहां आवो तब सत्या अभिमानसे बोली तुम कंगाल ऋषीश्वर की स्त्री होकर हमारी सेनाको कहांसे खिलावोगी यह बात सुन रेणुका लज्जा से कुछ नहीं बोली जब स्थानपर आई तब उसने जमदग्नि अपने स्वामीसे कहा आप एक बेर मेरी बहिन को सेनासमेत बुलाकर मेहमानी करें तो मेरी लज्जा छूटै सत्याने मुझे ऐसा ताना मारा था जमदग्नि बोले परमेश्वरकी दयासे मेहमानी करना कुछ कठिन नहीं है नारायणजी तेरी इच्छा पूर्ण करेंगे सो एक दिन राजा सहस्राबाहु अहेर खेलता हुआ उसी वनमें जहां पर कुटी जमदग्नि ऋषीश्वरकी थी सेनासमेत आन पहुँचा उन दिनों कामधेनु गाय ऋषीश्वर के स्थानपर थी जब जमदग्निने अपनी स्त्रीके कहनेसे सहस्रार्जुन व सत्रह अक्षौहिणी दलको जो उसके साथमें थीं नेवता देकर कामधेनुके प्रतापसे इच्छापूर्वक भोजन खिलाया तब सहस्राबाहु ने मनमें विचारा कि जमदग्निने जिस कामधेनुके प्रतापसे लाखों मनुष्योंको ऐसा इच्छापदार्थ भोजन कराया है वह गाय ऋषीश्वर से लेना चाहिये ऐसा विचारकर राजाने जमदग्निसे कहा ऐसी गौ ऋषीश्वरको रखना न चाहिये यह गाय राजाओंके घर रहने योग्य है इसलिये तुम कामधेनु गौ हमको दो जमदग्नि ने उत्तर दिया हे राजन् यह गौ मेरी न होकर मैं इसको देवलोकसे मँगनी मांग लाया हूं फिर वहां पहुँचा दूंगा इस कारण तुमको नहीं देसक्ता यह वचन सुनतेही सहस्रार्जुनने क्रोधित होकर जब अधर्मकी राह वह गौ छीन ली व अपने देशको ले चला तब कामधेनु भागकर जमदग्निके पास चली आई व रुदन करके बोली हे ऋषीश्वर मेरा क्या अपराध है जो तुमने मुझे राजाको देदिया जमदग्निने आंसू भरकर कहा हे कामधेनु तुझे राजा बरजोरी लिये जाता है मैं क्या करूं यह बात सुनकर कामधेनुने दश हजार शूर वीर अपने अंगसे उत्पन्न किये जब उन वीरोंने

राजाका सामना किया तब सहस्रार्जुन अपने बलसे उन्हें लड़ाईमें जीतकर कामधेनुको छीन लेगया यह दशा देखतेही जमदग्निने परशुराम अपने बेटे महाबलीको जो उस समय कुटीपर नहीं था बुलाकर कहा हे बेटा सहस्राबाहु कामधेनु गौ हमारी कुटीमेंसे बरजोरी छीन लेगया सो लाना चाहिये यह वचन सुनतेही परशुरामजी महाक्रोधित होकर अकेले माहिष्मती पुरीमें चले गये व अपने भुजाकी सामर्थ्य व फरसेसे राजा सहस्राबाहुको उसके नौसै बेटे व सत्रह अक्षौहिणी सेनासमेत मारकर कामधेनु गौ अपने पिताके पास लेआये तब जमदग्नि ऋषीश्वरने उदास होकर परशुरामजीसे कहा हे बेटा तुमने चक्रवर्ती राजाको मारा है इसलिये शास्त्रानुसार तुमको दोष लगा सो तुम एक वर्षतक पृथ्वी परिक्रमा व तीर्थयात्रा करआवो तब तुम्हारा अपराध छूटैगा हम ब्राह्मणोंको क्षमा करना चाहिये क्षमासे ईश्वर प्रसन्न होते हैं परशुरामजी यह वचन सुनतेही पृथ्वीकी परिक्रमा व तीर्थयात्रा करने चले गये ॥

सोलहवां अध्याय ।

परशुरामजी का अपनी माता व भाइयों का मारना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित परशुरामजी ने अपने पिताकी आज्ञानुसार वर्ष दिन पृथ्वीपरिक्रमा व तीर्थयात्रा करने उपरांत आनकर जमदग्निको दण्डवत किया फिर एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि रेणुका माता परशुरामजीकी गंगा किनारे जल भरने गई वहांपर चित्ररथ गन्धर्व को जो अपनी स्त्रियोंके साथ जलक्रीड़ा करता था देखकर मनमें कहा यह अति सुन्दर है जब रेणुकाको उसका जलविहार देखनेमें विलंब हुआ तब वह समझी कि मेरे पति अग्निहोत्र पर बैठे हैं जल पहुँचानेकी राह देखते होंगे जल्दी जाना चाहिये जब वह ऐसा विचारकर जल समेत कुटीपर पहुँची व ऋषिने विलम्ब होनेका कारण अपने योगबलसे जान लिया कि इसको परपुरुषकी सुन्दरताई देखनेसे पानी लानेमें विलम्ब हुआ तब जमदग्निने क्रोधित होकर अपने तीनों बड़े बेटों से कहा तुम लोग इसे मार डालो जब उन्होंने मारना माताका अधर्म विचारकर रेणुका

को नहीं मारा तब ऋषीश्वरने परशुरामजी छोटे पुत्रसे कहा कि तू अपनी माताको भाइयों समेत मार डाल यह सुनकर परशुरामजीने विचारा कि मारना माता व भाइयों का बड़ा पाप है पर मैं नहीं मारता तो पिता क्रोधित होकर मुझे शाप देवेंगे व मार डालने में मेरे पिता अपने योग-बलसे फिर इनको जिला सक्ते हैं जब ऐसा विचारकर परशुरामजीने रेणुका अपनी माताको तीनों भाइयों समेत मार डाला तब ऋषीश्वर प्रसन्न होकर बोले हे परशुराम तैंने मेरी आज्ञा मानकर अपनी माता व भाइयोंको वध किया इससे हम अति प्रसन्न हुये जो वरदान मांगे सो दूं यह वचन सुनते ही परशुराम अपने पितासे हाथ जोड़कर बोले महाराज मैं यही वरदान मांगता हूं जिससे मेरी माता व भाई फिर जी उठें व उनको यह बात न मालूम हो कि हमें परशुरामने मारा था जमदग्निजी बोले बहुत अच्छा परमेश्वरकी दयासे ऐसा ही हो यह वचन ऋषीश्वरके मुखसे निकलतेही वह सब इसतरह जीकर उठ खड़े हुये जिसतरह कोई सोया हुआ जागे व नारायणजीकी मायासे उनको यह नहीं मालूम हुआ कि हमको परशुराम जीने मारा था इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् परमेश्वरके तप व जपमें ऐसी सामर्थ्य है कि हरिभक्त लोग मुर्देको जिला सक्ते हैं फिर परशुरामजी इस विचारसे कि मैंने अपने माता व भाइयोंको मारा है सो पृथ्वीपरिक्रमा करके यह पाप छुड़ाना चाहिये इसलिये तीनों भाइयों समेत तीर्थयात्रा करने चले गये कुछ दिन बीते राजा सहस्रबाहुके सौ बेटोंने जो परशुरामसे भागकर बच गयेथे विचारा कि इन दिनों परशुराम जी भाइयों समेत कुटीपर नहीं हैं किसीतरह आन अपने बापका बदला उनसे लेना चाहिये सो एक दिन राजकुमारों ने आनकर हरिइच्छासे जमदग्नि ऋषीश्वरको अग्निहोत्र करते समय मार डाला व मस्तक ऋषीश्वरका काटकर लेगये तब रेणुका अतिविलाप करने लगी जब उसने इक्कीस वेर अपनी छाती पीटकर परशुरामजीको पुकारा तब उन्होंने माताका चिल्लाना सुनतेही कुटीपर आनकर पिताको मरे हुये देखा और जब रेणुकासे जमदग्निके मारे जानेका समाचार सुना तब परशुरामजीने

बड़ा क्रोध करके सौगन्द खाकर यह प्रण किया कि मैं इस अपराधके बदले पृथ्वी पर किसी क्षत्रियको जीता न छोडूंगा यह कह कर परशुरामजी माहिष्मतीपुरीमें चले गये व सहस्राबाहुके बेटोंको जिन्होंने जमदग्नि का वध किया था उनको मारकर अपने बापका शिर वहां से उठा लाये व पिताके धड़से मिलाकर क्रियाकर्म उनका किया व यही प्रतिज्ञा करने से परशुरामजीने इक्कीस बेर चारों ओर घूमकर क्षत्रियोंको मार डाला व कुरुक्षेत्रमें स्नान करके सब पृथ्वीको इक्कीस बेर ब्राह्मणों को दान कर दिया जब अगले मन्वन्तरमें राजा बलि इंद्र होगा तब परशुरामजी सब ऋषीश्वरोंमें रहेंगे इन दिनों मन्दराचल पर्वतपर बैठे हुये परमेश्वरका तप करते हैं जिनका गुण व यश देवता व गन्धर्व लोग सदा स्वर्गमें गाते हैं और उनके अंतको नहीं पहुँचते हे राजन् गाधि ऋषिके पुत्र विश्वामित्र ऋषीश्वर ऐसे महात्मा हुये जिन्होंने अपनेको राजऋषिसे ब्रह्मऋषीश्वर कहलाया और उनके सौ पुत्र हुये उनमें छोटे पचास बेटोंका नाम मधुछंदा था जब विश्वामित्रने शुनश्शेफ अपने भानजेको जो राजा हरिश्चन्द्र के बलिदान होनेसे बचा था अपना बेटा बनाया व उसका नाम देवरात रखकर अपने बड़े पचासों पुत्रोंसे कहा तुम लोग इसे अपना बड़ा भाई करके मानो जब उन्होंने यह बात नहीं मानी तब विश्वामित्रने उनको ऐसा शाप दिया कि तुम लोग म्लेच्छ होजावो तभी से संसारमें म्लेच्छ हुये हैं व फिर विश्वामित्रने मधुछन्दा आदिक अपने छोटे पचासों पुत्रोंसे वही बात कही जब उन्होंने अपने पिता की आज्ञानुसार देवरातको बड़ा भाई करके जाना तब विश्वामित्रने प्रसन्न होकर उनको ऐसा वरदान दिया कि तुम्हारा वंश अधिक हो इसलिये विश्वामित्रके वंशमें बहुत संतान होकर सब कौशिकगोत्री कहलाते हैं॥

सत्रहवां अध्याय।

राजा पुरूरवा के वंशकी कथा॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित पुरूरवाके वंश में राजा नहुष ऐसा प्रतापी हुआ जिसने देवलोकका राज्य किया उसकी कथा पहिले होचुकी

है अब हम उसकी संतानका हाल कहते हैं सुनो राजा ययाति उसका पुत्र अति तेजस्वी व प्रतापी होकर एक बेर इन्द्रपुरी का राज्य किया था उसकी कथा इसतरह पर है कि एक दिन राजा इन्द्र गौतम ऋषीश्वरकी स्त्री अहल्या को जो अति सुन्दरी पंचकन्याओंमें थी देखकर मोहित होगया व उससे भोग करने की इच्छा किया पर गौतमऋषीश्वर महात्माके डरसे वहां नहीं जा सक्ता था जब इन्द्रसे विना प्रसंग किये नहीं रहा गया तब एक दिन रातको काकरूप बनकर गौतम ऋषीश्वरके आंगनमें वृक्षपर जा बैठा व बहुत रात रहे बोलने लगा जब ऋषीश्वरने उसकी बोली सुनकर जाना अब थोड़ी रात है तब वह स्नान व पूजा करनेवास्ते उठकर मकानसे बाहर आये उस समय इन्द्रने घर सूना पाकर अपना स्वरूप ऋषिके समान बना लिया व अहल्याके पास जाकर उससे भोग किया जब प्रसंग करने उपरांत अहल्याने जाना कि यह मेरा पति नहीं है किसी दूसरेने कपटरूप बनाकर मेरा पातिव्रत धर्म बिगाड़ दिया तब उसने कहा हे अधर्मी चाण्डाल तू कौन है यहां से चला जा जब यह वचन सुनकर इन्द्र वहांसे बाहर निकलने लगा व गौतम ऋषीश्वरसे जो अधिक रात रहना समझकर फिरे आते थे डेवढ़ीमें भेंट हुई तब ऋषीश्वर इन्द्रको देखतेही अपने योगबलसे उसके कुकर्म करने का हाल जानकर बोले हे इन्द्र बड़े लज्जाकी बात है जो तैंने अनेक अप्सरा व इन्द्राणी महासुन्दरी रहने पर भी ऐसा अधर्म किया इसलिये हम तुझे शाप देते हैं कि तू एक भग वास्ते काकरूप हुआ था सो तेरे अंगमें हजार भग प्रकट होजावें यह वचन ऋषीश्वर के मुखसे निकलतेही इन्द्रके शरीरमें हजार भग होगई जब मारे लज्जाके राजसिंहासनपर न जाकर कमलकी डारमें छिप रहा तब ऋषीश्वरों ने इन्द्रासन सूना देखकर राजा नहुषको इन्द्रासन पर बैठाला जब इन्द्राणी का रूप देखकर राजा नहुष का मन चलायमान हुआ तब इन्द्राणी पतिव्रता ने बृहस्पतिजीकी आज्ञानुसार नहुषसे कहा तुमने आजतक जो शुभकर्म किया हो उसे बतलाओ जब राजाने अपने मुखसे वह वर्णन किया तब पुण्य उसका क्षीण होकर वह इन्द्रलोकसे गिर पड़ा व बृहस्पति

जीने जाकर इन्द्रको कमलनालसे बाहर निकाला व उससे यज्ञ कराके ऐसा आशीर्वाद दिया कि वह हजार भग आंखके समान होगई तब इन्द्र अपनी गद्दीपर आनकर राज्य करने लगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् अब हम नहुषके दूसरे वंशकी कथा कहते हैं सुनो उसके वंशमें धन्वन्तरि नाम वैद्य यज्ञका भाग लेनेवाले ऐसे महात्मा हुये जिनका नाम लेनेसे मनुष्यका रोग व दुःख छूटजावे उनके वंश में राजा कुवलयाश्व बड़ा प्रतापी होकर उसके मन्दालसा नाम स्त्रीसे अलर्क आदिक पुत्र उत्पन्न हुये वह राजा अलर्क छासठ हजार वर्ष राज्य करके तरुण बना रहा व रानी मन्दालसा अपने बेटोंको बाल्यावस्थामें ज्ञान सिखलाया करती थी उसने मरती समय दो श्लोक अपने पुत्र राजा अलर्क को देकर कहा तू इसे यंत्र बनाकर अपने पास रख जब तेरे ऊपर कुछ विपत्ति पड़े तब इस श्लोकको पढ़कर उसीके अनुसार करना सो राजा अलर्कने वह दोनों श्लोक यंत्र बनाकर भुजा में बांध लिये व संसारी सुख में लपटकर राज्य करने लगा जब दूसरे राजोंने उसे सुख व विलासमें लिपटे देखा तब जाकर अपनी सेनासे उसका नगर घेर लिया जब राजा अलर्कने देखा कि अब मेरा प्राण व राज्य बचना कठिन है तब अपने ऊपर विपत्ति जानकर वह दोनों श्लोक यंत्रसे निकालके पढ़ा उनमें लिखा था कि सिवाय सत्संग और किसीके साथ प्रीति नहीं करना संसारी लोगों से संगति व प्रेम करनेमें पीछे दुःख होता है जगत्का व्यवहार स्वप्नवत् समझकर उसमें मन लगाना न चाहिये संसार में चाहना रखना यही दुःखकी फांसी है जब वह श्लोक पढ़ने से राजा अलर्कको ज्ञान उत्पन्न हुआ तब वह विरक्त होकर वनकी ओर हरिभजन करने चला उस समय दूसरे राजोंने जो नगर उसका घेरे थे यह हाल सुनतेही राजा अलर्कसे जाकर पूंछा तुम विना युद्ध किये हार मानकर वनमें क्यों जातेहो अलर्कने उत्तर दिया राज्य करने उपरान्त नरक भोगना पड़ता है इसलिये मैं राज्य नहीं करूंगा तुम मेरी राजधानी लेकर आनन्दपूर्वक सुख करो मुझे लड़नेकी इच्छा नहीं है जब यह वचन सुनकर दूसरे राजोंको भी नरक भोगनेके डरसे

ज्ञान उत्पन्न हुआ तव उन्होंने राजा अलर्क का देश लेना उचित नहीं जाना और अपनी अपनी राजगद्दीपर चले गये व राजा अलर्क फिर धर्मपूर्वक राज्य करने लगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् देखो हरिभजनका ऐसा प्रताप है जैसे राजा अलर्कने हरिभजन करनेकी इच्छा की वैसे नारायणजीकी दयासे उनका दुःख छूट गया व जो लोग परमेश्वरका तप व स्मरण करते हैं उन्हें न मालूम कैसा सुख मिलेगा उसी अलर्कके देशमें राजा रम्भस ऐसा महात्मा व ज्ञानी हुआ जिसके कुलमें सब ब्राह्मण होगये व उसके वंशमें राजा रज बड़ा प्रतापी व धर्मात्मा होकर उसके यहां पांचसौ पुत्र अति बलवान् उत्पन्न हुये एक बेर इन्द्रादिक देवतों का राज्य दैत्योंने छीन लिया था जब इन्द्रने बृहस्पतिकी आज्ञानुसार राजा रजसे सहायता चाही तब राजा रजने अपने पांचसौ पुत्र साथ लेकर इन्द्र की सहायता की जब दैत्योंको जीतकर इन्द्रासन देवतोंको देने लगे तब इन्द्रने कहा देवलोक का राज्य आप कीजिये जब राजा रज इन्द्रादिक देवतों के कहनेसे बहुत दिन तक देवलोक का राज्य करके मर गया तब उसके बेटे इन्द्रलोकका राज्य बरजोरी करके यज्ञमें इन्द्रका भाग आप लेने लगे व इन्द्रादिक के मांगने पर भी देवलोकका राज्य नहीं छोड़ा तब देवतों के विनय करने पर बृहस्पतिजीने अपने तपोबलसे राजा रजके बेटों को मार डाला जब उनमें कोई जीता नहीं बचा तब इन्द्रादिक देवता बृहस्पति गुरु की कृपासे इन्द्रपुरी का राज्य पाकर अपना भाग आनन्दपूर्वक लेने लगे॥

अठारहवां अध्याय।

राजा नहुषके वंशकी कथा॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित राजा नहुषके ययाति नाम आदिक छः बेटे बड़े प्रतापी हुये जब राजा नहुष ऋषीश्वरोंके शाप देनेसे अजगर सर्प होकर कुरुक्षेत्रमें गिर पड़ा तब उसके राजसिंहासन पर जो मर्त्यलोकमें था ययाति नाम उसका पुत्र बैठकर बड़ा धर्मात्मा व चक्रवर्ती राजा हुआ व उसने दूसरे देशका राज्य सम भाग करके अपने भाइयों को बांट दिया व विवाह अपना देवयानी शुक्राचार्यकी कन्यासे करके वृषपर्वा दैत्यकी

शर्मिष्ठा नाम बेटीके साथ भोग किया इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूछा हे मुनिनाथ राजा ययातिने क्षत्रिय होकर शुक्राचार्य ब्राह्मण की कन्या किस तरह ब्याही थी यह सन्देह मेरा छुड़ा दीजिये यह बात सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजन् एक दिन शर्मिष्ठा बेटी वृषपर्वा दानवकी जो दैत्यों का राजा था शुक्र गुरुकी कन्या देवयानी को साथ लेकर हजार दासी समेत अपने बाग में तालाब पर स्नान करने गई जब शर्मिष्ठा व देवयानी व दासी आदिक अपना अपना वस्त्र तालाब किनारे उतारकर जलक्रीड़ा व स्नान करने लगीं उसी समय महादेव व नारदजी घूमते हुये वहां आगये उनको देखतेही सब लड़कियोंने लज्जित होकर अपने अपने वस्त्र पहिन लिये व शर्मिष्ठाने जल्दी में भूलकर जब देवयानीका कपड़ा पहिन लिया तब देवयानी क्रोधित होकर बोली हे शर्मिष्ठा मेरा वस्त्र पहिरने योग्य तू नहीं है किस वास्ते कि तेरा पिता मेरे बापका चेला है व मैं ब्राह्मणकी कन्या हूं मेरा वस्त्र तैंने कैसे पहिना जैसे यज्ञकी आहुति कुत्ता उठालेवै या शूद्र होकर वेद पढ़ै जब देवयानीने शर्मिष्ठाको ऐसा दुर्वचन कहा तब उसने क्रोध करके उत्तर दिया तू भिखारी की कन्या होकर मुझे ऐसी बात कहती है तेरे पिताने जन्म भर मेरे बापसे भीख मांगकर तुझे पालन किया सो तू मेरी बराबरी करती है ऐसा वचन कहकर शर्मिष्ठाने क्रोधवश देवयानी को जो नंगी खड़ी थी कुयें में ढकेल दिया और आप दासियों समेत घर चली गई उसी समय हरिइच्छा से राजा ययाति अहेर खेलते हुये वहां आन पहुँचे व अपने सेवक को पानी लेआने वास्ते उसी कुयें पर भेजा जब उसने एक स्त्री अति सुन्दरी कुयें में गिरी देखकर राजा से यह समाचार कहा तब ययातिने आप जाकर देखा तो एक कन्या रूपवती उसे देख पड़ी जब उसने अपना वृत्तान्त कहकर राजासे निकालने वास्ते कहा तब ययातिने अपना डुपट्टा उसके पहिरने वास्ते फेंक दिया व उसका हाथ पकड़कर कुयेंसे बाहर निकाल लिया उस समय देवयानी बोली हे राजन् हरिइच्छा से ऐसा संयोग हुआ जो तुमने मेरा हाथ पकड़ा इसलिये मेरा विवाह तुम्हारे साथ होगा कच नाम बृहस्पतिके पुत्रने मुझे

ऐसा शाप दिया था कि तेरा विवाह ब्राह्मणसे न होगा इसलिये मेरा विवाह ब्राह्मण से नहीं होसक्ता जब राजाने यह बात सुनकर अपने को भी उसपर मोहित देखा तब परमेश्वरकी इच्छा इसी तरह जानकर विवाह करना देवयानी से अंगीकार करके राजमन्दिरको चला गया व देवयानी वहांसे रोती हुई अपने घर आनकर शुक्राचार्य से कहा हे पिता शर्मिष्ठा ने तुमको भीख मांगनेवाला अपने बापका कहकर मेरा प्राण मारने वास्ते कुयें में ढकेल दिया था सो राजा ययातिने आनकर मुझे कुयें से बाहर निकाला तब मेरा प्राण बचा यह बात सुनते ही शुक्रजीने क्रोधित होकर विचारा पुरोहिती करनेसे खेतमें का गिरा हुआ अन्न चुनकर खाना अच्छा होता है जिसमें कोई अपमान न करै सो शर्मिष्ठाने राज्य व धनके मदसे मेरी बेटीको कुयेंमें गिरा दिया इसलिये अब वृषपर्वाके राज्यमें रहना न चाहिये शुक्रजीने ऐसा विचारकर देवयानी कन्या समेत उसका राज्य छोड़कर निकल चले वृषपर्वाने यह सुना तब उसने घबड़ाकर कहा देखो उन्हींके आशीर्वादसे यह सब राज्य व सुख मुझे मिला है नहीं तो देवता लोग अब तक मुझको मार निकाल देते उनके चले जाने से मेरा राज्य व धन जाता रहेगा यह बात समझते ही वृषपर्वा दौड़ा हुआ शुक्र गुरुके शरण में गया व हाथ जोड़कर विनय किया महाराज मेरा अपराध क्षमा करके फिर अपने मकान पर चलिये यह दीन वचन राजाका सुनकर शुक्राचार्य बोले हे राजन् तुमने मेरा कुछ अपराध नहीं किया पर तुम्हारी कन्याने देवयानी का अनादर किया है जिस बात में वह प्रसन्न हो वही काम करो तब फिर तुम्हारे देशमें चलकर रहूं जब वृषपर्वाने देवयानीसे बहुत बिनती करके प्रसन्न होने वास्ते कहा तब वह सब हाल शर्मिष्ठाका कहकर बोली हे राजा जिसके साथ मेरी शादी शुक्राचार्य करैं वहां शर्मिष्ठा तेरी पुत्री हजार दासी अपने साथ लेकर मेरी सेवामें रहै तो मैं प्रसन्न होती हूं यह सुनकर राजाने विचारा कि शुक्र गुरु सदा हमारे कुलकी रक्षा करते आये हैं विना इनके प्रसन्न हुये मेरा कल्याण न होगा ऐसा समझकर राजाने शर्मिष्ठासे सब हाल कहके पूछा हे पुत्री तेरा मोह करनेमें शुक्रा-

चार्यके क्रोधसे हमारे वंश व राज्यका नाश हो जायगा और तेरे दासी होनेसे हमारा कल्याण है इसमें क्या करना चाहिये यह वचन सुनकर शर्मिष्ठा बोली हे पिता मेरा शरीर तुमसे उत्पन्न व पालन हुआ है आप जिसे चाहैंउसे मुझको दे डालैं यह बात सुनकर वृषपर्वा बोला हे देवयानी तुम्हारा कहना मुझे अंगीकार है जब देवयानी यह बात सुनकर प्रसन्न हुई तब शुक्राचार्य कन्या समेत फिर अपने स्थान पर आनकर रहने लगे इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूछा हे मुनिनाथ कच बृहस्पतिके बेटे ने देवयानीको क्यों शाप दिया था इसकी कथा सुनाइये शुकदेवजी बोले हे राजन् एक बेर युद्धमें बहुत दैत्य देवतों के हाथ से मारे गये तब उन्हें शुक्राचार्यने संजीविनी विद्या से जिला दिया जब लड़ाई होने उपरान्त देवतोंने समाचार बृहस्पतिजी से सुना तब इन्द्रादिक देवतों ने बृहस्पति गुरु से कहा महाराज आपभी कच अपने बेटेको शुक्रजीके पास भेज दीजिये कि वह उनका चेला होकर संजीविनी विद्या पढ़ आवै जब बृहस्पतिने देवतों के कहने से कचको संजीविनी विद्या पढ़ने वास्ते भेज दिया तब कचने शुक्राचार्यके शरणमें जाकर दण्डवत् करके विनय किया महाराज मैं संजीविनी विद्या पढ़ने आयाहूं जब शुक्राचार्य उसे अपनेघर रखकर संजीविनी विद्या सिखलाने लगे तब देवयानी व कचसे अति प्रीति होगई जब दैत्योंने यह समाचार पाया कि बृहस्पतिका पुत्र हमारे गुरुसे संजीविनी विद्या पढ़ता है तब उन्होंने आपसमें सम्मत किया कि वह यहां विद्या पढ़कर देवता हमारे शत्रुओंको जिला दिया करैगा तो अच्छा नहीं होगा इसलिये इसको मार डालना चाहिये सो एक दिन कच शुक्र गुरु की गौ चराने वास्ते वनमें गया तब दैत्योंने उसके अंगका टुकड़ा टुकड़ा करके एक गड़हेमें फेंक दिया जब सन्ध्या समय वह गौ चराके नहीं फिरा तब देवयानी बोली हे पिता कच अब तक गौ चराके नहीं आया शुक्राचार्यने योगबलसे विचारकर कहा हे पुत्री उसे दैत्योंने मार डाला वह किस तरह आवे जब यह सुनकर देवयानी शोचित होगई तब शुक्रजीने कचको संजीविनी विद्यासे जिला दिया यह समाचार पाकर दैत्योंने आपसमें

कहा कदाचित् शुक्र गुरु इसी तरह उसको जिला दिया करेंगे तो हमारे मारनेसे क्या लाभ होगा ऐसा उपाय किया चाहिये कि जिसमें वह जिलाने न सकैं यह विचारकर दैत्योंने गौ चराती समय फिर कच को मार डाला व उसके अंगका मदिरा चुवाकर शुक्र गुरुको पिला दिया जब सन्ध्या समय कच फिर नहीं आया तब देवयानी के विनय करनेसे शुक्राचार्यने ध्यान धरकर तीनों लोकमें देखा पर उसका पता नहीं पाया जब अपने आत्मामें ध्यान लगाया तव उसको पेटमें देखकर जाना कि दैत्योंने उसका मदिरा चुवाकर मुझे पिला दिया है यह दशा देखकर शुक्राचार्यने कहा हे पुत्री कचके जिलाने से मैं मर जाऊंगा देवयानी हाथ जोड़कर बोली महाराज ऐसा उपाय करो जिसमें आप और वह दोनों जीते रहैं तब शुक्रजीने मंत्र पढ़कर अपने पेटमें कचको जिला दिया व उसी जगह संजीविनी विद्या उसको पढ़ाकर कहा हे कच जब तुझे अपने पेटसे निकालकर मैं मरजाऊं तब तू इसी विद्यासे मुझको जिला दीजियो कच बोला बहुत अच्छा जब शुक्रजीने अपना पेट चीरकर कचको जीता बाहर निकाला व आप मर गये तब कचने संजीविनी विद्यासे उनको जिला दिया जब कुछ दिन उपरांत कच शुक्र गुरुसे बिदा होकर अपने घर आनेलगा तब देवयानी उससे बोली कि तुम अपना विवाह मेरे साथ करो कचने उत्तर दिया गुरुकी कन्या बहिनके समान होतीहै इसलिये तुमसे विवाह नहीं कर सक्ता इसी बातपर देवयानीने क्रोधित होकर उसको यह शाप दिया जो संजीविनी विद्या तैंने मेरे पितासे पढ़ी है वह तुझे भूल जावै यह वचन सुनकर कच बोला हे देवयानी धर्म करते हुये तैंने मुझे शाप दिया इसलिये तेरा विवाह ब्राह्मणसे न होवे ऐसा शाप देकर कच अपने बापके पास चला गया हे परीक्षित देवयानीको शाप होनेका यही कारणथा सो मैंने तुमको सुना दिया अब देवयानीके विवाहकी कथा कहताहूं सुनो जब शुक्राचार्य वृषपर्वाके देश में आनकर वसे तब उन्होंने कुछ दिन बीते परमेश्वरकी इच्छानुसार राजा ययातिको बुलाकर अपनी कन्या उसको विवाह दी व शर्मिष्ठाको हजार दासियों समेत दहेज

में देकर राजा ययातिसे कहा तुम शर्मिष्ठाको अपनी सेजपर मत बैठालना व देवयानीने भी इस बातका वचन ययातिसे लेलिया जब राजाने कहा मैं शर्मिष्ठासे भोग नहीं करूंगा तब शुक्रजीने देवयानीको शर्मिष्ठा व हजार दासियों समेत बहुतसा भूषण व वस्त्र आदिक दहेजमें देकर बिदा किया व राजा ययाति देवयानी समेत राजमंदिर पर आनकर उसकेसाथ भोग व विलास करने लगे व शर्मिष्ठाको एक स्थान अति उत्तम रहने वास्ते बनवा दिया कुछ दिन बीते राजा ययाति व देवयानीसे दो पुत्र यदु व तुर्वसु नाम उत्पन्न हुये एक बेर शर्मिष्ठा रजस्वलासे शुद्ध हुई थी सो उसी दिन राजा ययाति भी बागमें सैर करनेवास्ते जा निकले तब शर्मिष्ठा ने हाथ जोड़कर विनय किया महाराज मैं भी तुम्हारी दासी होकर आपसे भोग करने व सन्तान होने की इच्छा रखतीहूं व राजकन्या होकर दूसरेसे भोग नहीं कर सक्ती ऐसा वचन सुनतेही राजाने शुक्राचार्य का वचन यादकरके विचारा शर्मिष्ठासे भोग करने में मेरे वास्ते अच्छा नहीं होगा और यह राजकन्या होकर अपने मुँह से रतिदान मांगती है इसका कहना न मानने में भी मेरा धर्म नहीं रहता इसवास्ते अब इसकी इच्छा पूर्ण करना चाहिये आगे जो मेरे प्रारब्धमें लिखाहै वह मिटने नहीं सक्ता यह विचारकर राजाने शर्मिष्ठा से भोग किया फिर इसी तरह देवयानी से छिपाकर कभी कभी राजा उसके साथ भोग व विलास करने लगे कुछ दिन यह बात छिपी रही जब द्रुह्य व अणु नाम दो पुत्र शर्मिष्ठा के राजा से हो-कर तीसरा गर्भ रहा तब एक दिन शर्मिष्ठा देवयानीके पंखा हांकती थी उस समय दो बालक शर्मिष्ठाके वहां आनकर खड़े हुये सो देवयानीने पूछा हे शर्मिष्ठा तेरे यह दोनों पुत्र किस तरह उत्पन्न हुये और तीसरा गर्भ किससे रहा शर्मिष्ठा बोली रातको किसी ऋषीश्वरने आनकर मुझसे स्वप्नमें भोग कियाथा उसीसे दो बालक होकर तीसरा गर्भ रहाहै यह बात सुनकर देवयानी चुप होरही पर उसके मनमें खटका हुआ इसलिये कई दिन बीते एक रोज देवयानीने शर्मिष्ठाके मकानपर जाकर उन लड़कोंसे पूछा तुम्हारे पिताका क्या नाम है तब बड़े बालक ने बतलाया मैं ययाति का बेटाहूं

यह वचन सुनतेही देवयानी महाक्रोधसे राजाके पास आनकर बोली तुमने मेरे पिताके मना करनेपर भी शर्मिष्ठासे भोग किया इसलिये अब मैं तुम्हारे यहां नहीं रहूंगी जब ऐसा कहकर देवयानी क्रोधवश अपने पिताके घर चली तब ययाति उसके पीछे विनय करता हुआ पैदल दौड़ा गया पर उसने नहीं माना व अपने बापसे जाकर यह सब हाल कह दिया व राजा ययातिभी वहां पहुँचकर खड़ा हुआ जब शुक्राचार्यने जाना कि मेरे बरजने परभी राजाने शर्मिष्ठासे भोग करके सन्तान उत्पन्न कियाहै तब क्रोध करके कहा हे राजन् तैंने बलके अभिमानसे मेरा कहना नहीं माना इसलिये तुझे शाप देताहूं कि बूढ़ा निर्बल होकर स्त्रीप्रसंग करने योग्य न रहै व स्वरूप तेरा बिगड़ जावे यह वचन उनके मुँहसे निकलतेही उसी समय राजा बूढ़ा होकर दांत उसके टूट गये व बाल श्वेत होकर आंखसे कम देखने लगा तब हाथ जोड़कर बोला महाराज अभीतक मेरा मन संसारी सुखसे नहीं भरा एक बेर अपराध क्षमा कीजिये यह दीन वचन सुनकर शुक्राचार्य ने अपनी बेटी का सुख विचारके कहा हे राजन् मेरा शाप फिरने नहीं सक्ता पर तेरे पांचों पुत्रों में जो खुशीसे तेरा बुढ़ापा लेकर अपनी तरुणाई तुझे देवे तब तू फिर युवा होजायगा यह आशीर्वाद सुनते ही राजा प्रसन्न होकर देवयानी समेत राजमन्दिर पर चले आये उन्हीं दिनों शर्मिष्ठासे पुरु नाम तीसरा पुत्र उत्पन्न हुआ जब राजाने अपने बड़े पुत्रसे कहा तुम्हारे नानाने हमको शाप देकर बूढ़ा बना दिया तुम अपनी तरुणाई हमको देव तो थोड़े दिन और संसारी सुख कर लेवें तब यदुने समझा कि हमारी तरुणाई लेकर राजा मेरी मातासे भोग करैंगे तो मुझको बड़ा अधर्म होगा ऐसा विचारकर उसने उत्तर दिया मैंने अभी तक संसारी सुख नहीं उठाया इसलिये मैं अपनी तरुणाई नहीं देसक्ता॥

दो० श्वेतो श्वेतो सब भलो श्वेतो भलो न केश। कामिनि रमै न रिपु डरै आदर कर न नरेश॥

यह वचन बड़े पुत्रका सुनतेही राजाने तुर्वसु आदिक तीन बालक जो यदुसे छोटे थे उनको बुलाकर यही बात कही जब उन्होंने भी इसी तरह उत्तर दिया तब ययाति ने पुरु छोटे लड़के से जो शर्मिष्ठासे हुआ

था कहा हे पुत्र तुम अपनी तरुणाई मुझे देव तेरे चारों भाइयों ने नहीं दिया अब सिवाय तुम्हारे दूसरेका भरोसा मुझको नहीं है यह दीन वचन सुनते ही पुरु हाथ जोड़कर बोला हे पिता मेरा तन आपने उत्पन्न व पालन किया है इसलिये तरुणाई क्या वस्तु है अपना प्राण तुम्हारे नेवछावर समझता हूं कदाचित् मैं सौ जन्म आपकी सेवा करूं तौ भी आपसे उऋण नहीं हो सक्ता जो बेटा विना कहे माता व पिता की सेवा करै वह उत्तम व कहनेसे करै वह मध्यम व कहने पर चिड़चिड़ाकर आज्ञा पाले उसको निकृष्ट समझना चाहिये व जो पुत्र माता पिता की आज्ञा न मानै वह मूत्रके तुल्य है॥

दो० जाही पैंड़े पूत है वाही पैंड़े मूत। राम भजै सो पूत है नहीं मूतका मूत॥

यह बात पुरुकी सुनकर राजा अतिप्रसन्न हुआ व अपना बुढ़ापा उसे देकर उसकी तरुणाई आप लेली व अपने चारों पुत्रोंको ऐसा शाप दिया कि तुम लोग राजसिंहासन न पावोगे व तरुणाई लेने पर राजाने हजार वर्षतक संसारी सुख देवयानी के साथ उठाया और बहुतसा यज्ञ व दान वास्ते प्रसन्न होने परमेश्वरके किया पर मन उसका संसारी सुखसे न भरा॥

उन्नीसवां अध्याय।

राजा ययातिको एक इतिहास बकरी व बकरेका कहना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित बहुत दिन राजा ययाति संसारी सुख में फँसा रहा जब यज्ञादिक करने से उसके ज्ञान हुआ तब एक दिन ऐसा विचार किया देखो हमने पुत्रकी तरुणाई लेकर इतना सुख उठाया तिस पर अभीतक इच्छा पूरी नहीं हुई देखो मट्टीका घड़ा पानी डालनेसे भर जाता है व इन्द्रियां अति सुख पाने पर भी तृप्त नहीं होतीं वही दशा मेरी हुई इसी तरह संसारी जालमें फँसे हुये मरनेसे जन्म मेरा अकार्थ होगा इसलिये अब परलोक बनाने वास्ते हरिभजन करना चाहिये ऐसा विचार कर राजाने देवयानीसे कहा हे प्राणप्यारी हमने अहेर खेलती समय वन में एक कौतुक देखा था वह हाल कहते हुये हँसी आती है जब देवयानी हाथ जोड़कर बोली महाराज मुझेभी वह चरित्र सुनाओ तब राजाने कहा

एक बकरी ब्राह्मणके कुयेंमें गिर पड़ी थी उसको एक बकरेने बाहर निकाला सो बकरी ने उस बकरे को अपना स्वामी बनाकर बहुत दिन उसके साथ संसारी सुख उठाया जब उस बकरीके दो पुत्र उत्पन्न हुये तब वह बकरा किसी दूसरी बकरी से फँस गया इसलिये पहिली बकरी अनादर होनेसे अपने ब्राह्मणके यहां चली गई उस ब्राह्मणने अपनी बकरी की सहायता करके बकरे को बधिया करदिया जब बकरेने ब्राह्मणसे अति बिनती की व ब्राह्मणने दयालु होकर फिर उसे ज्योंका त्यों बना दिया तब वह बकरा फिर संसारी सुखमें फँस गया यह वचन सुनकर देवयानी बोली महाराज वह बकरा बड़ा मूर्ख था जो बकरीके साथ भ्रष्ट हुआ तब राजा बोले यही दशा हमारी व तुम्हारी है हे देवयानी मनुष्य को सब संसार का धन व स्त्री व सातों द्वीपका राज्य मिलै व हजारों सन्तान होकर सब मनोरथ पावै तिस पर भी मन उसका संसारी सुखसे नहीं भरता जिसतरह आगमें घी डालने से ज्वाला बढ़ती है उसी तरह प्रतिदिन तृष्णा अधिक होती जाती है इसलिये अब विरक्त होकर हरिभजन करना चाहिये जब यह वचन देवयानी ने पसन्द किया तब राजा ययातिने पुरु छोटे बेटेको तरुणाई फेरकर अपना बुढ़ापा उससे ले लिया व राजसिंहासन पर उसे बैठाकर दूसरे चारों बेटों को जो बड़े थे चारों दिशाका राज्य बांट दिया व आप देवयानी स्त्री समेत बदरी केदार में चले गये व तप व ध्यान परमेश्वरका करके मुक्त हुये ॥

बीसवां अध्याय ।

पुरुके वंशकी कथा ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित अब मैं राजा पुरुके वंशकी कथा कहता हूं जिस कुलमें तुमने जन्म लिया है सुनो पुरुके वंशमें कई पीढ़ी बीते दुष्यन्त नाम राजा बड़ा प्रतापी होकर एक दिन वनमें अहेर खेलने गया तब उसने कण्व ऋषीश्वरकी कुटी में एक कन्या अति सुन्दरी देखी और उसपर मोहित होकर पूंछा हे प्राणप्यारी तू देवकन्याके समान किसकी बेटी है कोई राजकन्या भी तेरे तुल्य न होगी इसलिये तेरा स्वरूप मेरे हृदय

में बस गया यह वचन सुनतेही शकुन्तला कन्या बोली हे राजन् मैं विश्वा-मित्र ऋषीश्वर और मेनका अप्सरा से उत्पन्न हुई हूं इस बातको कण्व ऋषीश्वर जानते हैं आप मेरे स्थानपर टिककर जो आज्ञा कीजिये सो कन्द मूलादिक व लोटे भर पानीसे तुम्हारा सन्मान करूं यह बात सुनते ही राजा प्रसन्न होकर बोले कन्या का भी स्वयंवर करना धर्म है जब ऐसा कहकर राजा बड़े प्रेमसे रात्रिको उसके स्थान पर टिके तब दोनों ने प्रसन्नतासे आपसमें गन्धर्व विवाह करके भोग किया सो हरिइच्छासे उसी दिन उसके गर्भ रह गया जब प्रात समय राजा शकुन्तला को उसीतरह छोड़कर राजमन्दिर पर चले गये तब कण्व ऋषीश्वरने जाना कि इसके राजासे गर्भ रहा है दशवें महीने एक बालक अति सुन्दर व ऐसा बलवान् उससे उत्पन्न हुआ जो लड़कपन में सींकके धनुष बाणसे बाघोंको मारने लगा तब कण्व ऋषीश्वर बोले हे शकुन्तला तू अपने बालकको राजाके पास ले जा जब ऋषीश्वरकी आज्ञा से शकुन्तलाने अपना बालक लिये हुये राजसभामें जाकर कहा हे पृथ्वीनाथ मैं तुम्हारी स्त्री राजकुमार समेत आई हूं तब राजा बोले मैं तुझे नहीं पहिंचानता तू कौन है और यह बा-लक किसकाहै जब दुष्यन्तने जान बूझकर यह झूठ वचन कहा तब राज-सभामें यह आकाशवाणी हुई हे राजा शकुन्तला सच कहती है यह बालक तुम्हारे वीर्य से उत्पन्न हुआ है इसलिये तुम इन दोनोंको अपने घर रक्खो धर्मात्मा पुत्र अपने पिताको नरक जानेसे बचा लेते हैं जब यह आकाश-वाणी सब सभावालोंने सुनी तब राजाने देवतों की आज्ञासे शकुन्तलाको अंगीकार किया और पुत्रसमेत राजमंदिर में भेज दिया उस बालक का नाम भरत रक्खा राजाके मरने उपरांत वही लड़का जो परमेश्वरका अंश था राजगद्दी पर बैठकर ऐसा चक्रवर्ती व प्रतापी राजा हुआ जिसने एक सौ तेंतीस अश्वमेध यज्ञ पृथ्वी पर किये और बहुतसे रत्नादिक ब्राह्मणोंको दान दिये उसके यज्ञमें कई बेर इन्द्र श्यामकर्ण घोड़ा चुराकर लेगया सो राजा भरत अपने प्रताप व बलसे घोड़ा छीन लाया व उसके राज्यमें कोई दूसरा राजा अश्वमेध यज्ञ करने नहीं पाया व जितने म्लेच्छ व दुःखदायी

राजा पृथ्वी पर थे सबका नाश उसने किया और सातों द्वीपके राजों को अपनी सेवकाई में रक्खा व अपने बलसे दैत्यों को जीतकर इंद्रादिक देवतोंको देवलोकका राज्य दिला दिया उसके राज्य में पर्वत व समुद्रादिक अनेक तरहके रत्न व सोना व चांदी आदिक सदा इसवास्ते प्रत्यक्ष रखते थे जिसमें जिसे जो चाहना हो वह लेजावे इसी तरह सत्ताईस हजार वर्ष भरतने इन्द्रके समान चक्रवर्ती राज्य किया व तप करनेसे पराक्रम उसका बना रहा व राजा भरतने अपने तीन विवाह विदर्भदेशके राजा की बेटियों से किये जब उसके हरिइच्छासे कई पुत्र कुरूप उत्पन्न हुये तब रानियों ने इस डरसे कि राजा भरत कहेंगे कि ये बालक हमारे वीर्यसे नहीं हुये उन लड़कों को गंगामें फेंकवा दिया इसलिये राजा भरत सन्तान न होने से चिंतामें रहा करते थे कुछ दिन बीते राजाने कण्व ऋषीश्वरसे मन्त्र लिया तब ऋषीश्वरने पुत्र होनेवास्ते राजा भरतसे यज्ञ कराया उसी समय देवतों ने प्रसन्न होकर भारद्वाज नाम बालक जो ममतासे हुआ था लाकर भरत को दिया राजाने वितथ नाम रखकर उसका पुत्रके समान पालन किया और भरतके मरने उपरान्त वह राजा हुआ इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूछा महाराज भारद्वाज किस तरह उत्पन्न हुआ था उसकी कथा कहिये शुकदेवजी बोले हे परीक्षित एक बेर बृहस्पतिने उतथ्य अपने बड़े भाई की स्त्री ममता नामसे बरजोरी भोग किया सो उसके गर्भ रह गया तब उसने अपने स्वामी के डरसे जो बालक पेट में था उसे गिरा दिया वही पुत्र भारद्वाज नाम हुआ जब बृहस्पतिके समझाने व आकाशवाणी होने पर भी ममताने उसका पालन नहीं किया तब मरुत देवताने जिसके नामका यज्ञ भरत ने किया था वह बालक लाकर राजा को दे दिया इस तरह भारद्वाजका जन्म हुआ था ॥

इक्कीसवां अध्याय।

राजा वितथ के सन्तानकी कथा ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित वितथके वंशमें कई पीढ़ी बीते राजा रन्तिदेव ऐसा महात्मा हुआ कि राजसिंहासनपर नहीं बैठकर मन अपना विरक्त कर

लिया व अपनी स्त्री व एक पुत्र समेत वनमें जाकर तप व ध्यान परमेश्वर का करने लगा व उसने भोजन करना भी परमेश्वरके आश्रय पर छोड़ दिया जब अपनी प्रसन्नतासे कोई मनुष्य विना मांगे भोजन दे जाता था उसीको अपनी स्त्री व बेटे समेत खाकर वन में आनन्दसे रहते थे नहीं तो भूखे रहकर आप कुछ कन्द मूलादिक लाने में उद्योग नहीं करते थे सो एक वेर ऐसा संयोग हुआ कि भोजन न मिलनेसे अड़तालीस उपास उन को होगये उनचासवें दिन थोड़ा अन्न कोई उनको दे गया सो राजानेउसे रसोई बनाकर तीन भाग करकेजैसे चाहा कि भोजन करें वैसे नारायणजी बूढ़े ब्राह्मण का रूप धरकर वास्ते परीक्षा लेने धर्मराजके वहां आनकर बोले हे राजन् मैं बहुत भूखा हूं मुझे भोजन खिलाव यह वचन सुनतेही रन्तिदेव ने बड़ी श्रद्धासे अपना भाग उसे खिला दिया जब वह खाकर नारायणरूप ब्राह्मण बोले अभी मेरा पेट नहीं भरा तब रानी व राजकुमार भी अपना अपना भाग उस ब्राह्मणको खिलाकर आप तीनों मनुष्य ज्यों के त्यों भूखे रहे व ब्राह्मणरूपी परमेश्वर आशीर्वाद देकर वहांसे अन्तर्धान होगये कई दिन और उनको विना अन्नके बीत गये तब फिर थोड़ा किसीने ला-कर उन्हें दिया जैसे उन तीनोंने आपसमें बांटकर भोजन करने चाहा वैसे एक शूद्रने आनकर कहा मैं बहुत भूखा हूं मुझे भोजन खिलाओ राजाने उसे अपना अतिथि समझकर सम्पूर्ण भोजन खिला दिया व आप तीनों मनुष्य उसी तरह रह गये रानी व राजकुमार विना अन्न बहुत दिन बीतने से निर्बल होगये थे इसलिये राजा उनसे बोला जिस बर्तन में अतिथि ने भोजन किया है उसमें कुछ अन्नका अंश लगा होगा उसको धोकर पी-लेव जब रानी व राजकुमारने वह धोवन पीना चाहा तब एक डोम कुत्ते को साथ लिये हुये वहां आन पहुँचा व भूख से व्याकुल होकर राजा के सामने गिर पड़ा व रोकर कहने लगा मेरा प्राण निकला जाता है सो यह बर्तनका धोवन आपके पीने योग्य नहीं है यह जूठन मेरा भाग समझ कर मुझे देव जिसमें उसे पीकर अपना प्राण बचाऊं राजाने उस चांडाल में भी परमेश्वरका प्रकाश समझकर उसे दण्डवत् किया व रानी व राज-

कुमार डोमसे बोले हम लोगोंने वहुत दिन पीछे यह धोवन पीनेकी इच्छा की है तुम दयाकरके छोड़ देव तो हम पीवें जब चांडाल ने नहीं माना तव दोनों वह धोवन का पानी भी उसे पिलाकर आप भूखे रह गये जब परमेश्वरने इस तरह धर्म व धैर्य उन तीनोंमें देखा तब उसी डोम से श्याम वर्ण चतुर्भुजी स्वरूप शंख चक्र गदा पद्म लिये प्रकट होकर राजा व रानी व राजकुमार से कहा तुम्हें बड़ा धैर्य है जब उन तीनों ने परमेश्वर का दर्शन पाकर विनयपूर्वक उनकी स्तुति की तब नारायणजी रन्तिदेव को अपने गले लगाकर बोले हे राजन् हम तुमसे अति प्रसन्न हैं जो वरदान मांगो सो देवें रन्तिदेव हाथ जोड़कर बोला महाराज यही वरदान मांगता हूं कि मेरी सब प्रजा सुख पावै और कोई दरिद्री न होकर मेरा मन तुम्हारे चरणों में लगा रहै परमेश्वर इच्छापूर्वक वरदान देकर राजा व रानी व राजकुमार को उसी तनु से विमान पर बैठाकर वैकुण्ठ में भेज दिया व रन्तिदेव का गर्ग नाम दूसरा बेटा जो राजसिंहासन पर था उसके वंशमें सब लोग उनकी कृपासे ब्राह्मण होगये व पुरुके वंश में बृहत्क्षेत्र राजा होकर उसके वंशमें हस्ती नाम ऐसा प्रतापी राजा उत्पन्न हुआ जिसने हस्तिनापुर नगर वनाया उसके यहां तीन बेटे अजमीढ़ व पुरुमीढ़ व दुर्मीढ़ नाम बड़े धर्मात्मा होकर अजमीढ़ की सन्तान ब्राह्मण होगये मुद्गल उसके वंश में ऐसा ज्ञानी हुआ जिसके नाम का गोत्र आज तक संसार में प्रकट है व मुद्गल के वंशमें अहल्या नाम कन्या महासुन्दरी होकर गौतम ऋषीश्वर को व्याही गई जिसके गर्भ से शतानन्द लड़का होकर उसके सत्यवती नाम बालक उत्पन्न हुआ जिसका वीर्य एकदिन उर्वशी अप्सरा को देखकर सरकण्ड के वनमें गिरपड़ा उस वीर्य से कृपाचार्य बालक व कृपी नाम कन्या उत्पन्न हुई जिन्हें राजा शन्तनु जो भारद्वाजके वंशमें थे अहेर खेलते समय वनमें पड़ा हुआ देखकर अपने घर उठा लाये व लड़कों के समान उन दोनों को पाला व राजा शन्तनु के हाथ में यह गुण था जिसके मस्तकपर अपना हाथ रख देवें उसका रोग छूट जावे इसलिये जो रोगी उनके पास जाते थे अच्छे होकर साथ चले आते थे इस

कारण संसार में उनका यश प्रकट हुआ कि सब किसी को सुख देनेवाले राजा शन्तनु हैं एक बेर उनके राज्यमें पानी नहीं बरसा व प्रजा लोग अन्न विना दुःख पानेलगे तब राजाने ऋषीश्वरों से पूँछा हमने कौन अधर्म किया है जो मेरे राज्यमें पानी नहीं बरसता ऋषीश्वरोंने विचारकर कहा तुमने देवापी अपने भाई का भाग छीन लिया था इसीवास्ते जल नहीं बरसता तुम उसका भाग दे डालो नहीं तो अवर्षण से तुम्हारी प्रजा अति दुःख पावेगी यह वचन सुनतेही राजा शन्तनुने देवापी से जो वनमें बैठा हुआ तप करता था इसतरह भुलावा देकर बातचीत किया जिसमें उसके मुखसे कई वचन देवसे विपरीत निकल आये इसलिये देवापी का तपोबल घट गया तब शन्तनु के राज्य में पानी बरसने से प्रजा ने सुख पाया हे परीक्षित राजा शन्तनु ऐसे प्रतापी हुये जिनका यश संसारमें छा रहा है॥

बाईसवां अध्याय।

दिवोदास के वंश की कथा॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित मुद्गल का बेटा राजा दिवोदास बड़ा प्रतापी होकर उसके वंश में राजा द्रुपद बहुत तेजवान् उत्पन्न हुआ जिसकी कन्या द्रौपदी नाम को अर्जुन तुम्हारे दादा मत्स्य बेधकर ले आये और वह अर्जुन आदिक पांचों भाई पाण्डवों की स्त्री हुई थी राजा द्रुपद के धृष्टद्युम्न आदिक कई पुत्र उत्पन्न होकर उसी धृष्टद्युम्न ने महाभारत में द्रोणाचार्य का शिर काटा था व अजमीढ़ के वंशमें बृहद्रथ नाम बड़ा प्रतापी राजा होकर उसके दो स्त्री थीं सो एक रानी के सत्यजित् नाम बालक उत्पन्न होकर दूसरी स्त्री से कोई पुत्र नहीं था इसलिये राजा महापुरुषों की सेवा किया करते थे एक दिन किसी ऋषीश्वर ने प्रसन्न होकर एक आम राजा बृहद्रथ को देकर कहा तू यह फल अपनी स्त्री को खिलादे उसके पुत्र होगा राजाने वह आम लेकर अपनी बड़ी रानी को दिया सो दोनों रानियां आपस में प्रीति रखनेसे आधा आधा आम बांटकर खागईं सो राजा की दोनों स्त्रियों के गर्भ रहा और दशवें महीने उनके पेटसे आधे आधे बालक जिस तरह कोई खड़े मनुष्य को चीर डाले उत्पन्न हुये उसे देखतेही राजाने

क्रोधित होकर उसको वनमें फेंकवा दिया व आम बांटकर खाने का हाल सुनकर राजा दोनों रानियों पर अति क्रोधित हुये सो ईश्वर की इच्छा से जहां पर वह दोनों टुकड़े राजा ने फेंकवा दिये थे वहां पर जरा नाम राक्षसी जा पहुँची व उसने अपनी माया से दोनों टुकड़ों को मिलाकर जोड़ दिया सो वह बालक परमेश्वर की इच्छा से जी उठा तब वह राक्षसी उसको राजा के पास लेगई उसे देखतेही राजा ने अति प्रसन्न होकर उसका नाम जरासन्ध रक्खा और वह बड़ा बलवान् व तेजस्वी राजा हुआ जिसको भीमसेन ने श्रीकृष्णजी की कृपा से दोनों टांगें चीरकर मार डाला व जरासन्ध का बेटा सहदेव होकर उसके वंशमें देवापी नाम राजा बड़ा प्रतापी व धर्मात्मा हुआ जिसने राजसिंहासन छोड़कर मन अपना विरक्त कर लिया व उत्तराखण्ड में जाकर तप करता है व कलियुग के अन्त में चन्द्रवंश कुल को फिर उत्पन्न करेगा अब राजा शन्तनुके वंशकी कथा जिस कुलमें तुम हुये हो वर्णन करते हैं सुनो राजा शन्तनु की स्त्री से सत्त उत्पन्न होकर उसके वंश में राजा दिवोदास कौरव ऐसा प्रतापी जन्मा जिसके नाम से कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रकट हुआ व राजा दिवोदास के पूर्वजन्म के संस्कार से कोढ़ होगया था सो एक दिन वह अहेर खेलते समय वन में जाकर गर्मी से व्याकुल हुआ सो कुरुक्षेत्र में जाकर एक वृक्ष के नीचे बैठा वहां एक कुण्ड पानी का देखकर जैसे राजा ने उसमें स्नान किया वैसे उनका कोढ़ छूट गया इसलिये वह अति प्रसन्न होकर वह कुण्ड व दूसरे जो तड़ाग व कुण्ड वहां पर थे सबको अच्छी तरह बनवा दिये इसी कारण वहां का नाम कुरुक्षेत्र हुआ व उनके वंशमें राजा दिलीप ऐसा प्रतापी हुआ जिसने दिल्ली ऐसा नगर बसाया व राजा शन्तनु की दूसरी स्त्री गंगाजी से भीष्मपितामह ऐसे बलवान् व धर्मात्मा हुये जिन्होंने परशुराम जी से युद्ध किया धनुष विद्या में उनके तुल्य कोई नहीं था राजा शन्तनु की तीसरी स्त्री सत्यवती नाम से चित्रांगद व विचित्रवीर्य दो पुत्र उत्पन्न हुये हे परीक्षित यह वह सत्यवती थी जिसके साथ पराशर मुनि हमारे दादाने कुमारपन में बीच नौकाके भोग किया था उसी से वेदव्यास मेरे

पिता उत्पन्न हुये एक दिन चित्रांगद पुत्र सत्यवती का अहेर खेलने वास्ते वनमें गया तब चित्रांगद गन्धर्व ने उसको इस शत्रुता से कि मेरे समान इसने अपना नाम क्यों रखवाया था मार डाला व भीष्मपितामह अपने भुजाके पराक्रमसे अम्बा व अम्बिका व अम्बालिकानाम तीन कन्या काशी-नरेश की स्वयंवर मेंसे छीन लाये थे सो उनमें दो का विवाह विचित्रवीर्यसे हुआ उसमें अम्बा नाम कन्या अपने मनमें चाहना राजा शाल्वकी रखती थी इसलिये राजा विचित्रवीर्यने उसको छोड़दिया व अम्बिका व अम्बालि-का से इतनी प्रीति हुई कि दिन रात राजमन्दिरमें रहकर उनके साथ भोग व विलास किया करते थे इसलिये राजा क्षयी का रोग होनेसे विना सन्तान मरगये तब सत्यवतीने अपना वंश वढ़ानेवास्ते वेदव्यास अपने पुत्रको जो पराशर मुनिसे उत्पन्न हुये थे बुलाकर कहा विचित्रवीर्यकी दोनों स्त्रियोंसे एक एक पुत्र उत्पन्न करो तव वेदव्यासजी जो परमेश्वरका अवतार थे बोले हे माता दोनों स्त्री विचित्रवीर्यकी मेरे सन्मुखसे नंगी होकर चलीजावें तो मेरे देखने से उनके गर्भ रहकर एक एक पुत्र उत्पन्न होगा जब अम्बिका अपनी सासुकी आज्ञासे नंगी होकर वेदव्यास के सामने चली तव उसने लज्जावश अपने बालों से मुँह छिपाकर आंख बन्द कर लिया था इसलिये उसके धृतराष्ट्र अन्धा पुत्र उत्पन्न हुआ व अम्बालिका लज्जासे अपने अंगमें मट्टी लगाकर उनके सामने गई थी इसीकारण उससे राजा पाण्डु पिण्ड-रोगी उत्पन्न हुये व बिलरा नाम दासी विचित्रवीर्यकी नंगी होकर हँसती हुई वेदव्यासजीके सामने चली गई सो उसके पेटसे विदुरजी परम भाग-वतने जो धर्मराजका अवतार थे जन्म लिया व धृतराष्ट्रके दुर्योधन आदिक सौ पुत्र गान्धारी स्त्री से हुये व राजा पाण्डु तुम्हारे परदादाको एक ऋषी-श्वर हिरण्यरूपने जो राजाके डरा देनेसे भोग करने नहीं पाया ऐसा शाप दिया था कि स्त्री भोग करतेसमय तुम मर जावोगे व सिवाय इसके राजा के पिण्डरोग होगया था इसलिये उसके संतान न थी जब कुन्ती उनकी स्त्रीने अपने पतिकी आज्ञानुसार मंत्रके प्रतापसे धर्म व इन्द्र व पवन देव-ताओंको बुलाकर उनसे भोग किया तब धर्म से राजा युधिष्ठिर व इन्द्र से

अर्जुन व पवनसे भीमसेन ये तीन पुत्र उसके हुये फिर कुन्तीने उसी मंत्र से अश्विनीकुमार देवताको बुलाकर नकुल व सहदेव दो पुत्र माद्री अपनी सवति से उत्पन्न किये और वह पांचों भाई द्रौपदी से विवाह करके अपने अपने पास पारी बांधकर उसको रखते थे सो पांचों भाइयोंके एक एक पुत्र द्रौपदीसे उत्पन्न हुये जिनको अश्वत्थामाने मार डाला व राजा युधिष्ठिरके पौरवी नाम दूसरी स्त्री से देवक व भीमसेनके हिडम्बा राक्षसी से घटोत्कच व सहदेव के सहोत्रा पत्नीसे विजय व नकुल के कर्णमती स्त्री से निर्मित्र व अर्जुन के सुभद्रा नाम पत्नी श्रीकृष्णजी की बहिन से अभिमन्यु पुत्र बड़ा प्रतापी हुआ जो तुम्हारा पिता था व अर्जुनके अलोपा नाम तीसरी पत्नी से जो नागकन्या थी बभ्रुवाहन व ऐरावत दो पुत्र बड़े तेजवान् उत्पन्न हुये उसमें ऐरावतको मणिपूरपती नाम उसके नानाने अपने रास बैठाला व बभ्रुवाहनने अर्जुनके साथ बड़ा भारी युद्ध किया था उसकी कथा अश्वमेधपर्व महाभारत में लिखी है और जब अश्वत्थामा ने तुझे मारने के वास्ते ब्रह्म अस्त्र चलाया तब श्रीकृष्ण वैकुण्ठनाथजीने उत्तरा तेरी माताके पेटमें तुम्हारी रक्षा की व हे परीक्षित जनमेजय आदिक जो तेरे चार पुत्र हैं उनमें जनमेजय बड़ा प्रतापी व चक्रवर्ती राजा सातोंद्वीप का होकर तुम्हारा बदला लेनेवास्ते ऐसा यज्ञ करेगा जिसमें बहुत सर्प जलकर मरजावेंगे व शुभकर्म करनेसे उसका यश संसारमें प्रकट होगा व तुम्हारे मरने उपरांत पच्चीस पीढ़ी तक हस्तिनापुरका राज्य तेरे वंशमें रहकर फिर हस्तिनापुर यमुनाजीमें डूब जावेगा तब तिमी नाम राजा तुम्हारे वंशमें होकर वहां पर सोबस्तीपुरी बसावेगा उसके पीछे तुम्हारे वंशसे राजगद्दी छूटजावैगी और दूसरे राजा होंगे व वेदव्यासजी हमारे पिताने चारों वेद व सब पुराण अपने चेलोंको पढ़ाये पर श्रीमद्भागवत जो सब वेदोंका सारांश है किसीको न पढ़ाकर मुझे पढ़ाया था वही अमृतरूपी कथा हम तुम्हें सुनाते हैं सहदेव राजा जरासन्धके पुत्र व ययातिके वंशमें बहुतसे राजा हुये उनका नाम संस्कृत भागवत में लिखा है॥

तेईसवां अध्याय।

यदुवंशियों की कथा॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित अब हम यदुवंशियोंकी कथा जिस कुलमें कृष्णावतार हुआ था कहते हैं उसके सुननेसे मनुष्योंको सब मनोरथ मिलते हैं सो तुम चित्त लगाकर सुनो ययातिका यदु नाम बड़ा पुत्र जो देवयानी से हुआ था उसके वंशमें कई पीढ़ी उपरान्त राजा सहस्रार्जुन ऐसा तेजस्वी उत्पन्न हुआ जिसने पचासी हजार वर्ष चक्रवर्ती राज्य किया उनका नाम स्मरण करने से गया हुआ धन मिलता है उसके हजार बेटों में नौसौ पंचानबे राजकुमारोंको परशुरामजीने मार डाला पांच बेटे जो बचे थे उनमें जयध्वज बेटासे तालजंघनाम क्षत्रिय होकर उसके वंशमें मधुनाम बड़ा प्रतापी हुआ इसीवास्ते श्रीकृष्णजीका नाम माधव कहाजाता है व मधुका पुत्र वृष्णी था इसीसे यदुवंशी व वृष्णिवंशी व मधुवंशी कहलाते हैं वृष्णीका बेटा शिशुबिन्द ऐसा धर्मात्मा हुआ जिसके पास चौदह रत्न थे व उसने दशलाख स्त्रियों से विवाह अपना किया सो हरिइच्छासे दश करोड़ पुत्र उसके उत्पन्न हुये उनमें सबसे बड़ा पुत्र पुरुजित व छोटा बालक ज़ामघ नाम था सो राजा जामघ की शैव्या नाम स्त्री बांझ थी अनेक उपाय करनेपर भी उसके सन्तान नहीं हुई इसी कारण उदास रहा करती थी सो एकबेर राजा जामघ विदर्भदेशके नृपति से लड़ने वास्ते गया तो वहां से एक कन्या अति सुन्दरी किसी भोजवंशी की छीन लाया जब उस बांझ स्त्रीने देखा कि मेरा स्वामी एक सुन्दरी अपने साथ रथपर बैठाले लिये आता है तब वह क्रोधसे बोली कि तुम यह कन्या किसलिये लायेहो राजा डरता हुआ अपनी स्त्रीसे बोला मैं तेरे वास्ते यह पतोहू लेआया हूं ऐसा वचन सुनतेही रानीने हँसकर कहा मेरे पुत्र नहीं है यह पतोहू किसतरह होगी तब राजाने उत्तर दिया पुत्र होनेपर इस कन्याका विवाह उसके साथ करूंगा परमेश्वरकी इच्छासे उसी समय ऐसी आकाशवाणी हुई कि तू धैर्य धर तेरे पुत्र उत्पन्न होगा यह आकाशवाणी सुनतेही राजा व रानीने बड़े हर्षसे विश्वेदेवोंका पूजन किया जब उनके आशीर्वाद व

हरिइच्छा से उस बांझ स्त्रीके एक पुत्र अति सुन्दर व तेजस्वी उत्पन्न हुआ तब राजाने उसका नाम विदर्भ रखकर वही कन्या उसे विवाहदी व अपने बेटेको राजगद्दी देकर स्त्रीसमेत वनमें चलागया और ध्यान परमेश्वरका करके मुक्त हुआ व राजा विदर्भ धर्मपूर्वक राज्य करने लगा॥

चौबीसवां अध्याय।

राजा उग्रसेन आदिक का उत्पन्न होना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित राजा विदर्भ से तीन पुत्र कुश व क्रथ व रोमपाद होकर रोमपादके वंशमें जयद्रथ नाम बड़ा प्रतापी चन्देली का राजा हुआ जिसके यहां शिशुपालने जन्म पाया व उसी कुलमें देवावृद्ध व विभु दोनों पुत्र ऐसे धर्मात्मा व ज्ञानी हुये जिनके सत्संग से छः हजार पैंसठ मनुष्योंने मुक्ति पाई व विभुके वंश में सत्राजित व प्रसेन ने जन्म लिया व विदर्भकी सन्तानमें युयुधान व सात्यकी बड़े बलवान् हो कर छवों युयुधान के सुफलक पुत्र हुआ व सुफलक के गांदिनी नाम स्त्री से अक्रूर आदिक बारह बालक उत्पन्न होकर यह सब वृष्णिवंशी कहलाये व यदुके वंशमें राजा अन्धक बड़ा प्रतापी होकर उससे दुन्दुभी उत्पन्न हुआ व दुन्दुभी के आहुक नाम बालक व आहुकी कन्या होकर आहुक से देवक व उग्रसेन दो पुत्र हुये व देवकके यहां देववान आदिक चार बालक व देवकी आदिक सात कन्याओंने जन्म पाया व उग्रसेनके कंस आदिक आठ पुत्र व आठ कन्या उत्पन्न होकर वह सब कन्या वसुदेवजी के छोटे भाईसे ब्याही गईं व देवकने देवकी आदिक अपनी कन्याओं का विवाह वसुदेवजीसे कर दिया व कुंतिभोज पांचाल देशका राजा शूरसेनसे बड़ी प्रीति रखता था पर उसके कोई सन्तान न थीं इसलिये शूरसेनने पृथा नाम अपनी कन्या उसके पास बैठाल दिया इसीकारण पृथाका नाम कुन्ती हुआ व कुंतिभोजने विवाह कुन्तीका जो पंचकन्यामें थी राजा पाण्डुसे कर दिया व युधिष्ठिर आदिक उससे उत्पन्न हुये व जब कुंतीने बालापन में दुर्वासा ऋषीश्वरको अपनी सेवासे प्रसन्न किया तब ऋषीश्वरने एक देवाह्वान मंत्र कुंतीको ऐसा सिखला दिया जिस मंत्रके पढ़नेसे देवता चले आवें सो

कुंतीने कुमारपन में एक दिन सरस्वती किनारे परीक्षा लेने वास्ते वह मंत्र पढ़कर जैसे सूर्य देवताका आवाहन किया वैसे सूर्य भगवान्ने रथपर बैठे हुये वहां आनकर कहा तैंने मुझे किसवास्ते बुलाया है उनका तेज देखते ही कुंती भयसे कांपती हुई हाथजोड़कर बोली महाराज मैंने अपने मंत्र की परीक्षा लेने वास्ते तुमको बुलाया था सो आप दयालु होकर चले जाइये यह वचन सुनकर सूर्य देवता बोले हे कुंती मेरा आना व्यर्थ नहीं होसक्ता अब मैं तेरे साथ भोग करके एक बालक तुझे दूंगा यह वचन सुनते ही कुन्तीने विनय किया महाराज अभी मेरा विवाह नहीं हुआ पुत्र होने से मेरी निन्दा होगी यह सुनकर सूर्य भगवान् बोले हे कुंती तू धैर्य धर तेरा लड़कपन ज्योंका त्यों बना रहैगा ऐसा कहने उपरांत सूर्य देवता कुंतीसे भोग करके अपने स्थानपर चले गये उसी समय परमेश्वरकी इच्छा से कुंतीके एक बालक अतिसुन्दर व तेजवान् कुण्डल आदिक पहिरे कानके राह उत्पन्न हुआ उसे देखतेही कुंतीने आश्चर्य माना व सन्दूकमें धरकर बीच गंगाके बहा दिया सो वही पुत्र कर्ण नाम अतिबली होकर महाभारत में दुर्योधनकी ओर से लड़ता था जिसको अर्जुन तुम्हारे दादा ने मारा व वसुदेवजीकी एक बहिन पृथा नामकी कथा हमने तुम्हें सुनाई अब उनकी और चारों बहिनों का समाचार सुनो दूसरी बहिन सत्यदेवी का विवाह धर्म कारुषदेश के राजा से हुआ सो दन्तवक्रादिक उससे पुत्र जन्मेथे तीसरी बहिन श्रुतिकीर्ति नामका विवाह धृष्टकेतुसे होकर शत्रुघ्न आदिकने उनके यहां जन्म लिया चौथी बहिन राजदेवीका विवाह अवन्तीपुरीमें जयसेन राजासे होकर पांचवीं बहिन श्रुतिश्रवा नाम दमघोष राजा चन्देलीको ब्याही गई जिसके पेटसे शिशुपाल उत्पन्न हुआ व सिवाय सात कन्या देवक के वसुदेवजी के और ग्यारह स्त्री होकर सबसे सन्तान हुई थी उनका नाम संस्कृत भागवत में लिखा है व देवकीके गर्भ से श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथ व सात बेटे और सुभद्रा नाम कन्याने जन्म लिया था सो हम दशम स्कन्धमें कथा अवतार लेने श्यामसुन्दर की कहेंगे अब द्रौपदी के विवाहका हाल संक्षेपमें कहते हैं सुनो अर्जुन मत्स्य वेध

कर द्रौपदीको स्वयंवर में से ले आया व अर्जुन आदिक पांचों भाइयों ने उसे अपने स्थानपर ले आकर कुन्ती से कहा हम एक वस्तु लाये हैं तब वह उसे खानेका पदार्थ समझकर बोली तुम पांचों भाई आपस में बांट लेव इसलिये माता की आज्ञानुसार पांचों भाइयों ने द्रौपदी को स्त्री बनाकर रक्खा जब राजा द्रुपद को यह बात अच्छी नहीं मालूम हुई तब युधिष्ठिर ने उनसे कहा कि हम अपने माताकी आज्ञा टालने नहीं सके यह आश्चर्य देखकर राजा द्रुपदने व्यासजी से पूछा महाराज मेरा प्रण द्रौपदी के विवाहका अर्जुनने पूरा किया व द्रौपदी मेरी कन्याको युधिष्ठिर आदिक पांचों भाई अपनी स्त्री बनाना चाहते हैं सो आपके निकट इस कन्या को किसकी स्त्री होना चाहिये व्यासजी ने द्रुपद को अकेले में लेजाकर कहा हे राजन् हम द्रौपदी के पूर्वजन्मकी कथा कहते हैं सुनो एक बेर देवतों ने क्या देखा कि एक पुष्प कमल का बहुत अच्छा गंगाजी में बहा जाता है तब इन्द्र बोला मैं जाकर देखता हूं यह पुष्प कहांसे आता है जब इन्द्र उस फूल का हाल मालूम करता हुआ जहां से गंगाजी का पानी निकला है वहां पहुँचा तो क्या देखा कि एक स्त्री अतिसुन्दरी खड़ी हुई रोती है व उसके आंसू गंगामें गिरनेसे पुष्प होकर बहते हैं यह हाल देखतेही इन्द्र ने आश्चर्य मान कर उस स्त्रीसे पूछा तू कौन है यह सुनकर वह बोली मैं एक जगह चलती हूं तू भी साथ आव तो मेरा हाल तुझको मालूम होगा यह बात कहकर वह स्त्री आगेको चली तब इन्द्र भी उसके साथ एक पर्वत पर चढ़ गया तो वहां क्या देखा कि एक पुरुष व स्त्री अतिसुन्दर व तेजवान् रत्नजड़ित सिंहासनपर बैठे हुये आपस में कुछ खेल रहे हैं जब उस पुरुषने इन्द्रको देखकर कुछ सन्मान उसका नहीं किया तब इन्द्रने अभिमान से मनमें कहा देखो मैं सब देवतों का राजा होकर यहां आया सो मेरा कुछ आदर इन्होंने नहीं किया और उस पुरुषने जो महादेव अन्तर्यामी थे जैसे इन्द्रकी ओर देखकर हँस दिया वैसे इन्द्र मारे भयके सूख गया यह दशा उसकी देखकर शिवजीने कहा तुम ऐसी प्रतिज्ञा करो कि फिर अभिमान न करेंगे तो तुम्हारा प्राण बचेगा जब इन्द्रने उनके भय से वही प्रतिज्ञा की तब

महादेव सिंहासन परसे उतरकर इन्द्रको पर्वतकी कन्दरामें लेगये वहां जाकर इन्द्रने क्या देखा कि चार और पुरुष इन्द्ररूपी उस जगह बैठे हैं उनको देखतेही इन्द्र घबड़ा कर जहां तक पहुँचा था उसी जगह पर मारे भयके चुपचाप खड़ा होगया तब शिवजीने इन्द्रसे कहा जिसतरह तैंने गर्व किया उसी तरह इन चारों मनुष्योंको भी अहंकार हुआ था इसी कारण यह लोग कन्दरा में बन्द हैं अब मैं नारायणजीसे चाहता हूं कि तुम इन चारों समेत संसारमें जाकर जन्म लो यह शाप सुनतेही चारों मनुष्य शिवजीके चरणोंपर गिरकर अतिविलाप करने लगे तब भोलानाथने कहा तुमलोग संसार में जन्म लेकर शुभकर्म करोगे व बड़े बलवान् होकर तुम्हारे हाथसे बहुत शूरवीर युद्धमें मारेजावेंगे यह सुनकर उन्होंने विनय किया हे महाप्रभो आपकी आज्ञानुसार जन्म हमारा मर्त्यलोकमें अवश्य होगा पर ऐसी दया कीजिये जिसमें देवतोंके वीर्य से मनुष्यतन पावैं शिवजीने कहा बहुत अच्छा ऐसाही होगा इसलिये वह पांचों धर्मराज व पवन व इन्द्र व अश्विनीकुमार देवतों के वीर्य से युधिष्ठिर व भीमसेन व अर्जुन व नकुल व सहदेव नाम उत्पन्न हुये व जिस स्त्री के साथ इन्द्र पर्वतपर गया था उस मायारूपी स्त्रीसे शिवजीने कहा तूभी मनुष्यतनमें उत्पन्न होकर इन पांचों की पत्नी होगी सो हे राजन् वही स्त्री आनकर तेरे यहां द्रौपदी नाम कन्या हुई और उन्हीं पांचों इन्द्रोंने राजा पांडुके घर जन्म लिया है सो तुम इस बातकी कुछ चिंता अपने मनमें मत करो यह हाल सुनकर राजा द्रुपदका संदेह छूटगया व कोई कोई ऋषीश्वर ऐसा लिखते हैं कि द्रौपदीने महादेव जीका तप किया था जब शिवजीने प्रसन्न होकर उससे कहा तू क्या चाहती है तब द्रौपदीने पांच बेर पति पति अपने मुखसे कहा इसलिये महादेवजीने उसको ऐसा वरदान दिया कि तू पांच मनुष्योंकी स्त्री होगी यह सुनकर द्रौपदी बोली महाराज मैंने पांच पति होने वास्ते तुम्हारा तप नहीं किया था तब शिवजीने कहा तैंने पांच बेर अपने मुखसे भर्तार भर्तार मुझसे मांगा इस लिये मैंने तुझको पांच स्वामी दिये कदाचित् एक बार कहती तो हम तुझे एक पुरुष देते अब जो वचन मेरे मुखसे निकला वह

फिर नहीं सक्ता तू धैर्य रख तेरे पांचों पति आपसमें झगड़ा नहीं करेंगे व तेरे भाग्य में इसीतरह लिखा था व कोई कोई महापुरुषोंने ऐसा भी कहा है कि एक गौ रास्ते से चली जाती थी उसे देखकर पांच सांड़ कामातुर होकर उस गौके पीछे दौड़े सो द्रौपदी यह दशा देखकर हँसने लगी तब उस गौने द्रौपदी को ऐसा शाप दिया कि तू मुझे देखकर हँसती है इसलिये तूभी पांच पुरुषों की स्त्री होगी इसी कारण द्रौपदी के पांच पुरुष हुये थे ॥

इति श्रीनवमस्कन्धस्समाप्तः ॥

दशवां स्कन्ध ॥

श्रीकृष्णावतार की लीला व कथा ॥

दो० जन्म मरणसे रहित हैं नारायण करतार । हरिभक्तनके हेतुसों लेत भूमि अवतार ॥
जब पृथ्वी पर होत हैं अधिक पाप विस्तार । तबहीं सगुणै धरत हैं एकरूप अवतार ॥
युग द्वापरके अन्त में कंस कियो जब राज । साधु ऋषीश्वर दुख भयो दैत्यन बढ़े समाज ॥
यज्ञ होमकी हानि करि परजाको दुख दीन । ऐसो पाप विचारकर भूमि भई आधीन ॥
जब सब देवन जाइकै कीन्हीं बहुत पुकार । तब धरि सगुणैरूपको दूरि कियो महिभार ॥

पहिला अध्याय ।

राजा परीक्षितका शुकदेवजीसे श्रीकृष्णावतारकी कथा पूछना ॥

जब राजा परीक्षितको नवमस्कन्ध कथा श्रीमद्भागवत पांच दिनमे सुननेसे ज्ञान उत्पन्न होकर अपने मुक्त होनेकी राह दिखलाई दी तब उसने हाथ जोड़के विनय किया हे शुकदेव स्वामी महाराज आपने कथा सूर्यवंशी व चन्द्रवंशी पिछले राजा व ऋषीश्वरोंकी जो लोग परमेश्वरके तप व ध्यानमें जन्म अपना बिताकर वैकुण्ठमें गये हैं कही वह कथा व श्रीनारायणजीकी महिमा सुनकर मेरे मनको बोध हुआ अब कथा यदुवंशियोंकी जिस कुलमें श्रीकृष्णजी महाराज त्रिलोकीनाथने अवतार लेकर अनेक लीला संसारमें वास्ते मुक्त होने मनुष्यों व सुख देने हरिभक्तोंके की थीं सुना चाहता हूं और आपने कहा है कि परब्रह्म परमेश्वर सदा एकरूप रहकर जन्म व मरणसे रहित हैं सो देवकीजीके पेटसे उन्होंने किसतरह जन्म लिया इस बातका सन्देह मेरे मनमें आवता है सो छुड़ा दीजिये और आपने यह भी कहा है कि बलभद्रने देवकीजी के उदरमें गर्भवास किया फिर रोहिणीजी को उनकी माता क्यों कहते हैं इसका

हालभी विधिपूर्वक वर्णन कीजिये मुझको इस कथा सुननेसे आलस्य न आकर प्रतिदिन सामर्थ्य होतीजाती है आप ज्यों ज्यों यह कथा सुनातेहैं त्यों त्यों अधिक प्यासमें अमृत पिलातेहैं जिस परमेश्वरकी स्तुति करनेमें ब्रह्मादिक देवता हार मानगये दूसरे को क्या सामर्थ्य है जो उनका गुणानुवाद वर्णन करनेसके मेरे पुरुषोंने श्रीकृष्णजीकी दयासे दुर्योधन व कर्ण आदिक बड़े बड़े वीरोंको मारके राजगद्दी पाई और जिस समय द्रोणाचार्यके बेटा अश्वत्थामाने क्रोध करके चाहा कि नाम व वंश पांडवोंका संसारमें न रक्खें व मेरा प्राण मारने वास्ते ब्रह्मास्त्र बीच पेट हमारी माताके चलाया उस समय श्यामसुन्दरने मेरी रक्षा की तीनों लोककी उत्पत्ति व पालन करनेवाले हमारे सहायक व कुलपूज्य वही श्रीकृष्णजी अविनाशी पुरुष हैं सो आप दया करके उनकी कथा सुनाइये ॥

दो० सुनिकै शुक बोले तभी राजा तू बड़भाग। माखन प्रभु सों या समय बाढ़्यो है अनुराग॥

हे परीक्षित तुमने श्यामसुन्दर की कथा पूछकर मुझे बड़ा सुख दिया अब हम निर्मल यश श्रीकृष्णजी का तुमको सुनावेंगे पर कई दिन सेतैंने अन्न व जल नहीं किया इसलिये तेरा चित्त ठिकाने न होगा सो तुझे सावधान होकर यह कथा सुनना चाहिये यह वचन सुनकर राजा बोले हे स्वामी आपने जो नवमस्कंध कथा अमृतरूपी मुझे सुनाईहै वह अमृत कानों की राह पीने से पेट मेरा भर गया इसलिये मुझे कुछ इच्छा क्षुधा व तृषा की नहीं है शुकदेवजी यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुये व परमेश्वर के चरणों में ध्यान लगाकर उनको दण्डवत किया व छठवें दिन सोमवार से कथा दशमस्कन्ध आरम्भ करके कहा हे राजन् द्वापर के अन्त में बीच वंश भजमान यदुवंशी के शूरसेन नाम बड़ा प्रतापी राजा हुआ जिसने नवखण्ड पृथ्वी के राजों को जीतकर यश पाया व राजा शूरसेन के मरिष्या नाम स्त्री से पांच कन्या व वसुदेवादिक दश पुत्र उत्पन्न हुये और वसुदेवजी बड़े बेटे ने पहिला विवाह अपना रोहिणी नाम बेटी राजा रोहिण से किया वह सब सत्रह पटरानी वसुदेवजी की थीं जब उन्होंने अठारहवीं शादी अपनी देवकी नाम बेटी देवक व चचेरी बहिन

राजा कंससे किया तब यह आकाशवाणी हुई कि देवकीके आठवें गर्भ से राजा कंस का मारनेवाला उत्पन्न होगा जब ऐसी आकाशवाणी सुनकर कंसने वसुदेव व देवकी को कैद किया तब परब्रह्म परमेश्वर ने श्रीकृष्णनाम से वहीं जन्म लिया इतनी कथा सुनकर राजा ने पूछा कि महाराज किसतरह कंस उत्पन्न हुआ व क्योंकर श्यामसुन्दर मथुरा में जन्म लेकर गोकुल में गये वह कथा विधिपूर्वक वर्णन कीजिये शुकदेव जी बोले हे राजन् उन दिनों राजा आहुक यदुवंशी मथुरापुरी का राज्य करता था जब देवक व उग्रसेन नाम दो पुत्र उसके उत्पन्न हुये और वह मरगया तब उग्रसेन बड़ा बेटा उसका महाप्रतापी राजा हुआ व पवनरेखा रानी उसकी अतिसुन्दरी व पतिव्रता आठोंपहर अपने स्वामी की आज्ञा में रहती थी एक दिन रानी पवनरेखा रजस्वला स्नान से शुद्ध होकर अपने पति की आज्ञानुसार सहेलियों समेत वनविहार करने गई तो वहां पर अतिउत्तम फल व फूल लगे होकर अनेक रंगके पक्षी सोहावनी बोलियां बोलते थे व ठंढी मन्द सुगन्ध पवन बहकर एक ओर यमुनाजी पहाड़ के नीचे लहरें लेती थीं ऐसी शोभा देखतेही पवनरेखा रथ से उतर कर वनविहार करनेलगी जब वह घूमती फिरती हुई सहेलियों से अलग होकर एक जंगल घटाटोप में अकेली जा पहुँची तब हरिइच्छा से अचानक उस जगह द्रुमलिक नाम राक्षस भी घूमता हुआ निकला और वह पवनरेखा का रूप देखते ही उस पर मोहित होगया जब उसने भोग करने की इच्छा से अपना स्वरूप राजा उग्रसेन के समान बनालिया व सामने आनकर रानी से भोग करना चाहा तब पवनरेखा दिनको प्रसंग करना अधर्म विचारकर बोली महाराज दिनको भोग करने में लज्जा व धर्म छूटकर पाप होता है इसलिये प्रसंग न करना चाहिये इसी तरह अनेक बातें कहकर पवनरेखा ने अपने को बचाना चाहा पर द्रुमलिक राक्षस ने जो काम के वश होरहा था रानी का हाथ बरजोरी पकड़ लिया व पृथ्वी पर गिराकर उसके साथ भोग किया व पवनरेखा भी उसको अपना पति समझकर चुप होरही ॥

दो० जैसी हो होतव्यता तैसी उपजै बुद्धि। होनहार हिरदै बसै बिसरि जाय सब सुद्धि॥

हे राजन् जब डुमलिक भोग करने उपरांत अपना राक्षस रूप बनाकर रानीके सम्मुख खड़ा होगया तब पवनरेखा उसको देखतेही अतिलज्जित व शोचित होकर बड़े क्रोधसे बोली हे राक्षस अधर्मी चाण्डाल तैंने यह क्या छल करके मेरा सत खोदिया तेरे माता व पिता व गुरुको धिकार है जिसने तुझे ऐसा ज्ञान सिखलाया तेरी माता ऐसा कुपूत जनने से बांझ रहती तो अच्छा होता जो लोग मनुष्यका तन पाकर किसी का सत व धर्म बिगाड़ देतेहैं उनको अनेक जन्म नरक भोगना पड़ताहै डुमलिक यह वचन सुनकर बोला हे पवनरेखा तू क्रोध करके मुझे शाप मत दे तेरी कोख बन्द देखकर मुझको बड़ा शोच था सो आज छूटा मैंने अपने धर्मका फल तुझे दिया मेरे भोग करने से तुझको गर्भ रहकर बड़ा प्रतापी पुत्र उत्पन्न होगा और वह अपनी भुजा के बल से नवखण्ड पृथ्वी के राजों को जीतकर अकेला चक्रवर्ती राज्य करैगा व परब्रह्म परमेश्वर श्रीकृष्ण नाम पृथ्वी पर अवतार लेकर उससे लड़ैंगे व मेरा नाम पिछले जन्म कालनेमि था लड़ती समय हनुमान्जी के हाथसे मारागया अब डुमलिक राक्षसका जन्म पाकर तुझको बेटा दिये जाता हूं तुम किसी बातकी चिंता मत करो ऐसा कहकर डुमलिक अपने घर चला गया और यह बात सुन-कर पवनरेखाने समझा कि इच्छा परमेश्वरकी इसीतरह पर थी होनेवाली बात विना हुये नहीं रहती ऐसा विचारकर उसने भी अपने मनको धैर्य दिया जब सहेलियां रानीको मिलीं तब पवनरेखा का रंग व शृङ्गार बिगड़ा हुआ देखकर एक सहेली बोली अय रानी इतना विलंब तुमको कहां लगा व तुम्हारी यह क्या दशा बनी है यह सुनकर रानीने कहा जब तुम सबोंने मुझे इस वनमें अकेली छोड़ दिया तब एक वानर ने आनकर मुझको ऐसा सताया जिसके डर से अभीतक मेरा कलेजा धड़कता है इसी कारण मेरी यह दशा हुई यह बात सुनतेही सब सहेलियां घबड़ा गईं और रानी को रथपर बैठाकर राजमंदिर पर लेआईं दश महीने उपरांत माघसुदी तेरस बृहस्पति के दिन जिस समय रानी के पुत्र उत्पन्न हुआ उस समय ऐसी

आंधी चली कि पृथ्वी कांपने लगी व हजारों वृक्ष गिरपड़े और अँधियारा होने व बादल गर्जने व बिजुली चमकने से दिन रात के समान होकर तारे टूटने लगे व राजा उग्रसेन ने पुत्र उत्पन्न होने का बड़ा उत्सव किया व याचकों को बहुत दान व दक्षिणा दिया जब ज्योतिषियों से बालक की कुण्डली का फल पूंछा तब पण्डितोंने कहा महाराज अपने पुत्र का नाम कंस रक्खो यह बालक अति बलवान् हो के राक्षसों को अपने साथ लेकर राज्य करैगा व देवता व ब्राह्मण व साधु व सन्त व हरिभक्तलोग इसके हाथसे दुःख पावैंगे व तुम्हारा राजसिंहासन छीनकर प्रजाको बड़ा दुःख देगा जब इसके अधर्म करनेसे पृथ्वी दुःख पावैगी तब परब्रह्म परमेश्वर अवतार लेकर इसको अपने हाथसे मारैंगे यह वचन सुनकर राजा पहिले बहुत उदास हुये फिर इच्छा परमेश्वरकी इसीतरह पर जानकर संतोषकिया व ज्योतिषियों को सन्मानपूर्वक बिदा करके पुत्र का पालन करने लगे जब कंस पांच छः वर्षका हुआ तब अनेक तरहका उपद्रव प्रजापर करने लगा कभी मथुरावासी लड़कों को बरजोरी पकड़कर बनमें लेजाता व मारकर लोथ उनकी पहाड़की खोहमें रख आवता व जो लोग उससे सयानेथे उनकी छातीपर चढ़के गला दबाकर मार डालता व कभी लड़कोंको नहानेवास्ते अपने साथ यमुनाकिनारे लेजाकर पानीमें डुबा देता था जब इसतरहका पाप कंस करनेलगा तब मथुरावासी अपने अपने लड़कोंको घरमें छिपाकर रखने लगे और सब प्रजा उसके हाथसे दुःखी होकर आपसमें यह कहते थे कि कंस पापी राजा उग्रसेन के वीर्य से उत्पन्न नहीं हुआ यह कोई पापी धर्मात्मा राजाके घर जन्म लेकर प्रजाको दुःख देताहै जब राजाने प्रजाको दुःख देनेका हाल सुना तब कंसको बहुत डाटकर समझाया कि प्रजाको दुःख मत दे पर वह कहना राजाका न मानकर जब प्रतिदिन अधिक प्रजाको पीड़ा देने लगा तब राजाने उसकी यह दशा देखकर बड़े शोचसे मनमें कहा ऐसे अधर्मी पुत्र होनेसे मैं विना सन्तानके अच्छा था जिसके कुपूत सन्तान उत्पन्न होती है उसका संसारमें यश व धर्म नहीं रहता इसीतरह बहुत चिन्ता करके

राजा उग्रसेन पछताया करते व कंसपर कुछ वश उनका नहीं चलता था जव कंस आठवर्ष का हुआ तव अकेला मगध देशमें जाकर जरासंधसे जो वड़ा प्रतापी राजा था कुश्ती लड़ा जव जरासंधने उसको अपने से वलवान् जानकर समझा कि हम इससे युद्धमें न जीतैंगे तव हार मानकर दो वेटी अपनी कंसको विवाह दीं जव कंस दोनों स्त्रियों को साथ लेकर मथुरापुरीमें आया तव अपने पिता राजा उग्रसेनसे शत्रुता करके कहा तुम रामनाम छोड़कर महादेवजीका नाम जपा करो यह सुनकर राजा बोले मेरे कर्ता धर्ता श्रीभगवान्जी हैं उनका स्मरण छोड़देउँ तो भव-सागर किसतरह पार उतरूंगा जव कंसने यह वचन पिताका सुना तव क्रोधित होकर राजगद्दी उनकी छीनली व आप सिंहासनपर वैठकर राज्यकाज करने लगा व अपने राज्यमें ऐसा ढिंढोरा पिटवा दिया कि कोई मनुष्य परमेश्वरका नाम न लेवे और यज्ञ व होम व दान व धर्म व तप व जप नारायणजीका न करै जो कोई मेरी आज्ञा न मानैगा उसको हम मरवा डालेंगे जव ऐसा ढिंढोरा पीटनेसे उसके राज्यमें सव शुभकर्म वन्द होगये व राजा कंस गौ व ब्राह्मण व हरिभक्तोंको दुःख देकर दैत्योंके सम्मत प्रमाण राज्य करने लगा व उसने पृथ्वीके राजों को अपने वलसे जीत लिया तव एकदिन अपनी सेना साथ लेकर राजा इन्द्रसे युद्ध करने चला उस समय एक मंत्रीने जो उग्रसेनके समय का नौकर था कंससे कहा हे पृथ्वीनाथ विना सौ अश्वमेध यज्ञ किये इन्द्रासन नहीं मिलता आप अपने वलका घमंड न कीजिये देखो रावण व कुम्भकर्णको अहंकारने कैसा खो दिया जिनके कुलमें कोई पानी देनेवाला नहीं रहा यह वचन सुनकर वह इन्द्रसे लड़ने नहीं गया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी वोले हे परीक्षित जव पृथ्वीपर राजा कंसके डरसे यज्ञादिक शुभकर्म सवने करना छोड़दिया व ब्राह्मण व ऋषीश्वर राक्षसों के हाथसे दुःख पाने लगे व पृथ्वी ऐसे अधर्मियोंका वोझ सहने नहीं सकी तव उसने गौरूप धरकर रोती पुकारती हुई राजा इन्द्र के सामने जाकर विनय किया महाराज संसारमें कंस व राक्षसलोग वड़ा पाप करते हैं उन्हींके डरसे हरिभजन व

यज्ञादिक शुभकर्म कोई नहीं करता मुझे आज्ञा हो तो मर्त्यलोक छोड़कर पातालको चली जाऊं यह वचन सुनतेही इन्द्रने देवतों समेत ब्रह्माके पास जाकर सब हाल कहा ब्रह्माजी उन सबोंको साथ लेकर कैलास पर्वतपर इस इच्छा से गये कि महादेवजी राक्षसोंके दण्ड करने योग्य हैं वे उन्हें मारकर पृथ्वीका दुःख छुड़ावेंगे जैसे ब्रह्मा वहां पहुँचे वैसे महादेव जी अन्तर्यामी बोले हे ब्रह्मा इस पृथ्वी के भार उतारनेकी सामर्थ्य मुझे व तुमको नहीं है इसका दुःख छुड़ानेवाले आदिपुरुष भगवान्‌जी हैं पृथ्वीका बोझा वही उतारेंगे यह बात कहकर शिवजी ब्रह्मा आदिक को साथ लिये हुये क्षीरसागरके किनारे चले गये वहां हाथ जोड़कर सब किसी ने यह स्तुति परब्रह्म परमेश्वर की की हे करुणानिधान किसको सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा वर्णन करनेसके आपने मत्स्यरूप धारण करके शंखासुर दैत्यको मारकर वेद समुद्रसे बाहर निकाला व कच्छपरूप होके मंदराचल पहाड़ अपनी पीठपर लेकर चौदहों रत्न क्षीरसागर से प्रकट किये व वाराह रूप धरकर पृथ्वीको पातालसे बाहर निकाल लाये और वास्ते रक्षा करने देवतोंके वामन रूप होकर राजा बलिसे पृथ्वीदान लिया व परशुराम अवतार लेकर सब क्षत्रियोंको वध किया व सातोंद्वीपकी पृथ्वी उनसे छीनकर ब्राह्मणोंको दान करदिया व रामचन्द्र अवतार धरकर रावण आदिक राक्षसोंको मारडाला और जब जब पृथ्वीपर दैत्य व राक्षस व पापी राजा गौ व ब्राह्मण व हरिभक्तोंको दुःख देते हैं तब तब आप उनकी रक्षाके वास्ते सगुण अवतार लेकर अधर्मियोंको मारते हैं सो इन दिनों पृथ्वी कंसादिकके पाप करने से दुःखी होकर तुम्हारे शरण आई है सो उस पर दयालु होकर रक्षा कीजिये गौ व ब्राह्मण व हरिभक्तोंको सुख दीजिये जब ब्रह्मादिक देवतोंने इसतरह पर स्तुति नारायणजीकी की तब यह आकाशवाणी हुई हे ब्रह्मा मुझे पृथ्वीका दुःख मालूम हुआ इस-लिये हम सगुण अवतार लेकर उसका भार उतारेंगे मैं जन्म व मरणसे कुछ प्रयोजन नहीं रखता पर वसुदेव व देवकीने पिछले जन्म मेरा तप व ध्यान करके मुझसे ऐसा वरदान मांग लियाहै कि हम उनके पुत्र होवें और इसी

तरह नन्द व यशोदाने भी मेरा तप करके यह वरदान मांगाथा कि तुम्हारी बाललीला का सुख देखैं इसलिये हम उनकी इच्छा पूर्ण करने के वास्ते मथुरामें वसुदेव व देवकीजीके घर जन्म लेवेंगे और वहांसे गोकुलमें जाकर बालचरित्र अपना नन्द व यशोदाको दिखलावेंगे व कंसादिक अधर्मी राजोंको मारकर अपने भक्तोंको सुख देवेंगे सो तुम देवी व देवतालोग व्रज व गोकुल व मथुरा में पहिलेसे जाव व यदुवंशीकुल व ग्वालवंशमें हमारी लीलाका सुख देखने वास्ते जन्म लेव पीछेसे हमभी चार स्वरूप धरकर अवतार लेवेंगे सब देवता यह आकाशवाणी सुनतेही बड़े हर्षसे अपने अपने घर आये जब ब्रह्माने हाल आकाशवाणी का पृथ्वीको समझादिया तब वह भी आनन्द होकर अपने स्थान पर चली आई व उनकी आज्ञानुसार देवता व मुनि व किन्नर व गन्धर्व आदिक अपनी स्त्रियों समेत मथुरा व गोकुल में जन्म लेकर यदुवंशी व ग्वालबाल कहलाये व चारों वेदोंकी ऋचाओंने भी ब्रह्मासे आज्ञा लेकर गोपियोंका जन्म लिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् अब हम देवकीके विवाह का हाल कहतेहैं सुनो देवकनाम जो उग्रसेन का भाईथा उसके छः कन्या व चार पुत्र हुये सो उसने अपनी छवों बेटी वसुदेवजी को विवाह दीं जब देवकी नाम सातवीं कन्या उसके यहां उत्पन्न हुई तब देवता अतिहर्षित हुये व राजा उग्रसेनके यहां कंसादिक दश पुत्रोंने जन्म लिया जब देवकी विवाहने योग्य हुई तब देवकने राजा कंस से आज्ञा लेकर शुभ साइति में उसके विवाहका तिलक वसुदेवजीको भेज दिया जब राजा शूरसेन पिता वसुदेवके तिलक लेकर बड़ी धूम धाम से मथुरामें वसुदेवजी को व्याहन आये तब राजा कंस अपने बाप व चाचा व सेना को साथ लेकर आगे से गया व बरातियों को बड़े आदर भावसे जाकर जनवासा दिया व सबका शिष्टाचार यथायोग्य किया व वसुदेवजी को मड़वेमें लेजाकर देवकी का विवाह विधिपूर्वक उनकेसाथ करदिया व पन्द्रह हजार घोड़ा व चार हजार हाथी व अठारहसौ रथ व दोसौ दासी व दास व भूषण व वस्त्र व द्रव्यादिक बहुत सा दहेज में देकर बरातियोंको भी सन्मानपूर्वक बिदा किया ॥

दो० तब चढ़ाय रथ देवकी आप भयो रथवान। पहुँचावन अतिप्रीतिसों चल्यो सहित अभिमान॥

जब कंस वसुदेव व देवकी का रथ हांकता हुआ थोड़ी दूर मथुरा के बाहर गया तब यह आकाशवाणी हुई हे कंस तू जिसको बड़े हर्षसे पहुँचाने जाता है उसके पेट से आठवां लड़का तेरा मारनेवाला उत्पन्न होगा जब यह आकाशवाणी सुनकर कंस मारे डर के कांपने लगा व घोड़ों की रास हाथसे गिरपड़ी तब उसने विचारा कि कोई कैसाही नातेदार हो पर अपने प्राणसे प्यारा नहीं होता इसलिये देवकी को अभी मार डालना चाहिये न वह रहैगी न उसके आठवां बालक मेरा मारनेवाला उत्पन्न होगा यह बात विचारकर कंस रथ के भीतर घुसगया व देवकी के शिरके बाल पकड़कर उसे नीचे खींचलिया व नंगी तलवार निकाल कर क्रोधसे दांत पीसता हुआ यों कहने लगा कि जिस वृक्षमें विषसमान फल लगे उसको जड़से पहिले उखाड़ डालना चाहिये जब वह वृक्ष नहीं रहैगा तब उसमें फूल व फल किस तरह लगेंगे इसलिये अभी देवकी को मारडालूं तो निर्भय राज्य करूं यह दशा देखकर जितने मनुष्य उस समय वहां थे सब कोई चिन्ता करके रोनेलगे पर राजा कंस के डर के मारे किसी की सामर्थ्य नहीं थी जो कुछ कहनेसकै तब वसुदेवजी ने विचार किया कि कंस अज्ञान को पाप और पुण्य का कुछ विचार नहीं है इस समय मेरे क्रोध करने से देवकी का प्राण जायगा इसलिये क्षमा करना उचित है किस वास्ते कि जब बलवान् शत्रु क्रोध करै तब क्षमा करके वह अवसर बचा जाना चाहिये जिस तरह ठण्ढा लोहा गर्म लोहे को काट डालता है उसी तरह क्षमा करनेवाले मनुष्य अवसर पाकर अपने वैरी को जीत लेते हैं ऐसा विचारकर वसुदेव ने राजा कंस के सामने हाथ जोड़कर विनय किया हे पृथ्वीनाथ संसार में तुम्हारे समान कोई दूसरा बलवान् व प्रतापी नहीं है जो आपकी बराबरी करनेसकै जहां सब लोग तुम्हारी छाया में रहते हैं वहां आपको यह अनुचित है जो तुम्हारे ऐसा शूरवीर होकर अपनी बहिन पर विना अपराध खड्ग चलावै स्त्रीवधका बड़ा पाप है ऐसे अधर्म करनेवालों के अनेक पुरुषे नरक में पड़ते हैं जब मनुष्य

यह जाने कि हम नहीं मरैंगे तब पाप करै तो उचितहै संसारमें जो जन्मा वह एक दिन अवश्य मरेगा कदाचित् अपना शरीर रहने के वास्ते अनेक उपाय करै पर यह तनु किसी तरह रहने नहीं सक्ता व तरुणाई व राज्य भी कुछ काम न आनकर केवल यश व अपयश संसार में रह जाता है॥

क० दाता को महीप मानधाता औ दिलीप ऐसे जाके यश आज हूं लौं द्वीप द्वीप छाये हैं।
बलि ऐसो बलवान को भयो जहान बीच रावण समान को प्रतापी जग जाये हैं॥
बानकी कलान में सुजान द्रोण पारथ से जाके गुण दीनदयाल भारत में गाये हैं।
कैसे कैसे शूर रचे चातुरी विरंचिजू की फेर चकचूरकर धूर में मिलाये हैं॥

दो० अर्बखर्ब लौं द्रव्य है उदय अस्तलौं राज। तुलसी जो निज मरण है तौ आवै क्यहि काज॥

यह बात सुनकर कंस बोला हे वसुदेव तुमने भी तो आकाशवाणी सुनी है इसका उपाय पहिले से करना चाहिये जिसमें हम न मरैं जो मैं आज देवकी को नहीं मारता तो यह चिन्ता मेरी न छूटैगी और इसके बदले हम तुम्हारा विवाह दूसरी कन्या से करदेवैंगे व इसको मारकर निश्चिन्त होजाऊंगा यह वचन सुनकर ब्राह्मण व ऋषीश्वरों ने जो उसके साथ थे कंस से कहा वेद व शास्त्र में बहिन का मारना बड़ा पाप लिखा है ऐसा अधर्म करना तुमको न चाहिये जब कंस ने ब्राह्मणों का समझाना भी नहीं माना तब वसुदेवजी ने विचारा कि यह पापी राजा अपनी टेक पर है कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिसमें देवकी इसके हाथ से बचजावै ईश्वर जाने देवकी के कब बालक उत्पन्न हो या इस बीच में कंस पापी मरजावै इस समय देवकी जो मारी जाती है इसलिये इसका बालक देना करार करके देवकीका प्राण बचा लेना चाहिये यह अवसर बीत जावै पीछे समझा जायगा ऐसा विचार कर वसुदेव ने कंस से कहा महाराज एक बिनती मैं करता हूं सुनिये आकाशवाणी होने के अनुसार आप देवकी के पुत्रसे अपने प्राण का डर रखते हैं कुछ देवकी से तो खटका नहीं है इसलिये देवकी को विना अपराध जानकर छोड़ दीजिये इसके जो बालक उत्पन्न होगा उसे मैं तुम्हारे पास पहुँचा दूंगा इस बातके साक्षी सूर्य व चन्द्रमा हैं कंसने यह बात सुनतेही होनहार के वश होकर वसुदेवजी से वचन लेके देवकी को छोड़ दिया और उनसे बोला इस समय तुमने

मुझे अपराध से बचाया ऐसा कहकर उसी जगह से वसुदेव व देवकी को बिदा करदिया और आप राजमन्दिर पर चला आया व वसुदेवजी देवकी समेत अपने स्थानपर पहुँचे जब कुछ दिनों में देवकी के पुत्र उत्पन्न हुआ व वसुदेवजी ने उसी समय रोता हुआ बालक लाकर कंस के आगे रख दिया तब कंस ने हँसकर कहा हे वसुदेवजी तुम बड़े सच्चे हो तुमने हमसे कुछ कपट नहीं किया हमारे भले वास्ते अपने पुत्र का मोह छोड़ कर रोता हुआ बालक मेरे सामने रख दिया इससे मुझे कुछ डर नहीं है तुम अपने घर लेजाव वसुदेवजी प्रसन्न होकर उसे अपने घर लेचले पर कंसको अधर्मी समझकर पीछे देखते व यह विचार करते जाते थे कदाचित् बुलाकर मार न डाले जब वसुदेवजी पुत्र लेकर चले गये तब कंसने अपनी सभावालोंसे कहा आकाशवाणीके प्रमाण मुझको आठवें बालक से मरने का डर है इसे वृथा मारकर किसवास्ते पाप लेवें उसी समय हरिइच्छा से नारद मुनि वहां आन पहुँचे जब कंसने उनको बड़े आदरभाव से बैठाला व चरण उनका धोकर विधिपूर्वक पूजन किया तब नारदजीने कहा हे कंस तैंने वसुदेवका बालक क्यों फेर दिया यह तू नहीं जानता कि वसुदेवजीकी सेवा करनेवास्ते सब देवता व ऋषीश्वरोंने गोकुल व मथुरा में जन्म लियाहै व देवकी से आठवें गर्भ में पृथ्वी का भार उतारने वास्ते श्रीकृष्णजी अवतार लेकर तुमको राक्षसों समेत मारेंगे व तुम्हारे पिता आदिक सब यदुवंशी देवतोंका अवतार होकर तुम्हारे वैरी हैं इनको तुम अपना मित्र न समझो ऐसा कहकर नारदमुनिने आठ रेखा पृथ्वी पर खींच दीं व कंस को दिखलाकर गिनाया तो दोनों ओर से आठवीं लकीर अन्तकी ठहरी तब नारदजीने कंससे कहा यह नहीं जानते कौन आठवें बालक से तेरी मृत्यु है जब यह बात समझाकर नारद मुनि चले गये तब कंसने उसी समय वसुदेवजी को बालक समेत बुला भेजा व लड़का लेकर पत्थरपर पटकके मारडाला व वसुदेव देवकी को कैद किया व अपने माता पिताके समझाने पर भी न मानकर कहा मैं अपना प्राण बचाने वास्ते देवकीके पुत्रोंको मार डालूंगा व कंसने उग्रसेन अपने

बापको भी वसुदेव व देवकी का सहायक व अपना शत्रु समझकर उन पर चौकी व पहरा कर दिया व प्रलम्ब व बकासुर व केशी व अघासुर आदिक राक्षसों को बुलाकर आज्ञा दी कि नारदजी हमसे कह गये हैं कि सब ऋषीश्वर व देवतोंने मथुरा व गोकुलमें आनकर जन्म लिया है उन्हीं लोगों में श्रीकृष्णजीभी अवतार लेवैंगे सो तुम लोग जितने यादववंशी मथुरा व गोकुल में पावो सबको मारडालो ॥

दूसरा अध्याय।

श्रीकृष्णजीका देवकी के उदरमें गर्भवास करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित इसीतरह पाँच पुत्र और देवकीके उत्पन्न हुये सो वसुदेवजीने अपने वचन प्रमाण उनको भी कंसके पास जाकर पहुँचा दिया उसने उनको भी मार डाला व कंसकी आज्ञानुसार प्रलम्ब व बकासुर आदिक राक्षसों ने मथुरा में जाकर जितने यदुवंशियोंको खाते व पीते व सोते व बैठते व चलते व फिरते पाया सबको बांधकर लेआये व कंसने किसी को पानी में डुबाकर व बाजोंको आग में जलाके व किसी का गला दबाकर मार डाला व जो यदुवंशी उसके मारनेसे बचे वह लोग अपने लड़के बालों समेत मथुरा नगर छोड़कर पांचाल देश आदिक में जा बसे व वसुदेवजीने रोहिणी नाम अपनी स्त्री को नन्दजी अपने मित्र के यहां गोकुलमें भेज दिया व नन्दजीने उसको बड़े सन्मान से अपने यहां रक्खा इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूछा महाराज नारदमुनि ऐसे ज्ञानी व हरिभक्तने जो कंसकेपास आनकर अपने सम्मत से वसुदेवजी के बालक व यदुवंशियोंका वध कराया यह क्या कारण था शुकदेवजीने कहा हे राजन् नारदमुनि ने इस वास्ते यह पाप कंस के हाथ से कराया जिसमें अधर्म करने से उसके पिछले जन्मका पुण्य क्षीण होजावे व श्रीकृष्णजी जल्दी अवतार लेकर उसे मार डालें सो हे परीक्षित जब कंस देवता व ऋषीश्वरों को जिन्होंने यदुवंशीकुलमें जन्म लिया था मारकर अनेक तरहका दुःख देने लगा व उसने छः पुत्र वसुदेवजी के व्याधाकी तरह मार डाले तब वसुदेव व देवकीने हरिचरणों का ध्यान करके बड़ी करुणासे बिनती की

कि हे महाप्रभो कंस हमको निर्वंश किये डालता है अब जल्दी सुधि ले कर इस दुःख से छुड़ाओ ॥

दो० विपतिविनाशन दुखहरण जनरंजन सुरराय। अब हमको कोऊ नहीं तुम बिन और सहाय ॥

जब इसीतरह वसुदेव व देवकी ने अति विलाप किया तब परब्रह्म परमेश्वर अन्तर्यामी दीनदयालुने यह विचारा कि देवता व मुनि आदिक मथुरा व गोकुलमें जन्म ले चुके अब पहिले लक्ष्मणजी बलभद्र नाम से फिर हम वासुदेव नाम होकर भरतजी प्रद्युम्न व शत्रुघ्न अनिरुद्ध व सीता जी रुक्मिणी नाम से संसार में अवतार लेवें ऐसा विचारकर उन्होंने गर्भ बलभद्रजीका देवकीके पेटमें स्थिर कर दिया व अपनी आंखसे योगमाया देवीरूपको प्रकट किया जब वह देवी नारायणजीके सामने हाथ जोड़कर खड़ी हुई तब उससे कहा तुम भी मथुरापुरीमें जहां राजा कंस मेरे भक्तों को दुःख देता है जावो और सातवां गर्भ बलभद्रजीका जो देवकी के पेट में है सो निकालकर रोहिणी के उदर में धर देव और यह भेद कोई दुष्ट न जानै इस कामके करने से कलियुग में तेरा नाम दुर्गादेवी प्रकट होकर बड़ा माहात्म्य होगा व संसारी जीव तेरी पूजा करने से अपना मनोरथ पावैंगे व संसार में बलभद्रजीका नाम संकर्षण व बलराम आदिक व तेरे भी अनेक नाम प्रकट होंगे यह काम करने उपरान्त तू यशोदा के गर्भसे जन्म ले और हम भी वसुदेवजी के घर जन्म लेकर गोकुल में आते हैं यह बात सुनतेही योगमाया परब्रह्म परमेश्वरकी परिक्रमा लेकर मोहनी-रूपसे मथुरामें आई व देवकीजीके पेटसे बलभद्रजीका गर्भ निकाल लिया व गोकुल में लेजाकर रोहिणीके पेटमें धर दिया पर यह हाल रोहिणी को कुछ नहीं मालूम हुआ व योगमायाने वसुदेव व देवकी को स्वप्न दिया कि मैंने तुम्हारा लड़का गर्भ से निकालकर रोहिणी के पेटमें धर दिया है तुम किसी बात का शोच मत करना ऐसा स्वप्न देखतेही वसुदेव व देवकी नींदसे जागकर आपस में कहने लगे भगवान्ने यह बात बहुत अच्छी की पर गर्भपात होनेका हाल कंससे कहला देना चाहिये नहीं तो पीछे से न मालूम वह क्या दुःख देवै जब वसुदेवजीने ऐसा विचारकर एक

चौकीदार से गर्भ गिरजाने का हाल कंसको कहला भेजा तब उसने प्रसन्न होकर चौकीदारसे कहा कि आठवें गर्भ रहने का हाल तुरन्त कहना इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब श्रावण सुदी चतुर्दशी बुधवार को बलभद्रजीने रोहिणी के पेट से गोकुल में जन्म लिया व योगमाया ने यशोदा के उदर में जाकर गर्भवास किया व वैकुण्ठनाथ जगत् के मंगल करनेवाले देवकी के गर्भ में आये तब उनका प्रकाश आवने से मुखारविन्द वसुदेव व देवकी का सूर्य के समान चमकने लगा ॥

दो० माखनप्रभु गर्भ में वास कियो जब आय। शिव ब्रह्मादिक आनकर अस्तुति करें सुनाय॥

अपने कैद होने से पहिले एक दिन देवकी व्रत रखकर यमुना स्नान करने वास्ते गई थी वहां यशोदा से भेंट हुई जब दोनों ने आपस में कंस के दुःख देने की चर्चा की तब यशोदा ने देवकी से कहा मैं अपना लड़का तुझे देकर तेरा बेटा पालन करदूंगी यह करार दोनों आपस में करके अपने घर चली आई थीं जब देवकी के आठवां गर्भ रहा तब कंसने यह हाल सुनतेही वन्दीखाने में जाकर बड़े बड़े राक्षसों की चौकी वहां बैठालदी व वसुदेव से कहा तुम अपने मनमें कुछ कपट न रखकर आठवां बालक जब उत्पन्न हो उसी समय मेरे पास पहुँचा देना तुम्हारे वचन के अनुसार मैंने देवकी का प्राण छोड़ दिया था ऐसा कहकर कंस ने वसुदेव व देवकी के हथकड़ी व बेड़ी डाल के कोठरी में बन्द करदिया व ताला देकर अनेक राक्षसों की चौकी वहां बैठालकर राजमन्दिर पर चला आया व उस दिन अतिभय से उपवास करके सोरहा दूसरे दिन फिर बंदीखाने में जाके वसुदेव व देवकीके मुखारविन्द का प्रकाश देखकर कहने लगा जैसा तेज इस गर्भ में दिखलाई देता है वैसा प्रकाश और गर्भों में नहीं था इसलिये जानता हूं मेरा काल इसी गर्भ में है जब राजा कंसको देवकीरूप हरिमन्दिर का दर्शन करने से ज्ञान प्राप्त हुआ तब उसने कहा कि देवकी को अभी मारडालता पर संसार के अपयश व पाप से डरता हूं ऐसा प्रतापी राजा होकर गर्भवती स्त्रीको क्या मारूं ऐसा अधर्म करने से यश व पुण्य व आयुर्बल की हानि होतीहै जो बालक जन्मेगा उसीको मारूंगा ऐसा

विचारकर वह अपने घर चला आया व रखवारी करनेवालों से कह दिया कि जिस घड़ी बालक उत्पन्न हो उसी सायत मुझे संदेशा देना व चौकी रहने पर भी अपने प्राणके डरसे नित वहां जाकर सुधि लेआता था व गर्भ का तेज देखनेसे आठोंपहर उसको खाते पीते जागते चलते फिरते बाल-रूपी मूर्ति श्रीकृष्णजीकी दिखलाई देतीथी सो उस रूपके डरसे दिन रात वह व्याकुल रहता था व वसुदेव व देवकी अपना दुःख देखकर हरिचरणों का ध्यान करते थे जब गर्भ के दिन पूरे हुये तब श्यामसुन्दरने यह स्वप्न वसुदेव व देवकीको दिया तुम शोच छोड़कर धैर्य रक्खो मैं जल्दी अवतार लेकर तुम्हारा दुःख छुड़ाता हूं जब यह स्वप्न देखकर वह दोनों जाग उठे तब देवकी ने वसुदेव से कहा धर्म छूट जावे तो कुछ डर नहीं पर इस बालक को कंस से छिपाना चाहिये यह सुनकर वसुदेवजी बोले हे प्राणप्यारी इस बन्दीखाने में पड़े हैं किस तरह छिपावें जब यह विचारकर वह दोनों अतिविलाप करके रोने लगे तब उसी सायत ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता इस रूपसे जिसमें उनको कोई न देखै वहां आये व हाथ जोड़कर वेदमंत्र से गर्भस्तुति इस तरह पर करने लगे हे परब्रह्म परमेश्वर सत्यरूप आप तीनों काल में सच्चे रहते हैं इस वास्ते हम लोग तुम्हारे शरण में आये हैं और यह संसाररूपी वृक्ष आपकी माया से उत्पन्न होकर तुम्हारे आश्रय पर रहता है इसकी रक्षा व पालन करनेवास्ते आप अनेक रूप धरकर सब जीवों को सुख देतेहैं और जो भक्त तुम्हारे नाम का स्मरण व स्वरूप का ध्यान करताहै उसके भवसागर पार उतरने में कुछ संदेह नहीं रहता और जो लोग अपने ज्ञान व तप व यज्ञादिक शुभकर्म करने का अभिमान रखते हैं और तुम्हारी भक्ति नहीं करते वह मनुष्य अवश्य धोखा खाते हैं व यज्ञादिक कर्म करनेसे मुक्ति नहीं होती व प्रकाश तुम्हारा सबके तनुमें बराबर रहकर गवाह पाप व पुण्यका होताहै व आप किसी के दुःख व सुख से कुछ प्रयोजन नहीं रखते सो हे परब्रह्म परमेश्वर आप सगुण अवतार धारण न करैं तो संसारी जीव किस नामका स्मरण करके कौन लीला को गायकर भवसागर पार उतरें आप जन्म व मरण से रहित

होकर केवल अपने भक्तों को उद्धार करनेवास्ते अवतार लेते हैं जिस तरह आपने मत्स्य व कच्छप आदिक अवतार धारण किया था उसी तरह अब भी पृथ्वी का भार उतारने व हरिभक्तों को सुख देने व अधर्मी व राक्षसों को मारनेवास्ते यदुकुल में अवतार लेकर अपनी लीला कीजिये देवतालोग यह स्तुति करके देवकी व वसुदेव से आकाशवाणी की तरह बोले जिनके दर्शन वास्ते हम लोग त्रिभुवन में घूमते हैं और उनका दर्शन नहीं पाते वही आदिपुरुष नारायण तुम्हारे यहां अवतार लेकर सब दुष्टों को मारैंगे व पृथ्वी का बोझा उतार कर तुमको सुख देवैंगे व तुम्हारी कृपा से उनका दर्शन हमैं भी मिलैगा अब तुम लोग कंस से मत डरो उसकी मृत्यु निकट आई है जब वसुदेव व देवकी ने इस तरह स्तुति सुनकर किसी को आंख से नहीं देखा तब उन्हें आश्चर्य मालूम होकर यह विश्वास हुआ कि अब जल्दी नारायणजी आनकर हमारा दुःख छुड़ावैंगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् इस तरह स्तुति करके ब्रह्मादिक देवता अपने अपने स्थान पर चले गये ॥

तीसरा अध्याय ।

श्रीकृष्णावतार की कथा ॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जब वैकुण्ठनाथ गर्भ में आये तब से सब छोटे व बड़ों को परमानन्द होगया व सब वृक्षों में ऋतु व अनृतु के फूल व फल लगकर नदी व नाले पानी से भर गये व मोर आदिक पक्षी आपस में कलोल व विहार करने लगे व सबके घर में मंगलाचार होकर ब्राह्मणों ने यज्ञ करना आरम्भ किया व अग्निहोत्र की आग आपसे बरकर साधुओं का चित्त प्रसन्न होगया व दशों दिशा के दिग्पाल व देवता आनन्द होकर मथुरापुरी पर फूल बरसावने लगे व आकाश में घटा छागई किन्नर व गन्धर्वों ने बाजन बजाकर परमेश्वर का भजन गाना आरम्भ किया व अप्सरा अपने अपने विमानों पर नाचने लगीं जिस समय ऐसी शोभा चारों ओर फैल रही थी उसी समय भादों बदी अष्टमी बुधवार रोहिणी नक्षत्र में आधीरात को श्रीकृष्ण महाराज ने इस स्वरूप से अवतार लिया ॥

दो० हेमवरण पीताम्बर माथे मुकुट अनूप। शंख चक्र अम्बुज गदा धरे चतुर्भुज रूप॥

चौ० कानन में कुण्डल छवि छाजै। उर मुक्तनकी माल विराजै॥
मुख आभा कछु कही न जाई। भानु कोटि मकटे मनु आई॥

हे राजन् श्यामसुन्दर मेघवर्ण कमलनयनने इस स्वरूपसे वसुदेव व देवकी को अपना दर्शन दिया तब दोनोंने ज्ञानकी दृष्टिसे उन्हें परमेश्वर का अवतार समझा व हाथ जोड़कर विनय किया हे त्रिभुवनपति अन्तर्यामी हम तुम्हारे चरणोंको दंडवत् करते हैं जब आपकी स्तुति करनेमें ब्रह्मा व महादेव व शेष व गणेश हार मानकर तुम्हारे भेद व अन्तको नहीं पहुँचने सके तब हमारी क्या सामर्थ्य है जो आपकी स्तुति करें देवता व ऋषीश्वरोंने तुम्हारी कृपासे बड़ाई पाईहै और जब जब गौ ब्राह्मण व हरिभक्तोंके दुःख पानेसे पृथ्वीपर बोझा होताहै तब तब आप एक रूप धरकर पृथ्वीका भार उतारते हैं हमारे बड़े भाग्य थे जो आपने दर्शन देकर जन्म व मरणसे उद्धार किया अब तुम्हारे चरणों के प्रतापसे हमारा सब दुःख छूटजायगा जब यह स्तुति कहकर वसुदेव व देवकीने अपनी दुर्दशा उनसे कही और उनका दर्शन पानेसे प्रसन्न होगये तब श्रीकृष्णजी बोले कि अब तुम कुछ शोच मत करो तुमने पिछले जन्म हमारा बड़ा उग्र तप करके मेरे चरणोंका ध्यान किया था जब हमने प्रसन्न होकर अपना दर्शन दिया तब तुम ने हमसे यह वरदान मांगा कि तुम्हारे ऐसा पुत्र मेरे उत्पन्न हो सो मेरे समान दूसरा नहीं था इसलिये मैंने तुम दोनोंकी इच्छा पूर्ण करने व पृथ्वीका भार उतारनेके वास्ते अवतार लियाहै सो तुमको अपने पिछले जन्मका हाल भूलगया इसलिये पूर्वजन्मकी सुधि कराने वास्ते इस स्वरूप से मैंने तुमको दर्शन दिया अब तुम इसी समय तुरन्त मुझे गोकुलमें लेजाकर यशोदाकी गोदमें सुलादेव व एक कन्या यशोदाके उत्पन्न हुई है उसे लाकर कंसको दे देव नन्द व यशोदा ने भी मेरी बाललीला का सुख देखनेवास्ते पिछले जन्म तप कियाहै सो थोड़े दिन बालचरित्र उन्हें दिखला कर फिर कंसको मारके आनमिलूंगा तुम धैर्य रक्खो यह सुनकर देवकी बोली हे करुणानिधान यह स्वरूप अपना अन्तर्धान करलेव

ऐसा सुनतेही श्रीकृष्णजी बालक होकर रोनेलगे व उन्होंने अपनी माया ऐसी फैला दी कि वसुदेव व देवकीने वह ब्रह्मज्ञान भूलकर उस बातको स्वप्नसमान जाना तब वसुदेवजी पुत्र होनेसे अति हर्षित होकर दशहजार गौका संकल्प मनमें किया व श्रीकृष्णजीको गोदमें उठाकर छाती से लगालिया व वसुदेव व देवकी ठण्ढी सांस लेकर चिन्ता करनेलगे व देवकी ने वसुदेवजीसे कहा कि इस बालकको कहीं छिपा दीजिये तो कंसके हाथ से बचजाय तब वसुदेवजीने उसे उदास देखकर कहा हे प्रिया मैं कहां छिपाऊं जो कुछ हमारे कर्ममें लिखा है वही होगा यह वचन सुनतेही देवकी हाथ जोड़कर बोली ॥

दो० तब देवी पतिसों कह्यो नाहीं और उपाव । माखन प्रभुको गोदले गोकुलमें लेजाव ॥

हे स्वामी वहां रोहिणी आपकी स्त्री व यशोदा मेरी मित्राणी व नन्द जी तुम्हारे सखा रहते हैं वह लोग बालककी रक्षा व पालन अच्छी तरह करेंगे इतना सुनकर वसुदेवजी बोले इस बन्दीखानेसे किसतरह लेजाऊं ऐसा कहतेही परमेश्वरकी इच्छासे बेड़ी व हथकड़ी वसुदेवजीकी खुलकर गिरपड़ीं व सब दरवाजे व ताले खुलगये व चौकीदार व पहरेवाले नींदमें अचेत होकर सो रहे तब वसुदेवजीने यह महिमा श्यामसुन्दरकी देखकर श्रीकृष्णजीको सूपमें धरके अपने शिरपर उठा लिया व जल्दी से गोकुल को चले उस समय अँधियारी रात होने व पानी बरसने से राहमें कांटे पड़ते थे इसलिये शेषनागजीने अपने शरीरकी सड़क बनाकर फणकी छाया वैकुण्ठनाथ पर करदी जिसमें वसुदेवके पांवमें कांटे न चुभैं व श्रीकृष्णजी पर बूंद न पड़ैं इसीतरह वसुदेवजी वृन्दावनविहारीको लिये हुये यमुना किनारे पहुँचकर कहनेलगे पीछे सिंह बोलता है व आगे यमुनाजी अथाह हैं किसतरह पार उतरूं यहां से देवकीके पास फिर चलूं या कैसा करूं जब वसुदेवजी पहिले ऐसी चिन्ता करके फिर हरिचरणोंका ध्यान धरकर यमुनाजलमें पैठे तब यमुनाजीका पानी श्यामसुन्दरके चरण छूनेके वास्ते ऊपरको बढ़ने लगा तब वसुदेवजीने यह भेद नहीं समझकर श्यामसुन्दर को दोनों हाथोंसे ऊपर उठालिया जब यमुनाजल वसुदेवजी के नाकतक

पहुँचा और वह बहुत घबड़ाकर चिन्ता करनेलगे तब श्रीकृष्णजी अन्तर्यामी ने वसुदेव को दुःखी देखते ही जैसे अपना चरण यमुनाजलको छुआकर हुंकार दिया वैसे यमुनाजी थाह होकर घुटने बराबर जल होगया तब वसुदेवजी यह महिमा देखतेही प्रसन्न होकर पार उतरगये व गोकुलमें नन्दजीके स्थान पर जाकर द्वार उन का खुला पाया व सबको सोता हुआ देखकर बेधड़क घरमें चले तो क्या देखा कि एक कन्या उसी समय की जन्मी हुई यशोदाके पास सोई है व यशोदाने योगमाया के मोहनी डालनेसे कन्या होनेका हाल नहीं जाना सो वसुदेवजीने यशोदा को सोई हुई देखकर तुरन्त श्रीकृष्णजीको उसके पास सुलादिया व उस कन्या को लेकर उसी तरह यमुना पार उतरके मथुराको चले और जब देवकीने वसुदेव व श्रीकृष्णजीको अँधियारी रात पानी बरसते में गोकुलको भेज दिया तब इसतरह रोकर पछताने लगी कदाचित् कोई चौकीदार जागउठे व किवाड़े खुले देखकर कंससे जाकर कहदेवै या राहमें कोई वसुदेवजीको मिलजाय और उनका समाचार कंससे कहदे तो न मालूम वह हमको कैसा दुःख देगा व यमुना अथाहमें वह कैसे पार उतरे होंगे उनको गये विलम्ब हुआ किसवास्ते फिरकर नहीं आये ऐसी ऐसी तर्कणा करके जिससमय देवकी बैठी रोरहीथी उसी सायत वसुदेवजी आनपहुँचे और वह कन्या देवकीको देकर सब हाल वहांका कहदिया तब देवकी प्रसन्न होकर बोली अब हम को कंस चाहै मार भी डाले तो कुछ डर नहीं है ऐसे पापीके हाथसे मेरा बालक तो बचगया ॥

चौथा अध्याय।

कंसके हाथसे उस कन्या का पटकते समय छूटजाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जब वसुदेवजी गोकुलसे कन्याको ले आये तब फिर ज्योंका त्यों वह किवाड़ ताले बन्द होकर बेड़ी व हथकड़ी उनके पड़गई और वह कन्या रोने लगी उसका रोना सुनतेही चौकीदार जागकर बन्दूक छोड़ने लगे व उसी समय अँधियारी रात पानी बरसते में एक चौकीदारने कंसके पास जाकर कहा महाराज आपका शत्रु उत्पन्न हुआ

यह बात सुनते ही वह घबराकर उठा व गिरता पड़ता नंगे शिर डरता हुआ वसुदेव व देवकी के पास पहुँचा ॥

दो० कन्याले ठाढ़ी भई देवी अंचल ओढ़ । भैया तेरे शरण है चाहे मार कि छोड़ ॥

हे राजन् ऐसा वचन कहने पर भी कंस महापापी ने वह कन्या देवकी के हाथसे छीन ली तब फिर उसने हाथ जोड़कर विनय किया हे भाई छः पुत्र मुझ से हुये सो तुमने मार डाले अब यह कन्या पेटपोछनी मेरी है तू इसे छोड़ दे संसार में जिस स्त्री के बालक नहीं उसका जीना व्यर्थ है और तुमने छः लड़के जो मेरे मार डाले हैं उनका शोक एक सायत मुझे नहीं भूलता विना अपराध इस कन्या को मारकर क्यों पाप लेते हो कंस निर्दयी ने यह सुनकर उससे कहा मैं इस कन्या को जीती नहीं छोड़ने सक्ता जिससे इसका विवाह होगा वही मुझे मारेगा ऐसा कहकर कंस उस लड़कीका पांव पकड़के बाहर लाया और जब उसे घुमाकर पत्थरपर पटकने लगा तब वह कन्या कंसके हाथसे छूटकर आकाशमें चली गई और वहां जाकर उसने कंसको अष्टभुजीरूप अपना त्रिशूल व खड्ग हाथ में लिये उत्तम भूषण व वस्त्र पहिने फूलोंकी माला गले में डाले ध्वजा लगे हुये विमानपर बैठकर देवीजीके समान दिखलाया जब कंस वह रूप देख कर घबरा गया तब अष्टभुजी माताने कहा हे कंस पापी तैंने मुझे पटककर वृथा पाप लिया तेरा मारनेवाला व्रजमें उत्पन्न होचुका अब तू उसके हाथ से नहीं बचने सक्ता वह तुझे जल्दी मारकर पृथ्वीका भार उतरेगा तेरा मारनेवाला सांप समान और तू मेढ़क तुल्य है सो मेढ़क ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो सांपको खाने सकै अब तू चैतन्य रहना वृथा हत्या करके क्यों पाप बटोरता है ऐसा कहकर देवीजी अन्तर्धान होगई व कंस योगमायासे यह बात सुनतेही बहुत लज्जित व शोचित होकर कहनेलगा देखो हमने वसुदेव व देवकी को वृथा दुःख दिया व उनसे बालक मारके पाप लिया व मेरा मारनेवाला भी उत्पन्न हुआ मैं अपना दुःख किससे कहूं इसी तरह चिन्ता करता हुआ वसुदेव देवकी के पास आया व हथकड़ी व बेड़ी काट कर विनयपूर्वक उनसे कहा मेरे बराबर संसार में दूसरा पापी नहीं है जो

मैंने अपने शरीरकी रक्षा करनेवास्ते जिसका एक दिन अवश्य नाश होगा तुम्हारे छः बेटे विना अपराध मारकर पाप बटोरा तिस पर भी मेरा अर्थ नहीं हुआ यह पाप व कलंक कैसे छूटकर मेरी गति होगी तुम्हारे देवता लोग भी झूठे हुये जिन्होंने कहा था देवकी के आठवें गर्भ में पुत्र होगा सो कन्या हुई और वह भी मेरे हाथसे छूटकर स्वर्ग को चली गई सो तुम लोग मेरा अपराध क्षमा करो और यह समझकर धैर्य धरो कि उन लड़कोंकी आयुर्बल इतनी ही थी कर्म का लिखा हुआ कोई मिटाने नहीं सक्ता संसारमें जन्म लेकर मृत्युके हाथसे कोई नहीं बचता जिसतरह नदी में घास व तिनके न मालूम कहांसे आनकर इकट्ठे होजाते हैं और तरंग उठनेमें अलग होकर फिर पता उनका नहीं लगता उसीतरह संसारी जीवों का हाल भी समझना चाहिये ज्ञानी लोग जीने व मरने को बराबर समझते हैं व अहंकार करनेवाले मनुष्य शत्रु व मित्र में भेद जानते हैं सत्य पूछो तो जीव अमर होकर कभी नहीं मरता यह बात केवल कहने को बनाई है कि फलाने के मारने से फलाना मर गया जब ऐसा कहकर कंसने देवकी के चरणों पर शिर धर दिया और अति विलाप करके रोने लगा तब देवकीने क्रोध क्षमा करके उसका आंसू पोंछ दिया व वसुदेवजी ने कहा महाराज तुम सत्य कहते हो इसमें तुम्हारा दोष नहीं है विधाता ने हमारे कर्ममें इसी तरह लिख दिया था होनेवाली बात विना हुये नहीं रहती मनुष्य अपने सुख वास्ते अनेक उपाय करते हैं पर विना इच्छा परमेश्वरकी कोई मनोरथ उनका प्राप्त नहीं होता यह बात सुनते ही कंस बहुत प्रसन्न होकर वसुदेव व देवकी को अपने घर ले आया व भोजन कराके और उत्तम उत्तम वस्त्र पहिनाकर उनके स्थान पर पहुँचा दिया सो वसुदेव व देवकी ने घर आनकर गौ व अन्न व द्रव्य बहुतसा दान व दक्षिणा ब्राह्मण व याचकोंको दिया व कंसने उसके दूसरे दिन राजसभा में अपने मंत्री राक्षसोंको बुलाकर कहा हमसे देवीजी कहगई हैं कि तेरा मारनेवाला उत्पन्न होचुका सो देवतोंने हमसे झूठ कहा था कि देवकी से आठवां बालक तेरा मारनेवाला उत्पन्न होगा सो उसके आठवें गर्भ में

कन्या हुई इसलिये तुमलोग देवतोंको मार डालो यह बात सुनतेही तृणावर्त व प्रलम्ब आदिक राक्षस बोले हे कृपानिधान देवतालोग जन्म के कंगाल हैं उनका मारना क्या कठिन है तुम्हारे क्रोध करने से वह भाग जावेंगे उनकी क्या सामर्थ्य है जो आपसे युद्ध कर सकें ब्रह्मा आठोंपहर पूजा व पाठमें लीन रहते हैं व महादेवजी दिनरात इलावर्त में पार्वतीजी से भोग व विलास किया करते हैं व इन्द्र ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो आपके सन्मुख लड़सकै व नारायण वही हैं जिन्होंने कच्छपरूप धारण किया था व सदा क्षीरसागर में लक्ष्मीजीके साथ विहार करते हैं उनको युद्ध करना नहीं आता इन लोगोंका जीतना कौन कठिन है यह सुनकर कंस बोला नारायणजीने मेरे मारनेवास्ते कहीं अवतार लिया है उन्हें कहां पाऊं जो लड़ाई करके मारूं ऐसा सुनकर राक्षसोंने कहा हे पृथ्वीनाथ यह बात नहीं जान पड़ती कि वह बालक कहां उत्पन्न हुआ इसलिये हमारे जान यह उपाय करना चाहिये कि इन दिनों में जहां जहां बालक उत्पन्न भये हों सबको मरवा डालो उनमें वह भी मर जावेगा कदाचित् इस उपाय करने से कहीं छिपके बच गया और न मरा तो ब्राह्मण व वैष्णव आदिक जितने हरिभक्त हैं उनको जहां पावो मार डालो ऐसा करने से नारायण भाग गये तो अच्छा है नहीं तो उन लोगों को दुःख देने से जब वह उनकी सहाय करनेवास्ते प्रकट हों तब मार डालना चाहिये जब यह उपाय मंत्रियोंसे सुनकर कंसको अच्छा मालूम हुआ तब उसने वास्ते मारने ब्राह्मण व ऋषीश्वर व छोटे छोटे बालकोंके आज्ञा दी तब वह लोग बहुतसे वीरों को साथ लिये हुये हरिभक्त व लड़कों को ढूंढ़ ढूंढ़ कर बल व छल से मारने लगे व उन्होंने यज्ञादिक शुभकर्म व हरिचर्चा संसारसे उठा दी साधु व महात्माको दुःख देनेसे आयुर्दा व धन व बलका नाश होजाता है सो ऐसा पाप करने से कंस के पिछले जन्म का पुण्य क्षीण होगया॥

पांचवां अध्याय ।

श्रीकृष्णजी का जन्मोत्सव नन्दजी को करना ॥

शुकदेव स्वामी ने कहा हे राजन् जब वसुदेवजी श्रीकृष्णजी को यशोदा के गोद में सुलाकर मथुरा चले आये तब यशोदा जागी व उसने बालक का मुखारविन्द चन्द्रमा के समान देखकर नन्दजी को कहला भेजा तुम्हारे पुत्र हुआ है आनकर देखो सो उन्होंने बड़े प्रेम से जाकर श्यामसुन्दर को देखा व नन्द व यशोदा ने अति प्रसन्न होकर अपना जन्म सुफल जाना व नन्दजी ने वेद के अनुसार नांदीमुख श्राद्ध किया व श्यामसुन्दर के तेज से नन्दजी का घर प्रकाशित होगया व यह आनन्दरूपी समाचार गोपी व ग्वालों ने सुनते ही अपने अपने घर मंगलाचार मनाया और गोदान ब्राह्मणों को दिया ॥

दो० व्रजवासी टेरत फिरैं कोऊ वन जानि जाय । नंदराय घर सुत भयो देव बधाई आय ॥

जब प्रातःकाल नन्दजी ने ज्योतिषियों को बुलाकर सायत व लग्न उत्पन्न होने बालक की पूंछी तब पण्डितों ने कहा हमारे विचार में यह लड़का दूसरा परमेश्वर मालूम होता है और यह बालक राक्षसों को मार के पृथ्वी का भार उतार कर गोपीनाथ कहलावेगा व सब संसारी जीव इसका यश गावेंगे यह बात सुनकर नन्दजी बहुत प्रसन्न हुये व दो लक्ष गौ विधिपूर्वक व मणि व रत्न मिलाकर सात भार तिल व चांदी व सोने का घड़ा दही व दूध व घी से भरवाके ब्राह्मणों को दान दिया सिवाय उसके बहुत सा द्रव्य ज्योतिषी व पण्डितों को देकर सब याचकों को अयाचक किया व उस समय नन्दजी ने अति प्रसन्नता से अपने द्वारे जड़ाऊ चौकी पर बैठ के सब मंगलामुखियों का नाच व राग कराया व उनलोगों को मुँहमांगी वस्तु देकर आदरपूर्वक बिदा किया ॥

दो० काहू हीरा लाल मणि काहू मोतिनमाल । काहू भूषण बसन दे कीन्हो सभी निहाल ॥

फिर सब गोपी व ग्वालों ने अच्छा अच्छा गहना व कपड़े पहिन लिये और मेवा आदिक थाल में लेकर गाते बजाते दही व हल्दी मिला कर लुटाते हुये नन्दजी के यहां बधावा लाये ॥

दो० चोली ऊदी कोचकी लहँगा कुसुमीरंग । सारी गोटेतारकी शोभित सुन्दर अंग ॥
कंचनथार सँवार के तामें दीपक बारि । माखनप्रभु की आरती लै आई ब्रजनारि ॥
देहिं बधाई नन्दको पड़ैं यशोदा पांव । कहैं पियारे लाल को नेक हमैं दिखलाव ॥

जब ऐसा मीठा वचन सुनतेही यशोदा ने श्यामसुन्दरका मुख खोल कर दिखा दिया तब सब ब्रजबाला सांवली सूरति मोहनी मूरति को देखते ही परमानन्द होगईं व उन पर मोती व रत्नादिक न्यवछावर करके आशीर्वाद देनेलगीं हे नन्दरानी तुम्हारा बालक लाखवर्ष जीता रहै गोकुलवासियों ने उसदिन अति हर्षित होकर ऐसा दधिकांदो खेला कि सब गली व बाजार में दही दही होगया व गोपियां सोहर गायकर नन्दजी को आनन्द की गालियां देती थीं व नन्दराय वह सुनकर परमानन्द होते थे व रोहिणी अति हर्षसे गोपियोंके साथ नाचने लगी उस समय ब्रह्मादिक देवता अपनी अपनी स्त्रियों समेत विमानों पर बैठकर आकाशमार्ग से ब्रजमण्डल पर आये और अप्सरोंने अपने अपने विमानों पर नाचना व किन्नर व गन्धर्वोंने अनेक रंग का बाजा बजाकर गाना आरम्भ किया व देवतोंने वहां फूल बरसाकर आपसमें कहा गोकुलवासियोंका बड़ा भाग्य है देखो जिन परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन ब्रह्मादिक देवतोंको जल्दी ध्यान में नहीं मिलता उन्होंने यहां नर तनु धारण किया है ॥

दो० भये परमआनन्द सुर उपजावत अनुराग । बार बार वर्णन करैं नन्दयशोमति भाग ॥
गोकुलको आनन्द अति कापै बर्णोजाय । जहां परमआनन्दमय लियो जन्म हरि आय ॥
ब्रजको सुख कोकहिसकै उपमा बड़ी अपार । सुखनिधानभगवानजहँलियोमनुजअवतार ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् उसदिन नन्दजी के स्थान पर जैसा आनन्द हुआ वह समाचार मुझसे वर्णन नहीं होसकता व नन्दजीने सब ग्वालोंको अच्छे अच्छे पदार्थ भोजन कराये व उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर उनकी इच्छा पूर्ण की व यह आनन्दरूपी समाचार सुनकर उस देशके सब मंगलामुखी व याचक नन्दजी के यहां आये सो उन्होंने सबको मुँहमांगी वस्तु देकर आनन्दपूर्वक बिदा किया ॥

स० पूत सपूत जन्यो यशुदा इतनी सुनिकै बसुधा सब दौरी । देवनको आनन्द भयो

सुनि धावत गावत मंगन गौरी ॥ नन्द कछू इतनो जो दियो घनश्याम कुबेरहुकी मतिबौरी ।
ध्वहिं देखत व्रजहि लुटाय दियो न बची बछिया छछिया न पिछौरी ॥

हे राजन् उन्हीं दिनों महादेवजी योगीरूप से वैकुण्ठनाथके दर्शन करने को नन्दरायके द्वारे पर आये व उन्होंने भिक्षा न लेकर परब्रह्म का दर्शन बड़े प्रेम से किया उस समय ब्रजवासियों ने नन्दजी से कहा ॥

क० है हो ब्रजराज कोऊ वेषधारी आज इत पुत्रको जनम सुनि आयो तेरे भौन है । मोती मणिमाणिक न कञ्चन रतन लेत हय गय भूमि ग्राम लेत हमसों न है ॥ नगर अटोटे नाहिं भूमि ब्रजलोटे एक अलख उचारै बैन और निज मौन है । बालक के पांव लै उठान सों छुवाय नाचै योगी तीनि आंखि को कहां से आयो कौन है ॥

सो हे राजन् जब छठीका दिन आया तब नन्दजी ने अपना आंगन चन्दन व केसरिसे लिपवाकर मोतियों का चौक पुरवाया व पुरोहित को बुलाकर अपने कुलके अनुसार पूजा की व यशोदाजी श्यामसुन्दर को पीला कुरता व टोपी व उत्तम भूषण पहिनाके पूजन करनेवास्ते गोद में लेकर बैठीं उस दिन वृषभानु आदिक गोप व गोपियां कुरता टोपी व अनेक रंगका भूषण नन्दजीके घर देनेवास्ते ले आये व सबोंने बड़े हर्ष से ढोलकी बजाकर अच्छे अच्छे गीत गाये व नन्दजी ने उसीदिन गोप व गोपियों का यथायोग्य सन्मान किया व एक पालना रत्नजटित अति उत्तम श्यामसुन्दरके झूलने के वास्ते बनवाया उसीमें वैकुण्ठनाथ को झुलाकर यशोदाजी बड़े प्रेम से झुलाया करती थीं व लक्ष्मीपतिकी कृपासे सब गोकुलवासियों के घर इतना द्रव्य होगया जिसकी संख्या कोई नहीं करनेसक्ता सो वह लोग आनन्द से रहकर श्यामसुन्दरका दर्शन करके अपना अपना जन्म सुफल करते थे जब नन्दजी ने यह सुना कि राजा कंसने बालकोंके मारनेवास्ते आज्ञा दी है तब उन्होंने ग्वालों से सब वृत्तान्त सुनाकर कहा कि पुत्र होने की कुछ भेंट लेकर राजा कंस को चल कर दे आवैं जिसमें किसी बात का डर न रहै यह सम्मत आपस में करके नन्दजी माखन व दूध व घी व द्रव्य गाड़ियों पर लदवाकर ग्वालों समेत मथुरा में ले गये व राजा कंस के भेंट कर अपने घर पुत्र होने का हाल उससे कह दिया व राजा ने नन्दजी को शिरोपांव देकर बिदा किया जब

नन्दजी वहां से विदा होके अपने घर चले तब वसुदेवजी उनके आनेका हाल सुनकर मिलने वास्ते यमुना किनारे आये और उनका कुशल मंगल पूंछकर कहा ॥

दो० सुधि आवे जब मित्र की तब मन आवै चैन। या सुख की उपमा नहीं जो मुख देखै नैन॥

हे नन्दजी तुम्हारे समान कोई मित्र अपना हम नहीं देखते जो राजा कंस के दुःख देने से मैंने अपनी स्त्री गर्भवती तुम्हारे यहां भेज दी व उसके वहां पुत्र उत्पन्न हुआ तब उसका पालन तुमने हमसे अधिक किया व मैं राजा कंस के डर से कुछ सुधि नहीं लेसका यह बोझा तुम्हारा मेरे ऊपर बड़ा है इसके बदले जन्मभर तुम्हारी सेवा करूं तब भी उऋण नहीं होसक्ता तुम्हारे यहां पुत्र होने का हाल सुनकर मुझे बड़ा सुख हुआ कहो यशोदा तुम्हारी स्त्री श्रीकृष्णजी बालक समेत व सब गौ अच्छीतरह हैं व गोकुल में घास गौओं के चरनेवास्ते अच्छी उपजी है यह बात प्रीति भरी हुई सुनकर नन्दजी बोले कि तुम्हारी कृपा से बलराम आदिक सब कोई आनंद से हैं उनके उत्पन्न होने उपरांत मेरे भी बालक हुआ पर कंस ने तुम्हें दुःखदेकर तुम्हारे लड़कों को मारडाला यह हाल सुनकर मुझे बड़ा दुःख रहता है क्या करूं इसमें कुछ मेरा वश नहीं चलता ऐसा सुन वसुदेव जी बोले हे मित्र विधाता ने जो हमारे कर्म में लिखा है वह किसी तरह मिटने नहीं सक्ता संसार में जन्म लेने से कौन नहीं दुःख पाता तुम मेरे बड़े मित्र हो इसलिये मैं अपने व तुम्हारे लड़कों में कुछ भेद नहीं जानता पर राजा कंस इनदिनों बड़ा अन्धेर कर रहा है कि हालके जन्मेहुये बालकों को मरवा डालता है तुम यहां आये हो व राक्षस लोग चारों ओर बालक ढूंढ़ते फिरते हैं ऐसा न हो कि कोई राक्षस गोकुल में जाकर कुछ उपाधि करै॥

सो० गई पूतना आज ब्रजको बालकघातिनी। करिहै कछु अकाज बेगि धाम सुधि लीजिये॥

हे नन्दजी तुम पराक्रम भर अपने व मेरे बालक की रक्षा करते रहना आगे परमेश्वर मालिक हैं और जब सावकाश मिलै तब दर्शन देना यह बात सुनते ही नन्दजी वसुदेव से विदा होकर ग्वालों समेत गोकुल को चले व चलते समय बोले ॥

दो० बिनती कीन्ही मित्र सों डारेउ जनि बिसराय। माखनप्रभु जु बुलाइहैं फेरि मिलेंगे आय॥

छठवां अध्याय।

पूतना राक्षसी का गोकुल में जाना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित बहुत से राक्षस लड़कों के मारने में लगे थे तिस पर भी कंस को श्यामसुन्दर के डर से चैन नहीं पड़ता था इसलिये उसने पूतना राक्षसी को बुलाकर कहा इन दिनों जितने बालक मथुरा व गोकुल में यादव आदिक के कुल में उत्पन्न हुये हैं सबको तू मारडाल यह सुनते ही पूतना कंस की आज्ञापालन करनेवास्ते चली व उसने विचार किया कि गोकुल में नन्दजी के यहां पुत्र हुआ है सो मैं गोपीरूप बनाकर जाऊं तो उस बालक को छल से मार के चली आऊंगी यह बात ठानकर उसने अपने को मोहनीरूप गोपी अति सुन्दर बनालिया व भूषण व वस्त्रादिक सोलहों शृंगार करके अपने कुचों में विष लगाकर हँसती हुई बेधड़क नन्दजी के घर में चली गई व उसका स्वरूप देखकर किसी डेवढ़ीदार ने भीतर जाने से नहीं रोका जिस तरह आगि राख में छिपी रहती है व कोई नहीं जानता उसी तरह पूतना ने श्रीकृष्णजी को परमेश्वर का अवतार नहीं समझा था व यशोदा आदिक स्त्रियों ने भी उसका रूप व शृंगार देखकर उसे देवकन्या जाना इसलिये बड़े सन्मान से अपने पास बैठाल कर उससे बातचीत करने लगीं॥

चौ० एक कहै यह है कोउ रानी। यशुमति के आई हम जानी॥
एक कहै यह कमला बाई। श्रीकमलापति देखन आई॥

हे राजन् उस समय श्यामसुन्दर पालने पर झूलते थे उन्होंने उसको देखकर मुसकरादिया और जाना कि यह कपटरूप धरके मेरे मारने के वास्ते आई है सो उन्होंने आंख बन्द करके मनमें कहा बहुत अच्छा हुआ जो यह मेरे यहां आई अपने दण्ड को पहुँचेगी कदाचित् गोकुल में दूसरे घर जाती तो मेरे मित्र व सखाओं को मारडालती व कपटरूप पूतनाने यशोदा से कहा हे बहिन तुम्हारे यहां पुत्र होने का हाल सुनकर राजा कंस बहुत प्रसन्न हुआ व उसकी आज्ञासे मैं प्राणप्यारे बालक को देखने

आई हूं तब यशोदा बोलीं मेरे ललना पलना में झूलते हैं यह बात सुन कर वह कपटरूप कहनेलगी तुम्हारा लड़का करोड़ वर्ष जीता रहै जब ऐसी ऐसी बातैं प्रीति भरी हुई कहकर पूतना पालने के निकट चली गई व श्यामसुन्दरको बड़े प्रेम से गोद में उठा लिया और मुख चूमकर दूध पिलाने लगी जब मोहनप्यारे ने दोनों हाथ से स्तन धरकर इस तरह दूध के साथ उसका प्राण खींचा कि वह व्याकुल होकर यशोदासे बोली तेरा बालक मनुष्य न होकर यमराजका दूत मालूम होता है और मैंने रस्सी के धोखे सांपको पकड़ लिया कदाचित् आज इसके हाथसे जीती बचकर जाऊं तो फिर गोकुलमें नहीं आऊंगी जब पूतना ऐसी कहती हुई अधिक व्याकुल होकर वहां से आकाशमार्गको भागी तब श्रीकृष्णजी भी उस का स्तन मुखसे न छोड़कर लटके चले गये जब वह गोकुल गांवकी बस्ती से बाहर पहुँची तब नन्दलालजी ने प्राण उसका शिर की गूदी समेत खींच लिया सो मरती समय वह राक्षसी बड़ा भयानकरूप होकर वज्रके समान पृथ्वीपर गिरी उसके गिरने से ऐसा शब्द हुआ कि धरती व आकाश कम्पायमान होगया और वह शब्द सुनकर गोकुलवासी डरके मारे काँपने लगे और छः कोशके बीचमें पूतनाके गिरनेसे सैकड़ों वृक्ष टूटगये ॥

दो० आई अद्भुत रूपधरि अति विपरीतको भार। कपटहेतु नहिं सहिसक्यो तेहि मास्यो करतार ॥

जब यशोदा व रोहिणीने वह शब्द सुनकर अपने लालको वहां नहीं देखा तब रोती व पीटती हुई श्यामसुन्दरको ढूंढ़ने निकलीं ॥

दो० माखनप्रभु गोपालको ढूंढ़त गोपी ग्वाल। तबहूँ पूतना उदर पर खेलत पायो लाल ॥

जब यशोदाने देखा कि मोहनप्यारे उसकी छाती पर चढ़े हुये दूध पी रहे हैं तब उसने दौड़कर उनको उठा लिया व गोद में लेकर मुख व हाथ उनका चूमने लगीं जिसतरह कोई सांप अपनी मणि खोजाने से विकल होकर उसके मिलने उपरान्त प्रसन्न होता है उसी तरह यशोदा को आनन्द हुआ ॥

सो० कहै यशोमतिमाय फिरि फिरि सबके पांवपरि। उबस्यो आजु कन्हाय तुम पंचनके पुण्यसे ॥

जब श्रीकृष्णजी ने थोड़ी देर दूध नहीं पिया तब गोपियां गौकी पूंछ

छुआकर श्यामसुन्दर को झाड़ने लगीं व यशोदा जल्दी से नन्दलालको घरपर लेआईं जब गुणी को बुलाकर झाड़फूंक कराके अपना देवता व पितर मनाया व दूध आदिक उनपर न्योछावर करके कंगालोंको पिलाया तब वे दूध पीने लगे व सब व्रजवाला मोहनप्यारे का प्राण बचने से प्रसन्न होकर वारंवार परमेश्वरको दण्डवत् करने लगीं व गोपी व ग्वाल उस लोथके पास खड़े होकर आपस में कहते थे देखो इसके गिरनेका शब्द सुनके अबतक हमलोगोंका कलेजा कांपता है न मालूम उस बालक की क्या गति होगी उसी समय नन्दजीने गोकुलके निकट पहुँचकर क्या देखा कि एक राक्षसी बहुत बड़ी मरी पड़ी है व गोकुलवासी उसको खड़े हुये देख रहे हैं जब नन्दजीने लोगोंसे उसके मरनेका हाल पूंछा तब उन लोगों ने सब समाचार कह सुनाया नन्दजी यह बात सुनकर कहने लगे बड़ी बात हुई जो इसके हाथ से मेरा प्राणप्यारा जीता बचा और यह भी बहुत अच्छा हुआ जो लोथ इस राक्षसीकी गांव से बाहर गिरी कदाचित् बस्तीमें गिरती तो इसके नीचे सब गोकुलवासी दबकर मर जाते यह बात कहकर नन्दजी वहां से स्थानपर आये व अपने लाल को गोदमें लेकर बहुत प्यार किया व छः हजार गौ दूध देनेवाली विधिपूर्वक श्यामसुन्दर के हाथसे ब्राह्मणोंको दान दिलाया व अन्न व सोना व चांदी आदिक बहुतसा उनके शिर पर न्योछावर करके कंगालोंको दिया फिर नन्दजी की आज्ञानुसार ग्वालोंने फरसा व कुल्हाड़ोंसे शरीर पूतनाका काटडाला व गड़हा खोदके हड्डी उसकी गाड़ दीं व मांस चमड़ा उसका आग में जला देनेसे ऐसी सुगन्ध उड़ी जिसके सूंघनेसे सब गोकुलवासी आनन्द होगये इतनी कथा सुनकर राजा परीक्षित ने पूछा महाराज उस राक्षसी मदिरा पीने व मांस खानेवालीके शरीर जलनेसे सुगन्ध उड़नेका क्या कारण था शुकदेवजी बोले हे राजन् श्रीकृष्णजीने उसका दूध पीकर उस की छातीपर अपना चरण रक्खा व उसको अपने हाथसे मारकर पवित्र करके मुक्त किया इसलिये उसके जलने से सुगन्ध उड़ी थी ॥

दो० माखनप्रभु कमलापती सकल सुबास निवास। तिनके अंग प्रसंगते प्रकट्यो बाससुबास ॥

हे राजन् देखो पूतना परमेश्वरको विष पिलाकर मारने आई थी उस ने यह गति पाई जो कोई नारायणजीको प्रेम से अच्छा अच्छा पदार्थ भोग लगाते हैं उनको न जानै कैसी पदवी मिलती है जो लोग पूतना-मरणकी कथा कहैंगे व सुनैंगे उन्हें परमेश्वरके चरणारविंद में भक्तिप्राप्त होकर मुक्ति पदवी मिलैगी हे राजन् श्रीकृष्णजीके दर्शनवास्ते देवता लोग अपना अपना रूप बदलकर गोकुलमें आवते थे व देवतोंकी स्त्रियां सुन्दरताई श्यामसुन्दरकी देखकर मोहजाती थीं ॥

सातवां अध्याय ।

कंसका तृणावर्त आदिक राक्षसों को श्यामसुन्दर के मारने वास्ते भेजना ॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर पूछा हे महाराज जिस तरह आप ने पूतना व श्रीकृष्णकी लीला सुनाई उसी तरह और कुछ बालचरित उन का वर्णन कीजिये यह मुझको बहुत प्यारा मालूम देता है ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् कंसने पूतनाकी दशा सुनकर विश्वास कर के जाना कि मेरा मारनेवाला गोकुल में उत्पन्न हुआ इस चिन्ता से वह व्याकुल होकर गिर पड़ा जब कुछ बेरमें चैतन्य हुआ तब सभा में बैठ के अपने मंत्रियोंसे कहा नंदजीके बालक ने पूतना राक्षसी को मार डाला सो मुझे मालूम होता है कि उसके हाथ से मेरा काल होगा मित्र उसी को समझना चाहिये जो विपत्ति में काम आवै उस बालक को मारकर हमारा भला करे ॥

दो० योधा सभी बुलायकै बीरा धरयो बनाय । जो यह कारज करिसकै सोई लेय उठाय ॥

हे राजन् कंसने सब किसीसे कहा जो कोई मेरा शत्रु मारे उसे मैं बहुत द्रव्य दूंगा उस समय श्रीधर नाम ब्राह्मण जो वहां बैठा था बोला हे राजन् तू शोच मत कर मैं तेरा शत्रु मारके तुझे निश्चिन्त करे देता हूं ॥

दो० तब बोले राजा वचन धन्य धन्य द्विजराज । तुम विन ऐसो कौन है जो करिहै यहकाज ॥

यह सुनते ही श्रीधर ब्राह्मण बीरा उठाकर राजा से विदा हुआ व पण्डितों का वेष बनाकर नन्दजी के यहां गया यशोदाने उसे देखते ही दण्डवत् किया व बड़े आदरसे बैठालकर पूछा महाराज आपने किधर कृपा

की तब ब्राह्मण देवता अपने को पुरोहित बतलाकर बोले तुम्हारे बालक की बड़ाई सबसे सुनकर उसका दर्शन करने आया हूं यशोदाने कहा॥

दो० कमलनयन हैं शयनमें बैठो द्विज यहिकाल। न्हाय आय दिखरायहौं माखनप्रभु गोपाल॥

जब यशोदा ऐसा कहकर यमुना किनारे स्नान करने को चली गई तब ब्राह्मण ने विचारा इस निराले समय में श्रीकृष्णको मारकर कंस के पास जाऊं तो बहुत द्रव्य पाऊं जब ऐसा विचारकर वह ब्राह्मण जहां वैकुंठनाथ सोते थे वहां चला गया तब नन्दलालजी उसकी खोटी इच्छा समझकर पालने से उतर पड़े व श्रीधरको पकड़ कर उसकी जिह्वा मरोर डाली व ब्राह्मण समझकर प्राण नहीं मारा व दही उसके मुँह में लगाकर बर्तन दही व दूधका तोड़ डाला व आप फिर पालनेपर लेटरहे जब यशोदा यमुनास्नान करके आई तब उसने दही व दूधका बर्तन टूटा व दही ब्राह्मणके मुखमें लगा देखकर जाना कि इसी ब्राह्मणने दही व दूध खाकर बर्तन तोड़ डाले हैं यह बात विचारकर यशोदाने कहा महाराज तुमने दही व दूध खाया तो अच्छा किया पर मेरे बर्तन क्यों तोड़ डाले जब जिह्वा मुड़कनेसे वह बोल नहीं सका तब नन्दलालकी ओर हाथ उठाके बतलाया कि इसीने बर्तन तोड़े हैं यशोदाने उस ब्राह्मणके बतलाने का यह विश्वास न करके उसको अपने घरसे निकलवा दिया जब वह ब्राह्मण रोता हुआ कंसके पास आया तब उसने अधिक उदास होकर बकासुरको वास्ते मारने सांवली सूरतके भेजा जैसे वह श्यामसुन्दरके पालनेपर आनके अपनी घात लगाकर बैठा वैसे नन्दलालजीने उसका गला मरोरकर फेंका तो कंसके सामने आनकर गिरा और यह हाल गोकुलमें किसी ने नहीं जाना और मरते समय उसने कंससे कहा वह बालक मनुष्य न होकर परमेश्वरका अवतार मालूम होता है॥

दो० एक हाथसे पकड़ि म्वहिं फेंकि दियो तुम पास। है है तुम्हरो काल वह मैं कीन्हों विश्वास॥

यह बात सुनते ही कंसने शोचित होकर अपनी सभावालोंसे कहा कि अभी वह लड़का है सो नहीं मारा जाता तरुणाई आनेमें किसतरह मारा जायगा कोई उसे मारता तो मैं बड़ा गुण मानता यह वचन सुनते ही

शकटासुर वास्ते मारने श्यामसुन्दर के करार करके विदा हुआ व पवन-रूप बनकर गोकुलको चला इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब श्रीकृष्णजी सत्ताईस दिनके हुये व जिस नक्षत्रमें उनका जन्म हुआ था वही नक्षत्र फिर आया तब नन्दजीने ब्राह्मण व गोकुलवासियों को न्योता देकर अपने यहां बुलाया व अपने कुलकी रीति व रसम करके ब्राह्मणोंको दान व दक्षिणा देकर विदा किया व ग्वालोंको भोजन करने वास्ते बैठाकर यशोदा व रोहिणी अच्छा अच्छा पदार्थ उन्हें परोसने लगीं व गोपियोंने बड़े हर्षसे गाना बजाना आरम्भ किया और वे लोग आनन्दपूर्वक खाने लगे हे राजन् उस समय श्रीकृष्णजीको पालने में सुला कर सब छोटे बड़े अपने अपने काम में लगे थे और उस पालने के पास एक छकड़ा लटकाया था सो श्यामसुन्दर नींदसे जागे व मारे भूख के हाथ पैर पटककर रोने लगे उसी समय वह राक्षस पवनरूप उड़ता हुआ वहां आन पहुँचा व श्यामसुन्दरको अकेला देखकर मनमें कहनेलगा कि यह बालक अति बलवान् है जिसने पूतनाको मार डाला आज इसे मार कर उसका बदला लेऊंगा यह बात विचारकर छकड़े पर आन बैठा इसी कारण उसका नाम शकटासुर हुआ जब वह छकड़ा जिसके नीचे बर्तन दही व दूधका रक्खा था हिलने लगा तब श्रीकृष्णजी अन्तर्यामी ने उस के आनेका हाल जानकर रोते रोते ऐसी एक लात उस छकड़े पर मारी जिसके लगने से शकटासुर मरकर कंसकी सभामें आन गिरा उसे देख कर कंस सब राक्षसों समेत घबरा गया हे राजन् जब छकड़ा गिरने व बर्तन टूटने से बड़ा शब्द होकर दूध व दही नदीके समान बह निकला तब नंद जी आदिक सब ग्वाल गोपी वहां दौड़ आये व यशोदाने श्यामसुन्दर को उठाकर अपनी छातीमें लगा लिया व मुख व हाथ उनका चूमने लगीं व सब किसीने आश्चर्य मानकर आपसमें कहा आकाश से वज्र भी तो नहीं गिरा न मालूम किसतरह छकड़ा टूटकर गिर पड़ा ॥

दो०, पलना ढिग खेलत हते कछुक गोपके बाल। तिन्हन कह्यो डार्यो शकट पलनासे नँदलाल॥

उन लड़कों की बात का किसी ने विश्वास न करके आपसमें कहा

श्रीकृष्णजी का चरण फूलसे भी कोमल है इतना बड़ा छकड़ा उन्होंने लात मारकर किस तरह गिराया होगा ॥

दो० बहुत भांति करुणा करी और दियो बहु दान । वार वार नँदलालके रक्षपाल भगवान ॥

हे राजन् जब श्रीकृष्णजी पांच महीने के हुये तब कंसने तृणावर्त राक्षसको उनके मारनेवास्ते भेजा सो वह बवण्डररूप बनकर गोकुलमें आया उस समय यशोदा मनहरणप्यारेको लिये आंगनमें बैठी थीं सो श्यामसुन्दर अन्तर्यामीने तृणावर्तके आनेका हाल जानकर अपने शरीरको इसवास्ते भारी कर दिया जिसमें यशोदा अपनी गोदसे पृथ्वीपर उतार दें नहीं तो तृणावर्त मेरे साथ इनको भी उड़ा लेजावेगा जब यशोदासे उनका बोझ नहीं उठाया गया तब वे श्यामसुन्दरको आंगनमें सुलाकर घरका काम करने लगीं उस समय तृणावर्त बवण्डररूपके पहुँचने से गोकुल में ऐसी आंधी आई कि धूर उड़नेसे दिन रात्रि के समान होगया व वृक्ष गिरने व छप्पर उड़ने लगे तब यशोदा व्याकुल होकर श्यामसुन्दर को आंगन में से उठावने आई पर अंग उनका ऐसा भारी होगया था कि उनसे नहीं उठसके जब यशोदाने अपना हाथ उनके शरीरसे अलग किया तब तृणावर्त श्यामसुन्दर का प्राण लेने वास्ते उनको उठाकर एक योजन ऊंचे आकाशमें लेगया व यशोदाने फिर प्राणप्यारेको उठाने वास्ते हाथ लपकाया तो उस जगह उनको न पाकर रुदन करने लगीं व नन्दजी को पुकारकर कहा तुम्हारा बेटा आंधीमें उड़ गया ऐसा सुनतेही नन्दादिक ग्वाल व गोपी वहां दौड़ आये व श्यामसुन्दर का नाम पुकारकर चारों ओर ढूंढ़ने लगे व यशोदा व रोहिणी भी गोपियों समेत उनको ढूंढ़ने निकलीं सो अँधेरेमें ठोकर खाकर व्याकुलतासे गिर गिर पड़ती थीं ॥

दो० नन्दयशोमतिरोहिणीगोपग्वालव्रजबाल । माखनप्रभुगोपालबिनसकलविकलत्यहिकाल ॥

हे राजन् जब श्रीकृष्णजीने नन्दादिकको अपने विरहमें अतिदुखित देखा तब तृणावर्तका गला दबाकर नन्दजीके द्वारे पत्थर पर पटका व उसे मारकर मुक्ति दी जब उसके मरने से आंधी व अँधियारा जाता रहा तब नन्द व यशोदा आदिक पटकनेका शब्द सुनकर अपने स्थानपर दौड़

आये तो क्या देखा कि एक राक्षस मरा पड़ा है व उसकी छाती पर नन्द-लालजी खेल रहे हैं व गोपियों ने दौड़कर श्यामसुन्दरको उठा लिया व यशोदाजीने उन्हें गोदमें लेकर प्यार किया व सबोंने कहा आज श्रीकृष्ण जी का नया जन्म हुआ ॥

दो० क्या जानों केहि पुण्यते को करि लेत सहाय। कियो काम बहु पूतना तृणावर्त फिर आय ॥

उस समय नन्दराय बोले हमसे वसुदेवजीने कहा था कि इन दिनों बहुत उपाधि उठेगी सो वही बात देखने में आती है नन्दजीने उस दिन भी बहुतसा द्रव्य व भूषणादिक उनपर न्योछावर करके ब्राह्मण व कंगालों को दिया व गोपियोंने यशोदासे कहा तैंने घरका काम प्राणप्यारेसे अच्छा जाना जो उन्हें आंगन में अकेला छोड़कर काम करने लगी यशोदा लज्जित होकर बोली आज मैंने अपनी अज्ञानताका दण्ड पाया फिर कभी प्राणप्यारे को अकेला नहीं छोड़ूंगी उस दिनसे यशोदा आठों पहर नन्दलालजी को छाती में लगाये रहकर उनके बाललीला का सुख देखती थीं ॥

दो० हलरावत गावत मधुर हरिके बालविनोद। जो सुख सुरमुनिको अगम सो सुख लेत यशोद॥
कभी झुलावत पालने कभी खिलावत गोद। कभी सुलावत पलँगपर यशुदा सहित विनोद ॥

हे राजन् एक दिन यशोदा श्यामसुन्दरको गोद में लेकर बड़े प्रेम से बारंबार उनका मुख चूमती थी उस समय श्यामसुन्दरने मुख खोलकर हँस दिया तो यशोदा को उनके मुखारविन्द में पृथ्वी व आकाश व सूर्य व चन्द्रमा व पहाड़ व समुद्र आदिक सब संसारी वस्तु दिखलाई दीं तब यशोदा आश्चर्य मानकर कहने लगीं मेरी बुद्धि बदल तो नहीं गई जो यह सब चरित्र मुझे दिखलाई देता है या मेरे बालक पर किसी देव व परी की छाया तो नहीं होगई जो यह सब वस्तु उसके मुख में दिखलाई पड़ती हैं ऐसा विचारके यशोदाने गुणी बुलाकर श्रीकृष्णजी को झाड़ फूंक कराया व व्याघ्र का नख व भालूके बाल व अनेक यंत्र श्रीकृष्णजी के गले में पहना दिये ॥

आठवां अध्याय ।

गर्गाचार्य का श्याम व बलराम के नाम रखना व बालचरित्र श्रीकृष्णजी की कथा ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् वसुदेवजी ने बलभद्र अपने पुत्रके जन्म लेनेका हाल कंसादिकसे नहीं बताया था इसलिये एक दिन गर्गजी अपने पुरोहितको बुलाकर कहा रोहिणी के बेटा हुआ है सो अभीतक राजा कंसके डरसे हमने उसका नामकरण नहीं किया सो आप गोकुलमें जाकर उसका नाम रख दीजिये यह बात सुनते ही गर्गजी प्रसन्न होकर गोकुल में गये नन्दजी उनका आगमन सुनते ही ग्वालों समेत आगे से जाकर सन्मानपूर्वक उन्हें अपने घर लिवा लाये व विधिपूर्वक पूजा करके उन्हें आसनपर बैठाला नन्द व यशोदाने चरण उनका धोकर चरणामृत लिया व हाथ जोड़कर विनयपूर्वक बोले मेरा बड़ा भाग्य था जो आपने चरण अपना लाकर मुझे कृतार्थ किया यह बतलाइये कि किसकारण यहां आवने का संयोग हुआ यह बात सुनकर गर्गजी बोले वसुदेवने मुझे अपने पुत्रका नामकरण करनेवास्ते भेजा है तब नन्दने प्रसन्न होकर कहा आप हमारे भाग्यसे यहां आये हैं सो एक बालक हमारे भी उत्पन्न हुआ उसका नाम भी धर दीजिये गर्गजीने कहा मुझे उसके नाम रखने में यह डर है कदाचित् कोई शत्रु जाकर कंससे कह दे कि गर्गमुनि गोकुल में नामकरण करनेवास्ते गये थे तो उसे यह संदेह होगा कि वसुदेवने कोई बालक देवकीका नन्दके यहां पहुँचा दिया है इसी वास्ते गर्ग पुरोहित उनका नाम रखने गोकुलमें गये होंगे यह बात सुनकर न मालूम तुम्हें कंस क्या दुःख देवै इसलिये तुम नामकरण में कुछ धूमधाम न करो साधारण से घर में नाम धरा लेव नन्दजी उनका कहना अच्छा जानकर उन्हें घर के भीतर लेगये तब गर्गजी ने हाथ व जन्मलग्न रोहिणी के पुत्र का देखकर कहा ॥

दो० राम नाम है राशिको सुखनिवास अभिराम । बली होयगो लोकमें सब कहिहैं बलराम ॥

सिवाय इसके इनका नाम संकर्षण व रेवतीरमण व बलदाऊ व कालिंदीभेदन व हलधर व बलभद्र भी संसार में प्रकट होगा व श्रीकृष्णकी जन्म-

कुण्डली बनाकर गर्गमुनि बोले हे नन्दजी तुम्हारे पुत्र जो श्याम रंग हैं इनका नाम श्रीकृष्ण रक्खो इनके अनेक नाम हैं एक बेर इन्होंने वसुदेव के यहां जन्म लिया था इसलिये इनका नाम वासुदेव हुआ व हमारे विचारमें तुम्हारा बालक परब्रह्म परमेश्वरका अवतार मालूम देता है इनका भेद कोई जानने नहीं सक्ता व तीनोंलोकमें किसी को ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो इनको मार सकै और वह जैसे जैसे काम संसारमें करेंगे तैसे तैसे नाम इनका प्रकट होगा व अपनी इच्छासे इन्होंने अवतार लिया है किसी समय तुमने इनके बाललीलाका सुख देखनेवास्ते तप किया था उसके प्रतापसे इनको पाया है इन्हें तुम अपना जना हुआ पुत्र मत जानो जो कोई इनके नाम का स्मरण करेंगे वे लोग संसार में मनोकामना पाकर अन्त समय मुक्ति पावैंगे और यह दोनों बालक चारों युग में एक साथ उत्पन्न होते हैं यह बात सुनकर नन्द व यशोदा बहुत प्रसन्न हुये और सोना व रत्नादिक गर्गाचार्यको देकर विदा किया व गर्गजीने मथुरा में आनकर वसुदेवजीसे सब समाचार कह दिया हे राजन् जब श्याम व बलराम अति सुन्दर मोहनी मूर्ति घुंघुवारे बाल शिरपर बिखरे अनेक रंगका भूषण व वस्त्र पहिने व खिलौना लिये बालकोंके साथ घुटनियोंसे चलकर आँगन में खेलते थे तब यशोदा व रोहिणी व गोपियोंको वह छवि देखकर जैसा सुख मिलता था वह मुझसे वर्णन नहीं होसक्ता ॥

क० डगमग पवनते अलख अलेख ज्योति नन्द के हैं जाहिर के योगिनके जपके ।
रुनझुन पैंजनियां खेलत हैं रजभरे गभुवारे घुंघुवार सोहैं बार झपके ॥
मोहन बलैया लेउँ आवो धूर झार डारों सुनि बात मात गले लागनको लपकें ।
शारदा गणेश शेष विधिसों न गिने जात भक्तनके हितके अहीरनके तपके ॥

चौ० जबहिं यशोदा माय बुलावै । बालेलाल घुटुनियों धावै ॥
ताके धावत अति छवि होई । जो देखै सुख पावत सोई ॥

दो० बालविनोद विलोकिकै मुदित यशोदामात । माखनप्रभुहिं निहारिकै बारबार बलिजात ॥
सो० नितउठिव्रजकीबाम आवैं यशुमतिकेसदन । मुदितनिरखिघनश्याम लैलै गोदखिलावहीं ॥
दो० करत बाललीला ललित परम पुनीत उदार । सुन्दर श्यामसुजान हरि सन्तनके आधार ॥
सो० कापैं बरण्यो जाय बालचरित नँदलाल को । कल्पन सकैं न गाय शेष कोटि शारद सहस ॥

हे राजन् देखो जिस परब्रह्म परमेश्वरकी महिमा वेद नहीं जानते वह वैकुण्ठनाथ बालरूपसे नन्दजीके आंगनमें खेलकर प्रतिदिन नये सुख नन्द व यशोदाको दिखलाते थे जो आनन्द तीनोंलोकमें नहीं मिलता वह सुख श्यामसुन्दरकी कृपासे ब्रजवासियों को गोकुलमें प्राप्त होता था जब श्यामसुन्दरके दांत निकले तब नन्द व यशोदाने शुभ साइतमें खीर व मिश्री से उनका अन्नप्राशन किया व उस दिन व वर्षगांठके दिन ब्राह्मणों को बहुतसा दान व दक्षिणा देकर अपने जाति भाइयोंको भोजन खिलाया व गाय बजायकर बड़ा आनन्द मनाया जब खेलती समय श्याम व बलराम छोटे छोटे बछड़ों की पूंछ पकड़कर खड़े होते व गिर पड़ते व फिर उठते व तुतलाकर बोलते थे तब यशोदा व रोहिणी बड़े हर्षसे उन्हें गोदमें उठाकर दूध पिलाती थीं व दोनों भाई अति सुन्दर थे इसलिये उन के रूपपर सब ब्रजबाला मोहित रहकर अनेक बहाने से उनको देखने आया करती थीं उन्हीं दिनों एक ब्राह्मण नन्दजीके घर आया तो यशोदा ने दूध व चावल व मीठा उसे दिया जब उस ब्राह्मणने खीर बनाकर थाली में परोसा व परमेश्वरको भोग लगाकर आंख बन्द करके ध्यान किया तब श्रीकृष्णजी जाकर उसकी थाली में भोजन करने लगे उस ब्राह्मणने उन को खाते देखकर वह थाली छोड़ दी व यशोदासे कहा तुम्हारे बालक ने रसोई हमारी छू दी जब इसी तरह तीन बेर यशोदाने उस ब्राह्मणसे खीर बनवाई और भोग लगाते समय नन्दलालजी जाकर उसकी थाली में खाने लगे तब यशोदाने क्रोधित होकर कहा मैं अपनी इच्छासे ब्राह्मणको भोजन कराने वास्ते खीर करा देती हूं सो तू जूठी क्यों कर देता है मैं तुझे मारूंगी यह सुनकर श्रीकृष्णजीने कहा हे माता तू मुझको दोष मत लगा जब यह ब्राह्मण विनयपूर्वक भोजन करने वास्ते बुलाता है तब मैं इसके प्रेम को देखकर खाने लगता हूं यह बात नन्दलालजीकी सुनते ही ब्राह्मण देवता को ज्ञान उत्पन्न होगया तब वह बोला हे यशोदा धन्य तेरा भाग्य है कि साक्षात् वैकुण्ठनाथने तेरे यहां आनकर अवतार लिया ॥

सो० सुफलजन्मप्रभुआज भकटभयोसबसुकृतफल। दीनबंधु ब्रजराज दियोदर्श म्वहिं कृपाकरि ॥१॥

उसी प्रेममें वह ब्राह्मण मग्न होकर नन्दजीके आंगन में लोटने लगा व श्यामसुन्दरके सामने हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ मेरा यह अपराध क्षमा कीजिये व मैंने कहा था कि रसोई जूठी कर दी जो कोई तुम्हारे शरण में आया वह कृतार्थ हुआ आप अन्तर्यामी हैं मुझे अपनी शरण जानकर दयालु हूजिये श्यामसुन्दर उस ब्राह्मण का यह हाल देख कर यशोदाके पास खड़े हुये हँसने लगे व ब्राह्मणकी प्रेम भक्ति देखकर बिदा किया व यशोदा आदिकने यह हाल देखकर आश्चर्य माना इसी तरह श्यामसुन्दर अनेक बालचरित्र करके नन्द व यशोदाको सुख देते थे एक दिन श्याम व बलराम लड़कों के साथ अपने आंगन में खेलते थे सो कन्हैयाजी ने मिट्टी को खा लिया तब श्रीदामा बालकने यह हाल यशोदासे जाकर कहा यह बात सुनतेही यशोदा मारे क्रोधके हाथमें छड़ी लेकर श्यामसुन्दरको मारने दौड़ी जब वैकुण्ठनाथने अपनी माता को क्रोधमें आते देखा तब मारे डरके मुख अपना पोंछ कर खड़े हो गये व यशोदाने श्रीकृष्णजी से कहा तैंने किसवास्ते मिट्टी खाई गांववाले मेरी निन्दा करेंगे कि यह अपने पुत्रको कुछ खाने वास्ते नहीं देती इसलिये वह मिट्टी खाता है यह बात सुनकर मोहनप्यारे डरते हुये बोले हे मैया झूठी यह बात तुमसे किसने कही कदाचित् कोई वृथा कलंक लगा दे तो मेरा क्या दोष है तब यशोदा बोली श्रीदामा तेरे साथीने यह बात मुझसे कही है जब श्यामसुन्दरने श्रीदामा को डाटकर पूछा अरे मैंने कब मिट्टी खाई थी तब वह बोला हे भाई मैंने तुम्हारी माता से कुछ नहीं कहा है जब यशोदाने केशवमूर्तिका हाथ पकड़कर धमकाया तब बोले हे मैया कहीं मनुष्य भी मिट्टी खाता है॥

दो० झूठ कहत तोसों सभी मिट्टी म्वहिं न सोहाय। नहिं मानै जो बात तू दिखलावौं मुख बाय॥

यह वचन सुनकर यशोदा बोली अच्छा तेरी झूंठी बातोंका विश्वास नहीं करती तू सच्चा है तो अपना मुख खोलकर दिखला दे यह बात सुनते ही श्यामसुन्दरने अपना मुख खोलकर दिखला दिया तो यशोदाको उन के मुखमें तीनोंलोककी वस्तु जिस तरह पहिले देखी थीं उसी तरह फिर

दिखलाई दीं तब यशोदाने ज्ञानकी राह मनमें कहा देखो मेरे समान कोई मूर्ख न होगी जो त्रिलोकीनाथ को अपना पुत्र जानती हूं यह बालक मनुष्य न होकर नारायण का अवतार मालूम होता है किसवास्ते कि मैंने दो बेर इसके मुखमें सब संसारी व्यवहार देखा जब ऐसा विचारकर यशोदा उनकी स्तुति करनेलगी तब मोहनप्यारेने समझा अभी मुझे बहुत लीला करनी है अपने को प्रकट करना न चाहिये जब यह विचारकर अपनी माया यशोदा पर फैला दी तब उसने नंदजी से कहा मैंने यह सब चरित्र श्यामसुन्दरके मुख में देखा है यह हाल सुनकर नन्दराय बोले जो बात गर्गजी कह गये हैं सो सत्य मालूम होती है ॥

दो० नन्द कहत सुन बावरी हरि अति कोमलगात। लै सांटी धावत वृथा पुनि पाछे पछितात ॥
सो० अचरज तेरी बात को जानै देख्यो कहा। कुशल रहैं दोउ भ्रात राम श्याम खेलत हँसत ॥

यह वचन सुनते ही यशोदाने नन्दलालको अपना बेटा समझ कर गोद में उठा लिया व प्यार करके बोलीं हे प्राणप्यारे जो हाथ मैंने तुझे सांटी मारने को उठाया था वह हाथ मेरा गलि जावे व जिन आंखों से तुझको घूरा था वे फूट जावें हे बेटा तुम माखन व मिठाई छोड़कर मिट्टी क्यों खाते हो ऐसा कहकर यशोदा श्यामसुन्दरको घरके भीतर लेगई एक दिन श्याम व बलराम लड़कोंके साथ खेलते थे कि आपसमें कुछ झगड़ा हुआ तब बलरामजीने मोहनप्यारे से कहा ॥

दो० बोलि उठे बलराम तब इनके माय न बाप। हार जीत जाने नहीं लड़िकन लावत पाप ॥

यह वचन सुनते ही श्यामसुन्दर रोते हुये यशोदाके पास जाकर बोले ॥

चौ० मैया म्वहिं दाऊ दुख दीन्हों। मोसों कहत मोलको लीन्हों ॥
कहा करूं या रिस के मारे। मैं नहिं खेलन जात दुआरे ॥
पुनि पुनि कहत कौन तेरि माता। को तेरो तात कौन तेरो भ्राता ॥
गोरे नन्द यशोदा गोरी। तुम तो कारे आये चोरी ॥
मोसों कहत देवकी जाये। लै वसुदेव यहां मिसि आये ॥
मोल कछुक वसुदेवहि दीन्हों। ताके पलटे तुमको लीन्हों ॥

हे माता बलदाऊजीके सिखलावने से सब बालक भी मुझे यह बात कहकर चिढ़ावते हैं सो तू सत्य कह मैं किसका बेटा हूं यह सुनतेही यशोदा

गोधनकी सौगन्दखाकर बोलीं हे मोहनप्यारे मैं तेरी माता व तू मेरापुत्रहै॥
दो० पाछे ठाढ़े सुनत सब नंद श्यामकी बात । लीन्हों गोद उठाय हँसि सुन्दर सांवल गात ॥

केशवमूर्ति यह बात अपनी मातासे सुनकर प्रसन्न हुये व फिर लड़कों में जाकर खेलने लगे जब कभी रातको मोहनप्यारे बाहर खेलने की इच्छा करते थे तब यशोदा उनसे कहती थी कि बाहर मत जाव वहां हउवा काटि लेगा ॥
दो० रूप रेख जाके नहीं विधि हर अंत न पाय । हाऊसों डरपाय तेहि यशुमति रखत सोवाय ॥

फिर नन्दजीने मोहनप्यारे का मुण्डन व कर्णछेदन करके ब्राह्मण व अपने जातिभाइयों का सन्मान किया जब श्यामसुन्दर को पांचवां वर्ष लगा तब ग्वाल बालों के साथ ब्रजगोकुलकी गलियों में खेलने लगे ॥
दो० जाके गुणगण अगम अति निगम न पावत ओर । सो प्रभु खेलत ग्वाल सँग बँधे प्रेमकी डोर ॥
सो० खेलत भई अबेर जननी टेरत श्याम को । आवो धाम सबेर सांझ समय नहिं खेलिये ॥

हे राजन् सब ब्रजबाला श्याम व बलरामके रूपपर मोहित रहकर यह इच्छा रखती थीं कि वह किसीतरह हमारे घर आवैं तो हम उनका दर्शन पाकर आंखैं अपनी ठण्ढी किया करैं इसलिये श्यामसुन्दर अन्तर्यामी सबकी इच्छा पूर्ण करनेवाले ग्वालबालों समेत उनके घर जानेलगे सो गोपियां बड़ी प्रसन्नतासे दही व माखन खिलाकर उनका सन्मान करने लगीं और जो ब्रजबाला घर पर नहीं रहती थीं उनके सूने घरमें बेधड़क घुसकर दही व दूध व माखन उसका ग्वालबाल व वानरों को खिलाकर आप भी खाते थे जब सबका पेट गोरस खाते खाते भर जाता था तब दही आदिक पृथ्वीपर गिराके हांड़ी व मटुकी को तोड़कर कहते थे कैसा निकम्मा यह दूध व दही है जिसे कोई नहीं खाता यह उपद्रव देखकर गोपियां बहुत बरजती थीं तिसपर भी नहीं मानते थे तब ब्रजबाला माखनचोर उनका नाम धरकर हँसी से पुकारती थीं ॥
दो० माखनप्रभु गुण देखिकै गोपिन कियो उपाय । दूध दही माखन मही राखैं दूर दुराय ॥

सब गोपियां दही आदिक छींके पर रखने लगीं जिसमें उनका हाथ न पहुँचे तब उन्होंने यह उपाय निकाला कि पहिले ऊखलीके ऊपर पीढ़ा रख कर उसके ऊपर एक लड़के को खड़ा करदेते थे व उसके कांधेपर आप चढ़

कर छींके परसे दूध व माखन उतारकर खाजाते थे जव यह उपाय करनेपर भी वहुत ऊंचे रहनेसे वह वर्तन नहीं उतरता था तव मुरली व लाठी से उस हांड़ीमें छेद करके दही आदिकको अंजली में रोपकर खाते व लुटावते थे जव कोई गोपी यह दशा उनकी देखकर गालियां देती हुई निकट आवती तव मोहनीमूर्तिको देखतेही हँसि देती थी व गोपियां माखन देने के लालचसे ताली वजाकर श्यामसुन्दर को नचावती थीं॥

स० शङ्कर से सुर जाहि जपैं चतुरानन ध्यान न धर्म वढ़ावैं।
नेक हिये में जो आवतही रसखानि महाजड़ मूढ़ कहावैं॥
जापर सुंदर देववधू नहिं वारत प्राण अवार लगावैं।
ताहि अहीर की छोहरियां छछिया भरि छाछपै नाच नचावैं॥

दो० गोरसको चसको लग्यो दिन प्रति आवै लाल। यशुदहिं देन उराहनो आवैं सब व्रजवाल॥

कभी कभी गोपियां यशोदापास जाकर कहती थीं श्रीकृष्ण तुम्हारे पुत्र ने हमारा दूध व दही आदिक चुराकर खा लिया व दूसरे वालक व वानरों को खिलाकर हमारी मटुकी तोड़ डाली हमलोग वहुत छिपा छिपाकर अपना दूध व माखन रखती हैं तिसपर भी उसके हाथसे नहीं वचता कहां तक तुम्हारा संकोच करैं कदाचित् आप खाजावैं तो हमें सन्तोष हो दूसरे ग्वालवाल व वानरोंको खिलाकर लुटा देता है और हमारे रसोई व पूजा का स्थान मल व मूत्र करके भ्रष्ट करता है सो तुम अपने कन्हैया को मने करो तव श्रीकृष्ण वड़ी गरीवीसे कहते थे हे माता यह सव गोपियां मुझे झूठा कलङ्क लगाती हैं नहीं मालूम कौन ग्वालवाल इनका दूध व दही खागया होगा सीधा मेरा नाम इन्होंने सीख पाया है जो प्रतिदिन आनकर तुमसे चुगुली खाती हैं भला यह तो विचार करो कि मैंने छोटे हाथों से किस तरह छींके पर की वस्तु उतारी होगी॥

दो० मैं अपनो घर छोड़िकै कभी कहूं नहिं जात। आय सबै ये सुंदरी हथा कहत उठि प्रात॥

हे माता यह सव व्रजवाला मुझे यमुना किनारे व गली व राह में से अपने घर वरजोरी पकड़ ले जाती हैं और उनमें कोई मेरा मुख चूमती व कोई कपड़ा खींचती व कोई मेरी टोपी उतार लेती व कोई मेरे गाल में मुक्का मारकर कहती हैं तू नाच हे माता ये गोपियां मुझे वड़ा दुःख देती हैं तुम यह

गांव छोड़कर कहीं दूसरी जगह चलके बसो ऐसी ऐसी मीठी बातें मोहन-प्यारेकी सुनकर यशोदा ने गोपियों के कहने का विश्वास नहीं किया ॥

दो० माखनप्रभुहि उठाय के मातु लियो उरलाय। गोपिनसों विनती करी रहीं तबै शिरनाय॥

उसीतरह सब व्रजबाला उरहना देती समय नन्दलालजीकी अनोखी बातें सुनकर आनन्दपूर्वक अपने अपने घर चली आती थीं व मोहनप्यारे ने यशोदा के समझाने परभी दही व माखनकी चोरी करना नहीं छोड़ा व अँधेरे घरमें भी अपने चंद्रमुख के प्रकाश से माखन आदिक ढूंढ़कर खा जाते थे व यशोदा उरहना देती समय गोपियों से कहती थीं कि यह काम श्यामसुन्दर का नहीं है भला तुम्हीं न्याय करो इस छोटे बालक का हाथ छींकेपर किस तरह पहुँचा होगा किसी दूसरे ग्वालका यह कर्म है तुम लोग झूंठा कलंक मेरे प्राणप्यारे को लगाती हो जितना तुम्हारा गोरस आदिक गया हो मेरे यहां से ले जाव ॥

दो० झूठो दोष लगाय के नित उठि आवत भात। सन्मुख बोलत लाज तजि फेरि बनावत बात॥

जो तुम लोग सच्ची हो तो चुराती समय उसको मेरे पास पकड़ लाओ यह बात सुनकर सब व्रजबाला अपने अपने घर चलीगईं ॥

दो० घर घर मकटी बात यह सखा वृंद ले साथ। माखन चोरी खात है नन्दसुवन व्रजनाथ ॥
सो० सबके मन अभिलाख चोरी पकर न पाइये। धरिये माखन राख यही ध्यान सबके हिये ॥

हे राजन् जब कोई व्रजबाला चोरी करती समय पहुँचकर नन्दलालसे यह कहती कि तुमने हमारे सूने घरमें आनकर माखन व दही की हांड़ी में क्यों हाथ डाला तब उसको उत्तर देते मैं धोखे से अपना घर जानकर यहां चला आया व दहीमें चिउँटी पड़ गईथीं सो निकालता हूं कदाचित् कोई व्रजबाला दही आदिक खाती समय आनकर कहती हे माखनचोर तू हमारा दही क्यों खाता है तब मोहनप्यारे उस गोपी को अपनी आंखसैन से निकट बुलाकर दूध या दही जो मुख में लिये रहते थे उसके मुख व आंखों पर कुल्ला कर देते थे जबतक वह मुख व आंखि अपनी पोंछती तबतक भागकर अपने घर चले आते थे व यशोदा उनको नित्य समझाया करती थी हे बेटा नवलाख गौ मेरे दही दूध देनेवाली हैं जितना दूध व माखन

तुम्हारा मन चाहै खाया लुटाया करो किसी दूसरेके घर चुरावने मत जाव सब गांववाले मुझे कहते हैं तू अपने बेटेको भोजन नहीं देती इसीवास्ते वह सबके घर माखन व दही चुराकर खाता है जब गोकुलवासी तुम्हें माखनचोर कहकर पुकारते हैं तब मारे लज्जा के मुझसे किसी को अपना मुख नहीं दिखलाया जाता जब यह सब ग्वालिन हाट बाजारकी दूध दही बेंचनेवाली नित्य आनकर तेरा उरहना मुझे देती हैं तब मैं मारे लज्जाके डूब जाती हूं नन्दजी यह हाल सुनकर तुझे मारैंगे॥

सो० बड़े बाप के पूत चोर नाम राख्यो जगत। उपज्यो पूत सपूत नाम धरावत तात को॥

यह सुनकर मोहनप्यारे बोले हे माता अब मैं ग्वालियों के घर नहीं जाऊँगा ऐसा कहने पर भी उन्होंने दही आदिक चुराकर खाना नहीं छोड़ा तब सब गोपियोंने आपस में सलाह की कि एकदिन माखनचोरको दहीसमेत पकड़कर यशोदाके पास ले जाना चाहिये सो एकदिन मोहन-प्यारे किसी ब्रजबालाके घरमें माखन आदिक चुरा कर खाते थे जब कई गोपियोंने मिलकर उन्हें पकड़ लिया व उनके साथी ग्वालबाल वहां से भाग गये तब गोपियां केशवमूर्तिको पकड़कर यशोदाके पास लेचलीं उस समय ब्रजनाथजीने अपनी मायासे ऐसा छल किया कि जो गोपी हाथ पकड़े जाती थी उसीके पुरुषका हाथ दही मुखमें लगा कर उसे पकड़ा दिया और आप वहां से अन्तर्धान होकर ग्वालबालों में खेलने लगे व उस गोपीने हरिइच्छासे यह भेद नहीं जाना कि मैं अपने पतिका हाथ पकड़े जाती हूं व उसकी साथी गोपियोंने भी उसे नहीं पहिंचाना व उस ब्रजबालाने गोपियों समेत नन्दरानी के पास जाकर कहा नन्द-लालजीके मारे ब्रज गोकुलका रस नहीं बचता नित्य हमारा दही व माखन चुराकर खाजाते हैं जब दही खाती समय इन्हें कोई पकड़ता है तब कहते हैं कि तुमने बरजोरी मेरे मुखमें दही लगा दिया इनके मारे कोई बछरा बँधा रहने नहीं पाता इनमें बड़े चरित्र भरे हैं सिवाय माखन व दही चुराने के हमारी अँगिया भी फाड़ डाली है इनको तुम बालक मत समझो हमलोगोंको इनका हाल कहते लज्जा मालूम होती है॥

दो० करत फिरतउत्पातअति सब व्रजघरघरजाय।। नित उठि खेलत फागुरी गरियावत न लजाय॥

और जब हमलोग उरहना देनेवास्ते आती हैं तब तुम भी हमें झूठी बनाती हो सो आज श्यामसुन्दरको माखन चुराते व खाते पकड़कर तुम्हारे पास लाई हैं जब गोपियां इसीतरहका बहुत उरहना देचुकीं तब यशोदा बोलीं मेरा मोहनप्यारा कहां है हे बहिन तुम किसे पकड़कर लाई हो तुम अपने चोरका मुख तो देखो तब सत्य व झूठ तुम्हारा खुल जायगा मेरा श्रीकृष्ण तो कल्हसे घरके बाहरभी नहीं निकला यह बात सुनकर जैसे उस गोपीने जो पकड़े थी अपने चोरका मुख देखा तो अपना पति दिखलाई दिया यह चरित्र देखतेही उसने उसका हाथ छोड़ दिया व लज्जित होकर हँसने लगी तब यशोदाने सच्ची बनकर गोपियोंसे कहा मेरे बालकको तुमलोग वृथा चोरी लगातीहो मेरा कन्हैया पांच वर्षका चोरी योग्य नहीं है तुम मेरे प्राणप्यारेसे मत बोला करो यह बात गोपियों से कहकर यशोदाने मोहनप्यारेसे कहा हे बेटा मेरे बर्जने पर भी चोरी करना नहीं छोड़ता॥

दो० सुनि सुनि लाजन मरत मैं तू नहिं मानत बात। अब तोहिं राखौं बांधिकै जानी तेरी बात॥
सो० मोपै लीजै श्याम दधि माखन मेवा मधुर। सब कुछ तेरे धाम पर घर जाय बुलाय तुव॥

यह बात सुनतेही मोहनप्यारे ने तुतलाकर कहा हे माता तुम इन लोगोंके कहनेका विश्वास मत करो यह सब मेरे पीछे पीछे फिरा करती हैं कभी मुझे दूध व दहीके बर्तन व कभी बछड़ा पकड़ाकर अपने घरके अनेक काम मुझसे कराती हैं व मेरी झूठी चुगुली आनकर तुमसे खाती हैं यह मीठा वचन सुनकर सब व्रजबाला केशवमूर्तिका मुख देखती हुई अपने अपने घर चली गईं फिर एकदिन श्यामसुन्दर किसी व्रजबालाके घर माखन आदिक चुराने गये उस समय वह गोपी शय्यापर सोई थी नन्दलालजीने उस व्रजबालाकी चोटी चारपाईसे बांधदी व उसका माखन व दही ग्वालबालों समेत आनन्दपूर्वक खाया व बर्तन व दूध व दही व एक मटुका घी का जो बहुत दिनोंसे उसके घरमें रक्खाथा तोड़ डाला जब वह गोपी बर्तनोंका खटका सुनकर चिल्लाई तब अड़ोस पड़ोसकी गोपियों

ने आनकर नन्दलालजीको पकड़ लिया व यशोदापास लेजाकर कहा॥

दो० वही उलहना नित्यको सत्य करनेके काज। मैं गहि लाई श्यामको बांह पकड़के आज॥

हे राजन् उस दिन गोपियों ने सच्ची बनकर यशोदासे कहा अपने पुत्रके लक्षण देखो हमारे बर्तन तोड़डाले व मेरी चोटी चारपाई से बांधकर सब माखन व दही चुराकर खागया और हमलोगोंका चीर खींचकर नंगी करदेताहै इसकेमारे रास्ता नहीं चलनेपातीं यहबातसुनकर यशोदाबोलीं॥

क० प्यारेकी कोसन सुनि कसकी कलेजेमाहिं जीवनहै मेरा कान्ह कहा कर आयो है।
मोसों कहौ कोटिक कछू न कहौ बालकसों केतो दुख देखदेख कैसे कर पायो है॥
माखनको माठ लेके द्वारपर महरि बैठी तौलि तौलि लेव वीर जाको जेतो खायो है।
गोरसके काज ग्वालि गोदहू पसारतिहूं गारी मति देव मो गरीबिनी को जायो है॥

जब यशोदाको गोपियोंकी बात सत्य मालूम हुई तब मोहनप्यारे पर क्रोध करके कहा तैंने अच्छा चलन चोरीका सीखाहै हे बेटा मैंने तुझे बारम्बार समझाया पर तू मेरा कहना नहीं मानता अब मैं तुझको बांधकर घरमें बैठा रक्खूंगी यह बात सुनकर श्यामसुन्दरने कहा हे मैया यह गोपी मुझे बरजोरी पकड़कर अपने घर लेगई व हमसे इसने अपने घरका काम काज कराया अब झूठ कलंक लगाकर उलहना देने आई है यह बात मोहनप्यारेकी सुनकर यशोदा हँसने लगी व सब गोपियां अपने अपने घर चलीगईं हे परीक्षित इसीतरह श्यामसुन्दर नई नई लीला करके अपनी माता व पिता व व्रजवासियों को सुख देते थे देखो जो वैकुण्ठनाथ आठों पहर क्षीरसमुद्र में रहतेहैं वह गोपियों का दही व माखन चुराकर खातेथे॥

दो० विश्वभरण पोषणकरण कल्पतरोवर नाम। सो दधि चोरी करतहैं प्रेमविवश सुखधाम॥
धनिव्रजवासिनधन्यव्रजधनिधनिव्रजकीगाय। जिनको माखनचोरिहरि नितउठि वरबरखाय॥

देखो जिस परब्रह्म परमेश्वर के चरणों का ध्यान ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता आठोंपहर अपने हृदयमें करते हैं व जल्दी उनका दर्शन नहीं पाते सो उन्हें व्रजकी अहीरियां बांह पकड़कर यशोदाके पास लेजाती थीं उनके लीला व भेदको कोई नहीं जान सक्ता इतनी कथा सुनकर राजा परीक्षितने पूछा हे स्वामी नन्द व यशोदा ने ऐसा कौन तप किया था जिसके फल से परब्रह्म परमेश्वर उनके पुत्र कहलाये व उनको बाललीला

दिखलाकर ऐसा सुख दिया और यह बात वसुदेव व देवकी को नहीं प्राप्त हुई शुकदेवजी बोले हे परीक्षित पिछले जन्म नन्दजी द्रोणनाम वसु देवता होकर यशोदा धरा नाम उनकी स्त्री थी सो दोनों ने ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार बहुत दिनतक परमेश्वरका तप किया सो नारायणजीने प्रसन्न होकर ब्रह्मासे कहा तुम उनको दर्शन देकर जो वरदान मांगें सो देव तब ब्रह्मा ने उनको दर्शन देकर कहा तुम्हें जो इच्छा होय सो वरदान मांगो तब उन्होंने दण्डवत् करके विनय किया कि हमें परमेश्वरकी भक्ति प्राप्त हो ब्रह्माजी बोले तुम्हें ऐसी भक्ति परमेश्वरकी होगी जो दूसरे को मिलना कठिन है तुमलोग व्रज गोकुलमें जाकर मनुष्यका तन धारण करो परब्रह्म परमेश्वर सगुण अवतार लेकर तुम्हें अपने बाललीलाका सुख दिखलावेंगे उसी वरदानके प्रतापसे द्रोण ने नन्दजीका व धरा ने यशोदाजीका जन्म पाकर परमेश्वरके बाललीलाका सुख देखा था॥

नवां अध्याय।

यशोदा का श्यामसुंदर को ऊखल में बांधना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् एक दिन प्रात समय यशोदा गोपियों समेत अपने घरमें दही मथती थीं सो मथानीका शब्द मेघरूपी सुनकर मोहनप्यारे नींदसे जागे व मैया मैया करके रोने व पुकारने लगे जब मथानी का अधिक शब्द होने से उनका रोना किसीने नहीं सुना तब आप उठ कर रोवनी सूरत बनाये हुये यशोदाके पास जाकर तुतलाते हुये बोले अय मैया तू पुकारने पर भी मुझे कलेवा देने नहीं आई तुझको अब तक घर के काज से छुट्टी नहीं मिली ऐसा कहकर नंदलालने यशोदाकी मथानी पकड़ ली व चरुई में से माखन निकालकर फेंकने लगे तब नन्दरानी झुँझलाकर बोली अय बेटा तुमने यह क्या चाल निकाली है चल उठ तुझे कलेवा देऊं यह सुनकर नन्दलालजीने कहा पहिले तैंने कलेवा क्यों नहीं दिया अब मेरी बलाय कलेवा लेवे जब यशोदाने श्यामसुन्दर को फुसला कर गोदमें उठा लिया व मुख चूमकर माखन रोटी खाने वास्ते दिया तब मोहनप्यारे प्रसन्न होकर खाने लगे व यशोदा अपने अंचलका ओट करके

खिलाने लगीं व श्यामसुन्दर अपनी माताके जड़ाऊ गहनेमें अपना मुख देखकर प्रसन्न होते थे व यशोदा बड़े प्रेमसे उनको लिये बैठीं थीं उस समय श्रीकृष्णजी ने अपनी मायासे दूध जो चूल्हे पर चढ़ा था उबाल दिया तब यशोदा श्रीकृष्णजीको गोदसे उतारकर आप दूध बचाने चलीं तब मुरली-मनोहरने क्रोधित होकर मन में कहा देखो माता ने हमसे दूधको अच्छा जाना जो पृथ्वीपर मुझे पटककर उसे उतारने चली गई ऐसा विचारकर नन्दलालजीने बर्तन फोड़के सब दही व मट्ठा गिरा दिया व माखन भरी मटुकी लेकर ग्वालबालों में चले गये व एक ऊखली पर जो वहां औंधी पड़ी थी बैठ गये तब उनके साथी लड़कोंने कहा नित्य तुम हमारे घरका माखन व दही खाया करते थे आज अपने घरका हमें भी तो खिलावो यह बात सुनकर श्यामसुन्दर प्रसन्न हुये व अपने चौगिर्द सबको बैठाल कर माखन बांटके खाने लगे जब यशोदाने आनकर अपने आंगन में दही व मट्ठेकी कीचड़ देखी तब छड़ी हाथ में लेकर जहां पर श्यामसुन्दर माखन खा रहे थे जा पहुँची उसे क्रोध में आते देखकर केशवमूर्ति ग्वाल बालों समेत भाग चले व यशोदा उनके पीछे दौड़ी ॥

दो० आगे सुन्दर श्यामघन पाछे यशुमति माय। दामिनि ज्यों दौड़ी फिरै हरि नहिं पकड़ो जाय ॥

जब श्यामसुन्दर पकड़ाई नहीं दिये तब यशोदा बहुतसी गोपियों को साथ लेकर पकड़नेवास्ते दौड़ी तिसपर भी वह हाथ नहीं आये हे राजन् जिस परब्रह्म परमेश्वरने अपने दोपग में चौदहोंलोक नाप लिया था उन को किसकी सामर्थ्य है जो पकड़ सकै जब यशोदा आदिक सब ब्रजबाला दौड़ती दौड़ती थक गईं व श्यामसुन्दरके शरीर तक भी किसीका हाथ नहीं पहुँचा तब दीनानाथ भक्तवत्सल माताको दुःखी देखकर अपनी इच्छा से यशोदाके पास खड़े होगये सो यशोदाने उन्हें पकड़ लिया व क्रोध-वश उन्हें बांधनेवास्ते रस्सी मांगकर कहा मैं तुझे समझाते समझाते हार गई पर तैंने माखन व दही चुराकर खाना नहीं छोड़ा अब तुझे ऊखल में बांधूंगी जब ऐसा कहकर यशोदा श्यामसुन्दरको रस्सी से बांधने लगी तब गोपियोंने नंदरानीसे हँसकर कहा तुमको हमलोगोंका कहना झूठा

मालूम होता था आज अपनी हानि देखकर तुम्हें भी सत्य मालूम हुआ यह बहुत अच्छी बातहै जो माखनचोरको बांधती हो जब यशोदा श्याम-सुन्दरको रस्सीमें बांधकर गांठ देने लगी तब वैकुण्ठनाथकी माया से दो अंगुल रस्सी छोटी होगई उस समय यशोदाने गोपियोंसे रस्सी लेनेवास्ते कहा यह बात सुनतेही सब व्रजबाला हँसकर कहने लगीं इन्होंने हमारा माखन व दही बहुत चुराकर खाया है सो इनको बांधनेवास्ते हम रस्सी लेआदेती हैं जब गोपियां अपने अपने घरसे रस्सी लाईं और यशोदा सब रस्सियोंमें गांठ देकर दीनानाथ को बांधने लगीं तब भी परमेश्वरकी इच्छासे गांठ देती समय वह रस्सी छोटी होगई यह महिमा श्यामसुन्दर की देखकर सबको आश्चर्य मालूम हुआ जब रस्सी पूरी न होनेसे यशोदा आदिक गोपियां हार मान गईं तब केशवमूर्ति अपनी इच्छासे एक छोटी रस्सीमें बँधि गये तब यशोदाने क्रोधवश गांठ देकर वह रस्सी ऊखल में बांध दी व सब व्रजबालाओं को सौगन्द धराकर कहा इसे कोई मत खो-लना और उसीतरह वैकुण्ठनाथको बँधा हुआ छोड़कर यशोदा घरका काम करने लगी इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् देखो जिस परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन ब्रह्मा व महादेवको जल्दी ध्यान में नहीं मिलता वह ऐसे भक्त आधीन रहते हैं कि रस्सीमें बँधि गये व ऐसी माया परमेश्वरकी बलवान् है कि यशोदाने दोबेर उनके मुख में तीनों लोकका व्यवहार देखा था तिसपरभी उनको न पहिंचानकर ऊखलमें बांध दिया ॥

दो० आप बँधावत प्रेमवश भक्तन छोड़त फंद । वेद पुकारत रात दिन भक्तवछल नँदनंद ॥

हे राजन् पहिले तो गोपियां श्यामसुन्दर के बांधती समय हँसती थीं यशोदाके जाने उपरान्त जब गोपियोंने मोहनप्यारेको बँधे हुये उदास देखा तब सब व्रजबाला उनके प्रेममें रोकर इसतरह पछताने लगीं देखो हमलोगों ने किसवास्ते रस्सी अपने घरसे ला दी जो हमारा प्राणप्यारा बांधा गया फिर सब गोपियोंने यशोदाके पास जाकर कहा तुमने माखन व दही खाने व लुटानेके कारण श्यामसुन्दरको बांधा है हमसे अपराध हुआ जो तुमको आनकर उलहना दिया अब हमारे ऊपर दया करके उनको खोल देव ॥

दो० बारबार देखत बदन हिचकिन रोवत श्याम। बज्रहुसे तेरो हियो कठिन अहो नँदवाम॥

यह वचन सुनतेही यशोदाने झुंझलाकर कहा तुम लोग अपने अपने घर जाव अब झूंठी प्रीति दिखलाने आईहो प्रतिदिन तुम्हीं लोग उलहना देने आती थीं जब यशोदाने गोपियों का कहना नहीं माना तब सब व्रजबाला उदास होकर रोती हुई अपने अपने घर चली गईं उस समय एक बालकने जाकर बलरामजीसे कहा कि यशोदाने श्यामसुन्दर को ऊखलमें बांधा है सो वे बैठे रोते हैं बलभद्रजी यह वचन सुनकर दौड़े गये व अपने भाईको बँधे देखतेही रोकर कहा हे भाई मैं तुमको नित्य समझाता था कि गोपियों के घर माखन चुराने मत जाया करो माता मारैगी सो तुमने हमारा कहना नहीं माना अब मैं तुम्हारे छुड़ानेवास्ते यशोदाके पास जाता हूं ऐसा कहकर बलरामजी यशोदाके पास गये व उससे हाथ जोड़कर कहा हे माता मेरे भाईको छोड़ देव उसके बदले चाहो मुझको बांध रक्खो न मालूम तुम्हारे कौन जन्मके तप करनेसे वह संसार में जन्म लेकर तुम्हें बाललीलाका सुख दिखलाते हैं और तुमने उनको नहीं पहिंचानकर गोरसहानि करनेके बदले बांधा है॥

दो० छूतो तनिक जो और कोउ आज देखत्यों सोय। तू जननी कछु वश नहीं जो कछु करो सो होय॥

यह वचन सुनकर यशोदा बोली हे बलभद्र मेरी बात सुनो आज मुझे श्रीकृष्णको दण्ड अच्छीतरह करने देव मैंने उसे बहुत समझाया तिसपर भी उसनें गोपियोंके घर जाकर माखन व दही चुराना नहीं छोड़ा व्रजवासियोंने उसका नाम माखनचोर रक्खा है भला तुमहीं बतलाओ मेरे घर उसे कौन वस्तु खानेवास्ते नहीं मिलती जो वह बिराने घर दही व माखन चुराकर खाता है और मेरा कहना कुछ नहीं मानता जब ग्वालिन मुझे उलहना देती हैं तब मैं मारे लज्जाके डूबजाती हूं और सब जगह जाकर धूम मचाता है घरमें एक साइत नहीं बैठता इसलिये आज मैंने उसको धमकानेके वास्ते बांधा है तिसपर तुमभी मुझे कहते हो कि तुमको दूध व माखन कन्हैयासे अधिक प्यारा है यह बात सुनकर बलरामने कहा हे माता तुमको छोड़कर किससे कहैं दूसरा हमारे मनका रखनेवाला कौन

है व हे मैया गोपियां झूठा उलहना श्रीकृष्णजीका तुम्हें देती हैं सब व्रजबाला श्यामसुन्दरसे प्रीति रखकर उनको देखनेवास्ते उलहना देनेके बहाने तुम्हारे पास आवती हैं ॥

दो० दधि माखन पय कान्हको कान्हाकी सब गाय । मोको है बल कान्ह को तू नहिं जानत माय ॥

यह बात सुनकर यशोदाने कहा तुम दोनों भाइयोंका एक सम्मत है जब बलरामजीके कहनेसे भी यशोदाने मोहनप्यारेको नहीं छोड़ा तब बलभद्रजी इच्छा श्यामसुन्दरकी इसी तरह पर जानकर वहांसे व्रजनाथ जी के पास आये व हँसकर उनसे कहा आपकी लीला तुम्हारे विना दूसरा कौन जानसक्ता है ॥

चौ० को तुम छोरन बांधन हारा । तुम छोरत बांधत संसारा ॥

हे भाई तुम नन्दरानीकी भक्तिसे उसके हाथ बिक गयेहो आप दैत्यों के मारने व अपने भक्तोंका दुःख छुड़ानेवास्ते लक्ष्मीपति होकर सदा भक्तों के वश रहतेहो इस कारण कुछ बल तुम्हारा भक्तोंपर नहीं चलता ॥

दो० बारबार पद नायशिर बिनती प्रभुहिं सुनाय । प्रेममगन निरखत वदन हर्षसहित दोउ भाय ॥

ऐसा कहकर बलरामजी वहांसे चले आये तब श्यामसुन्दरने विचार किया कि नलकूबर मणिग्रीव दो पुत्र कुबेर देवताके नारदमुनिके शाप देनेसे नन्दजीके द्वारपर दो वृक्ष आंवलेके होकर खड़े हैं व यमलार्जुन उनका नाम यहां प्रसिद्ध है उनको उस शापसे छुड़ाकर अपना दर्शन दिया चाहिये उन्हींके उद्धार करनेवास्ते तो मैंने अपनी भुजा बँधवाई है ॥

दो० व्रजवासी प्रभु भक्तहित आप बँधायो दाम । ताही दिनसे प्रकट भो दामोदर अस नाम ॥

दशवां अध्याय ।

श्यामसुंदरका नलकूबर व मणिग्रीवको उद्धार करना ॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजी से पूछा महाराज आप विधिपूर्वक हाल दोनों वृक्षोंका वर्णन कीजिये कि किसवास्ते नारद जीने उनको शाप दिया था शुकदेव मुनि बोले हे राजन् पिछले जन्ममें नलकूबर व मणिग्रीव दो बेटे कुबेर देवताके महादेवजीकी भक्ति करनेसे धनपात्र होकर कैलास पर्वतपर रहते थे एक दिन वह दोनों अपनी स्त्रियां

साथ लेकर वनविहार करने गये जब वहां मदिरा पीकर मतवाले हुये तब अपनी स्त्रियों समेत नंगे होकर गंगाजीमें जलक्रीड़ा करने लगे व उसी समय अचानक नारदजी वहां आन पहुँचे तब उनकी स्त्रियां नारदमुनि को देखतेही अति लज्जित होकर अपना अपना वस्त्र पहिरने लगीं और वे दोनों मतवाले तरुणाईके अभिमानसे अंधे होकर उसीतरह खड़े रहे उन्होंने धनके गर्वसे नारदजीको दण्डवत् भी नहीं किया और उन्हें नारद मुनिका आना बुरा मालूम हुआ यह दशा देखकर नारदजीने मनमें कहा देखो इनको द्रव्यका घमण्ड हुआ इसलिये काम व क्रोधके वश होकर उसे अच्छा जानते हैं और किसीको कुछ नहीं समझते व मनुष्य धन पावने से परस्त्रीगमन व जीवहिंसा करके जुआ खेलता है व अपने शरीरको अमर जान कर यह नहीं समझता कि एकदिन अवश्य इसका नाश होगा और मरने उपरांत इस तनको पड़ा रहनेसे कुत्ता व कीड़े खाजावैंगे व जलानेसे राख होजायगा इसलिये धनवान् मनुष्यको अच्छे बुरे छोटे बड़ेका विचार रखना उचितहै व गरीब मनुष्यको अभिमान न होकर केवलपेटभरनेसे काम रहताहै और कंगाल लोग परमेश्वरके भक्त होते हैं व धनपात्रसे हरिभजन नहीं बनपड़ता व मूर्खलोग इस संसारी झूठी मायामोहमें फँसकर अपना तन व धन व परिवार देखनेसे प्रसन्न होते हैं बुद्धिमान् व हरिभक्त मनुष्य धनवान् व कंगाल दुःख व सुखको बराबर जानते हैं ऐसा विचारकर उन दोनोंका घमण्ड तोड़नेवास्ते नारदजीने यह शाप दिया कि तुम दोनों भाई आंवलेके वृक्ष होकर मर्त्यलोकमें रहो तब तुमको धनका अभिमान करने व मदिरा पीनेका स्वाद मिलेगा जब किसीको कुछ रोग उत्पन्न हो तब वह उसका दुःख उठाकर दूसरेके कष्टकोभी उसीतरह जानताहै जिसके पांव में कांटा चुभाहो वह दूसरेके कांटा चुभने व पीड़ा होनेका हाल जानै ॥

चौ० जाके पैर न फटै बिवाई। वह का जानै पीर पराई ॥

जबतक मनुष्य दुःख नहीं पाता तबतक उसको दूसरेका दुःख देखकर दया नहीं आती तरुणाई व धनकी शोभा धर्म व शील व लज्जाहै सो तुमने छोड़दी इसलिये थोड़े दिन तुमको दण्ड भोगना पड़ेगा जब उन दोनोंने

यह बात सुनी तब उनको तन व धनका अभिमान टूटगया व दोनों भाई दौड़कर नारदजीके चरणोंपर गिरपड़े और हाथ जोड़कर विनय किया कि इस शापसे हमारा उद्धार कब होगा नारदमुनि ने कहा जब श्रीकृष्णजी पृथ्वीका भार उतारनेवास्ते मथुरापुरीमें जन्म लेकर नन्द व यशोदाके घर बाललीला करैंगे तब तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगा॥

दो० मोदर्शन को गुण सरस समझे क्यों न विचार। कृष्णदर्श तुम पाइकै होइहौ तव उद्धार॥

हे राजन् उसी शापसे वह दोनों गोकुलमें आनकर यमलार्जुन नाम आंवलेके वृक्ष हुये थे उस समय श्रीकृष्णजी उनका शाप याद करके ऊखल को घसीटते हुये उन वृक्षोंके पास लेआये व दोनों वृक्षों में ऊखल अड़ाकर ऐसा झिटकदिया कि वह जड़से उखड़ गये व उन वृक्षों के गिरनेका बड़ा शब्द हुआ व उनकी जड़मेंसे दो मनुष्य अति सुन्दर व तेजवान् प्रकट हुये जब मोहनप्यारेने अपने चतुर्भुजी स्वरूपका उन्हें दर्शन दिया तब दोनों भाइयों ने उस मोहनी मूर्त्तिको दण्डवत् व परिक्रमा करके हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ सिवाय तुम्हारे और कौन हम ऐसे अधर्मियों की सुधि लेवै आप जन्म व मरणसे रहित होकर केवल हरि-भक्तों के सुख देने वास्ते अपनी इच्छा से अवतार लेते हैं और सब संसार तुम्हारी माया से उत्पन्न होता है व ब्रह्मादिक देवता आपके चरणोंका ध्यान अपने हृदयमें रखते हैं सो नारदजीने हमारे ऊपर बड़ी कृपा करके शाप दिया था जिस कारण आपके चरणों का दर्शन मिलकर सब दुःख हमारा छूटगया जिसतरह सूर्य व चन्द्रमा के प्रकाश से सब वस्तु दिखलाई देती है व अँधेरे में कुछ नहीं सूझपड़ता उसीतरह तुम्हारा भजन व स्मरण करनेसे ज्ञानकी आंख खुलजाती है और जो मनुष्य आपसे विमुखहैं उन्हें अन्धा समझना चाहिये यह सब स्तुति सुनकर दीनानाथ बोले नारदमुनि ने तुम लोगोंको गोकुलमें वृक्ष बना दिया था उन्हीं की कृपासे मेरा दर्शन तुम्हें मिला अब जो कुछ तुमको इच्छाहो वह वरदान मांगो ऐसी कृपा अपने ऊपर देखकर नलकूबर व मणिग्रीवने विनय किया हे महाप्रभु जब आपका दर्शन प्राप्त हुआ तब हमलोगोंको किसी बातकी इच्छा नहीं है पर इतना

वरदान कृपा करके दीजिये कि हमारे हृदयमें सदा आपकी नवधा भक्ति बनीरहै ऐसा वचन सुनकर श्यामसुन्दर बहुत प्रसन्न हुये व इच्छापूर्वक उन्हें वरदान देकर बिदा किया सो दोनों भाई विमानपर बैठकर कुबेरलोक में चले गये ॥

ग्यारहवां अध्याय।

नंदजी का गोकुल छोड़कर वृन्दावनमें बसना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जब वह दोनों वृक्ष गिरपड़े तब वृक्षके गिरनेका शब्द सुनकर यशोदा अति व्याकुलतासे दौड़ी व जिस जगह श्रीकृष्णको बांधगई थी वहां उनको नहीं देखा तब अधिक घबड़ाकर श्यामसुन्दरका नाम लेके पुकारने लगी व नन्दजी भी यशोदाका चिल्लाना सुनकर दौड़आये व जहां दोनों वृक्ष गिरेथे वहांपर क्या देखा कि नन्दलालजी उन वृक्षोंके बीचमें ऊखलसे बँधे सिकुड़े बैठे हैं तब नन्दजीने केशवमूर्त्तिको ऊखलसे खोलकर गोदमें उठालिया व छातीसे लगाकर रोने लगे व यशोदापर क्रोध करके कहा तैंने मेरे प्राणप्यारेको ऊखलमें क्यों बांधा था आज परमेश्वरने इसका प्राण बचाया उससमय मोहन-प्यारे यशोदाकी ओर कनखियों देखकर अपनी आंख मलते जाते थे व यशोदाने उनको नन्दजीके गोदसे लेकर अपने गले लगा लिया जैसे सांप अपना मणि खोयाहुआ पावै वैसा हर्ष यशोदाको हुआ व गोपियां मोहनप्यारेका प्राण बचनेसे बहुत प्रसन्न हुईं व नन्द व उपनन्द आदिक वहां इकट्ठे होकर आपसमें कहनेलगे ऐसे पुराने वृक्ष विना आंधी आये जड़से क्योंकर उखड़ गये इस बातका बड़ा आश्चर्य मालूम होताहै तब एक ग्वालबालने जो चरित्र देखा था ज्योंका त्यों कह सुनाया पर उस बालककी बातका कोई विश्वास न करके आपसेंम कहनेलगे कि मोहन-प्यारेसे इतने बड़े वृक्ष कैसे गिरे होंगे तब दूसरेने कहा कदाचित् ऐसाही हुआ हो परमेश्वरकी गति परमेश्वर जानै दूसरा कौन जान सक्ता है इसी तरह सब कोई आश्चर्यकी बातें करतेहुये मनमोहनप्यारेको घरमें लेआये व नन्दने दान व दक्षिणा ब्राह्मण व कंगालों को देकर श्रीकृष्णजी से

पूंछा हे बेटा तुमको भी दो मनुष्य वृक्षमेंसे निकलते हुये दिखलाई दिये थे ब्रजनाथने कहा हे बाबा हमने कुछ नहीं देखा यह मीठा वचन सुनतेही उनको नन्दजीने अपने गले लगालिया व उनके शरीरमें जो धूर लगीथी सो पोंछदिया तब नन्दलालजी बोले ॥

सो० माखन ल्याव रि मात भूखलगी मोको बहुत। आज न खायों मात सुनत वचन यशुमति हँसी॥

यह वचन सुनतेही यशोदाने माखन रोटी व मेवा मिठाई आदिक लेआदिया सो मोहनप्यारेने ग्वालबालों समेत बड़े हर्षसे भोजन किया जब श्रीकृष्णजीके वर्षगांठ का दिन आया तब नन्दजीने अपने जातिभाइयों व ब्राह्मणों को सन्मानपूर्वक खिलाकर बड़ी खुशी मनाई और उपनन्द आदिक ग्वालों से कहा गोकुलमें नित्य नया उत्पात उठता है इसलिये दूसरे स्थानपर जहां घास व जलका सुख हो चलकर बसा चाहिये यह सुनकर उपनन्दने कहा वृन्दावन में जहां गोवर्द्धन पर्वत है चलकर बसो तो अच्छीतरह आराम पावैंगे जब यह सम्मत सबको भला मालूम हुआ तब दूसरे दिन शुभ साइत में नन्दजी अपने जातिभाई गोकुलवासी व घरकी सब वस्तु समेत वृन्दावन को गये व सन्ध्या समय पहुँचकर वृन्दादेवी का पूजन किया और आनन्दपूर्वक वहां बसे सो श्यामसुन्दरकी कृपा से सब वृन्दावन फूल व फल व घास आदिक से हरा होगया अनेक रंगके पक्षी बोलने लगे और सब कोई वहां अपने रहनेवास्ते अच्छे अच्छे स्थान बनाकर आनन्दपूर्वक उसमें रहने लगे व गौ व बछवा आदिकने वहां चरनेका बड़ा सुख पाया व सब कोई नित्य नई नई लीला केशवमूर्त्तिकी देखकर सुख पावते थे॥

दो० सुख यशुमति अरु नंदको को करिसकै बखान। सकल सुखनकै खानि हरि जहांरहसुखमान॥

हे राजन् जब ब्रजनाथजी पांच वर्षके हुये तब उन्होंने नन्दरानी से कहा हे मैया हम भी बछरा चराने जावैंगे तुम बलदाऊसे कहिदेव कि वनमें हमको अकेला न छोड़ैं तब यशोदा बोली हे बेटा बछरा चरानेवास्ते बहुत से बालक तुम्हारे यहां चाकर हैं मेरी आंखोंके सामने से तुम अलग मत हो यह सुनकर नन्दलालजी ने कहा तुम मुझको बछरा चराने व खेलने

वास्ते वनमें न जाने देवगी तो मैं माखनरोटी नहीं खाऊँगा जब यशोदा कन्हैयाजीके हठ करने से हार गई तब शुभ साइतमें ब्राह्मणोंको कुछ दान देकर सब ग्वालबालों को बुलवाया व श्याम बलरामको सौंपके उनसे कहा तुमलोग बछरा चराने बहुत दूर मत जाना व सन्ध्या होनेके पहिले दोनों भाइयोंको घरपर लेआना व इनको वनमें अकेले न छोड़कर अपने साथ लिये रहना जब ऐसा समझाकर श्रीकृष्ण व बलरामको बछरा चराने वास्ते बिदा किया तब श्याम व बलराम ग्वालबालों समेत यमुना किनारे बछरा चराकर आपस में खेलने लगे ॥

दो० दिये बच्छ बगराय सब चरत आपने रंग । बच्छ चरावत नंदसुत मिलि ग्वालनके संग ॥

सो० उर मुक्तनकी माल शीशमुकुट कटिपीतपट । हाथ लकुटिया लाल डोलत ग्वालनसंग प्रभु ॥

दो० माखनरोटी और जल शीतलछाक बनाय । दीन्हों जल्दी ग्वालसँग यशुमति वनहिं पठाय ॥

जब कंसने सुना कि नन्द आदिक गोप गोकुल छोड़कर वृन्दावन में बसे हैं तब उसने वत्सासुरको बुलाकर विनयपूर्वक श्यामसुन्दरके मारने वास्ते भेजा जब वत्सासुर बछरारूप वृन्दावन में आया व जो बछरे श्यामसुन्दर चराते थे उन्हीं में वह भी मिलकर चरने लगा और उसे देखतेही सब बछरे डरकर जिधर तिधर भाग गये तब केशवमूर्त्तिने उसे पहिचानकर आंखकी सैनसे बलरामजी से कहा हे भाई यह राक्षस कंसके भेजने से बछरारूप बनकर मेरे मारनेके वास्ते आया है जब वत्सासुर अपनी घात लगाये हुये चरते चरते श्रीकृष्णचन्द्रजीके पास आन पहुँचा तब मोहनप्यारे ने पिछला पांव उसका पकड़के घुमाकर वृक्षकी जड़पर ऐसा पटका कि प्राण उसका निकल सटका उस समय देवतोंने श्यामसुंदर पर फूल वर्षाये व ग्वालबाल बोले हे नन्दलालजी तुमने बहुत अच्छा किया जो कपटरूप राक्षसको मारडाला नहीं तो हम सबको यह खाजाता फिर आपस में सब कोई प्रसन्न होकर खेलने लगे जब राजा कंसने वत्सासुरके मरनेका हाल सुना तब अतिशोचित होकर बकासुर उसके भाईको भेजा सो वह बकुलारूप से वृन्दावनमें आया व यमुना किनारे पर्वत समान रूप बनके इस घात में बैठा कि श्रीकृष्णजी आवैं तो मछलीकी तरह उनको निगलजाऊं

व श्यामसुन्दरने उसको देखकर जाना कि यह राक्षस है और किसी ग्वाल बालने नहीं पहिंचाना जब ग्वालबालोंने मोहनप्यारे से कहा हे भाई हम ने तो इतना बड़ा बकुला कभी नहीं देखा था तब श्यामसुन्दर बोले तुम लोग धैर्य रक्खो हम इसको मारैंगे ऐसा कहकर नन्दलालजी ग्वालों के बर्जने पर भी उस बकुलेके पास चले गये तब वह श्यामसुन्दरको उठाकर निगल गया व मुख अपना बंद करके प्रसन्न होकर मनमें कहने लगा आज मैंने वत्सासुर अपने भाईका बदला लिया और यह हाल देखतेही सब ग्वालबाल व्याकुल होकर आपसमें कहनेलगे हमलोग जाकर यशोदाजीको जिन्होंने अपना पुत्र हमें सौंप दिया था क्या कहैंगे इस समय बलभद्रजी भी न मालूम कहां पीछे रहगये हैं ऐसा कहते व रोते हुये ग्वाल बाल सारे डरके वहां से भागे जब थोड़ी दूर पर बलभद्रजी से भेंट हुई तब लड़कोंने बलरामजीसे कहा हमारे बर्जने पर भी मोहनप्यारे बकुलेके पास चले गये सो वह उनको निगल गया बलरामजी बोले तुम मत डरो नन्दलालजी उसको मारकर तुमसे आन मिलैंगे जब ब्रजनाथने ग्वाल बालों को दुःखी देखा तब अपने अंग में ऐसी ज्वाला उत्पन्न की कि उस बकुलेका पेट जलने लगा जब उस राक्षसने व्याकुल होकर श्यामसुन्दर को उगिल दिया तब नन्दलालजीने एक ठौर उस कपटरूपको पांव के नीचे दबाकर व दूसरा ठौर हाथ से पकड़के चीर डाला तो वह मर गया उस समय देवतोंने बड़े हर्षसे बाजन बजाये ॥

दो० बकासुर सुरपुर गयो अधम असुर तन त्याग। सुर हर्षत वर्षत सुमन गगन सहित अनुराग॥

जब मरती समय उस बकुले ने बड़ा शब्द किया तब बलरामजी ने ग्वालबालों से कहा कि कन्हैयाने राक्षसको मारडाला हमलोग भी देखैं जब सब बालक व बलरामजी वहांपर गये तब नन्दलालजीने अपने सखा लोगोंसे कहा हमने चोंच फाड़कर इसको मारा है यह बात सुनतेही सब ग्वालबाल परमेश्वरको मना कर कहने लगे कि आज नन्दलालका प्राण नारायणजीने बचाया और तीनोंलोक में कोई इनका मारनेवाला नहीं है जबसे ये उत्पन्न हुये तबसे इन्होंने कई राक्षसों को मारडाला यह हमारा

बड़ा भाग्य समझना चाहिये जो इनके सखा कहलावते हैं जब मोहनप्यारे सन्ध्यासमय ग्वालबाल व बछरों समेत हँसते व खेलते हुये अपने घर आये तब मुरली की ध्वनि सुनतेही सब व्रजबाला प्रसन्न होकर अपने अपने घरसे बाहर निकल आईं व बनवारीलालकी छवि देखकर सबोंने अपनी अपनी आंखें ठण्ढी कीं और ग्वालबालोंने अपनी अपनी माता व यशोदा आदिक से बकुला व वत्सासुर दोनों राक्षस मारे जाने का हाल ज्यों का त्यों कह दिया ॥

दो० मोहनलीला नंदसों ग्वालन कही सुनाय । देवी देव मनाइकै मात लियो उरलाय ॥
सुनि ग्वालनके मुखनते वत्सासुरको घात । यशुमति सबके पांवपरि बारबार पछिताते ॥
सो० भई महर उर त्रास बचे आज हरि असुरते । मैं न बिगारयो काइ भये सहायक आनि विधि ॥

हे राजन् उस दिन नन्दजीने बहुतसा दान मोहनप्यारे के हाथसे करा के कहा हमलोग गोकुल छोड़कर वृन्दावन आन बसे तिसपर भी नित्य नया उत्पात श्रीकृष्णजीके पीछे उठता है अब यहां से छोड़कर कहां जावैं परमेश्वरकी कृपासे हमारे कुलदेवता सहायक हुये जो श्यामसुन्दरका प्राण राक्षसोंके हाथसे बचा व यशोदा बहुत पछताकर नन्दलालजीको समझानेलगी ऐ बेटा तुम वनमें मत जाया करो तुम्हारे पीछे अनेक राक्षस लगे रहते हैं तब मोहनप्यारेने कहा ऐ मैया हमको वनमें ग्वालबाल अकेले छोंड़ देते हैं और मैं उनके हाथसे बहुत दुःख पाताहूं अब मेरी बलाय बछड़ा चराने जावैं मुझको तू चकई भवँरा मँगादे हम गांवमें खेला करेंगे ॥

दो० मोहिलियो मन जननिको मधुरे वचन सुनाय । वत्सासुरका शोच डर क्षणमें दियो मिटाय ॥

हे राजन् यशोदाने प्रसन्न होकर उसीसमय उनको चकई व भवँरा मँगादिया तब ग्वालबालोंके साथ उसे खेलनेलगे व गोपियां नन्दलाल जीके साथ अति प्रीति रखकर एक क्षण विना देखे उनके नहीं रहती थीं इसलिये जब चकई खेलतीसमय कोई व्रजबाला उनके निकट आनकर खड़ी होती थी तब नन्दलालजी हँसीकी राह चकई घुमाकर उसके गहना में जो बीचगलेके पहिने रहतीथीं फँसाकर उनको छेड़तेथे और वे गोपियां अंतःकरणसे प्रसन्न होकर प्रकट में गालियां देती थीं और केशवमूर्त्ति

किसीसे जामुन व बेर आदिक फल लेकर उसे जो अन्न देते थे वह उनकी महिमासे मोतीरत्न होजाता था इसलिये अनेक व्रजबाला बेचने के बहाने लालचवश उनके यहां आती थीं व मनहरणप्यारे इसीतरह नित्य नई लीला करके वृन्दावनवासियों को सुख देते थे॥

दो० धनि धनि व्रजके नारिनर धनि यशुदा धनि नन्द। विहरत जिनके सदनमें ब्रह्मसचिदानन्द॥
सो० कहिकहि देत्र सिहाय धन्य धन्य वृन्दाविपिन। जहां चरावत गाय सकल सुरन शिरमुकुटमणि॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे राजन् ग्वालबालोंने पिछले जन्ममें बड़ा पुण्य किया था इसलिये परब्रह्मके साथ जिनका दर्शन ब्रह्मादिकको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता वह खेलते थे॥

बारहवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी करके अघासुर का मारा जाना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् एक दिन श्यामसुन्दर यमुना किनारे खेलने गये वहांपर केशवमूर्ति नटवररूप बनाये पीताम्बरकी कछनी काछे किरीट कुण्डल मुकुट पहिने उपरना ओढ़े लकुटिया हाथमें लिये एक सखाके कांधे पर हाथ धरे हुये खड़े थे वहांपर राधिका वृषभानुदुलारी जो लक्ष्मीजीका अवतार अतिसुन्दरि सात आठ वर्षकी थी स्नान करने गई जब श्यामसुन्दर व राधाकी आंखें सन्मुख हुईं तब पिछली प्रीति याद करके श्रीकृष्ण उसपर मोहित होगये व श्यामाका प्रेम भी उनके ऊपर बहुत लगगया जब दोनों की प्रीति अन्तःकरणसे बढ़ी तब वृन्दावनविहारी ने हँसकर पूछा तुम्हारा क्या नाम है और तुम किसकी पुत्री अति सुन्दरी व गोरी हो हमने आजतक तुम्हें कभी नहीं देखा यह प्रीति भरी हुई बात सुनकर श्यामा बोली मैं वृषभानुकी बेटी हूं व राधिका मेरा नाम है मैं अपने घर सखियोंके साथ खेलती हूं बाहर नहीं निकलती इसलिये तुमने हमको नहीं देखा होगा पर मैंने सुना था कि नन्दजीका बेटा गोपियों का माखन चुराकर खाया करता है सो आज मैंने देखा तुम्हीं नन्द कुमारहो यह सुनकर मोहनप्यारेने कहा मैंने तुम्हारा क्या चुराया हमारा मन तुम्हारे साथ खेलनेको चाहता है सो तुम घड़ी दो घड़ी आनकर

हमारे साथ खेला करो श्यामसुन्दरकी प्यारी प्यारी बातें सुनकर श्यामा भी अन्तःकरण से उनपर मोहित होगई पर सखियोंके डरसे प्रेम अपना प्रकट नहीं किया ॥

दो० गुप्तप्रीति प्रकटत नहीं दोऊ हृदय छिपाय। मनमोहन प्यारी चली घरको नयन चलाय॥

उस समय तो राधिका यह बातें करिकै अपने घर चलीगई पर मन उस का केशवमूर्तिमें लगारहा संध्यासमय राधा अपनी मातासे दूध दुहानेका बहाना करके खरकामें मोहनप्यारेसे भेंट करने चली ॥

दो० लै मातासों दोहनी चली दुहावन गाय। मन अटक्यो नँदलालसों गई खरक समुहाय॥
सो० मगमग शोचतजाय कित देखौं वह सांवरो। जिन मन लियो चुराय खरक मिलनमोसोंकह्यो॥

हे राजन् जब राधाप्यारी व केशवमूर्तिसे खरकामें भेंट हुई तब श्यामसुन्दरने अपनी मायासे घटा व बदली उत्पन्न करके उसी अंधेरेमें उससे प्रेमपूर्वक बातें की जब राधाप्यारी विलम्ब होनेसे हरबराकर अपने घर चली तब मोहनप्यारे ने उसकी सारी आप ओढ़ली व अपना पीताम्बर उसे देदिया जब श्रीकृष्णजी वह सारी ओढ़ेहुये अपने घर आये तब यशोदाने उनको देखकर विचारा कि इसने किसी गोपीसे प्रीति करके उसकी सारी लेली है मोहनप्यारे अन्तर्यामी यशोदा के मनका हाल जानकर बोले हे मैया आजु मैं यमुना के किनारे गौवोंको पानी पिलाने गयाथा वहांपर एक गोपी अपनी सारी रखकर स्नान करने लगी सो एक गौ वहां से भागी जब मैं गाय बहोरने गया तब उस गोपीने डरके मारे जल्दी में मेरा पीताम्बर जो यमुना किनारे रक्खा था पहिनालिया व अपनी सारी छोड़कर चली गई वह ब्रजबाला मेरी पहिंचानी हुई है अभी जाकर अपना पीताम्बर लेआताहूं ऐसा कहकर वहांसे बाहर चले आये व अपनी मायासे उसी सारीको पीताम्बर बना लिया और फिर यशोदाके पास जाकर कहा मैं अपना पीताम्बर बदल लाया यशोदा उनकी बात सच जानकर चुप होरही व राधा प्यारी दूध दुहाकर श्यामसुन्दरका पीताम्बर पहिने हुये अपने द्वार तक पहुँची व घबड़ाकर अपनी माताको पुकारा उसका बोल सुनतेही कीर्त्ति दौड़ी आई और उसने अपनी बेटीको घबड़ाई हुई देखकर पूछा हे बेटी

अभी तू अपने घरसे चंगी भली गई थी तेरी क्या दशा होगई तब राधाने कहा एक लड़की जिसका नाम नहीं जानती मेरे साथ चली आवती थी उसको सांपने काट लिया सो वह अचेत होकर गिर पड़ी तब मैं भी डर गई जब नन्दकुमारके झारने से उसको आराम हुआ तब मैं अपने घर आई यह बात सुनतेही कीर्त्तिने राधा को गले लगाकर कहा तुझे परमेश्वरने मृत्यु से बचाया मैं तुझको बारम्बार मना करती हूं तू मेरा कहना नहीं मानती कभी बाहर दूर खेलने व कभी यमुना किनारे नहाने व कभी खरका में दूध दुहावने जाती है व खेलती समय आकाशकी तरफ देखकर धरतीपर पांव नहीं रखती है अब तू कहीं बाहर खेलने मत जायाकर यह बात अपनी मातासे सुनकर राधिका मनमें कहनेलगी आज मैंने अपनी माता से अच्छा छल किया और उसने ध्यान मोहनीमूर्त्तिका हृदयमें रखकर अपनी माता से कहा अब मैं बाहर न जाकर गांव घरमें खेला करूंगी हे राजन् राधाप्यारीके मनमें नन्दलालजी ऐसे बसगये थे कि विना देखे उनके उसको चैन नहीं पड़ता था इसलिये तीसरे दिन फिर राधिका दूध दुहाने के बहाने श्यामसुन्दरके स्थान पर आई व द्वारेपरसे मोहनप्यारे को पुकारा व मारे लज्जा के भीतर नहीं गई राधाप्यारीका शब्द सुनतेही नन्दलालजीने यशोदासे कहा हे मैया कल्ह मैं यमुना किनारे रास्ता भूल गया था सो एक गोपी मेरा हाथ पकड़कर गांवमें पहुँचा गई तब मैं घर पहुँचा हूं नहीं तो न मालूम भूलकर कहां चला जाता सो वही ब्रजबाला मेरे साथ खेलने आई है पर तुम्हारे भयसे यहां नहीं आवती तुम उसको भीतर बुलाकर देखो ऐसा कहकर मोहनप्यारेने अपनी माया ऐसी यशोदा पर फैला दी कि उसको श्यामा से प्रीति उत्पन्न होगई तब यशोदाने श्यामसुन्दरसे कहा तू उसको भीतर बुलाले यह बात सुनतेही मोहनप्यारे जब राधिकाकी बांह पकड़कर भीतर लेआये तब यशोदाने उसकी सुन्दरताई देखतेही बड़े प्रेमसे अपने पास बैठालकर पूछा कि तू किस गांव में रहती है मैंने आजतक कभी तुझको नहीं देखा तेरा व तेरे माता पिताका क्या नाम है कल्ह मेरा मोहनप्यारा राह भूल गया था सो

तैंने बहुत अच्छा किया जो उसको गांव में लिवालाई श्यामा ने कहा मेरा नाम राधिका है॥

दो० मैं बेटी वृषभानुकी तुमको जानत माय। बहुत बेर मिलनो भयो यमुना के तट आय॥

यह सुनतेही यशोदाने कहा मैं जानती हूं तेरी माता बड़ी कुलवन्ती व वृषभानु तेरा पिता बड़ा खोटा है तब राधाप्यारी हँसिकर बोली मेरे बाप ने तुमसे क्या खुटाई की थी यह प्रेमभरा वचन सुनतेही यशोदाने राधिका को अपने गले लगाकर बहुत प्यार किया व मनमें विचारा कि इस कन्या का विवाह मोहनप्यारेसे होता तो बहुत अच्छा था फिर यशोदाने श्यामा का शिर गूंधकर शृंगार किया व बहुत अच्छा गहना व कपड़ा पहिनाकर मेवा व मिठाई व तिलचावली उसके गोद में डालकर कहा तू कन्हैया से जाकर खेल यह बात सुनतेही राधिका प्रसन्न होकर नन्दलालजीके साथ खेलने लगी हे राजन् श्याम व श्यामा ऐसे सुन्दर थे जिनके स्वरूप का वर्णन शेष गणेशजी नहीं कर सके दूसरे की क्या सामर्थ्य है जो बड़ाई करने सकै॥

दो० खेलत दोउ झगड़नलगे भरे परम अहलाद। मानो घन अरु दामिनी करत परस्पर वाद॥

यशोदा उन दोनोंको खेलते हँसते हुये देखकर बहुत प्रसन्न हुई व राधिका से कहा तू नित्य यहां आनकर मेरे मोहनप्यारे से खेला कर व श्यामसुन्दर राधाप्यारी से हँसकर बोले तुम लज्जा छोड़कर हमारे यहां खेलने आया करो तुम्हारे साथ खेलने से मेरा मन अतिप्रसन्न होता है राधा यह बात मोहनप्यारे की सुनकर मुसकराती हुई अपने घर चलीगई॥

दो० परमनागरी राधिका अतिनागर ब्रजचन्द। करत आपनो घात दोउ बँधे प्रेमके फन्द॥

जब राधाप्यारी शृंगार किये हुये अपने घर पहुँची तब कीर्ति उसकी माताने पूछा तू कहां गई थी व तेरा शृंगार किसने कर दिया है राधिका बोली मैं यशोदाजीके घर गई थी उन्होंने तुम्हारा व मेरे पिता का नाम पूछकर हमको बहुतसा प्यार करके मेरा शृंगार कर दिया॥

दो० मेरे शिर बेणी गुही बेणी लाल बनाय। पहिनाई निज हाथसों सारी नई मँगाय॥

हे माता तिलचावली व मेवा मिठाई मेरे गोद में डालकर मुझे बिदा

किया व तुमको ठठोली की राह उन्होंने गाली दी यह बात सुनकर कीर्ति बहुत प्रसन्न हुई और यह हाल बरसाने गांवकी गोपियां सुनकर यशोदा को ठट्ठे की राह गाय बजायकर गालियां देने लगीं व यशोदाके मनका हाल जानकर कीर्ति ने सब गोपियों से कहा मेरी बेटी दामिनी और मोहनप्यारा श्याम घटासा अतिमनभावन दोनों विवाहके योग्य हैं कीर्ति को भी इसबातकी चाहना हुई कि राधाप्यारी का विवाह नन्दलालजी से होता तो बहुत अच्छा था ऐसा विचारकर उसने वृषभानुसे यह बात कही॥

दो० युगलकिशोर स्वरूपवर वृंदावन रसखान। नवदूलह दूलहिनि सदा राधाश्याम सुजान॥

वृषभानुभी अपनी स्त्रीकी बात सुनकर प्रसन्न हुये इसी तरह राधिका नित्य नन्दजी के घर आनकर मोहनप्यारे के साथ खेला करती थी व श्यामसुन्दरभी उसकेसाथ बड़ी प्रीति रखते थे व राधाप्यारी जब कभी कभी अपनी गौवोंका दूध दुहानेवास्ते मनहरण प्यारेको कहती थी तब वह बड़े प्रेमसे उसकी गो दुह दिया करते थे॥

दो० धेनु दुहावत लाडिली दुहत नंदको लाल। लोमुख कालों जात कहि देखत ब्रजको बाल॥

एक दिन राधाप्यारी श्यामसुन्दरसे गो दुहाकर जब दूध लिये हुई अपने घर चली उस समय मोहनप्यारेने उसकी ओर देखकर मुसुकरा दिया तब राधा वह मुसुकान देखतेही मोहित होगई जब राहमें उससे सखियोंने पूछा आज तेरे गो दुहानेवाले ग्वाल क्या हुये जो तैंने नन्दलालजी से दूध दुहाया है राधा श्यामसुन्दरका नाम सुनकर ऐसी अचेत होकर गिरी कि दूधका बर्तन उसके हाथ से छूट पड़ा व गिरती समय सखियों से बोली कि मुझको काले सांपने काटा है यह वचन सुनतेही सहेलियां उसे उठा कर उसके घर लेगईं व कीर्तिसे सांप काटनेका हाल कहदिया सो उन्होंने बहुतसे गुणी बुलाकर झाड़ व फूंक कराया पर उसको मोहरूपी सांप ने डसा था इसलिये मंत्र व यंत्र से कुछ गुण न होकर जब वह उसी तरह रही तब सहेलियों ने जो उसकी प्रीति का हाल जानती थीं कीर्ति से कहा नन्दमहरका बेटा बड़ा गुणीहै उसे बुलाकर दिखलावो तो इसको आराम हो जायगा यह सुनकर कीर्ति बोली एक दिन राधिकाने आगेभी मुझसे कहा

था कि किसी लड़की को सांप काटने से नन्दकिशोरने अच्छा कर दिया था वह बात याद करतेही कीर्ति ने दौड़कर यशोदाके पास जाकर कहा मेरी बेटी को सांप ने काटा है सो तुम मोहनप्यारे को साथ कर देव कि वह मंत्र पढ़कर उसे अच्छी कर दे यह सुनकर यशोदा बोली अय बहिन मेरा अज्ञान बालक मंत्र यंत्र क्या जाने किसी गुणी को बुलाकर दिखलाओ आजतक मैंने कभी उसके मंत्र यंत्र जाननेका हाल नहीं सुना है तब कीर्तिने कहा मैंने राधिका से एक लड़कीके सांप काटने व कन्हैया को अच्छा कर देनेका हाल सुना था सो तुम दयाकी राह तुरन्त उसे बुला देव इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जब कीर्ति मोहनप्यारे को बुलाने जाचुकी तब ललिता सखीने जो उसकी प्रीतिका हाल जानती थी एक ब्रजबालाको मोहनप्यारेके पास जहां पर वह खेलते थे समझाकर भेजा तब उस गोपीने जाकर नन्दलालसे कहा ॥

दो० अहो महरिके लाड़िले मोहन श्याम सुजान। कित सीखे यह गोदुहन हमसे कहौ बखान ॥

हे नन्दकुमार आज प्रातसमय जिसकी गो तुमने दुही थी वह इस समय अचेत पड़ी है केवल तुम्हारा नाम लेने से आंख खोल देती है व उसने गिरती समय यह कहा था कि मुझको काले सांपने काटा है सो कोई मंत्र व यंत्र उसको गुण नहीं करता इसलिये तुम चलकर अपनी कृपादृष्टिसे उसका विष उतार देव और तुम्हारा श्याम रंग देखकर मैं जानती हूं यह लहर तुम्हारे मुसुकान की उसे चढ़ी है जल्दी चलकर उसे चंगी कर देव और वह तुम्हारे विरहकी आगि में जल रही है सो अपने चन्द्रमुखकी शीतलताई से उस विरहिनी की अग्नि बुझाओ कदाचित् तुम उसे न जिलाओगे तो हमलोग नन्दजीके द्वारेपर जाकर तुम्हारे ऊपर अपना प्राण देवेंगी कीर्ति उसके दुःख से व्याकुल होकर यशोदाके पास तुमको बुलाने गई है यह बात सुनतेही मोहनप्यारे ने मुसुकराकर उससे कहा कदाचित राधाप्यारीको कालेभुजंगनेभी डसा होगा तो मैं उसको अच्छा कर दूंगा ऐसा कहकर उस सखीको बिदा किया और आप अपने घर चले आये तब यशोदाने उनसे हँसकर पूछा अय बेटा तुम कुछ सांप काटनेका

मंत्र जानते हो यह सुनकर श्रीकृष्ण बोले अय मैया तेरी सौगन्द है मैं ऐसा मंत्र जानता हूं कि सांपके डसे हुये को देखने पाऊं तो वह मरने न पावै यशोदाने कहा अय बेटा राधा को सांपने काटा है तुम कीर्तिके साथ जाकर उसे आराम कर दो श्यामसुन्दर यह आज्ञा पातेही प्रसन्न होकर कीर्तिके साथ गये जब कीर्ति नन्दलालसमेत अपने घर पहुँची तब राधिका को अधिक व्याकुल देख मोहनप्यारे से विनयपूर्वक कहा हे नन्दकुमार मुझे अपने ऊपर न्योछावर समझकर राधाको अच्छा करदेव जैसे राधिका नें श्यामसुन्दरके आनेका हाल सुना वैसे उसका हृदय ठण्ढा होकर प्रेम का आंसू वहने लगा जब श्रीकृष्णजीने कुछ पढ़कर अपनी मुरली राधा के अंग में छुआ दी तब उसने चैतन्य होकर अपना अंग कपड़े से ढांप लिया व श्यामसुन्दरको देखकर उस समय चंगी भली होगई व अपनी मातासे पूछा आज क्या है जो इतने मनुष्य यहां इकट्ठे हुये हैं तब कीर्ति नें कहा हे वेटी तू सांपके काटनेसे मरणतुल्य होगई थी सो तुझको कन्हैया जीने अपने मंत्रसे जिलाया है इनसे तुझे क्या लज्जा करना चाहिये यह कहकर श्रीकृष्णको गोदमें उठा लिया ॥

दो॰ उरलगायमुख चूमिकै पुनिपुनि लेत वलाय। धन्यकोखयशुमतिमहरि जहां अवतर्यो आय ॥
सो॰ कछु मेवा पकवान कहेउ खान घनश्यामसों। विदा कियो दै पान कीरति श्याम सुजानको ॥

हे राजन् श्यामसुन्दरके जाने उपरांत वृषभानु व कीर्तिने कहा श्रीकृष्ण व राधिका दोनों आपस में विवाह करने योग्य हैं व ललिता सखी जो सब भेद जानती थी मनहरण प्यारे से बोली तुम बड़े गुणी होगये कि राधिकाका विष तुरन्त तुमने उतार दिया यह मन्त्र कभी मत भूलना मैं तुम्हारा भेद अच्छीतरह जानती हूं तुमने राधाको मोहनी डालकर उसको अपने वश कर लियाहै यह सुनकर श्यामसुन्दर हँसते हुये अपने घर चले आये व यशोदा राधिका के आराम होनेका हाल सुनकर अति प्रसन्न हुई व मोहनप्यारेको गोदमें उठाकर प्यार करने लगी ॥

दो॰ कारो सुत नँदरायको जाकी लीला नित्त। उनहीं को ये डसत हैं जिनके उज्वल चित्त ॥
सो॰ धनिधनिव्रजकी बालधन्यधन्यव्रजग्वालसव। जिनके सँगनँदलाल दुहतचरावतधेनुनित ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् एक दिन श्यामसुन्दर प्रात समय ग्वालबालों को साथ लिये कलेवा बांधे हुये बछड़े चराने वन में गये वहां बछड़ों को चरनेवास्ते छोड़ दिया व खड़िया व गेरूसे ग्वाल बालों समेत अपने अपने अंगपर चित्रकारी की व अनेक रंगके फूलोंका गहना बनाकर पहिन लिया व पशु पक्षी आदिक की बोलियां बोलकर आपसमें खेलने लगे ॥

दो० कबहू गावत सखन सँग कबहुँ बजावत बेनु। घवरी धुमरी नाम ले कबहुँ बुलावत धेनु ॥

हे राजन् उसी समय अघासुर राक्षस भेजा हुआ कंसका श्यामसुन्दर के मारने वास्ते वहां आया व अजगर सांपका रूप ऐसा लम्बा व चौड़ा बनाकर रास्तेमें बैठा कि नीचेका ओठ पृथ्वीपर व ऊपरका ओठ आकाश में जालगा जब अचानकमें श्यामसुन्दर ग्वालबालों समेत जहां वह सांप मुख बाये व घात लगाये बैठा था जा निकले तब मोहनप्यारे ने ग्वाल बालों से कहा जिधर यह पर्वतकी कन्दरासी दिखलाई पड़ती है उधर मत जाना हे राजन् जब ग्वालबाल श्यामसुन्दरके मना करने पर भी बछड़ों समेत उसी ओर चले गये और उस अजगरको जो चार कोश लम्बा व एक कोश चौड़ा था देखकर आपसमें कहनेलगे यह पर्वतसा क्या मालूम होताहै जब इसी तरह बात करते व बछरे चराते हुये उसके पास जा पहुँचे तब एक बालक बोला हे भाई यह बड़ी डरावनी खोह दिखलाई देती है इसके भीतर मत जाव यह सुनकर तोष नाम बालक ने कहा आवो इस कन्दराके भीतर चलैं दुःखभञ्जन हमारे साथहैं हमको किसका डर है कदाचित् राक्षसभी होगा तो बकासुरकी तरह माराजायगा जब सब ग्वालबाल ऐसी बातैं करते व पीछे मोहनप्यारेका मुख देखते हुये ताल बजाकर उस सांपके मुख में घुसे तब अघासुरने ऐसा श्वास खींचा कि सब ग्वालबाल बछड़ों समेत उसके पेट में चले गये उस समय अघासुर ने विचारा कदाचित् आज श्याम बलरामको मारूं तो बकासुर भाई व पूतना अपनी बहिनका बदला लेकर उसके नामपर तर्पण करूं यह दशा उनकी देख कर श्रीकृष्णजीने कहा ॥

दो० ग्वाल बाल बछड़ा सबै पड़े असुरमुख आय। इन सबहिनकी मायसों कहा कहौंगो जाय॥

सिवाय मेरे और कोई दूसरा इनकी रक्षा करनेवाला नहीं है इसलिये हमेंभी इस राक्षसके मुखमें जाकर इनका प्राण बचाना चाहिये जब ऐसा विचारकर श्यामसुन्दर आपभी उस अजगर के मुख में चलेगये तब उस सांपने अति प्रसन्न होकर मुख अपना बन्द करलिया यह दशा देखकर देवता चिन्ता करनेलगे व राक्षस व दैत्य कंसके मित्र प्रसन्न हुये॥

दो० माखनप्रभु कीन्हों तभी बालशरीर विशाल। श्वास व्यालको रोकके त्रास दियो तेहिकाल॥

हे राजन् जब मोहनप्यारे के शरीर बढ़ने से श्वास चलना बन्द होगया तब प्राण उसका ब्रह्माण्ड तोड़कर निकल गया व श्यामसुन्दर सब ग्वाल बाल व बछड़ों समेत ज्योंके त्यों बाहर निकल आये उस समय देवतों ने अतिप्रसन्न होकर वृन्दावनविहारी पर फूल बर्षाये और राक्षस व दैत्य यह महिमा केशवमूर्तिकी देखकर शोच करने लगे व चैतन्य आत्मा उस अजगरका पहिले आकाशमें जाकर फिर मोहनप्यारेके मुखमें समागया॥

दो० माखन प्रभुपरतापते त्रिविधताप मिटि जाहिं। ताहि पाप कैसे रहैं आप जाहिं मुखमाहिं॥

हे राजन् इसतरह उस राक्षसकी मुक्ति देखतेही देवतोंने श्रीकृष्णजीको पूर्ण ब्रह्म जानकर उनकी स्तुति की व सब ग्वालबाल श्यामसुन्दरसे कहने लगे आपने इस राक्षसको मारकर हमलोगोंका प्राण बचाया नहीं तो आज हमारे मरने में कुछ सन्देह नहीं था यह सुनकर केशवमूर्ति बोले अय भाइयो मैंने तुम्हारी सहायतासे इस राक्षसको मारा कदाचित् तुम लोग न होते तो यह राक्षस मुझसे मारा न जाता ऐसा कहकर श्यामसुन्दर ग्वालबालोंसे खेलने लगे॥

दो० गावत खेलत हँसत सब सखावृन्द ले साथ। वृन्दावनके कुञ्जमें वृन्दावनको नाथ॥

और शरीर उस सांपका सूखकर पर्वतके समान उस जगह पड़ारहा कभी ग्वालबाल उस खालके भीतर घुसकर व कभी उसके ऊपर चढ़कर खेला करतेथे व उस राक्षसने मरतीसमय मुरलीमनोहरका ध्यान कियाथा इसलिये परमपदको पहुँचा हे राजन् यह बात विश्वास करके जानो जो लोग मरतीसमय नारायणजीका ध्यान करते हैं उनकी मुक्ति होनेमें कुछ

सन्देह नहीं रहता व केशवमूर्तिने पांचवर्षकी अवस्थामें अघासुरको मारा वर्ष दिनके उपरांत उसके मरनेका हाल ग्वालबालोंने अपने घर कहा इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूछा हे स्वामी वर्ष दिनतक यह हाल नहीं कहने का क्या कारण था॥

तेरहवां अध्याय।

ब्रह्माकाग्वाल वाल व बछरोंको चुरा लेजाना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् तू बड़ा भाग्यवान्है किसवास्ते कि परमेश्वरकी कथामें तुझको प्रतिदिन अधिक प्रीति होती जाती है अघासुरके मरने उपरांत मोहनप्यारे ने ग्वालबालोंसे कहा कि यमुना किनारे यह ऊंचा शरीर सांपका बहुत अच्छा पड़ाहै उसके ऊपर चढ़कर हमलोगोंको खेलने व चरते हुये बछड़ोंके देखनेका बड़ा सुख हुआ इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् उन ग्वालबालोंके भाग्यकी बड़ाई किसको सामर्थ्य है जो वर्णन करसके वह लोग दिन रात खाना व पीना व उठना व बैठना वृन्दावनविहारीके साथ रखते थे और सब कोई वृक्षोंकी छायामें बैठकर अपना शरीर वैकुण्ठनाथके अंगसे स्पर्श करते थे यह पदवी ब्रह्मादिक देवतोंको भी मिलना कठिन है व ग्वालबालों का सुख देखकर देवता उन पर डाह करते थे जब श्रीकृष्णजी ने अघासुर को मारा तब ग्वालबाल व बछड़ों समेत आगे जाकर यमुना में स्नान किया और कदमके नीचे खड़े होकर मुरली बजाई व ग्वालबालोंसे कहा हे भाइयो यहां अच्छा विमल स्थानहै इसी जगह बैठकर कलेवा करलेव यह वचन सुनतेही सब ग्वालबाल वहां ठहर गये॥

दो० तहां छाक सब घरनते आई भरि भरि भार। यशुमति पठयो कान्हको व्यंजन बहुतप्रकार॥

सब ग्वालबालोंने ढाखके पत्ते लाकर पत्तल व दोना लगाया व अपना अपना कलेवा निकालकर पत्तल आदिकमें परोस लिया सो बीच में मुरलीमनोहर व उनके चौगिर्द ग्वालबाल खानेवास्ते बैठे व भोजन करतीसमय श्यामसुन्दरने बांसुरी को कमरमें खोंसकर लकुटिया बगलमें दबाली जब ब्रजनाथने पहिले आप ग्रास उठाकर मुखमें डाला

तब पीछे ग्वाल बालोंने भोजन करना आरम्भ किया उस समय मुरली-मनोहर मुकुट साजे व पीताम्बर पहिने व वनमाला गलेमें डाले व लकु-टिया दबाये अनेक तरहका भोजन बायें हाथमें रखकर हँसते हुये अपना जूठा दाहिने हाथ से सब ग्वालबालोंको खिलाने लगे व ग्वालबालों के पत्तल पर से उनका जूठा उठा कर आप खाते थे और उसके खट्टे व मीठे का स्वाद आपसमें कहकर ऐसा आनन्द मचाया जिसका हाल वर्णन नहीं होसक्ता॥

दो० ग्वालबालमें बैठके माखनप्रभु ब्रजनाथ। माखन रोटी हाथ ले खात जात इकसाथ॥

उस मण्डलीमें मनहरणप्यारे चन्द्रमासे व सब ग्वालबाल तारारूप शोभायमान दिखलाई देते थे उस समय देवता अपने अपने विमानों पर बैठे हुये यह सुख देखकर आपसमें कहने लगे धन्य भाग्य इन ग्वाल-बालोंका है जिनको सच्चिदानन्द परब्रह्म अपना जूठा खिलाकर उनका जूठन आप खाते हैं यह सुख हमलोगोंको स्वप्नेमेंभी नहीं प्राप्त होसक्ता और किसी किसी मुनि व देवताने ब्रह्मासे कहा महाराज हमको बड़ा संदेह मालूम होताहै किसवास्ते कि हमलोग यज्ञमें बड़ी पवित्रतासे सामग्री बनाकर परमेश्वरका भोग लगाते हैं तिसपरभी वैकुण्ठनाथ जल्दी वह भोग अंगीकार नहीं करते व तुम श्रीकृष्णजीको परब्रह्मका अवतार कहते हो सो देखो यह ग्वालबालोंका जूठा उठाकर खाते हैं इसलिये हमको तुम्हारे कहनेका विश्वास नहीं आता यह सुनकर परमेश्वरकी माया से ब्रह्माकोभी सन्देह उत्पन्नहुआ तब ब्रह्माने कहा मैं अभी ग्वालबाल व बछरे हरकर उनकी परीक्षा लेताहूं श्रीकृष्णजी सच्चिदानन्दका अवतार होंगे तो अपनी मायासे दूसरे बछरे व ग्वालबाल बना लेवेंगे ऐसा कहकर ब्रह्मा वृन्दावनमें आये व चरते हुये बछरोंको लेजाकर पर्वतकी कन्दरामें बन्द करदिया जब ग्वालबालोंने बछरोंको नहीं देखा तब केशवमूर्तिसे कहा हमलोग तो बैठे हुये कलेवा करते हैं व बछरे नहीं दिखलाई देते न मालूम चरते हुये किधर चले गये यह सुनकर मुरलीमनोहरने कहा हे भाई तुम लोग निश्चिन्ताई से भोजन करो मैं जाकर बछरोंको घेर लाताहूं ऐसा

कहकर मोहनप्यारे बछरे ढूंढ़ने गये जब वनमें जाकर बछरोंको नहीं देखा तब परब्रह्म परमेश्वर अन्तर्यामीने मालूम किया कि मेरी परीक्षा लेने वास्ते ब्रह्मा बछरोंको हर लेगया है यह समझतेही वैकुण्ठनाथ ब्रह्माका सन्देह छुड़ानेवास्ते अपनी माया से उसी रंग व रूपके बछरे दूसरे बनाकर वहां ले आये जब उस कदमके तले जहां ग्वालबालों को छोड़गये थे पहुँचे तब ग्वालबालों को भी वहां न देखकर अपनी महिमासे जाना कि ब्रह्माने उनको भी हर लेजाकर पर्वतकी कन्दरामें छिपा दिया है ऐसा देखकर केशवमूर्तिने मनमें कहा कदाचित् ग्वालबाल अपने घर न जावेंगे तो उनके माता व पिताको बड़ा दुःख होगा ऐसा विचारकर त्रिलोकीनाथने अपनी प्रबल माया से उतने ग्वालबाल उसी रूप व बोली व ज्ञान व भूषण व वस्त्रके दूसरे बनालिये जब संध्यासमय मनहरण प्यारे सब ग्वालबाल व बछरों को जो अपनी मायासे बनाये थे साथ लिये हँसते व खेलते हुये वृन्दावनमें आये तब सब ग्वालबाल बछरे समेत अपने अपने घर चलेगये व बछरे अपनी अपनी माता व गौवोंका दूध पीने लगे व ग्वालिनोंने अपने अपने बालकोंको बड़े प्रेमसे उपटन व तेल मलकर स्नान कराया व श्यामसुन्दरकी मायासे किसीको ग्वाल-बाल व बछरे हर जानेका भेद नहीं मालूम हुआ व सब ग्वालबालोंके माता व पिता व गौवें अपना अपना बालक व बछरा जानकर प्रतिदिन उनसे अधिक प्रीति करने लगे ॥

दो० माखनप्रभु रचना रची तनिक बची नहिं रेख। वही वेष सब देखिये पर कछु प्रीति विशेख॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे राजन् ब्रह्माजी ब्रह्मलोकमें जाकर ग्वालबाल व बछरों के हरनेका हाल भूल गये व वृन्दावनविहारी नित्य मायारूपी ग्वालबाल व बछरोंसमेत वनमें जाकर नई नई लीला करते थे एक दिन श्यामसुन्दर उन्हीं बछरोंको गोवर्धन पर्वतके नीचे चराने लेगये सो उन बछरोंकी माता गौवें जो गोवर्धन पर्वतपर चरतीथीं उन्हें देखतेही ऐसे दौड़ीं जैसे सावन भादोंमें नदीका जल बहुत वेगसे बहता है ग्वालों ने लाठीसे धमकाकर गौवोंको बहुत रोंका पर वह न

मानकर अपने अपने बच्चोंके पास चली आईं और दूसरा बच्चा उत्पन्न होनेपरभी वे मायारूपी बछड़ोंको स्तन पिलाने लगीं व ग्वाललोगभी अपने अपने बालकोंको गोदमें उठाकर प्यार करने लगे यह दशा देखकर बलरामजीने जो बछड़े व ग्वालबाल हरने के दिन श्रीकृष्णजीके साथ नहीं थे विचारा हमने ऐसी प्रीति गौ व ग्वालोंमें कभी नहीं देखीथी इसमें कुछ परमेश्वरकी माया मालूम होतीहै ऐसा विचारकर बलभद्रजी ने ध्यान करके देखा तो ग्वालबाल व बछड़े उनको श्रीकृष्णरूप दिखलाई दिये तब उन्होंने श्यामसुन्दरसे पूछा हे भाई पहिले के ग्वालबाल व बछड़े क्या हुये यह सब ग्वालबाल व बछड़े मुझे कृष्णरूप दिखलाई देते हैं यह वचन सुनतेही केशवमूर्ति सब वृत्तान्त कहकर बोले हे भैया वर्षदिनसे मेरी यही दशाहै हे राजन् जब इसीतरह वर्षदिन मृत्युलोकका बीत गया तब ब्रह्मा बालक व बछड़े हरनेका हाल याद करके बोले देखो मेरा अभी एक क्षण नहीं बीता व मनुष्योंका वर्षदिन होगया अब चलकर देखा चाहिये बालक व बछड़े विना श्रीकृष्ण व वृन्दावनवासियोंकी क्या दशा होतीहै ऐसा विचारकर ब्रह्मा पहिले उस कन्दरामें गये तो ग्वालबाल व बछड़ोंको नींदमें अचेत देखा फिर वहांसे वृन्दावनमें आये तो उस रूपके ग्वालबाल व बछड़े श्रीकृष्णके साथ दिखलाई पड़े तब ब्रह्माने आश्चर्य मानकर मनमें कहा कन्दरामेंसे ग्वालबाल व बछड़े यहां किस तरह आये या श्रीकृष्णने अपनी मायासे इन्हें उत्पन्न किया है यह सन्देह छुड़ाने वास्ते ब्रह्मा फिर कन्दराकी तरफ गये तो उन्होंने ग्वालबाल व बछड़ों को उसीतरह सोये हुये पाया जब फिर वहांसे वृन्दावनमें आये तो वैकुण्ठनाथ की मायासे क्या देखा कि जितने ग्वालबाल श्यामसुन्दरके साथमें थे वह सब चतुर्भुजीरूप वैजयन्ती माला व किरीट मुकुट व पीताम्बर आदिक पहिने विष्णु भगवान्के सामने विराजते हैं व एक एक चतुर्भुजीरूप के सामने ब्रह्मा व महादेव व इन्द्रादिक देवता हाथ जोड़े स्तुति करते दिखलाई दिये व आठों सिद्धियां व गंगा आदिक नदियां अपना अपना रूप धारण किये उनके सामने खड़ी हैं व उनमें कोई ब्रह्मा

चार शिर व कोई आठ मस्तक व कोई ब्रह्मा सोलह शिरके दिखलाई दिये व इन्द्रकी अप्सराओंको नाचते व गन्धर्वोंको गाना सुनाते उनके सामने देखा व ब्रह्माको सब पशु व पक्षी व वृक्ष वहांके चतुर्भुजीरूप दिखलाई दिये और वहां बाघ और बकरी आदिक जीवोंको निर्वैर देखा हे राजन् यह महिमा मायारूपी ग्वालवालोंकी देखतेहीं ब्रह्माने घबड़ाकर अपनी आंखें बन्द करलीं व चित्रसे चुप चाप खड़े होरहे और ज्ञान व ध्यान व अभिमान अपना भूलकर मारे डरके कांपने लगे जब श्यामसुन्दर अन्तर्यामीने जाना कि ब्रह्मा अपने कर्तबसे लज्जित होकर अतिव्याकुल हुआ तब उन्होंने मायारूपी ग्वालादिको अन्तर्धान करदिया व आप अकेले कृष्णरूपसे मोर मुकुट पहिने खड़े रहे ॥

दो० मोहविकलअति देखिकै सुन्दरश्याम सुजान। प्रकटकियो जनजानिनिजविधिके उरमेंज्ञान॥
सो० हृदय भई तब शुद्धि यह पूरण अवतार हरि। धिकधिक मेरी बुद्धि वैर बढ़ायों कृष्णसों॥

हे राजन् जब वैकुण्ठनाथकी कृपासे ब्रह्माके हृदयमें ज्ञान उत्पन्न हुआ तब वह हंस परसे उतर पड़ा व अपने चारों मस्तक वृन्दावनविहारीके चरणोंपर धर दिये व साष्टांग दण्डवत् करके हाथ जोड़कर बोला॥

दो० मैं अपराधी हीनमति परयों मोहके जाल। ममकृत दोष न मानिये तुम प्रभु दीनदयाल॥
सो० कहजानों तुम भेव मैं ब्रह्मा तुम्हरो कियो। तुम देवनके देव आदि सनातन अजित अज॥
दो० करुणा करि रोयो महा कहा सकै गुण गाय। दृगजलसे धोयो मनो माखनप्रभुके पांय॥

हे राजन् ब्रह्माने रोकर केशवमूर्तिसे कहा हे दीनानाथ आपने कृपा करके मेरा अभिमान दूर किया ऐसा ज्ञान किसीको नहीं है जो तुम्हारे चरित्र व लीलाको जानै सारे संसार को तुम्हारी मायाने मोहि लिया दूसरा कोई ऐसा नहीं है जो आपको मोहने सकै व आप कर्ता पुरुष होकर मेरे ऐसे अनेक ब्रह्मा व ब्रह्माण्ड तुम्हारे एक एक रोममें बँधे हैं मैं किस गिनती में हूं हे दीनदयालु मेरा अपराध क्षमा कीजिये॥

दो० हौं असाध्य अतिहीनमति, तुमगति अगमअगाध। माखनप्रभुपरचोलियो कियोमहा अपराध॥

जब इसी तरह बहुतसी बिनती ब्रह्माने की तब ब्रजनाथजी ने हँसकर कहा हे ब्रह्मा तुम सब जगत्‌की रचना करते हो तिसपरभी मेरी माया तुम्हें लगी है यह सुनकर ब्रह्माने विनय किया हे महाप्रभु तुम्हारा भेद कोई

नहीं जान सका आपकी माया ऐसी प्रबलहै जिसने किसीको नहीं छोड़ा यह दीन वचन सुनतेही श्यामसुन्दरने ब्रह्माका शिर अपने चरणों पर से उठाकर छाती में लगा लिया व कृपा करके आंसू ब्रह्मा का अपने हाथ से पोंछ दिया॥

दो० यद्यपि लियो उठायकै मोखनप्रभु उरलाय। तद्यपि रहेउ लजायकै दृग अरु शीश नवाय॥

जब ब्रह्माने श्रीकृष्णजीकी कृपा अपने ऊपर देखी तब सब ग्वालबाल व बछड़ोंको वहां लेआदिया॥

चौदहवां अध्याय।

ब्रह्माका श्यामसुन्दरकी स्तुति करना॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् जब ब्रह्माने श्रीकृष्णजी को अपने ऊपर प्रसन्न देखा तब अपना अपराध क्षमा कराने वास्ते हाथ जोड़कर यह स्तुति की कि मैं तुम्हारे श्यामघटा ऐसे स्वरूपको जो बिजुलीके समान चमकता हुआ पीताम्बर पहिने व मोरमुकुट व फूलोंकी माला धारण कियेहो दण्डवत् करता हूं व बांसुरी व लकुटिया लिये मोहनी मूर्तिपर न्यवछावर होता हूं व आप जगत्के उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाले वसुदेवजीके पुत्र हैं व यह शरीर तुम्हारा पांचतत्त्वसे नहीं बना अपनी इच्छासे यह रूप तुम ने धारण किया है व मैं ब्रह्मा होनेपर भी तुम्हारे इस रूपकी महिमा नहीं जानता दूसरे को क्या सामर्थ्य है जो आपके अनन्तरूप सगुणका भेद जान सके भक्ति किये विना कोई मनुष्य ज्ञानके अभिमान से तुम्हारी महिमा नहीं जान सका जो कोई मनसा वाचा कर्मणा से तुम्हारे शरण में होरहा वह तुम्हारे भेदको पहुँचकर मुक्तिपदवी पाताहै मैं अग्निकी चिनगारी के समान हूं अपनी अज्ञानतासे तुम्हारे माया मोह में लपटकर मैंने बालक व बछरे चुराये थे और आप अग्निका समूह हैं सो मेरा अपराध क्षमा कीजिये चिनगारी को ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो अग्निके ढेरसे बराबरी करसके व आप सबसे रहित हैं व संसारी वस्तु तुम्हारी मायासे उत्पन्न होतीहै व आदि व मध्य व अन्तमें तुम्हारी मायाका प्रकाश रहताहै और सिवाय आपके संसारी वस्तु नाश होजाती है मैंने अपनी अज्ञानता से

तुम्हारी परीक्षा लेने चाहा था सो बहुतसे ब्रह्मा व महादेव आदिक देवतों को ग्वालबालों के सामने हाथ जोड़े खड़े देखकर अपने दण्ड को पहुँचा अब तुम्हारे शरण आया हूं मेरा अपराध क्षमा कीजिये जिस तरह अज्ञान बालक अपने पिताकी गोदमें बैठकर बहुत अनुचित करताहै पर पिता उस का प्रेमकी राह बुरा नहीं मानता व पेटमें लात मारनेसे माता विरोध नहीं करती उसीतरह मुझ अज्ञान अपने बालकका अपराध आप क्षमा कीजिये किस वास्ते कि तुम्हारे विराट्रूपमें चौदहोंलोकका व्यवहार रहताहै और आप अपने छोटे स्वरूपसे चिउँटी के तनुमें व्यापक रहते हैं मैंने अपनेको जगत्का उत्पन्न करनेवाला समझाथा इसीकारण लज्जित हुआ व संसारी व्यवहार स्वप्नके समान झूठा होकर आप अविनाशी पुरुष आनन्दमूर्ति सदा स्थिर रहते हैं व तुम्हारी माया आपको नहीं व्यापती. सो अपने चरणोंकी भक्ति मुझे दीजिये व इस व्रजकी गौ व ग्वालिनियोंका धन्य भाग्यहै जिनका दूध आप बालक व बछरारूप होकर पीते हैं यज्ञ व होम से तुम्हारा पेट नहीं भरा था सो व्रजकी गौ व अहीरिनियों ने अपना दूध पिलाकर भर दिया मेरी क्या सामर्थ्य है जो व्रजवासियों के भाग्य की बड़ाई वर्णन कर सकूं॥

सो० भक्तनके सुखदान भक्तवत्सल भगवान हरि। नारी पुरुष समान प्रेमभावके वश सदा॥

हे महाप्रभु आप ऐसे दीनदयालुहैं जिसने अपनी अज्ञानतासे तुम्हारा अपराध किया उसपरभी आपने दयालु होकर ज्ञानरूपी दीपक उसके हृदय में प्रकाशित कर दिया संसारीजीवों को तुम्हारे स्मरण व भक्ति विना भवसागर पार उतरनेवास्ते दूसरा मार्ग उत्तम नहीं है इसलिये सबको चाहिये कि तुम्हारे सगुणरूपका ध्यान व नामका स्मरण करके लीला व कथा अवतारोंकी प्रेम से सुनाकरें व एक क्षणभी तुम्हें न भुलावें तब उन के हृदय में ज्ञानका प्रकाश होगा पर विना कृपा व दया तुम्हारी किसीका चित्त आपके चरणोंमें नहीं लगता इसलिये सदा अपने सच्चे मनसे तुम्हारी दया व कृपाका भरोसा रखना चाहिये हे परब्रह्म परमेश्वर वृन्दावन में जितने जीव जड़ व चैतन्य हैं उनकी बड़ाई कोई नहीं कर सक्ता मनुष्य

इसवास्ते तप व जप करते हैं जिसमें हम देवता होवें देवतोंकी यह इच्छा आठों पहर रहतीहै कि तुम्हारे चरणोंकी सेवा करैं व दिन रात तुम्हारा चन्द्रमुख देखकर अपने नेत्रोंको सुख देवैं पर यह बात देवतोंको प्राप्त नहीं होती जो तुम्हारी कृपासे वृन्दावनवासियोंको सहजमें मिलीहै और देवतों को यह सामर्थ्य नहींहै जो व्रजवासियोंकी बराबरी करसकैं तुम्हारे आदि व अन्त को वेद नहीं जानता व बड़े बड़े योगी व मुनीश्वरों को आपका दर्शन ध्यान में जल्दी नहीं मिलता और हम व महादेव आदिक देवता व ऋषीश्वर रात दिन तुम्हारे चरणोंका ध्यान हृदय में धरकर यह अभिलाषा रखतेहैं कि तुम्हारे चरणोंकी रज मिलती तो उसे अपने मस्तक पर लगाते पर हमैं वह जल्दी नहीं प्राप्त होती व यशोदा आपको दिन रात गोद में खेलाती हैं व ग्वालबालोंके साथ आप बछवे चराकर यह सब लीला हरिभक्त व सब जीवों के भवसागर पार उतारनेवास्ते करते हैं कदाचित् मैं जन्मभर वृन्दावनवासियों के भाग्यकी बड़ाई करूं तौ भी उसका वर्णन नहीं होसक्ता और सब व्रजवासी अपना तन मन धन आप पर न्यवछावर समझतेहैं केवल मुक्ति देकर तुम उनकी सेवा से उऋण नहीं होसक्ते किसवास्ते कि मोक्ष तो आपने पूतना व अघासुर आदिकको जो तुम्हारा प्राण मारने आये थे दियाहै कदाचित् आप मुझे व्रजमें घास और मट्टीकाभी जन्म देते तो तुम्हारे चरण पड़ने से कृतार्थ होता ॥

दो० श्रीवृन्दावन सम नहीं तिहूं लोकमें और । माखनप्रभु खेलैं सदा अतिछविसे ताठौर ॥
करि अस्तुति गदगद वचन दृगजल पुलकशरीर । परे चरणपंकज बहुरि विधि अतिप्रेमअधीर ॥

सो० तब हँसि बोले श्याम गर्वप्रहारी भक्तहित । जाहु आपने धाम वचन हमारो मानि अब ॥

हे राजन् जब ब्रह्माने अति विनय से यह स्तुति वृन्दावनविहारीकी की तब व्रजनाथजीने ब्रह्माका शिर अपने चरणों परसे उठाया और उससे कहा तुम व्रजभूमि की परिक्रमा करते हुये अपने लोकको जावो सो ब्रह्मा श्यामसुन्दरसे बिदा होकर चौरासी कोस व्रजभूमिको दहिनावर्त परिक्रमा करके ब्रह्मलोकको चलेगये व मनहरणप्यारे पहिले बछड़ोंको साथ लिये ग्वालबालोंकी मण्डलीमें जहां वे कलेवा कररहे थे आनपहुँचे परंतु हरि-

इच्छासे वर्षदिन बीतनेपरभी किसी ग्वालबालों ने अपने हरि जानेका भेद नहीं जाना और वह लोग श्यामसुन्दरको देखतेही कहनेलगे हे भाई तुम बछवे तुरंत खोज कर ले आये हमने तो अच्छीतरह भोजनभी नहीं किया यह सुनकर श्रीकृष्ण बोले हे भाइयो सब बछड़े निकट चरते हुये मिलगये सो मैं जल्दीसे उन्हें बहोरकर लेआया ऐसा कहकर श्यामसुन्दर ने ग्वालबालोंके साथ भोजन किया जब संध्या हुई तब उनसे कहा अब घर चलो यह वचन सुनतेही सब कोई घरको चले उस समय वृन्दावन-विहारीने ऐसी मुरली बजाई कि सब जड़ व चैतन्य उसका शब्द सुनकर मोहित होगये और सब वृन्दावनके निकट पहुँचे तब सब व्रजबाला मुरली की ध्वनि सुनकर अपने अपने घरसे दौड़ आई मनहरणप्यारे का दर्शन करके अपने अपने लोचनों को सुख दिया और दिनभर गोपियों का यह नेम था जब वृन्दावनविहारी बछवे चराने जाते थे तब उनका गुणा-नुवाद व चर्चा आपसमें करके दिन काटतीथीं जब संध्यासमय केशवमूर्ति वनसे आते थे तब उनके चन्द्रमुखकी चमक देखकर अपने हृदयकी तपन मिटाती थीं ॥

दो० माखनप्रभुको रूपरस प्रेमसहित सुख पाय। पीवैं व्रजवासी सबै चितवत तृषा बुझाय ॥

हे राजन् उस दिन ग्वालबालोंने अघासुरके मारे जानेका वृत्तान्त अपने माता व पिता व नन्द व यशोदासे कहा यह हाल सुनतेही यशोदा पछताकर कहने लगी मेरे बर्जनेपरभी कन्हैया वनका जाना नहीं छोड़ता कईबेर इसका प्राण राक्षसों के हाथसे बचाहै तिसपर भी नहीं डरता ॥

दो० जन्म भयो जब श्यामको तबसे यही उपाध। कहा होय हमरे यतन विधिगति अगम अगाध ॥

उसदिन भी यशोदाने बहुतसा दान व दक्षिणा केशवमूर्ति से दिलवा कर बड़ी खुशी मनाई हे राजन् जो कोई बालचरित्र श्यामसुन्दरका जो पांच वर्षकी अवस्था तक किया था सच्चे दिलसे कहै व सुनै कभी कोई चिन्ता उसके पास नहीं आसक्ती व संसारमें मनोकामना पाकर अन्तसमय मुक्ति पाताहै इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूछा हे शुकदेव स्वामी इतनी प्रीति गोप व गोपियोंको श्यामसुन्दरकी किस कारण थी जो अपने पुत्रों

से भी उनको अधिक प्यारे जानते थे शुकदेवजी बोले हे राजन् संसारमें सबको पुत्र व धनपर बहुत प्रीति होतीहै परन्तु अपने प्राणको उनसेभी अधिक प्यारा जानते हैं जिसतरह घरमें आग लगती समय मनुष्य अपनी सामर्थ्यभर पुत्र व धनको बचाता है जब उसको बचाने नहीं सक्ता तब अपना प्राण लेकर भागजाताहै उसीतरह श्यामसुन्दर सब जीवों के प्राण थे इसीवास्ते सब ब्रजवासी उस मोहनी मूर्तिको अपने प्राणसे अधिक प्यारा जानते थे व उन्होंने अपनी मायासे सबका चित्त मोह लिया ॥

दो० माखनप्रभु भगवानहैं घटघटव्यापक सोय। सबके जीवन प्राणहैं क्यों नहिं प्रीतम होय ॥

पन्द्रहवां अध्याय।

बलरामजी करके धेनुक राक्षसका वध करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जब श्यामसुन्दरका आठवांवर्ष लगा तब एकदिन उन्होंने यशोदासे कहा अय मैया अब मैं वनमें गौ चराने जाऊंगा सो तुम नन्दबबा से कहो कि वे मुझे जाने देवें जब यशोदाने यह बात नन्दरायसे कही तब उन्होंने शुभ सायत पूछकर दश हजार गौ श्यामसुन्दर से दान कराईं व कार्त्तिक सुदी अष्टमीको उन्हें गौ चरानेवास्ते भेजती समय यह बात कही अय बेटा तुम वनमें ग्वालों के साथ रहना व ग्वालों को बुलाकर समझा दिया हे भाइयो आजसे श्याम व बलरामको भी गौ चरानेवास्ते अपने साथ लेजाया करो पर वनमें उनको अकेले न छोड़ना ऐसा कहकर नन्दजीने दोनों भाइयों को दही का तिलक लगा के बिदा किया जब श्यामसुन्दर ग्वाल व गौ समेत वृन्दावन में पहुँचे तब वहांपर एक तालाब पक्का निर्मलजलसे भराहुआ अतिशोभायमान देखकर गौवों को चरनेवास्ते छोड़ दिया और आप ग्वालबालों के साथ आनन्दपूर्वक खेलनेलगे कभी ग्वालबालों से कहते मैं तुम्हारी हथेली पर अपना हाथ मारकर भागताहूं तुम मुझे दौड़कर पकड़ो कभी किसी ग्वालबालको हाथी व किसीको घोड़ा बनाके उसपर चढ़कर कहते तुम हाथी व घोड़ेकी बोली बोलो व कभी आप गौवोंके पास बाघकी बोली बोलकर उन्हें डराते इसी तरह अनेक लीला करके सबको सुख देते थे उस समय वृन्दावनविहारीने

शोभा उस वनकी देखकर श्रीदामा आदिक ग्वालबालोंसे कहा तुम लोग चैतन्य चोला पाकर बलदाऊजी की महिमा नहीं जानते देखो इस सुन्दर स्थान में वृक्ष जड़रूप होकर झुके हुये बलरामजीके चरणोंको दण्डवत् करतेहैं इन्हें यह इच्छा है कि जड़रूपसे छूटकर मनुष्यका चैतन्य चोला पाते तो तुम्हारी सेवा करके कृतार्थ होते व सदासे संसारमें ऐसी रीति है कि जिसके पास जो वस्तु उत्तम होती है वह अपने स्वामी को भेजता है इसलिये यह सब वृक्ष परोपकारी होकर अपना अपना फल व फूल बलदाऊजीको भेंट देते हैं और ये भँवरे फूलोंपर गूंजते हुये जो देखते हो सो बलदाऊजी का यश गाते हैं व मोर लोग अपना अपना नाच दिखलाकर कोकिला आदिक पक्षी अपनी अपनी बोली उन्हें सुनातेहैं और यह सब वृक्ष अपने फूल व फलोंसे राही व बटोहियों की मेहमानी करते हैं इसवास्ते इनको बड़ा दाता व परोपकारी समझना चाहिये और तुमलोग जितने जीव जड़ व चैतन्य वृन्दावन में देखते हो यह सब बलरामजी के चरणोंमें प्रीति रखने से वैकुण्ठ जाने योग्यहैं और यह चौरासी कोस व्रज-भूमि धन्यहै इसकी बड़ाई कोई नहीं करसक्ता व तुम्हारे चरण इस धरतीपर पड़नेसे यहां सदा वसन्तऋतु बनी रहती है व वृन्दावनके सब जीव जड़ व चैतन्य जीवन्मुक्तहैं हे राजन् ऐसी बड़ाई वृन्दावनकीकरके जब श्यामसुन्दर एक ऊंचे टीले पर चढ़कर बैठे व अपने चौगिर्द उपरना घुमाकर काली पीली धौरी धूमरी गौवोंका नाम लेकर पुकारने लगे तब सब गायें दौड़ती व हांफती हुई केशवमूर्तिके पास आन पहुँचीं उस समय उनकी ऐसी शोभा मालूम होती थी जैसे रंगबरंगकी घटा चन्द्रमाके निकट चारों तरफसे घिर आवे फिर मनहरणप्यारेने गौवोंको वनमें चरनेवास्ते हांकदिया और आप बलरामजी समेत कलेवा करके कदमकी छाया में एक सखाकी जंघापर शिर धर कर सोरहे जब निद्रा खुली तब बलरामजीसे बोले अय भाई हम व तुम अलग अलग ग्वाल व गाइयोंकी टोली बांधकर आपसमें फूलोंसे लड़ें बलभद्रजीने कहा बहुत अच्छा तब आधे आधे ग्वाल व गौ दोनों भाइयों ने बांट लिये व अनेक रंगके फूल तोड़कर अपनी अपनी झोली सबोंने

भर ली व अनेक भांतिका बाजा अपने अपने मुखसे बजाके एक दूसरेको फल व फूल मारकर आपसमें खेल किया कुछ देरतक इसीतरह खेलकर फिर अपनी अपनी गौ अलग चराने लगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेव जीने कहा हे राजन् जिस परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन ब्रह्मा व महादेव आदिक देवतोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता वह वैकुण्ठनाथ मुरेलेके संग नाचकर ग्वालबालों के साथ खेलते थे किसे सामर्थ्य है जो उनकी लीला व महिमा वर्णन करसके जब गौ चराती समय बलरामजी सब ग्वालबाल व गायों समेत एक तरफ वनमें चलेगये व श्यामसुन्दर दूसरे वनमें जा निकले उससमय एकग्वालने बलरामजीसे कहा हे भाई यहांसे थोड़ी दूरपर ताड़ का ऐसा वनहै जिसमें अमृतके समान मीठे मीठे फल लगे हैं सो वहांपर धेनुकनाम राक्षस गर्दभरूपसे उन फलोंकी रखवारी करके इसतरह आप खाता और न दूसरे को खाने देताहै जिसतरह सूमका धन किसीके काम नहीं आवता सो हमलोग तुम्हारी कृपासे वे फल खाया चाहते हैं यह सुनकर बलरामजी ने कहा अभी चलकर खुशीसे वह फल खावो राक्षस तुम्हारा क्या करसक्ता है ऐसा वचन सुनतेही ग्वाल बेडर हो बलदाऊजीके साथ उस वनमें चलेगये जब बलभद्रजीने एक वृक्ष को पकड़कर जोरसे हिलादिया व सब फल उसके टूटकर गिरपड़े तब धेनुक राक्षस फल गिरनेका शब्द सुनतेही चिल्लाता हुआ दौड़ा उसे आते देखकर सब ग्वालबाल मारे डरके भाग गये व अकेले बलरामजी वहां खड़ेरहे जब उस गदहेने आतेही एक दुलत्ती संकर्षणको मारी तब बलभद्रजीने उसकी टांग पकड़कर पृथ्वीपर पटक दिया जब वह फिर लोटपोटकर खड़ा होगया व धरती सूंघकर कान दबाये हुये बलरामजी को दुलत्तियां मारने लगा तब हलधरजीने दोनों टांग उसकी धरकर एक ऊँचे वृक्षपर ऐसा पटका कि वह उसी साइत मरगया व वृक्ष टूटकर गिरपड़ा उसको मरा देखतेही बहुतसे राक्षस उसके पार्श्ववर्ती बलरामजीको मारने वास्ते आये सो उन लोगोंको भी बलभद्रजीने पलभरमें मारडाला उस समय देवतोंने बलरामजीपर फूल वर्षाकर बाजन खुशीके बजाये हे राजन्

ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता ध्यान व पूजा छोड़ कर वैकुण्ठनाथका दर्शन करने वृन्दावनमें आया करते थे धेनुक राक्षसके मरने उपरान्त ग्वालबालोंने इच्छापूर्वक वे फल खाये व अपनी अपनी झोरी घर लेआने वास्ते भर ली व उस वनमें निर्भय होकर गाय चराने लगे॥

दो० बल मोहन घरको चले जानि सांझकी बेर। लीन्हीं गायें घेर सब मुरली की धुनि टेर॥

हे राजन् जब श्याम व बलराम हँसते व खेलते ग्वालबाल व गायों समेत घर आये तब ग्वालोंने वह फल ताड़का वृन्दावनवासियोंको बांटकर कहा आज बलरामजीने वनमें धेनुकादिक बहुतसे राक्षसोंको मारा यह बात सुनकर सब कोई प्रसन्न हुये दूसरे दिन श्यामसुन्दर फिर ग्वालोंके साथ गौ चराने गये व बलरामजी उस दिन घरपर रहे सो वनमें चरतो समय सब गौ छिटक गईं जब ग्वाललोग श्रीकृष्णजीसे बिलग होकर गौवोंको ढूंढ़ने निकले और धूपमें व्याकुल होकर अतिप्यासे हुये तब उन्होंने गौवोंसमेत यमुनाकिनारे जाकर पानी पिया॥

दो० ग्वाल गाय अँचवत भये कालीदहको नीर। निकसत सब अकुलायकै बैठगये जलतीर॥
सो० परे सकल मुरझाय जहां तहां विषझारते। ग्वाल बच्छ अरु गाय भये मनो बिन प्राण सब॥

हे राजन् जब सब ग्वाल व गौ कालीनागके विषसे जो यमुनामें रहता था अचेत होकर गिरपड़े व श्यामसुन्दरके पास देर तक नहीं आये तब मनहरणप्यारे ने उन्हें ढूंढ़ते व पुकारते यमुनाकिनारे जाकर क्या देखा कि वह सब कालीकुण्डके किनारे मरे हुये पड़ेहैं यह दशा उनकी देखकर केशवमूर्तिने विचारा कि कालीदहका जल पीनेसे यह दशा इनकी भई है मैं घरपर जाकर इनके माता व पितासे क्या कहूंगा इन्हें जिलाना चाहिये ऐसा विचारकर व्रजनाथजीने जैसे अमृतरूपी दृष्टिसे उनकी ओर देखा वैसे सब ग्वालबाल गायोंसमेत जी उठे जिसतरह कोई नींदसे जागे उसी तरह वह लोग उठकर अपनी आंखें मलने लगे व मुरलीमनोहरको वहां देखतेही उनके गलेमें लिपट गये तब दुःखभंजनने कहा तुम लोगोंने मुझसे बिलग होकर कालीदहका जल पिया इसी कारण तुम अचेत होगये थे सो परमेश्वरने तुम्हारा प्राण बचाया यह सुनकर ग्वालबालोंने

कहा यमुनाजल पीनेसे हमारी यह गति हुई थी सो तुमने आनकर जिला दिया व्रजवासियोंकी रक्षा करनेवाले आप हैं जब संध्यासमय मनहरण प्यारे ग्वाल व गायोंको साथ लिये मुरली बजाते हुये वृन्दावनके निकट पहुँचे तब सब व्रजबाला अपने अपने घरका काम काज छोड़कर उनके दर्शनवास्ते दौड़ आईं व उनकी छवि देखकर अपनी अपनी आंखें ठंढी कीं व ग्वालबालोंने घर पहुँचकर नन्द व यशोदा आदिकसे कहा आज हमलोग कालीदहका जल पीनेसे गायोंसमेत मर गये थे सो श्रीकृष्णजीने हमें जिला दिया॥

दो० अब हम काहू डरत नहिं हरिहैं हमैं सहाय। बल मोहनके बल फिरत बनबन चारत गाय॥
सो० परत गाढ़ जब आय तब तब होत सहाय हरि। चिरंजीव दोउभाय यशुमति यह तेरे कुँवर॥

यशोदा व रोहिणी व गोपियां यह हाल सुनकर बहुत प्रसन्न हुईं व नन्दजीने कहा कि जो बात गर्गजी कह गये थे वह आंखों से दिखलाई देती है श्रीकृष्णजी ने कोई अवतार होकर बड़े भाग्य से मेरे यहां जन्म लिया है जब यशोदाने श्यामसुन्दर को शय्या पर सुलाया तब उन्होंने कालीनागको यमुना जल से निकालना विचार कर यशोदासे कहा अय मैया मैंने ऐसा स्वप्न देखा है जानो किसीने मुझे यमुना जल में गिरा दिया यह सुनतेही नन्द व यशोदा ने मोहन प्यारे के हाथसे कुछ दान कराया व स्वप्न की बात झूठी जानकर अपने मन को धैर्य दिया॥

सोलहवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का कालीनाग को यमुना जल से निकालना॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् श्रीकृष्णजी ने यह विचारा कि कालीनाग का यहां रखना अच्छा नहीं है किस वास्ते कि मनुष्य व पशु पक्षी जो कोई इस दह का जल पीवेगा वह मर जायगा व यहां कालीनाग के रहने से यमुना को दोष लगताहै इसलिये इसको यहां से निकालना चाहिये उस नाग के विष की ज्वाला से कालीदहका जल चार कोश तक खौलता था इसलिये किसी जीव पशु पक्षी आदिक को ऐसी सामर्थ्य नहीं थी जो वहां जासके कदाचित् कोई धोखे से भी जाता तो जलकर उस दह में गिर

पड़ता था और उस जगह कोई वृक्ष नहीं ठहर कर केवल एक वृक्ष कदम का अविनाशी उस जगह पर था इतनी कथा सुनकर राजा परीक्षित ने पूंछा हे स्वामी इसका क्या कारण है जो उस वृक्ष का नाश नहीं हुआ शुकदेवजी बोले हे राजन् बीच किसी युगके उस वृक्ष पर गरुड़जी अपने मुख में अमृत लिये हुये आनबैठे थे सो उनकी चोंचसे एक बूंद अमृत उस वृक्ष पर गिरपड़ा था इसलिये वह वृक्ष हरा रहकर उसे कालीनाग का विष प्रवेश नहीं कर सक्ता था जब श्यामसुन्दर ने कालीनाग के निकालनेका विचार किया तब उनकी इच्छानुसार नारदमुनि कंसके पास गये जब कंसने बड़े आदर भाव से नारदजी को दण्डवत् करके बैठाला तब उन्होंने पूंछा हे राजन् तुम क्यों उदास मालूम देते हो यह सुनतेही कंस हाथ जोड़कर बोला महाराज गोकुल में नन्दजीके यहां दो बालक बड़े बलवान् उत्पन्न हुये हैं जिन्होंने अघासुर आदिक राक्षसों को मारडाला उनसे मुझे अपने प्राण का खटका दिखलाई देता है॥

चौ० ये दोउ ब्रज में नन्दकुमारा। जानि परत हैं कोउ अवतारा॥
कहत जिन्हैं बलराम कन्हाई। तिनकी गति मति जानि न जाई॥
अब तुम मुनि कछु कहो विचारा। जेहि विधि मारौं नन्दकुमारा॥
मुनि हरिके गुण नीके जाने। सुनि नृप वचन मनहिं मुसकाने॥
दो० तब मुनि बोले नृपतिसों सत्य कहो तुमबात। वे दोऊ अवतार हैं उनगति जानि न जात॥
सो० हैं वे तुम्हरे काल प्रकट भये ब्रज आइकै। नन्दगोपके बाल तुम उनको राखो नहीं॥

ऐसा कहकर नारदमुनि बोले हे कंस मैं एक उपाय इसका बतलाता हूं तुम नन्दजी को वास्ते भेजने फूल कमल कालीदह के कहला भेजो जब वह बालक वहां फूल लेने जावैगा तब उसको कालीनाग डस लेवेगा जब ऐसा समझाकर नारदमुनि चले गये तब कंसने उसी साइत नन्दजी को यह कहला भेजा कि कल्ह करोर फूल कमल कालीदह से मँगवाकर हमारे पास भेजदेव नहीं तो हम तुम्हारा घर बार लूट कर ब्रजसे निकाल देवैंगे और तुम्हारे बेटों को कैद करेंगे श्यामसुन्दर अन्तर्यामी यह हाल जानकर उस दिन गौ चराने नहीं गये ग्वालबालों के साथ खेलते रहे जब ऐसा संदेश कंस का नन्दराय के पास पहुँचा और उन्होंने घबराकर उपनन्द

आदिक गोपों से यह हाल कहा तब सब वृन्दावनवासी शोचित होकर आपस में कहनेलगे हमलोगोंसे कालीदह का फूल आना बड़ा कठिन है हमें तो अपने प्राण का कुछ डर नहीं कंस मारै चाहे छोड़े पर यही बड़ा शोच है कि श्याम व बलराम को कैद करैगा कोई ऐसा ठिकाना देखने में नहीं आता जहां इन दोनों बालकों को छिपाय रखते एकने कहा चलो राजा कंस की बिनती करें व जितना दण्ड मांगे सो देवैं आज तक कंसनें ऐसा क्रोध कभी नहीं किया था ॥

दो० मेरे सुत दोउ नृपति उर खटकत हैं दिन रात। आज कहेउ ऐसो वचन बलमोहन पर घात॥
सो० चढ़िहैं ब्रजपर धाय काल्हिं सबनपर कोपकरि। भयो मरण अब आय को राखे कित जाइये॥

हे राजन् नन्द व यशोदा आदिक उसी शोच में बैठे रो रहे थे जब मुरलीमनोहर अन्तर्यामी सबको दुःखी देखकर घरपर आये और नंदरानी उन्हें गोद में उठाकर अति विलाप करने लगी तब श्यामसुन्दर ने पूंछा अय मैया तू क्यों इतना रोती है यशोदा बोली तू मेरे रोनेका हाल जाकर अपने बाप से पूंछ ले यह वचन सुनतेही श्रीकृष्णजी नन्द के पास आये व उन्हें उदास व रोते हुये देखकर पूंछा अय बाबा तुम क्यों इतने व्याकुल हो यह वचन अपने लाल का सुनकर नन्दजी बोले हे बेटा जब से तुम्हारा जन्म हुआ तब से राजा कंस ने तेरे मारने वास्ते कैसे कैसे राक्षसों को भेजा पर हमारे कुलदेवता सहाय हुये जो तुम्हारा प्राण बचा ॥

दो० कालीदह के फूल अब पठयो भूप मँगाय। तब से यह गाढ़ी पड़ी अब को करै सहाय॥
सो० जो नहिं आवैं फूल लिख्यो कंस म्वहिं डाटिकै। करौं ब्रजहि निरमूल बाँधि मँगावों तुव सुतन॥

अय बेटा वहां का फूल आना बहुत कठिन समझ कर मुझे शोच हुआ है यह सुनकर श्यामसुन्दर ने कहा अय बाबा जिस देवता ने तुम्हारी सहायता पहिले की थी उन्हीं का ध्यान करो वह फिर तुम्हारी सहायता करैंगे जब उनके समझाने से नन्द आदिक ब्रजवासियों को कुछ धैर्य हुआ तब अपने अपने कुलदेवतों का ध्यान हाथ जोड़कर किया व श्यामसुन्दर यमुना किनारे जाकर ग्वालबालों से गेंद खेलने लगे जब खेलती समय केशवमूर्ति ने जानबूझ कर श्रीदामा की गेंद कालीदह में

फेंक दी तब उसने श्यामसुन्दर की कमर में हाथ डालकर कहा मेरी गेंद ला देव विना लिये तुमको नहीं छोडूंगा दूसरा ग्वालबाल मुझे मत समझो मोहनप्यारे ने श्रीदामा से कहा मेरी फेंट छोड़ देव थोड़ी वस्तु के वास्ते झगड़ा मत बढ़ाओ तैंने छोटे बड़े का विचार न करके मेरी कमरमें हाथ डाल दिया तू हमारी बराबरी करता है मेरे प्रताप को नहीं जानता मैंने तेरे सामने पूतना व बकासुर आदिक राक्षसों को मारडाला था तिसपर भी तू हमसे नहीं डरता यह बात सुनकर श्रीदामा बोला तुम बड़े मनुष्यके बेटा होने से कुछ राजा नहीं होगये यहां हम और तुम दोनों बराबरहैं विना गेंद दिये हमारी तुम्हारी नहीं बनैगी और तुमने राक्षसों को मारा तो क्या हुआ अब राजा कंसने कालीदहके फूल मांगे हैं पहुँचाओगे तो मैं जानूंगा जब कंस काल्हि तुमको पकड़ मँगावेगा तब तुम्हारी सामर्थ्य मालूम होगी॥

सो० सकलदेव शिरताज पार न पावैं ब्रह्म शिव। ताहि गेंदके काज फेंट पकड़ झगड़त सखा॥

हे राजन् ऐसा कठोर वचन सुनकर वैकुण्ठनाथने कहा तू मूर्ख सम्हाल कर बात नहीं करता कंसका डर मुझे क्या दिखलाताहै मैं फूल लेनेवास्ते यहां आया हूं आज कमलके फूल कंसको भेजकर ब्रजवासियोंका शोच मिटाऊंगा तेरेसामने कंसके शिरकाबाल खींचकर उसेमारूंगा ऐसा कहकर मुरलीमनोहरने क्रोधसे श्रीदामाको धक्का देदिया व कमर अपनी उससे छुड़ा कर कदमके वृक्षपर चढ़गये तब ग्वालबालोंने हँसीसे ताली बजाकर कहा कि श्यामसुन्दर श्रीदामाके डरसे भागकर वृक्षपर चढ़ि गये व श्रीदामा रोकर कहने लगा मैं जाकर तुम्हारे माता व पितासे गेंद फेंक देनेका हाल कहता हूं तब ब्रजनाथजी ललकारकर बोले मैं तेरा गेंद लेआने वास्ते जाता हूं ऐसा कहकर मनहरणप्यारे कालीदहमें कूद पड़े॥

दो० कोमल तन अति सांवरो साजे नटवर साज। जल भीतर पैठे तहां जहँ सोवत अहिराज॥

हे राजन् जब श्यामसुन्दर यमुनाजीमें पैठ गये तब सब ग्वालबाल श्रीदामाको गालियां देते हुये यमुनाकिनारे हाथ फैलाकर रोने लगे व गौवें चारो ओर मुख बाय बायकर चिल्लाने लगीं और उनमेंसे दो बालक रोते हुये घरकी ओर खबर देने वास्ते चले और उस समय वृन्दावनमें

अनेक प्रकार का अशकुन होने से नन्द व यशोदाको बड़ा शोच हुआ तब वे केशवमूर्तिको ढूंढ़ने निकले और यशोदाने नन्दरायसे कहा आज श्रीकृष्णके साथ बलरामभी नहीं परमेश्वरकी कृपासे मेरा प्राणप्यारा कुशल रहै ॥

दो० चली रसोई करन मैं छींक भई मोहिं आज। आगे होय बिलारि पुनि गई दूसरे भाज ॥

हे राजन् जिस समय नन्द व यशोदा शोच करते व मनहरणप्यारेको ढूंढ़ते हुये चले जाते थे उसी समय उन दोनों ग्वालबालोंने रोते हुये आनकर कहा अय यशोदा माता नन्दलालजी गेंद खेलते हुये कदमके वृक्ष पर चढ़ गये थे सो वहां से कालीदह में कूदकर डूब गये यह वचन सुनतेही नन्द व यशोदा व्याकुल होकर गिरपड़े व यशोदाने नन्दजीसे कहा मेरे प्राणप्यारेने जो रातिको स्वप्न देखा था वह बात सत्य हुई जब वृन्दावनमें यह समाचार पहुँचा तब रोहिणी व वृषभानु आदिक सब गोपी व सब ग्वाल अपना अपना शिर व छाती पीटते नन्द व यशोदा समेत दौड़े हुये यमुनाकिनारे पहुँचे और वहां मोहनीमूर्तिको न देखकर बालकों से उनका हाल पूंछा जब उन्होंने उस जगहको जहां पर केशव-मूर्ति कूदे थे दिखला दिया तब नन्द व यशोदा व्याकुल होकर यमुना-जलमें कूदने दौड़े सो गोप व गोपियोंने उनको थाम्ह लिया ॥

दो० सुखदानी देखे बिना बिलखानी अति माय। रानी अररानी परै पानी में अकुलाय ॥
लोटतअतिव्याकुलधरणिजात गिरनजल धाय। कहतश्यामतुमदियोदुखमोकोसमयकुदाय ॥

हे राजन् यशोदा रोते रोते व्याकुल होकर बौरहोंके समान कहती थी हे बेटा तुमने कहां विलम्ब लगाई तुम्हारे खानेवास्ते माखन रोटी रक्खाहै जल्दी आनकर भोजन करो ॥

चौ० बैठिय आनि संग दोउ भैया। तुम जेंवौ मैं लेउँ बलैया ॥

हे मोहनप्यारे मैं तेरे विना कैसे जीवोंगी व किसे माखन रोटी खिला कर अपना कलेजा ठण्ढा करौंगी अय लालन जब तू अपनी सांवली मूरति मोहनीमूर्ति दिखलाकर मुझे मीठी मीठी तोतली बातें सुनावता था तब मैं तीनों लोक का सुख उसके बराबर नहीं समझती थी अब मैं

किस तरह वह स्वरूप देखूंगी जब जब हम लोगों पर दुःख पड़ता था तब तब तुम हमारी रक्षा करते थे अब हम लोग तुम्हारे विरहरूपी सागरमें डूब रहे हैं क्यों नहीं आनकर इससे बाहर निकालते ऐसी ऐसी अनेक बातें कहकर यशोदा विलाप करती थी ॥

चौ० शोकसिन्धु बूड़ी नँदरानी। तनकी सुधि बुधि सबै भुलानी ॥

दो० ब्रजयुवतिन सुनि महरिके बचन प्रेम आधीर। अकुलानी रोवत सबै भई कठिन उरपीर ॥

हे राजन् इसीतरह सब स्त्री व पुरुष बालक व वृद्ध वृन्दावनवासी अपना अपना घर अकेला छोड़कर कालीदहके किनारे खड़े हुये रोते थे और किसीको तनकी सुधि नहीं थी ॥

चौ० ब्रजवासी सब उठे पुकारी। जल भीतर क्या करत मुरारी ॥
मात पिता अतिहीं दुख पावैं। रोय रोय सब कृष्ण बुलावैं ॥

और सब ब्रजबाला अपना शिर व छाती पीटकर कहती थीं हे मन-हरणप्यारे तुम हमलोगोंको इस दुःखमें छोड़कर आप जलविहार करने चले गये तुम्हारे विना सारा ब्रज सूना होगया अब हमारा दही व माखन कौन चुराकर खायगा और हम सब गोपियां किसका उलहना देने यशोदाके पास जावेंगी तुम्हारे विरहमें हमलोग मरने चाहती हैं जल्दी बाहर निकल कर हमारा प्राण बचाओ जलके भीतर बैठे क्या करतेहो व नन्दजी वि-लाप करके कहतेथे हे बेटा तू मुझे छोड़कर कहां चला गया तेरे विना मुझको जगत् अँधियारा मालूम होताहै मैं किसतरह जीवोंगा इसी दुःखके मारे गोकुल छोड़कर वृन्दावनमें आन बसे थे सो वहां भी तुम्हारे प्राणपर घात लगा अय प्राणप्यारे जिसतरह तुमने बड़े बड़े राक्षसों को मारकर हमको सुख दिया था उसीतरह आजभी मेरी बुढ़ाईकी लज्जा रखकर जल्दी अपनी मोहनीमूर्ति दिखलाओ नहीं तो अब मैं मरने चाहता हूं ॥

सो० लोग उठे सब रोय दीन बचन सुनि नन्दके। कहत विकल सब कोय हरि तुम ब्रज सूनो कियो ॥

जब यशोदा रोते रोते अचेत होगई तब बलरामजीने उसपर जलका छींटा डाला जब उसे कुछ होश हुआ तब उसने बलरामजीको देखतेही रोकर कहा हे बेटा कन्हैया तेरे विना एक साइत अकेला नहीं रहता था

तैंने उसको कहां छोड़ दिया जल्दी मेरे प्राणप्यारेको बुला लावो वह बहुत भूँखाहै अभी तक उसने कुछ नहीं खाया जब यह बात कहकर यशोदा कन्हैया कन्हैया पुकारने लगी तब बलरामजीने उसे धैर्य देकर इसतरह समझाया हे माता तुम किस वास्ते इतना शोच करती हो मोहनप्यारे तुम लोगोंको उदास देखकर कमलके फूल लानेवास्ते कालीकुण्डमें गये हैं वह अविनाशी पुरुष त्रिलोकीनाथ हैं उनको यमुनाजलमें डूबने या कालीनागके काटने का कुछ डर नहीं है आगे तुम अपनी आंखसे देख चुकी हो कि पूतनाको उन्होंने क्षणभरमें मारडाला था मैं तुम्हारी सौगन्ध खाकर कहता हूं कोई ऐसा जीव तीनोंलोकमें नहीं है जो उनको दुःख देने व मारने सके॥

दो० मोहिं दोहाई नन्दकी अबहीं आवत श्याम। नाग नाथि ले आवहीं तब कहियो बलराम॥

जब बलभद्रजीके समझानेसे कुछ धैर्य सबको हुआ तब यशोदाने बलरामजी का हाथ पकड़ लिया व उनको अपने पास बैठाकर बलायें लेने लगीं और सब ब्रजवासी यमुनाजीकी ओर टकटका लगाये थे कि देखें मोहनप्यारे कब यमुनाजलसे बाहर निकलते हैं शुकदेवजीने कहा हे राजन् उसदिन जैसा शोच नन्द व यशोदा आदिक जड़ व चैतन्य सब वृन्दावनवासियोंको हुआ था उसका हाल कहांतक वर्णन करैं अब नन्दलालजीका हाल सुनो जब वह अपना नटवररूप साजे हुये कालीदहमें पहुँचे तब नागिन सुन्दरताई मोहनीमूर्तिकी देखतेही उसपर मोहित होकर कहने लगी तुम ऐसे स्वरूपवान् व कोमलतन किसवास्ते यहां आये हो जल्दी भाग जाव अभी कालीनाग सोया है नहीं तो उसके जागतेही तुम्हारा अंग विषसे जल जायगा केशवमूर्ति यह वचन सुनकर नागपत्नीसे बोले तू अपने पतिको जल्दी जगादे हमको राजा कंसने भेजकर करोड़ फूल कमलके कालीकुण्डमेंसे मांगे हैं तब नागिन बोली तुम कालीनागसे क्या बातें करोगे उसके एक फुफकारसे तुम्हारा शरीर जल जायगा मुझे तेरा सुन्दररूप देखकर दया मालूम होती है राजा कंस मरजावे जिसने तेरी ऐसी मोहनीमूर्तिको यहां भेजा और तू मरनेके वास्ते

अपनी खुशीसे यहां आया है बालक जानकर तुझे कहती हूं तेरे मरने से तुम्हारे माता व पिता बड़ा दुःख पावैंगे तू बिचारा लड़का अपना प्राण लेकर यहांसे चला जा यह सुनतेही मनहरणप्यारे बोले ॥

दो० अरी बावरी सर्पसों काह डरावति मोहिं। जैसो मैं बालक प्रकट वही देखावों तोहिं॥

सो० क्यों नहिं देत जगाय देखों मैं याके बलहिं। यापर कमल लदाय लैजैहों यहि नाथि व्रज॥

हे नागिन सोये हुयेको मारना अधर्म है इसलिये तुझसे जगानेके वास्ते कहता हूं यह वचन सुनकर नागपत्नी बोली छोटे मुख बड़ी बात तुझे कहना उचित नहीं है यह कालीनाग गरुड़जीसे लड़ा था जिसे तुम नाथनेके वास्ते कहते हो मुझे मालूम हुआ तेरी मृत्यु तुझे यहां लेआई है जो तू मेरा कहना नहीं मानता तुझे कालीनागसे लड़नेकी सामर्थ्य हो तो उन्हें आप जगा ले यह बात सुनतेही वृन्दावनविहारी ने उसको झिड़ककर जैसे अपने पांवसे कालीनागकी पुच्छ दबाया वैसे वह गरुड़ जीके डरसे चौंककर उठ खड़ा हुआ जब उसने देखा कि मेरे सामने एक बालक खड़ा है तब आश्चर्य मानकर कहा देखो मेरे विषकी गर्मी अक्षयवट नहीं सहसक्ता व कोसों तक के पशु आदिक उस गर्मीसे भस्म होजाते हैं यह कौन ऐसा बालक है जिसने यहांतक जीते पहुँचकर मुझे नींदसे जगाया ऐसा विचारकर कालीनाग क्रोधसे पुच्छ पटकता हुआ केशवमूर्ति की ओर दौड़ा व अपने एकसौ एक फणसे उनको काटने लगा हे राजन् उस विषकी गर्मीसे यमुनाजल अदहनके समान खौलता था पर वैकुण्ठनाथ को कुछ विष नहीं व्यापता था तब उस नागिनने कहा यह बालक बड़ा शूरवीर होकर कोई मंत्र जानता है इसलिये इसको विष प्रवेश नहीं करता जब कालीनागने देखा कि मेरे काटने से यह बालक नहीं मरता तब उसने मोहनप्यारेको अपने शरीरसे लपेटकर कस लिया उस समय नागिनने पछिताकर मनमें विचारा देखो ऐसा सुन्दर बालक अपनी खुशीसे कालवश होकर यहां आया अब इसका बचना कठिन मालूम होता है व कालीनागने भी अभिमान से केशवमूर्तिसे कहा तुम मुझे नहीं जानते मैं सर्पों का राजा हूं अब यहां से जीते बचकर जावोगे तो देखूंगा

गर्वप्रहारी भगवान्‌ने यह वचन सुनते ही अपना शरीर ऐसा बढ़ाया कि अंग अंग कालीका टूटने लगा जब उसने बहुत दुःखी होकर मोहनीमूर्ति को छोड़ दिया व अलग जाकर खड़ा होगया तब मुरलीमनोहरने तुरन्त उसका फण पांवके नीचे दबाकर नाक छेद डाला व उसमें डोरी नाथकर उसके शिरपर चढ़गये॥

दो० माखनप्रभु फण गहि लियो दियो व्याल फुफकार। चरणकमल माथे धरे निरतत हरी मुरार॥

जब वृन्दावनविहारी तीनों लोकका बोझ अपने शरीर में लेकर कालीनाग के मस्तकपर वंशी बजाते हुये कूद कूद कर नाचने लगे उस समय देवता व गन्धर्व व अप्सरा व किन्नर आदिक अपने अपने विमानों पर बैठकर यह आनन्दरूपी नाच देखने आये व गन्धर्वोंने अनेक तरहके बाजन बजाकर गुणानुवाद वैकुण्ठनाथका साथ ताल व स्वरके गाना अप्सरोंने नाचना आरम्भ किया व देवतोंने श्यामसुन्दर पर फूल बरसाये हे राजन् उससमय नाचने व गाने व मुरली बजानेकी ऐसी शोभा मालूम देती थी जिसका वर्णन नहीं होसक्ता जब कालीनागके मुखसे मारे बोझ त्रिलोकीनाथ के लोहू बहनेलगा तब वह मरण तुल्य होकर अपने विष का घमण्ड भूलगया व अपना फण पटक पटक कर मुखसे जिह्वा निकाल दिया व अपने जीने से निराश होकर शिर झुका लिया उससमय कालीनाग को वैकुण्ठनाथ का दर्शन मिलने व उनका चरण माथेपर पड़नेसे ज्ञान उत्पन्न होकर यह बात स्मरण आई कि मैंने ब्रह्माजीसे सुना था ब्रजगोकुल में कृष्णावतार होगा॥

दो० ते गोकुल में अवतरे मैं जान्यों निरधार। ये अविनाशी ब्रह्महैं ब्रज क्रीड़ा अवतार॥

सो यह बालक वही अवतार है नहीं तो दूसरेकी क्या सामर्थ्य थी जो मेरे विषसे जीता बचे इन त्रिलोकीनाथकी बराबरी कोई कर नहीं सक्ता बहुत बुरा काम किया जो परब्रह्म परमेश्वरपर फण चलाया यह बात मन में समझतेही कालीनाग शरण पुकारकर बोला हे महाप्रभु मैंने तुम्हारा रूप नहीं पहिंचाना अब मुझे जीवन दान देकर अपनी शरणमें लीजिये यह अधीनताई कहकर कालीनाग चुप हो रहा व अपने कर्तव्य की

लज्जासे कुछ स्तुति कर नहीं सका श्रीदीनानाथने यह दीन वचन सुनकर समझा कि अब कालीनाग का अभिमान टूट गया तब उसे अपना चतुर्भुजीरूप का दर्शन दिया उनका स्वरूप देखतेही कालीनाग की स्त्रियां अतिविलापसे रुदन करती हुई वहां आई व हाथ जोड़कर इस तरह पर उनकी स्तुति की हे परब्रह्म परमेश्वर आप तीनों लोक व सब जीवों के उत्पन्न करनेवाले हैं व तुमने वास्ते मारने अधर्मी व भार उतारने पृथ्वीके अपनी इच्छा से अवतार लिया है संसार में जो कोई तुम्हारा ध्यान या भक्ति शत्रुता से करै वह भी भवसागर पार उतरकर मुक्ति पाता है जिसतरह अमृत जानकर व अनजान में दोनों तरह पीने से मनुष्य अमर होकर नहीं मरता उसीतरह तुम्हारे ध्यानका प्रताप भी समझना चाहिये हमारे पति ने अपने अज्ञान व अभिमान से आपको नहीं पहिंचाना सो वह अपने दण्डको पहुँचा पर तुम्हारा दर्शन पाकर कृतार्थ हुआ किसवास्ते कि जिन चरणोंका दर्शन दान व यज्ञ व जप व तप करने से जल्दी नहीं मिलता सो दर्शन इस नागने सहज में पाया हे दीनानाथ आपने बहुत अच्छा किया कि इस दुःखदायीका घमण्ड तोड़ डाला व इसने न मालूम पूर्वजन्म में कैसा भारी तप किया था जिस तपस्याके फल से तुम्हारे चरण इसके मस्तकपर विराजते हैं नहीं तो इन चरणोंकी धूरि मिलने वास्ते लक्ष्मीजी व ब्रह्मादिक देवता व योगी व मुनि चाहना रखते हैं और जल्दी वह रज उनको नहीं मिलती सो धूरि कालीनागके माथे पर चढ़ी इसके बराबर दूसरेकी भाग्य होना बहुत कठिन है व हम ऐसी सामर्थ्य नहीं रखतीं जो उस रजका प्रताप वर्णन कर सकें नारदजी व सनकादिक उस धूरि की भक्ति अपने हृदयमें रखनेसे इन्द्रासन गद्दी व अष्टसिद्धि व मुक्तिपदवी व तीनों लोकका सुख उसके सामने कुछ वस्तु नहीं समझते जिसने पारस पत्थर पाया वह सोनेकी चाहना नहीं रखता अब यह तुम्हारे भय से मरण तुल्य होगया व वीर लोग डरे हुये को नहीं मारते इसलिये दया करके इस का प्राण छोड़ दीजिये नहीं तो हमको भी इसके साथ मार डालिये किस वास्ते कि हम पतिव्रता होकर अपना प्राण इसके अधीन जानती हैं व

वेद व शास्त्रमें भी ऐसा लिखा है कि पतिव्रता स्त्री उसको समझना चाहिये जो अपने पतिको कोढ़ी व रोगी व दरिद्री होने परभी ईश्वर समान जाने व आज से अपने स्वामी पर हमें अधिक विश्वास हुआ कि उसके प्रताप से हमने तुम्हारा दर्शन पाया जब इसीतरह बहुत स्तुति नागिनीने की तब मुरलीमनोहर अपराध कालीनागका क्षमा करके उसके मस्तक परसे कूद पड़े तब उस सर्पने दण्डवत् करके हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ जो अनजानमें मुझसे अपराध हुआहो सो दया करके क्षमा कीजिये और मैं सांपरूप विष से भरा हुआ तामसी स्वभाव था इसलिये तुम्हारे ऊपर अपना फण चलाया ब्रह्मादिक देवता तुम्हारे भेदको जल्दी जान नहीं सक्के मैं मूर्ख तुम्हें किसतरह पहिंचानता आपने मुझे दर्शन देकर कृतार्थ किया सब वेद व पुराण तुम्हारा गुण गाते हैं और जो आप न्याय करके देखैं तो इसमें मेरा कुछ अपराध समझना न चाहिये किसवास्ते कि मेरी जातिका यही स्वभाव आपने बना दिया है कदाचित् कोई मुझको दूध पिलावे तो मेरे शरीर से विष उत्पन्न होगा व गौ को खाली भूसा खिलाने से दूध होता है मैंने अपने स्वभावके अनुसार तुम्हारे ऊपर फण चलाया अब मुझे अपनी शरण में रखिये व मेरा माथा धन्य है जिसपर तुम्हारे चरण पड़ने से मेरे अनेक जन्मके पाप छूटगये जिन चरणोंको लक्ष्मीजी आठों पहर अपने हृदय में लगाये रहती हैं व ब्रह्मादिक देवता दिन रात्रि उनका ध्यान करते हैं और उन्हीं चरणों का धोवन गंगाजी होकर तीनों लोकको कृतार्थ करती हैं वह चरण तुम्हारा मेरे शिरपर विराजा शेषनागके एक मस्तक पर आप शयन करते हैं सो उसने इतनी बड़ाई पाई व मेरे एकसौ एक शीश पर आपने चरण रखकर नृत्य किया है इसलिये मैं अपने बराबर किसी दूसरेकी भाग्य नहीं समझता अब मेरा डर छूट गया॥

दो० निजपदपंकज परसते गति पाई मुनिनार। सुर नर मुनि पूजत तिन्हैं सन्तन प्राणअधार॥

सो० फिरत चरावत गाय श्रीवृन्दावन यह चरण। भक्तनके सुखदाय व्रजवासी जन दुखहरण॥

यह स्तुति सुनकर श्यामसुन्दर ने कहा अब तू यहां का रहना छोड़कर अपने कुल परिवार समेत रमणकद्वीपमें जाके रह मैं यहां जलक्रीड़ा

करूंगा व जो कोई कालीदहमें स्नान करके पितरोंको तर्पण देगा उसके जन्म जन्मांतरके पाप छूट जावेंगे व हम तेरा अपराध क्षमा करके अब तुझसे बहुत प्रसन्न हैं व तेरा नाम महाप्रलयतक संसार में स्थिर रहेगा जो देवता व मनुष्य मेरी व तेरी कथा कहैं व सुनैंगे उनको और इस अध्याय के कहने व सुननेवालोंको सांप काटनेका भय नहीं होगा व राजा कंसने करोड़ फूल कमल कालीकुण्ड के मांगे हैं सो तू जल्दी अपने ऊपर लाद कर ब्रजमें पहुँचा दे यह वचन वैकुण्ठनाथका सुनकर कालीनाग ने डरते व कांपते विनय किया हे महाप्रभु मैं फूल कमल के अभी पहुँचाये देता हूं पर रमणकद्वीप में जाने से मुझे गरुड़जी खाजावेंगे उन्हींके डरसे मैं यहां भाग आया था यह सुनकर मनहरणप्यारे बोले ॥

दो० चरणकमल की थाप है तेरे मस्तक माहिं। अब इस आपप्रतापसे गरुड़ बोलिहैं नाहिं॥

ऐसा कहने के उपरांत केशवमूर्ति ने उसी साइत गरुड़को बुलाकर कालीनागका भय छुड़ा दिया तब कालीनागने बड़े हर्षसे अपनी स्त्रियों समेत विधिपूर्वक पूजा श्रीकृष्णजीकी की व बहुत रत्न व मणिके हार उन को भेंट दिया व तीन करोड़ फूल कमलके अपने ऊपर लाद लिये तब फिर ब्रजनाथ उसके मस्तकपर चढ़कर नाथ पकड़े हुये वहां से चले ॥

स०० फिर यशुमति उरमाहिं उठी लहरै अनिमेषकी। कान्हर आयो नाहिं कहत रोय बलरामसों॥

यह वचन सुनकर बलभद्रजी बोले हे माता तुम थोड़ीदेर और धैर्य धरो अभी तुम्हारे प्राणप्यारे आते हैं बलरामजीके समझाने पर भी फिर ब्रज-वासीलोग व्याकुलता से रोकर कहने लगे अय मनहरणप्यारे तुम हमारा मोह छोड़कर कहां चले गये तुम्हारे विना हमारी यह गति होती है दो प्रहर से यमुनाजल में बैठे क्या करते हो जल्दी क्यों नहीं निकल आते जिस तरह विना मणि का सांप तड़फता है वह दशा नन्द व यशोदा की फिर होगई तब यशोदा रोकर कहने लगी मुझे धिक्कार है जो मोहन-प्यारा यमुना में डूब जावे और मैं जीती रहूं ॥

दो० कहत यशोदा नंद सों झुकझुक वारम्बार। अब केतिक दिन जियोगे मरत नहीं क्यहिं मार॥
सो० करिदेखो मन ज्ञान ऐसे दुख में मरण सुख। नन्द भये बिन प्रान मूर्छिपरे सुनि प्रियवचन॥

जब नन्दराय मूर्च्छित होकर गिरपड़े तब बलरामजीने उन्हें उठाकर कहा हे पिता तुम किस वास्ते इतना शोच करके प्राण देते हो श्यामसुन्दर को मारनेवाला संसारमें कोई नहीं है वह अविनाशी पुरुष आठों प्रहर लक्ष्मीजी को साथ लिये क्षीरसमुद्र में रहते हैं उनके यमुनाजल में कूदने से तुम लोग क्यों डरते हो इसतरह बलरामजी उन्हें समझा रहे थे कि उसी साइत यमुनाजल में लहरि उठने लगी तब बलभद्रजी बोले देखो अब वैकुण्ठनाथ जल से बाहर आते हैं ऐसा वचन सुनतेही सब व्रजवासी यमुनाजी की ओर देखने लगे उसी समय नन्दलालजी कालीनाग को नाथे हुये जल के ऊपर प्रकट हुये ॥

दो० माखनप्रभु गोपालजी बाहर प्रकटे आय । दुःखहरन दानवदलन सन्तन सदा सहाय ॥

हे राजन् उन्हें देखतेही नन्द व यशोदा आदिक व्रजवासी ऐसे प्रसन्न होगये जैसे मुर्दे के तनमें प्राण आजावै व कालीनाग ने मुरलीमनोहर को यमुना किनारे उतार दिया ॥

सो० तटपर कमल धराय काली को आयसु दियो । उरगद्वीप अब जाय करो वास निर्भय सदा ॥

कालीनाग उनकी आज्ञानुसार दण्डवत् करके उसीसमय अपने कुल परिवार समेत रमणकद्वीपको चलागया व श्यामसुन्दरने सब व्रजवासियों को जो दुःखसागर में डूबे थे मिलकर उन्हें सुख दिया उसी दिनसे वहां का यमुनाजल जो विष तुल्य था सो अमृतके समान होगया ॥

दो० धन्य धन्य प्रभु धन्य कहि मुदित सुमन बरषाय । गये देव सब निजसदन हृदय परम सुखछाय ॥

सत्रहवां अध्याय ।

कालीनाग के रमणकद्वीप छोड़ने की कथा ॥

राजा परीक्षित ने इतनी कथा सुनकर पूंछा हे स्वामी रमणकद्वीप उत्तम स्थान छोड़कर कालीनाग यमुनाजी में क्यों आकर रहा व गरुड़ जी का कौन अपराध उसने किया था इसका हाल विधिपूर्वक वर्णन कीजिये शुकदेवजी बोले ॥

दो० गरुड़ वली के त्रासते वस कियो व्रजआय । सो लीला विस्तारसों कहौं सबै समझाय ॥

हे राजन् सुनो कश्यपजी ब्रह्मा के बेटा हैं उनके बहुतसी स्त्रियां होकर

उनमें एक कद्रू व दूसरी विनता नाम थी सो कद्रू के कालीनाग आदिक बहुत से सर्प उत्पन्न हुये व विनता के दो बालक एक गरुड़जी परमेश्वर के वाहन व दूसरा अरुण नाम सूर्यदेवता का सारथी हुआ सो गरुड़जी व कालीनाग आदिक सर्प रमणकद्वीप में रहते थे एक दिन कद्रू व विनता दोनों सवति बैठी थीं सो कद्रू ने विनता से पूंछा सूर्य के रथ में कौन रंग के घोड़े जुते हैं सो विनता ने श्वेतवर्ण व कद्रूने काले रंग के बतलाये इसी बातपर दोनोंने आपस में झगड़ा करके यह प्रतिज्ञाकी कि जिसका कहना झूठाहो वह सच कहनेवाली की दासी होकर रहे जब यह समाचार सर्पोंने पाया तब कद्रूसे कहा हे माता तुमने विना पूंछे हम लोगों के ऐसी प्रतिज्ञा की कि सूर्य के रथ में श्वेत वर्ण के घोड़े जुते हैं तू विनता से हार जायगी यह बात सुनकर कद्रू बोली अय बेटा मैं वचन हार चुकी हूं अब कोई ऐसा उपाय करो जिसमें मेरा कहना सचहो नहीं तो मुझे विनता की दासी होना पड़ैगा तब सांपों ने कहा हम लोग जाकर उन घोड़ों के अंग में लपट जाते हैं इससे वह काले दिखलाई पड़ेंगे तब तू जीत जायगी सो काले काले सांप जाकर उन घोड़ों के शरीर में लपट गये इसलिये वह काले दिखलाई देने लगे उसी समय कद्रू विनता को साथ लेकर घोड़े देखने गई सो सांपोंके लपटे रहने से वह काले देख पड़े इसलिये विनता हार गई ॥

दो० कद्रू विनतहि जीतिकै लैगै वरहि लेवाय। जाकी नीति अनीति है तासों कहा बसाय॥

जब गरुड़जीने यह हाल सुना तब कद्रू से जाकर कहा तुमने छल करके मेरी माताको दासी बनाने की इच्छा की है सो ऐसा अधर्म करना तुमको उचित नहीं था अब जो वस्तु मांगो सो हम उसके बदले ला देवें पर मेरी माताको दासी मत बनाओ यह बात सुनकर सर्पों ने आपस में सम्मत करके गरुड़जी से कहा तुम अमृत का कलशा हमें लाय देव तो उसे दासी न बनावें गरुड़जी ने अपनी सामर्थ्य से उसी समय अमृत का कलशा लाकर सर्पोंको दे दिया व अपनी माताको साथ लेकर घर चले आये यह समाचार सुनकर देवतों ने विचार किया कि सांप लोग अमृत

पीने से अमर होकर सब जीवों को अधिक दुःख देवैंगे तो किस तरह कोई जीता बचेगा ऐसा विचार के सब देवतों ने आकर गरुड़जी से कहा तुम अपने वचन प्रमाण अमृत का कलशा कद्रू को देकर अपनी माता को लिवा ले आवो जैसा छल करके तुम्हारी माता को उन्हों ने दासी बनाया था वैसा उपाय तुम भी करो जिसमें अमृत का कलशा उनसे ले लेव गरुड़ जी ने यह बात देवतोंकी मान ली और जिस समय सर्प लोग अमृत का कलशा तालाब किनारे रखकर इस इच्छा से स्नान करने लगे कि पवित्र होकर अमृत पीवैं उसी समय गरुड़जी वहां पहुँचकर कलशा अमृत का उठा लाये और देवतों को सौंपदिया सो देवता अमृत लेकर अपने लोक को चले गये जब सर्पों ने इसी कारण गरुड़ से शत्रुता उत्पन्न की तब एक दिन गरुड़ने नारायणजी अपने स्वामी की बहुत स्तुति करके यह वरदान मांगा कि कोई सांप हमको लड़ाई में न जीतै व सर्पों को हम भोजन किया करें उनका विष हमें न व्यापै जब परमेश्वर दीनदयालु ने गरुड़ को इच्छापूर्वक वरदान दिया तब वह बहुत प्रसन्न होकर सर्पों को पकड़ के खाने लगे जब सर्पों ने गरुड़जी से जीतने की सामर्थ्य अपने में नहीं देखी तब ब्रह्माजी के पास जाकर विनय किया हे जगतकर्ता हमें व गरुड़ दोनों को आपने उत्पन्न किया है सो गरुड़जी वरदान पानेके प्रताप से हम लोगोंको खाजाते हैं ऐसी बरजोरी उनको करना न चाहिये यह वचन सर्पों का सुनकर ब्रह्माजी ने इसतरह पर दोनों का मेल करादिया कि महीनवें दिन एक सांप गरुड़ जी अपने खाने के वास्ते लिया करैं व सबको दुःख न देवें जब गरुड़जी इस बातपर प्रसन्न हुये तब सांपलोग आपसमें पारी बांधकर हर पूर्णमासीको एक सांप पीपलके वृक्षपर रख आनेलगे व गरुड़जीने ब्रह्मा जी की आज्ञानुसार वही सर्प खाकर दूसरे को दुःख देना छोड़ दिया जब कुछ दिन इसीतरह वीतकर कद्रूके बेटा कालीनागकी पारी आई तब वह अपने विषके घमण्डसे कहने लगा हम व गरुड़ कश्यपजीके बेटा होकर दोनोंकी माता आपसमें बहिन हैं जब मैं उनसे डरकर उन्हें सांप खानेको दूं तो इसमें मेरी बड़ी हँसी है इसलिये हम गरुड़जीसे लड़ैंगे यह विचारकर काली-

नाग वृक्षपर सांप नहीं रखआया तब गरुड़जी उसके द्वारपर आये जब कालीनागने गरुड़जीसे बड़ा युद्ध किया तब गरुड़जीने उसको अपने पंख व चोंच से मारकर गिरा दिया और लड़ते समय गरुड़जीके पंखोंसे सामवेद व ऋग्वेद व अथर्वणवेद व यजुर्वेद के स्वर निकलते थे इसलिये वह शब्द सुनकर सांपोंका तेज हीन होजाता था जब कालीनागने अपने से गरुड़में अधिक बल देखा तब वह हार मानकर मनमें कहने लगा अब विना भागे गरुड़जीके हाथसे मेरा प्राण नहीं बचेगा इसलिये यमुना-किनारे वृन्दावनमें जाकर रहूं तो जीता बचूंगा किसवास्ते कि गरुड़जी सौभरि ऋषीश्वरके शापसे वहां जा नहीं सक्के ऐसा विचारकर कालीनाग अपनी स्त्री व बच्चोंसमेत रमणकद्वीपसे भागकर यमुनाजलमें आ बसा था व दूसरे सांप सौभरि ऋषीश्वरके शाप देनेका हाल नहीं जानते थे और कालीनागने नारदमुनि से सुना था इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा महाराज गरुड़जी वृन्दावनमें यमुनाकिनारे क्यों नहीं जासक्के थे शुकदेव जीने कहा हे राजन् किसीसमय सौभरि ऋषीश्वर यमुनाकिनारे बैठे तप करते थे वहां गरुड़जीने जाकर एक मत्स्य बहुत बड़ा यमुनामें से खाया यह हाल देखतेही सौभरि ऋषीश्वरने क्रोधित होकर कहा हे गरुड़जी जिस जगह हम परमेश्वरका भजन करैं वहांपर किसीको ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो जीवोंको दुःख देवे कदाचित् तुमको मेरे कहनेका विश्वास न होय तो अपने स्वामीसे जाकर पूंछलेव आज तो तुम्हारा अपराध क्षमा किया पर आगेके वास्ते ऐसा शाप देता हूं जो फिर कभी तुम यहां आवो तो मरजाओगे ॥

दो० माखनप्रभुके नेह में मेरो सहज सुभाय। जो आवे मेरी शरण ताकी करत सहाय ॥

हे राजन् इसी शापके डरसे गरुड़जी वहां नहीं जासक्के जबसे काली-नाग उस जगह आनबसा तबसे वहां का नाम कालीदह हुआ इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब श्रीकृष्णजीने कालीनागको बिदा करदिया और आप लड़कों के समान डरते व कांपते दौड़कर यशोदाकी गोदमें घुसगये नन्दरानीने श्यामसुन्दरको बड़ी प्रीतिसे गले लगा लिया

व मुख चूमने लगी व रोहिणी आदिक सब व्रजबाला उन्हें देखकर परम आनन्द होगईं व जो गो व बछरे विना देखे श्यामसुन्दरके रोते थे वह पागुर करने लगे उससमय बलरामजी यह लीला केशवमूर्तिकी देखकर हँसे तब नन्दजी उनको हँसते देखकर क्रोधसे बोले बलभद्र वसुदेवजीका बालक हमारा जातिभाई नहीं है इसलिये दुःखके समय हँसी व ठट्ठा करता है यह सुनकर बलरामजीने कहा हे पिता मेरे हँसनेका यह कारण समझो देखो जब श्यामसुन्दर यमुनामें कूद कर ऐसे बलवान् सांपको नाथ लाये तब नहीं डरे अब माताकी गोदमें आकर कांपते हैं हे नन्द बाबा केशवमूर्ति किसीका कुछ डर न रखकर सब दुःखदाइयोंको दण्ड देनेवालेहैं यह सुनकर नन्दजी हँसने लगे और उन्होंने मनहरणप्यारे को गले लगा कर कहा हे बेटा अब तुम गो चराने न जाकर मेरी आंखोंके सामने रहा करो ऐसा कहकर नन्दजीने बहुत गो सोना आदिक उनसे दान कराया हे राजन् उसदिन सब व्रजवासियोंने श्यामसुन्दरका नया जन्म होना विचारकर ऐसी खुशी मनाई जिसका हाल मुझसे वर्णन नहीं होसक्ता व यशोदाने मोहनप्यारेसे कहा हे बेटा मैं नित्य तुझे मना करती थी कि तू यमुनाकिनारे मत जाया कर सो तैंने मेरा कहना नहीं माना व यमुनाजलमें कूदकर हमलोगोंको इतना दुःख दिया तब केशवमूर्ति बोले हे मैया रातका स्वप्न सत्य हुआ ॥

दो० मैं गेंदा खेलत यहां आयौ यमुनातीर। मोहिं डारि काहू दियो कालीदह के नीर ॥

हे माता जब मैं जलके नीचे चला गया तब सांपको देखके बहुत डरा जब मैंने उससे कहा कि राजा कंसने मुझे वास्ते लेने फूल कमलके यहां भेजाहै तब वह राजाके डरसे मुझे फूलसमेत यहां पहुँचा गया फिर श्रीदामा आदिक ग्वालबालोंने मोहनप्यारेसे गले मिलकर कहा हे भाई जो कुछ तुमने कहा था सो किया तुम कंसको अवश्य मारोगे अब हमारा अपराध क्षमा करो यह वचन सुनतेही केशवमूर्ति हँसकर बोले हे भाई तुम मेरे सखाहो हमारी तुम्हारी घड़ीभरकी लड़ाई थी अब मैं तुमसे प्रसन्नहूं फिर श्याम व बलराम यह लीला समझकर आपसमें हँसने लगे व उस दिन

सब वृन्दावनवासी श्यामसुन्दर के विरह में भूखे रहे थे इसलिये मुरली-मनोहरने कहा आजकी रात सब कोई यहां टिके रहो कल्ह घरपर चलेंगे जब उनकी आज्ञासे सब लोग वहां टिके तब नन्दजीने वृन्दावनसे पकवान् व मिठाई मँगवाकर सबको भोजन कराया व उसी दिन नन्दजी ने फूल कमलके गाड़ी व बैलोंपर लदवाकर ग्वालों के साथ राजा कंसके पास भेज दिया ॥

दो० बहुत विनय करि कंसको दीन्हों पत्र लिखाय। कहियो मेरी ओरते नृपसों ऐसो जाय॥
सो० गयो कमलके काज कालीदह मेरो सुवन। तुव मतापते राज आप गयो पहुँचाइ अहि॥

हे राजन् जब ग्वालबालोंने फूल कमलके चिट्ठीसमेत कंसके पास पहुँचा दिया तब कंस कमलके फूल देखने व पत्री बांचनेसे बहुत डरा व उसको विश्वास हुआ कि श्रीकृष्णजी परब्रह्मका अवतार हैं इनके हाथसे मेरा प्राण नहीं बचेगा ऐसा विचारकर मनमें बहुत उदास होगया पर नन्दजीको शिरोपांव देकर ग्वालोंसे बिदा करती समय कहा तुम नन्दराय जी से कह देना हम एक दिन उसके बेटोंको बुलाकर देखेंगे जब ग्वालोंने आनकर वहांका संदेशा कहा तब नन्दादिक सब वृन्दावनवासी बहुत प्रसन्न हुये ॥

दो० कहत श्याम बलरामसों हँसिहँसि करि यह बात। नृप हमतुमदेखनलिये कहेउ बोलावनतात॥
सो० ब्रजजन परमहुलास इक सुख हरि अहिते बचे। मिटो कंसको त्रास दूजे कमल पठाइ नृप॥

जब रातको सब वृन्दावनवासी यमुना किनारे सरहरीके वनमें सोरहे तब राजा कंसने यह हाल सुनके धुन्धक राक्षसको बुलाकर कहा तुम आज यमुना किनारे जाकर सब ब्रजवासियों को श्याम व बलराम समेत जला दो तो मैं तुम्हारा बड़ा यश मानूंगा यह वचन सुनतेही उस राक्षसने आधी रातके समय वहां जाकर चारों ओर से आग लगा दी ॥

दो० दावानल अति क्रोध कर लियो चहूंदिशि घेर। उठी अनलज्वालाप्रबल मानो अचलसुमेर॥

जब पशु व पक्षी व वृक्ष उस आगसे जलने लगे तब नन्द व यशोदा आदिक ब्रजवासियोंने नींद से चौंककर क्या देखा कि चारों ओरसे आग दौड़ी चली आती है व कोई राह भागनेकी दिखलाई नहीं देती यह दशा

देखते ही यशोदाने घबराकर श्रीकृष्णसे कहा हे दुःखभञ्जन जब जब हम लोगोंपर दुःख पड़ता है तब तब तुम सहायता करते हो अब जल्दी इस अग्निसे बचाओ नहीं तो सब लोग जलकर मरने चाहते हैं व तुम्हारा शरण छोड़ करके अग्निके डरसे भाग नहीं सक्ते जब श्यामसुन्दरने अग्नि की ज्वालासे सबको बहुत व्याकुल देखा तब उनको धैर्य देकर बोले तुम लोग अपनी आंख बन्द कर लेव अग्नि बुझ जावेगी जब सबोंने अपनी अपनी आंखें बंद कीं तब वैकुण्ठनाथ अनेक रूप धरकर सब अग्नि मुख में खा गये व धुन्धक राक्षसको मारडाला उसी साइत परमेश्वरकी इच्छा-नुसार सब अग्नि बुझकर जितने पशु व पक्षी व वृक्षादिक जलते थे ज्यों के त्यों होगये जब केशवमूर्तिके कहनेसे वृन्दावनवासियोंने अपनी आंखें खोलीं तब उन्हें एक चिनगारी भी नहीं दिखलाई दी यह चरित्र देखकर सब लोग आपस में कहने लगे किसीने जलसे भी नहीं बुझाया यह सब अग्नि क्या होगई तब मनहरणप्यारे ने कहा खरकी आग बहुत जलती है फिर उसको बुझते हुये देर नहीं लगती ॥

सो० श्याम सहायक जाहि ताको डर है कौनको। यह न बड़ाई ताहि पांचतत्त्व जिनके किये ॥

जब सब व्रजवासी श्यामसुन्दरकी स्तुति करने लगे तब केशवमूर्ति ने अपनी माया उन पर ऐसी फैला दी कि सब किसीने जाना यह अग्नि आपसे बुझ गई व कालीनाग नाथने का हाल भी उन लोगों को स्वप्न सा मालूम हुआ ॥

दो० माखनप्रभुके नेहमें कछुक कहूं डर नाहिं। प्रात होत आनंदसों सब आये घर माहिं ॥

उस दिन सब छोटे बड़ोंने अपने अपने घर मंगलाचार मनाया व श्यामसुन्दर को बालक जानकर प्रतिदिन उनसे अधिक प्रीति करने लगे॥

अठारहवां अध्याय।

बलरामजीका प्रलम्बराक्षस को वध करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिस तरह श्यामसुन्दरने ग्वालबालों के साथ वृन्दावनमें खेल खेला था वह कहता हूं सुनो जब ग्रीष्मऋतु ज्येष्ठ व आषाढ़ आया तब सूर्यके तपनेसे सारा संसार व्याकुल होगया पर श्याम-

सुन्दरकी कृपा से वृन्दावनमें किसी जीवको गर्मी न व्यापकर वहां वसन्त ऋतु ऐसा सुख बना रहा इसलिये वृन्दावन में फूलोंपर झुण्डके झुण्ड भँवरे गूंजकर आमकी डालियोंपर कोयल कूकती थी व वृक्षोंके नीचे ठंढी छायामें मोर नाचकर झंकारते थे व मन्द सुगन्ध हवा बहकर वन घटाटोप के निकट यमुनाजी लहर लेती थीं वहां पर वृन्दावनविहारी व बलरामजी ग्वालबालों समेत गायें चराकर अनेक तरहका खेल खेलते थे जब कभी चरखीके समान घूमते तब उनको पृथ्वी व आकाश घूमता हुआ मालूम देता था व कभी एक ग्वाल दूसरे बालकके हाथपर ताली मारकर भागता था वह उसे पकड़नेवास्ते दौड़ताथा व कभी कभी आपसमें आंखमुँदौला आदिक खेलकर अनेक तरहके राग गाते थे व अपने मुख से अनेक रंग का बाजा बजाकर बाघ व गिद्ध व लोमड़ी आदिक की बोली बोलते थे व कभी कभी केशवमूर्ति वंशी बजा के अपना गाना ग्वालों को सुना कर प्रसन्न करते थे ॥

दो० कबहूं सारस कोकिला हंस मोरकी भांत। ग्वालबाल बोलैं कभी माखनप्रभु मुसकात ॥

हे राजन् ऐसे आनन्दमें प्रलम्बराक्षस भेजा हुआ राजा कंसका वास्ते मारने श्यामसुन्दरके ग्वालरूप बनकर वहां आया व सिवाय केशवमूर्ति के दूसरे किसीने नहीं पहिंचाना जब उसने बहुत से ग्वालबालों को उठा लेजाकर पहाड़की कन्दरामें छिपा दिया तब श्यामसुन्दरने आंखकी सैन से बलरामजीको दिखलाकर कहा अय भाई इस ग्वालको अपना साथी मत समझो यह प्रलम्बासुर कपटरूप ग्वाल बनकर मेरे मारनेवास्ते आया है इसे मारनेका कोई उपाय करना चाहिये ग्वालरूप यह नहीं मारा जा-यगा किसवास्ते कि ग्वालरूप मेरे सखा व भाई बन्धु हैं जब यह राक्षसरूप धरै तब इसको मारडालना श्यामसुन्दरने बलरामजीको ऐसा कहकर उस कपटरूप ग्वालको अपने पास बुलाया उसका हाथ पकड़कर हँसते हुये बोले हे मित्र हमें तुम्हारा वेष सबसे अच्छा मालूम होताहै जो लोग मेरे सखा हैं वह कपट नहीं रखते व कपटी मनुष्य को मैं अपना सखा नहीं जानता ॥

दो० सखा बुलाये निकट सब तिन्हैं कहेउ नँदलाल। फल बुझाय अब खेलिये मुदित भये सब ग्वाल॥

फिर श्यामसुन्दरने प्रलम्बासुरको आधे ग्वालबाल समेत अपनी ओर लेलिया व आधे ग्वालबाल बलरामजी के साथ देकर फल बुझौवल खेलने लगे और यह करार आपसमें ठहराया जो लड़का फल बूझने न सके उसतरफ़ के सब ग्वालबाल दूसरे ओरके लड़कोंको अपनी पीठपर चढ़ाकर भाण्डीर वन तक लेजावें व उसी तरह चढ़ाये हुये जहांपर दोनों बालक फल बुझानेवाले बैठेहों फिर आवें सो एक एक ग्वालबाल दोनों गोलका अवस्थामें बराबर जोट ठहराया और श्यामसुन्दरने अपना जोट श्रीदामा ग्वाल व बलभद्रजीका जोट प्रलम्बासुर कपटरूपी ग्वालसे बांधा जब खेलती समय बलरामजीने जीता व श्रीकृष्णजी हारगये तब बलभद्र जी कपटरूपी ग्वालकी पीठपर चढ़े व श्रीदामा श्रीकृष्णजीकी पीठपर चढ़ा इसी तरह सब बालक श्यामसुन्दरके साथी बलरामजीकी ओरवाले ग्वालबाल अपनी अपनी जोड़ीको पीठ पर चढ़ाकर भांडीर वनको चले तब वह ग्वालरूप राक्षस सब लड़कों से आगे बढ़कर बलरामजी को आकाशकी ओर ले उड़ा व एक योजनके प्रमाण अपना राक्षसी रूप बना लिया सो उसके काले शरीरपर बलभद्रजी का गोरा तन कैसी शोभा देता था जैसे श्यामघटामें चन्द्रमा व कानोंका कुण्डल बिजली के समान चमककर पसीना शरीरका पानीकी तरह बरसता था उसका राक्षसीतन देखतेही बलदाऊजीने अपना शरीर ऐसा भारी किया कि प्रलम्बासुर वह भार उठाने न सककर उनको लिये हुये पृथ्वीपर गिरा जब उस ने बलरामजीको मारने चाहा तब संकर्षणने एक मुका उसके शिरमें मारा तो इसतरह मस्तक उसका फटगया जिसतरह इन्द्रके वज्रसे पर्वत टूट जावे जब उसके मस्तकसे धारा प्रमाण लोहू बहने लगा तब वह राक्षस चिल्ला कर मरगया व उसकी लोथ गिरनेसे तीन कोसतकके वृक्ष दबकर टूटगये॥

दो० ग्वालबाल चकित भये दौड़ गये बल पास। मृतक असुर तन देखके सबको भयो हुलास॥
सो० धन्य धन्य बलराम धन्य तुम्हारे मातु पितु। बड़ो कियो यह काम कपटरूप मार्यो असुर॥

हे राजन् ग्वालबालों ने प्रसन्न होकर बहुत बड़ाई उनकी की व देवता

ने आकाश से बलरामजी पर फूल बर्षाये व जिन ग्वालों को वह राक्षस कन्दरा में छिपा आया था उन्हें श्यामसुन्दर निकाल लाये॥

उन्नीसवां अध्याय।

ग्वालों का मूंजके वनमें आग लगने से विकल होना॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जब ग्वालबाल उस लोथका तमाशा देखने लगे तब सब गौ चरती हुई मूंजके वन में चली गईं जब दूरतक श्रीकृष्ण आदिकने पता उनका नहीं पाया तब सब ग्वालबाल अलग अलग टोली बांधकर गौवों को ढूंढ़ने लगे व वृक्षोंपर चढ़ चढ़कर डुपट्टा घुमाय घुमाय गायोंका नाम लेके पुकारते थे उसी समय एक ग्वाल ने आनकर मुरलीमनोहर से कहा हे भाई सब गौ मूंजके घोर वन में चली गईं और ग्वाललोग उनके खोज में भटकते फिरते हैं यह सुनतेही श्यामसुन्दर ने कदमके वृक्षपर चढ़कर ऐसी मुरली बजाई कि उसका शब्द सुनतेही सब गायें व ग्वालबाल मूंजवनको चीरते फाड़ते हुये इसतरह श्यामसुन्दर की ओर चले जिसतरह वर्षाऋतुमें नदी व नालेका जल वेग से बहता है उसी समय एक राक्षस भेजा हुआ राजा कंसका वास्ते मारने केशवमूर्तिके उस वन में आया और उसने अपनी माया से ऐसी आंधी चलाई कि चारों ओर धूर से अँधियारा छागया तब उसने वन में आग लगा दी जब उस अग्निके तेज से ग्वालबाल व गौवोंका शरीर जलने लगा तब उन्होंने व्याकुलतासे श्यामसुन्दर व बलरामजी की शरण शरण पुकार कर कहा अय वृन्दावनविहारी हमलोग जलने चाहते हैं हमारा प्राण बचाइये जब जब हमको संकट पड़ताहै तब तब तुम रक्षा करते हो सिवाय आपके दूसरा कोई हमारा सहायक नहीं है जिसतरह नारायणजी संसाररूपी अग्निसे अपने भक्तों को बचाकर उद्धार करते हैं उसीतरह तुमभी हमलोगोंको इस आग से बचाओ यह दशा अपने सखा ग्वालबालोंकी देखकर केशवमूर्ति ने बलरामजी से कहा॥

दो० शरण गही जिन आपकी तात मातु बिसराय। हम औ तुम द्वैभाय बिन इनके कौन सहाय॥

ऐसा कहकर श्यामसुन्दरने ग्वालबालोंको पुकारके कहा तुमलोग

अपनी आंखें बन्द कर लेव तब इस अग्निसे बचोगे जब उनकी आज्ञानुसार सब ग्वालबालों ने अपनी आंखें बन्द कर लीं तब श्यामसुन्दर ने उस राक्षसको मारडाला उसके मरतेही सब अग्नि बुझकर आंधी जाती रही और वैसे आंख बन्द किये हुये सब ग्वालबाल गायें समेत श्यामसुन्दर की महिमासे भाण्डीरवनके पास चले आये तब केशवमूर्ति ने कहा तुम लोग आंख अपनी खोल देव जैसे उन्होंने आंख खोली तो क्या देखा कि सब अग्नि व आंधी जाती रही व हमलोग भाण्डीरवनके पास चले आये यह चरित्र देखकर सब ग्वालबालों को बड़ा अचम्भा मालूम हुआ फिर सबोंने वृन्दावनविहारीके साथ यमुना किनारे जाकर जल पिया व सन्ध्या समय घरको चले बस्तीके निकट पहुँचकर मनहरणप्यारेने वंशी बजाई तब मुरलीकी ध्वनि सुनते ही सब ब्रजबाला अपने अपने घरका काम काज छोड़के राहमें आन खड़ी हुईं व केशवमूर्तिका दर्शन करके अपनी आंखें ठण्ढी कीं सब गोपियों का यह प्रण था कि विना देखे सांवलीसूरत दिन भर व्रत रहकर सन्ध्यासमय माधुरीमूर्ति का दर्शन करके पारण करती थीं जब श्रीकृष्णजी अपने घरपर गये तब यशोदाने उनको गोदमें उठा कर बहुत प्यार किया व ग्वालोंसे पूछा आज विलम्ब किसवास्ते हुई तब उन्होंने सब हाल मारने राक्षस व लगने आगका कह दिया तब यशोदा व रोहिणी बहुत प्रसन्न हुईं और यह समाचार पाकर सब वृन्दावनवासी श्याम व बलरामको देखने आये व उनकी बड़ाई करके कहने लगे हे श्यामसुन्दर तुम्हारी कृपा से हमारे बालक बचे नहीं तो आज सब अग्नि में जलकर मर चुके थे फिर सबोंने अपने अपने बालकोंसे दान व दक्षिणा दिलवाया व परमेश्वरकी मायासे इस बातका विश्वास किसीको नहीं हुआ कि यह चरित्र श्यामसुन्दरने किया है इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे राजन् इसीतरह केशवमूर्ति नित्य नई लीला करके सबको सुख देते थे व सब ब्रजबाला मोहनप्यारेपर ऐसी मोहित थीं कि विना सांवली सूरत देखे चैन नहीं पड़ती थी पानी भरने व दही दूध बेंचने के बहाने यमुना किनारे व वनमें जाकर श्यामसुन्दरका दर्शन करके अपने हृदय

की तपन बुझावती थीं व समझाना अपनी सासु व माताका उनको अच्छा नहीं लगता था व मनहरणप्यारे अन्तर्यामी भी अपनी चितवन व मुसकानसे उनको सुख दिया करते थे एक दिन केशवमूर्ति अपना नटवररूप धरे सब सखोंको साथ लिये यमुनाकिनारे कदमके नीचे खड़े होकर मुरली बजाने लगे उसी समय राधाप्यारी अपनी सखियों समेत जल भरने के बहाने मोहनप्यारेको देखने चली जब यमुना तीर ग्वालोंकी भीड़ उसने देखी तब खड़ी होकर सखियोंसे बोली माखनचोर राहमें खड़ा है हमलोगों को अवश्य छेड़ेगा जब श्यामसुन्दर उसके दिलका हाल जानकर अपने सखा समेत राह छोड़ के दूसरी ओर चले गये तब राधिका ने सहेलियों समेत यमुनाकिनारे जाकर जल भरा व अपना अपना घड़ा शिर पर लेकर घरको चली उस समय राधाप्यारी सखियों के झुण्ड में हंसरूपा चालसे चली आती थी उसीसमय मोहनमूर्ति ने गोपियोंके गोलमें आनकर राधाकी गगरी में एक कंकरी मारी व अपनी मुसकानसे राधा आदिक सब सखियोंका मन हरलिया तब श्यामा सखियोंसे बोली॥

सो० कियो हगन में धाम सुन्दर नटनागर सुखद। जित देखों तित श्याम पंथ मोहिं सूझै नहीं॥

उनमें जो व्रजबाला चतुर थीं उन्होंने कहा हे मोहनीमूर्ति हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ाहै जो अपनी मुसक्यान व चितवनसे प्राण व ज्ञान दोनों हमारा हरलेते हो व तुम्हारा मोहनीरूप देखने व वंशीकी ध्वनि सुननेसे हमारा चित्त ठिकाने नहीं रहता तुमने मन चुरानेका उद्यम कब से सीखा है यह प्रीति भरी हुई बात सुनकर श्यामसुन्दर बोले जिस तरह तुम लोगोंने अपनी छवि दिखलाकर मेरा मन चुरा लिया है उसी तरह मुझेभी कहती हो तब गोपियोंने रुखाईसे कहा तुम किसीका चीर खींचके धक्का देकर गिरा देते हो किसीकी गगरी कंकरी मारकर फोर डालते हो तुम्हारे मारे कोई यमुनाजल भरने नहीं पाता हमलोग यशोदाके पास जाकर तुम्हें फिर ऊखलमें बँधवावेंगी॥

दो० यह सुनि हरि रिसकरि उठे इँडुरी लई छिनाय। कहों जाय अब मातसों लीजो मोहिं बँधाय।

सो० मोहिं कहत ठग चोर आप भई साहुनि सबै। डारी गगरी फोर कहत जाव चुगली करन॥

जब श्यामसुन्दरने ऐसा कहकर इंडुरी यमुनामें बहादी तब गोपियोंने यशोदाके पास जाकर कहा नन्दलालजीके मारे हमलोग यमुनाजल भरने नहीं पावतीं वह हमलोगोंकी ऐसी दुर्दशा करते हैं कि उसका हाल लज्जाके मारे कहा नहीं जाता यह सुनकर यशोदा बोली जैसा कहो वैसा मैं करूं जब मैंने उसको ऊखलसे बांधा था तब तुम्हींलोग उसकी सिफारिश करती थीं अब जब कन्हैया घर आवेगा तब मैं उसे मारूंगी तुमलोग मेरे संकोचसे आज अपराध उसका क्षमा करो इसतरहपर समझा कर यशोदाने गोपियों को बिदा किया जब मोहनप्यारे चुप चुपाते डरते हुये घर आये तो ओटमें खड़े होकर क्या सुना कि यशोदा गोपियोंके उलहनेका हाल रोहिणीसे सुनाकर कहती थीं आज कन्हैया घरपर आवेगा तो उसे मारूंगी यह बात सुनकर मनहरणप्यारे बोले हे माता तुम हमें मारने कहती हो गोपियोंका चरित्र तुम्हें नहीं मालूम है जो वे कहती हैं उसे सच मानलेती हो गोपियां मुझे कदमके नीचे से बरजोरी पकड़ लेजाकर मेरे गालमें मुक्का मारती हैं और जब मटककर चलनेसे गगरी उनकी गिरके टूटजाती है तब झूठी निन्दा मेरी तुमसे आनकर करती हैं यह मीठा वचन सुनकर जैसे यशोदाने मोहनीमूर्तिका चन्द्रमुख देखा वैसे क्रोध भूलकर कहने लगीं॥

दो० कहां श्याम मेरो तनिक वे सब यौवन जोर। अब उरहन लै आवहीं तव पठवहुँ मुखतोर॥
सो० तू क्यों उन ढिग जात मैं बरजत मानत नहीं। लावत झूठी बात वे सब ढीठ गुवालिनी॥

ऐसा कहकर यशोदा मोहनप्यारेको गोदमें उठाके प्यार करने लगीं इसी तरह केशवमूर्ति प्रतिदिन नई लीला करके सब व्रजवासियोंको सुख दिया करते थे॥

दो० यह लीला सब करत हरि व्रजयुवतिनके हेत। कृष्ण भजे जाभाव जो वाको तस फल देत॥

हे राजन् राधाप्यारी पूर्वजन्मके संस्कारसे श्यामसुन्दर पर बड़ी प्रीति रखती थी इसलिये विना देखे मोहनीमूर्तिके व्याकुल होकर सखियोंसे बोली हे बहिन यमुनाकिनारे जल भरनेवास्ते फिर चलो जिसमें मोहन प्यारेको देखकर आंखें ठंढी करूं जब मैं वहां जाती हूं तब वह अपनी

मुसकान व चितवनसे मेरा मन मोहि लेता है व उस मोहनीमूर्तिके देखे विना मुझे चैन नहीं पड़ती व लोकलाजके डरसे मैं कुछ बोलने नहीं सक्ती बाहर निकलो तो माता व पिताका भय सतावता है व घरमें बैठने से तन मेरा यहां रहकर मन मेरा श्यामसुन्दर के पीछे दौड़ताहै मैं अपने चित्तको बहुत समझाती हूं पर उस चित्तचोरकी ओर से नहीं फिरता॥

स० एक सखी मनमोहनकी मधुरी मुसकान देखाय दई री।
वह सांवरी सूरत चैनमई सबही चितई हमहूं चितई री॥
सब सखियां अपने अपने गृह खेलत कूदत बाट लई री।
मैं बपुरी वृषभानलली घर आवत पौर पहाड़ भई री॥

सो अय आली अब मैंने मनमें यह बात ठानली कि केशवमूर्ति से प्रकट प्रीति करूंगी इसमें चाहै कोई मेरी निन्दा करै या स्तुति उस सांवलीमूर्ति के सामने मुझे लोकलाज व कुल परिवार कुछ अच्छा नहीं लगता जब मेरा प्राण उसके विरहमें निकल जावेगा तब मैं लज्जाको लेकर क्या करूंगी इसलिये अब मैं मोहनप्यारे को अपना पति बनाया चाहती हूं इसमें तुम्हारा क्या सम्मत है यह बात सुनकर ललिता आदिक सखियोंने कि वहभी श्यामसुन्दरपर मोहित थीं कहा॥

दो० कहु प्यारी कैसे चलैं वा यमुना की ओर। गैल न छांड़त सांवरो रसिया नंदकिशोर॥

अय राधा हमलोग अपने मनका हाल तुमसे क्या बतलावें जो गति तेरी है वही दशा हमारी भी समझना चाहिये उसकी छवि देखनेसे हमारा चित्त ठिकाने नहीं रहता व बांसुरीकी ध्वनि हमें अधिक अचेत करदेती है न मालूम उसने कैसी मोहनी हम लोगोंपर डाल दी सो तैंने बहुत अच्छा विचारा संसारमें कौन ऐसा जीव जड़ व चैतन्य है जो उसकी छवि देखने व मुरली सुननेसे मोहि न जावे वह हमारे पति हो कर हमें अंगीकार करें तो लाज भाड़में पड़े॥

सो० मेटि लोककी कानि पतिव्रत राखो श्याम सों। यही बनी अब आनि भलो बुरो कोऊ कहै॥

हे राजन् राधा आदिक सब व्रजबालोंकी यह दशाथी कि दिन अपना उनके बिरह व मिलनेके उपायमें काटकर संध्यासमय उनका दर्शन करके

अपने हृदय की तपन बुझावती थीं व कहना व समझाना अपने घर वालोंका उनको अच्छा नहीं लगता था ॥

बीसवां अध्याय।

वृन्दावनकी स्तुति ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जब गरमी अधिक होनेसे संसारी जीव दुःखी हुये तब राजा बरसात कृपा व दयाकी राह अपनी सेना दल व बादलको लेकर वास्ते सुख देने सब जीव जड़ व चैतन्य व युद्ध करने राजा गरमीके साथ धूम धामसे चढ़आया उसकी सेनामें गर्जना बादलका मारू बाजेके समान होकर अनेक रंगकी घटा शूरवीर ऐसी मालूम देती थीं व चमकना बिजुलीका नंगी तलवार ऐसा होकर करखा गावनेवालों की जगह मोर बोलते थे व बरसना बुन्दोंका बाणके समान होकर भाटोंके कवित्त पढ़नेकी जगह मेंडुक बोलते थे व उड़ना श्वेतवर्ण बकुलोंका ध्वजाके समान मालूम देता था ऐसी भारी सेना देखतेही राजा गरमीका हार मानकर भाग गया व जल बरसने से पृथ्वी व वृक्ष आदिक सब जीव जड़ व चैतन्यने सुख पाया व आठ महीनेतक जो जल सूर्यने सोखा था वह इसतरह बरसाया जिसतरह राजा लोग गरमी व जाड़े में प्रजासे देन लेकर बरसातमें उनकी पालना करते हैं व पृथ्वीने जो बीच विरहजल अपने पति सुख देनेवालेके आठ महीने तक दुःख उठाया था सो उसका शोच जल बरसनेसे छूटगया व अनेक रंगके फल व फूल वृक्षोंमें लगगये ॥

दो० बेलि त्रिविध लपटीं ललित फूल रहे बहुरंग। शोभित सहस शृंगार जिमि नारि पुरुषके संग॥

पृथ्वीपर हरियाली उत्पन्न होकर नदी व नालों में जल उमंग से बहने लगा व उसके किनारे अनेक रंग के पक्षी मीठी मीठी बोली बोलने लगे हे राजन् वृन्दावनमें ऐसी शोभा मालूम देतीथी जिसका वर्णन नहीं होसक्ता॥

दो० शोभा वृन्दाविपिनकी बरणि सकै कवि कौन। शेष महेश गणेश विधि पार न पावत तौन ॥

सो० महिमा अमित अपार श्रीवृन्दावन धामकी। जहँ नित करत विहार परब्रह्म भगवान हरि ॥

हे राजन् उस सुहावने वनमें गोपी व ग्वाललोग अनेक रंगके वस्त्र पहिने हुये झूला झूलते थे व गोपियां मलार आदिक बरसातके गीत

गावती थीं और उनमें श्याम व बलराम उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिने हुये अनेक लीला करके सबको सुख देते थे जब इसी तरह आनन्दपूर्वक बरसात बीतकर शरदृऋतु आई तब एक दिन श्यामसुन्दरने बलरामजी व श्रीदामा आदिक ग्वालबालों समेत वृन्दाविपिनमें जाकर गौवोंको चरनेवास्ते छोड़ दिया व वृक्षके नीचे बैठकर कहा अय बलदाऊजी अब शरदृऋतुके अच्छे दिन आये ॥

दो॰ जल अकाश निर्मल भयो वर्षाऋतुके अन्त। जैसे उज्ज्वल चित सदा माखनप्रभुके सन्त ॥

इन दिनों भोजनकी वस्तुमें स्वाद मालूम होकर सब छोटे बड़ोंको अनेक तरहका सुख मिलता है व गृहस्थाश्रमको अपने घर रहनेमें सुख प्राप्त होकर राजा इन्हीं दिनों शत्रुपर चढ़ाई करते हैं व व्यापारियोंको माल लादने व साधु वैष्णवको तीर्थयात्रा करने में बहुत सुख प्राप्त होता है हे भाई मुझे वृन्दावनका ऐसा सुख तीनों लोकमें नहीं मिलता इसवास्ते मनुष्य तन धारण करके ब्रजमें रहकर वृन्दावनको वैकुण्ठ से प्यारा जानता हूं सो तुम यहांके वृक्षोंको कल्पतरुसे कम मत समझो किसवास्ते कि वृन्दावनवासी सब जीव जड़ व चैतन्य मेरी भक्ति व प्रीति अपने प्राण से अधिक रखते हैं ॥

दो॰ जाके वश मैं रहत हूं अपनी प्रभुता त्याग। प्रेम भक्ति सो लहत नर वृन्दावन अनुराग ॥

यह सुनकर बलभद्रजी बोले हे दीनानाथ मैं इतना वरदान तुमसे मांगता हूं जहां आप जन्म लेना वहां मुझेभी अपनी सेवा करने वास्ते साथ रखना यह सुनकर केशवमूर्ति ने कहा हे भाई मैं कभी एक क्षण तुम्हें अपने साथसे नहीं छोडूंगा तुम्हारे कारण तो हम नरतन धरकर ब्रज में लीला करते हैं ॥

दो॰ मधुरवचन सुनि श्यामके सखावृन्द सुखपाय। प्रेमपुलकतन मुदित मन रहे सबै गहि पाय ॥
सो॰ धनिधनि अनि तुमश्याम धनिब्रजधनि वृन्दाविपिन। तुम्हरे गुणअभिराम हमसबकछुजानैंनहीं॥

इसी तरह बहुतसी स्तुति करके ग्वालबालोंने श्यामसुन्दरसे कहा हे मोहनप्यारे इससमय हमलोगोंका मन मुरली सुननेवास्ते बहुत चाहता है यह वचन सुनकर केशवमूर्ति ने लकुटिया हाथकी धरदी व ऐसे प्रेम से

मुरली बजाई जिसकी ध्वनि सुनतेही सब जीव जड़ व चैतन्य मोहित होकर मृगादिक उनके चारोंओर आनकर खड़े होगये व यमुनाजल बहनेसे थँभि रहा व पक्षियोंको उड़ना भूलगया व गायें घास चरना छोड़ कर चित्रकारीसी खड़ी होगईं व झरनोंमें से पानी गिरना बन्द होगया व मनहरणप्यारे वंशी में छः राग व छत्तिस रागिनी गाकर ग्वालबालोंका नाम उसमें लेने लगे व मुरली बजाती समय अपनी आंख व भौंसे ऐसा भाव बतलाया कि देखनेवाले मोहित होगये उस समय देवता अपनी अपनी स्त्रियों समेत विमानपर आकाश में आये उन्होंने मुरली सुननेसे अति प्रसन्न होकर श्यामसुन्दर पर फूल बर्षाये और कहा धन्यभाग्य व्रज-वासियोंका है जो ऐसा मुख देखते हैं परमेश्वर हमलोगोंको वृन्दावनमें वृक्षादिकका जन्म देते तो परब्रह्म परमेश्वर वैकुण्ठनाथकी सेवा करके अपना जन्म स्वार्थ करते ॥

दो० कारणकरण अनन्तगुण निगम भेद नहिं पाव। सो ग्वालन सँग गावहीं देखो भक्तिभाव ॥

सो० सुन्दर श्यामसुजान देत परमसुख सबनको। वारत तन मन प्रान धन्यधन्य कहि ग्वाल सब ॥

दो० सो धुनि सुनिकर गोपिका लाजकाजबिसराय। माखनप्रभुके दरशको घरसे निकलीं धाय ॥

हे राजन् जब व्रजबाला वंशीकी ध्वनि सुनतेही मोहित होकर वनकी ओर चलीं व राहमें बैठकर आपसमें यह कहने लगीं जब व्रजनाथजीका दर्शन मिलैगा तब हमारी आंखैं ठंढी होकर मनकी इच्छा पूर्ण होगी अभी तो हमारा चित्तचोर वनमें ग्वाल व गायोंके साथ नाचता गावता होगा यह सुनकर दूसरी गोपीने कहा सुनो सखी जब मोहनप्यारा सन्ध्यासमय वंशी बजाता हुआ आवैगा तब मैं उस मोहनीमूर्तिकी छवि देखकर अपना हृदय ठंढा करूंगी तीसरी सखी बोली सुनो प्यारियो इस बांसमें न मालूम क्या गुण भरा है जिस बांसुरीको मोहनप्यारे हमसे सुन्दर व उत्तम समझकर आठोंपहर अपने मुखारविन्द व छातीमें लगाये रहते हैं और वह वंशी श्यामसुन्दरके होठोंका अमृत पीकर बादल समान बोलती है चौथी व्रजबालाने कहा मेरे सामने यह बांस बोया गया था जिसकी यह मुरली बनी है सो इसका ऐसा भाग्य चमका कि मेरी सवति होकर केशव-

मूर्तिकी छातीपर दिन रात चढ़ी रहती है जिससमय गोपियां चर्चा आपसमें कररही थीं उसी समय वृन्दावनविहारी ग्वालबाल व गायोंको साथ लिये मुरली बजाते हुये वहां पहुँचे उस मोहनीमूर्तिकी छवि देखतेही सब ब्रज-बाला प्रसन्न होकर आपस में कहने लगीं॥

क० घ० मोरके मुकुट माथे हाथे में लकुट राजे साजे गुंजमाल गले ललित लरनते।
सुंदर कपोल श्रुति कुण्डल झलक राजे जुलफ अमोल भरे गोरजकनकते॥
गौवन के पाछे आछे काछे काछनीके काछ राग गौरी गावत गवावत सखनते।
आनँद के कन्द ब्रज लोचन चकोर चन्द मन्द मन्द आवत गोविन्द वृन्दावनते १
जरीदार चीरा में चुन्निन की चमक चारु हार मुकता के लर पावन लौं परसत।
कुण्डल चमक पीत पट लपटाने कटि दीपक दमक द्युति दामिनी सी दरसत॥
नैनन को फल लेय लोचन सुफल करो यह छवि देखिवे को क्यों न जीव तरसत।
मन्द मन्द आवत बजावत मधुर वेणु कुंजन ते आवत रसिक रूप बरसत २

दूसरी सखी ने कहा देखो यह मुरली बीच होंठ केशवमूर्ति के कैसी सुन्दर मालूम होती है जिसका अमृतरूपी शब्द कानों की राह पीने से मुर्दे जी उठते हैं और इस मुरली का बांस जिस वनमें उत्पन्न हुआ था वहां के वृक्ष अपने को बड़ा भाग्यवान् जान कर कहते हैं कि यह हमारी बांसुरी जाति भाई है इस वंशी की ध्वनि देवतों की स्त्रियां अपने विमानों पर से सुनकर ऐसी मोहिजाती हैं कि घुंघुरू उनकी कमर से खुलकर गिर पड़ती हैं व उन्हें सुधि नहीं होती व गौवों को चरना भूल जाता है व हरिण आदिक चित्रकारी के समान खड़े होकर उसकी ध्वनि सुनते हैं व बछड़े दूध पीना भूलकर वृक्षों में से मद बहने लगता है दूसरी सखी बोली ऐ प्यारी पहिले इस वंशी ने बांस के तनमें जन्म लेकर धूप व पानी व सरदी का दुःख अपने ऊपर उठाया व एक पांव से खड़ी रहकर परमेश्वर का तप किया फिर इसने पोर पोर अपना कटवा कटवा कर आग की गर्मी अपने ऊपर उठाई तब टेढ़ी से सीधी हुई इससे अधिक क्या कोई भगवान् की तपस्या करेगा यह सुनकर दूसरी ब्रजबाला बोली परमेश्वर हमारा जन्म भी बांस में देते तो मैं भी आठों पहर मोहनीमूर्ति के मुख से लगी रहती व उनके होठों का अमृत पीकर सुख पावती हे राजन् नित्य जब तक केशवमूर्ति वन

से गौ चराकर नहीं आते थे तब तक यही दशा गोपियों की रहती थी ॥

दो० जा वन धेनु चरावहीं माखनप्रभु चितचोर । तहां आय ठाढ़ी रहैं हरि सम्मुख करजोर ॥
वंशीध्वनि सुनिकै सदा सुख पावैं सब लोग । माखन प्रभुमुखसों लगी क्यों नहिं हो सुखयोग ॥

इक्कीसवां अध्याय ।

गोपियों की प्रीतिका वर्णन करना ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् उन्हीं दिनों फिर एक दिन व्रजबालों ने जो केशवमूर्ति से सच्ची प्रीति रखती थीं वह बांसुरी सुनकर हाथ अपना घरके काम काजसे खींच लिया व उस मुरलीकी ध्वनि पर मोहित होकर आपस में कहने लगीं इस वनके जीवों का बड़ा भाग्य है जो प्रतिदिन श्यामसुन्दरकी छवि देखकर आनन्द होते हैं व संसारमें आंख मीचने का फल इन्हीं को प्राप्त है जो लोग गौ चराते व वंशी बजाते व वनविहार करते समय केशवमूर्ति का अमृतरूपी स्वरूप आंखों की राह पीकर ध्यान उस सांवली मूरत का अपने हृदयमें रखते हैं व जो हरिणियां अपने हरिणों समेत मुरली सुनकर मोहनप्यारेकी छवि टकटकी लगाके देखती हैं उनका भाग्य देवकन्याओं से अधिक समझना चाहिये व बड़ा भाग्य उन गाय बछड़ों का है जिन्हें मुरलीमनोहर आप प्रेम से चराते हैं व वृन्दावन के पक्षियों का बड़ा भाग्य समझना चाहिये जो वृक्षों पर बैठे हुये केशवमूर्ति की छवि देखने व मुरली सुननेसे अपना जन्म स्वार्थ करके उनको अपनी सोहावनी बोलियां सुनाते हैं व धन्य भाग्य यहां की भिल्लियों के समझो जो केसरि व चन्दन मुरलीमनोहरके अंगका छूटा हुआ घास छीलती समय अपने मस्तकपर चढ़ावती हैं व गोवर्धनपर्वत गायें चरती समय वृन्दावनविहारी का दर्शन पाकर कहताहै मेरे बराबर दूसरे का भाग्य नहीं होगा किसवास्ते कि वे वैकुण्ठनाथ अपना चरण मेरे ऊपर धरते हैं और कन्द मूलादिक से श्यामसुन्दर व ग्वालबाल व घास से गौवों का सन्मान करताहै व धन्य भाग्य वृन्दावन की नदी व नालों का है जो बांसुरी की ध्वनि सुनते ही बहना अपना भूल कर ठहर जाते हैं व यमुना अपनी लहरसे केशवमूर्ति का चरण छूकर कृतार्थ होतीहै व उसमें मनहरण

प्यारे नित्य जलविहार करते हैं व क्या उत्तम भाग्य उन वृक्षों का है जिनकी छाया में नन्दलालजी बैठते हैं व बड़ा भाग्य उस घास व पृथ्वी का समझना चाहिये जिस पर केशवमूर्ति अपना चरण धरके चलते फिरतेहैं व हम लोगोंका भी बड़ा भाग्य समझो जो मोहनीमूर्तिकी प्रीति आठों पहर हमारे हृदय में लगी रहती है हे राजन् गोपियां अपने ज्ञानसों केशवमूर्ति को परमेश्वरका अवतार जानती थीं पर नारायणकी माया जब उनको व्यापती थी तब उन्हें यशोदा का पुत्र समझती थीं इस तरह सब स्त्री व पुरुष वृन्दावनवासी श्यामसुन्दरसे प्रीति रखकर दिन रात उन्हीं का यश गाया करते थे व आठोंपहर उनके चर्चा व ध्यान में मग्न रहते थे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् कोई जीव ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो उनके भेद व महिमा को पहुँचने सके जिस पर वह दया करते हैं वही उनकी महिमा कुछ जान सक्ता है ॥

बाईसवां अध्याय।

चीरहरण लीला ॥

इतनी कथा सुनकर परीक्षित ने कहा हे शुकदेव स्वामी श्रीकृष्णजीने किसतरह उन सब व्रजबालों की इच्छा पूर्ण की थी उसका हाल कहिये इस लीलाके सुनने से मेरा चित्त बहुत प्रसन्न होकर सब शोच छूट जाता है यह वचन सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब अगहन व पूस का महीना आवने से सरदी अधिक पड़ने लगी तब एक गोपी ने सब व्रजबालों से कहा मैंने बड़े व बूढ़ों के मुख से ऐसा सुना था कि अगहन के महीने में प्रात समय यमुना स्नान करने से अनेक जन्म का पाप छूटकर मनोकामना मिलती है सो हम सब कोई नेम बांधकर यमुना स्नान करें तो उसके प्रतापसे मोहनप्यारे हमारे पति होवेंगे यह बात राधा आदिक गोपियोंने प्रसन्न करके अगहन बदी परिवासे यमुना नहाना आरम्भ किया नित्य प्रात समय राधा आदिक सब व्रजबाला उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर स्नान करने जातीं व नहाने उपरान्त सूर्यदेवताको अर्घ देकर मूर्ति पार्वतीजीकी मट्टी से बनावतीं व धूप दीप नैवेद्य आदिक से विधिपूर्वक

पूजन व दण्डवत् व ध्यान करके हाथ जोड़कर यह वरदान मांगती थीं ॥

स० गोपसुता कहैं गौरि गोसांइन पांय परों विनती सुनि लीजै ।
दीन दयानिधि दासीके ऊपर नेकुसों चित्त दयारस भीजै ॥
देइ जो ब्याह उछाह से मोहन मात पिता कुछहू नहिं कीजै ।
सुन्दर सांवरो नन्दकुमार बसै उर जो वर सो वर दीजै ॥

इसीतरह नित्य पूजा करने उपरांत दिन भर व्रत रहकर सन्ध्या समय दही चावल भोजन करके पृथ्वीपर सो रहती थीं व मनसा वाचा कर्मणा से यह इच्छा उन्हें रहती थी जिसमें जल्दी हमारा मनोरथ मिले हे राजन् जब राधाप्यारीने सोलह हजार व्रजबाला छोटी अवस्थाके साथ कि उनमें चार तरह की गोपियां एक जनकपुरवाली स्त्रियां व दूसरी दण्डकवन की ऋषिपत्नियां जो रामावतारमें वैकुण्ठनाथ पर मोहित हुई थीं तीसरी वेदकी ऋचा व चौथी गोलोककी स्त्रियां जिन्होंने बीच तन गोपियों के जन्म लिया था इसी तरह अगहन भर पूजा व व्रत किया तब केशवमूर्ति अन्तर्यामी उन पर दयालु हुये ॥

दो० देख नेम यह प्रेममें गोपिनको गोपाल । भये प्रसन्न कृपाल चित जनहित दीनदयाल ॥

हे राजन् एक दिन जिस समय सब व्रजबाला यमुनाजलमें स्नान करके केशवमूर्ति की चर्चा आपस में करती थीं उसी समय मनहरणप्यारे भी अपने सोलह हजार रूप से यमुनाजलमें सब गोपियों की पीठ पीछे खड़े होकर मलने लगे तब सब व्रजबाला उन्हें देखतेही प्रसन्न होकर मन में कहने लगीं जिनके मिलनेवास्ते हम लोग ध्यान व पूजा करती थीं उन्होंने दयालु होकर दर्शन दिया फिर अपना अंग पानी में छिपा कर मोहनप्यारे से कहने लगीं तुमको हमें नंगी देखते लज्जा नहीं आती व श्यामसुन्दर की माया से किसी गोपी को दूसरी व्रजबाला का हाल नहीं मालूम होता था कि उसके पीछे भी केशवमूर्ति हैं इसलिये सब गोपियां अपने अपने मन में आनन्द होकर अपना हाल दूसरी सखीसे नहीं कहती थीं ॥

दो० जो माखनप्रभुको भजै प्रेम भक्तिके रंग । दया करैं पाछे फिरैं छाया सब तेहि संग ॥

इसी तरह श्यामसुन्दर जलविहार करके बाहर निकल आये व गोपियों का कपड़ा व गहना जो यमुना किनारे रक्खा था उसे फार तोड़कर फेंक

दिया जब गोपियोंने जाकर यह हाल यशोदासे कहा तब नन्दरानी बोली॥

दो० तुम चाहतिहो गगनते गहन तरैया बाम। सो कैसे वर पाइहो तुम लायक नहिं श्याम॥
सो० मैं बूझी सब बात तुम हमसे कहियो कहा। वृथा फिरत अठिलात मष्ट करो सुनिहै जगत॥

तुम्हैं ऐसी बात कहते हुये लज्जा नहीं आवती और मेरे अज्ञान बालक को पापकी आंख से देखती हो यह बात सुनकर सब व्रजबाला हर्षपूर्वक अपने अपने घर चली आई जब दूसरे दिन फिर सब गोपियां यमुना नहाने गईं॥

दो० धरे उतारि उतारि सब तटपर भूषण चीर। नग्न होय स्नान हित पैठीं यमुना नीर॥

तब केशवमूर्ति दीनदयालु ने विचार किया कि मेरे मिलने वास्ते इन्होंने बड़ा दुःख उठाया ऐसा विचारकर उस दिन श्यामसुन्दरने बलराम जी से कहा हे भाई आज तुम गायें वन में चराने लेजावो मैं पीछे सेकलेवा लेकर वहां आऊँगा जब बलरामजी सब सखा समेत गौ लेकर जा चुके तब वृन्दावनविहारी ने यमुना किनारे चुपचाप जाकर क्या देखा कि सब व्रजबाला अपना अपना कपड़ा व गहना किनारे धरकर यमुनाजल में नहाती समय वैकुण्ठनाथका चरचा कर रही हैं केशवमूर्ति यह प्रीति उनकी छिपे छिपे देखकर बहुत प्रसन्न हुये हे राजन् जिस समय सब व्रजबाला सूर्य को अर्घ्य देकर आंख बन्द किये हुये उनका ध्यान करनेलगीं उसी समय श्यामसुन्दरने ऐसा विचारा कि इन लोगोंको यमुना में नंगी होकर नहाने से दोष लगता है इसलिये आगे के वास्ते इन्हैं ज्ञान सिखलाना चाहिये॥

दो० प्रेममगन युवती सबै रहीं ध्यानमनलाय। हरि सब भूषण वसन लै चढ़े कदम पर जाय॥

और सब कपड़ों की मोटरी बांधकर अपने सामने धर लिया व उसी जगह खुश होकर बैठ रहे जब गोपियां स्नान करके बाहर निकलीं व उन्होंने कपड़ा व गहना अपना यमुनाकिनारे नहीं देखा तब चारों ओर ढूंढ़कर आपस में कहने लगीं अय सखी यहां तो चिड़ियाका पूतभी नहीं आया न मालूम कौन हमारा भूषण व वस्त्र उठा लेगया सिवाय माखनचोरके और कौन हमारी वस्तु ले जायगा ऐसा कहकर दीन वचन से

पुकारने लगीं कहीं श्यामसुन्दर होवें तो दर्शन अपना देवें यह वचन सुनतेही केशवमूर्तिने एक बेर धीरेसे बांसुरी बजादी तब एक सखीने उस शब्दकी ओर आंख उठाकर क्या देखा कि मुरलीमनोहर मुकुट पहिने लकुटिया लिये केशरिका तिलक दिये वनमाला गले में डाले पीताम्बर बांधे कदमके वृक्षपर छिपे हुये बैठे हैं यह हाल देखतेही उस सखी ने सब ब्रजबालोंसे पुकारकर कहा टुक इधर तो देखो माखनचोर धोतियां चुराये हुये मोटरी बांधकर कदम पर बैठे हैं यह बात सुनकर जैसे सब ब्रजबालों ने श्यामसुन्दर को वृक्ष पर बैठे देखा वैसे लज्जित होकर गले भर पानीमें चली गईं व हाथ जोड़कर विनयपूर्वक बोलीं हे दीनदयालु दुःखहरनेवाले धोतियां हमारी देडालो ॥

दो० माखनप्रभु घनश्यामजू तुम्हैं उचित यह नाहिं। हम दासी बिनदामकी समझो तुम मन माहिं॥

यह बात सुनकर मोहनप्यारे बोले तुम लोग अपना अपना गहना व कपड़ा फेंककर स्नान करने लगी थीं सो मैंने उसकी रखवारी किया है विना चौकीदारी दिये कपड़ा नहीं पावोगी गोपियोंने कहा हमलोगोंको जल में जाड़ा मालूम होता है तुमको दया नहीं आती ॥

दो० तन मन धन अर्प्यो तुम्हैं सो है तुम्हरे पास। अब अम्बर दीजै हमैं जानि आपनी दास॥

सो० तब हँसि कह्यो कन्हाइ जो तन मन मोको दियो। लेहु वसन ह्यां आइ जो मानो मेरो कह्यो॥

तुम सब एक एक सुन्दरी जलसे निकलकर मेरे पास आवो तब तुम्हारे वस्त्र दूंगा नहीं तो बाबा नन्दकी सौगन्द है जो विना ऐसा किये धोतियां अपनी पावो यह वचन मनहरणप्यारेका सुनकर राधिका बोली हम तरुण स्त्रियां तुम्हारे सामने नंगी किसतरह आवें यह नया ज्ञान तुमको किसने सिखाया जो हमें नंगी देखा चाहते हो ॥

दो० छांड़ि देव यह टेक हरि बरु भूषण तुम लेव। शीत मरत हम नीरमें चीर हमारो देव॥

सो० दूषण होत अपार जो त्रियअँग देखै पुरुष। ताते नंदकुमार नंगी नारि न देखिये॥

जब इतनी विनय करने पर भी मोहनप्यारेने वस्त्र उनका नहीं दिया तब सब ब्रजबाला रुखाईसे बोलीं नन्द कहींके राजा नहीं हैं जो उनकी दोहाई फिर गईहो तुम धोतियां हमारी चुराकर सबको नंगी देखा चाहते

हो यह चलन तुम्हारा हमको अच्छा नहीं लगता अभी हम लोग अपने अपने पिता व भाईसे जाकर तुम्हारा हाल कहैं तो वह लोग आनकर तुम्हें चोरीमें पकड़ैं व नन्द व यशोदाके पास लेजाकर तुम्हारा दण्ड करावें यह कठोर वचन गोपियोंका सुनतेही श्यामसुन्दरने क्रोधित होकर कहा अब तुम लोग तभी धोतियां पावोगी जब अपने हिमायतीको लेआवोगी उन्हें क्रोधमें देखतेही सब ब्रजबाला डरती व कांपती हुई बोलीं हे दीनदयालु हमारी पति रखनेवाला सिवाय तुम्हारे दूसरा कौन है जिसे हम अपना सहायक बुलावें तुम्हारे चरणकी दासी होनेवास्ते तो हम लोग यमुनास्नान व व्रत व पूजन करतीहैं सो तुम निर्दयता छोड़कर अपनी दासियों पर दया करो व चीर हमारे दे डालो व आप त्रिलोकीनाथहैं तुम्हारे ऊपर कुछ हमारा वश नहीं चलता न मालूम तुमने कौनसी मोहनी हमपर डालदी जो तुम्हारी सांवली सूरति देखे विना हमलोगोंको अपना घर दुवार व कुल परिवार कुछ अच्छा नहीं लगता हमैं अवला अनाथ समझकर दया करो यह दीन वचन सुनतेही केशवमूर्तिने क्रोध क्षमा करके कहा जो तुम लोग अपने सच्चे मनसे मेरे मिलनेवास्ते व्रत व स्नान करतीहो तो लज्जा व कपटको यमुनाजलमें डुबाके वहांसे नंगी मेरे पास आनकर धोतियां अपनी लेजाव विना अंग दिखलाये चीर नहीं पावोगी यह वचन सुनतेही सब गोपियोंने आपसमें कहा एक मनहरणप्यारे हमैं नंगी देखैं वह अच्छी बातहै या सारा गांव देखै वह उत्तम होगा और ये हमारे अन्तःकरणका सब हाल जानते हैं इनसे लज्जा करना न चाहिये ॥

दो० कहत परस्पर मिलि सबै हरि हठ छोड़त न हिं। चीर विना कैसे बने कौन भांति घर जाहिं ॥
सो० चलो लीजिये चीर इनहींको हठ राखिकै। मनमोहन बलवीर जो कछु कहैं सो कीजिये ॥

ऐसा कहकर सब गोपियां एक हाथसे अपनी भग व दूसरे हाथसे कुचोंको छिपाकर यमुनाजलसे बाहर निकलीं व केशवमूर्तिके सामने जाकर शिर नीचे करके खड़ी होरहीं तब मुरलीमनोहरने कहा अभीतक तुम्हें मुझसे कपट बनाहै कपटी जीव मेरे पास नहीं पहुँचते तुम लोग

एक एक सामने खड़ी होकर सूर्यदेवताको हाथ जोड़ो तब तुम्हारे चीर देऊँ किसवास्ते कि तुमने व्रतमें नंगी स्नान करके सूर्यदेवताका अपराध किया है यह बात सुनकर गोपियोंने कहा हे नन्दलालजी हम लोग सीधी भोली व्रजबालोंसे क्यों कपट करते हो॥

दो॰ माखनप्रभु सों सब कहैं हम आईं तुमहेत। यही तुम्हारो सांचहै अवहूं वस्त्र न देत॥

हम लोग तुम्हारे आधीनहैं जो कहो सो करैं जब ऐसा कहकर सब व्रजबाला छाती परका हाथ उठाकर एक हाथसे सूर्यको दण्डवत् करने लगीं तब केशवमूर्ति बोले एक हाथसे दण्डवत करना दोष होताहै दोनों हाथसे प्रणाम करो॥

दो॰ जो कहिहौ करिहैं सबी हँसि बोलीं व्रजवाम। लेहैं पलटो हमकभूं सुनो श्याम अभिराम॥

जब ऐसा कहकर सब गोपियां मोहनप्यारेके प्रेममें मग्न होगईं व लज्जा छोड़कर दोनों हाथसे सूर्यदेवताको दण्डवत् किया तब श्यामसुन्दर निष्कपट भक्ति व प्रीति उनकी देखकर बहुत प्रसन्न हुये व वृक्षपरसे उतरके सब धोतियां अपने कांधेपर धर गोपियोंसे कहा अब तुम्हारा बोझा मैंने अपने ऊपर उठा लिया मनुष्यके तनमें जन्म लेने का यही फलहै जो दूसरेका उपकार करे॥

दो॰ सुभग शरीर निहारिकै माखनप्रभु बलवीर। प्रेम प्रीति रसवश भये दिये सबनके चीर॥

हे राजन् सब व्रजबाला अपना अपना भूषण व वस्त्र पहिनकर केशवमूर्तिके प्रेममें ऐसी मग्न होगईं कि उनका मन घर जानेवास्ते नहीं चाहताथा तब मोहनीमूर्तिने कहा तुम लोग इस बातमें खेद मत मानना तुम्हें आगेके वास्ते मैंने ज्ञान सिखला दिया जलमें वरुणदेवताका वास होताहै इसलिये नंगी होकर जलमें स्नान करनेसे सब धर्म व पुण्य बहि जाते हैं सो अब तुम्हें यमुनास्नान व व्रत करनेका फल प्राप्त हुआ तुम लोग मुझे बहुत प्यारी मालूम होतीहो कुआर सुदी पूर्णमासीको मैं तुम्हारे साथ रासलीला करके मनोरथ तुमलोगोंका पूर्ण करूंगा अब अपने अपने घर जाकर व्रत रखना छोड़ देव यह वचन सुनतेही सब व्रज-बाला प्रसन्न होकर अपने अपने घर चली गईं व आठों पहर श्यामसुन्दर

के ध्यानमें लीन रहकर कुआर सुदी पूर्णमासी का दिन गिनने लगीं ॥

दो० देखि चरित नँदनन्दके सखी बालमतिभोर। सुधिबुधि मन कछु थिर नहीं कहत औरकी ओर॥

केशवमूर्ति वहांसे वंशीवटमें जाकर ग्वालबालोंके साथ गौ चराने लगे इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूछा हे स्वामी श्रीकृष्णजी परब्रह्मका अवतार होकर जिन्हें सब जगत्का परदा ढांपना चाहिये उन्होंने शास्त्रके विपरीत परस्त्रीको क्यों नंगी देखा यह सन्देह मेरा छुड़ा दीजिये शुकदेव जी बोले हे राजन् स्त्रीको नंगी होकर नहानेसे बड़ा पाप होता है जब तक उसी तरह जलमेंसे नंगी होकर दूसरे पुरुषके सामने न जावे तबतक वह दोष उसका नहीं छूटता इसलिये मुरलीमनोहरने शास्त्रानुसार ऐसा करके उनका पाप छुड़ा दिया ॥

दो० भक्टशीत दुखपायकै सब मिल रहीं लजाय। अन्तर्गत अति सुख भयो आनँद उर न समाय॥

हे राजन् जब श्यामसुन्दर वनमें पहुँचे तब वृक्षोंकी ठंढी छाया देखकर श्रीदामा आदिक ग्वालोंसे कहा देखो यह सब वृक्ष सर्दी व गर्मी व बरसातका दुःख अपने ऊपर उठाकर एक पांवसे खड़े रहते हैं व अपनी छाया व फल व फूलसे सब जीवोंको सुख देते हैं व कोई मनुष्य उनसे विमुख नहीं जाता व मनुष्य लोग सुख पानेपरभी इनकी डाली व पत्ता तोड़ लेते हैं तब भी यह बुरा नहीं मानते व फलव फूल लगे रहने के समय राही व बटोहियोंका सन्मान करते हैं जब इनमें फल व फूल नहीं रहते तब लज्जा से शिर झुकाकर कहते हैं हमसे कुछ सेवा तुम्हारी नहीं बन पड़ती इस लिये हम लज्जित हैं व प्रीति अपनी धनपात्र व कंगाल दोनों से बराबर रखकर योगीश्वरों के समान तप करते हैं संसार में उसी का जन्म लेना सुफल है जो अपने ऊपर दुःख उठाकर दूसरों का उपकार करै ॥

दो० महिमा ऐसे द्रुमन की कापै वरणी जाय। प्राण बड़े दातान के इनमें बैठे आय॥

इसतरह वृक्षों की बड़ाई करते हुये मनहरणप्यारे ग्वालों समेत अपने घर आये ॥

तेईसवां अध्याय।

ग्वालों का मथुरा के चौबों से भोजन मांगना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् श्याम व बलराम एक दिन गौ चराने वास्ते वनमें जाकर ग्वालों के साथ आनन्दपूर्वक खेलते थे उस समय ग्वालों ने ब्रजनाथजी से कहा महाराज जो कलेवा हम लोग अपने घर से लाये थे सो खा गये पर भूख हमारी नहीं गई इसलिये कुछ खिलाइये यह बात सुनकर श्यामसुन्दर अंतर्यामीने विचारा कि मथुरावासी ब्राह्मणों की स्त्रियां मेरे दर्शन वास्ते इच्छा रखतीहैं सो आज उनका मनोरथ पूर्ण किया चाहिये ऐसा विचारकर नन्दलालजीने ग्वालबालों से कहा देखो वनमें जहां धुआं उठताहै वहाँ पर मथुरिया ब्राह्मण राजा कंस के डरसे छिपकर यज्ञ व होम करते हैं तुम लोगोंमें से पांच चार बालक वहां जावो व दण्डवत् करके मेरा नाम लेकर उनसे भोजन मांग लावो यह बात सुनतेही कई ग्वालोंने वहां जाकर विनयपूर्वक उनसे कहा॥

दो० हाथ जोरि ठाढ़े भये ग्वालबाल यक साथ। भोजन मांगत हैं कह्यो माखन प्रभु ब्रजनाथ॥

हे राजन् उन ब्राह्मणों ने जो अपने अज्ञान व कर्म के अभिमान से श्याम व बलरामकी महिमा नहीं जानते थे यह वचन सुनकर ग्वालबालों से कहा तुम मूर्खलोग नहीं जानते कि यह सब भोजन हमने देवतों के नाम पर यज्ञ करनेवास्ते तैयार कियाहै जब तक यज्ञ परमेश्वर का सम्पूर्ण नहीं होगा तब तक भोजन नहीं पावोगे यज्ञ होने उपरांत तुमको भी प्रसाद मिलैगा व श्याम व बलराम अहीरोंके घर पालन हुये उनसे हम ब्राह्मण लोग उत्तम कुलहैं यह कठोर वचन ब्राह्मणोंका सुनतेही सब ग्वालबाल निराश होकर पछताते हुये केशवमूर्तिके पास जाकर बोले हे ब्रजनाथ हम लोग अपना मान छोड़कर तुम्हारे कहनेसे भीख मांगने गये तिसपर भी भोजन नहीं पाया अब क्या करें भूख बहुत सतावती है यह बात सुनतेही केशवमूर्तिने हँसकर बलरामजीसे कहा कि वह ब्राह्मण लोग विना भक्ति हमारे भेदको नहीं जानते कि स्वामी यज्ञ व होम का कौन है अपने कर्म के अभिमान में अन्धे होरहे हैं बहुत उत्तमहै जो वह लोग इसीतरह अपने

अज्ञानमें पड़े रहें फिर श्यामसुन्दर ने ग्वालबालों से कहा कि अब तुम लोग उनकी स्त्रियोंके पास जो बड़ी धर्मात्मा व हरिभक्तहैं जाकर कहो कि श्याम व बलराम ने जो वनमें गौ चराने आये हैं भूखे होकर तुम से भोजन मांगा है वह स्त्रियां तुमको बड़े आदर भाव से भोजन देवेंगी यह सुनतेही ग्वालबालों ने चौबाइनों से जाकर कहा हे माता श्रीकृष्ण व बलरामजी ने तुमसे भोजन मांगा है सो तुम क्या कहती हो ॥

दो० ग्वालनके सुनि वचन सब हर्षि उठीं ब्रजवाम। कहत हमारो भाग्य धनि भोजन मांग्यो श्याम॥
सो० करतरहीं नितध्यान सुनिसुनिजिनकेगुणश्रवण। सुफलजन्मनिजजान तिनको भोजनलेचलीं
दो० अति बड़भागी जीव हैं जिनको ब्रजमें वास। माखन प्रभुके दरशते पावत परम हुलास॥

उन स्त्रियोंके सदा मनसा वाचासे यह इच्छा रहती थी कि कोई ऐसा दिन भी होगा जो हमैं दर्शन केशवमूर्ति के मिलैंगे इसलिये उन्होंने बड़े प्रेमसे मेवा मिठाई व पकवान व पूरी व कचौरी व दूध व दही व माखन आदिक सोने व चांदी की थालियों में रखकर ग्वालों को दिया और कुछ अपने हाथ में लेकर जिस स्थान पर मुरलीमनोहर थे ग्वालबालों के साथ वहां को चलीं उस समय उनके पति आदिकों ने बहुत मना किया कि तुमलोग ग्वालोंके साथ मत जाव पर उन्होंने जो परम भक्त थीं किसी का कहना नहीं माना ॥

सो० जिनके उर नँदलाल बसैं लकुट मुरलीलिये। तिन्हैं न भय यमकाल कौन भांति रोकी रुकैं॥
चौ० तब ग्वालन से पूछत बाला। केतिक दूर अहैं नँदलाला॥
चलो आज हम नयनन देखैं। जीवनजन्मसुफल करिलेखैं॥

यह वचन सुनकर ग्वाल बोले हे माता थोड़ी दूर हैं जिस समय वह लोग बीच प्रेम दर्शन मोहनीमूर्तिके आनन्दसे चली जाती थीं उसी समय एक मथुरिया ब्राह्मण बजोरी अपनी स्त्रीको राहमें से पकड़ लाया तब उसने कहा हमको श्यामसुन्दरका दर्शन करने जाने देव अपने ऊपर अपयश मत लेव मुझे उनके दर्शनकी बड़ी लालसाहै और वह परब्रह्म परमेश्वर पृथ्वी का भार उतारने वास्ते अवतार लेकर संसारी मनुष्य की तरह लीला करते हैं तुम लोग वेद पढ़कर यज्ञ व होम करते हो पर उनको अपने अज्ञानसे नहीं पहिचानते ॥

दो० को जन जाने भेव यह यज्ञ करत केहि काज । भोजनमांगत हैं वही माखन प्रभु व्रजराज ॥

हे स्वामी मेरा प्राण तो नन्दलालजी से जा मिला इस झूठे शरीर को रोक कर क्या करोगे मेरे मरने उपरांत सिवाय पछताने के तुमको और कुछ हाथ नहीं लगेगा जिस मनुष्य को परमेश्वर से प्रीति न हो वह किसी काम का नहीं होता यह सब ज्ञान कहने पर भी उस मथुरियाने नहीं मान कर अपनी स्त्री को कोठरी में बन्द करके ताला देदिया तब उसी साइत प्राण उसका बीच ध्यान केशवमूर्ति के निकल कर इस तरह सब स्त्रियों से पहिले वहां जा पहुँची जिसतरह पानी तुरन्त बहकर नदी व समुद्र में मिलजाता है ॥

सो० कठिन प्रेम का पंथ जहां नेमकी गति नहीं । कहत सकल यह ग्रंथ प्रेमभाव के वश हरी ॥

हे राजन् जब पीछे से वह सब स्त्रियां बड़े प्रेमसे भोजन लिये हुये जहां पर केशवमूर्ति वीच छाया वृक्ष एक सखा के कांधे पर हाथ दिये बांकी सूरत बनाये कमल का फूल हाथ में लिये खड़े थे जा पहुँचीं तब चरण उनका चूमकर थालियां भोजन की सामने धरदीं व उस मोहनीमूर्ति को देखतेही प्रसन्न होकर आपस में कहने लगीं हे सखी यही नंदलालजी हैं जिनकी बड़ाई हम लोग सदा सुनकर ध्यान किया करती थीं आज हमारे भाग्य उदय हुये जो इनका दर्शन पाया अब इन चन्द्रमुखकी शीतलताई से अपनी अपनी आंखें ठंढी करो व संसारमें जन्म लेनेकाफल उठाओ हे राजन् मुरलीमनोहरकी कृपासे उस समय उन स्त्रियोंकी दिव्य-दृष्टि होगई तब उन्होंने मोहनप्यारे को पूर्णब्रह्म जानकर हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ विना कृपा तुम्हारी इस सांवलीसूरतिका दर्शन किसीको नहीं मिलता न मालूम कौन जन्मके पुण्य हमारे सहायक हुये जो तुम्हारा दर्शन पाया व अनेक जन्मके पाप हमारे छूट गये व हम लोगोंके पति आदिक अपने अज्ञान व अभिमानसे संसारीमाया मोहमें डूबकर ऐसे अन्धे होगये जो परमेश्वर वैकुण्ठनाथको जिनके नामपर यज्ञ करते हैं मनुष्यसमझकर मांगनेपर भी भोजन नहीं दिया तन व धन वही उत्तम समझना चाहिये जो तुम्हारे काम आवे जो लोग मनुष्यका तन

पाकर तुम्हारी भक्ति व सेवा करते हैं उन्हीं का जन्म लेना स्वार्थ है व यज्ञ व तप व ध्यान व ज्ञान वही उत्तम होता है जिसमें तुम्हारा नाम आवे॥

दो० जो जन मन वचसे करैं माखन प्रभुसे हेत। चारि पदारथ देतहैं पाप दुःख हरिलेत॥

यह वचन प्रीति व भक्ति से भरा हुआ सुनतेही केशवमूर्ति उनकी कुशल पूछकर बोले मैं नन्दमहरका बेटाहूं तुम लोग ब्राह्मणी होकर मुझे दण्डवत् मत करो इसमें मुझको दोष लगैगा जो लोग ब्राह्मण या उनकी स्त्रियोंसे अपना काम व टहल लेते हैं वह संसारमें कुछ बड़ाई नहीं पाकर पापके भागी होते हैं तुमने हमें भूखा जानकर दयाकी राह वनमें आनके भोजन दिया सो मैं इसके बदले तुम्हारा क्या सन्मान करूं वृन्दावन मेरा घर यहांसे दूर है कदाचित् अपने घरपर होते तो यथाशक्ति तुम्हारा आदर भाव करते सो यहां मुझसे तुम्हारा कुछ शिष्टाचार नहीं बनिपड़ा इस बातका पछताव मेरे मनमें रहगया तुमलोगोंको यहां आये बहुत विलम्ब हुआ अब अपने अपने स्थानपर जाव ब्राह्मण लोग तुम्हें जोहते होंगे किसवास्ते कि स्त्री अर्धांगी होती है विना तुम्हारे गये देवता यज्ञ व होम ब्राह्मणोंका अंगीकार नहीं करैंगे॥

सो० सुना वचन निर्वान कर्म धर्म वाणी सुखद। द्विजत्रिय परमसुजान बोलीं सब कर जोरिकै॥

हे वैकुण्ठनाथ आपका दर्शन करने व तुम्हारे चरणकमलकी भक्ति व प्रीति रखनेसे संसारीमाया छूट गई अब हमैं घर दुवार व कुल परिवारका कुछ मोह नहीं रहा सिवाय इसके हमलोग विना आज्ञा अपने पति आदिकके तुम्हारा चरण देखने आई हैं कदाचित् वह लोग हमको अपने घरमें न रक्खैं तो हम कहां जावैंगी इससे यह बात उत्तम है कि हम सब आपके चरणों के पास बनी रहैं व तुम्हारी सेवा व टहल करके अपना परलोक बनावें व हे महाप्रभु एक स्त्री तुम्हारे दर्शनों की इच्छासे हमारे साथ आवतीथी सो उसका पति वजोंरी उसे पकड़कर राहमें से फेर लेगया न मालूम उसकी क्या गति हुई यह बात सुनकर मोहनीमूर्ति ने हँस दिया व उस स्त्रीका स्वरूप सबको दिखलाकर कहा देखो यह स्त्री तुमलोगोंसे पहिले मेरे यहां आन पहुँची जो कोई परमेश्वरमें प्रीति रखता है उसका

नाश कभी नहीं होता हे राजन् उस स्त्रीको केशवमूर्तिकी सेवामें देखकर पहिले सबको आश्चर्य मालूम हुआ फिर सब स्त्रियोंने मुरलीमनोहर से विनय किया हे व्रजनाथ आप अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थके देनेवाले होकर हमको अपने चरणोंसे अलग न कीजिये तुम्हारा चरण छोड़कर अब हम जाय नहीं सक्तीं यह सुनकर केशवमूर्ति बोले सुनो तुम लोग परमेश्वरके प्रेममें लीनहो पर गृहस्थको वेदके अनुसार सब काम करना चाहिये शास्त्रमें ऐसा लिखाहै जो स्त्री अपने पतिको परमेश्वर तुल्य जान कर उसकी आज्ञा पालन करै व दूसरे पुरुषको पापकी आंखसे न देखै उस पतिव्रताको योगी व ज्ञानीसे उत्तम समझना चाहिये वह स्त्री जो कुछ शुभ या अशुभ अपने मुखसे किसी को कहै वह बात सच होजाती है और उसको चारों पदार्थ अपने स्वामीसे मिलसक्ते हैं॥

दो० यहि विधि ते निश्चय करै जो नारी मनमाहिं। चारि पदारथ सो लहै यामें संशय नाहिं॥

इस लिये तुम लोग अपने पतिके पास जाव वह तुमसे खेद न करके प्रसन्न होंगे यह वचन सुनतेही सब चौबाइनोंने अमृतरूपी नटवरवेष केशवमूर्तिको आंखोंकी राह अपने हृदयमें पी लिया व उनसे भक्ति वरदान लेकर दण्डवत् करके अपने स्थान पर चलीं व जिस ब्राह्मणने अपनी स्त्री को कोठरी में बन्द कर दियाथा उसने ताला खोलकर देखा तो अपनी स्त्री को मरी हुई पाकर रोने पीटने लगा जिससमय उसकी लोथ जलाने का उपाय कर रहाथा उसी समय सब स्त्रियां अपने स्थान पर पहुँचीं॥

दो० माखन प्रभुको दरशले आईं सुवर सुजान। तिनके दरशप्रतापते विप्रन पायो ज्ञान॥

हे राजन् जाती समय ब्राह्मणलोग अपनी अपनी स्त्रियोंपर क्रोधित हुये थे जब वह केशवमूर्तिका दर्शन करके फिर आईं तब उनका माथा चमकता हुआ देखकर ब्राह्मण लोग कहने लगे देखो जिनका दर्शन ब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वरोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता उन परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन इन स्त्रियोंने करके अपना जन्म सफल किया व हम लोगोंने अपने अज्ञानसे नहीं पहिंचाना कि स्वामी यज्ञ व होम का कौन है हमने वेद व

पुराणमें ऐसा सुना था कि परब्रह्म परमेश्वर यदुकुलमें अवतार लेकर नन्द व यशोदाको बाललीला का सुख दिखलावैंगे सो यही वैकुण्ठनाथ बाललीला करते हैं उन्होंने ग्वालबालों को भोजन मांगनेवास्ते हमारे पास भेजा था सो हमसे बड़ी चूक हुई जो सच्चिदानन्द को भोजन न दिया व जिनके प्रसन्न होने वास्ते हमलोग यज्ञ व होम करते हैं उन्हें मनुष्य समझकर उनके सन्मुख नहीं गये व अपने अज्ञान व अभिमानसे हमारे मन में दयाभी नहीं आई सो हमारे यज्ञ व तप करनेपर धिक्कारहै कि हमने परमेश्वरको नहीं पहिं-चाना हमलोगों से इन स्त्रियोंको अच्छा समझना चाहिये जिन्होंने विना जप तप किये व कथा पुराण सुने अपने ज्ञानसे परमेश्वरको पहिं-चानकर भोग लगाया व उनका दर्शन करके अपने नेत्रोंका सुख पाया इसीतरह ब्राह्मणोंने बहुत पछताकर अपनी अपनी स्त्रियोंसे विनयपूर्वक कहा तुम्हारी बराबर दूसरोंका भाग्य न होगा जो परब्रह्म परमेश्वर के दर्शन तुमको मिले फिर ब्राह्मणोंने श्यामसुन्दरको ध्यानमें हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ हमलोगोंका अपराध क्षमा कीजिये व हमारे हृदयमें अज्ञानताकी काटि जो जमीहै उसको ज्ञानरूपी अग्निसे जला दीजिये जब इसीतरह पर बहुत स्तुति व बिनती ब्राह्मणोंने की तब केशव-मूर्तिने अपराध उनका अपने हृदय में क्षमा करदिया व सब स्त्रियों ने लोथ उस चौबाइनकी देखकर उसके पति से कहा हमने तेरी स्त्री को नन्दलालजीकी सेवा में देखाथा यह वचन सुनतेही वह मथुरिया रोकर बोला मैं भी अपनी स्त्री को तुम्हारे साथ जाने देता तो किसवास्ते वह मरती ऐसा कहकर वह मथुरिया रोता हुआ केशवमूर्ति के पास दौड़ा गया व अपनी स्त्रीको वहां चतुर्भुजीरूप देखकर जब श्यामसुन्दरके सामने अति विलाप करके रोने लगा तब ब्रजनाथजीने कहा अपनी स्त्रीके भक्ति करने से तूभी चतुर्भुजीस्वरूप होजा सो नन्दलालजीने स्त्री पुरुष दोनोंको विमान पर बैठाकर वैकुण्ठमें भेज दिया व जो कुछ पदार्थ ब्राह्मणकी स्त्रियां देगई थीं उसको बांटकर ग्वालोंसमेत आनन्दपूर्वक भोजन किया उस समय श्रीदामाने कहा हे नन्दलालजी गायें चरती हुई दूर चली गईं उनको बहो-

रना चाहिये यह बात सुनतेही केशवमूर्तिने ऐसी मुरली बजाई कि सब गायें आप दौड़कर वहां चली आईं॥

दो० या विधि मुरली टेरके घेरलई सब गाय। सांझ समय घरको चले हलधरजूके भाय॥

जब केशवमूर्ति वंशी बजाते हुये वृन्दावनके निकट पहुँचे तब सब व्रजबाला उनकी छवि देखने से प्रसन्न होकर बोलीं॥

दो० प्रेममगन आनन्दअति कहतसकल व्रजवाम। देखोसखियशुमतिसुवनशोभितअतिबलराम॥
कहत मुदितमन युवतिजन धनिधनिसखिवह मोर। जिनके पंखनको मुकुट दीन्हो नन्दकिशोर॥

हे राजन् जिस समय वैकुण्ठनाथजी गायोंके पीठपर हाथ फेरकर अपने पीताम्बरसे उनका शरीर पोंछतेथे उस समय स्वर्गमें कामधेनु गौ पछता कर कहती थी परमेश्वर हमाराभी जन्म वृन्दावनमें देते तो केशवमूर्ति हमारे ऊपरभी हाथ फेर कर मेरा दूध दुहते॥

दो० धनिधनिव्रजकीधेनु यह चारत त्रिभुवननाथ। झारत पोंछत दुहत नित हितकर अपने हाथ॥

चौबीसवां अध्याय।

श्यामसुन्दर का गोवर्द्धन पहाड़ की पूजा करना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिसतरह श्यामसुन्दरने गोवर्धन पहाड़ अपनी कानी अंगुलीपर उठाया था वह कथा कहते हैं सुनो गोकुल व वृन्दावनमें वर्षवें दिन व्रजवासी लोग कार्त्तिक बदी चतुर्दशी को छत्तीस व्यंजन बनाकर राजा इन्द्रकी विधिपूर्वक पूजन किया करते थे जब वह दिन आया तब वृन्दावनवासियोंने अनेक तरहका पकवान व मिठाई आदिक इन्द्रकी पूजावास्ते अपने अपने घर बनवाया व यशोदा बड़ी पवित्रतासे सब पदार्थ बनाकर रखती थीं जिसमें कोई जूठा न करदेवे॥

दो० सैंत सैंत अति नेम सों धरति अछूते जाति। श्याम कहूं परसें नहीं यह मनमाहिं डराति॥
सो० शंक करत मनमाहिं सुरपति पूजा जानि जिय। यशुमतिजानति नाहिं सब देवनके देव हरि॥

हे राजन् केशवमूर्तिने घर घर यह तैयारी देखकर मनमें ऐसा विचारा कि इन्द्रकी पूजा छुड़ाकर गोवर्धन पहाड़को पुजवाना चाहिये ऐसा विचारकर यशोदासे पूछा हे मैया आज सब व्रजवासियों के घर पकवान व मिठाई तैयार होनेका क्या कारण है यशोदा बोली हे बेटा इस समय

मुझे बात करनेकी छुट्टी नहीं है तू अपने पिता से जाकर पूछ ले यह बात सुनकर मोहनप्यारे बलरामजीसमेत नन्दराय के पास गये ॥

दो० तब हरि बोले नंदसों मधुरमन्द मुसुकाय। करत पुजाई कौनकी बाबा मोहिं बताय ॥

हे बाबा वह कौन देवता जिनकी पूजा करनेसे भक्ति व मुक्ति मिलती है उनका नाम व गुण मुझसे वर्णन कीजिये बड़ों को उचित है कि अपने कुलकी रीति छोटों को बतला देवैं लड़कपनकी सीखी हुई बात याद रह कर कभी नहीं भूलती यह सुनकर नन्दजी बोले हे बेटा अबतक तुमने इस पूजाका हाल नहीं सुना यह सब सामग्री वास्ते पूजा करने इन्द्र जो सब मेघोंका राजा है बनती है उनके पूजने से वर्षा अच्छी होकर घास व अन्न उपजताहै जिसके उत्पन्न होने से सब जीव सुख पावते हैं व यह पूजा हमारे कुलमें बहुत दिन से होतीहै ॥

दो० माखन प्रभु बोले तभी तात बात सुनिलेहु। जहँ पूजन नहिं होतहै तहँ बरसत नहिं मेहु ॥

हे बाबा आजतक जो कुछ हमारे बड़ोंने जान या अजानमें पूजा इन्द्रकी किया सो अच्छा हुआ पर तुमलोग जान बूझकर धर्मकी राह छोड़के कुराह पर क्यों चलते हो किसवास्ते कि संसार में तीन तरहका धर्म व कर्म होताहै एक वेद व शास्त्र के अनुसार दूसरा लोकव्यवहार तीसरा अपने मनसे सो वेदके प्रमाण करनेसे फल उसका मिलताहै भला तुम्हीं बतलावो इन्द्रकी पूजा करने से क्या मिलैगा वह किसी को भक्ति व मुक्ति व ऋद्धि व सिद्धि व वरदान नहीं देसक्ता व इन्द्र आप सौ यज्ञ करके इन्द्रासन पावता है तब देवता उसे अपना राजा करके मानते हैं इससे वह परमेश्वर नहीं होसक्ता जब वह दैत्यों से लड़ाई में भागकर कहीं जाय छिपताहै तब नारायणजी सहायता करके फिर उसे इन्द्रासन पर बैठाल देते हैं ऐसे निर्बल की तुमलोग पूजन क्यों करते हो अपना धर्म पहिंचान कर परमेश्वरकी पूजा क्यों नहीं करते इन्द्र का किया कुछ नहीं होसक्ता और जो लोग अपने अज्ञान से नारायणजी को जो इन्द्रादिक सब देवतों के मालिक हैं छोड़कर दूसरे देवतोंकी पूजा करते हैं उन्हें मूर्ख समझना चाहिये किस वास्ते कि हर्ष व शोच परमेश्वरकी इच्छासे होताहै विना इच्छा नारायण

जी के एक पत्ता भी वृक्षका नहीं हिल सक्ता इन्द्र भी उन्हींकी कृपासे इस पदवीको पहुँचाहै व जो बात विधाताने सबके कर्म में लिख दिया वही होकर उसमें तिलभर घट बढ़ नहीं सक्ता सुख सम्पत्ति व परिवार आदिक अच्छी वस्तु अपने धर्म व कर्म से मिलता है व हाल वर्षाका इसतरह पर समझो कि आठ महीने तक सूर्यदेवता जो जल पृथ्वीका सोखते हैं वही जल चार महीने बरसातमें वर्ष कर उसीसे अन्न व घास आदिक सब उत्पन्न होते हैं व ब्रह्माने जो चार वर्ण ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य व शूद्र संसारमें बनाये हैं उनके पीछे एक कर्म इस तरह पर लगा दिया है कि ब्राह्मण वेद व विद्या पढ़ें व क्षत्री सबकी रक्षा करें व वैश्य खेती व्यापार व शूद्र इन तीनों वर्णकी सेवा करें सो हे पिता हमारा वर्ण वैश्य का है व हमारे यहां बहुतसी गौ इकट्ठी हैं व ब्रजगोकुल जन्मभूमि हमारा है इस वास्ते गोप व ग्वाल हमलोगों का नाम पड़ा सो हमारा भी यह कर्म है कि खेती व व्यापार करके गौ ब्राह्मण की सेवा करें व वेद व शास्त्र की भी ऐसी आज्ञा है कि अपने वर्ण का धर्म न छोड़ें जो लोग अपना धर्म छोड़कर दूसरे वर्ण का कर्म करते हैं उनको ऐसा समझना चाहिये जिस तरह कुलवन्ती स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरे पुरुष के पास रहै सो हे नन्दबाबा मुझ बालक का कहना सच मानो तो आप लोग इन्द्र का पूजन छोड़कर गोवर्धन पहाड़ व गौ ब्राह्मण व वनकी पूजा कीजिये किस वास्ते कि गोवर्धन पहाड़ यहां का राजा है व इस पहाड़ व वनमें चरने से सब गौ व बछवे हमारे पालन होते हैं व उन्हीं का दूध व घी आदिक बेचने से हमलोगों की जीविका होती है जो अपना पालन करै उसे अपना राजा समझकर पूजना चाहिये इस वास्ते यह सब पक्वान व मिठाई आदिक जो बना है सो गोवर्धन पहाड़ पर ले चलकर उनका पूजन करो व सब पदार्थ उन्हें भोग लगाकर गौ व ब्राह्मण व कंगालों को खिलादेव और साल से इस संवत् में अधिक वर्षा होगी यह वचन केशवमूर्तिका सुन नन्द व उपनन्द व वृषभानु आदिक परमेश्वर की इच्छा से प्रसन्न होकर बोले ॥

दो० ताते सोई कीजिये कृष्ण कही जो बात। सब व्रजवासी पूजिये गोवर्धन उठि प्रात॥

जब यह सम्मत आपस में ठीक होगया तब नन्दराय ने गांव में ढिंढोरा पिटवा दिया कि कार्त्तिक सुदी परेवा को हम चलकर गोवर्धन पहाड़ की पूजा करैंगे सो सब कोई पकवान व मिठाई व सामग्री लेकर गौवों समेत चलना हे राजन् यह आज्ञा नन्द व उपनन्द की सुनकर सब लोग प्रसन्न होगये व गोप व ग्वालों ने अपने अपने गौ व बछवे का अनेक रंग से पूंछ व सींग चित्रकारी करके गले में घंटा बांध दिया व कार्त्तिक सुदी परेवा को प्रातःसमय व्रजवासियों ने स्नान करके सब सामग्री गाड़ी व बैलों पर लदवा लिया और सब स्त्री व बालक उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर नन्द व वृषभानु के साथ बाजे बजाते हुये गोवर्धन पर्वत को पूजने चले॥

दो० माखनप्रभु अति चावसों भूषण वस्त्र मँगाय। गिरिगोवर्धन ले चले गोधन सबै बनाय॥
नन्दमहर उपनन्द सब श्याम राम दोउ भाय। पहुँचे गोवर्धन निकट निरखि शिखर सुख पाय॥
सो० उतरे सहितसमाज चहूंओर व्रजलोगसब। मधि शोभित गिरिराज कोटिकाम शोभासरस॥

जब श्रीकृष्णजी की आज्ञानुसार सब किसी ने पूजन गोवर्धन पहाड़ की धूप व दीप आदिक से विधिपूर्वक किया व इतना पकवान व मिठाई वहां इकट्ठा हुआ कि जिसका ढेर दूसरा पहाड़ मालूम होता था और अनेक रंग के माला व फूल व कपड़े चढ़ावने से शोभा गोवर्धन पहाड़ की ऐसी दिखाई देती थी जिसका वर्णन नहीं होसक्ता उस समय मोहनप्यारे ने व्रजवासियों से कहा तुमलोग आंखें बन्द करके ध्यान गोवर्धनजी का करो तो वह प्रत्यक्ष दर्शन अपना देकर भोजन करैंगे तब मुरलीमनोहर के कहने से नंदजी आदिक सब व्रजवासी हाथ जोड़कर खड़े होगये व आंखें बन्द करके ध्यान गोवर्धन पहाड़ का किया तब श्यामसुन्दर अपने एक चतुर्भुजी विशालरूप अतिसुन्दर व तेजमान से उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिने गोवर्धन पहाड़ पर प्रकट हुये उस समय अपने श्रीकृष्णरूपसे नन्दादिक व्रजवासियों से कहा तुम्हारी भक्ति व प्रीति सच्ची देखकर गोवर्धनजी तुम लोगों को दर्शन देने वास्ते प्रकट हुये हैं सो अच्छी तरह दर्शन करो यह वचन सुनतेही व्रजवासियों ने आंख खोलकर देखा तो

उस स्वरूप के दर्शन पावने से बहुत प्रसन्न हुये व उनको दण्डवत् करके आपसमें कहने लगे जिस तरह आज गोवर्धनजीने दर्शन दिया इसतरह इन्द्र का दर्शन कभी नहीं हुआ था न मालूम हमारे पुरुषे ऐसे प्रत्यक्ष देवता की पूजन छोड़कर इन्द्र को क्यों पूजते थे ॥

दो० कहेउ कृष्ण तब नन्द सों भोजन लेव मँगाय। गिरिआगे सब राखिकै अर्पौ विनय सुनाय ॥

यह वचन सुनतेही गोप व ग्वाल जल्दी से परात व थाली भोग की उठाकर उनके निकट लेगये तब गोवर्धननाथजी हाथ फैला फैला कर भोजन करनेलगे ॥

दो० देखनको धाये सभी व्रजके नर अरु वाम। भयो देवता गिरि बड़ो ताहि पुजावत श्याम ॥
सो० बड़े महर उपनन्द नंद आदि ठाढ़े सबै। कहत जो कछु नँदनन्द करत सकल सोई तहां ॥
दो० इतहि नंदको कर गहे गोपिनसों बतलात। उत अपनो धरि चारभुज रुचिसों भोजन खात ॥
सो० श्रीराधामुखपाय मुदित बिलोकति श्यामछवि। भक्तनके सुखदाय नितनव करत विनोद व्रज ॥
दो० प्रीतिरीतिके भावसों भोजन सबको खाय। होइ प्रसन्न अतिनन्दसों तब बोल्यो गिरिराय ॥
सो० लेव नंद वरदान अब जो तुम हमसों चहौ। मैं लीन्हीं सुखमान बहुत करी तुम भक्ति मम ॥
दो० नन्द गोप अरु नंदसुत श्रीवृषभानु समेत। बार बार गिरिराज के चरण परत अतिहेत ॥
सो० करि सबको सन्मान दे प्रसाद निजहाथ सों। सबन कही घरजान होइ प्रसन्न गिरिराज तब ॥
दो० प्रकट देत हैं दरश गिरि सबके आगे खात। परम हर्ष नर नारि सब सबके मुख यह बात ॥
सो० महिमा अमित अपार श्रीगोवर्धन अचलकी। जेहिपूजत करतार शारद विधि नहिं कहिसकैं ॥

उस समय ललिता सखी ने राधासे कहा यह सब लीला मनहरण प्यारे की है जो दूसरा स्वरूप अपना पहाड़ में प्रकट करके पकवान व मिठाई चखते हैं हे राजन् जब गोवर्धननाथजी भोजन करके अन्तर्धान होगये तब नन्दजी ने वहां होम करने उपरान्त परिक्रमा कर ब्राह्मणों को बहुत सा सोना व गौ आदिक दान दिया व पहिले ब्राह्मण व गौ व कंगालों को भोजन खिलाकर पीछे से आप सब व्रजवासियों समेत भोजन किया व श्रीकृष्णजी ने एक ग्रास अपने हाथ से उठाकर खाया सो ब्रह्मा व महादेव व विष्णु आदिक सब देवता व तीनों लोक के जीवों का पेट भर गया ॥

दो० माखनप्रभु हरिदेव हैं सब देवनको मूल। मूलहि सींचे होत हैं हरे पात फल फूल ॥

हे राजन् उस दिन व्रजवासी रात को उसी जगह टिककर बड़े आनन्द

से रात भर गाते बजाते रहे दूसरे दिन उसी तरह आनन्द मचाते हुये गौ व बछड़े समेत अपने घर आये उसी दिन से अन्नकूट की पूजा संसारमें प्रकट हुई ॥

सो० खेलत तनवनितग्वाल भक्तपालनँदलालब्रज। दुष्टनके उरशाल सुर नर मुनि मोहत निरखि॥

पच्चीसवां अध्याय।

गोवर्धन पहाड़को अपनी अंगुलीपर श्रीकृष्णजीका उठाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जब उस साल ब्रजवासियोंने इन्द्रकी पूजा नहीं की तब इन्द्रने जो श्यामसुन्दरकी महिमा नहीं जानता था अपने सभावाले देवतों से पूछा कल्ह ब्रजमें किसने कौन देवताकी पूजा किया है यह वचन सुनकर कोई देवता बोला ब्रजवासीलोग हर साल तुम्हारी पूजा करते थे इस संवत्में कृष्ण बालक नंदमहर के कहने से ब्रजवासियों ने तुम्हारा पूजन छोड़कर गोवर्धन पहाड़ को पूजा है यह बात सुनतेही इन्द्रने क्रोध करके कहा ब्रजवासियों को धन अधिक होने से अभिमान उत्पन्न हुआ जो उन्होंने हमारी पूजा करना छोड़ दिया इसलिये मैं उन्हें कालके मुख में डालकर दरिद्री कर दूंगा कृष्ण छोकड़ा जो हमारा शत्रु है उसके कहने से ब्रजवासियोंने मेरा अपमान किया सो मैं उस बालक का गर्व तोड़ देता हूं आजतक ब्रजवासियोंका मैं मालिक था अब उन्होंने कृष्णको अपना स्वामी समझा है ॥

दो० ऐसे सुरपति क्रोध करि मनमें गर्व बढ़ाय। प्रलयकालके मेघ सब लीन्हें तुरत बुलाय ॥

जब मेघोंका राजा डरता व कांपता इन्द्रके पास आनके हाथ जोड़कर खड़ा हुआ तब इन्द्रने उसे आज्ञा दिया तुम इसी समय सब मेघोंको साथ लेकर ब्रजमण्डल पर जाव व इतना पानी व पत्थर बरसावो जिसमें सब ब्रजवासी गोवर्धन पहाड़ समेत बहजावें ॥

दो० और ठौर सब छांड़िकै ब्रजमहँ बरसो जाय। ब्रजवासी गोधन सहित जलसे देव बहाय ॥

व इन्द्रने उन्चासों पवनको भी मेघों के साथ कर दिया जिसमें सरदी व पानी से कोई जीता न बचे यह आज्ञा पातेही मेघराजा उन्चासों पवन समेत बड़े बड़े मेघों को साथ लेकर ब्रजमण्डल पर चढ़ दौड़े उनके आते

हीं आंधी चलने व बदली छा जाने से वृन्दावन में अँधियारा होगया व घड़े के समान बूंद बरसकर बिजुली चमकने लगी सिवाय आंधी व पानी व बिजुली के और कुछ वहां दिखलाई नहीं देता था तब केशवमूर्ति ने हँसकर बलरामजीसे कहा देखो इन्द्र अपनी पूजा न पावने से क्रोध करके महाप्रलयका पानी बरसाता है यह क्रोध उसका हमारे साथ समझना चाहिये किसवास्ते कि मेरे कहने से व्रजवासियों ने उसकी पूजा छोड़कर गोवर्धन पहाड़ को पूजा था इसलिये उसका गर्व तोड़ना उचित है और यह दशा देखकर नन्द व यशोदा आदिक सब व्रजवासी घबरा गये॥

दो० देखि देखि व्रजकी दशा नंदमहर पछितात। कियो निरादर इन्द्र को मन में बहुत डरात॥
सो० श्याम राम दोउ भाष लिये निकट शोचत महर। जुरे गोप तहँ आय मनहीं मन मुसुकातहरि॥

हे राजन् जब सब व्रजवासी ऐसे प्रलयके पानी बरसनेसे मारे सरदीके बहुत दुःखी हुये तब भीजते व कांपते हुये श्यामसुन्दरके शरणमें आनकर पुकार पुकार कहने लगे हे गोकुलनाथ इस प्रलयके पानीसे हमारा प्राण बचाइये व तुमने इन्द्रकी पूजा छुड़वाकर हमलोगों से गोवर्धन पहाड़ को पुजाया इसीवास्ते इंद्रक्रोध करके महाप्रलयका पानी बरसाता है अब जल्दी गोवर्धन पहाड़को बुलावो जो आनकर इस बरसनेसे हमारी रक्षा करै नहीं तो एक क्षणमें सब मनुष्य गौवों समेत डूबकर मरने चाहते हैं॥

दो० जब जब गाढ़ परी हमैं तब तुम लियो उवार। यहि अवसर अब राखियो मोहननन्दकुमार॥
सो० व्रजजनके सुखदान देखि विकल व्रजलोग सब। हँसबोले तब कान्ह धरौ धीर उर डरौ मत॥

तुम लोग अपनी अपनी वस्तु व गो व बछवा आदिक अपने साथ लेकर गोवर्धन पहाड़केपास चलो वह तुम्हारी रक्षा करके इन्द्रका अभिमान तोड़ देंगे जब श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार सब व्रजवासी अपनी अपनी वस्तु व गो व बछवासमेत गोवर्धन पहाड़के निकट गये तब व्रजनाथ जी ने पीताम्बरकी कछनी बांधकर मुरली कमरमें खोंस लिया व गोवर्धन पहाड़को अपने बायें हाथकी कानी अँगुली पर फूलके समान उठा लिया और सब व्रजवासी व गो आदिकको उसकी छायामें खड़ा करके सुदर्शनचक्रको आज्ञा दी कि तुम चारोंओर इस पहाड़के फिरते रहो जितना पानी

बरसै सब अपने प्रकाशसे सोखते जाव जिसमें पृथ्वीपर एक बूंद पानी न गिरै वैसाही सुदर्शनचक्रने किया उस समय सब ब्रजवासी केशवमूर्ति की प्रभुता देखकर आपसमें कहने लगे श्रीकृष्णजी परमेश्वरका अवतार मालूम होते हैं नहीं तो मनुष्यकी सामर्थ्य नहीं है जो पहाड़को फूलके समान अंगुली पर उठाने सकै व श्यामसुन्दर पहाड़ उठाये हुये मधुर मधुर शब्द से मुरली बजाकर सबको प्रसन्न करतेथे जिसमें कोई घबरावे नहीं व यशोदा अपने प्राणप्यारे के प्रेम में घबराकर नन्दजीसे कहती थी अपने अज्ञानसे इन्द्रका पूजन छोड़कर गोवर्धन पहाड़ को पूजा था अभी कहीं पहाड़ मोहनप्यारे पर गिर पड़े तो क्या करूंगी ॥

चौ० दाबति भुजा यशोमति मैया। बारबार मुख लेत बलैया ॥
लखि पहाड़ मन अति दुख पावै। पुनि पुनि गोवर्धनहि मनावै ॥
नाथ आपनो भार सम्हारी। करियो कान्हाकी रखवारी ॥
पय पकवान मिठाई मेवा। बहुरि पूजिहौं तुमको देवा ॥

फिर यशोदा ने बलरामजी से कहा कन्हैया तुम्हारी सहाय किया करताथा इस समय तुम भी कुछ उसकी सहायता करो इस तरह नन्दरानी अपने कुलदेवता व परमेश्वर को बारम्बार दण्डवत् करके यह मनावती थी जिसमें मनहरणप्यारे को पहाड़ उठावने में दुःख न पहुँचै ॥

दो० माखनप्रभुके कारणे जाय वारनी माय। ताके मनकी कल्पना केहिविधि बरणी जाय ॥

जब श्यामसुन्दर ने अपनी माता व पिता को दुःखी देखा तब उनको धैर्य देने वास्ते यह उपाय किया ॥

चौ० कहेउ नंदसों निकट बुलाय। तुमहूं सब मिलि करौ सहाय ॥
लै लै लकुट राखि गिरि लेहु। मत राखौ उरमें संदेहू ॥
गोवर्धन गिरि भये सहाय। आप कहेउ मोहिं लेहु उठाय ॥

दो० यह सुनि जहँतहँ गोपसब रहेलकुट गिरिलाय। कहतश्याम तब नंदसों भलेलियोउचकाय ॥
सो० ठाढेढिगबलराम देखिदेखि लीलाहँसत। कौतुकनिधि सुखधाम करतचरितसंतनसुखद ॥

उस समय गोपियां हँसी की राह मोहनप्यारे से कहती थीं तुमने संध्या सबेरे बहुत सा दूध व माखन आदिक हमारा चुराकर खाया था उसी के बल से इतना भारी पहाड़ उठाया है सो आज वह दूध व माखन तुम्हारा खाना सुफल हुआ ॥

चौ० श्रीवृषभानु सुता तहँ आई। कुँवर कान्हके अति मन भाई ॥
गोर अंग सुन्दर सुकुमारी। श्यामसंग खेलत नित प्यारी ॥
सुनत बोल हँसि उठे मुरारी। तबहीं डोल गयो गिरि भारी ॥
नरनारिनको अति भयभाई। धाय छिपाय राधिका लाई ॥

जब व्रजबाला पहाड़ गिरनेके डरसे राधिकाको पकड़कर कीर्ति उसकी माता के पास लेगई तब कीर्तिने उसपर क्रोध करके उसे अपने पास बैठाल रक्खा व फिर केशवमूर्तिके पास नहीं जाने दिया शुकदेवजीने कहा हे राजन् इधर श्यामसुन्दर पहाड़को उठाकर व्रजवासियोंकी रक्षा करते थे व उधर राजा मेघ मूसलधार पानी व पत्थर बरसाता था व बिजुली चमकने से आंख सबकी ढँपजाती थीं व सुदर्शनचक्र इस फुरती से चारोंतरफ गोवर्धन पहाड़के घूमकर सब पानी को अपने तेजसे सोख लेता था कि एक बूंद पृथ्वी पर नहीं गिरता था राजा इन्द्र यह हाल सुनकर आपभी मेघराजकी सहायता करनेके वास्ते चढ़ आया व उसी तरह सात दिन व सात रात पानी बरसता रहा पर किसी जीवको कुछ दुःख नहीं होकर सब कोई आनन्द से गोवर्धन पहाड़के नीचे घरकी तरह बैठे रहे व श्यामसुन्दर हरसाइत प्रेमपूर्वक गोप व गोपियों से पूंछते थे कि हमारे माता व पिता व सखालोग किसतरह हैं कुछ शोच न करैं व वे लोग उत्तर देते थे कि सब कोई तुम्हारी कृपा व दयासे आनन्दपूर्वक रहकर पानी व बदली का कौतुक देखते हैं सात दिन तक हरसाइत सब व्रजवासी केशवमूर्तिका अमृतरूपी मुखारविन्द आंखों से पीते थे इसलिये किसीको कुछ भूख व प्यास नहीं लगी जब मेघराजाका सब पानी चुकगया तब उसने यह हाल इन्द्रसे कहा वह मेघराजाकी बात सुनतेही बहुत लज्जित होकर उन लोगों समेत अपनें स्थानपर चला गया जब इन्द्रने यह सब हाल देवतों से कहा तब देवता बोले ॥

दो० तुमजानतप्रभु भूमि जब दुखित पुकारीजाय। कहेउलेन अवतार तब सोइ विहरतव्रजआय ॥
सो० कहेउ इन्द्र पछताय मैं भूल्यों जान्यों नहीं। कीन्हीं बहुत ढिठाय भयकारि मन व्याकुल भयो ॥

हे राजन् देवतोंका वचन सुनने व ऐसी ऐसी महिमा श्रीकृष्णजीकी देखने से इन्द्रको विश्वासहुआ कि नंदलाल आदिपुरुषका अवतार हैं नहीं

तो दूसरे को क्या सामर्थ्यथी जो पहाड़को अपनी अंगुलीपर उठाकर व्रजमण्डलकी रक्षा करता ऐसा विचार कर इंद्र अपने कर्तबको शोच करके पछताने लगा व जब मेघों के चले जाने से वर्षा बन्द होकर धूप निकल आई तब व्रजवासी बोले हे व्रजनाथ तुम्हारे डरसे सब मेघराजा भाग गये अब गिरि अपनी अंगुलीपरसे उतार दीजिये यह वचन सुनकर मोहन प्यारेने गोवर्धन पहाड़को उसी स्थानपर रखदिया उससमय देवतोंने आकाश से उनपर फूल बरसाये व अप्सरोंने अपने विमानों पर से नाच दिखलाकर गंधर्वोंने गाना सुनाया और ऋपीश्वरोंने स्तुति किया व यशोदाने केशवमूर्तिको गोदमें उठाकर बड़े प्रेमसे मुख उनका चूम लिया व उनका हाथ व अँगुली बारम्बार मलकर चटकाने लगी व रोकर अपने प्राणप्यारेसे पूछा हे बेटा सात दिनतक पहाड़ अंगुलीपर उठावनेसे तेरा हाथ दुखता होगा तब नंदलालजी बोले हे मैया गोवर्धन पहाड़ अपनी प्रसन्नतासे तुम लोगोंकी रक्षा करने वास्ते छाया किये रहा मैं तरे अपनी अंगुलीका थोड़ासा आश्रय दिये था इस कारण मेरा हाथ कुछ नहीं दुखता व श्रीदामा आदिक ग्वालबालों ने मोहनप्यारेसे गले मिलकर पूछा हे भाई ऐसे कोमल हाथ पर तुमने किसतरह पहाड़ उठाया हमें बड़ा अचम्भा मालूम होता है श्यामसुन्दर बोले तुमलोग जो अपनी अपनी लकुटिया से पहाड़को उचकाये थे इसलिये मुझे उसका कुछ बोझा नहीं मालूम देता था व सब व्रजबाला मोहनमूर्तिकी महिमा देखकर बहुत प्रसन्न हुईं व उसी दिनसे श्रीकृष्णजीका नाम गिरिधारी प्रकट हुआ और उस समय नन्दकिशोरने व्रजवासियों से कहा ॥

दो० अब गिरिको पूजौ बहुरि सबसे कहेउ सुनाय। बूड़तते राख्यो व्रजहि कीन्हीं बहुत सहाय ॥

सो० यहसुनि हर्षनंदराय फिरि पूज्यो गिरिको सबन। अतिहर्षित नँदराय दियोदान विप्रन बहुत ॥

दो० दूर भयो दुख शोच सब प्रगटो तब आनंद। नंदसंग घरको चले माखन प्रभु व्रजचंद ॥

नंदजी श्याम व बलराम व सब व्रजवासी व गायोंसमेत आनन्दपूर्वक अपने अपने स्थान पर आये ॥

दो० घरघर व्रज आनंद सब गावत मंगलचार। आये सुरपति जीति हरि गिरिधर नंदकुमार ॥

छब्बीसवां अध्याय।

ब्रजवासियों का श्यामसुन्दरकी स्तुति करना॥

शुकदेव मुनि ने कहा हे राजन् जब नंदलालजीने गोवर्धन पहाड़ उठाकर ऐसी महिमा अपनी दिखलाई तब सब गोप व ग्वाल आश्चर्य मानकर आपसमें कहने लगे उठावना पहाड़का जिसतरह हाथी कमलके फूलको उठा लेवे मनुष्यका काम नहीं है सो आठ वर्षकी अवस्थामें नंद-किशोरने इतना भारी पहाड़ अपनी अँगुली पर उठाकर सात दिन बराबर खड़े रहे ये परमेश्वरका अवतार मालूम होते हैं जिन्होंने महाप्रलयके जल बरसनेसे ब्रजवासियों का प्राण बचाया इनको हमलोग किस तरह नंदजीका पुत्र कहैं लड़का अपने माता व पिताके स्वभाव पर उत्पन्न होता है सो नंद व यशोदा में ऐसा पराक्रम नहीं है जो श्रीकृष्ण ऐसा प्रतापी पुत्र उनसे उत्पन्न हो इससे मालूम होता है कि यशोदासे किसी देवता या दैत्यने भोग किया होगा इसलिये ऐसा बलवान् व प्रतापी पुत्र उसके उत्पन्न हुआ है नन्दरायके वीर्यका यह बालक नहीं मालूम होता सो नन्द व यशोदा को जातिसे बाहर किया चाहिये ऐसा विचारकर उपनन्द आदिक सब ग्वाल इस बातकी पंचाइत करने वास्ते नंदजी के स्थान पर गये व उसमें जो लोग बड़े थे उन्होंने पहिले नन्द व यशोदासे बहुत स्तुति केशवमूर्तिकी करके कहा हे नन्दराय श्रीकृष्ण परमेश्वरकी कृपासे सर्वदा अमर रहैं जो विपत्तिमें हमारी रक्षा करते हैं परन्तु तुम्हारे पुत्र ये हमको नहीं मालूम होते किसवास्ते कि जब ये बहुत छोटे थे तब इन्होंने पूतना राक्षसी को दूध पीते समय मार डाला व एक वर्षकी अवस्था में तृणावर्तको मार गिराया और जब यशोदाने इनको ऊखलमें बांधा तब इन्होंने यमलार्जुन दोनों वृक्ष जड़से उखाड़ डाले व वत्सासुर व बकासुर व अघासुर राक्षस को मारकर कालीनाग को यमुनाजल से बाहर निकाल दिया व धेनुक व प्रलम्ब राक्षसको मारकर ब्रजवासियों को अग्निमें जलनेसे बचाया व इतना भारी पहाड़ कुकरौंधे के समान पृथ्वी पर से उखाड़ कर अपनी अँगुलीपर उठालिया व महाप्रलय के जल से

ब्रजवासियोंकी रक्षा करकेइन्द्रका अभिमान तोड़ा व जितनी प्रीति मोहन-प्यारे में हमलोगोंकी रहती है उतनी हम अपने प्राण व बेटी व बेटेमें नहीं यह सब आश्चर्यकी बातें देखने से हमलोगोंको उत्पन्न होना श्यामसुन्दर का तुम्हारे वीर्य से विश्वास नहीं आता सो तुम सच बतलाओ यशोदाने कौन देवता या दैत्यके वीर्य से उनको उत्पन्न किया है जो वे ऐसे प्रतापी बलवान् परमेश्वर के अवतार समान होकर लीला करते हैं नहीं तो हम लोग तुम्हें जाति से बाहर निकाल देवेंगे ॥

दो० मालिक तीनोंलोकके तुम्हरो पुत्र न होय । जन्म मरण जाको नहीं माखनप्रभु हैं सोय ॥

यह वचन अपने जातिभाइयोंका सुनतेही नन्द व यशोदाने घबराकर कहा सुनो भाइयो श्रीकृष्ण मेरा बेटाहै इसमें कुछ सन्देह मत समझो पर जो हाल गर्गजी मथुरासे आनकर कहगये हैं उसमें एक बात मैंने छिपाई थी सो आज कहताहूं गर्ग मुनिने केशवमूर्ति के नामकरणके समय ऐसा कहा था कि तुम इन्हें अपना जना हुआ मत समझो तुम्हारे पिछले जन्म के तप करने से परब्रह्म परमेश्वर अवतार लेकर यहां आये हैं प्रतिदिन अपनी लीला ये तुमको दिखलावेंगे ये सब बातें अब हमको आंखों से दिखलाई देतीहैं सो मैंभी विश्वास करके जानताहूं कि मेरा बेटा परमेश्वर का अवतारहै किसवास्ते कि जो जो काम श्यामसुन्दरने किये हैं वह मनुष्य नहीं करने सक्ता व इन्होंने जन्म व मरण से रहित होकर केवल पृथ्वीका भार उतारने व हरिभक्तोंको सुखदेनेवास्ते अपनी इच्छा से अवतार लिया है व जन्म व मरण तीनों लोकके जीवोंका यह अपने अधीन रखते हैं व गर्गजीने यह भी कहा था कि एकबेर इन्होंने वसुदेवजीके यहां जन्म लियाहै इसलिये इनका नाम वासुदेवभी प्रकट होगा और ये शोच व दुःख गोप ग्वालोंका निवारण करेंगे जो कोई इनका दर्शन करैगा या इनकी लीला व नामकी चर्चा आपसमें रखकर इनके चरणों में ध्यान लगावेगा उसे निस्सन्देह मुक्ति मिलैगी ॥

दो० माखनप्रभु घनश्यामको जो चित धरिहैं नाम । प्रेमभक्तिके धाम में नित करिहैं विश्राम ॥

पिछले युगोंमें इनका रंग श्वेत व लाल था इसबेर श्यामरूप से इन्होंने

अवतार लिया है जब यह बात सुनकर ब्रजवासियों के मनका सन्देह मिटगया तव उन्होंने श्रीकृष्णजीको आदिपुरुषजानकरबड़ी भक्ति व प्रीति से उनकी पूजा की व बड़ाई भाग्य नन्द व यशोदाकी करने लगे और आगे जो जो बात श्यामसुन्दरकी बालकलोग कहते थे वह किसीको विश्वास नहीं होता था सो उन बातों को सबोंने सच जाना ॥

दो० जो माखनप्रभुकी कथा कहै सुनै दे चित्त । प्रेम नेमको पद लहै रहै क्षेमसों नित्त ॥

सत्ताईसवां अध्याय ।

इन्द्रका श्रीकृष्णजीकी शरणमें आना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित इन्द्रने श्यामसुन्दर के साथ ढिठाई करने से बहुत लज्जित होकर मनमें कहा देखो मैंने क्या बुरा काम किया जो पूर्णब्रह्म को मनुष्य समझकर उनसे वैर बढ़ाया अब वहां चलकर उनसे अपना अपराध क्षमा कराऊं जिसमें मेरा कल्याणहो ऐसा विचारतेही राजा इन्द्र ऋषीश्वरों को साथ लेकर ऐरावत हाथीपर चढ़ा व अपना अपराध क्षमा कराने वास्ते कामधेनु गौको आगे लिये हुये वृन्दावनको चला जब नन्दलालजी अन्तर्यामीने जो वनमें गौ चराते थे जाना कि इन्द्र अपना अपराध क्षमा करानेवास्ते देवतोंसमेत मेरे पास आवताहै तव ग्वालबालों से अलग होकर एक ओर वनमें जा बैठे जब राजा इंद्रने वहां आनकर मुरलीमनोहर को दूरसे बैठे देखा तब हाथीपरसे उतर पड़ा और देवतोंको साथ लिये व कामधेनुको आगे किये नंगे पावँ गले में डुपट्टा डाले व दांतों में तिनुकादाबे साष्टांग दण्डवत् करता व कांपताहुआ श्रीवृन्दावनविहारी के चरणोंपर जाकर गिरपड़ा व बड़ी अधीनतासे रोकर विनय किया हे दीनानाथ निरंजन व निरंकार मेरी हजारों दण्डवत् आपको पहुँचें मैंने अपनी अज्ञानतासे आपको मनुष्य समझकर तुम्हारी परीक्षा ली थी सो अपने किये को पहुँचा जिसतरह अज्ञान बालक शीशे में अपनी परिछाहीं देखकर उसे पकड़ना चाहताहै व धर नहींसक्ता उसीतरह जो कोई तुम्हारा भेद जाना चाहै उसे अज्ञान बालक के समान समझना चाहिये वही हाल मेरा हुआ जहां ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व ऋषीश्वर तुम्हारे भेद

व बड़ाई को पहुँचने नहीं सके वहां मेरी क्या सामर्थ्यहै जो आपकी महिमा जानने सकूं मैंने राज्य व धनके अभिमान से अन्धा होकर व्रजवासियों का प्राण मारनेवास्ते महाप्रलयका पानी व्रजमण्डलपर वरसाया था सो आपने गोवर्धन पहाड़ उठाकर उन लोगोंकी रक्षा की व मेरे अहंकारको तोड़ दिया मैं अपने कर्तबसे बहुत लज्जित होकर अपना अपराध क्षमा करानेवास्ते कामधेनु गोके पीछे पीछे तुम्हारी शरण आयाहूं सो हे व्रजनाथ मुझ अज्ञानका अपराध दया करके क्षमा कीजिये किसवास्ते कि आप सबके ईश्वर व गुरु व परमात्माहैं सिवाय तुम्हारे दूसरा कोई मालिक तीनों लोक में नहीं है व ब्रह्मा व महादेवभी तुम्हारी दी हुई बड़ाई पाकर दिन रात आपके चरणों का ध्यान अपने हृदयमें रखतेहैं व आप सब जगतके पिता व उत्पन्न व पालन करनेवाले होकर लक्ष्मीजी तुम्हारे चरणोंकी दासी हैं और आपने वास्ते भार उतारने पृथ्वी व रक्षा करने हरिभक्त व मारने दुष्ट व अधर्मियोंके अपनी इच्छासे अवतार लिया है और जब जब पृथ्वी अधर्मी लोगोंके पाप करने में दुःखी होती है तब तब आप सगुण अवतार लेकर पृथ्वीका भार उतारते हैं और मैं भी आपकी कृपा व दया से देवलोक का राजा हुआहूं पर तुम्हारे भेदको नहीं जानता दूसरेकी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा जाननेसके और यह अपराध मेरा बड़ा दण्ड करने योग्य है पर आप ऐसे दीनदयालुहैं कि जो मनुष्य तुम्हारी शरणमें आया वह कैसाही अपराध किये हो क्षमा कर देते हो व दूसरे ऋषीश्वरोंका अपराध करनेवाला अपने दण्डको पहुँचताहै मुझे इस अपराधनेभी तप व जपका फल दिया जिसके कारण तुम्हारे चरणोंका दर्शन पाया दया करके मेरा अपराध क्षमा कीजिये ॥

सो॰ कहत बिहारी वार तुम गति अगम अगाध प्रभु। मैं भूल्यों संसार जान्यों व्रजअवतार नहिं॥
दो॰ माखनप्रभु सन्मुख भये सदा सबै सुख होय। जो यह सुखसे है विमुख भव दुख पावै सोय॥

व कामधेनु गोने मुरलीमनोहरके सामने हाथ जोड़कर विनय किया हे कमलनयन मैं ब्रह्माकी भेजी हुई तुम्हारे पास आईहूं छोटोंका अपराध बड़े लोग सदा से क्षमा करते आये हैं सो आप दीनदयालु कृपालु होकर

इन्द्रका अपराध जो तुम्हारी शरण आयाहै क्षमा करदीजिये व तीनों लोक में किसे सामर्थ्य है जो तुम्हारे भेदको पहुँचने सके और आप सर्व गौ व जीवोंके मालिकहैं इसलिये मैं अपने दूधसे तुम्हें स्नान कराने आईहूं व ऐरावत हाथी अपनी शुण्डमें आकाशगंगाका जल भरकर तुम्हारे स्नान करानेवास्ते लायाहै आज्ञा हो तो स्नान करावैं जब राजा इन्द्र व कामधेनुने बड़ी आधीनतासे यह स्तुति गिरिधर महाराजकी की तब कृपानिधानने दयालु होकर कहा हे इन्द्र तू कामधेनु गौको अपने आगे लेकर हमारी शरणआया इसलिये मैंने तेरा अपराध क्षमा किया सुनो अभिमान करनेसे धर्म छूटकर शरीरमें अज्ञान आवताहै व मूर्खताई करने से पीछे सिवाय दुःख के सुख नहीं मिलता व मनुष्यलोग थोड़ासा भी हाकिमी व धन पावनेसे अपने को भूल जाते हैं तुम तौ अर्व सर्वसे अधिक धन व इन्द्रासनका राज्य रखते हो तुमने ऐसा किया तौ कौन बड़ी बातहै और मैंने दयाकी राह राज्य व धनका अभिमान तोड़ने वास्ते तेरा यज्ञ बन्द कराके गोवर्धनपहाड़को पुजवाया था जिसपर मेरी कृपा होती है उसका अहंकार मैं तोड़देता हूं॥

दो० व्याकुल देखि सुरेश अति दीनबंधु यदुराय। अभय कियो कर माथ धरि भुज गहि लियो उठाय॥
सो० लीनो हृदय लगाय देखि दीनता इंद्रकी। शिर नहिं सकत उठाय बारबार परसत चरण॥

जब केशवमूर्तिने इन्द्रका मस्तक अपने चरणपरसे उठाकर उसको बहुत धैर्य दिया तब इन्द्रने प्रसन्न होकर विनय किया॥

दो० धन्य बड़ाई नाथकी हौं अनाथ भ्रम साथ। कमल हाथ प्रभु माथ धरि कीन्हों मोहिं सनाथ॥

फिर कामधेनु गायने अपने दूध व ऐरावतने गंगाजलसे श्रीकृष्णजी को स्नान कराया व राजा इन्द्रने चरण उनका धोकर चरणामृत लिया व पूजा उनकी धूप दीप नैवेद्य आदिकसे विधिपूर्वक की व कामधेनुने मनहरण प्यारेको गोविंदनाम पुकार कर चौदहों भुवनका राजा कहा उस समय देवतोंने श्यामसुन्दरपर फूल बरसाये व नारद मुनि आदिक ऋषीश्वरों ने प्रसन्न होकर स्तुति की व अप्सराओं ने अपने अपने विमानोंपर नाच दिखलाकर गंधर्वों ने गाना सुनाया व सब पृथ्वी में फूल लगकर

यमुनाजल प्रसन्नतासे लहराने लगा उससमय तीनोंलोकमें इस तरहका आनंद होगया जिसतरह श्यामसुंदरके अवतार लेनेके समय चौदहों भुवनमें खुशीहुई थी व पूजा करने उपरांत जब इंद्र वैकुण्ठनाथके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हुआ तब गिरिधारी महाराजने इंद्रसे कहा तुम कामधेनु गौसमेत अपने स्थानपर जाव फिर कभी मेरी लीला व कामों में अपना प्रवेश मत करना सो इंद्र व कामधेनु व ऐरावत हाथी व देवता व ऋषीश्वर आदिक सबलोग केशवमूर्तिको दण्डवत्करके अपने स्थानपर चले गये॥

दो० माखनप्रभुके अंगपर वारत कोटि अनंग। सहसनयन देखत चले कामधेनु के संग॥

जब वृन्दावनविहारी इंद्रको बिदा करके सन्ध्यासमय ग्वालबाल व गौवों समेत मुरली बजाते व मधुर मधुर गावते हुये अपने घर आये तब नन्द व यशोदा व गोपियों ने मोहनीमूर्तिकी छवि देखकर अपनी आंखें ठंढी कीं हे राजन् यह गोविंद अभिषेककथा सुनने से अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थ मिलते हैं और ग्वालबालोंको इंद्रके आनेका हाल कुछ नहीं मालूम हुआ॥

अट्ठाईसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका वरुणलोकमें जाना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् कार्त्तिक सुदी दशमीको नन्दजीने सन्ध्या करके एकादशीव्रत निर्जल रक्खा सो दिनभर पूजा व भजनमें बिताकर रातको जागरण किया दूसरे दिन केवल एक घड़ी द्वादशी थी इसलिये पारण करना व्रतका द्वादशीमें अवश्य जानकर पहर रातिरहे नन्दजी उठे व उसी समय अकेले यमुना स्नान करने चलेगये जब यमुनाजलमें स्नान करने पैठे तब जलकी रखवारी करनेवालों ने जाकर वरुणदेवतासे कहा महाराज एक मनुष्य यमुनाजलमें नहाताहै यह बात सुनतेही वरुणने आज्ञा दी उसे जाकर पकड़लावो सो दूतलोग नन्दजी को यमुनाजलमें जप करते हुये नागफांस में बांधकर लेगये उससमय नन्दजी ने श्याम व बलरामका नाम लेकर बहुत पुकारा पर उन्होंने कुछ नहीं माना॥

दो० जलके नीचे ठांव है जहां वरुणको वास। माखनप्रभुके तातको लैराख्यो तिन पास॥

जब नंदजी वरुणदेवताके पास पहुँचे तब वरुण उनको वैकुण्ठनाथ का पिता पहिचानतेही यह समझकर बहुत प्रसन्न हुआ कि श्रीकृष्णजी अंतर्यामी अपने पिताको लेनेवास्ते अवश्य यहां आवेंगे तो इसी बहाने उनका दर्शन मिलैगा ऐसा विचार कर वरुणदेवताने नंदजीको अपने महलमें लेजाकर सन्मानपूर्वक बैठाला व एक सिंहासन बहुत उत्तम श्यामसुंदरके वास्ते बिछाकर उनके आनेकी आशा देखने लगा व वरुण की स्त्रियोंने नंदरायकी स्तुति करके कहा हे नंदजी तुम्हारा बड़ा भाग्यहै जो सच्चिदानंद परमेश्वर तुम्हारे पुत्र कहलातेहैं यहां तो नंदरायका आ-दरभाव देवकन्या करती थीं और वहां जब नंदजी स्नान करके घर नहीं आये तब यशोदाने घबराकर ग्वालोंको उनकी सुधि लेने वास्ते यमुना किनारे भेजा जब ग्वालोंने उनको वहां न देखकर धोती व झारी उनकी उठा लाये तब यशोदा रोकर कहने लगी रातको नहाते समय कोई घड़ि-याल आदिक उनको खागया होगा ॥

दो॰ अतिव्याकुल यशुमति भई उठी रोय अकुलाय। सुनि धाये व्रजलोगसब नंदहि खोजतजाय ॥

सो॰ यमुनातट पुनि नांव नंदनंद टेरत सबै। ढूंढ़ि फिरे सब ठांव भये बिकल व्रजलोग सब ॥

हे राजन् जब ग्वालों के ढूंढ़ने पर भी नन्दजी का पता कहीं न लगा तब यशोदा व रोहिणी आदिक अति विलाप से रोने लगीं उस समय श्यामसुन्दरने यशोदासे कहा अय मैया तू मत रो मैं अभी जाकर नन्द बाबाको ढूंढ़ लाताहूं जब उनके कहने से यशोदा आदिक को कुछ धैर्य हुआ और वैकुण्ठनाथ अन्तर्यामी ने जाना कि नंदजी को वरुणदेवता के दूत पकड़ ले गये हैं और वरुण मेरे दर्शनों की इच्छा से नंदजी को बैठाले हैं तब वरुणलोक में चले गये उस समय मुखारविंद उनका सहस्र सूर्य के समान चमकने लगा जब वरुणदेवता ने श्रीकृष्णजी को आते देखा तब देवता व ऋषीश्वरों समेत दण्डवत् करता हुआ आगे से गया और राहमें पीताम्बर बिछावता हुआ बड़े आदर भावसे अपने घर लिवा लाया व रत्नजड़ित सिंहासन पर बैठाकर चरण उनका धोया व चरणामृत लेकर विधिपूर्वक उनका पूजन किया ॥

दो० धूप दीप नैवेद्य करि प्रभु पर पुष्प चढ़ाय। करी आरती प्रेमसों घंटा शंख बजाय ॥
सो० प्रभु पद नायो माथ करि प्रदक्षिणा दण्डवत। तुम त्रिभुवनके नाथ जोरि हाथ अस्तुति करत ॥

हे महाप्रभु आज मेरा जन्म सफल हुआ जो आपने दया की राह कृपा करके अपने चरणों का दर्शन दिया व इसी लाभ वास्ते मैं नन्दजी को अपने यहां बैठाले रहा नहीं तो उसी क्षण उनको स्थान पर पहुँचा देता हम लोग आपको तीनों लोक का पिता जानकर तुम्हारा बाप किसी को नहीं समझते मेरे दूत नन्दजी को नहाते समय अनजान में यहां पकड़ लाये थे सो उन्होंने दण्ड पाने योग्य अपराध किया पर मैंने उनका बहुत गुण माना जिस कारण आपका दर्शन मुझे प्राप्त हुआ मेरी दण्डवत् आप व नंदराय को पहुँचे ॥

सो० मैं कीन्हों अपराध सो प्रभु उर नहिं लाइये। तुमहो सिंधुअगाध क्षमाकरो निज जानिजन॥

व वरुण की स्त्रियों ने दण्डवत् करने उपरांत हाथ जोड़कर मुरली-मनोहरसे कहा नंद व यशोदा व व्रजवासियों का बड़ा भाग्य है जिनके यहां परब्रह्म परमेश्वर लीला करतेहैं व्रजगोकुलकी बड़ाई कोई वर्णन नहीं कर सक्ता फिर वरुण देवता नंदराय को श्यामसुन्दर के पास लेआये तब वह उन्हें देखते ही प्रसन्न होगये ॥

सो० हर्ष उठे नँदराय देखि श्याम को शिशुवदन। लखि उनकी प्रभुताय रहे मुदित चकित हिये ॥

जब नन्दजी ने मोहनप्यारे की महिमा इस तरह पर देखी कि देवता लोग अपना शिर उनके चरणों पर धरके स्तुति करते हैं तब वह मन में कहने लगे मेरा बड़ा भाग्य था जो वैकुण्ठनाथने मेरे यहां अवतार लिया जब वरुण देवताने बहुतसे मणि व रत्नादिक श्यामसुन्दर व नंदराय को भेंट देकर अपराध अपना क्षमा कराया तब केशवमूर्ति नन्दजी समेत अपने स्थान पर आये उस समय यशोदा आदिक व्रजवासियों को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ और यशोदा ने नंदराय से कहा तुम मेरे बरजने परभी रात को नहाने चले गये थे सो परमेश्वर ने आज तुम्हारा प्राण बचाया नंदराय बोले अरी बावरी तू क्या पछताती है मैं त्रिलोकीनाथ का पिताहूं मुझे कोई नहीं दुःख देसक्ता फिर नन्दजीने बहुतसा दान व दक्षिणा दिया

व यशोदा ने अपने जातिभाइयों में मिठाई बटवा कर खुशी मनाया जब उपनंदादिक ने भेंट करने वास्ते आनकर नंदराय से पूछा तुमको कौन पकड़ लेगया था तब नन्दजी बड़े हर्ष से बोले मुझे वरुण देवता के दूत रात को नहाते समय पकड़ ले गये थे सो मोहनप्यारे के पहुँचतेही सब देवतोंने चरणोदक लेकर उनका पूजन किया बड़े भाग्य से परब्रह्म परमेश्वरने मेरे घर अवतार लिया है जिनके प्रताप से देवतों का दर्शन मैंने पाकर रत्नादिक भेंट उनसे लिया जो बात गर्गमुनि कहि गये थे वह सब आंखों से देखा ॥

दो० नंद कहत हरिनेह में हम लेहैं वह धाम। जन्म मरण जहँ भय नहीं रहत सदा विश्राम ॥

यहसुनकर व्रजवासियोंने कहा हे नंदराय हम लोग उसी दिन श्रीकृष्णजी को परमेश्वरका अवतार समझे थे जिस दिन उन्होंने गोवर्धन पहाड़ उठाकर व्रजमण्डलकी रक्षाकी थी हमारे तुम्हारे पिछले जन्मके पुण्य सहाय हुये जो सच्चिदानंद परमेश्वर ने तुम्हारे यहां अवतार लिया ऐसा कह कर वृन्दावनवासी केशवमूर्ति के पास चले गये व हाथ जोड़कर विनय किया हे महाप्रभु आज तक हम लोग तुम्हारी महिमा न जानकर अपने अज्ञान से तुमको नंद महर का पुत्र समझते थे अब हमें विश्वास हुआ कि आप आदिपुरुष सब जगत् के उत्पन्न करने व सुख देने व दुःख हरनेवाले त्रिलोकीनाथ हैं इसीतरह बहुत स्तुति करके उन्होंने मन में विचारा जिस तरह मुरलीमनोहर ने अपने पिता को वरुणलोक दिखलाया उसीतरह हमलोगों को भी वैकुण्ठ का दर्शन कराते तो अच्छा होता नन्दकुमार अन्तर्यामीने उनकी यह इच्छा जान कर रात को जब सब व्रजवासी सोये तब लोगोंपर अपनी माया ऐसी फैलादी कि उन्हें दिव्यदृष्टि होकर स्वप्न में इसतरह पर वैकुण्ठ का दर्शन हुआ कि वहां पृथ्वी सोने की होकर सब स्थान रत्नजड़ित बने हैं व बहुत उत्तम उत्तम तड़ाग व बाग आदिक बने होकर सब स्त्री व पुरुष महासुन्दर भूषण व वस्त्रसंयुक्त चतुर्भुजी दिखलाई दिये व एक बहुत बड़े उत्तम स्थान में रत्नजड़ित सिंहासन पर श्यामसुंदर को चतुर्भुजी स्वरूप से लक्ष्मीजी समेत बैठे व पार्षदों को चारों ओर खड़े

व अप्सराओं को उनके सामने नाचते व गंधर्वों को गावते व वेदों को अपना रूप धारण किये व तेंतीस करोड़ देवतों को उनके सम्मुख हाथ जोड़कर स्तुति करते हुये देखा यह सुख वैकुण्ठ का देखकर ब्रजवासियोंने चाहा कि हमलोग मोहनप्यारे के सिंहासनके पास जाकर उनसे कुछ बातें करैं पर किसी ने उनको वहां तक जाने नहीं दिया तब ब्रजवासियों ने मनमें कहा इस वैकुण्ठ से हमारा वृन्दावन बहुत अच्छा स्थान है जहां दिन रात ब्रजनाथजी के साथ रहकर उनसे हँसते खेलते हैं यहां तो उनके सिंहासन तक भी कोई हमको जाने नहीं देता ॥

दो० अकुलाने दृग सबन के देखनको तेहिकाल। मोरपंख माथे धरे मुरलीधर गोपाल ॥

सो० ब्रजवासिनको ध्यान नटवरवेष गोपाल को। अमितरूप भगवान तदपि उपासन रीति यह ॥

हे राजन् जैसे ब्रजवासियों ने ध्यान नटवररूप मोहनप्यारे का किया वैसे उनकी निद्रा खुल गई तब वह लोग अपने अपने घरसे उठकर केशवमूर्ति के पास चले गये व वैकुण्ठनाथका दर्शन करने से उनके हृदय में ज्ञान उत्पन्न हुआ तब सब ब्रजवासी नन्दकिशोर के चरणों पर गिरपड़े व हाथ जोड़कर इसतरह पर उनकी स्तुति करनेलगे हे दीनानाथ तुम्हारी महिमा अपरम्पार है हमलोग ऐसी सामर्थ्य नहीं रखते जो उसकी बड़ाई करसकैं परन्तु तुम्हारी कृपासे आज हमको इतना मालूम हुआ कि आप परब्रह्म परमेश्वर हैं व पृथ्वीका भार उतारनेवास्ते तुमने जन्म लिया यह बात सुनतेही श्यामसुन्दरने फिर अपनी माया उनपर ऐसी फैलादी कि वह ज्ञान भूल कर उन्होंने इस बातको स्वप्ने के समान समझा और सब ब्रजवासी प्रसन्न होकर अपने अपने घर चले आये ॥

दो० श्रीवैकुंठ दिखायके माखनप्रभु ब्रजराय। निज माया विस्तारके दीन्हें गोप भुलाय ॥

व नन्दजीनेभी वरुणलोक में जानेका हाल स्वप्नवत् समझकर केशवमूर्ति को अपना पुत्र जाना वह सब ब्रह्मज्ञान उनको भूल गया ॥

दो० करतचरित्र विचित्रप्रभुब्रजवासिनकेमाहिं। लखिलखिशिवब्रह्मादिसुरमुनिजनमनहिंसिहाहिं

सो० अतिआनँदब्रजलोगहरिकेनितनवचरितलखि। सबकोसबसुखयोग ब्रजवासीप्रभुनन्दसुत ॥

हे राजन् श्यामसुन्दर अंतर्यामीने गोपियोंका सच्चाप्रेम देखकर श्रीदामा

आदिक अपने सखोंसे कहा सब व्रजबाला सोलहों शृंगार किये वृन्दावनकी राहसे मथुरामें गोरस बेंचने जाती हैं सो वनमें रोंककर उनसे दूध दही का दान लेना चाहिये ॥

सो० अब इनसंगविहार करो दानदधि लाइकै । यह मन कियो विचार हरि व्रजमोहन लाड़िले ॥

जब यह सम्मत ग्वालबालोंने प्रसन्न किया तब नन्दलालजी श्रीदामा आदिक पांचहजार सखा समेत प्रातःसमय बीच वन के जाकर वृक्षोंके ओटमें छिप रहे और उसी समय सब व्रजबाला सोलहों शृंगार किये मथुरा को गोरस बेचने चलीं ॥

दो० हँसत परस्पर आपमें चली जायँ सब भोर । पाइ घातमें सखन तब घेर लई चहुँओर ॥
सो० देखि अचानक भीर चकितरहीं चहुँदिशि चितै । सहमीकछुकशरीर कितते आये ग्वाल सब ॥

उस समय नंदकुमारने व्रजबालोंसे कहा तुमलोग नित्य गोरस बेंचने जाती हो सो हमारा दान देदेव तब जाने पावोगी यह वचन सुनकर गोपियां बोलीं दण्ड लेना राजोंका धर्म है हम और तुम दोनों राजा कंस की प्रजाहैं तुम क्यों हमसे दण्ड मांगते हो नंदजी तुम्हारे पिताने आजतक कभी ऐसी बात नहीं की कलहकी बातहै तुम गोरस हमारा चुराकर खाते थे और जब कोई पकड़ता था तब रोकर भागजाते थे आज वनमें स्त्रियों को घेरकर राह लूटते हो यह बात अच्छी नहीं है ॥

चौ० चोरी करि नहिं पेट अघायो । अब वन में दधिदान लगायो ॥

यह सुनकर केशवमूर्तिने कहा तुमलोगोंने लड़कपनमें हमको बहुत खिझाया था अब हम सयाने हुये विना दण्ड लिये नहीं जाने देवेंगे ॥

दो० तबतो हम लड़काहते सहीबात अनजान । अब सूधे कहुँ समुझिके छांड़िदेहु अभिमान ॥
सो० हम मांगत दधिदान तुम उलटीपलटी कहत । करत नन्दकी आन विना दिये नहिं जाइयो ॥

यह सुनकर गोपियोंने कहा कदाचित् तुम दही व दूधके भूखे हो तो थोड़ा थोड़ा हमसे लेकर खालेव पर दान हमसे नहीं दिया जायगा छोटमुख बड़ी बात कहना अच्छा नहीं होता अभी हमलोग राजा कंसके पास जाकर यह हाल कहें तो वह तुमको पकड़कर दण्ड दे हम कौनसा लवँग व इलायची लादे हैं जो तुमको दण्ड दवें ॥

सो० लेव दही बलिजाउँ हमको होत अबेर अब । लिये दानको नाउँ एक बूंद नहिं पाइहौ ॥

यह वचन सुनकर मोहनप्यारे बोले तुमलोग राजा कंससे मुझे क्या डरावती हो मैं उसको कुछ नहीं समझता सीधीतरह दान देवगी तो अच्छा है नहीं तो सब दूध व दही तुम्हारा छीनलूंगा तो रोती हुई यशोदा पास जावोगी बहुत दिनोंतक तुमने चोरीसे दान हमारा पचायाहै आज सब दिनकी कसर लेकर तुम्हें जाने दूंगा॥

दो० दान लगत यहँ श्यामको सो अब लेव चुकाय। तब मैं देहौं जान सब मोको नंद दुहाय॥
सो० दधि लेजात प्रभात आवतहौ निशि बेंचिके। दानमारि नित जात भलीकरत यह बात नहिं॥

यह बात सुनकर गोपियां बोलीं जो तुम्हारे बड़ोंने कभी नहीं किया वह करने लगे तो किसतरह हमलोगोंका यहां रहकर निर्वाह होगा॥

दो० हमैं कहत हौ चोट्टी आप भये हौ साह। बड़े भये चोरी करत अब लूटतहौ राह॥

यह बात सुनकर मोहनप्यारे बोले तुम्हारे धमकाने से मैं कुछ नहीं डरता तुम वृन्दावन छोड़कर चली जावगी तो क्या होगा मैं अपना दण्ड छोड़ दूं॥

दो० गांव हमारो छांड़िकै बसियो का पुर माहिं। ऐसो को तिहुँलोकमें जो मेरे वश नाहिं॥

हे राजन् इसीतरह कुछ देरतक सब व्रजबाला मोहनप्यारे से प्रकटमें झगड़ा करती रहीं पर अन्तःकरणसे उनकी छवि देखकर प्रसन्न होती थीं जब केशवमूर्ति ने सब गोपियोंका गोरस छीनकर ग्वालबालों समेत खालिया व वानरों को खिलाकर शेष पृथ्वी पर गिरादिया व मटुकी तोड़ कर वस्त्र उनका धक्काधुकी करके फाड़ डाला तब सब गोपियोंने यशोदाके पास जाके अपने फटे हुये वस्त्र दिखलाकर कहा तुमने अपने बेटेको अच्छा उद्यम सिखलाया है कि वह ग्वालबालोंको साथ लियेहुये वनमें सब गोपियों को रोककर दही व दूधका दान मांगते हैं हमलोगोंने नई बात समझकर दण्ड नहीं दिया इसीवास्ते सब गोरस हमारा छीन लिया व अञ्चल पकड़ कर वस्त्र हमारा फाड़ डाला आजतक तुम्हारे कुलमें कोई ऐसा नहीं हुआ था जिसने दही व दूधका दण्ड लिया हो॥

दो० सुनत ग्वालिनिनके वचन बोली यशुमति मात। मैं जानी तुम सबनके उर अन्तरकी बात॥

तुमलोग मोहनप्यारे का पीछा न छोड़कर उसे पापकी दृष्टिसे देखती

हो व अपने हाथ कपड़ा फाड़कर झूठा उलहना मुझे देने आवती हो ॥

दो० धन्य धन्य तुम कहत हो मोको आवत लाज। माखन मांगत रोय हरि दोष देत बिन काज ॥

यह बात सुनकर व्रजबालोंने कहा यशोदा माता तुम्हें ऐसा उचित नहीं है जो बिना समझे हमें दोष लगावती हो दश गौ अधिक रखने से तुम कुछ बढ़ नहीं गईं हम तुम जाति में बराबर हैं यह चलन तुम्हारा बेटा करैगा तो हम यह गांव छोड़कर निकल जावैंगी मोहनप्यारेका हाल तुम नहीं जानतीं जब वनमें चलकर देखो तब तुम्हें मालूम हो ॥

सो० सुनो महरि तुम बात हरि सीखे टोना कछू। वनहिं तरुण ह्वै जात बालक ह्वै आवत घरै ॥

यशोदाने उनको उत्तर दिया तुमलोग गांव छोड़नेके वास्ते मुझे क्या धमकाती हो जहां तुम्हारा मन चाहै वहां जाकर बसो तुम्हारे वास्ते मैं अपना बेटा नहीं निकाल देऊंगी ॥

दो० कहा करौं तुम आय सब कहतीं अटपट बात। मोको यह भावै नहीं तरुणिन इहै स्वहात ॥

यह बात सुनतेही व्रजबाला लज्जित होकर अपने अपने घर चली आईं और वृन्दावनमें यह चर्चा घरघर फैलगई कि नन्दकुमारने गोरसका दण्ड गोपियों पर लगायाहै यह सुनतेही सब व्रजबालोंको यह इच्छा हुई कि हम लोग भी दही दूध बेचनेके वास्ते जावैं तो नन्दकिशोरकी छवि वनमें देख कर अपनी अपनी आंखें ठण्ढी करैं जब दूसरे दिन राधा आदिक सोलह हजार गोपियां गोरस बेचने मथुराको चलीं तब मोहनप्यारेने सखा समेत जो वृक्षोंपर चढ़े हुये छिपे थे वनमें व्रजबालोंको घेरकर कहा आज दान देकर जाने पावोगी ॥

दो० हँसिबोली राधाकुँवरि कहा वनिज हमपास। कहो श्याम सो नाम धरि देहिं दान हमतास ॥

यह वचन अपनी प्यारीका सुनकर नन्दलालजी बोले आज तुम्हारे यौवनका दान लेऊंगा हे राजन् जब इसीतरह कुछ बेरतक सब व्रजबाला मोहनप्यारे से झगड़ा करती रहीं तब श्यामसुन्दरने ऐसी माया अपनी उनपर फैला दी कि सब गोपियां कामरूप मदमें मतवाली होगईं ॥

दो० व्याकुल ह्वै सब मदनमें नैनमूंदि धरिध्यान। कहत कान्ह अब शरण हम लीजै सर्बस दान ॥

सो० ऐसो कहि मन माहिं देहदशा भूलीं सबै। लहु श्याम बलिजाहिं यह धन तुम सब आपनो ॥

यह दशा गोपियोंकी देखकर वैकुण्ठनाथ भक्तहितकारीने उन लोगों

की इच्छा पूर्ण करने वास्ते अनेकरूप अपने जो किसीको दिखलाई न देवैं धारण करलिये व सबब्रजवालोंसे ध्यानमें भेंट करके कामरूपी रोग उनका छुड़ादिया तब उन्होंने हँसकर कहा हे प्राणप्यारे तुमने हमारे यौवनका दानभी लिया अब आज्ञा देव तो अपने अपने घर जावें यह वचन सुनकर केशवमूर्ति बोले तुम्हारे यौवनका दान मैंने पाया दही व दूधका दण्ड चुकादेव तो अपने अपने घर जाव यह वचन सुनते ही ब्रजबालोंने प्रसन्न होकर दही व दूध अपना श्यामसुन्दरको ग्वालबालों समेत खिला दिया पर मोहनप्यारेकी मायासे बर्तन उनका ज्योंका त्यों भरा रहा जिस समय गोपियां श्यामसुन्दरको ग्वालबालों समेत बैठाकर दही व दूध खिलाती थीं उससमय देवता लोग अपने अपने विमानों परसे यह आनन्द देख कर ब्रजबालों की बड़ाई करके कहते थे कि धन्यभाग ब्रजकी स्त्रियोंका है जिनसे परब्रह्म परमेश्वर त्रिलोकीनाथ गोरस मांगकर खाते हैं व गोपियां उनकी सेवा करके जन्म अपना स्वार्थ करती हैं दही खाती समय मन-हरण प्यारे बोले मैंने सबके गोरसका स्वाद पाया पर राधाप्यारीका दही नहीं चीखा यह वचन सुनतेही राधाने हँसकर अपना दही अपने हाथसे नन्दकिशोरके मुखमें खिला दिया ॥

सो० प्यारी को दधि खाय बोले यों मोहन विहँसि। मधुरे कहो सुनाय मीठो है यह सबनतें ॥

हे राजन् गोरस खाने उपरांत मोहनीमूर्तिने अपनी चितवनि व मुसुकान से उनका मन हरलिया और बोले आज अपना दान लेकर हम तुमसे बहुत प्रसन्न हुये इसलिये अब तुमसे घाट बाट पर कोई रोक नहीं करेगा अब अपने अपने घर जाव विलम्ब होने से तुम्हारे घरवाले चिन्ता करते होंगे यह वचन सुनकर गोपियों ने कहा हे मोहनप्यारे दान मांगती समय हमने तुमको कठोर वचन कहा है उसका अपराध क्षमा कीजिये और तुम्हारी मोहनीमूर्ति देखे विना हमैं चैन नहीं पड़ती घर किस तरह जावैं तुम्हारी प्रीति विना धन व परिवार सब वृथा है यह बात सुनकर नन्द-किशोर बोले मैं तुम्हारा ऐसा प्रेम देखकर एकक्षण तुमसे बिलग नहीं रहता व तुम्हारा कठोर वचन मुझे बुरा नहीं मालूम होता मैं तुम लोगोंको

प्रसन्न करने वास्ते वैकुण्ठ छोड़कर तुम्हारा दुर्वचन अपनी इच्छासे सुनता हूं तुमने अपना मन देकर मुझे पायाहै जब अपना चित्त मुझसे फेरलेवगी तब मैं तुमसे अलग हो जाऊंगा ॥

दो० तुमकारण वैकुण्ठतजि प्रकटतहौं व्रजआय । इंदावन तुम्हरो मिलन यह न बिसारो जाय ॥

ऐसा कहकर श्यामसुन्दर ग्वालबालों को साथ लिये हुये दूसरी ओर वनमें चले गये व सब व्रजबाला अपने अपने घर न जाकर बौरहोंकी तरह वृक्षोंसे पूछने लगीं तुम गोरस मोल लेवगे व कभी दही व दूधके बदले मोहनप्यारे व श्रीकृष्ण व नन्दलाल का नाम बेचने वास्ते पुकार कर कहती थीं ॥

दो० लीने गोरसदान हरि तुम कहँ रहे छिपाय । डरन तुम्हारे जात नहिं तुम दधि लेत छिनाय ॥
सो० लेहु आपनो दान तुम रिसकर उठि धाइहौ । हमैं न देइहौ जान बनमें हम ठाढ़ीं सबै ॥
दो० श्याम विना यह को करै लायो दधिको दान । तन सुधि भूली तबहिंसे बांकी मृदु मुसुकान ॥
सो० मन हरि लीन्हो श्याम ताविन बनिये कौनविधि । ऐसे कहिसब बाम घरको चलनविचारहीं ॥

हे राजन् इसी तरह विपरीत बातें कहती हुई गोपियां अपने अपने घर पहुँचीं पर रूप श्यामसुन्दर का आठों पहर उनके हृदय व आंखोंमें बना रहता था यह दशा देखकर घरवाले बहुत समुझाते थे पर कहना किसीका उन्हें अच्छा नहीं लगता था ॥

दो० प्रकट्यो पूरण नेह उर जित देख्यो उत श्याम । समझाये समझैं नहीं सिखदे थाक्यो ग्राम ॥
ऐसो सिखवत मातु पितु सो न करत कछु आन । लागतहैं तिनके वचन उरमें बाणसमान ॥
सो० उन्हें कहतमनमाहिं धिकधिक उनकी बुद्धिको । जिन्हेंश्याम प्रियनाहिं तिन्हैंवनेत्यागे भले ॥

हे राजन् श्यामसुन्दर राधाप्यारीपर लक्ष्मीजीका अवतार होनेसे अति प्रीति रखते थे इसलिये राधिकाभी उनके ऊपर अधिक मोहित रहकर जब दूसरे दिन गांवमें दही बेचने गई तब मटुकी शिरपर लिये चौगिर्द मकान नन्दजीके घूमकर बौरहोंके समान लोगोंसे पूछने लगी मेरा चित्त चुराने वाला नंदकुमार कहां बसता है मैं उसे बड़ी दूरसे ढूंढ़नेवास्ते आई हूं उस का घर इस गांव में है या नहीं ॥

दो० जिन्हें कहत मोहिं नंदघर कहां सो देव बताय । जहां बसत वह सांवरो मोहन कुँवर कन्हाय ॥

जब राधिका लज्जा छोड़कर दही के बदले नंदकुमार व नंदकिशोर व

श्रीकृष्ण व श्यामसुंदरका नाम पुकारने लगी तब यह दशा उसकी देख-कर गोपियोंने पूंछा हे राधिका तू क्या बेचती है राधा बोली ॥

दो० मोहनमूरति श्यामकी मोतन रही समाय । ज्यों मेंहदीके पातमें लाली लखी न जाय ॥

यह सुनकर एक सखीने कि वह भी केशवमूर्तिकी चाहना रखती थी कहा अय राधिका तू बुद्धिमान् होकर दूसरोंको ज्ञान सिखलावती थी सो आज क्या दशा हुई ऐसी निर्लज्जता करना तुझे न चाहिये इसमें सब गांववाली स्त्रियां तुझे गँवारी कहकर बदनाम करेंगी व तेरे माता व पिता सुनकर तुझको मारेंगे तू केशवमूर्ति ऐसे रूपवान् पुरुष को पाकर अपनी प्रीति क्यों प्रकट करती है ॥

दो० कृष्णप्रेमधन पाइके प्रकट न कीजै बाल । राखो यों उरगोइके ज्यों मणि राखत व्याल ॥

यह वचन सुनकर राधिका बोली तू मुझे क्यों समझावतीहै मेरा मन मोहनीमूर्तिने हरकर मेरे हृदयमें अपनावास करलिया इसलिये माधुरीमूर्ति देखे विना मुझे चैन नहीं पड़ती हाथ मेरा वशमें नहीं है घूंघुट कौन काढ़े यह बात सारे व्रजमें फैलचुकी कि मैं श्यामसुन्दरके हाथ बिककर उनकी दासी होगई ॥

चौ० मन मान्यो मोहनपर मेरो । जग उपहास करै बहुतेरो ॥

दो० बारबार तू कहत क्या मैं नहिं समुझत बात । मोहिं दृगनमें बसिगयो वा यशुमतिको तात ॥

सो० रहत न मेरी आन अपनीसी मैं कर थकी । तूतौ बड़ी सुजान कहा देत सखि दोष मोहिं ॥

हे सखी मैंने अपना प्रेम नन्दकिशोरसे लगाया इसलिये मुझे किसीकी लाज नहीं रही अब मेरे हृदयमें यह बात ठन गई जिसतरह दूध पानी में मिलजाता है उसी तरह नन्दलालसे मिलकर संसारमें श्याम व श्यामा अपना नाम धराऊं ॥

दो० मेरोमन हरिसँग लग्यो लोकलाज कुलत्याग । औरता हि सूझत नहीं भयो जहाजकोकाग ॥

हे सखी तू मेरी बड़ी प्यारी है कदाचित् तुझसे होसके तो दया करके मेरे चित्तचोर से भेंट करादे नहीं तो मेरा प्राण उसके विरह में निकलने चाहता है ऐसा कहकर राधा प्यारी अति विलाप करके पुकारने लगी हे यशोदा के लाल अपना दर्शन दिखलाकर दही का दान लेजाव अब तुम्हारे वियोगका दुःख मुझसे नहीं सहाजाता ॥

सो० ऐसे सखी सुनाय मौन गही पुनि नागरी। देहदशा विसराय मगन भई रसश्यामके ॥

जब उस सखीने देखा कि राधाप्यारीके रोम रोममें श्यामरूप वसिगया मेरा कहना व समझाना इसे कुछ गुण नहीं करता विना भेंट किये श्यामसुन्दर के इसका दुःख नहीं छूटेगा तब उस सखीने दयाकी राह केशवमूर्ति से जाकर कहा हे मोहनप्यारे एक सुन्दरी चन्द्रमासी गोरी नीली सारी पहिने मटुकी दहीकी शिरपर लिये तुम्हारा नाम लेलेकर चारों ओर पुकारती व ढूंढ़ती हुई अभी वंशीवटको चली गई है जल्दी जाकर उस विरहिनीकी अग्नि अपनी अमृतरूपी दृष्टिसे ठंडी करो नहीं तो वह आप के विरहमें बौराकर मरजावे तो आश्चर्य मत समझो केशवमूर्तिने यह हाल अपनी प्यारीका सुनतेही व्याकुल होकर तुरन्त उस सखीको विदा करदिया व आपने उसीसमय वंशीवटमें पहुँचकर राधाकी इच्छा पूर्णकी ॥

दो० परम हर्ष दोऊ मिले राधा नंदकुमार। कुंजसदन शोभित मनो तनुधरि छवि शृंगार ॥

जब श्यामाका चित्त श्यामसुन्दरके मिलनेसे ठिकाने हुआ तब उसने कहा हे प्राणप्यारे जिस दिन तुमने मेरी गौ खरकामें दुहिदी थी उसी घड़ीसे मेरा मन ऐसा मोहि लिया कि तुम्हारी सांवली सूरत देखे विना मुझे एकक्षण चैन नहीं पड़ता व गांववाले मुझको तुम्हारे साथ वदनाम करते हैं सो मेरे चित्त में अब ऐसा आवताहै कि माता पिता आदिक अपने कुल परिवारको छोड़कर तुम्हारे साथ प्रकट प्रीति करूं ॥

सो० मैं लीन्हीं दृढ़नेम सुनो श्यामसुन्दर सुखद, तुम पदपंकज प्रेम यही वात अब राखिहौं ॥

यह वचन सुनतेही गिरिधर महाराजने हँसकर कहा हमारी तुम्हारी पिछले जन्म की प्रीतिहै उसको प्रकट करना न चाहिये जिसमें तेरे माता पिताके निकट हमारी वदनामी न होवे संसारी लोग तुझे नाम न धरैं मैं तेरे साथ अकेले में भेंट करके तेरी इच्छा पूर्ण करादिया करूंगा ॥

सो० सुनत श्यामके वैन हर्षभई मन नागरी। भयो हिये अतिचैन प्रीति पुरातन जानि जिय ॥

दो० कहत श्याम अब जाव घर तुमको भई अवार। प्रीति पुरातन गुप्तकर करिये जगव्यवहार ॥

सो० परमप्रेम उरलाय घर पठई हरि भावती। चली महासुख पायफिरिफिरिचितवत श्यामतन ॥

दो० कृष्णराधिकाकेचरित अतिपवित्रसुखखान। कहत सुनत भवभयहरण रसिकजननकेमान ॥

हे राजन जब राधिका अपना मनोरथ पाकर घरको चली जाती थी

तब राह में वही सखी जिसने उसका हाल केशवमूर्ति से कहा था फिर मिली उसने श्यामाका मुखारविंद प्रसन्न देखकर अपनी बुद्धिसे जान लिया कि यह अपनी मनोकामना पाआईहै ऐसा विचारकर उस सखीने राधिका से पूछा ॥

दो० फिरतहती व्याकुलअभी जिनके दर्शनलागि। कहां मिले नँदनन्दसो धनिधनि तेरोभागि॥
सो० नहिं पावतहैं जाहि योगीजन जप तप किये। वश करि पायो ताहि तैं कैसे कहु नागरी॥

यह बात सुनतेही राधा नाक व भौं चढ़ाकर बोली तू मुझे वृथा बदनाम करती है कदाचित् यह बात कोई जाति भाई सुनपावें तो मेरा ठिकाना न लगै ॥

चौ० को नँदनंद कहत तू जिनको। मैं कबहूं देख्यों नहिं तिनको॥

यह चरित्र राधिकाका सुनकर उस सखीने कहा हम तुम दोनों ब्रजमें रहती हैं तुम्हारी चतुराई हमसे नहीं छिपैगी दो घड़ी हुई तू गली गली नन्दलालजीका नाम लेकर रोती फिरती थी अब कहती है कि मैं उनको नहीं जानती ऐसा सयानपन तैंने अभी कहांसे सीखलिया ॥

दो० निपुणभई उनको मिली वह सुधि गई भुलाय। आवतहै वनकुंजते वातैं कहत बनाय॥
सो० रीझे श्यामसुजान कहे देत अँगकी पलक। मोसों कहत सयान सँग पगरहे सनेह जल॥

जब राधाप्यारी ने बहुत पूछने परभी उस सखीसे मोहनप्यारेकी भेंट होने का हाल नहीं बतलाया तब वह ब्रजबाला हँसकर बोली बहुत अच्छा तू मेरे सामने की छोकरी होकर मुझसे छल करती है अब तू अपने घरजा मैं तेरा झूठ व सत्य प्रकट करदेऊंगी यह बात कहकर वह सखी अपने घर चलीगई व श्यामा अपने स्थानपर आई ॥

चौ० सकुच सहित वृषभानुदुलारी। गई सदन गुरुजन डर भारी॥

उसे देखकर कीर्तिने कहा तू दिनभर दही बेचनेके बहाने कहां रहती है आज तेरा भाई कहता था कि राधा मोहनप्यारेका प्रेम रखकर उनके पीछे फिरा करती है तुझको कुछ लज्जा नहीं आती सब गांववाले तुझे श्यामसुन्दर के साथ बदनाम करते हैं ऐसी बात मतकर जिसमें तेरे माता पिताकी हँसी हो यह वचन सुनकर राधा बोली ॥

दो० खेलन को मैं जाउँ नहिं कहा कहत री मात। मुझसे जाती सहि नहीं यहसब झूंठी बात॥

सो० घर घर खेलन जात गोपनकी सब लड़किनी। तू मोको रिसियात उनके मात पिता नहीं॥

ऐसी ऐसी झूंठ सत्य बात कहकर राधाने अपनी माताको प्रसन्न कर लिया व अपने मनका भेद किसीसे नहीं बतलाया और उस सखीने जाकर ललिता आदिक सब व्रजबालोंसे कहा कि आज राधिकाने श्यामसुन्दरसे भेंट करके अपनी इच्छा पूर्ण की जब वह वंशीवटसे अपना मनोरथ पाकर आती थी तब मैंने उसका मुखारविन्द प्रसन्न देखकर भेंट होने का हाल पूंछा तब वह सुनकर बोली॥

दो० मोसों तब लागी कहन को हरि काको नांव। कै गोरे कै सांवरे बसत कौन से गांव॥
सो० मैंतो जानत नाहिं लेत नामतुम कौनको। लख्यो न स्वप्ने माहिं सांची कहत कि हँसत तुम॥

यह बात सुनकर ललिता आदिकने कहा हमारे सामने राधिका की सामर्थ्य नहीं है जो मुकरनेसकै तब वह सखी बोली अब वैसी राधिका नहीं है जो पहिले थी भेंट करने से उसका हाल तुम्हैं मालूम होगा॥

दो० बड़े गुरुकी बुद्धि पढ़ि काहू नहिं पतियात। एकौ बात न मानिहै सौ सौगन्दै खात॥

जब ललिता आदिक सखियां इकट्ठी होकर यही बात पूछने के वास्ते राधिका के स्थानपर आईं तब श्यामा उनके मनका हाल जान गईं कि ये मेरा भेद पूछने आई हैं॥

दो० काहूको कीन्हों नहीं आदर करि चतुराय। मौन गही बोलत नहीं बैठि रही निठुराय॥

उसकी यह दशा देखतेही ललिता आदिक आपसमें उसके पास बैठकर जब इधर उधरकी बातैं करने लगीं तब एक सखी ने राधा से कहा तुमने मौनव्रत कबसे धारण किया है उसका हाल हमैं भी बतलाओ कौन गुरु से यह मंत्र सीखाहै हमलोग भी वह धारण करना चाहती हैं॥

दो० अब तुमहीं को हम करैं गुरू देव उपदेश। हमहूं राखैं मौनव्रत करैं तुम्हैं आदेश॥
सो० हमको कियो अजान चतुर भई तुम लाड़िली। कहँ सीख्यो यह ज्ञान ऐसी बुधि लागी करन॥

यह बात सुनकर राधाने कहा सुनो ललिता हमारे तुम्हारे बीचमें कुछ भेद नहीं है जो मैं तुमसे कोई बात छिपाती पर झूठी बात मुझसे सही नहीं जाती कल्हि राह में मुझसे इस सखीने कहा कि तेरी भेंट श्यामसुन्दर से हुई है मैंने आजतक कभी केशवमूर्तिको स्वप्ने में भी नहीं देखा और यह मुझको वृथा पाप लगाती है सो मुझे यह ठिठोलीकी बात अच्छी नहीं

लगती इसमें मेरे वास्ते बदनामी समझना चाहिये विना देखे कोई बात नहीं कहना होता मुझे इसने नन्दलालसे कब भेंट करते देखा था जो ऐसी बात कही अभी कोई जातिभाई सुनै तो मेरा ठिकाना न लगे ॥

दो० और कहै तोमोहिं कछु नहिं व्यापै मनमाहिं। तुमहिं कहो जो बात यह तो दुख होय कि नाहिं॥
सो० तुमपर रिसमोहिं गात याते आदर नहिं कियो। सुनि प्यारीकी बात रहीं सबै मुखतन चितै॥

तब ललिता बोली हे राधा मुझसे इस सखी ने कुछ नहीं कहा कदाचित् यह मुझसे कुछ कहती तो मैं इससे झगड़ा करती व तेरी अ-लोनी देहीपर हमलोग क्यों लोन लगावैं तू बड़ी पतिव्रताहै तेरे श्याम को इसने कहां देखा होगा विना भाग्य उनका दर्शन मिलना बड़ा कठिन है तेरे बराबर हमलोगों का भाग्य कहां है जो केशवमूर्ति का दर्शन हमैं मिलै यह सुनकर राधिका बोली ॥

दो० वृथा झौड़ मोसों करत कहि कहि झूठी बात। भलो नहीं उपहास यह मैं सकुचत दिन रात॥

यह रुखाई राधाकी देखकर ललिता ने कहा ॥

सो० जब ऐहैं इत श्याम तब हम तोहिं बताइहैं। तोहिं देखिहैं वाम हमहूं है अभिलाष अति॥
दो० ऐसे कह सब हँसि उठीं प्यारी बदन निहारि। आईथीं अतिगर्व करि चलीं सखी सबहारि॥
सो० कहत परस्पर जात निडर भई अब राधिका। कबहूं तो हम घात पड़िहैं दोऊ आयकै॥
दो० सब व्रजगोपिनके बसी यही बात मन आन। हरि राधा दोऊ मिलैं निशिबासर यह ध्यान॥
सो० सब सन्मुख यह बात और कछू चरचा नहीं। नन्दमहरको तात सुता महरवृषभानुकी॥

जब बहुत पूछने पर भी श्यामाने मोहनप्यारेके भेंट होनेका हाल स-खियोंसे नहीं बतलाया तब वहलोग वहां से अपने अपने घर आनकर इस खोज में लगीं कि राधा व मोहनको भेंट करती समय पकड़ना चाहिये जिसमें श्यामाका झूठ बोलना प्रकट होजावे और राधिका व कृष्णमें ऐसी प्रीति बढ़ी कि एक क्षण दोनोंको विना देखे चैन नहीं पड़ती थी सो श्यामाने दूसरे दिन मोहनीमूर्तिको देखनेकी इच्छासे ललिता आदिक सखियों के घर जाकर कहा चलो बहिन यमुना स्नान कर आवैं जब स-खियोंने बड़े आदर भावसे राधाको बैठाला तब वह बोली आज मैं तुम्हारे घर नये शिरसे आईहूं जो इतना आदर करतीहो ललिता बोली जैसा अपने गुरु का मन्त्र पढ़कर तुमने हमारे जानेसे मौन साध लिया था तैसा हमलोगों

को नहीं आवता जैसे सदा हम सब तुम्हारा सन्मान करती थीं वैसे आज भी किया यह बात सुनतेही राधाने हँसकर कहा उस दिनका बदला आज तुम लोगोंने मुझसे लिया यह सुनकर सब सखियां हँसने लगीं ॥

दो० यहिविधि हासहुलासकरिसखिनसंग सुकुमारि। चलिनहाय यमुनानदी श्रीवृषभानुदुलारि॥
सो० सकलरूपकी रास नवनागरि मृगलोचनी। भरी अनन्दहुलास कृष्ण प्रेममें एकचित॥

जब श्यामा सखियों समेत यमुनाजल से स्नान करके बाहर निकलीं तब उसने क्या देखा कि केशवमूर्ति नटवररूप साजे कदमके नीचे खड़े हुये वंशी बजाते हैं उस मोहनीमूर्तिको देखतेही राधाने मोहित होकर लज्जा छोड़दिया व नन्दकुमारको टकटकी बांधकर देखने लगी ॥

दो० श्यामा नटवररूप को देखतही सुखपाय। चित्रपूतरीसी रही देहदशा बिसराय॥
सो० उत वह रहे लुभाय नागरनवलकिशोर वर। प्यारी मुख दृगलाय नयन नहीं भटकत कछू॥

यह दशा देखकर ललिता आदिक सखियों ने राधासे कहा कल्ह तू मोहनप्यारे की भेंट करनेसे मुकर कर कहती थी कि मैंने उनको स्वप्नमें भी नहीं देखा आज क्या दशा तेरी हुई जो सांवली सूरतको टकटकी बांध कर देखरहीहै अच्छीतरह इनको देखलेव जिसमें यह मोहनीमूर्ति तुम्हें न भूलै तेरे दिखलाने वास्ते केशवमूर्तिको हमने यहां बुला दिया है ॥

चौ० राखो चीन्हि इन्हें अब नीके। यह हैं मनभावन सबहीके॥
दो० भले शकुन आई इहां भयो तुम्हारो काज। अब कछु हमको देअगी मिलैं तुम्हैं ब्रजराज॥

यह बात सुनतेही राधा मनमें पछताकर कहने लगी देखो कल्ह मैं सखियों से मुकर गई थी आज प्राणप्यारे की छवि देखकर मेरी यह दशा होगई अब मेरी चोरी सखियोंने पकड़ली इन लोगोंसे मैं बहुत लज्जित हुई जब ऐसा विचारकर राधा का मुख मलीन होगया तब ललिता बोली प्यारी तुम मत पछताओ ॥

दो० कियोदरशतुमश्यामको घर चलिहौकीनाहिं। चीन्हिलेहुमिलिहैंबहुरियह कहिसबमुसकाहिं॥
सो० तब सखियनके साथ चली सदनको नागरी। उरमें धरि ब्रजनाथ प्रेममगन बोलै नहीं॥

जब राधाप्यारी नटवररूप मोहनप्यारेका अपने हृदयमें रखकर घरको चली तब सखियोंने उससे कहा ऐ प्यारी तू अपने मनमें चोरी प्रकट होने का कुछ शोच मत कर यह नटवररूप इसी तरहका है जिसके देखने से

किसी व्रजबालाका चित्त ठिकाने नहीं रहता पिछले जन्मके पुण्यसे तेरा बड़ा भाग्यहै जो त्रिलोकीनाथ तुम्हें ऐसा प्यार करते हैं व तैंने उनको अपने वश करलिया है यह सुनकर राधा मनमें बहुत प्रसन्न हुई पर लज्जासे कुछ नहीं बोली ॥

सो० सखिन कह्यो मुसक्याय क्यों प्यारी बोलत नहीं। की हमसे रिसिआय लियोमौनव्रतआजगुनि॥

यह वचन सुनतेही राधाने हँसकर कहा श्यामसुन्दरका स्वरूप कैसा था मैंने तो अच्छीतरह नहीं देखा इसका क्या कारणहै जो तुम्हें दो आंख से उनका सारा अंग देखपड़ा मेरी दृष्टि तो उनकी भृकुटीपर गई सो वह छवि छोड़कर दूसरे अंगपर न जानेसकी जो मैं उस मोहनीमूर्ति का सारा अंग देखती ॥

दो० मैं तबते अपने मनहिं यही रही पछिताय। देखनको छवि श्यामकी ललचत नयन बनाय॥
बिन पहिंचाने कौन विधि करौं श्यामसों प्रीति। नहिं वह रूप न भाव वह क्षण क्षण औरैरीति॥

सो० मैं जानी यह बात हैं अनंदकी खानि हरि। पहिंचाने नहिं जात कहा करौं दो लोचनी॥

यह सुनकर गोपियां बोलीं हे राधा तेरे बड़े भाग्यहैं जो तू ऐसी प्रीति वैकुंठनाथ से रखतीहै संसारमें दूसरेका भाग्य ऐसा न होगा॥

दो० धनि धनि तेरे मात पित धन्य भक्ति धनि हेत। तैं पहिंचाने श्यामको हम सब बाल अचेत॥

सो० धनि यौवन धनिरूप धनि धनि भाग सुहाग तुम। तुम मोहन अनुरूप चिरंजीव जोड़ी अचल॥

इस तरह सब गोपियां श्यामासे हँसती व बोलती हुई अपने अपने घर चली आईं पर उन्हें राधा व मोहनकी प्रीति देखकर सवतियाडाहसे आठों पहर उनका रूप आंखोंके सामने बसारहता था एक दिन राधिका श्यामसुन्दरके विरहमें व्याकुल होकर अकेली पानी भरनेवास्ते यमुना किनारे चली राहमें मोहनप्यारेको देखतेही उनका हाथ पकड़कर बोली तुमने मेरा मन क्यों चुरालिया है उसे फेरदेव तन मेरा घर में रहकर मन चंचल दिन रात तुम्हारे पीछे पीछे फिरा करताहै प्यारीका वचन सुनतेही नन्दकुमारने उसको गलेसे लगाकर कहा मैं भी तेरे देखनेवास्ते आठोंपहर व्याकुल रहताहूं जिस समय श्यामा व श्याम यह प्रीति भरी हुई बातें आपसमें कर रहे थे उसी समय ललिता आदिक सखियां वहांपर आन पहुँचीं उनको देखतेही केशवमूर्ति अपने ग्वालोंको पुकारते हुये दूसरी ओर चलेगये व

ललिताने राधासे कहा आज तो तेरी चोरी पकड़ी गई तू नित्य हमलोगों को झूठा बनाकर एकान्त में सुख उठावती थी ॥

दो० कहत रही जब तब यही हरि सँग देखो मोहिं। तब कहियो जो भावही लीजो बेसरि खोहिं ॥
सो० अब हम लईछुड़ाय बेसर देहौ कै नहीं। कै करिहौ चतुराय और कछू हमसे अभी ॥

यह बातें सुनतेही राधिका लज्जित होकर अपने घर चली आई पर मन उसका मोहनप्यारेके भेंटवास्ते व्याकुल रहा इसलिये उसको रातभर तारा गिनते बीतगई प्रातःसमय उसने मोतियोंका हार अपने गलेसे उतारकर धोतीके अंचलमें बांध लिया व कीर्ति अपनी मातासे कहा कल्ह यमुना किनारे मेरा हार कहीं गिरपड़ा था सो न मालूम कौन सखीने उठालिया ॥

दो० नेकु नींद नहिं निशि पड़ी तेरी सौं सुन मात। याही डरसे आज मैं उठी बड़े परभात ॥
सुन राधा तेरी नहीं अब पतियारी मोहिं। चौकी हार हमेल कछु नहिं पहिरावों तोहिं ॥

यह सुनकर श्यामा बोली तुम क्रोधित क्यों होतीहो मैं उसे ढूंढ़ने जाती हूं मुझको देर लगै तो घबराना मत ऐसा कहकर राधा अपने घरसे निकली व पिछवारे स्थान नन्दजीके झूठ मूठ ललिता सखीका नाम पुकारकर बोली मैं वंशीवटमें जाती हूं तूभी जल्द आव उस समय नन्दलालजी ने रसोई खानेवास्ते बैठकर पहिला ग्रास उठाया था जैसे श्यामाका बोल सुना वैसे उठखड़े हुये यशोदाने पूछा तुम घबराकर कहां चले तब उनसे कहा एक ग्वाल मुझसे कहगया था कि वनमें गौके बछिया हुई है सो मैं वहां जाताहूं ऐसा कहकर मोहनप्यारे वंशीवटको चलेगये तब उनके सखों ने जो वहां बैठकर खाते थे यशोदासे कहा वनमें बछिया नहीं हुई है वहां राधाप्यारी गई होगी इस कारण मोहनप्यारेभी उससे भेंट करनेवास्ते विना भोजन किये चले गये यशोदाने उनकी बातका विश्वास नहीं किया पर केशवमूर्ति के भूखे चलेजाने से पछताकर शोच करने लगी व श्यामा व श्याम ने वंशीवटमें जाकर आनन्दपूर्वक भोग व विलास किया ॥

दो० नवलकुंज नवनागरी नवनागर नँदनन्द। प्रेमसिंधु मर्य्याद तजि मिले उमँगि आनन्द ॥
सो० यह अचरजकी बात को मानै को कहिसके। गोपसुताके साथ रमत ब्रह्म द्रुमकुंजतर ॥

जब सन्ध्या समय मोहनप्यारेने राधासे कहा अब तुम अपने घर जाओ तब श्यामा बोली मुझसे तुम्हें छोड़कर घर जाया नहीं जाता तुम्हारेवास्ते

अपने माता व पिताकी गाली व मार नित्य सहतीहों नन्दलालजीने कहा तेरे लिये हम अपने हाथ का ग्रास फेंककर चले आये इसी तरह दोनों मनुष्य प्रीति भरी हुई बातें करते अपने घर पर गये व राधाने हार मोतीका अपनी माताको देकर कहा जिसके वास्ते तू शोच करती थी वह मैं यमुना किनारेसे ढूंढ़कर लेआई सो अपना हार ले कीर्तिने मनमें समझा कि राधाने श्यामसुन्दरकी भेंट करनेवास्ते यह झूठा चरित्र हारका किया था श्रीकृष्णजी परमेश्वरका अवतारहैं इसलिये राधा आदिक ब्रजबालों को उनके देखे विना चैन नहीं पड़ता शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित नन्दकिशोरको भी राधिका की इतनी प्रीति बढ़ी कि नित्य किसी जगहपर उस से भेंट करके अपना चित्त प्रसन्न करते थे सो एक दिन श्यामसुन्दर उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर घड़ीरात्रि बीते राधाके स्थानपर गये और रात भर उसके साथ आनन्दपूर्वक विहारकरके प्रातसमय अपने घर चले आये॥

दो० बार बार जिय लाड़िली यही शोच पछितात। गये श्याम आलस भरे तनिक न सोये रात॥

सो० देखैं सखी न कोय श्याम गये मो सदनते। मैं राख्यो है गोय अबलग यह रस सखिनसे॥

जब ललिता आदिक सखियोंने जो आठोंपहर राधाकृष्णके पकड़नेकी घात में रहती थीं श्यामसुन्दरको राधाके घरसे निकलते देखा तब उन लोगोंको बड़ी डाह उत्पन्न हुई केशवमूर्तिके जाने उपरांत श्यामाने भी अपने द्वारेपर आनकर देखा तो चारोंओर उसे सखियां खड़ी हुई दिखलाई पड़ीं तब उसको विश्वास हुआ कि इन लोगोंने मेरे घरसे निकलती समय मोहनप्यारेको अवश्य देखा होगा ऐसा विचार कर उसको लज्जा मालूम हुई तब उसने मनमें कहा अभीतक नन्दलालजी से मेरी प्रीति छिपी थी सो आज प्रकट होगई नित्य सखियों से मुकरजाती थी आज इन्हें क्या उत्तर दूंगी॥

दो० ऐसे शोचत लाड़िली कबहूं प्रभुहिं मनाय। कबहूं प्रभुको सुख समुझि प्रेम मगन ह्वैजाय॥

उसी समय ललिता आदिक सखियां राधाके घरपर गईं उनको देखते ही राधाप्यारीने चतुराई से विना पूछे कहा हे ललिता आज प्रातसमय वृन्दावनविहारी मेरे द्वारेपरसे होकर न मालूम किधरजाते थे उन्हें देखकर

तभी से मैं व्याकुल होरही हूं सखियोंने यह बात सुनतेही आपस में कहा देखो यह बड़ी चतुरी है हमारे पूछने से पहिले इसने यह बात बनाकर कही जिसमें हम कुछ पूछ न सकैं ऐसा कहकर सखियां बोलीं हे राधा तू बड़ी सयानी होकर अपने मनका भेद हमलोगों से नहीं कहती रातभर मोहन-प्यारे के साथ विहार किया इस समय हमलोगों को बहकातीहो ॥

दो० कछु दिनते तेरी प्रकृति अरी परी यह कौन। निठुर भई मोसों रहत जब तब साधे मौन ॥
सो० अपने मनकी बात कछु हमसों भाषत नहीं। ऐसे कहि मुसकात प्यारी सों ब्रजनागरी ॥
दो० सुनिसुनि बानी सखिनकी प्यारी जिय अनुराग। पुलकरोम गदगदहियो समझ आपनोभाग
सो० वचन कह्यो नहिं जाय प्रीति प्रकट चाहत कियो। हरि डर रहे समाय बाहर लखतप्रकाशनहिं

जब सखियों की बात सुनकर राधिका ने हँसदिया तब ललिता सब-तियाडाह से रूखी होकर बोली ॥

स० तुम जानतीहौ जु अजान भई कहि आगे से उत्तर धावती हौ।
बतलाती कछू औ कछू कहती अनुरागकी आंखैं दुरावती हौ ॥
हमैं काह पड़ी जो मने करिहैं कवि बोधा कहैं दुख पावती हौ।
बदनामीकी गैल बचाये चलो बड़े बापकी बेटी कहावती हौ ॥

तब राधिका ने उत्तर दिया ॥

स० हमसे मनमोहनसों हित है चुगुली करि कोऊ कहा करिहै।
अबतो बदनाम भई ब्रजमें गुरुलोगन जानि कहा डरिहै ॥
कहैं ठाकुर लालके देखिवे को ब्रज भूलो सबै बिसरो घरहै।
तुम आपने काम ते काम करो कोउ आपने जानि कुवां गिरिहै ॥

यह बात राधिकाकी सुनकर सखियां अपने अपने घर चली गईं व राधिकाके मनमें इस बातका अहंकार उत्पन्न हुआ कि श्यामसुन्दर मेरा बहुत प्यार करते हैं अब वह किसी दूसरी सखीसे बोलैंगे तो मैं उनसे झगड़ा करूंगी जिस समय राधिका अपने घर बैठी हुई यह विचार कररही थी उसी समय केशवमूर्ति वहां जाकर झरोखेमें से ताकनेलगे तब राधाने उनसे कहा तुमको घर घर झांकनेकी कुचाल पड़ीहै यह बात मुझे अच्छी नहीं लगती ऐसा कहकर राधिका अपने अभिमानसे बैठीरही व मोहन-प्यारेको उसने नहीं बुलाया तब श्रीकृष्णजी गर्वप्रहारी अन्तर्यामी उसके मनकी बात जानकर वहां से अपने घर चलेगये जब राधाने देखा कि

मोहनप्यारे भीतर नहीं आये तब अपने अभिमान करने से लज्जित होकर द्वारेतक दौड़ आई जब उनको वहांपर नहीं देखा तब विरह सागरके बीच अचेत होगई ॥

दो० भई विकल अति नागरी विरह बिथाकी पीर । खान पान भावै नहीं सुधि बुधि तजीशरीर ॥
सो० घर बाहर न सुहाय सुख सब दुखदायक भये । रह्यो शोच उर छाय ब्रजवासीप्रभु मिलनको ॥

जब उसने देखा कि विना भेंट मोहनीमूर्तिके चित्त मेरा ठिकाने नहीं होगा तब वह ललिता आदिक सखियों के घर इस इच्छा से दौड़ी गई जिसमें वहलोग केशवमूर्तिको समझाकर मेरे पास बुलालावें ललिताने उसे उदास देखकर पूछा कहो प्यारी आज तुम किस चिन्ता में हो राधाने मुसकराकर कहा ॥

दो० छिपत छिपायें कौन विधि सखि तुमसों यह बात । देखे बिन नँदनन्दके धीरज धरत न गात ॥
नयननते क्षण टरत नहिं नीके लख्यो न जात । कहा कहौं तुमसों सखी यह अचरजकीबात ॥
सो० मिले मोहिं जब श्याम सुनो सखी तुमसों कहौं । करिकै उरमें धाम तबसे मन मेरो हर्‌यो ॥
दो० नहिं जान्योहरिक्याकियो मन्दमन्द मुसुकाय। मनसमुझतरीझतनयनसुखकछुकहो न जाय ॥
सो० तबसे कछु न सुहाय कासों कहिये बात यह । अपलपरेउ दृग आय देखनकोसुन्दरवदन ॥

हे बहिन नन्दकुमार मेरा वहुत प्यार करते थे सो आज वह मेरे घर आनकर झरोखे से मुझे देखने लगे पर मैंने अपने अभिमान व अज्ञानसे उनको भीतर नहीं बुलाया इसी वास्ते वह खेद मानकर चलेगये सो तुम लोग कोई ऐसा उपाय करो जिसमें उनका दर्शन मुझको मिलै नहीं तो मेरा प्राण उनके विरहमें निकलना चाहता है यह बात सुनकर ललिता आदिक सखियों ने सवतियाडाह से राधाको कहा जो मोहनप्यारे तुमसे विना भेंट किये चलेगये तो तुमभी मान करके घर बैठरहो कदाचित् उनको तेरी चाहना होगी तो फिर तेरे घर आवैंगे यह बात सुनकर राधाने कहा एक बेर अभिमान करके मैंने यह फल पाया कि उनके विरहमें मेरी यह दशा हुई अब मुझे मान करनेकी सामर्थ्य नहीं है जो फिर उनसे मान करूं ॥

दो० पुनि पुनि सिखवत तुम सखी मान करनकोमोहि । मनतोमेरेहाथनहिंमानकौनविधिहोहि ॥
सो० अंग यही दिनरात श्यामगहौं अभिलाषकरि । मननहिं मानत बात मान करौं कैसे सखी ॥

क० घर तजों बन तजों नागर नगर तजों वंशीराम सब तजि काहूपै न लजिहौं।
देह तजों गेह तजों नेह कहौ कैसे तजों आज काज राज बीच ऐसी साज सजिहौं॥
बावरे भयेहैं लोग बावरी कहत मोको बावरी कहेसे मैं हूं काहू न बरजिहौं।
कहैया औ सुनैया तजों बाप और भैया तजों दैया तजों मैया पै कन्हैया नाहिं तजिहौं॥

ऐसा कहकर राधा जब अति विलाप करके रोने लगी तब सखियों ने उसपर दया करके आपसमें कहा इसका दुःख छुड़ाना चाहिये नहीं तो श्यामसुन्दरके विरहमें यह मरजावेगी॥

सो० लीन्हीं सखियन जान हरिरँगराती लाड़िली। सुन्दर श्याम सुजान रोम रोम याके रमे॥

ऐसा समझकर ललिता सखीने राधासे कहा तू धैर्य धरकर यहां बैठी रह मैं तेरे चित्तचोरको लाकर तुझे मिला देतीहूं ऐसा कहकर ललिता वंशीवट में चली गई व केशवमूर्तिके पास पहुँचकर बोली हे प्राणप्यारे राधा ने प्रेमवश तुमसे अभिमान कियाथा सो अपराध उसका क्षमा करो इस समय वह तुम्हारे विरहकी अग्निमें जल रही है तुम जल्दी चलकर अपने चन्द्रमुखकी शीतलताई से उसका हृदय ठंढा करो॥

दो० चलोश्यामसुन्दर नवलछैलछबीलेलाल। तुम्हेंमिलनकोनवलवह अतिव्याकुलयहिकाल॥
मैं आई तुमसों कहन चलो देखावों नैन। देखि परम सुख पाइहौ जो मानो मो बैन॥

सो० भरि भरिलोचन नीर श्याम श्याम मुखकहि उठत। चलोहरो यह पीर मैं आईलखिधायके॥

यह बात सुनतेही नन्दलालजी व्याकुल होकर उठे व ललिताके घर पहुँचकर क्या देखा कि राधिका अपने कर्तबसे लज्जित होकर रोरही है यह दशा उसकी देखतेही केशवमूर्तिने उसका घूंघट उठाकर मोहनीमूर्ति अपनी उसको दिखलादी वैसे राधाभी प्रेमवश होकर उनसे लपटगई॥

दो० वहचितवनिवहहँसिमिलनिवहशोभासुखभारि। भईविवशललितानिरखियकटकरहीनिहारि॥

जब ललिताने अपने साथी सखियों को बुलाकर उन दोनोंका प्रेम दिखलाया तब वह लोग ऐसी प्रीति श्याम व श्यामाकी देखकर बड़ाई भाग्य राधाकी करने लगीं व केशवमूर्तिकी छवि देखतेही सबोंने अपना अपना हृदय ठंढा किया उस समय मोहनप्यारे राधापर ऐसे मोहित होगये कि अपना भूषण व वस्त्र व मुरली उसपर बारम्बार नेवछावर करनेलगे व उसी प्रेममें श्यामसुन्दरने सब गहना राधाप्यारीका उतारकर आप पहिन

लिया व उसकी आंखोंमें से अंजन निकालकर आप अपने नेत्रों में लगा लिया व सारी अपने पीताम्बरकी पहिनकर स्त्रीके समान अपना रूप बना लिया व राधाप्यारी किरीट व मुकुट श्रीकृष्णजीका पहिनकर कन्हैयाजी के समान बनगई और बोली हे श्यामसुन्दर तुम स्त्रीकी तरह मान करके बैठो हम तुम्हें बिनती करके मनावें जब स्त्रीरूप मोहनप्यारे रूठकर बैठे तब कृष्णरूप राधा बारम्बार उनके चरणों पर गिरकर मनाने लगीं पर श्यामसुन्दर न मानकर उस समय ऐसी माया अपनी राधापर फैलादी कि उसको इस बातका ज्ञान नहीं रहा कि मैं स्त्रीहूं तब वह मोहनप्यारेके चरणोंपर शिर धरकर रोने लगी यह दशा उसकी देखतेही वैकुंठनाथने अपनी माया हरकर राधासे कहा मैं तेरे कहने से रूठकर बैठाथा तू किस वास्ते घबड़ा गई जब राधाका चित्त ठिकाने हुआ और उसने अपना मुख शीशे में देखा तब लज्जित होकर किरीट मुकुट आदिक उतार डाला व स्त्रियोंका गहना व कपड़ा पहिन लिया जब थोड़ासा दिन रहा तब श्याम व श्यामा दोनों स्त्रीरूप से वंशीवटको चले ॥

दो० चले हरषि वनकुंजको युगल नारिके रूप। यक गोरी यक सांवरी शोभा परम अनूप॥

जब राहमें चन्द्रावली सखीसे भेंट हुई तब उसने पहिचाना कि यह श्याम व श्यामा स्त्रीरूप बनकर वंशीवटमें विहार करने जाते हैं तब चन्द्रावलीने हँसकर श्यामासे पूछा कहो प्यारी यह नई सखी सांवली सूरति मोहनी मूरति कहां से आई जो तेरे साथ विहार करने जाती है तब राधा बोली यह सखी मथुरामें रहती है मैं ललिता के साथ वहां दही बेचने गई थी सो मेरी व इसकी जान पहिचान होगई उसी कारण मेरे भेंटवास्ते यहां आई है उस समय मोहनप्यारे ने यह समझकर कि चन्द्रावलीके पहिचान लेनेसे सब सखियां मेरी हँसी करैंगी घूंघटसे अपना मुख छिपा लिया तब चन्द्रावली बोली हे राधा तू इस सखीको भी मथुरासे बुलाकर अपने घरके पास टिकादे तो तुम और यह दोनों जो महासुन्दरी व तरुण हो श्यामसुन्दरसे प्रीति करके उनको सुख देना और यह स्त्री ऐसी मोहनीरूप है जिसे दूसरी अपनाको देखकर मोहित होजावै टुक इसका मुखारविन्द

मुझे भी तो अच्छी तरह दिखलावो जिसमें मेरी आंखें ठंढी हों॥
दो० ऐसेकहि चन्द्रावली गह्यो श्यामकर जाय। यह अबलों कहिं ना सुनी तियसों तिय शरमाय॥

फिर चन्द्रावली मोहनीमूर्तिका घूंघट उठाकर बोली तुम मुझसे क्या लज्जा करतीहो मैं तुम्हें आगे से पहिंचानतीहूं जब चन्द्रावली स्त्रीरूप श्यामसुन्दर से आंख लड़ाकर उनका गाल मलने लगी तब केशवमूर्तिने लज्जित होकर आंख नीची करली यह हाल उनका देखकर चन्द्रावली बोली हे राधाप्यारी जबसे तैंने इस सखीसे प्रेम लगाया तब से हमलोगोंकी प्रीति छोड़ादी तुम दोनों वृन्दावनके कुञ्जमें जाकर सुख विहार करो तुम्हें अपने स्वार्थके सिवाय दूसरेका सुख अच्छा नहीं लगता जब मोहनप्यारे ने समझा कि यह मुझे पहिंचान गई अब इससे छिपाय रखना वृथाहै तब हँसकर चन्द्रावलीको अपने गले लगा लिया व दहिने चन्द्रावली व बायें तरफ राधाका हाथ पकड़े हुये आनन्दसे वंशीवटको चलेगये व रातभर वहां राधाप्यारीसे भोग व विलास किया प्रातसमय केशवमूर्ति पुरुषरूप बनकर अपनेस्थानपर चले आये व राधा व चन्द्रावली अपने अपने घर गईं॥
दो० अतिविचित्रनँदलालकी लीलाललितरसाल। जोसुखदुर्लभशिवसनक सोलूटतव्रजबाल॥

एक दिन राधाप्यारी सोलहों शृंगार करके अपना मुख शीशे में देखने लगी सो श्यामसुन्दरकी मायासे उसने अपनी परछाहीं देखकर यह समझा कि कोई दूसरी चन्द्रमुखी कहीं से यहां आई है जो यह व्रजमें रहैगी तो मोहनप्यारे मुझे छोड़कर इससे प्रीति करैंगे॥
दो० यह आई केहि लोकते महासुन्दरी नारि। व्रजमें तो ऐसी नहीं कोई गोपकुमारि॥

ऐसा विचारकर राधाने अपनी परछाहीं से कहा तुम कहांसे आई हो तुरंत अपने घर चलीजाव इस गांवमें मोहनप्यारा अति ढीठ रहकर सब व्रजबालोंको नंगी कर देताहै यहां रहकर उसके हाथसे बहुत दुःख पावोगी॥
दो० तेरे हितकी कहति हौं मान चाह मति मान। विरजवसे दुख पाउगी सुन तू सुघर सुजान॥
सो० ऐसो ढीठ न आन त्रिभुवनमें कोऊ कहूं। जैसो व्रजमें कान मनभायो सबसों करत॥
दो० यहतो बोलति है नहीं अति गरबीली वाम। देखतही यहि रीझि हैं छैल छबीले श्याम॥
सो० भई सवति यह आय अबहरि याके वश भये। मोर मरण भो आय उपजायो उर विरहदुख॥

जिस समय राधा यह बातें बौरहोंके समान अपनी परछाहीं से कहरही

थी उसी समय केशवमूर्तिने भी वहां आनकर झरोखे में से यह हाल उसका देखा व राधाको उनका आना नहीं मालूम हुआ ॥

सो० देखि झरोखे लाय रहे श्याम यकटक निरखि । उरआनन्द बढ़ाय देखत प्यारीकी छबिहिं ॥
कहतरसीली बात ज्यों ज्यों तिय प्रतिविम्बसों । त्यों त्यों सुनि हर्षात व्रजवासी प्रभुसांवरो ॥

जब वह परछाहीं राधाकी कुछ उत्तर न देकर वहांसे नहीं गई तब राधा उसको अपनी सवति समझकर चिन्ता करने लगी व मोहनप्यारे यह हाल श्यामाका देखकर चुपचाप उसके पीछे चलेगये व अपने दोनों हाथों से आंखें उसकी बन्द करके शीशा उलट दिया ॥

सो० लीन्हें सन्मुखआन पानि पकड़िके लाड़िली । भलीकरी तुम कान मैं सखियन धोखेरही ॥

जब शीशा उलट देनेसे वह स्त्री राधाको नहीं दिखलाई दी तब उसे परछाहीं समझकर प्रसन्न होगई और श्यामसुन्दरके साथ विहार करने लगी जब कुछ बेर बीते तब मोहनप्यारे अपने घर चले गये और ललिता आदिक सखियां राधाके मकान पर आई जब राधाने उन्हें बड़े आदरभाव से बैठाला तब ललिता बोली ऐ प्यारी आज तुझे श्यामसुन्दर मिले हैं जो इतना आदर हमारा करती हो यह बात सुनकर राधा हाल आने श्री कृष्णजी व उलट देने शीशेका कहकर बोली हे ललिता यह सब सुख मुझे तुम्हारी कृपासे मिलता है यह सुनकर ललिता उसके भाग्यकी बड़ाई करने लगी जिस समय यह सब प्रेम भरी हुई बातें राधा सखियनसे कर रही थी उसी समय फिर मोहनप्यारे अपना शृङ्गार करके नटवररूप साजे वनमाला विराजे मुरली बजाते हुये राधाप्यारीको देखने आये पर सखियों का यमघट देखकर भीतर नहीं गये व्रजबालों से आंखें लड़ाते नयन मटकाते हुये दूसरी तरफ जा निकले ॥

दो० छबिसागरसुखकीअवधिगुणमन्दिररसखान । मोहिलियो मन तियनको रसिकनरेशसुजान ॥

सो० मुरली मधुर बजाय प्यारी प्यारी नाम कहि । सबको चित्त चुराय गये सदन आनंदघन ॥

जब सखियोंका मन उन्हों ने अपनी चितवन में मोहि लिया तब वह सब कामातुर होकर कहने लगीं यह सब दोष हमारी आंखोंका है जो श्यामसुन्दरकी छवि देखतेही मोहित होगई व हमारा कुल परिवार व

लोकलाज छुड़ाकर ब्रजगोकुल में हमें बदनाम किया आप जाकर उनकी छवि देखने से प्रसन्न होती हैं व हमें दिन राति उनके विरहमें सिवाय दुःख के कुछ सुख नहीं मिलता॥

दो० अब यह लोचन श्यामके सखी हमारे नाहिं। बसे श्याम रसरूप यह श्याम बसे इनमाहिं॥
सो० कहाकरैं सखि श्याम नयननही को दोष यह। हठकरि भये गुलाम नेक मंदमुसकान पर॥
दो० लालचवश ज्यों मीन मृग आप बँधावत आय। रूपलालची नयनहू भये श्यामवशजाय॥
अब हम तलफत उन बिना मृत्यु भई अफसोस। पैसा खोटा आपना परखैया क्या दोस॥

ऐसी ऐसी बातें सब ब्रजबाला आपस में कहती हुई श्यामसुन्दर का नटवररूप हृदयमें राखिकर अपने अपने घर चली गई पर आठोंपहर स्वरूप मोहनीमूर्तिका उनकी आंखों में बसा रहता था॥

दो० प्रेम भरे छवि सों भरे भरे अनन्द हुलास। युगल माधुरी रस भरे ब्रजमें करत विलास॥
सो० करत अनेकविहार रूपराशिगुणनिधि युगल। राधा नन्दकुमार ब्रजवासी जनसुखकरन॥

उनतीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका मुरली बजाना॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् जिस तरह श्यामसुन्दरने कामदेवका अभिमान तोड़ने वास्ते गोपियोंके साथ रासलीला की थी वह कथा अपनी बुद्धिप्रमाण तुम से कहते हैं चित्त लगाकर सुनो जबसे वृन्दावनविहारी ने चीर हरन के समय गोपियों से शरदपूनो को रासलीला करने के वास्ते कहाथा तबसे सब ब्रजबाला उसी इच्छा में एक दिनको वर्षभरके समान समझकर कहती थीं कि जल्दी कुवारका महीना आवे तो हम लोग प्राणप्यारे से रासलीला करके अपना जन्म स्वार्थ करैं जब वर्षा बीतकर शरद ऋतु आई तब मोहनप्यारेने विचारा कि अपने वचन प्रमाण गोपियों से रासलीला करना चाहिये ऐसा समझतेही कुवारकी पूर्णमासीको तीनघड़ी रात बीते मुरलीमनोहर किरीट मुकुट साजे वनमाला विराजे अंग अंग पर गहना जड़ाऊ पहिने पीताम्बरकी कछनी काछे नटवररूप बनाये अपने घरसे निकल कर वनमें चलेगये तो क्या देखा कि इस समय चन्द्रमा एक कला अपनी जो महादेव के पास रहती है वहभी लाकर सोलहों कलासे

प्रकाश किये है व यमुनाजल मोतीके समान निर्मल होकर कमल फूल रहाहै और हरियाली घटाटोप वृक्षोंकी चाँदनीमें अति शोभायमान होकर आकाश में तारे खिल रहेहैं व शीतल मन्द सुगन्ध हवा वहकर यमुना जी लहरैं लेरही हैं ॥

दो० श्रीवृन्दावन धामकी शोभा परम पुनीत। वरणि सकै कवि कौनविधि मनबुधिवचनपुनीत ॥
सो० औरसकलसुख धाम वैकुण्ठादिक श्यामके। यह विचारविश्राम याते अति सुन्दर सुखद ॥

हे राजन् उस समय मोहनप्यारे ऐसे सुन्दर मालूम देते थे जिनके ऊपर हजारों कामदेवको न्यवछावर करिडालैं वह शोभा देखते ही नन्दकिशोरने एक ऊंचे वृक्षपर बैठकर योगमाया संयुक्त मुरली प्रेमसे बजाई और उसकी ध्वनिमें राधा व गोपियोंका नाम ले लेकर उन्हें अपने पास बुलाने लगे उस समय ऐसी माया केशवमूर्तिने करदी कि जिन व्रजवालों ने उनको पति बनावनेकी इच्छा से व्रत व पूजन किया था उन्हींको वह मुरली सुन पड़ी और दूसरे किसीने नहीं सुनी व मोहनप्यारे ने वंशी में मन हरने व काम बढ़ानेवाला ऐसा राग गाया जिसका शब्द सुनते ही श्यामा आदिक सोलह हजार व्रजबाला कामातुर होकर मोहित होगई व लाज व काज छोड़कर उलटा व पलटा शृंगार करके इस तरह वृन्दावनको दौड़ीं जिस तरह श्रावण व भादों में नदी व नालोंका पानी समुद्रादिक में वेग से बहजाता है ॥

दो० अधर मधुर मुरली धरे मुरलीधर सुखदैन। ध्वनि सुनि मोहित गोपिका तन मन अटके मैन ॥
सो० रह्यो न मनमें धीर वाजी वाजी कहि उठीं। व्याकुल महा शरीर सुनि मुरली व्रजकीतरुणि ॥
क० वाजी हैं वौरानी वाजी देखिवेको द्वारधाईं वाजी अकुलानी सुनि वंशी वंशीधरकी।
वाजी ना सँभारैं चीर वाजी ना धरत धीर वाजिनके उठी पीर विरहागि भरकी ॥
वाजी नाहिं बोलैं वाजी संग माहिं लागिडोलैं वाजिन विसरिगई सुधिबुधि घरकी।
वाजी कहैं वाजी वाजी वाजी कहैं कहां वाजी वाजी कहैं वंशी वाजी साँवरे सुँदरकी ॥

हे परीक्षित जो गोपी गौ दुहतीथीं बर्तन दूधका उनके हाथसे गिरपड़ा व जो भोजन करती थीं उन्होंने हाथ भी नहीं धोया व जो रसोई बनावती व दूध आगपर चढ़ाये थीं उन्होंने उसी तरह चूल्हेपर छोड़ दिया व जो सुरमा व काजल लगावतीथीं वह लोग दूसरी आंख में विना गलाये

उठ दौड़ीं व जो अपने पतिके पास अचेत सोई थीं वह उसी तरह नंगी चली गईं व जो बालकको दूध पिलावती थीं वह उसे रोता छोड़कर चल निकलीं व जो अपने पतिको भोजन करावती थीं वह विना खिलाये उठ चलीं व जो व्रजबाला मोहनप्यारेकी चर्चा करती थीं वह उसे छोड़कर उठभागीं व घबड़ाहट से एकने दूसरीका हाल नहीं पूछा कि तू कहां जाती है व व्याकुलता से हाथ का गहना पांव में व गलेका भूषण भुजापर बांधि लिया व लहँगाकी जगहपर चादर पहिनकर सारी ओढ़ली व मारे जल्दी के चोली हाथमें लिये हुये उठधाईं व अपने घरवालोंका कहना किसी ने नहीं माना ॥

दो० प्रीति लगी हरिनाथसों तन मनकी सुधि नाहिं । जितने भूषण बांहके पहिरे जांघन माहिं॥
या विधि जो जाविधिहतीं सुधिबुधिसबैबिसार । भाजिचलींव्रजराजपहँलाजकाजधरिद्वार॥

जब एक गोपी अपने पतिके पास सोई थी उठकर भागचली व उसके पुरुषने उसे बरजोरी पकड़कर नहीं जाने दिया तब वह व्रजबाला बीच ध्यान मुरलीमनोहर के तनु अपना छोड़कर दिव्यरूप से सब गोपियों के पहिले श्यामसुन्दरके पास जाय पहुँची वैकुण्ठनाथजीने उसकी प्रीति व भक्ति देखकर उसे मुक्ति दी इतनी कथा सुनकर परीक्षित बोले महाराज उस गोपीने श्रीकृष्णजी को परमेश्वर जानकर प्रीति नहीं की कामदेव के वश होकर अपना प्राण दिया था फिर किसतरह मुक्ति पाई यह वचन सुनतेही शुकदेवजी क्रोधित होकर बोले हे राजन् कईबेर मैंने तुझे समझाया पर तू विश्वास नहीं रखता सुनो परमेश्वर निर्गुणरूप सब जीवों के मालिक होकर सदा एकरस रहते हैं जिस तरह पारस पत्थरसे लोहा जान या अजान में छूकर सोना होजाता है व अमृत पीने से जी नहीं मरता उसी तरह परमेश्वरकी ओर मन लगावनेवाला जीव मुक्त होताहै देखो जिस शिशुपालने परमेश्वरको ऐसा दुर्वचन कहा व जो पूतना व वत्सासुर आदिक दैत्य उनका प्राण मारने आये थे उन्हें परमेश्वर ने कैसी गति दी नारायण शत्रुता व मित्रतासे कुछ प्रयोजन न रखकर केवल अपनी ओर मन लगाये रहने से प्रसन्न होतेहैं काम क्रोध मोह लोभ किसी तरह

पर उनको याद करै व जो कोई उनका ध्यान व स्मरण मरते समय करता है उसकी मुक्ति होने में कुछ सन्देह नहीं रहता ॥

दो० जो शिशुपाल महा अधम हरिको निन्दनहार । ताहूको निजपुर दियो ऐसे अधमउधार ॥

जो मनुष्य प्रकटमें छापा तिलक लगाकर लोगों को दिखलानेवास्ते जप व भजन करते हैं व अन्तःकरणसे प्रीति नहीं रखते उनकी मुक्ति होना कठिनहै सच्चे मनसे भक्ति व प्रीति रखनेवाले मुक्तिपदवी पर पहुँचते हैं व जो लोग श्रीकृष्णजी की दया से भवसागर पार उतर गये थोड़ासा उन का हाल सुनो नन्द व यशोदा ने मोहनप्यारेको अपना पुत्र जाना व गोपियों ने उनको महासुन्दर देखकर अपना पति बनाने चाहा व राजा कंसने अपना शत्रु प्राण लेनेवाला समझा व ग्वालों ने मित्र जाना व पाण्डव और यदुवंशियों ने अपना नातेदार व भाईचन्द जानकर योगी व मुनीश्वरोंने परमेश्वरभाव समझा था उन सबको नारायणजी ने कृतार्थ किया एक गोपी उनसे प्रीति लगाकर मुक्त हुई तो क्या आश्चर्यकी बात है यह वचन सुनतेही परीक्षितने विनय किया महाराज अब मेरा सन्देह छूटगया अब कृपा करके आगे कथा सुनाइये शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब राधाप्यारी आदिक सोलह हजार व्रजबाला बड़े उमँगसे केशवमूर्तिके पास जा पहुँचीं उस समय शोभा मनहरण प्यारेकी कैसी मालूम देती थी जैसे तारों में चन्द्रमा रहते हैं व मोहनीमूर्तिकी छवि देखते ही सब गोपियां उन पर मोहित होकर जब आंखोंकी राह रूप रस पीनेलगीं तब वृन्दावन-विहारीने पहिले कुशल उनकी पूंछकर फिर रुखाई से कहा तुम्हारे आवने से मैं प्रसन्न हुआ जो कुछ कहो सो करूं पर रात्रिमें भूत व प्रेतकी डरावनी समयहै तुम सब तरुण तरुण स्त्रियां अपने कुल व परिवारकी प्रीति छोड़ कर उलटा पलटा शृंगार किये बौरहों के समान घबड़ाई हुई यहां क्या करने आई हो ॥

दो० तुम अपनो घर छोड़िके क्यों आईं बनमाहिं । रैनिसमय घरकी वधू घरतजि कहूं न जाहिं ॥

तुम्हारे घरवाले तुमको ढूंढ़ते होंगे कदाचित् तुमको चांदनीरात में भोग व विलासकी इच्छा हुई थी तो अपने अपने पतिके साथ करतीं जो

प्रेमकी राह मुझे देखने आई हो तो मैं भी अपने साथ प्रीति करनेवालेसे नेह रखताहूं पर स्त्रीको अपने पतिकी आज्ञा पालन करना व लोकलाजका डर रखना जप व तपके बराबर होताहै वेद व शास्त्रमें ऐसा लिखते हैं कि जो स्त्री अपने पतिको अन्धा, काना, कुबड़ा, कोढ़ी, कुरूप, लूला, लँगड़ा व निर्धन, कुटिल, लम्पट, जुवारी, रोगी कैसाही अवगुणोंसे भराहो परमेश्वर तुल्य समझकर प्रेमपूर्वक उसकी टहल सेवा करती हैं वह संसार में मनोकामना पाकर अन्तसमय मुक्त होतीहैं और उन्हें सब कोई कुलवन्ती कहताहै और जो स्त्री अपने पतिको परमेश्वरके तुल्य न जानकर उसकी निन्दा करतीहैं या उसे दुर्वचन कहकर सेवामें नहीं रहतीं या दूसरे पुरुष से प्रीति रखती हैं उनको लोकनिन्दाका डर लगा रहकर मनवांछित फल नहीं मिलता व मरने उपरान्त नरकमें जाकर दुःख भोगना पड़ताहै और जैसा हम दूरसे तुम्हारी भक्ति व प्रीति करने में प्रसन्न थे तैसा यहां आने में खुश नहीं हुये किसवास्ते कि रातको यहां चले आवने में तुम्हारे घरवाले खेद मानकर सब ब्रजवासी हमें व तुम्हें बदनाम करेंगे भला जो कुछ तुमने किया सो अच्छा हुआ अब चांदनी व वन व यमुनाकी शोभा देखचुकीं इसलिये घर जाकर अपने अपने पतिकी सेवा व टहल प्रेमपूर्वक करो जिसमें तुम्हारा कल्याण हो ॥

दो० निजपतितजिपरपतिभजे तियकुलीन नहिं होय । मरेनरकजीवतजगतभलोकहइनहिंकोय ॥

सो० युवतिनको पति देव कहत वेद में भी कहौं । करो उन्हींकी सेव जो तुम चाहत सुखलहन ॥

हे राजन् यह वचन ज्ञानरूपी सुनते हीं सब ब्रजबाला शोचित होकर यह दशा उनकी होगई कि शिर नीचा करके ठण्ढी ठण्ढी श्वास लेकर नखसे पृथ्वी खोदने लगीं व चुपचाप चित्रकारी सी रहकर विरहसागरमें डूबगईं व आंसू बेपरवाह गिरने से सुरमा व काजल आंखोंका बहकर गालोंपर चला आया व कोई ब्रजबालाकी बेसर टूटकर गिरपड़ी व पहिले मारे खुशीके जो मुखारविन्द उनका ललितथा सो पीला होगया ॥

दो० निठुरवचन सुनिश्यामकेयुवतिउठींअकुलाय । चकितभईमनगुनिरहीं मुखकछुवचन न आय ॥

उनमें जो ब्रजबाला चतुरीथीं वह विरहकी अग्निमें जलकर यों बोलीं

हे श्यामसुन्दर तुम बड़े ठग हो पहिले तुमने मुरली बजातीसमय सब किसीका नाम लेकर अपने पास बुलाया व अचानकमें ज्ञान व ध्यान व तन व मन हमारा तुम्हारी मोहनीमूर्ति व वंशीकी ध्वनिने हरलिया अब तुम कठोरताई से वेद व शास्त्र समझाकर हमारा प्राण लिया चाहते हो हे मोहनप्यारे जैसे रातको तुमने हमें बुलायाहै वैसे हमारी इच्छा पूर्ण करो हमलोग मर्याद वेद व शास्त्र व लोकलाज व प्रेम व कुलपरिवारको छोंड़कर तुम्हारे चरणों में जिनका ध्यान देवता व ऋषीश्वर करते हैं प्रीति लगाया आदिपुरुष परमेश्वरको छोंड़कर ऐसा धर्म नहीं सीखतीं जो संसारी मायाजालमें फँसकर नष्ट होवें संसारी मायामें फँसे रहनेसे किसीका कल्याण नहीं होता व मन हमारा तुम्हारे प्रेममें उलझ रहाहै इसलिये बीच काम गृहस्थीके नहीं लगता तुम्हारे चरण छोंड़कर एक पग जाना हमें कठिनहै इतनी दूर घरपर किसतरह जावें॥

दो० अब तुमको यह उचित नहिं सुनो श्याम सुखराश। मन हमरो अपनाय के हमको करत निराश॥

सो० पाप पुण्य कह नाथ यहतो हम जानैं नहीं। विकीं तुम्हारे हाथ अधरामृतके लोभसे॥

हे महाप्रभु हमलोग अबला अनाथ कुछ झूठ व कपट न जानकर तुम्हें अपना पति मनसा वाचासे समझती हैं आपकी मृदु मुसुकानने सब व्रजबालों को मोहलिया दूसरे तुम्हारी सहाय मुरली ऐसी मिली है जिसकी ध्वनि सुननेसे चित्त हमारा ठिकाने नहीं रहा व तुम्हारे चरणों की प्रीति करनेवाला मनुष्य कुल परिवारका प्रेम व लोकनिन्दाका कुछ डर नहीं रखता सो हे अन्तर्यामी व्रजराज शरण आयेकी लाज तुम्हारे हाथहै व हमने बड़ोंके मुखसे ऐसा सुनाथा जो कि तुमसे प्रीति रखता है उसके साथ तुमभी प्रेम करते हो सो अब यह वचन झूठ मालूम हुआ किसवास्ते कि हमलोग तुम्हारे स्नेहसे इस समय वनमें आईं और तुम अपने पाससे हमें खेदते हो व ऐसा भी लोग कहतेहैं कि एक मनका हाल दूसरा मनुष्य जिससे वह प्रीति करै जानताहै सो यह भी तुमने कहनेवास्ते बना दिया है नहीं तो हमारे दर्दकी प्रीतिका हाल तुम जानते सिवाय इसके वेद व शास्त्रके अनुसार जबतक तुम्हारा चाहनेवाला संसारी मायासे अपना मन

विरक्त नहीं करता तबतक तुम्हारे पास उसका पहुँचना कठिन है व उसी शास्त्रके प्रमाणसे हमलोगभी अपने घरवालों की प्रीति छोड़कर तुम्हारे शरण आई हैं कदाचित् तुम शास्त्रको झूठा करके हमारे चाहने पर भी हमलोगों से प्रीति नहीं रखते तो हमारा मन जो तुमने हरलिया है सो फेरिदेव नहीं तो अपनी दासी हमें बनाओ कदाचित् प्रकटमें हमें छोड़-देगे तो हमारा वश नहीं चलता पर हमारे हृदयमें जो तुम्हारा वास आठों पहर रहताहै वहांसे भागकर कहां जाओगे ॥

दो० कर झटकाये जात हौ अवल जानिके मोहिं। हृदयनसे जब जाहुगे मर्द बखानों तोहिं ॥

जिस तरह तुम्हारे चरणोंकी सेवा लक्ष्मीजी वैकुण्ठमें करतीहैं उसी तरह हमको तुम्हारे चरणारविन्द प्यारेहैं जिन चरणनकी धूरि मिलनेवास्ते ब्रह्मा व महादेव आदिक सब देवता चाहना रखते हैं वे चरणकमल हम किस तरह छोड़देवें इस मोहनीमूर्तिकी हमलोग दासी होकर अपना तन मन धन इसपर न्यवछावर समझतीहैं तीनोंलोक में कौन ऐसा जीव जड़ व चैतन्यहै जो तुम्हारी छवि देखने व वंशीकी ध्वनि सुनने से मोहित न होजावे हे ब्रजनाथ तुम्हारा नाम दीनदयालुहै हमसे अधिक कोई दूसरा संसारमें दीन न होगा इसलिये दयालु होकर हमारी इच्छा पूर्ण कीजिये नहीं तो तुम्हारे विरहकी अग्निसे अपना तनु जलाकर मरतीहैं व मरते स-मय यह इच्छा करेंगी कि सौ जन्म तक तुम्हारी दासी होकर सेवा किया करें तब हमारे मरने का तुम्हें दोष होगा ॥

दो० विरहविकललखि गोपियनकृपासिंधुभगवान। उमँगिउठेदृगभरि लिये दीनवचनसुनिकान ॥

जब केशवमूर्तिने सच्ची प्रीति गोपियों की देखी तब बड़े प्रेमसे सब ब्रजबालों को अपने पास बैठाकर कहा कदाचित् तुम्हारी ऐसी इच्छाहै तो मेरे साथ रासमण्डल करो यह वचन सुनतेही सब गोपियां इसतरह प्रसन्न होगईं कि जिसतरह मछलीको गर्म बालू परसे उठाकर कोई पानीमें डाल-देवै फिर वृन्दावनविहारीने योगमायाको बुलाकर आज्ञा दी कि तुम ह-मारी रासलीला करनेके वास्ते एक स्थान बहुत अच्छा यमुना किनारे त-य्यारकरके वहांबनी रहो व इन ब्रजबालोंको भूषण व वस्त्र आदिक जिस वस्तु

की इच्छा हो सो देव यह वचन सुनतेही योगमायाने उस समय जब एक चबूतरा गोल व बहुत बड़ा रत्नजटित तय्यार करदिया व उसके चारोंओर केलेके खम्भे गाड़कर मोती व फूलोंकी झालर उसमें लगाया तब मोहनप्यारे ने राधा आदिक गोपियोंसमेत वहां जाकर देखा तो उस चबूतरेकी शोभा चांदनी से चौगुनी दिखलाई दी व चारोंओर बालू यमुनाजी की सफ़ेद बिछावनके समान होकर एकओर हरियाली वृक्षोंकी बहुत सोहावनी दिखलाई देतीथी जब उस चबूतरेके निकट हरिइच्छासे अनेकतरहके भूषण व वस्त्र व बाजनोंका ढेर लगगया तब व्रजबालोंने योगमायाकी आज्ञानुसार वहां जाकर इच्छापूर्वक गहना व कपड़ा पहनलिया व सोलहों शृंगार करने उपरान्त अनेक तरहके बाजा लेकर श्यामसुन्दरकेपास आईं व कामवश होकर उस चबूतरेपर गाने बजाने लगीं तब श्रीकृष्णजीने राधाप्यारीके साथ बीचमें अपने निज रूपसे रहकर और सब दो दो गोपियों में अपना एक एक रूप प्रकट करदिया उस समय केशवमूर्ति गोपियों के बीचमें इसतरह सुन्दर मालूम देते थे जिसतरह सुनहली मालाके दानों में नीलमणि रहती है जब श्यामसुन्दरने व्रजबालोंके गले में हाथ डालकर मुख चूमने व गाल छूने उपरांत उन्हें छातीसे लगाया व वंशी बजाकर अनेक राग व रागिनी उनको सुनाया तब गोपियों का कलेजा जो विरहकी अग्निसे जल रहाथा मोहनप्यारेके चन्द्रमुखके स्पर्श करनेसे शीतल होगया जब घूमते समय वृन्दावनविहारी व्रजबालोंके पीछे पीछे परछाहीं की तरह फिरते थे तब श्यामा आदिक गोपियां उनकी छवि व सुन्दरताई पर मोहित होजातीथीं व कभी मुरलीमनोहर अपनी आंख व भौंह मटका कर उन्हें प्रसन्न करते व कभी उनका गाना व बजाना सुनकर आप आनन्द होते थे व कोई व्रजबाला उनकी मुरली छीन कर आप बजातीं व कोई स्वर मिलाकर गाने लगती थीं॥

दो० हँसे जभी सुख पाइकै चन्द्रमुखिनकी ओर। प्रेम प्रीति रसवश भये प्रीतम नवलकिशोर॥

हे राजन् उस समय वहां ऐसा आनन्द होरहा था जिसे ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता देखकर कहते थे बड़ा भाग्य व्रजवासियों का है देखो

जिस परब्रह्म परमेश्वर का दर्शन हमलोगों को जल्दी ध्यान में नहीं मिलता वह वैकुंठनाथ सब ब्रजवालों के साथ रास व विलास करते हैं॥

दो० धनि धनि कहि वर्षैं सुमन मुदितसकलसुरनारि। धनिमोहन धनिराधिकाधनिहैं गोपकुमारि॥

हे परीक्षित जब गोपियोंने ऐसी कृपा मनहरणप्यारे की अपने ऊपर देखी तब अभिमानसे कहनेलगीं हमारे बराबर सुन्दर कोई दूसरी स्त्री न होगी इस वास्ते नन्दकिशोर हमलोगोंके वश होकर हमैं बहुत प्यार करते हैं त्रिलोकीनाथको हमने ताली बजाकर नचाय दिया अब विना आज्ञा हमारे कुछ नहीं करेंगे ऐसा विचारकर बाजी गोपी कटाक्ष करके बोली हे नन्द-लाल मेरे पांव नाचते नाचते दुखने लगे व कोई उनका हाथ पकड़ कर बैठ गई व कोई कन्धा थाँभकर खड़ी होरहीं॥

दो० याहीविधिव्रजसुंदरिन देत परमसुख श्याम। लखिपतिगतिआधीनअति भई गर्वितावाम॥
सो० परम प्रेमकी खान रूपशीलगुणआगरी। क्यों न करैं अभिमान जिनके वश त्रिभुवनपती॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब गोपियां लज्जा व धर्म छोंड़कर मुरलीमनोहरको पापकी दृष्टिसे देखने लगीं तब गर्वप्र-हारी भगवान्ने विचारा यह सब व्रजबाला अज्ञानकी राह मुझे अपना पति समझकर अंगसे लपटाती हैं व मुझे अपने भक्तोंकी सब बात उत्तम मालूम होकर अभिमान अच्छा नहीं लगता इसलिये मैं इनको अकेली छोंड़कर अंतर्धान होजाऊं तब गर्व इनका टूटजावेगा देखो मेरे जाने उपरांत यह लोग वन में क्या करती हैं॥

दो० उन जान्यो हरि वश कियो लाई मन अभिमान। प्रभु अन्तर्यामी भये क्षणमें अन्तर्धान॥
सो० यह विचारि जिय जान लै वृषभानुकुमारिसँग। ह्वैगये अन्तर्धान व्रजवासी प्रभुसंगते॥

तीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका गोपियों करके खोजना॥

राजा परीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले श्यामसुन्दरके अन्तर्धान होने उपरांत गोपियोंकी क्या दशा हुई शुकदेवजीने कहा हे राजन् जब रास-मण्डल में से केशवमूर्ति श्यामा समेत अन्तर्धान होगये तब सब गोपियों का सुख व विलास स्वप्नके धन समान जातारहा और सब व्रजबाला इस

तरह व्याकुल होगईं जिस तरह हरिणी अपने झुण्ड से बिलग होने में घबड़ाजाती है जब चित्त ठिकाने हुआ तब आपस में कहने लगीं ॥

क० बांसुरीकी धुनि सुनि आईं तजि लाज काज सोई ब्रजराज साज समय वितैगये ।
मन्द मुसकायकै लोभाय मन हाय हाय रूपरस प्याय प्रेम चित्तसों चितैगये ॥
कहैं बलदेव नीच बानसों है मारी तान लेके तुम प्रान लाज हमरी रितैगये ।
टोह ना मिलत कछु चाह ना हमारी श्याम मोहनी दिखाय रूप मोहन कितैगये ॥

दूसरी गोपी बोली यह चित्तचोर इसी वृन्दावन के कुंजों में कहीं छिपा होगा यह वचन सुनतेही सब ब्रजबाला श्यामसुन्दर का नाम ले ले कर चारोंओर यमुना किनारे व वनमें पुकारके कहने लगीं हे प्राणपति हमें छोड़कर तुम कहां चलेगये जब गोपियां उनकी खोज में दौड़ते दौड़ते थकगईं व रोते रोते आंखों में अँधेरा छागया तब उनकी यह दशा होगई जिस तरह सांप मणि खोजाने से घबड़ाजाता व मछली विना पानी के तड़फने लगती है ॥

दो० यहि विधि सब खोजतफिरैंविरहातुर ब्रजबाल । भईंविकलपावत नहींकितखोजैं नँदलाल॥

उस महादुःखके समय एक गोपी बोली ऐ सखी मनहरणप्यारे मुझे छटकाकर कहां चलेगये अभी तो मेरे गले में बांह डाले खड़े थे तुमलोगों में किसी ने उनको जाते देखा है यह सुनकर दूसरी ब्रजबाला जो विरहकी अग्निमें जलरही थी हाय मार कहने लगी अरी बावरी मैं उनको देखती तो किसवास्ते जाने देती हमलोग तो उनकी सेवा मनसा वाचा कर्मणा से करतीथीं न मालूम कौन ऐसा अपराध हुआ जो आधीरात को इस वनमें अकेली छोड़कर चलेगये इसी तरह सब ब्रजबाला अपना अपना दुःख एक दूसरी से कहकर बहुत विलापकर बोलीं हे ब्रजनाथ हमलोग अबला अनाथको किसवास्ते इतना दुःख देते हो हमने अपना तन मन दोनों तुम्हारे ऊपर न्यवछावर करदिया है इसलिये हमलोगोंको विना दामकी दासी समझकर जल्दी अपना दर्शन देव जब बहुत ढूंढ़ने व विलाप करने पर भी कहीं कुछ पता मोहनप्यारे का नहीं मिला तब बड़े शब्द से रुदन करके बोलीं हे परमेश्वर हमलोग अबला अनाथ कहां जाकर उन्हें ढूंढैं

व किससे अपना दुःख कहें व कौन ऐसा उपाय करें जिसमें हमारा चित्त चुरानेवाला मिलजावै यहां तो कोई वटोही भी नहीं दिखलाईदेता जिससे उनका पता पूछें जिस समय गोपियां इसी तरह विलाप कररहीं थीं उसी समय एक सखी बोली सुनो प्यारियो इस वनमें जितने वृक्ष व पशु व पक्षी देखतीहो यह सब पिछले जन्मके ऋषि व मुनि होकर उन्होंने कृष्णलीलाका सुख देखनेवास्ते ब्रजमें जन्म लियाहै इनलोगों ने श्यामसुन्दरको अवश्य देखाहोगा इनसे उनका हाल पूंछो तो मालूम होनेसक्ता है यह सुनकर सब ब्रजबाला बौरहों केसमान पशु व वृक्षोंसे पूंछनेलगीं अभी श्रीकृष्ण हमारा मन चुराकर मारेडरके भागगये हैं तुमने देखा था दूसरी ब्रजबाला बोली हे गूलर व वट व पीपर व कटहर व बेर व पाकर व मौलसिरी व जामुन व आम व अमिली व कदम व बेल व फालसा आदिकके वृक्ष परोपकार करने वास्ते तुमलोग मृत्युलोकमें जन्म लेकर अपनी छाया व फल व फूलों से सबको सुख देते हो सो हम लोगोंका मन हरकर नन्दलालजी अन्तर्धान होगये तुम्हें दिखलाई तो नहीं दिये थे दूसरीने कहा हे नींब व कचनार व चम्पाके वृक्ष तुमने कहीं नन्दकुमारको देखाहै दूसरीने पूछा हे तुलसी तुम श्यामसुन्दर को बहुत प्यारी होकर वे तेरे विना भोजन नहीं करते इसलिये उनका हाल तुझे अवश्य मालूम होगा॥

दो० श्रीतुलसी को देखिके जियकी कहत सुनाय। माखनप्रभुकी प्राणप्रिय प्रीतम देव बताय॥

दूसरी ब्रजबालाने कहा हे अनार तेरे दांत निकले रहने से मुझे मालूम होताहै तैंने नन्दलालको अवश्य देखा होगा दूसरी बोली अय केला तेरे नरम नरम पत्तोंपर सदा मनहरणप्यारे भोजन किया करते थे उन्हें देखाहो तो दयाकरके वतलादे अब उनके विरह का दुःख हमसे नहीं सहाजाता दूसरी कहनेलगी अय अशोक के वृक्ष तेरा नाम परमेश्वरने इसीवास्ते अशोक रक्खा जिसमें दूसरोंका शोक मिटादे सो हमलोग श्रीकृष्णके विरहसागरमें डूबरही हैं तैंने नन्दकिशोरको देखाहो तो वतलाकर हमारा शोच छुड़ादे नहीं तो आजसे अपना नाम अशोक मत रख दूसरी

ने कहा अय चन्दन तुझे नन्दकुमार बहुत प्यारा जानकर अपने अंग में लगाते थे तू उन्हें जानता हो तो बतलाकर यश उठाले ॥

दो० माखनप्रभु जिन द्रुमनसों परसत श्यामशरीर । तिनको भेंटत गोपिका मेटत उरकी पीर ॥

दूसरी बोली अय जुही व मालती व नेवारी व चमेलीके फूल तुमने इसतरफ कन्हैयाको जाते देखाथा तुम्हारा रूप देखने से मालूम होताहै कि वे अपना हाथ तुमपर फेरते गयेहैं इसलिये तुमलोग प्रसन्नतासे फूलेहुये हमारी हँसी करतेहो दूसरी बोली अय केतकीके फूल तेरी सुगन्ध लेनेवास्ते अनेक देशके भौंरे आते हैं सो हम दुखियारियों पर दयालु होकर उनसे श्यामसुन्दरका पता पूंछके हमैं बतलादे दूसरीने कहा हे पृथ्वी तेरे ऊपर केशवमूर्ति सदासे बड़ी प्रीति करते आये हैं जब तुझको हिरण्याक्ष दैत्य पातालमें लेगया तब वह वाराहरूप धरकर अपने दांतोंपर उठालाये थे व वामन अवतार लेकर तुझे राजाबलिसे दान लियाथा इसलिये तेरे बराबर दूसरेका भाग्य नहीं होसक्ता तुझे उनका पता चरण धरने से अवश्य मालूम होगा हमैं अपने ऊपर न्यवछावर समझकर वेग उनका हाल बतलादे ॥

दो० चरणकमल जगदीश के सदा रहैं तुम शीश । माखन ईश बताइके हमसे लेहु अशीश ॥

हे राजन् जब बहुत पूंछनेपर भी किसीने कुछ पता श्यामसुन्दरका नहीं बतलाया तब और अधिक विलाप करके चारोंओर उन्हें खोजनेलगीं उनकी दशा देखकर सब पशु व पक्षी व वृक्ष उस वनके इतना शोच करते थे जिनका हाल वर्णन नहीं किया जाता उसी समय एक गोपीने श्रीकृष्णजीके पांवका चिह्न देखकर सब व्रजबालोंको दिखलाया तो वह आकार देखतेही सबोंने वहांकी धूरि उठाकर अपनी आंखों में लगाया व उस पृथ्वीको चूमकर बोलीं भला उस चित्तचोरका पता तो मिला कि इसी ओरको गयाहै फिर सब गोपियां उस चरणका पता देखती हुई आगे चलीं जब थोड़ीदूर और बढ़ीं तब एक स्त्रीके पांवका चिह्नभी दिखलाई पड़ा जब उसे देखकर उन्हें और अधिक डाह उत्पन्न हुई तब बड़ी करुणासे आपस में कहा देखो श्मामा उन्हें बहुत प्यारी थी जो उसे अपने साथ लेगये हैं उसने पिछलेजन्म महादेव व पार्वतीका बड़ा तप कियाथा जो अकेले में

श्यामसुन्दरके साथ सुख उठाती है और हमलोग उनके विरह में रातको भटकती फिरती हैं दूसरी सखी बोली श्यामसुन्दरका ध्यान व स्मरण करने वाला मुक्तिपदवी पाताहै श्यामाकी बराबरी वह भी नहीं करनेसक्ता क्योंकि श्यामा नन्दकुमारका मुख चूमकर अपना जन्म स्वार्थ करती है ॥

दो० वह ऐसी बड़भागनहै सुन्दरि सुघरि सुजान । माखनप्रभुके संग में अधर करै मधु पान ॥

इसी तरह शोच करती हुई थोड़ी दूर और आगे जाकर क्या देखा कि वहां राधाप्यारी के पांवका चिह्न न होकर केवल श्यामसुन्दरके चरणों का आकार दिखलाई दिया तब आपसमें कहने लगीं मालूम होताहै कि यहां से मोहनप्यारे श्यामाको स्नेहवश कन्धेपर चढ़ाकर लेगये हैं तब थोड़ीदूर और आगे पहुँचकर घास जमीरहने से कुछ चिह्न पांवका पृथ्वीपर नहीं दिखलाई दिया तब अधिक व्याकुल होकर वहां से फिरने लगीं तो एक जगह नरम नरम पत्तोंके बिछावनेपर राधाप्यारीका जड़ाऊ शीशा पड़ा हुआ पहिचानकर एक गोपीने कहा हे सखी मनहरणप्यारे ने यहां बैठकर राधाका शृंगार करने उपरान्त उसकी चोटी फूलों से अपने हाथ गूंधी थी उस समय पीछे बैठने से केशवमूर्तिका मुखारविन्द श्यामाको नहीं दिखलाई दिया तब उसने इस कारण शीशा लेकर देखा था जिसमें उनकी मोहनीमूर्ति मुझे दिखलाई देकर मेरा चन्द्रमुख उन्हें देखपड़े यह बात सुनतेही सब व्रजबाला सवतियाडाह से और अधिक व्याकुल होकर जब मोहनप्यारेको ढूंढ़ती हुई थोड़ीदूर और आगे गईं तो क्या देखा कि राधाप्यारी वनमें अकेली खड़ी हाथ पसारे ऐसा रोरहीहै जैसे सांप मणि खोजाने से विकल होजावै व उसका विलाप देखकर सब पशु व पक्षी व वृक्ष उस वनके रोते थे व श्यामा रुदन करके कहती थी हे प्राणप्यारे रातको मुझे वनमें अकेली छोड़कर कहां चलेगये अपनी दासी समझकर मेरी सुधि लेव राधाको देखतेही सब व्रजबाला ऐसी प्रसन्न हुईं कि जैसे किसी का गया हुआ धन आधा मिलजावै ॥

दो० जिततिततें धाईं सबै व्रजसुन्दरि अकुलाय। व्याकुल लखि अतिलाड़िलीलीन्हों कण्ठलगाय॥

सो० कहां गये गोपाल बारबार पूंछत सबै। मूर्च्छि पड़ी तेहिकाल मुखते वचन न आवहीं ॥

जब ललिता आदिक गोपियों के देखने से राधाका रोना कुछ थोड़ा हुआ तब ठण्ढी सांस लेकर बोलीं ॥

दो० क्या पूछो मुझसों सखी मोहनकी निठुराय । नहिं जानौं वह किन गये मोहूंको छटकाय ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित कारण छोड़जाने राधाका यहहै जब केशवमूर्तिने राधा समेत अन्तर्धान होकर अनेक गहना फूलोंका बनाकर श्यामाको पहिनाया व उसको भोग व विलास करके बहुत सुख दिया तब राधाने अभिमानकी राह विचारा कि मेरे बराबर कोई दूसरी स्त्री सुन्दर न होगी मोहनप्यारे को मैंने वश कर लिया उन्होंने केवल मेरी चाहना के वास्ते ब्रजबालोंको बुलाकर रासमण्डल किया था इसीवास्ते सबको छोड़ कर मुझे अपने साथ लेआये हैं ऐसा समझकर श्यामा बोली हे मनहरण-प्यारे मेरे पांव नाचने व राह चलने से दुखने लगे इसलिये मुझसे पैदल नहीं चला जाता मुझे अपने कन्धेपर चढ़ाकर ले चलो यह वचन सुनते ही गर्वप्रहारी भगवान्ने जाना कि इसने मेरी महिमा न जानकर अभिमान किया इसलिये कुछ दण्ड इसको करना चाहिये ऐसा विचारकर श्यामसुन्दरने अपनी पीठ झुका दी व मुसकराकर राधासे कहा आवोमेरे कन्धेपर चढ़ो जैसे श्यामाने हाथ पसार कर कांधेपर बैठने चाहा वैसे ब्रज-नाथ अन्तर्धान होगये तब वह उसी तरह हाथ पसारे खड़ी रहगई ॥

दो० चकित भई जब नागरी गये कहां भजि श्याम । मनहीं मन पछितात अति भूलीतनसुधिवाम ॥

सो० मैं कीन्हां अभिमान नारिबुद्धि ओछी सदा । वह पियपरम सुजान जानलई मम जीयकी ॥

दो० मोहनप्रभुके विरहदुख कामों वरणी जाय । अपनो दोष विचारिकर बारबार पछिताय ॥

हे राजन् जब गोपियों ने धैर्य देकर राधा से पूछा तब उसने अपने अभिमान करने व श्यामसुन्दरके अन्तर्धान होनेका हाल ज्यों का त्यों कह सुनाया तब ब्रजबालोंने श्यामाको भी अपने समान विरहअग्नि में जलते हुये देखा तब अति विलाप करके बोलीं हे ब्रजनाथ तुम्हारे वियोग में हमको एक क्षण कल्पके समान मालूम होकर प्राण निकलने चाहताहै इसलिये दयालु होकर दर्शन देव जब बहुत ढूंढ़ने पर भी कहीं पता उन का नहीं मिला तब निराश होकर अतिविलाप करनें लगीं ॥

क० विरहानल डाढ़ी सब ठाढ़ीसी गिरीं भूमि गाढ़ी पीर बाढ़ी निजहाथ धुनैं माथहीं ।
मोहनके हेत सों अचेत है पुकारउठीं अब सुधि लेत न हमारी प्राणनाथहीं ॥
कैसी गति कीन दीनसुखद अधीन कान्ह कहै बलदेव मीन जैसे बिन पाथहीं ।
दुसह सहोई दोऊ दीनन से खोई अति विरहमें भोई गोपी रोई एक साथहीं ॥

उस समय एक गोपी जो चतुरी थी बोली सुनो प्यारियो इस रोने व दौड़ने से कुछ अर्थ नहीं निकलता जब वही करुणानिधान दयालु होकर अपना दर्शन देवैं तब वह मिलने सके हैं नहीं तो उनका पता लगना कठिन है इसलिये सब कोई एक जगह बैठकर उनका ध्यान व स्मरण करो तो विश्वासहै कि वे दुःखभंजन दयालु होकर दर्शन अपना देवैंगे यह वचन सुनतेही सब व्रजबाला यमुना किनारे जहां श्यामसुन्दर से बिलग हुई थीं जाकर उनकी चर्चा आपस में करने लगीं व उस चबूतरे सुख स्थानको देखकर बोलीं हे मनहरणप्यारे जब से तुमने व्रज में जन्म लिया तब से सदा हमारी रक्षा करके हमैं सुख दिया आज क्यों इतने कठोर व निर्दयी होकर दुःखसागर में डुबावते हो कदाचित् हमारा प्राण तुमको लेना था तो गोवर्धन पहाड़ हमारे ऊपर क्यों नहीं गिरा दिया ऐसे जीने से मरना अच्छा है फिर गोपियों ने योगमायाको जो अनेक तरहका रूप धारण कर लेतीथी अपने साथ लेलिया व आपसमें बाललीला श्यामसुन्दर की करना आरम्भ किया उसमें एक व्रजबालाने आप श्रीकृष्ण बनकर योगमाया को पूतना बनाया व दूध पीती समय छाती की राह प्राण उस का निकाल लिया जब दूसरी गोपी यशोदा बनकर दही मथने लगी व कृष्णरूप व्रजबालाने बर्तन दही व मट्ठेका तोड़कर ग्वालरूप गोपियों समेत माखन खाना आरम्भ किया तब यशोदाने क्रोध करके उन्हें ऊखलसे बांध दिया उससमय कृष्णरूप गोपीने यमलार्जुन दोनों वृक्ष जो योगमाया बनी थीं उखाड़ डाला जब इसीतरह योगमाया ने वत्सासुर व बकासुर व तृणावर्त्त व अघासुर राक्षस बनकर कृष्णरूपी व्रजबालाको मारनेचाहा तब श्यामरूप गोपीने उसे मार गिराया फिर योगमायाने बहुतसी गौ वहां प्रकट कर दिया तो कृष्णरूप गोपी उन्हें चराने लगी जब योगमाया ने

कालीनाग बनकर फुफकार मारना आरम्भ किया तब केशवरूप व्रजबाला ने उसको नाथ डाला जब दूसरी गोपी ने बहुत कपड़ा लपेटकर गोवर्धन पहाड़ बना दिया तब कृष्णरूप व्रजबालाने उसे अँगुलीपर उठा लिया व पानीकी जगह उस पहाड़पर वृक्षोंका पत्ता बरसाया जब वृक्ष हिलने व पत्तोंके गिरनेसे शब्द होता था तब सब व्रजबाला उसे खटका पांव मनहरणप्यारे का समझकर कहती थीं हे श्यामसुन्दर देखो तुम्हारी याद व चर्चा करके हमलोग अपने अपने मनको धैर्य देती हैं अब तुम जल्दी अपनी मोहनीमूर्ति दिखलाओ॥

दो० माखन प्रभुके रूप गुण ध्यान धरे जो कोइ। मन्द होय दुख शोच सब बहु सुख पावै सोइ॥

हे राजन् उससमय गोपियों ने बालचरित्र श्रीकृष्णजीका करके ऐसा मन उसमें लीन करलिया कि अपने तनु व वस्त्रकी सुधि भूलगईं॥

इकतीसवां अध्याय।

केशवमूर्तिके विरहमें गोपियोंका विलाप करना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब फिर गोपियोंका चित्त ठिकाने हुआ तब यमुना किनारे बैठकर कहनेलगीं हे प्रीतम जबसे तुम व्रजमें आये तब से नित्य नये सुख हमलोगों को दिखलाये जिन हाथोंसे तुमने लक्ष्मीका दान लेकर उन्हें अपने चरणों में वास दिया है वही हाथ अपनी दासियों के मस्तकपर रक्खो॥

क० जाही हाथ धनुष चढ़ायो है जु सीतापति जाही हाथ रावण सँघारि लंक जारी है।
जाही हाथ तार्यो औ उबार्यो हाथ हाथीगहि जाही हाथ सिंधुमथि लक्ष्मीको निकारी है॥
जाही हाथ गिरिवर धारि गिरिधारी भयो जाही हाथ नन्दकाज नाथ्यो नाग कारी है।
हौंतो मैं अनाथ हाथ जोरे कहौं दीनानाथ वाही हाथ मेरो हाथ गहिबे की वारी है॥

जिस दिन से हमलोगों ने तुम्हारी मोहनीमूर्ति देखी है उसी दिन से हमारा ध्यान व प्राण तुम्हारे चरणोंके पास रहकर संसारी व्यवहारमें नहीं लगता सो हमें महादीन व दुःखी जानकर अपना चन्द्रमुख दिखलाओ हमारी आंखें जो रोते रोते जल रही हैं उन्हें ठण्ढी करो कदाचित् तुम्हें हम लोगोंको अपने विरहमें मारना था तो राक्षसों के हाथ व दावानल अग्नि

च कालीनागके विष व इन्द्रके कोप से क्यों बचाया कदाचित् तुम नन्द व यशोदाके बेटा होते तो ऐसी कठोरताई न करते न मालूम किसके जने हो तुम्हारे विरहमें हमारा हृदय जल रहा है इसलिये दुःखी होकर यह कठोर वचन तुमको कहती हैं हमारे मन का हाल तुम्हें अच्छी तरह मालूम होगा॥

दो० दही दूध ले जात थे माखन प्रभु व्रजराज। तबहूं तो बरज्यो नहीं वैर करत क्यहि काज॥

यह वचन सुनकर दूसरी गोपी बोली सुनो प्यारियो उनको ताना मारने से कभी नहीं पावोगी केवल विनय करने से वे प्रसन्न होंगे किस वास्ते कि उनका नाम दीनदयालु है॥

दो० तब उन सब गोपिन कह्यो नाहीं और उपाय। माखनप्रभु बिनती करौ तवै मिलैंगे आय॥

यह बात विचारकर सब व्रजबालों ने कहा हे श्यामसुन्दर तुम केवल नन्द व यशोदाके पुत्र नहीं हो आपको ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता पृथ्वीका भार उतारने व संसारीजीवोंकी रक्षा करनेवास्ते क्षीरसागर में से प्रार्थना करके लिवालाये हैं सो हे प्राणनाथ हमलोगों को एक बड़ा अचम्भा मालूम होताहै जब हमारी ऐसी अबला व दुखियारियों का प्राण लेते हो तो रक्षा किसकी करोगे क्या हम स्त्रियों का प्राण मारने वास्ते आपने मूर्खताई पकड़ी है हे मनहरणप्यारे तुम्हारे मन्द मन्द मुसुकान व तिरछी चितवन व भौंहकी मटक व गर्दनकी लटक व बातोंकी चटक जब हमलोगोंको याद आवती है तब चित्त हमारा ठिकाने नहीं रहता जब तुम वनमें गो चराने जाते थे तब चार पहर दिन तुम्हारे विरह में हमको चार युगके समान बीतते थे फिर सन्ध्यासमय तुम्हारा चन्द्रमुख देखकर अपनी आंखें ठण्ढी करके कहती थीं ब्रह्माजी बड़े मूर्ख हैं जिन्हों ने आंखोंपर पलक बना दी कि पलक भांजने से उतनी देरतक तुम्हारी मोहनीमूर्ति नहीं दिखलाई पड़ती हे जगत्पालन जिन चरणों का ध्यान ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता आठोंपहर अपने हृदय में रखते हैं उन्हीं चरणों का दर्शन देकर हमारी इच्छा पूर्ण करो वे चरण कैसे हैं जिनके देखने व दण्डवत् करने से अनेक जन्म के पाप छूट जाते हैं व लक्ष्मीजी अपने हाथ उन्हें दाबती हैं हे श्यामसुन्दर जब तुम्हारे विरहमें हमारा प्राण

निकल जावैगा तब पीछे से अमृत पिलाकर क्या करोगे अब तक केवल तुम्हारे मिलनेकी आशापर प्राण अपना राखे हैं सो अपनी छवि दिखला कर कामरूपी दुःख हमारा छुड़ावो व वंशी सुनाकर चिन्ता हमारी मिटावो रातसमय स्त्रियोंको कोई अकेला नहीं छोड़देता जिसतरह तुम लक्ष्मी जी को दिन रात छाती में लगाये रहते हो उसीतरह हमलोगोंको भी अपने चरणोंसे अलग मत करो निर्दयी छोड़कर वेग अपना दर्शन देव तुम्हारा नाम संसार में गोपीनाथ प्रकट है सो अपने नाम की लज्जा करो या अपना नाम गोपीनाथ मत रक्खो तुम अपने श्यामरंगके समान मनभी काला करके ऐसी निर्दयी करते हो जो हमैं विरहसागरसे बाहर नहीं निकालते और तुम्हैं ढूंढ़ती समय हमारे पांवों में कांटे चुभते हैं तिसपरभी दया तुम्हैं नहीं आवती हमलोगोंको अपने दुःख पावनेका तो इतना शोच नहीं है पर तुम्हारे कमलरूपी चरणों में रातको भागती समय जो कांटे चुभते हैं वह हमारे कलेजे में सालते हैं किसवास्ते कि तुम्हारे चरणोंका वास हमारे हृदय में रहता है इसलिये तुम जल्दी यहां चले आवो तो तुम्हारे कोमल कोमल चरणों को नरम नरम छातियों पर मलकर अपना अपना कलेजा ठण्ढा करैं या तुम कहीं बैठकर रात बितादेव जिसमें तुमको दुःख न होवे तुम्हैं कष्ट पहुँचनेसे हमलोगोंका प्राण निकल जावैगा अपने जानकारी में हमलोगोंने कुछ अपराध तुम्हारा नहीं किया फिर किसवास्ते खेद मानकर इतनी कठोरताई करतेहो कदाचित इसवास्ते हमारे ऊपर क्रोध किये हो कि विना आज्ञा अपने पतियों के तुमलोग रातको मेरे पास क्यों चली आई सो इस बातमें भी हमलोगों का दोष नहीं है किसवास्ते कि तुम्हारी वंशी सुनकर देवता व ऋषीश्वर आदिकका चित्त ठिकाने नहीं रहता व उसकी ध्वनि सुनने से देवकन्या मोहित होकर अपनेको नहीं सँभालने सकीं हमलोगोंकी क्या सामर्थ्य है जो मुरली सुन कर अचेत न होजावें कदाचित् आप ऐसा कहैं कि तुम्हारी कामरूपी अग्नि अपने अपने पतिसे भेंट करने में बुझेगी सो ऐसा न समझिये हमारी अग्नि उनसे बुझने योग्य होती तो हम अपने अपने पतिको छोड़

कर तुम्हारे पास क्यों आतीं सो हे दीनानाथ कदाचित् हमलोगोंकी प्रीति मनसा वाचा कर्मणासे तुम्हारे चरणों में हो तो अपना दर्शन देकर हमारा दुःख हरो ॥

दो० अंग अंग सब दृगभये मोरपंखकी भांति। माखन प्रभु जो आमिले सुन्दर मुखमुसुकाति ॥

हे राजन् जब यह सब विनती व विलाप करनेपर भी केशवमूर्तिका दर्शन नहीं मिला तब सब ब्रजबालोंने व्याकुल होकर मिलनेका भरोसा छोंड़ दिया व मूर्च्छित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ीं व अतिविलाप से रोदन करके कहनेलगीं हे माधव हे मुकुन्द हे मोहनप्यारे हे नन्दलाल हे केशवमूर्ति अब हमलोग तुम्हारे विरह में अपना प्राण देतीहैं जैसा उचित जानो वैसा करो ॥

बत्तीसवां अध्याय।

गोपियों के मध्य में श्यामसुन्दरका प्रकट होना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब इसीतरह सब ब्रजबाला विलाप करते करते मरण तुल्य होगईं तब उनकी सची प्रीतिने श्यामसुन्दरके अन्तःकरणमें प्रवेश किया जब केशवमूर्तिने देखा कि अब ये मेरे विरहमें मरने चाहती हैं तब अचानक उसी जगह श्यामसुन्दरने पीताम्बर व वैजयन्ती माला पहिनेहुये इसतरह प्रकट होकर दर्शन दिया जिसतरह नटलोग अपने करतब से अन्तर्धान होकर फिर प्रकट होजाते हैं ॥

क० राखैंगी न प्रान यह जानिकै कुँवरकान्ह प्रकटे सुजान बीचत न बान मारे हैं।
लखतही गोपिनके छंदमें अनंद बाढ़ी मंद मुसुकात ब्रजचंद यों निहारे हैं ॥
भनै बलदेव कहे बानी सुधासानी सुनो सकल सयानी तुम सबै दुःखभारे हैं।
गले माल डारे मुख पीतपटवारे पिय कहत पुकारे हम ऋणियां तुम्हारे हैं ॥

हे राजन् अपने चित्तचोर को देखते ही सब ब्रजबाला सचेत होकर इसतरह उठखड़ी हुईं जिसतरह मुर्देके तनुमें प्राण आजावें उससमय जैसी प्रसन्नता ब्रजबालोंको मोहनप्यारेका दर्शन पानेसे हुई उसका हाल वर्णन नहीं होसक्ता उस आनन्दका सुख वही मनुष्य कुछ जानताहै जिसका बिछुड़ा हुआ मित्र बहुत दिनोंपर आनमिलै वैसे गोपियां कामरूपी सांप

के डसजाने से कुम्हिला गई थीं जिस तरह कि अमृत पड़ने से सूखे वृक्ष हरे होजाते हैं उसीतरह मोहनीमूर्ति की अमृतरूपी दृष्टि पड़ने से उनके तनुमें प्राण आगया जैसे रातिको कमलका फूल मलीन रहकर प्रातसमय सूर्यके प्रकाशसे फूलजाताहै वैसे गोपियां जो मुरझाई हुई थीं वृन्दावन-विहारीका सूर्यरूपी कुंडल देखतेही खुशीसे फूलगई जिसतरह डूबताहुआ मनुष्य थाह पाकर खुशी होताहै उसीतरह ब्रजबालों ने जो तीव्र विरह-सागर केशवमूर्ति के गोता खारहीथीं उनको देखतेही किनारे लगगई व मोहनीमूर्तिको चारों ओरसे घेरलिया ॥

दो० कामतापसे वाम यक लगी श्याम उरजाय । ज्यों चन्दन के वृक्षमें रहत सर्प लपटाय ॥

हे राजन् इसीतरह किसी ब्रजबालाने केशवमूर्तिके अंगसे लपटकर अपनी छाती ठंढी किया व किसीने उनका मुख चूमकर अपने मनोरथके फलोंसे झोल भरलिया उससमय श्यामा बोली हे प्राणनाथ हमलोग तुम्हारे प्रेममें लोकलाज तजकर यहां आई सो तुम हमें अकेली छोड़कर अन्तर्धान होगये यह कौन न्यायकी बातहै वृन्दावनविहारीने कहा तुम्हें रात को अपने घरसे वनमें चला आवना उचित नहीं था तुमलोग वहां बैठी हुई मेरा ध्यान व स्मरण करतीं तो मैं बहुत प्रसन्न होता ऐसा कहकर मुरलीमनोहरने राधाप्यारीको गलेसे लगालिया व मीठी मीठी बातें सुना कर सब ब्रजबालोंको प्रसन्न किया तब एक गोपीने फूल कमलका मोहन-प्यारेके हाथसे छीन लिया दूसरी ब्रजबाला उनका हाथ पकड़कर बड़े प्रेम से बोली हे चितचोर इतनी देरतक तुम कहां रहे दूसरी गोपीने अपना मुँह चन्द्रमुखसे मिलाकर उनका जूठा पान प्रेमकी राह खालिया दूसरी ब्रज-बाला चित्रकारीके समान खड़ी होकर उनका रूप रस आंखोंकी राह पीने लगी व दूसरी गोपीने श्याममुन्दरके मुखका चुम्बा लेतीसमय उनका ओठ अपने ओठसे दबादिया दूसरी सखी बोली तुम बहुत भागकर चलेजाते थे अब मेरे हृदयसे बाहर जावोगेतो मैं जानोंगी कि बड़े बलवान् हो दूसरी ब्रज-बाला अपना हाथ मोहनप्यारेके कन्धे पर रखकर उनकी छवि देखने लगी जब यह दशा ब्रजबालोंकी देखकर श्यामसुन्दर उन्हें यमुना किनारे ले

गये तब एक गोपीने अपनी ओढ़नी बिछाकर बड़े प्रेमसे केशवमूर्तिको उसपर बैठाला और सब ब्रजबालों ने उनको इसतरह चारोंओरसे घेरलिया जिसतरह चंद्रमाके आस पास तारे रहते हैं व कोई गोपी क्रोधसे बोली तुम कपटकी राह पराया तन व मन हरकर किसीका गुण नहीं मानते आज हमारी इच्छा पूर्ण करो नहीं तो अपना प्राण तुमपर देवैंगी जब ऐसा कह कर सब ब्रजबालों ने उस चांदनीकी शोभा देखने व शीतल मन्द सुगन्ध हवा बहने से कामातुर होकर श्यामसुन्दरसे भोगकी इच्छा किया तब बैकुण्ठनाथ अन्तर्यामी भक्तहितकारी उनका मनोरथ सिद्ध करनेवास्ते जितनी गोपियां थीं उतने रूप होगये उससमय ब्रजबालों ने अपनी अपनी ओढ़नी उतारकर बालूपर बिछादिया व उस कोमल बिछौनेपर मोहनप्यारे को बैठाकर कामरूपी बातें उनसे करनेलगीं तब श्यामसुन्दर ने पहिले बाललीलाका सुख उन्हें दिखला कर फिर किशोर अवस्था अपनी बनालिया व सब गोपियों से अलग अलग गन्धर्व विवाह करके उनकी मनोकामना पूर्ण किया उससमय बड़े आनन्दमें एक ब्रजबाला जो तिरछी चितवनसे देखती थी बोली हे प्राणनाथ तुम बड़े कपटी व निर्दयी हो और सब ब्रजबाला सीधी व भोली तुम्हारे छलमें आनकर धोखा खाती हैं व मेरा मन तुमसे बोलनेको नहीं चाहता पर क्या करूं तुम्हारी मोहनी मूर्ति देखकर बिना बोले रहा नहीं जाता देखो जब तुम अन्तर्धान होगये थे तब हमलोगों ने तुम्हारे विरहमें कितना दुःख उठाया फिर इसतरह प्रकट हुये जानो कहीं नहीं गये थे सो तुम्हें मनमें कपट रखना व गुणको छोड़कर अवगुणकी ओर देखना उचित नहीं है यह वचन सुनकर दूसरी गोपी बोली अय प्यारी तुम चुप रहो अपने कहने से कुछ शोभा नहीं होती देखो मैं श्रीकृष्णके मुखसे उनकी कठोरताई का हाल कहलादेती हों ऐसा कहकर उस गोपी महाचञ्चलने मुसुकराकर पूछा हे मोहनप्यारे संसार में चार तरहके मनुष्य होते हैं एक वह जैसे दो मनुष्य आपसमें प्रीति रख कर एक दूसरेके साथ नेकीके बदले भलाई करैं दूसरे वह एक ओरसे प्रीति होकर दूसरा प्रेम न रक्खै तीसरे वह कि बुराई करनेवाले के साथ भी

भलाई करता है चौथा वह कि नेकी करनेपर भी जान बूझकर उसके साथ बुराई करै बतलाओ इन चारों में कौन भला होकर किसको बुरा कहना चाहिये ऐसा सुनकर श्यामसुन्दरने कहा तुमने बहुत अच्छी बात ज्ञान बढ़ावनेवाली पूंछी है मैं आप चाहता था कि संसारी मनुष्योंका हाल तुम से कहूं अब अपने प्रश्नका उत्तर मन लगाकर सुनो जो मनुष्य आपसमें नेकीके बदले भलाई करते हैं उनको संसारमें अच्छा समझना चाहिये जैसे संसारीलोग विवाह आदिकमें एक दूसरे के घर बैना व भाजी देते हैं पर यह प्रीति सदा स्थिर नहीं रहती दूसरे वह कि एककी ओरसे प्रीति होकर दूसरा मनुष्य उनके साथ प्रेम न रक्खै जैसे माता पिता पुत्रको बहुत प्यार करते हैं परन्तु पुत्र उतना प्रेम नहीं रखता तीसरे जो मनुष्य विना इच्छा सबके साथ भलाई करता है उसे वर्षा के समान समझना चाहिये जिस तरह पानी वर्षकर सब छोटे व बड़ों को सुख देता है और उसके बदले किसी से कुछ नहीं चाहता यही हाल परमहंस व महात्मालोगोंका भी समझो कि वह लोग अपनी सामर्थ्यभर दूसरेका भला करके उससे कुछ चाहना नहीं रखते चौथे जो मनुष्य भलाईके बदले जान बूझकर उसके साथ बुराई करते हैं उन्हें शत्रु समझना चाहिये और वे मनुष्य कृतघ्न व अधर्मी कहलाते हैं यह वचन सुनते ही सब व्रजबाला आपसमें एक दूसरेका मुख देखकर हँसने लगीं व एक गोपीने दूसरी सखीसे सैनमें बतलाया कि श्रीकृष्णजी चौथे मनुष्यकी तरह हैं तब मोहनप्यारे बोले तुमलोग मुझे हँसकर क्या कहती हो मैं निर्गुणरूप आत्माराम इन चारोंसे रहित रहकर किसी के साथ कुछ प्रीति नहीं रखता मुझसे जो कोई जिस बातकी चाहना करताहै उसकी इच्छा पूर्ण करदेताहूं व विश्वम्भर नामसे सब जीवोंको पालन करके एक क्षण किसी जीवको नहीं भुलावता व किसीसे कुछइच्छा न रखकरकेवल सच्चाप्रेम उनका चाहताहूं व अय गोपियो तुमलोग मुझसे प्रीति रखती हो इसलिये यह बात कहताहूं जिसतरह संसारी मनुष्य गाड़े हुये धनको आठों पहर याद रखकर उसका हाल किसीसे नहीं कहता इसीतरह जो मनुष्य मुझसे गुप्तप्रीति रख कर मेरे चरणों में अपना मन लगाये रहता है उसे मैं बहुत प्यार करताहूं ॥

दो॰ माखनप्रभु गोपालसों यहि विधि राखो हेत। ज्यों निर्धन धन पायके भेद न काहू देत॥

कदाचित् तुम ऐसा कहो कि मनसा वाचा कर्मणासे हमलोग तुम्हारे चरणोंमें ध्यान लगाये रहती हैं फिर तुम क्यों हमें छोड़कर अन्तर्धान हो गये थे तो इसका यह कारण है हमने तुम्हारी प्रीतिकी परीक्षा लिया था तुमलोग इस बात का कुछ बुरा न मानकर मेरा कहना सच्चा जानो मैं प्रेम बढ़ावने वास्ते तुमलोगोंमें से अन्तर्धान होगयाथा जिसतरह जाड़े में धूप अच्छी मालूम होती है उसीतरह अपने मित्र से अलग रहने में प्रेम अधिक होताहै अय गोपियो तुम्हारे प्रेम व ध्यान करने से मैं बहुत प्रसन्न रहता हूं पर तुमलोग अपने कुल व परिवारकी लज्जा छोड़कर रातको जो यहां चली आईं यह अच्छी बात नहीं किया ऐसा करने में न हम प्रसन्न हुये न दूसरेको यह बात अच्छी मालूम होगी जबतक मनुष्य जन्म लेकर जीता रहै तबतक कोई खोटा काम उपहासका न करे कदाचित् मन उस का अशुभ कर्म करनेवास्ते चाहै तौ भी ज्ञानकी राह अपने मनको रोकै जिसमें कोई उसे बुरा न कहै और यह भी मैं जानता व समझता हूं काम-रूपी प्रेम बढ़नेसे बेड़ी लज्जाकी टूट जातीहै व उसको किसीका समझाना कुछ गुण नहीं करता तुमलोगों की प्रीति व विलाप करने का हाल मैं आंखों से खड़ा हुआ देखता था तुमलोगों ने मायारूपी बेड़ी संसारकी जो कभी पुरानी नहीं होती तोड़कर मेरे साथ ऐसी सच्ची प्रीति किया है जैसे परम दरिद्री बड़ा धन पावे इसलिये मैं तुमसे उऋण नहीं होसक्ता॥

चौ॰ जैसे आईं मेरे काज। छांड़ी लोक वेद की लाज॥
ज्यों बैरागी छांड़ै गेह। मन दै हरिसों करै सनेह॥
मैं क्या तुम्हरी करौं बड़ाई। हमसे पलटो दियो न जाई॥

हे प्राणप्यारियो ब्रह्माके आयुर्दा प्रमाण जीकर एक एक गोपियों की सेवा जन्म भर करों तौ भी तुमसे उद्धार नहीं होसक्ता इस वास्ते तुम्हारा ऋणियां हूं॥

दो॰ अब तुम रहो उदार मति मनमें करो हुलास। महारास अब साजिकै पूरण करिहौं आस॥

तेंतीसवां अध्याय ।

श्रीकृष्णजी का गोपियों के साथ महारास करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दरने यह वचन प्रेम भरा हुआ कहकर गोपियों को धैर्य दिया तब सब व्रजबाला बड़े आनन्द से हाथ श्यामसुन्दरका पकड़कर नाचने लगीं इतनी कथा सुनकर परीक्षित ने पूछा महाराज रासलीला में जिस गोपीका हाथ मुरलीमनोहर पकड़े थे उसका अंग मोहनप्यारेसे स्पर्श होताथा और सब व्रजबालोंकी कामना किसतरह पूरी हुई थी शुकदेवजी बोले हे राजन् परब्रह्म परमेश्वरकी महिमा कोई नहीं जान सक्ता मुरलीमनोहरने दो दो गोपियों के बीच में एक एक रूप अपना प्रकट करके दाहिने व बायें दोनों गोपियों का हाथ पकड़े हुये मण्डल बांधकर रासलीला किया था पर उनकी माया से सब गोपियां अनेक रूप धारण करनेका हाल न जानकर यह समझती थीं कि केशवमूर्ति हमारे साथ नाचते हैं और इस आनन्दरूपी नाचमें हाथ व पैरकी ठोकर देकर अंगसे अंग रगड़ना व आंख व भौंह मटकाकर कटाक्ष करना व गर्दन टेढ़ी करके कुण्डल हिलावना जो जो बातें रास व विहार में चाहिये वह सब मुरलीमनोहर व्रजबालोंके साथ व गोपियां वृन्दावनविहारी से करती थीं उससमय शोभा श्यामरंग मोहनप्यारेकी गोरी गोरी गोपियोंमें कैसी मालूम देती थी जैसे सुनहले दानोंकी मालामें नीलमणि रहती है व नाचती समय उनके कानोंका कुण्डल कैसी शोभा देता था जैसे श्याम घटा में बिजुली चमकती है उसी समय ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व ऋषीश्वरोंने ध्यान परमेश्वरका छोड़ दिया व रासलीलाका सुख देखने वास्ते अपनी अपनी स्त्रियों समेत विमानों पर बैठकर वृन्दावन में आये व आकाशमार्ग से श्यामसुन्दर व व्रजबालों पर फूल बरसाकर व्रजवासियों के भाग्यकी बड़ाई करने लगे व गन्धर्वोंने अनेक तरहका बाजा बजाकर गाना आरम्भ किया व देवकन्या व अप्सरा रासलीलाकी शोभा देखतेही कामरूपी मदमें ऐसी मोहित व अचेत होगई कि उनके कमरका घुँघुरू खुलकर गिरपड़ा व तन मनकी सुधि जाती रही ॥

दो० देवराज शोभित सरिस इन्द्राणी के संग। माखन प्रभुके दरशको हँसत नयन सब अंग ॥१॥

चन्द्रमा व तारागण वह आनन्द देखतेही चित्रकारी से खड़े होगये और उन्हें आगे चलने की सामर्थ्य नहीं रही व चन्द्रमाने प्रसन्न होकर अपनी किरणसे रासमंडल पर अमृत बरसाया सो चन्द्रमाके खड़े रहनेसे वह रात छः महीनेके बराबर होगई पर नारायणजीकी महिमासे रात बढ़ने का हाल किसी ने नहीं जाना इसलिये उस रात्रिका नाम संसारमें प्रेम-रात्रि प्रकट हुआ हे राजन् नाचनेके परिश्रमसे व्रजबालोंके मुखपर पसीना निकलकर बिथरे हुये बालोंमें कैसी शोभा देता था जैसे काले काले सांप ओसकी बूंद चाटने आये हों उससमय श्यामसुन्दर अपने पीताम्बर से पसीना उनका पोंछ देतेथे व कोई गोपी नाचते नाचते थककर केशवमूर्ति का हाथ पकड़े हुये पृथ्वीपर बैठ जातीथी पर नाचना व ताल व स्वर नहीं बिगड़ता था बाजी व्रजबाला अपना हाथ मोहनप्यारेके शिर व कंधे पर रखकर कहती थी नाचते नाचते मेरा पांव दुखने लगा तनिक सुस्ताकर फिर नाचूंगी कोई व्रजबाला मोहनप्यारेकी माला चूमकर कहती थी अय प्राणनाथ तुम्हारे गले में यह हार बहुत सुन्दर मालूम होता है व बाजी गोपी घूमते घूमते थककर श्यामसुन्दरके गले से लपटके कहती थी मैं तुम्हारे शरण आई हूं मुझे कभी अपने चरणों से अलग मत करना व कोई सखी मोहनप्यारेके हाथसे कमलका फूल छीनकर उन्हें कहती थी मेरे कलेजे पर हाथ रखकर देखो कैसा धड़कता है आठों पहर तुम मेरे हृदय में रहते हो इसलिये मैं डरती हूं कि कलेजा धड़कने से तुमको कुछ दुःख न पहुँचे ॥

दो० नख शिखसे भूपण सजे व्रजभूषणके हेत। गान करत अति चाव सों निरतत अति छविदेत ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् इसीतरह श्यामसुन्दर व्रजबालों के साथ अनेक तरहका बाजा बजाकर छः राग व छतीस रागिनी अलापके रास व विलास करते थे व कभी वंशी में अनेक तरहकी उपज बजाकर मन व्रजबालों का अपनी ओर मोहिलेते थे उस आनन्द रूपी नाचमें गोपियां कामदेवके मदमें ऐसी मोहित होगई कि उनको

अपने तनु व मनकी कुछ सुधि नहीं रही कभी घूमती समय अंचल व्रज-बालोंका उड़जाता था तो कुचोंकी सुन्दरताई देखकर देवता मोहिजाते थे व कभी नाचती समय मुकुट श्यामसुन्दरका खुलकर गिरने लगता था तब गोपियां अपने हाथसे उसे बांध देती थीं व कभी मोतियोंका हारव्रज-बालों के गलेसे टूटकर गिरजाता व वनमाला श्यामसुन्दरका खुलकर गिरपड़ता था उसके उठानेकी सुधि कोई नहीं रखता था कभी कोई सखी मुरलीमनोहर के साथ गाकर ऐसा स्वर मिला देती थी कि वृन्दावनवि-हारी उस के गाने से मुरली बजाना भूलजाते थे ॥

दो० माखनप्रभु घनश्यामसँग सुन्दरि व्रजकीबाम । दामिनि ज्यों शोभितमहानिरतनगतिअभिराम
निरततवहांहुलाससों माखन प्रभु सुखरास । आसपास वनिता सबै सुभग सुरास निवास ॥

हे राजन् जिसतरह बालक अपना मुख शीशे में देखकर भूल जाता है उसीतरह सब व्रजबाला राग व रंगके मदमें मोहित होकर अपना गहना व कपड़ा एक दूसरी पर न्यवछावर करती थीं उससमय राग व रागिनी का ऐसा सामा बँधाथा जिसे सुनकर यमुना जल बहने से थँभि रहा व हवा चलने से ठहरगई व सब पशु व पक्षी उस वनके वह लीला देखकर मोहित हुये कि चरना व उड़ना भूलकर चित्रकारी से खड़े होगये केशव-मूर्ति व राधाप्यारी जो बीचमें नाचतेथे उनकी सुन्दरताई पर सब व्रजबाला बलायें लेकर आपसमें प्रसन्न होती थीं उससमय एक व्रजबालाने आप नन्द बनकर दूसरी सखीको वृषभानु बनाया व श्रीकृष्णका विवाह राधिका से करके समधियोंके समान आपसमें शिष्टाचार किया व श्यामाके हाथमें कंकण बांधकर श्यामसुन्दरसे कहा खोलो जब वह कंकण नहीं खुला तब सब व्रजबाला हँसनेलगीं व राधा श्रीकृष्णकी विधिपूर्वक पूजाकरके बोलीं॥

दो० तहँ नँदनंदन लाड़िली श्रीवृषभानुकुमारि । दुल्लह दुलहिनि राजहीं शोभा अमित अपारि ॥
सो० दुल्लह नन्दकुमार दुलहिनि श्रीराधाकुँवरि । सन्तन प्राणअधार अचलरहै जोड़ी सदा ॥

हे राजन् यह चरित्र देखकर राधा व कृष्ण बहुत प्रसन्न होते थे व ना-चतीसमय गोपियों के अंगसे जो फूल टूटकर गिरपड़ते थे उनपर ऋषी-श्वर व मुनीश्वर भँवररूप धरकर रासलीलाका सुख देखने वास्ते गूंजते थे

और शब्द घुँघुरू पायजेव व करधनी ब्रजबालोंकी सुनकर वह भौंरे उड़ना भूलगये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् किसे सामर्थ्य है जो गोपियों की बड़ाई वर्णन करने सके अन्तसमय सब ब्रजबालों ने आप मुक्ति पाकर तीन तीन पीढ़ी अपने माता व पिताको कृतार्थ कर दिया व परमात्मा पुरुषने अपने भक्तों का मनोरथ पूर्ण करनेवास्ते ब्रजबालारूप जीवात्मा से सच्ची रासलीला करके जैसा सुख उन्हें दिया वह आनन्द का हाल कहा नहीं जाता जिसतरह बालक अज्ञान शीशे में मुख देखकर अपनी परछाहीं से खेलताहै वही गति केशवमूर्तिने किया जब अंगके स्पर्श से गोपियोंके शरीरका केशर व चंदन मोहनप्यारेके तनु व वैजयन्ती माला में लगजाता था तब वृन्दावनविहारी गोपियों से कहते थे मैंने केशर व चंदन नहीं लगाया यह सब तुम्हारे शरीरका मेरे अंगमें लगकर सुगंध उड़ती है जब गोपियां नाचती व कूदती हुई गिर पड़ती थीं तब वृन्दावन-विहारी अनेक रूपसे उनका हाथ पकड़कर अपने पास खींच लेते थे देवता लोग वह सुख देखकर डाहकी राह कहते थे हे श्यामसुन्दर हमारा जन्मभी वृन्दावन में देते तो तुम्हारे साथ रासलीला करके जन्म अपना स्वार्थ करते ॥

दो० धनिवृन्दावन धन्यसुख धन्यश्याम धनिरास । धनिधनि मोहनगोपिका नितनवकरतहुलास ॥

हे परीक्षित रासलीला करते करते मोहनप्यारेके मनमें कुछ तरंग आगई तो सब ब्रजबालों को साथ लिये हुये जागने की गर्मी मिटाने वास्ते यमुनाजल में पैठ गये जिसतरह मतवाला हाथी हथिनियों को साथ लेकर जलक्रीड़ा करताहै उसीतरह अलग अलग रूप धरकर राधा आदिक गोपियों से जलविहार किया जब स्नान करने से जागने व नाचने की गर्मी मिटाकर बाहर निकले तब योगमायाने सब ब्रजबालों व अनेक रूप श्यामसुन्दरके पहिरनेवास्ते उत्तम भूषण व वस्त्र वहां लादिया व इतर आदिक सुगन्ध अंगमें लगाकर एक एक गजरा सबके गले में ऐसा पहिनाया जिसका फूल कभी न कुँभिलावै जब वृन्दावनविहारी श्यामा आदिक गोपियोंको संग लेकर वनविहार करनेलगे तब देवतोंने उनपर

फूल बरसाये व उतारी हुई गीली धोतियां उनकी आपस में प्रसादों के समान टुकड़े टुकड़े बांटलिया जब वनविहार करचुके तब श्यामसुन्दरने गोपियों से कहा स्नान करने से तुम्हारी मांदगी छूटगई अब चार घड़ी रात्रि बाकी है सो अपने अपने घर जाव यह वचन सुनते ही सब ब्रजबाला उदास होकर बोलीं हे ब्रजनाथ तुम्हारा चरण छोड़कर अपने घर कैसे जावैं वैकुण्ठनाथने कहा जिसतरह योगी व ऋषीश्वरलोग मेरा ध्यान करते हैं उसी तरह तुमलोग भी अन्तःकरण से मेरी याद रक्खो तो आठों पहर तुम्हारे पास मैं बनारहूंगा यह बात सुनतेही सब ब्रजबाला मनको धैर्य देकर श्यामसुन्दर से बिदा हुईं और अपने अपने स्थानपर आईं व घरवालों को सोया हुआ देखने व अपनी अपनी मनोकामना पावने से बहुत प्रसन्न हुईं व परमेश्वरकी माया से यह बात उनके घरवालों ने नहीं जाना कि हमारी स्त्रियां रात्रिसमय कहीं बाहर गई थीं इसलिये मोहन-प्यारे से किसी ग्वालने कुछ बुरा नहीं माना इस तरह कभी कभी नन्द-लालजी गोपियों के साथ रासलीला व वनविहार करते थे इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे मुनिनाथ एक संदेह मुझे है सो छुड़ा दीजिये श्रीकृष्णजी ने पृथ्वी का भार उतारने व धर्म के बढ़ाने वास्ते अवतार लेकर विपरीत वेद व शास्त्र के परस्त्रियों से क्यों विहार किया यह वचन सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजन् मैं तुमसे पहिले गोपियों के जन्म लेने का हाल कहचुकाहूं कि वे सब वेदकी ऋचा थीं व लक्ष्मीजी ने राधाका अवतार लेकर श्रीकृष्णजी के साथ संसारमें लीला की थी इसलिये उनको श्यामसुन्दरसे अलग समझना न चाहिये और जो अनेकरूप वृन्दावनविहारीका सब गोपियोंके पास था उस बातकी महिमा कोई नहीं जानने सक्ता और जिस काम में बुद्धिका प्रवेश न हो उस बात में दोष लगाना न चाहिये विष खाना महादेवका काम होकर दूसरे को ऐसी सामर्थ्य नहीं थी जो उसकी गर्मी सहने सक्ता परमेश्वर निर्गुणरूप संसारी बातों से कुछ प्रयोजन नहीं रखते इसलिये उन्हें दोष लगाना अधर्म होता है वेद व शास्त्रका वचन सच्चा मानकर उसीके प्रमाण करना

चाहिये व वैकुण्ठनाथकी लीला में संदेह करना उचित नहींहै व जिन परमेश्वरका नाम लेने व ध्यान करने से बड़े बड़े योगी व मुनि कृतार्थ हो जाते हैं उन आदिपुरुष परमेश्वर को मनुष्य समझकर दोष लगाना बड़ा पापहै अग्नि में जिसतरह अशुद्ध वस्तु भी जलनेसे पवित्र होजाती है उसीतरह समर्थ लोग क्या नहीं करते और यह सब लीला नारायणजी ने संसारीजीवों को भवसागर पार उतरनेवास्ते जगत् में की थी जिसके पढ़ने व सुनने से कलियुगवासी लोग मुक्ति पावें और वह परब्रह्म परमेश्वर अपने सुखवास्ते कुछ नहीं करते जो कोई उनकाभजन व स्मरण करके जिस वस्तु की चाहना रखता है उसका मनोरथ पूर्ण करते हैं यह स्वभाव उन का सदा से चला आताहै व संसारी व्यवहारसे रहित होकर सब वस्तुमें वर्तमान रहते हैं पर ज्ञान प्राप्त हुये विना किसी को नहीं दिखलाई देते व गोपीनाथका यश गावनेवाले मनुष्य परमपदको पहुँचते हैं व श्यामसुन्दर की लीला सुननेका फल सब तीर्थ स्नान करने के बराबर होताहै व व्रज-बालोंके जो पति थे उनके शरीरमें भी श्यामसुन्दरका प्रकाश था इसलिये सब गोपियों के पति श्रीकृष्णजीको समझना चाहिये और यह पंचाध्यायी की कथा वांचने व सुननेवाले जीव सब पापोंसे छूटकर मुक्तिपदार्थको पाते हैं परमेश्वरकी कथा में किसी बात का सन्देह न रखकर वेद व पुराण के वचनपर विश्वास करना चाहिये ॥

दो० मोमनमें अचरज बड़ो तुमसों ज्ञानी होय। माखनप्रभुकी कथामें भरम मानिये सोय ॥

हे परीक्षित आज से ऐसा सन्देह चित्त में कभी मत लेआना अज्ञान मनुष्य को क्या सामर्थ्य है जो परमेश्वर के कामों में अपनी बुद्धि मिलाने सके ॥

दो० माखनप्रभु गोपालकी लीला परम पुनीत। भाग्य उदय जगमें वही जो सुनिये करि मीत ॥

चौंतीसवां अध्याय।

नन्दजीकी आधी टांगको अजगर सांपका निगल जाना ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् जिसतरह श्यामसुन्दर ने सुदर्शन विद्याधर को सांपकी योनिसे छुड़ाकर शंखचूड़ दैत्यको मारा था उसकी कथा कहते

हैं सुनो नंदजी ने एकदिन सब ग्वाल व गोपियों से कहा हमने श्रीकृष्ण जी के जन्मते समय यह मानता मानी थी कि जब मोहनप्यारे बारह वर्ष के होंगे तब मैं अपने सब जाति भाई व बाजे गाजे समेत जाकर पूजा अम्बिका देवी की करूंगा सो महारानी की कृपा से वह दिन मुझे दिखलाई दिया इसलिये सबको चलकर पूजा उनकी करना चाहिये यह वचन सुनतेही वे लोग प्रसन्न होगये तब एकदिन नन्द व यशोदा कृष्ण व बलराम व सब ग्वालबाल व गोपी व छोटे बड़ों को साथ लेकर बड़े हर्षसे गाते बजाते चले व दूध व दही व मेवा व मिठाई आदिक सामग्री पूजा की गाड़ी व बैलोंपर लदवाये हुये सरस्वती के किनारे पहुँचकर स्नान किया व पुरोहित को बुलाकर विधिपूर्वक देवीजीको पूजा और हाथ जोड़ कर बोले हे अम्बिका माता तुम्हारी कृपासे मेरी मनोकामना पूरी हुई फिर नन्दजीने बहुतसी गो व सोना विधिपूर्वक दान देकर हजार ब्राह्मणों को अच्छीतरह भोजन खिलाया उसदिन महादेवभी देवतोंसमेत दर्शन करने आये थे जब पूजा करने व परिक्रमा लेने व ब्राह्मण खिलाने में सारा दिन बीतकर संध्या हुई तब नन्दजी आदिक सब लोग तीर्थ व्रत रखकर रात को वहीं सो रहे॥

दो० ऐसी विधि सोये सभी सुधि न रही तनु माहिं। बारम्बार पुकारिये तबहूं जागत नाहिं॥

हे राजन् उसी निद्राके समय जब आधीरातको एक अजगर आनकर नन्दराय की आधी टांग निगल गया व उन्होंने जागकर अपनेको काल के मुखमें फँसे देखा तब श्रीकृष्णको अपनी रक्षावास्ते पुकारा नन्दरायका बोल सुनतेही सब ग्वाल बाल व गोपियोंने उठकर उजियाला करके देखा तो मालूम हुआ कि एक अजगर नंदजीकी आधीटांग निगले हुये पड़ा है यह दशा देखतेही वह लोग जलती हुई लकड़ियोंसे उस सांप को मारने लगे पर उसने नंदजी को नहीं छोड़ा तब सबोंने हार मानकर श्रीकृष्णजी को जगाया जब श्यामसुन्दरने बालकों की तरह आंख मलते हुये उठकर जैसे अँगूठा अपने बायें पांवका छुवाया वैसे उस अजगर ने नंदजी का पैर छोड़ दिया व जमुहाई लेकर मनुष्यरूप बहुत सुंदर भूषण व वस्त्र पहिने

राजोंके समान होगया व नंदलालजी को दण्डवत् करके उनके सामने खड़ा होकर स्तुति करने लगा यह हाल देखकर नंदआदिक गोप व गोपियों ने अचम्भा माना तब श्यामसुन्दरने उस मनुष्य से पूछा ॥

दो० तुवस्वरूप सुन्दर महा उपमा कही न जाय। सर्परूप काहे धरेउ हमसे कहो बुझाय ॥

यह वचन सुनतेही वह हाथ जोड़कर बोला हे वैकुण्ठनाथ आप अन्तर्यामीसे कोई बात छिपी नहीं है परन्तु तुम्हारी आज्ञानुसार अपना हाल कहता हूं सुनिये मैं सुदर्शन नाम विद्याधर हंसपुरमें रहकर धन व सुन्दरताई व बुद्धिके अभिमानसे अपने सामने किसीको कुछ वस्तु नहीं समझता था व देवतालोगभी मेरा सन्मान बहुत करते थे सो एकदिन विमान पर बैठकर सैर करनेवास्ते निकला जब राहमें अंगिरा ऋषीश्वरका कुरूप जो कुबड़े थे देखकर मुझे हँसी आई और मैं ठट्ठेकी राह कई बेर अपना विमान उड़ाता हुआ उनपर लेगया तब ऋषीश्वरने विमानकी परछाहीं ऊपर पड़नेसे क्रोधित होकर मुझे ऐसा शाप दिया कि तू अजगर सांप होजा जब यह शाप सुनकर मैंने अपना अपराध क्षमा करानेवास्ते अति बिनती उनकी की तब उन्होंने कहा मेरा वचन फिरने तो नहीं सक्ता पर कुछदिनोंमें श्रीकृष्णजीका चरण छूनेसे तुझे फिर विद्याधरका तनु मिलेगा सो मैं तभी से अजगर होकर तुम्हारे चरणोंकी इच्छा रखता था इसीवास्ते आज मैंने नन्दजीका पांव पकड़ा जिसमें तुम्हारा दर्शन मुझे प्राप्त हो सो आपने दयाकी राह मुझे अपना दर्शन देकर कृतार्थ किया जिन चरणकमलका दर्शन ब्रह्मा व महादेव व इन्द्रादिक देवतोंको ध्यान में जल्दी नहीं मिलता उन चरणों को अंगिरा ऋषीश्वर के प्रताप से छूकर मैं पवित्र हुआ ॥

दो० ताहि शाप कैसे कहौं वह तो भई अशीश। जेहि प्रताप जगदीशके पग लागे मम शीश ॥

इसलिये उन ऋषीश्वरके उपकार से मैं जन्मभर उऋण नहीं होसक्ता किसवास्ते कि उन्होंने बुराईके बदले मेरे साथ भलाई की जो अच्छे लोग हैं वह किसी की बुराई नहीं चाहते यह स्तुति व दण्डवत् करनेके उपरान्त वह विद्याधर विमानपर बैठके अपने लोकको चला गया तब ब्रजवासी

लोगों ने अचम्भा मानकर यह निश्चय किया कि यह परब्रह्म परमेश्वर का अवतार हैं प्रातसमय नन्द आदिक गोप व गोपियां अम्बिका देवी का दर्शन करके अपने घर आये हे राजन् एक दिन श्याम व बलराम चांदनी रात में व्रजबालोंके साथ यमुना किनारे रास व विलास करके बांसुरी बजाते थे सो केशवमूर्तिने मुरली की ध्वनिसे व्रजबालोंका मन ऐसा मोहि लिया कि गोपियां बांसुरी के शब्दपर मोहित होकर श्यामसुन्दर के पीछे पीछे इसतरह गाती फिरती थीं जिस तरह परछाहीं साथ नहीं छोड़ती उससमय व्रजबालोंका चित्त ऐसा अचेत होगया कि अपने तनु व वस्त्रकी कुछ सुधि उन्हें नहीं रही थी सो अचानक उसी समय शंखचूड़ नाम यक्ष कुवेर देवताका सेवक अतिबलवान् व मित्र तृणावर्त्त आदिक दैत्योंका जिसके शिरमें बहुत बढ़िया मणि थी घूमता हुआ वहां पर आया तो उसने क्या देखा कि श्याम व बलराम बांसुरी बजा रहे हैं और वंशी की ध्वनिपर सब व्रजबाला मोहित होरही हैं यह आनन्द उससे देखा नहीं गया इसलिये कुछ गोपियोंको अपने कमन्दमें फँसाकर उत्तरओर लेचला जबतक बांसुरी की ध्वनि गोपियों के कानमें पहुँचती रही तबतक वे सब ऐसी अचेत थीं कि उन्हें अपने फँसनेकी कुछ सुधि मालूम नहीं हुई जब दूरतक खींच लेजाने से उन्हें वंशीका शब्द सुनाई न दिया तब वे सब चैतन्य होकर अपने को कमन्द में फँसी देखतेही चिल्लाने लगीं ॥

चौ० पूरणब्रह्म प्रीतिरस पागीं। कृष्ण कृष्ण करि टेरन लागीं ॥
हे भगवन्त सन्त हितकारी। वेगि आय सुधि लेव हमारी ॥

यह दीन वचन सुनतेही श्याम व बलरामने दो वृक्ष उखाड़ लिये और जिस तरह सिंह हाथीको मारनेवास्ते झपटता है उसी तरह दोनों भाई दौड़ कर गोपियों के पास जापहुँचे व पुकारकर कहा अब तुम लोग कुछ चिन्ता मत करो ॥

दो० तुम्हरे करुणा वचन सुनि मैं आयाहूं धाय। शंखचूड़ शिर चूर करि तुमको लेब छुड़ाय ॥

जब उनकी ललकार सुनतेही वह यक्ष व्रजबालों को छोड़कर भागा तब केशवमूर्तिने गोपियोंकी रक्षाके वास्ते बलरामजीको वहां छोड़ दिया

व आप हवा व बिजुलीकी तरह दौड़कर शंखचूड़के ऐसा मुका मारा कि वह मरगया तब मुरलीमनोहरने उसके शिरकी मणि निकालकर बलराम जी को दे दिया व व्रजबालों को साथ लेकर आनन्दपूर्वक अपने घर आये इसीतरह श्रीकृष्णजी नित्य नई नई लीला करके वृन्दावनवासियों को सुख देते थे ॥

पैंतीसवां अध्याय ।

गोपियोंके विरहकी कथा ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित एक दिन श्रीकृष्णने ग्वालोंके संग गौ चराती समय वृन्दावन में वंशी बजाकर ऐसा राग व रागिनी गाया जिस का शब्द सुनतेही ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता अपनी स्त्रियों समेत मोहित होगये जैसा राग व रागिनी बांसुरीमें गाते थे वैसा गाना ब्रह्मा व महादेव व नारद आदिक किसी से नहीं बन पड़ता था व राधाप्यारी आदिक व्रजबाला अपने परिवारवालोंके डरसे केशवमूर्तिके पास वनमें न जाकर नित्य उनके विरह में व्याकुल रहती थीं व घर में एक क्षण चित्त उनका नहीं लगता था इसलिये अपनी अपनी गोल बांधकर कुछ व्रज-बाला राहमें व कोई झुण्ड यशोदाके पास व बाजी गोल गांवमें बैठ बीच याद व चर्चा मोहनप्यारे के दिन अपना काटती थीं उनमें कोई व्रजबाला सूर्य के सामने हाथ जोड़कर विनयपूर्वक कहती थी महाराज तुम जल्दी अस्त होजाव तो सन्ध्या समय मोहनप्यारे घरपर आवें तब मैं उनका रूप रस पीकर अपने कलेजेकी तपनि बुझाऊँ व बाजी गोपी केशवमूर्ति की सुंदरताई वर्णन करके उनके ध्यानमें अचेत होजातीथी व कोई व्रजबाला नंदलालजी का यश गाकर मन अपना प्रसन्न करती व बाजी गोपी केशवमूर्ति के विरह में घबड़ाकर रोने लगती थी तब ज्ञानवान् गोपियां उसे समझाकर कहती थीं सुनो प्यारी इस घबड़ाने व रोनेसे क्या मिलैगा उत्तम यह है कि हमलोग बीच स्मरण व चर्चा मनहरणप्यारे के दिन अपना काटैं जब सब व्रजबाला यह बात मानकर बीचचर्चा बालचरित्र श्रीकृष्णजीके लीनहुईं तब एक गोपी बोली हे सखियो बांसुरीका बड़ाभाग्य

समझो जो श्यामसुन्दर के ओठों से लगी रहती है व मोहनप्यारे अपना हाथ लगाकर उसमें ऐसी उपज निकालते हैं कि जिस शब्दके सुनने से जीव जड़ व चैतन्यका चित्त ठिकाने नहीं रहता ॥

दो० जारसको हमतप कियो षटऋतु सबब्रजवाम। सो रस मुरली लेत अब सहजै वशकरि श्याम॥

सो० गावत मीठी तान मुरली सँग अधरन धरे। अब याके वश कान्ह अवरन वश वह करिरही॥

दूसरी सखीने कहा किसवास्ते बांसुरीकी ऐसी बड़ाई नहो जिस किसी का हाथ श्यामसुन्दर पकड़ें वह तीनों लोकका मालिक होसक्ताहै मनुष्यों की क्या सामर्थ्य है जो वंशी की ध्वनि सुनकर अचेत न होजावें उसके शब्दपर ब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वर मोहित होकर यह इच्छा रखते हैं कि हमलोगोंको परमेश्वर मनुष्यका जन्म वृन्दावनमें देते तो आठोंपहर श्यामसुन्दरका दर्शन करने व मुरली सुनने से आनन्द होकर हरिचरणों की धूरि अपने शिर व आंखों पर लगाते उसी तरह देवतों की स्त्रियां अपने अपने पति के साथ रहने पर भी उस बांसुरीके बोल पर मोहित होजाती हैं॥

दो० माखनप्रभुकी बांसुरी श्रवणन सदा सुहाय। जाकी ध्वनिसुनिकै सबै सुर मुनिरहत लुभाय॥

दूसरी सखी बोली कदाचित मनुष्य व देवता जो ज्ञानवान् हैं बांसुरी की ध्वनि पर मोहित होगये तौ कौन बड़ी बात है उस मुरली का शब्द सुनतेही पशु व पक्षी चरना व पागुर करना व उड़ना भूलकर चित्रकारी से खड़े रहजाते हैं व किसी से नहीं भड़कते॥

दो० एक सखी यहिविधि कहै सुर नरकी मति शुद्धि। पशुपक्षी सब होत हैं जिनकी शुद्धि न बुद्धि॥

दूसरी ने कहा हे प्यारियो मुरली के शब्द में ऐसा गुण है कि कोई कैसीही चिन्ता में बैठाहो उसका बोल सुनतेही प्रसन्न होजाता है॥

दो० फिरियै याके संग लगि लोकलाज घर त्यागि। जब जब सो जहँ बाजिहै मोहनके मुखलागि॥

सो० करिहै नाना रंग यह जानत टोना कछू। या मुरली के रंग देखो हरि कैसे भये॥

दूसरी ब्रजबालाने कहा वह बांसुरी बड़ी चतुरी व कुटनी है जिससमय श्रीकृष्णजी को किसी की चाहना होती है उस समय वह बांसुरी बजाकर उसे अपने पास बुलालेते हैं व यमुनाजल भी वह शब्द सुनकर बौराय जाता है इसीवास्ते बेड़ियां लहर की उसके पांव में पड़ीहैं व वृक्षों की डाली

जो नीचे ऊपर लिपटी रहती हैं वह भी बांसुरी सुनने से अचेत होगई हैं नहीं तो चैतन्य मनुष्य किसी से नहीं लिपटता व कमल का फूल भी उसी शब्द पर मोहित होकर मतवालों की तरह आठोंपहर शिर अपना हिलाता है व बादल उसी ध्वनि पर मोहित होकर विरहियों की तरह रोयकर आंख से पानी बरसाता है॥

सो० हरिको करि वश माहिं मुरली लूटै अधररस। उर डर मानत नाहिं हम सबते बोलत निठुर॥

दूसरी गोपी बोली मैं जानती थी श्यामसुन्दर केवल लड़कपन के खेलमें बड़े चतुर हैं पर अब मुझे मालूम हुआ कि गाने व बजाने में भी कोई उनकी बराबरी नहीं करसक्ता दूसरी ब्रजबालाने कहा ब्रह्मा व महादेव आदिक देवतों व बड़े बड़े ऋषीश्वरों व ज्ञानियों का ध्यान भी वंशी सुनकर इसतरह छूटजाता है जिस तरह कोई नींद से जाग उठै दूसरी गोपी बोली मुरली हमारी सवति श्यामसुन्दर को ऐसी प्यारी है कि दिन रात उसको अपनी छाती से लगाये रहते हैं पिछले जन्म मुरली ने बड़ा भारी तप किया था जिसके प्रताप से मोहनप्यारे को अपने वश करलिया॥

दो० जैसे हैंगे हरि निठुर वंशी भई सहाय। अब मुरली अरु श्यामकी जोड़ी मिली बनाय॥
सो० मेटत पिछले दाग जो वशकरि पायो पिया। धनि धनि मुरली भाग अब गरजत अधरन चढ़ी॥

दूसरी सखी ने कहा हे प्यारियो मुरली का क्या अपराध है यह सब कठोरताई नन्दलालजी की समझनी चाहिये कि उन्होंने नारी प्रीति छोड़दिया व वंशी नीच जाति को अपनी रानी बनाकर रक्खा है दूसरी ब्रजबाला बोली कि मुरली बांसके तनुमें जन्म पाकर एक पैर से खड़ी रही बरसात व गर्मी व सर्दी का दुःख अपने ऊपर उठाकर परमेश्वर का तप किया फिर अपना पोर पोर कटवाया व अग्निकी गर्मी ऊपर सहकर अंग अंग में अपने छेद कराया इतना दुःख उठाकर उसने त्रिलोकीनाथ को अपने वश किया है इसीवास्ते तीनों लोकों के जीव उसके शब्द पर मोहित होजाते हैं हमलोगों को क्या सामर्थ्य है जो उसकी बड़ाई व बराबरी करसकैं जब उसके समान तुमलोग भी तप करो तब मोहनप्यारे तुम्हारे साथ भी वैसी प्रीति करसक्ते हैं उनका पाना सहज मत समझो देखो जब हमलोगोंने

भी श्यामसुन्दर के मिलने वास्ते व्रत किया तब उन्होंने हमारे वास्ते चीर छिपाकर हमको नंगी देखा था यह अपने अपने भाग्य का फल है ॥

दो० मुरलीकी सर मतिकरो कहो हमारो मान। धनि धनि वाहि बखानिये सुन वाको यश कान॥
सो० रहै विश्वभरि जीति मोहनमुखलगि बांसुरी। मेटि सकल श्रुति नीति रीति चलावत आपनी॥

दूसरी गोपीने कहा मुरली से प्रीति रखने में हमारे वास्ते भी अच्छा होकर उसके साथ वैर करने में कुछ फल नहीं मिलैगा इसलिये वंशी से डाह करना न चाहिये हमलोग केशवमूर्ति के साथ बालापन से प्रीति रखती हैं उनके चरणों का स्मरण व ध्यान करने से तुम्हारा अर्थ भी सिद्ध होगा॥

सो० हमको है यह आश वह हैं अन्तर्यामि हरि। करिहैं नहीं निराश उर अन्तरकी जानिकै॥

दूसरी व्रजबाला बोली वंशी श्यामसुन्दर के ओठों का अमृत पीकर अमर होगई इसी वास्ते अपना बोल सुनाकर हमलोगों को ज्ञान सिखलाती है यह वचन सुनतेही राधाप्यारी श्रीकृष्ण के विरह में डूबकर रोने लगी तब दूसरी गोपीने उससे कहा तू उदास मत हो श्रीकृष्णजी तेरे ऊपर मोहित होकर तेरा नाम बांसुरी में बजाते हैं व तू रानी होकर मुरली तेरी दासी है हमलोग वृथा बांसुरी को सवति जानकर उससे वैर रखती हैं मोहनप्यारे ने मुरली को सबगुणनिधान समझकर उससे प्रीति लगाई है॥

दो० अब मुरली छूटै नहीं याके वश भये श्याम। प्रकट कियो सब जगत में मुरलीधर निज नाम॥

दूसरी गोपीने कहा हे सखी मोहनप्यारा चित्तचोर वृन्दावन में ग्वालों के कन्धे पर हाथ रक्खे हुये गौ चरावता फिरता होगा व वंशी की ध्वनि सुनकर सब गौ इकट्ठी होगई होंगी दूसरी सखी बोली मोहनप्यारे ऐसे सुन्दर हैं जिनके मुख से हँसती समय फूल झड़ते हैं उसका मोहनीरूप देखने व वंशी सुनने से कामदेव हमारे वशमें नहीं रहता व बाँसुरी का शब्द सब जीवों के पैरमें ऐसी बेड़ी डाल देता है कि किसी को चलने की सामर्थ्य नहीं रहती ॥

दो० धनि धनि वंशी बांसकी धनि थाके मृदु बोल। धनि ल्याये गुण जांचिके वनतेश्याम अमोल॥

हे परीक्षित इसीतरह सब गोपियां बीचचर्चा श्यामसुन्दरके दिन अपना काटकर सन्ध्यासमय राहपर आनबैठती थीं व केशवमूर्ति अन्तर्यामी की

प्रीति जानकर सन्ध्यासमय बलरामजी व गौ व ग्वालों को साथ लिये व मोरपंख की टोपी शिर पर धरे व कुण्डल जड़ाऊ कानों में पहिने बांसुरी बजाते हुये इस सुन्दरताई से घर आते थे कि उनका दर्शन करने से सब छोटे व बड़ों का मन प्रसन्न होजाता था व गोपियां बड़े प्रेम से आगे दौड़ कर श्रीकृष्णचन्द्रके मुखकी शीतलताई से अपने हृदय की अग्नि ठण्ढी करती थीं व श्यामसुन्दर के पगकी धूरि अपने अपने अञ्चल से झाड़कर परिक्रमा लेने उपरांत अपने घर आवती थीं ॥

दो० हरिस्वरूप के सिंधु में गोपी डूबीं आय । नयनन पावैं दरशरस मनकी तृषा बुझाय ॥

जब श्याम व बलराम अपने घर पहुँचतेथे उससमय यशोदा व रोहिणी बड़े प्रेमसे उबटन फुलेल मलने व स्नान कराने उपरांत छत्तीस व्यंजन खानेवास्ते देतीथीं तब वह ग्वालबालों के साथ प्रसन्न होकर भोजन करते थे नित्य यही नेम उनका रहताथा एक दिन वृन्दावनविहारीने ऐसा विचार किया कि हमने रासलीलामें अन्तर्धान होकर श्यामाआदिक गोपियोंको अपने विरहका बहुत दुःख दियाथा उसके बदले अब मुझे उचितहै कि राधाप्यारीको जो लक्ष्मीजीका अवतारहैं मान कराऊं और मैं उसके पांव पकड़कर उसे प्रसन्न करूं व सब ब्रजबालोंका दुर्वचन सुनकर उन्हें दुःख देनेके बदले मैं उऋण होजाऊं सो एकदिन राधाप्यारी सोलहों शृंगार किये अपने घर बैठीथी जब मोहनप्यारेने अपनी इच्छानुसार उसके स्थानपर जाकर श्यामाको अपने गले लगालिया व उसकी सुन्दरताई पर बलायें लेनेलगे तब केशवमूर्तिकी मायासे श्यामाने अपने मुखारविन्द की परछाहीं बीच जड़ाऊ गहने मुरलीमनोहरके जो गलेमें पहने थे देख कर क्या समझा कि इस दूसरी सुन्दरीसे नन्दलालजी ने प्रीति करके उसको छातीमें लगारक्खाहै सो मुझको दिखलानेवास्ते ले आये हैं जब ऐसा विचारकर राधाप्यारीको सवतिया डाह हुई तब उसने रोनी सूरत बनाकर कहा ऐ मोहनप्यारे मैंने जाना तुम प्रकटमें मेरे साथ प्रीति करके अन्तःकरणसे इसमहासुन्दरीको ऐसा चाहतेहो कि आठोंपहर अपनी छाती से लगाये रहकर एक क्षण अलग नहीं करते इस सखीका बड़ा भाग्य

समझना चाहिये जो रातदिन तुम्हारे हृदय में बसती है अब तुम इसके साथ प्रीति करो मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूं यह वचन सुनतेही ज्योतिस्स्व-रूप उसके सामने हाथ जोड़कर बोले ऐ प्राणप्यारी तुम्हारे सिवाय कौन है जिसको हम चाहते हैं तुम हमारी बातका विश्वास रखकर ऐसा मत विचारो इसीतरह बहुत बिनती करके नन्दलालजी ने श्यामाका हाथ पकड़कर अपने पास बैठालने चाहा पर वह सवतियाडाहसे नहीं बैठकर बोली ऐ केशवमूर्ति अपनी प्यारीसे जिसको हृदयमें रखतेहो बोलो अब हमको तुमसे कुछ प्रयोजन नहीं है ऐसा कहकर राधा अपनी परछाहींको गालियां देनेलगी तब मोहनप्यारेने कई बेर समझाकर कहा यह दूसरी स्त्री न होकर मेरे जड़ाऊ गहने में तेरी परछाहीं दिखलाई देती है पर श्यामाको सवतिया डाहसे उनकी बातका विश्वास नहीं हुआ उसीसमय एक सखी वहां आई व दोनोंको उदास देखकर बोली ॥

दो० वह हरिसे पूछतभई कहो न मोहिं बताय। आज दशा कैसी लगत बैठे कहा गँवाय ॥

सो० क्यों तन रह्यो भुलाय अति व्याकुल देखत तुम्हैं। रहो वदन कुम्हिलाय ऐसो शोच कहा परो ॥

यह सुनकर श्रीकृष्णजीने कहा ऐ सखी मैंने तो कुछ अपराध राधा का नहीं किया इसने अपनी परछाहीं मेरे जड़ाऊ गहने में देखकर उसे दूसरी स्त्री समझाहै इस कारण मुझसे रूठकर नहीं बोलती तू किसी तरह इसका सन्देह मिटाकर प्रसन्न करदे जब यह बात कहकर श्यामसुन्दरने आंखोंमें आंसू भरलिया तब उस सखीने मुरलीमनोहरसे कहा तुम वृन्दा-वनमें चलो मैं राधाप्यारीको वहां लिये आतीहूं यह सुनकर मोहनप्यारे वृन्दावनकी कुञ्जमें चलेगये तब उस सखीने राधाके पास जाकर कहा तुम्हें गोपीनाथ ने बुलायाहै श्यामा बोली तू नहीं जानती नन्दकुमारने दूसरी सुन्दरीसे प्रीति करके उसको अपने हृदयमें बसायाहै अब वह मेरी चाहना नहीं रखते मैं उनके पास जाकर क्या करूं तब फिर वह सखी बोली हे राधा तू जिनकी वस्तु मँगनी लेआई है वह तेरे बदले मोहन-प्यारेको वनमें घेरे खड़ेहैं और तुम यहां मचलाकर बैठीहो ऐसा न चाहिये श्यामाने कहा मैं किसीकी वस्तु मँगनी नहीं लेआई हूं जो घेरे हों उन

का नाम बतला देव तब वह सखी बोली हरिणीकी आंख व चीतेकी कमर व हाथीकी चाल व अनारके दांत तू मँगनी लाईहै वे लोग नन्दलालजी से तगादा करते हैं तब यह बात प्रीति भरी हुई सुनकर राधाने हँस दिया तब वह सखी बोली हे प्यारी तू बड़ी अज्ञान होकर मोहनप्यारे से वृथा खेद मानती है जिसतरह आगे एक दिन तैंने शीशा देखकर अपनी परछाहींको सवति समझा व उसी तरह आजभी नंदलालजीके जड़ाऊ गहनेमें अपनी परछाहींको दूसरी स्त्री जानकर मोहनप्यारेसे खेद माना इसलिये वह तेरे विरहमें व्याकुल होकर राधा राधा पुकारते हैं सो तू जल्दी चलकर उनकी चिन्ता छुड़ादे जब यह वचन सुनकर श्यामा का चित्त ठिकाने होगया तब वह पछताकर कहने लगी हे सखी तुम मोहनप्यारेसे जाकर कहदो मैं शृंगार करके अभी आतीहूं जब वह सखी श्यामसुन्दरके पास यह सँदेशा कहने गई तो क्या देखा कि वृन्दावनविहारी राधाप्यारीके विरहमें व्याकुल होकर वृक्षके तले लोटरहे हैं ॥

सो० बैठत उठत अधीर कोऊ सुधि पावत नहीं। बढ़त विरहकी पीर श्रीराधाराधा रटत ॥

यह दशा उनकी देखकर वह सखी बोली हे प्राणप्यारे तुम किस वास्ते इतना शोच करतेहो अभी एक क्षणमें श्यामा आ पहुँचती है यह वचन सुनतेही मुरलीमनोहर उठबैठे व फूलोंकी शय्या बिछाया और चारों ओर चौंक चौंक कर ताकनेलगे जब श्यामाके आवने में कुछ देर हुई तब फिर वह सखी राधाके पास जाकर बोली ऐ श्यामा मनहरणप्यारे तेरे विरह में रोरहे हैं तू क्यों नहीं चलती ॥

सो० मुख नहिं बोलत बैन अतिव्याकुल तेरे विरह। भरभर ढारत नैन कहा कहूं उनकी दशा ॥

राधा यह वचन सुनतेही बहुत प्रसन्न होकर उस सखी के साथ वनमें जा पहुँची श्यामसुन्दरने प्यारीको देखतेही आनन्द होकर उस सखीकी बड़ाई की व श्यामाको अपने हृदयमें लगाकर कामदेवकी अग्नि बुझाई ॥

दो० परम प्रेम दोऊ मिले श्रीराधानँदनन्द। गुणआगर नागर युगल छविसागर सुखकन्द ॥
गयो श्याम श्यामासदन सखीसहित सुखपाय। मनचरित्र रसखेलकर ब्रजवासिनसुखदाय ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित देखो जिस

त्रिलोकीनाथका दर्शन ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व ऋषीश्वर जल्दी ध्यानमें नहीं पावते वह परमेश्वर व्रजकी स्त्रियों के वास्ते ऐसा शोच करते थे उनकी लीला कौन जान सक्ताहै ॥

सो० जो प्रभु अगम अपार वेद भेद जानत नहीं। सो व्रज करत विहार मरम न वाको पावहीं ॥

एक दिन श्यामसुन्दरने वृन्दावनकी गलीमें ललिता सखीको आवती हुई देखकर रोंका तब ललिता बोली तुम झूंठी प्रीति मेरे साथ रखकर कभी मुझ गरीबिनी के घर नहीं आवते यह सुनकर नन्दलालजीने कहा॥

दो० तुम कैसे बिसरत प्रिया हँसि बोले घनश्याम। आजु आय सुख लेहिंगे रैन तुम्हारे धाम ॥

सो० सुन हर्षी व्रजवाम चली सदन मुसकायके। लखि सुखपायो श्याम मुदित गये अपनेसदन॥

हे राजन् ललिताने बड़े हर्षसे अपने घर आनकर सोलहों शृंगार किया व स्थान व शय्याकी तैयारी करके आशा आवने श्यामसुन्दरकी देखने लगी जब आधीरात बीतनेपरभी श्रीकृष्णजी वहां न आनकर शैला सखी के घर चले गये तब ललिता ने उदास होकर कहा ॥

दो० कहत श्याम आये नहीं होनलगी अधरात। गये आश दे मोहिं पुनि कहा धरौं जिय बात ॥

सो० वे बहुनायक श्याम जाय लोभाने अनत कहुँ। मन मन शोचत वाम कारण क्या आये नहीं ॥

जब ललिता को इसी शोच व विचार में सारी रात जागते बीत गई तब प्रातसमय नन्दलालजी अपना वचन याद करके ललिताके घर पहुँचे॥

दो० तब बोली मुसकाय प्रिय कहा काम मम धाम। ताही के घर जाइये बसे जहां निशि श्याम ॥

सो० प्रात देखावन मोहिं आये रंग बनाय के। मैं सुख पायों जोहि भले बने हौ लाल अब ॥

जब यह वचन सुनकर श्यामसुन्दरने मुसकरा दिया तब ललिता ने उन्हें स्नान कराया ॥

दो० रुचि भोजन दे सेजपर पौढ़ाये घनश्याम। रसवशकरि नवनागरी किये सुफल मनकाम ॥

थोड़ीदेर केशवमूर्ति वहां रहकर उसकी इच्छा पूर्ण करने उपरान्त अपने घर चले आये इसीतरह मोहनप्यारे कभी श्यामा व कभी चन्द्रावली व कभी सुखमा आदिक गोपियोंके स्थानपर रातभर रहकर उनकी इच्छा पूर्ण करते थे जब एक व्रजबाला से वचन हारकर दूसरी सखीके घर चले जाते और वह व्रजबाला हठकर मान करती तब बहुत बिनती करके उसे

मनाते इसीतरह मोहनप्यारे एक रूप अपना नन्द व यशोदाके पास रखते और अनेकरूप धरकर कभी कभी व्रजबालोंकी मनोकामना पूर्ण करते थे॥

दो० कबहुँ कहत हरिआइहैं उरमें हर्ष बढ़ाय। कबहुँ विरहव्याकुल जरत अतिआतुरअकुलाय॥

सो० कबहुँ कहत सुखपाय बहुत नारि राखैं पिया। बसे अनत कहुँ जाय मोसों झूठी अवधि करि॥

एक रात श्यामसुन्दर किसी सखीके घर रहकर जब प्रातसमय राधा के पास गये तब वह खेद मानकर रूठ बैठी इसलिये मोहनप्यारेने बहुत विनती करके सौगन्द खाई कि हे प्राणप्यारी अब मैं दूसरी गोपी के घर कभी नहीं जाऊंगा तब वह प्रसन्न हुई पर त्रिलोकीनाथने जो सबकी इच्छा पूर्ण करनेवाले थे सौगन्द खाने पर भी व्रजबालों के घरका जाना नहीं छोड़ा सो एक दिन श्यामसुन्दर कौमुन्दा सखीके घरपर रहे व प्रातःकाल वहां से आवने लगे उसीसमय अचानक में राधाप्यारी कौमुन्दा सखीको यमुनास्नान करने वास्ते बुलाने गई जैसे श्यामाने केशवमूर्ति को उसके घरसे निकलते देखा वैसे क्रोधित होकर विना नहाये अपने घर चली आई व नन्दलालजी उसे देखतेही भय मानकर मनमें कहनेलगे आज हमारी चोरी राधाने पकड़ लिया जब मुरलीमनोहरसे विना भेंट किये राधाप्यारी के नहीं रहा गया तब कई सखियोंको साथ लेकर उसे मनावने गये उन्हें देखतेही श्यामा क्रोध से बोली॥

दो० घरघरडोलतफिरतनिशिबोलतलगत न लाज। आयदिखावैंप्रातमोहिंनिशिवासरके साज॥

सो० मैं आई अब बाज जित चाहो तितहू फिरौ। इनको यहां न काज राज करैं व्रजमें सदा॥

जब श्यामसुन्दरके बिनती करने व सखियोंके समझानेपर भी राधाने क्रोध अपना क्षमा नहीं किया तब कई सखी बोलीं हे श्यामा चार दिनके जीवनपर मत अभिमान कर वृन्दावनविहारी तेरे खेद करनेसे उदास हो कर अपना अपराध क्षमा कराने वास्ते तुम्हारे पास आये हैं सो तुम हँस बोलकर इनका शोच छुड़ादेव॥

दो० आदर करि बैठायके पियको कंठ लगाय। घर आये नहिं कीजिये ऐसी विधि निठुराय॥

सो० है तू नागरि वाम मनमें क्या ऐसी धरी। वे ठाढ़ेहैं श्याम तू मुखते बोलत नहीं॥

श्यामा यह सुनकर बोली जिसके घर श्यामसुन्दर रातभर रहे हैं वहां

जावें मेरे साथ अब इनको क्या काम है अभी चार दिन हुआ इन्होंने मुझसे सौगन्द खाई थी कि अब किसी सखीके घर न जाऊँगा सो आज मैंने अपनी आंखसे इनको कौमुन्दा गोपी के यहां से निकलते देखा इस लिये मैं इनके योग्य नहीं हूं लम्पट मनुष्यसे प्रीति करके कौन नष्ट होवे ॥

दो० ऐसो गुण हरिको सखी निपट कपटकी खानि। अब इन सों मोसों कभी नहीं बनैगी जानि ॥
सो० हैं हरि कपटनिधान बहुनायक सँग रमिरहे। तिनको करत बखान जो वामन ह्वै बलिछल्यो ॥
दो० ऐसो कहि चुप होरही मुर बैठी रिस गात। मधुरे वचननसे कहत निपट सखिनसों बात ॥
सो० आये हैं करि गौन चतुर नारिसँग निशिजगे। इनसों मिलिहै कौन विरह अग्नि में जलनको ॥
सखी कह्यो मुसकाय नहिं मानत मेरो कह्यो। श्याम मनावैं आय मैं जान्यों तब मानिहै ॥

जब सखियोंके समझानेसे राधाने नहीं माना तब उन्होंने श्यामसुन्दर से कहा हम लोग समझाते समझाते हार गईं पर राधा नहीं मानती तुम आप उसे समझाकर मनालेव ॥

दो० मान तजै नहिं लाड़िली थाकीं सबै मनाय। नेक यत्न कुछ कीजिये रचिये आप उपाय ॥
चले बनै है लाल अब और यत्न नहिं कोय। काछ काछिये जौन विधि नाच नाचिये सोय ॥
सो० आपकाज महकाज बड़े कही हैं बात यह। तजो श्याम उरलाज करि विनती प्रियसों मिलो ॥

जब ऐसा कहकर सब सखियां अपने अपने घर चली गईं तब नन्दकुमार भी वहां से बाहर चले आये पर मन उनका नहीं माना तब स्त्रीरूप बनगये व श्रीकृष्णजीकी ओर से राधाजीके पास जाकर यह सँदेशा कहा मैं इस समय तेरे देखनेवास्ते वृन्दावनके कुंजमें गई थी सो तुझे उस जगह नहीं पाया पर श्यामसुन्दर तेरे खेद मानने से वहां अतिविलाप करते हैं उन्होंने मेरे पांव पकड़कर बहुत बिनती से तुझे बुलाया है सो तू मान छोड़कर मोहनप्यारे के पास चल यह बात कहकर गोपीरूप मोहनप्यारे श्यामाके चरणोंपर गिरकर बिनती करनेलगे ॥

दो० क्षणक्षणपरसतचरणकरक्षणक्षणलेतबलाय। कहतप्रियाअबमानतजिपुनिपुनिहाहाखाय ॥

जब राधाप्यारी उस स्त्रीके बिनती करने से प्रसन्न होकर चलनेवास्ते तैयार हुई तब श्यामसुन्दरने अपना रूप धरकर श्यामाको गले से लगा लिया तब दोनोंने बड़े हर्षसे एक थाली में भोजन किया व अपने अपने

कामदेवकी अग्नि भेंटरूपी जलसे बुझाई इसीतरह मोहनप्यारे राधा आदिक गोपियों का मनोरथ पूर्ण किया करते थे॥

दो० यह लीला आनन्दमय सकल रसनको सार। भक्तन हित हरि करतहैं गाइ तरत संसार॥
सो० घर घर करत विहार ब्रजयुवतिनके संग हरि। गावतहैं श्रुति चार ब्रजवासी हरिकी कथा॥

छत्तीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का वृषासुर राक्षस को मारना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब वर्षा ऋतु आई तब राधाप्यारी ने श्यामसुन्दर से कहा तुम हिंडोला झूलने की लीला करो तो हम सब सखियां तुम्हारे साथ झूला झूलकर बरसात के गीत गावैं यह वचन सुनतेही श्यामसुन्दर ने जड़ाऊ झूला कुंजों में डलवादिया तब राधाप्यारी आदिक ब्रजबाला उत्तम उत्तम भूषण व अनेक अनेक रंग के वस्त्र पहिनकर श्यामसुन्दर के साथ झूलने व गानेलगीं उससमय वृन्दावनविहारी ने मुरली सुनाकर व अनेक राग रागिनी गाय के उन्हें अतिप्रसन्न किया वह आनन्द देखनेवास्ते ब्रह्मादिक देवता व गन्धर्व अपनी अपनी स्त्रियों समेत विमानों पर चढ़कर वृन्दावन में आये और बड़े हर्ष से राधाकृष्ण पर फूल वर्षाये व ब्रजबालों के भाग्य की बड़ाई करनेलगे इसीतरह बरसात भर राधाआदिक गोपियों के साथ विहार करके उन्हें सुख दिया जब फागुन का महीना आया तब श्यामा आदिक ब्रजबालों ने मोहनप्यारे से हाथ जोड़कर विनय किया महाराज हमलोगों के साथ होली खेलो यह वचन सुनकर नंदलालजी बोले तुमलोग अपने अपने घर जाकर तैयारी करो मैं भी अपने सखों को साथ लेकर वहा होली खेलने आऊंगा जब सब ब्रजबालों ने अपने अपने घर जाकर होली खेलने की तैयारी की तब नंदकुमारने ग्वालबालों को बुलाकर केसरिया कपड़ा पहिनाया व रंग अबीर व इत्र आदिक अपने अपने शरीर पर डाल कर सुगन्धित फूलों के गजरे गले में पहिन लिये व डफ बांसुरी झँझरी बजाकर फगुवा गावते व ब्रजबालों को गालियां देते व अबीर उड़ावते व अनेक तरह के स्वांग बनाये लड़कों को नचावते हुये ब्रजमें होली खेलने निकले जो गोपी राह में दिखलाई

देती थी उसपर रंगकी पिचकारियां मारकर हँसते थे और सब ब्रजबाला अपनी अपनी खिड़की कोठों पर से मोहनप्यारे व ग्वालबालों पर रंग व अबीर व कुमकुमा आदिक डालकर गालियां सुनने से प्रसन्न होती थीं जब इसीतरह वृन्दावनविहारी होली खेलते हुये राधाप्यारी के स्थान पर बरसाने गांवमें पहुँचे तब श्यामा अपनी सखियों समेत सोलहों शृंगार किये रंगकी पिचकारियां लिये गली में जाकर मोहनीमूर्ति के सामने खड़ी हुई जब दोनों ओर से पिचकारियां चलकर अबीर उड़ने लगा तब श्यामा सखियोंसे बोली आजअपनेचित्तचोरको पकड़कर चीरहरनेका बदलालेनाचाहिये॥

दो० ललितादिक ब्रजनागरी सब सुन्दरि को साज। तिनमें श्रीराधाकुँवरि सब गोपिनशिरताज॥
सो० कर्मरूप को रास गुणआगर नवनागरी। राजत भरी हुलास मनमोहन मनभावती॥
दो० ग्वालबाल के झुण्डमें शोभित यों ब्रजनाथ। ज्यों चन्दा आकाश में तारागण लिये साथ॥

जब रंग व अबीर उड़ने से अँधियारा छागया तब श्यामा ने सखियों से कहा मनहरणप्यारे को किसी उपाय से पकड़ो यह वचन सुनतेही एक सखी ने बलरामजी का वेष बनाकर धोखे में केशवमूर्ति को पकड़लिया और राधाआदिक ब्रजबालों ने उन्हें घेरकर कहा तुमने यमुना किनारे चीर छिपाकर हमको बड़ा दुःख दिया था आज उस दिन का बदला लिये विना न छोड़ेंगी ऐसा कहकर एक गोपी ने श्यामसुन्दर का पीताम्बर छीनलिया व दूसरीने आंखों में काजल देकर माथे पर सिंदूर व बेंदी लगादिया व किसी ने भूषण व वस्त्र पहिनाकर उन्हें स्त्रीरूप बनाया॥

दो० गये भागि मोहन तभी सखियनको छिटकाय। आय मिले निज सखन में रहीं नारि पछिताय॥
सो० करमींजत पछितात कहत परस्पर बात सब। भली मिली थी घात दांव लेन पायो नहीं॥
दो० भाजे भाजे कहति सब ताली दे ब्रजबाल। जो तुम जाये नन्द के ठाढ़े रहौ गुपाल॥

जब उन्हें स्त्रीरूप देखकर सब ग्वालबाल हँसने लगे तब मुरली मनोहरने एक ग्वाल को सखीरूप बनाकर राधा के गोल में भेजा व अपना पीताम्बर किसी उपाय से मँगालिया उस समय श्यामा बोली हे प्राणनाथ आज तुम चतुराई करके उचकिगये फिर पकड़ेंगी तो मालूम होगा॥

चौ० पकड़ नचावैं तुम्हैं मुरारी। तब कहियो हमको ब्रजनारी॥

यह बात सुनकर ब्रजनाथने सखियों से कहा मैं तनिक श्यामा का

संकोच करता हूं नहीं तो अपने ग्वालों को लगाकर अभी तुम्हारी दशा दिखादूं यह सुन गोपियां मुसकराकर बोलीं तुमको नन्दकी सौगन्द है जो ऐसा न करो तव मोहनप्यारे अपने सखा समेत पिचकारियां रंग की ब्रजबालोंपर मारकर अबीर उड़ाने व फगुवा गाकर उन्हें गालियां देनेलगे व श्यामाने भी सखियों समेत मोहनप्यारे आदिक से अच्छीतरह होली खेली वह आनन्द देखनेवास्ते देवता व गन्धर्व अपनी अपनी स्त्रियों समेत विमानों पर बैठकर वहां आये व राधाकृष्ण पर फूल वर्षाकर आपस में कहनेलगे देखो जिस वैकुण्ठनाथ के चरणों का दर्शन ब्रह्मादिक देवतों को जल्दी ध्यान में नहीं मिलता वही परब्रह्म परमेश्वर ग्वालबाल व गोपियों के साथ होली खेलकर उनको सुख देते हैं जब सन्ध्या तक राधा-कृष्ण होली खेलचुके तब ललिता सखी ने आनकर केशवमूर्तिसे विनय किया कल्ह हमलोग भी तुम्हारे गांवमें होली खेलने आवेंगी ॥

सो० घर आये घनश्याम सखनसंग गावत हँसत । गई प्रिया निजधाम सखिनसहित आनँदभरी ॥

उस समय राधिका सखियोंसे बोली ॥

क० धाये नंदलाल बो गुलाल दोऊ एकसंग झुमड़िगयो जो दृग आनन मढ़ै नहीं ।
धोय धोय हारी पदुमाकर तिहारी सौंह अब तो उपाय कोऊ चितपै चढ़ै नहीं ॥
कहा करौं कहां जाउँ कासों कहौं कौन सुनै कीजिये उपाय जामें दरद बढ़ै नहीं ।
एरी मेरी वीर जैसे तैसे इन आंखिनसे कढ़िगो अबीर पै अहीर को कढ़ै नहीं ॥

दूसरे दिन प्रातसमय राधाप्यारीने सखियोंसमेत सोलहों शृंगार किया व सोने चांदीके बरतनों में रंग व अबीर व गुलाब व इत्र भरवाकर बड़ी तैयारीसे होली खेलने चली जब श्यामा गाती व बजाती रंग व अबीर उड़ाती हुई ने नन्दगांव में जाकर यशोदाका स्थान घेर लिया तब श्याम व बलराम भी अपने सखों समेत फगुवा गाते हुये बाहर निकले व रंग व अबीरसे राधा आदिक के साथ होली खेलने लगे जब रंग व अबीर उड़ने से चारों ओर लाल होगया तब ललिता आदिक कई सखी मोहनप्यारेको पकड़नेवास्ते दौड़ीं पर नन्दकुमार फुरती करके भागगये इसलिये बलराम जी को पकड़ लेआईं तब श्यामा आदिकने उनको रंग व अबीरसे नहला

कर आंखोंमें काजल व माथेपर बेंदी लगा दिया व उनसे बिनती कराके छोड़ा तब बलरामजीका रूप देखकर श्यामसुन्दर व सखालोग हँसनेलगे उस समय गोपियों ने घात लगाकर मोहनप्यारेको भी पकड़ा और जब उन्हें अपनी गोल में लेगईं तब चन्द्रावली बोली हे चित्तचोर चीर हरनेके बदले आज तुम्हें नंगा करके छोडूंगी ॥

दो० लै आई प्यारी निकट हँसत कहत ब्रजबाल । कहौ लाल कैसे फँसे बहुत करत रहे गाल ॥

उससमय ललिता उनकी मुरली छीनकर बजाने लगी व एक सखीने मोहनप्यारेको रंग व अबीरसे नहलाकर आंखोंमें काजल व माथेपर बेंदी लगाया व दूसरी ने उनका पीताम्बर छीनकर उन्हें लहँगा व सारी व अँगिया पहिनाया व एक सखी ने मोतियों से मांग गूंधा व स्त्रीरूप बना कर राधाके पास बैठाल दिया तब श्यामाने बड़े हर्षसे अपने हाथसे उनके गालोंपर इत्र व अबीर लगाकर उनका मुख चूमलिया ॥

दो० निरखि वदन प्यारी हँसी श्यामरहेसकुचाय । गहि प्यारी निजहाथसों दीन्हो पान खिलाय॥

सो० सखियाँ करत कलोल गांठि जोरि अंचल दई । ब्रजमें रहै अमोल यह जोड़ी युग युग सदा ॥

जब ब्रजबालों ने राधाकृष्णको गांठिबन्धन कियेहुये बीच में बैठाकर रंग व अबीरसे नहला दिया व उनकी छवि देखकर प्रेमसे गावनेलगीं तब यशोदा ने ललिताको घर में बुलाकर कहा रसोई खानेका समय हुआ है इसलिये तू सबको भीतर बुलाले जब ललिता श्यामा आदिक सखियोंको भोजन करनेवास्ते भीतर लिवा लेगईं व श्यामसुन्दर ब्रजबालों से छूटकर अपने गोलमें चले आये तब ग्वालबालोंने बलरामजीको बुलाकर उनका रूप दिखलाया व मोहनप्यारे को सौगन्द धराकर जब उसीतरह उनका हाथ पकड़े हुये नन्द व यशोदाके पास लेगये तब वह अपने लाल को स्त्रीरूपसे देखतेही बड़े हर्षसे लिपटा कर बोले अय बेटा तुम्हारा यह रूप किसने बनाया नन्दकुमारने कहा अय बाबा ललिता आदिक राधा की सखियोंने यह भूषण व वस्त्र मुझे पहिनाया है फिर यशोदाने श्यामा आदिक ब्रजबालोंको छत्तीस व्यञ्जन खिलाये व पान इलायची देकर अपने यहां से उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र राधाको पहिनाये ॥

सो० रह्यो नन्दघर आय होरीको आनन्द अति। कहत यशोमतिमाय फगुवा कहा सो दीजिये॥

यह सुनकर व्रजवालोंने कहा हे नन्दरानीजी हमलोग फगुवाके बदले मोहनप्यारेको लेवैंगी तब नन्दमहरि व्रजवासियों समेत हँसने लगी व श्यामसुन्दरने लहँगा आदिक उतारकर अपना मुकुट व पीताम्बर पहिन लिया व सब ग्वालवाल व व्रजवालोंको साथ लेकर यमुना स्नान करने गये जब केशवमूर्तिने नहाकर फूलडोल लीला किया तब देवतोंने आकाश से उनपर फूल बरसाये इसीतरह केशवमूर्ति नित्य नई लीला करके व्रज-वासियों को सुख देते थे एक दिन राजा कंसने वृषासुर दैत्य को बुलाकर विनयपूर्वक कहा हम तुमको सब दैत्योंसे बलवान् समझकर अपना परम मित्र जानते हैं सो तुम नन्दके बेटे कृष्ण व रामको मारडालो तो मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूं यह वचन सुनतेही वृषासुर बैलरूप बहुत बड़ा पर्वतके समान होगया व दोनों सींग अपने बड़े बड़े कँगूरा ऐसे बनाकर बादल की तरह गर्जता व लाल लाल आंख निकाले पूंछ फटकारे हुये सन्ध्या समय वृन्दावनमें आनपहुँचा व मारे क्रोधके मुखसे झाग निकालकर एक बार ऐसा चिल्लाया कि उसका शब्द सुनकर स्त्रियोंका गर्भ गिर पड़ा व खुरोंसे पृथ्वी खोदके सींगों पर पहाड़ उठाकर उलटने लगा व वृक्षों को सींगसे उखाड़ कर श्यामसुन्दरको खोजता फिरता था यह दशा देखकर दिग्पाल व देवता डरगये व पृथ्वी कांपनेलगी व ग्वाललोग उसे अपना काल समझकर श्रीकृष्णजीकी शरण पुकारनेलगे व सबोंने किवाड़े अपने बन्द कर लिये उससमय श्याम व बलरामभी ग्वालोंसमेत गो चराकर जैसे गांवके निकट पहुँचे वैसे गो व बछवे मारे डरके भागकर जिधर तिधर चले गये व ग्वालवाल वृषासुरको देखकर रोनेलगे जब मोहनप्यारेने यह दशा ग्वालबाल व व्रजवासियोंकी देखी तब उन्हें धैर्य देकर बोले तुमलोग शोच मत करो देखो मैं अभी इस दुःखदायी को मारे डालता हूं, ऐसा कहकर वृषासुरके सन्मुख चले गये और ललकारकर बोले कपटरूपी दैत्य तू गोपी व ग्वालोंको किसवास्ते डराकर धमकाता है हमारे सामने आव तेरे ऐसे बहुत राक्षसोंको मैंने मारडालाहै उन्हें देखतेही वृषासुरने प्रसन्न होकर मन

में कहा कि जिसके मारनेवास्ते मेरी इच्छा थी बहुत अच्छा हुआ जो वह बालक आपसे मेरे सामने चला आया अभी इसको मारकर राजा कंसके पास जाताहूं ऐसा विचारकर वृषासुर बिजुलीके समान केशवमूर्तिपर दौड़ा व उसने अपने सींग पृथ्वीमें गड़ाकर ऐसा चाहा कि वैकुण्ठनाथको तीनों लोक समेत उठा लूं तब श्यामसुन्दर ने उसका सींग पकड़कर उसे अठारह पग पीछे हटादिया फिर वह भी बल करके मोहनप्यारेको हटानेलगा॥

दो० वह आवे हरि ओरको प्रभु पाछे लेजाहिं। या विधि जो आयो गयो रही शक्ति कछु नाहिं॥

जब इसीतरह बल करते करते वह दैत्य थक गया तब मुरलीमनोहरने एक बेर उसको पृथ्वीपर पटक दिया जब फिर उसने बड़े क्रोध से मोहनप्यारे को दोनों सींगों में अड़ाया तब केशवमूर्ति ने फुरती से निकलकर दोनों सींग उसके धर लिये व ऐसा ढकेला कि वह अचेत होकर पृथ्वीपर गिर पड़ा उससमय श्यामसुन्दरने सींग व पैर पकड़कर इसतरह शरीर उसका उमेठा जिसतरह कोई गीला कपड़ा निचोड़ता है तब उसके मुख व नाक व मूत्रकी राहसे लोहू बहकर वह दैत्य मरगया यह हाल देखतेही देवतों ने आकाश से मुरलीमनोहरपर फूल बरषाये व सब वृन्दावनवासी बड़े हर्षसे उनकी स्तुति करके बोले अय मोहनप्यारे हमलोगोंने इस दैत्य को बैल समझा था बहुत अच्छा भया जो मारा गया॥

सो० दुष्टदलन गोपाल मुदित कहत नरनारि सब। भक्तनके रखपाल ब्रजवासी नँदलाड़िले॥

उससमय राधिका बोली अय मोहनप्यारे बैलरूप दैत्य मारने से तुम को पाप लगा इसलिये सब तीर्थ स्नान करो तब किसीको छूना यह वचन सुनतेही नन्दकुमारने दो कुण्ड गोवर्धन पहाड़के पास खुदवाकर कहा अय राधाप्यारी मैं इसी जगह सब तीर्थोंको बुलालेता हूं सो उनकी इच्छानुसार उसी समय गंगा व यमुना व सरस्वती आदिक सब तीर्थ अपने अपने रूपसे वहां आये व अपना नाम बतलाकर जब दोनों कुण्डोंमें जल डालके चलेगये तब श्यामसुन्दरने उसमें स्नान किया व बहुतसी गो व सोना देकर वहांपर ब्राह्मणोंको भोजन खिलाया व नन्दजी व वृषभानु आदिकने नन्दकुमारपर बहुतसा द्रव्यादिक न्यवछावर करके गरीबोंको

दिया व आनंद मचातेहुये अपने अपने घर आये उसी दिनसे वे तीर्थ राधाकुंड व श्रीकृष्णकुण्ड नामसे प्रसिद्ध होकर आजतक वृन्दावनमें हैं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब समाचार मारेजाने वृषासुरका कंसको पहुँचा तब उसने बहुत उदास होकर विश्वास करके जाना कि मैं इस बालकके हाथसे अवश्य माराजाऊंगा सो श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार एक दिन नारदजी कंसके पास आये जब उसने बड़े आदर-भावसे बैठाला तब नारद मुनि बोले हे मूर्ख तैंने कुछ जाना कि वृषासुर आदिक बड़े बड़े दैत्योंको किसने माराहै तू मेरा वचन विश्वास करके मान तैंने जो कन्या देवकी की पत्थरपर पटककर मारीथी वह कन्यारूपी योगमाया यशोदाके उत्पन्न होकर श्रीकृष्ण ने देवकी से जन्म लिया था व वसुदेवजी अपना बालक रात्रिको नन्दके घर पहुँचाकर उसके बदले वह कन्या उठालेआयेथे व बलरामभी वसुदेवका बेटाहै जिसको योगमाया ने देवकी के पेटसे निकालकर रोहिणीके गर्भ में धर दिया था व वसुदेव ने तुझसे गर्भपात होनेका हाल कहा व उन्होंने तेरे डरसे रोहिणी अपनी स्त्री को नंदजीके यहां गोकुलमें भेजकर रक्खी थी उसीजगह बलभद्रजीने जन्म लिया है जब देवकीके प्रथम बालक उत्पन्न हुआ तभी हमने तुझसे कह दिया था कि तू वसुदेव के संतानसे चैतन्य रहियो पर इसमें तेरा क्या वशहै भाग्यका लिखाहुआ मिट नहीं सक्ता तीन कोसपर तेरा शत्रु है जो कुछ तुझसे बनपड़े आगेके वास्ते उपाय कर यह वचन सुनतेही पहले कंस भयसे काँपने लगा फिर उससे क्रोधित होकर वसुदेव व देवकी को अपने सामने बुलाकर कहा ॥

दो० प्रथम दियो सुत ल्यायकै मन परतीत बढ़ाय। ज्यों ठग कछू दिखायकै सर्वस ले भगिजाय ॥

चौ० मिलारह्यो कपटी तू मुझे। भला साधु जाना मैं तुझे ॥
कृष्ण नन्दघर तू पहुँचाय। देवी हमैं दिखाई आय ॥
मनमें कछू कहै मुख और। आज तोहिं मारों यहि ठौर ॥
मित्रसगा सेवक हितकारी। करै कपट सो पापी भारी ॥

दो० मुखमीठा मनविषभरा रहै कपटके हेत। आपकाज परद्रोहिया उस से भला जो प्रेत ॥

जब ऐसा कहकर कंस वसुदेव व देवकीको मारनेवास्ते नंगी तलवार लेके दौड़ा तब नारदमुनि ने हाथ उसका पकड़कर कहा हे राजन् इनके मारनेसे तेरा अर्थ नहीं निकलैगा जिनसे तुझको अपने प्राण का डरहै उनके मारनेका उपाय करना चाहिये यह सुनकर कंसने उनको प्राणसे नहीं मारा पर बेड़ी व हथकड़ी डालकर फिर उन्हें कैद किया जब नारद जी वहां से चलेआये तब कंसने केशीनाम दैत्यको जो बड़ा बलवान्था बुलाकर विनयपूर्वक उससे कहा हे केशी यह समय सहायता करनेकाहै॥

चौ० महाबली तू साथी मेरा। बड़ा भरोसा मुझको तेरा॥
एकबार तू ब्रजमें जावै। राम कृष्ण हति मुझे दिखावै॥

जब केशी दैत्य यह वचन मानकर वृंदावनको चला तब कंसने चाणूर व मुष्टिक व शल व तोशल बड़े बड़े पहलवानों को बुलाकर कहा हम श्याम व बलराम वसुदेवके पुत्रोंको किसी बहाने यहां बुलाते हैं तुमलोग कुश्ती लड़कर उन्हें मारडालो तो तुमको बहुत द्रव्य देवैंगे ऐसा कहकर कंस अपने मंत्रियोंसे बोला तुमलोग कोई ऐसा उपाय करो जिसमें राम व कृष्ण मारेजावैं तब उन्होंने कहा महाराज आप ऐसे प्रतापी व बलवान् होकर क्यों डरते हो हमारा सम्मत यहहै कि तुम एक रंगभूमि बहुत उत्तम बनवाओ व धनुषयज्ञ के बहानेसे नन्दादिक को राम कृष्ण समेत यहां बुलवाओ तो कोई मल्ल या कुवलयापीड़ हाथी दोनों भाइयोंको मारडालैगा यह सम्मत कंसने मानकर कात्तिकसुदी चतुर्दशीको मुहूर्त धनुषयज्ञ महादेवका ठहराया व अपने सेवकों को आज्ञा दिया कि तुमलोग तुरन्त एक स्थान बहुत उत्तम रंगभूमिका पहलवानोंके लड़नेवास्ते बनवाओ व उसमें एक मचान बहुत ऊंचा व चौड़ा मेरे बैठनेको ऐसा तैयार कराओ जिसमें किसीका हाथ न पहुँचे व उसी तरहका दूसरा मचान भी मेरे इष्ट व मित्रोंके बैठनेवास्ते बनवाओ कि वहलोगभी हमारे पास बैठैंगे व पहिले डेवढ़ीपर धनुष महादेवजीका रखवाओ व विधिपूर्वक उसे पूज कर नगरमें ढिंढोरा पिटवादेव कि राजमन्दिरपर धनुषयज्ञकी पूजा है जब राम कृष्ण धनुषके पास पहुँचें तब हमारे शूरवीर उन दोनों बालकोंसे कहैं कि बिना

धनुष चढ़ाये भीतर न जाने पावोगे जब वह अहंकारसे धनुष चढ़ानेवास्तें उठावैं तब मेरे शूरवीर उनको मार डालैं जो उनको मारैगा उसको मुँहमांगा धन देऊंगा व उनको मारने से मुझे अपनी मृत्यु का खटका मिटजावैगा व दूसरे द्वारपर कुवलयापीड़ गजपति को जो दश हजार हाथी का बल रखताहै वास्ते मारने उन लड़कोंके खड़ा कर रक्खो कदाचित् वह पहिली डेवढ़ीसे जीते बचकर भीतर आये तो वह हाथी एक झपटमें उनको पैरतले दबाकर मारडालैगा और तीसरी डेवढ़ी रंगभूमिके स्थानपर मेरे मंत्री व शूरवीर अनेक शस्त्र लियेहुये चैतन्य बैठेरहैं जिसमें दोनों बालक भीतर न आनेपावैं राजा कंस यह आज्ञा देकर सभामें आन बैठा व सबकी ओर देखकर विचारनेलगा कि राम कृष्णके बुलाने वास्ते किसे भेजैं जब उसको अक्रूरसे अधिक बुद्धिमान् दूसरा कोई नहीं दिखलाई दिया तब उसने अक्रूरको अकेलेमें लेजाकर उनकी बड़ाई करके कहा हे अक्रूर मैं तुमको बड़ा बुद्धिमान् व अपना मित्र जानकर मनकी बात कहताहूं मुझे श्याम व बलराम वसुदेवके बेटोंसे दिनरात अपने प्राणका डर लगा रहताहै यह हाल तुम्हैं भी मालूम होगा जिस तरह विष्णु भगवान्ने देवतों के वास्ते तीन पग पृथ्वी राजा बलिसे दान लिया व उसको पातालमें भेजकर सदा इन्द्रकी रक्षा करते हैं उसी तरह तुमको भी हमारी सहायता करनी चाहिये अच्छे लोग आपदुःख उठाकर दूसरे का उपकार करते हैं इसलिये तुम मेरे भलेवास्ते वृन्दावन में जाव आकाशवाणी होने व नारदमुनि के कहने से मैं जानता हूं कि आठवां बालक देवकी का अवश्य मुझे मारेगा पर मनुष्य को अपने सामर्थ्य भर रोग छूटने व प्राण बचानेवास्ते औषधि करनी चाहिये आगे होनहार किसी तरह मिट नहीं सक्ता ॥

दो० कहत कंस अक्रूरसों मैं जानत मनमाहिं। तुमसमान या लोक में और दूसरो नाहिं॥

इस वास्ते तुम श्याम व बलराम को नन्द व उपनन्द समेत धनुषयज्ञ के बहाने से अपने साथ लिवालाओ मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूंगा व तुम मेरे चढ़ने के रथ पर बैठके चलेजाव धनुषयज्ञ के उत्सव का हाल सुनकर वे लोग अवश्य आवैंगे व मैंने उन दोनों बालकों के मारनेवास्ते

जो उपाय विचारा है उसे भी सुनलेव मेरे निकट पहिली डेवढ़ी में धनुष चढ़ावती समय मेरे शूरवीरों के हाथ से मारे जावेंगे कदाचित् वहां बचगये तो दूसरे द्वारपर कुवलयापीड़ हाथी उनको अपने पैरों से रौंदकर मारडालेगा वहां से भी बचकर रंगभूमि में पहुँचे तो चाणूर व मुष्टिक कि हाथी दिग्पाल भी उनका सामना कर नहीं सक्के उन्हें अवश्य मारडालेंगे जो उनसे भी बचे तो मैं अपने हाथ से श्याम व बलराम को मारकर अपना काम सँवारूंगा व उन्हें मारने उपरांत वसुदेव व देवकीको जो वही विषकी मूलहैं उग्रसेन आदिक यदुवंशियों समेत मारडालूंगा व हरिभक्तों की जड़ संसार से उखाड़ कर जरासन्ध अपने श्वशुर व बाणासुर व दन्तवक्र आदिक राजोंसमेत जो मेरे मित्र हैं आनन्दपूर्वक राज्य करूंगा सो तुम नन्दजी से कहदेना कि वह बकरा व भैंसाआदिक अपने यज्ञ करने वास्ते भेंटलेकर वहां तुरन्त लेआवें व मैं भी इष्टमित्रों को इसी बहाने यहां बुलाता हूं यह वचन अभिमान भरा हुआ कंस से सुनकर अक्रूरने कहा हे राजन् आप क्रोध करके बुरा न मानें तो मैं कुछ विनय करूं कंस बोला बहुत अच्छा कहो हम खेद न लावेंगे तब अक्रूर ने कहा महाराज आपने जो आज्ञा दी सो करूंगा परन्तु इन्द्र वज्रनामशस्त्र रखने व रावण मृत्यु को बांधे रहने पर भी काल से नहीं बचे जो कोई उत्पन्न हुआ है वह एकदिन अवश्य मरैगा व मनुष्य अपने कल्याण के वास्ते अनेक उपाय करके मनमें कुछ विचारता है और परमेश्वर की इच्छानुसार कर्मों के फल से उसके विपरीत होकर उसमें तिल भर घटने बढ़ने नहीं सक्ता जिस तरह अज्ञान मनुष्य यह सब देखने पर भी नहीं समझते कि होनहार प्रबल होकर मेरा किया कुछ नहीं होगा उसी तरह तुमने भी आगम बांधकर यह उपाय विचारा है इसमें न मालूम परमेश्वर की इच्छानुसार तुम्हारे वास्ते कैसा हो जिस तरह सब जीव मरती समय हाथ व पांव फटकते हैं वही हाल तुम्हारा भी मुझे मालूम होता है मैं तुम्हारी आज्ञानुसार राम व कृष्ण को ले आऊंगा पर उन दोनों बालकों से शत्रुता करने में तुम्हारा प्राण नहीं बचेगा ॥

दो० मैं वृन्दावन जातहौं तेरो भल कछु नाहिं । यह कहिआयो धामको कंस गयो घरमाहिं ॥

सैंतीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का केशी व व्योमासुर दैत्य को मारना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह श्यामसुन्दर ने केशी दैत्यको मारा व नारदजीने आनकर मोहनप्यारे की स्तुति की व व्योमासुर नन्दलालके हाथसे मारा गयाथा वह कथा वर्णन करते हैं सुनो जब केशी दैत्य को कंसने श्याम व बलरामके मारनेवास्ते भेजा तव वह स्वरूप अपना घोड़े के समान लम्बा व चौड़ा बनाकर प्रातसमय वृन्दावन को चला व अपने स्वामी को पालन करने वास्ते बड़े हर्ष से पूंछ फटकारे व आंखें लाल लाल निकाले टापों से पृथ्वी खोदता हुआ वृन्दावन में पहुँचा उसका रूप देखतेही गोपी व ग्वालोंने बहुत भय मानकर जाना कि हम लोगोंके वास्ते महाप्रलय आया इस घोड़े के हाथसे हमारा प्राण नहीं बचेगा जब यह दशा अपनी ब्रजवासियों ने देखी तब श्रीकृष्णजी के पास जाकर सब वृत्तान्त कहा॥

दो० ब्रज आयो केशीअसुर जानिलियो नँदलाल। सन्मुख उसके हर्षसे चले कंसके काल॥

श्यामसुन्दरने चलतीसमय सब ब्रजवासियों से कहा तुमलोग कुछ मत डरो मैं अभी उसको मारकर तुम्हारा शोच छुड़ादेता हूं ऐसा कहकर मोहनप्यारेने काछा अपना बांधलिया व केशीके सन्मुख जाकर ललकारा हे कपटरूप राक्षस जो तू मेरे मारनेवास्ते आयाहै तो औरोंको क्यों डराकर धमकाताहै मुझसे आनकर लड़ तो तेरा बल व पराक्रम देखूं जिस तरह दीपक के ऊपर पतंगे आपसे आनकर जलमरते हैं उसी तरह तू भी यहां मरने वास्ते आयाहै अब मेरे हाथसे जीता बचकर न जावेगा यह वचन सुनतेही केशी दैत्य क्रोधित होकर मोहनप्यारे की ओर दौड़ा और जब उसने दोनों पैर अगिले उठाकर उनको टाप मारने चाहा तब मुरलीमनोहर ने दोनों पांव उसके पकड़ लिया और इस तरह घुमाकर फेंका जिस तरह गरुड़जी सर्पको उठाकर फेंकदेतेहैं जब वह घोड़ा दोसौ पग पर जा गिरा व थोड़ी देर अचेत रहकर चैतन्य हुआ तब वह अपना मुख फैलाकर इस इच्छासे नन्दलालजी पर झपटा कि उनको निगलजावे उस समय मोहन-

प्यारेने अपना हाथ लोहेकेसमान कड़ा बनाकर इसतरह उसके मुखमें डाल दिया जिसतरह सांप बिलमें घुसजावे जब बहुत काटने पर भी गिरिधारीलाल के हाथमें कुछ घाव न होकर सब दांत उस घोड़े के टूट गये तब श्यामसुन्दरने अपना हाथ उसके मुख में ऐसा मोटा किया कि उसे श्वास लेने की जगह न रहकर प्राण निकलनेलगा उस समय केशी दैत्यने मनमें कहा देखो जैसे मछली बंसी को निगलकर प्राण देतीहै उसीतरह मैंने केशवमूर्ति का हाथ पकड़ कर अपना प्राण खोया ऐसा विचार कर केशीने श्यामसुन्दर का हाथ अपने मुखसे निकालने वास्ते बहुत चाहा जब हाथ उनका नहीं निकला तब वह घोड़ा चिल्लाकर पृथ्वी पर गिरपड़ा जब पेट उसका खरबूजे के समान फटकर प्राण निकलगया व रुधिर नदी की तरह बहनेलगा तब देवतों ने उसके मारेजाने से प्रसन्न होकर श्यामसुन्दर पर फूल बरसाये व वृन्दावनवासी यह आनन्द देखकर बोले हे नंदलाल तुमने बड़े दुष्टको मारकर हमलोगों के प्राण बचाये व नंद व यशोदाने मोहनप्यारे को गोदमें उठाकर उनका मुख चूम लिया व बहुतसा दान व दक्षिणा उनके हाथ से दिलवाया॥

सो० बलमोहन दोउ भाय चिरंजीव जोड़ी युगल। देत अशीश मनाय व्रजवासी प्रभुको सबै॥

जब राजा कंसने हाल मारे जाने केशी का सुना तब वह मारे शोचके अचेत होगया व श्रीकृष्णजी कपटरूप घोड़ा मारनेउपरांत थोड़ी दूर आगे जाकर कदंम के नीचे खड़ेहुये तब उसीसमय नारदजीने वहां आनकर इस तरह पर स्तुति उनकी की हे त्रिलोकीनाथ बहुत अच्छा हुआ जो आपने केशीको जोकि सब दैत्यों से बलवान् था मारडाला हे जगदात्मन् परब्रह्म परमेश्वर हे ज्योतिस्स्वरूप अलख भगवन् हे आदिपुरुष निरञ्जन निराकार चाणूर व मुष्टिक व शल व तोशल पहलवान व राजा कंस अपने भाइयों समेत व दन्तवक्र आदिक उनके मित्र मुझे मृतक दिखलाई देते हैं मेरी दण्डवत् आपको अंगीकार हो हे दीनदयालो दुष्टदलन हे केशवमूर्ते भक्तवत्सल आप मरा हुआ पुत्र सांदीपन अपने गुरु का यमपुरीसे फेर लेआवेंगे मेरा नमस्कार तुम्हें पहुँचे हे जगन्नाथ जगज्जीवन

हे माधव मुकुन्द अविनाशिन् हे वैकुण्ठनाथ लक्ष्मीरमण! जरासन्ध व शिशुपाल आदिक अधर्मी राजा व राक्षसों को आप मारकर अठारह अक्षौहिणी दल का महाभारत में नाश करावेंगे मेरी दण्डवत् अंगीकार कीजिये हे कल्याण केशव गिरिधारिन् हे दीनदयालो गोपीनाथ आप समुद्र में द्वारकापुरी बसाकर पाण्डवों को लोक व परलोक का सुख देंगे मेरा नमस्कार लीजिये हे दीनदयालो दैत्यसंहारण कालयमन व भौमासुर आदिको आप मारैंगे और सोलह हजार एकसौ कन्या जो उसने अपना विवाह करने वास्ते इकट्ठी किया है उन्हें विवाहैंगे व रुक्मिणी की इच्छा पूरी करने वास्ते शिशुपाल आदिक राजों को जीतकर उससे विवाह करेंगे व आज के तीसरे दिन राजा कंस को तुम्हारे हाथ से मरा हुआ देखूंगा व इन्द्रपुरी से आप पारिजातक का वृक्ष लाकर सत्यभामा अपनी स्त्री के घर बैठालैंगे व राजा नृगको गिरिगिटान की योनि से छुड़ाकर मुक्ति देवेंगे व स्यमन्तकमणि जाम्बवती कन्या समेत जाम्बवान् भालू के यहां से लाकर उसके साथ अपना विवाह करैंगे हे महाप्रभो अब कंसके अधर्म करनेसे सब यदुवंशी व गौ ब्राह्मणको पृथ्वी पर बड़ा दुःख होताहै सो कृपा करके पृथ्वीका भार उतारिये हे सीतापते मैं तुम्हारी दयासे आप को पहिंचानकर शरणागत हुआ नहीं तो आपकी लीला अपरम्पार का चरित्र कोई नहीं वर्णन करसक्ता पर मैं तुम्हारी दया से इतना जानता हूं कि आप हरिभक्तों को सुख देने व गौ व ब्राह्मणकी रक्षा करने व दैत्य अधर्मी राजोंको मारने वास्ते वारंवार संसारमें सगुण अवतार लेकर पृथ्वी का भार उतारते हैं॥

चौ० या विधि से तुमको पहिचानी। निशिदिन शरण तुम्हारी जानी॥
सदा फिरों तुम्हरे रँग राता। हितसों गुण गावों दिनराता॥
कृपा करो मेरो भ्रम टारो। भवसागर ते पार उतारो॥
बार बार बहु विनती कीन्हीं। नमस्कार करि आयसु लीन्हीं॥

दो० कालरूप शिशुपालके मारन मधुगोपाल। नित नव लीला करतहैं व्रजमें मोहनलाल॥

जब इसीतरह नारदजी तीनों काल के जाननेवाले ने बहुत स्तुति

श्यामसुन्दरकी की और उनसे बिदा होकर ब्रह्मलोक को चलेगये तब वृन्दावनविहारी ग्वालबालों को साथ लिये भाण्डीरवटके नीचे बैठकर आप राजा बने व बाजे ग्वालबालों को मंत्री व किसी को दीवान व बाजे को सेनापति व किसी को सिपाही बनाकर फलवुझौवल खेलने लगे व राजा कंस जब चैतन्य हुआ तब उसने व्योमासुर को बुलाकर कहा सुनो मित्र मुझे श्याम व बलराम से अपने प्राण का खटका दिन रात रहता है सो मैंने जितने दैत्य उनके मारने वास्ते भेजे सबको उन्होंने मारडाला अब तुम्हारे समान कोई दूसरा शूरवीर मुझे दिखलाई नहीं देता इसलिये तुम मेरे वास्ते वृन्दावन में जाकर श्याम व बलराम को मारआवो तो तुम्हारा बड़ा उपकार मानूंगा यह सुनकर व्योमासुर बोला महाराज मैं अपना तनु तुम्हारे ऊपर न्यवछावर समझकर अपनी सामर्थ्य भर तुम्हारी आज्ञा पालन करूंगा जो सेवक अपने स्वामी की आज्ञा पालन करै उसका लोक व परलोक दोनों बनता है ऐसा कहकर व्योमासुर कंससे बिदा हुआ व ग्वालरूप धरकर जहां केशवमूर्ति खेलते थे तहां आया व उसने हाथ जोड़कर मोहनप्यारे से विनय किया महाराज मैं भी तुम्हारे साथ खेलने चाहता हूं यह वचन सुनतेही श्यामसुन्दर अन्तर्यामी ने उस कपटरूपी ग्वालको पहिंचान कर कहा तुम अपना संदेह छोड़कर जिस खेलवास्ते कहौ वही खेल हम तुमसे खेलैं कपटरूपी ग्वाल बोला जिस तरह भेड़िया अपनी पीठ पर भेड़ी उठाकर भाग जाता है उसी तरह एक लड़का दूसरे बालक को पीठपर चढ़ाकर दौड़े यही खेल खेलो मुरलीमनोहर ने कहा बहुत अच्छा जब मोहनप्यारे व्योमासुर को साथ लेकर फलबुझौवल व आंखमुँदौवल खेलने लगे तब वह कपटरूपी ग्वाल बहुत लड़कों को जो उसे नहीं पहिंचानते थे छिपती समय एक एक को उठाकर पर्वत की कंदरा में रख आया व उस कंदरा के द्वारेपर शिला धरदी जब सब ग्वालों को कंदरा में छिपा आया व श्यामसुन्दर अकेले रहगये तब कपटरूपी ग्वाल ललकार कर बोला हे मोहनप्यारे आज तुमको सब यदुवंशी व ब्रजवासियों समेत मारकर राजा कंसकी आज्ञा पालन करूंगा जब

व्योमासुर ग्वाल तन छोड़कर अपने निज रूपसे श्रीकृष्णजी को मारने वास्ते झपटा तब दैत्यसंहारणने उसका गला दबाकर पशुकी तरह लात व मुक्कोंसे मारडाला व ग्वालबालों को कंदरा में से निकाल लाये उस समय देवता व विद्याधरों ने श्यामसुन्दर पर फूल वर्षाकर बड़ा आनन्द मचाया सन्ध्या समय केशवमूर्ति गौ व ग्वालबालों समेत मुरली बजाते आनन्द मचातेहुये अपने घर आये उसी दिन रातको नन्दरानी ने ऐसा स्वप्न देखा कि आज श्याम व बलराम वृन्दावन में नहीं हैं कहीं चलेगये यह स्वप्न देखतेही पहिले नन्द व यशोदा ने बड़ा शोच किया फिर स्वप्नेकी बात झूठी समझकर अपने मनको धैर्य दिया॥

अड़तीसवां अध्याय।

अक्रूर का लेजाने वास्ते श्याम व बलराम के वृन्दावन में पहुँचना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित कार्त्तिक बदी द्वादशी को केशी व व्योमासुर दैत्य मारेगये व उसीदिन प्रातसमय जब अक्रूर कंस के रथपर चढ़कर वृन्दावन को चले तब वह राहमें विचार करने लगे देखो इस जन्म तो मुझसे कोई शुभ कर्म नहीं हुआ आजतक मेरा जन्म कंस अधर्मी की संगति में बीता पिछले जन्म न मालूम कौन ऐसा यज्ञ व तप मैंने किया था जिस पुण्य से उन चरणों का दर्शन जिनकी धोवन गंगा जी होकर तीनों लोकों को तारती हैं पाऊंगा जिन चरणों का ध्यान ब्रह्मादिक देवता व सनकादिक ऋषीश्वर आठों पहर अपने हृदय में धर कर उनकी रज मिलने वास्ते दिन रात चाहना रखते हैं वही धूर अपने मस्तक पर चढ़ाकर भवसागर पार उतर जाऊंगा॥

दो॰ शिलाशाप मोचनकरण हरण भक्त उरपीर। आज देखिहौं वह चरण सकल सुखनके हीर॥

जिसतरह पापी लोग सत्संग करनेसे कृतार्थ होजाते हैं उसी तरह मेरा भाग्य भी उदय हुआ जो कंसने मुझे श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द के लेने वास्ते भेजा इसी बहानेमैं भी मोहनीमूर्तिकी छवि देखतेही अनेक जन्मके पापों से छूटकर लोचनोंका फल पाऊंगा नहीं तो मुझ ऐसे पापी संसारी माया जाल में फँसे हुये लोभी को उन परब्रह्म परमेश्वर का दर्शन कहां

मिलता यह सब उन्हीं वैकुण्ठनाथ की कृपा से संयोग हुआहै राजा कंसने मेरे ऊपर बड़ी दया की जो इस काम के वास्ते मुझे भेजा जिस आदिपुरुष भगवान्ने कालीनागको नाथकर उसके मस्तक पर नृत्य किया व नन्दकी गौ चराकर गोपियोंके साथ रासमण्डल खेला व देवतोंके वास्ते तीन पग पृथ्वी राजा बलिसे दान लिया व देवलोक का राज्य इन्द्रादिक देवतों को दे डाला वही वैकुण्ठनाथ अपना बालचरित्र व्रजवासियों को दिखलाकर अनेक तरह का सुख उन्हें देतेहैं जिन चरणों के दर्शनवास्ते लक्ष्मी व नारदमुनि व मार्कण्डेय व अम्बरीष आदिक बड़े बड़े ऋषीश्वर व महात्मा चाहना रखतेहैं उन चरणों का दर्शन व स्पर्श सहज में ग्वालबाल व गोपियों को प्राप्त होताहै इसलिये वृन्दावनवासियों का बड़ा भाग्य समझना चाहिये ॥

दो० निराकार निरलेपके भेद न जानै कोय । जो करता सब जगत के माखनप्रभुहैं सोय ॥

आज मुझको अच्छे अच्छे सगुन दिखलाई देकर हरिण मेरे दाहिनी ओर से बांयें चले आवते हैं इसलिये अवश्य मुझे नारायणजी का दर्शन मिलेगा हे मन वह आदिपुरुष अविनाशी सबसे पहिले थे व महाप्रलय होने उपरांत भी वही स्थिर रहैंगे कदाचित् तुझे इस बात का सन्देह हो कि आदिज्योति भगवान् ने किसवास्ते संसार में जन्म लिया तो कभी ऐसा मत समझना उन्होंने केवल वास्ते सुख देने अपने भक्त व भवसागरपार उतारने संसारी जीव व मारने दैत्य व अधर्मी व भार उतारने पृथ्वी के अपनी इच्छासे जन्म लियाहै उनके भेद व महिमा को कोई पहुँचने नहीं सक्ता वह अन्तर्यामी सब भले व बुरे के उत्पन्न करनेवाले होकर संसारी माया से रहित हैं उनको सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण नहीं व्यापता और वृन्दावनकी महिमा वैकुण्ठसे अधिक जान कर ग्वालबालोंको ब्रह्मा व महादेव से छोटा न समझना चाहिये ॥

क० एक रजरेणुकापै चिन्तामणि वारिडारों लोकनको वारों सेवा कुंजके विहारपै ।
ललनके पातनपै कल्पवृक्ष वारिडारों रमाहू को वारिडारों गोपिनके द्वारपै ॥
व्रजकी पनिहारिनपै शचीरची वारिडारों वैकुंठहूको वारिडारों कालिन्दी के घाटपै ।
कहै अभयराम एक राधाजू को जानतहौं देवनको वारिडारों नन्दके कुमारपै ॥

व दैत्यलोगों को बड़ा भाग्यमान समझकर परमेश्वर की दया उनपर भी जाननी चाहिये किस वास्ते कि जब नारायणजी उनका वध करते हैं तब वह स्थान वैकुण्ठ में रहने वास्ते उन्हें मिलता है वहां हजारों वर्ष तपस्या करने पर भी मनुष्य नहीं पहुँचने सक्ता और रावण व हिरण्याक्षकी कथायें जो उनके हाथ से मारेगये थे इस बातकी साक्षी हैं किस वास्ते कि श्यामसुन्दर के डर से उनके शत्रुओं को दिन रात अपने प्राण का भय रहकर किसी क्षण उनका रूप चित्त से नहीं उतरता इसी कारण वह लोग मुक्ति पाते हैं देखो मेरा भाग्य उदय हुआ जिस रूप को देखने वास्ते बड़े बड़े योगीश्वर व महात्मा तीनों लोकों की चाहना रखते हैं उस मोहनीमूर्ति को देखकर अपना जन्म स्वार्थ करूंगा व पहिले ग्वालबालों को जो दिन रात श्यामसुन्दर का दर्शन करतेहैं दण्डवत् करूंगा फिर शिर अपना उन चरणों पर धरकर वह रज अपने मस्तक पर चढ़ाऊंगा जो धूरि ब्रह्मादिक देवतों को जल्दी नहीं मिलती जब वह दीनानाथ जगत् के मुक्ति देनेवाले दया से अपना हाथ मेरे मस्तक पर धरकर मुझे उठावेंगे तब अपने बराबर किसी तपस्वी व ज्ञानी का भाग्य नहीं समझूंगा पर मैं एक बातसे बहुत डरता हूं कदाचित् मुझे कंस का भेजा हुआ जानकर ऐसा न करें सो यह सन्देह करना न चाहिये जिस तरह मैं मनसा वाचा कर्मणा से उनकी भक्ति रखकर उन्हें अपना स्वामी जानता हूं उसी तरह वह अन्तर्यामी भी मुझे अपना दास जानकर दया करेंगे ॥

दो० हरिदासनको दासहौं मन में करि विश्वास। कंसदूत नहिं जानिहैं माखन प्रभु सुखरास ॥

जब वह करुणानिधान मेरा हाथ पकड़कर घर में लेजावेंगे तब मैं अपने समान किसी को नहीं समझकर सब हाल कंस का सच्चा सच्चा उनसे बतलादूंगा संसारी जीवों को मायारूपी रस्सी में बँधे रहने से मुक्ति होना कठिन है पर वही दीनदयालु मुझे अपना जातिभाई समझकर अवश्य भवसागर पार उतार देवेंगे जिस समय वह अपनी कृपा से मुझे चाचा कहकर पुकारेंगे उस समय बड़े बड़े महात्मा मेरे ऊपर डाह करेंगे ॥

दो० हे मन तू मति शोच कर है उनहीं को लाज। आपुहि काज सँवारि हैं माखन प्रभु ब्रजराज ॥

जब अक्रूर इसी तरह विचार करता हुआ तीन कोस रस्ता दिन भरमें काटकर संध्या समय वृन्दावन के निकट पहुँचा और उसने वहां पृथ्वीपर श्रीकृष्णजी के चरणों का आकार जिसमें गदा व पद्म व शंख व चक्र व ध्वजा के चिह्न थे देखा तब रथ ते उतरकर उन चरणों की धूरि अपने शिर व आंखों में लगाई व उस जगह दण्डवत् करके बोला जहां पर तुम्हारे चरणों का आकार रहता है वहां बड़े बड़े ज्ञानी व ऋषीश्वर सदा दण्डवत् किया करते हैं जब अक्रूर को इसी विचार में प्रेम उत्पन्न होकर आंखोंसे आंसू बेपरवाह बहने लगे तब सब गोप व ग्वाल सच्ची प्रीति उसकी देखकर अपने अपने प्रेम का घमण्ड भूलगये पर अपना बड़ा भाग्य समझकर आपस में कहने लगे देखो जिन चरणों की धूरि अक्रूर अपने मस्तकपर चढ़ाते हैं उन चरणों की सेवा हमलोग दिन रात करते हैं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् उसी समय मुरलीमनोहर पीताम्बर पहिने फूलों का गजरा गले में डाले बलरामजी व ग्वालबालों समेत वनसे गौ चराकर हँसते हुये वृन्दावन के निकट पहुँचे ॥

दो० माखन प्रभुमुख देखिके रोम रोम सुखपाय । प्रेमभाव से मगन है परेउ चरण पर धाय ॥

हे परीक्षित अक्रूरने कभी श्याम व कभी बलरामके चरणोंपर शिर रख कर इस तरह आंसूसे चरण उनका धोया जिसतरह संसारीजीव ऋषीश्वर व महात्माके आने से पांव उनका धोते हैं जब थोड़ी देर वीते रोना अक्रूर का कम हुआ तब उसने हाथ जोड़के विनय किया महाराज मैं अक्रूर यादव तुम्हारा दास हूं यह वचन सुनतेही श्यामसुन्दर उसे अपना बड़ा समझकर शिर उसका पैरपरसे उठाने लगे पर वह उनके प्रेममें ऐसा मगन था कि उसको अपने तनुकी सुधि नहीं रही शिर कौन उठावे इसलिये श्याम व बलरामने प्रीतिपूर्वक अपने हाथोंसे उसका शिर पकड़कर उठाया और उसको चाचा कहकर बड़े आदरसे भीतर लेगये व नंदराय अक्रूर के गले मिले जब मोहनप्यारे बड़े प्रेमसे आसनपर बैठाकर अपने हाथ उनका चरण धोनेलगे तब वह लज्जावश होकर पैर अपना मुरलीमनोहर की ओर से खींचने लगा पर श्यामसुन्दर पांव उनका न छोड़कर बोले

हे चाचा तुम हमारे पिताकी जगह हौ इसलिये तुम्हारी सेवा करना हमको उचित है ऐसा कहिकर श्रीकृष्णने अक्रूरका चरण धोया व उनके शरीर में अतर व चंदन लगाकर बड़े प्रेमसे छत्तीस व्यञ्जन खिलाया व हाथ धुला कर पान व इलायची दिया जब अक्रूर भोजन करके पलँग पर लेटे तब श्याम व बलराम उनका पांव दाबने लगे व नंद व उपनंद आदिक ने अक्रूरजीके पास आनकर पूछा कहो वसुदेव व देवकी कैसे हैं व राजा कंस किसतरह प्रजाका पालन करताहै हमारे जानकारीमें जबतक कंस अधर्मी जीवेगा तबतक गौ व ब्राह्मण व प्रजाको उसके हाथसे सुख नहीं मिलैगा जहांका राजा निर्दयी व अधर्मी हो वहां की प्रजा सुखसे नहीं रहती जिस कंसने छः बालक अपनी बहिनके विना अपराध मारडाले उसको बधिकसे अधिक समझना चाहिये यह सुनकर अक्रूर बोले जबसे कंस उत्पन्न हुआ तबसे यदुवंशी व प्रजालोग दुःख पाते हैं जिसतरह बकरीके गोलमें एक भेड़िया रहने से उनको अपने प्राण का डर लगा रहताहै उसीतरह मथुरा-वासियों को कंसके जीने तक सुख नहीं मिलेगा उसका हाल सब तुम्हें मालूम है और हम क्या कहें ॥

उन्तालीसवां अध्याय।

अक्रूरके साथ श्याम व बलरामका मथुरामें जाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब नन्द व उपनन्द अक्रूरसे मथुराका हाल पूछकर अपने अपने स्थानपर गये तब श्याम व बलराम जैसा विचार राह में अक्रूरजी करते जाते थे वैसा सन्मान करके पूछा अय चाचा आप दया व प्रीतिकी राह हमको देखनेवास्ते आये हो सो आपने बहुत अच्छा किया पर तुमने हमारे चरणोंपर जो तुम्हारे लड़कोंके समानहैं किसवास्ते गिरकर हमें दोष लगाया हमको तुम्हारी सेवा करनी चाहिये भला यह तो बतलाओ मथुरावासियों का दिन किसतरह कटता है व वसुदेव व देवकी हमारे माता पिता अच्छीतरह हैं व राजा कंस मेरा मामा बड़ा पापी यदु-कुल में उत्पन्न हुआ है जो गो ब्राह्मण व यदुवंशियों को दुःख देकर नाश करता है व हमैं वसुदेव व देवकी के फिर कैद होने का समाचार सुनकर

बड़ा शोच हुआ सच पूछो तो वह लोग हमारे वास्ते इतना दुःख पाते हैं हमको गोकुल में लेआकर न छिपाते तो इतना कष्ट क्यों पाते जब वह हमारी याद करते होंगे तब उनको बहुत दुःख होता होगा बड़ा आश्चर्य है कि देवकी के छः पुत्र मारने व इतना पाप बटोरने पर भी कंसका मन अधर्म करनेकी ओरसे नहीं फिरा और यह बतलाइये कि आपका आना यहां किसकारण हुआ व तुम्हें चलते समय राजा कंसने क्या कहा यह वचन सुनतेही अक्रूरने खड़े होकर हाथ जोड़के विनय किया हेवैकुण्ठ-नाथ अन्तर्यामिन् कंसके अनीति करनेका हाल आपको मालूमहै मैं क्या कहूं कंस वसुदेव व उग्रसेनका प्राण लेने वास्ते नित्य इच्छा करता है पर वह लोग आजतक तुम्हारी कृपासे बचे जाते हैं व कंसका हाल जो कुछ आपने सुना सो उसीतरह परहै जब वृषभासुर दैत्य आपके हाथसे मारागया तब नारदमुनिने आनकर कंससे कहा तेरी मृत्यु श्रीकृष्णजीके हाथहै और वह नन्द व यशोदाके बालक न होकर वसुदेव देवकीके पुत्र हैं यह हाल सुनकर कंसने वसुदेव व देवकीको फिर कैद किया व उसी दिनसे तुम्हारे प्राण मारने के उपाय में रहकर धनुषयज्ञके बहाने तुम दोनों भाई व नन्दजी आदिक को मुझे बुलाने वास्ते भेजा है यह बात सुनतेही श्यामसुन्दरने बलरामजीकी ओर देखकर हँसदिया व नन्दराय से कहा अय बाबा अक्रूरजी यदुकुल में बड़े महात्मा होकर कंसकी आज्ञानुसार धनुषयज्ञका उत्सव देखनेवास्ते हमलोगोंको बुलाने आये हैं इनके साथ जाने में बहुत अच्छा होगा सो तुम भी गोपग्वालों समेत घी व दही व माखन आदिक भेंट लेकर चलो ॥

दो॰ माखनप्रभुकी बातयह सुनिकैगोपीग्वाल । गये सकल मुरझाय तनु भये विकलतेहिकाल ॥

हे राजन् नन्दराय श्रीकृष्णजीके वचनकी कई बेर परीक्षा लेचुके थे इस लिये उनके वचनका टुलखना उचित नहीं जाना व नन्द व यशोदा स्वप्न की बात याद करके शोच करने लगे पर श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार नन्द जीने वृन्दावनमें ढिंढोरा पिटवाकर सब ग्वालवालोंको कहला भेजा कि राजा कंसने धनुषयज्ञ का उत्सव देखनेवास्ते हमलोगों को बुलाया है सो

कल्हि प्रातसमय सब ग्वालबाल दूध व दही व घी व माखन आदिक लेकर मथुराको चलैं जब यह समाचार गोपियोंने सुना कि श्यामसुन्दर मथुराको जाते हैं तब वह सब मोहनप्यारेका वियोग समझकर मृतकके समान होगईं व उनके घरों में ऐसा रोना व पीटना होने लगा कि जैसे किसीका प्राणी मर जावे॥

दो० ठौर ठौर ऐसी दशा कहत न आवै बैन। बढ़ी श्याम बिछुरन व्यथा ढुरत उमँगि जल नैन॥
सो० फिरत विकलसबग्वाल पूछतएककहिएकसों। चलनचहत नँदलाल मनमलीनव्याकुल सबै॥

फिर सब गोपियां ठौर ठौर बैठकर आपसमें कहने लगीं देखो यह क्या प्रलय हमारेऊपर आया एक क्षण विरह मोहनप्यारेका हमसे सहा न जाकर उनके देखे विना चैन नहीं पड़ती थी सो अब वह मथुरा जातेहैं उनके वियोग में हमारा प्राण कैसे बचैगा इस अक्रूर मूर्ख को क्या प्रयोजन था जो हमलोगों का प्राण लेने वास्ते आया सच पूछो तो श्रीकृष्णजी ने हमारी प्रीति से मन अपना खींच लिया नहीं तो उनको मथुरा जाने का क्या प्रयोजनहै व नन्दलालजी न जावैं तो राजा कंस उनका क्या करैगा तब दूसरी गोपी बोली परमेश्वरकी दयासे आज कोई बड़ा मनुष्य वृन्दावनमें मरजाता या कोई दूसरा कारण होकर हमारा चित्त चुरानेवाला कल्हि मथुराको न जाता तो बहुत अच्छा होता दूसरी अपनी छाती पीटकर कहने लगी बड़ा शोच है जो प्राणप्यारा मुझसे अलग होगा॥

चौ० अब हरि जब मथुरा को जैहैं। तनु बिनु प्राण कौन विधि रैहैं॥

दूसरी गोपी बोली मुझे केशवमूर्तिके देखनेसे तीनों लोकोंका सुख प्राप्त होताथा अब विना देखे उनके किसतरह चैन पड़ेगी दूसरी बोली जब वह एकबेर आंख उठाकर मेरी ओर देखते थे तब मैं बहुत आनन्द होकर अपने बराबर किसीको नहीं समझती थी उनके जाने उपरांत मेरी क्या दशा होगी दूसरी ने कहा हे ब्रह्मन् तुम बड़े कठोर हो जो पहिले मोहनप्यारेसे प्रीति लगाकर अब उनके विरहसागर में मुझे डुबाना विचार कियाहै जिसतरह दूरसे कोई प्यासा पानी देखकर पीने वास्ते जावै और वहां पहुँचकर उसे बालू दिखलाई देवे वही गति हमारी हुई राम व कृष्ण

दोनों नेत्र हमारे चले जायँगे तो हमलोग विना आंख के जीकर क्या करेंगी श्याम व बलराम विना एक क्षण हमारा जीना कठिन है ॥

दो० जो राजनके राजहैं माखनप्रभु व्रजराज। अब जीवैं कैसे सखी वह छूटतहैं आज ॥

हे राजन् इसीतरह सब व्रजबाला विरहकी माती हुई अपने अपने मनका हाल एक दूसरीसे कहकर विलाप करती थीं जब रातभर उनको मछलीके समान तड़पते बीत गई तब प्रातसमय सब गोप व ग्वाल वृन्दावनवासियों ने गोरस आदिक गाड़ी व बैलोंपर लदवा दिया व भैंसा व भेंड़ा व बकरा भेंटके वास्ते लेकर नन्दजी के द्वारपर आये व जिस जगह अक्रूरजी श्याम व बलरामको अपने आगे बैठाकर तय्यारी चलनेकी करते थे वहां पर सब स्त्री व पुरुष बालक व बड़े जानकर मोहनप्यारे के वियोग में अपनी अपनी आंखों से जलकी धारा बहाने लगे व इतना रोये कि उनके आंसू बहने से पृथ्वी वहांकी कीचड़के समान होगई और उन लोगोंने आपसमें कहा देखो कंस अधर्मी के राज्यमें सुख व आनन्द स्वप्न होगया व सब व्रजबाला उनके चौगिर्द खड़ी होकर बड़ी करुणा से कहने लगीं हे व्रजनाथ तुम किसवास्ते हम लोग अबला अनाथनको अपने विरहसागरमें डुबाकर प्राण लिया चाहते हो सब वृन्दावनवासियों का जीना तुम्हारे आधीन है जिसतरह हाथकी लकीरें कभी नहीं मिटतीं उसीतरह भले मनुष्यकी प्रीति कभी नहीं घटती जैसे बालूकी भीति नहीं ठहरती वैसे मूर्खकी प्रीति नहीं निबहती हे गोपीनाथ हमलोगोंने तुम्हारा क्या अपराध किया जो हमें पीठ दिखाकर चले जाते हो ॥

दो० एक सखी ऐसे कहै मैं शोचत मनमाहिं। ये सुत यशुदा नन्दके हमें छोड़िहैं नाहिं ॥

गोपियां ऐसा श्रीकृष्णजी को कहकर अक्रूरसे बोलीं हे अक्रूर तुम हमलोगोंका दुःख न जानकर जिसके आधीन हमारा प्राणहै उसे अपने साथ ले चले अब हमारा जीवन कैसे होगा क्यों ऐसा करते हो ऐसे जीने से तुम हमारा वध करडालते तो अच्छा था व अक्रूर दयावन्त को कहतेहैं सो तुम अपने नामके विपरीत कठोरताई करतेहो जैसा दुःख राजा कंसने हमलोगोंको दिया उसका दण्ड श्यामसुन्दरसे पावैगा दूसरीने

कहा देखो ब्रह्मा हमको स्त्रीका तनु देकर हमारे ऊपर कुछ दया नहीं करते भवँररूपी आंख हमलोगोंकी कमलरूपी मुखारविन्द मोहनप्यारेका देखने वास्ते दिन रात चाहना रखतीथीं कहो अब किसतरह इन नयनोंको विना देखे सांवली सूरति मोहनीसूरति के चैन मिलैगा ॥

दो० माखनमभुको रूपरस पियत रहीं जो निच। अब खारी जल कूपको किहि विधि आवै चित्त॥

दूसरी सखी बोली सच पूंछो तो ब्रह्मा व अक्रूरका क्या दोषहै यह सब कठोरताई श्यामसुन्दरकी समझना चाहिये कि उनका चित्तभी शरीरके समान कालाहै हम लोगोंने कुल व परिवारकी प्रीति छोड़कर अपना प्रेम उनसे लगाया था सो अब वह हमैं इस दुःखसागरमें छोड़कर चले जातेहैं मथुरानगरकी स्त्रियां दिन रात मोहनप्यारे के भेंट होनेकी इच्छा मनमें रखकर परमेश्वरसे वरदान मांगती थीं सो अब नारायणजी ने विनय उनकी सुनी व दूसरीने कहा वहांकी स्त्रियां रूप व गुणसे भरीहैं श्यामसुंदर उनकी प्रीतिमें फँसकर वहां रहजावेंगे व हम लोगोंको भूलकर यहां क्यों आवेंगे उन स्त्रियोंका बड़ा भाग्यहै जो मनहरणप्यारेके साथ सुख उठावेंगी न मालूम हमारे तपमें क्या भूल पड़ी कि हमसे नंदलालजी बिछुड़ते हैं दूसरी बोली आज अच्छे शकुन मथुराकी स्त्रियोंको हुये होंगे कि वह लोग श्यामसुन्दर का दर्शन पाकर अपने लोचनोंका फल प्राप्त करेंगी दूसरीने कहा श्रीकृष्णको किसी ने मथुरामें नहीं बुलाया उनका मन वहांकी स्त्रियां देखनेवास्ते चाहताहै इसीवास्ते यह बहाना करके जातेहैं दूसरीने कहा इस चित्तचोरने हमलोगोंके साथ कौन भलाई की है कि वहांकी स्त्रियों से करैंगे रूपवान् लोग अपनी सुन्दरताई के अभिमान से किसीको कुछ वस्तु नहीं समझते दूसरी ब्रजबाला बोली वृन्दावनवासियोंके बुरे दिन आये और मथुरावासियों का भाग्य उदय हुआ इसीवास्ते मोहनप्यारे वहां जाते हैं दूसरीने कहा यह अक्रूर हमारे वास्ते यमराजका दूत बनकर आयाहै जिसतरह किसी भूखेके आगे ग्रास उठाती समय कोई थाली भोजनकी खींच लेवै उसीतरह श्यामसुन्दरको हमसे बिलग करताहै यह कौन न्यायकी बातहै जो मछलियों को पानीसे

निकालके गर्म बालूपर डालदेवे कदाचित् हमें दुःख देने से उसको कुछ मिलता होगा इसलिये ऐसा करताहै ॥

दो० जो दुख देवै जीवको महाकष्ट वह पाय। बोवै बीज बबूलको आम कहांते खाय ॥

दूसरीने कहा हे प्राणप्यारी इसमें किसीको दोष देना न चाहिये हमारे खोटे दिन आने से प्राणप्यारे जातेहैं हमारा भाग्य अच्छा होता तो अक्रूर क्यों आवता जिस समय गोपियां अपने अपने विरहका दुःख एक दूसरीसे कहरही थीं उसीसमय श्याम व बलराम चलने के वास्ते रथपर चढ़े तब व्रजबालोंने कहा देखतीहो श्रीकृष्णजी हमारे रोने व विलाप करने पर कुछ दया न करके मथुरा जानेको तय्यार होगये ॥

दो० माखन प्रभु आनन्दसों चढ़ बैठे रथमाहिं। बहुत भलो है सारथी अबहूं हांकत नाहिं ॥

दूसरी बोली हम सब अपने कुल व परिवार की लज्जा छोड़ चुकी हैं जब रथ यहां से चले तब श्यामसुन्दरकी फेंटपकड़कर रोंक रक्खो जिसमें वह जाने न पावैं यह सुनकर दूसरी ने कहा प्यारी तू सच कहती है जब प्राण मेरा केशवमूर्ति ने हर लिया तब उन्हें किस तरह जाने देंगी जिस लाज के मारे परमेश्वर का वियोग हो उसे भरसाईं में डारदें इस समय लज्जा करने में पीछे बहुत दुःख उठाना पड़ैगा दूसरी बोली हमलोग बौरही होकर पड़ी रहें और वह मथुरा की स्त्रियोंसे जाकर चैन उड़ावैं यह बात कैसे होने पावैगी हमें लाज से कुछ काम न होकर अपना अर्थ साधना चाहिये दूसरीने कहा हम लोगों को इस मोहनीमूर्ति के देखने से सुख मिलता था सो अब जाते हैं भला दिनभर तो हम समझैंगी कि गौ चराने वन में गये हैं सन्ध्या को बिना चांदनी उनके हमारा प्राण कैसे बचेगा दूसरी बोली हे सखी उस दिन देखो रातकी बात तुझे याद है या नहीं जब श्यामसुन्दर ने हम लोगों के साथ रासलीला करके हमें सुख दिया था दूसरीने कहा हे सखी जो कोई इनकी लीला भुला देवे उसे पशु समझना चाहिये दूसरी बोली जब सन्ध्या समय वृन्दावनविहारी वन में गौ चराकर घर आवते थे तब उनके घूंघुरवाले बालों पर धूरि पड़ी हुई कैसी शोभा देती थी व हम लोग मार्ग में बैठकर उनका दर्शन पाती

थीं तब उनकी छवि देखने व वंशी सुनने से कैसा आनन्द मिलता था बताओ अब वह सुख किसतरह प्राप्त होगा हे राजन् इसीतरह सब व्रजबाला चौरहों के समान अपने अपने विरह का हाल श्याम व बलराम व अक्रूर को सुनाकर विलाप करतीं थीं व लाज छोड़कर बारम्बार कहती थीं हे माधव हे मुकुन्द हे गोविन्द हे दीनदयालु हे केशवमूर्ति हे गोपीनाथ हे श्यामसुन्दर हे मुरलीमनोहर हे श्रीकृष्ण हे व्रजनाथ हे दुःखभञ्जन परमेश्वर के नाम पुकारकर उन्हें अपना दुःख सुनाती थीं उस समय उनका रोना व विलाप देखकर कौन ऐसा चैतन्य जीव वहां था कि जिसने आंसूकी धारा अपनी आंखों से नहीं बहाया जब जड़रूप वृक्षों से भी उनका दुःख नहीं देखा गया तब जड़ से डाली तक मारे शोचके हिलने लगे व अक्रूर उन सबों की यह दशा देखकर राजा कंसकी आज्ञा व अपने तनुकी सुधि भूलगया जब उनका विलाप उससे नहीं देखागया तब उसने रथपर चढ़कर हांकना चाहा उस समय व्रजबालों ने दौड़कर रथ पकड़ लिया व बड़ी करुणा से विनय किया हे गोपीनाथ तुम किसवास्ते हम लोग अबला अनाथ को अपने विरहसागर में डुबाकर प्राण लिया चाहते हो हमें भी अपने साथ ले चलो तो धनुषयज्ञ का उत्सव व राजा कंसको देख आवें हम लोगों ने अपना कुल परिवार व लोकलाज छोड़कर तुमसे प्रीति लगाई तिसपर तुम क्यों ऐसे निर्दयी होकर हमारा प्राण लेते हो तुम अक्रूर के साथ जो रथ साजकर आया है न जाव तो कंस तुम्हारा क्या करेगा अक्रूर अपना मुख काला करके फिर जायगा हे राजन् उसी समय एक ओर तो गोपियों की यह दशा थी दूसरी ओर से यशोदा रोती हुई आनकर बोलीं हे अक्रूर तुम मेरे प्राणप्यारों को किस वास्ते ले जाते हो इनके विना मैं किस तरह जीवोंगी ॥

दो० कहा धनुष यह देखिहैं बालक अतिअज्ञान। कियो नृपति कछु कपट यह पड़त मोहिं यों जान ॥

सो० मैं नहिं देहों जान मो निर्धन के श्याम धन। लेहि कंस वरु प्रान को जीवे नँदनन्द विनु ॥

क० प्राणके अधारे मेरे बारे ये पधारे चाहैं भूपके अखारे जहां भारे सजे शूरमें।
पीर बढ़ी है शरीर डूबते वियोग नीर कैसे कैसे धरौं धीर प्रेम के अधीरमें ॥

डारै वरु कंस कारागार में जँजीर भरी मेरी बीर जरिजाव धन धाम चूरमें।
जोपै ये कन्हैया बलभैया दोऊ लाल मेरे खेलैं करि मैया बैन नैनके हजूरमें॥

व रोहिणी रोकर कहने लगी श्याम व बलराम व्रज गोकुल के जीवन-आधार हैं इनके जाने से हम लोग कैसे जीवैंगी फिर यशोदा बहुत विलाप करके बोली अय मोहनप्यारे तुम हमारी प्रीति छोड़कर क्यों जाते हो मैं तुम्हारे ऊपर न्यवछावर होकर कहती हूं कि अपनी जननीको छोड़ कर मति जाव तुम्हारे देखे विना मुझसे एक क्षण नहीं रहाजायगा जब यशोदा के यहसब कहने पर भी केशवमूर्ति रथसे नहीं उतरे तब वह पृथ्वी पर गिरपड़ी व अतिविलाप करके कहने लगी अय प्राणप्यारे तुम कठोर होकर मेरा प्राण लिया चाहते हो अक्रूर मुझे मारने वास्ते वृन्दावन में आनकर मेरे बुढ़ौती समय की लकुटिया छीनकर लिये जाता है अय बेटा तुमको भी कुछ दया नहीं आवती जो मुझे इसतरह छोड़कर चले जाते हो हेराजन् जब इसीतरह यशोदा व रोहिणी व गोपियां रथ पकड़कर रोने लगीं तब मोहनप्यारे हँसते हुये रथपर से उतरकर बोले तुम लोग मति चिन्ता करो एक मनुष्य तुम्हारे पास भेजूंगा उस समय यशोदा श्यामसुन्दर को गले लगाकर बड़ी करुणा से बोलीं अय बेटा तुम जल्दी धनुषयज्ञ देखकर यहां चले आवना वहां किसी से प्रीति लगाकर अपनी जननी को भूलि मति जाना यह सुनकर मुरलीमनोहर ने यशोदा को बहुत धैर्य दिया व श्रीदामा ग्वाल से कहा कि तुम गोपियों से कहिदेव शोच न करें मैं फिर मिलूंगा जब मोहनप्यारे इसीतरह सबको धैर्य देकर व माता को दण्डवत् करके रथपर चढ़े तब नन्दजी ने यशोदा व गोपियों से कहा तुम लोग उदास मति हो मैं श्याम व बलराम को धनुषयज्ञ दिखलाकर अपने साथ लेआऊंगा पर मुझे इस बातका डर है कि राजाकंस बलराम व कृष्ण से कुछ कपट न करै यह बात सुनकर एक बूढ़े मनुष्य ज्ञानी ने कहा अय नन्दजी श्यामसुन्दर परब्रह्म परमेश्वर का अवतार हो कर इन्होंने पृथ्वी का भार उतारने वास्ते जन्म लिया है यह राजा कंस को क्या समझते हैं काल की भी मृत्यु इनके हाथ है यह वचन सुनकर

नन्दादिक को धैर्य हुआ इतनी कथा सुनकर परीक्षित ने पूंछा हे मुनिनाथ बड़ा आश्चर्य है कि अक्रूर ने यह दशा यशोदा व गोपियों की देखकर उन्हें कुछ धैर्य नहीं दिया शुकदेवजी बोले हे राजन् उस समय अक्रूर ने इतना गोपियों को कहा था कि श्यामसुन्दर फिर भेंट करके तुम्हें सुख देवैंगे जब अक्रूर ने सब को रोते छोड़कर रथ श्याम व बलराम का मथुरा की ओर हांका व नन्दजी ग्वालबालों समेत गाड़ी आदिकपर बैठकर उसके साथ चले तब यशोदा बड़े विलाप से कहने लगीं ॥

चौ० मोहन इधर देख तो लीजै। बिछुरत लाल हमैं कछु दीजै ॥
लेहु निहारि जन्मको खेरो। बहुरि बिरजमें होत अँधेरो ॥
यह कहि ग्वाल सखनको फेरो। अपनी गाय जायके घेरो ॥
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई। किये यत्न बहु प्राण न जाई ॥
तलफत विकल राम महतारी। अति व्याकुल सब व्रजकी नारी ॥

दो० देखिदुखित व्रजलोग सब और यशोदामाय। तबहरि यह कहि सुख दियो बहुरि मिलैंगेआय॥

जबतक रथकी ध्वजा व धूर उड़ती हुई यशोदा व व्रजवासियों को देख पड़ी तबतक उन्हें आशा बनी थी कि अबभी हमारे प्राणनाथ फिर आवैंगे इसलिये वह रथकी ओर टकटकी बांधकर देखती रहीं जब दूर जानेसे धूरि रथकी नहीं दिखलाईदी व तन गोपियोंका व्रजमें रहकर मन धूरिकी तरह उड़ता हुआ श्यामसुन्दरके पीछेपीछे चलागया तब अचेत होकर यशोदा समेत गोपियां गिरपड़ीं जब फिर वह चैतन्य हुईं तब रोती पीटती घरको चलीं पर उन्हें मारे विरह केशवमूर्तिके राह नहीं सूझती थी तब एक सखी यशोदासे बोली ॥

सो० कहाकरैं व्रज जाय मन हरिलेगयो सांवरो। परत न आगे पांय पाछेही लोचन लखत ॥
दो० यों व्रज तिय पछिताय सब देखि यशोदा दीन। सब आईं अपने घरन क्लेशित वदन मलीन॥
सो० सब व्रजपरमउदास विरहिनदुखसम्पतिसपन। रहेप्राणयहिआस श्यामकह्यो मिलिहैं बहुरि॥

क० कुटिल अक्रूर क्रूर वैरी काहू जनमको चेटकसी डार सरलैके व्रजधूरिगो।
व्याकुल विहाल बाल बंशीधर श्याम बिनु मीनसी तलफ मानो प्रेमरस झूरिगो॥
चरणउठाय सब चकित चितौत ऊंचे धाम चढ़ि चिन्तामणि चैन सब चूरिगो।
बारबार कहत विसूरि जलपूरि नैन धूरि ना उड़ात आली अब रथ दूरिगो ॥

हे राजन् इसीतरह यशोदा व गोपियां श्यामसुन्दरके विरहमें व्याकुल

रहकर उनकी चर्चामें दिन अपना काटने लगीं व अक्रूर ने आवतीसमय मनमें उदास होकर कहा देखो मैंने राजा कंस अधर्मीके कहने से बहुत बुरा काम किया कि श्याम व बलरामके मारेजानेका उपाय सुनने व देखने पर भी इन्हें अपने साथ लेजाता हूं मेरे बराबर कोई दूसरा पापी संसार में न होगा जब कंस बलराम व कृष्णको मार डालेगा तब सब व्रजबाला जिनको मैं रोते व विलाप करते छोड़ आया हूं वे बहुत दुःख पावेंगी इस अधर्म करनेके बदले न मालूम मुझे कौन नरक भोगना पड़ैगा श्यामसुन्दर अन्तर्यामीने अक्रूरके मनका हाल जानकर विचारा देखो अक्रूर ऐसा ज्ञानी मुझे लड़का समझकर मेरे मारेजानेका शोच करता है इसलिये अपनी माहिमा दिखलाकर यह शोच इसका छुड़ादिया चाहिये जब अक्रूर यमुना किनारे पहुँचे और रथ अपना वृक्ष के नीचे श्याम व बलराम समेत खड़ा करके नहाने गये तब मोहन प्यारेने नन्दराय से कहा तुम ग्वालबालोंको साथ लेकर आगे चलो अक्रूरजी स्नान व पूजा करलेवें तो मैंभी पीछे आन पहुँचता हूं यह बात सुनकर नन्दजी ग्वालबाल समेत आगे बढ़े व अक्रूरने जैसे यमुनाजलमें गोता मारा वैसे नन्दलालजी को पानीके भीतर देखा जब आश्चर्य मानकर शिर अपना बाहर निकाला तब वह रथपर बैठे दिखलाई दिये दूसरी बेर फिर गोता मारा तो वही हाल देखकर जब तीसरा गोता लगाया तब क्या देखा कि श्रीकृष्णजी सांवली सूरत लक्ष्मीसमेत जड़ाऊ गहना अंग अंग पर पहिने केशर व चन्दनका तिलक लगाये कौस्तुभमणि व वैजयन्ती माला व वनमाला गलेमें डाले पीताम्बर व जनेऊका जोड़ा पहिने व उपरना रेशमी ओढ़े चतुर्भुजी स्वरूप से शंख चक्र गदा पद्म धारण किये हुये शेषजीके ऊपर विराजते हैं व शेषजी श्वेतवर्ण होकर अपने हजार मस्तक पर जड़ाऊ मुकुट बांधे व नीलाम्बर पहिने हुये बहुत शोभायमान दिखलाई दिये व श्यामसुन्दर घूंघुरवाले बालोंपर क्रीटमुकुटजड़ाऊसाजे व मकराकृतकुण्डल पहिने सुन्दर नासिका व कपोल कमलनयन तिरछी चितवन दांत बिजुलीके समान चमकते मन्द मन्द मुसुकाते व भुजा व छाती अतिविशाल

व गहरी नाभि पतली कमर व जंघा मोटी पांवके नख चमकते हुये ऐसे महासुन्दर दिखलाई दिये जिसका वर्णन नहीं होसक्ता व आकार यव व अंकुश व वज्रादिक पैरके तलुवेमें दिखलाई देकर क्या दृष्टिमें पड़ा कि ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व वरुण व कुबेर आदिक देवता व नव योगीश्वर व नारदमुनि व मार्कण्डेय व भृगुआदिक ऋषीश्वर व सनकादिक व गरुड़ व आठ वसुदेवता व काल चौबीस तत्त्व व ध्रुव व प्रह्लाद आदिक भक्त व वेदव्यास व उंचास पवन व आठों दिग्पाल व सातों द्वीप व अग्नि व सातों समुद्र व बारहों सूर्य व चन्द्रमा व बालखिल्य ऋषीश्वर व धर्मराज व कामधेनु व कामदेव व सातोंपुरी व विद्याधर व सिद्ध व गन्धर्व व दिव्यपितर व गंगा व सरस्वती आदिक नादियां व अरुन्धती व वशिष्ठ व यक्ष व राक्षस व कंस व देवकन्या व सब व्रत व तीर्थ व कल्पवृक्ष आदिक अपना अपनारूप धारण किये श्रीकृष्णजीके सामने हाथ जोड़े हुये स्तुति करते हैं व अप्सरा उन्हें नाच दिखाकर गन्धर्व गाना सुनाते हैं व ब्रह्मादिक देवता स्तुति करने उपरान्त केशवमूर्तिके तेजसे कुछ बोलनेकी सामर्थ्य न रखकर चित्रकारी से चुपचाप खड़े उनका मुख निहारते हैं जिस की ओर नन्दलालजीने आंख उठाकर दयासे देखा वह प्रसन्न होकर उन का गुणानुवाद गाने लगा उनमें बाजे मोहनप्यारेके चँवर हिलाते व बाजे उनके धूप दीप करके सुगन्धित फूलोंका गजरा पहिनाते व बाजे अनेक तरहकी वस्तु उन्हें भेंट देकर बारम्बार दण्डवत् करते थे ॥

दो० माखन प्रभु व्रजनाथके सभी देवता साथ। हाथ जोड़ि अस्तुति करैं धरे चरण पर माथ॥

जब अक्रूरको यह सब महिमा श्यामसुन्दरकी यमुनाजलमें देखकर विश्वास हुआ कि श्रीकृष्ण परब्रह्म परमेश्वरका अवतार हैं तब वह शोच अपना छोड़कर चतुर्भुजी रूपके पास चलागया व चरणोंपर गिरके हाथ जोड़कर विनय किया ॥

दो० तन मन रह्यो भुलायके देखि रूप अभिराम। माखन प्रभु घनश्यामको लाग्यो करनप्रणाम॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जो कोई इस अध्याय को प्रीतिसे कहै व सुनै जानों उसको श्यामसुंदरके दर्शन प्राप्त हुये ॥

चालीसवां अध्याय।

अक्रूर का श्रीकृष्णजी चतुर्भुजीरूप की यमुनाजल में स्तुति करनी॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब अकूरने यमुनाजल में महिमा श्रीकृष्णजी की देखकर उन्हें पूर्ण ब्रह्म जाना तब उसी जगह इसतरह पर स्तुति उनकी की हे नाथ निरंजन आप तीनों लोकों के मालिक होकर आवागमन से रहित हैं व कोई ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो तुम्हारी लीला व आदि व अन्त का भेद जानने सकै सो मेरी दण्डवत् आपको पहुँचै यह बात सुनकर परीक्षित ने पूंछा हे मुनिनाथ जब परब्रह्म परमेश्वर के भेद को कोई नहीं पहुँचसक्ता फिर उनकी महिमा जाननेवाला किसको कहना चाहिये शुकदेवजी बोले हे राजन् उनकी महिमा जानना बहुत कठिनहै पर तुम जितने जड़ व चैतन्य जीव देखते हो सब में उन्हीं के तेज का प्रकाश समझो व जो कुछ संसारमें दिखलाई देता है वह सब परमेश्वर की इच्छा व महिमा से उत्पन्न होकर उन्हीं का रूप है संसारमें कोई कोई ज्ञानी व तपस्वी परमेश्वर के स्मरण व ध्यान करने के प्रताप से कुछ कुछ भेद उनका जानने सक्ते हैं॥

दो० माखनप्रभु कर्तार को जानो या विधि लोग। घट घट में व्यापक सदा हैं सब करने योग॥

हे राजन् अक्रूरने श्रीकृष्णजी से यमुनाजलमें विनय किया हे महाराज आप ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व तीनों लोकों के मालिक हैं जिस तरह सब नदी व नालों का पानी बहिकर समुद्रमें मिल जाताहै उसीतरह संसारी मनुष्य जो पूजा व दान व स्मरण दूसरे देवतों के नाम पर करते हैं वह सब आपको पहुँचताहै व मरने उपरांत सब जीव तुम्हारे रूप में समा जाते हैं अलख अगोचर जहां ब्रह्मादिक देवता आपके गुण व महिमा को नहीं पहुँचनेसक्के वहां दूसरे को क्या सामर्थ्यहै जो तुम्हारी महिमा जानने सकै सो मेरी दण्डवत् लीजिये हे आदिपुरुष निराकार चारों वेद आपका श्वासा होकर तुम्हारा आदि व अन्त नहीं जानते व आप घटने व बढ़ने से रहित होकर अपनी स्तुति कराने की कुछ इच्छा नहीं रखते जैसे गूलर के फल में मच्छड़ व जलचर जीव अपना हाल नहीं जानते वैसे सब

ब्रह्माण्डके जीव सतोगुण व रजोगुण व तमोगुणसे उत्पन्न होकर मायावश तुम्हें नहीं पहिंचानते व तुम्हारे विराट्रूपके रोम रोम में अनेक ब्रह्माण्ड हैं जिसतरह गूलर के वृक्ष में फल लगा रहता है सो मैं उसी विराट्रूप को नमस्कार करता हूं हे पूर्णब्रह्मन् निर्मल रूप आप चौदहों भुवन के कर्ता व धर्ता होकर केवल गौ व ब्राह्मण व हरिभक्तों के उद्धार करने व सुख देने व अधर्मियों के मारने वास्ते संसार में अवतार धारण करते हैं॥

चौ० हंसरूप धरके अवतारा। नीर क्षीर तुम करो निधारा॥

हे ज्योतिस्स्वरूप दीनानाथ आपने मत्स्य रूप धरकर वेद को पाताल से निकाला व हयग्रीव अवतार लेकर मधुकैटभ दैत्यको मारा और वास्ते मथने समुद्र व निकालने चौदहों रत्न के कच्छप अवतार धरकर मन्दराचल पहाड़ को अपनी पीठ पर उठाया व वाराह अवतार लेकर हिरण्याक्ष दैत्य को मारने उपरांत पृथ्वी पाताल से निकाल लेआये व नृसिंहरूप धारण करके हिरण्यकशिपुको मारकर प्रह्लाद अपने भक्त की रक्षा की व देवतोंके भले वास्ते वामन अवतार लेकर तीन पग पृथ्वी राजा बलि से दान लिया व परशुराम अवतार धरकर क्षत्रियों का वध किया व रामचन्द्र अवतार से अधर्मी रावण को मारकर विभीषण को लंका का राज्य दिया व गंगाजी तुम्हारे चरण का धोवन होकर तीनों लोकों के जीवों को तारती हैं व बलभद्र व प्रद्युम्न व अनिरुद्ध तुम्हारे रूप हैं इसलिये मैं तुम्हारे सब अवतारों को दण्डवत् करताहूं इतनी कथा सुनकर परीक्षित ने पूंछा महाराज उस समय तक अनिरुद्ध व प्रद्युम्न उत्पन्न नहीं हुये थे अक्रूर ने उनका नाम किस तरह जाना शुकदेवजी बोले हे राजन् उद्धव व अक्रूर श्रीकृष्णजी के भक्तों में होकर उनकी दया से तीनों कालों का हाल जानते थे जिस तरह नारदमुनिको भूत व भविष्यत् व वर्तमान का हाल मालूम रहता है उसी तरह हरिभक्तलोग भी तीनों कालों का हाल जानते हैं फिर अक्रूर ने कहा आप बौद्ध अवतार लेकर दैत्यों को यज्ञ करने से बरजेंगे व कलियुग के अन्त में कलङ्की अवतार धरकर नये सिरे से धर्म सतयुग का प्रचार करेंगे व कोई मनुष्य आपका तप व ध्यान करने से भवसागर

पार उतर जाते हैं व किसी को आप संसारी मायाजाल में फँसाकर कौतुक उनका इसतरह देखते हैं जिसतरह कोई मनुष्य अपना मुख शीशे में देखे विना कृपा तुम्हारी इस मायाजाल से छूटना बहुत कठिन है व पूजा आपकी कई जगह पर होकर बाजे मनुष्य तुम्हारी मूर्ति बनाकर पूजते हैं व कोई तुम्हारे रूप व चरणों का ध्यान अपने हृदय में रखते हैं व बाजे तुम्हारे नाम पर यज्ञ व होम करते हैं व ज्ञानी आपको सब जीवोंमें एक रूप देखता है व बाजे मनुष्य विरक्त होकर वनमें तुम्हारा तप व ध्यान करते हैं व कोई गृहस्थी में रहने पर भी मन से तुम्हारा स्मरण व ध्यान रखकर भवसागर पार उतर जाता है व बाजे लोग सिवाय तुम्हारे दूसरे देवता से प्रीति न रखकर वारम्बार तुम्हें दण्डवत् करके संसारी व्यवहारको स्वप्नवत् समझते हैं तुम्हारी पूजा स्मरण व गुणों का वर्णन बड़े बड़े योगीश्वर व ज्ञानी व शेष व महेश व शारदा व गणेश नहीं करनेसक्के मुझ अज्ञान को क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा वर्णन करनेसकूं आपका नाम दीनदयालु है इसलिये मुझे दीन व अपना दास जानकर अज्ञान व अभिमान की काटि जो मेरे हृदय में जमी है सो उसको ज्ञानरूपी अग्नि से जला दीजिये व मुझे आठों पहर अपने चरणों के पास रखकर ऐसा ज्ञान उपदेश कीजिये जिसमें आपको अपना उत्पन्न करनेवाला जानकर तुम्हारी सेवा व चर्चा में दिन रात लीन रहूं ॥

दो० मैं अजान तुमशरण हौं माखन प्रभु भगवान। ऐसी बुधि मोहिं दीजिये तुम्हैं सकौं पहिंचान॥

इकतालीसवां अध्याय।

अक्रूर का श्याम व बलराम समेत मथुरा में पहुँचना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब श्रीकृष्णजीने यमुनाजल में यह सब स्तुति अक्रूर से सुनकर चतुर्भुजीस्वरूप अपना देवतों समेत अन्तर्धान कर लिया तब अक्रूर इस बातका अचम्भा मानकर पानीसे बाहरआया व श्याम व बलरामको रथपर बैठे देखकर डरता व कांपता उनके पास पहुँचा यह दशा उसकी देखकर केशवमूर्तिने पूंछा हे चाचा तुम इससमय घबराये क्यों हो व नहाती समय शिर पानीसे बारम्बार निकाल कर हमारी ओर क्या

देखते थे व चलनेका शोच भूलकर इतनी देरतक तुम क्या करतेरहे तुमने यमुनाजलमें कुछ आश्चर्यकी बातें तो नहीं देखीं यह वचन सुनतेही अक्रूर ने हाथ जोड़कर विनय किया हे नाथ निरंजन अन्तर्यामी जो कुछ पानीके भीतर मैंने तुम्हारी महिमा देखी सो वर्णन नहीं होसक्नी ॥

चौ० भलो दरश दीन्हों जलमाहीं। कृष्णचरित को अचरज नाहीं ॥
मोहिं भरोसो भयो तुम्हारो। बेगि नाथ मथुरा पग धारो ॥

दो० अब मोसों पूंछत कहा तुम त्रिभुवन के नाथ। कर्ता हर्ता जगतके सकल तुम्हारे हाथ ॥
माखन प्रभु करतारकी लीला कही न जाय। सर्व जीव संसार के जामें रहे लुभाय ॥

यह सुनतेही श्रीकृष्णजी ने हँसकर कहा आवो रथपर चढ़ो रास्ता चलना है तब अक्रूरने पहिले शिर अपना उनके चरणोंपर रखदिया फिर बैठकर रथ चलाया व नन्दादिक ग्वाल जो आगे गये थे मथुराके निकट बागमें डेरा करके श्याम व बलराम की आशा देखने लगे तब श्रीकृष्णजी भी वहां पहुँचकर रथसे उतरे तब अक्रूरने हाथ जोड़कर उनसे विनय किया हे दीनानाथ मैं चाहताहूं कि आजकी रात मेरी कुटी अपने चरणोंसे पवित्र कीजिये जिसके घर आपके चरण जावें उसके पुरुषा स्वर्गको पहुँचते हैं जिन पांवोंने अहल्या गौतम ऋषीश्वरकी स्त्रीको शापसे छुड़ाया व बलिको सुतल लोक का राज्य दिया व जिन चरणोंका धोवन गंगाजीको भगीरथ बड़े तपसे अपने पुरुषों के तारनेवास्ते मर्त्यलोकमें लाये व शिवजीने अपने मस्तक पर रक्खा वही चरण धोकर चरणोदक पीने व शिरपर चढ़ावनेसे अपने कुल व परिवार समेत कृतार्थ हुआ चाहताहूं ॥

चौ० ऐसे चरण सरोज तुम्हारे। तिनको सदा प्रणाम हमारे ॥

दो० माखन प्रभुके नाम गुण कहैं सुनै ज्यहि ठौर। सुर नर रज उस ठौरकी धरैं शीश ज्यों मौर ॥

हे महाराज मैं तुम्हारा दास इन चरणों को छोड़कर कहीं न जाऊंगा यह बात सुनतेही श्यामसुन्दरने हाथ अक्रूरका बड़े प्रेमसे पकड़कर उनसे कहा हे चाचा आज रातको हम यहां रहेंगे कल्हि राजा कंसको मारकर पीछेसे बलराम समेत तुम्हारे स्थानपर आवेंगे आज सबको यहां छोड़कर जाना उचित नहीं है जब अक्रूरने यह सुना तब उनसे विदा होकर राजा

कंसकी सभा में चलागया कंसने बड़े आदरसे अपने पास सिंहासनपर बैठाकर पूछा जहां गये थे वहां का हाल कहो॥

चौ० सुनि अक्रूर कहै समुझाई। व्रजकी महिमा कही न जाई॥
कहा नन्दकी करौं बड़ाई। बात तुम्हारी शीश चढ़ाई॥
राम कृष्ण दोऊ हैं आये। भेंट सबै व्रजवासी लाये॥

सो आज वे बहुत ग्वालबाल संग रहनेसे नगरके बाहर टिकेहैं कल्हि राजसभामें आवैंगे यह सुनकर राजा कंस बहुत प्रसन्न हुआ और बोला हे अक्रूरजी आज तुमने हमारा बड़ा काम किया जो राम व कृष्णको लेआये अब अपने घरजाकर आराम करो अक्रूर यह आज्ञा पातेही अपने स्थानपर आये व कंस श्याम व बलराम के मारने का उपाय विचारने लगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब नन्दादिक डेरा लेकर सुचित्त हुये तब श्याम व बलरामने पूंछा हे बाबा तुम्हारी आज्ञा हो तो हम मथुरापुरी देख आवें नन्दराय ने कुछ पकवान व मिठाई दोनों भाइयोंको खिलाकर कहा बहुत अच्छा तुम जाकर देख आवो पर विलम्ब मत करना यह वचन सुनतेही उसी रोज चारघड़ी दिन बाकी रहे श्याम व बलराम ग्वालबालोंको साथ लेकर चले मथुरानगरमें किला व स्थान बिल्लौरके बनेहुये बहुत उत्तम दिखलाई दिये व सोनहुले रत्नजटित द्वारों पर मोतियोंकी झालरैं बँधी थीं व झरोखे व खिड़कियोंमें अनेक मणिजटित होकर किलेके चारों ओर ऐसी गहरी खाईं खुदीथी जिसमें बारहों महीने पानी भरा रहता था व किलेकी दीवारपर ताख व झरोखोंमें कबूतर व तूती व कोकिला आदिक अनेक रंगके पक्षी रहकर मीठी मीठी बोलियां बोलते थे व सब गली व सड़क उस नगरकी कूड़ा व धूरआदिकसे सफा होकर गुलाबजल व रगड़ेहुये चन्दनका छिड़काव वहां होरहाथा व दीवारें महलोंकी ऐसी चमकती थीं जिनमें मुख दिखलाई देता था व सब स्थानोंमें छोटे छोटे व नगरके चारों ओर बड़े बड़े बहुत बाग और उनमें उत्तम उत्तम फूल व फल लगे होकर अच्छा अच्छा स्थान वहां बैठने के वास्ते बनाथा और वृक्षोंपर अनेक रंगके पक्षी बोलते थे व अच्छे अच्छे तड़ाग

व बावली व कुण्डोंमें मोतीके समान पानी भरा रहकर कमल फूला था व उन फूलों पर भँवरे गूंजकर तालाब किनारे अनेक रंगके पशु व पक्षी आपसमें कलोल करते थे व फूलोंकी क्यारियां कोसों तक फूलकर मन्द सुगन्ध हवा वहती थी व पानीकी पनवाड़ियां लगीरहकर कुयें व बावलियोंपर रहँट व पुरवट चलताथा व मालीलोग मीठेमीठे स्वरोंसे गायकर पेड़ोंको सींचते थे व नगरकी रक्षावास्ते जो चारों ओर अष्टधातुकी दीवार बनी थी उसमें व सब स्थानोंपर सोनहुले जड़ाऊ कलशे ऐसे बने थे जिनकी चमकसे आंख सामने नहीं ठहरती थी सब मथुरावासियोंके द्वार पर केला व बन्दनवार बाँधकर गावना व बजाना मंगलाचार होरहा था॥

दो० शोभा मथुरा नगरकी कासों वरणी जाय। जहां श्याम त्रिभुवनपती जन्म लियेहैं आय॥

जब श्याम व बलराम ऐसी शोभा देखते हुये मथुरापुरीमें पहुँचे तब उनका दर्शन पाकर मथुरावासी अपने अपने लोचनोंका फल प्राप्त करने लगे॥

चौ० जो जो छवि देखैं मगमाहीं। सो करुणा करिकै पछिताहीं॥
असुर कंस है बड़ो कसाई। अब इनको होइहै दुखदाई॥

दो० बड़ी धूम मथुरानगर आवत नन्दकुमार। सुनि धाये पुर लोग सब गृहके काज बिसार॥

जब मथुराकी स्त्रियों ने श्याम व बलरामके आवनेका हाल सुना तब उनमें बहुतसी वृन्दावनविहारी के देखनेवास्ते घरसे बाहर निकल आईं व अनेक स्त्रियां अपने कोठे व खिड़की व झरोखों पर आन बैठीं॥

दो० माखनप्रभु आवत सुने मनमें भयो हुलास। मारग में ठाढी भईं हरिदर्शन की आस॥

व बहुत स्त्रियां आपसमें गोल बांधकर सड़क व गलियों में एक दूसरी से यह कहती थीं यही श्याम व बलराम हैं जिनको अक्रूर लेने गये थे इस मोहनीमूर्तिको अच्छीतरह देखकर अपनी अपनी आंखें ठण्ढी करो॥

चौ० यहि विधि जहां तहां खड़ि नारी। प्रभुहि बतावैं हाथ पसारी॥
नील बसन गोरे बलरामा। पीताम्बर ओढ़े घनश्यामा॥
सुनतहतीं पुरुषारथ जिनको। देख्यो रूप नयनभरि तिनको॥

यही दोनों बालक कंस के भानजे हैं जिन्होंने केशी आदिक सब दैत्यों को मारकर अनेक लीला गोकुल व वृन्दावन में की थीं पिछले जन्म हम

लोगोंने बड़े शुभकर्म किये थे जिनके प्रतापसे वैकुण्ठनाथ का दर्शन पाया जो जो स्त्री उनका समाचार पाती थी वह सब उलटा पलटा शृंगार करके अपने गोद का बालक रोता छोड़कर इस जल्दी से बाहर चली आती थी कि उसको अपने तन व वस्त्र की सुधि नहीं रहती थी ॥

दो० माखनप्रभुके दरशको यहिविधि दौड़ीं नारि। ज्यों सरिता सागर मिलन चलत वेगसों वारि॥

जब मथुरावासी स्त्रियां मोहनीमूर्तिका रूपरस आंखोंकी राह पीने लगीं तब केशवमूर्ति ने अपनी मृदुमुसकान व तिरछी चितवन से मन उन्होंका हरलिया और वे स्त्रियां श्यामसुन्दर को देखतेही उनपर मोहित होगई ॥

दो० कहत सकल बड़भागिहैं वृन्दावनकी नारि। जो सुख पावति हैं सदा माखनप्रभुहि निहारि॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् इसीतरह सब स्त्री व पुरुष मथुरावासी मोहनप्यारे के दर्शन से प्रसन्न होकर अनेक तरह पर बालचरित्र नन्द-लालजी का आपसमें कहते थे व ब्राह्मणलोग श्याम व बलराम के माथे पर तिलक लगाकर उन्हें आशीर्वाद देते थे जिस गली व सड़क व चौराहे में श्याम व बलराम जाते वहां पर सब स्त्री व पुरुष उनके दर्शन से अपना जन्म स्वार्थ करते थे व मोती व रत्नादिक न्यवछावर करके अक्षत व लावा व फल उनपर बरसाते थे उस नगर की शोभा व बहुत भीड़ देखकर केशवमूर्तिने अपने साथी ग्वालबालोंसे कहा कोई राह मत भूलना कदा-चित् भूल जाना तो जहां डेरा है वहां चले जाना उससमय मोहनप्यारेने राह में क्या देखा कि राजा कंस का धोबी जो कपड़ों को रंगताभी था मदिरा पान किये व कई लादी कपड़ा लिये कंस का यश गाता हुआ उसी ओर चला आता है उसको देखकर श्यामसुन्दरने बलरामजीसे कहा कहो तो इसके कपड़े छीनकर हम व तुम दोनों भाई ग्वालबालों समेत पहिन लेवैं और जो कुछ बचैं उन्हें लुटा देवैं बलरामजी ने कहा जो आपकी इच्छा हो सो कीजिये यह वचन सुनतेही श्रीकृष्णजीने जो सब धोबियों में मालिक था उससे कहा तुम कुछ कपड़े हमें पहिरने वास्ते देव तो राजा कंससे भेंट करके तुम्हें फेर देवैंगे व जो कुछ राजा के यहांसे मुझे मिलेगा उसमें से तुमको भी देवैंगे ॥

दो० हँस्यो वचन सुनि श्याम के कह्यो गर्वकरि बैन। वलि के बकरा ह्वैरहे आयो है पट लैन ॥
सो० राखी धरी बनाय है आवो नृपद्वार से। तब लीजो पट आय जो भावै सो दीजियो ॥

ऐसा कहकर वह धोबी केशवमूर्ति से बोला तुम लोग गँवार मनुष्य वनके रहनेवाले सदा इसीतरह का कपड़ा पहिना करते थे जो मांगने आये हो तुम नहीं जानते कि यह सब कपड़े राजा कंस के हैं ऐसी बात फिर कहोगे तो राजा तुम्हें दंड देगा ॥

चौ० बनवन फिरत चरावत गैया। अहिर जाति कामरी ओढ़ैया ॥
नटको वेष बनाकर आये। नृप अम्बर पहिरन मनभाये ॥
जुरिकै चले नृपति के पासा। पहिरावन लेने की आसा ॥
नेक आश जीवन की जोऊ। खोवन चहत अभी तुम सोऊ ॥

यह सुनकर मोहनप्यारेने कहा हम सीधी तरह वस्त्र मांगते हैं तुम उलटी पलटी बातें क्यों कहते हो मँगनी कपड़ा देनेमें तुम्हारी कुछ हानि न होकर सदा तुम्हारा यश संसार में बना रहैगा यह सुनतेही वह धोबी क्रोध से बोला हे बालक तैंने अभीतक राजा कंसको नहीं देखा पर उसके प्रतापका हाल भी नहीं सुना गँवार लोग राजसी व्यवहार नहीं जानते तेरा मुख यह कपड़े पहिरने योग्यहै ऐसी तृष्णा छोड़कर मेरे सामनेसे चला जा नहीं तो अभी तुझको मारडालता हूं जब श्यामसुन्दरने यह दुर्वचन धोबीका सुना तब क्रोधित होकर दोनों अँगुली अपनी तिरछे हाथ से उसके गले में मारा कि शिर उसका भुट्टा सा कटकर गिरपड़ा यह दशा मालिक धोबी की देखतेही उसके साथी लादी व पेटारी आदिक छोड़कर भागगये व राजा कंस के पास जाकर सब वृत्तान्त कहदिया व मोहनप्यारे ने अपने व बलरामजी व ग्वालबालों के पहिरने वास्ते कपड़े निकालकर बाकी सब लुटादिये ग्वालबाल वस्त्र पहिरना नहीं जानते थे इसलिये दामन में हाथ व अँगरखेमें पांव डालने लगे व केशवमूर्तिने भी उलटा पलटा कपड़ा पहिन लिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित कदाचित् तुझे इस बातका सन्देह हो कि सब वस्तुका ज्ञान श्रीकृष्णजीकी कृपासे उत्पन्न हुआ है वह कपड़ा पहिरने क्यों नहीं जानते थे सो उनके भेद व लीलाका हाल

कोई जानने नहीं सक्ता और वह परब्रह्म परमेश्वर संसारी सुख की कुछ इच्छा नहीं रखते पर उनके भक्त व सेवक प्रीतिसे जो कुछ उन्हें भोग लगाकर भूषण व वस्त्र पहिना देते हैं उसे वह दया की राह अंगीकार करते हैं इसलिये वह अपने को वस्त्र पहिरने से अज्ञान बनाकर चाहते थे कि कोई भक्त मेरा आनकर आपसे मुझे पहिना दे सो उनकी इच्छानुसार उसी जगह बायक नाम दरजी हरिभक्त आन पहुँचा व श्यामसुन्दर से हाथ जोड़कर बोला महाराज प्रकटमें मुझे राजा कंसका सेवक कहते हैं पर मैं अपने मनसे आठोंपहर तुम्हारे चरणोंका ध्यान रखता हूं मुझे आज्ञा दीजिये तो सब किसी को अच्छी तरह वस्त्र पहिना दूं मुरलीमनोहरने उसे अपना दास जानकर कहा बहुत अच्छा यह वचन सुनतेही उस दरजी ने बड़ी प्रीति से छोटे बड़े कपड़ों को काट छांटकर श्याम व बलराम व सब ग्वालबालों को पहिना दिया व हाथ जोड़ के उनके सामने खड़ा हुआ तब मुरलीमनोहर बोले हे बायक हम तुमसे बहुत प्रसन्न हुये तू सदा भक्तिपूर्वक धनीपात्र रहकर मरने उपरान्त मुक्ति पावेगा व तेरे वंशमें सब हरिभक्त उत्पन्न होंगे ऐसा वरदान देकर फिर केशवमूर्तिने उस दरजी से कहा हे बायक जैसी टहल तैंने मेरी की वैसा फल मैंने तुझको नहीं दिया इसलिये तुझसे लज्जित हूं इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा महाराज थोड़ी सेवा करनेके बदले श्यामसुन्दरने उसको ऐसा वरदान दिया फिर लज्जित रहने का कारण क्या था शुकदेवजी बोले हे राजन् वैकुण्ठनाथने समझा कि कपड़े पहिनावती समय इसने सब तरहसे मन अपना बटोरकर मेरे काममें लगाया व विना इच्छा हमारी सेवा की इसलिये मैंने जो इसको दिया सो उस टहल की बराबरी नहीं रखता हे परीक्षित देखो एक बेर कपड़ा पहिनावने के बदले वह दरजी इस पदवी को पहुँचा जो लोग नित्य श्रीकृष्णजी को भूषण व वस्त्र पहिनाकर उनकी पूजा व सेवा करते हैं वह न मालूम कैसा फल पावैंगे जब श्याम व बलराम वहां से आगे चले तब सुदामा नाम माली हरिभक्त आनकर केशवमूर्ति के चरणों पर गिरपड़ा व बड़े प्रेम से श्याम व बलराम को ग्वालबालों समेत अपने घर ले जाकर

उत्तम आसन पर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लिया और विधिपूर्वक पूजा उनकी की व सुगन्धित फूलों का गजरा पहिनाकर इस तरह पर स्तुति उनकी की ॥

चौ० दयासिन्धु तुम दीनदयाला। कृपावन्त सबके प्रतिपाला॥
ऐसे चरण सरोज तुम्हारे। मित्र शत्रु जन सबै उधारे॥
मोपर कृपा करो हरि देवा। आयसु देव करौं कछु सेवा॥

जब वृन्दावनविहारी ने यह स्तुति माली से सुनी तब उसकी सच्ची भक्ति व प्रीति देखकर कहा हे सुदामा हम तेरे ऊपर प्रसन्न हैं जो इच्छा हो सो वरदान मांग यह वचन सुनकर माली ने विनय किया मैं यही चाहताहूं कि तुम्हारे चरणों की भक्ति सदा मेरे हृदय में बनी रहकर मुझे ज्ञानी व ऋषीश्वरों का सत्संग रहै श्यामसुन्दर ने उसे मुखमांगा वरदान देकर कहा तू सदा धनीपात्र व सुख से रहैगा व तेरे वंश में भी सब धनवान् होकर मेरी भक्ति करैंगे यह कहकर श्रीकृष्णजी वहां से उठे॥

दो० या विधि दया जनाइकै माली कियो सनाथ। आनँदसों आगे चले माखनप्रभु व्रजनाथ॥

बयालीसवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका महादेवजी का धनुष तोड़ना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर सुदामा माली को वरदान देकर बाजार में गये तब क्या देखा कि कुब्जा मालिनि कटोरियों में चन्दन रगड़ा हुआ भरकर थाली में रक्खे हुये चलीजाती है श्यामसुन्दर ने उसे देखकर हँसी की राह पूंछा कि तुम किसकी स्त्री बहुत सुन्दरी होकर यह चन्दन कहां ले जाती हो हमें देवगी यह वचन सुनकर कुबड़ी ने विनय किया हे मोहनीमूर्ति मैं कुब्जा नाम कंसकी दासी होकर नित्य चन्दन उसके लगाने वास्ते लेजातीहूं और वह इस सेवा करने से बहुत प्रसन्न होकर मेरा पालन अच्छी तरह करता है पर तुम्हारे चरणों का ध्यान सदा अपने हृदयमें रखकर आपका गुणानुवाद गाया करती थी सो आज तुम्हारा दर्शन पाने से मेरा जन्म सफल होकर लोचनों का फल मिला राजा कंस के चन्दन लगाने से मेरा परलोक नहीं बनता

इसलिये अब मुझे यह इच्छाहै कि तुम्हारी आज्ञा पाऊं तो अपने हाथसे तुम्हारे चन्दन लगाकर कृतार्थ होजाऊं॥

दो० माखनप्रभुसों कूबरी यहिविधि कहत सुनाय। मोहनमूरति श्यामकी मनमें रही लुभाय॥

नन्दकुमारने कुब्जा की भक्ति व प्रीति सच्ची देखकर उससे कहा बहुत अच्छा यह वचन सुनतेही कुबड़ीने बड़े प्रेमसे श्याम व बलराम के मस्तक व अंगपर विधिपूर्वक चन्दन लगाया तब श्यामसुन्दर ने प्रसन्न होकर बलरामजी से कहा कि इस सेवा के बदले कुब्जा का अंग सीधा करदेना चाहिये ऐसा कहकर श्रीकृष्णजी ने अपना पांव कुबड़ी के पैर पर रखकर दो अंगुली अपने हाथकी उसकी ठोढ़ी में लगाके उसे उचका दिया तो कूबड़ उसका छूटकर वह सीधी व अतिसुन्दरी होगई॥

सो० को करिसकै बखान जाहि बनाई आप हरि। भई रूपगुणखान कुब्जा मन आनन्द अति॥

हे परीक्षित जब कुबड़ी ने अपने को महासुन्दरी देखा तब वह अंचल से मुख अपना ढांपकर मुसकराती हुई विनयपूर्वक बोली हे प्रीतम जिस तरह तुमने दयालु होकर मुझे रूप व तरुणाई दी उसीतरह मुझ दासी के घर चलकर मेरी इच्छा पूर्ण कीजिये यह वचन सुनतेही मोहनप्यारेने हाथ उसका पकड़कर प्रेमपूर्वक कहा तू धैर्य रख जिसतरह चन्दन लगाकर तैंने हमारी छाती ठण्ढी की उसी तरह हम भी तेरी इच्छा पूर्ण करेंगे॥

दो० कंसनृपति को देखिकै हम ऐहैं तुवधाम। यह कहकर आगे चले माखनप्रभु घनश्याम॥

कुब्जा ने यह वरदान पावतेही आनन्द से अपने घर जाकर केसरि व चन्दन का चौक पुरवाया व स्थान अपना अच्छी तरह अलंकृत करके मोहनप्यारे के आने की आशा देखने लगी जब मथुरावासी स्त्रियां यह हाल सुनकर उसके घर गईं तब उसका रूप व तरुणाई देखकर बोलीं॥

चौ० धनि धनि कुब्जा तेरो भाग। जाको विधिना दियो सुहाग॥
ऐसो कहा कठिन तप कीन्हों। गोपीनाथ भेंट भुज लीन्हों॥

हे कुब्जा रानी जब श्यामसुन्दर तेरे घर आवैं तब हमको भी उनका दर्शन कराना इसीतरह मथुरावासी स्त्रियां कुब्जाकी बड़ाई करती थीं व श्याम व बलराम ग्वालबालों समेत हँसते हुये चले जाते थे बाजार में जो

मनुष्य जिस वस्तुका रोजगार करताथा वह लोग रत्न व वस्त्र व पान व मिठाई आदिक सोने व चांदीकी थालियों में रखकर उन्हें भेंट देते थे व श्रीकृष्णजी उनका क्षेम कुशल पूंछकर अपनी मीठी मीठी बातोंसे उन्हें प्रसन्नकरतेथे॥

चौ० मारग में जो दर्शन पावैं। रामकृष्णकी कुशल मनावैं॥
काम स्वरूप श्याम तनु सोहैं। मथुरा की कामिनि सब मोहैं॥

व मथुरा की स्त्रियां अपना अपना गहना व कपड़ा श्यामसुन्दर पर न्यवछावर करके कहती थीं इनके वियोग में न मालूम गोपियों की क्या दशा हुई होगी जब इसीतरह घूमते हुये श्याम व बलराम रंगभूमि के पहिले द्वारे पर जहां महादेव का धनुष रक्खा था तहां पहुँचे तब राजा कंसके दश हजार शूरवीरों ने जो धनुष की रखवारी करते थे श्याम-सुन्दर को देखते ही दूर से ललकार कर कहा यहां मति आवो दूर खड़े रहो मोहनप्यारे उनके बर्जने पर भी न मानकर बेधड़क वहां चले गये व धनुष महादेवका जो तीन ताड़ लंबा व मोटा व भारी ऊंचे चबूतरेपर रक्खा था बायें हाथसे उठाकर इसतरह सहजमें दो टुकड़े कर दिये जिसतरह हाथी ऊखको तोड़ डालता है जब धनुष टूटनेका शब्द तीनों लोक में पहुँचकर राजा कंसने भी सुना तब श्रीकृष्णजीको अतिबलवान् समझकर उनके डरसे कांपने लगा और जब वह सब शूरवीर राम व कृष्ण से लड़ने आये तब दोनों भाइयोंने उसी धनुषके टुकड़ों से मारकर उन्हें गिरा दिया उस समय देवतों ने प्रसन्न होकर श्याम व बलराम पर फूल बरसाये जब कोई उनके सामने लड़नेवाला नहीं रहा तब केशवमूर्तिने बलरामजी से कहा हमलोगों को डेरा छोड़े बहुत विलम्ब हुआ नन्द बाबा चिन्ता करते होंगे सो चलना चाहिये ऐसा कहकर श्यामसुन्दर ग्वालबालों समेत अपनेडेरे पर आये व मथुरावासी धनुष तोड़ने व शूरवीरोंके मारेजानेका वृत्तांत सुन कर आपसमें कहने लगे यह दोनों बालक मनुष्य न होकर कोई देवता मालूम होते हैं जो ऐसे ऐसे काम इन्होंने किये देखो होनहार प्रबल होकर राजा कंसने घर बैठे अपनी मृत्यु आप बुलाई है इनके हाथ से वह जीता नहीं बचैगा व नन्दरायने श्याम व बलराम आदिक को अच्छे अच्छे

कपड़े पहिने देखकर जाना कि कन्हैयाने यह सब किसीसे छीन लिये हैं ऐसा समझकर बोले हे बेटा तुम यहां भी उत्पात करते हो यह वृन्दावन हमारा गाँव नहीं है जो ग्वालिनियोंका दही छीन व चुराकर खाजाते थे मथुरापुरी में ऐसी उपाधि करोगे तो अच्छा न होगा यह सुनकर श्याम-सुन्दर बोले हे बाबा हमने नगर में बहुत उत्सव देखा अब भूख लगी है भोजन देव यह वचन सुनतेही नन्दजीने दूध व दही व माखन व पकवान व मिठाई आदिक निकाल दिया ॥

दो० विविध भांति भोजन कियो सब ग्वालनके साथ। रैन गवांई चैनसों माखनप्रभु व्रजनाथ ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब कंसने अपने शूरवीरोंके मारेजानेका हाल सुना तब वह मनमें बहुत उदास होकर कहने लगा मुझे बड़े बलवान् शत्रुसे काम पड़ाहै अब मेरा प्राण नहीं बचैगा इसी शोचमें राजा कंस भीतर भीतर जलकर इसतरह निर्बल होगया जिस तरह काठ घुनोंके खाजानेसे भीतर खुखला होकर ऊपर ज्योंका त्यों बना रहताहै पर मारे लज्जाके अपने मनका हाल किसीसे न कहकर उसी चिंता में पलँगपर जाकर लेट रहा जब करवट लेते लेते पहर रात रहे उसकी आँख लगगई तब उसे स्वप्न में शरीर अपना विना शिर मालूम होकर चन्द्रमा दो टुकड़े दिखलाई दिये व अपनी परछाहीं में छेद मालूम होकर सूर्यका प्रकाश झरोखों में से देख पड़ा व सोने के समान वृक्ष दिखलाई देकर ललित फूलोंका हार अपने गलेमें देखा व अपने को नंगे शरीर रेत में नहाते व तेल अंगपर मले गदहे पर चढ़े श्मशान पर भूत व प्रेत साथ लिये मुर्दोंसे गले मिलते देखकर वृक्षोंमें अग्नि लगीहुई दिखलाई दी यह बुरा स्वप्न देखतेही कंस घबड़ाकर उठ बैठा तो फिर उसे केशवमूर्तिके मारे डरसे नींद नहीं आई तिसपर भी वह प्रातसमय सभा में बैठकर अपने सेवकोंसे बोला कि रंगभूमिमें बिछावन आदिक बिछवाकर सब राजोंको जो धनुषयज्ञ देखने आये हैं बुलाओ और नन्दादिक व्रजवासी व यदु-वंशियोंको बुलाकर यथायोग्य सबको बैठावो व अखाड़ा कुश्ती लड़नेका तैयार करो मैं भी वहां पहुँचताहूं ॥

दो० योधा सभी बुलायकै तिनसों कहेउ सुनाय। अबहीं रचो बनायकै रंगभूमि तुम जाय॥

यह आज्ञा पातेही उन लोगोंने रंगभूमिकी रचना करके सब किसीको बुला भेजा और यथायोग्य स्थानपर उन्हें बैठा दिया व चाणूर व मुष्टिक व शल व तोशल व कूट आदिक पहलवान अपने अपने चेलों समेत अखाड़े में आनकर इकट्ठे हुये व घमण्डसे ढोल बजाकर ताल ठोंकनेलगे व राजा कंस भी अभिमानपूर्वक वहां आनकर बहुत ऊंचे मचानपर जहां जड़ाऊ सिंहासन बिछा था बैठ गया व नन्द व उपनन्द आदिक राजा कंसको भेंट देकर ग्वालबालों समेत एक मचानपर बैठे उससमय कंसने चाणूर व मुष्टिक आदिक पहलवानों को बुलाकर कहा आज तुमलोग श्याम व बलरामको कुश्ती लड़कर मार डालो तो हम तुम्हें बहुतसा द्रव्य देवेंगे पहलवानोंने हाथ जोड़कर विनय किया महाराज हमलोग सामर्थ्य भर धोखा न करेंगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवस्वामी बोले हे राजन् उससमय ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता वैकुण्ठनाथका दर्शन करने व विजय देखनेवास्ते अपने अपने विमानोंपर चढ़कर आकाश में आन पहुँचे व मथुरावासी स्त्री व पुरुष इतने वहां इकट्ठे हुये जिनकी गिनती नहीं होसक्ती॥

दो० माखनप्रभुके दर्शकी सबके मनमें चाय। परफुल्लित ठाढ़े भये रंगभूमि में आय॥

तेंतालीसवां अध्याय।

श्याम व बलरामका कुवलयापीड़ हाथीको मारना॥

शुकदेवजीने कहा जब प्रातसमय राजा कंस रंगभूमि में जाकर बैठा व सबलोग वहां आनकर इकट्ठे हुये तब श्याम व बलरामजी ग्वालबालों समेत रंगभूमिके द्वारे पर जहां कुबलयापीड़ हाथी झूमि रहा था पहुँचे॥

चौ० देखि मतंग द्वार मतवारो। गजपालहि बलराम पुकारो॥
सुनो महावत बात हमारी। लेहु द्वारते गज तुम टारी॥

यह बात हम तुमको पहिले से कहते हैं कि हाथी अपना हटाकर हमें राजा कंसके पास जाने देव नहीं तो अभी हाथी समेत तुझे मार डालेंगे तू श्यामसुन्दरको बालक न जानकर तीनों लोकोंका मालिक समझ दुष्टों

को मारने व पृथ्वीके भार उतारने वास्ते इन्होंने जन्म लिया है यह वचन सुनतेही हाथीवान हँसकर बोला तुम गौ चरानेसे त्रिभुवनपति न होकर शूरवीरोंकी तरह बातें करते हो मैं जानता हूं कि तुमको दैत्योंके मारने व धनुष तोड़ने से अभिमान उत्पन्न हुआ है जबतक इस गज से जो दश हजार हाथीका बल रखताहै न लड़ोगे तबतक राजसभामें न जाने पावोगे तुम ऐसे सुन्दर होकर क्यों अपना प्राण देनेवास्ते यहां आये हो किसी शूरवीरको ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो इस हाथीसे लड़ने सके इन्हीं दिनों के वास्ते कंसने यह हाथी पाल रक्खा था आज इसके हाथसे तुम्हारा प्राण बचना कठिन है यह बात सुनतेही केशवमूर्तिने बालोंका जूड़ा लपेटकर उपरना रेशमी कमर से बांधलिया ॥

दो० तभी कोपि हलधर कह्यो सुनु रे मूढ़ कुजात। गजसमेत पटकौं अभी मुख सँभाल कहु बात ॥

यह सुनतेही जैसे गजपालने हाथीको अंकुश देकर बलरामकी ओर झोंका वैसे कुवलयापीड़ बादलके समान गर्जता हुआ उनपर दौड़ा उस समय बलभद्रने एक मुका ऐसा उस हाथी के मारा कि वह शुण्ड सिकोड़ कर चिल्लाता हुआ पीछेको हट गया ऐसा बल रेवतीरमणका देखतेही बड़े बड़े शूरवीर जो वहां खड़े थे अपने मनमें हार मानकर कहने लगे इन दोनों बालकोंको कौन जीतने सकैगा व गजपालने भी डरके विचार किया जो यह लड़के हाथीसे नहीं मारे जावेंगे तो राजा कंस मुझे जीता न छोड़ैगा ऐसा समझते ही गजपालने हाथी को बड़े जोरसे अंकुश मारकर श्याम व बलरामपर डटाया जब हाथीने झपटकर मोहनप्यारे को शूंड़से लपेटलिया व पृथ्वीपर पटककर दोनों दांतोंसे दबाया उस समय देवता व ग्वालबाल व मथुरावासी यहहालदेखकर परमेश्वरसेश्यामसुन्दरकी कुशल मनावने लगे तब केशवमूर्तिने छोटा रूप बनाकर दोनों दांतोंके बीचमें चलेजाने से अपनेको बचालिया और वहांसे कूदकर सन्मुख खड़े होगये व ताल ठोंककर हाथीको ललकारा यह फुरती श्यामसुन्दर की देखतेही सब छोटे बड़े बेडर होकर हँसने लगे जब हाथी ललकार सुनकर फिर उनकी ओर दौड़ा तब वृन्दावनविहारी पेटके तलेसे निकलकर पीछे

चलेगये व उसकी पूंछ पकड़कर सौ पगतक इसतरह हाथीको पीछे घसीटा जिसतरह गरुड़जी सर्पको घसीट लेजाते हैं जब वह हाथी मुरलीमनोहरकी ओर फिरा तब बलरामजीने उसकी पूंछ पकड़कर खींच लिया फिर दोनों भाई उस हाथीको कभी पूंछ कभी शूंड़ व कभी मुका मारके ऐसे खिलावनेलगे जैसे बिल्ली चूहेको खेल खिलाकर मारती है जब वह हाथी एक भाईपर झपटता तब दूसरा भाई उसे मुका मारकर छिटकजाता था कभी श्याम व बलराम उसके नीचे व कभी पीछे व कभी दोनों दांतोंके बीचमें व कभी सामने जाकर मुका व तमाचा मारके अलग होजाते थे व कभी दोनोदांत उसके पकड़के पीछे हटादेते व कभी पूंछपकड़कर खींच लेजाते थे ॥

दो० यद्यपि धावै कोपिकै मूड़ हिलावत जाय। माखनप्रभु गोपालसों तदपि न कछू बसाय ॥

जब वह हाथी दौड़ता व मुका तमाचा खाते खाते निर्बल होगया तब श्यामसुन्दर ने शूंड़ पकड़कर ऐसा झटकामारा कि हाथी मूर्च्छित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा उस समय श्यामसुन्दरने उसकी छातीपर पांव रखकर दोनों दांत उसके उखाड़ लिये और वही दांत ऐसे हाथीके मस्तकपर मारे कि वह मरगया तब एक दांत आप लेकर दूसरा बलरामजी को देदिया यह हाल देखकर जब हाथीवान व राजा कंसके शूरवीर लड़नेवास्ते सन्मुख आये तब श्याम व बलरामने उन्हीं दांतोंसे उनकोभी मारडाला उस समय देवतोंने आकाशसे दोनों भाइयोंपर फूल बरसाये व मथुरावासियों ने प्रसन्न होकर कहा कंस अधर्मीने विना अपराध इन दोनों बालकों के मारनेवास्ते हाथी खड़ा किया था सो बहुत अच्छा हुआ जो हाथी मारागया ॥

दो० जो भूपति मनसा करी सो कछु ह्वैहै नाहिं। प्रकट कंसके काल हैं आये मथुरा माहिं ॥

उससमयहाथीके लोहूका छींटा श्याम व बलरामके कपड़ोंपर पड़ा हुआ कैसा सुन्दर मालूम होता था जैसे बरसातमें बीरबहूटी पृथ्वीपर शोभा देतीहै व पसीना उनके मुखारविंदपर ऐसा दिखलाई देता था जिस तरह कमलके फूलोंपर ओसकी बूँदें रहती हैं जब श्याम व बलराम हाथीके मारने उपरांत ग्वालबालों समेत हँसते हुये धीरे धीरे बीच रंगभूमि

के जाकर खड़े हुये तब उस सभावालोंने जो लाखों मनुष्य वहांथे मोहन-प्यारेको अपनी अपनी इच्छानुसार देखा॥

चौ० जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी॥

हे परीक्षित श्रीकृष्णजीने गीतामें अर्जुनसे कहा मेरे जिस रूपका ध्यान कोई करे मैं उसी रूपका दर्शन उसको देता हूं सो चाणूर आदिक पहलवानों को श्याम व बलराम महाशूरवीर दिखलाई दिये व मथुराकी स्त्रियोंको कामरूप अतिसुन्दर देख पड़े व ग्वालबाल उनके साथियों ने अपना मित्र व भाई बन्धु जाना व नन्दादिक ग्वालोंने अपना लड़का समझा और जो राजा कंसके मित्र वहांपर थे वे लोग श्याम व बलराम को शत्रुरूप देखकर डरगये व राजा कंस उन्हें अपना काल जानकर भय से कांपने लगा व यदुवंशियोंने उनको अपनी रक्षा करनेवाला समझा व योगी व ज्ञानियोंको पूर्णब्रह्म दिखलाई दिये व दूसरे लोगोंने केशवमूर्तिको देखकर जाना यह वही बालक है जिन्होंने छोटी अवस्था में पूतना राक्षसी को मारकर दो वृक्ष यमलार्जुन जड़से उखाड़डाले व गोवर्द्धन पहाड़ अपनी अँगुली पर उठाकर राजा इन्द्रका अभिमान तोड़ा व अघासुर व धेनुक व प्रलम्ब व केशी आदिक दैत्यों को मार कर कालीनाग को यमुना से निकाल दिया व गोकुल व वृन्दावन में ऐसे ऐसे कठिन काम किये जिसका हाल सुनकर आश्चर्य मालूम होता है आज कुबलयापीड़ हाथीको लड़कोंके खेल के समान मारडाला व बाजे उनको बालक देखकर शोच करके कहते थे कंस बड़ा निर्दयी व बड़ा अधर्मी है जो छोटे छोटे बालक कोमलवदनको बरजोरी पहलवानोंसे कुश्ती लड़ाकर इनका प्राण लिया चाहता है यहांसे उठ चलो यह अधर्म न देखना चाहिये॥

दो० रीति अनीति निहारिकै कहैं परस्पर लोग। अब यह ठौर अधर्मको नहीं बैठने योग॥

जब ऐसा विचारकर बाजे उनमें से उठगये व बाजे अपना अंचल फैला फैलाकर परमेश्वर से यों वरदान मांगने लगे जिसतरह श्यामसुन्दर ने धनुष महादेवका तोड़ कर हाथीको माराहै उसीतरह ये पहलवान भी इनके

हाथसे मारे जावें इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिस समय मोहनप्यारे उस अखाड़े में जाकर खड़े हुये उससमय चाणूर व मुष्टिक आदिक पहलवानोंने अनेक रंगका जांघिया पहिने हुये चारों ओर से आनकर उन्हें घेरलिया व चाणूर पहलवानने निकट जाकर वैकुण्ठनाथ से कहा आज मेरे राजाका चित्त उदास है मन बहलानेवास्ते मुझे तुम्हारे साथ कुश्ती लड़ाकर देखा चाहते हैं इसीवास्ते तुम्हें यहां बुलाया है व नौकरोंको अपने मालिककी आज्ञा माननी चाहिये सो आओ हम व तुम कुश्ती लड़कर राजाको प्रसन्न करें ॥

दो० रीति धर्म अरु नीतिकी सब जानत मनमाहिं । स्वामिकाजते जगतमें औ कछु उत्तमनाहिं ॥

और हमने सुनाहै कि तुम कुश्ती लड़ना अच्छा जानते हो वनमें ग्वालबालों के साथ लड़ा करते थे सो आज मैं तुम्हारे बलकी परीक्षा लिया चाहता हूं किसी बातका डर अपने मनमें मत रक्खो यह सुनकर श्यामसुन्दरने कहा हे चाणूर हम ऐसे प्रतापी राजोंको क्या प्रसन्न करेंगे पर तू अपने स्वामी की आज्ञा पालने चाहता है तो मैं तेरे साथ लड़ूंगा ॥

चौ० यद्यपि तू बलको अधिकारा । मैं अहीर बालक सुकुमारा ॥
तदपि एकबार मैं लरिहौं । युद्ध बिषे तोसों नहिं टरिहौं ॥

तुम्हारे राजाने बड़ी दया करके मुझे बुलायाहै पर न्याय सब किसी को करना चाहिये तुम्हारा राजा अधर्मी व बेदर्द होकर तुम उससे अधिक निर्दयी मालूम होते हो किस वास्ते कि मुझ बालक से तुमको कुश्ती लड़ना जो तरुण व बलवान् हो शोभा नहीं देता बैर व प्रीति व विवाह व कुश्ती बराबरवालेसे करना चाहिये पर राजा कंससे हमारा कुछ वश नहीं चलता इसलिये तुमसे लड़ेंगे पर हमको बचाकर कुश्ती लड़ना जोरसे पटककर मेरा हाथ व पैर मत तोड़ डालना जिसमें हमारा व तुम्हारा दोनों मनुष्य का धर्म बना रहै व राजा कंस भी प्रसन्न होवैं यह बात सुनकर चाणूर बोला देखनेमें तुम बालक दिखलाई देते हो परन्तु तुम्हारी कीर्ति व काम सुनने व कुबलयापीड़ हाथी का मारना देखनेसे आप कोई अव- तार मालूम होते हैं इसलिये मुझे तुम्हारे साथ किसी तरह कुश्ती लड़ना

उचित नहीं है पर क्या करूं अपने स्वामीकी आज्ञा न मानूं तो मेरा धर्म जाता है ॥

चौ० फिर चाणूर कह्यो हरषाई। तुम्हरी गति जानी नहिं जाई ॥
तुम बालक मानुष नहिं दोऊ। कीन्हें कपट रूप सुर कोऊ ॥
खेलत धनुष खण्ड द्वै करे। मार्यो तुरत कुवलया तरे ॥
तुम से लड़े हानि नहिं होय। ये बातैं जानै सब कोय ॥

चवालीसवां अध्याय।

श्याम व बलराम का चाणूर आदिक पहलवान व राजा कंसको मारना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब ऐसी बातैं कहकर मोहनप्यारे चाणूर व बलभद्रजी मुष्टिक पहलवानसे कुश्ती लड़ने लगे तब मथुरावासियोंने बालक व जवान की कुश्ती देखकर आपस में कहा राजा कंसको इस कुश्ती लड़ानेसे मना करैं तो वह अधर्मी हमैं मारडालैगा व इस जगह बैठे रहने में हमारा धर्म नहीं रहता इसलिये यहां से उठजाना उचित है ॥

दो० जो अनीति देखै नहीं ताको पाप न होय। जो जैसी करणी करै वह फल पावत सोय ॥

हे राजन् जो मनुष्य श्यामसुन्दरको बालक जानते थे वह ऐसा विचारकर वहां से बाहर चले गये व जातीसमय कंसको शाप देकर कहने लगे यह अपने अधर्म का दण्ड अवश्य पावैगा व मुरलीमनोहरने लड़ती समय अपनी महिमा से अपना शरीर हीरेके समान ऐसा कड़ा बनालिया जिसे कोई अस्त्र भी काटने न सके जब श्यामसुन्दर ने हाथ से हाथ शिर से शिर छाती से छाती ठोढ़ी से ठोढ़ी पैर से पैर चाणूर से मिलाया तब चाणूर ने अनेक दांव व पेंच लगाकर श्यामसुन्दरको पकड़ने चाहा पर वह उसके हाथ नहीं आये तब चाणूरने उदास होकर कहा देखो हमने बहुत पहलवानोंको एक दांव व पेंचसे मार डाला था न मालूम इस बालक के कितना बल है जिसपर मेरा कुछ वश नहीं चलता और यह लड़का एक अँगुलीभी मुझे मारता है तो मैं घबड़ा जाता हूं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जिस परब्रह्म परमेश्वरको महादेव व ब्रह्मा नहीं पकड़ने सके व जिन्होंने अपने दो पगमें चौदहों लोक नाप

लिये थे उनको चाणूर पहलवान किसतरह पकड़ने सक्ता है चाणूर व मुष्टिक श्याम व बलराम की महिमा नहीं जानते थे पर उन्होंने पिछले जन्म बड़ा तप किया था जिसके प्रतापसे उनका शरीर वैकुण्ठनाथके अंगमें स्पर्श होता था यह बात ब्रह्मादिक देवतों को भी जल्दी नहीं प्राप्त होती जब चाणूर अपने छल व बलसे केशवमूर्तिपर झपटता था तब वह पीछे कूदकर बचाते थे ॥

दो० मोहन मुखपर शरमजल सोहै अतिसुखदाय । ज्यों फूलनके पातपर रहै ओस लपटाय ॥

जब चाणूर ने पीछे हटकर एक मुक्का श्यामसुन्दर की छाती पर बड़े जोरसे मारा और उनके अंगपर फूलसी भी चोट नहीं लगी तब नन्दलाल जी ने दोनों हाथ उसके पकड़कर अपने शिरके चारों ओर घुमाया और ऐसा पृथ्वी पर पटका कि शरीर उसका अखाड़ेकी मिट्टीमें धँसकर प्राण निकल गया व जिस तरह बालक चिउँटीको पकड़कर मार डाले उसीतरह बलरामजी ने भी मुष्टिक पहलवानको कुश्ती लड़कर मारडाला व चैतन्यात्मा दोनों पहलवानोंका वैकुण्ठमें पहुँचा जब उसके मारने उपरांत शल व तोशल व कूट पहलवान खड्ग लेकर श्यामसुन्दरसे लड़नेवास्ते आये तब केशवमूर्ति ने बायें पैरसे लात मारकर शल व तोशलको व बलरामजीने बायें हाथके मुक्का से कूट पहलवानको मारडाला इन पाँचों के मरतेही बाकी पहलवान जो उनके साथी व चेले वहां थे अपना अपना प्राण लेकर भाग गये यह दशा देखतेही मथुरावासी व हरिभक्तलोग प्रसन्न होकर आपसमें कहने लगे बड़ा भाग्य उस पृथ्वीका समझना चाहिये जहां इन लड़कोंका चरण पड़ता है व गोप व ग्वालबालोंकी बराबरी कोई नहीं करने सक्ता जो इनके साथ दिन रात रहकर अपना जन्म स्वार्थ करते हैं और गोपियां धन्य हैं जो आठोंपहर मोहनीमूर्तिका ध्यान अपने हृदय में रखकर इनके साथ प्रीति करती हैं व जो जीव ब्रजगोकुल में जन्म लेकर श्यामसुन्दर का दर्शन करता है उसको देवतों से उत्तम समझना चाहिये ॥

दो० ब्रजवासिनके भाग्यकी महिमा कही न जाय । जिनके चितमें नित बसैं माखन प्रभु यदुराय ॥

राजा कंसने पापी होने परभी हमारे साथ बड़ी भलाई की जिसके बुलाने से हमलोगोंने वैकुण्ठनाथका दर्शन पाया नहीं तो इनका दर्शन मिलना देवतोंको कठिन है हे राजन् उससमय मथुरावासियोंने इसीतरहपर बहुत स्तुति श्याम व बलरामकी की व देवतोंने आकाश से उनपर फूल बरसाये व मथुरापुरी में यह समाचार सुनकर सब छोटे बड़े आनन्द होगये व सिवाय राजा कंस और जितने लोग रंगभूमि में थे सबोंने प्रसन्न होकर रामकृष्ण की जयजयकार की व बजनिये अनेक तरह का बाजा बजाने लगे व श्याम व बलराम बड़े हर्षसे ग्वालबालों को दांव पेंच बतलाने लगे व राजा कंस चाणूर आदिक पहलवानों के मारेजाने से बहुत उदास हो-कर मथुरावासियों को कहने लगा तुमलोग श्रीकृष्णजी की विजय होने से प्रसन्न होकर बाजा बजवाते हो जब उसकी बातका उत्तर किसीने नहीं दिया तब उसने क्रोधसे चिल्लाकर अपने साथी दैत्य व वीरोंको जो मचान पर बैठे थे कहा कि तुमलोग इन लड़कों को बाहर लेजाकर खड्ग से मारडालो व बाजा बन्द करके गोपग्वालों को बांध लेव व वसुदेव देवकी को उग्रसेन समेत मारकर रंगभूमि का फाटक भीतर से बन्द करदेव यह वचन सुनतेही जब उन्होंने नंगी तलवार लिये श्याम व बलरामको जा-कर घेर लिया तब दोनों भाइयों ने एक क्षण में बहुत से दैत्य व वीरों को लड़कर मारडाला व बाकी दैत्य इसतरह मुरलीमनोहरके प्रकाशसे अपना प्राण लेकर भाग गये जिसतरह प्रातसमय सूर्य के निकलने से तारे छिपजाते हैं व जब वसुदेव व देवकी ने श्याम व बलराम के कुश्ती लड़ने वास्ते आने का हाल सुना तब वह दोनों व्याकुल होकर परमेश्वर से उनकी कुशल मनाने लगे ॥

दो० बारबार करुणा करैं धरैं धरणि पर शीश। मम पुत्रन के हूजियो रक्षपाल जगदीश॥

जब मोहनप्यारे अन्तर्यामी ने माता पिता को दुःखी जानकर कंसका यह वचन सुना तब ऐसा प्रण किया कि आज कंसको मारकर वसुदेव व देवकी को छुड़ाना चाहिये ऐसा विचारतेही श्यामसुन्दर ने अपना छोटा रूप बनालिया व इसतरह कूदकर मचान पर जहां राजा कंस खड्ग लिये

बड़े अभिमानसे बैठाथा चढ़गये जिसतरह बाज कबूतरपर झपटताहै उन्हें देखते ही पहिले कंस ने विचारा कि भाग जाऊं फिर मनमें धैर्य धरकर जब उन पर खड्ग चलाने लगा तब नन्दलालजी उसका वार बचाकर उसे खेल खिलाने लगे उससमय देवतों ने विमानों पर चढ़ेहुये आकाश में से विनय किया हे परब्रह्म परमेश्वर कंस महापापीको तुरन्त मारडालो क्यों इसके मारनेमें विलम्ब करतेहो यह बात सुनतेही श्यामसुन्दरने ऐसा प्रकाश अपने शरीर में प्रकट किया जिसकी चमक देखना न सहकर कंस ने अपनी आंखें बन्द करलीं तब मोहनप्यारेने पैरके ठोकरसे मुकुट उसका गिरा दिया व शिरका बाल पकड़ के मचान से पृथ्वी पर पटक कर तीनों लोकों का बोझा अपने शरीर में लियेहुये उसके ऊपर कूदपड़े ॥

दो० जब धरणी में आयकै पर्यो उतानो भूप । उरऊपर दर्शन दियो श्याम चतुर्भुज रूप ॥

हे राजन् वैकुण्ठनाथ के कूदतेही कंस का प्राण निकल गया पर आठों प्रहर सोते व जागते व बैठते व उठते व खाते व पीते व चलते व फिरते श्यामसुन्दर का रूप उसकी आंखों में बसा रहता था इसलिये मुक्तिपदवी पर पहुँचा ॥

दो० माखनप्रभुके रूपकी महिमा अगम अपार । जाके सुमिरण ध्यानते तरत सकल संसार ॥

देखो क्या बड़ा भाग्य उन मनुष्यों का है जो लोग नित्य परमेश्वर का स्मरण व ध्यान करते हैं जब कंस को मरा देखकर आठ भाई उसके अपना अपना हथियार लिये हुये गोपीनाथ को मारने वास्ते दौड़े व बलरामजी ने हल व मूशल ले उन सबको मारडाला तब सब किसी ने बड़े शब्द से श्याम व बलराम का जयजयकार किया यह समाचार सुन-कर सब छोटे बड़े मथुरावासी प्रसन्न होगये व देवतों ने दुन्दुभी बजाकर नन्दनबाग के पुष्प दोनों भाइयों पर बरसाये व नेवतेवाले हरिभक्त राजा कल्याणरूप को दण्डवत् करके अपने अपने स्थानपर गये व नन्द व उपनन्द आदिक यह सब चरित्र स्वप्नवत् समझ कर अपने डेरे पर चले आये व केशवमूर्ति मारे क्रोधके अपने हाथ कंसके शिरका बाल पकड़कर इसतरह उसकी लोथ सड़क में घसीटते हुये यमुना किनारे लेगये जिस

तरह हाथी को मार सिंह घसीट लेजाता है कंसने वसुदेव व देवकी को कैद रखकर बहुत दुःख दिया था इसीवास्ते मोहनप्यारे ने उसकी लोथ घसीटा व लोथ खींच लेजाने से वहां कंसखारनाला प्रकट होकर अबतक मथुरा में बाजीसमय कंसकी खाल दिखलाई पड़ती है व दूसरा कारण घसीटने लोथ का यह समझो जिसमें मथुरा की रज लगने से शरीर उस अधर्मी का पवित्र होजावै यमुना किनारे लोथ पहुँचाकर थोड़ी देर मुरलीमनोहर उस जगह बैठे थे इसलिये वहांका नाम विश्रामघाट प्रसिद्ध हुआ जब यह समाचार रनिवासोंमें पहुँचा तब कंसकी रानियां व भौजाइयां व नातेदार स्त्रियां रोती पीटती हुई यमुना किनारे पहुँचीं ॥

दो० सब धाईं सुधि पायके आईं जहां नरेश। तोड़े हार शृंगार सब छोड़े शिरके केश ॥

हे राजन् उन स्त्रियों ने अपने अपने पतियों का मुख देखते ही उनका शिर गोद में रख लिया व अतिविलाप से रोकर यों कहने लगीं हे कंस तू ऐसा प्रतापी राजा होने पर भी इस दुर्दशा से मारा हुआ पृथ्वी पर पड़ा है जो तू श्यामसुन्दर व बड़ों से विना अपराध वैर न करता तो किस वास्ते तेरी यह गति होती हरिभक्त व महात्मों को दुःख देना अच्छा नहीं होता यह सब हाथी व घोड़े व द्रव्य अपना छोड़कर तू चला जाता है व हमारी दशा व रोनेपर कुछ ध्यान नहीं करता तेरे वियोग से हम लोगों की क्या गति होगी संसार में अपने बराबर तू किसी को नहीं समझता था अब वह सब घमण्ड तेरा क्या हुआ जो इस तरह पर पृथ्वी पर विना कफन के पड़ाहै तेरे सोने व बैठने वास्ते शीशमहल व रंगमहल की अटारियां जो बनी हैं उनमें अब कौन बैठे व सोवैगा व तेरे जड़ाऊ सिंहासन पर कौन बैठकर मथुरावासियों का न्याय करैगा ॥

दो० यह मन्दिर सुन्दर महा जिनके सम नहिं और। तुम विन ऐसो कौनहै जो बैठे यहि ठौर ॥

जब इसी तरह अनेक बातें कहकर सब रानियां व स्त्रियां महाविलाप करने लगीं तब श्यामसुन्दर करुणानिधान उन पर दयालु होकर बोले हे मामीजी जो कुछ भाग्य में लिखा होताहै वह किसी तरह नहीं मिटता जैसे पाप कंस ने किये वह सब तुमने देखे हैं परमेश्वरकी इच्छा इसीतरह

पर जानकर धैर्य धरो मैं तुम्हारी आज्ञा अच्छी तरह पालन करूंगा अब इन लोगों की क्रिया व कर्म करना उचित है ॥

चौ० मामी सुनो शोक नहिं कीजै । मामाजी को पानी दीजै ॥
सदा न कोऊ जीता रहै । झूठा वह जो अपना कहै ॥

श्यामसुन्दरके समझाने से सब स्त्रियोंने अपने अपने पुरुषों की लोथ जलाकर क्रिया व कर्म उनका किया व श्यामसुन्दरने कंसका क्रिया व कर्म उग्रसेनके हाथसे कराया ॥

दो० कंसहतन लीला सुनै मन चित दे जो कोय । माखनप्रभु के नेह में ताको भय नहिं होय ॥

पैंतालीसवां अध्याय ।

श्यामसुन्दरका उग्रसेनको राजगद्दीपर बैठालना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब कंस आदिक की लोथ जलाकर सब अपने अपने घर गये तब श्यामसुन्दर व बलरामजी अक्रूरको साथ लेकर कैदखाने में वसुदेव देवकीके पास आये जब माता व पिताकी बेड़ी व हथकड़ी कटवाकर दोनों भाइयों ने शिर अपना उनके चरणों पर रख दिया तब देवकी रोकर बोली अय प्राणप्यारे तुम बारह वर्ष तक कहां रहे मैंने आजतक कभी तुमको गोदमें नहीं खिलाया ॥

दो० सुनि जननीके वचन प्रभु कृपासिंधु यदुराय । भये प्रेमवश दुखित लखि बोले अतिसकुचाय ॥

हे माता व पिता मैं कैसा अभागी तुम्हारे यहां उत्पन्न हुआ जो मेरे कारण तुम लोगोंने इतना दुःख उठाया इसमें हमारा कुछ अपराध नहीं है किसवास्ते कि जबसे आप हमको गोकुलमें नन्दजीके घर पहुँचाय आये तब से मैं परवश था इसलिये तुम्हारे पास नहीं आनेसका और मुझे सदा यह इच्छा बनी रहती थी कि जिसके पेटमें दश महीने रहकर हमने जन्म लिया उसने बालचरित्र हमारा नहीं देखा और हमने लड़कपन में माता व पिता का कुछ सुख नहीं पाया दूसरेके घर रहकर वृथा इतने दिन गँवाये जिन्होंने हमारे वास्ते इतना दुःख उठाया उनकी कुछ सेवा हमसे नहीं बनपड़ी हमें तुम्हारी सेवा करना व बाललीला का सुख दिखलाना उचित था सो यह सब सुख नन्द व यशोदाको प्राप्त हुआ ॥

दो० सबै जीव सन्तानसे सुख पावत दिन रैन। तुम्है हमारे जन्मसे बहुतै भये कुचैन॥

हे माता जिस पुत्रसे उनके मा व बाप दुःख पाते हैं वह बेटा अवश्य नरक भोगता है संसार में उन्हीं को सामर्थी पुरुष समझना चाहिये जो अपने माता व पिता की टहल मनसा वाचा कर्मणासे करते हैं मनुष्यतनु में जो कोई अपने मा व बाप व गुरु व बड़े वृद्धोंकी सेवा व स्त्री बालकों का पालन नहीं करता उसके लोक व परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं॥

दो० तात मातसों प्राणधन कपट करै जो कोय। ताको तीनोंलोकमें कभी भलो नहिं होय॥

हे पिता मैं ब्रह्माकी आयुर्दा पाकर जन्म भर तुम्हारी सेवा करूं तौ भी आपसे उऋण नहीं होसक्ता इसलिये तुम्हारा ऋणियां होकर यह विनय करता हूं कि मेरा अपराध क्षमा कीजिये और सब दुःख व सुख अपने कर्मानुसार समझिये हे माता अब तुम शोच छोड़कर आनन्द मनावो मैं तुम्हारी आज्ञानुसार स्वर्ग व पाताल जानेसे नहीं डरूंगा व अष्टसिद्धि नवनिधि तुम्हारी दासी बनी रहैंगी॥

दो० यद्यपि हम अवगुणभरे प्रकटे महाअसाध। तदपि सुतहित जानिकै क्षमा करो अपराध॥

जब यह बात सुनकर वसुदेव व देवकीको ज्ञान प्राप्त हुआ तब उन्होंने समझा कि यह हमारे पुत्र न होकर त्रिभुवनपति हैं उन्होंने अपनी इच्छा से पृथ्वीका भार उतारने वास्ते अवतार लेकर जो जो काम किया है वह मनुष्य नहीं करने सक्ता ऐसा समझकर वह दोनों मोहनप्यारेकी स्तुति करनेलगे पर श्रीकृष्णजी और बहुतसी लीला संसार में करनी चाहते थे इसलिये उन्होंने वह ब्रह्मज्ञान उनका हरलिया तब वसुदेव व देवकी उन्हें अपना बेटा जानकर गोद में बैठाकर प्यार करने लगे व उनका माथा व मुख चूमनेसे प्रसन्न होकर पिछला दुःख भूल गये व श्याम व बलराम को साथ लेकर बड़े हर्ष से अपने घरपर आये॥

चौ० परम हुलास नयन उर पेखैं। अपनो जन्म सुफल करि लेखैं॥
अति आनन्द भयो मन माहीं। सो लिखि सकत शारदा नाहीं॥

हे राजन् वसुदेवजी ने घर पहुँचकर उसीसमय दशहजार गौ विधि-पूर्वक जो श्यामसुन्दरकी जन्मतीसमय मनमें संकल्प किया था ब्राह्मणों

को दान दिया व दोनों भाइयों को ग्वालबालों समेत छत्तीस व्यंजन भोजन कराके उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाया तब मुरलीमनोहर ने बलरामजी से कहा विना राजाके प्रजाको दुःख होगा व वसुदेवको राजगद्दी पर बैठालने से संसारी लोग ऐसा कहैंगे कि राज्य लेने के लालच से कंसको मारडाला इसलिये उग्रसेन को जिनका राज्य कंसने छीन लिया था राज्य देना चाहिये ऐसा विचार कर श्यामसुन्दर व बलराम व वसुदेवजी समेत उग्रसेन के पास चले गये व उन्हें दण्डवत् करने उपरान्त बहुतसा धैर्य देकर बोले अय नानाजी आप राजसिंहासन पर बैठकर प्रजाको पालन कीजिये व हमें अपना दास जानकर किसी बातका सन्देह मनमें न लाइये सब पृथ्वी के राजा अपने अपने देश का रुपया देकर तुम्हारे अधीन रहैंगे॥

चौ० जो जन तुम्हरी आन न मानैं। क्षणमें तिन्हैं बांधि हम आनैं॥
निर्भय राज्य करो जगमाहीं। अब तुमको संशय कछु नाहीं॥

यह वचन सुनतेही उग्रसेन हाथ जोड़कर विनयपूर्वक बोले महाराज आपने बहुत अच्छा किया जो राजा कंस व उसके भाइयों को कि वह सब पापी व अधर्मी थे मारकर यदुवंशियों का दुःख छुड़ाया जिसतरह तुमने दैत्य व राक्षस व अधर्मियों को मारकर हरिभक्तों को सुख दिया उसीतरह राजसिंहासन पर बैठकर प्रजाका पालन कीजिये यह बात सुनकर मोहनप्यारे बोले आपने सुना होगा कि राजा ययाति के शाप देने से यदु आदिक उनके बेटोंने राजगद्दी नहीं पाई थी व हम भी उसी कुल में उत्पन्न हुये हैं इसलिये मुझे राजसिंहासन पर बैठना न चाहिये॥

सो० करौ बैठि तुम राज दूरि करौ संदेह सब। हम करिहैं सब काज जो आयसु दीजै हमैं॥

हे नानाजी आप सिंहासन पर बैठकर गौ ब्राह्मण व हरिभक्तों को सुख दीजिये व जो यदुवंशी कंसके डरसे मथुरापुरी अपनी जन्मभूमि छोड़कर दूसरे देश में जावसे हैं उनको बुलाकर यहां बसाइये व प्रजा से अधिक करलेने का लोभ न रखकर किसीको विना अपराध दण्ड न दीजिये जब उग्रसेन ने कहना श्यामसुन्दर का अपना भाग्य उदय समझकर मान

लिया तब श्रीकृष्णजी भक्तहितकारी ने उग्रसेनको राजसिंहासनपर बैठाकर विधिपूर्वक तिलक राजगद्दी का लगादिया व श्याम व बलरामने अपने हाथ से उनका चँवर हिलाया व सब छोटे व बड़ों ने मंगलाचार मनाया व मथुरावासी आनंदित होकर श्यामसुन्दर की स्तुति करने लगे व देवतोंने आकाश से उनपर फूल बरसाये व राजा उग्रसेन के कहला भेजने से सब यदुवंशी जो भाग गये थे फिर मथुरा में आन बसे जब मोहनप्यारे ने उन्हें बहुत दुःखी व कंगाल देखा तब द्रव्य व वस्त्र व भूषण व गांव व स्थान आदिक जिसको जिस वस्तु की चाहना थी उसे वही पदार्थ देकर ऐसा प्रसन्न करदिया कि उनको फिर कुछ इच्छा नहीं रही व वसुदेव व देवकी परम आनन्द हुये व जो यदुवंशी बूढ़े व निर्बल थे वह लोग श्यामसुन्दर की अमृतरूपी दृष्टि पड़ने से तरुण व बलवान् होगये ॥

दो० उग्रसेन के राज्य में सुखको सदा समाज। सभी काम कीन्हे जहां माखन प्रभु व्रजराज ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेव स्वामी बोले हे परीक्षित श्यामसुन्दर ने इसी तरह सब किसी को सुख देकर बलरामजी से कहा यशोदा ने हम दोनों भाइयों को बड़ी प्रीति से पालन करके इतना बड़ा किया सो वह हमारे वास्ते बहुत शोच करती होंगी व नन्दराय व्रजवासियों समेत मेरे चलने की आशासे जो बागमें टिके हैं चलकर उनको बिदा करनाचाहिये॥

चौ० बहुत हेत हमसों उन कीन्हों। विविध भांति हमको सुख दीन्हों ॥
सकुचत हौं अपने मनमाहीं। उनसे उऋण कबहुँ हम नाहीं ॥
पलटो नहीं उन्हैं जो दीजै। अब चलि विदा उन्हैं व्रज कीजै ॥

ऐसा कहकर मोहनप्यारेने बहुत सा द्रव्य व रत्न व भूषण व वस्त्र अपने साथ लिवा लिया व राजा उग्रसेन व वसुदेवजी को संग लेकर जहां पर नंदादिक टिके थे वहांको चले जिस समय नन्दजी अपने डेरे पर बैठे हुये यह विचार कर रहे थे कि कई दिन वृन्दावन से आये हो चुके श्याम व बलराम आवैं तो चलैं ॥

सो० अब कैसे व्रजजाहिं बलमोहनदोऊ बिना। अतिव्याकुल उरमाहिं कबलौं नयनन देखिये ॥

उसी समय मोहनप्यारे ने वहां पहुँचकर नन्दजी के चरणों पर शिर

अपना धरदिया तब नन्द ने शिर उनका उठाकर छाती में लगा लिया व वसुदेव व राजा उग्रसेन प्रेमपूर्वक नन्दराय के गले मिलकर जब सब कोई वहां बैठे व नन्दराय मनमें समझे कि अब श्यामसुन्दर हमारे साथ वृन्दावनको चलेंगे तब केशवमूर्ति ने सब वस्तु जो वहां लेगये थे नन्दराय के सामने रखकर विनय किया अय बाबा मैं तुमसे किसी तरह उऋण नहीं होसक्ता आपने मेरा बड़ा प्रतिपालन किया है॥

दो० चौंकिउठे नँदरायसुनि तू क्या कहत गुपाल। मोसों कहत कि आनसों किन कीन्हों प्रतिपाल॥

यई वचन सुनतेही केशवमूर्ति ने कहा अय बाबा हमको कहते हुये संकोच मालूम देता है आपने गर्ग पुरोहित का कहना सच न मानकर मुझे अपने बेटे समान पालन करके बड़ा सुख दिया मैं कहीं रहूं पर तुम्हारा कहलाऊंगा व हमारे पिता ने रोहिणी मेरी माता को बड़ी विपत्ति में तुम्हारे घर पहुँचा दिया था सो तुमने सन्मानपूर्वक उसको अपने यहां रक्खा व मैंने गोरस आदिक ब्रजवासियों का खाकर अनेक उपद्रव किया सो सब आपने दया की राह क्षमा करादिया व राजा कंस मेरे शत्रु से तुम लोगोंने नहीं डरकर मेरा पालन किया व यशोदा ने मुझे पुत्र जानकर पाला सो अब तुम्हें व यशोदा को अपने माता व पिता से अधिक जानकर तुम से उऋण नहीं होसक्ते पर एक बात कहताहूं तुम कुछ खेद मत मानना अब हम थोड़े दिन मथुरा में यदुवंशी आदिक जाति भाइयों के साथ रहकर अपने माता व पिताको सुख देवेंगे आज तक उन्होंने हमारे वास्ते बड़ा दुःख पाया है जो वह हमको तुम्हारे यहां न पहुँचाते तो क्यों इतना दुःख उठाते सो तुम घर पर जाकर यशोदा माता व सब वृन्दावनवासियों को जो मेरे वास्ते शोच करते होंगे धैर्य देव व यशोमति मैया से कहि देना जिस तरह मेरे वास्ते माखन रख छोड़ा करती थीं उसी तरह अब भी धर रक्खा करैं प्रकट में हम तुम से बिलग होते हैं पर अन्तःकरण से सदा तुम्हारे पास रहैंगे सो मेरे ऊपर दया रखकर कभी मुझे मति भूलना॥

चौ० मैया से पालागन कहियो। हम से प्रेम करे तुम रहियो॥
होंगी दुखित यशोमति मैया। मोहिं बिनु ब्रजतिरिया सब गैया॥

तातें वेगि गमन ब्रज कीजै। जाय सबनको धीरज दीजै॥
मोरी सुरति न उरते टारो। मैं तुमसे कबहूं नहिं न्यारो॥

दो० निठुरवचन सुनि श्यामके भये विकल अतिनन्द। उमँगि नीर नयननचले पड़गयेदुखकेफन्द॥

यह बात श्यामसुन्दर के मुख से निकलतेही नन्दराय इतना विलाप करके रोये कि उनको हिचकी लगगई व अचेत होकर गिरपड़े व ग्वाल-बाल उदास होकर आपस में कहने लगे हमारे निकट नन्दकिशोर हम लोगों से कपट करके यहां रहिजाया चाहते हैं नहीं तो ऐसा कठोर वचन न कहते ऐसा विचार कर श्रीदामा ग्वाल ने कहा हे मोहनप्यारे अब मथुरा में तुम्हारा क्या काम है जो ऐसे निर्दयी होकर अपने बूढ़े बाप रोते हुये को विदा करके यहां रहना चाहते हो राजा कंस को तुमने मारा तो अच्छा किया अब वृन्दावन में चल कर वहां का राज्य करो मथुरा की राज-धानी देखकर लोभ करना न चाहिये हाथी व घोड़ा व द्रव्य व राज्य देखकर मूर्खलोग लोभ करते हैं तुमको वृन्दावन ऐसा सुख जहां सदा वसन्त ऋतु बनी रहती है कहीं नहीं मिलेगा हे भाई तुम वृन्दावन छोड़-कर दूसरी जगह मति रहो कदाचित् निर्दयी होकर यहां रहिजावोगे तो राधा आदिक सोलह हजार गोपियां जो दिन रात तुम्हारा चन्द्रमुख देखकर अपनी आंखें ठण्ढी करती थीं व पांच हजार ग्वालबाल जो तुम्हारे साथ गौ चराते समय मुरली की ध्वनि सुनकर अपना जन्म सफल जानते थे वह सब तुम्हारे विना कैसे जीवेंगे हे नन्दकिशोर तुम मेरा कहना न मानकर हम लोगों की प्रीति छोड़ दोगे तो यहां रहने में तुमको क्या यश मिलैगा जिस उग्रसेन को तुमने राज्य दिया है रात दिन उसकी सेवकाई करनी पड़ेगी यह अपमान तुम से किस तरह सहा जायगा इस लिये वृन्दावन को चलो॥

चौ० ब्रज वन नदी विहार विचारो। गायनको मनते न विसारो॥
नहिं छोड़ैं तुमको ब्रजनाथा। चलिहैं सभी तुम्हारे साथा॥

इसीतरह ग्वालबालोंने अनेक बातें श्यामसुन्दरसे कहीं पर उन्होंने नहीं माना तब कुछ ग्वालबाल श्याम व बलराम के साथ मथुरामें रहने

वास्ते तय्यार होकर नन्दरायसे बोले आप निश्चिन्त होकर घरपर च-लिये हमलोग पीछेसे इनको अपने साथ लेकर वृन्दावनमें पहुँचते हैं यह वचन सुनतेही नन्दजी विरहसागरमें डूबकर चित्रसे चुपचाप खड़े होकर मोहनप्यारेका मुख देखने लगे व मारे शोचके ऐसा घवड़ा गये जिसतरह सांप काटने से मनुष्य व्याकुल होजाता है॥

दो० विरहव्यथा कष्टित महा जानतहैं सब कोय। जासों बिछुरत प्राणपति ताकी गति कह होय॥

यह दशा उनकी देखकर बलरामजी ने नन्दरायसे कहा आप इतना शोच क्यों करते हैं थोड़े दिनमें हमलोग यहां का काम करके तुमसे आन मिलैंगे॥

चौ० हरि प्रकटे भूभार उतारण। कह्यो गर्ग तुमसों सब कारण॥
मातु पिता हमरे नहिं कोऊ। तुम्हरे पुत्र कहावैं दोऊ॥

हे बाबा वृन्दावनका ऐसा सुख दूसरी जगह मिलना कठिनहै इसलिये तुम्हारा घर छोड़कर कहीं न जाऊंगा हमारी माता अकेली वहां व्याकुल होती होगी इसवास्ते आपको यहांसे बिदा करते हैं जिसमें तुम्हारे जानेसे उनको धैर्य हो यह वचन सुनतेही नंदजी महाव्याकुल होकर श्यामसुन्दर के चरणोंपर गिरपड़े और रोकर बोले अय बेटा एकवार तुम दोनों भाई मेरे साथ चलकर अपनी माता आदिक सब किसीको धैर्य देकर फिर चले आवना मैं तुम्हारा चरण छोड़कर वृन्दावन नहीं जाने सक्ता तुम्हारी माता माखन रोटी तय्यार करके बैठीहुई राह देखती होगी मैं उससे जाकर क्या कहूंगा तुम जल्दी घर पर चलो॥

चौ० क्यों जीवैं बिनु दर्शन पाये। भये निठुर मथुरा क्यों आये॥

अय बेटा हमने बारहवर्षतक पालनकर तुमको सयानाकिया पर तुम्हारे प्रताप व महिमाको नहीं जाना अब वसुदेवजी के बेटा होकर तुमने गर्ग जीका वचन सच्चा किया जब जब हमपर दुःख पड़ताथा तब तब तुम हमारी रक्षा करते थे कदाचित् तुमको अपने वियोगमें हमलोगोंको मारना था तो उसी दिन गोवर्धन हमारे ऊपर क्यों नहीं गिरा दिया जिसके तले हम सब कोई दबकर मरजाते तो आज यह दशा हमको क्यों देखनी पड़ती॥

दो० देखि प्रीति अतिनन्दकी मन वसुदेव सिहात। सकुचि रहे सब प्रेमवश कहि न सकत कछुबात॥

जब इसीतरह नन्दादिक रोने व विलाप करने लगे व मोहनप्यारे ने उनकी दशा देखकर विचारा कि यह लोग हमारे वियोगमें जीते न बचेंगे तब अपनी मायाको जिससे सब संसारको भुलारक्खाहै उनपर फैला दी व हँसकर कहा अय बाबा तुम किसवास्ते उदास होते हो मैं तुमसे कहीं दूर न जाकर तीन कोसपर यहां रहूंगा यशोदा मेरी माता व सब स्त्री व पुरुष वृन्दावनवासी हमारे वास्ते शोच करते होंगे इसलिये उनको धैर्य देनेवास्ते तुमको बिदा करताहूं जब परमेश्वरकी माया व्यापनेसे नन्दराय को कुछ धैर्य हुआ तब वह हाथ जोड़कर बोले हे जगन्नाथ तुम मथुरामें रहना चाहते हो तो मेरा क्या वश है हम तुम्हारी आज्ञासे वृन्दावनको जाते हैं पर व्रजवासियों को मत भूलना॥

दो० मेटि दियो सन्ताप सब कियो सुकृतकी खान। भरसाखी चौदह भुवन सुर मुनि वेद पुरान॥

यह वचन सुनतेही वसुदेवजी बहुत द्रव्य व रत्नादिक नन्दरायको देकर विनयपूर्वक बोले हे नन्दजी जो उपकार तुमने मुझपर किया है उससे मैं उऋण नहीं होसक्ता इन दोनों बालकोंको अपना जानकर यहां वहां रहनेमें कुछ भेद मत समझना हे राजन् यह बात सुनकर नन्दराय ने श्यामसुन्दरको दण्डवत् की व पांच सात ग्वालबालोंको वहां छोड़ दिया और सबको साथ लेकर रोते पीटते वृन्दावनको चले पर सब कोई मथुराकी ओर पीछेसे देखते जाते थे॥

चौ० चले सकल मग शोचत भारी। हारे सरबस मनहुँ जुआरी॥
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं। लटपट चरण परत मगमाहीं॥

जब श्यामसुन्दर नन्दजी आदिक को बिदा करके राजा उग्रसेन व वसुदेव समेत राजमंदिर पर पहुँचे तब यदुवंशीलोग व्रजवासियोंकी प्रीति देखकर आपसमें उनकी बड़ाई करने लगे व रास्ते में नन्दजी मोहनप्यारे की महिमा याद करके व्रजवासियोंसे कहते जाते थे देखो हमने बड़ा अपराध किया जो परब्रह्म परमेश्वरसे अपनी गौवें चरवाईं व थोड़ा सा दही व मक्खन गिराने व खिलानेके कारण यशोदाने उनको ऊखल से

बांध दिया तिसपरभी उन्होंने अपनी बड़ाई नहीं छोड़ी गोवर्धन पहाड़ उठाकर ब्रजवासियोंकी रक्षा की व मेरे लेनेवास्ते वरुणलोक में दौड़ेगये व हमलोगोंने अपने अज्ञानसे उन्हें नहीं पहिंचाना जब नन्दराय ऐसी ऐसी बातें अपने साथियोंसे कहते व पछिताते हुये वृन्दावनके निकट पहुँचे तब मोहनप्यारे के विरहमें अचेत होकर गिरपड़े जब यशोदाने जो आठोंपहर मथुराकी राह निहारा करती थी देखा कि गोप व ग्वाल वृन्दावनकी ओर चलेआते हैं तब वह बड़े हर्षसे इसतरह दौड़कर श्याम व बलरामको देखने चली जिसतरह बछड़ेको देखकर गौ दौड़ती है ॥

दो० धाई अति हर्षित भई सुनत रोहिणी माय। दर्शआश धाईं सबै ब्रजतिरिया हुलसाय ॥

जब उन्होंने नन्दरायके पास पहुँचकर श्याम व बलरामको नहीं देखा तब यशोदाने घबड़ाकर नन्दजीसे पूछा अय कन्त तुम मेरे राम व कृष्णको कहां खोकर उनके बदले यह गहना व कपड़ा लेआये जिसतरह अन्धा मनुष्य पारस पत्थर पड़ा पाकर उसे नहीं पहिंचानता और जब उसे फेंक कर पीछे से गुण उसका सुनता है तब सिवाय रोने व पछितानेके कुछ हाथ नहीं आता उसीतरह तुम मेरे अनमोल लाल को अपने हाथसे खोकर यह सब कांच उठा लाये हो उनके बिना यह सब द्रव्य व रत्न लेकर क्या करोगे हे मूर्ख जिनके क्षणभर अलग होनेसे छाती फटती थी अब उनके बिना हमारा दिन कैसे कटैगा मेरे बर्जनेपर भी तुम उन्हें बरजोरी लिवा लेगये अब उनके बिना हमलोग अन्धे होकर किसतरह जीवैंगे यह वचन यशोदा का सुनतेही नन्दजी आंख नीचे किये हुये रोकर बोले हे प्रिया सत्य है यह सब भूषण व वस्त्रादिक श्रीकृष्णने मुझे दिये पर यह सुधि नहीं रखता कि किसने लिये श्यामसुन्दर की बातें तुझसे क्या कहूं उनकी कठोरताई सुनकर तुझे बड़ा दुःख होगा जब वे कंसको मारकर मेरे पास आये तब अपने को वसुदेवजीका बेटा बतलाकर प्रीतिहरण बातें कहने लगे उनका वचन सुनतेही जब मैं अचम्भा मानकर रोनेलगा तब मुझे बहुत धैर्य देकर बिदा करदिया हे प्रिया हमने तो तभी गर्गमुनिके कहनेसे उनको नारायण जानाथा पर मायावश होकर उनको पुत्र समझते थे सो अब पुत्रभाव छोड़

कर परमेश्वर समान उनका भजन करना चाहिये जब यशोदाने यहसब हाल नन्दरायसे सुना तब वह और अधिक मायावश होकर रोने लगी व श्यामसुन्दरको अपना बेटा जानकर नन्दरायसे बोली हे कन्त तुमको धिक्कार है जो उनके मुखसे आधी बात सुनकर चले आये व श्याम बलरामको मथुरामें छोड़कर यहां मुख दिखलाते हो राम व कृष्ण विना जीकर क्या सुख पावोगे ॥

चौ० मारग सूझि परयो किहि भांती। विदा होत फाटी नहिं छाती ॥
दो० कैसे प्राण रहे हिये बिछुरत आनँदकन्द। सुनी नहीं दशरथकथा कहूं श्रवण मतिमंद ॥
सो० मैं मथुरामें जाय रहिहौं हरिकी धाय वनि। लीजै ठोंक बजाय अब अपनो ब्रज नन्द यह॥

हे मूर्ख तुम मेरे दोनों प्राणप्यारों को कहां छोड़ आये मैं अभागी अपने लाल के साथ न जाकर तुमलोगोंके कहनेसे घर बैठरही मैंभी साथजाती तो किसवास्ते उनको छोड़ आवती ॥

चौ० जीवनप्राण सकल ब्रज प्यारो। छीन लियो वसुदेव हमारो ॥
सुफलकसुत वैरी भो भारी। लैगो जीवनमूल हमारी ॥
पूछत विलखि यशोमति मैया। कहौ नन्द कथा कह्यो कन्हैया ॥
तुमको विदा ब्रजहिं जब कीन्हों। फिरि कछु मोहिं सँदेशो दीन्हों ॥
तुम कछु हरिसों विनय न भाखी। कहा श्याम मनमें यह राखी ॥

यह सुनकर नन्दजी बोले ॥

दो० मैं अपनेसों बहु कियो वे प्रभु त्रिभुवननाथ। जो चाहैं सोई करैं कहा बसै मो हाथ ॥
सो० कहिकैतोहिंप्रणाम बहुरि श्याम ऐसे कह्यो। करिकै कछु सुर काम मिलिहौं तुमसे आयब्रज ॥

व बलरामजीने ऐसा कहा है कि मेरी माता दुःखी होने न पावै तुम जाकर उसको धैर्य दे देना कुछ दिनों में हम भी आनकर उससे मिलैंगे यशोदा यह सन्देशा अपने लालका सुनतेही शोचमें डूबगई व नंद व यशोदा आदिक सब ब्रजवासी मुरलीमनोहरका बालचरित्र याद करके रोते व पीटते हुये अपने अपने घर आये पर विना श्याम व बलराम उन को वृन्दावन उजाड़ सा मालूम देता था व नन्द व यशोदा कभी गोपीनाथको अपना बेटा जानकर उनकी याद में रोते कभी ईश्वरभाव समझ कर उनके चरणोंका ध्यान करते थे व केशवमूर्तिके विरहमें सब पशु व

पक्षी व ग्वाल व गौ आदिक व्याकुल रहकर फल व फूल कुंजोंके कुम्हि-लागये जब श्यामसुन्दरने उन ग्वालबालोंको जो मथुरामें रहिगये कुछ दिन उपरांत भूषण व वस्त्रादिक देकर विदा किया और उन लोगों ने वृन्दावनमें आनकर सब चरित्र नंदलालजीका जो उन्हों ने कुब्जा आदिक के साथ किया था व्रजवासियों से कहा तब गोपियोंने कुबड़ीका समाचार सुनतेही सवतियाडाह से बड़ा शोच किया व विश्वास माना कि अब नन्दलालजी वृन्दावन नहीं आवैंगे यह बात समझतेही व्रजबाला आपसमें इकट्ठी होकर एकने दूसरीसे कहा देखो श्यामसुन्दरने त्रिलोकीनाथ होकर ऊंच नीच जातिका कुछ विचार नहीं किया और कुब्जाको सुन्दररूप देखकर अपनी रानी बना लिया दूसरी बोली कुब्जाने मोहनप्यारे को ऐसा वशमें किया है कि विना आज्ञा उसकी कोई काम नहीं करते अब किसवास्ते वह उनको यहां आने देगी अक्रूरने आकर हमारे चितचोरसे कुबड़ी का सन्देशा कहा था इसीवास्ते वे मथुरा जाकर बसे हैं दूसरीने एक गोपीसे पूंछा तैंने कुब्जाको देखाहै या नहीं वह बोली मैं दही बेचने मथुरा गई थी तब उसको देखा था वह मालिनकी बेटी बहुत टेढ़ीथी उसको देखकर सब स्त्री व पुरुष हँसा करते थे सो श्यामसुन्दर ने लाज व धर्म छोड़कर दासीको अपनी रानी बनाया यह बात सुनकर हमलोगोंको लज्जा आवती है दूसरी बोली हे सखी तुमने यह बात नहीं सुनी ॥

चौ० कुब्जा सदा श्यामकी प्यारी। वे भर्ता उनकी वह नारी ॥
रूप रत्न कूबड़ में राख्यो। ज्यों मोती सीपन से भाख्यो ॥
व्रजवनिता छांड़ी अब यातें। बूझी सकल श्यामकी बातें ॥

दूसरीने कहा हे प्यारी वह दिन नंदलालजीको भूल गये जब राजा कंसके डरसे भागकर व्रजमें आये व ग्वालवेष बनाकर यहां छिपे थे व घरघर माखन चुराकर खाया ॥

दो० देव गनावत दिन गये बड़े होनकी आस। बड़े भये तब यह कियो बसे कूबरी पास ॥
सो० यशुमति लाड़ लड़ाय बारेते सेवा करी। ताहूको बिसराय भये देवकी पुत्र अब ॥

दूसरीने कहा जैसे कोयलका अण्डा कौवा सेवै तो बच्चा उत्पन्न होकर अपने जाति भाइयोंमें मिलजाता है वैसे मोहनप्यारे नन्द व यशोदा

व हमलोगोंकी यह दशा करके वसुदेव व देवकीके पास चले गये दूसरी सखी बोली अब वे राजाके पास सिंहासन पर बैठते हैं इसलिये उनको ब्रजवासी व मुरलीका नाम लेने व मोरपंख देखनेसे लज्जा आवती है॥

दो० भयो नयो अब राज वह नये मात पितु गेह। नई नारि कुब्जा मिली नये सखा नवनेह॥
सो० भूले ब्रजकी बात कुब्जकेलि रसरासको। भये आपनी घात दिनदिन सुख दूनो भयो॥

दूसरीने कहा अब तुमलोग उनकी चर्चा क्या करती हो अपने मनमें विचारकर देखो तो वह हमारे जातिभाई नहीं हैं आगे उनका नाम यहां गोपीनाथ व नंदलाल व कन्हैया व श्रीकृष्ण था सो वहां वासुदेव प्रकट हुआ थोड़े दिनके वास्ते उन्होंने ब्रजवासियोंसे प्रीति करके पानी बरसने व आग लगने से सबकी रक्षा की हे राजन् जिस तरह मछली विना पानी के तलफती है उसी तरह सब ब्रजबाला दिनरात व्याकुल रहकर चर्चा मोहनप्यारेकी आपसमें रखके कहती थीं॥

दो० देखो नहीं सुहात कछु घर वन विन नँदनन्द। विरह व्यथा जारत नहीं भयो तपन अतिचन्द॥
कहँलगि कहिये हे सखी मनमोहन के खेल। उन विन यों गोकुल भयो ज्यों दीपक विन तेल॥
सो० रहत नयनजलछाय सुमिरि सुमिरि गुणश्यामके। कहिये किसे सुनाय भये पराये कान्ह अब॥

दूसरी गोपी बोली कोई मनुष्य मथुरामें जाकर मोहनप्यारेसे कहता कि सब ब्रजबाला तुम्हारे विरहसागरमें डूब रही हैं सो तुम जल्दी पहुँचकर उन्हें अथाह जल से बाहर निकालो और तुम वृन्दावनमें फिर आनकर बसो तुमसे गौ चराने वास्ते कोई नहीं कहैगा व तुम्हें माखन व दही चुराने से नहीं बर्जेंगी॥

दो० मांगत दान न वर्जिहैं अब नहिं करिहैं मान। आय दर्श पुनि दीजिये तुमविन निकसत प्रान॥
सो० ऐसेकहि गहि पाँय लावैं फेरि मनाय हरि। बसैं बहुरि ब्रज आय तव नँदनन्दन सांवरो॥

दूसरी ने कहा अब मोहनप्यारे को क्या प्रयोजन है जो राजसी सुख व विलास छोड़कर यहां ग्वाल कहलावैं व हाथी व घोड़ा व सुखपाल की सवारी तजकर यहां गौ चरावैं दूसरीने कहा हे प्यारियो वह मोहनीमूर्ति मुझे एक क्षण नहीं भूलती॥

दो० सपनेहूं में देखिये नींद पड़त जो नैन। कीन्हों बहुत उपाय मन आंख खुलत नहिं चैन॥

दूसरी बोली हे सखी श्यामसुन्दर विना मुझे अपना घर व गांव

उजाड़ मालूम होकर वृन्दावन की कुञ्ज देखने से रोना आता है व वहां के जो फल अमृत का स्वाद देते थे वे अब विषसमान मालूम होते हैं व जिन पक्षियों का शब्द सुनकर मन प्रसन्न होता था उनका बोलना अब हृदय में गांसी ऐसा लगता है॥

चौ० जब से बिछुरे कुँवर कन्हाई। तब से भये सबै दुखदाई॥

हे राजन् इसी तरह सब ब्रजबाला आठों पहर बौरहों के समान व्याकुल रहकर जो पथिक उस राह से जाता था उसके पांव पकड़ कर कहती थीं हे बटोही श्यामसुन्दर हम लोगों का मन चुराकर मथुरा में जाके राजा हुये हैं उनसे यह संदेशा हमारा कहदेना कि जिन ब्रजबालों का प्राण तुमने इन्द्र के पानी बरसाने से गोवर्द्धन पहाड़ उठाकर बचाया था वेसब उसी तरह तुम्हारे विरह में आठों पहर अपनी आंखों से आंसू जल के समान बरसाती हैं और जैसे उस समय आंधी बहती थी वैसे उनका ऊर्ध्व श्वास चलता है सो फिर वह लोग उसी विरहसागर में डूबकर मरजाने चाहती हैं केवल तुम्हारे मिलने की आशा पर अब तक जीती हैं सो तुम उनको दीन व अपनी दासी जानकर जल्दी चले आवो और हम दुखियारियों को डूबने से बचाकर हमारे हृदय की तपन अपनी अमृतरूपी दृष्टि से बुझावो जब विरहसागर में हम लोग डूबकर मरजावेंगी तो पीछे से आन कर क्या करोगे॥

दो० एक बार फिरि आनकर दीजै दर्शन श्याम। तुमबिन ब्रज ऐसो लगत ज्यों दीपक बिन धाम॥

दूसरी सखी ने कहा हे बटोहियो तुम्हें नारायणजी की सौगन्द है जो ऐसा न कहो और यह भी मोहनप्यारे से कहदेना कि राधाप्यारी तुम्हारे वियोग में ऐसी दुर्बली व निर्बल होगई है जो उठने व बैठने की सामर्थ्य न रहकर पहिचानी नहीं जाती दो चार दिन में मरजावे तो आश्चर्य नहीं भला पिछली प्रीति समझ कर तो उसका प्राण बचाओ॥

दो० सुधिबुधि सब तनकीगई रह्यो विरहदुखछाय। मरणनिकट पहुँचीअभी बेगि खबरिल्योआय॥
सो० ऐसे निज निज हेत कहत सँदेशो श्यामको। पथिक चलन नहिं देत होत साँझ ताको वहां॥

जब पपीहा वृन्दावन में बोलता था तब उसकी बोली सुनकर वे सब

विरहिनी कहती थीं अरे हम लोग इसी तरह अपने दुःख में व्याकुल हैं तिसपर तू ऐसा शब्द बोलकर क्यों हमारे हृदय की दबीदबाई अग्नि सुलगाता है ॥

चौ० करत कहा इतनी कठिनाई । हरि बिन बोलत व्रज में आई ॥
उपजावत विरहिनि उर आरत । काहे अगिलो जन्म बिगारत ॥
एक कहत चातक से टेरी । हे पक्षी मैं चेरी तेरी ॥
लेटे होयँ जहां सुखदाई । ऊंची टेर सुनावो जाई ॥

दो० मानैंगे तेरो कहो मेरे हित घनश्याम । लेहु सुयश चातक बड़ो लैआवो सुखधाम ॥

जिस तरह पपीहा स्वाती के बूंद वास्ते चाहना रखता है उसी तरह सब व्रजबाला मोहनप्यारे के मिलने वास्ते व्याकुल रहती थीं ॥

दो० कोऊ ऐसे कहि उठत व्रजमें बोलत मोर । रह्यो पड़त नहिं टेर सुनि बिन श्रीनन्दकिशोर॥
सो० बोलत करत बिहाल मोर सखी बैरी भये। बसे बिदेश गुपाल यह बनसे मारे टरैं॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् इसी तरह सब वृन्दावनवासी श्यामसुन्दर के ध्यान व चर्चा में दिन अपना काटते थे ॥

चौ० धन्य जन्म जो हरि के दासा । सबविधि धन्य जिन्हैं हरि आसा ॥

दो० नन्द यशोमति गोपिकन निशिवासर यह ध्यान । व्रजवासी प्रभुदर्श को आशलगी रह मान॥
सो० बिसरे सब व्यवहार अवर न दूजी गति कछू । अन्ध लकुटआधार एक सुरति नँदनन्दकी॥

हे राजन् मुझे ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो व्रजवासियों के विरह का सब हाल वर्णन करसकूं इसलिये अब मथुरा की बात कहता हूं सुनो जब श्याम व बलराम नन्दजी आदिक को बिदा करके अपने घर पर आये तब वसुदेव व देवकी ने दोनों भाइयों को देखकर ऐसा सुख पाया जैसे कोई तप करनेवाला अपना मनोरथ पाकर प्रसन्न होता है व मथुरापुरी में उसी दिन से मंगलाचार होने लगे और वसुदेवजी ने देवकी से कहा श्याम व बलराम अहीरों की संगति में रहने से अपने जाति व कुल का व्यवहार नहीं जानते सो इनका यज्ञोपवीत आदि करना चाहिये देवकी बोली बहुत अच्छा जब वसुदेव ने गर्ग पुरोहित व अपने जातिभाइयों को बुलाकर सब हाल कहा तब गर्गजी बोले इनको गायत्री मंत्र देकर क्षत्रिय बनाना चाहिये ॥

दो० याते इनको प्रीति करि दीजै यज्ञपवीत । जाते सीखैं सकल विधि जो यदुकुलकी रीत ॥

यह वचन सुनतेही वसुदेवजी ने इष्टमित्र व यदुवंशियों को नेवता भेजकर अपने यहां बुलाया व सब तीर्थों का जल मँगाकर श्याम व बलराम को स्नान कराया व शास्त्रानुसार दोनों भाइयों को यज्ञोपवीत पहिनाकर पुरोहितने गायत्री मंत्र उपदेश किया तब वसुदेवजीने बहुत सी गौ विधिपूर्वक सोना व रत्नादिक ब्राह्मणों को दान दिया और अपने जातिभाई व ब्राह्मणों को छत्तीस व्यंजन खिलाकर सन्मानपूर्वक बिदा किया और जो मंगलामुखी व कंगाल लोग वहां आये थे सबको मुँहमांगा द्रव्य देकर धनीपात्र बना दिया उस समय देवतों ने आकाश से राम व कृष्णपर फूल बरसाये व स्त्रियों ने मंगलाचार गीत गाया व वैकुण्ठनाथ की इच्छा व दया से मथुरा में लक्ष्मी का वास होकर सब छोटे व बड़े धनवान् होगये॥

सो० अन्त न पावैं शेश वेद श्वास जाकी सकल । ताहि दियो उपदेश गायत्री गुरु गर्ग मुनि ॥

हे राजन् वसुदेवजी ने श्याम व बलराम का जनेऊ करने उपरांत दोनों भाइयों को रथ पर बैठाकर सांदीपन पण्डित सम्पूर्ण विद्यानिधान के पास जो काशीपुरी अपने देश से उज्जैन में जा बसे थे विद्या पढ़ने वास्ते भेजदिया राह में केशवमूर्ति ने सुदामा ब्राह्मण को देखकर पूंछा तुम कहां जाते हो उसने कहा विद्या पढ़ने जाता हूं तब मुरलीमनोहर ने उसको भी रथ पर बैठालिया व उज्जैन में सान्दीपन पण्डित के पास जा पहुँचे और हाथ जोड़कर उनसे विनय किया ॥

चौ० हमपर कृपा करो मुनिराय । विद्यादान देहु मन लाय ॥

जब दोनों भाइयोंने इसतरह आधीन होकर गुरुसे कहा तब पण्डितजी बड़ी कृपा व दयासे श्याम व बलरामको अपने घरमें रखकर विद्या पढ़ाने लगे एक दिन पण्डिताइनने श्यामसुन्दर व सुदामाको चना कलेवा देकर लकड़ी तोड़ने वास्ते वनमें भेजा सो श्रीकृष्णजीके हिस्सेका कलेवा भी सुदामा अपने पास बांधे था जब वे दोनों वन से लकड़ीका बोझा लेकर आवने लगे तब आंधी चलकर ऐसा पानी बरसा कि घर तक नहीं पहुँचकर रातको वनमें रहगये जब सुदामाको बहुत भूख मालूम हुई तब उसने श्यामसुन्दरका कलेवा भी उन्हें न देकर आप खालिया व चना

खाती समय कुटुर कुटुर शब्द सुनकर केशवमूर्तिने सुदामासे पूछा हे भाई तुम क्या खाते हो हमें भी देव तो अपनी भूख मिटावें सुदामाने लालच की राह परब्रह्म परमेश्वरसे झूठ कहा कि मैं कुछ नहीं खाता मारे सरदी के हमारा दांत बोलता है इसी झूठ बोलने के पापसे सुदामा महादरिद्री हुआ था व श्याम बलराम ने अपनी सेवा से गुरुको ऐसा प्रसन्न किया कि चौंसठ दिनमें चारों वेद व छः शास्त्र व अठारह पुराण व राजनीति व मंत्र व यंत्र व तंत्र व ज्योतिष व वैद्यक व कोक व बाणविद्या आदिक सब गुण दोनों भाइयों को याद होगये तब सांदीपन गुरुने मनमें कहा मनुष्य वर्ष दिन में भी एक विद्या नहीं पढ़ने सक्ता सो ये दोनों बालक कोई अवतार मालूम होते हैं दो महीने चार दिन में चौदहों विद्या व चौंसठ कला पढ़ लिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् देखो जिस परब्रह्म परमेश्वरके श्वाससे चारों वेद उत्पन्न हुये उन्होंने सब विद्या तीनों लोकके मालिक होकर गुरुसे पढ़ी थी उनकी लीला व महिमा कोई नहीं जानने सक्ता जब विद्या पढ़ने उपरांत केशवमूर्तिने गुरुसे हाथ जोड़कर विनय किया कि आपकी दयासे मैं सब विद्या पढ़कर अपने मनोरथको पहुँचकर हम अनेक जन्म अवतार लेकर तुम्हारी सेवा करैं तो भी विद्या पढ़ानेके बदले से उऋण नहीं होसक्ते हमारी समाई देखकर जो कुछ आज्ञा कीजिये वह गुरुदक्षिणा तुम्हारी भेंट करैं व आपका आशीर्वाद लेकर अपने घर जावैं जिसमें विद्या पढ़ने का फल हमें मिलै यह वचन सुन कर सांदीपन गुरुने कहा मुझे तो कुछ इच्छा नहीं है पर तुम्हारी गुरुआइनसे पूछें उसे जो चाहना हो वह वस्तु तुमसे मांगै ऐसा कहकर सांदीपन अपनी स्त्रीके पास जाकर बोले ये राम व कृष्ण दोनों बालक जिन्होंने चौंसठ दिनमें सब विद्या मुझसे पढ़लिया परमेश्वरका अवतार मालूम होते हैं इनसे जो गुरुदक्षिणा मांगी जावे इनको देना सहजहै तब पण्डिताइनने हाथ जोड़कर कहा हे स्वामी ये बालक नारायण के अवतार हैं तो मेरा बेटा जो समुद्रमें डूबगया है उसको लादेवें जिसके शोचसे मैं सदा दुःखी रहती हूं यही गुरुदक्षिणा उनसे मांगो॥

दो० सम्पति तो तबहीं भली जो सुतहो घरमाहिं । सम्पति लै क्या कीजिये जो घरमें सुत नाहिं॥

जब सान्दीपनको भी यह बात भली मालूम हुई तब स्त्री पुरुष दोनों मनुष्योंने श्याम व बलरामके पास जाकर कहा हे वैकुण्ठनाथ हमारे एक पुत्रके सिवाय दूसरा पुत्र नहीं था सो एक पर्वमें साथ लेकर समुद्रकिनारे स्नान करने गये थे जब हमलोग जल में पैठकर नहाने लगे तब वह बालक समुद्रमें डूब गया तभीसे एक क्षण उसका शोच नहीं भूलता जो तुम हमारी इच्छापूर्वक गुरुदक्षिणा दिया चाहते हो तो वही बेटा हमारा लादेव यह वचन सुनतेही श्यामसुन्दर लादेना उस बालकका अंगीकार करके उसी समय दोनों भाई रथपर चढ़े व सांदीपन व पण्डिताइनको दण्डवत् करके जब एक क्षणमें क्रोधसे भरे हुये समुद्रकिनारे पहुँचे तब समुद्र मनुष्यका रूप धरकर डरता व कांपता पानीसे बाहर निकला व बहुतसी मणि व रत्नादिक श्यामसुन्दर को भेंट देकर दण्डवत् करके विनय किया हे परब्रह्म परमेश्वर उत्पन्न करनेवाले चौदहों भुवनके मेरी दण्डवत् आपको पहुँचे गंगाजी तुम्हारे चरणका धोवन होकर तीनों लोकको कृतार्थ करती हैं व तुम अपनी दया व कृपासे नित्य राजा बलिके द्वारेपर बने रहकर पृथ्वी का भार उतारने व हरिभक्तों को सुख देनेवास्ते सगुण अवतार धारण करते हो व आप शेषनागकी छातीपर सदा शयन करके सब गुण विद्या जानते हो व शेषनाग दोहजार जिह्वासे दिनरात तुम्हारी स्तुति करते हैं तिसपरभी आपका आदि व अन्त नहीं जानते और गरुड़ जी आपके वाहन हैं ज्ञानी व ऋषीश्वर व वेदभी तुम्हारी महिमा व भेद को नहीं पहुँचसके मेरी क्या सामर्थ्य है जो आपकी स्तुति करने सकूं मेरे बड़े भाग्य हैं जो तुमने दयालु होकर दर्शन अपना दिया व तुम्हारे चरण देखनेसे मैं कृतार्थ हुआ ॥

दो० आज्ञाहो सो कीजिये मन चितदे वह काज । सब दासनको दासहौं तुम राजनके राज ॥

यह स्तुति सुनतेही केशवमूर्तिने प्रसन्न होकर समुद्रसे कहा कि सान्दीपन हमारे गुरु अपने कुटुम्बसमेत यहां स्नान करने आये थे सो तू अपनी लहरसे उनका बेटा बहा लेगया है जल्दी लादे गुरुकी आज्ञासे मैं उसे

लेने आया हूं समुद्र हाथ जोड़कर बोला हे महाप्रभु अन्तर्यामी वह बालक मेरे पास नहीं है परन्तु पांचजन्यनाम दैत्य बड़ा बलवान् शंखरूपसे पानीमें रहकर सब जीवोंको बहुत दुःख देता है वह उस बालकको नहाती समय उठालेगया हो तो मैं नहीं जानता यह वचन सुनतेही श्रीकृष्णजी बलरामसमेत पानीमें कूदपड़े जब शंखासुरके मारने पर भी उस बालकका पता नहीं पाया तब पछताकर बलरामजी से कहा अय भाई हमने वृथा इस दैत्य को मारा व उस बालकका ठिकाना नहीं लगा यह बात सुनकर बलरामजी बोले हे दीनानाथ यह चिन्ता छोड़कर इस दैत्य का उद्धार कर दीजिये तब केशवमूर्तिने उसे मुक्ति देकर शेषरूपी तनु उसका अपने बजाने वास्ते उठालिया व उसीसमय यमपुरीके द्वारेपर जाकर वह शंख बजाया जैसे वह शब्द नरकवासियों ने सुना वैसे वे लोग नरकसे निकलकर वैकुण्ठ को चले गये धर्मराज दौड़े हुये बाहर आनकर हरिचरणोंपर गिर पड़े व बड़े आदर से श्याम व बलरामको अपने घर लेजाकर जड़ाऊ सिंहासनपर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लिया व विधिपूर्वक पूजा उनकी की व सुगन्धफूलों के गजरा व मोती व रत्नादिक की माला दोनों भाइयों को पहिनाया और परिक्रमा लेकर उन्हें चवँर हिलानेलगा व बड़े प्रेमसे हाथ जोड़कर इस तरह स्तुति श्यामसुन्दरकी की हे परब्रह्म परमेश्वर आप सदा हँसते व आनन्दमूर्ति रहते हैं तुम्हें कभी कुछ चिन्ता नहीं व्यापती व लक्ष्मीजी आठोंपहर तुम्हारी सेवामें बनी रहकर आप हरिभक्तोंकी सब इच्छा पूर्ण करतेहैं व वैकुण्ठ तुम्हारा देवलोकसे ऊंचा होकर आपने मुझ ऐसे बहुत अधर्मियोंको मुक्ति दियाहै व तुम्हारी नाभिसे कमलका फूल निकल कर उससे ब्रह्मा उत्पन्न हुये व आपकी दयासे ब्रह्माने तीनोंलोककी रचना की पर तुम्हारे भेद व आदि व अन्तका हाल वेभी नहीं जानसके व तुमने सब जीवों के उत्पन्न व पालन करनेवाले होकर अपनी इच्छासे अपना बालकरूप प्रकट किया है सो मेरी दण्डवत् आपको पहुँचै, जहां शेष व महेश व गणेश तुम्हारी स्तुति नहीं करने सके वहां मुझे क्या सामर्थ्य है जो

तुम्हारा गुण वर्णन करने सकूं जिसतरह पिछले जन्मके पुण्य उदय होने से आपने दयालु होकर मुझको दर्शन दिया उसी तरह अपने आवनेका कारण वर्णन कीजिये यह सुनकर श्यामसुन्दर बोले मेरे गुरुका बेटा जो समुद्र में डूबकर मरगयाहै उसे फेर देना चाहिये कदाचित् तुम ऐसा कहो कि मरा हुआ जीव यमपुरीसे फिरकर नहीं जाता सो यह मर्यादभी मैंने बाँधा था इसलिये तुझे मेरी आज्ञा पालना चाहिये यह वचन सुनतेही धर्मराजने सांदीपनका पुत्र वहां लाकर विनय किया हे दीनानाथ मुझे पहिले से मालूमथा कि आप गुरुपुत्र लेनेवास्ते आवैंगे इसलिये इस बालकको हमने आजतक बड़े यत्नसे रखकर दूसरे तनमें जन्म नहीं दिया यह वचन सुनतेही मुरलीमनोहर धर्मराजको भक्तिवरदान देकर बलरामजी व उस बालक समेत वहांसे अन्तर्धान होगये व गुरुके पास वह बालक लाकर बोले आपने बड़ी दया करके हमैं विद्या पढ़ाया व हमसे कुछ सेवा नहीं बनपड़ी और जो कुछ आज्ञा कीजिये सो करैं सांदीपन अपना बेटा देखतेही श्यामसुन्दरको परब्रह्म अवतार समझकर बहुत स्तुति करके बोले हे त्रिलोकीनाथ जिस किसी के तुम्हारे ऐसा चेला हो उसे कौन इच्छा बाकी रहैगी पर मैं प्रसन्न होकर तुम्हैं यह आशीर्वाद देताहूँ कि विद्या तुम्हारी सदा नई बनी रहकर संसारमें यश तुम्हारा छाया रहै जब सांदीपन व पण्डिताइनने श्याम व बलरामको आनन्दपूर्वक बिदा किया दोनों भाई उन्हैं दण्डवत् करके मथुराको आये उनके आनेका समाचार पातेही वसुदेव व राजा उग्रसेन यदुवंशियोंसमेत आगेसे होकर गाते व बजाते सन्मानपूर्वक उन्हैं राजमन्दिरपरलेगये व सबछोटेबड़ोंने मंगलाचारमनाया॥

दो० गुरुकी आज्ञा पायकै माखनप्रभु व्रजचन्द । आये मथुरा नगर में सबके आनँदकन्द ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् देखो गुरुके वास्ते श्रीकृष्णजी वैकुण्ठनाथ होकर यमपुरीमें चलेगये थे गुरुकी इतनी बड़ी पदवी समझना चाहिये संसारमें तीन तरहके गुरु होते हैं एक जो मंत्र-उपदेश करै दूसरा जो विद्या पढ़ावै तीसरा जो धर्मकी बात सिखलावै इन तीनों को ईश्वर समान मानकर उनकी सेवा करना उचित है ॥

छियालीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का उद्धवको गोपियोंके ज्ञान सिखलानेके वास्ते भेजना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिसतरह श्यामसुन्दरने नन्द व यशोदा व ब्रजवालोंको ज्ञान सिखलानेवास्ते उद्धवको भेजाथा वह कथा कहते हैं सुनो जब कभी मुरलीमनोहर नन्द व यशोदा व श्यामाआदिक गोपियों की बातें उद्धव से कहतेथे तब वह अपने ज्ञानके अभिमानसे मित्रताकी राह उनका ठट्ठा करते थे इसवास्ते गर्वप्रहारी भगवान्ने एक दिन रासलीला आदिक ब्रजवासियोंकी चर्चा छोड़कर बलरामजी से कहा अय भाई मैंने अपने वचनप्रमाण कोई मनुष्य वृन्दावनमें नहीं भेजा इसलिये वह लोग मेरेवास्ते चिन्ता करते होंगे सो किसी को भेजकर उन्हें धैर्य देना चाहिये ॥

चौ० कहां नवल ब्रजगोपकुमारी। कहँ राधा वृषभानुदुलारी ॥

दो० कहां यशोद नन्द से सुखद तात औ मात। कहँ वह सुख ब्रजधामको नहिं बिसरत दिनरात ॥

सो० कहां सखनको संग कहां खेल वृन्दाविपिन। कहँ वह प्रेमतरंग वंशीवट यमुनानिकट ॥

जब बलभद्रजीको यह बात भली मालूम हुई तब केशवमूर्त्तिने मनमें विचारा कि उद्धवको अपने ज्ञानका बड़ा अभिमान रहता है इसलिये गोपियोंको ज्ञान सिखलाने वास्ते उसको भेजकर देखें कि ब्रजबालोंको मेरी प्रीतिके सामने ज्ञान प्रवेश करता है या नहीं व उद्धव का अभिमान भी वहां जाने से टूट जावेगा ॥

दो० ऐसे हरि बैठे करत अपने मन अनुमान। उद्धव के मन से करौं दूर ज्ञान अभिमान ॥

सो० आयगये तेहिकाल उद्धवजी हरिके निकट। बिहँसि मिले नँदलालि सखासखा कहि अंकभरि॥

उसीसमय श्यामसुन्दरने उद्धवसे प्रेमपूर्वक कहा हे मित्र जबसे मैंने श्यामाआदिक ब्रजबालोंके साथ रासलीला किया था उससमय महादेव आदिक देवतोंको ऐसा कामदेवने सताया कि शिवजी गोपेश्वर व चन्द्रमा चन्द्रकलारूप स्त्री होकर मेरे साथ रासमण्डल खेलने आयेथे व उसीतरह अनेक देवतोंने स्त्रीका तनु धरकर वहां सुख उठाया था सो नन्द यशोदा व राधाआदिक सब ब्रजबाला मेरे विरहमें बड़ा दुःख पातेहैं व हम उनसे

कह आये थे कि वृन्दावन में फिर आवैंगे उसी आशा पर उनका प्राण आजतक बचा है ॥

दो० वे सब मेरे विरहमें अतिहैं महामलीन । कल न परत क्षण रैनदिन जैसे जलबिन मीन ॥

सो हे मित्र मेरा मन भी उनकी सच्ची प्रीति देखकर यहां नहीं लगता और ब्रजका सुख एक क्षणभी नहीं भूलता इसलिये तुमको बड़ा ज्ञानी व शान्तस्वभाव व अपना परम मित्र जानकर वृन्दावन में भेजा चाहता हूं सो तुम वहां जाकर नन्द व यशोदा व गोपियों को ऐसा ज्ञान समझावो कि जिसमें वहलोग मेरे वियोगका शोच छोड़कर धैर्य धरैं व रोहिणीमाता को अपने साथ लेआओ यह सुनकर उद्धवने मोहनप्यारेको समझाया हे दीनानाथ संसारी झूठी प्रीति स्वप्नवत् समझकर परमेश्वर अविनासी पुरुषका ध्यान करना उचित है यह ज्ञान भरीहुई बात सुनतेही मुरली-मनोहर हँसकर बोले हे उद्धव जो बात तुमने कही सो सच है पर क्या करूं गोपियां मेरे विरहमें बड़ा दुःख पाती हैं सो तुम ऐसा ज्ञान उनको उपदेश करना जिसमें कन्तभाव छोड़कर परमेश्वर समान मेरा भजन करैं व पहिले नन्द यशोदा को इसतरह समझाना कि वह मुझे पुत्र भाव तजकर ईश्वरसमान समझैं ॥

दो० यक प्रवीन अरु सखा मम तुमसों ज्ञानी कौन । सो कीजै जो ब्रजवधू साधन सीखैं मौन ॥

सो० ज्यों सुख पावैं नारि ज्ञानयोग उपदेश से । डारैं मोहिं बिसारि ब्रह्मअलख परचो करैं ॥

यह वचन सुनकर उद्धवने विनय किया बहुत अच्छा मैं तुम्हारी आज्ञा-नुसार वहांजाकर सबको ज्ञान समझाऊंगा पर वह लोग मेरे कहने से न मानैं तो लाचार हूं यह सुनकर श्यामसुन्दर बोले ॥

दो० वचन कहतही समझिहैं वहहैं परम प्रवीन । ह्वैहैं शीतल विरह से ज्यों जल पाये मीन ॥

ऐसा कहकर श्याम व बलराम ने अनेक तरहका भूषण व वस्त्र नन्द व यशोदा व ग्वालबाल व राधाआदिक ब्रजबालोंके देनेवास्ते उद्धव को दिया और एक चिट्ठी में बड़ों को दण्डवत् व छोटों को अशीष व ब्रज-बालोंको योग व ज्ञान लिखा और वह चिट्ठी उद्धवको देकर बोले तुम आप पढ़कर इसका हाल सबको सुना देना व जैसे बनि पड़ै उन्हें धैर्य देकर जल्दी चले आना ॥

दो० उद्धव व्रजमें जायकै विलमि न रहियो जाय। तुम विन हम अकुलाहिंगे श्यामकरत चतुराय॥
सो० तुमही सखा प्रवीन वार वार सिखवों कहा। जिये ज्यों जलविनमीन सोई मतो विचारियो॥

फिर गोपीनाथने अपने पहिरनेका भूषण व वस्त्र उद्धवको पहिनाकर रथपर बैठायके वृन्दावनको विदा किया व चलते समय आंखों में आंसू भरकर बोले हे उद्धव तुम इतना सन्देशा और यशोदा मातासे कहदेना॥

चौ० नीकी रहो यशोमति मैया। कछु दिन में अइहैं दोउ भैया॥

दो० कहा कहौं जा दिवसले जननी बिछुरेउँ तोहिं। ता दिन से कोऊ नहीं कहत कन्हैया मोहिं॥
सो० कहो सँदेश न जात अतिदुख पायो मातु तुम। अब मोंको निज तात वासुदेव देवकिकहत॥
क० कामरी लकुट मोहिं भूलत न एको पल घुँघुची न विसारैं जोपै लाल उरधारे हैं।
जादिनते छाकैं छूटगईं ग्वालवालनकी तादिनते भोजन न पावत सकारे हैं॥
भनै यदुवंश यह नेह नन्दवंश ही सों वंशी न विसारै जोपै वंश विस्तारे हैं।
ऊधो व्रज जाय मेरो लाइयो चौगान गेंद मैयाते कहियो हम ऋणियां तुम्हारे हैं॥
कौन विधि पावै यह कर्म बलवान उदै छाड़ छछुआकी व्रजभामिनिको भातहैं।
मुक्तहु पदारथ सो दे चुके वाकी को अब देऊं जननी को कहा याते पछितातहैं॥
विधिने बनाई आइ कौन विधि मेंट ताह ऐसे करि शोचत रहत दिनरातहैं।
ऊधो व्रज जैयो मेरी मैयासे बुझाय कहियो जापै ऋण बाढ़ै सो विदेश उठिजातहैं २

व बलभद्रजी रोकर बोले अय उद्धव मेरी ओर से नन्द व यशोदा से हाथ जोड़कर कहदेना व्रजका सुख हमैं कभी नहीं भूलता इसलिये वहां आनकर तुमसे भेंट करूंगा हम दोनों भाइयों को अपना पुत्र जानकर कभी मत भूलना और जब वसुदेवजीने उद्धवके जानेका हाल सुना तब बहुतसी सौगात नन्द व यशोदाके वास्ते देकर ऐसी चिट्ठी लिख दी कि तुमने हमारे बेटों को जो पालन कियाहै इस उपकारके बदले से मैं अनेक जन्म नहीं उऋण होने सक्ता तुम श्याम व बलरामके वास्ते वहां क्यों चिन्ता करते हो यहां आनकर देख नहीं जाते जिससमय उद्धवजी मथुरा से वृन्दावनको चले उसीसमय व्रजबालोंने अन्तःकरणकी शुद्धता से मालूम किया कि आज मोहनप्यारे का संदेशा लेकर कोई आदमी आवता है या वह आवैंगे ऐसा विचारतेही एक गोपी अपने आंगनमें कौवा बोलता हुआ देखकर कहनेलगी॥

दो० जो हरि गोकुल आवहीं तो तू उड़रे काग। दूध दही तोहिं देहिंगे अरु अंचलकी पाग॥

दूसरी गोपी ने कहा आज मुझे बाईं आंख फड़कने से मालूम होताहै कि मोहनप्यारे चित्तचोर यहां आया चाहते हैं सो तुम लोग शोच अपना छोड़कर हर्ष मनाओ मोहनप्यारे का चन्द्रमुख देखकर अपनी अपनी आंखें ठंढी करना ॥

दो० घरघर शकुन विचारहीं व्रजतिरिया बड़ भाग । व्रजवासी प्रभु दर्शको सबके मन अनुराग ॥

हे राजन् सन्ध्यासमय उद्धवने वृन्दावनमें पहुँचकर क्या देखा कि घने घने वृक्षोंपर अनेक तरहके पक्षी सोहावनी बोली बोलकर धवरी धूमरी काली पीली गायें चारों तरफ घूमरही हैं ॥

दो० वृन्दावन शोभित महा यमुनाजल चहुँओर । द्रुमवेली प्रफुलित सदा बोलत कोकिलमोर ॥

सच है जिस स्थानपर वैकुण्ठनाथने आप विहार किया हो वहां क्यों नहीं ऐसी शोभा रहै अबतक भी वह स्थान देखने से चित्त मोहि जाता है उद्धवने उस वनको स्थान लीला करने श्यामसुन्दरका समझकर दण्डवत् किया जब वह सब आनन्द देखतेहुये उद्धव गाँवके निकट पहुँचे तब नन्दराय आदिक दूरसे रथ व भेष श्यामसुन्दरका देखतेही उनको मुरली-मनोहर समझकर मिलनेवास्ते दौड़े व केशवमूर्तिको न देखकर मन में उदास होगये पर उद्धवको भेजा हुआ मोहनप्यारेका जानकर बड़े आदर भावसे अपने घर लिवा लाये व पाँव उनका धोकर छत्तीस व्यञ्जन खिलवाये व पान इलायची देकर उत्तम शय्या उनके आराम करनेवास्ते बिछा दी जब उद्धव थोड़ी देर तक सोकर उठे तब नन्द व यशोदाने वसुदेव व देवकी व श्याम व बलरामकी कुशल उनसे पूंछकर बोले ॥

दो० नंदगोप करजोरिकै पूंछत शीश नवाय । माखन प्रभु गोपालकी कहो कथा समुझाय ॥
करत हमारी सुधि कभी कहु उद्धव बलवीर । पुलकगात गद्गद वचन पूछत नंद अभीर ॥

सो० चूक पड़ी अनजान कछु पछताने आजुके । घर आये भगवान जाने हमन अहीरकर ॥

अय उद्धव वसुदेव व देवकी का भाग्य बड़ा बलवान् है जो श्याम व बलराम उनके बेटे बनकर हमें बिराना समझते हैं बहुत अच्छा हुआ जो कंस अधर्मी अपने भाइयों समेत मारा गया व वसुदेव व देवकीने कैद से छुट्टी पाई भला यह तो बतलाओ कि कभी राम व कृष्ण मुझे व यशोदा को याद करते हैं या नहीं जिस दिनसे मोहनप्यारेने मुझे विदा कर दिया

तब से मेरा खाना व पहिरना व हँसना व बोलना सब सुख जाता रहा व उसी दिन से यशोदा दिनरात उन्हींके चर्चा व ध्यान में रहकर माखन व रोटी लिये हुई उनकी आशा देखा करती है॥

दो० जेहि विधि तब खेलत हते ग्वालबाल के साथ। सो कबहूं सुधि करतहैं माखनप्रभुब्रजनाथ॥

हे उद्धव मैं नित्य इच्छा करता हूं कि मथुरा जाकर उन्हें देख आऊं पर क्या करूं संसारीकामसे छुट्टी नहीं मिलती जब वनमें जाकर मोहनीमूर्तिके चरण का चिह्न पृथ्वी पर देखता हूं तब मुझे यह सन्देह होता है कि वह कहीं कुंजों में भूल गये हैं जब ढूंढ़ते समय उनको नहीं पाता तब हार मानकर घर चला आता हूं व उनकी मुरली व लकुटिया देखकर जो दशा मेरी होती है वह हाल वर्णन नहीं कर सक्ता व मदनमोहन ने मुझ से फिर वृन्दावन आने का क़रार किया था सो बतलाओ यहां आवैंगे या नहीं देखैं हमारा भाग्य उदय होकर कब उनका दर्शन मिलता है हे उद्धव मैं श्यामसुन्दर को अपना पुत्र जानता था और वह मुझे पिता कहते थे पर उन्होंने बड़े बड़े आपत्काल में ब्रजवासियों की रक्षा की॥

दो० सहसनयन दुखमानिकै कोपकियोजेहि काल। हमकारण गिरिनखधरयो माखनप्रभुगोपाल॥

हे उद्धव उन्होंने लड़कपन में पूतना राक्षसी व वत्सासुर आदिक बड़े बड़े राक्षसों को मारकर कालीनाग को यमुनाजल से निकाल दिया व गोपियों का गोरस चुराकर उनके साथ रासलीला की व अनेक बालचरित्र अपना हम लोगों को दिखलाकर बड़ा सुख दिया बतलाओ कभी इन बातों की चर्चा वसुदेव व देवकी से करते हैं या नहीं॥

दो० उद्धव तुमसे क्या कहौं मनमोहनकी बात। जो लीला ब्रजमें करी सो बरणी नहिं जात॥

हे उद्धव मैं गर्गमुनि के कहने से जानता हूं कि वह परब्रह्म परमेश्वर हैं व पृथ्वी का भार उतारने वास्ते अपनी इच्छा से उन्होंने अवतार लिया है॥

दो० याते यह निश्चय कियो हम अपने मनमाहिं। आदिपुरुष भगवान हैं पुत्र हमारे नाहिं॥

व यशोदा रोकर उद्धव से बोली॥

चौ० कुशल हमारे सुतकी कहौ। जिनके साथ सदा तुम रहौ॥
कबहूं वह सुधि करत हमारी। उन बिन हम दुख पावत भारी॥
सबहिन से आवन कहि गये। बीती अवधि बहुत दिन भये॥

हे उद्धव जिन आदि ज्योति नारायणजी का दर्शन ब्रह्मादिक देवतों को जल्दी ध्यान में नहीं मिलता वह हमारे घर आये और हमने अपने अज्ञान से उनको पुत्र जाना ॥

चौ० फाटत नहीं बज्रकी छाती। अब यह समुझि हृदय पछताती ॥
वैसो भाग्य कभी अब पैहौं। फेरि श्याम को गोद खिलैहौं ॥

दो० ग्वालसखा सँग जोड़ अब गैंवैं को ले जाय। को आवे संध्यासमय बनते गऊ चराय ॥

हे उद्धव अब मैं अपने अंचलसे किस की धूर झाड़कर छाती में लगाऊँ व किसका मुख चूमकर बलैया लेऊं क्षण भर वह सांवली मूर्ति मुझे नहीं भूलती कैसे धैर्य धरौं भला तुम सच कहो मनहरण प्यारे वहां किस तरह सीधे रहते हैं यहां तो ब्रजबालों के साथ अनेक उपाधि किया करते थे वहां किसके साथ खेलते होंगे मुझे तो उनके विना देखे एक क्षण युगसमान बीतता है वह इतने दिन मेरे विना क्योंकर वहां रहे व मैं गोवर्धन पहाड़ आदिक उनके लीला स्थान देखकर समझती हूं कि अभी आया चाहते हैं सो बतलावो कबतक यहां आवेंगे जब इसी तरह नन्द व यशोदा अनेक बातैं कहकर मोहनप्यारे के विरह में रोते रोते व्याकुल होगये तब उद्धव उन्हें धैर्य देने वास्ते बोले तुम लोग उदास मत हो पीछे से श्यामसुन्दर भी आते हैं जब यह वचन सुनतेही वह दोनों प्रसन्न हो गये तब उद्धव ने मुरलीमनोहर व वसुदेवजी की सौगात भेजी हुई उनके सामने रखकर चिट्ठी पढ़ के सुना दी ॥

दो० नंद गोप तलफैं महा माखन प्रभुके हेत। बुद्धिमान उद्धव तिन्हैं या विधि उत्तर देत ॥

हे नन्दराय जिनके घर आदिपुरुष भगवान् ने आनकर बाललीला का सुख दिखलाया उनकी स्तुति कौन वर्णन कर सक्ता है सो तुम बड़े भाग्यवान् हो जो आठों पहर तुम्हें याद व प्रीति वैकुण्ठनाथ की बनी रहती है इसलिये वह भी एक क्षण तुमसे बिलग नहीं होते सो मैं तुमको जीवन्मुक्त समझता हूं ॥

दो० माखन प्रभुको रैन दिन ध्यान धरै जो कोय। प्रभुता तीनों लोककी ताको प्रापत होय ॥

यशोदा बड़े प्रेम से वह चिट्ठी शिर व आंखों में लगाकर रोती हुई

बोली हे उद्धव यह ज्ञान भरी हुई बातें छोड़ सच बतलाओ मोहनप्यारे यहां कब आवैंगे भला मुझको अपनी माय समझकर एक बार फिर दर्शन दे जाते तो उनका बड़ा उपकार मानती ॥

दो० उद्धव यद्यपि हमैं सब समुझावत व्रजलोग। उठत शूल तद्यपि निरखि माखन प्रभु सुख योग॥

हे उद्धव मैं नित्य प्रातसमय माखन रोटी अपने कन्हैया को खिलाती थी वहां यह हाल जाने बिना कौन उसे सवेरे भोजन देता होगा और वह लज्जावश किसी से न मांगकर भूखे रहते होंगे इस बात की चिन्ता मुझे अधिक लगी रहती है कि वह खाने बिना दुःख पाकर दुबला होगया होगा यह बात सुनकर उद्धव ने कहा तुम लोग श्यामसुन्दर को आदि-पुरुष जानकर मेरी बात का विश्वास मानो जिस तरह आग लकड़ी में छिपी रहकर दिखलाई नहीं देती उसी तरह उन निर्गुणरूप का प्रकाश सबके तनमें होकर वह जगदात्मा सब जगह बने रहते हैं पर ज्ञान प्राप्त हुये बिना दिखलाई नहीं देते इसलिये तुम लोग भी उन्हें आठों पहर अपने निकट जानकर उनके वास्ते चिन्ता मत करो वह केवल अपने भक्तों को सुख देने व पृथ्वी का भार उतारने के कारण सगुण अवतार लेकर संसारी मनुष्यों को धर्म का रास्ता दिखलाने वास्ते लीला करते हैं जैसे भृंगीकीट को देखकर दूसरा कीड़ा उसी के रंग होजाता है वैसे प्रीतिपूर्वक परमेश्वर से ध्यान लगानेवाले उन्हीं का रूप होजाते हैं सो तुम लोग भी उनको घट घट व्यापक एकसा समझकर अपने अन्तः-करण में उनका ध्यान लगाओ तो उन्हीं के समान तुम्हारा स्वरूप भी हो जायगा और वह किसी के पुत्र न होकर कोई माता व पिता उनका नहीं है तुम्हारे पिछले जन्मका पुण्य सहाय हुआ जो उनके साथ इतनी प्रीति रखते हो ॥

दो० पहिले ब्रह्मा भेषधरि सिरजत सब संसार। विष्णुरूप से पालकर शिव ह्वै करत सँहार॥

इसलिये तुम जितने स्त्री व पुरुष पिता व पुत्र आदि संसार में देखते हो सबमें उन्हीं का प्रकाश समझो॥

दो० मति जानो सुतकरि तिन्हैं वह सबके करतार। तात मात तिनके नहीं भक्तन हित अवतार॥
सो० हम सब हैं अज्ञान प्रभु महिमा जानैं नहीं। वह प्रभु पुरुषपुराण जन्ममरण से हैं रहित॥

हे नन्द व यशोदा तुम मोहनप्यारे अन्तर्यामी को ईश्वर जानकर भजो तो वह अपना दर्शन ध्यान में देकर तुम्हारा दुःख छोड़ा देवेंगे यह वचन सुनकर यशोदा बोली उद्धव मैं अपने मनको बहुत समझाती हूं पर चित्त मेरा नहीं मानता ॥

दो० नन्द यशोदा गोपसों माखन प्रभु की बात । ऐसी विधि उद्धव कहत बीती सगरी रात ॥

जब चार घड़ी रात रही तब उद्धव नन्दरायसे पूछकर यमुनास्नान करने गये तो राहमें क्या देखा कि सब गोपियां वृन्दावनवासी अपने अपने घरमें दीपक जलाकर बालचरित्र व गुणानुवाद श्रीकृष्णजी का गातीहुई दही मथन करती हैं सो उद्धव जिस जिस द्वारेपर होकर चले जाते थे उस घरके स्त्री व पुरुषोंको श्यामसुन्दरकी चर्चा करते सुनकर उन्हें बड़ा हर्ष होताथा जब उद्धवजी यमुनाकिनारे पहुँचकर स्नानकरने उपरांत नित्य नेम पूजा करने लगे तब प्रातसमय गोपियां चौका झाड़ूआदिक गृहस्थीके कामकाज से छुट्टी पाकर यमुनाजल भरनेवास्ते घड़ा लिये हुई झुण्डका झुण्ड निकलीं उस समय आपसमें इस तरह पर मोहनप्यारेकी चर्चा करती हुई चलीं ॥

चौ० एक कहै मोहिं मिले कन्हाई । एक कहै वह छिपे लुकाई ॥
पीछेसे पकड़ी मोरि बांह । वह ठाढ़े हरि वटकी छांह ॥
कहत एक गोदूहत देखे । बोली एक भोरही पेखे ॥
एक कहै वह धेनु चरावें । सुनो कानदै बीन बजावें ॥
या मारग हम जायँ न माई । दान मांगिहैं कुँवर कन्हाई ॥
एक कहत हरि कीन्हों काज । वैरी मार्यो लीन्हों राज ॥
काहे को वृन्दावन आवें । राज छांड़ि क्यों गाय चरावें ॥
छांड़ो सखी अवधिकी आश । चिन्ता छूटे भये निराश ॥
एक नारि बोली अकुलाय । कृष्णआश क्यों छोड़ी जाय ॥
ऐसी कहत चलीं व्रजनारी । कृष्णवियोग विकल तन भारी ॥

दो० दुखसागर यह व्रज भयो नाम नाव निरधार । डूबे विरहवियोग जल श्याम करैं कब पार ॥

इसीतरह सब व्रजबाला श्यामसुन्दरकी चर्चा करतीहुई यमुनाकिनारे चली जाती थीं राहमें नन्दजीके द्वारेपर रथ खड़ा देखकर बोलीं मालूम होता है अक्रूर फिर आया एकबेर तो उसने हमारे प्राणनाथ को अपने

साथ लेजाकर राजा कंस को मरवा डाला अब क्या हमारी लोथ लेकर उसका पिण्डा पारैगा दूसरी सखी बोली कदाचित् मनहरणप्यारेने हमारी सुधि लेने वास्ते किसीको भेजा हो॥

दो० तिनसों और सखी कहै तुम्हैं नहीं कुछ ज्ञान। अब हमसों अरु कान्हसों काहेकी पहिचान॥

जब इसीतरह सब गोपियां आपसमें बातैं करतीहुई यमुना किनारे पहुँचीं तब उद्धवजी उनकी प्रीतिभरी हुई बातैं सुनकर मनमें कहने लगे॥

चौ० जिनके प्राण प्राणपति पाहीं। लाज काज पतिकी सुधि नाहीं॥

दो० माखनप्रभुको विरह दुख कासों बरणो जाय। जासों बिछुरे प्राणपति ताको कहा सुहाय॥

सैंतालीसवां अध्याय।

उद्धवका गोपियों को ज्ञान सिखलाना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब उद्धव पूजासे सुचित्त होकर नन्दके घर आने लगे तब गोपियोंने जो जल भरनेवास्ते यमुनाकिनारे गईं थीं उद्धवको श्यामसुन्दरका पीताम्बर व मुकुट व वनमाला पहिनें देखकर आपसमें कहा मोहनप्यारे मथुरा जातेसमय एक मनुष्य भेजनेवास्ते कहि गये थे सो यह उन्हींका भेजा हुआ मालूम होताहै जब यह हाल बूझने वास्ते गोपियां एक वृक्षके नीचे निराली जगह खड़ी होगईं तब एक सखी बोली यहमनुष्य मुरलीमनोहरका भेष बनाये हमारी ओर देखता आताहै दूसरीने कहा यह उद्धवजी कल्हसे मोहनीमूर्तिका संदेशा लेकर नंदरायके घर टिके हैं यह वचन सुनतेही जब राधाआदिक गोपियोंने उद्धव को भेजा हुआ श्यामसुन्दर का जानकर बड़े आदरसे बैठनेवास्ते कहा और वह भी उन लोगोंकी सच्ची प्रीति देखकर बैठगये तब सब व्रजबाला उनके चारों ओर बैठकर कुशल पूंछने उपरांत बोलीं हे उद्धव हमैं मालूम हुआ कि तुमको वृन्दावनविहारीने नन्द व यशोदाके धैर्य देनेके वास्ते भेजाहै॥

चौ० भली करी उद्धव तुम आये। समाचार माधव के लाये॥
पठयो मात पिता के हेत। और न काहू की सुधि लेत॥
सर्वस दीनों उनके हाथ। उरझे प्राण चरण के साथ॥

एक सखीने कहा ऐ उद्धव उन्हें हमलोगों की दया क्यों होगी जो

हमारी सुधि लेवें कदाचित् ऐसा कहो कि तुमलोग उनकी चर्चा क्यों करती हो तो इसका यह कारण है॥

दो० हरिके सुमिरण ध्यानमें रहत सकल संसार। याते हमहूं करत हैं देखि जगत व्यवहार॥

दूसरी गोपी बोली हे उद्धव मोहनप्यारा बड़ा कपटी व निर्दयी है जिसतरह वेश्या स्त्री द्रव्य लेनेसे प्रयोजन रखकर सच्ची प्रीति पुरुषकी नहीं करती व पक्षी फूले फूले वृक्षपर बैठकर सूखे वृक्षसे कुछ प्रयोजन नहीं रखते व भँवरा फूलोंका रस लेकर उड़जाता है व दण्डी भिक्षा लेने उपरान्त देनेवाले के पास खड़ा नहीं रहता व प्रजालोग नये हाकिमकी आज्ञा मानकर पुराने हाकिमका कुछ डर नहीं रखते व चेला विद्या पढ़ने उपरान्त फिर गुरुके पास नहीं रहता व यज्ञ करानेवाला ब्राह्मण यजमानसे दक्षिणा लेकर फिर उससे कुछ प्रयोजन नहीं रखता व हरिणआदिक पशु हरे वनमें रहकर जले हुये वनमें नहीं ठहरते व पुरुष भोग करनेके पहिले जितनी प्रीति स्त्रीकी करताहै प्रसंग करने उपरांत उतना प्रेम नहीं रखता उसीतरह श्यामसुन्दर भी मर्त्यलोकमें जन्म लेने से संसारी मनुष्यके समान जब तक यहां रहकर हमारे साथ रास व विलास करतेथे तब तक उन्हें हमलोगों का प्रेम था अब उनको क्या प्रयोजन है जो हमारी सुधि लेवें जैसे उनकी मृदु मुसकान व तिरछी चितवन व अमृतरूपी मीठी मीठी बातोंपर लक्ष्मी जी व देवकन्या मोहिजाती हैं वैसे हमलोगोंकी भँवररूपी आँखैं भी कमलरूपी चन्द्रमुख मोहनीमूर्तिका रस पीकर उसी मदमें आठोंपहर मतवाली बनी रहती हैं॥

दो० लीला मोहनलालकी सदा चैन सुखदैन। ताही सुमिरण ध्यानमें जीवत हैं दिन रैन॥

हे राजन् श्यामसुन्दरकी चर्चामें गोपियां ऐसी लीन होगईं कि उनको अपने तनु व वस्त्रकी सुधि नहीं रही उससमय एक भँवर श्यामरंग उड़ता हुआ वहां आया उसे देखकर एक गोपी बोली हे सखियो जो संदेशा उद्धव से कहती हो वही समाचार इस भँवरेसे जो श्रीकृष्णजी के समान काला है उन्हें कहला भेजना चाहिये जो बातें गोपियोंने मधुकरसे कही थीं उसको भँवरगीत कहते हैं॥

दो० माखनप्रभुके विरहमें गोपिन को नहिं चैन। भँवर सुनाकर कहत हैं उद्धव सं सब बैन॥

उस व्रजवालाकी बात सुनकर दूसरीने उत्तर दिया प्यारी तुझे विश्वास होता है कि भँवरा हमारा दूत होकर संदेशा मोहनप्यारेको पहुँचावेगा सो मेरे निकट जितने श्याम वर्ण हैं उनसे अपने स्वार्थकी आशा न रखना चाहिये॥

दो० कहै एक त्रिय सुन सखी कारे सब यकतार। इनसे प्रीति न कीजिये कपटिनको टकसार॥
सो० देखा करि अनुमान कारे अहि कारे जलद। कविजन करत बखान भँवर काग कोयल कपट॥

दूसरी बोली हे भँवरा मुझे किसी श्याम रंगका विश्वास नहीं आवता पर क्या करूं उस चित्तचोरकी बातें व सुन्दरताई याद आवनेसे चित्त मेरा ठिकाने नहीं रहता॥

दो० मृदु मुसकानि विष डारके गये भुअँग लौं भाग। नन्दयशोदा यों तजे ज्यों कोयलसुत काग॥

जब वह भँवरा सुगन्ध शरीर गोपियोंकी जो चंदन व केशर व इत्र मलेहुये थीं सूंघकर उनके पास आया तब एक सखी ने कहा हे भँवरा तू हमारे निकट मति आव जो तेरे समान श्यामवर्ण होकर मथुराकी स्त्रियों से विहार करता है वहां जा॥

दो० कामिनि मथुरानगरकी माखनप्रभुके हेत। विविध सुगन्ध लगावहीं वह सुवास नहिं लेत॥

दूसरी बोली इस भँवरेकी नाक मथुरावासी स्त्रियोंके अंगकी सुगन्ध सूंघकर भर गई है इसलिये बेपरवाह रहकर कहीं नहीं बैठता दूसरीने कहा हे भँवरा तू मथुरामें जाकर यह संदेशा हमारे चित्तचोर से कह देना कि अपने चाहनेवालोंकी प्रीति छोड़कर उन्हें दुःख देना कौन न्याय है जिस तरह भँवरा एक क्षणसे अधिक किसी फूलपर नहीं बैठता वही हाल तुम्हारा भी समझना चाहिये व लक्ष्मीजी तुम्हारा स्वभाव न जानकर अपनी अज्ञानता से तुमपर मोहित हैं वह तुम्हारे कठोरताईका हाल जानतीं तो कभी तुमसे प्रीति न करतीं व मथुराकी स्त्रियां भी तुम्हारे निर्दयीपनका हाल न जानकर मायाजालमें फँसी हैं॥

दो० नातो तुम सांची कहो जो जानत सबकोय। माखनप्रभु के नेहमें कैसे लागत सोय॥

दूसरीने कहा जो हमारा प्राण हरकर चलागया और कुछ सुधि नहीं

लेता ऐसे कपटीको तू क्या संदेशा भेजती है दूसरीने कहा हे भँवरा तुम हमारी ओरसे मथुरा की रानियों को कहिदेना कि अभीतक तुमको श्यामसुन्दरकी कठोरताई का हाल नहीं मालूमहै परमेश्वर तुम्हारी प्रीति व उनका निर्दयीपन प्रतिदिन अधिक करे जिसमें हमारीसी गति तुम्हारी भी होजावे दूसरी बोली हे सखियो श्यामसुन्दर सर्व गुणोंमें भरे होकर जैसी सुन्दरताई वह रखते हैं वैसा रूपवान् तीनों लोक में कोई न होगा इसलिये सब स्त्री स्वर्ग व मर्त्यलोक की उनपर मोहिजाती हैं हम गँवारियों की कौन गिनती है दूसरीने कहा ऐ भँवरा तैंने माधवके चरणकमल का रस पिया इससे तेरा नाम मधुकर हुआ सो तू मोहनप्यारे कपटीका मित्र व दूत होकर हमारे पास आया है सो श्यामवर्ण सब कपटी होते हैं इसलिये तू हमको मति छू दूसरीने कहा ऐ भँवरा तू कुब्जाके अंगका केशर अपने मस्तक पर लगाकर श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार जो मुझे लेने आयाहै सो मैं केवल तेरे बिनती करने से जाने नहीं सक्की जब मैं कुबड़ी दासीके बराबर भी नहीं हूं फिर वहां जाकर क्या करूं इसलिये तुम मथुरा में जाकर उन्हींके सामने कृष्ण व कुबड़ीका यश गावो जिसतरह बहेलिया अलगोजा बजाकर हरिणको वनमें पकड़लेता है उसीतरह मोहनप्यारेने मुरली बजाकर हमलोगोंको भी अपने प्रेमके जालमें फँसालिया ॥

दो० जो मैं ऐसा जानती प्रीति किये दुख होय। नगर ढिंढोरा फेरती प्रीति करै जनि कोय ॥

जिससमय वह गोपी यह बातें भँवरेसे कहरही थीं उसी समय ललिता सखी बोली सुनो प्यारियो श्रीकृष्णजीने कुछ इसी जन्म में कठोरपन नहीं किया यह सदा इसी तरह कपट करते आये हैं रामावतारमें बालिवानरको विना अपराध मारकर सूर्पणखा रावण की बहिन जो उनपर मोहित हुई थी नाक कटवालिया व वामनअवतार में राजा बलिके पास जाकर तीन पग पृथ्वी दान मांगी जब उसने ब्राह्मण समझकर संकल्प दिया तब विराट्रूप धरकर दो पगमें चौदहों भुवन नापलिया व तीसरे पगके बदले राजा बलि ऐसे धर्मात्माको बांधकर पातालमें भेज दिया सिवाय इसके और जो काम कपटका उन्होंने किया है वह हाल कहां तक तुमसे कहूं

जिसकी कुछ गिनती नहीं हो सकी कदाचित् तू कहै कि ऐसे कपटी मनुष्यसे प्रीति करके क्यों इतना दुःख उठाती है सो सुन मैं किस गिनती में हूं बड़े बड़े राजा उनकी स्तुति व कथा सुनने से घरद्वार व राज पाट व स्त्री व पुत्रोंकी प्रीति छोड़कर मुक्त होनेवास्ते वनमें चले जाते हैं व उस मोहनीमूर्तिकी छवि देखकर देवकन्याओंका चित्त ठिकाने नहीं रहता यह सब हाल तुम अपनी आंखोंसे देख चुकी हो दूसरीने कहा मैं नहीं जानती कि श्यामसुन्दरको अपने वियोगमें हमारे प्राण लेनेसे क्या गुण निकलैगा जो ऐसा करते हैं दूसरीने कहा हे भँवरा हमलोगोंने मोहन-प्यारेसे इसवास्ते प्रीति लगाई थी जिसमें कुछ रोज निबहैगी सो वह अ-पनी मृदु मुसुकान से मन हमलोगों का चुराकर इसतरह बिलग होगये जानो कभीकी जान पहिँचान नहीं थी कदाचित् मैं उनको ऐसा कठोर जानती तो कभी प्रीति न करती दूसरी बोली हे सखी तैंने नहीं सुना जो कुब्जा दैत्योंका जूठा खाकर दासी कहलावती थी उसे अब श्यामसुन्दर ने पटरानी बनाया है यह बात सुनकर हमलोगोंसे लज्जावश किसीको मुख नहीं दिखलाया जाता॥

दो० अब खेलत दोउ लाज तजि बारहमासी फाग। लौंडीकी डौंड़ी बजी हांसी औ अनुराग॥

दूसरीने कहा देखो जिसे नारायण व दीनदयालु कहते हैं वह धर्म व दया भुलाकर ऐसा निर्दयी होगया कि तीन कोस राह चलकर हमारा दुःख छुड़ानेवास्ते नहीं आता केवल संदेशा भेजकर हम दुखियारियोंके घावपर नोन छिड़कता है॥

दो० एक सखी याविधि कहै पगी श्यामकी प्रीति। इथहूं सीखा आजते पत्रलिखनकी रीति॥

दूसरी सखी बोली ऐ भँवरा तू अवश्य उस चित्तचोरसे पूछियो भला यह कठोरताई छोड़कर कभी अपना दर्शन देवेंगे या नहीं दूसरीने पूछा हे उद्धव श्याम व बलराम बालापनकी प्रीति समझकर कभी हमलोगों को याद करते हैं या नहीं यह सुनकर दूसरी गोपीने उसे उत्तर दिया हे सखी अब श्याम व बलराम मथुरावासी महासुन्दरी व चतुर स्त्रियोंके

वश होकर वहां विहार करते हैं हम गँवारियों को किसवास्ते याद करेंगे हमलोग पहिले ऐसा जानतीं तो क्यों वहां उनको जाने देतीं॥

दो० आछे दिन पाछे गये हरिसे कियो न हेत। अब पछिताये होत क्या चिड़ियां चुनिगईं खेत॥

जिसतरह आठ महीनेतक पृथ्वी व वन व पर्वत मेघकी आशापर तपने का दुःखअपने ऊपर उठाकर बैठेरहते हैं व बरसातमें मेघराजा पानी बरसाने से उनको ठण्ढा करता है उसीतरह श्यामसुन्दर भी आनकर अपने चन्द्रमुख की शीतलताई से हमारे हृदयकी तपन बुझावेंगे दूसरी बोली हे सखियो इन वृथा बातों से कुछ प्रयोजन नहीं निकलता तुम्हें उद्धवसे यहां आवने का कारण पूछना चाहिये यह वचन सुनकर दूसरी बोली हे उद्धव तुम किसवास्ते यहां आये हो कभी वह भी इस ओर आवने चाहते हैं या नहीं दूसरी ने कहा यह क्यों नहीं पूछती कि राम व कृष्णने गुरुके यहां सिवाय कपटके कुछ धर्म व दया भी पढ़ा है या नहीं दूसरी बोली हे प्यारियो वसुदेव जीने श्याम व बलराम को यहां अहीरों की संगति में रहने से तीर्थजल से स्नान कराके उन्हें जनेऊ पहिनाया अब वह किसवास्ते उनको यहां आने देंगे दूसरी गोपी जो विरहसागर में डूबरही थी झुंझलाकर बोली जब वह निर्दयी हमारी सुधि नहीं लेता तो तुमलोग किस वास्ते बारम्बार उसका हाल पूछती हो यह कठोर वचन सुनकर दूसरी बोली हे उद्धव इस गँवारी के मुखमें आग लागे जो ऐसी बात कहती है तुम सच बतलाओ वह कब यहां आवेंगे॥

चौ० ता दिन उइहैं भाग्य हमारे। जा दिन मिलिहैं नन्ददुलारे॥

दूसरी बोली हे उद्धव तुम हमारे प्राणनाथ के भेजेहुये यहां आये हो इसलिये जहां तुम्हारे चरण परते हैं वहां की धूर हमलोगों को अपनी आंखों में लगाना उचित है उद्धव यह दशा गोपियों की देखकर मनमें कहने लगे देखो संसार में इनके बराबर दूसरे किसीको भक्ति व प्रीति वैकुण्ठ-नाथकी न होगी ऐसा समझकर उद्धव आनन्दरूपने राधाप्यारी को जो अलग खड़ीहुई यह सब बातें सुनती थी दण्डवत् किया व रत्नोंकी माला जो श्यामसुन्दरने भेजा था उसे देकर कहा हे गोपियो तुम्हारे समान दूसरे

का भाग्य होना बहुत कठिन है जो आठों पहर ऐसी प्रीति श्यामसुन्दरसे रखती हो पिछले जन्मके पुण्यसे मैंने तुम्हारा दर्शन पाया संसारी मनुष्य वेद व पुराण सुनकर यज्ञ व होम व दान व व्रत व तीर्थ इसी आशापर करते हैं जिसमें हरिचरणोंकी भक्ति उत्पन्न हो पर तुम्हारे समान वह पदवी नहीं पाने सक्के इसलिये मुझको ऐसा आशीर्वाद देव जिसमें मुझे भी तुम्हारे समान हरिचरणों में प्रीति हो ॥

दो० महिमा तुम्हरे भाग्यकी कासों वरणी जाय । जिनके चितमें नित बसैं माखन प्रभु यदुराय ॥

हे व्रजबालो श्रीकृष्णजी ने मेरे ऊपर बड़ी दया करके यहां भेजा कि मैं तुम्हारा दर्शन पाकर कृतार्थ हुआ अब जो चिट्ठी व सन्देशा प्राणनाथका लायाहूं मन लगाकर सुनो जब उद्धवने श्याम व बलराम की कुशल कहकर चिट्ठी गोपियों को दी तब राधाप्यारी आदिक सब व्रजबालों ने उसे अपनी अपनी छाती में लगाया ॥

दो० अतिहित पातीश्यामकी सब मिलिमिलि सुखपाय । उद्धवकर दीन्हीं बहुरि दीजै बांचि सुनाय॥

जब उद्धवजी चिट्ठी खोलकर पढ़नेलगे तब गोपियोंने क्या देखा कि चिट्ठी में कुब्जानाम लिखकर हरतालसे मारने उपरान्त वहां गोपिका बनाया हुआ था यह देखकर गोपियां बोलीं देखो मोहनप्यारेका मन आठों पहर कुब्जामें लगा रहता है इसीवास्ते उन्होंने गोपिकाकी जगह उसका नाम लिखकर उसपर हरताल ऐसा लगाया मानों पीताम्बर अपना उसको ओढ़ायाहै हे राजन् उद्धव चिट्ठी सुनाकर गोपियों से बोले कि श्यामसुन्दरने मुझको तुम्हारे पास आत्मज्ञान समझानेवास्ते भेजकर ऐसा कहा है कि तुमलोग मुझसे भोगकी आशा छोड़कर योग साधो तो तुम्हें वियोगका दुःख न होगा तुमलोग मेरा ध्यान जो दिनरात करती हो इसलिये मैं तुम्हारे समान दूसरेको प्यारा नहीं जानता सो ऐ गोपियो तुम्हें श्रीकृष्णजी आदिपुरुषको जो तीनों लोकके उत्पत्ति व पालन करनेवाले हैं अपना पति समझना न चाहिये सुनो हवा व पानी व मिट्टी व अग्नि व आकाश पांचतत्त्वसे शरीर मनुष्यका बनकर उस तनुमें उन्हीं का प्रकाश रहनेसे मनुष्यको चलने व फिरने व बोलने व शुभ अशुभ कर्म

करनेकी सामर्थ्य रहती है पर नारायणजीकी मायासे वह रूप उनका किसी को दिखलाई नहीं देता इसवास्ते निर्गुणरूपका स्मरण व ध्यान किया करो तो वह आठों पहर तुम्हारे पास बनेरहेंगे व सगुणरूप पास रहने से ज्ञान व ध्यानमें विघ्न समझकर श्यामसुन्दर तुम्हारे कल्याणवास्ते मथुरा जाकर अलग बसे हैं सो तुमलोग मोहनप्यारेका चमत्कार स्त्री व पुरुष व गृहस्थ व ब्रह्मचारी व वानप्रस्थ व संन्यासी व ग्वाल व गायों में एकसा जानकर सब जीव जड़ व चैतन्यको उन्हींका रूप समझो जो मनुष्य इस तरह आदिपुरुष भगवान्को सब जगह व्यापक जानता है उसे कुछ वियोगका दुःख नहीं होता ॥

चौ० योगसमाधि ब्रह्म चित लावै। परमानन्द तबहिं सुख पावै ॥

दो० आतमहीसे देखिये परम आतमारूप। सबमें पूरण एकरस अद्भुत महाअनूप ॥

हे गोपियो वह उत्पन्न होने व मरने व घटने व बढ़ने से रहित होकर आकाश समान सब जगतपर अपनी छाया रखते हैं जिस तरह किसी स्त्री का पुरुष परदेश गयाहो और वह अपने पतिको सोते व जागते उठते व बैठते खाते व पीते ध्यान में अपने पास देखती रहै तो उसको पुरुषसे अलग कहना न चाहिये उसीतरह तुमलोग भी जो ऋषीश्वर व योगीश्वरों से अधिक पदवी रखती हो उनके ध्यान में लीन रहकर उन्हें अपने से बिलग मत समझो तो वियोगका दुःख तुम्हें न होगा ॥

दो० ताही सुमिरण ध्यानमें रहोसबहि चितलाय। याही विधि तुमसों कह्यो माखनप्रभु समुझाय ॥

और यहभी केशवमूर्तिने कहा है जब तुमलोगोंने रासलीला करती समय पुरुषभाव समझकर पापदृष्टिसे मुझे देखा तब मैं अन्तर्धान होगया जब तुमने ज्ञानकी राह मुझे परमेश्वर जानकर मेरा ध्यान किया तब मैंने तुम्हारी भक्ति देखकर फिर तुमको दर्शन दिया सो उसी तरह मेरे निर्गुणरूपका ध्यान करो तो आठों पहर तुम्हारे पास बनारहूंगा ॥

दो० सुनतहि उद्धवके वचन रहीं सबै शिरनाय। मानहुँ मांगत सुधारस दीन्हीं गरल पियाय ॥

यह ज्ञान भरीहुई बातें सुनकर श्यामाने कहा हे उद्धव जहांसे यह सब रत्नादिक व मोतीकी माला लेआयेहो वह अनमोल लाल मेरा कहां है

उनके विना हमें तीनोंलोककी सम्पत्ति अच्छी नहीं लगती इसलिये यह सब गहना उसी को जाकर फेर देव मेरें काम का नहीं में केवल उस मोहनीमूर्ति का दर्शन चाहतीहूं ॥

क० धर्मके सँघाती एक बाती न कहत बनै थिर में थहराती जो लहाती हित रामके।
जाके पूत नाती करैं भीति अविहाती यह काहू न सोहाती वश भये ऐसे वामके ॥
मोहन कुजाती कुबिजाती संग जाती अब हमसों कहाती वे हमारे कौन कामके।
छाती दाहिवेको यह पाती ले सिधारे ऊधो घाती करी तुमहूं संघाती सखा श्यामके ॥

दूसरी गोपी बोली हे उद्धव यह कौन न्यायकी बात है जो हमलोगों को योग साधनेवास्ते कहकर आप कुब्जा आदिक मथुराकी स्त्रियोंसे भोग विलास करते हैं भला यह तो बतलाओ कभी उस आनन्द व खुशी की सभा में हमारी चर्चा भी होती है या नहीं ॥

दो० यह सब दोष लगै हमैं कर्म रेख को जान। प्रेमसुधारस सानिकै अब लिखि पठयो ज्ञान॥

दूसरी ने कहा हमलोग दिनरात मोहनप्यारेके ध्यानमें रहकर सिवाय रोने के दूसरा कुछ काम नहीं करतीं तिसपर वह योग व वैराग्य लिखकर हमारे कलेजे की दबी दबाई अग्नि सुलगाते हैं ॥

चौ० ज्ञान योग विधि हमैं सुनावैं। ध्यान छोड़ि आकाश बतावैं ॥
जिनको मन लीला में रहै। उनको को नारायण कहै ॥
वालकपनसे जिन सुख दयो। सो क्यों अलख अगोचर भयो ॥
जो तनु में प्रिय प्राण हमारे। सो क्यों सुनि हैं वचन तुम्हारे ॥
एक सखी उठि कहै विचारी। उद्धव की करिये मनुहारी ॥
इनसे सखी कछू नहिं कहिये। सुनिकर वचन मौन धरि रहिये ॥
एक कहै अपराध न याको। यह आयो भेजो कुब्जा को ॥
अब कुब्जा जो जाहि सिखावै। सोई वाको गायो गावै ॥
कबहूं श्याम कही नहिं ऐसी। कही आय व्रज में इन जैसी ॥
ऐसी वात सुनै को माई। उठत शूल सुनि सही न जाई ॥
कहत भोग तजि योग अराधो। ऐसी कैसे कहिहैं माधो ॥
जप तप संयम नियम अपारा। यह सब विधवा को व्यवहारा ॥
युग युग जीवें कुँवर कन्हाई। शीश हमारे पर सुखदाई ॥
हमको नियम धर्म व्रत येहा। नँदनन्दनपद सदा सनेहा ॥
उद्धव तुम्हैं दोष को लावे। यह सब कुब्जा नाच नचावे ॥

दो० रहन देव ऐसे हमैं अवाधि आशकी थाह। फिरि हमको पावैं नहीं बौरें सिंधु अथाह ॥

सो० लायो युवतिनयोग जो योगिनके भोगतुमा। हमतनु भख्यो वियोग भये अधिकदुखश्रवणसुनि॥

उसी समय राधिका बोली ॥

स० जो हरि जाय बसे मथुरा हमरे जिय प्रीति बनी रहि सोऊ।
ऊधो बड़ो सुख येहू हमैं अरु नीके रहैं वह मूरति दोऊ॥
हमरे नामकी छाप पड़ी अरु अंतर बीच कहै नहिं कोऊ।
श्रीराधाकृष्ण सबै तौ कहैं अरु कूबरीकृष्ण कहै नहिं कोऊ॥

दूसरी बोली हे उद्धव अबतक हमलोगों को श्यामसुन्दरके आवने की आशा बनी थी सो तुमने यह योग व वैराग्यका सन्देशा सुनाकर हमैं निराश किया हम गँवारी अहीरियां सिवाय गोरस बेंचनेके योग साधने का हाल क्या जानैं तुम दयाकी राह हमैं अबला अनाथ समझकर अपने साथ श्यामसुन्दर के पास लेचलो॥

दो० अधरअरुण मुरली धरे लोचन कमलविशाल। क्यों बिसरतउद्धवहमैं मोहन मदनगोपाल॥
क० ऊधो तुम सुघर सिखावत हौ नीके योग हौं तो गति चाहत न काशी अविनाशी की।
ब्रह्माकी इन्द्रकी उपेन्द्रकी न चाहौं भूति तोयनिधि धनेशकी दिनेशकी न पाशी की॥
तन मन नयन में पूरि रहे प्यारेलाल बाल कहा जानैं गति शंकर उदासी की।
नाशी लोकलाज वृन्दावन के मवासी संग मेरी मति दासी भई कान्ह ब्रजवासी की॥

उद्धव ब्रजबालोंका वचन सुनतेही अपने ज्ञानका अभिमान भूलकर उन्हें उत्तर देने नहीं सके॥

दो० योगकथा युवतिन कहीमनहींमन पछिताय। प्रेमवचन तिनके सुनत रहिगये शीश नवाय॥
सो० तब जान्यो मनमाहँ ये गुणहैं सब श्याम के। भेज्यो सुघर सुजान याही कारणके लिये॥

उद्धवने फिर ज्ञानकी राह कहा हे ब्रजबालो जिसतरह पानीपर रेखा खींच देने से स्थिर नहीं रहती उसी तरह संसारी व्यवहार स्वप्नके समान झूठा होता है इसलिये तुमलोगों को चाहिये कि अपनी अपनी आंखें बन्द करके हृदय में ध्यान एक फूल कमल व चतुर्भुजीरूप नारायणजीका मन लगाकर करो तो उस पुष्पके बीचमें तुमको दर्शन परमेश्वरका प्राप्त होयगा यह बात सुनकर एक गोपीने कहा हे उद्धव कदाचित् नन्दलालजी रूप व रेखा नहीं रखते थे तो यशोदाने उनको किसतरह जानकर पालने में झुलाया व ऊखलसे क्योंकर बांधे गये थे व हमारा गोरस किसतरह

चुराकर खाया तुम्हारे झूठे ज्ञानको लेकर ओढ़ैं या बिछावैं तुम अपने अज्ञानसे हम सब अबला अनाथिनियों को योग व वैराग्य सिखलावते हो तुम्हें कुछ लज्जा नहीं आती दूसरी बोली हे उद्धव एक तो हम आप श्यामसुन्दरके विरह में व्याकुल होरही हैं दूसरे तुम और ऐसी ऐसी झूठी बात सिखलाकर हमारे घाव पर नोन छिड़कते हो मोहनप्यारे ने हमलोगों को इसतरह तज दिया कि जिसतरह सांप केंचुलि छोड़कर फिर उससे कुछ प्रयोजन नहीं रखता दूसरीने कहा हे उद्धव कन्हैया ने दावानल व इंद्रके कोप व दैत्यों के हाथसे हमारा प्राण बचाकर यहां अनेक लीला कीं देखो उन्हों ने परब्रह्म परमेश्वरका अवतार होकर राजा कंसकी दासीको अपनी रानी बनाई यह बात सुनकर हमलोगों को लज्जा अती है॥

चौ० उद्धव कहां कंसकी दासी। यह सुनि होत सकल ब्रज हासी॥

दो० गावत सब जग गीत अब वा चेरी के काज। उद्धव यह अनुचित बड़ो चेरीपति ब्रजराज॥

सो० हमैं देत वैराग आपु तो दासी वश भये। चतुर चिचोड़त आग उद्धव यह अचरज बड़ो॥

दूसरी बोली हे उद्धव कदाचित् मोहनप्यारे को कूबड़ प्यारा हो तो हम लोगभी कुबड़ी बनकर मथुरामें चलैं व अपनी टेढ़ी चाल दिखलाकर उन्हें फिर यहां लेआवैं जिसमें कुबड़ी उनसे छूटै हे उद्धव फिर कोई ऐसा दिन होगा जो मोहनप्यारे यहां आनकर हमलोगों का दुःख छुड़ावैंगे दूसरी बोली अब मुझे वृन्दावन आवनेकी आशा जाती रही॥

दो० यहां चरावत ये सदा नन्दमहरकी गाय। वहां जाय राजा भये माखन प्रभु यदुराय॥

दूसरी ने कहा हे उद्धव जब मोहनप्यारेने हम गोपियोंको छांड़ दिया तो अपना नाम गोपीनाथ किसवास्ते धराया और जब उन्होंने कुबड़ी से प्रीति की तब फिर जग दिखानेवास्ते चिट्ठी व संदेशा भेजकर हमारे हृदय की दबी दबाई आग क्यों सुलगाते हैं॥

सो० उद्धव कहियो जाय अबहूं चेरी को तजो। यह दुख सह्यो न जाय सवति कहावति कूबड़ी॥

हे उद्धव इतनी बात मेरी ओर से कुब्जा को अवश्य कह देना कि श्यामसुन्दर की नई प्रीति पर तू मोहित हुई है पर उनकी कठोरताई का हाल भी सुन रख॥

क० जाकी कोख जायो ताको कैद करवाय आयो धायकर मारी नारि निठुर मुरारि हैं।
जेती व्रजनारी तेती मिलिमिलि मारी अनमिलिहूं मारी जो मिलिहैं ताहि मारिहैं॥
सुनरी ए चेरी मैं तो तेरी सौं कहति वेतो सरसनयन हरि आंशुवनि ढारिहैं।
वड़ेहैं शिकारी पर इन्हैं न सँभारी नारि मारिबेको नवल कन्हैया तलवारि हैं॥

दूसरी बोली हे उद्धव हमलोग अपना दुःख तुमसे कहांतक कहैं कदाचित् वह प्रथमसे वसुदेव व देवकी के पास रहकर यहां न आवते तो हमलोगोंको क्यों इतना दुःख उठाना पड़ता॥

चौ० करिकै ऐसी प्रीति कन्हाई। अब चितधरी महा निठुराई॥
जबसे व्रज तजि गये विहारी। तबसे ऐसी दशा हमारी॥

हे उद्धव उसी दिनसे हमलोगोंका खाना पीना हँसना बोलना सब सुख छूटगया दिनभर उनके आनेका रास्ता देखते व रातको तारे गिनते बीतकर सिवाय चर्चा व ध्यान उस मोहनीमूर्तिके दूसरी बात हमें अच्छी नहीं लगती ऐसे जीनेसे हमलोग मरजातीं तो उत्तम था॥

दो० कहँलगि कहिये निजव्यथा औ हरिकी निठुराय। तापरलाये योग तुम अबलन करनसहाय॥
सो० कठिन विरहकी पीर जेहि व्यापै सो जानिहै। क्यों धरिहैं मन धीर सुनिकर वचन भयावने॥

दूसरी बोली हे उद्धव पहिले अक्रूर आनकर श्यामसुन्दरको यहांसे मथुरा में लेगया सो उनके विरहमें हमलोगों की यह गति हुई अब तुम सगुणरूपकी प्रीति छुड़ाकर इसतरह निर्गुणरूपका ध्यान करनेवास्ते हमें सिखलाते हो जिसतरह कोई भूखेके आगेसे थाली भोजनकी छीनकर उसे मिट्टी खानेको कहे जो श्यामसुन्दरको ज्ञान सिखाना था तो किस वास्ते रातको वंशी बजाकर हमलोगोंको घरसे बुलाया व रास विलास करके हमारा तन व मन हरलिया अब मथुरामें जाकर ज्ञानी हुये हैं जब तुम्हारा व श्यामसुन्दर का एक सम्मत है तब तुम हमारी सहायता क्यों करोगे॥

दो० मनकी मनहीमें रही कहिये कहा विचार। हम गोहार जितते चहैं उतते आई धार॥
सो० जानतहैं सब कोय जैसी हम सेवा करी। हम सहि लीनों सोय पावोगे अपनो कियो॥

दूसरीने कहा हे उद्धव शास्त्रानुसार गुरु अपने चेलोंके कानमें मंत्रोपदेश करते हैं दूसरेसे मंत्र नहीं कहला भेजते कदाचित् उन्हें हमलोगोंसे योग सधवानाहै तो आप यहां आनकर वृन्दावनके कुंजों में ज्ञान सिखलावें॥

दो० तब खेलत सौगन्ददे राख्यो कछु न बचाय। अब सीखे यह योगकहँ उद्धव कहियो जाय॥

सो० हमको निर्गुणज्ञान जहँ स्वारथ तहँ सगुणहैं। लिखि भेज्यो निरवान चाटै सहत लगायकर॥

दूसरी बोली ऐ उद्धव जिन सखियोंके बालोंमें श्यामसुन्दर अपने हाथसे फुलेल डालकर फूलोंसे शिर गूंधते व अच्छा अच्छा गहना व कपड़ा पहिनाकर उनके अंगपर अतर लगाते थे उन्हींलोगोंके अंगमें भस्म लगाने व शिरपर जटा रखने व योग साधने वास्ते कहला भेजाहै जिन कानोंमें अपने हाथ जड़ाऊ कर्णफूल व बाली व पत्ता पहिनाकर प्रसन्न होतेथे उन्हीं कानोंमें अब मिट्टीकी मुद्रा डालनेको कहाहै जिस तनुपर हमलोगों को गोटे व किनारीकी रँगीहुई सारियां पहिनावते थे उसी अंगपर गेरुआ वस्त्र पहिरनेवास्ते कहाहै जिस गले में श्यामसुन्दर अपना हाथ डालकर गले लगातेथे उस गले में अब सेल्ही पहिरने को आज्ञा दी है यह कौन न्याय करते हैं॥

दो० वहि गोकुल वहि कुञ्जवन वही सखा वहि ठौर। यक उद्धव व्रजराजबिन भई औरकी और॥

क० याही कुञ्ज कुञ्जनमें गुञ्जत भँवरभीर याही कुञ्ज कुञ्जनमें अब शिर धुनत हैं।
याही रसनाते करी रसकी रसीली बातैं याही रसनाते अब गुनगन गिनत हैं॥
आलम बिहारी बिन हृदय अचेत भये येहों दई हित कहत कैसे बनत हैं।
जेही कान्ह नयननके तारे हुये निशि दिन तेही कान्ह कानन कहानी अब सुनत हैं॥

दूसरी ने कहा॥

क० ओढ़िबेको कन्था अरु भसम रमाइबेको कानों के कुण्डल कर टोपियां बनावैंगी।
हाथ में कमण्डलु औ खप्पर भराइबेको आदेश आदेश करि शृंगियां बजावैंगी॥
ऋद्धि दीनी कुबजाको सिद्धि दीनी गोपिनको फिरैंगी दुआर द्वार अलख जगावैंगी।
एकबात उद्धवजी मन में विचार देखो येती व्रजबाला मृगछाला कहां पावैंगी॥

दूसरी बोली ऐ उद्धव जिसतरह ठगलोग पहिले बटोहियोंके साथ लगकर विनयपूर्वक उससे प्रीति करके पीछे सब धन उनका लूट लेते हैं उसीतरह मोहनप्यारेने प्रथम हमलोगोंसे प्रीति लगाकर तन व मन हमारा हरलिया अब योग व वैराग्य की छुरी मारकर हमारा प्राण लिया चाहते हैं॥

दो० हरि हमसे ऐसी करी कपट प्रीति विस्तार। मुखसे कछु नहिं कहिसकैं समुझत बारम्बार॥

दूसरी बोली ऐ उद्धव एक तो श्यामसुन्दर पहलेसे बड़े निर्दयी थे दूसरे तुम्हारे ऐसे कठोर सखा मिले फिर किसवास्ते वह ऐसा संदेशा न

भेजें और तुम हमलोगोंको ज्ञान विज्ञान समझाकर योगसाधनेवास्ते जो कहतेहो सो हमें इन बातोंसे क्या प्रयोजन है यह कर्म योगियोंको चाहिये और यह जो तुमने कहा कि सबके तनुमें उन्हींका प्रकाश रहताहै इसकारण तुमभी वही हो फिर जिसतरह श्रीकृष्णजीने गोवर्धन पहाड़ अपनी अँगुली पर उठाया था उसीतरह तुमभी यह पर्वत उठाकर मुरली बजाओ जब तुम ऐसा नहीं करनेसके फिर किसतरह तुमको उनके समान जानकर तुम्हारा ज्ञान उपदेश सच्चा मानें इसलिये हमलोग अच्छीतरह जानती हैं कि उनके समान कोई दूसरा नहीं है तुम किसवास्ते झूठ कहकर हमलोगों को धोखा देते हो तुमसे होने सकै तो उस चित्तचोरको यहां लिवालावो हमारा हृदय उस मोहनीमूर्ति के प्रेमसे भर रहाहै दूसरी वस्तु योग व ज्ञान की वहां समाने नहीं सक्ती इसलिये हमलोगोंसे योग व वैराग्य साधा नहीं जायगा यह चिट्ठी जहांसे ले आये हो उन्हींको जाकर फेरदेव योग व वैराग्य वही साधकर यहसब ज्ञान कुब्जा रानीको पढ़ावें जिसमें उसकी शोभा हो जिसतरह अंधेको शीशा देखने व ज्वरके रोगीको भोजन करने से कुछ सुख व गुण नहीं होता उसीतरह हमको योग सिखलानेसे तुम्हारा कुछ अर्थ नहीं निकलैगा ॥

सो० देखु मूढ़ चित लाय कहँ परमारथ कहँ विरह । राजरोग कफ जाय ताहि खवावत हौं दही ॥

दूसरी बोली हे उद्धव पहिले तुम ब्रजबालोंकी दशा देखकर तब उन्हें योग व वैराग्य सिखलावो जिसतरह डूबता हुआ मनुष्य पानी परकी फेन पकड़नेसे नहीं बचता उसीतरह हमलोगोंको जो बीच विरहसागर मोहनी-मूर्ति के गोता खा रही हैं तुम्हारा ज्ञान उपदेश अच्छा नहीं लगता ॥

दो० हम विरहिनि विरहा जरीं तुम मतिजारो अंग । सुख तो तबहीं पाइहैं जब नाचैं हरिसंग ।

क० आयो आयो भयो ऊधो अब ब्रजमण्डलमें रागमें कुराग योग रीति को सुनायो है ।
झोली झण्डा गुदड़ी औ भस्म मुद्रा कानन में हाथन में खप्पर ये स्वांग ले दिखायो है ॥
संयम नियम ध्यान धारणा दृढावत हो ब्रह्मको प्रकाश रसरास दरशायो है ।
कुबरी पै पढ़िआयो वेदको पढाय आयो रथ चढ़ि आयो अनरथ गढ़िलायो है ॥

दूसरी सखी बोली हे उद्धवजी तुम योग और ज्ञान की गठरी बांधकर मथुरा से जो अपने शिरपर यहां ले आये हो सो ब्रजवासियों को योग

व ज्ञान लेने की इच्छा नहीं है तुम यह गठरी काशी में ले जाकर वहां के लोगों को जो मुक्ति की चाहना बहुत रखते हैं देव ॥

चौ० क्या हम करैं मुक्ति ले रूखी। अबला श्यामसंग की भूखी ॥

जिस तरह पियासा मनुष्य जबतक पेट भर पानी नहीं पीता तबतक उसकी पियास ओस चाटने से नहीं जाती उसी तरह बिना देखे मोहनप्यारे के हमारी आंख नहीं मानती ॥

चौ० फिर वह रूप मकट जब देखैं। जीवन सुफल तभी करि लेखैं ॥

हे उद्धव जब यह एक मन हमारा श्यामसुन्दर के चरणोंमें अटक गया तब योग व वैराग्य कौन साधै मैं तुमको मोहनप्यारे का भक्त जानती थी पर तुम्हारे ज्ञान सिखलाने से जो सगुण रूप व लीला छोड़कर निर्गुण रूप व आकाश पाताल का हाल बतलावते हो मुझे जान पड़ा कि तुमको श्रीकृष्णजी की कुछ भक्ति व प्रीति नहीं है ॥

चौ० उद्धव हरि हैं ईश हमारे। सो अब कैसे जात विसारे ॥

दो० योग दीजिये लै तिन्हैं जिनके मन दश बीस। कित डारत निर्गुण यहां उद्धव व्रजमेंखीस॥
योग कथा अब मति कहो उद्धव बारम्बार। भजै और नँदनंद तजि वाको है धिक्कार ॥

जिस तरह हाथी कमल की डाल में नहीं बांधा जाता उसी तरह समुद्ररूपी हमारा विरह चिनगारीरूप तुम्हारे ज्ञान से सूखने नहीं सक्ता देखो जहां छः महीने की रात रास विलास में श्यामसुन्दर के साथ पल भर मालूम हुई थी वहां अब एकक्षण उनके वियोग में युगसमान बीतता है हम से उन्होंने वृन्दावन आवने के वास्ते कहा था उसी आशा पर हम लोग जीती हैं ॥

चौ० उद्धव हृदय कठोर हमारे। फटे न बिछुरत नन्ददुलारे ॥

हमसे मछलियों को उत्तम समझना चाहिये जो पानी से बिछुड़तेही अपना प्राण छोड़ देती हैं ॥

दो० कहँलगि कहिये आपनी उद्धव तुम से चूक। श्यामविरह तनु जरत है सुनत न कोई कूक ॥
सो० उद्धव कहिये जाय मोहन मदनगुपालसों। नयनन देखैं आय एकबार व्रजकी दशा ॥

इसी तरह अनेक बातें कहकर गोपियों ने आंशुओं से उद्धव का चरण धोया व विलाप करके कहने लगीं हे श्यामसुन्दर अब तुम्हारे विरह का

दुःख हमसे सहा नहीं जाता इसलिये अपनी मोहनीमूर्ति दिखलाकर हमारी चिन्ता हरो नहीं तो हमलोगों का प्राण ले लेव आशा दुःखदायी होकर निराश होजाने से शोच नहीं रहता ऐसा कहकर गोपियों ने उद्धव का हाथ पकड़ लिया व सब स्थान रासमण्डल लीला करने श्यामसुन्दर का उन्हें दिखलाकर बोलीं हे उद्धव यह सब स्थान देखकर हमें एक क्षण वह मोहनीमूर्ति नहीं भूलती सो तुम इतना सँदेशा हमारा विनयपूर्वक मोहनप्यारे से कह देना कि तुम्हारे विरहसागर की लहर से शरीररूपी घर हमारा गिरने चाहता है सो जल्दी आनकर रक्षा इसकी करो ॥

दो० तुमतौ महाप्रवीण हौ कहँ कहा समुझाय। माखन प्रभु से सबनकी विनती कहियो जाय ॥

जब यह संदेशा कहती हुई सब ब्रजबाला बौरहों के समान अचेत होगईं तब उद्धव यह दशा देखतेही उन्हें दण्डवत् करके बोले हे ब्रजबालाओ मनुष्यतनु पाने का फल तुम्हीं को प्राप्त है जो आठों पहर उन आदिपुरुष जिनके चरणों का ध्यान ब्रह्मादिक देवता अपने हृदय में रखते हैं करती हो तुम्हारी बड़ाई कोई नहीं करने सक्ता वेद व शास्त्र में स्त्री को निषिद्ध कहते हैं पर तुम्हारा ज्ञान देवतों से भी उत्तम है वैकुण्ठनाथ जितनी प्रीति तुम लोगों की रखते हैं उतनी लक्ष्मी जी पर नहीं करते ॥

दो० जा विधि सुख तुमको दियो वृन्दावनके माहिं। स्वप्नेहू में लक्ष्मी वह सुख पावत नाहिं ॥

हे ब्रजबालाओ परमेश्वर मुझे भी एक गोपी का जन्म देते तो क्या अच्छी बात होती अब मैं वृक्षादिक का जन्म लेकर यहां रहा चाहता हूं जिसमें तुम्हारे चरणों की धूरि मेरे शिर पर चढ़ा करै तुम्हारा प्रेम देखकर देवता मोहित होजाते हैं मेरी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी स्तुति करने सकूं जिस तरह श्रीकृष्णजी को परमेश्वर समान जानता हूं उसी तरह तुम लोगों को भी बूझकर उनसे बिलग नहीं समझता जो पदवी ब्रह्मादिक देवता बड़े परिश्रम से पावते हैं वह तुम लोगों को सहज में प्राप्त हुई इसलिये तुम्हें उन्हीं का रूप समझना चाहिये ॥

दो० महाधन्य तुम गोपिका धन्य तुम्हारो नेम। माखन प्रभु गोपाल सों जिनको बाढ़ो प्रेम ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित इस बात में कुछ

सन्देह मत समझो जो मनुष्य अपना मन प्रेमपूर्वक परमेश्वर में लगावे वह उन्हीं का रूप होता है देखो गोपियां बीच कुल ब्राह्मण व क्षत्रिय के न होकर कभी उन्होंने वेद व पुराण नहीं सुना व किसी तीर्थ का स्नान करके कभी तप व जप भी नहीं किया केवल श्रीकृष्णजी के चरणों में प्रीति रखने से इतनी बड़ी पदवीको पहुँच गईं जिस तरह बड़ा ढेर रुई व लकड़ी का एक चिनगारी आग से जल जाता है उसी तरह उद्धव का ज्ञान ब्रज-बालों के सामने भूल गया तब उद्धव बारम्बार शिर अपना गोपियों के चरण पर रखकर कहने लगे मैं तुम्हारे दर्शन से कृतार्थ हुआ मनुष्य एक क्षण श्यामसुन्दर का स्मरण करने से मुक्ति पाता है तुम लोग तो आठों पहर उनके याद व ध्यान में रहती हो मैं तुमको ज्ञान बतलाने आया था सो तुम से परमभक्ति सीख चला मुझे अपना दास समझकर मेरी सुधि करती रहना हे राजन् उससमय उद्धव प्रेम में डूबकर ब्रजभूमिपर लोटने लगे व वृन्दावनके वृक्षोंसे गले मिलकर कहा तुम सब वृक्ष व पक्षी आदिकका बड़ा भाग्यहै जो तुमने यहां जन्म पाया जिन परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन ब्रह्मा व महादेवको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता सो उन्होंने ब्रजभूमिमें आनकर तुमलोगोंको बाललीलाका सुख दिखलाके अपना दर्शन दिया इसीतरह उद्धवजी गोपियोंकेसाथ जहां जहां वृन्दावनविहारीने लीला की थी वहांपर दो दो चार चार दिन हरिचर्चामें मग्न रहे ॥

दो० ऊधो मन आनन्द अति लखिके प्रेम विलास। आधाथा दिन दोय को बीत गये षट मास ॥

सो० तब उपज्यो मन शोच वचन कृष्णके यादकरि। मनमें भयो सँकोच श्याम बुलाये बेगिम्नहिं ॥

यह सुनकर गोपियोंने कहा हे उद्धव तुमने हमारे भले वास्ते ज्ञान सिखलाया व हमलोगोंने प्रेमवश तुमको दुर्वचन कहा सो बड़े लोग छोटों पर सदासे दया करते आये हैं इस कारण हमारा अपराध क्षमा करके ऐसा उपाय करना जिसमें श्यामसुन्दर अपना दर्शन देवें और हमलोगों की दशा तुम अपनी आंखों से देखे जाते हो जैसा उचित जानना वैसा करना और यह भी मोहनप्यारेसे कह देना हमारा अपराध क्षमा करके बांह पकड़े की लज्जा रक्खें ॥

दो० प्रभु दीननपति दीनहित यही हमारी आस। कबहुं दर्श दिखाइके हरिहैं लोचन प्यास॥

ऐसा कहकर जब राधा आदिक गोपियां उद्धव को बड़े प्रेमसे अपने घर लिवालेआईं तब उद्धवने भी सच्चा प्रेम उनका वैकुण्ठनाथ में देखकर उनके घर भोजन किया उससमय गोपियां बोलीं हे उद्धव तुम वहां जाकर श्यामसुन्दरसे कहना आगे आप दयाकी राह हमारा हाथ पकड़कर वृन्दावनकी कुंजोंमें लिये फिरते थे अब राजगद्दी पाकर कुब्जाके कहने से हमें योग व वैराग्य लिख भेजा है हमलोग आजतक गुरुमुख भी नहीं हुईं योग व ज्ञानका हाल क्या जानें॥

चौ० उनसे बालापनकी प्रीति। जानैं कहा योगकी रीति॥
उद्धव यों कहियो समुझाय। प्राण जात हैं राखैं आय॥

सो० ऐसे कहि व्रजबाम भईं विरहसागर मगन। उद्धव करि परणाम आये यशुमति नन्दके॥

फिर उद्धवने नन्द व यशोदासे कहा तुम सब व्रजवासी धन्य हो जो त्रिलोकीनाथ ने तुमको बाललीलाका सुख दिखलाया व मैं भी तुमलोगों का प्रेम देखकर इतने दिन यहां रहा अब मुझे विदा करो तो वहां जाकर तुम्हारा संदेशा मोहनप्यारेसे कहूं यह वचन सुनतेही यशोदा माखन व घी व मिठाई आदिक अनेक वस्तु श्याम व बलरामके वास्ते देकर बोली हे उद्धव तुम देवकी बहिन से यों कहना कि मेरे राम व कृष्णको फुसलाकर वहां रख न छोड़ैं जल्दी यहां भेज देवैं मैं उनके देखे बिना दिन रात व्याकुल रहती हूं व मोहनप्यारेको बहुत आशिष देकर मेरी ओरसे यह कहदेना तुम्हारे बिना यशोदा बड़ा दुःख पावती है॥

चौ० इतनी दया मातुपर कीजै। एकबार फिर दर्शन दीजै॥

सो० दई यशोमति माय मुरलीललित गुपालकी। उद्धव दीजो जाय प्यारी यह अति लालकी॥

नन्दजीने कहा हे उद्धव तुम आप बुद्धिमान् होकर यहांकी दशा देखे जाते हो अधिक हम क्या कहैं पर मेरी ओरसे इतना मोहनप्यारे अन्तर्यामीसे कहदेना कि एकबेर अपना दर्शन देकर व्रजवासियोंका दुःख हरैं॥

दो० मातु यशोदा नन्दजू तनिक धरत नहिं धीर। कहत सँदेशो श्यामको भरत नयनमें नीर॥
नन्द दोहनी भरिदई कहेउ नयन भरि नीर। वा धवरीको दूध यह जो भावत बलबीर॥

जब यह संदेशा कहकर नन्द व यशोदा रोने लगे व उद्धव उन्हें धैर्य

देने उपरान्त रोहिणी को साथ लेकर वहां से चले तब सब ग्वालबाल व गोपियों ने राम व कृष्णके वास्ते अनेक वस्तु देकर ज्ञानकी राह कहा हे उद्धव तुम हमारी ओरसे दोनों भाइयों को हाथ जोड़कर इतना संदेशा कहदेना कि आठोंपहर प्राण हमारा तुम्हारे चरणों में लगा रहता है इस लिये दयालु होकर ऐसा वरदान दीजिये कि जन्म जन्मान्तर हमारे हृदय से तुम्हारा ध्यान न छूटै यह सुनकर उद्धव बोले हे व्रजवासियो तुम्हें ऐसी सच्ची प्रीति व भक्ति परमेश्वर की है कि संसारी मनुष्य तुम्हारा नाम लेने व दर्शन करने से भवसागरपार उतरजावें व तुम्हारी मुक्ति होने में कुछ संदेह नहीं सो तुमलोग जीवन्मुक्त हो जब इसीतरह उद्धवजी सब छोटों बड़ों को समझाय बुझाय आशा भरोसा देकर मथुरामें पहुँचे व मोहन-प्यारेको दण्डवत् करके मुरली आदिक सब वस्तु उनके सामने रख दी तब श्याम व बलराम उनको देखतेही उठ खड़े हुये व बड़े प्रेमसे गले मिलकर कहा हे उद्धव तुमने वृन्दावनमें बहुत दिन लगाये कहो सब व्रजवासी आनन्द रहकर कभी हमारी याद करते हैं या नहीं॥

चौ० नन्दबबा अरु यशुमति माय। कहौ कौनविधि देख्यो जाय॥
बसत प्राण मेरे में जिनके। कैसे दिन बीतत हैं तिनके॥
कहो दशा व्रज गोपिन केरी। जिनको प्रीति निरन्तर मेरी॥
उद्धव समुभत व्रजकी बाता। भये प्रेमवश पुलकित गाता॥

यह सुनतेही उद्धवने श्यामसुन्दरसे हाथ जोड़कर विनय किया हे वैकुण्ठनाथ वृन्दावनकी महिमा व व्रजवासियोंका प्रेम मुझसे कुछ कहा नहीं जाता आपने बड़ी दया करके मुझे वृन्दावनमें भेजा सो उनका दर्शन पाकर कृतार्थ होआया सब गोपी व ग्वाल आठोंपहर तुम्हारे चरणों का ध्यान अपने हृदयमें रखकर केवल अवधिकी आशा पर जीते हैं हे दीनानाथ जब मैं सन्ध्यासमय वृन्दावनमें पहुँचा तब ग्वालबाल दूर से मेरा रथ देखते ही तुम्हें समझकर दौड़े हुये मेरे पास आये जब मुझे रथ पर बैठे देखा तब आंखों में आंसू भरकर चुप होरहे व यशोदा तुम्हारे विरहमें आठोंपहर यही पछितावती हैं कि मैंने श्यामसुन्दर त्रिलोकीनाथ

को नहीं पहिचानकर ऊखलसे बांध दिया था सो अब मनहरणप्यारे विना सारा व्रज सूना होगया ॥

चौ० दशरथ प्राण तजे सुतलागी। मैं देखतही रही अभागी ॥

दो० यद्यपि मैं बांध्यो बहुत तुमबिन कछु न सोहात। उनकी दशा विलोकिम्नहिं युगसमबीतीरात॥

जब प्रातसमय यमुना किनारे स्नान करने गया तब राधा आदिक गोपियोंने मुझे आपका सेवक समझतेही बड़े आदरसे बैठाल कर तुम्हारी कुशल पूंछी और मैंने तुम्हारी चिट्ठी सुनाकर उनको ज्ञान वा योग अच्छीतरह समुझाया पर उन्होंने मेरा कहना सच न मानकर सब दोष कुब्जाको लगाया और सब व्रजबाला तुम्हारे प्रेममें डूबकर इसतरह बौरहोंके समान रोने लगीं कि सब ज्ञान व योग मेरा उनके सामने भूलकर प्रेमभक्ति मैंने उनसे पाई ॥

दो० गही एकही बात उन मेटि वेदविधि नीति। गोपवेष भजि सांवरे रहैं विश्वभर जीति ॥

सो० नहिं सीखे कछु ज्ञान जो विधि जाहिं सिखावने। तुमहूं बड़े सुजान वहां जाव तो जानिहौ ॥

जिसतरह हरिण अपने गोलसे अलग होकर चौकड़ी भूल जाता है उसीतरह उनका प्रेम देखकर मेरे ज्ञानका अभिमान टूटगया मैंने छः महीने रहकर वहांका हाल देखा तो सब वृन्दावनवासियोंको तुम्हारे ध्यान व चर्चामें लीन पाया वहां जाने से मैं भी उनके समान होकर यहांका आवना भूलगया हे वासुदेव महाराज आपने किसवास्ते ऐसी कठोरताई उन से की है तुम्हारी मायाको सिवाय आपके दूसरा कोई जानने नहीं सक्ता ॥

दो० निगम कहत वश भक्तके पूरण सबसुखसाज। करि सुदृष्टि व्रज देखिये बांहगहेकी लाज ॥

सो० बहुत दुखित तनुक्षीन व्रजवासी तुम विरहवश। तुमतनमन हरिलीन रटत चातकी लौं सबै॥

हे महाप्रभु राधिकाकी दशा आपसे क्या कहूं वह सब शृंगार छोड़कर मैली धोती पहिने हुये दिन रात तुम्हारे विरहमें रोया करती है व महादुबली होकर पहिचानी नहीं जाती व बौरहों के समान कभी श्रीकृष्ण पुकारकर कभी नखसे पृथ्वी खोदतीहै उसके घरवाले अनेकतरह समझाते हैं पर किसीका कहना उसको प्रवेश नहीं करता उसका प्राण निकलने में सन्देह नहीं पर तुम जो कहिआये हो कि हम फिर आवैंगे उसी आशा पर वह आजतक जीती है॥

चौ० अचरज मोहिं बड़ो यह आवै। प्रभु तुमको कैसे यह भावै ॥
करुणामय प्रभु अन्तर्यामी। भक्तन हित धारेउ तनु स्वामी ॥
वेगि कृपा करि दर्शन दीजै। ब्रज जन मरत जिला सब लीजै ॥

दो० यह मुरली दै बिलखिकै कहेउ यशोमति माय। एकबार हित नन्दके दर्श दिखावो आय ॥

सो० जिन गौअनको श्याम आप चराई प्रीति करि। बहुरि न आई धाम बिहरी कुंजनमें फिरत ॥

हे दीनदयालु मैं अधिक कहांतक कहूं आप अन्तर्यामी सबके मनका हाल जानते हैं जब यह बात सुनकर श्यामसुन्दरको ब्रजवासियोंकी प्रीति याद आई तब आंखों में आंसू भरकर रोने लगे ॥

दो० ब्रजवासिन के प्रेममें माखनप्रभु बलवीर। भरत उश्वास उदास चित भरे नयन में नीर ॥

केशवमूर्तिने मुरलीको उठाकर छातीसे लगालिया व आंखैं बन्द करके बीच ध्यान ब्रजवासियोंके डूब गये फिर ब्रजका नाम लेकर ठण्ढी श्वासैं लेते व पीताम्बरसे आंसू पोंछते हुये बोले हे उद्धव तुम अच्छीतरह सबको ज्ञान सिखा आये ॥

चौ० मनमें यों प्रभु कियो विचारा। ब्रजभक्तन मम रूप अधारा ॥
मेरे मुक्ति बड़ी निधि जोई। सो ब्रजवासी लेत न कोई ॥
ताते जो जिनके मन भावै। सोई मोहिं करत बनि आवै ॥
भक्ताधीन जो परम हमारे। ब्रजवासी हमको अतिप्यारे ॥
सदा बसत याते ब्रजमाहीं। इन सम मोहिं और हित नाहीं ॥

दो० मनकरि हरि ब्रजमें रहैं मिलि ब्रजवासिन साथ। तनु धरि देवनकाजहित भये द्वारकानाथ ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् उससमय ब्रह्माने नारद से कहा देखो जिस परब्रह्म परमेश्वरके दर्शन शिवजी के ध्यान में जल्दी नहीं मिलते वही त्रिलोकीनाथ ब्रजनारियों के वास्ते रोते हैं वेदकी ऋचाओंने आनकर गोपियों का जन्म लिया था ॥

दो० परसै उनकी चरणरज वृन्दावन के माहिं। सोऊ गति उनकी लहै यामें संशय नाहिं ॥

हे राजन् उनका बड़ा भाग्य समझना चाहिये जो लोग वृन्दावनकी रज अपने माथेपर चढ़ावते हैं जब ब्रजका हाल सुनकर श्यामसुन्दर व बलराम उदास होगये तब उद्धव श्यामसुन्दरसे बिदा होकर वसुदेव देवकीके पास पहुँचे व नन्द व यशोदा का संदेशा उनसे कहकर अपने घर गये व रोहिणीजी श्याम व बलरामसे भेंट करके राजमन्दिरमें गईं व राम व कृष्णने

उस दूध व मक्खन आदिकको जो नन्द व यशोदाने भेजा था वड़ी प्रीति से खाया व उद्धवजीको भी उसमें से भेजवा दिया ॥

अड़तालीसवां अध्याय ।

कुब्जा और अक्रूरके घरपर श्यामसुन्दर का जाना ॥

शुकदेवजी वोले हे परीक्षित जिस दिनसे मुरलीमनोहरने कुब्जा के घर जानेका करार किया था उसी दिनसे वह नित्य फूलोंकी शय्या विछाकर मोहनप्यारेकी आशा देखा करती थी सो एक दिन श्रीकृष्णजी भक्तवत्सल अन्तर्यामीने उसका प्रेम देखकर विचारा कि हमने कुब्जासे कहाथा कि कंसको मारकर तेरे घर आवैंगे सो अभीतक वह वचन पूरा नहीं हुआ इसलिये वहां जाना चाहिये ऐसा विचारतेही उद्धवको साथ लेकर कुब्जाके घर गये ॥

चौ० जव कुब्जा जान्यों हरि आये । पीताम्वर पांवड़े विछाये ॥
अति आनन्द गई उठि आगे । पूरवजन्म पुण्य सव जागे ॥

जव श्रीकृष्णजी सूर्यसे अधिक तेजवान् रूप वनाये हुये वीच मन्दिर कुब्जाके पहुँचे तव उनके प्रकाशसे वह रत्नजटित स्थान जगमगाने लगा व कुब्जाने वड़ी भक्ति व प्रीतिसे उनको जड़ाऊ चौकीपर बैठाला व उद्धव को बैठने वास्ते आसन दिया और कुब्जा कमलरूपी चरण मोहनप्यारे के गोदमें लेकर वड़े प्रेमसे दावने लगी ॥

दो० आसपास सज साजिके महाराज के काज । आनँदसों मनमें कहै धन्य भाग्य है आज ॥

फिर कुब्जाने चरण केशवमूर्तिके अपने हाथ धोकर चरणामृत लिया व वहुत उत्तम भूषण व वस्त्र जो वनवा रक्खे थे उन्हें पहिनाकर इतर व चंदन उनके अंगमें मल दिया व छत्तीस व्यंजन उनको खिलाकर पान व इलायची सामने रक्खा फिर श्यामसुन्दरको शीशमहलमें रत्नजटित पुष्पों की शय्यापर लेजाकर बैठाला ॥

दो० फिर कुब्जा अस्नानकरि पहिर्यो चीर सुरंग । रत्नजटित भूषण सजे नखशिखलौं सव अंग ॥

जव वह सोलहों शृंगार करके वड़े प्रेमसे श्यामसुन्दरके निकट आई तव श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द सवका मनोरथ पूर्ण करनेवाले कुब्जाका

हाथ प्रीतिपूर्वक धरकर अपनी शय्यापर लेटालिया व उसकी इच्छा पूर्ण करके लोक व परलोक दोनों जगहका सुख उसे दिया॥

दो० टेढ़ीसे सीधी करी दियो रूप अभिराम। दासीसे रानी भई पूजी सब मनकाम॥

हे राजन् देखो जिस पदवीको योगी ऋषीश्वर बड़े तप व जप करने सेभी जल्दी नहीं पहुँचने सके वह फल कुब्जाने एक दिनके चन्दन लगावने से सहजमें पाया जो लोग नित्य विधिपूर्वक नारायणजी का पूजन करते हैं उनको न मालूम कैसी पदवी मिलेगी अपना मनोरथ प्राप्त होने उपरांत कुब्जाने श्यामसुन्दर से हाथ जोड़कर विनय किया हे त्रिलोकीनाथ तुम्हारी मोहनीमूर्ति देखनेकी मुझे आठोंपहर अभिलाषा बनी रहती है इसवास्ते मैं चाहतीहूं कि कुछ दिन यहां रहकर मुझे सुख दीजिये केशवमूर्ति बोले तू धैर्य रख जब मुझे याद करैगी तब मैं तेरे घर आया करूंगा॥

चौ० फिर उठि उद्धवके ढिग आये। भये लाजवश नयन नवाये॥

जब मोहनप्यारे उद्धव समेत अपने स्थानपर गये तब मथुरावासियों ने यह हाल सुनकर कुब्जाके भाग्यकी बड़ाई की॥

चौ० धनि धनि कुब्जा हरिकी रानी। धनि धनि कृष्ण प्रीति करि मानी॥
सदा रहै हरिकी यह रीती। मानत एक भक्त से प्रीती॥
धनि धनि चन्दन अंग लगायो। धनि धनि भवन जहां हरि आयो॥

फिर एक दिन केशवमूर्तिने उद्धवसे कहा तुम स्त्रीकी भक्ति देख चुके अब चलो एक पुरुषका प्रेम दिखलावैं ऐसा कहकर मोहनप्यारे बलरामजी से बोले हे भाई हमने अक्रूरके घर जाने वास्ते करार किया था सो आज तक नहीं गये अब वहां चलकर अक्रूरको हस्तिनापुर भेजके युधिष्ठिर आदि अपने भाइयोंकी सुधि मँगवाना चाहिये ऐसा कहकर बलभद्र व उद्धवसमेत अक्रूरके स्थानपर गये उन्हें देखतेही अक्रूर आगेसे आनकर शिर अपना हरिचरणोंपर रख दिया व मुरलीमनोहरने शिर उसका उठा कर अपनी छाती में लगा लिया फिर अक्रूर अपनी भाग्य उदय समझ कर बड़े प्रेम व भक्तिसे श्याम व बलराम व उद्धवको घरके भीतर लिवा ले गये और दोनों भाइयोंको जड़ाऊ चौकीपर बैठाकर चरण उनके धोये व अपनी स्त्री समेत चरणामृत लेकर विधिपूर्वक पूजा उनकी की व सुगन्ध

उड़नेवास्ते अगर आदिक को अपने घर में जला दिया व छत्तीस व्यञ्जन सोनहुली थालियोंमें लाकर उनके सामने रक्खा जब श्यामसुन्दरने भक्ति व प्रीति उसकी सच्ची देखकर बलरामजी व उद्धव समेत आनन्दपूर्वक भोजन किया तब अक्रूर पान व इलायची उनके सामने रखकर दोनों भाइयों के चमर हिलाने लगा उससमय मोहनीमूर्तिको टकटकी बांधकर देखने से अक्रूरको ऐसा प्रेम उत्पन्न हुआ कि वह चरण वृन्दावनविहारीका पकड़ कर अपनी आंखोंमें मलने लगा जिसतरह परम दरिद्री बहुत धन पाकर प्रसन्न होता है उसीतरह अक्रूरको मोहनप्यारेके आने से परमहर्ष प्राप्त हो कर प्रेमके आंसू बहने लगे ॥

दो० तब अक्रूर कर जोरिकै अस्तुति कही सुनाय। तुम तो पुरुष प्रधानहौ माखनप्रभु यदुराय ॥

फिर अक्रूरने हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ तुम उत्पन्न होने व मरने से रहित होकर तुम्हारे आदि व अन्त व भेद व लीला को कोई जानने नहीं सक्ता सो मेरी दण्डवत् आपको पहुँचै तुम रजोगुण से संसार की उत्पत्ति व सतोगुण से पालन व तमोगुण से नाश करके कुछ इच्छा नहीं रखते व तीनोंलोकका व्यवहार अपनी माया से प्रकट करके आप उससे विलग रहते हैं व संसारी मायामोहमें फँसनेवाला मनुष्य भवसागर पार नहीं उतरता व विना कृपा तुम्हारी मुक्ति मिलना बहुत कठिनहै नारद मुनि व सनकादिक ऋषीश्वर व ध्रुव व प्रह्लाद व अम्बरीष आदि हरिभक्त केवल तुम्हारी दया से इतनी बड़ी पदवीको पहुँचे हैं व गरुड़ सब पक्षियों के राजा तुम्हारा वाहन होकर आप सदा शेषनागके मस्तक पर विराजते हैं व गंगाजी तुम्हारे चरणका धोवन होकर तीनों लोकको तारती हैं व पांचो तत्त्व तुमसे उत्पन्न होकर चारों वेद तुम्हारी श्वास हैं सो विना दया आपके तुमको कोई पहिंचानने नहीं सक्ता तुमने केवल पृथ्वी का भार उतारनेवास्ते अपनी इच्छा से सगुण अवतार लेकर अनेक दैत्य व राक्षसों को मारा है व अब बहुतसे दैत्य व अधर्मी राजोंको सेना समेत मारोगे सो मेरी दण्डवत् लीजिये मैं तुम्हारे पूजन व स्तुति करने की सामर्थ्य नहीं रखता पर अपने भाग्य पर न्यौछावर होता हूं जो आपने दया की राह

आनकर मुझे दर्शन दिया व इस झोपड़ीको अपने चरणोंसे पवित्र किया जो कोई विरक्त होकर तुम्हारा ध्यान व स्मरण साथ प्रीति के करता है उस पर तुम दयालु होकर अर्थ धर्म काम मोक्ष उसे देते हो ॥

दो० माखनप्रभु गोपालसों जो राखत है हेत। अपने चारों हाथ सों चार पदारथ देत ॥

जैसे कुब्जा के रूपको देखकर उसकी इच्छा पूर्ण की वैसे मुझपर भी दयालु होकर ऐसा ज्ञान देव जिसमें आठोंपहर तुम्हारे चरणोंका ध्यान रखकर आवागमनसे छूट जाऊं जब यह स्तुति सुनकर केशवमूर्तिने अक्रूर से वरदान मांगनेवास्ते कहा तब वह हाथ जोड़कर बोला महाराज मैं यही चाहता हूं कि स्त्री व पुत्रोंकी प्रीति मेरे मनसे छूटकर तुम्हारे चरणोंमें भक्ति उत्पन्न हो श्यामसुन्दरने उसे इच्छापूर्वक वरदान देकर कहा साधु व महात्मा की संगत करने से तुम्हारा चित्त शुद्ध होजायगा फिर मोहनप्यारे अपनी माया से अक्रूरका ब्रह्मज्ञान हरकर बोले हे चचा तुम यदुकुल में श्रेष्ठ व हमारे पिताके तुल्य होकर इतनी विनय हमारी क्यों करतेहो तुम्हारी टहल व स्तुति करना हमको उचित है और मैं आपके दर्शन वास्ते आया जब यह मायारूपी वचन सुनकर अक्रूरका ज्ञान भूलगया तब उसने श्याम व बलरामको वसुदेवजीका पुत्र जानकर बड़े प्रेम से गोद में उठा लिया व बड़े हर्षसे उन्हें प्यार करनेलगा तब मोहनीमूर्ति बोले हे चचा तुम्हारे पुण्य व प्रतापसे दैत्यलोग मारे गये पर एक बात का शोच मुझे बना है सो आप दया की राह छुड़ा दीजिये मैं सुनता हूं जब से राजा पाण्डु हमारे फूफा वैकुण्ठको सिधारे तबसे राजा दुर्योधन युधिष्ठिर आदिक मेरे भाइयों व कुन्ती मेरी फूफूको बहुत दुःख देता है सो आप हस्तिनापुर जाइये और उनको धैर्य देकर वहां की कुशल लेआइये हमारा मन उनके वास्ते बहुत उदास रहता है जब अक्रूर उनकी आज्ञानुसार हस्तिनापुरको गया तब श्याम व बलराम उद्धव समेत अपने घर आये ॥

उंचासवां अध्याय।

अक्रूरका हस्तिनापुरमें पहुँचना व पाण्डवोंका समाचार ले आना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दरने बहुतसी वस्तु कुन्ती

व युधिष्ठिर आदिकके वास्ते देकर अक्रूरको बिदा किया तब वह रथपर बैठ-कर कई दिनमें हस्तिनापुर पहुँचे व नगरके बाहर तालाव व बावली व बाग व देवस्थान बनाया हुआ राजा पाण्डु व उनके पुरुषोंका देखकर बहुत प्रसन्न हुये जब वह रथसे उतरकर राजा दुर्योधन व विदुर बैठेथे वहां गये तब सब किसी ने अक्रूर को यादवकुलमें श्रेष्ठ समझकर सन्मानपूर्वक बैठाला उससमय दुर्योधन अभिमानी ने व्यंग्यकी राह अक्रूरसे पूंछा ॥

चौ० नीके शूरसेन वसुदेव । नीके हैं मोहन बलदेव ॥
उग्रसेन राजा के हेत । और न काहू की सुधि लेत ॥
बेटा मारि करत हैं राज । तिन्हैं न काहू से है काज ॥

यह सुनकर अक्रूर चुप होरहा व उसने मनमें विचारा कि इन अधर्मियोंकी सभा में मुझसे दुर्योधनका कठोर वचन नहीं सहा जायगा इस लिये यहां बैठना न चाहिये ऐसा विचारकर अक्रूर वहांसे उठ खड़ा हुआ व विदुरजी को साथ लेकर युधिष्ठिरके घर चला गया तो क्या देखा कि कुन्ती राजा पाण्डु अपने पतिके शोचमें उदास बैठी है अक्रूर ने कुन्तीके चरणों पर शिर रखकर सौगात भेजी हुई श्यामसुन्दरकी सामने धरदी व युधिष्ठिर आदिक पांचो भाइयोंको गोदमें उठाकर बहुत प्यार किया व जब कुन्तीनें आदरपूर्वक अक्रूरको अपने पास बैठाला तब अक्रूरने कुन्ती से कहा अय माता विधातासे कुछ किसीका वश नहीं चलता व सदा कोई अमर नहीं रहता संसारमें जन्म लेकर दुःख व सुख दोनों भोगने पड़ते हैं इसलिये शोच करने से कुछ लाभ न होकर केवल शरीर दुःख पावता है यह सुनकर कुन्तीने अपने मनको धैर्य दिया व वसुदेव आदिककी कुशल पूंछकर बोली हे अक्रूर कभी श्याम व बलराम मुझे व युधिष्ठिर आदिक अपने पांचो भाइयोंको याद करतेहैं या नहीं मेरे बेटोंकी रक्षा जो यहां दुःख-सागर में पड़े हैं कब आनकर करैंगे ॥

दो० मम पुत्रनको तेज बल वर्णत सब संसार । दुर्योधन सुनिकै कुढ़ै दुर्मति अधम गँवार ॥

इसलिये अब मुझसे अन्धे धृतराष्ट्रका दुःख देना जो दुर्योधन अपने पुत्रके सम्मत से काम करताहै सहा नहीं जाता व दुर्योधन दिन रात मेरे

बेटोंके प्राण लेनेके उपाय में रहताहै एक बेर उसने भीमसेनको विषका लड्डू खानेवास्ते भेजा फिर उन्हें लाह के कोटमें रखकर आग लगवादी पर नारायणजीकी दयासे दोनों बेर उनका प्राण बचा जब कौरवलोग इसतरह मेरे बेटोंसे शत्रुता रखते हैं तो वह उनके हाथ से किसतरह जीते बचेंगे यही शोच आठोंपहर मुझे लगा रहताहै जिसतरह बकरी भेड़ियोंके गोलमें अपने प्राणको डरा करती है व हरिणी अपने झुण्डसे विलग होकर सुख नहीं पाती व सांप घर में रहने से भय बना रहताहै वही दशा मेरी रहकर यहांसे भागनेभी नहीं सक्ती श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथने सब जीवों का दुःख दूर करनेवास्ते सगुण अवतार लियाहै फिर मेरे पुत्रोंका दुःख जो विना बापके हैं क्यों नहीं हरते हैं आजतक अपनेको विना वारिसके समझती थी पर अब श्यामसुन्दरके सुधि लेनेसे मुझे मालूम हुआ कि मेराभी कोई सहायकहै जिस तरह मोहनप्यारेने कंसादिक अधर्मियोंको मार कर अपने माता व पिताको सुख दिया उसीतरह मेरी रक्षाभी वही करेंगे हे अक्रूर अपना दुःख कहना किसीसे अच्छा नहीं होता मैं तुमको अपना जानकर सब हाल कहतीहूं जिसतरह ग्रहण लगती समय राहु व केतु चन्द्रमा व सूर्य को ग्रसिलेते हैं उसीतरह मेरे पुत्र दुर्योधन आदिक अधर्मियों के घेरेमें पड़े हैं हे अक्रूर तुम मेरी ओर से कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द को अशीष देकर कहदेना यह बड़े शोचकी बातहै जो मैं तुमसा भतीजा रखकर संसारी दुःख से छुट्टी न पाऊं मुझे महादुःखी व दीन जानकर मेरा कष्ट हरो॥

दो० मेरी औ मम सुतनकी तुमहीं को है लाज। और शरण सूझै नहीं माखन प्रभु व्रजराज॥

हे राजन् अक्रूर हरिभजनके प्रतापसे होनहारके जाननेवाले यह बात सुनतेही आँखोंमें आंसू भरकर बोले अय माता तुम किसी बातका शोच मत करो तुम्हारे पांचो पुत्र श्रीकृष्णजीकी दयासे अपने शत्रुओंको जीत कर बड़े प्रतापी राजा होंगे व श्याम व बलरामने यह संदेशा तुम्हें कहाहै कि फूफू किसी बातकी चिन्ता न करैं मैं जल्दी उनके पास आता हूं॥

दो० कुन्ती सों याविधि कह्यो शोचो मति मनमाहिं। माखन प्रभु जा ओर हैं ताको भय कछुनाहिं॥

जब अक्रूर इसीतरह कुन्ती व युधिष्ठिरआदिक को धैर्य देकर वहां से

बिदा हुये व विदुरको साथ लियेहुये हस्तिनापुरवासियोंसे चलन व व्यवहार युधिष्ठिर आदिक पांचो भाइयोंका पूंछनेलगे तो सबका मत यह पाया जिसमें राजगद्दी युधिष्ठिरको हो फ़िर अक्रूरने विदुरसमेत धृतराष्ट्रके पास जाकर कहा महाराज तुमने कौरवकुलमें श्रेष्ठ होकर अपनी बड़ाई क्यों खो दी व राजा पाण्डु अपने भाईकी गद्दी लेकर युधिष्ठिर आदिक अपने भतीजोंको जो विना बापके हैं किसवास्ते दुःख देते हो और तुम ज्ञानवान् होकर दुर्योधन आदिक अपने अधर्मी बेटोंके सम्मत से क्यों ऐसा पाप करते हो मनुष्य अकेला उत्पन्न होकर मरतीसमय कोई उसके साथ नहीं जाता जिनके वास्ते यह सब पाप बटोरते हो वह परलोकमें तुम्हारे काम न आवेंगे और इस अधर्म करने के बदले तुम्हें नरक भोगना पड़ैगा ॥

चौ० लोचन गये न सूझै हिये। कुल बहिजाय पापके किये ॥

हे धृतराष्ट्र तुमने नहीं सुना जो राजा अपने प्रजा व परिवारको समान न देखकर सबका पालन बराबर नहीं करता वह अवश्य नरक भोगताहै व संसारी व्यवहार स्वप्नेके समान झूठा होकर मरने उपरान्त केवल भलाई व बुराई रहजाती है जो लोग संसारी व्यवहार झूठा समझकर किसी जीवको दुःख नहीं देते वही लोग जगत् में यश पाकर अन्तसमय मुक्त होते हैं इस लिये तुम्हें अपने बेटे व भतीजोंमें कुछ भेद न समझकर युधिष्ठिर आदिकको दुःख देना न चाहिये तुम्हारे बेटे तुमको स्वर्गमें न लेजाकर भतीजे नरकमें न पहुँचावेंगे नरक व स्वर्ग अपनी करणीसे मिलताहै मैं तुम्हारे कल्याण वास्ते धर्मकी बात कहेदेताहूं इसीके अनुसार करनेमें तुम्हारा यश होगा कदाचित् ऐसा नहीं करोगे तो पीछेसे तुम्हें पछताना पड़ैगा ॥

दो० याते तजो अधर्म सब चलो धर्मकी रीति। जिनकी नीति अनीतिहै तिनकी होय न जीति ॥

यह सुनतेही धृतराष्ट्र अक्रूरका हाथ पकड़कर बोले हे भाई तुम यह अमृतरूपी व मंगलकारी बात हमारे लिये बहुत अच्छी कहते हो और मैं भी समझता हूं कि श्रीकृष्णजीने पृथ्वीका भार उतारनेवास्ते जन्म लेकर सब भला व बुरा करनेकी सामर्थ्य अपने वश रक्खी है जो वह चाहैंगे सो होगा उनकी इच्छा प्रबल है पर मैं क्या करूं तुम्हारा उपदेश

हृदयमें नहीं ठहरता बिजुलीकी तरह चमककर निकलजाताहै व दुर्योधन आदिक मेरे बेटे हमारा कहना न मानकर अपनी बुद्धिके प्रमाण काम करते हैं इसलिये मैं उनकी बातों में कुछ नहीं बोलता अकेला बैठा हुआ परमेश्वरका भजन करता हूं तुम मेरी दण्डवत् श्रीकृष्णजीको कह देना यह सुनकर अक्रूरने कहा हे धृतराष्ट्र परमेश्वरकी माया बड़ी बलवान् है जो मेरा उपदेश तुम्हें नहीं लगता न मालूम वैकुण्ठनाथकी क्या इच्छा है ऐसा कहकर अक्रूर धृतराष्ट्रको दण्डवत् करके उठ खड़ा हुआ व कुन्ती के घर पर चलागया और उसे धैर्य देकर रथपर चढ़बैठा ॥

दो० विदुरभक्तसे विदाह्वै कुन्तीसों करजोर। पाण्डुसुतनको देखिकै चले मधुपुरी ओर॥

अक्रूरने मथुरामें पहुँचतेही राजा उग्रसेन व वसुदेवजीके सामने श्याम व बलरामसे हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ मैंने हस्तिनापुरमें जाकर देखा तो तुम्हारी फूफू व युधिष्ठिर आदिक पांचो भाइयोंको दुर्योधनके हाथसे वहुत दुःखो पाया अधिक मैं क्या कहूं आप अन्तर्यामी सब हाल जानते हैं कौरवोंका अधर्म कुछ आपसे छिपा नहीं है जब ऐसा कहकर अक्रूर अपने घर चलागया तब श्रीकृष्णचन्द्र वैकुण्ठनाथ संसारी मनुष्योंकी तरह पहिले उदास हो गये फिर वलभद्रजीसे सम्मत करके उस समय प्रण किया कि महाभारत कराके पृथ्वीका भार उतारूंगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जो मैंने वृन्दावन व मथुराकी लीला तुमको सुनाई यह पूर्वार्ध कथा कही है अब उत्तरार्ध कथा श्रीद्वारकानाथकी कृपा से सुनाऊंगा ॥

पचासवां अध्याय।

श्यामसुन्दर व जरासन्ध से युद्ध होना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जिसतरह श्यामसुन्दरने जरासन्धकी सेना मारकर कालयवनका नाश किया व राजा मुचुकुन्दको भवसागर पार उतारकर द्वारका में जावसे वह हाल कहता हूं सुनो राजा उग्रसेन धर्मपूर्वक मथुराका राज्य करने लगे श्याम व बलराम भक्तहितकारी उन

की आज्ञा पालन करते थे व उस राज्य में कोई दुःखी नहीं था पर अस्ति व प्राप्ति नाम दोनों स्त्री राजा कंस की अपने पतिके शोच में बहुत उदास रहा करती थीं सो एकदिन दोनों बहिन आपसमें रोकर कहने लगीं अब यहां अनाथ पड़े रहने से अपने पिताके घर चलकर रहना उचित है यह विचार करतेही दोनों बहिन रथपर चढ़के जरासंधके घर चलीगईं व जिस तरह श्याम व बलरामने राजा कंसको दैत्योंसमेत मारकर उग्रसेनको राज्य दिया था वह सब हाल रो रोकर अपने पितासे कहा यह समाचार सुनतेही जरासन्ध अभिमानी बड़ा क्रोध करके अपने सभावालोंसे बोला ऐसा कौन वीर यदुकुलमें उत्पन्न हुआ है जिसने कंस ऐसे महाबलीको दैत्योंसमेत मारडाला अब मैं यह प्रण करता हूं कदाचित् कंसके बदले मथुरापुरीको यदुवंशियों समेत जलाकर राम व कृष्णको जीता बांध न ले आऊं तो अपना नाम जरासन्ध न रक्खूं ऐसा कहकर जरासन्ध अभिमानी जो श्याम व बलरामकी महिमा नहीं जानता था बोला यदुवंशी लोग इस योग्य नहीं हैं जो मैं सेना साथ लेकर उनसे लड़ने जाऊं इसी जगहसे एक गदा फेंककर उन्हें मार डालूंगा ॥

दो० राम कृष्णको मारिकै वैर कंसका लेउँ। कोऊ यादववंशके कुलमें रहन न देउँ ॥

जरासन्धवरदान पावनेकेप्रतापसे जै बेर गदा शिरके चारोंओर घुमाकर जहां फेंकताथा उतनेही योजनपर वह गदा जाकर शत्रुओंको मारती थी जब जरासन्ध ने उसी घमण्ड से हजार मनकी गदा सौबेर घुमाकर मथुरापुरी पर जो चार सौ कोस मगधदेशसे थी फेंकी तब श्यामसुन्दर अन्तर्यामीने अपनी गदा चलाकर उसकी गदा मथुरापुरीके निकट गिरा दी जब वह गदा विना काम किये मगधदेशमें फिर आई तब जरासन्धने अचम्भा मानकर मनमें कहा जिसने मेरी गदा को रोक दिया वह विना युद्ध किये नहीं मारा जायगा ऐसा विचारकर उसने सब राजों को जो उसकी आज्ञा में रहते थे बुला भेजा व तेईस अक्षौहिणी सेना साथ लेकर मथुरापुरीपर चढ़ आया जब दशहजार आठसौ हाथी व तीसहजार आठ सौ सत्तर रथ व छासठ हजार घोड़के सवार व एक लाख नौहजार साढ़े

तीनसौ पैदल सिपाही इस तरह सब दो लाख आठहजार तीस मनुष्यों की सेना इकट्ठी हो तब एक अक्षौहिणी दल कहलाताहै ॥

सो जरासन्धने इसी हिसावसे तेईस अक्षौहिणी दल व बड़े बड़े शूर-वीरोंको साथ लिये हुये कई दिनमें वहां पहुँचकर मथुरापुरी को चारोंओर से घेरलिया तब दशो दिक्पाल व सब देवता मारे डरके कांप उठे व पृथ्वी कम्पायमान होगई इतनी भारी सेना देखतेही सब मथुरावासी अपने प्राणके डरसे घबरागये व श्यामसुन्दरसे विनय की कि हे दीनानाथ जरा-सन्धने आनकर नगरको चारों ओरसे घेर लिया अब हम लोग कहां भागकर जावें जिसमें प्राण बचें जब यह सुनकर मुरलीमनोहर अपने मनमें कुछ विचार करने लगे तब बलरामजी बोले हे महाराज आपने पृथ्वीका भार उतारने व हरिभक्तोंको सुख देनेवास्ते अवतार लिया है सो अग्निरूप धरकर दैत्यों की सब सेना जला दीजिये यह बात सुनकर वैकुण्ठनाथने कहा हे भाई इन लोगोंका मारना कुछ कठिन नहीं है परन्तु मुझे बहुतसे काम संसारमें करने हैं इसलिये जरासन्ध के वधका उपाय पीछे किया जायगा ऐसा कहकर श्यामसुन्दर बलरामजी समेत राजा उग्रसेनके पास चले गये और बोले महाराज मुझे आज्ञा दीजिये तो जरा-सन्धसे जाकर लडूं व आप यदुवंशियों को साथ लेकर नगरकी रक्षा कीजिये उग्रसेन ने कहा बहुत अच्छा श्याम व बलराम उनसे आज्ञा पाते ही नगरके बाहर आये उस समय उनकी इच्छानुसार दो रथ जड़ाऊ अति उत्तम सूर्य व चन्द्रमाके समान चमकते हुये आकाश से उतरकर श्याम व बलराम के सामने खड़े होगये मुरलीमनोहर के रथपर सुदर्शन चक्र व शार्ङ्ग धनुष व तरकस बाणों से भरा हुआ व नन्दक तलवार व कौमोदकी गदा रक्खी होकर ध्वजापर गरुड़की मूर्ति बनी थी शैव व सुग्रीव व मेघपुष्प व बलाहक नाम चार घोड़े अतिसुन्दर उस रथमें जोते होकर दारुक नाम सारथी उसपर था व बलभद्रजीके रथपर हल व मूशल उनका रक्खा होकर ध्वजामें ताड़के वृक्षका चिह्न बना था उसे देखते ही दोनों भाई अपने अपने रथपर चढ़ बैठे व थोड़ीसी सेना साथ लेकर

रणभूमि में आये जैसे श्यामसुन्दरने जरासन्धकी सेना में मारू बाजा बजते सुनकर पांचजन्य शंख अपना बजाया वैसे पृथ्वी व आकाश मारे डरके कांपउठा व जरासन्धके शूरवीरोंका हृदय धड़कने लगा जब जरासन्ध रथ अपना बढ़ाकर श्रीकृष्णजीके सामने ले आया तब श्याम व बलराम भी अपना रथ बड़े वेगसे उसके सामने लेगये तब जरासन्धने अभिमान की राह श्रीकृष्णजी से कहा अय बालक तू अपने मामाको मारकर मेरे सामने लड़ने आयाहै इसलिये तेरे ऊपर शस्त्र नहीं चलाऊंगा तू यहांसे भाग जा इसी में तेरा कल्याण है॥

चौ० महाअधम पापी जग माहीं। तेरो मुख देखत हम नाहीं॥
जिन अपने मामाको मारेउ। पापपुण्य कछु नहीं विचारेउ॥
तासों युद्ध कवन विधि कीजे। जासों नेम धर्म सब छीजे॥

दो० तोहिं बालकसों युध करत आवतहै मोहिं लाज। याते हम बलभद्रसों युद्ध करैंगे आज॥

जरासन्ध यह वचन मुरलीमनोहरसे कहकर बोला हे बलभद्र तुझे अपना प्राण प्यारा न हो तो मेरे साथ लड़ अभी तुझको मारूंगा तू नहीं जानता कि मैं जरासन्ध हूं तेरा मारना मेरे निकट क्या बड़ी बात है यह वचन सुनकर श्यामसुन्दर बोले हे जरासन्ध अज्ञान अपनी बड़ाई आप करना अच्छा नहीं होता शूरवीर अपनी स्तुति आप नहीं करते सबसे अधीन रहकर समयपर अपना पुरुषार्थ दिखलाते हैं जो अपनी बड़ाई आप करताहै उसे जगत्में कोई भला नहीं कहता इसलिये तेरी भुजामें जो कुछ सामर्थ्य हो सो दिखलाव तैंने अभीतक बलभद्रका पराक्रम नहीं देखा जिसकी मृत्यु निकट आवती है उसे भली बुरी बात कहनेका विचार नहीं रहता और तू मुझको मामाका मारनेवाला जो कहताहै सो जिसतरह वह अपने अधर्म करने के दण्डको पहुँचा उसीतरह तेरीभी गति होगी यह वचन सुनते ही जरासन्ध बड़े क्रोधसे अपनी सेनासमेत श्याम व बलराम पर दौड़ा व उन्हें बाण मारता हुआ पुकारकर बोला बहुत दिनतक तुम्हारा प्राण बचा अब मेरे आगे से जीते फिरकर जाने न पावोगे जहां राजा कंस व सब दैत्य गये हैं वहां सब यदुवंशियों समेत तुमको भी भेजूंगा यह बात

कहकर जरासन्ध व उसके सेनावालों ने ऐसे बाण व अनेक तरहके शस्त्र बलरामपर चलाये जैसे सावन भादोंकी बूंदें बरसती हैं उस समय राम व कृष्णके रथ इसतरहसे छिपगये जिसतरह सूर्य बदली में दिखलाई नहीं देते जब मथुरा नगरकी स्त्रियां जो अपनी अपनी अटारियों पर चढ़कर उस युद्ध का कौतुक देखती थीं श्याम व बलराम का रथ नहीं देखा तब शोचित होकर रोने लगीं॥

दो० माखनप्रभु परतापते जीतत सब संसार। ता प्रभुसों जीतो चहै मूरख अधम गँवार॥

जब जरासन्ध आदिकने मोहनप्यारेकी सेनाको मारना चाहा तब राम व कृष्ण अपना अपना रथ दौड़ाकर उसकी सेनापर ऐसे टूटे जिसतरह सिंह हाथियोंके गोलमें झपटता है जब श्याम व बलराम चाकके समान रथ अपना घुमाकर युद्ध करनेलगे तब शूरवीरलोग मार मार कहकर प्राण देते व कादरलोग मारे डरके पीछे भागकर गिर पड़ते थे उससमय घेरे रहना सेनाका चारों ओरसे घटारूपी मालूम होकर कुण्डल दोनों भाइयों के बिजुलीके समान चमकते थे व देवता आकाश से यह कौतुक देखकर मुरलीमनोहरकी विजय मनावते थे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर अन्तर्यामी ने मथुरावासियोंको अपने वास्ते चिन्ता करते देखा तब धनुष चढ़ाकर ऐसा एक बाण छोड़ा कि वह प्रभुकी मायासे छूटती समय लाखों तीर होकर जरासन्धकी सेनामें शूरवीर व दैत्यों के लगा व बलरामने महाक्रोधसे हल व मूशल अपना उठाकर मारना आरम्भ किया जब दोनों भाइयोंने जो अपनी भृकुटी फेरनेसे तीनों लोक का नाश करने सक्ते थे मनुष्य तन धरने के कारण अढ़ाई घड़ी में सब सेना जरासन्धकी वाहनों समेत मारडाली व सिवाय जरासन्धके और कोई जीता नहीं बचा तब उस रणभूमिमें लोहू नदीरूपी बहकर हाथियों के शरीर व मस्तकसे रुधिर बहता हुआ कैसा मालूम देता था जैसे काले पहाड़ों में झरना झरते हैं व रथियों के मारे जाने से खाली रथ उजड़ेहुये घर मालूम होकर नौकाके समान उसी नदीमें बहते थे व शिर कटा हुआ शूरवीरोंका कछुयेकी तरह बहकर हाथ काटे हुये सांप व मछलीके समान

दिखलाई देते थे व हाथियों का शरीर पुल ऐसा मालूम होता था व धनुष गिरी हुई लहरके समान दिखलाई देकर टूटेहुये पहिया भँवर ऐसे मालूम होते थे व रत्नजटित भूषण सेनापतियों के अंगके गिरेहुये ऐसे चमकते थे जैसे नदीकिनारे बालू चमकती है ॥

दो० मणिमुक्तनकी माल बहु टूटिपड़ीं तेहि खेत। वह सब याविधि देखिये ज्यों जलभीतर रेत॥

उससमय केशवमूर्ति को रणभूमि में महादेवजी सेना भूत व प्रेतकी अपने साथ लिये मुण्डों की माला पहिने हुये दिखलाई दिये और क्या देखा कि भूतिनियां व योगिनियां खप्पर भरकर लोहू पीती हैं व गिद्ध कौवे व गीदड़ लोथोंपर बैठे हुये मांस खाकर एक दूसरे से झगड़ते हैं उसीसमय कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दकी महिमा से क्षणभरमें हवाने उन सब लोथोंको बटोरकर एकजगह ढेर लगादिया व अग्निने सबको जलाकर भस्म कर डाला व मेघने पानी बरसाकर सब राख व हड्डी आदिकको बहा दिया जिन पांचो तत्त्वों से पुतला तैयार होता है वह पांचो अपने अपने रूपमें मिलगये उस सेनाको आते सबने देखा फिर किसीने न जाना कि क्या होगई जब रणभूमिमें अकेला जरासन्ध खड़ा रहकर बलरामजीसे गदा-युद्ध करने लगा तब बलभद्रने उसके गले में हल डालकर पकड़ लिया व उसका वध करना विचारकर श्यामसुन्दर से पूंछा/आज्ञा दीजिये तो इस अधर्मी को मारडालूं श्रीकृष्णजी ने कहा अभी इसके मारने का समय नहीं है भाई मैंने पृथ्वी का भार उतारने व दैत्य व अधर्मी राजों को मारने वास्ते अवतार लिया है सो तुम जरासन्धको जीता छोड़ देव यह कई बेर दैत्य व अधर्मी राजों को बटोरकर मुझसे लड़ने आवैगा तब हम उन सबको मारकर पृथ्वी का भार उतारैंगे जब यह बात सुनकर बलरामजी ने जरासन्ध को जीता छोड़ दिया तब वह अति शोचित व लज्जित होकर अपने देशमें पहुँचा उसने चाहा कि राजगद्दी छोड़ कर वनमें चला जाऊं इतने इष्ट व मित्रके मारेजाने का शोच कैसे छूटैगा तब दूसरे राजा लोग जो उसके मित्र थे जरासन्धका हाल सुनकर वहां आये व उसे धैर्य देकर समझाया कि लड़ाई में जीत व हार सदासे

होती है इसवास्ते शूरवीर व ज्ञानियोंका दोनों बातमें हर्ष व विषाद करना उचित न होकर धैर्य रखना चाहिये किसवास्ते कि फिर सेना बटोरकर शत्रु से युद्ध करना कुछ मना नहीं है परमेश्वरकी दयासे कृष्ण व बलराम को यदुवंशियों समेत मारकर कंसके पास भेज देवेंगे यह वचन सुनतेही जरासन्ध धैर्य धरकर सेना बटोरने लगा व श्याम व बलराम अपनी सेना समेत कि उसमें किसीके घाव भी नहीं लगाथा आनन्दपूर्वक राजमन्दिर पर आये उससमय देवतोंने दोनों भाइयोंपर फूल बरसाये ॥

दो० माखन प्रभु या भांतिसों जरासन्धको जीत। आये मथुरानगर में सब सन्तनके मीत॥

जिससमय श्रीदुःखभंजन भक्तहितकारी नगर में पहुँचे उससमय सब मथुरावासियोंने बड़े हर्षसे अपने अपने घर मंगलाचार मनाया व ब्राह्मणों ने वेद पढ़ना आरम्भ किया व स्त्रियां कोरे बर्तन में दही सगुन वास्ते लेकर अपने अपने द्वारेपर खड़ी होगईं व अनेक स्त्रियां अपनी अपनी अटारियों पर से उनपर फूल बरसाने लगीं इस तरह श्याम व बलराम सबको आनन्द देते हुये राजा उग्रसेन के पास जाकर उनके चरणों पर गिरपड़े व सब धन लूटका उन्हें देकर विनय किया हे पृथ्वीनाथ हमने तुम्हारे पुण्य व प्रतापसे शत्रुओं को मारकर भगा दिया अब आनन्दपूर्वक राज्य करके प्रजाको सुख दीजिये यह वचन सुनकर उग्रसेनने सब धन लूटका अपने कोश में भेजवा दिया व बड़े हर्ष से राज्य करने लगे हे राजन् जब इसी तरह सत्रह बेर जरासन्ध तेईस तेईस अक्षौहिणी दल साथ लेकर मथुरा में लड़ने वास्ते आया व श्याम व बलरामने वही गति उसकी की तब जरासन्धने अति लज्जित व शोचित होकर मन में कहा अब अपने देश में जाकर क्या मुख दिखलाऊं उत्तम है कि वनमें तप करके किसी देवताका वरदान लेकर राम व कृष्ण से फिर लडूं परमेश्वरकी दया से एक बेर भी कृष्णचन्द्र मेरे सामनेसे युद्ध करती समय भाग जावें तो मैं उसको बड़ी विजय जानूं जब ऐसा विचारकर जरासन्ध वनकी ओर चला तब परमेश्वर की इच्छानुसार नारदमुनिने राहमें उसे मिलकर पूंछा हे राजन् तुम किस वास्ते उदास हो जरासन्ध दण्डवत् करके विनय किया महाराज मैं सत्रह

बेर श्याम व बलरामसे युद्ध करती समय हार गया इसलिये मारे लज्जा के मुझसे किसीको अपना मुख नहीं दिखलाया जाता जिसमें एकबेर वह भी मेरे सामने से भाग जावैं तो मेरी इच्छा पूर्ण हो यह वचन सुनकर नारदजी बोले हे जरासन्ध काबुल में कालयमन नाम म्लेच्छ राजा बड़ा बलवान् रहकर अकेली अकेला युद्ध करनेकी इच्छा रखता है सो तुम लड़नेका उद्यम न छोड़कर उसे अपनी सहायता वास्ते बुलावो व उसको साथ लेकर तुम दोनों मनुष्य श्याम व बलरामसे लड़ौ तो तुम्हारा मनोरथ मिलैगा यह वचन सुनकर जरासन्धने विनय किया महाराज काबुल यहां से बड़ी दूर है इसलिये दूत संदेशा लेकर बहुत दिनों में पहुँचैगा व आप एक क्षणभर में पहुँच सक्ते हैं सो दयालु होकर मेरी सहायता वास्ते उसे बुला लेआइये तो बड़ा उपकार मानूंगा यह दीन वचन सुनकर नारदजी कालयमनके यहां गये व जरासन्ध अपनी राजगद्दीपर आनकर सेना बटोरने लगा जब नारदमुनि क्षणभरमें बीच सभा कालयमनके पहुँचे तब उसने दण्डवत् करके सम्मानपूर्वक नारदमुनिको अपने पास सिंहासनपर बैठाला व हाथ जोड़कर विनय किया हे मुनिनाथ जिसतरह आपने दयालु होकर दर्शन दिया उसीतरह कृपा करके अपने आवने का कारण कहिये नारदमुनि बोले हमको राजा जरासन्धने तुम्हारे पास भेजकर यह संदेशा कहा है कि मथुरा में श्रीकृष्ण व बलराम दोनों भाई बड़े बलवान् व प्रतापी उत्पन्न हुये हैं सो सत्रह बेर मैं उनसे युद्ध करती समय हार गया अब अठारहवीं बेर उनके साथ युद्ध करने वास्ते तुम्हारी सहायता चाहता हूं इस बात का जैसा उत्तर देव वैसा उससे जाकर कह देउँ व कृष्ण जिन का नाम है वे मेघवर्ण चन्द्रमुख कमलनयन अतिसुन्दर पीताम्बर पहिने व उपरना ओढ़े रहते हैं तुम विना मारे उनका पीछा मत छोड़ना यह बात सुनतेही कालयमन जो नाम व प्रताप जरासन्धका पहिले से जानता था बहुत प्रसन्न होकर मनमें कहने लगा देखो इतने बड़े प्रतापी राजाने हमसे सहायता मांगी है इसलिये उसका संग देना चाहिये ऐसा विचार कर कालयमन बोला हे नारदजी आप मेरी ओर से जाकर जरासन्ध से कहै

देव कि मैं तुरन्त अपनी सेना समेत इधरसे मथुराको पहुँचताहूं वह जल्दी अपनी सेना लेकर उधरसे मथुरा में आवैं ऐसा कहकर कालयमन अपनी सेना साजने लगा व नारदजी वहां से जरासन्ध के पास आये और यह हाल उससे कहकर ब्रह्मलोकको चले गये व कालयमन तीन करोड़ सेना म्लेच्छों की जो बहुत मोटे बड़े बड़े दांत व लाल आंखवाले भयानकरूप मैले मैले कपड़े पहिने हुये थे अपने साथ लेकर मथुरा को चला व थोड़े दिनों में वहां पहुँचकर अपनी सेना से मथुरापुरी को घेर लिया व राजा जरासन्ध भी तेईस अक्षौहिणी समेत मथुरा को चला जब मथुरावासी कालयमन की सेना देखकर मारे डरके कांपने लगे तब श्यामसुन्दर ने द्वारकापुरी बसाना विचारकर बलरामजी से कहा अब क्या उपाय करना चाहिये कालयमनने अपनी सेना से नगर को घेर लिया व जरासन्ध भी अपनी सेना समेत आज कल्ह में आया चाहता है एक से युद्ध करताहूँ दूसरा राजा मथुरापुरी लूटकर प्रजाको बहुत दुःख देगा ॥

दो० याते एक उपाय यह आयाहै मन माहिं। इन्हैं अवर कहिं राखिकै युद्ध करन हम जाहिं ॥

बलरामजी ने कहा जैसा उचितहो वैसा कीजिये यह वचन सुनकर जैसे वृन्दावनविहारी ने समुद्रको याद किया वैसे वह उनके निकट चला आया तब मुरलीमनोहरने समुद्रसे कहा तुम बारहयोजन पृथ्वी अभी पानी से खाली करदेव वहां हम एक पुरी बसावैंगे समुद्रने उनकी आज्ञानुसार उसीसमय बारहयोजन पृथ्वी पानी से खाली करदिया तब श्यामसुन्दरने उसी क्षण विश्वकर्माको बुलाकर कहा तुम समुद्रके टापूपर इसी समय एक नगर इसतरहका रचो जिसमें सब यदुवंशी आदिक मथुरावासी सुखसे रहैं यह आज्ञा पावतेही विश्वकर्मा ने उसी समय समुद्रके टापू में जाकर एक कोट सुनहला बारह योजनके घेरे में बनाया उसके भीतर अनेक मंदिर सुनहले बहुत उत्तम बनाकर उनमें रत्नादिक जड़ दिये व जड़ाऊ किंवाड़े लगाकर सब द्वारोंपर मोतियों की झालर लटका दिया व कोटके कँगूरे जड़ाऊ बनाकर अतिउत्तम बाजार रचदिया व सोलह हजार एकसौ आठ महल बहुत उत्तम श्यामसुन्दरके रहनेवास्ते बनाकर उनमें ऐसा बढ़िया

रत्नादिक जड़दिया जिसकी चमक हजार सूर्य से अधिक दिखलाई पड़ती थी व सब स्थानोंमें बाग अनेक रंगके फूल व फल लगे हुये बनाकर कुण्ड व बावलीको गुलाबजल से भरदिया व सब महलों में बड़े बड़े आंगन तैयार करके हाथी व घोड़े व गौ व बैल बांधने व रथ व गाड़ी आदिक रखनेके स्थान बिलग बिलग बना दिये व सब मंदिरों के द्वारपर नौबत झरने व द्वारपालकों के रहने वास्ते बिलग बिलग स्थान बनाकर कोट के चारों ओर उत्तम उत्तम वाटिका लगादीं व जितनी वस्तु गृहस्थी की होतीहैं वह सब स्थानोंमें रखकर चारों वर्णोंके रहनेके वास्ते अलग अलग महल्ले बना दिये हे परीक्षित जब विश्वकर्माने वैकुण्ठनाथ की दयासे यह सब मुहूर्त भर में तैयार करके द्वारकापुरी उसका नाम रक्खा तब वरुण देवता ने श्यामकर्ण घोड़े व कुबेर देवताने उत्तम उत्तम रथ व रत्नादिक व इन्द्रने सुधर्मासभा द्वारका में पहुँचादी इसीतरह अनेक देवता बहुत उत्तम उत्तम वस्तु जिनका नाम कहांतक वर्णन कियाजावे वहां लेआकर रखगये जब विश्वकर्माने द्वारकापुरी जहां जाने से काम क्रोध मोह व लोभ नहीं व्यापते थे रचिकर श्यामसुन्दर से खबर की तब कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दने उसी क्षण योगमाया को बुलाकर कहा तुम अभी मथुरावासियों को गौ व घोड़े व हाथीआदिक सब वस्तुसमेत रातोंरात मथुरासे लेजाकर द्वारका में पहुँचा दो पर कोई मनुष्य वहांसे यहां पहुँचनेतक यह भेद न जाने योग-मायाने उनकी आज्ञानुसार उसी क्षण राजा उग्रसेन व वसुदेव आदिक सब मथुरावासियोंकोजो नींदमें सोयेथे वहांसे उठालेजाकरद्वारकापुरीमेंपहुँचा दिया जब मथुरावासी समुद्रका शब्द सुनकर नींदसे चौंक उठे तब आपस में अचम्भा मानकर कहने लगे देखो यहां समुद्र कहांसे आया जब उन्होंने अच्छीतरह विचार किया तो मालूम हुआ कि यह दूसरा नगर वासुदेवकी इच्छासे समुद्रमें बसाहै जब उन्होंने मथुरासे उत्तम स्थानमें अपनेको देखा और सब वस्तु गृहस्थीकी वहां पाई तब स्त्री व पुरुष प्रसन्न होकर बड़ाई मोहनप्यारे की करने लगे ॥

इक्यावनवां अध्याय।

कालयमन व राजा मुचकुन्दकी कथा॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर मथुरावासियों को द्वारका भेज चुके तब बलभद्रजीको मथुरामें छोड़कर आप प्रातसमय अकेले चतुर्भुजीरूप धारण किये मुकुट जड़ाऊ सूर्य से अधिक चमकता हुआ शिर पर बांधे कुण्डल व पीताम्बर पहिने कौस्तुभमणि व मोतियों का हार वैजयन्तीमाला गलेमें डाले व उपरना रेशमी ओढ़े अंग अंग में रत्नजटित भूषण साजे व शंख व चक्र व गदा व पद्म चारों हाथमें लिये केशरका तिलक लगाये तापहारिणी चितवन मन्द मन्द मुसकराते हुये कालयमन के सन्मुख गये॥

दो० जाय कृष्ण दर्शन दियो धरे चतुर्भुजरूप। अंग अंग बहुरंग छवि शोभित परम अनूप॥

जब कालयमनने नारदमुनि के कहने प्रमाण सब लक्षण उनमें देखे तब श्यामसुन्दर को अतिबलवान् समझकर मनमें कहा राजा कंस व जरासन्धकी सेनाको इसी पुरुषने माराथा पर इससमय यह कुछ शस्त्र न लेकर पैदल मेरे सन्मुख लड़ने आया सो इसके साथ शस्त्र लिये रथपर चढ़े हुये युद्ध करना धर्म नहीं है ऐसा विचारकर कालयमन रथसे कूद पड़ा व उसने पुकारकर अपनी सेनावालों से कहा कि कोई मनुष्य इस मोहनीमूर्तिपर शस्त्र मत चलावो तब ऐसा कहकर कालयमन आप अकेला श्यामसुन्दर के निकट आया जब मोहनप्यारेने एक तो म्लेच्छका अंग छूना उचित नहीं जाना दूसरे उन्हें देवतोंका वरदान सत्य करनेवास्ते राजा मुचकुन्द को अपना दर्शन देकर भवसागर पार उतारनाथा इसलिये वैकुण्ठनाथ उसके सामने से भागे व कालयमन उन्हें पकड़नेवास्ते पीछे दौड़कर अभिमानकी राह बोला॥

चौ० कालयमन यों कहै पुकारि। काहे भागे जात मुरारि॥
आय पर्यो अब मोसों काम। ठाढ़े रहो करो संग्राम॥

मुझको राजा कंस व जरासन्ध मत समझना मैं यदुवंशियोंकावीर्य संसार में नहीं रक्खूंगा क्षत्रिय व शूरवीरोंको युद्धमेंसे भागना मरणतुल्य होताहै॥

दो० रिपुसन्मुख ते भाजिबो क्षत्रिय को है लाज। प्रकट पिता वसुदेवको दोष लगायो आज ॥

हे श्याममूर्ति मैं तुमको बड़ा शूरवीर सुनकर तुम्हारे साथ लड़ने आयाहूं सो एक क्षण ठहर कर मेरे साथ युद्ध करो तुम्हारा प्राण न मारूंगा श्याम-सुन्दर उसकी बातका कुछ उत्तर न देकर एक हाथका अन्तर देते हुये इसतरह भागे जाते थे जिसमें वह निराश न होवै व पकड़नेभी न पावें जब कालयमन बहुत दूरतक पीछे दौड़ा चलागया तब केशवमूर्ति बीच कन्दरा गन्धमादन पहाड़के जहां राजा मुचकुन्द सोया हुआ था घुस गये और वहां जाकर पीताम्बर अपना राजा मुचकुन्दको उढ़ा दिया व आप अन्तर्धान होकर उसी जगह एक कोने में खड़े होगये जब पीछेसे काल-यमन दौड़ता व हांफता हुआ उसी कंदरा में पहुँचा तब उसने मुचकुन्द को पीताम्बर ओढ़े देख कर क्या जाना कि यह वही पुरुषहै जो भागा आवता था मेरे डरसे पीताम्बर ओढ़कर सो रहा है ऐसा विचारते ही कालयमन बड़े क्रोधसे एक लात राजा मुचकुंदको मारकर बोला यह कौन शूरता है जो रणभूमि में से भागकर यहां सो रहा उठ अभी तुझे मार डालूं जब ऐसा कहकर कालयमनने वह पीताम्बर मुचकुन्दके शरीर पर से खींच लिया तब वह लात लगने व पीताम्बर झटकने से जाग उठा॥

दो० ताकी दृष्टिप्रभावते अग्नि उठी तन माहिं। देखतही जरके भयो यमन भस्म क्षणमाहिं ॥

हे राजन् कालयमनने मरतीसमय वैकुण्ठनाथका दर्शन पाया था इसलिये वह सब पापोंसे छूटकर मुक्तिपदवी पर पहुँचा इतनी कथा सुन-कर परीक्षितने पूछा हे मुनिनाथ मुचकुन्द कौन महातेजवान् होकर किसकारण कन्दरामें सोया था जिसकी दृष्टि पड़ने से कालयमन ऐसा प्रतापी राजा जलगया शुकदेवजी बोले हे परीक्षित मुचकुन्द राजा इक्ष्वाकु क्षत्रियके कुलमें युवनाश्वका पौत्र व मान्धाताका पुत्र बड़ा प्रतापी व चक्रवर्ती राजा होकर अपने धर्म व तपके बलसे सब राजोंको अधीन किये था उन्हीं दिनों दैत्योंने देवतोंको लड़ाई में जीतकर राजसिंहासन उनका छीन लिया तब इन्द्र वरुण आदिक देवता शूरताई व बड़ाई राजा मुच-कुन्दकी सुनकर मर्त्यलोक में आये व बहुत दिन होकर राजा मुचकुन्दसे

विनय किया हमलोग दैत्यों के हाथ से बहुत दुःख पाकर तुम्हारे शरण आये सो सहायता करके दैत्यों से हमारा राज्य दिलवादीजिये यह बात सदासे होती आई है कि जब देवता व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको दुःख पड़ता है तब क्षत्रीलोग उनकी रक्षा करते हैं यह दीन वचन सुनते ही राजा मुचकुन्द ने देवतों का सहायक होकर दैत्यों से युद्ध किया व दैत्यों को जीतकर देवतोंका राज्य देदिया सो जब जब देवतों को दैत्यलोग दुःख देते थे तब तब राजा मुचकुन्द देवतोंकी सहायता करके दैत्योंको भगा देता था एक बार मुचकुन्दको दैत्योंसे लड़ते हुये कई युग बीतगये तब स्वामिकार्त्तिकेयजी देवतोंकी सहायता करने आये उससमय देवतोंने राजा मुचकुन्दसे कहा अब हमलोगोंकी सहायता स्वामिकार्त्तिकेयजी करैंगे तुमने हमारे वास्ते बड़ा परिश्रम किया है इसलिये सिवाय मुक्ति के जो वरदान मांगो सो तुमको देवैं ॥

दो० अर्थ धर्म अरु कामना ये सब हैं मम हाथ। एक पदारथ मुक्तिको देहैं श्रीव्रजनाथ ॥

यह सुनकर मुचकुन्दने कहा बहुत दिन हुये मैं अपने घर द्वार व बाल बच्चों से बिलग पड़ा हूं आज्ञा देव तो जाकर उन्हें देखूं देवतोंने उत्तर दिया तुम्हारे वंशमें अब कोई नहीं रहा सब मरगये यह वचन सुनकर मुचकुन्द बोले यही हाल है तो बहुत दिनसे नींदभर सोया नहीं तुमलोग कोई ऐसी एकान्त जगह मुझे बतलादेव जहां जाकर सोऊँ व कोई मुझे न जगावै देवतोंने प्रसन्न होकर कहा तुम गन्धमादन पहाड़की कन्दरा में जाकर शयन करो हमलोग ऐसा वरदान देते हैं जो कोई वहां जाकर तुमको जगावै उसी समय तुम्हारी दृष्टि पड़ने से जलकर भस्म होजावै व हमारे आशीर्वादसे तुम्हें परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन प्राप्त होगा सो राजा मुचकुन्द त्रेता युगसे यह वरदान पाकर उस कन्दरा में सोया था श्याम-सुन्दर अन्तर्यामी यह सब भेद जानते थे इसलिये उन्होंने देवतों का वरदान सत्य करने वास्ते कालयमन को वहां लेजाकर मुचकुन्दकी दृष्टि से मरवा डाला उसके जलने उपरांत वृन्दावनविहारी भक्तहितकारी ने चतुर्भुजीरूप से मेघवर्ण चन्द्रमुख कमलनयन शंख चक्र गदा पद्म लिये

किरीट मुकुट साजे वनमाला विराजे पीताम्बर पहिने तीनोंलोक की सुन्दरताई धारण किये हुये राजा मुचकुन्दको दर्शन दिया जब उनके चन्द्रमुखके प्रकाशसे उस अँधियारी कन्दरामें उजियाला होगया तब राजा मुचकुन्दने उनको देखकर साष्टांग दण्डवत् किया॥

दो० माखनप्रभुके दर्श ते भयो सरस आनन्द। जोरि हाथ व्रजनाथ से पूछत है मुचकुन्द॥

हे दीनानाथ तुम्हारे बराबर तीनों लोकमें कोई सुन्दर न होगा जैसे आपने दयालु होकर दर्शन दिया वैसे कृपा करके अपना हाल वर्णन कीजिये मेरी समझमें आप सूर्य या चन्द्रमा या कोई लोकपाल या ब्रह्मा व विष्णु व महेश तीनों बड़े देवतोंमें मालूम होते हैं जो तुम्हारे आवने से यह कन्दरा प्रकाशित होगई और ये कोमल चरण आपके फूलों से भी अधिक नरम हैं इस पहाड़ व कांटोंमें किस तरह विराजे सो अपना नाम व गोत्र बतलाइये कदाचित् आप मुझसे पूछें कि तू कौन है सो मैं मुचकुन्द नाम राजा मान्धाताका बेटा हूं व दैत्यों से लड़ती समय परिश्रम करनेमें देवतोंने मुझे ऐसा वरदान दिया था कि तुम निश्चिन्त होकर सोवो तुम्हैं जगानेवाला तुम्हारी दृष्टि पड़नेसे जलकर मरजावैगा इसी वास्ते यह मनुष्य जिसने मुझे जगाया था देखो जलकर भस्म होगया यह सुनकर वृन्दावनविहारीने कहा हे मुचकुन्द मैं कौन सा नाम अपना तुझे बतलाऊं मेरे नामोंकी कुछ गिनती नहीं है मैंने लाखों बेर संसार में अवतार लेकर बहुतसे काम किये हैं कदाचित् कोई चाहे तो वालूकी रेणुका व पानी बरसनेके बूंद गिन लेवे पर मेरे अवतार और कामोंकी गिनती करना बहुत कठिन है इसलिये अपने पिछले अवतारोंका हाल तुझसे नहीं कहसक्ता पर इसबेर पृथ्वीका भार उतारने वास्ते वसुदेव व देवकीके घर यदुकुल में अवतार लिया है इसलिये मेरा नाम वासुदेव भी कहते हैं व हमने मथुरामें राजा कंसको दैत्यों समेत मारकर पृथ्वी का बोझ उतारा व सत्रहवेर तेईस तेईस अक्षौहिणी दल साथ लेकर राजा जरासन्ध मथुरापर चढ़ आया सो वह भी मुझसे हारगया अठारहवीं वेर उसकी सहायता करनेवास्ते यह कालयमन तीन करोड़ सेना म्लेच्छोंकी

साथ लेकर मुझसे लड़ने आया था सो तुम्हारी दृष्टिसे जलकर मरगया कदाचित् तुम कहो कि कालयमन को अपने हाथसे तुमने क्यों नहीं मारा सो इसका यह कारण है कि देवतोंका वरदान सत्य करने वास्ते मुझे तुमको अपना दर्शन देकर भवसागरपार उतारना था इसलिये मैंने कालयमनको तेरी दृष्टिसे जलाकर अपना दर्शन तुझे दिया पिछले जन्म तैंने मेरा बहुत भारी तप किया था उसका फल आज पाकर तू जन्म व मरणसे छूटगया अब तुझे जो इच्छा हो सो वरदान मांग हम देवैंगे वैकुण्ठनाथका दर्शन मिलनेसे मुचकुन्दके मनमें ज्ञान उत्पन्न होकर उसको याद आई कि गर्गमुनि ने मेरी जन्मपत्री देखकर कहा था तुझे परमेश्वर का दर्शन मिलैगा वह बात आंखोंसे दिखलाई दी ॥

दो० सोई द्विजको वचन हरि सत्य भयोहै आज। प्रकट आइ दरशन दियो माखन प्रभु व्रजराज ॥

जब मुचकुन्दको विश्वास हुआ कि यह चतुर्भुजीरूप भगवान् हैं तब उसने श्यामसुन्दरके सन्मुख हाथ जोड़कर विनय किया हे महाप्रभु आप निर्गुण व निराकार अविनाशी पुरुष होकर केवल हरिभक्तों को सुख देने वास्ते सगुण अवतार धरते हो तुम्हारे आदि व अंतको कोई नहीं जानता सारा संसार आपकी मायामें लपटरहाहै इसलिये किसीका ज्ञान ठिकाने न रहकर सब मनुष्य बीच जाल काम क्रोध मोह लोभके ऐसा फँसरहे हैं कि किसीतरह मायारूपी जालसे छूटने नहीं सक्के ॥

चौ० करत कर्म सब सुखके हेत। याते भारी दुख सहि लेत ॥

जिसतरह कुत्ता सूखी हड्डी चबाती समय अपने मुखके लोहूका सलोना स्वाद पाकर अज्ञानतासे वह स्वाद हाड़में निकलता समझताहै उसी तरह मनुष्य स्त्रीप्रसंग करती समय अपने वीर्य गिरनेका क्षणभर सुख पाकर अज्ञानतासे जानते हैं कि स्त्रीसे यह आनंद हमैं मिलता है जे अज्ञानी मनुष्य इस झूठे सुखको अच्छा जानकर कामदेव के मदमें परस्त्रीगमन करके अपना परलोक बिगाड़ देते हैं व ऐसा काम नहीं करते जिसमें आवा-गमनसे छूट जावें उन्हें कुत्तेसे भी निकृष्ट समझना चाहिये हे दीनानाथ संसारीजीवोंको विना कृपा व दया तुम्हारी इस मायारूपी अँधियारे कूपसे

बाहर निकलना बहुत कठिन है जो मनुष्य तुम्हारे शरण होकर आपका ध्यान व स्मरण करै वह मायाजालसे छूटकर परमगतिको पहुँचने सक्ता है सो मैं आजतक राज्य व धनके मदमें तुम्हारे भजन व स्मरण से विमुख रहा व जिन स्त्री व पुत्रोंकी प्रीतिमें फँसकर हाथी व घोड़े आदिक संसारी सुखको अपना जानता था वह सब नाश होकर केवल यह तनु मेरा जिसे राजा कहते हैं रहिगया सो यह भी किसी कामका नहीं है किस वास्ते कि यह तनु मरने उपरांत सियार आदिक के खाजाने से विष्ठा होजाता है व पड़े रहने व सड़िजाने से कीड़े पड़िजाते हैं व जला देनेसे राख होजाता है इसलिये जो लोग अपने तनु व बलका अभिमान करते हैं उन्हें मूर्ख समझना चाहिये मनुष्यतनु पाकर सिवाय भजन व स्मरण परमेश्वरके संसारी व्यवहार में मन लगाना अच्छा नहीं होता पर अज्ञानी मनुष्य शुभकर्म में एक क्षण मन नहीं लगाते व आठों पहर स्त्री व पुत्रकी माया में फँसे रहकर संसारी झूठे व्यवहार को सचा जानते हैं जो कोई विना इच्छा केवल तुम्हारे प्रसन्न होने वास्ते आपका ध्यान व स्मरण करता है उसे बड़ा भाग्यवान् समझना चाहिये पर वैसे मनुष्य संसारमें कम हैं मुझ अज्ञानी व अभिमानी को अपने भवसागर पार उतरनेका बड़ा शोच लगा था सो मेरे पिछले जन्मके पुण्य सहाय हुये जो कमलरूपी तुम्हारे चरणों में जिनका ध्यान ब्रह्मादिक देवता व बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वर दिन रात अपने हृदय में रखते हैं अपना दर्शन देकर मुझे कृतार्थ किया इसलिये सिवाय भक्ति व ध्यान इन चरणों के जो मुक्ति देनेवाले हैं दूसरी कोई संसारीवस्तु माया मोह में फँसावनेवाली नहीं चाहता॥

दो० मैं जप तप नहिं कुछ कियो नहिं चीन्हें महराज। एक तुम्हारी कृपाते दर्शन पायों आज॥

हे महाप्रभु तुम अपने भक्तोंको अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थ देनेवाले हो इसलिये यह इच्छा रखता हूं कि तुम्हारी कृपासे भवसागर पार उतर जाऊं मैं आपके शरणागत हूं जब राजा मुचकुन्दने यह सब स्तुति की तब श्यामसुन्दरने हँसकर कहा हे मुचकुन्द तेरा ज्ञान धन्य है तैंने सची बात कही तू सदासे मेरा परमभक्त है पिछले जन्म तुमने बहुतसा तप करके हमारा

दर्शन चाहा था उसका फल आज मिलकर तेरी कामना पूर्ण हुई व हमको तैंने पहिंचाना व हमने तुमको वरदान देनेवास्ते ललचाया था सो तैंने किसी वस्तु लेनेकी इच्छा न रखकर केवल मेरे चरणोंकी भक्ति मांगी इस तरहका ज्ञान सब किसीको प्राप्त नहीं होता अब तेरे भवसागर पार उतरने का उपाय बतला देता हूं सो तू कर किसवास्ते कि तैंने पृथ्वी लेने व परस्त्री-गमन करने में बहुत पाप किया है वह विना तप किये नहीं छूटैगा इस-लिये तू उत्तर दिशामें जाकर मेरे स्मरण व ध्यान में लीन हो यह तनु छोड़ने उपरांत ब्राह्मणके घर जन्म लेकर मेरी भक्ति करैगा तब यह तनु छोड़ने उपरान्त मेरी ज्योतिमें समा जायगा ॥

दो॰ यदपि पदारथ मुक्तिको राजन दीजत नाहिं। तदपि हम तुमको दियो जानि प्रीति मनमाहिं ॥

यह बात सुनतेही मुचकुन्द वैकुण्ठनाथ के चरणों पर गिरपड़ा व जब उन्हें साष्टांग दण्डवत् करके कन्दरासे बाहर निकला तब उसने मनुष्य व वृक्षोंका छोटा रूप देखकर जाना कि कलियुग का लक्षण निकट पहुँचा ऐसा विचारकर उसीसमय राजा मुचकुन्द बदरिकाश्रममें तप व जप करने-वास्ते चलागया व सचे मनसे परमेश्वर का तप करने लगा व गरमी व सरदी व वर्षाऋतुको बराबर जानकर हर्ष व शोचको एकसा समझा जब वह तनु छोड़कर ब्राह्मणके यहां जन्म पाया तब हरिभक्तिके प्रतापसे मरने उपरान्त परब्रह्म परमेश्वरके रूपमें लीन होगया कालयमन ब्राह्मणके वीर्य से उत्पन्न हुआ था इसलिये मुरलीमनोहरने उसको अपने हाथसे नहीं मारा इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे मुनिनाथ कालयमन म्लेच्छने ब्राह्मण के वीर्यसे किसतरह जन्म पाया शुकदेवजी बोले हे राजन् एक दिन गौड़ ब्राह्मण गर्गमुनिके साले ने ठट्ठे से उन्हें कहा तुम नपुंसक हो जब यही बात सुनकर यदुवंशीलोग हँसीकी राह गर्ग ऋषीश्वरको हिजड़ा कहने लगे तब उन्होंने यदुवंशियोंको नीचा दिखलाने वास्ते महादेवका तप करना आरंभ किया जब शिवजीने प्रसन्न होकर उनसे वरदान मांगने को कहा तब गर्ग मुनिने हाथ जोड़कर विनय किया मुझे ऐसा पुत्र दीजिये जिसमें सब यदुवंशी डरकर भाग जावें महादेवने एक फल उन्हें

देकर कहा यह फल स्त्री को खिला देनेसे वैसा पुत्र उत्पन्न होगा सो गर्ग ब्राह्मणने वह फल लेकर अपने पास रख छोड़ा जब तालजंघ नाम क्षत्रिय ने जो काबुलमें बड़ा प्रतापी राजा होकर संतान नहीं रखता था पुत्र उत्पन्न होने वास्ते गर्ग ऋषीश्वरकी बहुत सेवा की तब ऋषीश्वर महाराज ने उसकी स्त्री को वीर्यदान देकर वह फल खानेवास्ते दिया सो उसने परमेश्वरकी इच्छानुसार अपनी सौतों के डरसे जल्दीमें वह फल बिना स्नान किये खालिया तब गर्गमुनिने कहा तेरा पुत्र बड़ा प्रतापी व बलवान् उत्पन्न होकर म्लेच्छोंका कर्म करेगा इसीकारण कालयमन बेटा तालजंघ क्षत्रिय का म्लेच्छ होगया था यह हाल सुनकर परीक्षित का सन्देह मिटगया॥

बावनवां अध्याय।

श्याम व बलरामका जरासन्धके सामने से उसका मनोरथ पूर्ण करनेवास्ते भागना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित श्यामसुन्दर मुचकुन्द को बिदा करके मथुरा में चले आये व बलरामजीसे कहा हमने राजा मुचकुन्दकी दृष्टिसे कालयमनका नाश कराके मुचकुन्दको बदरी केदार में तप करने वास्ते भेज दिया अब चलो कालयमनकी सेना मारकर पृथ्वीका भार उतारैं ऐसा कहकर दैत्यसंहारण बलराम समेत मथुरा से बाहर निकले व कालयमन की सेनामें चले गये॥

दो० संकर्षणको साथ ले माखनप्रभु करतार। कालयमनकी सेन सब हती एकही बार॥

जब क्षणभरमें श्याम व बलराम हल व मूशल व बाणोंसे म्लेच्छोंको मार कर सब वस्तु लूटकी अपने साथ लेचले तब राजा जरासन्धने अपनी सेना समेत पहुँचकर उन्हें घेर लिया उससमय वैकुण्ठनाथ भक्तवत्सलने जरासन्धका मनोरथ पूर्ण करनेवास्ते सब वस्तु लूटकी वहां छोड़ दी व बलराम समेत उसके सामनेसे पैदल भागे तब जरासंधके मंत्रीनेकहा महाराज तुम्हारे प्रतापके सामने कौन ऐसा शूरवीर है जो ठहरने सकै देखो राम व कृष्ण दोनों भाई घर दुवार व सब वस्तु अपनी छोड़कर आपके डर से नंगे पांव भागे जाते हैं जब जरासन्धनेभी दोनों भाइयोंको अपनी आंखों से भागते हुये देखा तब अपनी सेना समेत उनके पीछे दौड़ा व पुकारकर यों कहा॥

चौ० काहे डरके भागे जात। ठाढ़े रहौ करौ कछु बात॥
गिरत उठत कम्पत क्यों भारी। आई है ढिग मृत्यु तुम्हारी॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब श्याम व बलराम नारदजीका वचन सत्य करनेवास्ते लोकव्यवहार दिखलाकर जरासन्धके सन्मुख से भागे तब वह बड़े हर्ष से उनके पीछे दौड़ा व दोनों भाई भागे हुये प्रवर्षण पहाड़ पर जो ग्यारह योजन ऊंचा था व उसमें सिवाय एक रास्ते के दूसरी राह नहीं थी चढ़ गये व पहाड़के ऊपर जाकर खड़े हुये॥

चौ० देखि जरासँध कहै पुकारी। शिखर चढ़े बलभद्र मुरारी॥
अब यह कैसे जायँ पराय। यह पर्वतको देव जलाय॥

ऐसी आज्ञा पातेही उसके सेवकोंने उस पहाड़ को जहां सदा पानी बरसता था लकड़ियों का ढेर चारों ओर इकट्ठा करके उसमें आगि लगा दी व जो राह पहाड़पर चढ़नेकी थी वहां जरासन्ध आप खड़ा हो गया जब थोड़ी देर में वह अग्नि पर्वत के शिखर तक लहकिकर बुझ गई तब वह उस अग्नि में जब मरना दोनों भाइयों का समझकर मथुरापुरी को चला आया और वहां अपना ढिंढोरा पिटवा दिया व जितने स्थान राजा उग्रसेन व वसुदेवजीके उस नगरमें थे वह सब खोदवाकर उस जगह नये स्थान बनवा दिये व अपना कारोबार वहां छोड़कर सेना समेत हर्षपूर्वक मगध देश में आया व श्यामसुन्दरने बलरामजी से कहा बड़े शोच की बात है जो हमारा चरण आवने से भी यह पहाड़ जल जावै ऐसा कह कर वैकुण्ठनाथने उस पहाड़ को अपने चरणोंसे ऐसा दबा दिया कि पाताल में चला गया आगि बुझने उपरान्त फिर उसीतरह उठा दिया॥

दो० ता गिरिवरते कूदिकै माखनप्रभु यदुराय। राम सहित श्रीद्वारका पलमें पहुँचे जाय॥

उन्हें देखतेही सब द्वारकावासी प्रसन्न होगये व मुरलीमनोहरकी दया से आनन्दपूर्वक वहां रहने लगे कुछ दिन बीते राजा रेवतने ब्रह्माजी की आज्ञानुसार रेवती नाम अपनी कन्या चन्द्रमुखी व मृगलोचनीको द्वारकापुरी में लाकर बलरामजीसे विवाह दिया व श्यामसुन्दर बलरामजीसमेत कुण्डिनपुरमें जाकर रुक्मिणी नाम राजा भीष्मककी कन्या जो शिशुपाल

को मांगी गई थी अनेक राजोंमेंसे वरजोरी हरि ले आये व अपने घर ला-कर उसके साथ विवाह किया यह सुनकर परीक्षित ने विनय किया कि कृष्णचन्द्र रुक्मिणी को बहुत राजोंमें से किसतरह जीतकर ले आये थे॥

दो० माखनप्रभुके कर्म गुण सुने महा सुख होय। जो कोइ ऋषि मुनिसे सुने बड़ी भाग्यहै सोय॥

यह वचन सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजन् भीष्मक नाम बड़ा प्रतापी राजा विदर्भदेशका कुण्डिनपुरमें रहकर धर्मपूर्वक राज्य करता था व रुक्माग्रज आदिक पांच पुत्र उसके हुये जब रुक्मिणी नाम कन्या महा-सुन्दरी राजा भीष्मकके यहां उत्पन्न हुई तब उसने मंगलाचार मनाकर ज्योतिषियों से उसके जन्म लग्नका फल पूंछा तब पण्डितों ने कहा कि हमारे विचारमें यह गुण व रूप व शीलकी सागर होकर आदिपुरुष भगवान् से विवाही जावैगी यह सुनकर राजा ने बड़े हर्ष से पण्डितोंको सन्मान-पूर्वक विदा किया जब राजकुमारी प्रतिदिन चन्द्रकलासी बढ़कर कुछ सयानी हुई तब एक दिन नारदमुनि कुण्डिनपुर में गये व उसका हाथ देखकर रुक्मिणीसे कहा तेरा विवाह कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द वैकुण्ठनाथ के साथ होगा यह बात सुनकर रुक्मिणी बहुत प्रसन्न हुई व नारदमुनिने द्वारकापुरी में जाकर कहा हे वैकुण्ठनाथ राजा भीष्मकके एक कन्या रुक्मिणी नाम लक्ष्मीके समान अतिसुन्दरी उत्पन्न होकर तुम्हारे विवाहने योग्य है यह बात सुनतेही केशवमूर्ति अन्तर्यामी को भी उसकी चाहना हुई उन्हीं दिनों में याचकों ने कुण्डिनपुर में जाकर यश व गुण मुरली-मनोहरका जो जो काम उन्होंने गोकुल व वृन्दावन व मथुरा में किये थे गाया तब वहां के लोगों को श्यामसुन्दरके दर्शनकी इच्छा हुई जब इस बातकी चर्चा होते होते राजा भीष्मकको खबर पहुँची व उसनेभी उन याचकों को राजमन्दिरपर बुलवाकर श्यामसुन्दरका यश गवाया तब राजा व रानी आदिक उनकी लीला सुनकर अति प्रसन्न हुये॥

चौ० चढ़ी अटा रुक्मिणि सुन्दरी। हरिचरित्र ध्वनि श्रवणन परी॥
अचरज करे भूलि मन रहै। फेरि उचकिकर देखन चहै॥
सुनिकर कुँवरि रही मनलाय। प्रेमलता उर उपजी आय॥
अति आनँदमय भई सुन्दरी। उसकी सुधि बुधि हरिगुणहरी॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित पहिले रुक्मिणी नारदमुनि से मुरलीमनोहरका गुण सुन चुकी थी जब उसने याचकोंसे भी उनकी बड़ाई सुनी तब उसे उनके साथ विवाह करनेकी अधिक इच्छा हुई उसी दिनसे रुक्मिणी आठोंपहर खाते पीते सोते जागते उठते बैठते ध्यान सांवलीसूरत मोहनप्यारेका प्रेमपूर्वक करने लगी और उनके मिलने वास्ते प्रतिदिन पार्वतीजीको पूजनकर यह वरदान मांगती थी ॥

चौ० मुझपर गौरि कृपा तुम करो। यदुपति पति दे मम दुख हरो ॥

दो० कमलनयनके ध्यानमें मग्न रहै दिन रैन। खान पानकी को कहै लहै नहीं क्षण चैन ॥

जब रुक्मिणीने दिन रात मोहनीमूर्तिका ध्यान रखकर अपने मनमें यह प्रण किया कि सिवाय श्यामसुन्दरके दूसरेसे विवाह नहीं करूंगी तब उसके माता पिता भी यह हाल जानकर इसी बातमें प्रसन्न थे जब कभी रुक्मिणी बीचविरह मनहरणप्यारे के उदास होकर रोने लगती थी तब उसकी सहेलियां चर्चा बालचरित्र नंदलालजी का सुनाकर उसे प्रसन्न करदेती थीं ॥

दो० यहिविधि लीला कृष्णकी गावैं सब दिन रैन। सो सुनिके श्रीरुक्मिणी लही सदा सुख चैन ॥

एकदिन रुक्मिणी सहेलियोंके साथ खेलती हुई राजाके पास आई तब भीष्मक ने उसे विवाहने योग्य देखकर मनमें कहा अब इसका विवाह जल्दी नहीं करता तो संसारीलोग मेरी निन्दा करैंगे जिसके घर कुमारी कन्या तरुण होजाती है उसे दान व पुण्य जप आदिक शुभ कर्म करने का फल नहीं मिलता ऐसा विचारते ही राजाने अपने पांचों बेटे व मंत्री व इष्टमित्रोंको सभामें बैठाकर कहा अब रुक्मिणी सयानी हुई इसलिये कोई राजकुमार जो कुलीन व सब गुणोंसे भरा हो ठहराना चाहिये यह बात सुनकर सभावालोंने अनेक राजकुमारोंका नाम बतलाकर उनके रूप व गुणका वर्णन किया पर राजाके मनमें कोई नहीं भाया तब रुक्माग्रज उसके बड़े बेटेने कहा हे पृथ्वीनाथ नगर चँदेली में राजा शिशुपाल कुलीन व बलवान् है रुक्मिणी उसे विवाह कर संसारमें यश लीजिये जब राजा उसकी बातपर भी नहीं बोले तब रुक्मकेश राजा के छोटे पुत्रने कहा ॥

चौ० रुक्मिणि पिता कृष्णको दीजै। वासुदेवसे नाता कीजै ॥

यह सुनि भीष्मक हर्षे गाता। कह्यो पूत तुम अच्छी बाता।
तू बालक सबसे बड़ ज्ञानी। तेरी बात भली हम मानी॥
दो० तरुण छोटसों पूंछके कीजै मन परतीति। सारवचन गहिलीजिये यही जगतकी रीति॥

यदुवंशियों में राजा शूरसेन बड़े प्रतापी होकर वसुदेवजी उनके पुत्र ऐसे धर्मात्मा हैं जिनके घर आदिपुरुष भगवान्‌ने श्रीकृष्णनाम से अवतार लिया व राजा कंस आदिक अधर्मियों को मारकर सब यदुवंशी व प्रजाको बड़ा सुख देते हैं ऐसे द्वारकानाथको रुक्मिणी देकर संसारमें यश व बड़ाई लेना उचित है यह वचन सुनतेही तीनों छोटेपुत्र राजाके और मंत्री आदिक सभावालोंने प्रसन्न होकर कहा महाराज आपने बहुत अच्छा विचारा है ऐसा वर व घर दूसरा नहीं मिलैगा यह बात सुनतेही रुक्माग्रज बड़ा पुत्र राजाका जिसके सम्मत से राजकाज होता था सब सभावालोंपर झुंझलाकर बोला॥

चौ० समुझि न बोलत महागँवार। जानत नहीं कृष्णव्यवहार॥
बारह वर्ष नन्द के रह्यो। तब अहीर सब काहू कह्यो॥
दो० जन्म भयो यदुवंशमें वस्यो नन्द घर आय। कांध कमरिया कर लकुट फिरे चरावत गाय॥

हे पिता वह ग्वाल गँवार होकर उसकी जातिपांति का क्या ठिकाना है उसे कोई नंदजीका बेटा जानकर कोई वसुदेवका बालक कहते हैं आजतक यह भेद अच्छीतरह नहीं खुला कि किसका बेटा है व यदुवंशी कुछ प्राचीन राजा नहीं हैं क्या हुआ जो थोड़े दिनोंसे बढ़गये इससे उनकी गिनती तिलकधारी राजों में नहीं होसक्री कदाचित् श्रीकृष्ण वसुदेव यादवका पुत्र समझाजावे तौभी यादवलोग हमारे बराबर कुलीन न होकर वह अपनी कन्या हमको देवैं तो उचितहै सिवाय इसके श्रीकृष्ण राजा उग्रसेनका सेवक कहलाता है उसे रुक्मिणी विवाहकर संसारमें क्या यश पावैंगे वैर व विवाह बराबरवालेसे करना चाहिये जब रुक्मिणी का विवाह कृष्णके साथ करने में सब कोई मुझे ग्वालका साला कहैंगे तब मैं अपना मुँह लोगों को क्या दिखलाऊंगा॥

चौ० या विधि औगुण भरे कन्हाई। तासों हम नहिं करत सगाई॥

इसलिये शिशुपाल तिलकधारी राजाको जिसके प्रताप व डरसे दूसरे

राजा थर थर कांपते हैं रुक्मिणी विवाह दीजिये व फेर कृष्णका नाम मेरे सामने मत लीजिये जब यह वचन सुनकर सब सभावाले अपने अपने मनमें पछिताकर चुप होरहे व राजा भीष्मक बड़ा पुत्र समझकर कुछ नहीं बोले तब राजकुमार ने उसी समय ज्योतिषियों से शुभलग्न पूंछकर एकब्राह्मण के हाथ तिलक विवाह रुक्मिणी का राजा शिशुपाल के पास भेज दिया जब वह ब्राह्मण तिलक लेकर नगर चंदेली में राजमन्दिर पर पहुँचा व शिशुपाल ने बड़े हर्षसे तिलक लेकर उस ब्राह्मणको सन्मानपूर्वक बिदा कर दिया तब वह ब्राह्मण कुण्डिनपुरमें चला आया व राजा भीष्मक व रुक्माग्रज से तिलक लेने का हाल कहकर बोला राजा शिशुपाल बड़े धूमधामसे बरात साजकर विवाहनेआते हैं आप अपने यहां तैयारी कीजिये यह बात सुनकर पहिले राजा भीष्मक बहुत उदास होगये फिर अपने मनको धैर्य देकर रानीसे यह सब हाल कहा तब वह अपनी नातेदार स्त्रियों को बुलाकर रुक्मिणी के विवाहका मंगलाचार मनाने लगी व राजा ने अपने मंत्रियोंको विवाहकी तैयारी करनेवास्ते आज्ञा दी व कुंडिनपुरमें यह चर्चा घर घर होने लगी कि राजा रुक्मिणीका विवाह श्रीकृष्णजीसे करते थे पर रुक्माग्रज दुष्ट ने नहीं होने दिया अब शिशुपालसे विवाह उसका होगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब राजमन्दिरमें केलेके खम्भे गाड़कर सोनेका कलश धरने उपरांत मँड़वा तैयार हुआ व स्त्रियां मंगलाचार गीत गाकर अपने कुलकी रीति करने लगीं व राजाने न्योता भेजकर अपने इष्ट व मित्रों को बुलाया व नाच व रंग आदिक अनेक तरहका मंगलाचार वहां होने लगा तबदोचार सखियोंने आनकर रुक्मिणी से कहा तेरा विवाह रुक्माग्रजने राजा शिशुपालके साथ ठहराया है सो अब तू रानी होगी यह बात सुनते ही रुक्मिणी अपने मनमें बहुत उदास होकर बोली हे प्यारी मेरे स्वामी मनसा वाचा कर्मणा से श्यामसुन्दर वैकुण्ठनाथ हैं उनके सिवाय मैं दूसरेको अपना पति बनाना नहीं चाहती ऐसा कहकर रुक्मिणी शोच व विचार करने लगी ॥

चौ० शोचत महा करे दुख भारी । मिलैं कौन विधि कृष्ण मुरारी ॥

दो० माखनभुकके दरशको किहि विधि करौं उपाय । पुरीद्वारका दूरअति कछु नहिं बनै बनाव ॥

रुक्मिणीने बहुत शोच व विचार करके यह बात मनमें ठहराई कि किसीको मुरलीमनोहरके पास भेजकर अपनी इच्छा उनसे प्रकट किया चाहिये आगे वे मालिक हैं जब रुक्मिणीने इसके सिवाय दूसरा कुछ उपाय उत्तम नहीं देखा तब एक ब्राह्मण बुद्धिमान्‌को अपने माता व पिता व भाईसे छिपाकर बुलाया व अपना मनोरथ कहने व चिट्ठी देने उपरान्त हाथ जोड़कर उससे विनय किया महाराज आप कृपा करके तुरन्त यह चिट्ठी द्वारकामें लेजाइये व श्रीकृष्णजीके हाथ देकर मेरा सन्देशा कहने उपरान्त उन्हें अपने साथ यहां लेआइये तो जन्मभर आपका गुण मानकर यह समझूंगी कि तुम्हारी दयासे मैंने द्वारकानाथ को स्वामी पाया यह वचन सुनतेही वह ब्राह्मण रुक्मिणी से बिदा होकर मुरलीमनोहरका ध्यान करता हुआ द्वारका को चला व वैकुण्ठनाथकी कृपासे तुरन्त वहां पहुँचकर द्वारकापुरीकी शोभा इस तरह पर देखी कि रत्नजटित स्थान वहां बने होकर घर घर मंगलाचार व कथा पुराण होरहा है जब वह ब्राह्मण यह सब शोभा व आनन्द देखता हुआ श्यामसुन्दर की डेवढ़ीपर जहां हजारों द्वारपालक खड़े थे जापहुँचा व मारे डरके भीतर जाने नहीं सका तब द्वारपालकोंने उस ब्राह्मणसे पूंछा ॥

चौ० को हो आप कहांसे आये । कौन देशकी पाती लाये ॥

दो० सकल व्यवस्था आपनी तिनसों कही जनाय । कुण्डिनपुरको विप्रहों अबहीं पहुँचो आय ॥

उस ब्राह्मणका हाल सुनकर एक द्वारपालक बोला महाराज तुम किस वास्ते यहां खड़े हो हमारे स्वामीके स्थानमें किसी ब्राह्मणको जाने वास्ते मना नहीं है आप बेधड़क भीतर चले जाइये श्यामसुन्दर सामने सिंहासन पर बैठे हैं वे तुम्हारा बड़ा आदर करेंगे यह वचन सुनते ही जब वह ब्राह्मण कृष्णचन्द्रके सामने जहां वे जड़ाऊ सिंहासन पर पीताम्बर पहिने बैठे थे चलागया तब त्रिलोकीनाथने ब्राह्मणको देखते ही सिंहासन से उतरकर दण्डवत् की व सन्मानपूर्वक अपने पास बैठाला व चरण धोकर चरणामृत लिया व उसके शरीरपर उबटन व फुलेल मलवाकर स्नान

कराया व छत्तीस व्यंजन खिलाकर पान व इलायची दिया व सुगंधित फूलोंका गजरा पहिनाया व बड़े प्रेमसे पूछा महाराज आप कहां से आवते हैं व जिस देशमें तुम रहते हो वहांका राजा अपने कर्म धर्म से रहकर प्रजापालन व ब्राह्मणोंकी सेवा अच्छी तरह करता है या नहीं॥

चौ० कौन काज यहँ आवन भयो। दरश दिखाय हमैं सुख दयो॥

दो० कहत वचन द्विजराजसों माखन प्रभु या भांत। देखत हरिकी दीनता यादव सब मुसुकात॥

यह वचन सुनतेही वह ब्राह्मण रुक्मिणी की चिट्ठी उनके आगे रखकर बोला हे कृपानिधान मेरे आवने का यह कारण है कि कुण्डिनपुरमें रुक्मिणी राजा भीष्मक की कन्या आपका नाम व गुण सुनकर दिन रात यह इच्छा रखती है जिसमें तुम्हारे चरणों की दासी होवे सो उसका पिता उसे तुम्हारे साथ विवाहने चाहता था परन्तु रुक्माग्रज बड़े राजकुमारने यह बात न मानकर सगाई उसकी शिशुपाल से की है इसलिये वह बहुत राजोंको साथ लेकर बड़े धूमधामसे कुण्डिनपुरमें विवाह करने आवेगा व रुक्मिणी मनसा वाचा कर्मणासे तुम्हारे चरणों में प्रीति रखकर उसके साथ विवाह करना नहीं चाहती इसी वास्ते राजकुमारीने व्याकुलतासे चिट्ठी भेजकर तुम्हें बुलाया है यह वचन सुनतेही केशवमूर्ति भक्तहितकारीने बड़े हर्ष से वह चिट्ठी उसी ब्राह्मण को देकर कहा तुम इसको पढ़ो ब्राह्मण वह चिट्ठी पढ़कर सुनाने लगा उसमें रुक्मिणी ने लिखा था हे त्रिलोकीनाथ अविनाशी पुरुष तुम्हारे बराबर कोई दूसरा सुन्दर नहीं है सो मेरी विनय सुनिये हे परब्रह्म परमेश्वर मैं आपकी स्तुति सुनकर मनसा वाचा कर्मणासे अपने को तुम्हारी दासी समझती हूं व सिवाय तुम्हारे दूसरे को नहीं चाहती सो आपभी दयालु होकर मुझे अपने चरणों के पास रखिये यद्यपि मैं आपके योग्य नहीं हूं पर तुम्हारी दासियों में रहूंगी मेरा बड़ा भाई बरजोरी मुझे शिशुपालसे विवाहने चाहता है पर मैं यह बात न चाहकर प्रेमपूर्वक यह इच्छा रखती हूं कि तुम्हारी सेवा करके अपना जन्म स्वार्थ करूं कदाचित् आप ऐसा कहैं कि कुलवन्ती कन्या ऐसा कर्म नहीं करतीं जो अपने विवाह का सन्देशा आप भेजें सो

हे दीनानाथ इसका यह कारण समझिये तुम्हारी स्तुति जो संसारमें प्रकट है सुनकर मेरी लज्जा छूटगई तुम्हारे चरणोंकी रज मिलने वास्ते ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व बड़े बड़े योगी व मुनि इच्छा रखते हैं पर वह धूर उनको जल्दी नहीं मिलती सो मैं अपने मनसा वाचा कर्मणासे यह इच्छा रखती हूं जिसमें उन चरणोंकी सेवा करके वह रज अपने मस्तक पर लगाऊं कदाचित् वह धूर मुझे नहीं मिलैगी तो उन चरणोंमें ध्यान लगाकर यह तनु छोड़ देऊँगी ॥

चौ० जाको शिव सनकादिक ध्यावें। वेद पुराण भेद नहिं पावें॥
ताही चरण कमलकी आस। मन मधुकर है कीन्हों वास॥

दो० तुम चाहो या मति चहो माखन प्रभु यदुराय। मैं चाहति हूं आपको प्रेमप्रीतिके भाय॥

हे महाप्रभु अब शिशुपाल बरात साजिकर कुण्डिनपुरमें मुझे व्याहने आवैगा सो तुम वेग आनकर शत्रुओं को जीतने उपरांत मुझे यहां से ले जाव कदाचित् आप नहीं आवैंगे तो मैं अपना प्राण तुम्हारे चरणों पर न्यवछावर करके जहां दूसरा जन्म पाऊंगी उसी तनुमें तुम्हारा भजन करिकै हरिचरणों पास पहुँचोंगी ॥

चौ० हौं तुम्हरी चेरी की चेरी। तुमको सकल लाज है मेरी॥
कृपा करो मोहन यदुनाथा। रथ चढ़ि चलो विमके साथा॥

हे दीनदयालु ऐसा मत करना कि सिंहका आहार गीदड़ लेजावे कदाचित् आप ऐसा कहैं कि हम राजमन्दिर में से तुझे किसतरह हरले जावेंगे सो मैं विवाहसे एक दिन पहिले देवीजीकी पूजा करने वास्ते नगरके बाहर जाऊंगी जब वहां से फिरकर घर आने लगूं तब आप राहमेंसे मुझे अपने साथ लेजाना संसार में तुम्हारा नाम दीनदयालु प्रकट है इसलिये मुझे महादीन जानकर दयालु होना ॥

चौ० जो तुम वेगि न पहुँचो आय। तो मोहिं असुर व्याहि लैजाय॥

दो० याविधि पाती श्रवण करि माखन प्रभु करतार। कुण्डिनपुरके चलनको मनमें कियो विचार॥

तिरपनवां अध्याय।

रुक्मिणी को श्यामसुन्दरका हरि ले आवना॥

शुकदेवजीने कहा अय परीक्षित श्यामसुन्दरने वह चिट्ठी सुनते ही

बड़ी प्रसन्नतासे उस ब्राह्मणका हाथ पकड़ लिया व उसको अकेले में ले जाकर कहा अय ब्रह्ममूर्ति जिस दिनसे मैंने रुक्मिणी के रूप व गुणका हाल नारदजी के मुख से सुना है उसी दिनसे मैं भी उसके मिलने वास्ते चाहना रखता हूं और यह भी मुझको मालूम है कि रुक्माग्रज मेरे साथ शत्रुता रखकर उसका विवाह मुझसे होने नहीं देता सो तुम आज रात्रि को यहां रहो कल्ह प्रातसमय तुम्हारे साथ चलकर रुक्मिणीकी इच्छा पूर्ण करूंगा जिस तरह काठ में काठ रगड़ने से आगि उत्पन्न होकर सारा वन जल जाता है उसी तरह शत्रुओंको सेना समेत जीतकर रुक्मिणी को ले आऊंगा जब यह बात सुनकर ब्राह्मण देवता को धैर्य हुआ तब मुरली-मनोहरने दारुक सारथीको बुलाकर कहा कल्हप्रातसमय रथ तैयार करके ले आवना जब प्रातःकाल दारुक सारथी रथ उनका साजकर ले आया तब श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द उस ब्राह्मणसमेत रथपर चढ़कर कुण्डिनपुर को चले जब वह सारथी रथ दौड़ाकर नगर से बाहर ले गया तब प्राण-नाथ ने क्या देखा कि दाहिनी ओर हरिणों का झुण्ड चला जाता है यह शकुन देखकर उस ब्राह्मण ने केशवमूर्ति से कहा महाराज अच्छे शकुन मिलनेसे मेरे विचारमें ऐसा आवता है कि जिस कामके वास्ते आप चलते हैं वह अर्थ तुरन्त सिद्ध होगा श्यामसुन्दर बोले आपकी कृपासे मेरा मनो-रथ मिलैगा यह बात कहकर रथ आगेको बढ़ाया जब बलभद्रने सुना कि मुरलीमनोहर अकेले कुण्डिनपुरकोगये तब उन्होंने जाकर राजा उग्रसेनसे कहा महाराज हमने सुना है कि राजा शिशुपाल जरासन्ध आदिक बहुत से राजों को अपने साथ बरात में लेकर रुक्मिणी से विवाह करने वास्ते कुंडिनपुर आवता है व मोहनप्यारे यहांसे अकेले विना कहे वहां चलेगये हैं इसलिये हमको मालूम होता है कि वहां श्यामसुन्दर व उनलोगों से बड़ा युद्ध होगा आप आज्ञा दीजिये तो हमलोग भी जावें यह बात सुनते ही उग्रसेनने बलराम से कहा तुम सब सेना मेरी साथ लेकर ऐसी जल्दी कुण्डिनपुरमें जाव कि वासुदेव वहां पहुँचने न पावें राहमें उनसे मिलकर उन्हें अपने साथ यहां लेआवो यह वचन सुनतेही बलरामजीने उसी समय

दो अक्षौहिणी दल व बहुत शूरवीरोंको अपनेसाथ लेकर कुण्डिनपुरको कूच किया व राहमें श्रीकृष्णजीसे मिलकर बोले हे भाई मुझे भी साथ न लेकर अकेले चले आये मेरा प्राण तुम्हारे ऊपर न्यवछावर है श्यामसुन्दर भाई को देखने से बहुत प्रसन्न हुये व रुक्मिणीजीकी व्याकुलताका हाल जान कर महीनेका रास्ता एक दिन व एक रातिमें चले और जिस दिन शिशुपाल की बरात कुण्डिनपुरमें आवनेवाली थी उसी दिन वहां जा पहुँचे तब क्या देखा कि उस नगरमें घर घर मंगलाचार होकर गली व चौराहों में गुलाब जल व चन्दनका छिड़काव होरहाहै व सब छोटे बड़े कुण्डिनपुरवासी अच्छा अच्छा गहना व कपड़ा पहिने हुये अपने अपने द्वारे व चौराहों पर बरात देखने वास्ते हर्षपूर्वक बैठे हैं॥

दो० कुण्डिनपुरकी छवि महा वर्णिसकै कवि कौन। जाकी शोभा देखिकै सुखपावत ऋषिमौन॥

यह सबशोभा यहांकी देखतेहुये श्यामसुन्दरने अपनारथ राजाभीष्मक के बागमें लेजाकर खड़ा किया व उस ब्राह्मणसे बोले महाराज हम अपना डेरा यहां करते हैं तुम जाकर हमारे आवनेका हाल रुक्मिणी से कहिदेव जिसमें उसको धैर्य हो और वहां का समाचार फिर आनकर हमसे कहो कि उसका उपाय किया जावै यह वचन सुनकर वह ब्राह्मण राजमन्दिर को चला और उसी दिन राजा भीष्मक बरात निकट आवनेका हाल सुन कर अपनी सेना व न्योतहारी राजों को साथ लियेहुये बरातियोंको आगे से लेने गया व सन्मानपूर्वक उन्हें अपने साथ लेआकर यथायोग्य स्थान में जनवास दिया और अनेक पदार्थ भोजनके सब वस्तुसमेत जो जिसे चाहिये था उनके स्थानपर भेज दिया व बरात पहुँचने की खबर सुनकर राजमन्दिर में स्त्रियां मंगलाचार मनाने लगीं और पुरोहितने रुक्मिणीसे सोना व गोदान दिलवाकर मोतियोंका कँगना उसके हाथमें बँधवा दिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द कुण्डिनपुरमें पहुँच चुके थे पर रुक्मिणी को उनके आवनेका हाल नहीं मालूम था इसलिये वह यह सब चरित्र देखते ही अपने मनमें शोचित हो कर कहने लगी देखो श्यामसुन्दर चिट्ठी भेजने से मुझे निर्लज्ज समझ

कर अभी तक नहीं आये और उस ब्राह्मणने भी अब तक फिरकर कुछ सँदेशा नहीं दिया कि प्राणनाथ आवते हैं या नहीं इससे मालूम होता है कि वैकुण्ठनाथ अन्तर्यामी ने मुझे कुरूप समझकर कृपा नहीं किया या वह ब्राह्मण रास्ता भूलकर द्वारकाको नहीं गया या बरातके साथ जरासन्ध का आवना सुनकर नहीं आये ॥

चौ० मेरी कछुक चूक मन आनी। याते नहिं आये सुखदानी ॥
अजहूं नहिं आये नँदलाला। आय मोहिं बरिहै शिशुपाला ॥

हे महाप्रभो जब शिशुपाल कल्ह मुझे विवाहने उपरांत हाथ पकड़कर लेजावेगा तब मैं अबला अनाथ क्या करूंगी इससमय मेरे तप व जप व देवीजीकी पूजाने भी कुछ सहायता नहीं की हे परमेश्वर मैं क्या करूं किधर भाग जाऊं या अपना प्राण दे डालूं अब तुम्हारे विना किसीका भरोसा नहीं रखती रुक्मिणी अनेक बातें मनमें विचारकर किसी के पांवका खटका सुनती तो आना उस ब्राह्मणका जानकर चारों ओर देखने लगती थी जैसे चन्द्रमाका प्रकाश प्रातसमय मलीन होजाता है वैसे रुक्मिणीका चन्द्रमुख उसी शोचमें उदास होगयाथा जिसतरह पारा एक जगह नहीं ठहरता उसीतरह घबड़ाहट से कभी कोठे पर व कभी द्वारे पर कभी खिड़कियोंमें जाकर उस ब्राह्मणके आनेकी राह निहारा करती थी व लज्जावश अपने मनका भेद किसीसे नहीं कहती थी ॥

दो० मारखनप्रभुके ध्यानमें प्राणनकी सुधि नाहिं। तबहीं फड़के नयन भुज मुदितभई मनमाहिं ॥

यह दशा रुक्मिणी की देखकर एक सखी जो सब भेद जानती थी बोली हे प्यारी तुम इतना घबड़ाकर क्यों अपना प्राण देती हो वह विना पूंछे अपने पिता व भाई के किसतरह आवैंगे तब दूसरी सखीने कहा वे दीनदयालु अन्तर्यामी तुम्हारे मनका हाल जानकर विना आये न रहैंगे तुम अपने मनको धैर्य देकर व्याकुल मतिहो मेरी समझमें वह कुण्डिनपुरमें पहुँच चुके हैं उसका वचन सुनकर रुक्मिणी ने कहा इस समय मेरी बाईंआंख व भुजा फड़कती है तब वह सखी बोली इसे बहुत अच्छा शकुन समझो अभी कोई आनकर ऐसी खबर देगा कि श्यामसुन्दर आये

हैं जिससमय रुक्मिणी यह चर्चा अपनी सखियों से कररही थी उसीसमय उस ब्राह्मणने पहुँचकर रुक्मिणीको अशीश देने उपरांत कहा केशवमूर्ति ने बलरामजी व सेनासमेत यहां आनकर राजाके बागमें डेरा किया है ॥

दो० रुक्मिणि विप्रहि देखिके कीन्हों बहुत हुलास । कहत तुम्हारे धर्मसे अब पूजी मम आस ॥

उससमय रुक्मिणीको ऐसी प्रसन्नता हुई कि जैसे मृतकके तनुमें प्राण आजावें व तप करनेवाला अपना मनोरथ पाकर प्रसन्न होवे तब उसने हाथ जोड़कर ब्राह्मण से विनय किया हे द्विजराज तुमने वैकुण्ठनाथके आवनेका हाल सुनाकर मुझे जीवदान दिया मैं इसके बदले तुमको तीनों लोककी सम्पदा दूं तो भी तुमसे उऋण नहीं होसक्ती यह बात कहकर जैसे रुक्मिणी ने कृपादृष्टिसे उस ब्राह्मणकी ओर देखा वैसे उसके घर लक्ष्मीजीका वास होगया फिर वह ब्राह्मण आशीर्वाद देकर राजा भीष्मक के पास चलागया और श्यामसुन्दरके आनेका समाचार ज्योंका त्यों राजा से कहदिया जब राजाने सुना कि श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द मेरे यहां विवाह करनेवास्ते आनकर बागमें टिके हैं तब वह उसी क्षण बड़े हर्ष से बहुत रत्नादिक साथ लेकर अपने चारों छोटे बेटों समेत वाटिका में चला गया जब उसने दूरसे राम व कृष्ण दोनों भाइयों को बैठे हुये देखा तब सवारीपरसे उतरकर पैदल उनके निकट चलागया व रत्नादिक उन्हें भेंट देकर विनयपूर्वक बोला ॥

चौ० मेरे मन वच तुमहीं हरी । कहा कहौं जो दुष्टन करी ॥

हे महाप्रभो जब आपने दयालु होकर अपना दर्शन मुझे दिया तब मैं कृतार्थ होकर अपने मनोरथको पहुँचा फिर राजा भीष्मक बहुत अच्छे स्थान में श्याम व बलरामको टिकाकर राजमन्दिरपर चला आया व सब पदार्थ भोजनादिकका उनके यहां भेजकर यों कहने लगा कि रुक्मिणी श्रीकृष्ण-जी के साथ विवाहने योग्यहै पर क्या करूं मेरा कुछ वश नहीं चलता ॥

चौ० हरिचरित्र जानै नहिं कोय । क्या जानैं अब कैसी होय ॥

जब कुण्डिनपुरवासियों ने दोनों भाइयों के आनेका हाल सुना तब सब छोटे बड़ोंने उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर झुंडके झुंड उनके

दर्शन वास्ते वहां पहुँचे व उन्हें दण्डवत् करके अपने अपने लोचनों का फल प्राप्त किया व बड़े हर्षसे आपसमें कहने लगे ॥

दो० हैं अतिसुन्दर श्याम वर कहैं परस्पर लोग। यह शिशुपाल महाअधम नहीं रुक्मिणीयोग ॥

परमेश्वरकी दयासे हमारी इच्छा पूर्ण होकर रुक्मिणीका विवाह मुरली-मनोहरके साथ होवे और श्याम व बलराम दोनों भाइयोंकी जोड़ी चिरंजीविनी रहै हे राजन् जब चार घड़ी दिन रहा तब राम व कृष्ण रथपर बैठकर कुण्डिनपुरकी शोभा देखनेवास्ते निकले जिस गली व बाजार व चौराहे पर उनकी सवारी पहुँचती थी वहांके सब स्त्री व पुरुष अपनी अपनी खिड़की व चौबारे व द्वारोंपरसे दोनों भाइयों पर पुष्प आदिक बरसाकर आपसमें यों कहते थे ॥

चौ० नीलाम्बर ओढ़े बलराम। पीताम्बर पहिने घनश्याम ॥
कुण्डल चपल मुकुट शिरधरे। कमलनयन माधव मन हरे ॥

जब श्याम व बलराम नगरकी शोभा व राजा शिशुपालादिककी सेना देखते हुये अपने डेरेपर पहुँचे तब रुक्माग्रज उनके आनेका हाल सुनते ही बड़े क्रोध से अपने बापके पास जाकर बोला तुम सच बतलावो श्रीकृष्ण हमारे यहां विवाहमें विघ्न करनेवास्ते किसके बुलाने से आये हैं राजा भीष्मकने कहा मैंने उनको नहीं बुलाया तब वह जनवासे में जाकर शिशुपाल व जरासन्धसे बोला कुण्डिनपुरमें श्याम व बलराम भी आये हैं सो तुम अपने सेनापतियों से कहदेव कि चैतन्य रहैं उन दोनों भाइयोंका नाम सुनते ही राजा शिशुपाल मारे डरके चित्रकारीसा चुपचाप रहकर कुछ नहीं बोला पर जरासन्धने रुक्मसे कहा सुनो मित्र इन्हीं दोनों भाइयों ने राजा कंसादिक बड़े बड़े शूरवीरों को सहजमें मारलिया था यहां जो आये हैं तो अवश्य कुछ उपाधि करेंगे इन्हें तुम बालक मत समझो यह बड़े प्रतापी होकर आजतक किसीसे नहीं हारे सत्रहबेर तेईस तेईस अक्षौहिणी दल मेरा इन दोनों भाइयोंने लड़कर मारडाला जब अठारहवींबेर मैं सेना लेकर इनपर चढ़ा तब यह दोनों भाई बिना लड़े मेरे सामने से भागकर

पर्वतपर चढ़गये जब मैंने उस पहाड़ के चारोंओर आगि लगवा दी तब वहां से कूदकर द्वारकामें जा बसे॥

चौ० इनको काहू भेद न पायो। करन उपद्रव यहँ भी आयो॥
यह हैं छली महाछल करैं। काहूको नहिं जानों परैं॥

इसवास्ते अब कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिसमें हमलोगों की लाज रहै यह बात सुनकर रुक्माग्रज अभिमानसे बोला श्याम व बलराम क्या वस्तुहैं जिनसे तुम इतना डरते हो मैं उनको अच्छीतरह जानता हूं वृन्दावनमें नाच गायकर गौवें चराया करते थे वे बालक गँवार युद्धका हाल क्या जानते हैं तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो कृष्ण बलरामको यदुवंशियों समेत हम अकेले हटादेवेंगे हे राजन् उस दिन रुक्म इसतरह उन्हें बोध देकर अपने घर चला आया व शिशुपाल व जरासन्धने आपस में अनेक उपाय विचारकर बड़ी चिन्तासे वह रात काटी प्रातसमय वह दोनों इधर बरात निकालने की तैयारी करने लगे व उधर राजा भीष्मकके यहां मंगलाचार व विवाह का उद्योग होनेलगा व जातिभाइयों की स्त्रियोंने रुक्मिणी को उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर दुलहिनों के समान बनाया जब चारघड़ी दिन रहे बहुतसी ब्राह्मणी जो उस रोज मौनव्रत रक्खे थीं रुक्मिणीको हजार सहेलियों समेत साथ लेकर गावती बजावती देवीपूजा करनेवास्ते चलीं तब राजा शिशुपालने यह समाचार सुनकर इस डरसे कि कदाचित् मोहनप्यारे रुक्मिणीको बरजोरी उठा न लेजावें पचास हजार शूरवीर उसकी रक्षा करनेवास्ते संग करदिये सो वह लोग अनेक तरहके शस्त्र लेकर राजकुमारीके साथ चले उससमय रुक्मिणी सहेलियों के झुण्डमें धीरे धीरे हंसरूपी चाल चलती हुई कैसी सुन्दर मालूम होती थी जैसे चन्द्रमा तारोंमें शोभा देताहै व शिशुपाल व जरासन्ध के शूरवीर काले काले कपड़े पहिने उसको चारों ओर घेरे हुये श्यामघटासे मालूम होकर बीचमें जड़ाऊबाला पहिननेसे कान रुक्मिणीजीका बिजुली की तरह चमकता था सो रुक्मिणीजी ने मन्दिरमें पहुँचकर देवीजी का चरण धोया व विधिपूर्वक पूजन करके हाथ जोड़कर विनय किया॥

दो० बालापनते करतिहौं बहुविधान ते सेव। जो तुम सांची गौरिहौ मनमानत फल देव॥

यह वचन सुनते ही दूसरी स्त्रियोंने भी जो उसके साथमें थीं हाथ जोड़ कर कहा हे अम्बिके मातः ऐसी कृपा करो जिसमें राजदुलारीका मनोरथ मिलै जब पूजा करने व परिक्रमा लेने व ब्राह्मण खिलावने उपरान्त वह चन्द्रमुखी जिसके प्रकाश से अँधेरा छूटजाता था रोलीकी बेंदी लगाकर मंदिरसे बाहर निकली उससमय वह मृगलोचनी ऐसी सुन्दर मालूम देती थी जिसपर हजारों रति कामदेवकी स्त्री न्यवछावर होजावैं॥

दो० वादिन रुक्मिणि मात ते धरेहती व्रत मौन। पूजाकरि अविसों चली बरणिसकै कवि कौन॥

हे राजन् जिससमय वह महासुन्दरी श्याममिलन की आशा लगाये गजरूपी चालसे धीरे धीरे सहेलियों समेत राजमन्दिरपर आवने लगी उसी समय श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द भी तीनों लोकोंकी सुन्दरताई धारण किये अकेले रथपर बैठे हुये वहां आन पहुँचे॥

दो० पूजि गौरि जबहीं चली एक कहत अकुलाय। सुन प्यारी आये हरी देख ध्वजा फहराय॥

यह वचन सुनतेही जैसे राजकुमारीने घूंघट उठाकर मुसकराती हुई रथकी ओर देखा वैसे सब शूरवीर रखवारी करनेवाले वह तिरछी चितवन व मन्द मुसुकान देखते ही ऐसे अचेत होगये कि शस्त्र उनके हाथसे गिरपड़े॥

सो० भृकुटी धनुष चढ़ाय अञ्जन वरुणी पनचके। लोचन बाण चलाय मारे पै जीवत रहे॥

उसी समय वृन्दावनविहारीने अपना रथ सखियोंके झुण्डमें लेजाकर रुक्मिणी के पास खड़ा करदिया जैसे राजकुमारीने लजाती हुई हाथ बढ़ा कर मोहनप्यारे को मिलने चाहा वैसे श्यामसुन्दरने बायें हाथसे रुक्मिणी का हाथ पकड़के अपने रथ पर बैठालिया व शंख बजाकर वहां से रथ अपना हांका॥

चौ० कांपत गात सकुच मन भारी। छांड़ि सबै हरिसंग सिधारी॥
ज्यों बैरागी छांड़ै गेह। कृष्ण चरण से करै सनेह॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित रुक्मिणी अपने व्रत व पूजा का फल पाकर पिछला सब शोच भूल गई व राजा जरासन्ध व शिशुपालके शूरवीरों से कुछ नहीं बनपड़ा श्रीकृष्णजी इसतरह उन लोगों के बीचमेंसे रुक्मिणी को लेकर चलेगये जिसतरह सिंह सियारोंके गोल

मेंसे अपना आहार लेकर निर्भय चला जाताहै जब वहांसे बारह कोसपर रथ मुरलीमनोहरका जापहुँचातब वहशूरवीर सचेतहोकर उनकेपीछेदौड़े॥
दो० ऐसी विधि कन्या हरी भई प्रकट यह बात। सब राजा सुनकर कुढ़े मनहीं मन पछितात॥

जब बलरामजीने देखा कि श्यामसुन्दर रुक्मिणी को रथपर बैठाकर द्वारकाकी ओर चलेजाते हैं तब वह भी अपनी सेना साजकर शत्रुओंके लड़नेवास्ते श्रीकृष्णजीके पास चले आये और मुरलीमनोहरने रुक्मिणी को डरसे घबड़ाईहुई देखकर कहा हे प्राणप्यारी अब तू किसी बातका शोच मतकर द्वारकामें पहुँचते ही शास्त्रानुसार तुझसे विवाह करके तेरा मनोरथ पूर्ण करूंगा जब श्यामसुन्दर इसतरह धैर्य देकर अपने गलेकी माला रुक्मिणीको पहिना दी तब उसका भय छूटगया॥

चौवनवां अध्याय।

जरासन्ध व रुक्माग्रज आदिकको श्याम व बलरामसे युद्ध करना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब मुरलीमनोहर रुक्मिणीको इसतरह हर लेगये और यह समाचार शिशुपालने सुना तब जरासन्ध व दन्तवक्र आदिक सब बरातवाले राजा अपनी अपनी सेना साथ लेकर श्यामसुन्दर के पीछे चढ़ दौड़े व आपस में कहने लगे कि बड़ी लज्जाकी बात है हम लोगोंके रहने परभी यादव का बेटा रुक्मिणी को बरजोरी हरलेजावै जब इसीतरह की चर्चा आपसमें करते हुये निकट रथ श्यामसुन्दरके पहुँचे तब उन लोगोंने ललकारकर कहा तुम दोनों भाई कहांभागे जाते हो खड़े होकर हमारे साथ लड़ाई करो जो शूरवीर क्षत्रियहैं वह युद्ध विषे पीठनहीं दिखलाते यह वचन सुनते ही बलरामजीने अपनी सेना समेत फिरकर उन लोगोंसे ऐसा युद्ध किया कि दोनों ओर से अनेक शस्त्र चलकर नदीरूपी रुधिर बहिनिकला ऐसा भारी युद्ध देखकर रुक्मिणी घबड़ागई और बड़े शोचसे मनमें कहनेलगी देखो मेरेवास्ते श्याम व बलराम इतना दुःख पाते हैं हे परमेश्वर यह सब शत्रु कबतक लड़ेंगे व इतनी सेना किसतरह मारी जावैगी जब रुक्मिणी इसीतरह अनेक बातें विचारकर मारे डरके कांपने लगी तब वैकुण्ठनाथ अन्तर्यामीने उससे कहा तू मेरी

महिमा जान बूझकर इतना क्यों डरती है धैर्य रख अभी एक क्षणमें यह सब शत्रु इसतरह मारेजावेंगे जिसतरह सूर्य निकलने से तारे दिखलाई नहीं देते जब मुरलीमनोहरके समझाने परभी राजदुलारीका डर नहीं छूटा तब उन्होंने आप लड़ना उचित नहीं जाना व रथ अपना रणभूमि से अलग लेजाकर खड़ा करदिया और युद्धका कौतुक देखने लगे॥

दो० यादव असुरन से लड़त होत महासंग्राम। ठाढ़े देखत कृष्ण हैं करत युद्ध बलराम॥

उससमय बलरामजीने क्रोधित होकर हल व मूसल अपना उठा लिया व बड़े बड़े शूरवीर व हाथी व घोड़ोंको उससे मारनेलगे जिसतरह किसान लोग खेत काट डालते हैं उसीतरह बलभद्रजीने क्षणभर में बहुतसी सेना शत्रुओंकी मार गिराई जब जरासन्ध आदिक राजों ने यह दशा अपनी सेनाकी देखी तब रणभूमिसे भागकर शिशुपालके पास चले आये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित उससमय देवता अपने विमानों पर से बलरामजीपर पुष्प बरसाकर उनकी स्तुति करनेलगे जब शिशुपाल ने यह दुर्दशा अपने साथी राजोंकी देखी तब मारे शोच व लज्जा के मुख उसका पीला होगया और जरासन्ध से रोकर कहा महाराज रुक्मिणीको श्रीकृष्णचन्द्र बरजोरी उठा लेगये व लड़ाई में भी हमलोगों से कुछ नहीं बन पड़ा इसलिये लज्जावश मुझसे अपना मुख किसी को दिखलाया नहीं जाता और यह कलंक मेरा जन्मभर नहीं छूटैगा इससे कहो तो मैं भी लड़कर मरजाऊं॥

चौ० नहिं इत रहौं करौं वनवासा। लेइहौं योग छांड़ि सब आसा॥

यह बात सुनकर जरासन्धने कहा महाराज आप ऐसे ज्ञानी को मैं क्या समझाऊं बुद्धिमान् लोग हानि व लाभ में हर्ष व विषाद न करके सब बातोंको परमेश्वरके आधीन समझते हैं जिसतरह काठकी पुतलीको मदारी नचाते हैं उसीतरह सब जीवोंके कर्ता धर्ता नारायणजी होकर जो चाहते हैं सो होता है इसलिये दुःख व सुख को एकसा जानकर संसारी व्यवहार स्वप्नवत् समझना चाहिये देखो इसीतरह मैं भी सत्रह बेर इनसे हार गया था पर कुछ उदास नहीं हुआ जब अठारहवीं बेर ये दोनों भाई

मेरे सामनेसे भाग गये तव मैंने कुछ हर्षभी नहीं किया न मालूम यह दोनों कौन अवतार ऐसे बलवान् व प्रतापी हैं जिनसे कोई जीतने नहीं सक्ता ॥

दो० सुख पाछे दुख होतहै यही जगतकी रीति। कबहूं रणमें हारिहै कबहूं लीजै जीति॥

इसलिये यह समय टाल देना उचित है जिसतरह अठारहवीं वेर मेरा मनोरथ मिलाथा उसीतरह आपभी जीते रहेंगे तो एकदिन तुम्हारी इच्छा पूर्ण होजावेगी जब इसतरह समझाने से शिशुपाल को धैर्य हुआ तब वह और सब राजा उसके साथी सेना समेत जो जीते व घायल बच गये थे अपने अपने देश को चले गये व यादववंशियों ने सब वस्तु लूट की द्वारका में भेज दी ॥

दो० लज्जित होके फिर चल्यो हार मानि शिशुपाल। सब राजनको जीतिकै कूच कियो नँदलाल॥

जब रुक्माग्रजने जरासन्ध आदिकके भाग आवनेका समाचार सुना तब बहुत क्रोधित होकर अपनी सभा में आन बैठा व सब लोगों को जो वहां नेवता करने आये थे बड़े शब्द से सुनाकर कहने लगा यह कौन बात है जो मेरी बहिन को बरजोरी कृष्णचन्द्र उठा लेजावैं जबतक मेरे तनुमें प्राणहै तबतक रुक्मिणीको नहीं लेजाने दूंगा अब मैं यह प्रण करता हूं कि अभी जाकर दोनों भाइयों को मारने या जीता पकड़ने उपरांत रुक्मिणीको न लेआऊं तो अपना नाम रुक्म न रखकर कुण्डिनपुर में किसी को अपना मुख न दिखलाऊं ऐसा कहकर एक अक्षौहिणी दल से उनके पीछे चढ़दौड़ा और रास्ते में अपने सेनापतियोंसे कहा तुमलोग यादववंशियों को मारो मैं अपना रथ आगे को बढ़ाकर कृष्ण को जीता पकड़ लेआवता हूं यह वचन सुनते ही सेना उसकी यदुवंशियों से जो बलरामजी के साथ में थे लड़ने लगी व रुक्मने रथ अपना आगे बढ़ाकर श्यामसुन्दरसे ललकारके कहा हे यादव कहां भागा जाताहै तुझे सामर्थ्य हो तो एक क्षण ठहर कर मेरे साथ युद्ध कर मुझे शिशुपाल व जरासन्ध आदिक मत समझना जिसतरह गोकुल व वृन्दावनमें अहीरियों का गोरस चुराकर खाया करते थे उसीतरह मुझको भी व्रजवासी अहीर समझ कर मेरी बहिन चुरा लेभागे तुझे इस बात का कुछ भय नहीं हुआ कि

रुक्मिणी मुझ ऐसे शूरवीर व प्रतापीकी बहिन को बरजोरी उठा ले चला आजतक तुमने राजा भीष्मकका नामभी नहीं सुनाथा जो ऐसी अनीति की जो लोग तुम्हारे सन्मुखसे भाग गये हैं वे क्षत्रिय नहीं थे अब मेरे सामने से तुमको जीते बचकर जाना बहुत कठिनहै जब इसीतरहकी अनेक बातैं अभिमानपूर्वक रुक्मने कहकर बहुतसे तीर श्यामसुन्दर पर चलायें तब द्वारकानाथने अपने बाणसे वे सब तीर काट डाले फिर केशवमूर्ति ने चार बाणसे चारों घोड़ा और उसके रथको मारकर एक तीरसे सारथी को अचेत किया व एक बाणसे रथकी ध्वजा गिराकर दूसरे तीर से धनुप उस का काट डाला जब रुक्मने छोटे छोटे गदा आदिक अनेक शस्त्र मुरलीमनोहर पर चलाये व उन अस्त्रोंको भी श्यामसुन्दरने अपने बाणोंसे काट डाला व कोई अस्त्र उसका मोहनप्यारे के नहीं लगा तब इसतरह क्रोध करके ढाल तलवार हाथ में लिये हुये रथसे कूदकर वृन्दावनविहारी पर झपटा जिसतरह पतंग आपसे जलनेवास्ते दीपक पर जा गिरता है या जैसे बौड़हा गीदड़ हाथी पर झपटै तब मुरलीमनोहरने उसकी ढाल तलवार भी बाण से काटकर गिरा दिया॥

दो० तेहि अवसर कोपित भये माखन प्रभु व्रजनाथ। रुक्म हतनके कारणे लियो खड्गनिजहाथ॥

जब श्रीकृष्णचन्द्रने नंगी तलवार लिये हुये रथ से कूदकर रुक्म का शिर काटने चाहा तब रुक्मिणी यह दशा अपने भाई की देखकर डरती व कांपती हरिचरणों पर गिर पड़ी व रोती हुई हाथ जोड़कर बोली॥

चौ० मारो मत भाई है मेरो। छांड़ो नाथ तुम्हारो चेरो॥
मूरख अन्ध कहा यह जानै। लक्ष्मीपतिको मानुष मानै॥
नहिं जानै कोइ तुम्हरो अन्त। भक्त हेतु प्रकटे भगवन्त॥
यह जड़ कहा तुम्हैं पहिचानै। दीनदयालु जग तुम्हैं बखानै॥

सो मैं दीन होकर कहती हूं हे दीनानाथ जिसतरह आप बलभद्रजीको प्यारा जानते हैं उसीतरह मेरा भाई मुझकोभी प्याराहै जिसतरह ज्ञानी लोग बालक व बौड़हे व मूर्खके अपराधपर कुछ ध्यान नहीं करते दुर्वचन उनके कुत्ते के भूंकने समान समझते हैं उसीतरह आपभी मेरे भाई को

मूर्ख समझकर इसका प्राण मुझे दान दीजिये कदाचित् आप इसको मार डालैंगे तो मेरे पिताको जो तुम्हारा भक्त है बड़ा दुःख होगा और यह बात संसारमें प्रकटहै कि जहां तुम्हारे चरण जाते हैं वहां सबको सुख मिलताहै सो यह बड़ा आश्चर्य समझना चाहिये कि भीष्मक तुम्हारा श्वशुर होकर पुत्रका शोक उठावे ॥

चौ० बन्धुभीख प्रभु मोको दीजै । इतनो यश तुम जग में लीजै ॥

दो० जो तुम याको मारिहौ माखन प्रभु ब्रजराज । तो मोको सब सृष्टिमें अपयश ह्वैहै आज ॥

हे राजन् यह बात सुनने व रुक्मिणीकी दशा देखनेसे श्यामसुन्दरने प्राण लेना रुक्मका छोड़कर जैसे सारथीको सैनमें बतलाया वैसे उसने रुक्म की पगड़ी उतारकर भुजा उसकी बांध मूछ व डाढ़ी व शिरके बाल मूड़कर सात चोटी रखने उपरांत उसे अपने रथमें बांधलिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित उधर श्रीकृष्णजीने रुक्मकी यह दुर्दशा की इधर बलरामजी सेना उसकी मार व भगाकर यदुवंशियोंको साथ लिये इसतरह बड़े हर्षसे केशवमूर्ति के पास पहुँचे जिसतरह ऐरावत हाथी कमल वनको रौंदकर तोड़ता चला आवता है जब रुक्मको बांधा देखकर सब यदुवंशी हँसने लगे तब बलभद्रजीने मुरलीमनोहरसे कहा हे भाई रुक्मसे तो भूल हुई थी पर आपने भी अच्छा नहीं किया जो अपने सालेका शिर मुड़वाकर उसे बांध रक्खा है इसतरहके जीनेसे रुक्मका मरना उत्तम था कदाचित् यह युद्धविषे सन्मुख मारा जाता तो अप्सरा हाथों हाथ इसे उठाकर स्वर्गमें लेजातीं अब तुम्हारी सरहजभी इसका संग प्रसन्नता से नहीं करैगी ॥

चौ० बांध्यो याहि करी बुधि थोड़ी । फिर तुम कृष्ण सगाई तोड़ी ॥
यदुकुलको तुम लीक लगाई । अब हमसे को करै सगाई ॥

दो० अब याकी गति देखिकै मनमें आवै त्रास । नारि आपनी होय जो सोउ न आवै पास ॥

इसलिये जिससमय रुक्म तुम्हारे सामने लड़ने आयाथा उसीसमय उसको समझाकर बिदा करदेना उचित था इष्टमित्र व सम्बन्धियों को अपराध करनेपरभी मारना व बांधना न चाहिये सो आपने प्राण लेनेसे भी

अधिक दण्ड इसको दिया अब इसे बांधकर रखने से क्या गुण निकलेगा यह वचन अपने भाईका सुनतेही श्रीकृष्णजीने रुक्मको छोड़ दिया तब बलदाऊजी ने उसे बहुत संतोष देकर जानेवास्ते कहा व रुक्मिणीजी से बोले ऐ राजकन्या तुम्हारे भाईकी जो यह गति हुई इसमें कुछ दोष श्यामसुन्दरका नहीं है यह सब इसके पिछले जन्मके कर्मोंका फल था क्षत्रियोंका यह धर्म है कि पृथ्वी व द्रव्य व स्त्रीके वास्ते आपसमें झगड़ा करते हैं जब दो मनुष्य लड़ेंगे तो उसमें से एक जीतकर दूसरा अवश्य हारैगा कर्मका लिखा हुआ किसी तरह नहीं मिटता जो कुछ रुक्मके भाग्यमें लिखा था सो हुआ व संसारमें जिसने जन्म पाया वह अवश्य दुःख व सुख उठावताहै व जीवात्मा सदा अमर रहकर कभी नहीं मरता और यह शरीर सदा बनता बिगड़ता रहताहै इसवास्ते अंगकी दुर्दशा होनेसे जीवात्माकी निन्दा नहीं होती इसलिये तुम रोना अपना छोड़कर यह सब दुःख रुक्मके प्रारब्धाधीन समझो यह बात समझाने से रुक्मिणी अपने मनको धैर्य देकर चुप होरही व रुक्म विदा होते समय शिर अपना ऊपर चरण श्यामसुन्दरके रखकर विनय किया हे दीनानाथ मैं तुम्हारी महिमा नहीं जानता था इसलिये मुझसे अपराध हुआ अब दयालु होकर उसे क्षमा कीजिये जब ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता आपको नहीं पहिंचान सके तो मेरी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा जानने सकूं इसीतरह बहुत बिनती व स्तुति करके रुक्म वहां से बिदा हुआ॥

दो० कहै सुन्दरी सैनमें किये जेठकी लाज। अब विलम्ब क्यों करतहौ हांको रथ व्रजराज॥

यह मनसा रुक्मिणीकी समझकर श्रीकृष्णजीने रथ अपना द्वारकाकी ओर हांक दिया व रुक्म अपनी प्रतिज्ञानुसार राजमन्दिर पर नहीं गया व कुण्डिनपुरके निकट भोजकट नाम दूसरा नगर बसाकर वहां रहा व राजा भीष्मकसे मनमें शत्रुतारखकर अपनी स्त्री व पुत्रोंको वहां बुला भेजा जब रामकृष्ण द्वारकापुरीके निकटपहुँचे तब राजा उग्रसेन व वसुदेव आदिक बड़े हर्षसे नगरके बाहर आनकर सन्मानपूर्वक उनको लिवा लेगये व सब द्वारकावासियोंने अपनेअपने द्वारेपर मंगलाचार मनाकर उनकी आरती की॥

दो॰ प्रिया सहित श्रीद्वारका यदुपति पहुँचे आय। पुरवासी प्रफुलित भये आनँद उर न समाय॥

जब केशवमूर्ति इसीतरह सबको सुख देते हुये अपने द्वारे पर पहुँचे तब देवकीजी ने बहुत स्त्रियों समेत वहां आनकर अपने कुलकी रीति की व रुक्मिणी की सुंदरताई देखतेही बड़े हर्ष से उसे व मोहनप्यारेको महलमें लेगईं व राजा उग्रसेन व वसुदेवजी ने उसी दिन गर्ग पुरोहितको बुला कर विवाहका मुहूर्त पूंछा जब गर्ग मुनिने शुभ लग्न विवाहका बतलाया तब राजा उग्रसेनने अपने मंत्रियोंको विवाहकी तैयारी करनेवास्ते आज्ञा देकर दुर्योधन आदिक अनेक राजोंके यहां नेवता भेज दिया जब राजा भीष्मकने जो अपनी कन्या श्यामसुन्दरको विवाहने चाहता था द्वारकामें विवाह होनेकी तैयारी सुना तब उसने बड़े हर्षसे अपने मनमें कन्यादान संकल्प किया व बहुत से रत्नादिक व भूषण व वस्त्र व हाथी व घोड़ा व रथ व पालकी व दासी व दास अपने पुरोहित सहित द्वारकापुरीमें वसुदेव जीके पास भेज दिया व बिनती अपनी कहला भेजा जब द्वारकामें उधर देश देश के राजा नेवता करनेवास्ते आनकर इकट्ठे हुये तब इधरसे यह ब्राह्मण सब वस्तु दहेजकी लेकर वहां पहुँचा तो ऐसी भीड़ व शोभा द्वारकामें हुई जिसका हाल वर्णन नहीं होसक्ता जब विवाहवाले दिन केलों के खम्भा गाड़कर मखमली चँदवा रत्नजटित बांधा गया व सुगन्धित पुष्प व नौरत्नकी बंदनवार बांधकर मोतियोंसे चौक पुरवाने उपरांत मड़वा तैयार हुआ तब राजा उग्रसेन आदिक ने मोहनप्यारे व रुक्मिणीको उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर जड़ाऊ चौकीपर बैठाल दिया जब बड़े बड़े यदुवंशी व नातेदार राजालोग वहां आनकर चारोंओर बैठे व ब्रह्मा व महादेव व कुबेरआदिक सब देवता अपना अपना रूप बदलकर वह मंगलाचार देखनेवास्ते उस जगह इकट्ठे हुये तब गर्ग पुरोहित ने शास्त्रानुसार विवाह श्यामसुन्दरका रुक्मिणी के साथ करादिया और दोनों को भाँवरि फिराया॥

चौ॰ पण्डित तहां वेदध्वनि करैं। रुक्मिणिसँग प्रभु भांवरि फिरैं॥
ढोल नफीरी बहुत बजावैं। हरषैं देव सुमन बरसावैं॥

सिद्ध साध्य चारण गन्धर्बै। अन्तरिक्ष है देखैं सर्वे॥
चढ़िविमान सब माथ झुकावैं। देव बधू सब मंगल गावैं॥
हाथ धरे प्रभु भांवरि पारी। वामअंग रुक्मिणि बैठारी॥
खोलत कंकण कृष्ण मुरारी। ऐसे रस्म रीति सब कारी॥
अति आनन्द रचो जगदीशा। हर्षि हर्षि सब देहिं अशीशा॥
कृष्ण रुक्मिणी जोड़ी जीवैं। यह चरित्र सुनि अमृत पीवैं॥

उस समय स्त्रियां मंगलाचार गीत गायकर व अप्सरा आकाशमें विमानों पर नाच नाच के प्रसन्न होती थीं व गंधर्व गाना सुनाके देवता लोग अनेक तरहके रत्नजटित भूषण दुलह व दुलहिनको पहिनाकर आनंद मचाते थे जब विवाह होचुका तब राजा उग्रसेन ने ब्राह्मणोंको बहुतसा दान व दक्षिणा देकर सन्मानपूर्वक बिदा किया व याचकों व अँगनोंको मुँहमांगा द्रव्यादिक इतना दान दिया कि उनको दूसरी जगह मांगने की इच्छा नहीं रही व सब यदुवंशी व राजा लोगोंने रुपया व अशरफी नेवता देकर उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र रुक्मिणीको पहिना दिया व राजा उग्रसेनने सब नेवतहारी राजा व कुण्डिनपुरवासी ब्राह्मणों को यथायोग्य सन्मानपूर्वक बिदा किया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् उस दिन द्वारकापुरी व तीनोंलोकों में ऐसा आनंद सबको प्राप्त हुआ जिसका हाल वर्णन नहीं होसक्ता व रुक्मिणीजी के द्वारका में आने से सब छोटे बड़ों के घरमें लक्ष्मीजी का वास होगया व सब राजा उनके आधीन रहकर अपने अपने देशकी सौगात श्याम व बलरामको भेजने लगे जो कोई यह कथा रुक्मिणीमंगलकी सच्चे मनसे कहै व सुनै उसको भुक्ति व मुक्ति सब तीर्थस्नान करनेका फल मिलता है॥

पचपनवां अध्याय।

प्रद्युम्नके जन्मकी कथा॥

इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे मुनिनाथ कामदेवको शिवजी ने किस तरह जला दिया था वह कथा वर्णन कीजिये शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित एकदिन महादेवजी कैलास पर्वत पर बीच ध्यान परमेश्वरके बैठे थे उससमय अचानकमें कामदेवने आनकर उन्हें ऐसा सताया कि

ध्यान उनका खुलगया तब उन्होंने क्रोधसे अपनी तीसरी आंख खोलकर कामदेवकी ओर देखा तो वह जलकर राख होगया ॥

दो० कामबलीजबशिवदहेउ तबरतिधरत न धीर। पतिबिनुअतितलफतखड़ी विहलविकलशरीर॥

चौ० कामनारि यों लोटत फिरै। कन्त कन्त कहि चाहत मरै॥

जब शिवजीने यह दशा उसकी देखी तब प्रसन्न होकर कहा हे रते तू शोच मत कर कुछ दिन बीते कामदेव कृष्ण अवतार में रुक्मिणीके गर्भ से उत्पन्न होकर शम्बरासुरके घर आवैगा सो तू शम्बर दैत्यके यहां जाकर रसोई बनाने वास्ते रह वहां तेरा स्वामी तुझे मिलकर सुख देवैगा जब यह सुनकर रति को धैर्य हुआ तब वह मायावतीनाम वृद्धा स्त्रीका रूप धरकर उस दैत्यके यहां चलीगई व रसोई बनानेवालों में मुखिया बनकर अपने पतिके मिलनेकी आशामें रहने लगी व परमेश्वरकी आज्ञानुसार कामदेवने रुक्मिणीके गर्भसे जन्म लिया सो वह बालक श्रीकृष्णजीके रूपसमान ऐसा सुंदर उत्पन्न हुआ जिसे देखकर सूर्यदेवता लज्जित हो जाते थे जब राजा उग्रसेन व वसुदेवजीने ज्योतिषियों से जन्मलग्न का हाल पूंछा तब पण्डितों ने जन्मकुण्डली उसकी बनाकर कहा महाराज हमारे विचारमें ऐसा मालूम होता है कि यह बालक सुन्दरताई व बल व गुण में श्रीकृष्ण ऐसा होगा और कुछ दिन जलवास करने व शत्रु को मारने उपरांत अपने माता व पितासे आन मिलैगा जब ब्राह्मणलोग उस बालकका नाम प्रद्युम्न रखकर दक्षिणा लेने उपरांत अपने अपने घर चले गये तब वसुदेवजीने अपने कुलकी रीति करके मंगलाचार गनाया तब परमेश्वरकी इच्छानुसार नारदमुनिने शम्बर दैत्य से जाकर कहा तू नहीं जानता कामदेव तेरे शत्रुने प्रद्युम्न नामसे कृष्णचन्द्रके यहां जन्म लिया है बारह वर्षकी अवस्थामें वह तुझे मारेगा जब नारदमुनि ऐसा कहकर ब्रह्मलोकको चलेगये तब शम्बर दैत्यने विचार किया मैं अभी प्रद्युम्नको उठा लेआकर समुद्र में डालदूं तो मेरे मनकी चिन्ता छूट जावे ऐसा विचारतेही शम्बर हवारूप बनकर द्वारकामें आया व रुक्मिणी के मंदिर में जाकर बीच सौरीके घुसगया और प्रद्युम्न को जो अठारह

दिनका था वहांसे उठाकर लेउड़ा पर किसी स्त्री ने जो सौरीमें बैठी थी उसे लेजाते नहीं देखा जब रुक्मिणी अपना बालक शय्यापर न देखकर रोने लगी तब सब स्त्रियोंने इस बात का आश्चर्य माना व शम्बरदैत्य प्रद्युम्नको समुद्र में डालकर अपने घर चला आया व श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार प्रद्युम्न को एक मछलीने निगलकर तीन वर्ष तक पालन किया जब एक केवट उसी मछलीको जालमें फँसाकर शम्बरदैत्यके यहां भेंट लेगया तब उसने वह मछली अपने रसोई बनानेवालों के पास भेज दिया जब उन्होंने उस मछलीका पेट चीरा तब उसमें से एक बालक श्यामरंग बहुत सुन्दर जीता हुआ निकला जब वह लोग अचम्भा मानः कर उसे मायावतीके पास लेगये तब उसने बड़े हर्षसे बालकको लेलिया व शम्बरदैत्यसे छिपाकर उसे पालने लगी कुछ दिन बीते शम्बरासुरने भी उसे देखा तो उसकी सुन्दरताई पर मोहित होकर मायावती से कहा तू इसे अच्छीतरह पालन कर उन्हीं दिनों नारदमुनि मायावतीके पास जाकर बोले यह बालक कामदेवनाम तेरा पति है और इसकी माता रुक्मिणी और पिता श्रीकृष्णजी द्वारकामें रहते हैं व शम्बरासुरने इसको सौरीमेंसे चुराकर बीचसमुद्रके डाल दियाथा सो महादेवजीके आशीर्वाद से तेरे पास पहुँचा है अपना बालापन यहां बिताकर शम्बरदैत्य को मारने उपरांत तुझे द्वारका में लेजायगा यह बात कहकर नारदमुनि चले गये व रति यह हाल सुनतेही बहुत प्रसन्न होकर बड़े प्रेमसे उसको पालने लगी ज्यों ज्यों वह बालक सयाना होता था त्यों त्यों रति को अपने पति मिलनेकी चाहना बढ़कर यों कहती थी ॥

चौ० ऐसो प्रभु संयोग बनायो। मछली माहिं कन्त मैं पायो ॥

जब प्रद्युम्न पांचवर्षका हुआ तब रति उसको उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर उसे देख देख अपनी आंखों को सुख देने लगी व प्रद्युम्न उसको अपनी माता समझकर लड़कोंकी तरह मैया मैया कहता था व मायावती उसके साथ कान्तभाव रखकर दुलार व प्यार करती थी ॥

दो० ऐसेही पालत रही बहुत दिना चितलाय। भयो तरुण सुन्दर महा शोभा कही न जाय ॥

जब प्रद्युम्न नव दश वर्ष का होकर सब भला व बुरा समझने लगा तब उसने एक दिन मायावती से जो अपना शृंगार करके उसके साथ कटाक्ष करती थी कहा तुम हमारी माता होकर मुझे पतिभावसे देखती हो यह बात सुनकर रति मुसकराती हुई बोली अय कान्त तुम यह क्या बात कहते हो मैं रति तुम्हारी स्त्री हूँ॥

दो० जन्म लियो श्रीद्वारका शम्बरलियो चुराय। और अवस्था जो हती सो सब कही बुझाय॥

जब प्रद्युम्नने मायावती से सब हाल अपने जलने व अवतार लेने व समुद्र में डालने व मछली निगलनेका सुना तब उसने रतिको अपनी स्त्री जानकर शम्बरासुरको अपना शत्रु समझा उससमय मायावती बोली हे कान्त शिवजीके आशीर्वादसे मैं तो अपने मनोरथको पहुँची पर रुक्मिणी माता तुम्हारी ऐसा दुःख पावती है जैसे बछड़े के बिछुड़ने में गौ को सुख नहीं मिलता इसवास्ते अब तुम्हें शम्बर दैत्यको मारकर द्वारका में चलके अपने माता व पिताको सुख देना चाहिये पर यह दैत्य माया-युद्ध बहुत जानता है व तुमने अभीतक युद्धकी विद्या कुछ नहीं पढ़ी इसलिये वह विद्या मुझसे सीख लेव॥

दो० मैं याकी विद्या सकल तुमको देउँ बताय। जाते शम्बर असुर खल तुमसों जीतो जाय॥

जब प्रद्युम्नने बारह वर्षकी अवस्थातक सब बाणविद्या व मायायुद्ध मायावती से सीख लिया तब अपने मनमें युद्ध करनेकी सामर्थ्य पाकर शम्बरदैत्यको दुर्वचन कहने लगा जिसमें उससे युद्ध हो जब एक दिन प्रद्युम्न खेलता हुआ शम्बरासुरकी सभामें चलागया तब उस दैत्यने किसी दूसरे से कहा मैंने इस बालकको अपना बेटा करके पाला है यह वचन सुनकर प्रद्युम्न ताल ठोंककर बड़े क्रोधसे बोला मुझे अपना लड़का मत समझो मैं तुम्हारा शत्रु हूँ मुझसे लड़कर मेरा बल देखलेव यह वचन सुन कर शम्बरासुर हँसता हुआ अपने सभावालोंसे बोला देखो भाई जैसे मैंने दूध पिलाकर सांप को पाला वैसे यह मेरे वास्ते दूसरा प्रद्युम्न उत्पन्न हुआ ऐसा कहकर शम्बर दैत्य प्रद्युम्नसे बोला अय बेटा तुम्हारी क्या मृत्यु आई है जो ऐसी कठोर बातें मुझसे कहते हो उसने उत्तर दिया कि मेराही नाम

प्रद्युम्न हे तुमने तो मुझको समुद्रमें फेंककर मेरा प्राण लेने चाहा था पर नारायणजीकी दयासे जीता बचकर आज तुमसे अपना वैर लेने आयाहूं जिसतरह तुमने अपना काल घरमें पाला था उसीतरह अब मुझसे लड़ाई करो कोई किसीका बाप व बेटा नहीं होता संसार की गति सदासे इसी तरहपर चली आती है यह बात सुनकर शम्बरासुर बड़ा शोच व क्रोध करके अपनी सेनासमेत प्रद्युम्नसे लड़ने वास्ते नगरके बाहर निकला व गदा हाथ में लेकर प्रद्युम्नसे ललकारके बोला देखैं अब तेरा प्राण कौन बचाता है जब ऐसा कहकर शम्बर दैत्यने उनपर गदा चलाई प्रद्युम्नने अपनी गदा मार कर उसकी गदा गिरा दी तब शम्बरासुरने अग्निबाण उसके ऊपर छोड़ा जब उसेभी प्रद्युम्नने जलबाण मारकर बुझादिया तब शम्बरासुरने झुँझला-कर अनेक तरहके शस्त्र उसपर चलाये जब प्रद्युम्नने वे भी सब काटकर गिरा दिये तब दोनों मनुष्य आपसमें लपटकर मल्लयुद्ध करने लगे जब कुश्तीमें प्रद्युम्न नहीं हारा तब शम्बर दैत्य मंत्रकी विद्यासे उसपर पत्थर बरसाने लगा जब प्रद्युम्नने अपने मन्त्रसे पत्थर बरसाना बन्द करदिया तब शम्बरासुर माया के बलसे प्रद्युम्नको उठाकर आकाशकी ओर ले उड़ा उससमय प्रद्युम्नने क्रोध करके एक तलवार शम्बरदैत्यके ऐसी मारी कि शिर उसका भुट्टासा कटकर पृथ्वीपर गिरपड़ा व क्षणभरमें उसकी सेनाभी काटडाली तब देवतों ने प्रसन्न होकर आकाश से उनपर फूल बरसाये व संसारी लोग जो उसके डरसे यज्ञ व होम नहीं करने पाते थे आनन्द होगये व प्रद्युम्नकी बहुत स्तुति करके बोले श्रीकृष्णजी वैकुण्ठनाथ का सामना कोई नहीं करसक्ता अब उनका पुत्रभी ऐसा बलवान् उत्पन्न हुआ जिसके बराबर कोई दूसरा शूरवीर संसारमें दिखलाई नहीं देता ॥

दो० जो ऐसे बल देखते निज सुतको भगवान। करते मनमें मुदित है तिहूंलोक को दान॥

जब प्रद्युम्नने शम्बरासुरको मारकर श्यामसुन्दरकी दुहाई उस नगरमें फेर दी तब मायावतीने प्रसन्न होकर निजरूप अपना रतिका महासुन्दर बारह वर्ष की अवस्था बनालिया व उड़नखटोलने पर अपने पतिसमेत बैठकर द्वारकाको गई उससमय प्रद्युम्न श्यामरंग व रति चन्द्रमुखी दोनों

आकाशमें कैसे सुन्दर मालूम देतेथे जैसे कालीघटामें बिजुली शोभा देती है जब वे रुक्मिणीके आंगन में उड़नखटोलनेसे उतरकर खड़े हुये तब सब स्त्रियां श्यामसुन्दरकी जो प्रद्युम्नके हरने उपरान्त व्याही गई थीं प्रद्युम्नको जो केशवमूर्तिके रूप समान था देखकर चौंक उठीं व उनके मनमें इस बातका सन्देह हुआ कि मुरलीमनोहर यह नई सुंदरी और कहींसे लाये हैं तब उन्होंने उसकी सुन्दरताई देखनेवास्ते चारोंओरसे आनकर घेर लिया और यह भेद किसीने नहीं जाना कियह प्रद्युम्नहै उस समय श्रीकृष्णकुमार ने सब स्त्रियोंसे पूंछा कि हमारे माता व पिता कहां हैं जब यह बात सुनकर सब स्त्रियोंको अचम्भा मालूम हुआ तब उन्होंने प्रद्युम्नकी ओर आंख उठाकर देखा तो चिह्न भृगुलताका उनकी छातीपर नहीं दिखलाई दिया तब उन्होंने समझा कि यह श्रीकृष्ण न होकर कोई दूसरा पुरुष है और रुक्मिणीने प्रद्युम्नका मुखारविन्द देखकर अपनी सहेलियोंसे कहा बड़ा भाग्य उस स्त्रीका समझना चाहिये जिसने ऐसा सुन्दर पुत्र जना और यह स्त्री भी सुन्दरताई में इस बालक की बराबर है मेरा बेटा भी जो कोई चुरा लेगया इसी रूपका था परमेश्वरकी दया व मेरे भाग्यसे जीता होकर यह वही बालक आया हो तो आश्चर्य नहीं मेरा बेटाभी रहता तो इसी अवस्था का होता ऐसा विचारकर रुक्मिणीने प्रद्युम्नसे पूंछा ॥

दो० जन्म भयो किहि गांवमें कहा तुम्हारो नांव। कौन तुम्हारे मातु पितु क्यों आयो यहिठांव ॥

यह वचन कहतेही रुक्मिणीको प्रेम हुआ कि उसकी छातीसे दूध बह निकला व बायां अंग फड़कने लगा तब उसे विश्वास हुआ कि यह मेरा पुत्रहै यह बात समझतेही रुक्मिणीने चाहा कि मैं उसको गोदमें उठाकर प्यार करूं पर बिना आज्ञा अपने स्वामीकी ऐसा उचित न जानकर मनमें शोच विचार कर रही थी कि उसी समय वसुदेव व देवकी व कृष्णचन्द्र ने वहां पहुँचकर यह हाल देखा जब श्यामसुन्दरने सब भेद जानने पर भी कुछ हाल प्रद्युम्नका किसीसे नहीं कहा तब उनकी इच्छानुसार उसी क्षण नारदमुनिने वहां आनकर सब हाल प्रद्युम्नका ज्योंका त्यों कह सुनाया व रुक्मिणीसे बोले यह तेरा बेटाहै यह वचन सुनतेही रुक्मिणीने दौड़कर

प्रद्युम्नको गोद में उठा लिया व शिर व मुख उसका चूमकर बलायें लेने लगी जिसतरह बिछुड़ा हुआ बेटा मिलने से माता व पिताको हर्ष होताहै उसीतरह रुक्मिणीको आनन्द प्राप्त हुआ व उसने रतिको अपनी गोदमें बैठाकर बहुतसा प्यार किया ॥

दो० देखि पुत्र प्रफुलित भई या विधि रुक्मिणि माय । हर्ष न जाके चित्तकी धर्ष न कहो न जाय ॥

श्रीकृष्णजीभी अपने पुत्र व पतोहूको देखकर बहुत प्रसन्न हुये श्यामसुन्दर अन्तर्यामी सब हाल जानते थे कि मेरा बेटा शम्बरासुरके यहां है पर इतने दिनतक उन्होंने यह भेद रुक्मिणी से नहीं कहा था जब प्रद्युम्न ने शिर अपना ऊपर चरण माता व पिता व दादा व दादी आदिक के रखकर अपने बड़ोंको पहिंचाना तब सबों ने उसको आशिष देकर प्यार किया व बहुतसा द्रव्यादिक उसके हाथ से दान व दक्षिणा दिलवाया व सब स्त्री व पुरुष द्वारकावासी अपने अपने घर मंगलाचार मनाकर कहने लगे वसुदेवनन्दनका बड़ा भाग्य है जो खोया हुआ पुत्र एक स्त्री महासुन्दरी अपने साथ लेकर उनके घर चला आया ॥

दो० नर नारी मोहे सबै देखि प्रद्युमन रूप । बिनु देखे क्षण ना रहैं ऐसो रूप अनूप ॥

वसुदेवजीने शुभ लग्नमें बड़ी धूमधामसे विवाह प्रद्युम्नका रतिके साथ करदिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् इसतरह कामदेव ने प्रद्युम्न जन्म लेकर रति अपनी स्त्री को सुख दिया ॥

छप्पनवां अध्याय ।

श्रीकृष्णजीका जाम्बवती व सत्यभामासे विवाह करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिन दिनों प्रद्युम्न शम्बरासुरके यहांथा उन्हीं दिनों सत्राजित यादवने पहिले श्रीकृष्णजीको मणिकी झूठी चोरी लगाई पीछे से लज्जित होकर अपनी कन्या उन्हें विवाह दी यह सुनकर परीक्षित ने विनय किया हे कृपानिधान सत्राजितने वह मणि कहांसे पाकर किसतरह श्यामसुन्दरको उसकी चोरी लगाई व फिर क्योंकर अपनी कन्या उन्हें विवाह दी शुकदेवजी बोले सत्राजित नाम यादव द्वारकापुरी में रहता था जब उसने बहुत दिनतक सूर्य देवताका तप व ध्यान सच्चे

मनसे किया तब सूर्य भगवान्‌ने प्रसन्न होकर उसको दर्शन अपना दिया व स्यमंतक नाम मणि उसे देकर बोले तुम इस मणिको मेरे समान जानकर नित्य विधिपूर्वक इसका पूजन करना तो सुखसे रहोगे व जिस नगर व घर में यह मणि रहैगी वहां रोग व दरिद्र किसी को न होकर महँगी अनाजकी नहीं पड़ैगी व जो कोई सच्चे मनसे इसकी पूजा करैगा उसके घर ऋद्धि सिद्धि बनी रहैगी ऐसा कहकर सूर्य देवता अन्तर्धान हो गये व सत्राजित वह मणि गलेमें डालकर अपने घर चला आया व ज्योतिषियों से शुभमुहूर्त पूंछकर उस मणिको बहुत अच्छे जड़ाऊ सिंहासन पर रक्खा व अपने नेम व धर्म से रहकर विधिपूर्वक प्रतिदिन उसका पूजन करने लगा व प्रभाव उस मणिका यह था कि जो कोई शास्त्रानुसार उसकी पूजा किया करै उसे बीस मन सोना वह मणि नित्य देती थी जब सत्राजित यादव उस मणि पूजन के प्रतापसे थोड़े दिनोंमें बड़ा धनाढ्य हो गया तब द्रव्यके अभिमानसे किसीको अपने बराबर नहीं समझने लगा एक दिन वह अभिमानपूर्वक स्यमन्तक मणि अपने गले में पहिन कर श्रीकृष्णजीकी सभामें चला जब यदुवंशियों ने जो वहां बैठे थे उस मणि का प्रकाश सूर्य के समान देखा तब वे लोग उसे सूर्य समझकर बोले अय द्वारकानाथ आपका प्रताप व यश सुनकर सूर्यदेवता तुम्हारे दर्शनवास्ते आवते हैं यह वचन यदुवंशियों का सुनकर श्यामसुन्दरने कहा यह सूर्य देवता नहीं हैं सत्राजित यादवने सूर्य भगवान्‌का तप करके स्यमन्तक मणि उनसे पाई थी वही मणि अपने गले में बांधे हुये चला आवता है जब सत्राजित सभा में पहुँचकर जहां पर यादव लोग चौपड़ खेल रहे थे बैठा व केशवमूर्ति व यदुवंशी उस मणिकी ओर देखने लगे तब वह मन में कुछ समझकर तुरन्त अपने घर चला गया इसीतरह कभी कभी सत्राजित वह मणि अपने गले में पहिनकर वहां जाया करता था एक दिन यदुवंशियोंने मुरलीमनोहरसे कहा महाराज यह मणि सत्राजितसे लेकर राजा उग्रसेनको दे दीजिये उसे शोभा नहीं देती यह सुनकर किसी समय श्रीकृष्णजीने सत्राजितकी परीक्षा लेनेवास्ते हँसते हँसते उससे कहा राजा

लोग सबमें श्रेष्ठ होते हैं इसलिये जिसके पास जो अच्छा पदार्थ हो उसे वह वस्तु उन्हें भेंट देना चाहिये ऐसी बात करनेसे लोक व परलोक दोनों बनते हैं इसलिये तुम यह मणि राजा उग्रसेन को जिन्हें हमभी अपना बड़ा जानते हैं भेंट देकर संसार में यश उठा लेव यह बात सुनतेही सत्राजित यादव लालचवश उदास होगया व इस बातका कुछ उत्तर न देकर चुप होरहा व उन्हें दण्डवत् करके अपने घर चला आया सो वृन्दावन-विहारी की इच्छानुसार कि सूर्य व चन्द्रमा आदिक सब देवतों के वही मालिक थे उसी दिन से जितना गुण उस मणि में था वह जाता रहा व सत्राजितने घर जाकर प्रसेन अपने भाई से कहा श्यामसुन्दरने मुझे यह मणि राजा उग्रसेनको देनेवास्ते कहा था सो मैंने नहीं दिया यह वचन सुनतेही प्रसेन मूर्ख ने द्वारकानाथ अन्तर्यामी पर क्रोध किया और वह मणि सत्राजित से लेकर अपने गले में बांध लिया व घोड़ेपर चढ़कर वन में अहेर खेलने चला गया वहां एक हरिणके पीछे घोड़ा जो दौड़ाया तो अपने साथवालोंसे बिलग होकर पहाड़ की कन्दरा पास जिसमें एक शेर रहता था जापहुँचा जैसे शेर ने घोड़े की टाप सुनी वैसे बाहर निकल कर प्रसेनको घोड़े व हरिणको मार डाला जब वह शेर प्रसेन के गले से मणि लेकर अपनी कन्दरामें घुसने लगा तब रामचन्द्रजीके भक्त जाम्बवंत भालूने वहां पहुँचकर उस शेरको कन्दराके द्वारेपर मारडाला और वह मणि लेली॥

दो० वाकी इक कन्या हती महासुन्दरीरूप। ताके खेलनको दियो सो मणि महाअनूप॥

उस मणिके प्रकाशसे स्थान जाम्बवान्‌का जो अँधियारी कन्दरामें था आठोंपहर दिनके समान उजियाला रहने लगा जब प्रसेनके साथवालों ने आनकर सत्राजित से कहा तुम्हारे भाईने वनमें एक हरिणके पीछे घोड़ा दौड़ाया तो फिर उसका पता बहुत ढूंढ़नेपरभी नहीं मिला इसलिये हमलोग लाचार होकर चले आये यह बात सुनतेही सत्राजितने बड़ा शोच करके मनमें संदेह किया कि श्यामसुन्दरने स्यमंतकमणि राजा उग्रसेनके देनेवास्ते मुझसे कहा था सो मैंने नहीं दिया इसलिये उन्होंने मेरे भाई को वनमें मारकर वह मणि लेलिया होगा सत्राजित इस बातका

शोच अपने मनमें रखकर दिनरात उदास रहने लगा पर श्रीकृष्णजीके भय से यह बात कह नहीं सक्ता था एक दिन रात्रिको शय्यापर सत्राजित की स्त्रीने उसे उदास देखकर पूछा॥

चौ॰ कहा कन्त मन शोचत भारी। मुझसे भेद बताओ सारी॥

यह बात सुनकर सत्राजितने कहा अय प्राणप्यारी स्त्रीके पेटमें कोई बात नहीं पचती वह सब हाल अपने घरका दूसरे से कहदेती है व अपना भला व बुरा नहीं समझती इसलिये अपने मनका भेद जिस बातमें खटकता हो स्त्रीसे कहना न चाहिये यह वचन सुनतेही वह झुंझलाकर बोली मैंने कौनसी बात तुम्हारी सुनकर बाहर कहदी थी जो ऐसा कहते हो क्या सब स्त्री एक तरहकी होती हैं जबतक तुम अपने मनका हाल मुझसे न बतलावोगे तबतक मैं अन्न जल नहीं करूंगी यह बात सुनकर सत्राजितने लाचारीसे कहा झूंठ सचका हाल तो परमेश्वर जाने पर मेरे मनमें एक बातका सन्देह है सो तुझसे कहताहूं तू किसीके सामने इस बातकी चर्चा मत कीजियो जब उसने कहा बहुत अच्छा किसीसे नहीं कहूंगी तब सत्राजित बोला एक दिन श्यामसुन्दरने मुझसे स्यमन्तकमणि राजा उग्रसेनको देनेवास्ते कहा था सो मैंने नहीं दिया इसलिये मुझे ऐसा मालूम होता है कि उन्होंने प्रसेनको वनमें मारकर वह मणि ले लिया होगा दूसरेकी सामर्थ्य नहीं है जो मेरे भाईको मारनेसक्ता सत्राजित तो यह बात अपनी स्त्री से कहकर सो रहा पर उसकी स्त्री रातभर शोच विचारमें जागती रहकर जब प्रातसमय उठी तब उसने अपनी सखी व दासियोंसे कहा श्रीकृष्णजीने प्रसेनको मारकर स्यमन्तकमणि लेलिया है यह बात रातको मेरे स्वामीने मुझसे कही थी परन्तु तुमलोग किसीके सामने यह चर्चा मत करना हे राजन् स्त्रियोंके पेटमें कोई बात नहीं पचती इसलिये जब यह चर्चा होते होते फैल गई तब श्यामसुन्दर के महलमें किसी स्त्रीने जाकर कहा ऐसी बात सत्राजितकी स्त्री कहती थी जब यह झूठा कलंक सुनकर मुरलीमनोहरकी स्त्रियां आपसमें यह चर्चा व शोच करने लगीं तब उनमें किसीने वृन्दावनविहारीसे कहा महाराज आपको

सत्राजित व उसकी स्त्री प्रसेनके मारने व स्यमन्तकमणि लेने का कलंक लगावते हैं ॥

दो० चहुँदिशि फैली बात यह जानत राजा रंक। सो उपाय अब कीजिये जामें मिटै कलंक ॥

श्यामसुन्दर यह झूठा कलंक सुनकर पहिले अपने मनमें उदास होगये फिर कुछ शोच विचारकर राजा उग्रसेनके पास जहांपर वसुदेव व बलरामजी आदिक अनेक यदुवंशी बैठेथे जाके कहा महाराज सब लोग यह झूठा कलंक लगाते हैं कि कृष्णने प्रसेनको वनमें मारकर स्यमन्तक मणि लेलिया है आप आज्ञा दीजिये तो मैं प्रसेन व उस मणिका पता लगाकर कलंक अपना छुड़ाऊं जब उग्रसेन यह बात सुनकर कुछ नहीं बोले तब श्यामसुन्दर दश पन्द्रह यादववंशी व प्रसेनके सेवकोंको जो अहेर खेलती समय उसके संग थे अपने साथ लेकर उसे ढूंढ़ने निकले जहां प्रसेनने हरिणके पीछे घोड़ा दौड़ाया था वहां घोड़े के पैरका चिह्न देखतेहुये चले जब उस जगह जहां प्रसेन व घोड़ेकी लोथ पड़ीथी पहुँचे तब वहां शेरके पांवका चिह्न देखकर मालूम किया कि शेरने उसको मार डाला पर उस मणिका पता वहां नहीं मिला इसलिये मोहनप्यारे यदुवंशियों समेत शेरके पैरका चिह्न देखते हुये जब उस कन्दराके द्वारेपर जहां जाम्बवन्त रहता था पहुँचे तब वहां क्या देखा कि शेर मराहुआ पड़ा है पर मणि वहां दिखलाई नहीं दी यह अचम्भा देखकर यदुवंशियोंने श्यामसुन्दरसे कहा महाराज इस वन में ऐसा बलवान् मनुष्य व पशु कहां से आया जो शेरको मारके मणि लेकर इस कन्दरामें घुस गया हमलोगोंने अपनी सामर्थ्यभर ढूंढ़ा प्रसेनके मारने का अपयश इस शेरको लगा अब तुम्हारा झूठा कलंक छूटगया इसलिये फिर चलिये यहसुनकर दैत्यसंहारण ने कहा चलो इस कन्दरामें घुसकर देखैं शेरको मारकर मणि कौन लेगया यदुवंशी बोले महाराज हमें इस अँधियारी कन्दराका मुख देखनेसे भय मालूम होता है इसमें जाकर अपना प्राण क्यों देवैं आपसे भी विनय करते हैं कि इस भयानक गुफामें न जाकर द्वारकाको चलिये हम सबकोई वहां चलकर कहैंगे कि प्रसेनको शेरने मारकर स्यमन्तकमणि लेलिया व उस

शेरको न मालूम कौन मारकर वह मणि कंदराके भीतर लेगया यह हाल हमलोग अपनी आंखसे देख आये हैं इस बातके कहनेसे तुम्हारा कलंक छूट जायगा जब मारे डरके कोई उस गुफामें नहीं गया तब श्यामसुन्दरने अपने साथियों से कहा मेरा चित्त स्यमन्तक मणिमें लगा है इसलिये मैं किसीका कुछ डर न रखकर अकेला इसी कन्दरा में जाता हूं तुमलोग बारह दिनतक मेरी आशा यहां देखना इस अवधितक कन्दरासे बाहर आये तो अच्छाहै नहीं तो यहां का हाल घर पर जाकर कह देना॥

दो० द्वादश दिनकी अवधि करि गये तहां यदुराय। यादव जितने संगथे रहे द्वारपर आय॥

हे राजन् केशवमूर्तिने उस अँधियारी कन्दरामें थोड़ी दूर जाकर क्या देखा कि एक स्थान व बाग बहुत अच्छा जाम्बवंत के रहनेका वहां बनाहै व जाम्बवती महासुन्दरी कन्या उसकी वह मणि हाथमें लिये हुई पालने में झूल रही है व जाम्बवन्त सोया होकर एक दासी उस पालनेके पास बैठी हुई दिखलाई दी जैसे कृष्णचन्द्रने हाथ बढ़ा कर स्यमन्तकमणि लेना चाहा वैसे दासी ने जाम्बवन्त को पुकारा सो जाम्बवन्त नींद से जागकर मुरलीमनोहर के साथ कुश्ती लड़ने लगा सत्ताईस दिनतक बराबर दिनरात जाम्बवन्तने श्यामसुन्दरसे मल्लयुद्ध करके अनेक दांव व पेंच अपने किये जब कोई दांव उसका वृन्दावनविहारीपर नहीं लगा व लड़ते लड़ते मारे भूंख व प्यासकेसब बलउसका घटगया तब दैत्यसंहारणने एक मूका ऐसा जाम्बवन्तके मारा कि वह घुटनेके बल बैठगया उस समय वह अपने मनमें विचार करने लगा सिवाय रामचन्द्र व लक्ष्मणजी के कोई संसारी मनुष्य इतनी सामर्थ्य नहीं रखता जो सत्ताईस दिनतक मेरे साथ लड़कर मुझसे जीतसके इसलिये मेरे जानमें यह श्यामरूप रामचन्द्रजी का अवतार मालूम होताहै जिनके साथ लड़ने से मेरी यह दशा होगई इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब जाम्बवन्तके हृदयमें ज्ञानका प्रकाश होकर उसे विश्वास हुआ कि ये रामचन्द्रजीका अवतार हैं तब श्यामसुन्दर भक्तहितकारी अन्तर्यामीने प्रसन्नहोकर उसीसमय रघुनाथ रूप धारण करके धनुष बाण लिये हुये उसको दर्शन अपना दिया जाम्ब-

वन्त यह स्वरूप देखतेही साष्टांग दण्डवत् करके हरिचरणोंपर गिरपड़ा व परिक्रमा लेकर उनके सामने खड़ा होगया व बड़े प्रेमसे आंखों में आंसूभरे हुये हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ सब जगत्के उत्पत्ति व पालन करनेवाले अन्तर्यामी आपने बड़ी दया की जो पृथ्वीका भार उतारनेवास्ते अवतार लेकर मुझे अपना दर्शन दिया नारदमुनि मुझसे कहगये थे कि रामचन्द्रजी वासुदेव अवतार धरकर तेरे स्थानपर आवैंगे इसलिये मैं त्रेता युगसे यहां रहकर तुम्हारे दर्शनोंकी आशा देखता था सो आज अपने मनोरथको पहुँचा आप तीनों लोकके उत्पन्न व पालन करनेवाले होकर सबसे पहिले थे व महाप्रलय होने उपरान्तभी सिवाय तुम्हारे कोई दूसरा स्थित नहीं रहेगा आप राजा दशरथके पुत्र अयोध्यापुरी व सब जगत्के राजा हैं तुम्हारा आदि व अन्त वेदभी नहीं जाननेसक्ता व शङ्ख व चक्र व गदा व पद्म आपके शस्त्र हैं व सब तरहका सुख तुम्हारी कृपासे जीवोंको प्राप्त होताहै व आप सदा आनन्दमूर्ति रहते हैं किसी बातका शोच आपको नहीं व्यापता व आप सबका मनोरथ पूर्ण करनेवाले हैं तीनों लोकमें किसी को ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो तुम्हारी महिमा व भेद जानसकै व आप सीतापति लक्ष्मण व भरत शत्रुघ्नके बड़े भाई ऐसे सुन्दर हैं कि कामदेवभी तुम्हारे रूपपर मोहित होजाताहै व तुम सदा शेषनागकी छातीपर शयन करते हो व आपने राजा दशरथ अपने पिताकी आज्ञासे राज्य छोड़कर लक्ष्मण व सीताजीसमेत चौदह वर्षतक वनवास किया व वनमें अनेक राक्षसोंको मारकर ऋषीश्वर व हरिभक्तों को सुख दिया जब आपने शूर्पणखा की नाक काटकर खर दूषण व त्रिशिरा आदिकको मारडाला तब रावण योगीका वेष बनाकर पंचवटीमें आया व सीताजीको अकेली देख कर छलसे हरलेगया और उसने अपने पैरमें आप बसूला मारा जब सुग्रीव बांदर जो बालि अपने भाईके डरसे विकल था तुम्हारी शरण आया तब आपने बालि बांदर अधर्मीको मारकर सुग्रीवकी इच्छा पूर्ण की व हनुमान् जीको अपना भक्त व सेवक समझकर उन्हें यश दिया जब आप बड़ीभारी सेना भालू व बांदरों की अपने साथ लेकर समुद्रके किनारे पहुँचे तब

विभीषण रावणका भाई तुम्हारी शरण आया सो आपने उसे लंकापति कहा जब समुद्र अज्ञान व अभिमानकी राह तुम्हारे पास नहीं आया तब आपके क्रोध करने से समुद्रका पानी सूखने लगा और सब जलके जीव व्याकुल होगये यह दशा देखतेही समुद्र विनयपूर्वक तुम्हारे चरणोंपर आन कर गिरपड़ा व अपना अपराध क्षमा कराने वास्ते हाथ जोड़कर बोला महाराज आपने दर्शन देकर मुझे कृतार्थ किया यह दीन वचन सुनकर आप उसपर दयालु हुये फिर आप समुद्रमें पुल बँधवाकर भालू व बांदरों की सेनासहित पार उतर गये रावणको कुल परिवार व सेना समेत मारकर विभीषणको लंकाका राज्य दिया व सीताको साथ लेकर अयोध्यापुरी में आये और ग्यारह हजार वर्ष वहांका राज्य किया उन दिनों त्रेतायुग था तबसे आज मैं तुम्हारा दर्शन पाकर जो ब्रह्मादिक देवतों को जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता अपने बराबर किसी दूसरेका भाग्य नहीं समझता सो हे दीनानाथ जिसतरह आप दया करके अपने चरण यहां लेआये उसी तरह दयालु होकर आवनेका कारण बतलाइये यह वचन सुनकर श्यामसुंदरने कहा हे जाम्बवन्त हम तेरी स्तुति सुननें से बहुत प्रसन्न हुये जो मणि तेरी कन्या हाथमें लिये खेलतीहै इसी मणिकी चोरी मुझे सत्राजित यादवने लगाई इसलिये मैं अपना कलंक छुड़ानेवास्ते यही मणि लेने आयाहूं सो मुझे देव यह वचन सुनतेही जाम्बवंतने मनसा वाचा कर्मणा से प्रसन्न होकर विनय किया हे महाप्रभु मेरे यहां एक स्यमन्तक व दूसरी जाम्बवती कन्या दो मणि हैं सो यह दोनों तुम्हारे भेंट करताहूं आप दया करके अंगीकार कीजिये जिसमें मेरा उद्धार हो यह सुनकर केशवमूर्ति बोले बहुत अच्छा मैंने तेरा कहना माना जैसे यह वचन जाम्बवन्तने सुना वैसे हर्षपूर्वक अपनी कन्या श्रीकृष्णजीको ब्याहकर वह मणि दहेज में देदिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित इधर तो मोहनप्यारे सत्ताईसवें दिन जाम्बवन्तसे बिदा होकर स्यमन्तकमणि व जाम्बवती को साथ लिये अपने घर चले व उधर यदुवंशी चौबीस दिनतक उनकी आशा देख फिर निराश होकर वहांसे रोते पीटते द्वारकामें आये जब राजा

उग्रसेन व वसुदेवजी आदिक द्वारकावासियों ने यह हाल सुना तब सब छोटे बड़े स्त्री व पुरुष अन्न जल छोड़कर अति विलाप करने लगे व सबों ने सत्राजितको गालियां देकर अनेक दुर्वचन कहा और बहुत लोगोंने सत्राजितको मारने चाहा पर बलरामजीने उन्हें मारनेसे बर्जकर समझाया तुमलोग कुछ चिन्ता मत करो दैत्यसंहारण स्यमन्तकमणि लिये हुये आवते हैं तीनों लोकमें कोई ऐसा नहीं है जो उनको दुःख देने व मारनेसकै जब उनके समझाने परभी किसीको धैर्य नहीं हुआ तब रुक्मिणी आदिक सब स्त्रियां कृष्णचन्द्रको रोते रोते घबड़ाकर अपने महलसे बाहरनिकलीं व आपसमें इकट्ठी होकर द्वारकावासियों समेत मोहनमूर्तिको ढूंढ़ने चलीं॥

दो० माखन प्रभु बलबीर बिनु धरैं नहीं मन धीर। सबमिलकर खोजनचलीं व्याकुलमहाशरीर॥

हे राजन् नगरके बाहर जो देवस्थान उन्हें दिखलाई देता था वहां मानता मानकर आगे चली जाती थीं जब नगरसे एक कोस बाहर देवीके मन्दिर पर पहुँचीं तब विधिपूर्वक पूजा करने उपरांत हाथ जोड़कर बोलीं हे अम्बिका माता तुम सबकी इच्छा पूर्ण करती हो इसलिये हमलोग तुम से यह वरदान मांगती हैं जिसमें हमारे प्राणनाथ जल्दी अपना दर्शन देकर हमलोगोंका दुःख हरैं जिस समय द्वारकानाथकी स्त्रियां देवीजी से यह वरदान मांग रही थीं व राजा उग्रसेन यदुवंशियों समेत अपनी सभा में बैठे हुये शोच कररहे थे उसी समय मुरलीमनोहर स्यमन्तकमणि व जाम्बवती को अपने साथ लिये हँसते हुये राजा उग्रसेनकी सभामें जाकर खड़े होगये उनका चन्द्रमुख देखते ही वसुदेव आदिक ने अति प्रसन्न होकर बहुत द्रव्यादिक उनके हाथसे दान व दक्षिणा दिलवाया और यह समाचार सुनकर रुक्मिणी आदिक स्त्रियां बड़े हर्षसे गावती व बजावती अपने अपने मंदिर में आईं व एक यदुवंशी ने हँसी की राह मोहनप्यारे से कहा॥

दो० मणिकारण कछु कहिगये जाम्बवन्तके धाम। ब्याहकरन पहुँचे वहां माखन प्रभु घनश्याम॥

केशवमूर्तिने यह बात सुनकर हँस दिया व उसी समय सत्राजितको बुला भेजा व स्यमन्तकमणि उसे देकर कहा तुमने हमको झूंठा कलंक

लेने मणि व मारने प्रसेन का लगाया था सो तुम्हारे भाईको शेरने मारकर मणि लेलिया व उस शेरको जाम्बवन्त भालू मारकर मणि लेगया था सो जाम्बवन्तने अपनी बेटी मुझे ब्याह कर यह मणि दहेज में दिया है सो अपना मणि तुम लेव जब सत्राजितने वह मणि देखकर सब हाल सुना तब अतिलज्जित होगया उस समय तो वह श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार मणि लेकर अपने घर चला आया पर मनमें बहुत उदास होकर कहने लगा देखो मैंने बड़ा पाप किया जो झूठा कलंक वैकुण्ठनाथको लगाया अब मुझे उचित है कि सत्यभामा अपनी कन्या उन्हें ब्याहकर यह मणि दहेज में देडालूं तो मेरा अपराध छूटजावै ॥

दो० यह कन्या जगमोहनी सुन्दर महाअनूप । श्रीयदुपति को दीजिये ऐसी रत्नस्वरूप ॥

जब ऐसा विचारकर सत्राजितने अपनी स्त्री से पूंछा तब वह बोली हे स्वामिन् तुमने बहुत अच्छा विचारा है सत्यभामा श्रीकृष्णजी को देकर जगत् में यश लीजिये यह वचन सुनतेही सत्राजितने शुभ लग्न ठहराकर सब वस्तु तिलककी अपने पुरोहित से वसुदेवजी के यहां भेज दिया तो राजा उग्रसेनने वह तिलक बड़े हर्ष से लेलिया और धूमधाम से बरात साजकर श्यामसुन्दरको ब्याहने आये तब सत्राजितने शास्त्रानुसार अपनी कन्या मुरलीमनोहरको ब्याहकर वही मणि व अनेक रत्नादिक दहेज में दिया सो श्रीकृष्णचन्द्रने और सब दहेज को लेलिया पर वह मणि उसे फेरकर कहा यह मणि हमारे कामकी नहीं है हमसे इसकी पूजा नहीं बन पड़ेगी यह मणि तुम अपने यहां रक्खो जब तुमने अपनी कन्या हमको विवाह दी तब सब धन तुम्हारे घरका हमारा हुआ व जो तुमने हमें कलंक लगाया था उस बातका भी कुछ अपने मनमें शोच मति करो अब हम तुमसे कुछ खेद नहीं रखते जिसकी वस्तु खोजाती है उसका सन्देह अनेक मनुष्योंपर होता है यह सुनतेही सत्राजितने लज्जित होकर वह मणि लेलिया व श्यामसुन्दर सत्यभामा को साथ लेकर बाजे गाजे समेत अपने घर आये इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे स्वामिन् कृष्णचन्द्र वैकुंठनाथको झूठा कलंक क्योंकर लगा शुकदेवजी

बोले मुरलीमनोहरने भादौं सुदी चौथका चन्द्र देखा था इसलिये उनको झूठी चोरी लगी थी ॥

दो० भादौं शुक्ला चौथको चन्द्र निहारै जोय । यह प्रसंग श्रवणन सुनै तो कलंक नहिं होय ॥

सत्तावनवां अध्याय ।

सत्राजित व शतधन्वा का मारा जाना ।

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिस तरह शतधन्वा यादवने सत्राजित को मारकर स्यमन्तकमणि उसकी लेलिया व मुरलीमनोहरके भयसे द्वारका छोड़कर भागा था वह हाल कहते हैं सुनो एक दिन किसीने द्वारका में आनकर श्याम व बलरामसे यह सन्देशा कहा कि युधिष्ठिर आदिक पांचों भाइयोंको दुर्योधनने लाक्षागिरिके कोटमें रखकर आधी रातको चारों ओरसे आगि लगवादी सो वह लोग अपनी माता समेत जल गये यह हाल सुनते ही दोनों भाइयों को ऐसा शोच हुआ कि उसी समय रथ पर चढ़कर अपनी फूफू व भाइयों की सुधि लेनें वास्ते हस्तिनापुर चले गये जब श्याम व बलराम राजा दुर्योधनकी सभामें पहुँचे तब क्या देखा कि राजा दुर्योधन व धृतराष्ट्र आदिक सब छोटे बड़े उदास बैठे हैं व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्यकी आंखों से आंसू बहि रहा है व गांधारी आदिक कौरवोंकी स्त्रियां पांचो भाइयोंको याद करके रोरही हैं जब यह दशा देखकर श्याम व बलरामजीभी उनके पास जा बैठे व युधिष्ठिरका हाल उनसे पूंछा तो किसीने कुछ उत्तर नहीं दिया परन्तु विदुरने श्यामसुन्दरके निकट जाकर धीरेसे कह दिया कि दुर्योधन आदिकने तो पांचो भाइयों के प्राण लेने में कुछ धोखा नहीं किया था पर तुम्हारी दयासे वह लोग बच गये हैं यह हाल सुनकर केशवमूर्ति वहांसे बागमें अपने डेरे पर चले आये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब श्याम व बलराम हस्तिनापुर चले गये तब उनके पीछे द्वारका में यह हाल हुआ कि शतधन्वा यादव द्वारकावासी के यहां जिससे पहिले सत्यभामाकी मँगनी हुई थी अक्रूर व कृतवर्माने जाकर कहा एकतो सत्राजितने झूठा कलंक मणि चुरानेका द्वारकानाथको लगाया दूसरे अपनी बेटीकी मँगनी

पहिले तुम से करके फिर श्रीकृष्णको विवाह दी इसलिये तुम्हारी नाम-धराई जाति भाइयों में हुई इन दिनों श्याम व बलराम हस्तिनापुर गये हैं सो तू उसे मारकर अपना वैर क्यों नहीं लेता हमारे निकट यह बात उत्तम है कि रातको हम तीनों मनुष्य सत्राजितके घर पर चलकर उसे मारडालें व इतने दिनों तक उसने जो सोना स्यमन्तकमणिके प्रतापसे इकट्ठा किया है वह छीन लेवें यह बात मान कर शतधन्वा रातको अक्रूर व कृतवर्मा के साथ सत्राजितके स्थानपर गया व अक्रूर व कृतवर्माको द्वारे पर खड़ा कर दिया और आप अकेला घरके भीतर जाकर सत्राजित को जो नींद में सोया था मारडाला व स्यमन्तक मणि व जो कुछ सोना उसके घरमें था लेकर बाहर चला आया जब सत्राजितको मारकर तीनों मनुष्य अपने अपने घर चले आये तब शतधन्वा अकेला अपने घर बैठकर शोच करने लगा देखो मैंने अक्रूर व कृतवर्मा का कहना मानकर श्रीकृष्णजी वैकुण्ठनाथसे वैर किया अब न मालूम वह मेरी क्या दशा करैंगे॥

दो॰ कृतवर्मा अक्रूर मिलि मता दियो म्वहिं आय। साधु कहै जो कपटकी तासों कहा बसाय॥

जब सत्राजितकी स्त्री यह दशा अपने पतिकी देखकर रोने पीटनेलगी व सत्यभामाने यह हाल सुनतेही वहां जाकर अपने पिताकी यह गति देखी तब उसने पहिले बड़ा विलाप किया फिर अपनी माताको धैर्य देकर सत्राजितकी लोथको तेलमें रखवा दिया व उसीसमय आप रथपर चढ़कर दैत्यसंहारणके पास हस्तिनापुरको गई॥

चौ॰ देखतही उठि बोले हरी। घरहै कुशलक्षेम सुन्दरी॥
सत्यभामा कह जोरे हाथ। तुमबिन कुशल कहां यदुनाथ॥

हे महाप्रभो शतधन्वा रात्रिको अधर्मकी राह सोती समय मेरे पिताको मारकर स्यमन्तकमणि लेगया॥

चौ॰ धरे तेल में श्वशुर तुम्हारे। दूर करो सब शोच हमारे॥

ऐसा कहकर जब सत्यभामा श्याम व बलरामके सामने अतिविलाप करने लगी तब द्वारकानाथने भी बलराम समेत आंखों में आंसू भरकर सत्यभामासे कहा तू अपने मन में धैर्य धर जो कुछ होना था सो होचुका

अब तेरा पिता जीने तो नहीं सक्ता पर जिसने तेरे बाप को माराहै उसे हम मारकर बदला लेवेंगे व जबतक शतधन्वा को न मारूंगा तब तक दूसरा काम नहीं करूंगा जब यह बात सुनकर सत्यभामा को कुछ धैर्य हुआ तब वृन्दावनविहारी उसी समय बलरामजी व सत्यभामा को साथ लेकर द्वारका की ओर चले जब शतधन्वा ने सुना कि श्याम व बलराम हस्तिनापुरसे आते हैं तब वह रहना अपना द्वारका में उचित न जानकर स्यमन्तक मणि लिये हुये कृतवर्मा व अक्रूरके पास चला गया व हाथ जोड़कर बोला सुनो भाई मैंने तुम्हारे कहने अनुसार सत्राजितको मार कर वैकुण्ठनाथसे शत्रुता की सो अब श्याम व बलरामके हाथसे मेरा प्राण बचना कठिन है इसलिये तुम्हारे शरण आया हूं अपने कहने की लाज रखकर जहां बतलावो वहां छिपकर रहूं॥

चौ० मोपर क्रोध कियो यदुनाथा। आवत लिये सुदर्शन हाथा॥
मोको जीवदान अब दीजै। अपने शरण राखि अब लीजै॥

नहीं तो हे अक्रूर तुम हमारा रथ हांको हम श्रीकृष्णजीसे लड़ेंगे॥

दो० शतधन्वासे तुरतही उत्तर कह्यो सुनाय। अपराधी यदुनाथको कापै राख्यो जाय॥

हे शतधन्वा तुम अपने अज्ञानसे यह बात हमैं कहने आये हो पहिले तुमने नहीं समझ लियाथा कि सत्राजितको मारनेमें श्रीकृष्णजी सत्यभामा की सहायता करैंगे हमसे तुम्हारी रक्षा नहीं होसक्ती जहां तुम्हारा मन चाहै वहां भाग जावो व हम वैकुण्ठनाथके सेवक होकर ऐसी सामर्थ्य नहीं रखते जो तुम्हारा साथ देकर उनके हाथ से अपना प्राण खोवें व उनसे वैर करके कोई जीता बचने नहीं सक्ता जिन्होंने गोवर्धन पहाड़ अपनी अँगुली पर उठा लिया व बड़े बड़े योद्धा राक्षसोंको क्षणभरमें मार डाला उन से कौन लड़ने सक्ता है संसारीलोग अपने अर्थवास्ते बहुत बातें कहते हैं पर बुद्धिमान् मनुष्यको उचितहै कि अपनी हानि व लाभ समझकर वह काम करे जिसमें पीछे से दुःख न पावे हे राजन् जब अक्रूर व कृतवर्मा ने ऐसी रूखी रूखी बातैं शतधन्वाको सुनाईं तब उसने अपने जीसे निराश होकर वह मणि अक्रूरके सामने फेंक दी व आप एक घोड़ेपर जो चारसौ

कोस एक दिन में जाता था चढ़कर जनकपुरकी ओर भागा जब उसी दिन श्यामसुन्दरने द्वारकामें पहुँचकर उसके भागने का हाल सुना तब अपने स्थानपरभी न जाकर सत्यभामाको महल में भेज दिया व श्याम व बलराम दोनों भाइयोंने अपना रथ शतधन्वाके पीछे दौड़ाया तो जनकपुरके निकट उसको जा घेरा जब उसी जगह घोड़ा शतधन्वाका मरगया तब वह मुरलीमनोहर के रथकी आहट पाकर पैदल भागा जैसे दैत्यसंहारण ने उसको भागते देखा वैसे बलरामजीको रथपर छोड़कर आप उसके पीछे दौड़े व निकट पहुँचकर सुदर्शनचक्र से शिर उसका काट लिया जब उस का कपड़ा आदिक ढूंढ़ने पर भी वह मणि उसके पास नहीं मिली तब बलरामजी से आनकर कहा अय भाई मैंने शतधन्वाको वृथा मारा किस वास्ते कि स्यमन्तक मणि उसके पास नहीं मिली शतधन्वाके मारतेसमय बलरामजी उनके साथ नहीं थे इसलिये परमेश्वरकी माया से बलरामजी के मन में यह संदेह हुआ कि श्यामसुन्दरने वह मणि सत्यभामाके देने वास्ते हमसे छिपाया है तब उन्होंने केशवमूर्ति से कहा हे भाई वह मणि किसी दूसरेके पास है तुम द्वारकामें जाकर ढूंढ़ो एक दिन आप प्रकट हो जायगी मैं मिथिलापुर देखता हुआ पीछेसे आऊंगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् श्यामसुन्दर अन्तर्यामी बलरामजी के मन का हाल जानकर वहांसे द्वारकापुरी को गये व बलरामजी मिथिलापुरी में आये जब जनकपुरके राजाने उनके आवनेका हाल सुना तब सन्मानपूर्वक उन्हें राजमन्दिर पर लिवा लेगया और बड़े आदरभाव से उनको अपने यहां रक्खा जब राजा दुर्योधनने जो बलरामजी से प्रीति रखताथा यह हाल सुना कि इन दिनों बलभद्रजी कृष्णचन्द्रसे खेद मानकर जनकपुरमें टिके हैं तब वह मिथिलापुरी में आया व बलरामजी के पास जाकर उन्हें बड़े आदरभावसे अपने डेरेपर लिवा ले गया व विनयपूर्वक हाथ जोड़कर बोला मुझे बड़े भाग्यसे आपका दर्शन प्राप्त हुआ अब मेरे मन में यह इच्छा है कि आप कृपा करके थोड़े दिन यहां रहिये व मुझको अपना चेला बनाकर गदायुद्ध सिखलाइये यह बात सुनने व उसकी सच्ची

प्रीति देखने से बलदाऊजी दुर्योधनको चेला बनाकर वहां गदायुद्ध सि-
खानेलगे व श्यामसुन्दरने द्वारकामें पहुँचकर सत्यभामासे कहा कि सत्रा-
जितके बदले शतधन्वाको मैंने मारडाला पर वह मणि उसके पास नहीं
मिली सत्यभामाको इसबातका विश्वास न होकर मनमें यह संदेह हुआ कि
मुरलीमनोहर वहमणि बलरामजीको देकर मुझसे बहाना करतेहैं जब अक्रूर
व कृतवर्माने शतधन्वाके मारे जानेका हाल सुना तब वह भी अपने प्राण
का डर मानकर द्वारकासे भागे व कृतवर्मा दक्षिण दिशामें चलागया व
अक्रूरजी प्रयागक्षेत्रमें चले आये और स्नान व दान करने उपरांत गयाजी
जाकर पितरों का श्राद्ध किया व वहां से काशी जी में आनकर रहने लगे व
अक्रूर प्रतिदिन बीस मन सोना स्यमन्तक मणि से पाकर दानादिक शुभ
कर्म में खर्च कर डालता था श्यामसुन्दर अन्तर्यामी यह सब हाल जानते
थे पर उन्होंने यह भेद किसीसे नहीं कहा कि अक्रूर स्यमन्तक मणि ले-
कर काशीजी में टिकाहै सब द्वारकावासी यह समझतेथे कि अक्रूर व कृत-
वर्माने सत्राजितके मारनेवास्ते सम्मत किया था इसलिये श्रीकृष्णके डरसे
वे दोनों भागगये हैं जब बलरामजी कुछ दिन बीते दुर्योधनको गदायुद्ध
सिखलाकर द्वारकामें आये तब मुरलीमनोहरने यदुवंशियोंको साथ लेकर
लोथ सत्राजितकी तेल में से निकलवाया व दग्धक्रियाकर्म उसका आप
किया इतनी कथा सुनाकर शुकदेव मुनि बोले हे राजन् अक्रूरजी जिस
देश व गाँवमें रहते थे उस जगह हरिइच्छासे प्रजाकी चाहनानुसार पानी
बरसकर अन्न महँगा नहीं होताथा और वहां पर कुछ रोग महामारी आ-
दिक का न होकर सब छोटे बड़े आनन्दपूर्वक रहते थे जब वैकुण्ठनाथ
की यह इच्छा हुई कि फिर अक्रूरको बुलाना चाहिये तब द्वारकापुरीमें अव-
र्षण होकर रोग व महँगी से प्रजालोग दुःख पावने लगे यह दशा अपने
देशकी देखतेही यदुवंशियों ने घबड़ाकर श्यामसुन्दरसे कहा॥

चौ० हमतो शरण तुम्हारे रहैं। महाकष्ट अब क्योंकर सहैं॥

महाराज न मालूम परमेश्वरकी क्या इच्छा है जो पानी नहीं बरसता
हमलोग तुम्हैं छोड़कर अपना दुःख किससे कहैं आप दया करके कोई

ऐसा उपाय कीजिये जिसमें हमारा दुःख छूटजाय यह आधीन वचन सुन कर द्वारकानाथने कहा कि जिस जगहसे साधु व महात्मा चलाजाता है वहांके लोग अनेक तरहका दुःख पावते हैं जबसे अक्रूर द्वारका छोड़कर चलेगये तबसे यहां अन्नकी महँगी व रोगकी आधिक्यता है यह वचन सुनकर यदुवंशी बोले हे कृपानिधान आपने सच कहा हमलोगभी यह बात समझते हैं पर तुम्हारे डरसे कहि नहीं सक्ते थे अक्रूरजी यदुवंशियों में श्रेष्ठ होकर तुम्हारे डरसे भागे हैं जबतक वह द्वारकामें रहे तबतक हमलोगों ने दुःख नहीं पाया सो आप दया करके अक्रूरको यहीं बुलाइये जिसमें सब कोई सुख पावैं यह बात सुनकर श्रीकृष्णजीने कहा वहुत अच्छा तुम लोग अक्रूरको ढूंढ़कर सन्मानपूर्वक यहां लिवा लेआवो यह वचन सुनते ही पांच सात यदुवंशी मिलकर अक्रूरको ढूंढ़ने निकले जब काशीजी में पहुँचकर पता उनका पाया तब उनके पास जाकर विनय किया हे अक्रूर जी तुम्हारे विना द्वारकावासियों ने बड़ा दुःख पाया मुरलीमनोहरके रहने परभी वहां अवर्षण होकर अकाल पड़ा इसलिये श्यामसुन्दरने तुमको बुलाकर कहाहै कि मेरी भक्ति रखते हो तो निस्संदेह चले आवो ॥

चौ० साधुनके वश श्रीपति रहैं। तिनसे सब सुख संपति लहैं ॥

यह बात सुनतेही अक्रूरजी बड़े हर्षसे उसी समय स्यमन्तकमणि लेकर यदुवंशियों के साथ द्वारकाको चले जब अक्रूरजी नगरके निकट पहुँचे तब श्याम व बलराम आगे से आनकर उनको सन्मानपूर्वक लिवा लेगये जैसे अक्रूर द्वारकापुरी में पहुँचे वैसे परमेश्वरकी इच्छानुसार पानी बरसा व अन्नसस्ता होकर सब किसीका रोग छूटगया एकदिन वृन्दावनविहारीने अक्रूरको बुलाकर कहा अय चाचा अब तुम उदासी छोड़कर प्रसन्न रहाकरो हमने तुम्हारा अपराध क्षमा किया और तुम्हारे पास जो स्यमन्तकमणि है उसे किसीके सामने हमारे पास लेआवो जिसमें बलरामजी व सत्यभामा का सन्देह छूटजावै जिसकी वस्तु हो उसको देनी चाहिये जब वह न रहै तो उसके पुत्रको देवै व बेटाभी न हो तो उसकी स्त्रीको देवै व स्त्री भी न होवै तो कन्याके पुत्रको देवै वह भी न हो तो उसके भाईको देडालै जब

भाई भी न रहै तो उसके कुलपरिवार में जो कोई हो उसे देना चाहिये जिसके कुलमें कोई भी न हो तो उसके गुरुको देडालै वह भी न हो तो उसके गुरुके पुत्रको सौंप देवै जब वह भी न रहै तो वह वस्तु ब्राह्मणको देदेवे दूसरेका धन कभी न लेना चाहिये सो सत्राजितके पुत्र नहीं है इसलिये सत्यभामाका बेटा यह मणि लेगा यह वचन सुनतेही अक्रूरने वह मणि राजा उग्रसेनकी सभामें जहांपर बलभद्र आदिक सब यदुवंशी बैठे थे लाकर श्यामसुंदरके सामने रखदिया व हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ यह मणि ले कर मेरा अपराध क्षमा कीजिये आजतक जितना सोना इस मणिने मुझको दिया था वह सब मैंने शुभकर्म में खर्च करडाला जब वह देखकर बलराम जी व सत्याभामाका संदेह छूटगया तब वे दोनों बहुत लज्जितहोकर मोहन-प्यारेके चरणोंपर गिरपड़े व बलदाऊजीने रोकर कहा हे दीनानाथ मुझसे बड़ा अपराध हुआ जो तुम्हारे ऊपर झूठा संदेह किया इसलिये वनमें जा कर मरजाऊंगा अब मैं इस योग्य नहीं रहा जो अपना मुँह आपको दिख-लाऊं जब यह दशा बलभद्रजीकी गोपीनाथने देखी तब उनको अपनी छातीसे लगालिया व बहुत धैर्य देकर कहा तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो मैंने तुम्हारे संदेह करनेसे कुछ खेद नहीं माना संसारमें मायारूपी स्त्री व द्रव्य दोनों बहुत बुरी होकर स्त्री व पुरुष व पिता व पुत्रमें विरोध करा देती हैं इसलिये ज्ञानी मनुष्यको इन दोनोंसे अधिक प्रीति रखना न चाहिये जब श्यामसुन्दरने इसीतरह उन्हें बहुत धैर्य देकर स्यमन्तकमणि सत्यभामाको सौंप दिया तब उसके मनका शोच छूटिगया इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे मुनिनाथ जब अक्रूर ऐसा गुण रखता था तो सत्राजित उसके सामने क्यों मारा जाकर वह आप किसवास्ते भाग गया शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिस दिनसे अक्रूरने शतधन्वाको सत्राजित के मारनेवास्ते सम्मत दिया उसी दिनसे सब गुण उसका जाता रहा यह बात सुनकर परीक्षित बोले महाराज आपने सच कहा कुसंगति करनेमें सिवाय हानिके कुछ लाभ नहीं होता अक्रूरका सुलक्षण जातारहा तो कौन आश्चर्य है पर आप यह कहिये कि अक्रूरमें ये सब गुण किसतरह प्रकट हुये

थे शुकदेवजीने कहा हे राजन् एक समय काशीजीमें अवर्षण होकर बड़ी महँगी पड़ी व उन्हीं दिनों सुफल्क यादव बड़ा धर्मात्मा व सत्यवादी व हरिभक्त किसी संयोगसे वहां जा पहुँचा जब उसके जातेही हरिइच्छासे बड़ा पानी वर्षकर सब लोगोंने सुख पाया तब काशीनरेशने प्रसन्न होकर गांदिनीनाम अपनी कन्या उसको विवाह दी सो उसी कन्यासे अक्रूर उत्पन्न होकर सुफल्कका गुण उसमें प्रकट होगया ॥

दो० मणिलीला अद्भुत महा कहै सुनै जो कोय । ताको कबहूं जगतमें कछु कलंक नहिं होय॥

अट्ठावनवां अध्याय ।

श्यामसुन्दरको कालिन्दी व सत्या व भद्रा व लक्ष्मणा आदि से विवाह करना ॥

शुकदेजीने कहा हे परीक्षित श्यामसुन्दर सत्राजित का मरना सुन कर युधिष्ठिर आदिको विना देखे हस्तिनापुरसे चले आये थे सो मन उनका अर्जुन आदिक से भेंट करने वास्ते चाहता था व हाल युधिष्ठिर आदिक का इस तरह पर है जब राजा दुर्योधनने पांचो भाई पाण्डवों व कुन्ती उनकी माता को लाखके कोटमें रखकर आग लगवादी तब वे लोग सुरंग के राह जो विदुरजीने पहिले से बनवा रक्खा था बाहर निकल आये और संन्यासीवेष में अपने को छिपाकर कहीं रहने लगे व एक भिल्लिनि अपने पांच बेटों समेत जो उसी कोटमें जलकर मरगईथी उनकी हड्डी देखने से दुर्योधनको विश्वास हुआ कि युधिष्ठिर आदिक जल गये व उन्हीं दिनों में राजा द्रुपदने अपनी कन्याका स्वयंवर रचा सो वहांपर दुर्योधन आदिक सब पृथ्वी के राजा इकट्ठे हुये व वेदव्यास व धूम्र ऋषीश्वरके कहजानेसे अर्जुन आदिक पांचो भाई भी अपनी माताको किसी जगह छोड़कर संन्यासीवेष बनाये हुये उस स्वयंवर में पहुँचे जिस समय द्रौपदी चन्द्रमुखी सोलहों शृङ्गार किये अङ्ग अङ्ग पर गहना जड़ाऊ पहिने फूलोंका गजरा हाथमें लिये वहांपर जहां सब राजा बैठे थे आनकर खड़ी हुई तो उसकी सुन्दरताई देखकर सब छोटे बड़े मोहित होगये उस समय धृष्टद्युम्न द्रौपदीके भाई ने पुकारकर कहा जो कोई कड़ाह में मछली की परछाहीं देखकर शिर नीचे किये हुये बाणसे मच्छको वेधै उसे यह कन्या

विवाह देऊंगा यह वचन सुनतेही राजा शिशुपाल ने उठकर वह धनुष जो मछली बेधनेवास्ते राजा द्रुपदने वहां रखवाया था उठाने चाहा जब वह धनुष उठाने नहीं सका और लज्जित होकर फिर आया और वही दशा राजा जरासन्धकी भी हुई तब कर्णने उस धनुष को चढ़ाकर मच्छ बेधना चाहा उससमय द्रौपदी कर्णसे बोली तू सूतपुत्र होकर ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो मुझे विवाह लेजावे यह वचन सुनते ही कर्णने द्रौपदीकी ओर देखकर वह धनुष पृथ्वीपर धर दिया व अपनी जगह आनबैठा जब यह दशा उन लोगोंकी देखकर और दूसरे राजा मच्छ बेधने से निराश होगये तब अर्जुनने युधिष्ठिर बड़े भाई की आज्ञा लेकर जैसे उस मच्छ को अपने बाणसे बेधडाला वैसे द्रौपदीने जयमाल उनके गलेमें पहिना दिया यह हाल देखते ही दूसरे राजोंने डाहसे आपसमें कहा बड़े शोच व लज्जा की बात है जो हमलोगों के सामनेसे यह संन्यासी राजकन्या को लेजावै जब ऐसा विचारकर मूर्ख राजोंने अर्जुनका सामना किया तब पांचो भाई पाण्डव उन्हें युद्ध में जीतकर द्रौपदीको अपनी माता के पास लेआये व कुन्ती माताकी आज्ञानुसार अर्जुन आदिक पांचो भाइयोंने उसे अपनी स्त्री बनाकर रक्खा जब यह हाल दुर्योधनको मालूम हुआ कि युधिष्ठिर आदिक पांचो भाई नहीं जले और जीते बचि गये हैं तब विदुरको भेजकर उन्हें बुलाया व आधा राज्य अपना उनको बांट दिया जब युधिष्ठिर आदिक पांचो भाइयोंने आधा राज्य अपना पाया तब वे हस्तिनापुरके निकट इन्द्रप्रस्थ नाम एक नगर बहुत अच्छा बसाकर आनन्दपूर्वक राज्य करने लगे व अनेक राजोंको जीतकर अपने वशमें कर लिया यह समाचार पातेही मोहनप्यारे कई यदुवंशियों को साथ लेकर इन्द्रप्रस्थको गये जब देवकीनन्दन उस नगरके निकट पहुँचे तब युधिष्ठिर आदिक पांचो भाई यह समाचार सुनतेही आगे से आनकर सन्मानपूर्वक उन्हें राजमन्दिर पर लिवा लेगये व श्रीकृष्णजीने कुंती के पास जाकर उसके चरणोंपर शिर अपना रख दिया तब कुन्तीने श्यामसुन्दर को गोद में बैठाकर बहुतसा प्यार किया जब द्रौपदी कुन्तीकी आज्ञानुसार घूंघट

काढ़े हुये हरिचरणों पर गिर पड़ी तब मुरलीमनोहरने उसके शिरपर हाथ रखकर उसे अशीश दिया फिर कुन्तीने श्यामसुंदरको जड़ाऊ चौकीपर बैठाकर प्रसन्नता से उनकी आरती की व छत्तीस व्यंजन बनाकर उन्हें खिलाया जब श्यामसुन्दर भोजन करके पान व इलायची खाने लगे उस समय कुन्तीने वसुदेव व शूरसेन व बलरामजी आदिक की कुशल पूंछ कर उनसे कहा महाराज तुम्हारी कृपाका हाल मैं कहांतक वर्णन करूं पहिले अक्रूरको मेरी सुधि लेने वास्ते भेजकर दूसरी बेर आप आये॥

दो० जब तुम प्यारे प्रीति करि पठयो श्रीअक्रूर। तबहीं मन धीरज भयो गयो कष्ट सब दूर॥

हे दीनानाथ उसी दिनसे मैंने जाना कि आप मेरे सहायक हैं जब आप ऐसे त्रिलोकीनाथ मेरी रक्षा करनेवाले हैं तो मैं किसी का डर नहीं रखती मुझे इस बात का विश्वास है कि जो कोई तुम्हारे शरण आया उसे कुछ दुःख नहीं होता जिस तरह तुम अपने भक्त व तीनों लोकोंका दुःख छुड़ा देते हो उसीतरह मेरे बेटोंको भी अपने शरणागत जानकर उनकी रक्षा करो॥

चौ० जबजब विपति परी हरि भारी। तब तब रक्षा करी हमारी॥
अहो कृष्ण तुम परदुखहरणा। पांचो भाय तुम्हारी शरणा॥

जिसतरह हरिणी अपने झुण्डसे बिलग होकर भेड़ियेका डर रखती है उसीतरह मेरे पांचो पुत्र दुर्योधन आदिक से अपने प्राणका भय रखते हैं जब कुन्ती यह कह चुकी तब युधिष्ठिर ने श्यामसुन्दर के आगे हाथ जोड़कर विनय किया हे त्रिलोकीनाथ मैं जानता हूं कि पिछले जन्म कोई शुभ कर्म मुझसे हुआ था जिसके प्रतापसे तुम्हारे चरण जिनका दर्शन ब्रह्मादिक देवतोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता सो मेरे घरआये॥

दो० जिन चरणनकी रेणुसों ममघर भयो पुनीत। केहि मुखसों वर्णन करौं मारवन प्रभू सुनीत॥

हे महाप्रभो हमलोग अनाथ होकर सिवाय तुम्हारी दया व कृपा के दूसरे का भरोसा नहीं रखते मुझे ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो आप वैकुण्ठ-नाथकी स्तुति वर्णन करनेसकूं जिसतरह आपने मुझको अपना दास जानकर दयाकी राह यहां कृपा की उसीतरह चार महीने बरसात भर यहां

रहकर अपने दासों को सुख दीजिये यह दीन वचन कुंती व युधिष्ठिरका सुनकर वृन्दावनविहारी भक्तहितकारी ने उनको बहुत धैर्य दिया व चार महीने वहां रहकर प्रतिदिन नये नये सुख उन्हें देनेलगे एक दिन श्याम-सुन्दर व अर्जुन राजा युधिष्ठिरसे आज्ञा लेकर रथपर बैठके वनमें अहेर खेलने वास्ते गये सो अर्जुन ने कई शेर व चीता व भालू व शूकर व हरिण व साबर व रीछ आदिकका शिकार मारा व मांस हरिण व सावर का राजमन्दिरपर भेज दिया जब बहुत परिश्रम करनेसे मुरलीमनोहर व अर्जुन को प्यास मालूम हुई तब दोनों ने यमुना किनारे जाकर पानी पिया व वृक्षकी छाया में सोगये॥

दो० श्रीयमुना शोभित महा जामें उठत तरंग। शीतल पवन बहै सदा फूले कमल सुरंग॥

जब अर्जुन थोड़ी देर सो कर टहलता हुआ यमुना किनारे गया तब उसने क्या देखा कि यमुनाजल में सुनहला जड़ाऊ मन्दिर बना होकर उसमें एक कन्या महासुन्दरी बैठी हुई तप करती है यह चरित्र देखतेही अर्जुनने उस कन्यासे पूछा तुम किसकी बेटी कौन नाम होकर यहां किस कारण अकेली बैठी तप करती हो॥

दो० यह सुनकर बोली तभी महामनोहर वाम। पिता हमारे सूर्य हैं कालिन्दी मम नाम॥

जिन दिनों कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द वृन्दावनमें विहार करते थे तभी से मैं उस मोहनीमूर्तिपर मोहित होकर उन्हें अपना पति बनाया चाहती हूं व मैंने मनसा वाचा कर्मणा से यह प्रण किया है कि सिवाय वैकुण्ठ-नाथके दूसरे से विवाह नहीं करूंगी सूर्यदेवता ने मेरी इच्छा जानकर यह मन्दिर रहनेवास्ते बनवा दिया सो अपने पिता की आज्ञानुसार दिन रात यहां रहकर हरिचरणोंका ध्यान व स्मरण करतीहूं पर मैंने सुनाहै कि श्यामसुन्दरपर अनेक स्त्रियां महासुन्दरी मोहित होकर आठोंपहर उनकी सेवामें रहती हैं इसलिये मुझ गरीब बिचारीका उनके पास द्वारकामें पहुँचना बहुत कठिन है कदाचित् वे दयालु होकर अपना दर्शन देवैं तो मेरी कामना पूर्ण होसक्ती है॥

चौ० वे सबके मनकी गति जानैं। दासनकी विनती नित मानैं॥
जबलों नहिं पूजै मम आसा। तबलों जल में करों निवासा॥

अर्जुन यह बात सुनतेही वहांसे हँसता हुआ श्यामसुन्दरके पास आन कर बोला महाराज यमुनाजलमें एक महासुन्दरी तुम्हें अपना पति बनाने वास्ते तप करती है तुम ऐसे भाग्यवान्हो कि तुम्हारे पीछे पीछे महासुन्दरी स्त्रियां दौड़ा करती हैं यह सुनतेही श्यामसुन्दर वहांसे उठकर यमुना किनारे चले गये व अर्जुन ने पहिलेसे जाकर उस चन्द्रमुखी से कहा जिन्हें तुम अपना पति बनाया चाहती हो वही द्वारकानाथ अविनाशी पुरुष यहां आते हैं जैसे यह वचन कालिन्दी ने सुना वैसे मारे हर्ष के आगे दौड़कर हरिचरणोंपर गिरपड़ी व परिक्रमा लेने उपरान्त हाथ जोड़कर सन्मुख खड़ी होगई जब मुरलीमनोहरने उसकी सच्ची प्रीति देखकर हँसते हुये उसका हाथ पकड़ लिया तब कालिन्दीने विनयपूर्वक कहा हे प्राणनाथ मैं मनसा वाचा कर्मणा से आपकी दासी होकर तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूं पर संसारी व्यवहार व मर्याद वेद व शास्त्र जो कुछ आपने बना दियाहै उसके अनुसार चलना चाहिये यह वचन सुनकर केशवमूर्ति ने उसीसमय सूर्य देवता के पास जाकर कहा तुम अपनी कन्या हमैं देव जब सूर्य देवता ने उसी क्षण वहां आनकर वह कन्या श्रीकृष्णजी को संकल्प दी तब श्यामसुन्दर उसे रथपर चढ़ाकर इन्द्रप्रस्थमें आये वहां पर विश्वकर्माने पहिलेसे वैकुण्ठनाथकी इच्छानुसार एक स्थान बहुत अच्छा बना रक्खा था उसीमें कालिंदीको उतारकर एक रूप अपना उसके पास रक्खा व दूसरे स्वरूप से अर्जुन को साथ लिये हुये कुन्तीके घर चले गये एक दिन राजा युधिष्ठिर ने केशवमूर्ति से विनय किया हे महाप्रभो ऐसी दया कीजिये कि जिसमें मेरे रहनेवास्ते एक स्थान बहुत अच्छा तैयार होजावै यहवचन सुनतेही गोपीनाथने विश्वकर्माको आज्ञा दी तो उसने द्वारकापुरी में ऐसे उत्तम अनेक स्थान तुरन्त युधिष्ठिर आदिकके रहने वास्ते बना दिये जब पांचो भाई उसमें हर्षपूर्वक रहने लगे तब एक दिन रातको जहां मुरलीमनोहर व अर्जुन बैठेथे अग्निदेवताने आनकर कृष्ण-

चन्द्रसे विनय किया महाराज मुझे अजीर्णका रोग उत्पन्न हुआहै सो किसी तरह नहीं जाता मैं नन्दनवनको जहां अनेक जड़ी व बूटी गुणवती लगी हैं जलादेऊं तो मेरा रोग छूटजावे श्यामसुन्दरने कहा बहुत अच्छा तुम जाकर उसे जलादेव अग्नि हाथ जोड़कर बोले हे दीनानाथ उस बागकी रक्षा इन्द्र करता है मैं अकेला जाऊं तो इन्द्र पानी बरसाकर मेरी ज्वाला ठंढी कर देगा यह बात सुनकर लक्ष्मीपति ने अर्जुन से कहा हे भाई तुम अग्निके साथ जाकर नन्दनवन इसे जलाने देव जिससे इसका रोग छूट जावै अर्जुन उनकी आज्ञानुसार धनुष बाण उठाकर अग्निके साथ चला गया व उस बाग में पहुँचकर अग्निसे कहा तुम अपनी इच्छानुसार यह बाग जलादेव मैं तुम्हारी रक्षा करनेवास्ते खड़ाहूं जब अग्नि देवता आम व इमली व बेर व पीपर व पाकर व महुआ व जामुन व खिरनी व कचनार व गूलर आदिक वृक्ष वहां के चारों तरफ से जलाने लगे व सब पशु पक्षी आदिक वहां के अपना अपना प्राण लेकर जिधर तिधर भागे और धुवां आकाश में पहुँचा तब राजा इन्द्र ने मेघपति को बुलाकर आज्ञा दी तुम अभी जाकर ऐसा पानी नन्दन बागपर बरसावो जिसमें सब अग्नि बुझ जाय व कोई पशु व पक्षी जलने न पावे जब यह आज्ञा पातेही मेघराज ने दल बादलकी सेना साथ लिये हुये नन्दन बाग पर जाकर पानी बरसाया तब अर्जुन ने पवन बाण मारकर सब बादल को इस तरह जहां तहां उड़ा दिया जिस तरह हवा से रुई के फूहे उड़ जाते हैं व बाणों से नन्दन बाग के चारों ओर ऐसा पिंजरा बना दिया जिसमें कोई वहां का पशु पक्षी बाहर न जावे व पानी की बूंद उस जगह पहुँचने न सके जब अग्नि देवता आनन्दपूर्वक बाग जलाते हुये निकटस्थान मय नाम दानवके पहुँचे तब उस दानवने जलनेके डरसे अर्जुन के पास आनकर विनय किया हे राजकुमार मुझे अपनी शरणागत समुझकर मेरा प्राण इस अग्निके हाथसे बचावो यह दीन वचन सुनतेही अर्जुनने प्रसन्न होकर अग्निसे कह दिया तुम मय दानवका घर मत जलाओ जब अग्नि देवताने अर्जुनकी आज्ञासे मय दानवका स्थान छोड़कर और सब नन्दन

बाग को जला दिया तब मय दानवने अर्जुनका उपकार मानकर उससे मित्रताई की व अपनी मायासे एक स्थान सभाका बहुत उत्तम युधिष्ठिर आदिके बैठने वास्ते इन्द्रप्रस्थमें बना दिया जिसे देखकर हमलोग मोहित होजाते थे उसमें कई जगह ऐसे कुण्ड बिल्लौरके साफ बने थे जिसको देखकर पानी भरा हुआ मालूम होता था व किसी जगह पानी भरे हुये कुण्ड सूखे दिखलाई देते थे एक दिन राजा दुर्योधन वह स्थान देखनेवास्ते गया जब पानीमें भीगनेके सन्देह से अपना जामा उठाया तब भीमसेन हँसने लगा इसलिये दुर्योधन बहुत लज्जित होकर अपने घर चला आया व उसी दिनसे दुर्योधन ने पांडवों के साथ अधिक शत्रुता मनमें बढ़ाई जब अग्निदेवताका रोग अर्जुनकी सहायता करनेसे छूट गया तब उसने बहुत प्रसन्न होकर गांडीव नाम धनुष व दिव्य कवच व एक रथ चार घोड़े श्वेतवर्ण व दो तरकस जिसके बाण कभी नहीं घटते थे व एक तलवार व ढाल अतिउत्तम अर्जुन को दिये ॥

दो० कालिन्दी सुख देनको पांडुसुतनके काज। अग्निभार उपजायके रहे तहां यदुराज ॥

जब श्यामसुन्दरने चार महीने इन्द्रप्रस्थमें रहकर राजा युधिष्ठिर से बिदा चाहीं तब पांचो भाई पांडव व कुन्ती व द्रौपदी आदिक बहुत उदास होगये इस वास्ते वसुदेवनंदन उन्हें धैर्य देने उपरांत अर्जुन व कालिन्दीको साथलेकर जब कई दिनमें आनन्दपूर्वक द्वारकापुरी पहुँचे तब उनके दर्शन से सब छोटे बड़ोंने सुख पाया कई दिन बीते कृष्णचंद्रजीने राजा उग्रसेन से कहा महाराज कालिन्दी सूर्यदेवता की बेटी जो हमारे संग आई है उसका विवाह मेरे साथ कर दीजिये यह वचन सुनतेही उग्रसेनने शुभ लग्नमें श्यामसुन्दर व कालिन्दीका विवाह बड़े धूमधाम से कर दिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जिसतरह मुरलीमनोहर मित्रविन्दाको विवाह लाये थे उसका हाल सुनो श्यामसुन्दरकी फुआ राजदेवी नाम उज्जैन के राजा से विवाही गई थी जब उसकी मित्रबिंदा कन्या अतिसुन्दरी व चंद्रमुखी उत्पन्न होकर विवाहने योग्य हुई तब राजा मित्रसेन उसके भाईने स्वयंवर उसका रचकर सब जगह नेवता भेजा सो

अनेक देश के राजा वहां आनकर इकट्ठे हुये यह हाल सुनकर वसुदेव-नन्दन अन्तर्यामी भी जिनकी चाहना व भक्ति वह कन्या हृदय में रखती थी अर्जुन समेत उज्जैन को गये और वहांपर देश देश के प्रतापी राजा स्वयंवरमें बैठे थे वहां जाकर खड़े हुये उसी समय मित्रविंदाने सोलहों शृंगार किये हाथमें जयमाल लिये उस स्थानपर आनकर जैसे मोहनी मूर्तिको देखा वैसे उनपर मोहित होकर वह माला उनके गलेमें डालदी यह हाल देखकर सब राजा अपने अपने मनमें पछिताने लगे व राजा दुर्योधन जो अपने भाइयों समेत वहां गया था मनमें डाह उत्पन्न करके मित्रसेन व विन्दसेन राजकन्याके भाइयोंसे बोला सुनो यार कृष्ण तुम्हारे मामाका बेटा राजकन्याको विवाह लेजायगा तो इस संसार के लोग तुम्हारी हँसी करेंगे इस लिये तुम अपनी बहिनको जाकर समझा दो कि वह इनसे अपना विवाह न करे नहीं तो सब राजोंमें तुम्हारी हँसी होगी यह वचन सुनतेही जैसे मित्रसेन ने अपनी बहिनको समझाया वैसे वह श्यामसुन्दरके निकटसे हटकर अलग खड़ी होगई तब अर्जुनने झुककर श्रीकृष्णजीके कानमें कहा महाराज इस समय आप किसीका संकोच करेंगे तो बात बिगड़ जायगी जो कुछ करना हो सो तुरन्त कीजिये यह बात सुनतेही वृन्दावनविहारीने झपटकर स्वयंवर के बीचमें मित्रविन्दाका हाथ पकड़ लिया व उसको अपने रथपर बैठाकर द्वारकाको चले यह हाल देखते ही दूसरे राजा जो वहां थे अपने अपने रथ व घोड़ोंपर चढ़कर उनके पीछे दौड़े व अनेक रंगके शस्त्र लिये हुये उनको चारों ओरसे घेर लिया जब दैत्यसंहारणने देखा कि विना लड़े ये लोग नहीं पीछा छोड़ेंगे तब उन्होंने कई बाण ऐसे मारे कि सब राजा जिधर तिधर भाग गये व वृन्दावनविहारीने आनन्दपूर्वक द्वारकामें पहुँचकर शास्त्रानुसार उसके साथ अपना विवाह किया ॥

दो॰ ताके अंगप्रसंगते मुदित भयो यदुराय। महिमा ताके भाग्यकी कासों बरणी जाय ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित अब जिस तरह श्यामसुन्दरने सत्यानाम राजकुमारीसे विवाह कियाथा उसका हाल सुनो

नग्नजित अयोध्याके नृपतिने सत्या अपनी कन्याका स्वयंवर रचकर यह प्रण किया था जो आदमी मेरे सातों बैलोंकी नाक एक बेर नाथडाले उसको अपनी बेटी विवाह दूंगा इसलिये जो राजा स्वयंवर का हाल सुनकर वहां जातेथे वहलोग उन बैलोंका स्वरूप देखकर कोई उनकी नाक छेदना अंगीकार नहीं करता था यह सुनतेही मुरलीमनोहर अर्जुनको सेनासमेत साथ लेकर राजकन्यासे विवाह करनेवास्ते अयोध्यापुरी में गये जब उन के आवनेका हाल राजा नग्नजितने सुना तब वह आगेसे जाकर हरि-चरणोंपर गिर पड़ा व अनेक वस्तु उन्हें भेंट देकर सन्मानपूर्वक अपने घर लिवालाया व जड़ाऊ चौकी पर बैठाकर चरण धोने उपरांत चरणामृत लिया व विधिपूर्वक पूजन करके बहुत अच्छा भोजन उनको खिलाया व मोतियों की माला पहिनाकर पीताम्बर ओढ़ाया व सच्चे मनसे हाथ जोड़ कर इसतरहपर विनय किया हे महाप्रभु आप सब गुणोंसे भरे होकर कुछ अवगुण नहीं रखते व तुम्हारे चरणोंकी धूरि ब्रह्मादिक देवता व योगी व ऋषीश्वर अपने शिर पर चढ़ावते हैं जब शेषनागजी दो हजार जिह्वासे आपकी स्तुति नहीं करनेसके तो दूसरेकी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारे गुण वर्णन करने सकै लक्ष्मी दिन रात तुम्हारा पांव दावकर नारदजी आठोंपहर आपका गुण गाया करते हैं हे वैकुण्ठनाथ सब जगत् तुम्हारी छायामें रहता है आज मेरा बड़ा भाग्य था जो आपके चरण तीनों लोक के तारनेवाले मेरे घर आये व मैंने उन चरणों को अपने हाथ से धोया इन्हीं चरणों का धोवन गंगाजी हैं जिनकी महिमा का वर्णन नहीं होसक्ता जिस जिस जगह आपने चरणकमल अपना रक्खा है उस पृथ्वी पर नेवछावर होजाता हूं॥

दो० चरणाम्बुज हरिके चहैं शिव विरंचि मुनिईश। धन्य भाग्य जो धरत हैं उन चरणनपरशीश॥
उदय भयो सब आयके आज हमारो भाग। माखन प्रभु दर्शन दियो कियो बहुत अनुराग॥

जब राजा ने इसी तरह बहुत स्तुति करके उस दिन मुरलीमनोहर को अपने यहां टिकाया तब सत्यानाम राजकुमारी जो अतिसुन्दरी व चन्द्रमुखी थी मोहनीमूर्ति को देखतेही उनपर मोहित होकर अपने मनमें कहने लगी

हे परमेश्वर मुझसे कोई शुभकर्म पिछले जन्म में हुआ हो तो कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द को स्वामी पाकर अपना जन्म स्वार्थ करूं ऐसा विचार कर उसने अपनी सखियों से कहा हे प्यारियो मेरा मन इस श्याममूर्ति ने मोहि लिया ॥

चौ० यद्यपि ये त्रिभुवन के स्वामी। सकल विश्व के अन्तर्यामी ॥
सदा विरक्त रहैं मनमाहीं। इन्हिन की इच्छा कछु नाहीं ॥
तदपि जो इनसे मन लावै। प्रेमरीति की प्रीति लगावै ॥
तासों प्रीति करत सुखदाई। हरिजूकी यह रीति सदाई ॥
जब मैं हरिचरणन को पाऊं। हरिदासन में नाम धराऊं ॥

दो० जिनके मनमें प्रीति है सो सब देव अशीश। श्रीयदुपति मोको वरें सब ईशनके ईश ॥

जब दूसरे दिन प्रातसमय श्यामसुन्दर उठे तब राजा नग्नजितने हाथ जोड़कर विनय की हे करुणानिधान मुझसे कुछ टहल तुम्हारी नहीं बन पड़ी इसलिये लज्जितहूं और जो आज्ञा दीजिये सो अपनी सामर्थ्य भर तुम्हारी सेवा करूं श्यामसुन्दर अन्तर्यामी को सच्चा प्रेम उस कन्या का मालूम हुआ था इसलिये उन्होंने हँसकर कहा हे राजन् तुम्हारी स्तुति सुनकर हमारा मन भेंटवास्ते बहुत चाहता था सो तुम्हें देख कर बड़ा सुख पाया क्षत्रियवर्ण को मांगना धर्म नहीं है परन्तु तुम्हारी भक्ति व प्रीति देख कर मैं चाहता हूं कि सत्यानाम अपनी कन्या जो गुण व शील से भरी है वह हमें विवाह देव यह वचन सुनकर राजा बड़े हर्ष से विनय की हे वैकुण्ठनाथ जहां लक्ष्मीजी आठों पहर तुम्हारी सेवा में रहती हैं वहां मेरी बेटी उनके सामने क्या वस्तु है जो आप चाहना करैं केवल मेरी भक्ति देखकर दया की राह आप ऐसा कहते हैं सो मेरा बड़ा भाग्य है जो मेरी कन्या आपकी दासियों में रहै पर मैंने इस कन्या के विवाह वास्ते यह प्रण किया है कि जो आदमी मेरे सात बैलों को एकबेर नाथ देवे उसे अपनी बेटी विवाह दूं सो अनेक राजकुमारों ने आन कर ऐसी इच्छा की पर किसी से वह काम पूरा नहीं हुआ उनमें कितने बैलों के सींग से घायल होकर अपने घर चले गये व बहुत राजकुमार अभी तक यहां घायल पड़े हैं आपसे मेरा प्रण पूरा होसके तो यह कन्या विवाह ले जाइये मेरे निकट

सिवाय तुम्हारे दूसरे से यह काम नहीं होगा यह सुनकर श्यामसुन्दर ने कहा बहुत अच्छा मैं सातों बैलों की नाक छेदकर उन्हें नाथ दूंगा यह वचन सुनतेही जब राजा उन सातों बैलोंको जो हाथीके समान बलवान् थे उनके सन्मुख ले आया तब श्यामसुन्दरने उठकर कमर अपनी बांध ली व सात रूप अपने इस तरह पर जो दूसरे को दिखलाई न देवैं धारण करके सातों बैलों की नाक एकबेर में छेद डाली व उन सातों को एक रस्सी में नाथ कर खड़ा करादिया ॥

दो० माखन प्रभु ज्ञानी महा कीन्हों चरित अनूप। सात वृषभके कारणे धर्यो सप्त निजरूप ॥

हे परीक्षित देखो जिनकी आज्ञा में तीनों लोक के जीव रहते हैं उनके निकट सात बैलों का एकबेर में नाथ लेना कौन कठिन है जब राजा नग्नजित यह चरित्र देखकर बहुत प्रसन्न हुआ व इच्छा राजकन्या की पूर्ण हुई तब सब छोटे व बड़े नगरवासियों ने यह चरित्र देखकर अचम्भा माना व स्तुति द्वारकानाथ की करने लगे व राजाने उसीसमय उपरोहित से शुभलग्न पूछकर अपने यहां विवाह की तैयारी व शास्त्रानुसार सत्या अपनी कन्या मुरलीमनोहर को विवाह दी व दशहजार गौ व तीन हज़ार दासी अतिसुन्दर भूषण व वस्त्र समेत नवलाख हाथी व नवकरोड़ घोड़ा व नवलाख रथ व नब्बेहजार दास व असंख्य रत्न व द्रव्यादिक दहेज में श्यामसुन्दर को देकर अपनी कन्या समेत बिदा किया पर दूसरे राजा जो उस स्वयंवर में इकट्ठे हुये थे क्रोधित व लज्जित होकर आपस में बोले इस यादवको क्या सामर्थ्य है जो हमारे ऐसे प्रतापी राजों के सामने राजकुमारी को ले जावे जब वे लोग ऐसा विचार कर अपनी अपनी सेना समेत चढ़ दौड़े व उन्होंने चारों ओर से आन कर द्वारकानाथ को राह में घेरलिया तब अर्जुन ने गाण्डीव धनुष चढ़ाकर उन राजों को ऐसे बाण मारे कि वे लोग हारमानकर जिधर तिधर भाग गये जब केशवमूर्ति आनन्दपूर्वक द्वारका में आये तब राजा उग्रसेन आदिक सब छोटे बड़े आगे से आनकर गाते व बजाते उनको राजमन्दिर पर लिवा ले गये ॥

दो० तहां बहुत उत्सव भयो कासों बरणो जाय। नर नारी हर्षे सभी आनँद उर न समाय ॥

जब दहेज की वस्तु देखकर सब द्वारकावासी राजा नग्नजितकी बड़ाई करने लगे तब श्याम व बलरामने उसीसमय वह सब दहेज जो नग्नजित से पाया था अर्जुन को देकर संसार में यश उठाया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जिस तरह वसुदेवनन्दन भद्रा को विवाह ले आये थे अब उसका हाल सुनो गयनाम नगर में राजा ऋतुसुकृतने भद्रा अपनी बेटीका स्वयंवर रचकर बहुतसे राजोंको इकट्ठा किया तब मोहनीमूर्ति भी अर्जुन को साथ लिये हुये वहां जाकर खड़े होगये जब चन्द्रमुखी राजकन्या जयमाल हाथ में लिये सब राजों को देखती हुई श्यामसुन्दर के निकट आई व उसने सांवली मूरत पर मोहित होकर उनके गलेमें जयमाल डाल दी तब राजा ऋतुसुकृत ने बड़े हर्षसे अपनी कन्या मुरलीमनोहर को विवाह दी व बहुत सा दहेज उन्हें देकर अपनी कन्या समेत बिदा किया जब श्रीकृष्णजी भद्रा को लेकर द्वारका में आये तब घर घर मंगलाचार होने लगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जिस तरह श्रीकृष्णजी ने लक्ष्मणा को विवाहा था वह कथा सुनो भद्रदेशके राजा बड़े प्रतापी ने लक्ष्मणा अपनी कन्याका स्वयंवर रच कर बहुत से राजोंको नेवता कहला भेजा जब चारों ओर के राजा अपनी अपनी सेना साथ लिये बड़ी धूम धाम से वहां आनकर इकट्ठे हुये व वृन्दावनविहारी भी अर्जुनको साथ लेकर उसी स्वयंवर में पहुँचे तब राजकुमारीने सोलहों शृङ्गार किये जयमाल लिये राजसभा में आनकर जैसे वसुदेवनन्दन को देखा वैसे उनपर मोहित होकर वह माला उनके गले में पहिना दी राजाने यह हाल देखतेही बड़े हर्षसे अपनी कन्या उन्हें विवाह दी व बहुत सा दहेज देकर कन्या समेत बिदा किया पर दूसरे राजा जो उसके स्वयंवर में आये थे डाह की राह अपनी सेना साथ लिये द्वारकाकी राहपर जा खड़े हुये जब श्रीकृष्णजी लक्ष्मणाको साथ लेकर अर्जुनसमेत द्वारकाको चले तब उन राजों ने उनसे युद्ध किया उस समय दैत्यसंहारण व अर्जुनने ऐसे बाण चलाये कि सब राजा हार मानकर भाग गये व श्यामसुन्दर हर्षपूर्वक द्वारका में पहुँचे व द्वारका-

वासियों ने अपने अपने घर मंगलाचार मनाया हे परीक्षित इसी तरह श्यामसुन्दर अपना विवाह करके आठों पहर रानियों समेत आनन्दपूर्वक द्वारकापुरीमें रहनेलगे व सब स्त्रियां प्रेमपूर्वक उनकी टहल करती थीं उन आठों के जो अष्टनायिका व पटरानी कहलाती थीं ये नाम थे रुक्मिणी, जाम्बवती, सत्यभामा, कालिन्दी, मित्रबिंदा, सत्या, भद्रा, लक्ष्मणा ॥

दो० माखन प्रभुकी नायिका आठों कही सुनाय । सोलहसहस कुमारिका अब कहिहौं समुझाय ॥

उनसठवां अध्याय ।

श्यामसुन्दरका भौमासुरको मारना व सोलहहजार एक सौ राजकन्याओंसे अपना विवाह करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित एकदिन नारदमुनिने फूल कल्पवृक्षका जिसकी सुगन्ध बहुत अच्छी होती है नन्दनबागसे ले आकर श्यामसुन्दरको दिया जब मुरलीमनोहरने वह फूल रुक्मिणीको देडाला तब नारदमुनि सत्यभामा के पास जाकर बोले आज मुझे मालूम हुआ कि वसुदेवनन्दन तुमसे रुक्मिणीको अधिक प्यार करते हैं इसलिये उन्होंने कल्पवृक्षका फूल जो राजा इन्द्रकी बागमें होता है रुक्मिणीको देदिया उनको तेरी प्रीति अधिक होती तो तुझे देते जब यह झगड़ा लगाकर नारदमुनि चले गये तब सत्यभामा उदास होकर कोपभवनमें जा बैठी जब मुरलीमनोहरने उसे मनाकर यह इकरार किया कि मैं कल्पवृक्ष को इन्द्रलोक से लेआकर तेरे आंगन में लगादूंगा तब सत्यभामा प्रसन्न होकर उनके साथ विहार करने लगी हे राजन् एक समय पृथ्वी स्त्रीरूप बनकर तप करने लगी तब ब्रह्मा व विष्णु व महादेव उसे दर्शन देकर बोले तैंने इतना दुःख उठाकर कौन मनोरथ मिलने वास्ते तप किया है स्त्रीरूप धरती ने उन तीनों देवताओंकी दण्डवत् करके विनय किया महाराज दया करके मुझे एक बेटा ऐसा बलवान् व प्रतापी दीजिये जिसका सामना तीनों लोक में कोई न करसकै व किसीके हाथसे वह मारा न जावै यह बात सुनतेही तीनों देवताओं ने प्रसन्न होकर कहा तेरा पुत्र नरकासुर नाम जिसे भौमासुर लोग कहैंगे बड़ा प्रतापी उत्पन्न होकर

सब पृथ्वी के राजों को लड़ाई में जीतलेगा व स्वर्गलोक में जाकर सब देवतोंको जीतने उपरांत अदितिके कानोंका कुण्डल लेकर आप पहिनेगा व इन्द्रका छत्र अपनी भुजाकी सामर्थ्य से छीनकर अपने शिरपर धरेगा व संसारी राजोंकी सोलहहजार एकसौ कन्या अतिसुन्दरी बरजोरी से लेआकर विना विवाही अपने घर रक्खेगा जब श्रीकृष्णजी वैकुण्ठनाथ उसके साथ लड़ने आवैंगे और तू अपने मुखसे कहैगी कि मेरे बेटेको मारो तब वे उसे मारकर सब राजकन्या द्वारकापुरीमें लेजावैंगे यह वरदान देकर तीनों देवता अन्तर्धान होगये व पृथ्वीने विचार किया कि मैं अपने पुत्रको मारनेवास्ते क्यों कहूँगी कि वह मारा जायगा यह वरदान पाकर पृथ्वीने तप करना छोड़ दिया कुछ दिन बीते उसके नरकासुरनाम बालक बड़ा बलवान् उत्पन्न होकर प्राग्ज्योतिषपुरमें सात किले के भीतर राज्य करने लगा व सब पृथ्वी के राजोंको जीतकर अपने आधीन कर लिया और सोलहहजार एकसौ राजकन्या विना विवाही जिसमें एकसे एक सुन्दरी थी चलते फिरते खाते पीते बरजोरी उठा ले आया व अपने यहां एक स्थानमें रखकर ऐसा प्रण किया जब बीसहजार कन्या पूरी होंगी तब एकसाथ उनसे अपना विवाह करूंगा सो एकदिन सब कन्या आपसमें बैठकर रोने लगीं उसीसमय परमेश्वरकी इच्छानुसार नारदमुनि ने वहां जाकर उनसे कहा तुम लोग कुछ चिंता मति करो श्यामसुन्दर त्रिलोकीनाथ तुम्हें यहांसे छुड़ाकर तुम्हारे साथ अपना विवाह करैंगे यह वचन सुनते ही सब राजकन्या प्रसन्न होकर उस दिनसे नित्य हरिचरणों का ध्यान करने लगीं एकदिन भौमासुर क्रोध करके भूपविमान जो लङ्कासे लेआया था उसपर बैठकर इंद्रादिक देवतोंसे युद्ध करने वास्ते गया जब स्वर्ग में जाकर देवतों को दुःख देने लगा व देवता लोग उस के हाथसे अपने प्राणका बचाव न देखकर जिधर तिधर भाग गये तब उस ने अदिति का कुण्डल व इन्द्रके शिरका छत्र छीनलिया व अपने नगर में आनकर ऋषीश्वर व हरिभक्तोंको दुःख देने लगा जब देवता व हरिभक्त आदिक उसके हाथसे बहुत दुःखी हुये तब एक दिन राजा इन्द्र

द्वारकापुरीमें बीच सभा श्यामसुन्दरके आनकर हरिचरणोंपर गिरपड़ा व परिक्रमा लेने व स्तुति करने उपरांत हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ भौमासुर दैत्य ऐसा बलवान् उत्पन्न हुआ जिसने मेरी माता का कुण्डल व मेरा छत्र छीनकर सब देवतोंको स्वर्ग से बाहर निकाल दिया व हरिभक्तों को दुःख देता है इसलिये तुम्हारी शरण आनकर चाहता हूं कि आप उसे मारकर देवता व हरिभक्तों की रक्षा कीजिये सिवाय तुम्हारे दूसरेका भरोसा नहीं रखता जो उसकी शरण जाऊं यह दीन वचन सुनते ही वसुदेवनन्दन ने इन्द्रको धैर्य देकर कहा तू अपने स्थान पर जा मैं भौमासुर को मारकर तेरा दुःख हरूंगा जब इन्द्र मुरलीमनोहरको दण्डवत् करके अपने स्थान पर चलागया तब दैत्यसंहारण गरुड़पर चढ़कर सत्यभामासे बोले चल तुझको भौमासुरका युद्ध दिखालावैं व इन्द्रलोकसे कल्पवृक्ष लेआकर तेरे आंगन में लगादेवैं तू मुझे उस वृक्षके साथ नारद मुनि को दान कर दीजियो फिर गो व सुवर्ण आदिक शास्त्रानुसार उन्हे देकर मुझको उनसे मोल लेलीजियो तब मैं तेरे वश रहकर सब स्त्रियों से तेरी अधिक प्रीति करूंगा इसी तरह इन्द्राणी ने इन्द्रको व अदिति ने कश्यपजी अपने पतिको दान देकर फिर मोल लेलियाथा जब यह वचन सुनतेही सत्यभामा बड़े हर्षसे चलने को तैयार होगई तब श्यामसुन्दर ने उसे अपने पीछे बैठाकर गरुड़को उड़ाया ॥

दो॰ या विधि सतभामासहित माखनप्रभु यदुराय। भौमासुरके नगरको क्षणमें पहुँचे जाय॥

हे राजन् भौमासुरका नगर छः किलेके भीतर इस उपायसे बनाथा पहिले किला पहाड़का तैयार होकर उसके भीतर दूसरा किला अनेक शस्त्रोंसे बनाथा तीसरा किला पानीसे भरा होकर चौथे किलेमें चारोंओर आगि जलती थी पांचवां किला वायु का होकर छठवां किला रस्सों के जालका बनाथा व सातवें अष्टधाती किलेमें नरकासुरके रहनेका स्थान था सो श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार सुदर्शनचक्र व कौमोदकी गदा व गरुड़जीने क्षणभरमें पहाड़ व पत्थर व शस्त्रोंको तोड़कर पानी सुखा डाला व आगि बुझाने व वायु उड़ाने उपरांत रस्सोंके जाल काटकर

रास्ता बनादिया जब वृन्दावनविहारी सातवें किलेके द्वारपर पहुँचे तब लाख शूरवीर द्वारपालक युद्ध करनेवास्ते उनके सामने आये सो गरुड़जी ने उनको अपने पंख व चोंचसे मारकर गिरादिया व दैत्यसंहारणने किले के भीतर जाकर पाञ्चजन्यशंख अपना बजाया ॥

दो० भौमासुरके श्रवणमें शब्द परचो जब जाय। तबहीं सोवतसे जग्यो मनमें बहुत रिसाय॥

हमने तीनों लोकमें किसीको ऐसा नहीं छोड़ा जो मेरे साथ लड़नेकी सामर्थ्य रखता हो यह कौन पुरुष है जिसने यहां आनकर आज मुझे नींदसेजगाया उसे चलकर देखा चाहिये जिस समय भौमासुर यह विचार कर रहाथा उसी समय मुर नाम दैत्य उसके मंत्रीने द्वारपालकोंका मरना सुनतेही नरकासुर के पास जाकर विनय किया महाराज मेरे रहते आपको परिश्रम करना उचित नहीं है मैं जाकर देखता हूं जो हाल होगा वह सब तुमसे कहूंगा ॥

दो० तुमसों कौन महाबली तिहूंलोकमें आज। कौन काज श्रम करतहौ सब राजन केराज॥

यह बात कहके मुर वहां से विदा हुआ व त्रिशूल हाथ में लेकर श्यामसुन्दर के सामने आया व क्रोधसे लाली लाली आंखें निकाल कर दांत पीसता हुआ बोला देखूं मुझसे कौन बली है जो यहां लड़ने आया है जब ऐसा कहकर उसने केशवमूर्तिपर त्रिशूल व गदा आदिक अनेक शस्त्र अपने चलाये व वसुदेवनन्दनने उसके शस्त्र सुदर्शनचक्रसे काटडाले तब वह दैत्य जो पांच शिरका था झुँझुलाकर अपने पांचों मुँह बाये हुये इस इच्छासे उनकी ओर दौड़ा जिसमें वैकुण्ठनाथको निगलजाऊं उस समय त्रिभुवनपतिने सत्यभामाको घबड़ाई हुई देखकर सुदर्शनचक्रसे पांचों शिर उसके काटडाले उसी दिनसे संसारमें मुरारि उनका नाम प्रकट हुआ जब मुर दैत्यके ताम्र आदिक सातों बेटोंने अपने बापका मरना सुना तब वे लोग अनेक तरहके शस्त्र बांधे हुये बहुतसी सेना साथ लेकर मोहनप्यारे के सामने आये व अपना अपना शस्त्र उनपर चलाने लगे वृन्दावनविहारीने सुदर्शनचक्र से इसतरह उन लोगों कोभी सेना समेत एक क्षण में मारकर गिरा दिया जिसतरह किसानलोग जुवारका खेत

काट डालते हैं जब भौमासुरने सुना कि मुरदैत्य मेरा मंत्री अपने सातों बेटों व सेना समेत मारा गया तब वह क्रोधित होकर बहुतसे शूरवीर व हाथी साथ लिये हुये श्यामसुन्दर पर चढ़ दौड़ा ॥

दो० तभी चल्यो अति कोपकै असुर महाबलवन्त। गजपतंग आगे करे जिनके लम्बे दन्त ॥
योधा बहुत हते तहां भौमासुरके संग। कोउ हस्ती कोउ रथन में कोऊ चढ़े तुरंग ॥

जब नरकासुर त्रिभुवनपतिके सामने आनकर गदा व त्रिशूल व भुशुण्डी आदिक अनेक तरहके शस्त्र उनपर चलाने लगा व दैत्यसंहारण सुदर्शनचक्र से उसके शस्त्र काटने लगे तब भौमासुरने खिझलाकर एक तलवार मुरलीमनोहर पर बड़े वेगसे चलाई व ललकार कर बोला आज तुम मेरे हाथसे जीते बचकर नहीं जासक्के जब उसकी तलवारने भी कुछ काम नहीं किया व सब सेना उसकी दैत्यसंहारण व गरुड़जी ने क्षणभरमें मारडाली और उसने अपने को अकेला देखा तब वह अपने घरसे एक बड़ाभारी त्रिशूल लेकर फिर वृन्दावनविहारी पर मारने झपटा उस समय सत्यभामा ने श्यामसुन्दरसे पुकारकर कहा इस पापीको मारडालो इतनी बात उसके मुखसे निकलतेही वसुदेवनंदनने शिर उसका सुदर्शनचक्र से काटकर गिरा दिया ॥

चौ० कुण्डल मुकुट सहित शिर पर्यो। धड़के गिरत शेष थरथर्यो ॥
तिहूंलोक में आनँद भये। दुख चिन्ता सबही के गये ॥
तासु ज्योति हरिमुखहि समानी। जय जय शब्द करैं सुर ज्ञानी ॥
चढ़े विमान पुष्प बरसावैं। वेद बखानि देव यश गावैं ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् महादेव आदिकका वरदान सत्य करनेवास्ते जब सत्यभामाने जो पृथ्वीका अवतार थी अपने मुखसे भौमासुरके मारनेवास्ते कहा तब श्यामसुन्दरने सुदर्शनचक्रसे उसका शिर काटलिया जब भौमासुर मरगया तब पृथ्वी उसकी माता अपनी पतोहू व भगदत्त पोतेको साथ लेके द्वारकानाथ के पास आई व छत्र व कुण्डल जो भौमासुर इन्द्रलोक से छीन लेआया था व बहुतसे रत्नादिक उन्हें भेंट देकर शिर अपना हरिचरणोंपर रख दिया व हाथ जोड़कर विनय किया हे ज्योतिस्स्वरूप भक्तहितकारी तुम्हारी महिमा व लीला अपरम्पारहै व

आपका भेद व आदि व अन्त कोई नहीं जानसक्ता व तुम अविनाशी पुरुष तीनों कालके जाननेवाले किसीसे कुछ भय नहीं रखते व आप देवता व मनुष्य आदिक तीनों लोकके उत्पन्न करनेवाले हैं व आदि व अन्त व मध्यमें केवल तुम्हारा प्रकाश रहताहै व आप अन्तर्यामी सबमें व्यापक व सबसे बिलग रहकर संसारी वस्तु की कुछ चाहना नहीं रखते व लक्ष्मी जी तुम्हारी दासी होकर चरणकमल आपका आठों पहर अपने हृदय में लगाये रहतीहैं व ब्रह्मादिक देवता व बड़े बड़े ऋषीश्वर व मुनि तुम्हारे चरणोंका ध्यान दिन रात अपने हृदयमें रखकर तुम्हें अपना उत्पन्न व पालन करनेवाला जानते हैं सो मेरी दण्डवत् उन्हीं चरणोंको पहुँचे जब महाप्रलय में शेषनागकी छातीपर शयन करते थे तब आपकी नाभि से कमलका फूल निकला उसी पुष्पसे ब्रह्माने उत्पन्न होकर तीनों लोक की रचना की इसलिये चौदहों भुवनकी जड़ आप होकर सबका मनोरथ पूर्ण करते व मट्टी व हवा व पानी व अग्नि व आकाश पांचों तत्त्व व दशों इन्द्रियोंको प्रकट करके रजोगुण से संसारकी उत्पत्ति व सतोगुणसे पालन व तमोगुण से नाश उसका करते हो व गरुड़जी तुम्हारे वाहन हैं व सब किसी को बल व यश आपकी दया से प्राप्त होताहै व तुम हरिभक्तों की रक्षा करने वास्ते संसार में मनुष्यरूप अवतार लेकर सबको सुख देतेहो जिसमें संसारी लोग उस रूपका ध्यान व पूजा व नाम का स्मरण करैं व तुम्हारी लीला की चर्चा आपस में रखकर भवसागर पार उतर जावैं तुम्हारा निर्गुणरूप किसी को दिखलाई नहीं देता इसलिये उस रूपसे जो कुछ चिह्न व रेखा नहीं रखता प्रीति उत्पन्न होना कठिन है संसारी लोग अपने वर्ण व धर्म के अनुसार तुम्हारी पूजा कई तरह पर करके अपना मनोरथ पाते हैं जहां तुम्हारी स्तुति शारदादेवी व शेष व महेश व गणेश से नहीं होसक्ती वहां मुझ अज्ञान मट्टीकी पुतली को क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारा गुण वर्णन करने सकूं पर तुम जिस पर कृपा करो वह अवश्य तुम्हें पहिंचान सक्ता है सो मेरी दण्डवत् आपको अंगीकार हो॥

चौ० जय जय कमलनाथ जलशायी। कमलनयन कमला सुखदायी॥

नाम स्वरूप अनन्त तुम्हारे। गावैं निशि दिन सन्त मुरारे॥
दो० सब देवनके देव तुम कोऊ लहै न भेव। तुमहीं जगकरतार हौ माखन प्रभु हरि देव॥

पृथ्वी ने इसी तरह से बहुत स्तुति करके भगदत्त अपने पोते को हरिचरणों पर गिरा कर विनय किया हे दीनानाथ कृपासिन्धु आपने मुझे यह वरदान दिया था कि विना तेरे कहे भौमासुर को न मारूंगा फिर किस वास्ते आज उसका वध किया यह वचन सुनतेही केशवमूर्ति ने सत्यभामा की ओर सैन बतलाकर कहा यह पृथ्वी का अवतार है इसके कहने से मैंने नरकासुर को मारा था जब पृथ्वी ने सत्यभामा को देखा तब लज्जित होकर बोली हे नाथ निरञ्जन मेरा पुत्र आपको न पहिंचान कर अधर्म करने लगा सो वह अपने दण्डको पहुँचा अब उस के बालक को जो तुम्हारी शरण में है अभय कीजिये जब यह दीन वचन सुनतेही श्यामसुन्दर ने अपना हाथ भगदत्त के शिर व पीठ पर फ़ेरकर उसे बहुत धैर्य दिया तब भौमासुर की स्त्री हाथ जोड़कर बोली हे जगत्पालक जिसतरह आपने कृपा करके अपना दर्शन हमैं दिया उसी तरह अपने चरणों से मेरा घर पवित्र कीजिये जब वसुदेवनन्दन सच्ची प्रीति उन लोगों की देखकर राजमन्दिर पर गये तब भगदत्त व उसकी माता ने बड़े हर्ष से पीताम्बर राह में बिछावते हुये वृन्दावनविहारी व सत्यभामा को अपने घर लेजाकर जड़ाऊ सिंहासन पर बैठाला व चरण धोने उपरान्त चरणामृत लेकर विधिपूर्वक पूजा उनकी की व सुगन्धादिक उन के अंग में लगाकर छत्तीस व्यंजन खिलाये व सुनहली झारी से हाथ धुलाकर पान व इलायची व उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर चमर हिलाने लगी व बड़े प्रेम से भगदत्त की माता ने हाथ जोड़कर विनय किया हे वैकुण्ठनाथ बहुत अच्छा हुआ जो आपने भौमासुर देवता व हरिभक्तों के दुःख देनेवाले को मारडाला देखो रावण व कंसादिक जिस किसी ने परमेश्वर से विरोध किया उसका जगत् में नाश हुआ अब भगदत्त मेरे बेटा को अपना सेवक जानिये व सोलहहजार एकसौ राजकन्या जो इसके बापने विना विवाही इकट्ठी की हैं उनको दयाकी राह

अंगीकार कीजिये यह वचन सुनतेही वृन्दावनविहारी उस स्थान में जहांपर वे सब श्यामसुन्दर को अपना पति बनाने वास्ते हरिचरणों का ध्यान करती थीं चले गये तो क्या देखा कि सब राजकन्या मैले वस्त्र पहिने हुये शोच में बैठी हैं जैसे सांवली सूरत मोहनी मूर्ति पर उनकी दृष्टि पड़ी वैसे प्रसन्न होकर प्राणनाथ के सामने खड़ी होगईं व हाथ जोड़ कर विनय किया हे द्वारकानाथ हमलोगोंकी छुट्टी यहां से विना कृपा तुम्हारे होना बहुत कठिन है हे महाप्रभु जिस तरह आप अन्तर्यामी पर-ब्रह्म परमेश्वर ने हम लोग अबला अनाथों को दुःखी जानकर अपना दर्शन दिया उसी तरह हम दुःखियों को साथ ले चलकर अपनी दासी बनाइये जिसमें तुम्हारी सेवा करने से हमारा जन्म स्वार्थ हो यह दीन वचन सुनतेही श्रीकृष्णजीने उनको बहुत धैर्य देकर कहा तुमलोग अपने अपने घर जाओ तो वहां तुमको पहुँचा देवें उन्होंने विनय किया कि महाराज अब हमलोगों को तुम्हारा कमलरूपी चरण छोड़कर घर जाना नहीं अंगीकार है हमें अपनी सेवामें रखिये जब केशवमूर्ति ने उनकी सच्ची प्रीति देखकर सब राजकन्याओं को अपने साथ द्वारका में ले चलने के वास्ते उस मकान से बाहर निकाला व भगदत्त को भौमासुर के सिंहा-सन पर बैठाकर अपने हाथ से राजतिलक उसके लगाया तब भगदत्त ने अनेक रत्न व रथ व घोड़े व साठ हाथी श्वेत वर्ण चार दांतवाले जो ऐरावत के वंश में थे श्यामसुन्दर को भेंट दिये व उन सब राजकन्याओं को उबटन मलवाने व स्नान कराने उपरांत उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाये व पालकी व सुखपालकी आदिक पर चढ़ाकर मुरलीमनोहर के साथ अपनी सेनासमेत बिदा किया जिस समय वृन्दावनविहारी सो-लहहज़ार एकसौ राजकन्याओं को जड़ाऊ पालकी व सुखपाल व रथ आदिक पर साथ लेकर द्वारका को चले उस समय ऐसी शोभा मोहन-प्यारे की मालूम होती थी जैसे तारों में चन्द्रमा सुन्दर दिखलाई देता है श्यामसुन्दर ने सब राजकन्याओं को सेना समेत द्वारकापुरी में भेज दिया व आप सत्यभामा को गरुड़ पर बैठाले और वही छत्र व कुण्डल

लिये हुये इन्द्रपुरी को चले गये जब इन्द्र ने जो भौमासुरके मारेजाने का समाचार सुनकर आनन्द मचा रहा था हाल आवनें मुरलीमनोहरका सुना तब उसने देवतों समेत आगे से जाकर शिर अपना हरिचरणों पर रखदिया व वसुदेवनन्दन को बड़े आदर भाव से अपने घर लेजाकर इन्द्रासन पर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लिया व विधिपूर्वक पूजा उनकी की ॥

दो० हाथ जोड़ विनती करै धरै चरण पर माथ। हरिदासन के दासहौं तुम नाथन के नाथ॥

इन्द्रके स्तुति करनेसे वैकुण्ठनाथ ने प्रसन्न होकर छत्र व कुण्डल इन्द्र व आदिति का देदिया जब यह हाल सुनकर नारदजी इन्द्रपुरी में श्यामसुन्दर के पास आये तब मुरलीमनोहर ने नारदमुनि से दण्डवत् करके कहा महाराज तुम जाकर इन्द्र से कहो कि सत्यभामा तुमसे कल्पवृक्ष मांगती हैं जैसा वह कहैं वैसा हमको आनकर उत्तर देव यह वचन सुनते ही नारदमुनि ने इन्द्रके पास जाकर कहा सत्यभामा तुम्हारी भौजाई ने कल्पवृक्ष मांगाहै यह वचन सुनकर इन्द्र चुप होरहा व उसने जाकर अपनी स्त्री से यह हाल कहा तब इन्द्राणी क्रोधित होकर अपने पतिसे बोली तुम्हें यह बात याद है या नहीं कि इसी कृष्ण ने व्रज में तुम्हारी पूजा छुड़ाकर व्रजवासियों से गोवर्धन पहाड़ पुजवाया व छल करके सब पकवान व मिठाई आप खाया व सात दिन व सात रात्रि गोवर्धन पर्वत उठा कर तुम्हारा अभिमान तोड़ा था तुम्हें उस बात की लज्जा है या नहीं देखो वह अपनी स्त्री की आज्ञा मानकर यहां कल्पवृक्ष लेने आया है और तुम मेरा कहना कुछ नहीं मानते यह वचन अपनी स्त्री का सुनतेही इन्द्र अज्ञान नारदजी के पास आनकर बोला महाराज तुम श्यामसुन्दर से मेरी ओर से जाकर कह दो कि कल्पवृक्ष नन्दन बाग छोड़कर दूसरी जगह जाने नहीं सक्ता कदाचित् लेजावैंगे तो किसी तरह न रहैगा और यहभी उनसे कहदेना कि व्रजकासा विरोध मुझसे न करैं बरजोरी कल्पवृक्ष ले जावैंगे तो मेरा उनका बड़ा युद्ध होगा जब नारदमुनिने आन कर यह सन्देशा केशवमूर्ति से कहा तब गर्वप्रहारी भगवान्ने उसी समय नन्दन

बागमें जाकर रखवारोंको मारकर भगा दिया व कल्पवृक्ष जिसे पारिजातक भी कहते हैं नन्दन बाग से उखाड़ लिया व गरुड़ की पीठपर रख कर द्वारका को चले आये जब इन्द्र कल्पवृक्ष लेजाने का हाल सुनकर बड़े क्रोधसे ऐरावत हाथीपर चढ़ा व वज्र हाथमें लेकर देवतोंसमेत दैत्यसंहारण से लड़ने चला तब नारदमुनि ने उसके पास जाकर कहा हे इन्द्र तू बड़ा मूर्खहै जो अपनी स्त्री के कहने परभी वैकुण्ठनाथ से लड़नेको तैयार हुआ तुझे कुछ लज्जा नहीं आवती जो ऐसी सामर्थ्य थी तो भौमासुर से छत्र व कुण्डल क्यों नहीं फेर लाया जब वृन्दावनविहारी परब्रह्म परमेश्वर ने तेरे विनय करने से नरकासुर को मारकर छत्र व कुण्डल तेरा लेआदिया तब तू उन्हीं को अपना बल दिखलाने चला वह दिन तुझे भूल गया जब वृन्दावन में श्रीकृष्णजी के पांव पर गिरकर अपना अपराध उनसे क्षमा कराया था यह वचन सुनतेही इन्द्र लज्जित होकर हाथी पर से उतर पड़ा व युद्ध करने नहीं गया श्यामसुन्दरने आनन्दपूर्वक द्वारकापुरी में पहुँच कर कल्पवृक्ष सत्यभामाके आँगन में लगा दिया व राजा उग्रसेनसे आज्ञा लेकर सोलह हजार एक सौ राजकन्याओं से विधिपूर्वक अपना विवाह किया व उन सबको पृथक् पृथक् महलमें जो बाग में विश्वकर्मा ने तैयार किये थे रक्खा और आप उतने रूप धरकर उनके साथ बिलग बिलग संसारीसुख उठाने लगे ॥

दो० तिनसों हरिजू प्रीति करि अमृत बैन सुनाय। प्रेम रीति समुझाइकै दीन्हीं लाज छुड़ाय ॥

वे लोग आठों पहर प्राणनाथ को अपने पास देखकर एक दूसरी से डाह नहीं करती थीं व सब स्त्रियों के घरमें सैकड़ों दासी थीं तिस पर भी उन लोगोंका यह प्रण था कि प्रातसमय श्यामसुन्दरका चरणोदक लेकर अपने हाथ सब सेवा व टहल उनकी करती थीं जिस समय मोहनप्यारे फुलेल लगाने व स्नान व पूजा करने उपरांत छत्तीस व्यंजन सोनहुली थालियों में भोजन करते थे उस समय सब रानियां पंखा हिलाती थीं व जड़ाऊ गडुयेसे हाथ धुलाकर पान व इलायची देती थीं और जब शय्या पर शयन करते थे तब उनके पांव दाबती थीं पर वैकुण्ठनाथ जो कुछ

इच्छा न रखकर सब जगत् को अपने अधीन रखते हैं किसी स्त्री के वश नहीं होते थे व उन स्त्रियों की सुन्दरताईका हाल कोई वर्णन नहीं करने सक्ता वे ऐसी सुन्दरी थीं जिनके सामने सूर्य व चन्द्रमा का तेज धूमिल होजाता था एक दिन महादेवजी ने द्वारकापुरी में जाकर उन स्त्रियों को देखा तो कामदेव के जलादेनेपर भी उनका रूप देखकर मोहित होगये ॥

दो० ऐसी सुन्दरि नारिसों माखन प्रभु यदुनाथ। कामकलोल करैं सदा खान पान यकसाथ॥

साठवां अध्याय।

श्यामसुन्दरको रुक्मिणीजीसे ठट्ठा करना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित एकदिन श्रीकृष्णजी रुक्मिणीके मन्दिर में थे वह स्थान सोनहुला जड़ाऊ बहुत उत्तम बना होकर उसमें मखमली बिछावन बिछे थे व सब जगह चँदवे बँधे होकर मोतियोंकी झालरैं द्वारों पर लटकाई थीं व पारिजातक फूल के गजरे अनेक जगह लटकाये होकर धूप व चन्दनादिक जलने से सुगन्ध उड़ती थी॥

कल्पवृक्षके फूलकी कहिये कहा सुवास। जासों वन उपवन सबी भये सुवास निवास॥

मंद सुगंध शीतल हवा बहने से सबको सुख मिलता था व नहर व झरने बहकर मोर नाचते थे व ऐसे लाल व रत्न वहां जड़े थे जिसके चमक से आठों पहर उजियाला रहकर दीपक जलाने का प्रयोजन नहीं पड़ता था व उस स्थानमें एक शय्या रत्नजटित सब सामग्री समेत बिछी थी व उसके चारों ओर मेवा मिठाई व चौघड़ा आदिक रक्खा होकर उस शय्यापर श्यामसुन्दर लेटे थे उनके भूषण व वस्त्र व रूपकी छवि देखकर चित्त सबका मोहि जाता था॥

दो० शोभा त्रिभुवननाथकी कासों बरणी जाय। कामरूपकी छवि महा वह भी रहै लुभाय॥

चौ० तहां रुक्मिणी सुन्दरि बाला। सखी शृंगार सजे त्यहि काला॥
अंग अंग भूषण छवि छाजै। महा मधुर स्वर नूपुर बाजै॥
सो ध्वनि सुनि मोहित पुरवासी। मानो लगी कामकी फांसी॥

दो० या विधिसों श्रीरुक्मिणी माखन प्रभुके पास। पवन डुलावैं प्रेमसों मनमें बहुत हुलास॥

उस समय परमेश्वरकी माया से रुक्मिणी को अभिमान हुआ कि वसुदेवनंदन की सब स्त्रियों से मैं अतिसुंदरी हूं इसलिये मोहनप्यारे मुझे

बहुत चाहते हैं व वैकुंठनाथ अन्तर्यामी ने यह हाल जानकर विचारा कि रुक्मिणी को क्रोध दिलाकर प्रेमकी परीक्षा लूं कि उसको अपने रूप का अभिमान है या मेरी प्रीति अधिक है ऐसा विचारकर बोले हे रुक्मिणी तुझे ऐसी सुन्दरी और राजा भीष्मककी कन्या होकर मेरे साथ विवाह करना उचित नहीं था वैर व विवाह व प्रीति बराबरवाले से करना चाहिये मैं किसी देश का तिलकधारी राजा न होकर जरासन्ध के भय से भागा हुआ यहां टापू में बसा हूँ व जब से मैंने जन्म लिया तब से कोई शुभ कर्म नहीं किया जो कोई मेरा भजन व स्मरण करता है उसे विरक्त व निर्धन कर देता हूं इस लिये मेरे भक्त को संसारीसुख नहीं मिलता व मैं किसी के साथ प्रीति न रख कर सबसे अपना मन मोटा रखता हूं बालापन में याचकों को कुछ द्रव्यादिक दिया करता था वही यश सुनकर तैंने मेरे साथ विवाह करके धोखा उठाया व शिशुपाल चंदेली के राजा को जो तिलकधारी व बलवान् होकर जरासन्धादिक बड़े बड़े राजों को अपने साथ बरात में लाया था अंगीकार नहीं किया ॥

दो० रुक्मदई शिशुपाल को बांध्यो कंकण हाथ । आयो साजि बरात वह सब राजन ले साथ ॥

अय रुक्मिणी तुझसे बड़ी चूक हुई जो तैंने राजा शिशुपाल को जिसके साथ तेरी मँगनी रुक्माग्रजने की थी छोड़कर मुझ गो चरानेवाले से विवाह अपना किया और उत्तम मध्यम का विचार न करके अपने कुल में कलंक लगाया ॥

चौ० कहिये कहा कुबुद्धि तिहारी । भली भांति मनमें न विचारी ॥
रुक्मभ्रात की लाज गँवाई । तातमात को लीक लगाई ॥
छांड़ि नृपति मोसों हित कीनो । निर्गुण महा जाति को हीनो ॥
याते सच बात हम मानी । उलटी बुद्धि त्रियनकी जानी ॥
जो तुम कहो लिखो विधिजोई । कर्म प्रमाण होत है सोई ॥

दो० ऐसी झूठी बात को मानै मूरख होय । अपने यश अरु चैन को यत्न करत सब कोय ॥

सिवाय इसके जिस बातमें लड़कियों को लज्जा है वह तैंने किया कि ब्राह्मण को पत्री देकर अपने विवाह का संदेशा मेरे पास भेजा सचहै स्त्री निर्बुद्धि होती हैं ॥

चौ० जो तुम कहौ हमैं क्यों लाये। कौन काज कुण्डिनपुर आये॥
सांच बात समझो मनमाहीं। तुम सों मोह हमैं कछु नाहीं॥
बहु नरेश आये वहि ठाहीं। बड़ो गर्व जिनके मनमाहीं॥
त्यहि कारण कुण्डिनपुर आये। उन्हैं भगाय तुम्हैं हरिलाये॥
नातो मैं विरक्त मनमाहीं। कबहूं मोह होत मम नाहीं॥
सदा उदास रहौं चितमाहीं। नारिन की कछु इच्छा नाहीं॥

हे रुक्मिणी तेरे बुला भेजने से वहां जाकर तेरा प्रण पूरा किया सो परमेश्वर ने इतने राजों के सामने मेरी लज्जा रक्खी व बलरामजी ने वहां जैसा पराक्रम किया वह तैंने अपनी आंखों से देखा मैं तुझे अपनी इच्छा से नहीं लाया इसलिये तुझे आज्ञा देता हूं अब भी मन तेरा चाहे तो मुझे छोड़कर किसी तिलकधारी राजा के पास जो तेरे समान कुलीन हो जाकर रह मैं कुछ बुरा नहीं मानूंगा॥

चौ० नारिन में सोइ नारि सुभागी। जाको पुरुष होय बड़भागी॥
या कारण ढूंढ़ो तुम सोई। जामें लोक महायश होई॥

यह कठोर वचन सुनतेही रुक्मिणी रोने लगी व मुख उसका पीला होगया व श्यामसुन्दरकी बातों का कुछ उत्तर न देकर अति शोचसे शिर अपना नीचे करलिया व नख से पृथ्वी खोदने लगी व चित्त उसका ठिकाने न रहकर शरीर कांपने लगा॥

चौ० चिन्ता बहुत बढ़ी उरमाहीं। काहू विधि समझै मन नाहीं॥
दो० ऐसी विधि अकुलाय के पड़ी धरणि मुरझाय। तनुकी सुधि भूली उसे मरण निकट भइ आय॥

जब वृन्दावनविहारी ने देखा कि अति शोच से प्राणप्यारी मरने चाहती है तब उसे उठाकर अपनी सेज पर बैठा लिया व चतुर्भुजी रूप धरकर एक हाथ से जो उसके बाल बिखड़ गये थे सवाँरने लगे व दूसरे हाथ से उसके आंसू पोंछकर तीसरे हाथ से पंखा हिलाना आरम्भ किया व चौथा हाथ अपना कमल के समान उसके हृदय पर रखकर उसे गले में लगालिया जब उनका प्रेम देखकर रुक्मिणी का चित्त कुछ ठिकाने हुआ तब केशवमूर्ति बोले हे प्राणप्यारी गृहस्थों के पास कुछ पृथ्वी आदिक रहनी अवश्य चाहिये जिसमें वह आनन्दपूर्वक अपना कुटुम्ब पालैं सो

मेरे पास कुछ नहीं है इसलिये तुझसे हँसी की थी सो तैंने सत्य मानकर इतना दुःख उठाया मैं तुझसे अधिक किसी का प्यार नहीं करता तू यह बात सच मानकर उदासी छोड़दे तेरा अंग अति कोमल है इसलिये घबड़ागई व तैंने जाना ये मुझे छोड़देंगे सो तू धैर्य धरकर हमसे हँस बोल॥

दो० अमृतबैन सुनायकै माखन प्रभु यदुराय। लीन्हीं प्रिया मनायकै दीन्हीं रिस बिसराय॥

जब श्यामसुन्दर की प्रेमपूर्वक बातें सुनने से रुक्मिणी का शोच छूटगया तब वह अपना को श्यामसुन्दर की गोद में देखकर लज्जा से उठ खड़ी हुई व हाथ जोड़कर विनय की हे वैकुण्ठनाथ आपने क्या विचार कर ऐसा कठोर वचन मुझसे कहा मैं अपना को मनसा वाचा कर्मणा से तुम्हारी दासी जानती हूँ व आप मुझे तिलकधारी राजा के पास रहने वास्ते कहते हैं सो तुम से प्रतापी तीनों लोक में दूसरा कौन है जिसके पास जाकर रहूँ तुम्हारे समान किसी दूसरे को न देख कर तुम्हें त्रिलोकीनाथ समझती हूँ ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता तुम्हारे चरणों का ध्यान सदा रखकर उन चरणों की रज अपने मस्तक पर चढ़ाते हैं व तुम्हारी दया से उन्हें यह सामर्थ्य है जिसे चाहें उसको वरदान देकर तिलकधारी राजा बना देवैं॥

दो० तुम चरणन की रेणुका वे चाहत दिन रैन। जिनके दर्शन देखके सुख पावत हैं नैन॥

हे महाप्रभु तुम्हारा ध्यान व स्मरण करने से राजगद्दी आदिक अनेक तरह का सुख प्राप्त होता है व बड़े बड़े राजा संसारी सुख व राज्य छोड़कर तुम्हारा भजन करके भवसागर पार उतर जाते हैं व तुम रजोगुण व तमोगुण से कुछ प्रयोजन न रखकर आठों पहर क्षीरसागर में शयन करते हो जब दैत्यों के अधर्म करने से पृथ्वी दुःखी होकर तुम्हारे शरण जाती है या गो ब्राह्मण व हरिभक्त लोग दुःख पाते हैं तब आप सगुण अवतार से पृथ्वी का भार उतार कर गो ब्राह्मण को सुख देते हैं मुझे ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो आपका गुण वर्णन कर सकूं आपने कोई दोष मुझ में देखकर ऐसा वचन कहा है इसलिये चाहती हूं कि आप दीनदयालु जगत् के पर्दा ढांकनेवाले मेरा अवगुण छिपाकर क्षमा कीजिये बड़े लोग सदा से

छोटों पर दया करते आये हैं हे दीनानाथ मैंने अपनी आंखों से देखा कि जरासन्ध व शिशुपाल आदिक बड़े बड़े राजों को जो अपने बल का घमण्ड रखते थे आपने एक क्षण में भगादिया इससे मैं जानती हूं तीनों लोक में कोई दूसरा तुमसे बलिष्ठ नहीं है व जो तुम अपने भक्तों को कंगाल रखते हो उसका यह कारण है कि संसारी मनुष्य धन व राज्य के मद में अन्धे होकर धर्म कर्म अपना व ध्यान स्मरण तुम्हारा छोड़देते हैं इसलिये तुम अपनी कृपा से उनको कंगाल बनाकर हरिभजन कराते हो जिसमें भवसागर पार उतर जावैं व संसारी सुख सदा स्थिर नहीं रहता व हरिभजनके प्रतापसे महाप्रलय तक सुख मिलताहै जैसा हरिभजन गरीबी में बन पड़ता है वैसा धनपात्र होने में नहीं होसक्ता इसी वास्ते संसारीसुख व व्यवहार झूठ समझकर अम्बरीष व प्रह्लाद व ऋषभदेव व प्रियव्रत व जड़भरत आदिक ज्ञानी राजों ने सातों द्वीपोंका राज्य व परिवार छोड़दिया व विरक्त होकर तुम्हारे चरणों का ध्यान लगाया सो आज तक उनका यश छारहा है और जो तुमने कहा कि हम कुछ चाहना न रखकर तेरी इच्छा से तुझको यहां लेआये हैं सो सच है जहां लक्ष्मीजी तुम्हारी दासी होकर दिनरात सेवामें रहती हैं वहां मेरी कौन गिनती है जो आपके योग्य होऊं आप दीनदयालु ने मुझे दीन जानकर मेरी इच्छा पूर्ण की हे जगत्-पालक शिशुपाल चँदेलीका राजा भी तुम्हारा उत्पन्न किया है तुम्हारी सेवा छोड़कर उसे अंगीकार करती तो आवागमनमें फँसी रहती जिस तरह राजा अम्बरीष आदिक हरिभजन करके मुक्त हुये हैं उसी तरह मैं भी तुम्हारा चरण धोकर भवसागरपार उतर जाऊंगी व तुम्हारी दया से मेरा नामभी सदा स्थिर रहेगा ॥

दो० जैसी विधि शोभा रची नगर द्वारका माहिं । देश चँदेली को कहै स्वर्ग लोकमें नाहिं ॥

हे वैकुण्ठनाथ जो स्त्रियां तुम्हारे भजन व कथा से विमुख होवैं उन्हें शिशुपाल व दन्तवक्रादिक पति मिलैं जिस तरह अम्बा नाम कन्या काशीनरेशकी राजा शाल्व को चाहती थी इसी कारण विचित्रवीर्यने उसे छोड़दिया उसीतरह आपने भी विचार किया कि यह राजा शिशु

पाल को चाहती है सो मनसा वाचा कर्मणासे तुम्हारी दासी होकर उसे अपना शत्रु समझती हूं जो स्त्री कि निष्कपट अपने पति की सेवा करती है उसकी मनोकामना संसार में मिलकर अन्तसमय मुक्त होती है हे प्राणनाथ जैसे राजा इन्द्रदमनकी कन्याने तप करके शिखण्डीका जन्म लेकर भीष्मपितामह से बदला लिया था वैसे मैं नहीं करसक्ती किसवास्ते कि मैं तुम्हारी अनेक जन्मकी दासी हौं व आपने यह कहा कि तैंने याचकों के मुखसे सुनकर धोखा खाया सो तुम्हारी स्तुति वेद व शास्त्र में लिखी है और ब्रह्मादिक देवता व नारदमुनि आठों पहर तुम्हारा गुण गाया करते हैं वह बड़ाई सुनकर मैंने ब्राह्मणको तुम्हारे पास भेजा था सो आप दयालु होकर इस दासी को लेआये अब मैं यही चाहती हूं कि जन्मजन्मांतर तुम्हारी दासी होकर मेरा प्रेम व अनुराग आपके चरणोंमें बना रहै ॥

दो० पूरणपुरुष पुराणहौ अलख निरंजन नाम। तुम्हरे चरणन को सदा हितसों करौं प्रणाम॥
तुमतो जानतहौ पिया प्रेमप्रीतिकी रीति। अन्तर्यामी होयके क्यों ठानत अनरीति॥
दीनदयालु कृपालु हौ बड़ै तुम्हारो लाल। निठुरवचन कैसे कह्यो माखनप्रभु गोपाल॥
याही विधि हांसी करौ निज नारिनके साथ। जैसी तुम हमसे करी माखन प्रभु ब्रजनाथ॥

यह सुनकर श्रीकृष्णजी बोले हे प्राणप्यारी तेरा प्रेम व विश्वास बड़ा है मैंने ऐसा कठोर वचन कहकर केवल तेरी प्रीति की परीक्षा ली थी सो तेरा प्रेम सच्चा पाया जिस तरह मेरे निष्काम भक्त होते हैं उसी तरह तुझे भी देखा मेरा कठोर वचन सुनने से रंग तेरा पीला होगया पर अन्तःकरणसे प्रेम नहीं घटा सो हे प्राणप्यारी तू अपनी बड़ाई इस तरह समझ कि मनुष्य मेरी स्तुति करके अपना जन्म स्वार्थ करते हैं और मैं तेरा गुण इसतरह वर्णन करताहूं जिससमय मैंने तेरे भाई का शिर मुड़वाकर उसके हाथ बँधवाये थे उस समय भी तैंने सिवाय अधीनताई के मुझसे कुछ नहीं कहा पतिव्रता स्त्रियों का यही धर्म है कि अपने पतिकी आज्ञानुसार चलें और मैं तेरी सुन्दरताई सुनकर कुण्डिनपुर नहीं गया था केवल तेरा सच्चा प्रेम देखकर तुझे लेआया अब तू कुछ चिन्ता न करके सदा प्रसन्न रहाकर जो कोई यह अध्याय सच्चे मनसे कहै व सुनैगा इसी

तरह उसकी भी स्त्री व पुरुष में प्रीति होगी हे परीक्षित यह वचन श्यामसुन्दरका सुनकर रुक्मिणी हर्ष से उनकी सेवा करने लगी ॥

दो० जैसी यह लीला करी माखन प्रभु यदुनाथ। याही विधि क्रीड़ा करैं सब नारिनके साथ ॥

इकसठवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीके वंशकी कथा ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित इसी तरह श्रीकृष्णजी द्वारकापुरी में सोलहहजार एकसौआठ स्त्रीसे भोग व विलास करके धर्म गृहस्थाश्रमका शास्त्रानुसार रखते थे व सब स्त्रियां पतिव्रताधर्मसे आठों पहर सेवा उनकी करती थीं व हरिइच्छासे सब स्त्रियों के दश दश पुत्र श्यामरंग कमलनयन अति बलवान् व एक एक कन्या महासुन्दरी उत्पन्न होकर वे सब अपने बालचरित्र का सुख माता व पिता को दिखलाते थे व उनके माता व पिता उत्तमोत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर प्रसन्न होते थे सब एकलाख इकीसहजार अस्सी पुत्र व सोलहहजार एकसौ आठ कन्या वसुदेवनन्दन के उत्पन्न होकर उनके आगे इतनी सन्तान बढ़ी कि उनकी गिन्ती नहीं हो सकी ॥

दो० शोभा आठों रानियन कासों वरणीजाय। शिव विरञ्चि सनकादि मुनि देखत रहैं लुभाय ॥

हे परीक्षित सब स्त्रियां आठों पहर केशवमूर्तिको अपने पास देखकर अति प्रसन्न होती थीं और उनकी जो सन्तानें हुई थीं उनका नाम कहते हैं सुनो प्रद्युम्न आदिक रुक्मिणी व भानआदिक सत्यभामा व साम्बआदिक जाम्बवती व सूराति आदिक कालिंदी व श्रीमान् आदिक सत्या व वरघोष आदिक लक्ष्मणा व बरक आदिक मित्रविन्दा व संग्रामजित् आदिक भद्राके बेटोंका नाम था व ताम्रकेतु व दत्तमान दो भाई बलरामजी के रोहिणी से हुये थे प्रद्युम्न के अनिरुद्ध होकर अनिरुद्ध से बलराम नाम पुत्र उत्पन्न हुआ था सो रुक्माग्रजने मुरलीमनोहरके यहां प्रद्युम्न आदिक पुत्र होनेका हाल सुनकर अपनी स्त्रीसे कहा रुक्मवती मेरी कन्या जो कृतवर्माके पुत्रसे मांगी गई है उसे वहां न विवाहकर स्वयंवर उसका रचूंगा तू चिट्ठी भेजकर रुक्मिणी मेरी बहिनको उसके बेटोंसमेत बुलाभेज यह

वचन सुनते ही उसने पत्री लिखकर ब्राह्मणके हाथ रुक्मिणीके पास भेजदी सो रुक्मिणीजी यह समाचार पाते ही वसुदेवनन्दनसे आज्ञा लेकर प्रद्युम्न समेत भोजकट नगरमें गई सो रुक्म अपनी बहिनको देखकर अति प्रसन्न हुआ पर उसने पिछली बात याद करके लज्जासे शिर अपना नीचा करलिया व उसकी स्त्रीने पैरोंपर शिर रखकर रुक्मिणीसे कहा जब से मेरा ननदोई तुम्हें हरलेगया तबसे आज तुम्हारा दर्शन पाया सो तुम हमारे ऊपर कृपा करके प्रद्युम्नका विवाह मेरी कन्यासे करो यह सुनकर रुक्मिणी बोली भैया का हाल तुमको मालूम है फिर क्या झगड़ा करावोगी ऐसी बात कहते व सुनते मुझे डर मालूम होता है जब रुक्मने यह वृत्तान्त अपनी स्त्रीसे सुना तब वह रुक्मिणीसे बोला हे बहिन अब तुम कुछ मत डरो वेदकी आज्ञानुसार भानजेको कन्यादान देते हैं इस लिये रुक्मवतीका विवाह प्रद्युम्नसे करके श्रीकृष्णजीके साथ नई नातेदारी करूंगा जिसमें पिछला वैर मिटजावै जब यह बात कहकर रुक्माग्रज अपनी सभामें जहां पर अनेक राजा उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिने स्वयंवर करने आये थे जा बैठा तब प्रद्युम्न भी अपनी माता से आज्ञा लेकर वहां जाके खड़ा हुआ जब रुक्मवती जयमाल हाथ में लिये सब राजों को देखती हुई प्रद्युम्न के पास पहुँची तब उसने सांवली सूरतपर मोहित होकर जयमाल उसके गले में डालदिया यह हाल देखतेही सब राजों ने आपस में यह सम्मत किया कि जब प्रद्युम्न राजकुमारी को लेकर यहां से चले तब राह में छीनलेवैं ऐसी इच्छा से सब राजा द्वारका के रास्ते पर जा खड़े हुये व रुक्म ने विधिपूर्वक रुक्मवती का प्रद्युम्न से ब्याह कर बहुतसा द्रव्य व रत्नादिक दहेज में दिया जब रुक्मिणीजी अपने भाई व भौजाइयों से बिदा होकर बेटा व पतोहू समेत द्वारका को चलीं व राह में उन सब राजों ने आनकर घेरलिया तब प्रद्युम्न ने बाण मारकर क्षणभर में सब राजों को भगादिया जब रुक्मिणीजी दुलह व दुलहिन को साथ लिये हुई आनन्दपूर्वक द्वारका में पहुँचीं तब वसुदेव व देवकी आदिक रीति व रस्म करके दुलह व दुलहिन को राजमन्दिर में लिवा लेगये व घर घर मंगलाचार

होनेलगा जब कई वर्ष उपरान्त प्रद्युम्न के रुक्मवती के पेट से एक लड़का. महासुन्दर व तेजस्वी उत्पन्न हुआ तब श्यामसुन्दर ने मंगलाचार मना· कर मुखमांगा दान व दक्षिणा ब्राह्मण याचकों को दिया व ज्योतिषियों को बुलाकर जन्मलग्न उसका पूंछा तब ब्राह्मणों ने उस बालक का नाम अनिरुद्ध रखकर कहा महाराज यह पुत्र अतिसुन्दर व बलवान् व चौदहों विद्यानिधान होगा यह बात सुनकर वसुदेवनन्दन ने ज्योति- षियों को सन्मानपूर्वक विदा किया और वह बालक प्रतिदिन चन्द्र- कलासा बढ़ने लगा जब रुक्म ने यह हाल सुना कि मेरे नाती उत्पन्न हुआ तब उसने बड़े हर्ष से भूषण व वस्त्र भेजकर ऐसी चिट्ठी श्रीकृष्णजी को लिखी कि मैं अपनी पोती का विवाह तुम्हारे पौत्र से करूंगा जब रुक्मने यह पत्री भेजकर थोड़े दिन उपरान्त एक ब्राह्मण के हाथ सामग्री तिलक की द्वारका में भेजदी तब श्यामसुन्दर ने बड़े हर्षसे वह तिलक अनिरुद्ध को चढ़ाया व उस ब्राह्मण को द्रव्यादिक देकर बिदा किया व राजा उग्रसेन से आज्ञा लेकर श्याम व बलराम बड़ी धूमधाम से अनिरुद्ध को ब्याहने गये जब बरात भोजकट नगरके निकट पहुँची तब रुक्माग्रज नेवतहारी राजों समेत आगे से लेने गये व सब बरातियों को बड़े आदर भाव से नगर में लेजाकर जनवासा दिया व यथायोग्य सबका सन्मान करके दुलह को मड़ये में लेगया जब विधिपूर्वक पोती का कन्यादान देकर रुक्म ने बहुतसा द्रव्यादिक दहेज में श्यामसुन्दर को दिया तब राजा भीष्मक ने जनवासे में जाकर श्रीकृष्णजी से कहा महाराज विवाह होचुका अब यहां अधिक रहना उचित नहीं है किस वास्ते रुक्मने जिन राजों को अपने यहां नेवते में बुलाया है वह आपसे शत्रुता रखते हैं ऐसा न हो जो कोई उत्पात करैं यह कहकर राजा भीष्मक अपने घर चले गये व केशवमूर्ति ने रुक्मिणी को सब वृत्तान्त सुनाकर चलने वास्ते कहा तब वह रुक्म से बोली हे भाई तुम्हारे नेवतेवाले राजा मेरे प्राणनाथ से शत्रुता रखते हैं इसलिये हमको बिदा करदेव नहीं तो शुभकार्य में विघ्न हुआ चाहता है यह सुनकर रुक्म बोला हे बहिन तुम किसी बातकी चिन्ता

मत करो मैं पहिले नेवतेवाले राजोंको बिदा कर आऊं पीछे जो तुम कहोगी सो करूंगा जब ऐसा कहकर रुक्म सब राजों को बिदा करने वास्ते उनके डेरोंपर गया तब कलिंग देशके नृपति और कई राजोंने रुक्मसे कहा देखो तुमने श्याम व बलराम को इतना द्रव्य दहेज में दिया पर उन्होंने अभिमान की राह कुछ नहीं समझा एक तो इस बात का माख हमलोगों को है दूसरे उस दिन की कसक हमारे मनसे नहीं भूलती जो बलरामजी ने रुक्मिणीहरण में तुम्हारी गति की थी सो हमलोग यादववंशियों को युद्ध में जीतने नहीं सके तुम बलदाऊजी को हमारे स्थान पर बुलादेव तो चौपड़ में सब धन उनका जीत लेवें व श्यामसुन्दर से बिगाड़ना कुछ प्रयोजन नहीं है जब यह वचन सुनकर रुक्म को पिछली बात याद करके क्रोध उत्पन्न हुआ तब वहां से उठकर कुछ सोच विचार करता हुआ बलभद्रजी के पास जाकर बोला महाराज आपको सब राजों ने दण्डवत् करके चौपड़ खेलने वास्ते बुलाया है यह बात सुनकर जब बलदाऊजी रुक्मके साथ राजों की सभा में आये तब उन्होंने सन्मानपूर्वक बैठाकर उनसे कहा हमलोग आपसे चौपड़ खेलना चाहते हैं इतना कहकर उन्होंने चौपड़ बिछा दिया व रुक्म व बलराम खेलने लगे जब पहिले रुक्म ने दश बाजी बलभद्र से जीति लिया और वह बहुत द्रव्य हार गये तब रुक्मने अभिमानपूर्वक बलराम से कहा सब धन हार गये अब काहे से खेलोगे और कलिंग देशका राजा भी यह बात कहकर हँसने लगा तब बलरामजी लज्जित होकर दश करोड़ रुपये की बाजी लगाकर बोले॥

दो० कह्यो हमारे मन विषे जो नहिं कपटकुभाव। तौ अबकी हम जीति हैं निश्चयकरि यह दांव॥

जब वह बाजी रेवतीरमण जीतकर रुपया उठाने लगे तब सब राजा अधर्म से बोले रुक्म ने बाजी जीती यह बात सुनकर बलरामजी ने वह रुपया रुक्म को देडाला दूसरी बाजी अर्ब रुपये की लगाकर बलदाऊजीने पांसा फेंका जब वह बाजी भी संकर्षण जीते तब फिर सब राजा झूठ बोल कर कहने लगे रुक्म ने जीता है कलिंग देश का राजा हँसने लगा जब यह अधर्म सबका देखकर बलरामजी को क्रोध हुआ तब रुक्म

अभिमान से चिल्लाकर बोला सुनो बलभद्रजी तुम सच कहने से क्यों क्रोध करते हो तुमने जन्म अपना ग्वालों के साथ वनमें रहकर बिताया राजसी खेल चौपड़ खेलने का तुम क्या जानो जुआ खेलना व शत्रुओं से लड़ना राजाओं का धर्म है ॥

दो० बसे नन्दघर जायके रहे चरावत गाय। हम राजनकी सभाको जानत नहीं स्वभाय ॥

यह वचन सुनकर रेवतीरमण को ऐसा क्रोध हुआ जैसे पूर्णिमा को समुद्र की लहर बढ़ती है पर उन्होंने रुक्मिणी के संकोच से क्रोध अपना क्षमा किया व सात अर्ब रुपये की फिर बाजी लगाकर खेले जब वह बाजी भी बलदाऊजी ने जीती व सब राजा झूठ बोलकर रुक्मका जीतना बतलाने लगे तब यह आकाशवाणी हुई कि बाजी संकर्षणजी ने जीती है तुम सब क्यों झूठ बोलते हो जब आकाशवाणी होने पर भी सब लोग अधर्म से बलभद्रजी को झूठा बनाने लगे तब बलदाऊजी महाक्रोधित होकर रुक्मसे बोले तैंने नातेदारी करने परभी हमसे शत्रुताई नहीं छोड़ी अब चाहे भौजाई बुरा मानैं या भला तुमको विना मारे नहीं छोडूंगा यह बात कहकर रेवतीरमणने सब राजोंके सामने अपने हल व मूशल से रुक्मको मारडाला जब कलिंगदेश का राजा यह हाल देखकर वहांसे भाग चला तब उसको भी पछाड़कर घुस्सोंसे दांत तोड़डाले व दूसरे राजा जो उस सभामें झूठ बोलकर बलरामजीको हँसते थे उनमें किसीका हाथ व किसीका पैर व किसीकी नाक मारे घुस्सोंके तोड़दिया यह दशा देखतेही और सब राजा अपने प्राणके डरसे भाग गये व जब बलदाऊजी ने श्यामसुन्दरके पास जाकर सब वृत्तान्त वहां का सुनाया तब केशवमूर्ति अन्तर्यामीने रुक्मका अधर्म समझकर अपने भाईको कुछ नहीं कहा और वहांसे दुलह व दुलहिन को रुक्मिणी व बरातियों समेत अपने साथ लेकर द्वारकाको चले ॥

दो० या विधिपौत्र विवाहिकै मोहन प्रभु यदुनाथ। आनँदसों पहुँचे सदन सकल सेन लै साथ ॥

जब उनके आनेका समाचार द्वारकावासियोंने सुना तब सब छोटे बड़े गाते बजाते आगे से आनकर दुलह व दुलहिनको राजमन्दिरमें लेगये

व घर घर मंगलाचार होने लगा व श्याम व बलरामने राजा उग्रसेन से हाथ जोड़कर कहा महाराज तुम्हारे पुण्य प्रताप से अनिरुद्ध को ब्याह कर लेआये व रुक्माग्रजको जो बड़ा अधर्मी था मारडाला यह बात सुन कर राजा उग्रसेन अति प्रसन्न हुये ॥

बासठवां अध्याय ।

अनिरुद्ध व ऊषाकी कथा ॥

राजा परीक्षित ने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजीसे विनय किया हे महाराज दयालु होकर अब अनिरुद्धहरणकी कथा सुनाइये ॥

दो० कहौ प्रकट समझायकै सकल ऋषिनके राय । श्रीमाखन प्रभुकी कथा श्रवणन सदा सुहाय ॥

यह सुनकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित द्वारकानाथकी दयासे ऊषा व अनिरुद्धकी कथा कहता हूं सुनो ब्रह्माजी के वंशमें कश्यपजी होकर उन का पुत्र हिरण्यकशिपु बड़ा बलवान् हुआ जिसके यहां प्रह्लाद भक्त ने जन्म लिया व प्रह्लाद का बेटा वैरोचन होकर उसके यहां राजा बलि ऐसा धर्मात्मा हुआ जिसका यश आजतक संसार में छाय रहाहै व राजा बलि के यहां सौ पुत्र होकर बाणासुर बड़ा बेटा उसका महाबली व सत्यवादी व धर्मात्मा था सो वह शोणितपुर में ब्रह्मचर्यसे राज्य करके नित्य कैलास पर्वत पर जाकर पूजा व तप महादेवजीका प्रेमपूर्वक करता था एक दिन बाणासुर मृदंग लेकर बड़े प्रेमसे महादेवजीके सामने नाचने व गाने लगा तब भोलानाथ ने प्रसन्न होकर पार्वती समेत उसे दर्शन देकर कहा हे बेटा तेरा प्रेम देखकर मैं अतिप्रसन्न हुआ जो इच्छा हो सो वरदान मांग बाणासुर ने उनको साष्टांग दण्डवत् करके विनय किया हे महाप्रभु आपने दयालु होकर दर्शन दिया तो मुझे पहिले अमर कर दीजिये फिर चौदहों लोकका राज्य देकर ऐसा पराक्रम दीजिये जिसमें कोई देवता आदि कभी मुझे जीतने न सकैं ॥

दो० बहुत भांति बिनती करूं हौं दासनको दास । तुम ठाकुर तिहुँलोकके पुरवत सबकी आस ॥

यह वचन सुनतेही शिवजी ने हजार भुजा बाणासुर को देकर कहा हमने तुझे इच्छापूर्वक वरदान दिया अब तू अचल राज्य कर तुझे कोई

नहीं जीत सकैगा जब महादेवका वर पाने से बाणासुरके हजार भुजा हो गई तब वह उनसे विदा होकर हँसता हुआ राजमन्दिरपर आया व अपनी भुजाके बलसे संसारी राजों व सब देवतोंको जीतकर तीनोंलोकका राज्य करने लगा व नित्य कैलास पर्वत पर जाकर विधिपूर्वक पूजन महादेव जी का करता था व सब देवता उसके आधीन रहते थे व शिवजी ने बाणासुरसे यह कहा था कि हम तेरे नगरकी रक्षा करेंगे इसलिये महादेव के गण शोणितपुरमें रक्षा करने वास्ते रहते थे जब बाणासुरसे कोई शत्रु लड़नेवाला नहीं ठहरा व हजार भुजा उसकी विना लड़े खुजलाने लगीं तब वह बड़े बड़े पर्वत उठाकर दूसरे पहाड़ों पर पटकके चूर करने लगा तिसपरभी उसका बोध नहीं हुआ तब उसने विचारा कि विना युद्ध किये सब भुजा मुझको बोझ मालूम देती हैं इसलिये महादेवजीके पास चल कर किसी शत्रु का पता पूंछूं ऐसा विचारकर कैलास पर्वत पर चला गया व शिवजी से विनय किया हे महाप्रभु तीनोंलोक में कोई ऐसा बलवान् दिखलाई नहीं देता जो मेरे साथ लड़ने सकै जब मैं दिग्पाल हाथियों से लड़ने गया और वह भी हमसे हार मान गये तब मैंने बड़े बड़े पहाड़ों को मुक्का मारकर चूर कर डाला सो विना युद्ध किये सब भुजा मुझे बोझ मालूम होती हैं कोई लड़नेवाला बतलाइये जिससे युद्ध करूं ॥

चौ० यद्यपि यह जानों मनमाहीं। तुमसों और बली कोउ नाहीं ॥
त्यहि कारण त्रिभुवनके नाथा। तुमहीं युद्ध करौ मम साथा ॥

यह अहंकार सुनकर महादेवजी ने विचारा कि मैंने तो इसको भक्त जानकर ऐसा वरदान दिया था सो यह अज्ञान मुझीसे लड़ने आया इस लिये इसका अभिमान तोड़ना उचित है ऐसा विचारकर शिवजी बोले हे मूर्ख अभिमानी तू मत घबड़ा अभी तक तो तीनोंलोकमें ऐसा कोई बल- वान् नहीं है जो तेरे साथ लड़ने सकै पर थोड़े दिनों में श्रीकृष्णजी अवतार लेकर तुझसे लड़ैंगे यह वचन सुनतेही बाणासुर ने प्रसन्न होकर महादेवजी से पूंछा महाराज मुझे उनके अवतार लेने का हाल किसतरह मालूम होगा तब भोलानाथ ने एक ध्वजा बाणासुर को देकर कहा तू

इस ध्वजा को लेजाकर अपने राजमन्दिर पर खड़ी कर दे जिस दिन यह ध्वजा आपसे टूटकर गिर पड़े उस दिन जानियो कि मेरा शत्रु उत्पन्न हुआ बाणासुर वह ध्वजा लेकर बड़े हर्ष से अपने मकान पर चला आया व उसे राजमन्दिर पर खड़ा कर दिया व सदा उसे देखकर अपने शत्रु उत्पन्न होनेकी इच्छा रखता था जब कई वर्ष वीते बाणासुरके बाणावती बड़ी स्त्री से एक कन्या ऊषा नाम अतिसुन्दरी उत्पन्न हुई तब उसने प्रसन्न होकर ब्राह्मण व याचकोंको बहुतसा दान व दक्षिणा दिया जब ऊषा सात वर्षकी हुई तब बाणासुरने उसको सहेलियों समेत कैलास पर्वतपर महादेव व पार्वतीके पास विद्या पढ़नेवास्ते भेज दिया सो ऊषा ने वहां पहुँचकर भोलानाथ व पार्वतीको दण्डवत् करके विनय किया हे त्रिलोकीनाथ इस दासीको विद्यादान देकर संसारमें यश लीजिये तब महादेव उसे विद्या पढ़ाने लगे कुछ दिनोंमें ऊषा उनकी कृपा से सब शास्त्र व गाने व बजानेमें ऐसी निपुण होगई कि अनेक तरहका वाजा वजा कर छः राग व छत्तीस रागिनी गाने लगी एक दिन ऊषा वीणा बजाकर पार्वतीजीके साथ सांगीत राग गाती थी उस समय शिवजीने पार्वती से कहा हे प्राणप्यारी जिस कामदेवको मैंने जलादिया था उसने श्रीकृष्णजी के यहां प्रद्युम्न नामसे जन्म लियाहै ऐसा कहकर शिवजी पार्वतीको साथ लिये गंगाकिनारे चले गये व बड़े प्रेमसे उनके साथ स्नान व जलविहार किया व पार्वतीजीको अपने हाथसे उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाये जब जगन्माता वीणा बजाकर सांगीत राग उनको सुनानेलगीं उस समय महादेवजीने प्रसन्न होकर बड़े प्रेमसे पार्वतीजी को गले लगा लिया यह हाल देखकर ऊषा को भी इस बात की चाहना हुई कि मेरा व्याह भी हुआ होता तो इसी तरह अपने पतिसे विहार करती जैसे रात्रि विना चन्द्रमाके शोभा नहीं देती वैसे स्त्री विना पुरुष के अच्छी नहीं मालूम होती उसके मनका हाल पार्वती अंतर्यामीने जानकर उसे अपने पास बुलाया व ऊषा को धैर्य देकर कहा अय बेटी तेरा स्वामी तुझे स्वप्न में आनकर मिलेगा तू उसे ढुँढ़वाकर भोग व विलास कीजियो जब ऐसा

कहकर पार्वतीजीने उसको विदा किया व ऊषा उन्हें दण्डवत् करके राजमन्दिरपर आई तब बाणासुरने एक स्थान रत्नजटितमें उसको सहेलियों समेत रक्खा जिसतरह चन्द्रमाका प्रकाश द्वितीयासे पूर्णमासी तक बढ़ता है उसीतरह ऊषा बारह वर्ष तक बढ़कर ऐसी सुन्दरी व तरुणी हुई जिसके सामने पूर्णमासीका चन्द्रमा धूमिल दिखलाई देने लगा एक दिन ऊषाने सोरहों शृंगार किये सहेलियोंको साथ लिये अपने माता व पिताके पास जाकर दण्डवत् किया तब बाणासुरने उसे विवाहने योग्य देखकर विचारा अब यह ब्याहने योग्य हुई यह समझकर उसने बहुत दैत्य व राक्षसोंको उसके महलकी रक्षा करनेवास्ते बैठा दिया जिसमें कोई पुरुष वहां जाने न पावै व ऊषा अपने स्वामीके मिलनेवास्ते आठोंपहर पूजा व ध्यान पार्वतीजीका करने लगी सो एकदिन ऊषाने रात्रिको शय्यापर अकेली बैठी हुई यह विचारा देखें राजा मेरा विवाह कब करते हैं जब वह इसी तरह विचारती हुई सोगई तो स्वप्नमें क्या देखा कि एक पुरुष किशोर अवस्था श्यामरंग चन्द्रमुख कमलनयन अतिसुन्दर जड़ाऊ मुकुट शिरपर धरे किरीट कुण्डल व पीताम्बर पहिने अंग अंगपर गहना जड़ाऊ साजे मोतियों की माला गलेमें डालें जर्द उपरना रेशमी ओढे सामने आनकर खड़ा है ऊषा वह मूर्ति देखतेहीं लज्जित होगई जब उस पुरुषने प्रेमपूर्वक बातोंसे लज्जा उसकी छुड़ाकर अपने गले लगा लिया तब वह सुन्दरी उस मोहनीमूर्तिको अपनी शय्यापर बैठाकर प्रेमकी वार्ता करने लगी जैसे ऊषाने हाथ फैलाकर कमलनयनसे मिलने चाहा वैसे आंख उसकी खुलगई व मनकी इच्छा मनहीमें रही ॥

दो० जाग पड़ी शोचत खड़ी भयो परमदुख ताहि। कहां गयो वह मायापति देखत चहुँदिशिजाहि॥

जब ऊषाने जागने उपरांत उस पुरुषको नहीं देखा तब व्याकुल होकर कहने लगी अब मैं अपने प्राणप्यारे को किस तरह देखूं कदाचित् न जागती तो किसतरह वह मेरा मन चुराकर भाग जाता अब जो रात बाकी है वह कैसे कटैगी ॥

चौ० बिन पीतम जिय निपट अचैन। देखे बिन तरसत हैं नैन ॥

कान सुनों चाहत हैं बैन। कहां गये पीतम सुखदैन॥
जो स्वप्नेमें फिरि लखि लेऊं। प्राण साथ उनके करि देऊं॥

जब ऊषा इसतरह अनिरुद्धको स्वप्नेमें देखकर उसपर मोहित होगई तब उस रूपका ध्यान हृदयमें रखकर शय्यापर पड़रही व उसी शोचमें निद्रा उसे न आई जब पहरदिन चढ़ेतक नहीं उठी तब उसकी सहेलियां आपस में कहने लगीं आज क्या कारणहै जो राजकन्या सोकर नहीं उठी जब वह सब घबड़ाकर ऊषाका समाचार लेनेवास्ते शीशमहलमें गईं तब उसे रोतीहुई व्याकुल देखकर बहुत समझाया पर विरहकी मारीहुई नहीं उठी सब सहेलियोंसे चित्ररेखा कुम्भाण्डकी बेटीने ऊषाका हाल सुना तब उसने राजकन्याके यहां जाकर क्या देखा कि ऊषा छपरखटमें लेटी हुई रोरही है यह दशा उसकी देखतेही चित्ररेखाने घबड़ाकर पूंछा अय प्यारी आज क्या दुःख तुमको हुआ जो इतना रोती हो अपना भेद मुझे बतलाओ तो उसका उपाय करूं मुझे तुम्हारी दयासे यह सामर्थ्य है कि चौदहों लोक में जाकर जो काम किसीसे न हो वह करलाऊं ब्रह्माके वरदान देने से शारदा देवी आठोंपहर मेरे साथ रहती हैं उनकी कृपासे ब्रह्मादिक देवतोंको वश कर लेने सक्तीहूं मेरा गुण अबतक तुमको नहीं मालूम था आज तुम्हारी यह दशा देखकर अपना हाल तुमसे कहा॥

चौ० अब तू कह सब अपनी बात। कैसी कटी आजकी रात॥
मुझसे कपट करो मत प्यारी। पूरण करिहौं आश तुम्हारी॥
दो० अंग अंग व्याकुल महा मानो लगो है प्रेत। कहो कपट समझायकै कासों बाढ्यो हेत॥

ऊषा यह प्रेमपूर्वक बात सुनकर छपरखटसे उतर पड़ी व लज्जासंयुक्त उसके निकट आनकर धीरेमें बोली अय सखी मैं तुझे परम मित्र जानकर रातका हाल कहतीहूं तू यह बात अपने मनमें रखकर जो उपाय तुझसे बनपड़े सो कीजियो आज रातको एक पुरुष श्यामवर्ण कमलनयन अतिसुन्दर मेरी शय्यापर आन बैठा जब उसने प्रेमपूर्वक बातैं कहकर मेरा मन हरलिया तब मैंनेभी लज्जा छोड़कर उसको गले लगानेवास्ते हाथ पसारा तो जाग उठने से फिर उसको नहीं देखा पर वह मोहनीरूप आंखों में बस रहा है उसका नाम व घर मैं कुछ भी नहीं जानती॥

चौ० वाकी छवि बरणी नहिं जाय। मेरो चित लै गयो चुराय॥
मन लाग्यो त्यहि सूरतमाहीं। इकक्षण कबहूं भूलत नाहीं॥

जब मैं कैलास पर्वतपर विद्या पढ़ती थी तब मुझे पार्वतीजीने कहाथा कि तेरा स्वामी तुझको स्वप्नेमें आनकर मिलेगा तू उसको ढुंढ़वा लीजियो वही पति आज रात मुझे स्वप्नेमें मिलाथा पर मैं उसे कहां ढुँढ़वाकर पाऊं व अपना दुःख किससे सुनाऊं॥

दो० पड़े नींद नयनन नहीं धरै नहीं चित चैन। वह मूरति सुखधामकी ढूंढति हौं दिन रैन॥

जब ऊषा यह हाल अपना कहकर ठण्ढी श्वास लेने लगी तब चित्र-रेखाने कहा हे प्यारी अब तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो मैं तुम्हारे चित्तचोर को जहां होगा वहां से ले आकर मिला दूंगी तुम मुझे आज्ञा देव तो मैं तीनों लोकमें जितने सुन्दर पुरुष हैं सबकी तसवीर खींचकर तुम्हें दिखलादूं तुम उनमें से अपने चित्तचोरको पहिंचान कर मुझे बतला देव फिर उसका ले आना मेरा काम है यह बात सुनतेही ऊषा प्रसन्न होकर बोली बहुत अच्छा मैं अपने चित्तचोर को पहिंचान लूंगी यह बात सुन-तेही चित्ररेखा ने गणेशजी व शारदा देवी को मनाकर तसवीर खींचना आरम्भ किया व देवता व किन्नर आदिकके करोड़ों चित्र खींचकर उसे दिखलाया जब ऊषाने उनमें अपने चित्तचोरको नहीं पहिंचाना तब उस ने तसवीर श्रीकृष्णजी व प्रद्युम्नकी लिखकर ऊषाको दिखलाया जब वह दोनों चित्र देखतेही ऊषा इस तरह लज्जित होगई जिसतरह स्त्री अपने श्वशुर आदिकको देखकर लज्जित होजाती है तब वह चित्ररेखासे बोली मेरा चित्तचोर इन्हींके वंशमें होगा यह वचन सुनते ही चित्ररेखाने जैसे तसवीर अनिरुद्ध की खींचकर राजदुलारीको दिखलाई वैसे ऊषा अचेत होगई जब चित्त उसका ठिकाने हुआ तब चित्ररेखासे बोली स्वप्ने में यही पुरुष मेरा मन चुरा लेगया है अब ऐसा उपाय करना चाहिये जिसमें यह मुझे मिले नहीं तो मेरा प्राण इसके विरह में निकलने चाहता है यह बात सुनकर चित्ररेखा बोली अय प्राणप्यारी अब यह पुरुष मेरे हाथसे वचकर नहीं जा सक्ता यह यदुवंशीकुलमें श्रीकृष्णजी का पोता व प्रद्युम्नका

बेटा अनिरुद्ध नाम द्वारकापुरीमें रहता है व सुदर्शनचक्रकी रक्षा करनेसे कोई मनुष्य व दैत्य व राक्षस विना आज्ञा श्रीकृष्णजीके वहां जाने नहीं सक्ता यह बात सुनतेही ऊषा उदास होकर बोली वहां का पहुँचना ऐसा कठिनहै तो मेरे प्राणनाथको किस तरह ले आवोगी चित्ररेखाने कहा तू चिन्ता न कर मैं तेरे वास्ते एक बेर उपाय करती हूँ जब ऐसा कहने उपरांत चित्ररेखा चील्हरूप बनकर वहांसे उड़ती हुई द्वारकापुरी के निकट पहुँची तब उसने क्या देखा कि सुदर्शनचक्र चारों ओर घूमकर उस पुरी की रक्षा करताहै व विना आज्ञा उसके द्वारकापुरीमें कोई जाने नहीं सक्ता जब यहदशा देखकर वह खड़ी होरही तब परमेश्वरकी इच्छानुसार नारद मुनिने वहां आनकर चित्ररेखासे पूंछा तू यहां किसवास्ते आई है जब चित्ररेखाने नारदमुनिको दण्डवत् करके सब कारण अपने आनेका उन से वर्णन किया तब नारदमुनिने उसे एक मंत्र बतलाकर कहा तू साधु का वेष बनाकर द्वारका में जा तो सुदर्शनचक्र तुझे नहीं रोंकैगा व अनिरुद्ध को बाणासुरसे लड़ती समय मेरा स्मरण करना चाहिये जब ऐसा कहकर नारदमुनि चले गये तब चित्ररेखाने उसी समय वैष्णवका रूप सांगोपांग बना लिया व अँधियारी रातमें श्यामघटाके साथ बिजुली सी चमकती हुई द्वारकापुरीमें चली गई और सुदर्शनचक्रने वैष्णव समझ कर नहीं रोंका तब ढूंढ़ती हुई अनिरुद्धके महलमें जहां वह शय्या पर अकेला सोया हुआ स्वप्न में ऊषाके साथ विहार कर रहा था जा पहुँची व उनको वहांसे शय्या समेत उठाकर ले उड़ी व एक क्षणमें पलँग उसका बीच महल ऊषाके ले जाकर रख दिया व ऊषासे बोली मैंने तुम्हारे चित्त-चोरको यहां ले आकर पहुँचा दिया अब तुम इसके साथ विहार करो ऊषा यह हाल देखकर चित्ररेखा के पांवपर गिर पड़ी व हाथ जोड़कर कहने लगी तू धन्य है जो तैंने मेरे चित्तचोरको क्षणभरमें यहां लाकर अपना प्रण पूरा किया अब जन्मभर तेरा गुण न भूलूंगी यह सुनकर चित्ररेखा बोली संसारमें परोपकारसे उत्तम दूसरी बात नहीं होती अब तुम अपने प्राणपतिको जगाकर इच्छा पूरी करो ऐसा कहकर चित्ररेखा अपने घर

चली गई व ऊषा डर व लज्जासे मनमें कहने लगी किस तरह इसको जगाकर अपना मनोरथ पूर्ण करूं फिर कुछ सोच विचारकर जब राजकुमारी मीठे स्वरोंसे बीन बजाने लगी तब अनिरुद्धने जागकर चारों ओर देखा तो अपने को दूसरे स्थानमें पाकर मनमें कहा मुझको यहां कौन पलँग समेत लेआया ॥

दो० पहिले श्रीमद्युम्नकी सुनी इती उन बात। ताही विधि मोको भयो जानो कछु उत्पात ॥

अनिरुद्ध तो यही शोच व विचार कर रहा था ऊषा अपने प्राणनाथ को जागते देखकर रूपरस उनका आंखोंकी राह पीने लगी तब अनिरुद्ध ने उस सुन्दरीको देखकर कहा हे प्राणप्यारी तुम कौन होकर मुझे किस वास्ते यहां उठा ले आई हो जब ऊषा इस बातका कुछ उत्तर न देकर लज्जा से कोने में सिमिट गई तब अनिरुद्ध ने हाथ उसका पकड़कर अपनी शय्यापर बैठा लिया व प्रेमभरी बातैं कहकर उसकी लज्जा छुड़ा दिया जब दोनोंने आपस में गन्धर्व विवाह करके अपने मनकी इच्छा पूरी की तब अनिरुद्धने ऊषासे हँसकर पूंछा हे प्राणप्यारी तैंने मुझे किस तरह देख कर यहां मँगवाया यह सुनकर ऊषा बोली मैं तुम्हें स्वप्नमें देखकर अति मोहित होगई सो चित्ररेखा तुम्हारे विरहमें मुझे व्याकुल देखकर न मालूम तुमको यहां किस तरह लेआई यह बात सुनकर अनिरुद्ध बोले हे प्राणप्यारी आज मैं भी तुझे स्वप्नमें देखकर तेरे साथ विहार कर रहा था सो न मालूम कौन मुझे यहां उठा लाया जब मैं वीणा का शब्द सुनकर जागा तब तुझे देखा जब इसी तरह सुख व विलास करते हुये सबेरा होगया तब ऊषाने अनिरुद्धको अपनी सखी व सहेलियोंसे छिपाकर कहीं अलग रक्खा व उसकी सेवा आप करने लगी जब कई दिन बीतनेपर अनिरुद्ध का हाल सब सखी व सहेलियोंको प्रकट होगया तब ऊषा उन्हें छत्तीस व्यञ्जन खिलाकर उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाने लगी ॥

दो० मैनपुत्र सुखदैन का प्रेम लगै दिन रैन। काम कलोल करैं सदा बोलत अमृत बैन ॥

एक दिन ऊषा व अनिरुद्ध आपस में चौपड़ खेलरहे थे उसी समय ऊषाकी माता अपनी कन्याको देखने आई तो अनिरुद्धकी सुन्दरताई

देखतेही अति प्रसन्न होकर दबे पांव फिर गई व ऊषा व अनिरुद्ध यह भेद न जानकर ज्योंके त्यों खेलते रहे चार महीने अनिरुद्धके रहनेका हाल छिपा रहकर फिर इस तरह प्रकट होगया कि एक दिन ऊषा ने अनिरुद्ध को सोया हुआ देख कर यह विचारा कि मेरे बाहर न जाने से सब लोग सन्देह करैंगे ऐसा विचारतेही ऊषा अपने रंगमहल का द्वार खोलकर बाहर निकली व क्षण भर में फिर बन्द करके भीतर चली गई व अनिरुद्ध के साथ विहार करने लगी यह देखकर उस महल के चौकीदारों ने आपस में कहा देखो भाई आज क्या कारण है जो राजकन्या इतने दिनों पर बाहर निकल कर फिर उलटे पैर महल में चली गई यह बात सुनकर दूसरा द्वारपालक बोला मैं कई दिन से ऊषा का रंगमहल आठों पहर बन्द देखकर वहां किसी पुरुष के बोलने व चौपड़ खेलने का शब्द सुनता हूं यह सुनकर दूसरे ने कहा यह बात सच है तो चलो बाणासुर से कहिदें दूसरा बोला राजकन्या की चुगली खाना न चाहिये चुपचाप बैठे रहो होनेवाली बात आप प्रकट होजायगी जिस समय द्वारपालक आपस में यह चर्चा कर रहे थे उसी समय राजा बाणासुर अनेक शूरवीरों समेत टहलता हुआ वहां आ निकला व ध्वजा महादेवजी की दी हुई महल पर न देखकर चौकीदारों से उसका हाल पूंछा तो द्वारपालकों ने कहा महाराज बहुत दिन हुये कि वह ध्वजा आप से टूट कर गिर पड़ी यह बात सुनतेही बाणासुर प्रसन्न होकर व शिवजी का वचन याद करके बोला कि ध्वजा गिरने से मालूम होता है कि मेरा शत्रु लड़नेवाला उत्पन्न हुआ यह वचन बाणासुर के मुख से निकलतेही एक चौकीदार ने हाथ जोड़कर विनय किया हे पृथ्वीनाथ राजकन्या के महल में कई एक दिन से एक पुरुष के हँसने व बोलने का शब्द सुनता हूं पर यह नहीं जानता कि वह कौन है और किस राह से आया यह सुनतेही बाणासुर क्रोधित होकर शस्त्र लिये हुये दबे पांव ऊषा के महल में चला गया तो क्या देखा कि एक पुरुष श्यामरंग अतिसुन्दर ऊषा के पास पलँग पर सो रहा है उसका रूप देखतेही बाणासुर ने प्रसन्न होकर कहा कि यह ऊषा के ब्याह करने

के योग्य है पर इस बात की लज्जा समझ कर महल से बाहर चला आया व अपने साथियों से बोला मेरा शत्रु अभी सो रहा है सोते हुये को मारना न चाहिये इसलिये तुम लोग यह महल घेरे खड़े रहो जिसमें वह भागने न पावे जब सोकर उठै तब मुझ से आनकर कहना यह आज्ञा देकर बाणासुर अपनी सभा में चला आया व बहुतसी सेना ऊषा का मकान घेरने के वास्ते भेजकर उनसे कहा तुम लोग चलो मैं भी वहां पहुँचता हूं उसकी आज्ञा पातेही जब हजारों योद्धाओं ने जाकर ऊषा का रंगमहल घेर लिया व अनिरुद्ध व ऊषा जागकर आपसमें चौपड़ खेलने लगे तब एक चौकीदार ने जाकर बाणासुर से कहा कि तुम्हारा शत्रु नींद से जागा है यह समाचार पातेही उसने तलवार व त्रिशूल लिये हुये ऊषा के द्वारे पर आन कर ललकारा तू कौन चोर राजमन्दिर में घुसा है जल्दी निकलकर मेरे सामने आव तो तुझे दण्ड दूं अब तू यहां से जीता बच कर अपने घर जाने नहीं सक्ता जब ऊषा ने बाणासुरका शब्द सुना तब डरती व कांपती हुई अनिरुद्धसे बोली हे प्राणनाथ मेरा पिता बहुत दैत्य साथ लेकर तुम्हारे पकड़ने के वास्ते चढ़ि आया है अब तुम उसके हाथसे किसतरह बचोगे यह बात सुनतेही अनिरुद्ध ऊषा को धैर्य देकर बोले हे प्राणप्यारी तुम देखती रहो एक क्षण में सब दैत्यों को मारडालूंगा ऐसा कहकर जैसे अनिरुद्ध ने कुछ मंत्र पढ़ा वैसे एक सौ आठ हाथ का पत्थर जिसे शिला कहते हैं उनके पास आन पहुँचा जब अनिरुद्धजी ने वह शिला हाथ में लिये बाहर निकल कर बाणासुर को ललकारा तब वह अपने शूरवीरों समेत इसतरह अनिरुद्ध पर झपटा जिसतरह शहद की मक्खियां छत्ता उजाड़नेवाले पर झुण्ड का झुण्ड झपटती हैं ॥

दो० तिन्हैं देखि कोपे तभी महाबली अनिरुद्ध । उनसों औ योधान सों भयो परस्पर युद्ध ॥

जब बाणासुर की आज्ञा पाकर सब दैत्य अपना अपना शस्त्र अनिरुद्ध पर चलाने लगे तब उन्होंने क्रोधित होकर उसी शिलासे दैत्यों को मारना आरम्भ किया जिसकी चोट से बहुत दैत्य मर गये व कुछ घायल होकर गिर पड़े व बाकी अपना प्राण लेकर भाग गये जब बाणासुर ने

देखा कि यह पुरुष महाबली है जिसने सब सेना मेरी मार कर हटा दी तब उसने नागफांस जो महादेवजी ने उसे दी थी उसको फेंक कर अनिरुद्ध को फांसलिया व उसीतरह बांधे हुये अनिरुद्ध को अपनी सभा में ले जाकर कहा हे बालक अब तेरा प्राण लूंगा जो तेरा सहायक हो उसको अपनी रक्षा के वास्ते बुलाव अनिरुद्ध ने यह सुनकर विचारा कि मैं अपने बलसे नागफांस को तोड़कर बाहर निकल जाऊं तो शिवजीका अपमान होगा इसलिये मुझे दुःख हो तो कुछ चिन्ता नहीं पर महादेवजी का वचन झूठा करना न चाहिये जो परमेश्वर की इच्छा होगी सो होगा यहां अनिरुद्ध पड़ा हुआ अनेक तरह का शोच व विचार कर रहा था व ऊषा उसका समाचार पातेही व्याकुल होकर चित्ररेखा से बोली हे सखी ऐसे जीने पर धिक्कार है जो मेरा प्राणप्यारा दुःख उठावे और मैं सुख से रहूं ऐसे जीने से मेरा प्राण निकल जावे तो अच्छाहै जब ऐसा कहकर ऊषा अतिविलाप करने लगी तब चित्ररेखा उसे धैर्य देकर बोली तू कुछ चिन्ता मत कर तेरे पति का कोई कुछ कर नहीं सक्ता अभी श्याम व बलरामजी यदुवंशियों को साथ लेकर शोणितपुर में पहुँचते हैं व सब दैत्यों को मार कर तुझे अनिरुद्ध समेत द्वारकापुरी ले जावैंगे वे जिस राजकन्या को सुन्दरी सुनते हैं उसे विना लेगये नहीं रहते अनिरुद्ध उन्हीं श्रीकृष्णजी का पोताहै जो कुण्डिनपुर से शिशुपाल व जरासंध आदिक बड़े बड़े प्रतापी राजाओं को जीतकर रुक्मिणी राजा भीष्मक की बेटीको हर ले आये थे यह बात चित्ररेखा की सुनकर ऊषा बोली हे सखी अपने प्राणनाथ को नागफांस में बँधे सुनकर मेरा कलेजा जला जाता है व मुझे खाना व पीना व सोना व बैठना कुछ अच्छा नहीं लगता बाणासुर चाहै मुझको भी अनिरुद्धके साथ मारडाले तो अच्छाहै पर इस महादुःख में मुझसे उनका साथ छोड़ा नहीं जाता ऐसा कहकर ऊषा महलसे बाहर चलीगई व लज्जा छोड़कर राजसभा में अनिरुद्ध के पास जा बैठी यह हाल सुनतेही बाणासुरने स्कन्द अपने बेटे को बुलाकर कहा तुम अपनी बहिन को यहां से घरमें लेजाकर बैठार रक्खो व फिर उसको बाहर निकलने मत

देव यह वचन सुनतेही स्कन्दने ऊषाके पास जाकर क्रोधसे कहा तैंने लोक-लाज छोड़कर अपने माता व पिताकानाम डुबाया मैं तुझे अभी मारडालता पर क्या करूं पाप होने को डरताहूं ऊषाने उत्तरदिया हे भाई जो चाहो सो कहो और करो मैंने तो पार्वतीजीके वरदान से यह पति पाया अब इनको छोड़कर दूसरे से विवाह करूं तो संसारमें अपनेको कलंक लगाऊं विधाता ने जो वर मेरे भाग्य में लिख दिया था वह मुझे मिला इनके साथ चाहै मेरा भला हो या बुरा इनके सिवाय मैं दूसरेको नहीं चाहती जब स्कन्दने यह बात ऊषाकी सुनी तब बरजोरी उसका हाथ पकड़कर महलमें लेगया व उसपर चौकी व पहरा रखकर फिर उसे अनिरुद्ध के पास जाने नहीं दिया व अनिरुद्ध को वहांसे दूसरे मकान में लेजाकर हथकड़ी व बेड़ी डालकर कैद रक्खा इधर तो अनिरुद्धजी ऊषाके विरह में व्याकुल रहने लगे व उधर ऊषाने भी उसके बीच विरहसागर में डूबकर खाना पीना छोड़ दिया जब कई दिन उपरांत अनिरुद्धने चित्ररेखा का कहना याद करके नारदमुनिका ध्यान किया तब नारदजी ने उसी समय पहुँचकर अनिरुद्धसे कहा हे बेटा तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो श्रीकृष्णजी आनन्दकन्द व बलरामजी यदुवंशियों समेत यहां आनकर तुझे छुड़ा लेजावेंगे अनिरुद्धको ऐसा धैर्य देने उपरान्त नारदमुनिने बाणासुरसे जाकर कहा हे राजन् जिसको तुम बाँधकर अपने यहां कैद रक्खे हो वह अनिरुद्धनाम प्रद्युम्नका बेटा व श्रीकृष्णजीका पोताहै तुम यदुवंशियोंका प्रताप अच्छीतरह जानतेहो जैसा उचित हो वैसा करो मैं तुम्हारे कल्याण के वास्ते यह कहने आयाहूं बाणासुर यह वचन सुनकर अभिमानसे बोला हे मुनिनाथ मैं सबको जानताहूं तुम्हारे आशीर्वादसे उन्हें देखलूंगा नारदमुनि उसका कुछ उत्तर न देकर वहांसे चलेगये॥

तिरसठवां अध्याय।

श्यामसुन्दर व बाणासुरसे युद्ध होना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब अनिरुद्धको चार महीने से अधिक होगये व उसका पता नहीं मिला तब एक दिन प्रद्युम्न आदिक यदुवंशी

श्याम व बलरामके पास बैठकर बड़ी उदासी से अनिरुद्धकी चर्चा करने लगे पर मुरलीमनोहरने सब वृत्तान्त जानने परभी कुछ हाल उसका अपने बेटा व पतोहू से नहीं बतलाया परन्तु उनकी इच्छासे उसीसमय नारदमुनि वहां आन पहुँचे उनको देखतेही सब छोटे व बड़ोंने दण्डवत् करके सन्मानपूर्वक बैठाला तब नारदजीने प्रद्युम्न आदिकको उदास देख कर पूंछा आज तुम लोग मलीन दिखलाई देतेहो यह बात सुनतेही श्रीकृष्णजी ने हाथ जोड़कर विनय किया हे मुनिनाथ आप चारों ओर घूमते हैं कुछ हाल अनिरुद्ध का मालूम हो तो बतलाइये जिसमें हम लोगों का शोच छूटि जाय जबसे कोई उसको पलँग समेत उठा लेगया तब से कुछ पता उसका नहीं लगा यह वचन सुनकर नारदमुनि बोले तुम लोग चिन्ता मत करो अनिरुद्धजी शोणितपुरमें जीते हैं उन्होंने वहां जाकर बाणासुरकी बेटीसे भोग किया था इसीवास्ते राजाने नागफांस से उनको बांध कर अपने यहां कैद रक्खाहै विना युद्ध किये अनिरुद्ध को नहीं छोड़ेगा उसका ठिकाना हमने तुमसे बतला दिया आगे जैसा उचित जानो वैसा करो जब नारदमुनि यह कहकर ब्रह्मलोक को चले गये तब श्याम व बलरामने राजा उग्रसेन के पास जाकर जो हाल नारदमुनि से सुना था वह वर्णन किया राजा बोले तुम हमारी सब सेना अपने साथ लेकर अभी शोणितपुर में चलेजाव व जिसतरह बन पड़े उस तरह अनिरुद्ध को मेरे पास अभी लेआवो यह आज्ञा पातेही श्यामसुन्दर प्रद्युम्न समेत गरुड़ पर बैठकर शोणितपुरको चले व बलरामजी ने बारह अक्षौहिणी सेना साथ लेकर शोणितपुर पर चढ़ाई की उससमय ऐसी शोभा उनकी मालूम देतीथी जिसका हाल तुमसे कहांतक वर्णन करूं व बलदाऊ जी राहमें सब किला व नगर बाणासुरका तोड़ते व लूटते हुये शोणितपुर में पहुँचे व श्यामसुन्दर व प्रद्युम्नभी उनसे आन मिले तब बाणासुर के सेवकने दैत्यसंहारण की सेना देखतेही अपने स्वामी के पास जाकर विनय किया महाराज श्याम व बलराम तुम्हारा नगर लूटते व उजाड़ते हुये बड़ी भारी सेना साथ लेकर चढ़आये हैं और शोणितपुरको उन्होंने

चारोंओर से घेर लिया अब तुम्हारी क्या आज्ञा होती है यह वचन सुनते ही बाणासुरने अपने सेनापतियोंको आज्ञादी कि तुमलोग अपने शूरवीरों को साथ लेकर श्रीकृष्णजीके सन्मुख जाकर खड़े हो मैं भी पीछेसे आताहूं यह वचन सुनतेही बाणासुरका मन्त्री बारह अक्षौहिणी सेना दैत्य व राक्षसोंको साथ लेकर नगरसे बाहर निकला व अनेक शस्त्रोंसमेत यदुवंशियों के सन्मुख आया व बाणासुरभी पूजा व ध्यान शिवजीका करके अपनी सेना में आन मिला बाणासुरके ध्यान करतेही महादेवजीको मालूम हुआ कि इससमय मेरे भक्त पर कुछ दुःख पड़ा है इसलिये वहां चलकर उसकी सहायता करनी चाहिये ऐसा विचारकर भोलानाथने पार्वतीको कैलास पर्वतपर अकेली छोड़दी और आप जटा बांधने व विभूति लगाने उपरान्त भांग व धतूरा खाकर श्वेत नागोंका जनेऊ व मुण्डमाला पहिन लिया व बाघम्बर ओढ़ कर त्रिशूल व धनुषबाण व खप्पर हाथमें लेलिया और नन्दी बैलपर बैठकर भूत व प्रेत व पिशाचादिकों को साथ लियेहुये शोणितपुर को चले जब भोलानाथ कानोंमें गजमुक्ता व मुद्रा डाले व मस्तक पर चन्द्रमा व शिरपर गंगाजी धारण किये व लाल लाल नेत्र निकाले गाते बजाते अपनी सेनाको नचाते हुये बाणासुरके निकट क्षणभर में आन पहुँचे तब उनको देखतेही बाणासुर चरणोंपर गिरपड़ा व हाथ जोड़कर बोला हे कृपानिधान इस महाकष्ट में आपके विना कौन मेरी सुधि ले तुम्हारे प्रताप के सामने यादवलोग अब मेरा क्या करसक्ते हैं यहबात शिवजी से कहकर बाणासुरने श्याम व बलरामकी सेना में कहला भेजा कि हमारा तुम्हारा अकेला धर्मयुद्ध हो यह बात वैकुण्ठनाथने मानकर इसतरह पर एक एक मनुष्य का युद्ध दोनों ओरसे ठहराया श्यामसुन्दर व भोलानाथ व बाणासुर व सात्यकीसे युद्ध होने लगा ॥

दो० स्वामिकार्त्तिक अतिबली जिनको जगमें नाम। तिनसों औ प्रद्युम्नसों होन लग्यो संग्राम ॥

बलरामजी व कुम्भाण्डमन्त्री व स्कन्द बेटा बाणासुर व चारुदेष्ण पुत्र मुरलीमनोहर व कुम्भकर्ण दूसरे मन्त्री बाणासुर व साम्बसे युद्ध हुआ जब इसीतरह सब शूरवीर अपनी अपनी जोड़ीसे अनेकशस्त्र लेकर लड़नेलगे

व दोनों सेनामें मारू बाजा बजने लगा व ब्रह्मादिक देवता अपने अपने विमानों पर बैठकर युद्ध देखनेके वास्ते आये तब शिवजीने जैसे पिनाक धनुष पर ब्रह्मबाण रखकर चलाया वैसे द्वारकानाथने शार्ङ्गधर कमानसे तीर मारकर उनका बाण काट डाला जब शिवजीने बाण चलाकर बड़ी आंधी प्रकट की तब वृन्दावनविहारीने अपनी महिमा से उस आंधी को मिटा दिया फिर कैलासपतिने यादववंशियोंकी सेना में अग्निबाण चलाया तो श्यामसुन्दर ने जल वर्षाकर उस बाणकी अग्नि बुझादी व एक बाण अग्निसमान ऐसा छोड़ा कि महादेवकी सेनामें सबका शरीर मूंछ दाढ़ी समेत जलने लगा तब भोलानाथने अपनी महिमासे पानी वर्षाकर जले व अधजले भूत व प्रेतों को ठण्ढा किया व क्रोधित होकर नारायणी बाण चलानेवास्ते तरकससे बाहर निकाला फिर कुछ शोच विचार करके रख दिया उससमय दैत्यसंहारण आलस्य बाण छोड़कर शत्रुकी सेनाको इस तरह काटने लगे जिसतरह किसान लोग जुआरका खेत काट डालते हैं यह दशा देखकर जब महादेवजीने तीन बाण श्यामसुन्दरपर चलाये तब लक्ष्मीपतिने उन तीरों को भी काटकर एक तीर ऐसा मारा जिसके लगने से शिवजी गिरपड़े व जमुहाई लेने लगे ॥

दो० बाणासुरके काज शिव कीन्हों बहुत उपाय। माखनप्रभु भगवानसे केहिविधि जीतोजाय ॥

जब स्वामिकार्त्तिकने बड़ा भारी युद्ध प्रद्युम्नसे किया तब प्रद्युम्नजीने तीनबाण उस मुरैलेके जिसपर स्वामिकार्त्तिक चढ़े थे ऐसे मारे कि वह मुरैला रणभूमि छोड़कर आकाशमें उड़ गया जब स्वामिकार्त्तिक आकाश से यदुवंशियों को तीर मारने लगे तब प्रद्युम्नजीने मुरलीमनोहरसे आज्ञा लेकर मारे तीरोंके उस मुरैले को स्वामिकार्त्तिक समेत पृथ्वीपर गिराकर अचेत करदिया व बलरामजी व साम्बने दोनों मंत्री बाणासुरके मारडाले यह दशा देखतेही बाणासुर सात्यकीसे लड़ना छोड़कर केशवमूर्ति के सामने आया व पांचसौ कमान जो अपने हाथ में लिये था दो दो बाण एक एक धनुषपर रखकर सावन भादोंकी बूंद समान श्यामसुन्दर पर बरसाने लगा उस समय वैकुण्ठनाथने अपने तीरसे सब बाण उसके काट-

कर एक तीर ऐसा मारा कि पांचसौ कमान बाणासुरके कटकर पृथ्वीपर गिरपड़े व उसका सारथी घोड़ों समेत मर गया यह दशा देखतेही जब बाणासुर रणभूमि छोड़कर पैदल भागचला व दैत्यसंहारणने रथ अपना उसके पीछे दौड़ाकर पांचजन्य शंख विजयका बजाया तब कोटरानाम माता बाणासुरकी हाल भागने बेटेका सुनकर अपने पुत्रको बचाने वास्ते राजमन्दिरसे नंगे पैर दौड़ती हुई रणभूमि में आई॥

दो० तुरत आइ ठाढ़ी भई माखन मधुके तीर। पुत्रहेतु व्याकुल महा कीन्हे नग्न शरीर॥

देखना नंगी स्त्रीका मना होकर धर्मशास्त्रमें ऐसा लिखा है कि एक बेर परस्त्रीको नंगी देखकर जब तक तीनबेर कड़ुवे तेल से आंखें न धोवे तबतक दोष उसका नहीं छूटता इसलिये श्रीकृष्णजीने कोटराको नंगी देखना उचित न जानकर शिर अपना नीचे करके आंख बन्द कर लिया तब बाणासुर भागकर नगर में चला आया व फिर एक अक्षौहिणी सेना लेकर वसुदेवनन्दनके सामने लड़ने गया जब कोटरा अपने बेटे को सेना समेत देखकर राजमन्दिरपर चली गई व दैत्यसंहारण ने एक क्षणमें वह सेना भी बाणासुरकी मारडाली तब बाणासुर भागकर शिवजी की शरणमें गया व भोलानाथने अपने भक्तको अतिव्याकुल व आरत देखा व क्रोधित होकर विषमज्वर काला रंग जिसके तीन शिर व तीन पैर व तीन आंखें छः हाथ थे श्यामसुन्दरकी सेना में छोड़ा जब वह तप बड़े तेजसे द्वारकानाथकी सेनामें आनकर सबको जलाने लगा तब प्रद्युम्न व सात्यकी आदिक यदुवंशी लोग उसके भयसे थरथर कांपते व जलते हुये सांवली सूरतिके पास जाकर बोले महाराज शिवजी के तपने हम लोगों को जलाकर मरणतुल्य कर दिया इसके हाथसे प्राण बचाइये नहीं तो क्षणभरमें सबलोग मरने चाहते हैं यह दशा देखकर श्यामसुन्दरने शीतज्वर को अग्नितपके सामने जैसे छोड़ दिया वैसे दोनों तप आपस में लड़ने लगे जब शीतज्वरको अग्नितप उठाने नहीं सका तब अपने प्राणके भयसे भागा हुआ महादेवके पास जाकर बोला हे दीनानाथ मुझे अपनी शरणमें रखिये नहीं तो शीतज्वर मेरा प्राण लिया चाहता है यह

सुनकर भोलानाथने कहा सिवाय श्यामसुन्दरके दूसरा कोई ऐसा त्रिभुवन में नहीं है जो इस तपसे तेरा प्राण बचाने सकै इसलिये उन्हीं की शरणमें जा वही भक्तहितकारी दयालु होकर तुझे बचावैंगे यह वचन सुनतेही अग्नितप जाकर ऊपर चरण श्रीकृष्णजी के गिर पड़ा व आधीनताई से विनय किया हे कृपासिन्धु पतितपावन मेरा अपराध क्षमा करके अपने तप के हाथ से प्राण बचाइये आपका आदि व अन्त कोई नहीं जानता व तुम्हारा नाश कभी नहीं होता व तुमने ब्रह्मा व महादेव आदिक सब देवतों के ईश्वर होकर अपनी इच्छा से वास्ते सुख देने हरिभक्त व मारने अधर्मी व बोझा उतारने पृथ्वीके अवतार लिया है व विना चर्चा व स्मरण तुम्हारे नाम व लीलाके जो अक्षर मनुष्य अपने मुखसे निकालते हैं उनको वृथा समझना चाहिये ऋषीश्वर व योगी लोग तुम्हारे स्मरण व ध्यान के प्रताप से जो कुछ शुभ व अशुभ किसी को कहते हैं वह बात उसी समय होजाती है पर वे लोग भी तुम्हारा भेद नहीं जानते व आप सब लीला संसारी जीवों को भवसागर पार उतारने वास्ते करते हैं व आप लक्ष्मीपति व सबसे उत्तम होकर तीनों लोक के उत्पत्ति व पालन व नाश करने वाले हैं॥

दो० माखन प्रभु भगवान की अस्तुति कही न जाय। सर्वरूप सर्वातमा सब घट रह्यो समाय॥

हे दीनानाथ आप जिस तरह शरण आये पर दयालु होकर अपराध उसका क्षमा करते हैं उसी तरह मुझे बड़ा दुःखी व दीन जानकर शीतज्वर के हाथसे मेरा प्राण बचाइये तीनों लोक में तुम्हारे सिवाय कोई दूसरा मुझे अपनी रक्षा करनेवाला दिखलाई नहीं देता॥

दो० माखन प्रभु करतारकी महिमा अमित अपार। तप्तशीत व्यापै तहां जहां न नाम तुम्हार॥

यह दीन वचन सुनकर वसुदेवनन्दनने कहा अब मेरी शरण आने से तेरा प्राण बचा व तेरा अपराध मैंने क्षमा किया पर आजसे हमारे सेवक व हरिभक्तोंको कभी दुःख न दीजियो व जो कोई यह कथा मेरी व तेरी अपने सच्चे मनसे कहै व सुनैगा उसको किसीतरहका तप हो तो छूट जायगा अब महादेवजीके पास चलाजा यह बात सुनतेही अग्निज्वर श्यामसुन्दर

से विदा होकर भोलानाथ के यहां चला आया तब यदुवंशी लोग अच्छे होगये और बाणासुर जो भाग गया था फिर अनेक शस्त्र अपने हजार हाथ में लेकर श्यामसुन्दरके सम्मुख आया व ललकारकर कहने लगा अभी तक युद्ध करनेसे मेरा मन नहीं भरा तुम सावधान होकर मेरे साथ लड़ो जब वह अभिमानी ऐसा कहकर मुरलीमनोहरपर शस्त्र चलाने लगा तब दैत्यसंहारणने क्रोधित होकर सुदर्शनचक्र से कहा कि चार हाथ बाणासुर के छोड़कर और सब भुजा काट डालो यह आज्ञा पातेही सुदर्शनचक्र इस तरह भुजा बाणासुर की काटकर गिराने लगा जिस तरह कोई मनुष्य क्षण भर में पतली पतली डाली वृक्षकी काट डालता है जब बाणासुर की यह दशा होकर लोहू उसके अंग से नदीरूपी बहने लगा तब उसने लज्जित होकर शिवजी से विनय की हे भोलानाथ मैंने अपने अभिमान का दण्ड पाया अब सिवाय तुम्हारे कोई दूसरा मेरा प्राण बचाने नहीं सक्ता यह दीनवचन सुनकर महादेवजी ने विचारा अब गर्व इसका टूटगया इसलिये अपने भक्तका प्राण बचाना चाहिये ऐसा विचारतेही कैलासपति बाणासुर को साथ लेकर वेदस्तुति करते हुये द्वारकानाथके पास चलेगये व बाणासुर को उनके चरणोंपर गिरा दिया॥

दो० हाथ जोड़ ठाढ़े भये हरिके सन्मुख जाय। बाणासुरके काज शिव अस्तुति करें सुनाय॥

हे दीनदयालु त्रिलोकीनाथ तुम जड़ व चैतन्यके मालिक होकर सब जीवों की उत्पत्ति व पालन व नाश करते हो व तुम्हारी लीला व कामों की कोई गिनती नहीं करने सक्ता आप केवल पृथ्वीका भार उतारने व हरिभक्तों को सुख देने व अधर्मियों को मारने के वास्ते अपनी इच्छा से सगुण अवतार लेते हो और नहीं तो तुम्हारे विराट्रूपमें चौदहों लोक का व्यवहार रहता है सो मैं उस रूपको दण्डवत् करता हूं॥

दो० तुम्हरी शक्ति अनन्तहै अन्त न पाया जाय। प्रकट गुप्त देखत सदा रह्यो विश्वभरि छाय॥

जिसने संसार में मनुष्य तनु पाकर तुम्हारा स्मरण नहीं किया उसने अमृत छोड़कर विष पिया जिसतरह सूर्य बदली में छिपे रहते हैं उसीतरह तुम अपने को संसार में छिपाकर मनुष्य के समान लीला करते हो जो

मनुष्य तुम्हारा ध्यान छोड़कर संसारीजाल में फँसता है उसे बड़ा मूर्ख समझना चाहिये हम व ब्रह्मा व इन्द्रादिक देवता तुम्हारे दास होकर आपका भेद नहीं जानसके संसारी मनुष्यको क्या सामर्थ्य है जो तुम्हें पहिंचानने सकै जिसपर तुम दयालु होकर अपने ध्यान व पूजाकी राह दिखलाते हो वह तुम्हारी महिमा कुछ जानकर सत्संग करनेसे भवसागर पार उतरने सक्ता है ॥

दो० जैसे बूड़त जल विषे शीश निकालै कोय। श्वास लेतही एकक्षण महाचैन सुख होय ॥

हे महाप्रभु जिसतरह डूबता हुआ मनुष्य श्वास लेने से सुख पाता है उससे अधिक आनन्द हरिभजन में समझना चाहिये परन्तु हरिभजन में चित्त लगाना बहुत कठिन है संसारी जीव झूंठी माया मोह में ऐसे फँस रहे हैं कि उनका मन तुम्हारी ओर एक क्षण नहीं लगता उनमें जो कोई संसारी सुख चाहनेवास्ते तुम्हारा भजन व ध्यान करता है उसे हम व ब्रह्मा वरदान देते हैं पर उसका मनोरथ पूर्ण होना व हमारा वचन सच करना तुम्हारे आधीन रहता है हे कृपासिन्धु किसी को ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो तुम्हारी महिमा अपरम्पार का गुण वर्णन करने सकै बाणासुर अज्ञानकी राह मुझे परमेश्वर जानकर मेरा पूजन करता था अब यह तुम्हारा द्रोही होकर मुझे आपके पास सिफारिश करनेवास्ते लेआया है सो मुझ पर दयालु होकर इसका अपराध क्षमा कीजिये व इसको प्रह्लाद अपने भक्त के कुल में जानकर अभयदान दीजिये ॥

दो० आज्ञा कीजै चक्रको माखन प्रभु ब्रजनाथ। और भुजा सब काटिकै राखै चारों हाथ ॥

जब महादेवजी ने इसतरह विनयपूर्वक स्तुति श्यामसुन्दरकी की तब वसुदेवनन्दन हँसकर बोले हे भोलानाथ मेरे तुम्हारे में भेद समझनेवाला मनुष्य अवश्य नरक भोगेगा व तुम्हारा ध्यान करनेवाला अंतसमय मुझे पावेगा व तुम्हारे कहनेसे हमने बाणासुरको चतुर्भुजीरूप बनाया जिसको तुमने वरदान दिया उसका निर्वाह मैंने किया व सदा करूंगा ॥

दो० आयसु दीन्ही चक्रको ऐसी विधि हरिनाथ। बाणासुर भुज काटिकै राखो चारों हाथ ॥

हे कैलासपति मैंने प्रह्लादभक्त बाणासुरके परदादासे यह प्रतिज्ञा की थी

कि तेरे वंश को अभयदान किया इसलिये तुम न कहते तो भी इसका प्राण न लेता पर बाणासुर अति अभिमान करके किसी को अपने तुल्य नहीं समझता था इसवास्ते मैंने सब भुजा उसकी काटकर उसे चतुर्भुजी बना दिया व सब अपराध उसके क्षमा करके तुम्हारा पार्षद उसे किया यह वचन सुनतेही शिवजी प्रसन्न होकर कैलासपर्वत पर चले गये तब बाणासुर ने हाथ जोड़कर विनय की हे वैकुण्ठनाथ जिसतरह आपने कृपा करके दर्शन अपना दिया उसी तरह अपने चरणोंसे मेरा घर पवित्र कीजिये व अनिरुद्ध को ऊषा से विवाह कर अपने साथ ले जाइये यह बात सुनकर जब वृन्दावनविहारी भक्तहितकारी प्रद्युम्न समेत बाणासुर के घर चले तब वह बड़े हर्ष से पीताम्बर राह में बिछवाता हुआ द्वारकानाथ को राजमन्दिर पर ले जाकर जड़ाऊ सिंहासन पर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लिया व हाथ जोड़कर विनय की हे दीनानाथ जिन चरणों का दर्शन ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व सनकादिक ऋषीश्वरों को जल्दी ध्यान में नहीं मिलता उन चरणों के धोने से आज मैं अपने कुल परिवार समेत कृतार्थ हुआ हे महाप्रभु इन्हीं चरणोंको धोकर ब्रह्मा ने वह जल अपने कमण्डलु में रक्खा व महादेवजीने वही जल अपने शिर पर चढ़ाया व भगीरथ ने बड़ी तपस्या से अपने पुरुषों को तारने वास्ते मर्त्यलोक में ले जाकर संसारी जीवोंका उद्धार किया व संसार में वही जल गंगाजी प्रकट हुआ जिनका दर्शन व स्नान व जलपान करने से अनेक जन्मके पाप छूटकर संसारी मनुष्य मुक्ति पाते हैं यह स्तुति कहकर बाणासुर ने ऊषाको राजमन्दिर से बुला भेजा व अनिरुद्धकी बेड़ी व हथकड़ी काटकर उसे स्नान कराया व अच्छा अच्छा भूषण व वस्त्र पहिनाकर विधिपूर्वक अनिरुद्धसे विवाह दिया व बहुतसा जवाहिर व सोना व चांदी व कपड़ा व बरतन व गहना व गौ व रथ व हाथी व घोड़ा जिसकी कुछ गिनती नहीं होसक्ती दहेजमें देकर द्वारकानाथको ऊषा व अनिरुद्धसमेत विदा किया तब श्यामसुन्दरने बाणासुर को धैर्य देकर अपनी ओरसे राजगद्दीपर बैठादिया व दुल्लह व दुलहिनको

साथ लिये आनन्द मचाते हुये द्वारकाको चले उनका समाचार पातेही यदुवंशीलोग आगेसे जाकर मंगलाचार मनाते हुये राजमन्दिरपर लिवा लाये व रुक्मिणीजीने अपने कुलानुसार रीति व रस्म करके अनिरुद्धको दुलहिन समेत महलमें लेगई व सब द्वारकावासियों ने घर घर मंगलाचार मनाया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जो कोई नित्य प्रातसमय इस अध्याय का ध्यान व स्मरण किया करै वह युद्धमें अपने शत्रुसे कभी नहीं हारैगा ॥

दो० यह लीला अद्भुतमहा कहै सुनै जो कोय। लहै सदा सुख सम्पदा ज्वरकी व्यथा न होय ॥

चौंसठवां अध्याय।

नृगराजाकी कथा ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित नागकुलमें नृगनाम राजा बड़ा प्रतापी व धर्मात्मा होकर असंख्य गौ विधिपूर्वक ब्राह्मणोंको दान देता था कदाचित् कोई चाहै तो गंगाकी रेणुका व वर्षाकी बूंदें व आकाशके तारे गिनलेवे पर उसके गोदान किये हुयोंकी गिनती करना बहुत कठिनहै सो ऐसा धर्मात्मा राजा थोड़ा पाप अनजानमें करनेसे गिरगिटान होगया था उसको श्यामसुन्दर ने अपना दर्शन देकर कृतार्थ किया इतनी कथा सुनकर परीक्षितने विनय किया हे मुनिनाथ ऐसा धर्मात्मा राजा कौन अपराध करनेसे इस दशा को पहुँचा उसकी कथा कहिये शुकदेवजी बोले हे राजन् राजा नृग नित्य नियम करके प्रतिदिन हजारों गौ विधिपूर्वक ब्राह्मणों को दान देकर भोजन करता था सो एक दिन कोई गौ उसकी दान दीहुई भागकर विना दान की हुई गौवों में मिलगई सो राजाने अनजान में वह गौ दूसरे ब्राह्मणको दान कर दिया और वह ब्राह्मण गौ लेकर अपने घर चला व प्रथम दान लेनेवाले ब्राह्मणने अपनी गौ पहिंचानकर उसे राहमें रोंका तब दोनों आपसमें झगड़ा करते हुये गौसमेत राजाके पास आये राजा नृगने दोनों ब्राह्मणोंसे हाथ जोड़कर विनयपूर्वक कहा ॥

चौ० कोऊ लाख रुपैया लेव। गैया इक काहूको देव ॥

यह वचन सुनतेही वह ब्राह्मण क्रोधित होकर राजासे बोला जो गौ स्वस्ति बोलकर हमने दान लिया उसको करोड़ रुपया पानेसेभी न देवैंगे यह गौ हमारे प्राणके साथ है यह सुनकर राजाने विनयपूर्वक उनसे कहा महाराज यह अपराध मुझसे अनजानमें हुआ है एक गौके बदले लाख गौ लेकर क्रोध अपना क्षमा करो जब लाख गौ व लाख रुपये देने पर भी दोनों ब्राह्मणोंने नहीं माना और वह गौ छोड़कर अपने घर चले गये तब राजाने बहुत उदास होकर कहा देखो अनजानमें मुझसे यह पाप होगया सो कैसे छूटैगा ऐसा विचारकर राजाने उस अधर्मके छुड़ाने के वास्ते और बहुत सा दान ब्राह्मणोंको दिया पर उसका संदेह न छूटकर कुछ दिन बीते जब राजा मरगया व यमदूत उसे धर्मराज के पास लेगये तब धर्मराजने उसको आदरपूर्वक अपने पास सिंहासन पर बैठाकर कहा हे राजन् तुम्हारा पुण्य बहुत होकर थोड़ा सा पापभी है सो तुम प्रथम अपने पुण्य का फल भोगोगे या पापका दुःख यह सुनकर राजा बोला महाराज पहिले अपने अपराध का दण्ड भोगकर पीछेसे पुण्यका फल भोगूंगा यह सुनकर धर्मराजने कहा तुमने अनजान में जो दान की हुई गौ फिर दूसरे ब्राह्मणको संकल्प दिया था उसी पापसे तुमको गिरगिटान होकर कुछ दिन अँधियारे कुयें में रहना पड़ैगा जब द्वापर के अन्तमें श्रीकृष्णजी अवतार लेकर तुमको अपना दर्शन देंगे तब तुम्हारी मुक्ति होगी यह वचन धर्मराज के मुखसे निकलतेही राजा गिरगिट होकर गिरपड़ा व समुद्र के निकट अँधियारे कुयेंमें रहने लगा जिन दिनोंमें श्रीकृष्णजी बाणासुरको जीतकर द्वारकामें पहुँचे उन्हीं दिनोंमें प्रद्युम्न व शाम्बआदिक यदुवंशी उसी कुयें की ओर अहेर खेलने गये सो एक बालक प्यासा होकर उसी कुयें पर पानी भरने गया तो क्या देखा कि एक गिरगिटानसे कुआं भराहै यह आश्चर्य देखकर उस बालकने अपने साथी लड़कों को बुलाकर वह गिरगिट दिखलाया ॥

दो० दयावान हरिपुत्र सब कीन्हों यही विचार । या गिरगिटको कूपते हम काढ़ैं इकवार ॥

जब लड़कोंके अनेक उपाय करनेपरभी वह गिरगिट कूपसे नहीं

निकला तब उन्होंने आनकर श्रीकृष्णजीसे यह हाल कहके विनय किया महाराज आप दयाकी राह चलकर उसे निकालिये श्यामसुन्दर अन्तर्यामी ने यह वचन सुनतेही उस कुयेंपर जाकर जैसे अपना चरण गिरगिटको छुआदिया वैसे वह गिरगिट भूषण व वस्त्र पहिने हुये दिव्यरूप राजों के समान होगया ॥

दो० ताके माथे मुकुटकी शोभा कही न जाय। मानो आभा सूर्यकी रही चहूंदिशि छाय ॥

और वह कुयें से निकलकर हरिचरणोंपर गिरपड़ा व हाथ जोड़कर बोला हे वैकुण्ठनाथ आपने मुझे महाविपत्तिमें दर्शन देकर कृतार्थ किया सिवाय तुम्हारे मुझ ऐसे अधर्मी को सुख देनेवाला तीनोंलोक में कोई नहीं है जब इसीतरह राजा नृग श्यामसुन्दरकी बहुत स्तुति करनेलगा तब प्रद्युम्न आदिक लड़कोंने यह अचम्भा देखकर मुरलीमनोहरसे पूछा हे महाप्रभु यह कौनहै व किस अपराध से गिरगिट हुआथा इसका भेद कहिये जिसमें हमारा संदेह छूटजाय यह वचन वृन्दावनविहारी ने सुना तब आप उसकी कथा कहने को न जानकर राजा नृगसे पूंछा तुम कोई देवता व किसी देशके राजा होकर गिरगिट तनुमें क्यों पड़े थे नृगने हाथ जोड़कर विनय किया हे अन्तर्यामी तुमसे कुछ छिपा नहीं है पर तुम्हारी आज्ञासे अपना वृत्तान्त कहता हूं सुनिये मैं पूर्वजन्म में राजा इक्ष्वाकु का बेटा नृग नाम बड़ा प्रतापी होकर नित्य दश हजार गौ विधिपूर्वक गृहस्थ व वेदपाठी ब्राह्मणों को दान देता था सिवाय गौके और बहुत से मकान बनवाकर सब वस्तु संयुक्त संकल्प देके ब्राह्मणों की कन्याओं का विवाह करादिया करता था व बड़े बड़े ढेर अन्न व मिठाई के ब्राह्मणों को दान देकर बहुत से देवस्थान व जलाशय संसारी जीवों को पानी पीने के वास्ते बनवा दिये थे जगत् में मेरे दान व शुभकर्म करने की ऐसी कीर्ति फैली जिसका वर्णन नहीं करसक्ता एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि एक गौ मेरी दान दी हुई ब्राह्मण के यहां से भाग आई व जो गौवें मैंने दूसरे दिन दान देने को मँगवाई थीं उनमें मिलगई जब प्रात समय अनजान से वह गौ मैंने दूसरे ब्राह्मण को संकल्प कर दिया

व प्रथम दान लेनेवाले ब्राह्मण ने राह में उस गौको पहिंचाना तब दोनों ब्राह्मण झगड़ते हुये गौ समेत मेरे पास आये मैंने उनसे हाथ जोड़कर कहा मुझ से लाख रुपैया या लाख गौ उसके बदले लेकर अपना झगड़ा छोड़देव पर दोनों ने नहीं माना और गौ छोड़कर अपने घर चले गये व जाते समय मुझे शाप दिया कि तू गिरगिट के समान मूड़ी हिलाता है इसलिये गिरगिटान होजा जब कुछ दिन बीते मैं मरगया तब उसी शाप से धर्मराज ने मुझे गिरगिट तनु देकर इस कुयें में डालदिया व विनय करने पर यह कहा कि श्रीकृष्णजी के दर्शन पानेसे तेरी मुक्ति होगी उसी दिन से तुम्हारे दर्शनों की अभिलाषा रखता था सो आज आपने कमलरूपी चरणों का दर्शन देकर मेरा उद्धार किया जिस तरह आपने मुझ ऐसे अधर्मी को अपना दर्शन देकर कृतार्थ किया उसी तरह दयालु होकर ऐसा वरदान दीजिये जिसमें तुम्हारे चरणों की भक्ति मुझे बनी रहै जब द्वारकानाथ ने राजा नृग को इच्छापूर्वक वरदान देकर विदा किया और वह उत्तम विमान पर बैठकर देवलोक को चला गया तब श्यामसुन्दर ने अपने सन्तान व यदुवंशियों से जो वहां पर खड़े थे उनसे कहा देखो ब्राह्मणों की महिमा इतनी बड़ी है कि बिना अपराध भी ब्राह्मण किसी पर क्रोध करैं तो उसके वास्ते अच्छा नहीं होता ज्ञानी को चाहिये कि किसी ब्राह्मण का धन न लेवे जिस तरह अग्नि के खाने से मुख जलता है उसीतरह ब्रह्मअंश लेनेवाले की गति समझना चाहिये विष खाने से एक मनुष्य मरता व ब्रह्मअंश लेनेवाले के कुल परिवार का पता नहीं लगता विष खानेवाला औषध करने से अच्छा भी होजाता है पर ब्रह्मअंश लेनेवाले का दुःख छूटने के वास्ते कोई औषध काम नहीं करती जो मनुष्य अनजान में भी ब्राह्मण का धन या पृथ्वी लेता है उसके तीन पुरुषा नरक में पड़ते हैं और जो कोई ब्राह्मण की वस्तु बरजोरी छीन लेताहै उसके दश पुरुष माता व पिता को नरक भोगना पड़ता है व जो लोग दान दिया हुआ अपना ब्राह्मण से फेरलेते हैं उसको साठहजार वर्ष नरक का कीड़ा होकर फिर नीच

जाति में जन्म मिलता है पर उनका कईबार गर्भपात होकर जब उत्पन्न होते हैं तब कंगाल व रोगी रहकर जन्म उनका बीतता है राजा नृग की दशा जिसमें अजान से अधर्म हुआ था वह देखकर यह बात सत्य समझना चाहिये॥

दो० दान देत द्विजराज को विघ्न करै जो कोय। सो होवै अतिपातकी नरकवास तिहि होय॥

कदाचित् ब्राह्मण तलवार खींचकर मारने आवे तो शिर अपना उसके चरणों पर रखदेना उचित है व सिवाय अधीनताई के उन्हें कठोर वचन कहना न चाहिये मेरे ऊपर क्रोध करै या दुर्वचन कहे तो मैं कुछ बुरा न मानकर और उसकी सेवा करता हूं तुम लोगों ने सुना होगा कि भृगु ऋषीश्वर ने विना अपराध सोते समय मेरी छाती में लात मारी थी तब मैं पैर उनका यह समझकर दाबने लगा कि मेरी छातीकी चोट उनके न लगी हो यह समझकर ब्राह्मण का सन्मान करना उचित है व ब्राह्मण के प्रसन्न होने से लोक व परलोक दोनों बनता है और ब्राह्मण से झूंठ बोलना व ब्याज लेना न चाहिये जो लोग ब्राह्मण को मेरे समान न जानकर उसमें कुछ भेद समझते हैं उन्हें अवश्य नरक भोगना पड़ता है व ब्राह्मणों को माननेवाले मेरे चरणों की भक्ति पाकर परमपद को पहुँचते हैं इसलिये तुमलोग मेरे कहने का प्रमाण किया करो॥

दो० ऐसी विधि समझायके माखन प्रभु यदुराय। यदुवंशिन को साथ ले मन्दिर पहुँचे आय॥

जब श्यामसुन्दर ने राजा उग्रसेन से यह सब हाल कहा तब उन्होंने ब्राह्मणों को बहुत उत्तम जानकर दण्डवत् किया इतनी कथा सुनकर परीक्षित ने पूंछा हे मुनिनाथ राजा नृग ऐसे धर्मात्मा ने अनजान में थोड़ा पाप करने से क्यों इतना दण्ड पाया शुकदेवजी बोले राजा नृगको अपने दान धर्म करने का अभिमान रहता था इसलिये उसकी यह गति हुईथी दान व धर्म में गर्व करना न चाहिये॥

पैंसठवां अध्याय।

बलरामजी का वृन्दावन में जाना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित एकदिन श्याम व बलरामजी दोनों

भाई राजमन्दिर में बैठे थे उस समय बलभद्रजी ने वृन्दावन व गोकुल का सुख व आनन्द व यशोदा का प्रेम वर्णन करके श्रीकृष्णजी से कहा कि वृन्दावन से आते समय हम दोनों भाइयों ने यशोदा व गोपियों से करार किया था कि फिर आनकर तुमसे मिलेंगे सो वहां जाने का संयोग नहीं हुआ और हमलोग द्वारका में आनबसे सब व्रजवासी हमारे विरह में चिन्ता करते होंगे आप आज्ञा दीजिये तो हम वहां जाकर सबको धैर्य दे आवैं केशवमूर्ति बोले बहुत अच्छा यह वचन सुनतेही बलरामजी ने मुरलीमनोहर व अपने माता व पिता से बिदा होकर हल व मूशल अपना शस्त्र उठालिया व रथपर बैठकर वृन्दावन को चले जिस जिस देश व नगर में बलदाऊजी पहुँचते थे वहां के राजा आगे से आनकर सन्मानपूर्वक उन्हें अपने घर लेजाते थे व छत्तीसव्यंजन खिलाकर अनेक तरह की वस्तु उन्हें भेंट देते थे इसीतरह रेवतीरमण सब राजाओं से भेंट करते व उनको सुख देतेहुये उज्जैन में अपने सांदीपन गुरुके स्थान पर पहुँचे तब गुरुनारायण व उनकी स्त्रीको साष्टांग दण्डवत् करके उनका आशीर्वाद लिया जब दश दिन वहां रहकर फिर वृन्दावन में आये तो क्या देखा कि जिन गायों को श्यामसुन्दर आप चराया करते थे वे सब गौ ध्यान श्यामसुन्दरका करके वनमें चारोंओर बिड़री फिरती हैं व मुँह बायबायकर सिवाय चिल्लानेके घास चरने पर कुछ चाहना नहीं रखतीं व उनके पीछे पीछे ग्वाल बाल श्यामसुन्दरका यश गाते व प्रेमरंग राते चले जाते हैं व ठौर ठौर व्रजवासीलोग बालचरित्र मोहनप्यारे का आपस में कहकर व सुनकर उसी चर्चामें जन्म अपना काटते हैं जब बलरामजीने यह दशा देखतेही आंखोंमें आंसूभरके रथ अपना खड़ा किया तब नन्द व यशोदा आदिक सब गोपियां व ग्वाल उनके आनेका समाचार सुनकर बड़े प्रेम से मिलनेके वास्ते दौड़े व बलरामजी को देखकर अति प्रसन्न हुये॥

दो० नन्द तात देखे तभी और यशोदा माय। बलदाऊ अति प्रेमसों गिरे चरण पर धाय॥

नन्द व यशोदाने बलरामजीको अपने चरणों परसे उठाकर छाती में लगा लिया व मुख चूमकर प्यार किया जब बलरामजीने ग्वाल बालोंके

गले मिलकर उनकी कुशल पूंछी तब ब्रजवासीलोगोंने श्याम व बलराम का बालचरित्र याद करके आंखोंमें प्रेमके आंसू भर लिये फिर नन्द व यशोदाने बलदाऊजी को बड़े प्रेमसे घर लेजाकर कहा अय बेटा हमलोगों को तुम्हारे विरहमें एक क्षण वर्षके समान बीतता है तुम अपना हाल बतलाओ हमारे विना इतने दिन वहां क्योंकर रहे तुम धन्य हो जो इतने दिनपर आनकर हमारी सुधि ली व अपना चन्द्रमुख दिखलाकर हमारी आत्मा ठण्ढी की कहो मोहनप्यारे व राजा उग्रसेन व वसुदेव आदिक यदुवंशी कभी हम को याद करते हैं या नहीं बलरामजी बोले हे नन्दबाबा तुम्हारी कृपासे मुरलीमनोहर सब यदुवंशियों समेत प्रसन्न होकर दिनरात आपका यश गाते हैं यह सुनकर यशोदा बोली हे बलरामजी जब से मोहनप्यारे हमलोगोंकी प्रीति छोड़कर मथुरा में चलेगये तबसे हमारी आंखोंके सामने अँधेरासा छाया रहकर आठोंपहर उन्हींकी याद व चर्चा में दिन बीतताहै कदाचित् मथुरामें रहते तो कभी कभी उनको देख आती इतनी दूर द्वारकामें जाने नहीं सक्ती ॥

चौ० कहिये कहा कृष्णकी बाता। जिनको हम चाहैं दिन राता॥
वे हमको चाहत कछु नाहीं। ऐसे निठुर भये मन माहीं॥

हे बलदाऊजी वह ऐसा निर्मोही है कि कभी अपना संदेशाभी नहीं भेजता सच पूंछो तो अब वे द्वारकापुरीके राजा होकर हम गरीबोंको क्यों याद करैंगे ॥

दो० अवतो महाधनी भये सब राजनके राज। ग्वालनकी सुधि करतही उनको आवत लाज॥

हे बलरामजी भला यह बतलाओ कन्हैया कभी मेरी व राधा आदिक गोपियों की सुधि करता है या नहीं मेरे निकट वह यहांसे वहां अधिक सुख पाताहै पर हमलोगोंको उसके देखे विना चैन नहीं पड़ती देखो रोहिणीने भी हमारी प्रीति छोड़कर श्यामसुन्दरको ऐसा वश कर लिया कि उसने कभी अपना दर्शन नहीं दिया जब यशोदा इसीतरह अनेक बातें कहकर रोने लगी तब बलदाऊजीने उसको समझाकर धैर्य दिया जब बलभद्रजी संध्यासमय वृन्दावन गांवमें निकले तो क्या देखा कि

राधा आदिक सब ब्रजबाला तनुक्षीण मन मलीन श्यामसुन्दरके ध्यानमें जिधर तिधर फिरती हैं व सिवाय जिकर व चर्चा बालचरित्र मोहनप्यारे के दूसरा कुछ प्रयोजन उनको नहीं है जैसे राधा आदिक गोपियों ने बलदाऊजी को अकेले में देखा वैसे झुण्डका झुण्ड उनके पास आनकर दण्डवत् करके पूंछनेलगीं कहो बलरामजी तुम कब आये हमारे प्राणनाथ कभी हमलोगोंको याद करतेहैं या नहीं जबसे हमें वृन्दावन छोड़कर आप मथुरा गये तब से एक बेर उद्धवके हाथ योग साधनेका संदेशा हमको भेजा था फिर कुछ सुधि नहीं लिया अब सुनाहै कि समुद्रके टापूमें द्वारकापुरी बसाकर वहां रहते हैं अब हम गरीबिनियोंको क्यों याद करेंगे यह सुनकर दूसरी सखी बोली अय प्यारी अब उन्हें क्या प्रयोजन है जो राजगद्दी छोड़कर यहां आवैं॥

चौ० वह काहूके नाहीं मीत। मात पिताकी छोड़ी मीत॥
राधा बिन नहिं रहते घड़ी। सो वहहै बरसाने पड़ी॥

दो० सखी एक याविधि कहै सुनो कृष्णके भाय। जब लौं तुम ब्रजमें हते रहे चरावत गाय॥

दूसरी ब्रजबालाने कहा अय प्यारियो हमलोगोंने लोकलाज व कुल परिवार छोड़कर उससे प्रीति लगाकर क्या सुख पाया उससे कोई अपनी भलाईकी आशा मत रक्खो व दूसरी गोपी बोली द्वारका की स्त्रियां उन का विश्वास किसतरह करती होंगी दूसरीने कहा मैं ऐसा सुनती हूं कि उन्होंने द्वारकापुरीमें जाकर सोलह हजार एकसौ आठ महासुन्दरी राजकन्याओंसे अपना विवाह किया है व उनके साथ आठों पहर प्रीति करते हैं अब उन्हें छोड़कर हम गँवारियोंके पास क्यों आवेंगे॥

दो० सोरहसहस कुमारिका सुन्दर रूप निधान। दश दश सुत जिनके भये श्रीयदुनाथसमान॥

दूसरी गोपी बोली अय सखी अब श्यामसुन्दर का पछितावा करना उचित नहीं है और उद्धवजी जो कि निर्गुणरूप का ध्यान बतला गये हैं उसी पर विश्वास रखकर धैर्य धरो दूसरी सखी ठण्ढी श्वास लेकर बोली अय प्यारी मुझे वह सांवली सूरति व मुरली की धुनि नहीं भूलती किस तरह धैर्य धरूं॥

दो० नहिं जानों सखि ज्ञानको कौन देश की रीति। मानहुँ कबहूं नहिं हती व्रजवासिनसों प्रीति॥

दूसरी सखी विरह की माती हुई बोली अय बलदाऊजी देखो मोहन-प्यारे ने इतने दिन बीतने पर भी यह नहीं विचारा कि हमारे विरहमें गोपियों की क्या दशा होती होगी संसार में जो कोई पशु पक्षी पालता है उसको भी इसतरह नहीं भूलता यह कठोरताई उनकी देखकर मैंने जाना कि उनका अन्तःकरण भी उन्हीं के समान काला है नहीं तो वह दीन-दयालु व गोपीनाथ कहलाकर ऐसा कठोरपन न करते जब गोपियां इसी तरह पर अनेक बातें कहकर रोते रोते अचेत होगईं तब रेवतीरमणने उन्हें बहुतसा धैर्य देकर कहा क्यों इतना रुदन करती हो श्यामसुन्दर तुम्हारी अतिप्रीति रखकर तुमको आठों पहर याद किया करते हैं यह वचन सुनतेही सब व्रजबाला चैतन्य होकर उनमें से एक सखी बोली अय प्यारियो रोना छोड़कर जो कहूं सो करो॥

चौ० हलधरजूके परसो पांव। सदा रहो इनहीं की छांव॥
यहहैं गौर श्याम नहिं गाता। करिहैं नहीं कपटकी बाता॥
सुनि संकर्षण उत्तर दियो। तुम्हरे हेतु गमन हम कियो॥
आवन हम तुमसे कहिगये। ताकारण हम आवत भये॥
रहि दोमास करैंगे रासा। पुरवैंगे सब तुम्हरी आसा॥

जब बलरामजी गोपियोंसे प्रेमपूर्वक बातें कहकर मन उनका बहलाने लगे तब एक व्रजबाला ने कहा हे बलभद्रजी तुम्हारा भाई बड़ा कठोर है हमलोग ऐसा जानतीं तो कभी उससे प्रीति न करतीं दूसरी बोली अय बलदाऊजी वह चित्तचोर यहां सिवाय गाय चराने व मक्खन व दही चुराकर खानेके दूसरा प्रयोजन नहीं रखताथा अब वहां द्वारकापुरीका राजा हुआ हम गरीबिनियोंकी याद क्यों करेगा हमारा नाम लेनेसे उसे लज्जा आती होगी दूसरी सखी जो विरह में व्याकुल थी वह झुंझलाकर बोली अब मैंने मन अपना श्रीकृष्णजी के समान कठोर करलिया उन्हें धन व स्त्री प्रतिदिन अधिक मिलैं में इसी दुःखसागर में प्रसन्न हूं दूसरी गोपी ने कहा मैं सुनती हूं कि श्यामसुन्दर का प्रद्युम्न बेटा अपने पिताके समान सुन्दर व बलवान् हुआ है व सोलह हजार एकसौ आठ उनकी स्त्रियां व

सब सन्तान चिरंजीव रहैं दूसरी ने कहा अक्रूर निर्दयी जो यहां आनकर हमारे प्राणनाथ को लेगया व उद्धवजी हमलोगों से योग सधवाने आया था वे दोनों अच्छीतरह हैं दूसरी गोपी बोली अय बलराम जो तुम हमारी बातों को हँसी न मानकर सच सच बतलाओ कि श्यामसुन्दर की स्त्रियां उनकी बात का विश्वास करती हैं या नहीं दूसरी ब्रजबाला ने कहा उनमें जो बुद्धिमान् होंगी वह कभी उनकी बात का विश्वास न करेंगी दूसरी सखी ने कहा हे बलदाऊजी कभी नन्दलालजी उन स्त्रियों के सन्मुख हमारी भी चर्चा व याद करते हैं या नहीं भला तुम्हीं न्याव करो जिसके वास्ते हमलोग लाज छोड़कर इतना दुःख पाती हैं उसने हमें इसतरह छोड़ दिया है कि जिसतरह सर्प केचुल तजकर फिर उससे कुछ वास्ता नहीं रखता उस निर्दयी की बात कहते हुये मेरी छाती फट जाती है जब इसीतरह सब ब्रजबाला अनेक बातों को कहकर ठण्ढी ठण्ढी श्वास लेने लगीं तब बलदाऊजी ने उन्हें धैर्य देकर कहा आज पौर्णमासीकी चांदनी रात में तुम लोग अपना अपना शृंगार कर आवो तो हम तुम्हारे साथ रासलीला करैं यह बात सुनतेही सब ब्रजबालों ने अपने अपने घर जा कर शृंगार किया जब संध्यासमय बलभद्रजी अति उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर वृन्दावनकी कुंजोंमें गये तब राधा आदिक गोपियां भी पहुँचीं॥

चौ० ठाढ़ी भईं सबै शिरनाय। हलधर छवि बरणी नहिं जाय॥
कनकबरण नीलाम्बर धरे। शशिमुख कमलनयन मन हरे॥
अंगअंग सब भूषण साजे। देखत कामदेव अति लाजे॥

रेवतीरमण की छवि देखतेही सब ब्रजबालों ने उनके चरणों पर गिर कर विनय किया हे दीनानाथ अपने वचन के प्रमाण रासलीला कीजिये यह सुनते ही जैसे बलरामजी ने हूं किया वैसे स्थान रासलीला का यमुना किनारे तैयार होकर शीतल मन्द सुगन्ध हवा बहने लगी व अनेक रंग के बाजे व भूषण व वस्त्रादिक वहां प्रकट होगये तब सब ब्रजबालों ने लाज छोड़कर मृदंग व करताल आदिक बाजा उठा लिया व गति नाचकर अपने गाने व बजाने व भाव बतलाने से बलदाऊजी

को रिझाने लगीं जब रेवतीरमण भी उनका सच्चा प्रेम देखकर उनके साथ गाने व नाचने लगे तब वरुण देवता ने उत्तम वारुणी उनके पीने के वास्ते भेजदी सो बलदाऊजी गोपियों समेत पीकर आनन्द मचाने लगे उस समय देवतों ने अपने अपने विमानों पर से बलदाऊजी पर फूल बरसाये व चन्द्रमा ने तारागण समेत रासमण्डल का सुख देखकर उनपर अमृतकी वर्षा की व जितने जीव जड़ व चैतन्य वहां पर थे वे परमानन्द देखकर अति प्रसन्न हुये व रासलीला देखने के वास्ते यमुनाजल बहने से थम्हिकर चलना हवा का बन्द होगया उसी आनन्द में रेवतीरमण ने जलविहार करना विचारकर यमुनाजी को पुकार के कहा तुम हमारे निकट आनकर हमें स्नान कराओ व जब यमुनाजी ने उनकी आज्ञा नहीं मानी तब बलरामजी ने क्रोध से हल अपना यमुनाजी में डालकर पानी उसका अपने पास खींच लिया व उसमें जलविहार करके मांदगी जागने की मिटाई उस समय यमुनाजी ने स्त्रीरूप डरती व कांपती हुई हलधरजीके पास आनकर विनय किया हे महाप्रभु मैंने तुमको नहीं पहिंचाना कि आप शेषजी का अवतार हैं मेरा अपराध आप क्षमा करके अभयदान दीजिये जब इसीतरह यमुनाजी ने बहुत स्तुति बलदाऊजीकी की तब वह अपराध उसका क्षमा करके गोपियों समेत इस तरह यमुना जल में विहार करते रहे जिसतरह हाथी पानी में हथिनियों के साथ नहाकर प्रसन्न होताहै ॥

दो० कबहूं निर्मल जल विषे कबहूं यमुनातीर। गोपिन सँग क्रीड़ा करैं श्रीबलराम सुधीर ॥

जब रेवतीरमण जलविहार करके गोपियों समेत बाहर आये तब वरुणादिक देवतोंने उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र व मोतियोंकी मालाका वहां ढेर लगा दिया सो बलरामजी व गोपियों ने मनमाना भूषण व वस्त्र पहिन लिया व गलेमें फूलोंके गजरे डालकर वनविहार किया उसी दिन से वहां पर यमुनाजल टेढ़ा बहताहै जब इसीतरह बलदाऊजीने दो महीने चैत्र व वैशाख वृन्दावनमें रहकर नित्य ब्रजबालों के साथ रासविलास व जलविहार करके उन्हें सुख दिया व दिनभर नन्द व यशोदा आदिक को श्यामसुन्दरकी चर्चासे सुख देकर द्वारका जाने की इच्छा की तब नन्दा-

दिक अनेक तरहकी वस्तु श्यामसुन्दरके वास्ते देकर रेवतीरमणको विदा किया उस समय गोपियां रोकर कहने लगीं हे बलदाऊजी हमें भी अपने साथ ले चलो रेवतीरमण उन लोगों को धैर्य देकर द्वारकाको चले व थोड़े दिनों में आनन्दपूर्वक द्वारका पहुँच कर सब हाल वहां का केशवमूर्ति से कह दिया ॥

छासठवां अध्याय ।

श्रीकृष्णजी का राजा पुण्डरीक मिथ्या वासुदेवको मारना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित उन्हीं दिनों पुण्डरीक नाम कंतितदेश का राजा बड़ा प्रतापी होकर काशीपुरी में रहता था जब उसे यह इच्छा हुई कि मैं अपने को वासुदेव नाम चतुर्भुजी रूप बनाकर संसारी जीवों से अपनी पूजा कराऊं तब उसने दो भुजा काठ की अपने अंग में लगा लिया और पीताम्बर व वैजयन्ती माला व कुण्डल व वनमाला श्यामसुन्दर के समान पहिरने लगा व शङ्ख व चक्र व गदा व पद्म उनके शस्त्र बांधकर काठका गरुड़ चढ़ने के वास्ते बनवाया व जो राजा व प्रजा पुंडरीक का डर मानकर उसे वासुदेव के समान पूजते थे उनपर वह प्रसन्न होता था व जो लोग अपना धर्म विचारकर उसकी पूजा नहीं करते थे उनको दुःख देताथा यह दशा उसकी देखकर संसारीलोग आपस में यह चर्चा करते थे देखो एक वासुदेव तो श्रीकृष्ण नाम यदुकुल में अवतार लेकर वीच द्वारकापुरी के विराजते हैं दूसरे यह राजा अपने को वासुदेवरूप बनाकर पुजवाने चाहता है इन दोनों में हमलोग किसे सच्चा समझें किसे झूंठा जब राजा पुण्डरीकको अपनी पूजा कराने से अभिमान उत्पन्न हुआ तब एक दिन अपनी सभा में बैठकर बोला श्रीकृष्ण नाम कौन द्वारका में रहता है जिसे लोग वासुदेव कहते हैं देखो मैं पृथ्वी का भार उतारने वास्ते अवतार लेकर लीला करता हूं और वासुदेव यादवका बेटा मेरा वेष बनाकर संसारी जीवों से अपनी पूजा कराता है इसलिये उसके साथ लड़ना चाहिये ऐसा कहकर राजा पुण्डरीकने एक ब्राह्मणको बुलाकर कहा तुम द्वारका में जाकर श्रीकृष्णजी से कह दो कि मेरा वेष

छोड़कर हमारी आज्ञा पालन करैं नहीं तो हमारे साथ आनकर लड़ैं जब यह संदेशा लेकर वह ब्राह्मण द्वारका में पहुँचा व राजा उग्रसेन के सामने खड़ा हुआ तब द्वारकानाथने उस ब्राह्मण को दण्डवत् करके पूंछा कहो द्विजराज कहां से आये अपने समाचार बतलाओ यह वचन सुनतेही उस ब्राह्मणने हाथ जोड़कर कहा हे महाप्रभु मैं राजा पुण्डरीकका कुछ संदेशा कहने वास्ते काशी से आया हूं पर वह कहते हुये लज्जा मालूम होती है व दूतको संदेशा छिपाना न चाहिये इसलिये अपने प्राण की रक्षा पाऊं तो कहूं श्यामसुन्दर बोले तुम निस्सन्देह कहो इसमें तुम्हारा कुछ अपराध नहींहै यह वचन सुनकर ब्राह्मण देवताने कहा हे दीनानाथ राजा पुण्डरीकने आपको यह सन्देशा कहला भेजा है कि त्रिभुवनपति जगत् का उत्पत्ति करनेवाला मैं होकर आठ पटरानीसे भोग व विलास करताहूं और पृथ्वी का भार उतारने वास्ते मैंने अवतार लिया है शङ्ख व चक्र व गदा व पद्म मेरे पास रहकर गरुड़जी पर मैं चढ़ताहूं तुम मेरा वेष बनाये रहकर अपने को वासुदेव नाम क्यों प्रकट करते हो और तुम त्रिभुवनपति होते तो राजा जरासन्ध के डर से भागकर द्वारका में क्यों रहते अब तुमको उचित है कि शङ्ख व चक्र व गदा व पद्मादिक शस्त्र बांधना व वासुदेव नाम अपना प्रकट करना छोड़कर मेरी आज्ञा में रहो नहीं तो यदुवंशियों समेत तुम्हैं मारकर पृथ्वी का भार उतारूंगा तब तुम जानोगे कि सच्चा वासुदेव कौन होकर झूठा वेष किसने बनाया है तुम आजतक नहीं जानते कि अलख अगोचर निरंजनका रूप त्रिलोकीनाथ मैं हूं सब ऋषि व मुनि मेरे नाम पर यज्ञ व दान जप व तप करके बड़ाई पाते हैं व मैं ब्रह्मारूप होकर उत्पत्ति व विष्णुरूप से पालन व महादेवरूप होकर जगत् का नाश करताहूं व हमने मच्छरूप होकर वेद को समुद्र से बाहर निकाला व कच्छपरूप से मन्दराचल पर्वत अपनी पीठपर उठाया व वाराहरूप धरकर पृथ्वी को पाताल से निकाल लाये व नरसिंह अवतार लेकर हिरण्यकशिपु दैत्यको मारा व वामनरूप धरकर राजा बलिसे पृथ्वी दान लिया व राम अवतार लेकर रावणका वध किया मेरा यही काम है जब जब दैत्य व

अधर्मी राजा हरिभक्तों को दुःख देते हैं तब तब मैं अवतार लेकर पृथ्वीका भार उतारता हूं इसी वास्ते अब भी अवतार लियाहै कृष्णचन्द्रआनन्दकन्द बड़े हर्ष से उसका संदेशा सुनते थे पर दूसरे यादववंशी यह मिथ्या वचन सुनकर उस ब्राह्मण को हँसने लगे व एक यादववंशी क्रोधित होकर बोला हे ब्राह्मणदेवता तुम क्या मिथ्या कहते हो कोई दूसरा यह झूंठी बात आनकर कहता तो विना मारे न छोड़ते यह सुनकर श्रीकृष्णजी ने यादववंशियों से कहा सुनो भाई दूतपर क्रोध करना न चाहिये॥

दो० राजसभा में बैठकर कबहूं हँसिये नाहिं। या समान अवगुण नहीं लिख्यो पुराणन माहिं॥

यदुवंशियों से ऐसा कहकर श्यामसुन्दर उस ब्राह्मण से बोले हे द्विज-राज तुम अपने राजासे जाकर कहदेव कि हम तुम्हारा संदेशा सुनकर अति प्रसन्न हुये वह अपने यहां युद्ध की तैयारी करै मैं आनकर अपना वेष छोड़ दूंगा या उससे वासुदेव वेष छुड़ाकर उसका मांस कौवे व कुत्तों को खिलाऊंगा यह वचन सुनतेही ब्राह्मण ने काशी में आनकर सब हाल राजा पुण्डरीक से कहा जब कुछ दिन बीते श्यामसुन्दर ने यदुवंशियों समेत काशीपुरी के निकट पहुँचकर पांचजन्य शङ्ख अपना बजाया तब राजा पुण्डरीक वह शब्द सुनतेही दो अक्षौहिणी दल संग लेकर दैत्य-संहारण के सामने आया जब पारसंग्रह भौमासुर के भाई व मित्र काशी-नरेश ने जो प्रयाग में राजा था यह हाल सुना तब वह भी तीन अक्षौ-हिणी सेना साथ लेकर उसकी सहायता करनेवास्ते काशीजी में आन पहुँचा जिस समय दोनों दलमें मारू बाजा बजकर तीर व तलवार आदिक अनेक तरह का शस्त्र चलने लगा उस समय शूरवीर मार मार कहकर अपना प्राण देते व कायर लोग पीछे को भागकर गिर पड़ते थे जब रण-भूमिमें राजा पुण्डरीक ने चतुर्भुजी रूप बनाये हुए श्यामसुन्दर के सामने आनकर उन्हें ललकारा तब वैकुण्ठनाथ ने हँसते हुये उसका मुकुट उतार कर कहा अब सच बतलावो किसका पाखण्डी रूप है हे राजन् जो संदेशा हमको तुमने कहला भेजा था वह याद होगा उसी प्रमाण हम तुम्हारे पास आये हैं अबभी मेरा वेष अपने अंगसे उतारकर तुम यह बात कहो

कि हमसे अपराध हुआ जो ऐसा संदेशा भेजा तो प्राण तुम्हारा छुड़ा देवैंगे नहीं तो तुम्हारा शिर काटलूंगा जबउस अज्ञान राजाने श्यामसुन्दर का कहना नहीं माना तब दैत्यसंहारणने सुदर्शनचक्र से कहा तुम अभी जाकर अपनी ज्वालासे सब हाथी व घोड़े व रथ व सवार व पैदल आदिक जो दोनों राजों की सेना में हैं जलादेव यह आज्ञा पाते ही सुदर्शनचक्र ने दोनों राजों की सेना में जाकर इस तरह अपनी अग्नि से सब मनुष्य व हाथी आदिक को जला दिया जिस तरह प्रलयकालकी अग्नि सब जगह को भस्म कर डालती है जब केवल पुण्डरीक व भौमासुर का भाई दोनों राजा रहगये तब यदुवंशियों ने कहा हे द्वारकानाथ पुण्डरीक को इस रूपसे हमलोग नहीं मारसक्ते यह वचन सुनकर मुरलीमनोहर बोले तुमलोग धैर्य रक्खो यह अभी अपने दण्डको पहुँचताहै जब ऐसा कहकर दैत्यसंहारणने सुदर्शनचक्र को उन दोनों राजों के शिर काटने वास्ते आज्ञा दी तब सुदर्शनचक्र ने जाकर पहिले दोनों भुजा काठकी जो पुण्डरीक लगाये था उखाड़डालीं यह दशा देखतेही जैसे पुण्डरीक अपना प्राण लेकर भागा वैसे सुदर्शनचक्रने दोनों राजोंका शिर काटलिया सो मुरलीमनोहर की इच्छानुसार शिर काशीनरेश का नगर के द्वारपर आन गिरा व चैतन्य आत्माने मुक्तिपदवी पाई ॥

दो० वैर कियो हरिनाथसों रह्यो सदा चितलाय। दीनी तेहि सायुज्य गति दयासिन्धु यदुराय ॥

जब नगरवासियोंने शिर राजा पुण्डरीक का पहिंचानकर राजमन्दिर में यह हाल कहा तब रानियां अतिविलाप से रोकर कहने लगीं तुम तो अपने को अजर अमर कहते थे सो क्षणभरमें किस तरह तुम्हारा प्राण निकलगया जब सब रानियां उसी शिरके साथ सती हो गईं तब सुदक्षिण बेटा पुण्डरीक का क्रोधित होकर बोला जिसने मेरे पिताको वध कियाहै उसे विना मारे नहीं छोडूंगा इसी इच्छासे राजकुमार महादेवजी का तप करने लगा और श्यामसुन्दर विजय करके यदुवंशियों समेत आनन्दपूर्वक द्वारका चले आये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब कुछ दिनोंतक सुदक्षिणने प्रेमपूर्वक तप व ध्यान शिवशंकर का किया तब

भोलानाथ उसे दर्शन देकर बोले तू क्या चाहता है राजकुमारने शिवजी को दण्डवत् करके विनय किया हे दीनानाथ मैं अपने पिताके मारनेवाले से बदला लिया चाहताहूं यह सुनकर महादेवजी बोले पुण्डरीक का पलटा लिया चाहता है तो वेदके मंत्र उलटे पढ़कर दक्षिणाग्नि में होम कर उस अग्निकुण्डसे एक राक्षसी निकलकर तेरी आज्ञा पालन करेगी पर जो लोग परमेश्वर व ब्राह्मण की भक्ति नहीं रखते उनपर तेरा बल चलेगा व हरिभक्त व महात्मासे विरोध करने में तेरा प्राण जाता रहैगा जब ऐसा कह कर शिवजी अन्तर्धान होगये तव सुदक्षिण यज्ञ कराने लगा जब यज्ञ उसका उनकी आज्ञानुसार पूर्ण हुआ तब कृत्या नाम राक्षसी काले काले व बड़े बड़े दांतवाली त्रिशूल हाथ में लिये डरावनी मूरति बनाये ओठ चाटती हुई अग्निकुण्डसे निकलकर बोली हे सुदक्षिण तेरा शत्रु कहां है बताव यह सुनकर राजकुमारने कहा मेरा वैरी वासुदेव नाम द्वारकापुरी में है तू अभी जाकर उसे मारडाल यह वचन सुनतेही कृत्या उसी समय चल कर राहमें नगर व वन जलाती हुई द्वारका पहुँची जब वह अपने तेज से द्वारकापुरीको जलाने लगी तब द्वारकावासियोंने घबड़ाकर वसुदेवनन्दन के पास जो चौपड़ खेल रहेथे जाकर विनय किया हे दैत्यसंहारण एक राक्षसी न मालूम कहांसे आनकर नगरको जलाती है इसके हाथसे हमारा प्राण बचाइये यह सुनकर द्वारकानाथ बोले तुम लोग मत घबड़ाव अभी इस राक्षसीको जो काशीसे आईहै निकाले देताहूं इसतरह उन्हें धैर्य देकर श्यामसुन्दर ने सुदर्शनचक्रसे कहा तुम कृत्याको मारकर यहांसे भगा देव और काशीपुरी को जलाकर चले आवो यह वचन सुनतेही जब सुदर्शन ने कोटि सूर्य के समान तेज बढ़ाकर उस राक्षसीको खदेड़ा तब कृत्या वहां से भागी व उसने काशीमें आनकर सुदक्षिण व सब ब्राह्मणों समेत जो यज्ञ करातेथे मारडाला व सुदर्शनचक्रने भी पहुँचकर अपने तेजसे काशीपुरी को जलादिया जब उस समय सब प्रजा दुःखी होकर सुदक्षिण को गालियां देने लगी व सुदर्शनचक्र अपनी ज्वाला मणिकर्णिकाकुण्ड में ठंढी करके द्वारकापुरी को चले आये व सब हाल वहां का वैकुण्ठनाथ से कह दिया ॥

दो० यह प्रसंग चित लायकै कहै सुनै जो कोय। रहै सदा सुख चैन सों लहै नहीं दुख सोय ॥

सरसठवां अध्याय।

बलरामजीका द्विविद बांदर को मारना ॥

परीक्षितने इतनी कथा सुनकर विनय किया हे मुनिनाथ कुछ लीला बलरामजी की और वर्णन कीजिये शुकदेवजी बोले हे राजन् जिसतरह बलदाऊजी ने द्विविद बांदरको मारा था वह कथा कहते हैं सुनो द्विविद नाम बांदर सुग्रीव का मित्र किष्किन्धापुर में रहकर दश हजार हाथी का बल रखता था जब उसने भौमासुर अपने मित्रके मारे जानेका समाचार पाया तब वह उसका बदला लेने वास्ते बड़े क्रोधसे द्वारकापुरी को चला जो नगर व गांव राहमें उसे मिलते थे उन्हें उजाड़ता व स्त्रियों से बरजोरी भोग करता व पहाड़ व वृक्षों को उखाड़कर बस्ती आदिक पर फेंकता हुआ चला जाता था कभी अपने मंत्र व मायासे आग व पानी व पत्थर बरसाकर अनेक तरह का दुःख देता व कभी छोटे छोटे लड़कों को कन्दरामें छिपाकर भारी पत्थर उसके मुखपर रख आता व कभी वृक्षों को उखाड़कर उससे संसारी जीवोंको वध करता कभी लोगोंको उठा लेजाकर समुद्र में डाल देता व जहां ऋषि व हरिभक्तों को बैठा देखता वहां मल व मूत्र लोहू व पीब बरसाकर उन्हें सताता था ॥

चौ० कबहूं नारिन को लै आवै। आन पुरुष के संग सुलावै ॥
कबहूं लै पत्थर अति भारी। धरे ल्यायकर द्वार मँझारी ॥

दो० कबहूं पैठि समुद्रमें जल डारै झकझोर। बूड़ि जात तिहि नीर सों बहुत लोग चहुँओर ॥

जब वह इसी तरह लोगोंको दुःख देता हुआ द्वारकामें पहुँचा व छोटा रूप बनाकर श्यामसुन्दरके महलपर जा बैठा तब उसके डरसे सब रानियां मुरलीमनोहरकी अपना अपना द्वार बन्द करके भीतर छिपगईं उन दिनों बलरामजी रैवत पर्वत पर गन्धर्व व गन्धर्विनियों के साथ क्रीड़ा व विहार करने गये थे द्विविद बांदर ने यह हाल सुनकर विचार किया कि पहिले हलधर को मारकर पीछे से श्रीकृष्णका प्राण लूंगा ऐसा विचारतेही उसने रैवत पहाड़पर जाकर क्या देखा कि बलदाऊजी गन्धर्विनियों के साथ

मदिरा पीकर एक तालावमें जलविहार व गानविद्या कररहे हैं सो द्विविद बांदर छोटा रूप बनाकर एक वृक्ष पर जो तालावके किनारे था चढ़ गया व किलकारियां मारकर एक डालीसे दूसरी डाली पर कूदने लगा व मल व मूत्रसे गन्धर्बिनियोंके वस्त्र जो तालाव किनारे रक्खे थे नष्ट करदिये ॥

दो० कबहूं शाखा तोड़के डारत चारों ओर। कबहूँ भूमिपर उतरके करै शब्द अतिघोर ॥

जब उस बांदरने पत्थर मारकर मदिराका घड़ा जो रक्खाथा तोड़डाला तब स्त्रियोंने पुकारकर बलरामजीसे सब हाल उसका कहा यह वचन सुनतेही रेवतीरमणने तालावमें से निकलकर एक ढेला उस बांदरपर चलाया तब उसने वृक्षके नीचे आनकर सब चीर स्त्रियोंके फारडाले व जिधर तिधर फेंक दिये यह हाल देखतेही बलदाऊजी ने दौड़कर उस बांदरको हाथसे पकड़ लिया तब वह अपना छोटा रूप बनाकर हाथसे बाहर निकलगया व फिर पहाड़ के समान रूप धरकर बलदाऊजी से लड़नेवास्ते सन्मुख आया व बड़े बड़े वृक्ष व पर्वत पृथ्वीसे उखाड़कर उनको मारने लगा जब रेवतीरमण बड़े क्रोधसे हल मुसल अपना उठाकर मारने दौड़े तब द्विविद ने एक वृक्ष बहुत बड़ा जड़से उखाड़कर संकर्षणपर चलाया सो बलदाऊजीने बचाकर एक मुसल बांदरके शिरपर मारा उसका शिर फटकर इस तरह लोहू बहने लगा जिसतरह बरसात में गेरूके पहाड़से लाल पानी बहताहै पर उस बांदरने शिर फटने परभी दूसरा वृक्ष उखाड़कर बलदाऊजी को मारा तो रेवतीरमणने अपना मुसल मारकर वह वृक्ष तोड़डाला जब इसीतरह लड़ते लड़ते कोई वृक्ष या पत्थर वहां नहीं रहा तब दोनों आदमी इसतरह बेधड़क होकर आपस में कुश्ती व मुक्कासे लड़ने लगे कि देखनें वाले डरगये जब बहुत देरतक द्विविद बांदर ने बलरामजी से युद्ध करके दो चार मुक्का उन्हें मारा तब बलरामजी ने सब स्त्रियोंको उदास व घबड़ाई हुई देख करके द्विविदके गलेका हँसना ऐसा दबा दिया कि उसके नाक व आंख व कानसे लोहू बहकर वह मरगया जब उसकी लोथ गिरने से पृथ्वी कांपने लगी तब देवतोंने बलरामजी के ऊपर पुष्प बर्षाये व उनकी स्तुति व बड़ाई करते हुये अपने अपने लोकको चले गये ॥

दो० आनँद सों श्रीद्वारका हलधर पहुँचे आय। पुरवासी प्रफुलित भये ज्यों निर्धन धन पाय ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित द्विविद बांदर त्रेतायुग से किष्किन्धा में रहता था सो रेवतीरमणने मारकर उसका उद्धार किया ॥

अरसठवां अध्याय।

साम्बका लक्ष्मणासे विवाह होना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह बेटा साम्ब श्रीकृष्णजीका लक्ष्मणा नाम कन्या राजा दुर्योधन की हस्तिनापुर से विवाह लाया था वह कथा कहते हैं सुनो लक्ष्मणा नाम कन्या राजा दुर्योधन की विवाहने योग्य हुई तब दुर्योधनने स्वयम्बर उसका रचकर अनेक राजों को अपने यहां इकट्ठा किया जब साम्ब बेटा मुरलीमनोहर का भी यह हाल सुनकर हस्तिनापुरमें गया तो वहां क्या देखा कि अनेक राजा उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिने व शस्त्र लिये राजा दुर्योधनकी सभामें बैठे हैं व अनेक प्रकारका मंगलाचार वहां होरहा है उसीसमय राजकन्या अतिसुन्दरी व चन्द्रमुखी रत्नजटित भूषण व वस्त्र पहिने जयमाला हाथमें लिये सब राजों को देखती हुई हंसरूपी चालसे साम्बके निकट पहुँची तब उसका रूप देखतेही साम्बने मोहित होकर विचार किया कि ईश्वर जाने यह कन्या किसके गलेमें जयमाल डालदे तो फिर इसका हाथ आना कठिन होगा इसलिये बरजोरी इसको रथपर बैठाकर द्वारका ले चलना चाहिये ऐसा विचारतेही साम्बने लज्जा व भय छोड़कर लक्ष्मणाका हाथ पकड़ लिया व तुरन्त उसे रथपर बैठाकर द्वारकाको चले यह हाल देखकर सब राजा जो स्वयम्बर में आये थे लज्जित होगये व दुर्योधन धृतराष्ट्र आदिक कौरव लज्जित होकर बड़े क्रोधसे आपसमें कहने लगे देखो साम्बने हमलोगों का कुछ भय न मानकर ऐसा अंधेर किया कि राजकन्या को स्वयम्बरमेंसे बरजोरी लेगया कदाचित् इन तिलकधारी राजोंमें से कोई ऐसा करता तो कुछ संदेह नहीं था यादवलोग सदासे अपनी कन्या हमारे घराने में देते आये हैं यह बड़ी लज्जाकी बात है कि उनका बेटा जो भालूका नाती है हमलोगों के सामनेसे राजदुलारी को उठा लेजावे यह अपयश हमारा

कभी न छूटेगा और हमारी जानमें श्रीकृष्णजी अपने पुत्रका अपराध समझ कर उसकी सहायता नहीं करेंगे कदाचित् अधर्मकी राह लड़ने भी आवैं तो इसतरह हार जावैंगे जिसतरह कामी पुरुष रोग उत्पन्न होने से तुरन्त मरजाते हैं जब हमलोग श्यामसुन्दर को लड़ते समय पकड़ लेवैंगे तब दूसरे यादववंशी हमारा क्या करसके हैं यह बात सुनकर कर्ण बोला यदुवंशियों का सदासे यह चलन है कि दूसरी जगह शुभ कार्य में जाकर विघ्न करते हैं ॥

चौ० जातिहीन अबहीं यह बढ़े। राज पाय माथेपर चढ़े ॥

जब धृतराष्ट्रने यह बात सुनकर बड़े क्रोधसे दुर्योधनको साम्बके पकड़लाने वास्ते कहा तब वह कर्ण व विकर्ण व शल्य व भूरिश्रवा व यज्ञकेतु महाशूरवीर व सेना को साथ लेकर चढ़दौड़े व आपस में कहा देखो वह कैसा बली है जो हमैं जीतकर राजकन्या को लेजायगा जब दुर्योधन आदिक ने अपना अपना रथ दौड़ाकर साम्बको चारों ओरसे घेर लिया तब साम्ब अपना रथ खड़ा करके धनुषबाण लेकर दुर्योधन व कर्ण से बोला तुमलोग मेरे माता के कुलपर जातिहीन मत समझो मैं श्रीकृष्णजी वैकुण्ठनाथके वीर्य से उत्पन्न हुआ हूं इसलिये युद्ध में तुम से नहीं हारूंगा चाहो तुमलोग अकेली अकेला मुझसे लड़ाई करलेव चाहो सब कोई मिलकर लड़ो ॥

दो० यद्यपि तुम्हरो तेज बल प्रकट भयो जग माहिं। तदपि हमको या समय पकड़ सकोगे नाहिं॥

यह वचन सुनतेही कर्णने साम्बके सन्मुख जाकर कहा मैं जानता हूं कि तू जल्दी हमसे नहीं हारेगा पर हमलोगोंसे जीतकर तुझे द्वारका जाना कठिन है चैतन्य रह हम तुझे बाण मारते हैं जब ऐसा कहकर कर्ण साम्ब पर बाण चलाने लगा तब साम्ब ने उसका वार बचाकर अपने बाणों से चारों घोड़ा व सारथी कर्णके रथके मारडाले व दश दश बाण दुर्योधनादिक सेनापतियोंको मारे सो वह लोग अपनी विद्यासे उसके बाण बचाकर साम्बकी बड़ाई करने लगे जब दुर्योधनादिकने देखा कि साम्ब अकेली अकेला हमलोगों से नहीं मारा जायगा तब छओं शूरवीर एक साथ साम्ब

पर अपने अपने शस्त्र चलाने लगे उस समय साम्बने मुरलीमनोहर के चरणोंका ध्यान धरकर ऐसे बाण चलाये कि छओं महारथियों को घबड़ा दिया व उनके रथका घोड़ा सारथी समेत मारडाला जब दुर्योधनादिकने यह दशा अपनी देखी तब छओं महारथियोंने एकी बेर अधर्मकी राह तीर मारकर एकने चारों घोड़ा व दूसरेने सारथी साम्बका मारडाला व तीसरेने धनुष काटकर चौथे ने ध्वजा रथपर से गिरादी जब सारथी व घोड़ोंके मारे जानेसे साम्ब रथ पर से कूदकर पैदल लड़ने लगा तब कर्णने पहुँचकर साम्बको पकड़ लिया व अपने रथ पर बैठाकर हस्तिनापुर को ले आया व दुर्योधनने साम्ब को अपनी सभामें खड़ा करके कहा हे यादव तेरा वह पराक्रम क्या हुआ जिस घमण्ड से तू राजकन्या को बरजोरी उठा लेगया था जब यह सुनकर साम्ब लज्जासे चुप होरहा तब भीष्मपितामहने दुर्योधन से कहा इसका व्याह लक्ष्मणासे करके विदा कर देना चाहिये जब दुर्योधन ने भीष्मपितामहका कहना न मानकर साम्बको कैद किया तब नारदजी ने हस्तिनापुरमें आनकर दुर्योधन व कर्ण आदिकसे कहा साम्ब द्वारका-नाथके पुत्र से तो चूक हुई थी पर तुम लोगों को उसे कैद करना उचित नहीं था इसका समाचार सुनकर बलरामजी यहां आवैंगे तब तुम लोग अपना अपना बल उनके सामने प्रकट करना जो कुछ होना था सो हुआ पर साम्ब को किसी बात का दुःख मत देना जब नारदमुनिके कहने पर भी दुर्योधनने साम्ब को नहीं छोड़ा तब नारदजी द्वारका में गये और साम्बकी दशा कहकर राजा उग्रसेनसे बोले दुर्योधनादिक कौरव साम्बको अपने यहां कैदकर बड़ा दुःख देते हैं जल्दी जाकर उनकी सुधि लेव नहीं तो साम्बका प्राण बचना कठिन है ॥

चौ० गर्व भयो कौरव को भारी । लाज सकोच न करी तुम्हारी ॥
बालकको उन बांध्यो ऐसे । शत्रुन को बांधै कोउ जैसे ॥

यह बात सुनतेही राजा उग्रसेन ने श्यामसुन्दर व यदुवंशियोंको बुला कर कहा तुम लोग अभी मेरी सेना साथ लेकर हस्तिनापुर में चढ़जाव व कौरवों को मारकर साम्ब को छुड़ा लाओ जब उग्रसेन की आज्ञानुसार

दैत्यसंहारण सेना समेत हास्तिनापुर जाने को तैयार हुये तब बलरामजी ने जो दुर्योधनके साथ मित्रता रखते थे मुरलीमनोहरसे विनय की हे महाप्रभु कौरव हमारे पुराने सम्बन्धी हैं थोड़ी बात के वास्ते सेना ले जाकर उनसे विरोध करना न चाहिये मुझे आज्ञा दीजिये तो वहां जाकर सहज में साम्ब को छुड़ालाऊं कदाचित् वह लोग मेरे समझाने से न मानैंगे तो मैं अकेला उनको दण्ड देने योग्य बहुत हूं जब श्रीकृष्णजी ने यह बात मानकर उन्हें जानेकी आज्ञा दी तब बलभद्रजी व उद्धव व अक्रूरादिक कई यदुवंशी व ब्राह्मण व ज्ञानियों को अपने साथ लेकर द्वारका से चले व कुछ दिन बीते हस्तिनापुर के निकट पहुँचकर एक बागमें डेरा किया व अपने आने का समाचार अक्रूर से दुर्योधनादिक को कहला भेजा जब अक्रूरने राजा धृतराष्ट्र की सभामें जाकर बलभद्रजी के आने का हाल कहा तब दुर्योधन जो बलरामजीका चेला था बड़े हर्ष से भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य व धृतराष्ट्र व युधिष्ठिर आदिकको साथ लेकर उन्हें अपने मन्दिरपर लाने वास्ते बाग में गया व रेवतीरमण के चरणोंपर गिर कर विनय की हे महाप्रभु जिसतरह आपने दयालु होकर दर्शन दिया उसीतरह आनेका कारण कहकर अपने चरणोंसे मेरा घर पवित्र कीजिये यह सुनकर बलदाऊजी बोले मैं राजा उग्रसेन का संदेशा कहनेवास्ते यहां आया हूं सुनो जब समाचार कैद करने साम्बका द्वारकापुरीमें पहुँचा तब महाराज उग्रसेन की आज्ञा से कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दने सेना समेत तुम्हारे ऊपर चढ़ाई की तैयारी की तब मैंने यह हाल सुनकर मुरलीमनोहर से कहा महाराज कौरवलोग हमारे सम्बन्धी हैं इसलिये उनसे अभी लड़ने वास्ते जाना उचित नहीं है मैं अकेला जाकर साम्ब को छुड़ा लाता हूं सो हे दुर्योधन व धृतराष्ट्र व भीष्मपितामह राजा उग्रसेन ने तुम लोगों को यह संदेशा भेजा है कि जिस बालक को छः महारथियों ने मिलकर अधर्म की राह पकड़ लिया जब उस अकेले कुँवर ने छहों आदमियोंको युद्ध में घबड़ा दिया तब तुमने यह नहीं समझा कि उसके सब घरवाले पहुँचकर हमारी क्या गति करैंगे हे धृतराष्ट्र यद्यपि उस बालक अज्ञानसे

अपराध हुआ कि राजकन्या को स्वयंवर में से उठा लेगया पर तुमलोगों को सम्बन्धी होकर उसे कैद करना उचित नहीं था लड़कियों को अपनी नातेदारी में देना चाहिये इससे क्या उत्तम है जो पुराने सम्बन्धियों को दीजावें अब भी उचितहै कि साम्बको कैदसे छोड़कर लक्ष्मणा का विवाह उसके साथ करदेव॥

दो० यद्यपि उस अज्ञानने कीन्हो काज असाधि। तद्यपि तुम पुरुषा हते करते नहीं उपाधि॥

यह वचन बलरामजीका सुनतेही दुर्योधन सब कौरवों के सम्मतसे क्रोधित होकर बोला हे बलरामजी आप चुप रहिये अब अधिक बड़ाई उग्रसेन की न कीजिये हमलोगों से यह नहीं सुना जाता अभी चारदिन की बात है कि उग्रसेन को संसार में कोई नहीं जानता था जबसे उसने हमारे साथ नातेदारी की तब से उसकी पदवी बढ़ी देखो उग्रसेन ने हमारे आधीन होनेपर भी अभिमान से इसतरह हमको संदेशा कहला भेजा है जिसतरह कोई राजा अपने प्रजा पर आज्ञा करै बड़ा आश्चर्य है जो पांव की जूती शिरपर चढ़ने लगीं यादववंशियों को हमने चँवर व छत्र देकर राजा बनाया था सो उनको ऐसी बात कहते हुये लज्जा नहीं आती द्वारकापुरी का राज्य पाकर पिछली बात अपनी भूल गये जो मथुरा में ग्वाल व अहीरोंके साथ रहते थे जब हमने उनको अपने साथ खिलाकर राजगद्दी दिलाई तब उनकी गिनती राजों में हुई जैसी भलाई हमने उनसे की वैसा फल पाया किसी दूसरेके साथ ऐसा करते तो जन्मभर हमारा यश मानता बड़े लाजकी बात है कि यादवलोग सदा से हमारे आधीन रहकर अब हमारी बेटी व्याहने चाहते हैं॥

दो० तिनको यह पदवी भई हमसों करत विवाह। क़ालिह परों मांगत हते आज भये हैं साह॥

आकाश से पानी की जगह पत्थर बरसने नहीं सक्ता यह सब हमारी नातेदारी करनेका कारण है जो दूसरे राजालोग हमारे नाम पर उनका आदर करते हैं नहीं तो उन्हें कौन पूंछता था निर्लज्जता व ढिठाई साम्ब की देखो जिसने स्वयंवर में से मेरी कन्या ले जाने की इच्छा की हमें उचित था कि साम्ब को मार डालते जिसमें फिर कोई ऐसा न करता

नातेदारी होनेसे ऐसा नहीं किया इसीवास्ते बलदाऊजी उसकी सिफा-रिश लेकर हमारे यहां आये हैं आज राजा इंद्रभी ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो मेरे व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य के सन्मुख आनकर लड़ने सके जब कालयमन व जरासन्ध के घेर लेने से मथुरा छोड़कर भागगये थे तब यह सब घमण्ड व बल उनका कहां गया था जो आज हमारे ऊपर आज्ञा चलाते हैं यह सब दोष भीष्मपितामह व धृतराष्ट्र हमारे पुरुषों का है जिन्होंने यादववंशियोंका सन्मान करके उन्हें इतना ढीठ किया नहीं तो ऐसा क्यों कहला भेजते दुर्योधन यह कठोर वचन उग्रसेन आदिकको कहकर सभामें से उठगया ॥

दो० तब जान्यो बलरामजी निश्चय करि मनमाहिं । सूधी बात न कुटिल जन कबहूं समझतनाहिं ॥

ऐसा विचारतेही बलदाऊजी हँसकर उद्धव आदिक अपने साथियों से बोले देखो कौरवों को अपने राज्य का इतना अभिमान हुआ जो हम लोगोंको चरणकी जूती जानकर अपने को शिर समझते हैं जब श्याम-सुन्दर वैकुण्ठनाथ ब्रह्मा व महादेव आदिक देवतों के मालिक होकर राजा उग्रसेन को दण्डवत् करते हैं तब उनको महाराज होने में क्या सन्देह है आज मुरलीमनोहरकी दयासे इन्द्रादिक देवतोंकी यह सामर्थ्य नहीं है जो राजा उग्रसेन को दुर्वचन कहने सकें सो उन्हींको दुर्योधनने हमारे सामने ऐसी बात कही तो मेरा नाम बलदाऊजी कि अभी नगरसमेत इन लोगोंको यमुनाजलमें डुबाकर नाश करडालूं नहीं तो आजसे अपना नाम बलराम न रक्खूं यह बात अपने साथियों से कहकर रेवतीरमण ने क्रोधमें भरे हुये भीष्मपितामह व धृतराष्ट्रसे कहा दुर्योधन अज्ञान को यहां बुलावो तो अपनी बातोंका उत्तर हमसे सुनै मैंने जाना कि अब प्रीति नाते-दारी की छूटकर युद्ध करना पड़ैगा जब भीष्मपितामह के बुला भेजने से दुर्योधन फिर सभामें आनकर बैठा तब रेवतीरमण ने कहा हे दुर्योधन ज्ञानी व अज्ञान मनुष्य इसतरह पहिचाना जाता है कि ज्ञानी लोग सब बात का आगम विचारकर वह काम करते हैं जिसमें लज्जित होना न पड़ै व मूर्ख मनुष्य विन समझे काम करने से पीछे अपने दंड को पहुँचते हैं ॥

दो॰ ज्ञानी जो कारज करैं समझ लेत मन माहिं। कारज विन समझे करैं ताहि ज्ञान कछु नाहिं॥

जिस तरह नया घोड़ा जब तक सवारके हाथका कोड़ा नहीं खाता तब तक सीधा नहीं चलता सो तुमने अभिमान भरी बातें कहकर यह विचार नहीं किया कि कैसा वचन कहता हूं यह सब बात तुमको कहना उचित नहीं था किसवास्ते कि मैंने प्रेम व प्रीति भरी हुई बातें तुमसे कही थीं उनका उत्तर तुमने ऐसा दिया जैसा कोई सेवक को भी नहीं कहता मैं चाहता था कि हमारे तुम्हारे में युद्ध न हो सो तुमने दुर्वचन कहकर हम को क्रोध दिलाया व भलमन्सीका कहना मेरा तुमको अच्छा नहीं मालूम हुआ इसलिये तुम अपने कर्तबका दण्ड पाकर लज्जित होगे तुमने नहीं समझा कि अपनी स्तुति व दूसरेकी निन्दा करना अच्छा नहीं होता तुझे अपनी कन्या श्रीकृष्णजीके बेटेको देने से लज्जा मालूम होती है तू उन वैकुण्ठनाथकी पदवी नहीं जानता जिनके चरणोंकी धूरि इन्द्रादिक देवता शिर चढ़ाने से अपनी बड़ाई समझते हैं॥

दो॰ जिनका ध्यान धरैं सदा शिवविरञ्चि चितलाय। चरणकमल सेवत रहैं श्रीकमला सुखपाय॥

हे दुर्योधन भला तू बतला यह पदवी तेरे कुलमें किसको प्राप्त है जो तैंने अभिमान भरी बातें कहीं ऐसा कहकर बलदाऊजीने क्रोध से अपना हल पृथ्वीमें गड़ादिया व हस्तिनापुरको पृथ्वीसमेत हलसे उठाकर जैसे यमुनाजलमें डुबाने चाहा वैसे एक कोना पृथ्वीका उठा हुआ देखकर भीष्मपितामह व धृतराष्ट्र ब्राह्मण व ऋषीश्वरादिक जो उस सभामें बैठे थे उठ खड़े हुये व हाथ जोड़कर विनयपूर्वक रेवतीरमणसे कहा हे दीना- नाथ आप ईश्वररूप व धर्मकी वृद्धि करनेवाले होकर अपना क्रोध क्षमा कीजिये व दुर्योधन अज्ञान एक मनुष्यके दुर्वचन कहनेपर हस्तिनापुरको डुबाकर विना अपराध करोड़ोंका प्राण न लीजिये आजसे हमलोग सदा राजा उग्रसेनकी आज्ञा पालन करैंगे॥

दो॰ सब हम मिलि बहुभांतिसों विनती करी सुनाय। दयावन्त बलरामजी दीन्ही रिस बिसराय॥

जब बलदाऊजीने भीष्मपितामह आदिकके विनय करनेसे क्रोध क्षमा करके हल अपना जो हस्तिनापुर उलटने वास्ते पृथ्वी में धँसाया था

निकाल लिया तब दुर्योधन साम्बको बहुत अच्छा गहना व कपड़ा पहिनाकर लक्ष्मणा अपनी कन्यासमेत बलरामजीके पास लेआया व हाथ जोड़कर बोला ॥

चौ० तुमहीं अलख शेष अवतारा। धरत शीश धरणी का भारा ॥
हम असाधु अतिहैं अज्ञानी। तुम्हरी गति अगाध नहिं जानी ॥
इतनो दण्ड जो हमको दीन्हीं। सो तुम बहुत अनुग्रह कीन्हीं ॥
दो० अपनी शक्ति जनायकै कीन्हीं हमैं सनाथ। हम दासनके दास हैं तुम नाथनके नाथ ॥

इसीतरह दुर्योधनने बहुत स्तुति करके मंगलाचार मनाया व विधिपूर्वक लक्ष्मणाका विवाह साम्बसे करादिया व बारहहजार हाथी व दश हजार घोड़े व छः हजार जड़ाऊ रथ व हजार दासी अतिसुन्दरी भूषण व वस्त्रसंयुक्त व अनेक वस्तु दहेज में देकर जब दुलह व दुलहिनको बिदा किया तब बलरामजी साम्बको लक्ष्मणा समेत अपने साथ लेकर हर्षपूर्वक द्वारकामें पहुँचे व सब हाल वहांका राजा उग्रसेन व श्यामसुन्दर से कह दिया कौरवोंके गर्व टूटने का हाल सुनकर सब कोई आनन्द हुये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित तुम देखो अभीतक हस्तिनापुर दक्षिण ऊंचा होकर उत्तर नीचा दिखलाई देता है ॥

उनहत्तरवां अध्याय।

नारदमुनिको श्रीकृष्णजीके सब महलोंमें रहने का संदेह करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित एकदिन नारदजी ने अमरावती पुरीमें क्या देखा कि राजा इन्द्रकी दोनों स्त्रियां आपसमें झगड़ा कर रही हैं तब उन्होंने विचार किया कि दो सवति होनेसे यह दशा है श्रीकृष्णजी के सोलहहजार एकसौ आठ स्त्री हैं उनमें किस तरह बनती होगी न मालूम गोपीनाथ उनको इकट्ठे बुलाते हैं या पारी बांधकर उनके पास जाते हैं यह हाल देखना चाहिये ऐसा विचारकर नारदजी द्वारका में आये तो क्या देखा कि वहां अच्छे अच्छे बाग उत्तम उत्तम पुष्प व फल लगे होकर उनमें अनेक पक्षी बोलते हैं व अनगिनती तड़ाग व बावली में कमल फूले होकर उनपर भौंरोंका गूंजना बहुत शोभा देताहै व सुनहुले

किलेके चारोंओर समुद्र लहर भरकर मालीलोग मीठे मीठे स्वरों से गाते हुये क्यारियां सींच रहे हैं व पनिघटपर झुण्ड की झुण्ड महासुन्दरी स्त्रियां अच्छा अच्छा गहना व कपड़ा पहिने दिखलाई दीं जब नारदमुनि यह सब शोभा देखते हुये नगर में गये तो क्या देखा कि महल व मकान रत्नजटित होकर उनपर अनेकरंगकी कलशियां लगी हैं ॥

दो० तिनमें मन्दिर मध्यकी महिमा कही न जाय। मानों रत्नजड़ावमें माणिक धरो बनाय ॥

और सब दुकान व सड़क उस नगरकी उत्तम होकर घर घर कथा व हरिचर्चा होरही है व यदुवंशीलोग अनेक जगह राजा इन्द्रके समान आपसमें बैठे हुये श्यामसुन्दर का यश गाते हैं व सब छोटे बड़ों के द्वारेपर अम्बर व अरगजे जलनेकी सुगन्ध उड़रही है व द्वारकावासी अपने अपने घर होम व यज्ञादिक शुभ कर्म करके अच्छा अच्छा पदार्थ बड़े प्रेमसे ब्राह्मणोंको खिलाते हैं जब नारदमुनि यह आनन्द देखते हुये रुक्मिणीजी के महलमें गये तो वहां ऐसा रत्नजटित स्थान देखा जिसके सामने आंख नहीं ठहर सक्ती थी व उस महल में तासकी ध्वजा लगी होकर छज्जोंपर कबूतर आदिक पक्षियोंका रूप ऐसा बना हुआ था जिनके पास जंगली पक्षी आन बैठते थे व अरगजे व अम्बरके धुयेंको मोर लोग बादल समझ कर बड़े हर्ष से नाचते थे मोतियों की झालर द्वारपर लटकाई होकर पारिजातक फूलकी सुगन्ध चारोंओर उड़ती थी ॥

चौ० सुन्दर बालक खेलत डोलैं। मधुर मनोहर वाणी बोलैं ॥
रूपवन्ति दासी मन हरैं। निज स्वामी की सेवा करैं ॥

दो० यह शोभा ऋषि देखिकै भूलि गये सब ज्ञान। दासी औ ठकुरानियां नहीं सके पहिंचान॥

सो नारद मुनिने वहां क्या देखा कि श्यामसुन्दर उत्तम शय्यापर मुकुट जड़ाऊ पहिने जर्द पीताम्बर बांधे व उपरना रेशमी ओढ़े घूंघरवाली जुलफें छोड़े माथेपर केसरिका तिलक लगाये कुण्डल जड़ाऊ कानों में डाले व वनमाला व वैजयन्ती माला व मोतियों का हार पहिने नटवररूप बनाये हुये बैठे हँसते हैं व हजारों दासी रहने पर भी रुक्मिणीजी आप खड़ीहुई पंखा हांकती हैं जैसे द्वारकानाथने नारदमुनिको आते हुये देखा

वैसे उठकर उन्हें दण्डवत् करके जड़ाऊ सिंहासनपर बैठाला व अपने हाथ उनका चरण धोया व चरणोदक लेकर विधिपूर्वक उनका पूजन किया व हाथ जोड़कर बोले हे मुनिनाथ आपने दयालु होकर मुझे दर्शन दिया नहीं तो संसारी मनुष्योंको तुम्हारा दर्शन मिलना दुर्लभ है हम क्या सेवा तुम्हारी करें जिसमें हमारा कल्याण हो ॥

चौ० जाघर चरण साधुके जावैं। वे नर सुख सम्पति सब पावैं ॥

यह वचन सुनकर नारदमुनिने विनय किया हे आदिपुरुष भगवान् मैं तुम्हारा दर्शन करने आया हूं विना दया व कृपा तुम्हारी संसारी मनुष्य भवसागर पार नहीं उतरने सक्ता गंगाजी तुम्हारे चरणका धोवन होकर सब जीवोंको सुख देती हैं मैं कंगाल ब्राह्मण कौन गिनती में हूं जो तुम्हारी स्तुति करनेसकूं मुझपर दयालु होकर ऐसा वरदान दीजिये जिसमें तुम्हारा स्मरण व ज्ञान मुझसे न छूटै ॥

चौ० मैं सेवक तुम सबके राजा। मोहिं प्रणाम कियो किहि काजा॥
जगमें लियो मनुज अवतारा। याते करत जगत व्यवहारा ॥
नातो तुम चरणनकी रैना। शिव विरंचि चाहैं दिन रैना ॥
मैं उनकी पदवी कहँ पावों। दासन में यक दास कहावों ॥
तुम्हरो नाम जपै जन कोई। तापर कृपा तुम्हारी होई ॥
यह तुम्हरे मन में जिन आवै। नारद हमसे पांव धुवावै ॥
याही विधि हम पुत्र तुम्हारे। कृपावन्त तुम तात हमारे ॥
जापर कृपा तुम्हारी होई। अन्धकूपसों निकसै सोई ॥

दो० भक्तनके दुखहरणको धरणि उतारन भार। लीन्ह्यो तुम अवतारहै माखन प्रभु करतार ॥

जब इसतरह स्तुति करके नारदमुनि वहां से बिदा होकर सत्यभामा के घरगये तो क्या देखा कि उद्धवजी वहांपर मुरलीमनोहरसे चौपड़ खेलतेहैं॥

चौ० ऋषिको देखि उठे घनश्यामा। वाही भांति करो परनामा ॥
कह्यो धन्य हैं भाग्य हमारे। जो तुम से ऋषिराज पधारे॥
कृपा करो द्विजराज गुसाईं। केतिक दिवस रहे यहि ठाईं॥

यह वचन सुनतेही नारदमुनि वहांसे भी श्यामसुन्दरको आशीर्वाद देकर जाम्बवती के यहां गये तब वैकुण्ठनाथको अंगमें उबटन व फुलेल मलवाते देखकर विना भेंट किये फिर आये किसवास्ते कि शास्त्रमें तेल

लगावती समय दण्डवत् करना व आशीर्वाद देना वर्जित है फिर नारद जी ने कालिन्दी के महल में जाकर देखा तो श्यामसुन्दरको पलँगपर सोये हुये पाया जब कालिन्दीने नारदमुनिको देखते ही मुरलीमनोहर का चरण दबाकर जगादिया तब त्रिभुवनपति दण्डवत् करके बोले हे मुनिनाथ तीर्थरूपी साधुओंके चरण आनेसे संसारीजीवोंका घर पवित्र होजाता है सो आपने दया करके अपने दर्शनसे मुझे कृतार्थ किया जब नारदमुनि वहांसे आशीर्वाद देकर मित्रबिन्दाके महलमें गये तो क्या देखा कि श्यामसुन्दर ब्राह्मणोंको जिवांते हैं नारदमुनिको देखते ही हाथ जोड़कर बोले हे द्विजराज आपने बड़ी दया की जो इस समय आये आप भी भोजन करके अपनी जूठन मुझे दीजिये तो उसे खाकर पवित्र होजाऊं नारदमुनिने कहा हे महाप्रभु आप ब्राह्मणोंको भोजन कराइये मैं फिर आनकर प्रसाद पाऊंगा यह वचन कहकर नारदमुनि सत्याके महलमें गये तो क्या देखा कि वृन्दावनविहारी भक्तहितकारी आनन्दपूर्वक विहार कररहे हैं यह कौतुक देखते ही वहां से उलटे पांव फिरकर भद्राके मन्दिर में आये तो द्वारकानाथको भोजन करते पाया वहांसे लक्ष्मणाके घर जाकर वैकुण्ठनाथ को स्नान करते देखा इसीतरह नारदमुनि अनेक महलोंमें वैकुण्ठनाथकी परीक्षा लेनेवास्ते गये तो उनको कहीं पूजा व ध्यान करते व किसी जगह होमपर बैठे व कहीं स्त्रियोंके साथ फूल बरसाकर खेलते व किसी जगह तड़ागादिकमें स्त्रियोंके साथ नहाते व कहीं घोड़े रथोंपर बैठेव किसी महल में कथा व पुराण सुनते व कहीं गौ ब्राह्मण को दान देते व किसी जगह हाथियोंका युद्ध देखते व कहीं द्रव्यादिक गिनवाते व किसी महलमें सन्तान के विवाह की चर्चा करते व कहीं लड़का खिलाते व कहीं बलरामजी के पास बैठ हुये अधर्मियों के मारनेका सम्मत करते व किसी जगह बावली व तड़ागादिक खोदनेवास्ते रुपया देते व किसी जगह वसुदेव व देवकी के पास बैठे हुये भोजन कराने वास्ते आज्ञा पूंछते व कहीं लड़कियों को ससुरारसे बिदा करते व किसी महलमें भाटोंसे कवित्त सुनते व कहीं अहेर खेलनेवास्ते बैठे देखा ॥

चौ० कहुँ नारिनको कौतुक देखैं। कहुँ नारिनसों खेलत पेखैं॥
कहुँ नारिनसों करत ठिठोली। बोलत विविध भांतिकी बोली॥
कहुँ नारिनमें कलह करावैं। कहूं अनमनी नारि मनावैं॥
दो० कहूं पुत्रको ब्याहके लाये वहूसमेत। तहां करत उत्सव बहुत लोगनको धन देत॥
या विधि जिस जिस महलमें नारद पहुँचे जाय। प्रियासहित देखे तहां माखनप्रभु यदुराय॥
चौ० नारदके संशय मनमाहीं। श्याम बिना कोऊ गृह नाहीं॥
जिस घर जाऊं तहां विहारी। ऐसी प्रभु लीला विस्तारी॥

नारदजीने यह महिमा श्यामसुन्दरकी देखतेही लज्जित होकर कहा देखो त्रिभुवनपतिने मेरा चरण धोकर चरणामृत लिया व मैंने अपने अज्ञान से उनकी परीक्षा लेनेकी इच्छा की सो मुझसे बड़ा अपराध हुआ जब ऐसा विचारकर नारदमुनि भय से कांपने लगे तब मुरलीमनोहर हँसकर बोले हे मुनिनाथ आज तुम्हारी क्या दशा है जैसे यह वचन नारदजीने सुना वैसे हरिचरणोंपर गिरपड़े व हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ मैं अज्ञानतासे तुम्हारी परीक्षा लेने चाहता था सो लज्जित होकर उसका फल पाया अब मुझ दीनपर दयालु होकर मेरा अपराध क्षमा कीजिये॥

चौ० मैं तुम्हरो भिक्षुक यदुनाथा। गावौं सदा नाम गुणगाथा॥
तुम्हरी माया सब जगजानी। तिहि सों मेरी मति भरमानी॥
तुम्हरो नाम जपै जो कोई। परमधाम पावत है सोई॥
कृपा करो मेरो भ्रम टारो। भवसागर से पार उतारो॥

यह स्तुति सुनकर वैकुण्ठनाथ बोले हे मुनिनाथ तुम कुछ संदेह अपने मनमें न लाकर मेरी मायाको अति बलवान् समझो जब वह माया सब जगत्को मोहकर मुझे भी नहीं छोड़ती तो दूसरेको क्या सामर्थ्य है जो संसारमें उत्पन्न होकर उसके वश्य न होवै हे नारदमुनि मेरे भेद व कामोंको पहुँचना बहुत कठिन होकर व कोई स्थान मुझसे खाली नहीं रहता सब जीवों के उत्पन्न व रक्षा करने धर्म चारों वर्ण व चारों आश्रमका रखनेवाला मैं हूं व सगुण अवतार लेना मेरा केवल इसवास्ते है जिसमें संसारी जीव मुझे शुभकर्म करते देखकर उसीतरह अच्छा काम किया करैं व तुम मेरे भेद व कामोंकी परीक्षा लेनेमें न रहकर हरिभजन किया करो॥

दो० केहिकारण भ्रममें परे करो आपनो काज। लोगनके पातक हरो दर्शन दे ऋषिराज॥

यह सुनतेही नारदमुनि वसुदेवनन्दन से अपना अपराध क्षमा कराके बोले हे महाप्रभु आप दयालु होकर ऐसा वरदान मुझे दीजिये जिस में तुम्हारे चरणों की भक्ति सदा बनी रहकर संसारी माया मेरे ऊपर न व्यापै जब केशवमूर्तिने नारदमुनि को इच्छापूर्वक वरदान देकर बिदा किया तब वह दण्डवत् करके वीणा बजाते व हरिगुण गाते हुये सत्यभामा के पास जाकर बोले सत्यभामा तू पृथ्वी का अवतार है तुम से मुरलीमनोहर रुक्मिणीको अधिक प्यार करते हैं इसलिये तुम श्यामसुन्दर को मुझे दान देकर मोल लेलो तो वह तेरे आधीन रहैंगे यह वचन सुनतेही सत्यभामाने प्राणनाथ से आज्ञा लेकर उन्हें पारिजातक समेत नारदजी को संकल्प दिया जब नारदमुनि मुरलीमनोहर को अपने साथ ले चले तब सत्यभामा उनके बराबर सोना देने लगी सो नारदजीने सोनेके बदले तुलसीदल लेकर मुरलीमनोहरको फेर दिया व आप आनन्दपूर्वक ब्रह्मलोकको चले गये व श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द उसी दिनसे सत्यभामा पर अधिक प्रीति करने लगे ॥

चौ० श्रीभगवान महासुखकारी। रहैं सदा जैसे गृहचारी ॥
सकल पुत्र दारा सब रहई। और कुटुम्ब कहां लौं कहई ॥
रक्षा करि सबको दुख हरैं। इच्छा उनकी पूरण करैं ॥
कृष्णनारि यों मनमें जानैं। मोसों बहुत प्रीति हरि मानैं ॥
यह लीला अद्भुत सुखदाई। जो जन कहै सुनै चितलाई ॥
दो० लहै महासुख सम्पदा दुख पावै कछु नाहिं। निर्मल यश प्रकटै सदा रहै वंश जगमाहिं ॥

सत्तरवां अध्याय।

कथा मुरलीमनोहरकी कि किस समय कौन कर्म करते थे ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित श्यामसुन्दर संसारी जीवों को राह दिखलाने वास्ते जिससमय जो काम करते थे उसका हाल कहता हूं सुनो जब दो घरी रात रहे पक्षी बोलने लगते थे उसीसमय वसुदेवनन्दन सब महलों में से उठकर दिशा फिरने व दातून करने उपरान्त स्नान करके संसारी मनुष्योंकी तरह अपनी आत्माका ध्यान करते थे ॥

दो० जबै उठैं हरि सेजते होहिं विकल सब नारि। पक्षिन दोष विचारिकै देहिं सबन मिलि गारि ॥

जब सूर्य निकलने उपरांत वसुदेवनन्दन सब महलोंमें जाकर जड़ाऊ चौकीपर बैठते थे व उनके अंगपर स्त्रियां फुलेल व उबटन मलकर गरम पानीसे स्नान कराती थीं तब वह तुलसीचौरे के पास बैठकर सन्ध्या व तर्पण करके गायत्री जपते थे जब चार घड़ी दिन चढ़ता था तब नित्य एक एक महलमें चौदह चौदह हजार गौ दूध देनेवाली विधिपूर्वक ब्राह्मणों को दान देकर उनका आशीर्वाद लेके भोजन करते थे ॥

दो० खान पान भूषण वसन विविध सुगन्ध लगाय। पहिले विप्रन अर्पिकै आप लेत यदुराय ॥
यद्यपि श्रीभगवान को कर्म लगै कछु नाहिं। तद्यपि कर्म कियो चहैं लियो जन्म जगमाहिं ॥

जब मुरलीमनोहर अनेकरूपोंसे एकरूप होकर उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर द्वारेपर आते और वन्दीगणोंसे स्तुति सुनकर सन्मानपूर्वक उन्हें बिदा करते थे तब दारुक रथवान् द्वारे पर जड़ाऊ रथ लेजाकर खड़ा करता था ॥

दो० दर्श पाय हर्षे सबै तभी झुकावैं माथ। कृपादृष्टि तिनपर करैं माखन प्रभु यदुनाथ ॥

जब द्वारकानाथ उस रथपर उद्धवसमेत बैठकर फिरने घूमने जाते थे तब सात्यकी यादव पीछे बैठकर पंखा व चवँर मोहनीमूर्ति के हिलाता था जब श्यामसुन्दरका रथ धीरे धीरे राजसी विभवसे चलता था तब उनकी स्त्रियां अपने अपने महलकी खिड़कियों में से उनकी छवि देखकर अपने अपने भाग्यकी बड़ाई करती थीं जब थोड़ी देर उपरांत कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द सुधर्मा सभा में आते थे उस समय सब यादववंशी खड़े होकर सन्मानपूर्वक रत्नसिंहासन पर उनको बैठाते थे कुछ देर केशवमूर्ति राजा उग्रसेन के पास बैठकर कथा व पुराण सुनते थे व कभी कभी नट व भानुमती आदिकको कौतुक देखकर प्रसन्न होते थे व वैकुण्ठनाथकी दयासे द्वारकापुरी में कुछ रोग व काल किसी को नहीं व्यापता था इसलिये सब छोटे बड़े परमानन्द रहते थे जब वसुदेवनन्दन सुधर्मा सभा से उठकर अनेक रूप धारण करके सब महलों में जाते थे तब छत्तीस प्रकार के व्यञ्जन भोजन करते थे और उसमें अच्छा अच्छा पदार्थ उद्धव व अक्रूर आदिक हरिभक्तोंकोभी मिलता था इतनी कथा सुनाकर शुकदेव

जी बोले हे परीक्षित देखो श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति गृहस्थाश्रम होनेपर भी विरक्त रहकर संसारीजीवों को राह दिखलाने वास्ते ये सब कर्म करते थे एकदिन वैकुण्ठनाथ सुधर्मा सभामें रत्नसिंहासनपर बैठे हुये यदुवंशियों के साथ बातें करते थे उसीसमय एक ब्राह्मण द्वारकापुरीमें आया व द्वारपालकों से कहा तुम श्रीकृष्णजी से जाकर कहि देव एक ब्राह्मण तुम्हारे दर्शन की इच्छा से द्वारेपर खड़ा है आज्ञा हो तो भीतर आनकर अपना मनोरथ पूर्ण करै जैसे द्वारकानाथ ने यह संदेशा द्वारपालक से सुनकर उस ब्राह्मणको बुला भेजा और वह ब्राह्मण उनके सामने भीतर गया वैसे त्रिभुवनपतिने नीचे उतरकर उस ब्राह्मणको दण्डवत् किया व अपने पास सिंहासनपर बैठाकर कोमल वचन से पूंछा महाराज आप कहां से किस कारण यहां आये यह मधुर वचन सुनतेही वह ब्राह्मण हाथ जोड़कर बोला हे महाप्रभु राजा जरासन्ध जो अपने बल व प्रतापका घमण्ड रखता है दिग्विजयवास्ते निकला था सो जिन राजों ने उसकी आज्ञा पालन की उनका देश उसने छोड़ दिया और जो राजा अपने अभिमान से उनके पास नहीं आये उनको युद्ध में जीतकर अपने यहां कैद किया सो बीस हजार आठ सौ राजा जो उसके यहां कैद हैं उनका संदेशा लेकर आया हूं श्यामसुन्दर बोले कहो तब उस ब्राह्मणने कहा महाराज उन सब राजों ने दण्डवत् करके यह विनय किया है हे वैकुण्ठनाथ आपका सदासे यह प्रण है जब जब दैत्य व अधर्मी राजा हरिभक्तों को दुःख देते हैं तब तब आप सगुण अवतार से अधर्मियों को मारकर अपने भक्तों की रक्षा करते हैं जिसतरह आपने हिरण्यकशिपु को मारकर प्रह्लाद का प्राण बचाया और ग्रह से गजेंद्र को छुड़ाया उसी तरह हम लोगों को भी महा दुःखी व दीन जानकर हमारा कष्ट छुड़ाइये जैसे कर्मरूपी फांसीमें सारा जगत बँधा रहकर नष्ट होता है वैसे जरासन्ध की कैद में हम लोग फँसकर बड़ा दुःख पाते हैं इसलिये दिनरात तुम्हारे दर्शनों की इच्छा बनी रहती है॥

चौ०. दुष्टदलन है नाम तुम्हारो। तुमहीं सबको कष्ट निवारो॥

इमको परो दुःख अतिभारी। वेग आय सुधि लेव हमारी ॥
जैसे कृपा जनन पर करो। तैसे कष्ट हमारो हरो ॥
दो० रैन दिवसहैं बन्दि में परे नहीं क्षण चैन। हमको आय छुड़ाइये माखन प्रभु सुखदैन ॥

हे महाप्रभो राजा जरासन्ध अज्ञान अपने राज्य के घमण्ड से ऐसा मतवाला व अन्धा होरहा है कि सत्रहबेर तुम्हारे सामने से भागने परभी लज्जित न होकर एक बेर तुम सबका मनोरथ पूर्ण करनेवास्ते जो भागे थे बड़ा अहंकार करके अपनी बराबर किसीको नहीं समझता सो आपने पृथ्वीका बोझ उतारने वास्ते अवतार लिया है इसलिये उसका घमण्ड तोड़कर हमारा दुःख छुड़ाना चाहिये किसवास्ते कि हमलोग किसी दूसरे का भरोसा नहीं रखते ॥

दो० तिहिकारण हम सबनकी है तुमहींको लाज। तुम बिन को रक्षा करै माखन प्रभु यदुराज ॥
चौ० हम जो महा अधम अज्ञानी। धर्म कर्म की बात न जानी ॥
दयासिन्धु है नाम तुम्हारो। हम दीनन की ओर निहारो ॥
जबलों तुम्हरी कृपा न होई। तब लों ज्ञान न पावत कोई ॥
विषयभोग लोगन अति भावै। तुम्हैं छोड़ उनसों मन लावै ॥
संकट आन परै जिहि काला। तुम्हरो नाम जपै नँदलाला ॥
जब तन में कछु व्यथा जनावै। तात मात की सुधि तब आवै ॥
ताही विधि तुमको हम जानैं। सबके तात मात पहिंचानैं ॥
दीनबन्धु विनती सुनि लीजै। जीवदान दीनन को दीजै ॥
दो० यद्यपि सुन्दरवदनको दर्शन पायो नाहिं। तद्यपि चरणसरोजको ध्यान धरत मनमाहिं ॥

यह दीन वचन सुनतेही दुःखभञ्जन ने दयापूर्वक उस ब्राह्मणसे कहा तुम धैर्य रक्खो मैं सब राजोंका दुःख छुड़ादूंगा ॥

चौ० धीरज बिनु कारज नहिं होई। यह निश्चय जानो सब कोई ॥

यह वचन सुनतेही वहब्राह्मण प्रसन्न होकर वसुदेवनन्दनको आशीर्वाद देने लगा उसीसमय नारदमुनि वीणा बजाते व हरिगुण गातेहुये द्वारकापुरी में पहुँचे तब श्यामसुन्दरने दण्डवत् करके उनको बड़े सन्मान से अपने पास सिंहासनपर बैठालकर पूंछा हे मुनिनाथ कुछ नई बातहो तो सुनावो और राजा युधिष्ठिर आदिक पाण्डव हमारे भाइयों का कुछ हाल तुम्हें मालूम हो तो बतलावो इनदिनों वहलोग क्या करतेहैं बहुत दिनों

से हमने उनका समाचार नहीं पाया यह बात सुनकर नारदजी बोले हे महाप्रभो अन्तर्यामिन् आप सब जगत्का हाल जानकर दया की राह मुझ से पूछते हैं तो सुनिये मैं अभी पाण्डवों के पास होकर चला आता हूं राजा युधिष्ठिर आदिक पांचो भाई रात दिन तुम्हारे याद व ध्यान में रहकर इन दिनों राजसूय यज्ञ करने की इच्छा रखते हैं पर सम्पूर्ण होना उसका तुम्हारे आधीन समझकर आठों पहर उनको यह अभिलाषा बनी रहती है कि द्वारकानाथ दयालु होकर आवैं तो हमारा मनोरथ पूर्ण हो ॥

दो० याते विलम न कीजिये अबहीं पहुँचो जाय । भक्तनको कारज करो माखन प्रभु यदुराय ॥

उसीसमय राजा युधिष्ठिर के नेवता की चिट्ठी इस समाचार से मुरलीमनोहरके पास पहुँची कि हे महाप्रभो ब्राह्मणों ने मुझ से राजसूय यज्ञका संकल्प तो करादिया पर विना आने आपके मेरा मनोरथ पूर्ण नहीं होने सक्ता सो मेरी लज्जा तुम्हारे हाथ है जब श्यामसुन्दरने पांडवोंका संदेशा नारदमुनि से सुनकर उनकी चिट्ठी पढ़ी तब यदुवंशियोंसे जो वहां बैठेथे पूंछा सुनो भाई जरासन्धके कैदी राजों ने अपने छुड़ाने का सन्देशा मुझे कहला भेजा है और नारदजी पाण्डवों के यहां जानेवास्ते कहते हैं इन दोनों बातोंमें पहिले क्या करना चाहिये उनमें कोई यदुवंशी बोला महाराज पहिले राजोंकी बंदी छुड़ाना उचित है दूसरे ने कहा प्रथम पांडवोंके मकानपर जाकर उनका यह यज्ञ सम्पूर्ण किया चाहिये यह सुनतेही वसुदेवनन्दनने उद्धवसे कहा ॥

चौ० उद्धव तुम हो सखा हमारे । मन आंखिन से नहीं नियारे ॥
दोउ ओर की भारी भीर । पहिले कहां चलैं कहु वीर ॥
उत राजा संकट में भारी । दुख पावत हैं आश हमारी ॥
इत पांडव मिलि यज्ञ रचायो । ऐसेही प्रभु वचन सुनायो ॥

यह बात सुनते ही उद्धवने श्यामसुन्दर से हाथ जोड़कर विनय किया हे महाप्रभो मेरा बड़ा भाग्य है जो आप अन्तर्यामी होकर दयाकी राह मुझ से पूछते हैं ॥

इकहत्तरवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका पांडवों के स्थानपर जाना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित उद्धवभक्त तीनों काल के जाननेवाले बोले हे दीनानाथ मेरे निकट पहिले पांडवोंके पास चलकर उन्हें धैर्य देना उचितहै फिर वहां से भीमसेन व अर्जुनको साथ लेकर जरासन्धके मारने वास्ते जाना चाहिये किसवास्ते कि जरासन्ध दशहजार हाथीका बल रखताहै इसलिये अपने बराबर किसीको नहीं समझता सो भीमसेन जरा-सन्धके साथ कुश्ती लड़कर तुम्हारी कृपा से उसे मारडालेगा मेरी समझ में जरासन्धकी मृत्यु भीमसेन के हाथ है॥

दो० जरासन्ध को मारके राजन लेहु छुड़ाय। पांडुसुतन के यज्ञको दूजो नहीं उपाय॥

हे वैकुंठनाथ जब कैदी राजोंके बालक रोकर अपने बापको याद करते हैं तब उनकी माता धैर्य देकर उनसे कहती हैं अय बेटा तुम मत रुदन करो श्रीकृष्णजी आदिपुरुष भगवान् ने पृथ्वी का भार उतारने वास्ते अवतार लियाहै जिसतरह उन्होंने रामावतारमें जानकी माताको रावण अधर्मी के यहां से छुड़ा लिया था उसी तरह जरासन्ध पापी को मारकर तुम्हारे पिताको छुड़ावेंगे यह वही वैकुंठनाथ हैं जो गजेन्द्र हाथीको ग्राहसे बचा कर शंखचूड़ से गोपियों को छुड़ा लाये थे॥

चौ० कंस भूप उनहीं पुनि मारयो। तात मातको कष्ट निवारयो॥
वे प्रभु हैं सबके सुखकारी। उनहीं को है लाज हमारी॥

दो० कष्ट सकल संसारको दूरकरत क्षणमाहिं। तिन्हैं तुम्हारो दुख हरत बारलागि है नाहिं॥

चौ० जो तुमको ऐसी विधि ध्यावैं। रैन दिवस तुम्हरो गुण गावैं॥
तिन्हपर कृपा वेगि प्रभु कीजै। तहां जाय उनकी सुधि लीजै॥

दो० रक्षपाल सब जगतके तुमहीं हौ गोपाल। मैंहूं तुम्हरे शरणहूं माखन प्रभु नँदलाल॥

हे दीनदयालो उन सब राजोंको जरासन्धकी वन्दीसे छुड़ाना चाहिये पर राजा युधिष्ठिरने केवल तुम्हारे भरोसे पर राजसूय यज्ञ करनेकी इच्छा की है नहीं तो पहिले वह अपने पराक्रम से सब राजों को आधीन कर लेते तब ऐसे कठिन यज्ञ का संकल्प करते॥

चौ॰ तदपि उनपर कृपा तुम्हारी। वह हैं परम भक्त हितकारी॥
त्यहि कारण निश्चय मन आनै। कारज कठिन सहजकर मानै॥
दो॰ याते वेगि सिधारिकै कीजै उनको काज। तुमहीं को सब लाज है माखन प्रभु ब्रजराज॥

जब तक जरासन्ध मारा न जावे या हार न माने तबतक राजसूय यज्ञ नहीं होसक्ता उसके मारे जाने में दो अर्थ समझिये एक तो राजा युधिष्ठिर का यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्ण होगा दूसरे बीसहजार आठसौ राजा बन्दी से छूटकर तुम्हारी कृपा से सुख पावेंगे यह दोनों काम होने से तुम्हारा यश संसार में स्थिर रहेगा और राजसूय यज्ञमें सब काम सिवाय राजों के दूसरा कोई नहीं करनेसक्ता सो वही राजालोग छूटकर बड़े प्रेम से यज्ञका काम करेंगे इतने राजा इकट्ठे दूसरी जगह मिलना बहुत कठिन है व कोई मनुष्य लड़कर दशों दिशा जीत आवे तौभी इतने राजा इकट्ठे नहीं होसक्ते इसलिये पहिले इन्द्रप्रस्थ में चलिये व पाण्डवों से भेंट करके जैसा जानिये वैसा कीजिये व राजा जरासन्ध ऐसा गौ व ब्राह्मणका भक्त व दाता है कि उसके द्वारेपर से कोई विमुख नहीं फिरता व जो बात कहता है उसे नहीं छोड़ता॥

चौ॰ या कारण तुम वेगि सिधारो। शुभ कारज में विलम न डारो॥
दो॰ जरासन्ध यह जानि है अपने मनमें भाव। पांडवसुतके काजको आये श्रीयदुराव॥

जब यह सम्मत उद्धवका सुनकर श्यामसुन्दर व नारदजी व यदुवंशियों ने पसंद किया तब मुरलीमनोहरने नारदमुनिसे कहा महाराज तुम हमारी तरफसे जाकर पांडवोंको कह देना कि हम तुम्हारे यहां आते हैं व उस ब्राह्मणको बिदा करती समय कहा तुम सब राजों से कहिदेव वह लोग धैर्य रक्खैं हम जल्दी वहां पहुँचकर उन्हें बन्दी से छुड़ा देवेंगे॥

दो॰ ऐसे अमृत बैन सुनि मनमें भये हुलास। आयसु ले तवहीं चल्यो निजराजनके पास॥

जब उस ब्राह्मणने सब राजोंके पास पहुँचकर मुरलीमनोहरका सँदेशा कहदिया तब वह सब प्रसन्न होकर चरणोंका ध्यान करनेलगे व नारदजी ने इन्द्रप्रस्थ में जाकर संदेशा मुरलीमनोहर का युधिष्ठिर से कहा व केशव मूर्तिने राजा उग्रसेनके पास जाकर पाण्डवोंके यहां जानेकी उनसे आज्ञा ली व द्वारकाकी रक्षा वास्ते बलरामजीको वहां छोड़दिया और आप बहुत

से यदुवंशी शूरवीर व सेना साथ लेकर इन्द्रप्रस्थको कूच किया पहले आठों पटरानियोंको उत्तम उत्तम नालकी व झप्पान पर बैठाकर व कई हजार हाथी जड़ाऊ हौदा व अम्बारी कसे हुये साथ में ले लिये और आप द्वारकानाथ जड़ाऊ रथपर जिसमें अतिउत्तम घोड़े जुते हुये थे बैठ कर चले हे परीक्षित उससमय कई हजार घोड़े जड़ाऊ साज पहिने व अनेक सिंहासन व जड़ाऊ रथ कोतल उनके साथ चले जाते थे उनकी शोभा कहांतक वर्णन करूं राहमें जहां वह टिकते थे वहां बहुत अच्छा बाजार उनके साथका लगि जाता था व उस देशके राजा व प्रजा मोहनी मूर्तिका दर्शन मिलने से अपने अपने लोचनों का फल पाते थे जब वह लोग अनेकतरहकी वस्तु मुरलीमनोहरको भेंट देते तब केशवमूर्ति उन लोगों को सन्मानपूर्वक बिदा करते थे जब इसीतरह श्यामसुन्दर सब छोटे बड़ोंको सुख देते हुये बन्दर व मूरतकी राहसे तीसरे दिन राजा युधिष्ठिरके सिवाने में पहुँचे तब किसीने राजा युधिष्ठिरसे आनकर कहा महाराज कोई राजा सेना लेकर तुम्हारे ऊपर चढ़ा आता है यह बात सुनतेही राजा युधिष्ठिरने नकुल व सहदेव अपने भाइयोंको समाचार लानेवास्ते भेजा जब नकुल व सहदेवको श्यामसुन्दर के आनेका हाल मालूम हुआ व उन्होंने बड़े हर्षसे फिरकर यह समाचार राजा युधिष्ठिरको दिया तब वह बड़े आनंद से अर्जुन व भीमसेन आदिक अपने चारों भाई व ब्राह्मण व ऋषीश्वर वेद पढ़नेवाले व अनेक वस्तु भेंट देनेवास्ते साथ लेकर आगे से गये॥

चौ० श्रीमुख देखि महासुख पायो। तिहिं सुखसे सब दुख बिसरायो॥
हरि दर्शन की शीतलताई। तासों मनकी तपन बुझाई॥

दो० रोम रोम हर्षित भये कहत युधिष्ठिरराज। सुफल भयो संसारमें जन्म हमारो आज॥

जैसे राजा युधिष्ठिरने निकट पहुँचकर मुरलीमनोहरके चरणोंपर गिरने चाहा वैसे द्वारकानाथने उनको अपने गले लगा लिया व श्यामसुन्दर राजा युधिष्ठिरको अपना बड़ा जानकर उनके चरणोंपर गिरपड़े ऐसी कृपा त्रिभुवनपतिकी देखतेही राजा युधिष्ठिर बड़े प्रेमसे मोहनप्यारे को गोदमें उठाकर प्यार करनेलगे व बड़े हर्ष से विधिपूर्वक पूजा उनकी की॥

दो० रूप अनूपम देखिकै मुदित भये मन माहिं । नयन निमिष लागे नहीं तनकी सुधि कछु नाहिं ॥

वसुदेवनन्दन ने भीमसेन व अर्जुन से गले मिलकर उन्हें सुख दिया व नकुल व सहदेवजी मुरलीमनोहरके चरणोंपर गिरे उन्हें उठाकर छाती से लगा लिया ॥

चौ० पुनि विप्रनको माथ नवायो । कुशल पूंछके हर्ष बढ़ायो ॥

व दूसरे क्षत्रीआदिक राजा युधिष्ठिरके साथ हस्तिनापुर से वास्ते देखने वैकुंठनाथके आये सब किसीका सन्मान यथायोग्य किया जब राजा युधिष्ठिर पीताम्बर बिछवाते चन्दन व गुलाब छिड़कवाते व सोने व चांदी के फूल लुटाते व अनेकतरह के बाजन बजाते हुये बड़े हर्ष से श्यामसुन्दर को नगरमें लिवा लेगये तब स्त्री व पुरुष वहांके रहनेवाले अपने अपने द्वारे व खिड़की व कोठोंपर बैठे हुये श्यामसुन्दरके दर्शन वास्ते अभिलाषा रखते थे उन्होंने मोहनीमूर्तिकी छवि देखकर अपने लोचनों का फल पाया व सुगन्धित पुष्प व रत्नादिक द्वारकानाथ पर नेवछावर करके एक स्त्री दूसरी से कहने लगी देखो बड़ाभाग्य श्यामसुन्दरकी स्त्रियोंका है जो रात दिन इनकेसाथ भोग विलास करके अपना जन्म स्वार्थ करती हैं व ब्राह्मणोंने यज्ञोपवीत वैकुंठनाथको आशीर्वादके साथ देकर दूसरे नगरवासियोंने अपने अपने वित्तानुसार रत्नादिक उनको भेंट दिया व वसुदेवनन्दनने यथायोग्य सबका सन्मान किया जब त्रिभुवनपति सब छोटे व बड़ोंको आनन्द देते हुये राजा युधिष्ठिरके रत्नजटित महलमें गये तब कुन्ती प्रेमसे उनको देखने वास्ते दौड़ी व मोहनीमूर्तिका चन्द्रमुख देखतेही आनन्द होगई जब श्यामसुन्दरने शिर अपना कुन्तीके चरणों पर रखकर दण्डवत् की तब उसने शिर उनका उठाकर छाती से लगालिया व उन्हें गोदमें बैठाकर प्रेमका आंसू बहाने लगी जब द्रौपदीने आनकर द्वारकानाथके चरणोंपर शिर रक्खा तब मुरलीमनोहरने अपना हाथ उसके शिरपर रखकर उसे व सुभद्रा अपनी बहिनको अशीश दिया जब रुक्मिणी आदि आठों पटरानियों ने कुन्ती के चरणोंपर शिर अपना रक्खा तब कुन्ती माताने उनको बड़ी प्रीतिसे छाती में लगाकर अपने पास बैठाला ॥

चौ० बड़ी देरलौं भेंटत रहे। बहुत नीर नयनन ते बहे॥
बारंबार धरैं जगदीशा। कुन्ती के चरणन पर शीशा॥
बह उठायके कंठ लगावैं। रोमरोम बहु आनँद पावैं॥
द्रोणाकृपाचार्यकी नारी। परम पुनीत महाशुभकारी॥
हरिजू तिन्हैं नवायो शीशा। है प्रसन्न उन दई अशीशा॥

जब सब कोई श्यामसुन्दर व रुक्मिणी आदिक से भेंट कर चुके तब कुन्तीने द्रौपदी व सुभद्रासे कहा तुमलोग आदरपूर्वक नित्य आठों पटरानियोंका शिष्टाचार किया करो व राजा युधिष्ठिर आदिक पांचो भाई अन्तःकरणमें वसुदेवनन्दनकी भक्ति रखते थे प्रेमसे उनका सन्मान करने लगे व उन पांचो में अर्जुन बड़ी मित्रता व प्रीति कृष्णचन्द्र से रखकर सदा उनके साथ एक रथपर अहेर खेलने जाया करता था हे परीक्षित इन्द्रप्रस्थ में वसुदेवनन्दन के आनेसे ऐसा सुख व आनन्द वहांके लोगोंको प्राप्त हुआ जिसका हाल मुझसे वर्णन नहीं होसक्ता जिसतरह चन्द्रमा का प्रकाश राजा व कंगाल दोनों के घरमें एक सा रहता है उसीतरह इन्द्रप्रस्थमें श्यामसुन्दरकी दयासे छोटे बड़ोंके घरमें प्रतिदिन नये नये सुख व आनन्द होने लगे॥

दो० या विधि परम हुलाससों कीन्हों तहां निवास। पांडुसुतनके काजको माखन प्रभु सुखरास॥

बहत्तरवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका जरासन्धके मारनेवास्ते जाना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब इसीतरह कई महीने श्यामसुन्दरको आनन्दपूर्वक वहां बीत गये व कुछ चर्चा यज्ञकी नहीं आई तब एकदिन राजा युधिष्ठिर अपनी सभामें जहां पर बहुतसे क्षत्री व ऋषीश्वर व ब्राह्मण बैठे थे उठकर श्यामसुन्दरके सन्मुख खड़े होगये व विनयपूर्वक हाथ जोड़कर उनसे कहा हे त्रिभुवनपते ब्रह्मा व महादेव आदिक सब देवताओं के मालिक तुम्हारे चरणोंका दर्शन बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वरोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता सो आपने मुझे अपना दास जानकर घर बैठे दर्शन दिया॥

चौ० तुम ऐसी प्रभु लीला करो। काहू से नहिं जाने परो॥
माया में भूला संसार। तुमसे करत लोकव्यवहार॥
जो तुमको सुमिरत जगदीश। उसको जानो अपना ईश॥

हे दीनानाथ तुम्हारी दयासे जगत् में सब इच्छा मेरी पूर्ण हुई पर एक अभिलाषा और रखता हूं आज्ञा हो तो विनय करूं श्यामसुन्दर बोले हे राजन् जो इच्छा तुमको हो सो बतलाओ वह भी पूरी हो जावेगी यह वचन सुनतेही राजा युधिष्ठिर प्रसन्न होकर बोले हे द्वारकानाथ राजसूय यज्ञ करने की इच्छा रखता हूं व सब मुनि व ऋषीश्वरों को भी इसमें प्रसन्नता है पर विना कृपा तुम्हारी यह कठिन यज्ञ सम्पूर्ण नहीं होसक्ता जिसतरह आपने कई वेर महाविपत्तिमें हमारी सुधि लेकर मेरा मनोरथ पूर्ण किया उसी तरह अब भी अपनी दयासे यज्ञ अच्छी तरह संपूर्ण करा दीजिये तो उसका फल तुम्हारे अर्पण करके भवसागर पार उतर जाऊं किसवास्ते कि संसारमें हम पांचो भाई तुम्हारे दास कहलाते हैं इसलिये संसारी लोग ऐसा कहेंगे कि श्यामसुन्दरकी दया से पाण्डवोंने राजसूय यज्ञ किया था और यह भी तुम्हारे चरणों का प्रताप है जो इच्छा मुझे हुई मैं इस बातका विश्वास रखता हूं कि जो तुम्हारे शरणमें आया उसका कोई मनोरथ बाकी नहीं रहता॥

चौ० जाविधि मन्त्र देहु यदुराजा। आयसु मानि करौं स्वइ काजा॥
दो० तुमहीं सब काजन विषे हमको होत सहाय। और हमारे कौन है माखन प्रभु यदुराय॥

यह आधीन वचन सुनतेही लक्ष्मीपतिने हँसकर कहा हे राजन् तुम्हारा कहना मैंने मानलिया यह बात उत्तम होकर सब देवता व पितर व ऋषीश्वर व मुनि तुमसे इस यज्ञ कराने की चाहना रखते हैं जिसमें अपना अपना भाग पावैं जब तुमने अपने प्रेमसे मुझे वश्य करलिया तब तुमको राजसूय यज्ञ या कोई इससे भी बड़ा काम करना कौन कठिन है जिसके आधीन मैं हुआ उसकी कुछ इच्छा बाकी नहीं रहती अर्जुनादिक तुम्हारे चारो भाई ऐसे बलवान् हैं जिनसे कोई दूसरा राजा युद्ध नहीं करने सक्ता व लोकपालों को भी ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो मेरे सामने इनसे लड़ने सकें इसलिये तुम अपने भाइयों को आज्ञा देव कि चारों दिशामें जाकर

सब राजों को जीतने उपरांत बहुतसा द्रव्य लेआवें तब तुम आनन्द से यज्ञ करो यह वचन सुनतेही राजा युधिष्ठिर ने बहुतसी सेना साथ लेकर अर्जुन को उत्तर व भीमसेन को पूर्व व सहदेव को दक्षिण व नकुल को पश्चिम दिशा जाने वास्ते आज्ञा दी सो वह लोग उनकी आज्ञानुसार चारों दिशा में गये जब चारों भाई कुछ दिन में वैकुण्ठनाथ के प्रताप से सातों द्वीप व नवखण्ड व दशों दिशा के राजोंको जीतकर बहुत सा द्रव्य लेआये तब राजा युधिष्ठिर ने हाथ जोड़कर वसुदेवनन्दन से विनय किया हे महाप्रभो यह कार्य तो तुम्हारी कृपासे पूर्ण हुआ अब क्या आज्ञा होती है यह वचन सुनकर उद्धव भक्तने राजा युधिष्ठिरसे कहा महाराज सब देश के राजोंको तुम्हारे भाई जीत आये पर जबतक राजा जरासन्ध मगधपति आपके आधीन नहीं होगा तबतक तुम्हारा यज्ञ सम्पूर्ण नहीं होसक्ता और वह ऐसा बलवान् व धर्मात्माहै जिसे कोई संसारमें जीत नहीं सक्ता॥

चौ० जो तुम युद्ध करो रणमाहीं। वासों जीति सकोगे नाहीं॥
एक बात अपने मन ल्याऊं। सो अब तुमसे कहि समझाऊं॥
विप्र वेष धरिकै हरि जाहीं। अर्जुन भीमसंग तिहि पाहीं॥
जरासन्ध दाता अतिभारी। जाको यश तिहुँलोकमँझारी॥
वासे जो मांगे कछु भिक्षा। देत वही जो मनकी इच्छा॥
यद्यपि शीशहु मांगै कोई। देत बार लाइहि नहिं सोई॥
विप्ररूप जब वापै जैहैं। युद्धदान ताहीं क्षण पैहैं॥

दो० राजन इस संसारमें सुस्थिर है कछु नाहिं। तद्यपि दाता पुरुषको नाम रहै जग माहिं॥

जब यह वचन सुनकर राजा युधिष्ठिर उदास होगये तब त्रिभुवनपति उन्हें धैर्य देकर बोले हे राजन् तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो उद्धव के कहने प्रमाण भीमसेन व अर्जुन अपने दोनों भाइयों को हमारे साथ करदेव किसीतरह बल व छलसे हमलोग राजा जरासन्ध को मार आवैंगे जब यह बात सुनकर युधिष्ठिर ने भीमसेन व अर्जुन को साथ लेकर मुरलीमनोहर के साथ जानेवास्ते आज्ञा दी तब लक्ष्मीपति उन दोनों को साथ लेकर ब्राह्मण वेष में मगधदेश को गये वह तीनों ब्राह्मण-रूप अति सुन्दर ऐसे तेजवान् मालूम देते थे जैसे सतोगुण व रजोगुण

व तमोगुण अपना तन धारण किये हों जब कई दिनमें वह लोग मध्याह्न समय ब्राह्मणरूप से जो अतिथि के भोजन कराने का समय है राजा जरासन्ध के द्वारेपर जाकर खड़े हुये तब एक द्वारेपालक ने उनको देखतेही राजा के पास जाकर कहा महाराज तीन ब्राह्मण अति तेजवान् आपसे भेंट करने वास्ते आनकर द्वारेपर खड़े हैं आज्ञा देव तो भीतर आवैं यह वचन सुनतेही जरासन्ध जो उस समय रसोई खाने जाया चाहता था बहुत प्रसन्न होकर आप द्वारेपर चला आया व श्यामसुन्दर आदिक ब्राह्मणरूप को दण्डवत् करके भीतर लेगया व सन्मानपूर्वक अपने सिंहासन पर बैठाकर उसने कहा महाराज जिसतरह आपलोगोंने दया की राह यहां आनकर मुझे कृतार्थ किया उसीतरह चलकर भोजन कीजिये तो तुम्हारा चरण धोकर अपना परलोक बनाऊं ॥

चौ० विप्रनकी सेवा जो करै। भवसागर से जल्दी तरै ॥

यह बात जरासन्ध की सुनकर श्यामसुन्दर बोले हे राजन् हमलोग बहुत दूरसे तुम्हारा यश सुनकर यहां आये हैं जो हमको इच्छा है सो देव किसवास्ते कि शूरवीरों को शिर व दानियों को अपना प्राणतक देडालने में कुछ लोभ नहीं रहता देखो एक कबूतर व्याधा के वास्ते इसतरह अपना प्राण देकर तर गया था कि एक व्याधा माघ महीने में पक्षी बझाने वन में गया सो पानी बर्षने व आंधी चलने से कोई पक्षी उसको नहीं मिला जब सरदी व भूखसे अति व्याकुल होकर अपने घर आने लगा तब उसने एक कबूतरी को जो सरदी से अचेत होकर पृथ्वी पर पड़ी थी उठालिया व रात होजाने से अपने घर नहीं पहुँचकर एक बरगदके नीचे बैठ रहा जब आधीरात को उस कबूतरी का पति जो उसी वृक्ष पर रहता था अपनी स्त्रीको याद करके पुकारने लगा तब उस कबूतरी ने चैतन्य होकर कहा हे स्वामिन् अब तुमको मेरे वास्ते शोच करना उचित न होकर अतिथि का दुःख जो सरदी व भूख से व्याकुल है धर्मकी राह छोड़ाना चाहिये जब यह सुनकर कबूतर को ज्ञान उत्पन्न हुआ तब वह कहीं से अग्नि अपनी चोंच में ले आया व लकड़ी अपने खोते से गिराकर वहां आग

लगा दी तो उस व्याधाकी सरदी छूटगई फिर वह कबूतर अपनी इच्छा से आग में गिरपड़ा व बहेलिये ने उसको खालिया तब वह कबूतरी बहेलिये से बोली अब मुझे भी भूंजकर खालेव विना पुरुषकी स्त्रीका जीना अच्छा नहीं होता जब बहेलिये ने कबूतरी को भी खाकर अपनी भूख मिटाई तब परमेश्वरने उन दोनों पक्षियों का ऐसा धर्म देखकर उनको वैकुण्ठ में बुलाने वास्ते विमान भेज दिया सो वह दोनों पक्षी पार्षदों से विनय करके उस बहेलिये को भी अपने विमान पर बैठाकर परमपद को लेगये सिवाय इसके तुमने सुना होगा कि राजा हरिश्चन्द्र ऐसा धर्मात्मा हुआ जिसने सब राज्य व धन अपना नारायणजी के नामपर ब्राह्मणों को देडाला था सो आजतक कीर्ति उसकी संसार में छारही है विस्तार-पूर्वक उसकी कथा कहते हैं सुनो एक समय राजा हरिश्चन्द्र के नगर में काल पड़ने से प्रजालोग भूखों मरने लगे तब उसने भूषण व वस्त्रादिक वस्तु अपनी बेंचकर प्रजा का पालन किया उन्हींदिनों राजा हरिश्चन्द्र संध्यासमय अपनी स्त्रीसमेत भूखे बैठे थे उसीसमय विश्वामित्र ऋषीश्वर ने राजा के धर्म की परीक्षा लेने वास्ते वहां आनकर कहा हे राजन् मुझे इच्छापूर्वक द्रव्य देकर कन्यादान का फल लेव यह बात सुनतेही हरिश्चन्द्र ने घरमें ढूंढ़ा सो जो कुछ भूषण व वस्त्रादिक उनके स्त्री व पुत्र का बचा था वह लाकर ऋषीश्वर को देदिया उसे देखकर विश्वामित्र बोले महाराज इतने में मेरा काम नहीं होगा यह सुनतेही राजाने अपने दासी व दास जो कुछ बचे थे उन्हें भी बेचकर जब रुपया उसका ऋषीश्वर के पास लेआये व केवल एक एक धोती अपनी स्त्री व पुत्रके पास रखलिया तब फिर विश्वामित्र बोले इतने द्रव्य से मेरा अर्थ नहीं होगा व मुझे कोई दूसरा तेरे समान धर्मात्मा संसारमें दिखलाई नहीं देता जिसके पास जाकर मांगूं पर एक डोम धर्मपात्रहै आज्ञा देव तौ उससे जाकर मांगूं पर वहां जाते मुझे लज्जा मालूम होती है कि तुम समान ऐसे दानी राजाको छोड़कर उससे क्या मांगूं यह बात सुनकर हरिश्चन्द्र ने ऋषीश्वरको अपने साथ लिवालिया व उस डोम चांडाल के घर जाकर

कहा हे भाई तुम हमको अपने यहां गिरों रक्खो व इन ऋषीश्वर को इच्छापूर्वक द्रव्य देव यह बात सुनकर वह डोम बोला॥

चौ० कैसे टहल हमारी करिहौ। राजस तामस मनसे हरिहौ॥
तुमहो नृपति तेज बलधारी। महानीच है टहल हमारी॥

हे राजन् तुमको श्मशानपर रहकर मुर्दा जलानेवालों से पैसा लेके हमारे घर पहुँचाना होगा व हमारे मकानकी चौकीदारी करनी पड़ेगी तुमसे यह दोनों काम होने सकैं तो हम इस ब्राह्मणको मुँहमांगा द्रव्य देकर तुम्हें गिरों रक्खें यह वचन सुनकर राजा हरिश्चन्द्रने कहा बहुत अच्छा हम वर्षदिनतक यह दोनों काम तुम्हारे करदेवैंगे यह वचन सुनते ही उस डोमने इच्छापूर्वक विश्वामित्रको द्रव्य देकर विदा किया तब राजा हरिश्चन्द्र वहां रहकर दोनों काम उसके करनेलगे व उनकी रानी पुत्रसमेत उसी नगर में किसी गृहस्थ के यहां रहकर सेवकाई से अपना दिन बिताने लगी परमेश्वर की इच्छासे कुछ दिन बीते राजा हरिश्चन्द्रका बेटा मरगया व रानीने उसकी लोथ गङ्गाकिनारे लेजाकर जलाने की इच्छा की तब हरिश्चन्द्र ने आनकर अपनी स्त्री से कहा तुम इस मुर्देका पैसा देदेव तो लोथ जलाओ यह वचन सुनते ही रानी रोकर बोली महाराज यह तुम्हारे पुत्रकी लोथ जलाने को लाई हूं व मेरे पास सिवाय एक धोती के और कुछ नहीं है यह बात सुनकर राजा हरिश्चन्द्र बोले हे प्रिया मैं पैसा न लूं तो मेरा धर्म जातारहै इसलिये अपने पुत्रको भी विना पैसा लिये नहीं जलाने दूंगा यह धर्मरूपी बात सुनते ही जैसे रानी ने अपना अंचल फाड़कर पैसाके बदले देना चाहा वैसे नारायणजी करुणानिधान ने ऐसा धर्म व सत्य राजा हरिश्चन्द्र का देखकर एक विमान जड़ाऊ उसके वास्ते श्मशानपर भेजदिया व पीछेसे आप भी वहां गये व राजाको दर्शन देकर रोहिताश्व उसके बेटेको अपनी महिमासे जिलादिया व राजा हरिश्चन्द्र को उसकी रानीसमेत विमानपर बैठाकर कहा वैकुण्ठ में चलो तब हरिश्चन्द्रने त्रिभुवनपति से हाथ जोड़ विनय किया हे महाप्रभु पतितपावन जिसतरह आपने मुझे अपना दास जानकर दर्शन दिया उसीतरह मेरे

स्वामी डोमको भी वैकुण्ठ में ले चलिये तो मेरा मनोरथ पूर्ण हो यह वचन अपने भक्तका सुनतेही लक्ष्मीपति उस चाण्डाल डोमको भी परिवारसमेत उसी विमानपर बैठाकर निस्सन्देह वैकुण्ठमें ले चले व राजा हरिश्चन्द्रको अमरपदवी दी व राजा रन्तिदेव ऐसा धर्मात्मा हुआ जिसने अड़तालीसवें दिन कुछ अनाज भोजन करने वास्ते पाया था वह भी ब्राह्मणको खिलाकर आप भूखा रहगया उसी धर्म से मुक्त पदवीपर पहुँचा व राजा बलि जब वामन महाराजको सब राज्य व धन अपना देकर शरीर देने वास्ते तैयार हुआ तब उसने राज्य सुतललोकका पाया जिसका यश आज तक संसार में छारहाहै व राजा शिबिने कबूतर के बदले अपने शरीरका मांस काट कर देडाला व उद्दालक ऋषीश्वर ने जो छठवें महीने भोजन करते थे आप न खाकर वह भोजन अतिथिको खिलादिया व आप भूखे रहगये उस अन्नदानके प्रताप से विमानपर बैठकर वैकुंठधामको पहुँचे व दधीचि ऋषीश्वरने अपना हाड़ इन्द्रादिक देवताओंको देडाला था॥

चौ० ऐसे दाता भये अपार। जिनका यश गावत संसार॥

हे राजन् सिवाय इन लोगों के और बहुत ऐसे दानी हुये जिन्हों ने अपना धन व प्राण देने में कुछ लोभ नहीं किया उनका हाल कहांतक तुमसे वर्णन करूं जिस तरह पिछले युगोंमें वह लोग धर्मात्मा होते आये हैं उसीतरह तुम भी इस युगमें दानी उत्पन्न हुये व हमारी इच्छा पूर्ण करोगे तो तुम्हारा यश भी संसार में स्थिर रहेगा यह वचन सुनने व चन्द्रमुख उनका देखने से जरासन्धने समझा कि यह लोग ब्राह्मण न होकर राजकुँवर दिखलाई देते हैं इसलिये प्राण भी मांगें तो देना चाहिये जिसमें मेरा धर्म बना रहे देखो राजा बलिने शुक्र पुरोहित के बर्जनेपर भी वामन जी को तीनों लोकोंका राज्य देडाला था सो आजतक उसका यश छारहा है अपना शरीर पालन करने में बड़ाई न मिलकर परोपकार करने से यश प्राप्त होता है ऐसा विचारकर जरासन्ध श्यामसुन्दर से बोला ऐ द्विजराज पहिले तुमलोग अपना नाम निष्कपट बतलाकर जिस वस्तुकी इच्छा रखते हो सो मांगो अपना प्राण तक देने में भी लोभ नहीं करूंगा यह

वचन सुनकर श्रीकृष्णजी बोले हे राजन् तुम सच पूंछते हो तो मैं श्रीकृष्ण यदुवंशी होकर यह दोनों भीमसेन व अर्जुन हमारे फूफाके बेटे हैं व मेरी व तुम्हारी पहिले भी मथुरा में भेंट हुई थी तुम मुझको पहिंचानते होगे मैं तुम्हारे यहां भिक्षा लेने नहीं आया अकेली अकेला युद्धदान मांगने आयाहूं सिवाय इसके और कुछ नहीं चाहता यह सुनतेही जरासन्ध प्रसन्न होकर बोला बहुत अच्छा मैंने तुम्हारा कहना माना पर मेरे सामनेसे भागकर द्वारका जा बसे हो इसलिये तुमसे लड़ते हुये मुझे लज्जा आती है व अर्जुनकी अवस्था छोटी है और यह वर्षदिनतक हिजड़ा बनकर राजा विराट्के यहां रहा था उससे क्या लडूं पर भीमसेन के साथ जो मेरे बराबरका है लड़ूंगा पहिले आपलोग मेरे यहां भोजन करके पीछे से धर्म-युद्ध कीजिये जब श्यामसुन्दरने भीमसेन व अर्जुनसमेत राजा जरासन्ध के यहां छत्तीस व्यञ्जन भोजन किया तब राजा जरासन्धने दो गदा लोहे की मँगवाईं और भीमसेनको ब्राह्मण का वेप छुड़ाकर एक गदा उसको दी और एक आप ली जब दोनों शूरवीर जो दश दश हजार हाथी का बल रखते थे नगरके बाहर जाकर अखाड़े में खड़े हुये तब जरासन्ध ने कहा हे भीमसेन तुम मेरे मकानपर ब्राह्मणरूपसे आयेथे इसलिये पहिले अपनी गदा चलाओ यहसुनकर भीमसेन बोला हे राजन् अब धर्मयुद्धमें ज्ञानचर्चा उचित न होकर जो चाहे सो गदा चलावै जब ऐसा कहकर दोनों वीर आपसमें गदायुद्ध करनेलगे तब एक दूसरे का वार गदापर रोंककर अपना अंग बचा लेताथा व लड़ते समय भीमसेन का श्वास पवनके पुत्र होनेसे नहीं फूलता था पर जरासन्ध उससे गदायुद्ध अच्छा जानकर फुरती रखता था जब इसीतरह युद्ध करते हुये संध्या होगई और कोई नहीं हारा तब दोनों वीर राजमन्दिर पर चले आये व एक साथ भोजन करके सोरहे और प्रात समय फिर उठकर उसीतरह गदायुद्ध किया जब लड़ते लड़ते दोनों गदा टूटकर चूर होजाती थीं तब वह दूसरी गदा मँगाकर आपस में लड़तेथे॥

दो० दिनमें काज करैं नहीं बिना युद्ध कछु और। रैनिसमय मिलि बैठकर खान पान यकठौर॥

जब इसी तरह लड़ते लड़ते सब गदा टूटगईं तब आपस में मल्लयुद्ध

करने लगे छव्बीसवें दिन जरासन्धने एक मुक्का भीमसेनकी छातीमें ऐसा मारा कि वह व्याकुल होगया तब उसने रातको कृष्णचन्द्रसे विनय किया महाराज जरासन्ध बड़ा बलवान् है इसलिये अब मैं उससे लड़ने की सामर्थ्य नहीं रखता कल्ह भाग जाऊंगा नहीं तो मेरी लज्जा तुम्हारे हाथ है यह वचन सुनतेही जैसे द्वारकानाथ ने अपना हाथ भीमसेन की छाती पर फेर दिया वैसे सब पीड़ा उसकी छूटगई व पवनसुत को छातीमें लगा लिया और कुछ बल अपना उसे देकर कहा लड़ते समय तुम मेरी सैन समझकर जरासन्धको मार डालना जब सत्ताईसवें दिन फिर दोनों शूरवीर लड़नेलगे उससमय दैत्यसंहारणने भीमसेन को एक तिनका दिखलाकर बीचमें से चीर डाला तब पवनसुतने उसका भेद समझतेही श्यामसुन्दरके बल देनेसे जरासन्धको उठाकर पटक दिया व एक जंघा उसकी पैरसे दबाकर दूसरी जंघा पकड़के चीरडाला सो शरीर मगधपतिका जो बीचमें जोड़ा हुआथा आधोआध होकर वह मरगया जरासन्धके मरतेही देवताओं ने प्रसन्न होकर भीमसेन आदिक पर फूल वर्षाये व अनेक बाजन बजाकर जयजयकार करने लगे व श्यामसुन्दर व अर्जुन ने भीमसेनकी भुजा पूजकर उसकी बड़ाई की॥

दो० जरासन्ध या विधि हत्यो भीमसेनके हाथ। सबलोगनको सुख दियो माखन प्रभु यदुनाथ॥

जब जरासन्ध के मरने का समाचार नगर में पहुँचा तब उसकी रानी रोती व पीटती हुई आनकर श्यामसुन्दरसे बोली महाराज तुम धन्य हो जो ऐसा कर्म आपने किया जिसने तुमको सर्वस्वदिया उसका प्राण तुमने लिया जो कोई अपना तनु व धन तुम्हारे भेंट करताहै उसके साथ तुम ऐसी भलाई करते हो जैसे राजा बलिसे किया था जब रानीने अपने पतिवास्ते अति विलाप किया तब श्यामसुन्दर ने उसे धैर्य देकर विदा कर दिया जब सहदेव बेटा मगधपतिका वसुदेवनंदनको परमेश्वर जानकर उनकी शरण में आया तब द्वारकानाथने जरासन्धकी क्रिया कर्म होने उपरांत सहदेव को राजगद्दीपर बैठाकर अपने हाथसे तिलक लगाया व धैर्य देकर बोले हे बेटा तुम धर्मपूर्वक राज्य करके गौ व ब्राह्मण व प्रजाका पालन करो॥

दो० जो नरेश हैं बन्दिमें ते सब देव छुड़ाय। आनँदसों निज देशमें राज्य करो चितलाय॥

तिहत्तरवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका बीसहजार आठसौ राजाओंका छुड़ाना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर सहदेवको राज्यगद्दी देकर उसे अपने साथ लियेहुये जहांपर सब राजा कैद थे आये तो क्या देखा कि एक गड़हा पहाड़ की खोहसमान खोदे हुये में सब राजा बंदहैं व एक भारी पत्थर उसके द्वारपर रक्खा है जब सहदेवने मुरलीमनोहरकी आज्ञानुसार सब राजाओंको खोहसे बाहर निकलवाकर उनके सामने खड़ा किया तब वह लोग पहिरने बेड़ी व हथकड़ी व बढ़ने नख व बालसे बहुत दुःखी थे नया जन्म पाकर हरिचरणों पर गिरपड़े व मोहनीमूर्तिका दर्शन पातेही सब दुःख अपना भूल गये व आनन्द होगये व बड़े प्रेमसे हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ आपने दयालु होकर बड़ी कृपा की जो यहां आनकर हमारी सुधि ली नहीं तो इस कैदसे छूटना बहुत कठिन था अब तुम्हारे दर्शन पानेसे हमलोगोंका पिछला दुःख सब भूल गया॥

दो० ऐसी विधि राजा सबै बारबार बलिजाहिं। माखन प्रभुकी लाजसे शीश उठावैं नाहिं॥

वृन्दावनविहारी यह दशा उन राजाओंकी देखतेही दयालु होकर जैसे सैनमें बतलाया वैसे सहदेव ने उनलोगों की हथकड़ी व बेड़ी कटवाकर क्षौरकर्म कराके स्नान कराया व छत्तीस व्यंजन खिलाकर उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाये अनेक तरहके हथियार बँधवाकर श्यामसुन्दर के पास लेआया उससमय द्वारकानाथ ने अपने चतुर्भुजीरूपसे शंख चक्र गदा पद्म लिये हुये जैसे उनलोगों को दर्शन दिया वैसे उन लोगों के हृदयमें ज्ञानका प्रकाश होगया तब उन राजाओंने वैकुण्ठनाथके सामने हाथ जोड़कर बड़े प्रेमसे आंसू बहातेहुये विनय किया हे दीनानाथ त्रिभुवनपति सब जीवोंके उत्पत्ति व पालन करनेवाले तुम्हारे आदि व अन्त को कोई नहीं जानता हमलोग संसारी जीवोंका जो भवजाल में फँस रहे हैं सिवाय तुम्हारे कोई दूसरा इस फन्देसे बाहर निकालनेवाला नहीं है आप चाहते तो द्वारकामें बैठेहुये अपनी इच्छा से राजा जरासंध

को मारकर हमें छुड़ादेते केवल तुमने अपनी कृपासे यहां आनकर हमें कृतार्थ किया नहीं तो तुम्हारे चरणोंका दर्शन बड़े बड़े देवता व ऋषीश्वरों को तप व जप करने परभी जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता है महाप्रभु आपको हमारी दण्डवत् पहुँचे अब हमलोगों का मन राज्य करने वास्ते न चाहकर यह इच्छा रखते हैं कि आठोंपहर आपके नाम का स्मरण व चरणों का ध्यान करके तुम्हारी लीला व कथा सुना करैं जिसमें इस अँधियारे कुयें माया व मोह व स्त्री व पुत्रसे बाहर निकलकर भवसागर पार उतर जावें जरासन्धने हमारे साथ बड़ा सलूक करके अपने यहां कैद किया था जिस कारण हमलोगों को तप व योग का फल मिलकर तुम्हारे चरणों का दर्शन प्राप्त हुआ ॥

दो० परब्रह्म तुम ब्रह्महौ वासुदेव घनश्याम । माखन प्रभु. गोविन्दको शिरसों करैं प्रणाम ॥

यह ज्ञान भरा हुआ वचन सुनकर लक्ष्मीपति बोले अभिमानी राजाओं को इसी तरह दुःख मिलता है जिसतरह तुमने पाया सुनो जिसके मनमें दया व धर्म व मेरे चरणों की भक्ति रहती है वह लोग संसारमें यश पाकर अन्तसमय मुक्त होते हैं बन्ध व मोक्ष अपने कर्मानुसार मिलता है जो कोई क्रोध लोभ मोह को अपने वश रखकर कुकर्म न करे उसे घर व वन दोनों जगह का रहना बराबर है देखो पिछले युगोंमें अभिमान ने राजा नहुष व वेणु व रावण आदिक को राज्यगद्दी से खो दिया व जिन्होंने अहंकार छोड़कर मेरी शरण पकड़ी वह लोग विभीषण व हनुमान् व अम्बरीष व प्रह्लाद के समान अपनी मनोकामना को पहुँचकर मेरे पास बने रहते हैं अभिमानी मनुष्य बहुत नहीं जीता राजा सहस्राबाहु को अपने बल व हजार भुजों का अभिमान हुआ था सो परशुरामजीने उसकी भुजा फरसेसे काटकर मारडाला व भौमासुर व बाणासुर व कंसादिक अनेक राजा अभिमानी नष्ट हुये हैं ॥

चौ० सो मति गर्व करो जनि कोई । छूटै गर्व तो निर्भय होई ॥

इसलिये तुमलोग दुःख व सुखको समान समझकर सदा मेरे स्मरण व ध्यान में मग्न रहो तो तुम्हें दुख नहीं होगा ॥

चौ० जो जन चित लावै मोमाहीं। हमहूं सदा रहैं त्यहि पाहीं॥
जो सब जन्म पाप में रहै। फिर वह शरण हमारी गहै॥
दो० ताको मैं अति प्रीति करि देत आपनो धाम। यामें दुख व्यापै नहीं रहै सदा विश्राम॥

यह सुनकर सब राजाओं ने विनय किया कि आप दयालु होकर हमें अपने जप व पूजाकी विधि बतला दीजिये तो उसीतरह तुम्हारे स्मरण व ध्यान में लीन रहकर भवसागर पार उतर जावें यह सुनकर वसुदेव-नन्दनने कहा सब वेद व शास्त्र का मुख्य ज्ञान यह है कि किसी क्षण मुझे न भूलकर मेरी कथा व लीला सुना करो व संसारी व्यवहार स्वप्नवत् समझकर मेरे नाम पर यज्ञ व होम किया करो व प्रजापालन व ब्राह्मण व साधु व महात्मों की सेवा करना झूठ मत बोलो व काम क्रोध मोह लोभ को अपने वश रख कर कुकर्म से रहित रहो तो तुम लोगों को राज्य भोगने पर भी किसी तरह का दुःख न होकर अन्त समय वैकुण्ठ धाम मिलैगा॥

चौ० जग में बुद्धिमान है सोई। जाके मोह लोभ नहिं होई॥
दो० ज्ञानीजन न्यारो रहै ऐसी विधिजगमाहिं। ज्यों अम्बुज जलमें बसै जलको परशत नाहिं॥

सो अब तुमलोग अपने अपने घर जाकर बालबच्चों का सुख देखो राजा युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञका आरम्भ करके तुमलोगोंको नेवता दिया है सो हमारे पहुँचने से पहिले हस्तिनापुर में जाव जब उनकी आज्ञानुसार सब राजा लोग अपने अपने घर जानेवास्ते तैयार हुये तब सहदेवने रथ व घोड़े व डेरे व सेवकादिक अपने यहांसे उनके संग करदिये व वैकुण्ठ नाथ ने सबके गले में एक एक माला मोतियों की अपने हाथसे पहिनाई जब वह सब राजा बड़े हर्ष से श्यामसुन्दर का यश गाते हुये अपने देश को गये व सहदेवने त्रिभुवनपति व भीमसेन व अर्जुन का पूजन विधि-पूर्वक किया तब श्रीकृष्णजी सहदेव को साथ लेकर मगधदेशसे इन्द्रप्रस्थ को चले जब हस्तिनापुर के निकट पहुँचकर वसुदेवनन्दन ने पाञ्चजन्य व भीमसेन ने पुण्डरीक व अर्जुनने देवदत्त शंख अपना अपना बजाया तब उस शंखका शब्द सुनतेही राजा युधिष्ठिर बड़े हर्षसे नकुल व सहदेव अपने भाई व सेनापतियों समेत आगे से आनकर लक्ष्मीपतिको सन्मान-

पूर्वक अपने घर लिवा लेगये पर राजा दुर्योधन शंख का शब्द सुनकर बहुत उदास होगया जब वसुदेवनन्दन व अर्जुन व भीमसेन राजा युधिष्ठिर के चरणों पर गिरे तब उन्होंने उनको अपनी छातीसे लगाकर प्रेम का आंसू बहाया व जरासन्ध के मारे जाने का समाचार सुनकर अतिप्रसन्न हुये॥

चौहत्तरवां अध्याय।

राजा युधिष्ठिरके यज्ञ में सब राजाओंका आना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित राजा युधिष्ठिर ने ज्ञानकी राह श्यामसुन्दरके सामने हाथ जोड़ विनय किया हे त्रिभुवनपति आपने ब्रह्मा व महादेव आदि सब देवतों के मालिक होकर मेरे वास्ते ब्राह्मणरूप धरके भीख मांगना अंगीकार किया इसलिये मैं अपने बराबर किसी दूसरे की भाग्य नहीं समझता देखो जिन चरणों का दर्शन बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वर व देवतों को जप व तप करने से भी जल्दी ध्यान में नहीं मिलता उन्हीं चरणों से तुमने मुझे अपना भक्त जानकर मेरा घर पवित्र किया जिनके चरणों का धोवन गंगाजी होकर तीनोंलोकों को तारती हैं वही परब्रह्म परमेश्वर तुम होकर मेरी आज्ञा पालन करते हो यह सब तुम्हारी दया भक्तवत्सलता की राह से है नहीं तो ब्रह्मा व महादेव आदिक ऐसी सामर्थ्य नहीं रखते जो तुम्हारे ऊपर आज्ञा करैं देखो संसारी मनुष्य राज्य व धनके पानेसे किसीको अपने बराबर नहीं समझता सो आप त्रिभुवनपति होकर मेरे यहां कोई काम छोटा या बड़ा करने में कुछ अभिमान नहीं रखते॥

दो० तुम्हरे सुमिरण ध्यानमें पावन होत शरीर। याते सुमिरत हौं सदा माखन प्रभु बलवीर॥

और कुन्तीने जरासन्धका मारना सुनकर श्यामसुन्दरसे विनय किया हे महाप्रभु! अब तुम्हारी कृपासे राजसूय यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्ण होगा यह वचन सुनतेही भीमसेन हँसकर बोले हे माता तुम झूठी स्तुति मुरलीमनोहर की क्या करती हो जरासन्ध को मैंने मारा है॥

दो० एक ओर बैठे रहे आनँद सों घनश्याम। जरासन्ध बलवान सों मैं कीन्हों संग्राम॥

यह बात सुनकर केशवमूर्ति बोले हे माता भीमसेन सत्य कहते हैं पर मैंने इसको सैन से बतला दिया था कि जरासन्धकी दोनों टांगें चीरकर मारडालो उसी उपाय से वह मारा गया यह सुनकर युधिष्ठिर आदिक सब कोई हँसने लगे सब सातों द्वीप नवों खण्डके चन्द्रवंशी व सूर्यवंशी राजा अपनी अपनी स्त्रियों समेत द्रव्य व रत्नादिक भेंट देने वास्ते साथ लेकर हस्तिनापुर में आये तब राजा युधिष्ठिर ने भेंट उनकी लेकर नगरके चारों तरफ उन लोगोंको डेरा दिया व यथायोग्य सबका सन्मान किया व उनमें जो राजा जरासन्धकी कैदसें छूटकर आयेथे वह लोग बड़े हर्षसे यज्ञका सब काम करनेलगे व सब नेवतहारी राजाओं ने श्यामसुन्दर व रुक्मिणी आदिक आठों पटरानियों का दर्शन प्रेमसे करके लोचनोंका फल पाया व नकुल जाकर भीष्मपितामह व दुर्योधन आदिक कौरवोंको अपने यहां लिवा लाया व शुकदेव व वेदव्यास व नारदमुनि व कश्यप व वशिष्ठ व वामदेव व अत्रि व परशुराम व धूम्र व भरद्वाज व च्यवन व कण्व व मैत्रेय आदिक बहुतसे ऋषीश्वर व ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व गन्धर्व व किन्नर व यक्ष व लोकपालादिक सब देवता व महात्मालोग अपनी अपनी स्त्रियों समेत राजा युधिष्ठिर का नेवता व वैकुण्ठनाथके दर्शन करने वास्ते उस यज्ञमें आये व उन्होंने त्रिभुवनपतिका दर्शन करके अपना अपना जन्म स्वार्थ किया तब राजा युधिष्ठिरने देवता व ऋषीश्वरोंका पूजन विधिपूर्वक करके उन्हें जड़ाऊ सिंहासनपर बैठाला व सिवाय उनके और बहुत से अनगिनत चारों वर्ण जो अनेक देशसे वहां आये उन लोगोंका सन्मान यथायोग्य किया व श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार एक एक काम यज्ञ का सब राजोंको बांट दिया जब यज्ञ करनेका मुहूर्त आया तब द्वारकानाथने हँस कर राजा युधिष्ठिर से कहा अब तुम यज्ञ करने वास्ते बैठो हम व अर्जुन आदिक सब लोगों का सन्मान करेंगे यह सुनतेही राजा युधिष्ठिर ने सब कपड़े उतारकर नई धोती पहिन ली व शुभ लग्नमें सुवर्णके हलसे अपने हाथ यज्ञ करने वास्ते पृथ्वी जोतकर तैयार की व साकल्य आदिक सब वस्तु यज्ञकी सुवर्ण के बर्तनों में मँगाकर ऋषीश्वरों के पास रखवा दी

जब ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंने वेदी वं अग्निकुण्ड बनाकर वेदमंत्र पढ़ना आरम्भ किया तब राजा युधिष्ठिर द्रौपदी से गांठ जोड़कर यज्ञशाला में आये व आसनपर बैठकर अग्निकुण्डमें आहुति देनेलगे उस समय देवतों ने वैकुण्ठनाथकी आज्ञानुसार प्रत्यक्ष अपना अपना हाथ फैलाकर यज्ञका भाग लिया व राजा युधिष्ठिरने सब ब्राह्मणोंके हाथमें सोनेका स्रुवा होम करने वास्ते दिया था और सब सुनहले बर्तन यज्ञके देखकर नेवतेवाले आश्चर्य मानके कहते थे देखो इतना द्रव्य राजाने कहांसे पाया जो ऐसी तय्यारी की उनमें ज्ञानीलोग उत्तर देते थे जिसपर लक्ष्मीपति आप सहायक हैं उनको क्या कमी है यह वचन उन लोगोंका सुनतेही राजा युधिष्ठिर हँसकर श्यामसुन्दरसे बोले ॥

दो० कहत तुम्हारे नामते सिद्धि होत सबकाज । नमस्कार तुमको करौं यज्ञपुरुष यदुराज ॥

जब राजसूय यज्ञ राजा युधिष्ठिरका अच्छीतरह सम्पूर्ण हुआ तबसब देवता व गन्धर्वादिक बड़ाई राजा युधिष्ठिर के भाग्यकी करने लगे व दुन्दुभी बजाकर उनपर पुष्पोंकी वर्षा की उससमय राजा युधिष्ठिरने भीष्मपितामह व दूसरे छत्रधारी राजाओंसे जो वहां बैठेथे पूछा ॥

चौ० जगमें जो कुछ कारज कीजै । निज पुरुषनसे आज्ञा लीजै ॥
तो वह काज सदा शुभ होय । यह निश्चय जानो सब कोय ॥
याते हमैं मंत्र यक दीजै । पूजा प्रथम कौनकी कीजै ॥
कौन बड़े देवनके ईश । ताही पूजि नवावैं शीश ॥

यह बात सुनकर अभीतक किसीनें उत्तर नहीं दिया था कि सहदेव जरासन्धके पुत्रने उठकर राजा युधिष्ठिरसे विनय किया महाराज आप जान बूझकर क्या पूंछते हैं सिवाय द्वारकानाथ त्रिभुवनपतिके दूसरा कौन पूजने योग्य है जिसका पूजन करोगे श्यामसुन्दरने सब जगत्की उत्पत्ति व पालन व नाश करनेवाले होकर पृथ्वीका भार उतारने व अधर्मियों को मारने वास्ते अपनी इच्छासे अवतार लिया है इसलिये उन्हीं को अग्निरूप व यज्ञपुरुष जानना चाहिये जिसतरह वृक्षकी जड़में पानी देनेसे सब डाली व पत्तोंको वह जल गुण करता है उसीतरह कृष्णचन्द्र की पूजा करने से सब देवता तृप्त होंगे वसुदेवनन्दनका भेद कोई नहीं

जानता जितनी वस्तु संसार में देखते हो सब उन्हींकी उत्पत्ति कीहुई हैं व गंगाजी इनके चरणोंका धोवन होकर तीनोंलोकों को तारती हैं इनका स्मरण व ध्यान करने व कथा सुननेसे सब पाप छूटकर मुक्ति मिलती है जिस जगह आप साक्षात् परब्रह्म परमेश्वर विराजते हैं वहां दूसरेकी पूजा नहीं होसक्ती और यह सब परमेश्वरकी मायाहै जो हमलोग अपना भाई बन्धु व यदुवंशी इनको समझते हैं ॥

चौ० सब संसार शरीर समाना । प्राणरूप हैं यह भगवाना ॥
सर्व आतमा इनको जानो । पूरण शांतरूप पहिंचानो ॥

दो० हरिजूकी पूजा करै मन चितदै जो कोय । मानो पूजे देव सब सुफल कामना होय ॥

यह वचन सहदेवका सुनकर श्यामसुन्दर उसे सैनसे बर्जनेलगे तुम मत कुछ कहो पर जितने देवता व ऋषीश्वर व ज्ञानी राजा जो उस यज्ञ में बैठे थे यह बात सुनतेही बोल उठे हे सहदेव तेरी बुद्धि व माता व तेरे पिता व गुरुको धन्य है जिन्होंने तुझको ऐसा ज्ञान सिखाया तुम्हारे पुरुषा इसीतरह के धर्मात्मा व ज्ञानी होते आये हैं जब राजा युधिष्ठिरने यह बात सहदेव व ज्ञानी राजाओंकी अपनी इच्छानुसार सुनी तब बड़े हर्षसे जड़ाऊ सिंहासन मँगवाकर द्वारकानाथको रुक्मिणीआदिक आठों पटरानी समेत उसपर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लिया और वह जल अपने परिवारसमेत शिर व आंखोंमें लगाया व सब देवता व राजाओंने वह चरणामृत पीकर अपना अपना जन्म सुफल किया व राजा युधिष्ठिरने वैकुण्ठनाथको पीताम्बर पहिनाया व केसरि व रक्तचन्दन का तिलक लगाकर रेशमी उपर्ना ओढ़ाया व रत्नजटित उत्तम उत्तम भूषण अंग अंगमें पहिनाकर जड़ाऊ किरीट व मुकुट शिरपर बांधा व रत्न व मोतियों का हार व सुगन्धित पुष्पोंकी माला गले में पहिनादी व विधिपूर्वक पूजा करके बहुतसा रत्न व द्रव्यादिक उनके आगे भेंट रखकर विनय की हे लक्ष्मीपति आप तीनोंलोक व सब वस्तुके मालिकहैं इसलिये मुझे तुमको भेंट देतेहुये लज्जा आती है यह आनन्द देखतेही देवताओं ने श्यामसुन्दरको दण्डवत् करके उनपर फूल बरसाये व वसुदेवनन्दनकी बड़ाई करने लगे ॥

दो० ऐसी विधि पूजे जभी माखन प्रभु जगदीश। भये लोग आनन्द सब राजहि देत अशीश॥

उस समय द्वारकानाथ ऐसे सुन्दर मालूम देते थे जिनकी उपमा कही नहीं जाती व कोई राजा अच्छीतरह आंख उठाकर इस कारण उनकी ओर देख नहीं सक्ता था जिसमें उन्हें दृष्टि न लगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित श्यामसुन्दर की पूजा करने से जितने छोटे व बड़े वहां पर थे सब प्रसन्न हुये पर शिशुपाल चंदेली के राजा को यह बात अच्छी नहीं मालूम हुई इसलिये वह थोड़ी देर नहीं बोला फिर कुछ शोच विचार करके अपनी मृत्यु निकट पहुँचने से उठ खड़ा हुआ व क्रोधसे सभा में हाथ उठाकर बोला हे राजा युधिष्ठिर व धृतराष्ट्र व भीष्मपितामह व दुर्योधन आदिक तुमलोग बड़े बड़े ज्ञानी व धर्मात्मा होकर ऐसे मूर्ख होगये कि एक बालक के कहने से पूजा श्रीकृष्णजी की इसतरह पर की जिसतरह कोई मनुष्य यज्ञ व होम करने की खीर काकको खिला देवै तुमलोग नहीं जानते कि वसुदेवनन्दन ने बहुत दिन तक वनमें गो चराकर अहीरोंके संग रोटी खाई व परस्त्रियोंके साथ रासलीला करके भोग व विलास किया जब से आजतक यह बात अच्छीतरह नहीं मालूम हुई कि ये वसुदेव यादवके बेटे हैं या नन्दके तब इनका कौन वर्ण व किसका बालक कहा जावे यह बड़ा आश्चर्य है जो तुमलोग ऐसे आदमी को जिसके माता पिताका ठिकाना नहीं लगता अलख अगोचर समझते हो इन्हीं श्रीकृष्णने राजा इन्द्रकी पूजा छुड़ाकर गोवर्द्धन पहाड़को पुजवाया था ये शास्त्र के अनुसार न चलकर जो कुछ इनके मनमें आता है सो करते हैं सिवाय दूध व दही आदिक चुराने व अधर्म करने के कोई शुभकाम इन्होंने नहीं किया देखो ये शत्रुके भयसे जन्मभूमि अपनी छोड़कर समुद्रके किनारे जाबसे हैं इसलिये ब्रजवासियों को इनके विरह में अतिदुःख होताहै जिसपर भी ये कुछ ध्यान नहीं करते व वृन्दावन में रहकर इन्होंने गोपियोंका चीर चुराया था और यदुवंशीलोग राजा ययातिके शापसे तिलकधारी राजा न होकर थोड़ेदिनों से बढ़गये हैं फिर तुमलोगोंने क्या समझकर इनकी पूजा की मैं परमेश्वरकी सौगन्द

खाकर कहता हूं ये सब बातें कहने से मुझे कुछ अपनी पूजा कराने की इच्छा नहीं है जो सचथा सो कहदिया देखो जहांपर वेदव्यास व नारदमुनि व पराशर आदिक बड़े बड़े ऋषीश्वर व ब्रह्मा व महादेव व इन्द्रआदिक सब देवता बैठे हैं वहां पर श्रीकृष्णकी पूजा करना इसतरह समझना चाहिये जिसतरह होमकी सामग्री कोई कुत्तेको खिला देवै व राजा युधिष्ठिर श्यामसुन्दरकी बड़ाई जो करते हैं तो इसका यह कारण है जिसतरह कुन्ती ने अपने पतिको छोड़के दूसरोंके वीर्यसे युधिष्ठिर आदिकको उत्पन्न किया उसीतरह श्रीकृष्णजी के बापका ठिकाना नहीं लगता अपन बराबरवालों की सब चाहना करते हैं केशवमूर्ति शिशुपालकी बातका कुछ उत्तर न देकर एक एक दुर्वचन कहनेपर रेखा खींचते जाते थे ॥

दो० मथुरा गया प्रयाग तजि गये और ही देश। खारी जल ऊपर बस्यो किये ठगनको भेश॥

जब इसीतरह अनेक दुर्वचन शिशुपाल द्वारकानाथको कहने लगा तब ज्ञानी लोग परमेश्वरकी निन्दा सुनने में अधर्म समझकर वहांसे उठगये व भीमसेन व द्रोणाचार्य व अर्जुनने क्रोधित होकर शिशुपालसे कहा हे मूर्ख अभिमानी तू हमारे सन्मुख त्रिभुवनपति की निन्दा करताहै चुप रह नहीं तो अभी तुझे मारडालते हैं जब ऐसा कहकर भीमसेन शिशुपाल के मारनेवास्ते दौड़ा तब शिशुपाल भी उसके सन्मुख जाकर ऐसा ललकारा कि सभावाले डरगये उससमय श्यामसुन्दरने सिंहासनसे उतरकर भीमसेन आदिकको समझाया कि तुमलोग शिशुपालपर शस्त्र मत चलाओ व दुर्वचन कहने से मत बजों जो यह चाहै सो कहै देखो क्षणभर में यह आप मारा जायगा ॥

दो० भीमादिक सबसे कह्यो क्रोध न कीजै आज। निज भ्राताके यज्ञमें विघ्न करो क्यहि काज॥

जब वैकुण्ठनाथ के बर्जने से भीमसेनने शिशुपालको नहीं मारा तब राजा युधिष्ठिर शोचित होकर बोले देखो शिशुपाल मेरी सभामें वैकुण्ठनाथको ऐसा दुर्वचन कहताहै क्या करूं विना आज्ञा त्रिभुवनपतिकी कुछ कहने नहीं सक्ता जब इसीतरह शिशुपालने एकसौ एक कठोर वचन श्यामसुन्दर को कहे व युधिष्ठिर उनके भक्तको भी दुर्वचन सुनाया तब

वसुदेवनन्दन ने क्रोधवश होकर पूजाकी थालीको अपने मंत्रसे सुदर्शन-चक्र बनाकर शिशुपालका शिर काटडाला तो उसके धड़से एक ज्योति निकलके पहले आकाश में जाकर फिर श्रीकृष्णजी के मुखमें समागई यह चरित्र देखकर देवताओंने श्यामसुन्दर पर फूल बरसाये व ऋषीश्वर लोग उनकी स्तुति करनेलगे व दूसरे राजाओं ने शिशुपाल ऐसे अधर्मी की मुक्ति देखकर बहुत आश्चर्य माना इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे मुनिनाथ श्रीकृष्णजी ने शिशुपाल को ऐसे कठोर वचन कहने पर किसतरह मुक्ति दी व एकसौ एक रेखा खींचकर उसे मारनेका क्या कारण था शुकदेवजी बोले हे राजन् यह हाल इसतरह पर है कि जय व विजयने सनकादिक के शाप देने से तीनबेर संसार में जन्म लिया और तीनबेर परमेश्वर से शत्रुताई करके मुक्ति पाई जब पहिले उन दोनों ने हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु होकर देवतोंको दुःख दिया तब नारायणजीने वाराह व नृसिंह अवतार लेकर उनका वध किया दूसरीबेर जब वे रावण व कुम्भ-कर्णका जन्म पाकर गौ व ब्राह्मणों को दुःख देने लगे तब वैकुण्ठनाथ ने श्रीरामचन्द्रका अवतार लेकर उनको मारडाला ॥

दो० अब यह तीजे जन्म में भयो एक शिशुपाल। दन्तवक्र है दूसरो असुरन को भूपाल ॥

हे राजन् शिशुपाल व दन्तवक्र मुरलीमनोहर को अपना शत्रु जान कर दिन रात ध्यान उनका करते थे इसीवास्ते श्रीकृष्णजी परब्रह्म अवतार ने शापकी अवधि बीतने पर शिशुपाल व दन्तवक्रका शिर सुदर्शनचक्र से काटकर उनको वैकुण्ठ में भेज दिया व सौ रेखा खींचने का कारण यह है कि महादेवी नाम बहिन वसुदेवजी की दमघोष राजा चन्देलीको ब्याही गई थी जब उसके पेटसे शिशुपाल जिसके तीन आंखें व चार भुजायें थीं उत्पन्न हुआ व राजाने ज्योतिषियों को बुलाकर उसकी जन्मकुण्डली का फल पूंछा तब ब्राह्मणोंने विचारकर कहा महाराज यह बालक अतिबलवान् व प्रतापी होकर उस मनुष्य के हाथ से माराजायगा जिसके गले मिलने से एक आंख व दो भुजा इसकी गुप्त होजावेंगी दूसरा कोई संसार में इस को मारने नहीं सक्ता जब यह वचन ज्योतिषियों का महादेवीने सुना तब

वह इस बातकी परीक्षा लेनेवास्ते शिशुपाल अपने बेटेको सबकी गोदमें देकर गले लगाने लगी एकबेर महादेवी शिशुपाल समेत द्वारका में शूरसेन अपने बाप के यहां जाकर थोड़ेदिन रही जब उसने ज्योतिषियों का वचन याद करके अपने बेटेको यदुवंशियों के साथ गले मिलवाया तब श्यामसुन्दर से गले मिलतेही दो भुजा व एक आंख शिशुपालकी लोप होगई यह दशा देखतेही महादेवीने विनयपूर्वक कहा हे द्वारकानाथ मैं तुमसे यह भीख मांगती हूं कि अपनी फुआके बेटा शिशुपालको भाई समझकर कभी मत मारना यह वचन सुनकर त्रिभुवनपति बोले हे फुआ मैं तेरे बेटेके सौ अपराध क्षमा करूंगा अधिक अपराध करेगा तो विना मारे न छोडूंगा इस बातका वचन महादेवी लक्ष्मीपतिसे लेकर अपने घर चलीगई व उसने यह विचारकर अपने मनको धैर्य दिया कि मेरा बालक किसवास्ते सौ अपराध वसुदेवनन्दनके करैगा इसीवास्ते श्यामसुन्दरने सौ कठोर वचन शिशुपाल के सहकर उसे मारा और वही गुप्तबात द्वारकानाथ ने राजसूय यज्ञ में कहकर सब राजाओंका सन्देह छुड़ाया था यह सुनकर परीक्षितने कहा हे मुनिनाथ अब आगे कथा सुनाइये शुकदेव जी बोले हे परीक्षित जब राजा युधिष्ठिरका यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्ण हुआ तब उन्होंने न्योतहारी राजाओं को उनकी स्त्रियों समेत यथायोग्य उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र देकर बिदा किया और वे लोग आनन्दपूर्वक अपने अपने घर को गये व जितने छोटे बड़े उस यज्ञमें आये थे वे लोग राजा युधिष्ठिरसे ऐसे प्रसन्न हुये कि किसी का मन घर जानेवास्ते नहीं चाहता था पर राजा दुर्योधन को धर्मपुत्र की बड़ाई सुनने व प्रताप देखने से ऐसी डाह हुई कि क्रोधित होकर अपने घर चलागया ॥

पचहत्तरवां अध्याय।

राजा युधिष्ठिर का शोभास्थान वर्णन करना ॥

राजा परीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले हे मुनिनाथ जहां सब राजा उस यज्ञ करनेसे प्रसन्न हुये थे वहां दुर्योधनने क्यों खेद किया व यज्ञ का काम किसतरह सबको बांटा गया था यह कथा कहिये शुकदेवजी बोले

हे परीक्षित तुम धन्य हो जो हरिकथा सुननेसे तृप्त नहीं होते सुनो अर्जुन आदिक चारो भाई राजा युधिष्ठिरकी आज्ञा आनन्दपूर्वक मानकर किसी छोटेवड़े काम करनेमें लज्जा नहीं रखते थे पर सब बातोंके मालिक श्याम-सुन्दर थे इसलिये उन्होंने यथायोग्य सब काम राजाओं को सौंप दिया भीमसेनको भोजन कराने का काम सौंपकर बांट देना उसका धृष्टद्युम्न के अधीन किया कोष द्रव्यादिक का राजा दुर्योधन को सौंपकर खर्च करना उसका कर्णके जिम्मे किया था जिसका दान आजतक संसारमें प्रकट है व सन्मान करना व सुधि लेना न्योतेवाले राजाओं का अर्जुन को सौंप कर अलंकृत करना स्थान सभाका विदुरके अधीन हुआ था व देवता व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंकी पूजा व सेवा करना सहदेव को सौंपा और इकट्ठी करलाना द्रव्यादिक सब वस्तुका नकुलके जिम्मे किया व श्रीकृष्ण-जीने ब्राह्मणों का पैर धोना और जूठी पत्तल उनकी उठावना अपने जिम्मे रक्खा था व द्रौपदी रुक्मिणी आदिकका शिष्टाचार अन्तःकरण से करती थी इसीतरह पर राजा युधिष्ठिरने मुरलीमनोहर की आज्ञानुसार जो काम यज्ञ का जिस राजाको सौंप दिया था वे लोग उस कामको बड़े प्रेम से करते थे पर राजा दुर्योधन कपटकी राह एक रुपये की जगह दश रुपया राजा युधिष्ठिरका इस कारण लोगोंको देडाला था जिसमें द्रव्य चँटिजावै तो राजा युधिष्ठिरकी हँसी हो सो वैकुण्ठनाथ की दयासे इस तरह बहुत देने में अधिक यश व धर्म राजाका होता था व दुर्योधनके हाथमें चक्र रहनेसे ऐसा प्रभाव था कि जिस भंडारे से वह एक रुपया खर्च करै उसमें दशगुणा बढ़ जावे इसकारण द्वारकानाथ अन्तर्यामी ने उसे कोष द्रव्या-दिक का सौंपा था पर दुर्योधन को यह महिमा नहीं मालूम थी हे परीक्षित जब अच्छीतरह यशपूर्वक यज्ञ राजा युधिष्ठिरका सम्पूर्ण हुआ तब धर्मराज ने असंख्य द्रव्य व रत्न व भूषण व वस्त्रादिक ब्राह्मण व ऋषीश्वर यज्ञ करनेवाले व उनकी स्त्रियोंको इच्छापूर्वक देकर प्रसन्न किया व सब छोटे बड़ों को साथ लिये हुये गंगाकिनारे जाकर वहां द्रौपदी समेत विधिपूर्वक स्नान किया उस समय ब्राह्मण व ऋषीश्वरों ने वेद पढ़ा व देवतोंने राजा

युधिष्ठिरपर फूल वर्षाये और कहा धन्यभाग्य धर्मराज का है जिसने ऐसा कठिन यज्ञ सम्पूर्ण किया व अप्सरों ने अपने अपने विमानोंपर नाचकर गन्धर्वोंने गाना सुनाया ॥

चौ० या विधि सकल स्वर्ग के वासी । देखि यज्ञविधि भये हुलासी ॥

दो० नर नारी छोटे बड़े कहत धन्य यदुराज । जिनकी कृपा सुदृष्टि से भयो यज्ञको काज ॥

उस समय सब हस्तिनापुरवासी उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिने हुये शोभा देखने वास्ते अपने अपने कोठे व खिड़कियों पर बैठकर बड़ाई भाग्य राजा युधिष्ठिरकी करते थे उनका रूप व नगर की शोभा देखकर सब यदुवंशी आपसमें कहने लगे हमलोग जानते थे कि द्वारकापुरी के बराबर दूसरा नगर संसारमें न होगा सो हस्तिनापुर उससे भी उत्तम दिखलाई दिया जब राजा युधिष्ठिर स्नान करके अपने स्थान पर आये तब जितने ब्राह्मण व याचक व भिखारी वहां इकट्ठे हुये थे उनको मुँहमांगा दान व दक्षिणा देकर आनन्दपूर्वक विदा किया जब ऐसी दातव्य युधिष्ठिरकी देखकर सब छोटे बड़े उनका यश गाने लगे तब दुर्योधनको युधिष्ठिरकी बड़ाई सुनने व सब राजाओं को उनके सामने दण्डवत् करते देखने से बहुत दाह उत्पन्न हुई ॥

दो० यज्ञकथा शिशुपालवध कहै सुनै जो कोय । पावत फल वह यज्ञको लहै मुक्तिफल सोय ॥

श्यामसुन्दर अपनी पटरानियों को नित्य समझाया करते थे कि तुम लोग सेवा कुन्ती व द्रौपदी की अच्छीतरह करना जिसमें वे किसी बात का खेद न पावैं व पटरानियों की सुन्दरताई व भूषण व वस्त्रकी तय्यारी देखने व घुंघुरूका शब्द सुननेसे देवताओं का चित्त ठिकाने नहीं रहता था मनुष्य कौन गिनती में है जब राजा युधिष्ठिर अपने उत्तम स्थान में जो मय नाम दानव ने बना दिया था जड़ाऊ सिंहासन पर द्रौपदी समेत बैठे तब द्वारकानाथ की इच्छानुसार अप्सरा व गन्धर्वों ने देवलोक से आनकर वहां नाचना व गाना आरम्भ किया था उससमय शोभा धर्मराज की ऐसे मालूम देती थी जैसे इन्द्र अमरावतीपुरीमें अपनी स्त्री को साथ लेकर इन्द्रासन पर बैठें पर राजा युधिष्ठिर ऐसे सुख व यश

मिलने पर भी कुछ अभिमान न लाकर यह समझते थे कि श्यामसुन्दर के प्रताप से मेरा यज्ञ सम्पूर्ण होकर यह यश मिलता है जिससमय राजा युधिष्ठिर इन्द्र के समान राजसभामें बैठे हुये अप्सराओंका नाच देख रहे थे उसी समय राजा दुर्योधन बहुत सेना साथ लिये अभिमानपूर्वक वहां आनकर स्थान देखने चला उसमें बिल्लौर व रत्नादिक जड़े होकर कई जगह कुण्ड बिल्लौर के ऐसे बने थे जिसमें पानी भरा हुआ मालूम होता था व कई जगह जल भरे हुये कुण्ड सूखे दिखलाई देते थे जब दुर्योधनने धोखे से सूखे आंगन में पानी समझकर अपना जामा उठाया व दूसरी जगह सूखा स्थान जानकर पानीमें कपड़ों समेत चला गया तब रुक्मिणी व द्रौपदी आदिक स्त्रियां खिड़कियोंमेंसे यह दशा देखकर हँसने लगीं व भीमसेन खिलखिलाकर बोला हे धृतराष्ट्र के बेटा आगे चलो यह दशा दुर्योधनकी देखकर राजा युधिष्ठिर ने भीमसेन को हँसने से बहुत बर्जा पर वह उनके बर्जने पर भी खिलखिलाकर हँसता रहा तब दुर्योधन अति लज्जित होकर मनमें कहने लगा देखो ये लोग मुझे अन्धा बनाकर मेरी हँसी करते हैं जब ऐसा विचारकर दुर्योधन क्रोधवश बिना स्थान देखे उसी जगह से अपने घर फिरगया तब राजा युधिष्ठिर बहुत शोच करने लगे पर भीमसेन व श्यामसुन्दर प्रसन्न हुये व दुर्योधन अपनी सभामें बैठकर मंत्रियों से बोला देखो श्रीकृष्णका बल पाकर युधिष्ठिर को ऐसा अभिमान होगया कि आज सभामें भीमसेनने मेरी हँसी की इस बात का बदला उनसे न लूँ तो आजसे अपना नाम दुर्योधन न रक्खूं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित दुर्योधनसे अधिक शत्रुताई होनेका यही कारण था उसी दिनसे दुर्योधन ने युधिष्ठिर आदिक के पीछे पड़कर उन्हें वनवास दिया विस्तारपूर्वक हाल उसका महाभारतमें लिखा है श्रीकृष्णजी परब्रह्मपरमेश्वर महाभारत कराके बड़े बड़े शूरवीरों का नाश कराना चाहते थे इसलिये उनकी इच्छानुसार कौरवों व पांडवों में शत्रुताई हुई थी ॥

दो० जो प्रकटे संसार में भार उतारन काज । भारत चाहत हैं करन माखन प्रभु यदुराज ॥

छिहत्तरवां अध्याय।

राजा शाल्वका द्वारकामें युद्ध करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जिस दिन राजा शाल्व जो शिशुपाल की बरात में कुंडिनपुर जाकर श्याम व बलराम से हार मानके भाग आया था उसी दिन उसनें यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं यदुवंशियोंका वंश संसारमें जीता छोड़ूं तो आजसे क्षत्रिय न कहलाऊं ॥

दो० माखोजवशिशुपालको माखनप्रभुगोपाल।शाल्वनृपतिअतिदुखितभो सुनत मित्रको काल ॥

शिशुपालका मरना सुनते ही राजा शाल्वने विचार किया कि यदुवंशियों को जो बड़े बलिष्ठ हैं विना वरदान पाये किसी देवताका जीतना कठिन है जब ऐसा विचारकर राजा शाल्व शिशुपाल का बदला लेने वास्ते तप व ध्यान महादेवजीका सच्चे मनसे करने लगा व वर्ष दिनतक बराबर केवल मुट्ठीभर राख सन्ध्यासमय खाकर रहा तब शिवजीने प्रसन्न होकर अपना दर्शन उसे दिया और कहा तुझे जो इच्छा हो सो वरदान मांग ॥

दो० महामुदित कर जोरिकै बोल्यो शाल्वनरेश। शत्रुवैर मोहिं दीजिये भोलानाथ महेश ॥

हे महाप्रभु मुझे ऐसा विमान आकाशमें उड़नेवाला देव जिसे देखकर यदुवंशी लोग डरजावें व कोई शस्त्र देवता व दैत्यका भी उस विमान पर न लगै यह वचन सुनतेही शिवजीने मय नाम दानव को बुलाकर कहा तू एक विमान बहुत बड़ा व चौड़ा राजा शाल्व के वास्ते ऐसा बनादे जिसमें कोई शस्त्र न लगै व जहां चाहै वहां उड़ाता हुआ क्षणभर में लेजावै जब मयदानव ने महादेवजी की आज्ञानुसार एक विमान अष्टधाती बहुत लम्बा व चौड़ा अपनी माया से तैयार कर दिया तब राजा शाल्व अपने शूरवीर व सेना को शस्त्र समेत उस विमान में बैठाकर द्वारकाकी ओर गया उन दिनों श्यामसुन्दर प्रद्युम्न आदिकको यज्ञ होने उपरान्त द्वारका में भेजकर आप राजा युधिष्ठिर के प्रेमसे बलराम समेत इन्द्रप्रस्थ में रहगये थे जब उनके पीछे राजा शाल्व ने पहुँचकर द्वारकापुरी को चारों ओरसे घेर लिया व वहाँ के वृक्ष व स्थानों को

जड़से उखाड़कर गिराने लगा व उसकी मायासे द्वारकापुरीमें प्रलयकाल की आंधी चलकर आगि व पत्थर बरसने लगे तब द्वारकावासियोंने घबड़ाकर राजा उग्रसेन से यह हाल कहा राजाने प्रद्युम्न व शाम्बको बुला कर आज्ञा दी कि श्याम व बलरामका न रहना सुनकर राजा शाल्व हम लोगों को दुःख देने आया है इसलिये तुम दोनों भाई हमारी सब सेना साथ लेकर उससे युद्ध करो यह वचन सुनते ही जब प्रद्युम्नजीने द्वारकावासियों को धैर्य दिया और शाम्ब व सात्यकी व कृतवर्मादिक शूरवीर व बहुत सेना अपने साथ लेकर नगरके बाहर लड़ने आये तब राजा शाल्व ने प्रद्युम्न को देख कर ऐसे बाण चलाये कि चारों तरफ घटारूपी अँधियारा छागया उससमय प्रद्युम्न ने जैसे द्युतिवन्त शस्त्र अपना छोड़ा वैसे अँधियारा छूटकर इसतरह उजियाला होगया जिसतरह सूर्य निकलने से कुहिरा नहीं रहजाता जब शाल्वका रथ सन्मुख आया तब प्रद्युम्न ने एक तीरसे रथकी ध्वजा काटकर दूसरे बाणसे सारथी को मार डाला व तीसरे तीरसे रथके घोड़ों को मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया व बहुत शूरवीर उसके साथियोंको अपने बाणसे घायल कर डाला जब राजा शाल्व ऐसी शूरताई प्रद्युम्नकी देखकर घबड़ागया तब सन्मुख लड़नेकी सामर्थ्य न रखकर मायायुद्ध करनेलगा कभी बड़ा स्वरूप बनाकर सामने आता व कभी छोटा रूप बनाकर आकाशसे आगि व पत्थर बरसाता था॥

दो० ऐसी विधि माया बहुत करी मूढ़ रणमाहिं। श्रीप्रद्युम्नप्रतापसे दूर होत क्षणमाहिं॥

इधर तो शाल्व अपने मायायुद्ध से यदुवंशियोंको दुःख दे रहा था उधर देवमान उसके मन्त्री ने प्रद्युम्न पर बाण चलाना आरम्भ किया उससमय कामरूप ने अपने तीरोंसे उसका बाण काटकर एक तीर ऐसा उसके मारा कि देवमान अचेत होगया जब थोड़ी देर में देवमान का चित्त ठिकाने हुआ तब उसने क्रोधित होकर एक गदा ऐसे जोर से प्रद्युम्न के शिर पर मारी कि वे मूर्च्छा खाकर रथ में गिर पड़े तब देवमान चिल्लाकर बोला कि मैंने कामरूप को मार डाला जब यह वचन सुनकर सब यदुवंशी घबड़ागये तो धर्मपति रथवान् पुत्र दारुक सारथी ने कृष्णकुमारको बहुत

अचेत देखा तब वह रथ उनका रणभूमि से अलग लेगया जब थोड़ीदेर बीते प्रद्युम्न चैतन्य हुये तब उन्होंने रथ अपना रणभूमि में न देखकर बड़े क्रोध से सारथी से कहा तैंने बहुत बुरा किया जो मुझे रणभूमि से अलग लेआया ॥

चौ० ऐसो नहीं उचित है तोहिं। जानि अचेत भगायो मोहिं ॥
यदुकुल में ऐसो नहिं कोई। खेत छोड़ि जो भागा होई ॥

हे धर्मपति तैंने मुझे कभी युद्ध से भागते देखा था जो आज रणभूमि से भगाकर मेरे माथेपर कलंकका तिलक लगाया अब मैं श्याम व बलराम को अपना मुँह क्या दिखलाऊंगा संसारीलोग मेरी हँसी करके भाई लोग मुझे नपुंसक कहैंगे व रुक्मिणी माता मेरे उत्पन्न होनेका दुःख मानकर भौजाइयां मुझे लज्जित करैंगी कि तैंने यह काम करके अपने बापका नाम धराया व जगत् में मेरी हँसी कराई ॥

चौ० रण में मरे परमपद पावै। जीत होय तौ शूर कहावै ॥
दो० रामकृष्ण सुनिहैं जवै पछितैहैं मनमाहिं। कहिहैं प्रकट्यो प्रद्युमन महा कपूतन माहिं ॥

जब धर्मपति ने यह सब बात प्रद्युम्न की सुनी तब रथ से उतर हाथ जोड़कर विनय की हे दीनदयालु आपसे कुछ हाल राजनीति का छिपा न होकर मेरे गुरुने ऐसा बतलायाहै कि जब महारथी लड़ते समय अचेत होजावे तब उसके सारथी को चाहिये कि रथ उसका रणभूमि से अलग लेकर खड़ा रक्खै व सारथी घायल होजावै तो महारथीको उसकी रक्षा करनी उचित है इसलिये जब तुम गदा लगने से अचेत होगये तब मैंने रथ तुम्हारा रणभूमिसे बिलग लाकर खड़ा करदिया ॥

दो० गुरुकी आज्ञा जानकर मैं कीन्हों यह काज। मोहिं दोष लागै नहीं यदुकुलके शिरताज ॥

हे महाप्रभु दौड़ाते समय रथ मेरा पीछे रहकर रस्सी या पहिया उसका टूटजाता तो मैं दोषी होता विना अपराध सेवक पर क्रोध करना न चाहिये थोड़ी देर आराम करचुके अब चलकर संग्राम कीजिये यह वचन सुनकर प्रद्युम्न बोले हे धर्मपति तुमने तो अपने गुरु की आज्ञानुसार यह काम किया पर इसमें मेरी नाम धराई हुई इसलिये तुम सौगन्द खाव कि

यह हाल किसी से हम नहीं कहेंगे जब धर्मपति ने सौगन्द खाकर प्रद्युम्न का शोच छुड़ाया तब उन्होंने हाथ मुँह धोकर धनुर्बाण अपना उठा लिया व रथ अपना रणभूमिमें लिवा लेगये ॥

सतहत्तरवां अध्याय ।

श्रीकृष्णजीका द्वारका में आना व राजा शाल्व को मारना ॥

शुकदेवजीनें कहा हे परीक्षित जो यदुवंशी प्रद्युम्न को अचेत देखकर उदास होगये थे वे लोग कामरूप का रथ देखतेही ऐसे आनन्द होगये जैसे मुर्दे के तनु में प्राण आजावे उससमय कृष्णकुमारने अपने साथियों को धैर्य देकर धर्मपति से कहा तुम जल्दी रथ मेरा देवमान के पास जहां वह यदुवंशियों को मार रहा है ले चलो जब यह बात सुनकर सारथी ने रथ प्रद्युम्न का देवमान मन्त्री के सन्मुख पहुँचा दिया तब कृष्णकुमार ने उसे ललकार कर कहा तू इधर उधर गरीबोंको क्या मारताहै हमसे आन कर युद्ध कर यह वचन सुनतेही देवमान यदुवंशियों से लड़ना छोड़कर प्रद्युम्न पर बाण चलाने लगा तब कामरूपने चार तीर से चारों घोड़े उसके रथ के मारकर एक बाण से सारथी को मारडाला व दो तीर से ध्वजा व छत्र व एक बाण से धनुष काटकर तीन तीर से देवमान को मार गिराया उस समय शाम्ब भी इसतरह शाल्व की सेना मारकर गिराने लगा जिस तरह किसान लोग जुआर का खेत काट डालते हैं जब ऐसा युद्ध प्रद्युम्न व शाम्ब का देखकर बहुत साथी राजा शाल्व के भाग चले तब अनेक मनुष्य भागती समय समुद्र में डूबकर मरगये जब इसीतरह सत्ताईस दिन बराबर राजा शाल्व प्रद्युम्न आदिक से लड़ता रहा तब यदुवंशियोंने ऐसी सामर्थ्य व वीरता उसकी देखकर आपस में कहा यह कोई बड़ा शूरवीर है जो इतने दिन हमारे सामने युद्ध में ठहरा नहीं तो श्यामसुन्दर की दया से आजतक कोई शूरवीर पांच दिन से अधिक हमारे संन्मुख नहीं लड़ा हे परीक्षित जब इसीतरह राजा शाल्व मायायुद्ध करके यदुवंशियों को दुःख देने लगा तब इन्द्रप्रस्थ में वासुदेव ने क्या स्वप्ना देखा कि द्वारकापुरी को किसी ने जलाकर समुद्र में डुबादिया व यदुवंशीलोग

रणभूमि में मरे पड़े हैं तब उन्होंने युधिष्ठिर से कहा महाराज अशुभ स्वप्न देखने से मुझे ऐसा मालूम होता है कि शिशुपाल के साथी दैत्य द्वारका में यदुवंशियों को मारकर नाश किया चाहते हैं आज्ञा देव तो वहां जाकर उनकी रक्षा करें राजा युधिष्ठिरने हाथ जोड़कर विनय की हे महाप्रभु मुझे आपका कहना टालना नहीं है यह वचन सुनतेही जब श्याम व बलराम रथपर बैठकर द्वारका को चले तब नगर के बाहर आनकर क्या देखा कि एक हरिणी बाईं ओर से निकल गई और कुत्ता सन्मुख खड़ा हुआ शिर अपना झाड़ता है ये दोनों अशकुन देखतेही मुरलीमनोहर अन्तर्यामी सब दशा द्वारका की जानकर सारथी से बोले रथ जल्दी लेचलो ॥

दो॰ दारुक रथ हांक्यो तभी हरिकी आज्ञा पाय। बाणरूप दूजे दिवस रणमें पहुँचे जाय॥

केशवमूर्तिने युद्ध राजा शाल्वका देखकर बलदाऊजी से कहा हे भाई तुम द्वारका में जाकर राजा उग्रसेन व प्रजा की रक्षा करो मैं शाल्व को मारकर वहां आऊंगा जब रेवतीरमण यह आज्ञा पाकर द्वारका को गये तब दैत्यसंहारणने दारुक से कहा जल्दी मेरा रथ शाल्व के सन्मुख लेचल जैसे वह रथ मुरलीमनोहर का दौड़ाकर उसके सामने पहुँचा वैसे राजा शाल्व ने ध्वजा रथ वैकुण्ठनाथकी पहिंचान कर एक सांग दारुक रथ-वान् पर चलाई तब लक्ष्मीपति ने तीरसे सांग उसकी काटकर सोलह बाण ऐसे मारे कि विमान राजा शाल्वका कुम्हारके चाकके समान घूमने लगा उस समय शाल्वने एक भाला बड़े वेग से श्यामसुन्दर पर चलाया तब द्वारकानाथ उसको भी अपने तीरसे काटकर इसतरह बाण मारने लगे कि राजा शाल्व घबड़ा गया पर उसने फुरती करके ऐसा बाण श्यामसुन्दर की बाईं भुजा में मारा कि शार्ङ्गधनुष् उनके हाथ से गिर पड़ा जब उसके गिरनेका शब्द तीनों लोकों में पहुँचा तब देवता व यदुवंशी लोग डरकर उदास होगये व राजा शाल्व अज्ञानीने अपनी जीत समझकर चिल्ला के कहा हे कृष्णचन्द्र तुम रुक्मिणी को जिसकी मँगनी शिशुपाल मेरे मित्रसे हुई थी बरजोरी उठा लेगये व राजा युधिष्ठिरके यज्ञ में तुमने शिशु-पालको मारडाला दो घड़ी मेरे सन्मुख खड़े रहकर भाग न जावोगे तो

आज अपने मित्रका बदला तुमसे लूंगा मुझे भौमासुर व शकटासुर आदिक दैत्य जिनको बल व छलसे तुमने मारडाला था मत समझना यह वचन सुनकर दैत्यसंहारण बोले हे शाल्व शूरवीरलोग अपनी बड़ाई आप नहीं करते संसार में अपना यश गावनेवाले को कोई अच्छा नहीं कहता इसलिये जो कुछ बल रखता हो सो दिखलाव जिसकी मृत्यु निकट पहुँचती है उसको भली बुरी बात कहनेका कुछ विचार नहीं रहता जिस तरह शिशुपाल मारा गया उसीतरह एक क्षणमें तेरी भी वही दशा होगी ऐसा कहकर मुरलीमनोहरने एक गदा शाल्वके शिरपर इस वेगसे मारी कि लोहू मुँहसे गिरकर अङ्ग उसका कांप उठा पर वह अन्तर्धान होकर मायायुद्ध करके अग्नि वर्षाने लगा तब वसुदेवनन्दनने ऐसे बाण मारे कि सब माया छूटकर राजा शाल्व विमान समेत पृथ्वीपर गिरपड़ा जब फिर उठकर उसने एक गदा श्यामसुन्दर पर चलाई तब लक्ष्मीपतिने वह गदा काटकर एक गदा उसको ऐसी मारी कि वह अचेत होगया जब थोड़ीदेर में वह चैतन्य हुआ तब मन्त्रके बलसे अपने को दूत बनाकर शिर व मुँहमें धूर लपेटे पसीना बहाता हुआ श्यामसुन्दरके सन्मुख आया व रुदन करके बोला अय त्रिभुवनपति मुझे देवकी तुम्हारी माताने भेज कर कहा है कि राजा शाल्व वसुदेव तुम्हारे पिताको मारने वास्ते पकड़ लेगया तुम उनकी सुधि क्यों नहीं लेते यह वचन दूतका सुनते ही एक क्षण मुरलीमनोहरने शोचित होकर फिर विचार किया कि बलरामजीके सामनेसे जिनको कोई देवताभी जीतने नहीं सक्ता राजा शाल्व वसुदेवको किस तरह पकड़ लेगया होगा जिससमय केशवमूर्ति इसीतरह का शोच व विचार कररहे थे उसीसमय शाल्व मायारूपी वसुदेव बनाकर उनके बाल पकड़े हुये श्रीकृष्णजीके सन्मुख ले आया तब मायारूपी वसुदेव तड़फता हुआ श्यामसुन्दरसे बोला हे बेटा हम तुमको उत्पन्न व पालन व रक्षा करनेवाला संसारका जानते हैं सो राजा शाल्व मुझे तुम्हारे सामने लाकर प्राण लेना चाहता है इसके हाथसे जल्दी छुटाओ यह बड़े लज्जा की बात समझना चाहिये जो मैं तुम्हारे ऐसा बेटा त्रिभुवनपति रखकर

इतना दुःख पाऊं जिस समय मायारूपी वसुदेव इसतरह विलाप कररहा था उसीसमय शाल्वने ललकार कर फिर श्यामसुन्दरसे कहा देखो हम वसुदेवको पकड़कर तुम्हारे सामने मारते हैं तुम्हें बल हो तो छुड़ालेव ऐसा कहने उपरांत राजा शाल्वने मायारूपी वसुदेव का शिर तलवारसे काटकर बरछीकी नोकपर उठालिया व सब लोगोंको दिखलाकर बोला हे श्रीकृष्ण तुमने देखा जिसतरह तुम्हारे बापको मैंने मारडाला उसी तरह यदुवंशियोंको मारकर समुद्रमें डालदूंगा यह हाल देखकर एक क्षण मुरली-मनोहरको मूर्च्छा आगई फिर उन्होंने ध्यान धरकर देखा तो मालूम हुआ कि यह मायारूपी वसुदेव बना है इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जिससमय मायारूपी दूतने आनकर देवकीका संदेशा कहा व शाल्वने मायारूपी वसुदेवका शिर काट लिया उससमय लक्ष्मीपति को कुछ संदेह हुआ था यह हाल सुनकर ऋषीश्वर व ज्ञानीलोग ऐसा कहते हैं कि जिन परमेश्वरका नाम लेनेसे संदेह छूटकर मन शुद्ध होजाता है उनके कामों में संदेह करना न चाहिये ॥

चौ० जो प्रभु केवल ब्रह्म कहावैं। केहि कारण इतनो भ्रम पावैं ॥
जग में मनुष देहधरि आये। तेहि कारण इतनो भ्रम पाये ॥
दो० माखनप्रभु भगवानको कबहूं भ्रम कछु नाहिं। तद्यपि यह लीला करी जानिलेहु मनमाहिं ॥

जब केशवमूर्तिने समझा कि शाल्वने मायारूपी वसुदेव बनाकर शिर काटा है तब पांचजन्य शंख बजाकर बड़े क्रोधसे रथ अपना उसके पीछे दौड़ाया व एक गदा ऐसी मारी कि विमान राजा शाल्वका सौ टुकड़े होकर समुद्रमें गिरपड़ा उससमय शाल्वने विमान परसे कूदकर एक गदा वसुदेवनन्दनपर चलाई सो दैत्यसंहारण ने अपनी गदासे उसकी गदा तोड़ डाली ॥

चौ० सोई गदा वज्रसम भारी। केतिकबार शाल्वपर मारी ॥
दो० वाको बल कहिये कहा युद्ध करै अतिघोर। श्रीमाखन प्रभुकी गदा क्षणमें डारै तोर ॥

जब इसीतरह देरतक राजा शाल्व द्वारकानाथसे गदायुद्ध करता रहा तब वृन्दावनविहारीने बाणसे भुजा उसकी काटकर गदा समेत गिरा दिया व सुदर्शनचक्र मारकर इसतरह शिर उसका काट लिया जिसतरह इन्द्रने

वृत्रासुर दैत्यको मारा था जब शाल्व के धड़से एक ज्योति निकलकर वसुदेवनन्दनके मुखमें समागई तव देवताओंने मरना राजा शाल्वका देख कर दुन्दुभी बजाई व दैत्यसंहारणपर फूल वर्षाकर उनकी स्तुति करने लगे॥

अठहत्तरवां अध्याय।

राजा दन्तवक्र व विदूरथ दोनों भाइयोंका श्यामसुन्दरसे लड़ने वास्ते आवना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह दन्तवक्र व विदूरथ दोनों भाई शिशुपाल के मारे गये थे उनका हाल कहते हैं सुनो जिस दिन राजा शिशुपाल युधिष्ठिर के यज्ञमें मारागया उसी दिन से वे दोनों कृष्णजी से शिशुपाल अपने भाईका बदला लेने वास्ते विचार किया करते थे जब उन्होंने सुना कि राजा शाल्व हमारे भाईका मित्र द्वारकामें जाकर लड़ रहाहै तब उन दोनोंने भी बहुत सेना साथ लेकर द्वारकापुरी पर लड़ने वास्ते चढ़ाई की॥

दो० गजरथ पैदल तुरँगकी सेन लिये निज साथ। चले द्वारकाओरको सब असुरनके नाथ॥

श्यामसुन्दर राजा शिशुपालको मारकर अभीतक द्वारकापुरीमें नहीं पहुँचे थे कि उसीसमय दन्तवक्र व विदूरथ दोनों भाइयोंने अपनी सेनासमेत वहां पहुँचकर मुरलीमनोहरको घेर लिया जब उन्हें देखकर सब यदुवंशी घबड़ागये तब दन्तवक्र वासुदेव के सन्मुख जाकर अभिमानसे बोला तुमने मेरे भाई व मित्रको मारा इसलिये आज तुमको यदुवंशियों समेत यमपुरी भेजकर उनका बदला लूंगा पहिले तुम अपना शस्त्र मेरे ऊपर चला लेव पीछे हम तुमको मारेंगे जिसमें तुमको यह अभिलाषा न रहजावे कि हमने दन्तवक्र पर शस्त्र नहीं चलाया तुमने बड़े बड़े शूरवीर युद्ध में मारे हैं पर आज मेरे हाथसे जीते बचकर तुमको अपने घर जाना बहुत कठिन है॥

चौ० कहत सुनो मोहनगोपाला। धनि भ्राता मेरो शिशुपाला॥
जेहिके वैर काज ह्यां आयौं। दर्शन महाराज को पायौं॥
जाको दरश तुम्हारो होई। भवसागर से उतरत सोई॥
अब मोको चिन्ता कछु नाहीं। दुहूंभांति निर्भय मनमाहीं॥
जो मैं मरौं तुम्हारे हाथा। होइ हौं स्वर्गलोक को नाथा॥

दो० अरु जो तुमको मारकर जियत रहौं जगमाहिं। तौ राजनको राजहौं यामें संशय नाहिं॥

जब इसीतरह अनेक बातें कहकर दन्तवक्रने एक गदा श्रीकृष्णपर चलाई तब दैत्यसंहारण अपनीगदासे उसकीगदा गिराकर बोले हे दन्तवक्र जितना बल तेरे अंग में था वह सब तैंने गदा चलाकर पूरा किया अब चैतन्य हो हमारी पारीं है यह कह कर द्वारकानाथने कौमोदकी नाम गदा अपनी इस वेग से दन्तवक्रकी छातीपर मारी कि वह रक्त वमन करके उसी क्षण मरगया ॥

दो० प्राणज्योति वाकी निकस चढ़ी स्वर्गकी छाहँ । फेर समानी आनकर मोहन प्रभु मुखमाहँ ॥

यह दशा देखकर विदूरथ भाई दन्तवक्र का ढाल तलवार लियेहुये मुरलीमनोहर के सन्मुख आया तब लक्ष्मीपतिने उसका शिर सुदर्शनचक्रसे काटकर मुकुट व कुण्डलसमेत पृथ्वीपर गिरा दिया जब उन दोनों के मरतेही सब सेना उनकी भाग गई तब तीनोंलोकों में हर्ष होकर देवताओं ने श्यामसुन्दरपर फूल वर्षाये व दुन्दुभी बजाकर सब देवता व ऋषीश्वर स्तुतिकरके बोले हे दीनानाथ तुम्हारी लीला अपरम्पार होकर कोई उसका भेद जानने नहीं सक्ता जय व विजय आपके द्वारपालक सनकादिक के शाप देने से प्रथम हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु व दूसरीबेर रावण व कुंभकर्ण व तीसरे जन्म शिशुपाल व दन्तवक्र हुये वे शत्रुतावश तुम्हारा भजन व स्मरण करते थे आपने उनका उद्धार करनेवास्ते तीन बेर सगुण अवतार धारण किया व अपने हाथ से उनको मारकर फिर वैकुण्ठ में भेज दिया ऐसा दीनदयालु व अपने भक्त की रक्षा करनेवाला दूसरा कौन होगा जब सब देवता यह स्तुति कहकर श्यामसुन्दरको दण्डवत् करके अपने अपने लोकमें चलेगये तब वृन्दावनविहारी भक्तहितकारी ने जैसे घायल व मरेहुये यदुवंशियोंको अमृतरूपी दृष्टिसे देखा वैसे मरेहुये जीकर घायल लोग अच्छे होगये जब यह महिमा वैकुण्ठनाथकी देखकर सब छोटे बड़े उनका यश गानेलगे तब लक्ष्मीपति सब यदुवंशियों को साथ लेकर आनन्दपूर्वक दुन्दुभी बजाते हुये द्वारका आये व राजा शाल्वआदिक की जो वस्तु लूटलाये थे वह सब उग्रसेनको दी उनको देखते ही सब छोटे बड़ों ने प्रसन्न होकर अपने अपने घर मंगलाचार मनाया व वैकुण्ठनाथ

की आज्ञा से विश्वकर्मा ने जो स्थान दैत्यों ने तोड़ डाले थे क्षणभर में ज्योंके त्यों वनादिये व श्रीकृष्णजी ने उसी दिन युद्ध करना छोड़कर यह प्रतिज्ञा की कि अब शस्त्र धारण न करूंगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेव जी बोले हे परीक्षित जब कुछ दिन वीते राजा युधिष्ठिर आदिक पाण्डवों व दुर्योधन आदिक कौरवों से महाभारतकी तैयारी हुई तब श्यामसुन्दर राजा उग्रसेन से यह समाचार कहकर बलरामजी से बोले हे भाई इस महाभारत में मुझे क्या करना चाहिये यह बात सुनकर बलदाऊजी ने मनमें विचारा कि मुरलीमनोहर पाण्डवोंकी इच्छा पूर्ण करने वास्ते महाभारत कराया चाहते हैं मैं वहां रहकर दुर्योधन अपने चेलेकी सहायता करूंगा तो केशवमूर्ति खेद मानेंगे व श्यामसुन्दरकी आज्ञा पालन करने में दुर्योधन बुरा मानैगा इसलिये हस्तिनापुर न जाकर तीर्थयात्रा करने चला-जाताहूं आगे जो इच्छा वैकुण्ठनाथकी होगी वैसा करेंगे यह बात विचार कर रेवतीरमणने श्रीकृष्णजी से विनय किया हे महाप्रभु आप हस्तिनापुर में जाकर जैसा उचित हो वैसा कीजिये मैंभी तीर्थयात्रा करता हुआ वहां आनकर पहुँचूंगा यह वचन सुनकर केशवमूर्तिने महाभारत करानेकी इच्छा से बलदाऊजी को वर्जना उचित नहीं जाना जब वसुदेवनन्दन कुरुक्षेत्र में जहां अठारह अक्षौहिणी दल महाभारत करने वास्ते इकट्ठा हुआ था गये तब बलदाऊजी भी प्रभासक्षेत्र व सरस्वती व गंगा व यमुना आदिक बहुत तीर्थों पर स्नान व दान व यात्रा करते हुये नीमषार व मिश्रिखमें पहुँचे वहां पर उन्होंने क्या देखा कि एकस्थानपर बहुतसे ऋषीश्वर व मुनि इकट्ठे होकर यज्ञ करते हैं व दूसरी जगह रोमहर्षण सूतपौराणिक चेला वेदव्यासजी का सिंहासनपर बैठा हुआ शौनकादिक ऋषीश्वरोंको कथा सुनाताहै बलदाऊजी को देखतेही शौनकादिक सब ऋषीश्वर सन्मान करनेवास्ते उठखड़े हुये पर रोमहर्षण विद्या के अभिमान से नहीं उठा तब रेवतीरमण क्रोधित होकर बोले इस मूर्खको किसने व्यासगद्दी दी है हरिकथा बांचने वास्ते ऐसा ज्ञानी व हरिभक्त चाहिये जिसके लोभ व अहंकार न हो आप ऋषीश्वर लोग देखते हैं यह पौराणिक विद्या पढ़ने

पर भी शास्त्रानुसार न चलकर अभिमान के मदमें अन्धा होरहा है जिस तरह कलियुग के ब्राह्मण दूसरों को उपदेश देकर आप मर्यादपूर्वक नहीं चलते उसीतरह यह काम क्रोध मोह लोभ के वश होकर छोटे बड़ों को नहीं पहिचानता व हमारा अवतार केवल अधर्मी व कुचालियों के मारने वास्ते हुआ है इसलिये जो कोई हमारे सामने कुमार्ग चले उसका अपराध हम क्षमा नहीं करसक्ते ऐसा कहने उपरान्त शेषावतार ने एक कुशा मंत्र पढ़कर क्रोधसे सूतकी तरफ फेंका तो वह कुशा लगते ही शिर रोमहर्षणका कटकर गिरपड़ा यह हाल देखतेही शौनकादिक ऋषीश्वरों ने चिल्लाकर बलभद्रजी से कहा महाराज यह सूत हरिचरित्र सुनाकर अपने व सुननेवालों को कृतार्थ करताथा उसे व्यासगद्दीपर बैठे हुये तुमने मारडाला सो अच्छा नहीं किया हमलोग जानते हैं कि आपने अपनी इच्छा से अवतार लिया है पर इसको जो वैश्य व ब्राह्मणसे उत्पन्न होकर हमारी आज्ञानुसार व्यासगद्दी पर बैठा था तुमने जो मारा इसलिये तुमको ब्रह्महत्या लगी अब तुमको प्रायश्चित्त करना चाहिये कदाचित् तुम ऐसा नहीं करोगे तो दूसरा कोई ब्रह्महत्या से किसवास्ते डरेगा वेद व शास्त्रमें जो आदिपुरुषकी श्वासा है ब्राह्मणोंको अति उत्तम लिखते हैं देखो जब श्यामसुन्दर तुम्हारे छोटे भाई परब्रह्म परमेश्वरको भृगु ऋषीश्वरने विना अपराध लात मारी थी तब उन्होंने पांव ऋषीश्वरका हाथसे दबाकर कहा था कि मेरे कठोर हृदयसे आपके कोमल चरणों पर चोट न लगी हो इस से ब्राह्मणोंकी पदवी समझना चाहिये यह ज्ञानरूपी वचन सुनकर क्रोध बलरामजीका शान्त हुआ तब उन्होंने ऋषीश्वरोंसे कहा महाराज आपलोग सच कहते हैं मुझसे अपराध हुआ जो मैंने क्रोधवश ब्राह्मण को मारडाला आप कोई प्रायश्चित्त इसका बतलाइये जिसमें हमारा शरीर शुद्ध होजावै व कोई पुत्र इस सूतका हो तो बुलावो उसे हम व्यासगद्दी पर बैठाल देवें ॥

दो० हमहूंको दूषण लगे जो कछु करैं अनीति। औरनकी कहिये कहा कठिन कर्मकी रीति॥

यह सुनकर ऋषीश्वर बोले तीर्थोंके स्नान करने से तुम्हारा पाप छूट

जावेगा जब शौनकादिकोंने उग्रशर्मा बेटा रोमहर्षण को वहां बुला भेजा तब शेषावतारने उग्रशर्माको उसके बापकी जगह व्यासगद्दी पर बैठाकर ऐसा वरदान दिया कि तुझे विना पढ़े सब विद्या याद होजावें जैसे यह वचन रेवतीरमणके मुखसे निकला वैसे सूतपुत्रको छहों शास्त्र व अठारहों पुराण विना पढ़े कण्ठ होगये तब वह व्यासगद्दी पर बैठकर कथा बांचने लगा यह महिमा बलरामजीकी देखतेही सब ऋषीश्वर प्रसन्न होकर बोले महाराज तुम्हारी दयासे सूतके मरनेका शोच तो छूटा पर इल्वल दैत्य बांदररूप से पूर्णमासी व अमावास्या व द्वादशी को आनकर हमारे यज्ञ व होम में पीब व रक्त व हड्डी फेंक देताहै इसलिये हमलोग बड़ा दुःख पाते हैं आप तीर्थवासियोंपर दयालु होकर उस बांदर को मार डालिये तो हम-लोग निर्भय होकर यज्ञ व होम किया करें यह वचन सुनकर बलरामजी बोले बहुत अच्छा हम उस बांदरको मारकर तुम्हारा दुःख छुड़ावेंगे॥

उन्नासीवां अध्याय।

बलरामजीका बांदररूप इल्वल दैत्यको मारना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित रेवतीरमण ऋषीश्वरों के कहनेसे इल्वल दैत्यको मारने वास्ते कई दिनतक नीमषार मिश्रिख में टिके रहे तब पूर्णमासी के दिन बड़ी आंधी चलकर पानी व रक्त व पीब बरसने लगा उस समय ऋषीश्वरोंने बलरामजी से कहा महाराज ये सब लक्षण उस बांदरके आवनेके हैं यह वचन सुनकर बलदाऊजी ने जैसे हल व मूसल अपने शस्त्रोंको याद किया वैसे वे दोनों उनके पास आन पहुँचे जब वह बांदर-रूपी दैत्य श्यामरङ्ग पहाड़ ऐसा लम्बा व चौड़ा बड़े बड़े दांत व लाल-लाल आंखें निकाले डरावनी सूरत बनाये त्रिशूल लिये बादल के समान गर्जता हुआ वहां आया तब बलदाऊजी अपना हल व मूसल उठा कर उसकी तरफ चले॥

दो० उनहूं रामहिं देखिकै जानिलियो मनमाहिं। इन समान योधावली तिहूं लोकमें नाहिं॥

जब उस बांदरने बलरामजी को अपनेसे बलवान् देखा तब वह मंत्रके बलसे अंतर्धान होकर मल व मूत्र बरसाने लगा यह दशा देखतेही रेवती-

रमणने उस बांदर को हलकी नोकसे उठाकर पृथ्वीपर पटक दिया व एक मूसल ऐसा उसके शिरपर मारा कि प्राण उसका निकल गया उस दैत्य का मरना देखकर सब ऋषीश्वर इस तरह प्रसन्न होगये जिस तरह वृत्रासुर दैत्यके मरनेसे देवता आनन्दित हुये थे व उसी समय ऋषीश्वरोंने रेवती-रमण को आशीर्वाद देकर ऐसी सुगन्धित पुष्पोंकी माला गलेमें पहिना दी जिसका फूल कभी न कुम्हिलावे व देवताओंने बलदाऊजी पर फूल वर्षाकर दुन्दुभी बजाई॥

दो० तहँ लाये सब देवता भूषण वसन बनाय। पहिराये बलरामको शोभा कही न जाय॥

जब ऋषीश्वरोंने दैत्यके मारेजाने से निर्भय होकर बलदाऊजी को विदा किया तब रेवतीरमण गढ़मुक्तेश्वर व गोमती व गण्डक व गंगा व व्यासा व कौशिकी व सरयू व पुलहाश्रम व शोणभद्र व प्रयाग व काशी आदिक तीर्थोंमें गये और वहां पर स्नान व दान किया फिर वहांसे गया जी व गंगासागर व गोदावरी व भागीरथी व सिंहलद्वीप व भीमरथी व सेतुबन्ध रामेश्वर व विंध्यक्षेत्र व श्रीशैल आदिक तीर्थों में जाकर स्नान करके दश दश हजार गौ विधिपूर्वक ब्राह्मणोंको दान दिया फिर वहांसे स्वामिकार्तिक व अगस्त्यमुनि व परशुरामजी व अर्जुनबाला का दर्शन करते व राहमें सब लोगों को सुख देते हुये वर्षवें दिन पृथ्वी की परिक्रमा करके हरद्वारमें आये॥

दो० तहां सुनी बलरामजू लोगनसे यह बात। पाण्डुसुतन अरु कौरवन युद्ध होत दिन रात॥

यह हाल सुनतेही रेवतीरमण कुरुक्षेत्र को चले और जिस समय राजा दुर्योधन व भीमसेन महाभारत के अठारहवें दिन आपस में गदायुद्ध कर रहे थे उसी समय वहां पहुँचे जब उनको देखकर युधिष्ठिर आदि पांचों भाई व दुर्योधनने दण्डवत् किया तब बलदाऊजी उन लोगों को आशीर्वाद देकर बोले बड़े शोचकी बातहै कि श्यामसुन्दर त्रिभुवनपतिके रहने पर भी कौरवों व पांडवोंने रजोगुण व तमोगुणके वश होकर अपने भाई बन्धुआदिक लाखों मनुष्योंका नाश किया व भीमसेन व दुर्योधन दोनों मनुष्य बल में बराबर हैं पर भीमसेनका श्वासा लड़ती समय नहीं फूलता

व दुर्योधन उससे गदायुद्ध अच्छा जानता है यह दशा उनकी देखकर बलदाऊजीने भीमसेन व दुर्योधन से कहा तुमलोग लड़ना छोड़देव जिसमें तुम्हारा वंश रहे देखो महाभारत करने में इतना कुल व परिवार तुम्हारा मारा गया तिसपरभी तुमको अपना भला व बुरा नहीं सूझपड़ता यह वचन सुनते ही परमेश्वर की इच्छानुसार दोनों वीरों ने बलदाऊजी से हाथ जोड़कर विनय की महाराज अब रण पर चढ़कर हमलोगों से उतरा नहीं जाता ॥

दो० यद्यपि वरजैं रामजू युद्ध करो मति कोय । तदपि उन मान्यो नहीं भावी परबल होय ॥

जब रेवतीरमणके समझाने पर भी उन दोनों ने लड़ना नहीं छोड़ा तब बलदाऊजी इच्छा वैकुण्ठनाथकी इसीतरह समझकर चुप हो रहे व उसी समय भीमसेनने एक गदा दुर्योधनकी जंघामें ऐसीमारी कि जंघा उसकी टूटगई और वह पृथ्वीपर गिरपड़ा तब दुर्योधनने बलरामजीसे रोकर कहा हे महाप्रभु आप मेरे गुरुहैं मैं तुमसे झूठ नहीं कहता इस महाभारत में सब मनुष्य श्रीकृष्ण तुम्हारे भाईके सम्मत से मारेगये व पाण्डवलोग उन्हींके बलसे लड़ते हैं नहीं तो उनको क्या सामर्थ्य थी जो कौरवों से लड़ते युधिष्ठिर आदिक पाँचौ भाईइसतरह श्यामसुन्दरकेवश हो रहे हैं जिस तरह काठकी पुतली को नट अपने आधीन रखकर जिधर चाहै उधर नचावै द्वारकानाथको ऐसा उचित नहीं था जो पांडवोंकी सहायता करके हमारे साथ शत्रुताई करैं देखो भीमसेन ने दुश्शासनकी भुजा उखाड़कर उसे मारडाला व हम लोगों के सन्मुख उसका रक्त पिया व अधर्म की राह मेरी जंघा में गदा मारकर मुझे पृथ्वीपर गिरा दिया और मैं इससे अधिक पाण्डवों के अधर्मका हाल आपसे कहांतक वर्णन करूं जो कुछ मेरे भाग्य में लिखा था सो हुआ जिस तरह इस महादुःख में आपने दयालु होकर दर्शन दिया उसी तरह मेरे वास्ते जो उचित हो सो कीजिये जब यह आधीन वचन दुर्योधन से बलदाऊजी ने सुना तब श्रीकृष्णजी के पास जाकर बोले हे भाई तुमने यह कैसी अपनी माया फैलाई जो इतने मनुष्य महाभारत में तुम्हारे सामने मारे गये व दुश्शासन की भुजा उखड़वाकर

दुर्योधनकी जंघा तोड़वाई यह धर्मयुद्धकी बात नहीं है कि कोई बलवान् मनुष्य किसीकी भुजा उखाड़कर कमरके नीचे गदा चलावै धर्मयुद्ध में एक एक मनुष्य अपने बराबरवाले को ललकारकर लड़ते हैं यह सुनकर वसुदेवनन्दन बोले हे भाई तुम नहीं जानते कौरवलोग बड़े अधर्मी व पापी हैं उनका हाल कुछ कहा नहीं जाता देखो पहिले दुर्योधन ने दुश्शासन व शकुनीके कहने से कपट जुआ खेलकर सब देश व धन युधिष्ठिर आदिक का जीत लिया व उनको तेरह वर्ष वनवास दिया फिर दुश्शासन ने शिरके बाल पकड़े हुये द्रौपदी को राजसभामें लाकर नंगी करने चाहा जिस समय दुर्योधनने द्रौपदी ऐसी पतिव्रताको अपनी जंघा पर बैठानेवास्ते कहा उसी समय भीमसेनने सौगन्द खाकर यह प्रतिज्ञा की थी कि दुश्शासनकी भुजा उखाड़कर दुर्योधनकी जंघा अपने गदासे तोड़ूंगा वही प्रण भीमसेनने अपना पूरा किया सिवाय इसके और जो जो अधर्म व पाप कौरवोंने युधिष्ठिर आदिक से किये हैं उसका हाल कहांतक तुमसे कहूं यह महाभारत की आग जो प्रज्वलित हो रही है किसी तरह बुझने नहीं सक्ती तुम इस बातका कुछ शोच मत करो जब बलदाऊजी ने यह वचन मुरलीमनोहरके मुखसे सुना तब इच्छा उनकी इसीतरह पर जान कर कुरुक्षेत्रसे द्वारकापुरी में चले आये और वहां से रेवती अपनी स्त्री व कई यदुवंशियोंको साथ लेकर फिर नीमषार मिश्रिख में इस इच्छासे गये जिसमें ब्रह्महत्याका पाप जो तीर्थस्नान करने से छूट गया था वह ऋषीश्वरों को दिखला आवैं जैसे शौनकादिक ऋषीश्वरों ने बलदाऊजी को देखा वैसे अति प्रसन्नतासे आशिष देकर कहा अब तुम्हारी ब्रह्महत्या छूट गई जब यह वचन बलदाऊजीने सुना तब बड़े हर्षसे वहां स्नान व दान व यज्ञादिक शुभकर्म किया व ऋषीश्वरोंको ज्ञान उपदेश देकर यदुवंशियों समेत द्वारकापुरी में चले आये व अपने जाति भाइयोंका सन्मान किया॥

दो॰ रामकथा पावन सदा कहै सुनै जो कोय। ताको श्रीभगवानसों प्रेम प्रीति अति होय॥

अस्सीवां अध्याय।

सुदामा ब्राह्मणकी कथा ॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजीसे विनय की महाराज आप समझते होंगे कि परमेश्वरकी कथा व लीला सुनकर इसे सन्तोष हुआ होगा सो मेरा मन अभीतक हरिकथा सुनने से नहीं भरा सत्संग विना भाग्य के नहीं मिलता इससे मैं जानताहूं कि मेरे पिछले जन्मका पुण्य सहाय हुआ जो मैंने अन्त समय गंगा किनारे आनकर तुम्हारा दर्शन पाया जिस जगह परमेश्वर की कथा होकर सत्संग रहता है वहां पर देवता स्वर्ग से आते हैं देखो जो नारदमुनि दिन रात फिरते रहकर कहीं नहीं ठहरते वेभी सत्संग में आनकर बैठते हैं हमारे पितरों ने अपने कर्मानुसार वैकुण्ठ से भी उत्तम स्थान पाया होगा पर तुम्हारे मुखारविंदसे जो मैंने श्रीमद्भागवत सुना है इसलिये हमारे पितरलोग उत्तम से भी उत्तम स्थान रहने वास्ते पावेंगे जिस मनुष्य के मुखसे परमेश्वर का नाम नहीं निकलता उसको पशु से भी निषिद्ध समझना चाहिये जो कान से स्तुति व कथा भगवान् की नहीं सुनता वह कान सर्प व बिच्छू के बिल समान है जो शिर हरिमन्दिर व देवस्थान पर साधु व ब्राह्मण के सन्मुख दण्डवत् नहीं करता वह मस्तक अंगपर बोझे के समान समझना उचित है जो आंख दर्शन श्यामसुन्दर का प्रकट व ध्यान में नहीं करती वह आंख मोरपंख के समान समझनी चाहिये जो गृहस्थ प्रेम वैकुण्ठनाथका रखकर अपने वर्णका धर्म करते हैं उनको योगी व संन्यासी व परमहंसों से उत्तम जानना चाहिये इसलिये मनुष्य को उचित है कि मनुष्य तनु पाकर हरिभजन व सत्संग में जन्म अपना बितावे हे शुकदेव स्वामी तुम्हारे ऊपर भगवान् की बड़ी कृपा है इसलिये चाहताहूं कि मुझे कुछ और हरिचरित्र सुनाइये शुकदेवजी बोले हे राजन् तेरी बुद्धि धन्य है जो तुम हरिकथा सुनने से ऐसी प्रीति रखते हो ॥

दो० जो याविधि चितदै सुनै हरिकी कथा पुरान। कृपा करतहैं ताहिपर माखन प्रभु भगवान ॥

हे परीक्षित अब हम कथा सुदामा ब्राह्मण जिसका दरिद्र श्यामसुन्दर ने छुड़ाया व उसे कुबेर देवता के समान द्रव्य व इन्द्रका ऐसा सुख दिया था कहते हैं सुनो दक्षिण दिशा द्राविड़ देशमें विदर्भनाम एक नगर था वहां के राजा व प्रजा अपने कर्म व धर्म से रहकर साधु व ब्राह्मणकी सेवा किया करते थे उसीनगर में सुदामा ब्राह्मण वेद व शास्त्रका पढ़ा हुआ गुरुभाई श्रीकृष्णजीका रहकर इस गरीबी से अपना जन्म काटता था कि उसे तनुभर कपड़ा व पेटभर भोजन नहीं मिलकर कभी कभी उपास होजाते थे तिसपर भी वह मन अपना विरक्त रखकर आठोंपहर मग्न रहता था व सुशीला उसकी स्त्री भोजन व वस्त्रका दुःख पानेपर भी प्रेमपूर्वक अपने पति की सेवा करती थी और वे दोनों स्त्री पुरुष संसारी सुख स्वप्नवत् समझकर दिन रात स्मरण व ध्यान परमेश्वरका किया करते थे व विना मांगे जो कुछ मिलता था उसे खाकर प्रसन्न रहते थे एकवेर ऐसा संयोग हुआ कि सुदामा ब्राह्मणको स्त्री व चारों बेटों समेत दो उपास बीत गये जब तीसरे दिन दो बालक भूखसे अति व्याकुल होकर रोने लगे व सुशीलासे बेटों का कलपना देखा नहीं गया तब उसने डरती व कांपती हुई अपने स्वामीसे हाथ जोड़कर विनय की महाराज मैंने सुना है कि श्रीकृष्णजी लक्ष्मीपति तुम्हारे मित्र व गुरुभाई हैं व उन्होंने केवल ब्राह्मणोंकी रक्षा करने व हरिभक्तोंका दुःख छुड़ानेवास्ते अवतार लिया है आप उनके पास क्यों नहीं जाते जिसमें तुम्हारा दुःख व दरिद्र छूटजावै तुमको गृहस्थ ब्राह्मण समझकर वे इतना द्रव्य देवैंगे कि फिर तुम्हें कुछ संसारी इच्छा न रहैगी यह सुनकर सुदामाने कहा अय प्रिया तेरा ज्ञान कहां जाता रहा जो तुझे इतनी तृष्णा उत्पन्न हुई ब्राह्मणोंको लालच करना अच्छा न होकर तृष्णा रखने में ब्रह्मतेज नहीं रहता जैसे तीनपन हमारे बीत गये वैसेही चौथापन भी परमेश्वर की दया से बीत जायगा इस समय लालच रखकर वहां जाऊं कहीं रास्तेमें बुढ़ाई से गिर परूं तो संसारीलोग कहेंगे कि सुदामा ने बुढ़ौती समय लालचवश होकर अपना हाथ पैर तोड़ा यह बात सुनकर सुशीला बोली हे महाप्रभु मैं आपको लालचकी

राह वहां जाने वास्ते सम्मत न देकर इसलिये कहती हूं कि महात्मा व बड़े लोगोंका दर्शन करने से सब दुःख छूटकर सुख प्राप्त होता है श्याम-सुन्दर त्रिभुवनपति ब्राह्मणोंपर बड़ी दया रखते हैं वहां जाने से तुमको सिवाय सुखके कुछ दुःख प्राप्त न होगा ॥

दो० तिहिकारण विनती करत चितदे सुनिये कन्त। उनपै क्यों नहिं जातहौ जिनकीकृपाअनंत ॥

यह सुनकर सुदामाने कहा हे प्राणप्यारी सच है मैं श्रीकृष्णजी से मित्रता व जान पहिचान रखकर अपनेको उनका सेवक समझता हूं जब मैं उनके पास भेंट करने जाऊंगा तब वे मुझे कंगाल जानकर द्रव्यादिक संसारी सुख भोगनेवास्ते देवैंगे इसलिये मेरे निकट उन त्रिभुवनपति से जो अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थों के देनेवाले हैं द्रव्यादिक जो सदा स्थिर नहीं रहता लेना उचित नहीं है किसवास्ते कि जब उनकी दया से मुझे धन मिलैगा तब हमसे ध्यान व स्मरण उनका जैसा गरीबी में बन पड़ता है वैसा नहीं हो सकेगा व संसारी सुखमें लपट जाने से परलोकका शोच भूल जायगा मैंने पूर्वजन्म किसी को कुछ दान दिया होता तो इस जन्ममें मुझे मिलता विना दिये कोई नहीं पाता इस बातमें तुम मुझे कुछ दुःख मत देव हमारे दिन बहुत अच्छे बीतते हैं यह सुनकर जब सुशीलाने जाना कि मेरे स्वामी संसारी सुख स्वप्नवत् समझकर कुछ इच्छा नहीं रखते तब फिर हाथ जोड़ कर बोली हे महाप्रभु मैं कुछ धन की इच्छा न रखकर इस कारण कहती हूं कि उन परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन करनेसे तुम्हारी मुक्ति होगी यह सुनकर सुदामा बोले अय प्राण-प्यारी गुरु व महात्माके यहां विना कुछ भेंट लिये जाना उचित नहीं है और मैं ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो कुछ वस्तु उनके वास्ते लेजाऊं यह बात सुनतेही सुशीला प्रसन्न होकर चारमूठी चावल अपने चार परो-सियोंसे मांग लेआई व पुरानी धोतीके लत्तेमें बांधकर अपने स्वामीको देके कहा महाराज हम कंगालों की थोड़ी सी भेंट त्रिभुवनपति बड़ी प्रसन्नता से लेवैंगे जब सुदामाने चावल भेंट देने वास्ते पाया तब वह पोटली कांख में दबाकर लोटा डोरी कांधे पर धर ली व गणेशजी को

मनाकर लाठी लिये राहमें यह विचार करता द्वारकाको चला देखो मेरे भाग्यमें द्रव्य मिलना तो नहीं लिखा है पर कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दका दर्शन पाकर अपना जन्म स्वार्थ करूंगा परंतु एक बातकी चिन्ता मुझे है कि श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति सोलहहजार एकसौ आठ महल में रानियोंके पास रहते हैं जहां पर बड़े बड़े राजाओं का पहुँचना कठिन है वहां मुझ कंगाल मनुष्यको कौन जाने देगा व मेरी खबर उनको किस तरह पहुँचेगी ॥

दो० यह मनमें शोचत चल्यो मैं तो दीन अनाथ। कैसे म्वहिं पहिचानि हैं वे त्रिभुवनके नाथ ॥

अब मैं लज्जावश अपने घर भी फिर जाने नहीं सक्ता देखो बड़े शोच की बात है जो अपनी झोपड़ीको जिसमें भीख मांगकर आनन्दपूर्वक दिन काटता था हाथसे खोई व श्यामसुन्दरके पास पहुँचना भी कठिन दिखलाई देता है जब सुदामा ब्राह्मण इसीतरह शोच विचार करता हुआ तीनपहर में द्वारकापुरी के निकट पहुँचा तब उसने क्या देखा कि चारों ओर उस पुरीके समुद्र लहर मारकर उत्तम उत्तम रत्नजटित स्थान बने हैं व सब छोटे बड़ों के घर मंगलाचार व हरिचर्चा हो रही है जब सुदामा ब्राह्मण यह सब आनन्द देखता हुआ श्यामसुन्दर की ड्योढ़ीपर पहुँचा तब इस भयसे कि मुझको कोई भीतर जाने से रोक न देवे वारंवार पीछे देखता हुआ आगे को चला वृंदावनविहारीकी आज्ञानुसार ब्राह्मणों को किसी समय महलमें जानेवास्ते मनहाई नहीं थी इसलिये किसी द्वारपालकने उसको भीतर जाने से नहीं बर्जा जब सुदामा ब्राह्मण तीन ड्योढ़ी नांधकर चौथे द्वारेपर जहां द्वारकानाथ जड़ाऊ सिंहासन पर बैठे हुये रुक्मिणीके साथ चौपड़ खेलते थे पहुँचा तब द्वारपालकने उसका हाल पूछने उपरांत मुरलीमनोहरके पास जाकर विनय की ॥

स० शीश पगा न झँगा तनुमें नहिं जानि को आहि बसै केहि ग्रामा।
धोती फटीसी लटी दुपटी अरु पांव उपानहकी नहिं सामा ॥
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल देखि रह्यो चकिसो वसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयालु को धाम बतावत आपन नाम सुदामा ॥

यह वचन सुनते ही केशवमूर्ति चौपड़ खेलना छोड़कर सिंहासन से

उतरपड़े व आंखों में आंसू भरकर मिलने वास्ते दौड़े जब सुदामाने श्रीकृष्णचन्द्रको आते देखा तो दौड़कर उनके चरणों पर गिरपड़ा तब श्यामसुन्दरने सुदामाको बड़े प्रेमसे उठाकर अपनी छातीमें लगालिया इतनी कृपा द्वारकानाथकी अपने ऊपर देखकर सुदामा मनमें कहने लगा हे परमेश्वर मैं यह हाल प्रकट देखता हूं या स्वप्नमें द्वारकानाथने सुदामा का हाथ पकड़े हुये उसे सिंहासन पर लेजाकर बैठाला व अपने हाथ से उसकी धूरि झाड़कर पैरके कांटे निकाले व उसका चरण धोनेवास्ते रुक्मिणी से जल मांगा व सुदामा से कहा ॥

स० काहे बिहाल बिवाइनते पग कंटकजाल गड़े पुनि जोये।
हाय महा दुख पायो सखा तुम आये इतै न किते दिन खोये॥
देखि सुदामाकी दीनदशा करुणा करिकै करुणामय रोये।
पानी परातको हाथ छुयो नहिं नैनन के जलसे पग धोये॥

जब चरण धोती समय सुदामा अतिलज्जा से ज्यों ज्यों पैर अपना सिकोरे लेता था त्यों त्यों वैकुण्ठनाथ उसपर अधिक दयालु होकर अपने हाथ उसका चरण धोते थे यह बात देखकर रुक्मिणी आदिक आठों पट-रानी चाहती थीं कि सुदामाकी सेवा हमलोग अपने हाथसे करैं जिसमें हमारे प्राणपति को श्रम न हो पर त्रिभुवनपति ने यह बात न मानकर अपने हाथ से सुदामा के अंग पर चन्दन लगाया व देवता के समान विधिपूर्वक उसका पूजन किया व छत्तीस व्यञ्जन खिलाकर पान व इलायची देने व अतर लगाने उपरान्त फूलोंका गजरा उसे पहिनाया व रुक्मिणी आदिक आठों पटरानियोंसे कहा तुमलोग जितनी सेवा सुदामा हमारे मित्र की प्रेमपूर्वक करोगी उतना हम तुमलोगोंसे प्रसन्न होंगे जिस समय रुक्मिणीजी सुदामा के चँवर हिलाने लगीं उस समय देवता लोग अपने अपने विमानों पर से यह हाल देखकर बड़ाई भाग्य सुदामा की करने लगे॥

दो० याविधि विप्रहिं पूजिकै माखन प्रभु यदुराय। कुशलक्षेम पूछन लगे अमृतबैन सुनाय॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित यह चरित्र देखतेही

रुक्मिणी व सत्यभामा आदिक सब स्त्रियां द्वारकानाथकी व जो यदुवंशी वहां पर थे अचम्भा मानकर आपस में कहने लगे देखो रूपवान् व धन-पात्रका सब कोई आदर करते हैं इस दरिद्री बूढ़े ब्राह्मणने न मालूम पिछले जन्म कौन ऐसा भारी तप किया था व क्या गुण इसमें भरा है जिसके कारण त्रिभुवनपति अपने हाथ से इतनी सेवा इसकी करते हैं॥

चौ० याहि कृष्ण पूजत हैं जैसे। निज पुरुष मानत हैं तैसे॥

दो० या विरंचि सनकादि हैं या नारदऋषि आहि। या शिव गौरीनाथ हैं हरि पूजत हैं ताहि॥

उस समय सत्यभामाने जो बड़ी बोलनेवाली थी दूसरी स्त्रियोंसे कहा श्रीकृष्णजी सदा हमलोगों के साथ अभिमान भरी हुई बातें किया करते हैं अब उनके मित्र को देखो जिसने जन्म भर नया कपड़ा कभी स्वप्ने में भी नहीं देखा पहिरनेवास्ते कौन कहै न मालूम यह ब्राह्मण देवता किस नगर में रहते हैं जिनपर ऐसा दरिद्र छारहाहै पर इसका बड़ा भाग्य समझना चाहिये जिसने वैकुण्ठनाथ को ऐसा वश करलिया पहिले मैंने नन्द व यशोदा इनके माता व पिता के गौ चरानेका हाल सुना था व आप दही मक्खन चुराकर खाया करते थे अब इनके मित्र को देखकर मुझे बहुत विश्वास हुआ कि वे सब बातें सत्य हैं जब सुदामा ने ऐसी कृपा श्यामसुन्दर की अपने ऊपर देखी तब उसने मन में समझा कि केशवमूर्ति ने मुझे नहीं पहिंचाना किसी दूसरे के धोखेसे मेरी टहल करते हैं मैं इस योग्य नहीं हूं वैकुण्ठनाथ अन्तर्यामी ने यह हाल जानकर उसका संदेह छुड़ानेवास्ते कहा हे मित्र तुमको याद होगा जब हम व तुम दोनों मनुष्य एक साथ सांदीपन गुरुके यहां विद्या पढ़ते थे और उन्हीं दिनों तुम्हारा विवाह हुआ था सो बतलाओ हमारी भौजाई अच्छी तरह हैं व तुम राह में क्षेम कुशलसे यहां तक आये मुझको तुम्हारे देखने की बहुत चाहना लगी थी तुमने बड़ी दया की जो अपने चरणों से मेरा स्थान पवित्र करके मुझे दर्शन दिया मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम उन दिनों में भी मन अपना विरक्त रखते थे अब बतलाओ किसतरह बीतती है देखो जिसतरह सोलह हजार एक सौ आठ स्त्री रहने पर भी मैं

किसी के आधीन नहीं रहता उसी तरह ज्ञानी लोग संसारमें रहकर मन अपना विरक्त रखते हैं॥

दो० सकल वस्तु संसारकी कबहूं सुस्थिर नाहिं। त्यहि कारण ज्ञानी पुरुष चित न धरत धन माहिं॥

हे सुदामा जैसी प्रीति व दया से सांदीपन गुरु महात्मा पुरुष ने सब विद्या हमको पढ़ाई थी उसमें से एक अक्षर पढ़ने के बदले हम जन्मभर उऋण नहीं होसक्ते जो कोई गुरुको परमेश्वर समान जानकर सेवता है जितना हम उससे प्रसन्न होते हैं उतना यज्ञ व तप व दान करनेवालों से खुश नहीं होते॥

दो० गुरुसेवा दुर्लभ महा चित दे करै जु कोय। जो मनमें इच्छा करै सो सब पूरण होय॥

हे सुदामा तुमने भी पढ़ने लिखने में हमारी बड़ी सहायता की थी व मेरे बदले गुरु की सेवा करते थे और यह बात तुमको याद होगी कि जब एक दिन गुरु की स्त्री ने हमें व तुम्हें वन में लकड़ी लेआने वास्ते भेजा तब तुमने हमारे बदलेभी लकड़ी तोड़कर कहा था कि तुम्हारे हाथ कोमल हैं लकड़ी तोड़ने में दुःख होगा जब लकड़ीका बोझ शिरपर लेकर दोनों आदमी घरको चले तब ऐसी आंधी चलकर पानी बर्षने लगा कि दश पग रास्ता चलना कठिन हुआ॥

दो० पवन झकोरै तेजसों शीत भयो दुखदाय। काठभार मस्तक धरे हमको लियो छिपाय॥
बहुत भांति रक्षा करी आप रहे दुखमाहिं। तुम्हरी प्रीति अनन्त है उऋण होत मैं नाहिं॥

जब उस दिन हम व तुम आंधी चलने व पानी बर्षने से घरतक नहीं पहुँचकर रातको वन में रहगये तब गुरुजी अपनी स्त्री पर बहुत क्रोधित होकर प्रातसमय हम दोनों को वन में ढूंढ़ने आये व व्याकुलता से हमारा व तुम्हारा नाम पुकारकर कहने लगे तुमलोग जहां पर हो वहां से बोलो जिसमें मुझे धैर्य हो नहीं तो तुम्हारे शोच में मेरा प्राण निकलने चाहता है जब गुरुजी ने रोते व चिल्लाते हमारे पास पहुँचकर हमको सर्दीसे कांपते हुये देखा तब दौड़कर प्रेम से उठा लिया व शिर व मुँह हमारा चूमकर बोले तुमलोगोंने अपनी सेवा से मुझे बहुत प्रसन्न किया इसलिये तुमको आशीर्वाद देता हूं कि सब विद्या तुमको याद होकर कभी न भूलें व गुरु

के चरणों में तुम्हारी निष्कपट प्रीति बनी रहै हे सुदामा जबसे विद्या पढ़ कर हम व तुम बिलग हुये तब से आज तुमको देखकर मुझे ऐसा आनन्द प्राप्त हुआ मानो सांदीपन गुरु का दर्शन पाया जब यह सुनकर सुदामा का सन्देह छूट गया तब उसने नम्रता से हाथ जोड़ कर विनय की हे स्वामी तुम त्रिभुवनपति होकर मुझे क्यों इतना लज्जित करते हो जहां चारों वेद आपके श्वासा होकर तीनों लोक के जीव तुम्हारा पूजन करते हैं वहां आपने केवल संसारी जीवों को राह दिखलाने वास्ते गुरु से विद्या पढ़ी है व आपके आदि व अन्त व भेद को कोई पहुँचने नहीं सक्ता तुम सब जगत् के माता व पिता अविनाशी पुरुष होकर संसारी व्यवहार अपनी इच्छा से करते हो और तुम्हारा नाश कभी नहीं होता जो लोग प्रेमपूर्वक आपका नाम जप कर तुम्हारी कथा व कीर्तन सुनते हैं उनको संसार में यश प्राप्त होकर अन्त-समय मुक्ति मिलती है जब शेषनाग हजार मुख से दिन रात आपकी चर्चा रखने पर भी तुम्हारे भेद को नहीं पहुँच सक्के तब देवता व संसारी जीवों की क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारा आदि व अन्त जानने सकैं आप पलक भांजते भर में चौदहों भुवन उत्पन्न व नाश करने की सामर्थ्य रख कर सब जीवों का पालन करते हैं व आप सदा एकरस रहकर घटने बढ़ने से कुछ प्रयोजन नहीं रखते व तुम्हारा चमत्कार सब जीवों में होकर आप अपने तेज से प्रकाशित रहते हैं तुम अपनी इच्छा से मनुष्य तनु धरकर जो काम मनुष्यों को करना चाहिये वह बात संसारी जीवों को राह दिखलाने वास्ते करते हो नहीं तो आप जन्म मरण से रहित हैं तुम्हारे काम व अवतार की गिन्ती कोई करने नहीं सक्ता हे दीनानाथ जिस चतुर्भुजी मूर्ति से आप जर्द पीताम्बर व वैजयन्ती माला पहिने शंख चक्र गदा पद्म धारण किये गरुड़ पर बैठते हैं उस रूप को मैं हजारों दण्डवत् करता हूं व सब छोटे बड़ों को अपना बालक समझकर आप गरीबों पर अधिक दया करते हैं व तीनों लोक में किसी का डर न रखकर अभिमानियों का अहंकार तोड़ देते हैं श्यामवर्ण अंग तुम्हारा ऐसा सुन्दर

व कोमल होकर कमलरूपी आंखें हँसते हुये मुखारविन्द पर ऐसी शोभा देती हैं जिनका वर्णन मुझ से नहीं होसक्ता मेरा पूर्वजन्म का पुण्य सहाय हुआ जो तुम्हारे चरणों का दर्शन पाया अब मैं कुछ इच्छा न रखकर यही चाहता हूं कि आठोंपहर तुम्हारे स्मरण व ध्यान में लीन रह कर संसारी व्यवहार स्वप्न के समान समझूं ॥

इक्यासीवां अध्याय।

सुदामा ब्राह्मण का श्रीकृष्णजी से विदा होना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब सुदामाने इसीतरह बहुत स्तुति श्याम-सुन्दर की प्रेमपूर्वक की तब द्वारकानाथ अन्तर्यामी ने हँसकर कहा हे मित्र हम तुम्हारी अमृतरूपी बातों से बहुत प्रसन्न हुये अब जो सौगात हमारी भौजाईने भेजी है सो देव यह वचन सुनतेही सुदामा ने पछिताकर मनमें कहा देखो बड़े शोच की बात है जो मूठी भर तंडुल त्रिभुवनपति को भेट देऊं जब ऐसा विचार कर सुदामा लज्जा से चावल की पोटली कांख में छिपाने लगा और मुख उसका मलीन होगया तब वसुदेवनन्दन ने मन में कहा देखो एकबेर हमारा कलेवा छिपाकर सुदामा इस दरिद्रता को पहुँचा तिसपर भी वही बात करता है फिर केशवमूर्ति ने वह पोटली उसकी बगल में से खींचकर खोल डाली व बड़े प्रेम से भूसी मिला हुआ दो मुट्ठी चावल खाकर बोले हे सुदामा जितना प्रीति सहित एक फूल व तुलसीदल चढ़ाने से मैं प्रसन्न होता हूं उतना विना भक्ति लाखों मन मिठाई व जड़ाऊ भूषण से खुशी नहीं होता ॥

चौ० दुर्योधन बहु पाक बनाये। प्रीति विना मोको नहिं भाये ॥
विदुरभक्त की प्रीति जु जानी। बासी साग बहुत रुचि मानी ॥
विविध भांति मिष्टान्न जु लावै। विना प्रीति कछु काज न आवै ॥
जो कुछ तुम लाये हम पाहीं। थोड़ो मति जानो मनमाहीं ॥

दो० सागपात भी प्रीति सों हमको देय जु कोय। त्यहि समान सब सृष्टि में कछुक स्वाद नहिं होय ॥
तण्डुल की महिमा कहत माखन प्रभु यदुराज। सुर नर मुनि तिहुँलोक के तृप्त भये हैं आज ॥

पोटली खोलती समय थोड़े से चावल पृथ्वीपर गिरपड़े सो उसे मुरली-मनोहर अपने हाथ उठाने लगे व रुक्मिणी आदिक आठों पटरानियों से

कहा एक एक दाना चावल का चुनकर मुझे उठादेव जिसमें कोई दाना पैर के नीचे न आवे व चावल खाती समय द्वारकानाथ बोले जैसा स्वाद इस तण्डुल में मिलता है वैसा भोजन आज तक यशोदा व देवकी ने मुझे नहीं खिलाया था ऐसा कहकर जैसे श्यामसुन्दर ने तीसरी मुट्ठी चावल उठाके खाने चाहा वैसे रुक्मिणीजी उनका हाथ पकड़कर बोलीं बस कीजिये हमलोग भी तुम्हारे चरणों के आधीन हैं कुछ हमारे खाने वास्ते भी रक्खोगे या नहीं॥

स० हाथ गहे प्रभु को कमला कह नाथ कहा तुमने चित धारी।
तण्डुल खाय मुठी दुइ दीन कियो तुमने दुइलोक बिहारी॥
खाय मुठी तिसरी अब नाथ कहां निज वास कि आस बिचारी।
रंकहि आपसमान कियो तुम चाहत आपहि होन भिखारी॥

यह सुनकर श्रीकृष्णजी ने कहा॥

स० क्यों रस में विष वाम कियो अब और न खान दियो यक फंका।
विप्रहि लोक तृतीयक देत करी तुम क्यों अपने मन शंका॥
भामिनि मोहिं जिवांइ भली विधि कौन रह्यो जगमें नर रंका।
लोग कहैं हरिमित्र दुखी हमसे न सह्यो यह जात कलंका॥

यह सुनकर रुक्मिणी जी बोलीं॥

स० भार्गव ह्वै तुम जीति धरा दय विप्रन को अतिही सुख मानो।
विप्रन काढ़ि दियो तुमको निशि तादिनको बिसरो खिसियानो॥
सिन्धु हटाय करी तुम ठौर द्विजन्म सुभाव भली विधि जानो।
सो तुम देत द्विजै सबलोक कियो तुमने अब कौन ठिकानो॥

यह सुनकर श्रीकृष्णजी ने उत्तर दिया॥

स० भामिनि देउँ द्विजै सबलोक तजो हठ मोरे यही मन भाई।
लोक चतुर्दश की सुख सम्पति लागत विप्र बिना दुखदाई॥
जाय बसों उनके गृह में करिहौं द्विजदम्पति की सेवकाई॥
तौ मन मांह रुचै न रुचै सो रुचै हमको यहि ठौर सुहाई॥

यह वचन सुनकर रुक्मिणी जी बोलीं॥

स० नेक न कानि करैं द्विज ये नृग से नृप को गिरगी करि डारयो।
शाप दियो पुनि शंकर को अबलौं मखते शिवभाग बिसारयो॥
विप्रन फेरि विजय जंय को तुम देखत घोर कुयोनि में डारयो।
सो तुम जानि सबै गुण दोष करौ फिरहू द्विजको पतियारयो॥

यह सुनकर श्यामसुन्दरने कहा ॥

स० विप्रन के मुख ते सुर जेंवत विप्र रची श्रुतिरीति सुहाई।
विप्र बिना जग अन्धपशू विन विप्र नहीं गुण दोष लखाई॥
विप्रहि मोहिं रुचै निशि वासर विप्रन ही ममशाक चलाई।
विप्रनते न उऋण कभू हठ छोड़ि प्रिया करु विप्र भलाई॥

यह सुनकर रुक्मिणी जी बोलीं ॥

स० तातहिं छार कलंक भरा तव नाथ हत्यो उरलात प्रहारी।
शालत सो अजहूं उरमें इमसंग कुरीति सदा द्विज पारी॥
ब्राह्मण है तुमहूं बलिपै पिय जाति सुभाव दया परिहारी।
सो तुम जानि सबै गुणदोष पड़ो द्विज हाथ न श्याममुरारी॥

यह सुनकर मुरलीमनोहरने उत्तर दिया ॥

स० भामिनि क्यों बिसरी अबहीं निज ब्याहसमै द्विजकी हितुआई।
शोच लियो द्विजकी करनी जिसके करसों पतिया पठवाई॥
विप्र सहाय भयो तिहि औसर को द्विज के सम है सुखदाई।
योग्य नहीं अर्द्धांगिनि है तुम को द्विज हेत इती निठुराई॥

जब त्रिभुवनपतिने देखा कि तीसरी मुट्ठी खाने से रुक्मिणी उदास होजायगी तब वह न खाकर रुक्मिणी से कहा हे प्राणप्यारी यह ब्राह्मण मेरा बड़ा मित्र होकर संसार में सुख व दुःखको बराबर जानताहै व आठों पहर मेरे स्मरण व ध्यानमें रहकर संसारी सुखकी कुछ चाहना नहीं रखता जब मुरलीमनोहरने इसीतरह अनेक बातें समझाकर रुक्मिणीका बोध किया तब वसुदेव व देवकी व उद्धव आदिक यदुवंशी जो वहां बैठेथे यह हाल देखकर आपस में हँसी से कहने लगे देखो इस ब्राह्मणके समान कोई दूसरा गरीब संसारमें न होगा जो इतनी दूरसे मुट्ठीभर तंडुल सौगात लाया है व कृष्णचन्द्र को ब्राह्मणसे भी अधिक कंगाल समझना चाहिये जो अकेले उस चावलको खाकर उसकी बड़ाई करते हैं व दूसरेको नहीं देते उनकी बात सुनकर वसुदेवनन्दनने उत्तर दिया तुमलोग इस तंडुल का स्वाद क्या जानो तुम्हारा भाग्य उदय हुआ जो इस ब्राह्मण के चरणों का दर्शन पाया ॥

दो० इन तंडुलके स्वादको जानत है नहिं कोय। हम बिनु ऐसो कौन है जाको प्रापत होय॥

जब पहर रात बीते द्वारकानाथने सुदामाको महल में लेजाकर अपने पलँगके पास दूसरे छपरखटपर सुलाया तब मुरलीमनोहरकी आज्ञानुसार रुक्मिणीजीने सुदामा का पैर दाबा व श्यामसुन्दर आधीराततक अपने मित्रसे लड़कपनकी बातैं करते रहे जब सुदामाजी सोगये तब केशवमूर्त्ति अन्तर्यामीने विचारा कि यह ब्राह्मण द्रव्यकी चाहना नहीं रखता पर इस की स्त्रीने संसारी सुख व लक्ष्मी मिलने वास्ते इच्छा रखकर इसे बर्जोरी मेरे पास भेजाहै इसलिये सुदामाको इतना धन देना चाहिये जो देवताओं को भी प्राप्त न हो ऐसा विचारते ही वैकुण्ठनाथ ने उसीसमय विश्वकर्मा को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम अभी सुदामापुरी में जाकर उसके रहने वास्ते ऐसा रत्नजटित स्थान बना देव जिसके बराबर चौदहों भुवन में दिखलाई न देवै आठों सिद्धि व नवों निधि वहां बनी रहैं जिसमें कोई कामना सुदामाकी बाकी न रहै॥

दो॰ तबहिं विश्वकर्मा चल्यो प्रभुकी आज्ञा पाय। मंदिर रत्नजड़ायके क्षणमें दिये बनाय॥

जब सुदामा निद्रामें एक करवँटसे दूसरी करवँट लेता था तब वसुदेव-नन्दन प्रेमसे उसके अंगपर हाथ फेरकर बड़ाई करते थे जब तीसरे दिन सुदामा प्रातसमय नित्य नियम करके श्यामसुन्दरसे विदा होने गया तब देवकीनन्दनने ड्योढ़ी तक सुदामा के साथ जाकर आंसू भरके कहा हे भाई तुमने बड़ी दया की जो अपना दर्शन मुझे दिया मैं तुमसे यही माँगताहूं कि हमको भूल मत जाना जब सुदामा मोहनीमूर्तिको दण्डवत करके अपने घर चला तब वह आंखोंकी राह स्वरूप वृन्दावनविहारीका हृदयमें रखकर कहने लगा देखो श्रीकृष्णजीने मेरे ऊपर इतनी दया की जिसका पलटा मैं कई जन्मतक नहीं देसक्ता पर कुछ द्रव्य मुझे नहीं दिया जिससे दरिद्र मेरा छूट जाता जिसतरह कंगालरूप अपने घरसे आयाथा उसीतरह खाली हाथ फिर चला॥

चौ॰ फिर वह द्विज समभयो मनमाहीं। विघ्न अनेक होत धन माहीं॥

दो॰ याही कारण कृपा करि मित्र आपनो जान। मोहिं द्रव्य दीन्हों नहीं माखन प्रभु भगवान॥

मेरे वास्ते यह गरीबी बहुत अच्छी समझनी चाहिये जिसमें परमेश्वर

का भजन आनन्द से बन पड़ता है धन रखनेवाले सदा खटके में रहते हैं इससे अधिक क्या धन होगा जो त्रिभुवनपति के चरणोंका दर्शन मुझे प्राप्त हुआ बहुत अच्छी बात मैंने की जो द्वारकानाथ से कुछ नहीं माँगा माँगनेसे धन तो मिलता पर मुझे लोभी समझते अब मैं अपने घर जाकर ब्राह्मणी को समझालूंगा जब सुदामा इसीतरह शोच विचार करता हुआ अपने गांवके निकट पहुँचा तब उसने वहां अपनी झोपड़ीका पता न पाकर क्या देखा कि उस जगह एक स्थान रत्नजटित बना है और उसके चारों ओर अनेक तरहके फल व फूल बागों में लगे होकर वृक्षोंपर तूती व कोकिला व मोर आदिक सुन्दर पक्षी बैठे हुए मीठी मीठी बोली बोल रहे हैं व पुष्पों पर भवँरे रस चूसने वास्ते गूंजते व महलके द्वारेपर चोपदार व सिपाही लोग बैठे होकर अनेक दासी व दास अपना अपना काम करते हैं सुदामा यह आश्चर्य देखतेही शोचित होकर कहने लगा हे परमेश्वर थोड़े दिन में ऐसा सुन्दर स्थान यहां किसने बनाया या मैं राह भूल कर कहीं दूसरी जगह चला आया व मुझे यह हाल प्रकट दिखलाई देता है या स्वप्न में न मालूम पुरानी झोपड़ी मेरी क्या होकर वह पतिव्रता स्त्री कहां चलीगई बड़े शोचकी बात है जो मैंने लोभवश बाहर निकल कर अपने घर व स्त्री को भी हाथसे खोया हे नारायण अब मैं क्या करूं व कहाँ जाऊं एक तो गरीबी के दुःखमें पड़ा था दूसरे स्त्री खोजनेका शोच और अधिक हुआ अब मैं उसे कहां जाकर ढूंढूं जिस समय सुदामा इसी शोच व विचारमें वहां खड़ाथा उसीसमय सुशीला अपने स्वामीको देखने वास्ते कोठे पर चढ़ी जैसे उसने सुदामाको द्वारेपर खड़े देखा वैसे दासियों को आज्ञा दी कि हमारे पति जो द्वारेपर खड़े हैं उनको सन्मानपूर्वक भीतर लिवालाओ तब द्वारपालक व दासियों ने यह आज्ञा पातेही सुदामा के पास जाकर दण्डवत् करके उनको भीतर चलने वास्ते कहा व कोई शरीर की धूरि झाड़कर पंखा हिलाने लगा तब सुदामा उनके आदरभाव करने से घबड़ाकर बोला मुझ गरीब ब्राह्मणको राजाओं के घर में क्यों लिये जाते हो यह सुनकर द्वारपालकों ने विनय की महाराज यह स्थान

आपकाहै निस्सन्देह भीतर चलिये जब सुदामा उनकी बातका विश्वास न मानकर डरसे कांपने लगा तब सुशीला सोरहों शृंगार किये सखियोंको साथ लिये आरती करने वास्ते द्वारेपर आई व सुदामाके चरणोंपर गिर कर परिक्रमा लिया व आरती करके हाथ जोड़कर विनय की॥

चौ० ठाढ़े क्यों मंदिर पग धारो। मनते शोच करो तुम न्यारो॥
तुम पाछे विश्वकर्मा आये। तिन मंदिर पलमाहिं बनाये॥

भूषण व वस्त्र पहिरने से सुशीलाका रूप बदल गया था इसलिये कुछ क्षण बीते उसे पहिचानकर ध्यान में श्रीकृष्णजीकी दण्डवत् की व उसके साथ भीतर जाकर क्या देखा कि मखमली परदे मोतियों की झालर लगाकर सब द्वारों में लटकाये हैं व रत्नजटित चौकी व शय्या बिछी होकर सब स्थानों में अगर व चन्दन आदिक जलने से सुगन्ध उड़ रही है व ऐसी मणि व रत्नादिक वहां रक्खे थे जिनके प्रकाश से रातको उजियाला रहकर दीपक जलाने का प्रयोजन नहीं पड़ता था॥

दो० रत्नजटित वर देखिकै चकितभयो मनमाहिं। ज्यहिसमान तिहुँलोकमें और ठौर कहुँ नाहिं॥

यह सब राजसी विभव देखकर जब सुदामाका मुख मलीन होगया तब सुशीला ने आश्चर्य मानकर पूछा हे स्वामी धन मिलने से संसारी लोग प्रसन्न होते हैं आप यह सब इन्द्रपुरीका सुख व इतना धन पाकर क्यों उदास होगये इसका भेद बतलाइये यह सुनकर सुदामा बोले हे प्राणप्यारी यह धन जड़रूपी माया परमेश्वरकी बहुत बलवान् होकर सब जगतको मोहलेती है इसलिये जैसा गरीबी में मुझसे हरिभजन बनपड़ता था वैसा धन सुख पाने से नहीं होसकेगा यही समझकर मेरा मुख मलीन होगया देखो श्यामसुन्दरने विना मांगे इतना धन मुझको दिया पर थोड़ा समझकर मुखसे कुछ नहीं कहा इसलिये मैं यह सब विभव मिलने का हाल कुछ न जानकर अपनी टूटी झोपड़ी वास्ते पछिताता था सच है बड़े लोग किसीको कोई वस्तु देते हैं तो मुखसे नहीं कहते मुझे इस बातका बड़ा शोच है जो इतने दिनतक दर्शन त्रिभुवनपतिका न करके अवस्था अपनी वृथा खोई हे प्रिया तुम इस धनको अपना न जानकर आठोंपहर

यह समझती रहना कि सब सुख व धन मुझे द्वारकानाथ की कृपा से मिलाहै जिसमें तुझे अभिमान न होवै और मैं त्रिभुवनपति से दिन रात यही मांगताहूं कि जन्म जन्मान्तर परमेश्वर का दास व सेवक होकर उनकी सेवा व टहल में बनारहूं ॥

दो० जबलौं सुमिरे ना हरी जो संतनके मीत। वे दिन गिनती में नहीं गये वृथा सब बीत ॥

यह बात सुनकर सुशीलाने मनमें कहा देखो श्यामसुन्दर अन्तर्यामी ने विना मांगे इच्छा मेरी पूर्ण की फिर वह बोली हे स्वामी अब तुम निश्चिन्त होकर हरिभजन किया करो ऐसा समझकर सुशीलाने सुदामा को उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाये व सुगन्धादिक उनके अंगमें लगाकर हरिभजन संयुक्त उनके साथ संसारी सुख भोगने लगी और तन छोड़ने उपरान्त वैकुण्ठ में जाकर लक्ष्मीनारायण के दासी व दास हुये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित देखो चार मुट्ठी चावल परमेश्वर को देने से सुदामा ऐसी सुन्दर गतिको पहुँचा जो लोग सदा प्रेमपूर्वक छत्तीस व्यंजन नारायणजीको भोग लगाते हैं उनको न मालूम कैसा सुख मिलेगा व सुदामाका स्थान ऐसा उत्तम विश्वकर्मा ने बनाया था जिसे देखकर इन्द्रादिक देवता मोहि जाते थे ॥

दो० यह चरित्र अद्भुत महा चितदे सुनै जु कोय। रहै सदा सुख चैन सों अन्त मुक्ति फल होय ॥

बयासीवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका सूर्यग्रहण स्नान करनेवास्ते कुरुक्षेत्र में जाना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित अब हम श्रीकृष्णजी के कुरुक्षेत्रयात्रा की कथा कहते हैं सुनो एकबेर सूर्यग्रहण लगने में श्यामसुन्दर व बलराम जी ने राजा उग्रसेन से कहा महाराज कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण स्नान का बड़ा माहात्म्य होकर जो वस्तु वहां दान करै उसका हजार गुणा फल मिलता है यह सुनकर यदुवंशियों ने पूंछा हे महाप्रभु ऐसा माहात्म्य वहां का किसतरह हुआ केशवमूर्तिने कहा वह स्थान बहुत पुराना व पवित्र होकर पहिले उसका नाम स्यमन्तकक्षेत्र था जबसे परशुरामजी ने क्षत्रियों को मारकर वहां रक्तकी नदी बहाई व उसी रुधिरसे पितरोंका तर्पण किया व

ऋषीश्वरों ने उस स्थानपर तप व ध्यान परमेश्वरका किया तबसे वहांका नाम कुरुक्षेत्र प्रकट होकर सूर्यग्रहण नहानेका बड़ा माहात्म्य हुआ यह वचन सुनते ही जब राजा उग्रसेन व यदुवंशीलोग प्रसन्न होकर वहां चलनेवास्ते तैयार हुये तब मुरलीमनोहरने अपने माता व पिता व रुक्मिणी आदिक सब स्त्रियों को साथ लेलिया बड़े विभवसे राजा उग्रसेन व यदुवंशियों समेत कुरुक्षेत्रको कूच किया व अनिरुद्ध अपने पोता व कृतवर्मा यादवको द्वारकापुरी में छोड़ दिया जब यदुवंशीलोग अनगिन्ती हाथी व घोड़े व रथोंपर बैठकर चले व रानियों के चंडोल व नालकी आदिक नगर से बाहर निकलीं उस समय ऐसी शोभा मनहरणप्यारेकी मालूम होती थी जैसे ताराओं में चन्द्रमा शोभा देते हैं॥

दो० चले कटक सब साजिकै माखन प्रभु यदुराज। विविध भांति बाजे बजे सुखको भयो समाज॥

जब श्यामसुन्दर यदुवंशियों समेत कुरुक्षेत्र के निकट पहुँचे व तीर्थ वहां से दिखलाई देने लगा तब सब छोटे बड़े सवारियों परसे उतरकर पैदल चले किसवास्ते कि वेद व शास्त्र में ऐसा लिखा है कि तीर्थ जाती समय सम्पूर्ण रास्ता पैदल न चल सकै तो जहांसे तीर्थ का स्थान दिखलाई दे वहां से अवश्य पैदल चलना चाहिये इसलिये द्वारकानाथ ने सबको साथ लिये हुये पहिले ब्रह्मकुण्डपर जिसमें से वेद निकला था जाकर स्नान किया फिर बहुतसी गौ विधिपूर्वक व सुवर्ण व द्रव्य व हाथी व घोड़े आदिक अनेक तरहकी वस्तु तीर्थवासी ब्राह्मणोंको दान दिया व उत्तम उत्तम डेरों में टिककर अपने साथियोंसे कहा तुमलोग यहां तीर्थ में ब्राह्मणोंका सन्मान करके किसीको दुर्वचन मत कहना व श्यामसुन्दरने जिस जगह ऋषीश्वर व महापुरुषों के आने व रहनेका समाचार पाया वहां आप जाकर उनका दर्शन किया व अपने सेवकोंको आज्ञा दी॥

दो० तात हमारे नन्दजू और यशोदा माय। उनकी सुधि जो कुछ मिलै हमसों कहियो आय॥

जब दुर्योधन आदिक अनेक देशके राजाओंने जो ग्रहण स्नान करने वहां आयेथे मुरलीमनोहरके यहां आनकर उनका दर्शन करके अपना जन्म सफल जाना तब धृतराष्ट्र आदिक बड़े बड़े नृपति व भीष्मपितामह ने

राजा उग्रसेनकी बहुत स्तुति करके उनसे विनय की महाराज तुम्हारा बड़ा भाग्य है देखो जिस परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन ब्रह्मा व महादेव आदिक देवताओं को जल्दी ध्यान में नहीं मिलता वही त्रिभुवनपति दिन रात तुम्हारी आज्ञामें रहकर विना पूंछे कोई काम नहीं करते व सब जगह के ईश्वर होकर तुम्हें दण्डवत् करते हैं ऐसी पदवी किसी देवताको नहीं मिल सक्ती यह वचन सुनकर जब राजा उग्रसेन ने सन्मानपूर्वक उनको बिदा किया तब राजा भीष्मक व नग्नजित् आदिक वसुदेवनंदन के श्वशुर व सालोंका हाल जो वहां ग्रहण स्नान करने आयेथे सुनकर मुरलीमनोहरकी स्त्रियां उनसे भेंट करने वास्ते गईं तब वे लोग उन्हें देखकर अति प्रसन्न हुये व उन्होंने बहुत सी सौगात अपने अपने देशकी मुरलीमनोहरको भेंट देकर उनका दर्शन प्रेमपूर्वक किया व कुन्ती ने श्रीकृष्णजीसे कहा मैं जानती थी कि मेरे बेटों पर तुम दया रखते हो सो तुम्हारे भाइयोंने दुर्योधनके हाथसे इतना दुःख उठाया पर तुमने कुछ सुधि नहीं ली इस बातका मुझे बड़ा पछतावा है यह वचन सुनकर लक्ष्मीपतिने कहा हे फुआ इसमें कुछ मेरा दोष न होकर सब दुःख सुख अपने प्रारब्ध से मिलता है जिस तरह आंधी चलने से कोई तिनुका विना उड़े नहीं रहसक्ता उसी तरह सब जीव परमेश्वर के आधीन रहकर अपने अपने कर्मों का फल भोगते हैं उसमें तिलभर घटने बढ़ने नहीं सक्ता यह सुनकर कुन्ती ने वसुदेवजी से कहा हे भाई जबसे तुमने मेरा विवाह कर दिया तबसे कुछ सुधि नहीं ली व मैंने जैसा दुःख दुर्योधन के हाथसे पाया उसका हाल परमेश्वर जानता है देखो श्याम व बलरामने भी हरिभक्तोंका दुःख छुड़ानेवास्ते संसार में अवतार लेकर मेरे ऊपर कुछ दया नहीं की इसमें कुछ तुम्हारा भी दोष न होकर यह बात सच है कि जब खोटे दिन आने से परमेश्वर विमुख होते हैं तब बाप व भाई आदिक किसी की सहायता कुछ काम नहीं करती यह सुनते ही वसुदेवजीने रोकर कहा हे बहिन हरिइच्छा बलवान् होकर कर्मकी गति जानी नहीं जाती जिससमय दुर्योधनने तुमको दुःख दिया था उन्हीं दिनों में कंसने मुझे कैद रखकर मेरे

बेटोंके मारनेवास्ते जो जो उपाय किये थे उनको तुमने सुना होगा जब परमेश्वरकी दयासे दोनों बालक किसी तरह बचे तब राजा जरासन्ध आनकर ऐसा लड़ा जिसके डरसे अपना देश छोड़कर टापूमें जा बसे इसी कारण तुम्हारी कुछ सुधि नहीं लेसके इसीतरह अनेक बातें कहकर वसुदेवजीने कुन्तीका बोध किया जब नन्द व यशोदा आदिक ने कि वेभी ग्रहण स्नान करने वहां जाकर श्यामसुन्दर के डेरेसे तीन कोसपर टिके थे यह हाल सुना कि मोहनप्यारे अपने कुटुम्ब समेत यहां आये हैं तब वे लोग उनसे भेंट करने वास्ते व्याकुल होकर आपसमें कहने लगे अब वृन्दावनविहारी सब राजाओं के शिरताज हुये हैं इसलिये उनको हमारी तरफ देखते लज्जा मालूम होगी जहां अनेक ड्योढ़ीदार रहने से राजाओंका पहुँचना कठिन है वहां हम गँवारों को कौन जाने देगा॥

दो० जिस जागह नरपति धनी बैठन पावत नाहिं। हम सब ग्वाल गँवारजन कैसे अब तहँ जाहिं॥

जब नन्द व यशोदा आदिक व्रजवासियोंसे विना देखे मुरलीमनोहर के नहीं रहा गया तब वे लोग घबड़ाकर श्यामसुन्दर का डेरा पूछते हुये वहां से दौड़े व उसी समय किसीने आनकर श्रीकृष्णजी से कहा कि नन्द व यशोदा आदिक भी ग्रहण नहाने वास्ते यहां आनकर टिके हैं यह वचन सुनतेही मोहनप्यारे उनके प्रेमसे रोने लगे यह दशा उनकी देखकर देवकी माता घबड़ागईं व अपने अंचल से उनका आंसु पोंछकर बोलीं हे लालन जहां तुम्हारा नाम लेने से जगत् का दुःख छूटजाता है वहां तुम्हें कौन ऐसा दुःख प्राप्त हुआ जो इतना रोते हो यह सुनकर त्रिभुवनपति ने कहा हे माता जबसे मैंने नन्द व यशोदाके आने का समाचार सुना है तबसे मेरा मन उनके चरण देखने वास्ते व्याकुल होकर मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता सो तुम जल्दी रथ आदिक भेजकर उनको यहां बुलवावो तो मुझे उनके दर्शन मिलने से धैर्य हो हम बहुत अच्छी शुभ सायत में द्वारका से चले थे जो तीर्थ स्नान करने का फल पाकर व्रजवासियोंसे भेंट हुई यह वचन सुनतेही वसुदेवजीने रथ व पालकी व हाथी व घोड़े आदिक वाहन व्रजवासियों के लाने वास्ते भेजकर कहा

हे बेटा आज बड़ी खुशी का दिन है इसलिये तुमसे कुछ लेकर तब नन्द व यशोदाको तुम्हारे पास आने देंगे यह सुनकर वृन्दावनविहारीने कहा हे पिता संसारमें कोई वस्तु ऐसी नहीं है जो मैं तुम्हारे भेंट करूं मेरा शरीर तुम्हारे ऊपर न्योछावर है ॥

दो० यह सुनकर वसुदेवजी मुदित कहत सुख पाय। तुमसे पूत सपूतकी महिमा कही न जाय ॥

जब एक सखीने श्रीकृष्णचन्द्र को रोते हुए देखकर रुक्मिणी आदिक पटरानियों से यह हाल कहा तब वे सब घबड़ाकर वैकुण्ठनाथ के पास चली आईं व मुँह ढांपकर देवकी से उनके रोने का कारण पूंछने लगीं ॥

चौ० यह सुनि कहत देवकी माता। श्रीयदुनाथ प्रेमकी बाता ॥
नन्द यशोदा व्रजते आये। जिन याको है लाड़ लड़ाये ॥
याते इनकी यह गति भई। सुधि बुधि सकल भूलि तनुगई ॥

दो० कंस कुटिलके त्रासते वासकियो जिनपास। उनके गुण नहिं कहि सकैं जो मुखहोयँ पचास ॥

यह वचन सुनतेही रुक्मिणी आदिक पटरानियाँ हँसकर आपसमें कहने लगीं देखो आज हमारे प्राणनाथ राधा आदिक गोपियों से भेंट करके अपना कलेजा ठंढा करैंगे व बालापन की प्रीति समझकर व्रजबालाओं को भी बहुत सुख मिलैगा व हमलोग राधाप्यारीकी सुन्दरताई जो सुना करती थीं अब उसे देखकर मालूम होगा कि वह कैसी सुन्दरी है जब ग्वालबालों की संगति में नन्दलालजी मोरपंख शिरपर रखकर नाचैं व गावैंगे तब वह आनन्द देखकर हम लोगोंको भी बड़ा सुख प्राप्त होगा ॥

दो० धन्य यशोदा नन्द धनि धन्य नन्दके नन्द। धनि हम सब जो देखिहैं व्रजजन आनँदकन्द ॥

यह वचन रुक्मिणी आदिक का सुनकर श्यामसुन्दरने रोते रोते मुसकरा दिया व घबड़ाकर नन्द व यशोदा आदिक को आगे से लेनेवास्ते चले जब यशोदाने वृन्दावनविहारी को आते हुये देखा व अपना जन्म सफल जानकर उनको उठाने वास्ते दौड़ी तब मोहनप्यारे गोपियों के गोल में घुसकर जैसे यशोदा माता के चरणों पर गिर पड़े वैसे नन्दरानी ने उनको उठाकर छाती से लगा लिया व वारंवार उनका मुँह चूम कर बलायें लेने लगी ॥

दो० माखनप्रभुहि निहारिकै मुदित यशोमति माय। राजचिह्न सब देखिकै फूली अँग न समाय ॥

जब केशवमूर्ति नन्दबाबा को देखकर बड़े प्रेमसे रोते हुये उनके चरणों पर गिर पड़े तब नन्दरायने आंसू भरके उन्हें गोदमें उठालिया व अपने लाल का आंसू पोंछकर बहुतसा प्यार किया फिर श्यामसुन्दरने श्रीदामा ग्वालबालों के गले मिलकर उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र उनको दिया व सौगात वे लोग जो इनके वास्ते ले आये थे उसको बड़े प्रेम से लिया ॥

दो० हेमवर्ण पीताम्बर ग्वालबाल सब लेहिं। ताके पलटे कान्हको कारी कामरि देहिं ॥

जब ललिता आदिक सखियां व वृषभानुदुलारी को देखतेही जैसे आंखों में आंसू भरकर उनके निकट पहुँचे वैसे श्यामा उनको देखतेही प्रेमवश रोते रोते व्याकुल होगई ॥

दो० अंग अंग व्याकुल महा परी धरणि मुरझाय। यह गति देखत कुँवरिकी लीन्ही धाय उठाय॥

जब यह दशा लाड़िली की देखकर ललिता आदिक ने उनको बहुत समझाया तब राधाप्यारी ने सचेत होकर घूंघट निकाल लिया उससमय श्यामसुन्दर का मुखारविन्द देखनेसे व्रजवासियों को जैसा आनन्द हुआ वह मुझसे वर्णन नहीं होसक्ता फिर वसुदेवजी ने नन्दरायसे गले मिलकर कुशल पूंछने उपरान्त कहा तुम्हारी दया से यह सब सुख मुझे मिला है जैसे व्रजकी गौवोंने जो नन्दरायके साथ आई थीं श्यामसुन्दरको देखा वैसे आंखों में आंसू भरकर पूंछ उठाये हुये मुरलीमनोहर के पास दौड़ी चली आईं तब केशवमूर्तिने बड़े प्रेम से उनकी पीठ पर हाथ फेर कर प्यार किया व ग्वाल बालों से सब गायोंका हाल नाम ले लेकर पूछने लगे ॥

दो० गायनकी बातें कहत माखन प्रभु यदुराय। त्यों त्यों हर्षित होत सब आनँद उर न समाय ॥

जब श्याम व बलराम बड़े प्रेमसे नन्द व यशोदा आदिक व्रजवासियों को साथ लेकर अपने डेरे में आये तब देवकी व रोहिणी ने यशोदा के गले मिलकर कुशल पूंछने उपरान्त कहा हे नन्दरानीजी हमलोग जन्मभर तुम्हारी सेवा करें तो भी तुमसे उऋण नहीं होसक्तीं किस वास्ते कि हमारे लड़कोंका प्राण तुम्हारी कृपा से बचा है नहीं तो कंस पापी के हाथ से इनका बचना कठिन था यह सुनकर यशोदा बोलीं मैं तो अपने को मोहनप्यारेकी धाय समझती हूं कन्हैया ने अपना बालचरित्र दिखलाकर

जैसा सुख मुझे दिया है वह आनन्द दूसरे को स्वप्न में भी नहीं मिलने सक्ता व उसके वियोग में जितना दुःख मैंने उठाया उसका हाल परमेश्वर जानता है आज तुम्हारी कृपा से कान्हर को देखकर सब शोच मेरा छूट गया जब राधा आदिक गोपियों ने देवकी माता के चरणों पर शिर रख कर दण्डवत् की तब देवकी ने उन्हें आशिष देकर श्यामा को गले में लगा लिया व उसका रूप जो पटरानियों से भी अधिक सुन्दरी थी देख कर मनमें कहा ऐसी महासुन्दरी स्त्री मेरे प्राणप्यारे से किस तरह छोड़ी गई जब रुक्मिणी आदिक स्त्रियों ने यशोदा से मिलने वास्ते आनकर श्यामा का रूप देखा तब अपनी अपनी सुन्दरताई का अभिमान भूल गईं उस समय रुक्मिणी ने वसुदेवनन्दन से हाथ जोड़ के विनय की हे व्रजनाथ तुम्हारी आज्ञा पाऊं तो आज राधाप्यारी को अपने यहां ले जाकर शिष्टाचार करूं ॥

दो० माखन प्रभु आज्ञा दई लेजाइय निज धाम। राधा कुँवरि जेंवाइकै पूरण कीजै काम ॥

यह वचन सुनतेही रुक्मिणी ने श्यामा के पास आनकर उसका हाथ पकड़ लिया व बड़े प्रेम से अपने यहां लेजाकर छत्तीस व्यञ्जन खिलाया व अपने यहां से उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्रादिक उसे पहिनाकर सोरहों शृंगार करके बैठा दिया तब सत्यभामा आदिक स्त्रियां श्यामा का रूप जो चन्द्रमा से भी अधिक सुन्दरी थी देखकर मोहित होगईं व सबों ने लज्जा से आंखैं अपनी नीचे करलीं उससमय वृन्दावनविहारी ने जाकर वृषभानुदुलारी की शोभा देखी तो रुक्मिणी आदिक से कहा ॥

दो० जो चाहै मोहिं वश करन तिहूंलोक में कोय। श्रीवृषभानुकुमारिको हित सों सेवै सोय ॥

यह बात मुरलीमनोहर की सुनतेही राधा प्रसन्न होकर मुस्कराने लगी व रुक्मिणी आदिक ने समझा कि वैकुण्ठनाथ वृषभानुदुलारी का हम सबसे अधिक प्यार करते हैं जिस समय द्वारकानाथ ने नन्द व यशोदा आदिक व्रजवासियों को एक ओर बैठाकर बड़े प्रेम से सुनहुली थालियों में छत्तीस व्यञ्जन उनके सामने परोस दिये व दूसरी ओर आप यदुवंशियों समेत बैठकर भोजन करने लगे उस समय सब छोटे बड़े वह आनन्द

देखकर प्रसन्न होगये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित श्यामसुन्दर जितना प्रेम ब्रजवासियों के साथ रखते थे उसका हाल मुझ से कहा नहीं जाता जब सब कोई भोजन करके सुचित्त हुये तब वसुदेवनन्दन ने ब्रजवासियों को पान इलायची व इत्र देकर नन्दजी से विनय किया हे बाबा मेरी भक्ति करनेवाले भवसागर पार उतरि जाते हैं सो तुम लोगों ने अपना तन मन धन मेरे ऊपर न्योछावर करके मुझ से प्रीति लगाई इसलिये तुम्हारे बराबर कोई दूसरा भाग्यवान् नहीं है देखो जहां ब्रह्मादिक देवता व बड़े बड़े ऋषीश्वर जल्दी मेरा दर्शन ध्यान में नहीं पाते वहां मैं तुम लोगों की भक्ति व प्रीति देखकर दिन रात तुम्हारे पास बना रहता हूं इसलिये मेरा प्रकाश घट घट व्यापक समझकर तुम्हें मेरे वियोग का शोच न करना चाहिये जब कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द ने इसी तरह नन्द व यशोदा आदिक को बहुत समझाकर धैर्य दिया तब वे लोग आपसमें बैठकर बालचरित्र व यश मोहनप्यारेका कहने लगे फिर केशवमूर्ति सब गोपियों को जो उनसे बहुत प्रीति रखती थीं एकान्तमें बैठाकर जब प्रेम की बातें उनसे करने लगे तब ब्रजवासियों ने छवि मोहनीमूर्ति को देखकर अपनी अपनी आंखें ठंढी कीं उस समय एक गोपी बालापन की प्रीति समझकर निर्भय होके बोली हे नन्दलाल तुमने इतना धन व विभव कहां से पाया और सब हाथी व घोड़े किसी के मँगनी लेआये हो कि तुम्हारे हैं तुमको यह बात याद होगी कि हम सब ब्रजबाला तुम्हारे एक विवाह होने वास्ते हँसा करती थीं सो अब तुम सोलह हजार एकसौ आठ स्त्री से विवाह करके उनके साथ भोग व विलास करते हो भला यह तो बतलाओ तुमको हमारा दूध दही चुराकर खाना व ऊखलसे अपना बांधे जाना व वनमें गोपियोंको रोंककर दधिदान लेना सुधि है या नहीं हमलोगों को तुम्हारे वियोग में एक दिन वर्ष समान बीतता था तुमने इतने दिन हमारे बिना किसतरह काटा जैसी कठोरता तुमने हमारे साथ की ऐसा निर्मोही संसार में कोई न होगा जब वृन्दावनविहारीने ऐसी ऐसी अनेक बातें गोपियोंकी सुनी तब विनयपूर्वक

उनसे बोले हे प्राणप्यारियो जो सुख व विलास मैंने तुम्हारे साथ किया है वह आनन्द यह सब विभव रहने परभी नहीं मिलता जो कोई प्रेमपूर्वक मेरा ध्यान व स्मरण किया करता है उससे मैं क्षणभर भी विलग नहीं रहता मैं ग्रहण स्नान करनेके बहाने केवल तुमलोगों से भेंट करने वास्ते यहां आया हूं ॥

चौ० हम को तुम सुमिरौ मन माहीं। हमहू सदा रहैं तुम पाहीं ॥
सर्व आतमा हम को जानो। सब जीवन के जीव बखानो ॥
आतम ही सों आतम देखो। यह अध्यातम ज्ञान विशेखो ॥
राजन ऐसी विधि बहि ठाईं। हरिजू सब गोपिन समुझाईं ॥
सफल जन्म ताको जग माहीं। जाको मन हरिचरणन पाहीं ॥

यह सुनकर गोपियोंने कहा हे प्रभु ज्ञान उपदेश करती समय हमलोगोंको उद्धवका कहना अच्छा नहीं मालूम हुआथा पर अब उस ज्ञान का गुण जानकर हमलोग अपनेको तुमसे बिलग नहीं समझतीं तुम्हारा ध्यान रखनेसे अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थ मिलकर जो सुख हमें प्राप्त होताहै वह आनन्द बड़े बड़े योगीश्वरोंको भी जल्दी मिलने नहीं सक्ता व हमलोगोंका आवना तुम्हारे दर्शनोंकी इच्छासे यहां हुआहै सो दयालु होकर ऐसा वरदान देव जिसमें दिन रात तुम्हारे कमलरूपी चरणों का ध्यान हमारे हृदय में बनारहकर प्रतिदिन तुमसे अधिक प्रीति हो श्यामसुन्दर उन्हें इच्छापूर्वक वरदान देकर बहुत देरतक उनसे लड़कपनकी बातें करते रहे फिर वहांसे उठकर राधाप्यारी के पास चले गये ॥

दो० श्रीवृषभानु कुमारिसँग लागे करन हुलास। भूलिगये रनिवास सब माखन प्रभु सुखरास ॥

एक दिन रुक्मिणी आदिक पटरानियां आपस में बैठकर अभिमानसे कहने लगीं जितनी प्रीति श्यामसुन्दरकी हमलोग करती हैं उतना प्रेम गोपियोंको होना कठिनहै मुरलीमनोहर अन्तर्यामीने यह हाल जानकर उनका गर्व तोड़ने वास्ते अपनी स्त्रियों व व्रजबालोंको एक जगह बैठा कर कहा तुमलोगोंमें जिनको मेरी अधिक प्रीति होगी उनके हृदय में मेरा वास रहता होगा यह वचन सुनते ही सब व्रजबाला व स्त्रियों ने अपना अपना अंचल उठाकर देखा तो रुक्मिणीआदिकको अपने तनु

में कुछ चिह्न नहीं दिखलाई दिया व गोपियोंके हृदयमें श्यामरंग छोटासा नटवरवेष त्रिभुवनपति का देखपड़ा यह महिमा ब्रजवालों की देखतेही वे लोग अपने प्रेमका घमण्ड भूलकर मनमें कहने लगीं जितनी प्रीति गोपियां श्यामसुन्दरकी रखती हैं उतना प्रेम हमें होना बड़ा दुर्लभ है ॥

दो० गोपरूपभगवानको देखत अति सुखपाय । हरिचरणनपर गिरपड़ीं मनमें बहुत लजाय ॥

जब केशवमूर्ति लोकाचार करनेवास्ते दूसरे राजाओंके डेरेपर जो वहां टिके थे गये तब उन्होंने आगे से आनकर साष्टांग दण्डवत् किया व सन्मानपूर्वक लेजाकर जड़ाऊ सिंहासनपर बैठाला व अनेक तरह की वस्तु भेंट देकर विनय की हे महाप्रभु हम लोग सदा तुम्हारी स्तुति सुन कर दर्शनोंकी इच्छा रखते थे सो अब आपका चरण देखने से अपने समान किसीका भाग्य नहीं समझते जिसतरह आपने दयालु होकर हमें कृतार्थ किया उसी तरह कृपा करके ऐसा वरदान दीजिये जिसमें तुम्हारे चरणोंकी भक्ति व प्रीति सदा हमारे हृदयमें बनीरहै वैकुण्ठनाथ उन्हें वर-दान व धैर्य देकर अपने स्थानपर चले आये ॥

तिरासीवां अध्याय ।

द्रौपदी व रुक्मिणी आदिकका आपस में बातचीत करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जिसतरह द्रौपदी व रुक्मिणी आदिक ने आपसमें अपने अपने विवाहकी बातचीत की थी वह कथा कहते हैं सुनो एक दिन युधिष्ठिर आदिक पांचो भाई व कौरव बहुत राजाओं समेत त्रिभुवनपति की सभामें बैठे हुये इसतरह उनकी स्तुति करनेलगे ॥

चौ० परमहंस है नाम तुम्हारो । तुमसे प्रकट वेद हैं चारो ॥
विप्र धेनु रक्षा के काजा । तुम अवतार लियो यदुराजा ॥
आदि अंत तुम पूरण कामा । तुम को हित से करैं प्रणामा ॥

दो० ऐसी विधि अस्तुति करी सब राजन सुखपाय । पातक तजि पावन भये परसत प्रभुके पाय ॥

उसी दिन कुन्ती व द्रौपदी जिनकी महिमा सब जगत् जानता है रुक्मिणी आदिक पटरानियोंके पास बैठकर इधर उधरकी बातें करनेलगीं तब कुन्ती ने रुक्मिणीसे हँसकर कहा तुमने अभीतक अपने विवाह का

नेग मुझे नहीं दिया सो देना चाहिये रुक्मिणी हाथ जोड़कर बोली हे माता मेरा तनु व धन सब तुम्हारी भेंट है फिर द्रौपदी बोली हे रुक्मिणी बहिन जिसतरह श्यामसुन्दर तुमलोगोंको विवाह लायेथे वह हाल सुनने की मैं वहुत इच्छा रखती हूं सो दया करके अपने अपने विवाह होने की कथा सुनावो यह बात सुनकर रुक्मिणीजी बोलीं ॥

चौ० जो तुम हँसो नहीं गुणज्ञाता। तौ हम कहैं ब्याहकी बाता ॥
देश चँदेली सब जग जानो। तहँ शिशुपाल नरेश बखानो ॥
पहिले तिहि सों भई सगाई। सकल विवाह कि सोज मँगाई ॥

दो० सो नरेश आयो तभी बहु राजा लै साथ। रीति भांति कुलकी करी कंकण बांध्यो हाथ ॥

मुझे मनसा वाचा कर्मणासे यह चाहना थी कि द्वारकानाथकी दासी होकर रहूं इसलिये त्रिभुवनपति अन्तर्यामी कुण्डिनपुरमें आये और सब राजाओंको जीतकर मुझे हर ले गये सो उनकी सेवामें रहकर अपना जन्म स्वार्थ करती हूं फिर सत्यभामाने अपने विवाह होनेका हाल वर्णन किया व जाम्बवतीने अपने विवाहका वृत्तान्त कह सुनाया ॥

चौ० फिर बोली कालिन्दी रानी। चित दे सुनु द्रौपदी सयानी ॥
मैं धरि हरिचरणनकी आसा। बहुदिन जलमें कियो निवासा ॥

दो० एकदिवस अर्जुन सहित आये श्रीभगवान। हाथ पकड़ मोहिं लायके दीन्हो पद निर्बान ॥

मित्रविन्दा ने कहा हे द्रौपदी रानी श्यामसुन्दरकी स्तुति सुनकर मुझे यह अभिलाषा हुई कि सिवाय मोहनप्यारे के दूसरेसे अपना विवाह न करूंगी सो मेरे भाइयोंने यह हाल जानकर मेरा विवाह त्रिभुवनपति के साथ करदिया अब मुझे दिन रात यही इच्छा रहती है कि जन्म जन्मांतर वैकुण्ठनाथ की दासी होकर रहूं फिर सत्या ने अपना हाल जिसतरह द्वारकानाथ उसे ब्याहलाये थे कह दिया ॥

चौ० भद्रा कहत सुनो तुम बानी। लोगन अस्तुति श्याम बखानी ॥
तबते नेम कियो मनमाहीं। उन बिन और भजौं मैं नाहीं ॥
याते पिता कृष्णको दीन्हीं। मम इच्छा सब पूरण कीन्हीं ॥

दो० चरणकमल श्रीकृष्णके जो सेवै चितलाय। सुभग भाग्य तिहि नारिकी कासों वरणीजाय ॥

चौ० बोली बहुरि लक्ष्मणा रानी। निज विवाहकी कथा बखानी ॥

मेरो पिता स्वयंवर कीनो। मेरो मन हरिके रसभीनो॥
तहां आय मोहन सुखदाई। पाणिग्रहण करि दया जनाई॥
तबते भई कृष्ण की दासी। रैनि दिवस नित रहत हुलासी॥
अब तुम मोको देव अशीशा। जन्म जन्म सेऊं जगदीशा॥

जब आठों पटरानी अपने अपने विवाहका हाल कहचुकीं तब सोलह हजार एकसौ राजकन्या बोलीं हे द्रौपदी हमलोगों को भौमासुर दैत्यने बरजोरी उठा लाकर अपना विवाह करनेवास्ते एकस्थान में रक्खा था॥

चौ० जब हम शरण कृष्णकी आईं। विनती बहुत करी उनपाईं॥
हरि अंतर्यामी सुखदानी। अपनी समझ दया मनआनी॥

दो० तुरत आय पहुँचे तहां माखन प्रभु यदुराय। भौमासुरको मारकर लीन्हो हमैं छुड़ाय॥

उसी दिनसे हमलोग मुरलीमनोहर की सेवा में रहकर अपने को पटरानियों की दासी समझती हैं सो हे द्रौपदी तुम हमैं ऐसा आशीर्वाद देव जिसमें सदा श्यामसुन्दरकी सेवा में बनीरहैं जब द्रौपदी व गांधारी व कुन्ती व यशोदा आदिकने श्यामसुन्दरके सब विवाहोंका हाल सुना तब प्रसन्नता से उन्हैं आशीर्वाद देकर बड़ाई भाग्य रुक्मिणी आदिक की करने लगीं॥

चौ० फिर सतभामा पूंछन लागी। सुनौ द्रौपदी परम सुभागी॥
हम अपनी सब कथा सुनाई। अब तुम हमसों कहौ जनाई॥

दो० पांच जननसे कौन विधि तुम्हरो भयो विवाह। अद्भुतलीला सुननकी मनमें बड़ी उछाह॥

यह बात सुनकर द्रौपदी बोली हे प्यारियो हमारे पिताने मेरा स्वयंवर रचकर यह प्रण किया था जो कोई तेलके कराह में परछाहीं देखकर अपने बाणसे मत्स्य बेधे उसीको अपनी कन्या विवाह दूंगा जब दुर्योधन व जरासन्ध आदिक बहुत राजाओं ने आनकर मत्स्य बेधने में लज्जा उठाई व अर्जुनने वह मत्स्य बेधकर मेरे पिताका प्रण पूरा किया तब मैंने उनके गले में जयमाला डाल दी यह हाल देखकर सब छोटे व बड़े प्रसन्न हुये पर दुर्योधन आदिक अधर्मी राजाओं ने लज्जित होकर पांचो भाइयों से युद्ध किया सो हारमानकर भागगये जब अर्जुन ने मुझे घरलेजाकर

अपनी माता से कहा हम एक सौगात ले आये हैं तब कुन्तीजी खानेकी वस्तु समझकर बोली कि पांचोभाई आपस में बांट लेव ॥

दो० याते पांचो पाण्डवन लीन्हों मोहि बिवाहि । प्रकट देहसे पांचहैं जीव एकही आहि ॥

यह बात सुनकर रुक्मिणी आदिक द्रौपदी की बड़ाई करने लगीं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित एक दिन श्यामसुन्दर की सभा में युधिष्ठिर आदिक पाण्डव व सब यदुवंशी व बहुत से राजा बैठेहुये थे उसीसमय नारदमुनि व वेदव्यास व विश्वामित्र व देवल व च्यवन व सतानन्द व भरद्वाज व गौतम व वशिष्ठ व भृगु व अत्रि व मार्कण्डेय व अगस्त्य व वामदेव व पराशर व परशुरामआदिक बहुतसे ऋषीश्वर वैकुण्ठनाथ के दर्शनवास्ते वहां आये उनको देखते ही श्यामसुन्दर ने सब राजाओंसमेत खड़े होकर सन्मानपूर्वक सब ऋषीश्वरोंको आसन पर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लिया व विधिपूर्वक पूजन उनका करके हाथ जोड़कर यह स्तुति की ॥

चौ० ऋषि दर्शन दुर्लभ जगमांहीं । देवनहूंको प्रापत नाहीं ॥
आज सुफल है जन्म हमारो । जो हम पायो दरश तुम्हारो ॥

दो० हरिभक्तनके दरशकीमहिमा कही न जाय । जनमजन्म के पाप सब क्षणमें जात नशाय ॥

चौरासीवां अध्याय ।

वसुदेवजी का यज्ञ करना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर ऋषीश्वरों की पूजा व स्तुति कर चुके तब उन्होंने कौरव व पाण्डव आदिक राजाओंसे जो वहां पर थे कहा हमलोगों का बड़ाभाग्य समझना चाहिये जो इन ऋषीश्वरों ने दयालु होकर घर बैठे अपना दर्शन दिया विरक्त साधुओंके चरण देखने से गंगास्नान का फल प्राप्त होकर मरने उपरांत ऐसा उत्तम स्थान रहने वास्ते मिलताहै जहांपर बड़े योगी व ज्ञानी नहीं पहुँच सकें इसलिये ऋषीश्वरों का सत्संग मिलना सब तीर्थ नहाने व देवस्थान दर्शनसे उत्तम होकर इनकी पूजा परमेश्वर समान जानना चाहिये जो लोग ऋषीश्वर व मुनि नहीं मानते उन्हें गदहे व बैलों के समान समझना उचित है ॥

दो० चरण साधुके प्रीतिकरि पूजतहै जो कोय । संसारीसुख भोगकरि अन्त ब्रह्मपद होय ॥

या विधि कर्म करै जो कोई । भवसागर से उतरै सोई ॥
जो तुम कहौ कि हम गृहचारी । योगरीति के नहिं अधिकारी ॥
तो तुमको यकबात जनाऊं । कर्मयोगकी राह बताऊं ॥
जो कछु पुण्यदान तुम करो । नेम धर्म व्रत मनमें धरो ॥
उसका फल हरिजूको दीजै । मनमें कछु इच्छा नहिं कीजै ॥
वे हरि तुमसे न्यारे नाहीं । सदा बसैं तुम्हरे घरमाहीं ॥

दो० या विधि नारद का वचन सुनकर श्रीवसुदेव । महामुदित मनमें भये जब जान्यो यह भेव ॥

यह वचन सुनतेही वसुदेवजी ने नारदमुनि आदिक ऋषीश्वरों से हाथ जोड़कर विनय की महाराज आपलोग दयालु होकर ऐसा यज्ञ करा दीजिये जिसमें मेरा मनोरथ पूर्ण हो यह सुनकर नारदजी बोले बहुत अच्छा तुम तैयारी करो हमलोग तुमको सोमयज्ञ करा देवैंगे यह सुनतेही वसुदवेजी ने सब सामग्री मँगाकर जो स्थान कुरुक्षेत्र में बहुत पवित्र था वहां यज्ञ की तैयारी की जब यज्ञशाला में सब ऋषीश्वर व यदुवंशी व राजा लोग आनकर इकट्ठे हुये तब वसुदेवजी शुभ सायत में ब्रह्मचर्य से मृगछाला पहिन कर देवकी आदिक अठारहों रानियों समेत यज्ञ करने वास्ते जा बैठे उस समय अनेक राजा व यदुवंशी लोग अपनी अपनी स्त्रियों समेत बड़े प्रेमसे यज्ञकी टहल करनेलगे तब वसुदेवजी ने नारदमुनि आदिक ऋषीश्वरों को वरण देकर कुण्डमें आहुति डालना आरम्भ किया तब श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार देवता लोग अग्निकुण्ड से प्रत्यक्ष निकल कर अपना अपना भाग लेने लगे उस समय उर्वशी आदिक अप्सराओं ने आनकर अपना अपना नाच दिखलाया व गन्धर्वोंने गाना सुनाया व देवताओं ने दुन्दुभी बजाकर आकाश से फूल वर्षाये व सब छोटे बड़े जो वहां पर थे उन्होंने गाय बजाय कर मंगलाचार मनाया व ब्राह्मणोंने वेद उच्चारण किया व भाटोंने कवित्त सुनाये इतनी कथा सुनाकर शुकदेव-जीने कहा हे परीक्षित उस समय जैसा आनन्द वहां पर हुआ था वह मुझसे वर्णन नहीं होसक्ता जब वैकुण्ठनाथ की दया से यज्ञ अच्छी तरह सम्पूर्ण हुआ तब वसुदेवजीने फल उसका मुरलीमनोहर को संकल्प देकर विधिपूर्वक उनका पूजन किया व यज्ञ करानेवाले ऋषीश्वरों को पीताम्बर

व सोना व गौ व रत्नादिक दान व दक्षिणा दी सिवाय ऋषीश्वरोंके और जितने ब्राह्मण व याचक व मंगन वहां पर थे उनको इतना मुँह मांगा द्रव्यादिक दिया कि फिर उनको कुछ इच्छा न रही जब ऋषीश्वर व ब्राह्मण लोग वसुदेवजी आदिक को आशीर्वाद देकर अपने अपने स्थान पर चले गये तब श्यामसुन्दर ने कौरव व पाण्डव व दूसरे राजाओं को यथा-योग्य भूषण व वस्त्र देकर सन्मानपूर्वक बिदा किया उस समय वसुदेवजी ने रोकर नन्दराय से कहा हे भाई तुमने श्याम व बलराम को पालकर उनकी रक्षा की है इसलिये मैं जन्म भर तुमसे उऋण नहीं होसक्ता व मुझसे आज तक कोई टहल तुम्हारी नहीं बनपड़ी जो उससे उऋण होता इसलिये चाहता हूँ कि थोड़े दिन आप यहां ब्रजवासियों समेत रहते तो मैं भी तुम्हारी सेवा व टहल करके उऋण होता जब नन्दराय यह सुनकर बड़े हर्ष से चार महीने ब्रजवासियों समेत कुरुक्षेत्र में टिके रहे तब वसुदेवजी ने प्रतिदिन उनका नया शिष्टाचार व श्याम व बलरामने सेवा उनकी प्रेमपूर्वक की ॥

दो० महिमा त्रिभुवननाथकी कासों वरणीजाय। ब्रजवासिन अति सुख दियो आनँद उर न समाय॥

जब चार महीने कुरुक्षेत्रमें रहकर राजा उग्रसेनने द्वारकापुरी चलनेकी तैयारी की तब श्यामसुन्दरने नन्द व यशोदा से रोकर कहा मुझसे तुम्हारा चरण छोड़ा नहीं जाता पर लाचारी से विनय करता हूं कि आप भी वृन्दावन जाकर गायों की सुधि लीजिये यह वचन सुनतेही नन्द व यशोदा व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिरपड़े व ग्वालबाल व गोपियों ने रुदन करके कहा हे नन्दकिशोर हमलोग तुम्हारा चरण छोड़कर वृन्दावन न जावैंगी हमको भी अपने साथ द्वारकापुरी ले चलो जैसी कठोरताई तुमने पहिले मथुरा में रहकर की थी वही बात अबभी करने चाहते हो यशोदा अतिविलाप करके बोली हे देवकी बहिन तुम मुझे श्यामसुन्दर की दूध पिलानेवाली समझकर अपने साथ लेचलो सिवाय दर्शन करने मोहनीमूर्तिके तुमसे भोजन व वस्त्र न लेऊंगी ॥

दो० मेरे घर गोधन सबै जो चाहो सो लेव। मनमोहन को नयन भरि प्रतिदिन देखन देव ॥

जब राधाप्यारीने सुना कि श्यामसुन्दर हमलोगोंको बिदा करके आप द्वारका जाया चाहते हैं तब वह अतिविलाप करके मुरलीमनोहर से बोली एकबेर तुम मुझे वृन्दावन छोड़कर मथुरा चले गये थे सो मेरी यह दशा हुई अब फिर उसीतरह मेरा प्राण लिया चाहते हो इसलिये अब मैं तुम्हारा चरण नहीं छोड़ूंगी दूध का जला हुआ छाछ फूंककर पीता है जिसतरह सोलह हजार एक सौ आठ स्त्रियां तुम्हारी सेवा करती हैं उसीतरह मुझ को भी दासी समझकर अपनी टहल में रक्खो जब त्रिभुवनपति ने यह दशा ब्रजवासियों की देखकर समझा कि ये लोग मेरा पीछा नहीं छोड़ कर द्वारका चला चाहते हैं तब अपनी माया फैलाकर उन लोगोंका मन इसतरह फेर दिया कि समझाने बुझाने से वृन्दावन जाने वास्ते माना उस समय श्यामसुन्दर नन्द व यशोदा आदिक सब छोटे बड़ों को अनेक तरह का भूषण व वस्त्र व रत्नादिक देकर बिदा किया ॥

चौ० श्रीवसुदेव महा सुरज्ञानी । ब्रजवासिन से बोलत बानी ॥
तुमतो प्राण समान हमारे । तुमसे कैसे होहुँ नियारे ॥
या विधि कहत प्रेमकी बाता । नयन नीर भीजे सब गाता ॥

दो० ब्रजवासी ब्रजको चले सब गोधन ले साथ । गृह आये आनन्दसों माखन प्रभु यदुनाथ ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित बिदा होती समय जैसा विलाप नन्द व यशोदा व राधा आदिक ने किया था वह मुझसे कहा नहीं जाता जब केशवमूर्ति द्वारकापुरी में पहुँचे तब सब छोटे बड़ों ने प्रसन्न होकर मंगलाचार मनाया व देवताओं ने आकाशसे द्वारकापुरी पर फूल वर्षाये ॥

पचासीवां अध्याय ।

वसुदेवजीको श्यामसुन्दरकी स्तुति करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह श्याम व बलराम अपने मरे हुये भाइयों को लिवा लाये थे वह कथा कहते हैं सुनो एकदिन राम व कृष्ण दोनों भाई प्रातःकाल उठकर जैसे माता व पिताके चरणोंको दण्ड-वत् करने गये वैसेही वसुदेवजी ने अपना शिर श्यामसुन्दर के चरणोंपर

धर दिया यह हाल देखकर मुरलीमनोहर बोले हे पिता आप मेरे चरणों पर गिरके मुझे क्यों दोष लगाते हो तब वसुदेवजी ने हाथ जोड़कर विनय की कि हे कृष्ण तुम परब्रह्म परमेश्वर का अवतार होकर जन्म व मरण से कुछ प्रयोजन नहीं रखते व तुम्हारे आदि व अन्तको कोई पहुँचने नहीं सक्ता आजतक मैं तुम्हारी महिमा नहीं जानता था अब ऋषीश्वरों के कहने से मुझे विश्वास हुआ कि आप त्रिलोकीनाथ हैं व सब जीवों में तुम्हारा प्रकाश रहता है देखो सूर्य देवता तुम्हारे तेज से प्रकाशित रहकर सब जगह में उजियाला करते हैं जिस जल से सब जड़ व चैतन्य जीवों का पालन होता है उसे तुम्हारा रूप समझना चाहिये व चन्द्रमा जो अपनी किरण से अमृत वर्षाकर संसारी जीव व वृक्षोंको सुख देते हैं व वायु चलने से जीवों को आराम मिलताहै व पर्वत अपने बोझ से पृथ्वी को दबाये रहकर हिलने नहीं देते व गंगा व समुद्रादिक सदा बहकर कभी नहीं सूखते सो उनको भी केवल तुम्हारी कृपासे यह सामर्थ्य हुई है व जितने जीव जड़ व चैतन्य संसार में दिखलाई देते हैं उन सब को तुम्हारी आज्ञा व इच्छा से ब्रह्मा ने उत्पन्न किया है व विष्णु भगवान् पालन करके महादेवजी उनका नाश करते हैं व आप आदिपुरुष भगवान् का अवतार ब्रह्मा व विष्णु व महेश से भी श्रेष्ठ हैं व आपकी माया ऐसी बलवान् है जिसने सब जगत् को मोहलिया इसलिये तुमको कोई पहिचानने नहीं सक्ता विना तुम्हारी शरण आये मनुष्य को संसारी मायाजाल से छूटना कठिन है जिसतरह बाजा बजानेवाला अपने मन माना उसमें से राग व रागिनी निकालता है उसीतरह आप संसारीजीवों की बुद्धि अपने अधीन रखकर जैसा चाहते हो वैसा कर्म उनसे कराते हो व तुम्हारे एक एक रोम में हजारों ब्रह्माण्ड बँधे होकर तुम्हारे भेद को कोई जानने नहीं सक्ता आजतक मैं अपने अज्ञान से तुमको पुत्र समझता था अब नारदमुनि के कहने से मुझे विश्वास हुआ कि आप किसी के पुत्र व पिता व भाई व मित्र नहीं हैं केवल पृथ्वी का बोझा उतारने व दैत्य व अधर्मी राजाओं को मारने व हरिभक्तों को सुख देनेवास्ते यदुकुल में

अवतार लिया है सो मुझे ऐसा ज्ञान देव जिसमें तुमको अपना पुत्र न जानकर आदिपुरुष समझूं व जिसतरह आपने अजामिल ऐसे बहुत पापियों को तारकर मुक्ति दी है उसीतरह मुझपर भी दयालु होकर भवसागर पार उतार दीजिये व जबतक संसारमें जीता रहूं तबतक सिवाय ध्यान व स्मरण तुम्हारे के मायाजालमें न फसूं ॥

चौ० तुमहीं सबके सिरजनहारे । पांच तत्त्व हैं अंश तुम्हारे ॥

दो० जन्मसमय जान्यो इतौ ब्रह्मरूप मनमाहिं । सो माया के मोहमें ज्ञान रह्यो कछु नाहिं ॥

जब श्यामसुन्दर ने यह स्तुति अपनी सुनी तब हँसकर बोले हे पिता तुमको जो बात जाननी उचित थी वह तुमने समझकर कही अब अपने कहने पर स्थिर रहकर मेरा प्रकाश सब जीवों में एकसा समझा करो तो मेरी माया तुमपर नहीं व्यापैगी यह बात सुनकर वसुदेवजीको ऐसा ज्ञान हुआ कि उसीदिन से श्याम व बलराम को पुत्रभाव छोड़कर ईश्वररूप समझने लगे व हरिचरणों में लीन होकर जीवन्मुक्त होगये फिर एक दिन मुरलीमनोहर ने देवकीसे कहा हे माता तुम्हारा ऋण मेरे ऊपर बड़ा है इसलिये जो कुछ मांगो सो देवैं यह वचन सुनते ही देवकी ने रोकर कहा हे बेटा तुम परब्रह्म परमेश्वरका अवतार हौ जिसतरह तुमने अपने गुरुका मरा हुआ बेटा लादिया था उसीतरह मेरे छवों बालक जो कंस अधर्मीने मारडाले हैं लादेव तो मेरा शोच छूटजावे ॥

दो० तिहिकारण जान्यों तुम्हैं अपने मन विश्वास । कर्त्ता हौ सब सृष्टिके माखन प्रभु सुखरास ॥

चौ० यह सुनि बोले कृष्णमुरारी । सुनो मातु तुम बात हमारी ॥
जो इच्छा तुम्हरे मनमाहीं । प्रभु पूरण करिहैं क्षणमाहीं ॥

ऐसा कहकर श्याम व बलराम सुतललोकमें गये उनको देखतेही राजा बलि आगे से जाकर दोनों भाइयोंके चरणोंपर गिरपड़ा व पीताम्बर राह में बिछवाता हुआ बड़े आदरभाव से अपने घर ले जाकर जड़ाऊ सिंहासन पर बैठाला व दोनों भाइयोंके चरण धोकर चरणामृत लिया और जल अपने शिर व आंखोंमें लगाकर सब घरवालों पर छिड़क दिया ॥

दो० बलि राजा चाहत हतो हरि चरणनकी रैन । श्रीमाखन प्रभु दर्शते तन मन पायो चैन ॥

राजा बलिने विधिपूर्वक पूजा श्याम व बलरामकी करके सुगन्धादिक उनके अंगपर लगाया व पुष्पोंका गजरा व मोतियोंकी माला गले में पहिनाकर छत्तीस प्रकारके व्यंजन भोजन कराया व बड़े हर्ष से राम व कृष्णके चँवर हिलाने लगा व हाथ जोड़कर इसतरह पर स्तुति की हे दीनानाथ जिन चरणों का दर्शन ब्रह्मादिक देवता व बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वरों को जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता सो आपने दयालु होकर उन्हीं चरणोंसे मुझ गरीब की झोपड़ी पवित्र की इसलिये अपने बराबर दूसरे का भाग्य नहीं समझता जब प्रह्लाद मेरा दादा व शेषनागजी तुम्हारे भेदको नहीं पहुँचसके तब मुझ अज्ञानको क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा व स्तुति वर्णन करने सकूं जिसतरह आपने दयालु होकर घर बैठे अपने चरणों का दर्शन दिया उसीतरह मेरी स्त्री व लड़केबालों को घर व धनसमेत जो मैं भेंट करता हूं लीजिये व मुझे अपना दास समझकर अपने आनेका कारण वर्णन कीजिये यह आधीन वचन सुनकर केशवमूर्ति ने कहा हे राजा बलि एकदिन मरीचि ऋषीश्वर के छवों पुत्रोंने तरुणाईके गर्वसे ब्रह्माजीकी हँसी की थी इसलिये ब्रह्माने क्रोधित होकर उनको ऐसा शाप दिया कि तुमलोग दैत्ययोनिमें जन्म लेव उसी कारण उन छवों बालकों ने पहिले हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपुके यहां उत्पन्न होकर फिर मेरी माताके पेटसे जन्म पाया जब राजा कंसने उन छवों बालकोंको मार डाला तब वह तुम्हारे घर आनकर उत्पन्न हुये अब देवकी माता हमारे भाइयों के वास्ते बहुत शोच करती है इसलिये मैं उनको लेने आया हूं यह वचन सुनतेही राजा बलि ने बड़े हर्ष से जैसे उन छवों बालकोंको लादिया वैसे त्रिभुवनपति उन्हें अपने साथ लेकर द्वारका में चले आये जब देवकी ने छवों बेटों को देखा तब बड़े प्रेमसे उठाकर दूध पिलाने लगी ॥

चौ० बारबार निज कंठ लगावै। राम कृष्णको हांसी आवै ॥

उससमय वसुदेवजी व देवकी को विश्वास हुआ कि श्याम व बलराम परब्रह्म परमेश्वरका अवतार हैं यह समझकर उन्हें बड़ा हर्ष हुआ व

श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार उन छवों बालकोंको ज्ञान उत्पन्न होकर अपने पूर्वजन्म की सुधि आई तब वह अपनी माता व श्याम व बलरामको दण्डवत् करके उसी समय देवलोकमें चलेगये यह दशा देखकर देवकी को बड़ा शोच हुआ पर श्याम व बलराम के समझाने से संसारी व्यवहार झूठा समझकर मनको धैर्य दिया व हरिचरणों में ध्यान लगाकर मन अपना संसारी मायासे विरक्त करलिया॥

दो० यह चरित्र चितलायकै कहै सुनै जो कोय। श्रीमाखन प्रभु चरणसे कबूं बिलग नहिं होय॥

छियासीवां अध्याय।

अर्जुन का सुभद्राको बरजोरी से उठा ले जाना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह अर्जुनका विवाह सुभद्रा श्यामसुन्दर की बहिनसे हुआ था वह हाल कहते हैं सुनो जब द्रौपदी कुन्ती माताकी आज्ञा से युधिष्ठिर आदिक पांचों भाईकी स्त्री होकर रहने लगी तब नारद मुनिने आनकर युधिष्ठिर आदिक से कहा कि स्त्री व धन के वास्ते बाप बेटा व भाई भाई में सदासे झगड़ा होता आया है इसलिये एक उपाय बतलाये देता हूं उसके करने से तुम पांचों भाइयों में द्रौपदी के वास्ते विरोध न होगा यह सुनकर युधिष्ठिर आदिक ने कहा हे मुनि-नाथ जो आप कहैं सो करैं यह सुनकर नारदमुनि बोले एक वर्ष में तीन सौ साठ दिन होते हैं सो तुम पांचों भाई बहत्तर बहत्तर दिन की पारी बांधकर इस प्रणसे द्रौपदीको अपने पास रक्खा करो कि जब एक भाई की पारी में दूसरा भाई बीच महल द्रौपदी के जावे तो बारह वर्ष तक वन-बास करै यह वचन नारदमुनि का पांचों भाई मानकर उसी तरह द्रौपदी को अपने पास रखते थे सो एकदिन ऐसा संयोग हुआ कि द्रौपदी आधी रातको राजा युधिष्ठिर के मन्दिर में थी व उस दिन धनुष बाण अर्जुन का राजा युधिष्ठिर के स्थानमें रक्खा था उसी समय एक ब्राह्मणने आन-कर अर्जुनसे कहा कि मेरी गौ चोर चुराकर लिये जाता है सो दिला दीजिये यह सुनकर अर्जुनने विचार किया कि इससमय राजा युधिष्ठिर के महलमें अपना धनुष बाण लेने जाता हूं तो बारह वर्ष तक वनमें

रहना पड़ेगा व चोर को मारकर ब्राह्मणकी गौ नहीं लादेता तो क्षत्रिय का धर्म नहीं रहता इसलिये धर्म छोड़ने से वनमें रहना उत्तम है ऐसा विचारतेही अर्जुन उसीसमय राजा युधिष्ठिर के महल में जाकर अपना धनुष बाण लेआया व चोरको मारकर ब्राह्मण की गौ दिलवा दी व प्रात समय अपने वचन प्रमाण संन्यासीरूप धरकर वनमें चला गया व उसने तीर्थयात्रा करते हुये द्वारका पहुँचकर क्या सुना कि सुभद्रा वसुदेवजीकी कन्या महासुन्दरी जो विवाहने योग्य हुई है उसका विवाह रेवतीरमण दुर्योधनसे करना चाहते हैं व श्यामसुन्दरकी इच्छा मुझे देने वास्ते है यह सुनकर अर्जुन ने चाहा कि मेरा विवाह उसके साथ होता तो बहुत अच्छी बात थी जब अर्जुन इसी इच्छा से चार महीना वर्षाऋतुमें अपने को संन्यासी वेषमें छिपाकर राजमन्दिरके निकट मृगछाला बिछाकर बैठा तब द्वारकावासी उसे महापुरुष जानकर अपने घर रसोईं खिलाने वास्ते लेजाने लगे यह सुनकर एकदिन बलरामजी ने उसको राजमन्दिरमें बुला भेजा व चरण धोकर बड़े प्रेमसे छत्तीस व्यंजन खिलाये जैसे अर्जुन ने सुभद्रा मृगनयनीको देखा वैसे चन्द्रमुखी पर मोहित होकर उसके मिलने वास्ते देवता व पितर मनाने लगा व सुभद्राभी उसके रूपपर मोहित होकर मनमें कहनेलगी यह संन्यासी न होकर कोई राजकुमार मालूम होता है परमेश्वर इसको मेरा पति बनाते तो अच्छा होता॥

दो० अर्जुन भोजन करिचलो मनतो रह्यो लुभाय। कुँवरि सुभद्रा मिलनको लाग्यो करन उपाय॥

श्यामसुन्दर अन्तर्यामी को अर्जुन अपने भक्त व सुभद्रा के मनका हाल जान कर यह इच्छा थी जिसमें हमारी बहिन अर्जुनसे विवाही जावे पर उन्हों ने रेवतीरमण के डरसे यह बात प्रकट करनी उचित नहीं जानी जब एकदिन कथा सुननेके बहाने से अर्जुनके पास गये तब उसने त्रिभुवनपति को बड़े आदर भाव से बैठाकर विनय की हे दीनानाथ मुझे सुभद्रा से विवाह करने की बड़ी इच्छा है जिसतरह आप सब मनोरथ मेरे पूर्ण करते आये हैं उसीतरह दयालु होकर यह कामना भी पूरी कीजिये यह सुनकर द्वारकानाथ ने कहा हे अर्जुन तुम थोड़े दिन यहां टिको

शिवरात्रिको सब छोटे बड़े द्वारकावासी सुभद्रासमेत रेवत पहाड़पर महादेवजी की पूजा करने जावेंगे उसदिन तुम भी मेरे रथपर बैठकर वहां जाना जब अवसर मिलै तब सुभद्रा को उठाकर अपने रथपर बैठा लेना व रथ दौड़ाकर हस्तिनापुरको चले जाना कदाचित् कोई सामना करै तो तुम भी उसके साथ लड़ना इसमें कुछ मेरे खेदका भय न करना यह सुनतेही अर्जुन प्रसन्न होकर वहां टिका रहा जब शिवरात्रिको सब स्त्री व पुरुष द्वारकावासी सुभद्रासमेत रेवत पहाड़पर पूजा करने गये तब संन्यासीरूप अर्जुन भी मुरलीमनोहर के रथपर बैठकर वहां चलागया व धनुष-बाण लेकर रास्ते में खड़ा हुआ जैसे सुभद्रा पूजा करके अपनी सहेलियोंको साथ लिये हुई फिरी वैसे अर्जुनने लाज व संकोच छोड़कर सुभद्रा का हाथ पकड़ लिया व रथपर बैठाकर हस्तिनापुरको चला जब यह बात यदुवंशियों ने सुनकर रेवतीरमणसे कहा तब बलरामजी क्रोधित होकर बोले॥

चौ० अभी जाय परलय मैं करिहौं। भूमि उठाय माथपर धरिहौं॥
मेरी बहिन सुभद्रा प्यारी। ताको कैसे हरै भिखारी॥
महादण्ड अर्जुन को देहौं। कुँवरि सुभद्राको लै ऐहौं॥

बलरामजी बड़े क्रोध से बहुत यदुवंशियों को साथ लेकर अर्जुन के पीछे जानेवास्ते तैयार हुये तब श्यामसुन्दरने रेवतीरमण के पास जाकर समझाया कि सुनो भाई अर्जुन हमारी फुआका बेटा परम मित्र जाति व कुल में उत्तम होकर बाणविद्या अच्छी जानता है यदुवंशियों में मुझे कोई ऐसा नहीं दिखलाई देता जो उसका सामना करसकै सच है अर्जुन ने अनुचित किया पर हमको उसके साथ लड़ना उचित नहीं है किसवास्ते कि बेटी अपनी जातिको देनी चाहिये इससे क्या उत्तम है जो अर्जुन पुराने नातेदारको दीजावे इसलिये आप दयालु होकर क्रोध अपना क्षमा कीजिये व अब इस बातकी चर्चा करनी उचित न होकर सामग्री दहेजकी हस्तिनापुर में भेज देनी चाहिये यह सुनते ही बलदाऊजी ने झुंझलाकर हल व मूसल अपना पटक दिया व यदुवंशियों से कहा यह सब काम मुरलीमनोहरका है जो आग लगाकर पानी को दौड़ते हैं इनको अपने

भक्तोंकी प्रसन्नताके सामने लाजका विचार नहीं रहता इन्हों ने सिखला दिया होगा तब अर्जुन सुभद्राको उठालेगया नहीं तो उसको क्या सामर्थ्य थी जो ऐसा अनुचित करता मैं अपने भाई की आज्ञा टालने नहीं सक्ता इसलिये जैसा यह कहते हैं वैसा करो यह कहकर बलरामजी ने बहुतसा द्रव्य व भूषण व वस्त्र व हाथी व घोड़ा व रथ व दासी व दासादिक को संकल्प करके दहेज हस्तिनापुर में भेज दिया व अर्जुन अपने घर पहुँचकर वेदानुसार सुभद्रा से विवाह करके संसारी सुख उठाने लगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित देखो नारायणजी अपने भक्तों का ऐसा मान रखते हैं इतनी क्षमा संसारी मनुष्य भी नहीं करसक्ता अब मैं दूसरा हाल उनकी महिमा का कहताहूं सुनो मिथिला नगरी में बहुलाश्व नाम राजा परमभक्त मनसा वाचा कर्मणा से अपने को दास लक्ष्मीपतिका समझता था व उसी नगर में श्रुतदेव नाम ब्राह्मण हरिभक्त रहकर आठोंपहर उनके स्मरण व ध्यान में मग्न रहता था विना मांगे जो कुछ मिलता उसी में सन्तोष रखकर किसी से कुछ नहीं मांगता था सो नित्य रातको दोनों परमभक्त आपस में बैठकर यह विचार किया करते थे कि कल्ह वैकुण्ठनाथ के दर्शनवास्ते द्वारका चलकर अपना जन्म स्वार्थ करेंगे प्रातसमय वहां न जाकर कहते थे कि श्यामसुन्दर अन्तर्यामी दीनदयालु आप यहां आनकर दर्शन देते तो बहुत अच्छा होता जब उन दोनों की सच्ची भक्ति त्रिभुवनपति ने देखी तब वह मुझे व नारदमुनि व वेदव्यास व वशिष्ठ व अगस्त्य व देवल व वामदेव व अत्रि व परशुरामजी आदिक ऋषीश्वरों को अपने साथ रथपर बैठाकर मिथिलानगरी को चले रास्ते में जो देश व नगर मिलता था वहां के राजा आगे से आनकर अनेकतरहकी सौगात देते व उनके दर्शन से अपना अपना जन्म स्वार्थ करते थे॥

दो॰ मारवाड़ पंचाल है माखन प्रभु यदुराय। पहुँचे अति आनन्द सों मिथिला नगरी जाय॥

जब श्यामसुन्दर के आने का समाचार राजा बहुलाश्व व श्रुतदेव ब्राह्मण नें सुना तब आगे जाकर उन्हें दण्डवत् की जिस स्थानपर चरण

केशवमूर्तिका पड़ता था वहां की धूर उठाकर वह दोनों परमभक्त अपने शिर व आंखों में लगाते थे हे परीक्षित उस दिन कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द का दर्शन पाकर सब छोटे बड़े मिथिलापुरवासियों को ऐसा सुख मिला जिसका हाल मुझसे कहा नहीं जाता राजा व ब्राह्मण ने लक्ष्मीपति के सामने हाथ जोड़कर विनय किया हे महाप्रभु जिसतरह आपने दयालु होकर अपना दर्शन दिया उसीतरह अपने चरणों से हमारा घर पवित्र कीजिये यह सुनकर मुरलीमनोहर ने विचारा कि राजा व ब्राह्मण दोनों मेरे भक्त हैं व इन्हीं की प्रसन्नता वास्ते यहां आयाहूं इसलिये दोनों के घर जाकर इनका मान रखना चाहिये पहिले राजा के घर जाने से ब्राह्मण कहैगा मुझे कंगाल जानकर मेरे घर नहीं आये राजा धनपात्रको मुझसे अच्छा जाना व ब्राह्मण के घर प्रथम जाता हूं तो राजा खेद मानकर कहैंगे श्यामसुन्दर मेरा अपमान करके प्रथम ब्राह्मणके घर चलेगये इस लिये वह बात करना चाहिये जिसमें दोनों प्रसन्न रहैं ऐसा विचारतेही त्रिभुवनपति दो स्वरूप अपने रथ व ऋषीश्वरों समेत बनाकर राजा व ब्राह्मण दोनोंके स्थान पर चलेगये व श्यामसुन्दर की मायासे बहुलाश्व राजाने समझा कि केवल मेरे घर द्वारकानाथ आये हैं व ब्राह्मणने जाना कि मुरलीमनोहर ने राजमन्दिर न जाकर हमारे यहां कृपा की है जब केशवमूर्ति राजमन्दिरपर पहुँचे तब उसने द्वारकानाथ को जड़ाऊ सिंहासनपर बैठाकर चरण उनका अपने हाथसे धोया व चरणामृत लेकर वह जल शिर व आंखों में लगाया और अपने घरवालों पर छिड़क दिया व सब ऋषीश्वरोंको बिलग बिलग सिंहासन पर बैठाकर विधिपूर्वक पूजा श्यामसुन्दर व ऋषीश्वरोंकी की व बहुतसे रत्नादिक लक्ष्मीपतिको भेंट देकर चरण उनका प्रेमपूर्वक दाबनेलगा व बड़े हर्ष से बोला आज मैं अपने बराबर किसी दूसरेका भाग्य नहीं समझता देखो जिन चरणों का दर्शन महादेव आदिक देवताओं व बड़े बड़े योगीश्वरों को जल्दी ध्यान में नहीं मिलता वही चरण आज मेरी गोदमें विराजते हैं व वैकुण्ठनाथ ने मुझे अपना दास समझकर अपने चरणोंसे मेरा घर पवित्र किया इसी-

तरह बहुत स्तुति करके राजा बहुलाश्व ने श्यामसुन्दर व ऋषीश्वरों को छत्तीस व्यंजन खिलाया व वसुदेवनन्दन को उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर चँवर हिलाते समय उनसे विनय की ॥

चौ० मोहिं सनाथ कियो यदुनाथा। दर्शन दियो ऋषिनके साथा ॥

दो० तुमतो जगतनिवास हो माखनप्रभु सुखरास। निजदासनके घर विषे कछु दिन करो निवास ॥

यह दीन वचन सुनकर त्रिभुवनपति अपने भक्तका मनोरथ पूर्ण करने के वास्ते इक्कीस दिन वहां रहे उसे ब्रह्मज्ञान उपदेश किया जब श्यामसुन्दर उस कंगाल ब्राह्मणके घर गये तब श्रुतदेवने कुशाके आसन पर अँगौछा बिछाकर मुरलीमनोहर को बैठा दिया व अपनी स्त्री समेत उनके प्रेममें डूबकर बड़े हर्ष से नाचने लगा व चरण मुरलीमनोहर का धोकर चरणामृत लिया व गंगाजीकी मिट्टीका तिलक वसुदेवनंदन के लगाकर तुलसीदल उनपर चढ़ाया व इमिली व बड़हर व आंवलाआदिक फल जो खट्टे मीठे हैं व मोटा चावल खेतमेंका बिना हुआ व साग पात ले आकर बड़े प्रेमसे त्रिभुवनपति व ऋषीश्वरों के सामने रखदिया व खस की मिट्टी से गंगाजल सुगंधित बनाकर पीने को लेआया तब वैकुण्ठ-नाथने ऋषीश्वरों समेत आनन्दपूर्वक भोजन किया जब श्रुतदेव हाथ व मुँह वृन्दावनविहारी व ऋषीश्वरों का धुलाकर सुचित्त हुआ तब मुरली-मनोहर के सामने हाथ जोड़कर विनय किया हे महाप्रभु जब से बाल अवस्था भोगकर सयाना हुआ तब से सिवाय स्मरण व ध्यान तुम्हारे चरणों के दूसरा उद्यम नहीं रखता आज आपने कमलरूपी चरणों का दर्शन देकर मुझ कंगाल की इच्छा पूर्ण की जो लोग संसारीजाल में फँसे रहकर धन व परिवार का अभिमान रखते हैं उनको तुम्हारे चरणों का दर्शन स्वप्ने में भी नहीं मिलता व जो तुम्हारे स्मरण व ध्यान व पूजा व हरिचर्चा व कथा सुनने में प्रीति रखते हैं वह संसार में अपनी कामना पाकर अन्तसमय मुक्त होते हैं इसलिये आपको हजारों दण्डवत् करता हूं जो आज्ञा देव सो करूं ॥

दो० हाथजोड़ विनती करों धरों चरणपर माथ। म्वहिं अनाथको दरश दे कीन्ह्यो नाथ सनाथ ॥

ऐसी प्रीति व भक्ति उस ब्राह्मण की देखकर श्यामसुन्दर ने कहा हे द्विजराज हम तुमको अपना निज भक्त व मित्र जानकर बहुत प्यारा समझते हैं व जो मनुष्य वेद व शास्त्र पढ़े हुये ब्राह्मणोंकी पूजा करता है उस का मनोरथ हम तुरन्त पूर्ण करदेते हैं सब ऋषीश्वर तुमपर दयालु होकर अपना दर्शन देने यहां आये हैं जिसतरह तीर्थ नहाने व देवस्थान का दर्शन करनेसे मनुष्य पवित्र होजाताहै उसीतरह इन ऋषीश्वरोंका चरण देखने से शरीर में पाप नहीं रहता सो तुम इनकी सेवा अच्छीतरह करो मैं अपने तनुसे भी ब्राह्मणको अधिक प्यारा जानताहूं जो मनुष्य ब्राह्मण की सेवा नहीं करता उसे मूर्ख समझना चाहिये ज्ञानीलोग ब्राह्मण को परमेश्वर तुल्य जानते हैं व मनुष्य तनुमें जो शुभ काम बन पड़े उसीको उत्तम समझना चाहिये नहीं तो यह शरीर एक दिन नाश होकर कुछ काम नहीं आता इसलिये तुमको वेदानुसार हमारे स्मरण व पूजन में रहना चाहिये त्रिभुवनपति इकीस दिन श्रुतदेव ब्राह्मणके घरमें ऋषीश्वरों समेत रहकर ज्ञान समझाने उपरांत द्वारकापुरी को चले व राह में से सब ऋषीश्वरों को बिदा कर दिया ॥

दो० निजगृह पहुँचे आनकर माखन प्रभु यदुराय। पुरवासी प्रफुलित भये दरश परश सुखपाय ॥

सत्तासीवां अध्याय।

त्रिभुवनपति की स्तुति ॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर पूंछा हे शुकदेवस्वामी द्वारकानाथ ने श्रुतदेव ब्राह्मणसे कहा कि तुम शास्त्रानुसार मेरा ध्यान व पूजन किया करो सो मुझे यह बड़ा सन्देह है कि परब्रह्म निराकार रूपकी स्तुति जो कुछ रूप व रेख न रहकर देखने में नहीं आते वेदने किसतरह की होगी विस्तार से कहकर मेरा सन्देह छुड़ा दीजिये यह बात सुनकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित वेदमें स्तुति वैकुण्ठनाथकी बहुत लिखी है मैं इतनी सामर्थ्य नहीं रखता जो सब गुण उनका वर्णन करसकूं पर थोड़ासा हाल जो मुझे मालूम है सो कहता हूं सुनो जिस आदि निराकार ज्योति ने बुद्धि व इन्द्री व प्राण व धर्म व अर्थ व काम व मोक्ष को बनाया है वह

महाप्रभु सदा निर्गुणरूप रहकर ब्रह्माण्ड रचती समय विराट्रूप धारण करके शेषनाग पर शयन करते हैं उनकी कथा इसतरह पर है कि सनक व सनन्दन व सनातन व सनत्कुमार चारोंभाई परमेश्वर का अवतार सृष्टि होने से पहिले ब्रह्माकी इच्छानुसार उत्पन्न हुये हैं सो उनके स्वभाव में राजस व तामसका प्रवेश न होकर सदा वह सतोगुणरूप रहते हैं व उन में सदा एकलीला व कथा परमेश्वर की कहता है व तीन भाई सुनते हैं जो कुछ स्तुति आदिज्योति भगवान्की उन्होंने की है वही बात नर नारायण ने नारदमुनि से सतयुगमें की थी वही कथा हम तुमसे कहतेहैं सुनो जिस तरह मकड़ी अपने मुखसे जाला निकालकर फिर उसे खाजातीहै उसीतरह सब जीव जड़ व चैतन्य तीनोंलोक के परमेश्वर की इच्छासे पलक भांजने भर में उत्पन्न होकर फिर उन्हींके रूप में समाजाते हैं उस समय महाप्रलय होने से चारोंओर पानी दिखलाई देकर केवल आदिज्योति भगवान् रहि जाते हैं जब उनको संसार रचने की फिर इच्छा होती है तब उनकी श्वासासे चारों वेद उत्पन्न होकर जिसतरह प्रातसमय वन्दीगण राजाओं की स्तुति करके जगाते हैं उसी तरह वह वेद दिव्यरूप चतुर्भुजी स्वरूप के सामने हाथ जोड़कर जगाने वास्ते विनय करते हैं ॥

दो० त्यागो निद्रा शेषकी जागो हरी मुरार। निज माया विस्तारिकै सिरजो पुनि संसार ॥

हे परब्रह्म अविनाशी पुरुष तुम जन्म लेने व मरने व जागने व सोने से रहित निर्दोष रहकर आठों पहर चैतन्य रहते हो व चौदहों भुवन तुम्हारी माया से उत्पन्न होकर वह माया आपको नहीं व्यापती तुम्हारा आदि व अन्त व मध्य न रहकर आपकी महिमाको कोई पहुँच नहीं सक्ता व तीनों लोकों में तुम्हारे समान कोई सुन्दर न होकर आप सदा प्रसन्न रहते हैं व सब जीवों की उत्पत्ति व पालन व नाश तुम्हारी इच्छासे होता है और जितनी दया तुम अपने भक्तों पर रखते हो उतनी प्रीति व रक्षा कोई देवता अपने भक्त की नहीं करने सक्ता व तुम सब में संयुक्त व सब वस्तु से अलग रहकर रजोगुण व तमोगुण व सतोगुणसे कुछ प्रयोजन नहीं रखते केवल तुम्हारे स्मरण व ध्यान करने से संसारी जीव मुक्तपदवी

पर पहुँचते हैं व तुम्हारा नाम जपने के तुल्य यज्ञ व तीर्थ व दान व जप व तप व आचार कोई धर्म नहीं होता व ब्रह्मा व महादेव आदिक सब देवता तुम्हारे कमलरूपी चरण के ध्यान में आठोंपहर लीन रहते हैं इसी कारण उन्होंने ऐसी पदवी पाई चौदहों लोक में तुम्हारे समान कोई नहीं है व आपकी विना कृपा संसारी मायाजाल से कोई छूट नहीं सक्ता जब बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वर सब इन्द्रियों को अपने वश रखकर तुम्हारा स्मरण व ध्यान सच्चे मन से करते हैं तब आपकी दया से उनकी मुक्ति होती है ॥

दो० आदि अन्त सब जगत के तुमहीं पुरुष अनन्त। सदा एकरस रहतहौ माखन प्रभु भगवन्त ॥

हे दीनानाथ अनेक जीव शिशुपाल व कंस व रावण व हिरण्यकशिपु आदिकने तुम्हारे साथ शत्रुता की थी सो वह लोग अपने प्राण के डरसे तुम्हारा ध्यान करने में भवसागर पार उतर गये व बहुत जीव तुम्हारी कथा व कीर्तन की चर्चा आपस में रखकर अपना जन्म स्वार्थ करते हैं उनमें उत्तम उसी को समझना चाहिये जो आठों पहर तुम्हारे चरण कमल का ध्यान रखकर संसारी माया से विरक्त रहता है व सिवाय भक्ति के मुक्ति की भी चाहना नहीं रखता व सत्संग के बराबर दूसरी वस्तु अच्छी नहीं समझता व साधु वैष्णव की सेवा व सत्संग प्रेमपूर्वक करता है वह मनुष्य तुम्हारी माया का कुछ डर न रखकर सीधा वैकुण्ठ में जहां सूर्य व चन्द्रमा का प्रवेश नहीं रहता विमान पर बैठकर चला जाता है ॥

दो० वह जन परम पुनीत है पावत पद निर्वान। अंतकाल तुमको मिलत माखन प्रभु भगवान ॥

हे वैकुण्ठनाथ जो मनुष्य अपने अज्ञान से तुम्हारा स्मरण व ध्यान छोड़कर दूसरे देवता को पूजता है वह आवागमन में फँसा रहकर मुक्तिपदवी नहीं पाता व आपके रोम रोम में हजारों ब्रह्माण्ड बँधे रहकर किसी जीव का हाल तुम से छिपा नहीं रहता जिस तरह सोने का अनेक गहना बनाने से बिलग बिलग नाम होकर सब गहना गलाने पर केवल सोना रहजाता है उसी तरह तुम्हारा प्रकाश सबके तनु में रहकर देवतादिक जो पूजते हैं वह पूजा भी आपको पहुँचती है इसलिये जो लोग ज्ञान की

दृष्टि से जड़ चैतन्य में तुम्हारा रूप एकसा देखकर संसारी तृष्णा छोड़ देते हैं उन्हीं का कल्याण होता है ॥

दो० यद्यपि ज्ञानप्रकाशते बहुविधि करै बखान। भक्ति बिना पावै नहीं कबहूं पद निर्वान॥

हे दीनानाथ ब्रह्मा भी बिना शक्ति व आज्ञा तुम्हारी संसार रचने की सामर्थ्य नहीं रखते जगत् में सब व्यवहार झूठा होकर केवल तुम्हारा नाम सच्चा है जिसतरह अग्नि का ढेर एक जगह रहकर उसमेंसे चिनगारियां उड़ती हैं उसीतरह अग्निरूपी ढेर आप होकर सब जीवों को चिनगारी के समान समझना चाहिये जैसे एक चिनगारी आग सुलगाने से बहुत होजाती है वैसे चिनगारीरूप जीव आपकी भक्ति करने से तुम्हारे तुल्य होजाता है ॥

चौ० योगेश्वर जो तुमको ध्यावैं। श्वास रोंकि ब्रह्माण्ड चढ़ावैं॥
हृदयकमल में तुमको देखैं। अद्भुत रूप अनूपम पेखैं॥
भक्त तुम्हारे पढ़त पुराना। वे तुमको पावत भगवाना॥
तुम्हरी भक्ति धरैं मनमाहीं। चार पदारथ चाहत नाहीं॥

दो० हँसत तुम्हारे ध्यान में रोम रोम हर्षाय। देखि दशा संसार की रुदन करत पछिताय॥

चौ० जो तुम कहो सन्तहितकारी। हमसे उत्पति भई तुम्हारी॥
तुम हमको कैसी विधि जानो। जो अस्तुति यहि भांति बखानो॥
अहो नाथ यह कृपा तुम्हारी। नातो केतिक बुद्धि हमारी॥
हमहूं यद्यपि वेद कहावैं। तदपि तुम्हारो भेद न पावैं॥
तुम्हरो रूप न देखो जाई। पन्थ तुम्हारो देत बताई॥
ज्ञान भक्ति वैराग जु होय। तब तुमको पहिचानत कोय॥
जो जन विषयभोग परिहरै। भक्तियोग निज मनमें धरै॥

दो० तुम चरणनके ध्यान में मगन रहैं दिनरैन। तुम्हरी अमृतकथा सुनि लहैं सदा सुख चैन॥

हे वैकुण्ठनाथ जो मनुष्य संसार में मनुष्यतनु पाकर इन्द्रियों के वश रहता है व स्त्री व पुत्र के प्रेम में लपटकर तुम्हारी भक्ति नहीं करता उसे अभागी व मुर्दे के समान समझना चाहिये वह मनुष्य चौरासी लाख योनिमें जन्म पाकर बड़ा दुःख पाता है व सब जीव पुराने होकर अपने

कर्मानुसार अनेक तनुमें दुःख व सुख भोगते हैं जिस तरह तालाब का पानी प्रतिदिन कम होताजाताहै उसी तरह गृहस्थी करनेवाले की बुद्धि व सामर्थ्य घटती जाती है॥

दो० याही विधि प्राणी सबै बूड़त माया माहिं। नाहीं तो वह आपसे काहू व्यापत नाहिं॥

चौ० मनुष्यजन्म दुर्लभ जगमाहीं। देवनहूं को प्रापत नाहीं॥
सकल देव यह मनसा करैं। मानुष है भवसागर तरैं॥
नरशरीर नौकासम जानो। वेदपुराण डांड़ही मानो॥
केवटरूप गुरू है सोई। नौकापार लगावत जोई॥
या विधि सों जो पार न होई। आतमघाती समझो सोई॥
जबतक भक्ति करै नहिं कोई। भवसागर से पार न होई॥

दो० याते कीजे शुभ करम यही धर्मकी रीति। माखन प्रभु करतारसों जबलौं उपजै प्रीति॥
अष्टसिद्धिको देखिकै लोभ करै जो कोय। ताहि पदारथ भक्तिको कैसे प्रापत होय॥
यह अस्तुति वेदन करी अपनी बुद्धि प्रमान। निर्गुणरूप अनूपको कैसे करे बखान॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित यही स्तुति कह कर चारों वेद चतुर्भुजी भगवान्को सृष्टि रचनेवास्ते जगाते हैं व सनकादिक आठों पहर यही चर्चा आपस में रखते हैं व यही बात नरनारायण ने नारदजी से कही थी व नारदमुनि ने वेदव्यास हमारे पिता से कही व उन्होंने विस्तारपूर्वक मुझे पढ़ाई व मैंने वही हाल जो सब वेद व शास्त्र का सार है तुमको सुनाया और यही ज्ञान श्यामसुन्दरने राजा बहुलाश्व व श्रुतदेव ब्राह्मण को बतलाया था॥

दो० यह अस्तुति जो रैन दिन कहै सुनै चितलाय। ताके पाप रहैं नहीं विष्णुलोक वह जाय॥

अट्ठासीवां अध्याय।

भस्मासुर दैत्यकी कथा॥

राजा परीक्षित ने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजी से विनय की हे मुनिनाथ मुझे संसारमें यह बात उलटी दिखलाई देती है कि नारायण वैकुण्ठनाथ लक्ष्मीपति होकर अपने भक्तों को ऐसा कंगाल रखते हैं कि उनको अच्छीतरह भोजन व वस्त्र भी नहीं मिलता व महादेवजी अवघड़ों की तरह अपना वेष रखकर सर्पों की सेल्ही व मुण्डमाला गले में

चाहिने रहते हैं और उनके भक्त व सेवक धनपात्र होकर बड़े आनन्द से अपना जन्म बिताते हैं इसका क्या कारण है यह सन्देह मेरा छुड़ा दीजिये यह बात सुनकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित यह तुमने बहुत अच्छी बात पूछी इसका हाल सुनो ॥

दो० सदा तीनपन बसत हैं शिवकी मूरतिमाहिं। सकल कामना देत हैं एक मुक्ति को नाहिं ॥

हे राजन् त्रिभुवनपति भगवान् विरक्त रहकर संसारी किसी वस्तुकी चाहना नहीं रखते इसलिये उनके भक्तलोगभी नाश होनेवाली संसारी वस्तु को नहीं चाहते व लक्ष्मीपति ऐसी इच्छा नहीं करते कि हमारे भक्त संसारी मायाजालमें लपटकर नष्ट होवैं तुमने सुना होगा कि कई मनुष्य महादेव के भक्तों ने उनसे वरदान पाकर उन्हींके साथ शत्रुता की थी इसीकारण परब्रह्म परमेश्वर मायरूपी धन जिसके मदमें मनुष्य अन्धा होकर अनेक कुकर्म करता है अपने भक्तों को नहीं देते हे राजन् जो प्रश्न तुमने हमसे किया है यही बात एक बेर राजा युधिष्ठिर तुम्हारे दादा ने श्रीकृष्णजी से पूछी थी तब श्यामसुन्दरने कहा हे राजन् मायारूपी लक्ष्मी मिलने से जिसमें बहुत विकार भरा है मनुष्य संसारी सुख में लपट जाते हैं व जब तक मुझे याद नहीं करते तबतक आवागमनसे नहीं छूटते इसलिये अपने भक्तों को नहीं देता जिसमें वे लोग संसारी सुख में लपटकर परलोक का शोच भूल न जावें इसवास्ते जो मनुष्य मेरी शरण पकड़ताहै उसका धन व अभिमान कृपा की राह हरलेता हूं जब निर्धन होने से स्त्री व पुत्र व भाई आदिक सब परिवारवाले उसका निरादर करते हैं तब वह उनका प्रेम छोड़कर आनन्द से साधु व वैष्णवका सत्संग करता है जब महापुरुषोंकी संगति से ज्ञान पाकर मेरे भजन व स्मरण में ध्यान लगाता है तब हम उसको मुक्ति पदवी देते हैं व ब्रह्मादिक दूसरे देवताओं की पूजा करने से जो लोग स्वर्गादिक में जाते हैं वह सुख सदा स्थिर नहीं रहता व मेरी भक्ति व पूजा करनेवाले विभीषण व अर्जुन व सुग्रीव व प्रह्लाद व अम्बरीष आदिक संसारी सुख भोगकर अटलपदवी पाते हैं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित महादेव आदिक दूसरे देवता अपनी पूजा

करनेसे प्रसन्न होकर छोड़ देने में खेद मानते हैं व वैकुण्ठनाथ सदा से सात्त्विकी स्वभाव रहकर किसीको शाप नहीं देते ॥

दो० बहु असुरनको रुद्रजू दिये तुरत वरदान। तिन सन्तनसों आपही पायो कष्ट निदान ॥

हे परीक्षित बाणासुर की कथा तुम सुन चुके हो कि शिवशंकर से वरदान पाकर उन्हीं के साथ लड़ने आया था अब हम दूसरे दैत्य का हाल कहते हैं सुनो एक दिन वृकासुर दैत्य महामूर्ख शकुनीका बेटा तप करनेकी इच्छा रखकर घरसे बाहर निकला जब उसने राहमें नारदमुनि को आते देखा तब दण्डवत् करके पूछा हे मुनिनाथ मुझे तप करनेकी इच्छाहै सो तुम दयालु होकर बतलाओ कि ब्रह्मा व विष्णुव महेश तीनों देवताओंमें जो तुरन्त प्रसन्न होकर वरदान देते हों उनका तप करूं यह बात सुनकर नारदजी बोले हे वृकासुर इन तीनों देवताओंमें महादेवजी तुरन्त वरदान देते हैं व थोड़ासा अपराध करने में अपना क्रोध क्षमा नहीं करते देखो उन्होंने सहस्रार्जुन के तप करने से प्रसन्न होकर उसको हजार भुजा दी थीं इसलिये तुम शिवजी का तप करो तो जल्दी फल मिलेगा जब नारद मुनि यह बात कहकर चले गये तब वृकासुर उसी समय केदारेश्वर की ओर गया॥

दो० शिवकी मूरति थापिकरि अग्निकुण्डके तीर। बैठ्यो आसन मारके होमन लग्यो शरीर ॥

जब सात दिन व रात में उसने अपने अंगका सब मांस छुरी से काट कर हवन कर दिया व आठवें दिन स्नान करके अपना शिर काटने चाहा तब भोलानाथ ने अग्निकुण्ड से निकलकर उसका हाथ पकड़ लिया व अपने कमण्डलु का जल उसपर छिड़क दिया जब उसके प्रताप से वृका-सुर का अंग दिव्य रूप होकर कुन्दन के समान चमकने लगा तब शिव जी ने कहा हे वृकासुर हम तेरी पूजा से प्रसन्न हुये अब तुझे जो इच्छा हो वरदान मांग यह वचन सुनतेही वृकासुर ने हाथ जोड़कर विनय की हे महाप्रभु मुझे ऐसा वरदान दीजिये कि जिसके शिरपर अपना हाथ रख दूं वह उसी समय जलकर राख होजावै यह बात सुनकर शिवजीने वि-चारा कि यह अधर्मी दैत्य ऐसा वरदान मांगकर संसारी जीवों को दुःख देने चाहता है पर क्या करूं वचन देचुका यह समझकर महादेवजी बोले

बहुत अच्छा हमने मुँह मांगा वरदान तुमको दिया जब वह दैत्य यह वरदान पाकर प्रसन्न हुआ तब उस अधर्मीने पार्वतीजीका रूप देखकर विचार किया इससे दूसरी बात उत्तम नहीं जो मैं अपना हाथ भोलानाथके शिर पर धरकर उन्हें जलादूं व पार्वतीको अपने घर लेजाऊं जब वह पापी ऐसा विचार कर शिवजी के मस्तकपर हाथ रखनेवास्ते चला तब महादेव जी अन्तर्यामी वहांसे भागकर सबलोक व दशों दिशामें गये पर उस दैत्यने उनका पीछा नहीं छोड़ा जब ब्रह्मादिक कोई देवता शिवजीकी रक्षा नहीं करसके तब वे व्याकुल होकर वैकुण्ठनाथके सामने दौड़े चले गये व दण्डवत् करके हाथ जोड़कर विनय की हे त्रिभुवनपति मैंने यह दुःख अपने ऊपर आप उठाया है जिसमें इस दैत्य पापी के हाथ से मेरा प्राण बचै वह उपाय कीजिये यह दीन वचन सुनतेही नारायणजी भक्तहितकारीने महादेवजी से कहा तुम धैर्य रक्खो मैं इसका यत्न करताहूं ऐसा कहकर वैकुण्ठनाथ ने उसी समय अपने को ब्राह्मणरूप बनालिया व ऋषीश्वरोंकी तरह कमण्डलु व मृगछाला लियेहुये जहां वृकासुर दौड़ा चला आता था वहां जाकर उससे कहा हे वृकासुर तू इतना घबड़ाकर कहां भागा जाताहै अपना समाचार हमसे तो बतलाव जब उस दैत्यने वरदान पाने व अपनी इच्छाका हाल त्रिभुवनपति से कहा तब वैकुण्ठनाथ ऋषीश्वररूप बोले तू बड़ा अज्ञानहै कि महादेवजी की बात जो विष व धतूरा खाये व भूतोंको साथ लिये नंगे फिरा करते हैं मुण्डमाल व सर्पोंका हार पहिनकर शास्त्रानुसार नहीं चलते व श्मशानपर बैठेहुये बौड़होंकी तरह हँसते हैं व नाचते हैं सच्चा मानकर इतना दुःख उठाता है जबसे दक्षप्रजापति ने महादेवको शाप दिया तब से सब बातें उनकी सची नहीं होतीं इसलिये तुम अपने शिरपर हाथ रखकर पहिले उस वरदान की परीक्षा करलेव जब तुम्हारे निकट उनका वचन सच ठहरजावै तब जो चाहना हो सो उनके साथ करना यह सुनते ही वृकासुरने परमेश्वरकी माया से वह वचन सच्चा मान कर जैसे अपने शिरपर हाथ रक्खा वैसे जलकर राखकी ढेरी होगया यह चरित्र देखते ही भोलानाथ प्रसन्न होकर नाचने लगे व देवताओं ने

आकाशसे त्रिभुवनपतिपर फूल वर्षाये व अप्सराओंने नाचकर गन्धर्वोंने गाना सुनाया तब उस समय आदिपुरुष भगवान् ने महादेवजी से कहा ऐसे अधर्मी दैत्यको इसतरह का वरदान देना उचित नहीं है जगद्गुरु का अपराध करने से वह अपने दण्डको पहुँचा यह बात सुनकर शिवजी ने विनय की हे महाप्रभु तुम हमारी रक्षा करनेवाले बने हो इसलिये हम से अपराध भी होजाता है जब भोलानाथ इसीतरह बहुत स्तुति वैकुण्ठनाथकी करचुके तब त्रिभुवनपति ने उनको धैर्य देकर बिदा किया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले ॥

चौ० रुद्रमोक्ष लीला सुखदाई। जो जन कहै सुनै चितलाई॥
दो० रहै सदा सुखचैन से दुख पावै वह नाहिं। सब पापनसे छूटकर मुक्त होत क्षणमाहिं॥

नवासीवां अध्याय।

भृगुऋषीश्वरका लक्ष्मीपतिकी छातीपर लात मारना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित एक समय भृगुआदिक सातों ऋषीश्वर सरस्वती किनारे बैठेहुये आपस में ज्ञानचर्चा कररहे थे उस समय कई ऋषीश्वरों ने भृगुजी से पूंछा कि ब्रह्मा व विष्णु व महेश तीनों देवताओं में कौन बड़ा है जब यह बात सुनकर किसी ने महादेव किसीने विष्णु किसीने ब्रह्माको बतलाया तब भृगुऋषीश्वरने कहा इन तीनों देवताओं में जो क्रोध अपना क्षमा करके बुराई के बदले भलाई करै उसीको उत्तम समझना चाहिये सो मैं जाकर उनकी परीक्षा ले आताहूं ऐसा कहकर भृगुऋषीश्वर ब्रह्माजीकी सभामें चलेगये व विना दण्डवत् किये उनके सामने जा बैठे यह देखकर सब ऋषीश्वर व ब्राह्मणों ने जो वहां बैठे थे अचम्भा माना व ब्रह्माने क्रोध से भृगुकी ओर देखकर शाप देने चाहा पर बेटा जानकर कुछ नहीं बोले ॥

दो० पुत्र आपनो जानकर भये कोपते शांति। प्रथम परीक्षा पिताकी सुत लीन्हीं यहि भांति॥

जब भृगुऋषीश्वर ने रजोगुणवश ब्रह्माको अपने ऊपर क्रोधित देखा तब वहांसे उठकर कैलास पर्वतपर जहां गौरीशंकर विराजते थे गये जैसे भोलानाथने भृगुऋषीश्वर अपने भाईको आते देखा वैसे खड़े होगये व

हाथ पसारकर गले मिलने चाहा तब ऋषीश्वर ने महादेवजी से कहा तुम अपना कर्म व धर्म छोड़कर श्मशानपर बैठे रहते हो इसलिये मुझे मत छुओ यह अभिमानपूर्वक वचन सुनते ही जब गौरीपतिने क्रोध से त्रिशूल उठाकर भृगुऋषीश्वरको मारने चाहा तब पार्वतीजी ने शिवजी से हाथ जोड़कर विनय की महाराज यह ऋषीश्वर तुम्हारा छोटाभाई है इसका अपराध क्षमा कीजिये जब पार्वती के कहने से भृगुऋषीश्वरका प्राण बचा तब भोलानाथको तमोगुणवश देखकर वहांसे विष्णु भगवान् की परीक्षा लेने वास्ते वैकुण्ठको गये वह वैकुण्ठ कैसा है जहां सूर्य व चन्द्रमा का प्रकाश होनेपर भी दिनरात बराबर उजियाला बना रहताहै और वहांसब पृथ्वी सोनहुली व रत्नजटित होकर बारहों महीने तुलसी के वृक्ष व सुगन्धित फूल व उत्तम उत्तम फल लगेरहतेहैं व अच्छे अच्छे तड़ाग व बावली आदिक बने होकर उसके किनारे अनेक रंगके पक्षी बोलते हैं जब भृगुऋषीश्वरने बेधड़क बीच महल के जहां वे जड़ाऊ पलँगपर सोगये थे व लक्ष्मीजी उनका पैर दाबती थीं घुसकर एक लात बाईंओर छाती में मारी तब वैकुण्ठनाथ नींदसे चौंककर ऋषीश्वरको देखतेही उनका पैर दाबनेलगे व चरणोंपर गिरकर विनयपूर्वक बोले हे द्विजराज मेरा अपराधक्षमा कीजिये मेरी छाती बड़ी कड़ी है इसलिये आपके कोमल चरणपर अवश्य दुःख पहुँचा होगा मुझे तुम्हारे आनेका समाचार मालूम होता तो आगेसे पहुँचता और आपने दयाकी राह मेरा लोक पवित्र करके यह जो लात मारी है इसलिये सदा इस चरणका चिह्न अपनी छातीपर बना रहने दूंगा इसमें मुझे कुछ लज्जा नहीं है जब भृगु ऋषीश्वर ने ऐसी क्षमा त्रिभुवनपति में देखकर मीठा वचन सुना तब लज्जित होकर उनकी स्तुति करने लगे व लक्ष्मीजी ने लात मारती समय मनमें क्रोध किया था पर वैकुण्ठनाथ के डरसे ऋषीश्वरको कुछ शाप नहीं दिया जब त्रिभुवनपतिने भृगुऋषीश्वर का पूजन करके उन्हें बिदा किया तब उन्हों ने सरस्वती किनारे जाकर तीनों देवताओंका हाल अपने साथियों से कहदिया यह समाचार पाते ही सब ऋषीश्वर दूसरे देवताओंका पूजन छोड़कर स्मरण व ध्यान

विष्णु भगवान् का सच्चे मनसे करनेलगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित एक दूसरी महिमा श्यामसुन्दर की कहते हैं सुनो द्वारकापुरी में एक ब्राह्मण बहुत शीलवान् अपने कर्म व धर्म से रहता था जब उस ब्राह्मणके यहां एक पुत्र उत्पन्न होकर मरगया तब वह लोथ अपने बालककी राजा उग्रसेनके पास लेजाकर कहने लगा तुम्हारे अधर्म करने से मेरा पुत्र पिताके सामने मरगया व प्रजालोग दुःख पाते हैं द्वापर में कलियुगका लक्षण राजा के पापसे होता है वह ब्राह्मण अनेक दुर्वचन कहने उपरांत मरा हुआ बेटा उग्रसेनके द्वारे पर रखकर अपने घर चला आया इसीतरह सात बालक और उस ब्राह्मण के घर उत्पन्न होकर मर-गये सो वह ब्राह्मण उनकी लोथ उसी तरह राजाके यहां रखआया जब नवईं बेर उसकी स्त्रीके गर्भ रहा तब उस ब्राह्मण ने राजसभा में जाकर श्याम व बलराम के सामने अतिविलाप करके कहा हे दीनानाथ पहिले राजा उग्रसेन पापीको धिक्कार है जिसके राज्य में प्रजा दुःख पाते हैं दूसरे उन लोगों को धिक्कार है जो इस अधर्मी की सेवा में रहते हैं तीसरे मुझे धिक्कारहै जो ऐसे पापियोंके देशमें रहताहूं जिनके अधर्मसे मेरे पुत्र नहीं जीते और तुम क्षत्रिय होकर ब्राह्मणका दुःख नहीं छुड़ाते जब उस ब्राह्मण ने राजसभामें खड़े होकर अनेक बात इसीतरह पर कहीं व श्याम व बल-राम व प्रद्युम्नआदिक किसी यदुवंशीने उसको उत्तर नहीं दिया तब अर्जुन जो उससमय वहां बैठा था बाणविद्याका घमण्ड रखकर अभिमानपूर्वक बोला बड़े लज्जाकी बातहै जो उग्रसेन महाराज कहलाकर ब्राह्मण का दुःख निवारण नहीं करते जिस राजाके देशमें गो व ब्राह्मण कष्ट पाते हैं उसका यश व धर्म नहीं रहता ऐसा कहकर अर्जुन उस ब्राह्मणसे बोला हे द्विजराज तुम किसवास्ते इतना रोकर दुःख उठाते हो इन दिनों राजा आप स्वार्थी होकर गो व ब्राह्मणकी रक्षा नहीं करते॥

चौ० तुम्हरे पुत्र जन्मते मरैं। पुरके लोग यत्न नहिं करैं॥

दो० यद्यपि बहु योधा बसैं नगर द्वारका माहिं। तद्यपि विद्या धनुषकी जानत कोऊ नाहिं॥

हे ब्राह्मणदेवता अब तुम धैर्य धरकर अपने घर बैठो जब तुम्हारी स्त्री

के बालक उत्पन्न होनेका समय आवे तब तुम मुझसे आनकर कह देना मैं उस बालककी रक्षा करूंगा यह सुनकर उस ब्राह्मणने अर्जुनसे कहा जहां श्याम व बलराम व प्रद्युम्न ऐसे शूरवीर बैठे होकर कुछ नहीं बोलते वहां ऐसे अभिमानपूर्वक वचन कहते हो तुम्हारी क्या सामर्थ्य है जो मेरे बालकको मरनेसे बचाओगे यह वचन सुनकर अर्जुन बोले मुझे श्रीकृष्ण व बलभद्र व प्रद्युम्न मत समझो मैं अर्जुन गाण्डीव धनुषका बांधनेवाला हूं मेरे सामने मृत्युकी सामर्थ्य नहीं है जो तेरा पुत्र मारने सके ॥

चौ० शिवसे युद्ध कियो यकबारी । महाप्रसन्न भयो त्रिपुरारी ॥
मेरो वचन सांच तुम जानो । कछु संदेह न मन में आनो ॥
तुम्हरे सुतकी रक्षा करिहौं । नातो अग्निमाहँ मैं जरिहौं ॥

यह बात सुनकर ब्राह्मण अपने घर चलागया जब उस ब्राह्मणकी स्त्री के बालक उत्पन्न होनेका समय पहुँचा व उसने अर्जुन के पास जाकर यह हाल कहदिया तब अर्जुन महादेवको नमस्कार करके धनुबाण लिये हुये ब्राह्मणके घर चला गया व बाणोंका ऐसा कोट चारों ओर बनादिया कि जिसमें हवा भी ब्राह्मणके घर में जाने न सकै व आप धनुबाण लेकर उस बालकका प्राण बचानेवास्ते चारोंओर फिरने लगा जब उस ब्राह्मण का बालक उत्पन्न होकर विना रोये न मालूम कहां अन्तर्धान होगया तब उसकी स्त्री अपने स्वामी से बोली महाराज तुमने अर्जुनकी बहुत बड़ाई की थी कि वह मेरे बालककी रक्षा करैगा पहिले पुत्रको तो क्षण दो क्षण रोते हुये भी देखती थी इस बेर तो मैंने उसको अच्छी तरह आंखों सेभी नहीं देखा न मालूम कहां लोथ उसकी गुप्त होगई यह वचन अपनी स्त्रीका सुनतेही उस ब्राह्मण ने अर्जुनके पास जाकर ऐसा दुर्वचन उसे सुनाया कि वह अतिलज्जित होकर राजा उग्रसेनकी सभा में चला गया व उसके पीछे ब्राह्मणने भी वहां पहुँचकर सभावालों के सामने कहा हे अर्जुन तैंने मेरा पुत्र बचाने वास्ते प्रण किया था सो तेरा अभिमान क्या हुआ जो तू मेरे पुत्रका प्राण बचाने नहीं सका इसलिये तुझे धिकार है कुछ लज्जा रखता हो तो चुल्लूभर पानी में डूब मर व किसी को अपना

मुख मत दिखला और आजसे धनुर्बाण रखना व झूंठ बोलना छोड़कर वन में चलाजा तैंने राजा विराट के यहां हिजड़ा बनकर वर्षरोज अपना दिन काटाहै तुझसे क्या शूरताई होगी जब इसी तरह उस ब्राह्मण ने अनेक दुर्वचन राजसभा में अर्जुनको कहा तब वह बहुत लज्जित होकर बोला हे द्विजराज तुम ये बातें सच कहते हो अब तुमसे यह प्रतिज्ञा करता हूं कि तीनों लोक में से तुम्हारे मरेहुये बालक ढूंढ़कर लादूंगा नहीं तो धनुर्बाण समेत अग्नि में जलकर मरजाऊंगा यह बात ब्राह्मण से कह कर अर्जुनने स्नान किया व धनुर्बाण उठाकर उन लड़कों को ढूंढ़ने वास्ते स्वर्ग व पाताल में चला गया जब अर्जुन ने चौदहों लोक व यमपुरी व स्थान धर्मराज व आठों लोकपाल में खोजने पर भी उनका पता नहीं पाया तब शोच करता हुआ द्वारकापुरीमें आनकर अपने सेवकोंसे बोला॥

चौ० बहुत काठ लावो यहि ठाईं। अग्नि लगायदेव चौठाईं॥

दो० करिहौं अग्निप्रवेश मैं जरिहौं धनुषसमेत। वचन हारि संसारमें पति धरिहौं केहि हेत॥

जब अर्जुन चिता तैयार करके अग्नि में कूदनेलगा तब श्यामसुन्दर गर्वप्रहारी भक्तहितकारी ने अर्जुन के पास जाकर कहा हे भाई तुम्हारी शूरताई में कुछ सन्देह नहीं है अभी तुम किसवास्ते जलते हो हमारे साथ चलो जहां ब्राह्मणके पुत्र होंगे वहांसे ढूंढ़लाकर तुम्हारी प्रतिज्ञा पूरी करूंगा ऐसा कहकर त्रिभुवनपति अर्जुनसमेत अपने रथपर चढ़े व पूर्वओर सातों द्वीप व समुद्र व लोकालोक पर्वतके पार जाकर ऐसी जगह पहुँचे जहां सिवाय अँधेरेके कुछ दिखलाई नहीं देताथा तब श्रीकृष्णजीने सुदर्शनचक्रको आज्ञा दी कि तुम अपने प्रकाशसे रास्ता दिखलाते चलो यह वचन सुनते ही सुदर्शनचक्र हजार सूर्यसे अधिक अपना तेज बढ़ाकर आगे आगे चला॥

दो० तेज सुदर्शनचक्रको रह्यो चहूंदिशि छाय। अर्जुन देखिसके नहीं राख्यो नयन छिपाय॥

जब इसीतरह बहुत दूरतक वह रथ चलागया तब वहांपर इस वेगसे पानी लहर मारता हुआ दिखलाई दिया जिस तरह दो पर्वत आपस में लड़ते हों जब श्यामसुन्दर ने अपना रथ पानी में डालदिया तब अर्जुन ने आंख खोली तो उसे वहांपर एक महल रत्नजटित बहुत लम्बा व चौड़ा

चमकता हुआ दिखलाई दिया जब रथसे उतरकर दोनों भीतर गये तब उस मकान में क्या देखा कि शेषनागजी अपने कोमल अंगपर नीलाम्बर पहिने व हजार मुकुट व दोहजार कुण्डल जड़ाऊ धारण किये लेटे हैं सिवाय लेने नये नये नाम परमेश्वर के दोनोंहजार जिह्वाओं से दूसरा कुछ प्रयोजन नहीं रखते व शेषनागकी छातीपर विष्णु भगवान् मोहनी-मूर्ति कमलनयन अष्टभुजी स्वरूप से मुकुटव जड़ाऊ गहना अङ्गअङ्गपर साजे जनेऊ का जोड़ा व वैजयन्ती माला व कौस्तुभमणि गले में डाले पीताम्बर पहिने व उपरना रेशमी ओढ़े इस सुन्दरताई से विराजते हैं जिनका रूप देखकर एक एक अंग महासुन्दर पर तीनोंलोक के जीव मोहित होजावैं व शङ्ख व चक्र व गदा व पद्म चारों शस्त्र अपना अपना रूप धारण किये नन्द व सुनन्द व पुण्य व शील व सुशील व गरुड़ व विशुक व सेन व सनाभ व नवों मंत्री उनके चारों ओर बैठे हैं व ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता सामने खड़े हुये स्तुति करते हैं जब अर्जुन यह चरित्र देखकर सब अभिमान अपना भूल गया तब श्यामसुन्दरने अर्जुन समेत अष्टभुजी स्वरूप के सामने जाकर इसतरह उन्हें नमस्कार किया जिसतरह कोई अपनी परछाहीं को दण्डवत् करै उस स्वरूप ने श्यामसुन्दरको देखतेही हँसकर कहा तुमने एकसौ पचीस वर्ष मर्त्यलोक में रहकर पृथ्वी का बोझा उतारा व मेरी शक्ति से अवतार लेकर बहुत दैत्य व अधर्मियों को मारा व देवता व ब्राह्मण व हरिभक्तों को सुख देकर मुझे प्रसन्न किया इन दिनों मेरा मन तुम्हें देखनेवास्ते बहुत चाहता था इसलिये मैंने ब्राह्मण के बालक यहां मँगाकर अर्जुन से अभिमानपूर्वक वचन कहला दिया कि उसकी प्रतिज्ञा रखने वास्ते तुम अवश्य यहां आवोगे वे सब बालक यहांपर हैं उनको लेजाव ऐसा कहकर जब अष्टभुजी स्वरूप भगवान् ने श्यामसुन्दर को विदा किया तब वे आपस में नमस्कार करके ब्राह्मणके लड़कों को लेकर अर्जुन समेत द्वारकापुरी में आये व अर्जुन ने वे सब बालक उस ब्राह्मणको देकर अपनी लज्जा छुड़ाई व शिर अपना मुरलीमनोहर के चरणोंपर रखकर समझा कि वसुदेवनन्दनकी दया से मैंने

महाभारत किया था नहीं तो मुझे क्या सामर्थ्य है जो कर्ण व भीष्मपितामह आदिक वीरोंको जीतने सक्ता इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा॥

चौ० जो यह कथा सुनै धरि ध्यान। उसके पुत्र रहैं कल्यान॥

नब्बेवां अध्याय।

त्रिभुवनपति के सन्तानों की कथा॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित कोई ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो श्यामसुन्दर का सब गुण वर्णन करने सकै पर मैं उन ज्योतिस्स्वरूपको हजारों दण्डवत् करता हूं जिनकी दया से हम व तुम इस अमृतरूप कहने व सुनने से मुक्तिपदवी पावैंगे इसलिये थोड़ीसी महिमा उनकी और कहते हैं सुनो वैकुण्ठनाथ ने केवल पृथ्वी का बोझा उतारनेवास्ते यदुकुल में सगुण अवतार लेकर ये सब लीला की थीं व उनकी इच्छा से द्वारका कंचनपुरी में सब स्थान व बाग जड़ाऊ तैयार होकर अनेक रंगके सुगन्धित पुष्प व फूल बारहों महीने लगे रहते थे व तालाब व बावली के किनारे अनेक भांति के पक्षी मीठी मीठी बोलियों में स्तुति द्वारकानाथकी करते थे व कई हजार हाथी द्वारपर बांधे होकर अनेक पहलवान चाणूर व मुष्टिक ऐसे मल्लयुद्ध करनेवास्ते सदा वहां बने रहते थे व सब सड़क व गली व चौरहों पर चन्दन व गुलाबजल से छिड़काव होकर अनेक देशके व्यापारी सब तरहकी वस्तु वहां बेंचनेवास्ते लेआते थे व यदुवंशियों के घर ऋद्धि व सिद्धि बनी रहकर उनकी स्त्रियां जड़ाऊ गहना व कपड़ा पहिने इत्र व फुलेल लगाये हुये नित्य मंगलाचार मनाया करती थीं व सब छोटे बड़े द्वारकावासी हरिकथा सुनने व साधु ब्राह्मणकी सेवा में प्रीति रखकर अपने कर्म व धर्म से रहते थे॥

दो० तहां नारि सब यादवन अतिसुन्दर सुकुमारि। जिनको रूप निहारिके सकुचावैं सुरनारि॥

और सोलहहजार एकसौआठ स्त्रियां श्यामसुन्दर की अपने अपने जड़ाऊमहल व बागों में अलग अलग त्रिभुवनपति के साथ भोग व विलास करके अपना अपना जन्म स्वार्थ करती थीं व इन्द्रपुरी से अप्सरालोग अपना नाच दिखलानेवास्ते द्वारकामें आनकर गन्धर्वलोग गाना

सुनाते थे व श्यामसुन्दर अपने सोलहहजार एकसौआठ स्वरूप से सब स्त्रियों के पास रहकर उनकी इच्छा पूर्ण करते थे और वे स्त्रियां आठोंपहर द्वारकानाथकी सेवामें रहकर ऐसा उनपर मोहित थीं कि एक क्षण उनको विना देखे श्यामसुन्दर के चैन नहीं पड़ता था किसी समय मोहनप्यारे के रहने पर भी व्याकुल होकर पक्षियों से पूछती थीं कि हमारे प्राणनाथ कहां चलेगये फिर चैतन्य होकर उनको देखने से अपने बराबर किसी दूसरे का भाग्य नहीं समझती थीं एक दिन मुरलीमनोहर ने सब स्त्रियों के साथ जलक्रीड़ा करना विचारकर जैसे समुद्रको आज्ञा दी वैसे घुटने भर पानी वहां होगया ॥

दो० पूरणमासी रातको सब नारिनके साथ। जलविहार लागे करन माखन प्रभु यदुनाथ ॥

जिससमय श्यामसुन्दरने चांदनी रातमें सोलहहजार एकसौ आठ स्त्रियों के साथ बिलग बिलग रूप धरकर विहार किया उससमय समुद्र में ऐसी शोभा मालूम होती थी जिसका हाल वर्णन नहीं होसक्ता ॥

चौ० तबै टिटिहिरी बोली बानी। तासों कहन लगी यक रानी ॥
कारण कौन शब्द तू करै। हरि संयोग वियोग मन धरै ॥
चकई बोलि उठी तेहि काला। ऐसी विधि बोली यक बाला ॥
तेरो भेव जानि हम लीन्हों। पतिवियोगते अतिदुख कीन्हों ॥
क्यों हरि काज शब्द तू करै। सगरी रैन चैन नहिं परै ॥
फिर उन सुनी सिंधुकी बानी। तेहि अवसर बोली यक रानी ॥
कहै एक श्रीकृष्ण मुरारी। शयन करत हैं सिंधु मँझारी ॥
तेही काज शब्द अति करै। श्रीव्रजराज भीति उर धरै ॥
फिर उन देखि चन्द्रकी कांति। सखी एक बोली यहि भांति ॥
तोहिं कृष्णको दरशन भयो। तेरो क्षयी रोग सब गयो ॥
रैवतगिरि देखा तिहि काला। याविधि बोलि उठी यक बाला ॥
तू दिन रैन तपस्या करै। मनमें ध्यान कृष्ण को धरै ॥
राजन ऐसी विधि सब बाला। कहैं मनोहर वचन रसाला ॥

दो० अष्टनायका आदि दै सब नारिनके साथ। ऐसी विधि क्रीड़ा करैं माखन प्रभु यदुनाथ।

श्यामसुन्दर की सन्तान इतनी बढ़ी थी कि तीन करोड़ अड़तालीस हजार तीन सौ ब्राह्मण उन लड़कों को विद्या पढ़ाने के वास्ते रहते थे इस

लिये यदुवंशियों की गिन्ती नहीं होसक्ती देखो जो श्यामसुन्दर अपने वंश की रक्षावास्ते नित्य असंख्य द्रव्य व गौ ब्राह्मणों को दान दिया करते थे वही त्रिभुनपति इतना प्रेम रखने पर भी दुर्वासा ऋषीश्वर के शापसे सब यदुवंशियों का नाश कराके वैकुण्ठ में चले गये श्रीकृष्णजी के वंश में केवल वज्रनाभ अनिरुद्ध का बेटा जीता बचा था सो मथुरा व इन्द्रप्रस्थका राजा हुआ उसके कुल में प्रतबाहु व सत्यसेन आदिक सब राजा बड़े प्रतापी व हरिभक्त व धर्मात्मा हुये थे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जो मनुष्य दशमस्कन्ध की कथा सच्चे मन व प्रीति से कहता व सुनता है उसको बड़ा भाग्यमान समझना चाहिये वह मनुष्य संसारमें मनोकामना पाकर अन्तसमय मुक्त होताहै॥

ग्यारहवां स्कन्ध ॥

नारदमुनिका वसुदेवजी को ज्ञान समुझाना ॥

पहिला अध्याय ।

दुर्वासा आदिक ऋषीश्वरोंका द्वारका में आवना ॥

राजा परीक्षित ने दशमस्कन्धकी कथा सुनकर शुकदेवजी से विनय की हे मुनिनाथ यादवलोग धर्मात्मा व हरिभक्त थे उनको दुर्वासा ऋषीश्वर ने किसवास्ते शाप दिया यह सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजन् इस का हाल इस तरह पर है कि एक दिन श्यामसुन्दर ने मन में विचारा कि हमने पृथ्वी का भार उतारने व हरिभक्तों की रक्षा करनेवास्ते अवतार लिया था जिसमें संसारी जीव मेरी कथा व लीला कह व सुनकर भवसागर पार उतर जावें सो बड़े बड़े दैत्य व कंस व जरासन्ध आदिक अधर्मी राजाओं को मारा और कौरव व पाण्डवों से महाभारत कराके पृथ्वी का भार उतारा पर छप्पन करोड़ यदुवंशी जो बड़े वलिष्ठ व धनपात्र हैं उन का भार अभी बना है और सब मेरी सन्तान व भाई बन्धु होकर मुझसे पालन हुये हैं इसवास्ते इनको अपने हाथ से मारने में पाप होगा किसी ब्राह्मण से शाप दिलवाकर मरवाडालना चाहिये ऐसा विचारतेही उनकी इच्छानुसार दुर्वासा व वशिष्ठ आदिक बहुत से ऋषीश्वर तीर्थयात्रा करते हुये द्वारकापुरी में आये तब जगत्पतिने उनका पूजन व आदरभाव करके हाथ जोड़कर विनय की जिसतरह आपलोगों ने दयालु होकर अपना दर्शन दिया उसीतरह थोड़े दिन यहां रहकर हमारी इच्छा पूर्ण कीजिये यह वचन सुनकर ऋषीश्वरों ने कहा महाराज यहां विधिपूर्वक हमारा तप व जप नहीं बन पड़ता केशवमूर्ति बोले तुमलोग पिण्डारकक्षेत्र में जो यहां से निकट है रहकर स्मरण व ध्यान करो यह बात मानकर सब ऋषीश्वर पिण्डारकक्षेत्र में चले गये व वहां परमेश्वर का तप विधि-

पूर्वक करने लगे सो एक दिन श्यामसुन्दर की माया से प्रद्युम्न व साम्ब आदिक उसी ओर अहेर खेलने वास्ते गये तब उन्होंने ऋषीश्वरों को तप व स्मरण करते हुये देखकर आपसमें कहा ये सब ब्राह्मण संसारी लोगोंको ठगनेवास्ते झूठी समाधि लगाये बैठे हैं ये लोग सच्चे महापुरुष होंगे तो इनको भूत व भविष्य व वर्तमान तीनों काल की बात मालूम होगी यह वचन सुनकर साम्ब ने प्रद्युम्न आदिक अपने साथियोंसे कहा तुम लोग मुझे जो मूछ व दाढ़ी नहीं रखता स्त्रियों का वस्त्र पहिनाकर कुछ वस्तु मेरे पेट में बांध देव व मुझे इन ऋषीश्वरों के पास ले जाकर पूछो इस गर्भवती स्त्रीके पुत्र होगा या कन्या देखो वे लोग क्या कहते हैं जब होन-हार की वश्य होकर प्रद्युम्न आदिक ने उसीतरह ऋषीश्वरों से पूछा तब उन्होंने कहा तुम लोगों को श्यामसुन्दर के पुत्र व पोता होकर ब्राह्मणों से ठट्ठा करना उचित नहीं है जब उन लड़कों ने ऋषीश्वरों के बर्जने पर भी उस बात का उत्तर देने वास्ते बहुत हठ किया तब दुर्वासा ऋषीश्वर ने हरिइच्छा से क्रोधित होकर ऐसा शाप दिया कि इसके पेटसे एक मूसल उत्पन्न होकर सिवाय श्याम व बलराम तुम्हारे सब कुल का नाश करेगा यह वचन सुनतेही प्रद्युम्न आदिक उदास होकर आपस में कहने लगे देखो हमलोगोंने बहुत बुरा काम किया जो ब्राह्मणों को दुःख देकर उनका शाप अपने ऊपर लिया जब यह बात कहकर प्रद्युम्न ने शाम्ब के पेट में कपड़ा जो बांधा था खोला तो उस कपड़े के भीतर से एक मूसल लोहे का छोटा सा निकला यह अचम्भा देखतेही वे सब घबड़ाकर चले आये व राजा उग्रसेन की सभामें जहां श्याम व बलराम यदुवंशियों समेत बैठेथे चले गये व वह मूसल दिखलाकर शाप होने का समाचार कहदिया यह बात सुनतेही राजा उग्रसेन व यदुवंशियों ने शोचित होकर आपस में सम्मत किया कि मूसल को लोहारों से सोहन कराके इसका चूर समुद्र में डाल देना चाहिये जिसमें इस शाप की जड़ न रहै यह बात ठहराकर राजा उग्रसेनने श्यामसुन्दर से पूछा इसमें तुम क्या कहते हो जगतपति आगमजानी ने शाप का हाल सुनतेही मनमें प्रसन्न होकर कहा बहुत

अच्छा जैसा यदुवंशी लोग कहते हैं वैसा करो इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित वैकुण्ठनाथ को वह शाप छुड़ा देना कुछ कठिन नहीं था पर उनकी इच्छा से यह बात हुई थी इसलिये उन्होंने कुछ उपाय उसका नहीं किया व यदुवंशियोंने उस मूसल को समुद्र किनारे लेजाकर सोहन कराके उसका चूर समुद्र में डाल दिया व एक टुकड़ा छोटा सा सोहन करती समय जो बच गया था उसको समुद्र में फेंककर अपने घर चले आये व श्यामसुन्दर की इच्छा से वह टुकड़ा एक मछली निगलगई व उस मछली को एक केवटने जाल में फँसाकर जब उसका पेट चीरते समय वह टुकड़ा पाया तब उसे तीरकी गांसी बनाकर अपने पास रक्खा व जिस जगह लुहारों ने उस मूसल का सोहन किया था वहां पर समुद्र किनारे एक घास सरपत जिसकी चटाई बनाते हैं उत्पन्न हुई ॥

दूसरा अध्याय।

वसुदेवजी को नारदमुनि का ज्ञान सिखलाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब दुर्वासा ऋषीश्वर के शाप देने से द्वारकापुरी में अनेक अशकुन होने लगे तब श्रीकृष्णजी ने विचारा कि ये सब यादव दुर्वासा ऋषीश्वर के शाप से थोड़े दिनों में मारेजावेंगे इसलिये चाहिये कि वसुदेव व देवकी अपने माता व पिता को ज्ञान समझाकर मुक्त करूं पर वे लोग मुझे अपना बेटा जानकर मेरे कहने से विश्वास नहीं करेंगे नारदजी आनकर उपदेश करते तो उनके वास्ते उत्तम होता जब ऐसा विचार कर त्रिभुवनपति नारदमुनि को याद किया और वह उसी समय उनके पास आये तब द्वारकानाथने दण्डवत् करके कहा हे मुनिनाथ, तुम थोड़े दिन यहां रहते तो बहुत अच्छा था नारदमुनिने विनय की हे दीनानाथ आपको मालूमहै कि दक्षप्रजापति के शाप देने से मैं सिवाय दो घड़ी के अधिक एक जगह ठहर नहीं सक्ता श्रीकृष्णजीने कहा तुम द्वारका में निस्संदेह रहो यहां शाप नहीं व्यापैगा यह वरदान पाकर नारदजी बड़ी प्रसन्नता से वहां रहे जब एक दिन नारदमुनि बीन बजाते व हरिगुण गाते हुये वसुदेव को देखने वास्ते गये तब वसुदेवजी ने आदरपूर्वक उन्हें

बैठाय व वेदानुसार पूजन करके हाथ जोड़कर विनय की हे मुनिनाथ मेरा बड़ा भाग्य है जो आपके चरण यहां आये व हम लोग संसारी मनुष्य मायारूपी अँधियारे कुयें स्त्री लड़कों में पड़े रहते हैं सिवाय मिलने ज्ञानरूपी रस्सी के उस कुयें से बाहर निकलना कठिन है कदाचित् आप ऐसा कहैं कि तुम बड़े भाग्यवान् हो जो परब्रह्म परमेश्वर ने तुम्हारे घर अवतार लिया सो हे नारदमुनि मुझसे बड़ी भूल हुई जो पूर्व जन्म मैंने तप करती समय परमेश्वरका दर्शन पाकर उनसे यह वरदान मांगा कि तुम मेरे पुत्र हो मुझे अपनी मुक्ति मांगना उचित था इसलिये अब चाहताहूं कि तुम्हारे मुखारविन्द से भागवतधर्म सुनकर भवसागरपार उतर जाऊं यह सुनकर नारदमुनिने कहा हे वसुदेवजी भागवतधर्म नवो योगीश्वरों ने राजा जनकको सुनाया था वही पुराना इतिहास कहते हैं सुनो ऋषभदेवजी के सौ पुत्र जयंतीनाम स्त्रीसे उत्पन्न होकर उनमें नव बालक नवखण्डके राजा हुये व इक्यासी बेटोंने वेद व शास्त्र पढ़ा व भरतनाम बड़ा पुत्र उनका अपने बापकी जगह सिंहासनपर बैठा व नवो बेटे उनके जो नव योगीश्वर कहलाते हैं परम ज्ञानी व बालयती व महात्मा होकर जहां मन उनका चाहता था वहां फिरा करते थे व हरिभजनके प्रताप से उनको ऐसी सामर्थ्य थी जहां चाहैं वहां क्षणभरमें चले जावैं सो एक दिन ये नवो योगीश्वर घूमते हुये राजा जनक की सभा में जहां पर बहुत से पण्डित व ज्ञानीलोग बैठे थे चले गये उनके मुखारविन्द का प्रकाश जो सूर्य से अधिक चमकता था देखतेही राजा जनकने सभावालों समेत उठकर एक साथ नवो योगीश्वरों को दण्डवत्की व परिक्रमा लेकर हाथ जोड़कर बोले आपलोग वैकुण्ठ से आते हैं इसलिये मैं तुमको विष्णु भगवान् का पार्षद समझताहूं मेरे पूर्वजन्म के पुण्य सहाय हुये जो तुम्हारा दर्शन पाया व संसारी मनुष्य की मृत्युका ठिकाना नहीं रहता यही समझकर मैंने आप को एकसाथ दण्डवत् की जिसतरह आपने दयालु होकर अपने चरणों से मेरा घर पवित्र किया उसीतरह जो बात मैं पूछूं उसका सन्देह छुड़ा दीजिये यह सुनकर वे योगीश्वर बोले हे राजन् जो कुछ तुम्हें इच्छा हो सो पूछो

राजा जनक ने कहा महाराज संसार में कौन ऐसी वस्तु है जो सदा स्थिर रहकर उसका वियोग नहीं होता कदाचित् यह कहाजावे कि जो कोई अपने घरमें बहुत धन व स्त्री व पुत्र आज्ञाकारी रखता है उसे कुछ शोच नहीं होता सो मेरे जानमें उसे सदा सुख नहीं रहता किसवास्ते कि जब उस घर में कुछ हानि होकर स्त्री व लड़के मरजाते हैं तब वह बहुत शोच करता है सुख उसे कहना चाहिये जो सदा स्थिर रहे व प्रति-दिन अधिक होकर उसमें कभी न घटे सो आपलोग बतलाइये कि वह कौन वस्तु है जिसका नाश नहीं होता यह सुनकर योगीश्वरों में से कश्यपनाम बड़े भाई ने कहा हे राजन् सुख उन्हीं को प्राप्त है जो आठों पहर मन अपना बीच स्मरण व ध्यान आदिपुरुष भगवान् के लगाये रहते हैं व धन व स्त्री व पुत्रादिक नाश होनेवाली वस्तु से कुछ प्रीति नहीं रखते पर संसारी जीवों की यह प्रकृति है कि धन मिलने व स्त्री व पुत्र आज्ञाकारी होने से समझते हैं कि हमारे बराबर दूसरा कोई सुखी न होगा जब उनका धन कुछ हानि होकर कोई मनुष्य घरवाला मरजाता है तब उसके शोच में ऐसे व्याकुल होजाते हैं कि उनका चित्त ठिकाने नहीं रहता इसलिये संसारी मनुष्य से जो कोई पूछे तुम्हें धैर्य है व नहीं तो उन दोनों को मूर्ख समझना चाहिये किसवास्ते कि जो सुख सदा स्थिर नहीं रहता उसका होना व न होना दोनों बराबर हैं हे राजन् तुम इस बातका विश्वास मानो कि जो मनुष्य परमेश्वर से विमुख रहकर अपने परलोक का शोच नहीं करता उसे कभी सुख नहीं मिलता व धर्म वही समझना चाहिये जो श्रीकृष्णजी ने अपने मुखारविन्दसे गीता में अर्जुनसे कहाथा सारांश उस ज्ञानका यह है कि मनुष्य आठोंपहर अपना मन बीच याद व स्मरण नारायणजीके लगाये रखकर किसी कामको ऐसा न समझे कि यह मैंने किया व दिन रात यह जानता रहे कि सब काम परमेश्वर की इच्छासे होते हैं व नारायणजी तप व स्मरण व ध्यान व भजन किये विना जिसको भक्त कहते हैं मिलने नहीं सके इसलिये उनका प्रेम उत्पन्न होनेवास्ते पहिली राह जो सहज है बतलाते हैं सुनो जिसमें

संसारी जीव वह रास्ता चलकर अपने सुख स्थानपर पहुँच जावें जिस तरह परब्रह्म परमेश्वरने कृष्णावतार लेकर गोवर्धनपहाड़ अपनी अंगुलीपर उठालिया व कंस व जरासन्ध आदिक अधर्मी राजाओं को मारकर गोपियों के साथ रासमण्डल किया व रामचन्द्र व वामन आदिक अनेक अवतार धरकर जो लीला संसारमें की हैं वह कथा सच्चे मनसे कह व सुन कर इस बातका अभिमान न रक्खे कि एक बेर यह कथा सुनचुकेहैं फिर सुन करके क्या करेंगे व वह मनुष्य हरिचरित्र कहने व सुनने के प्रतापसे विरक्त होकर अन्तसमय परमेश्वर के चरणों में पहुँचता है वज्ञानीको चाहिये कि सब स्थानपर नारायणजीको एकसा देखकर यह समझता रहै कि आदिपुरुष भगवान् केवल इसीवास्ते सगुणअवतार धारण करते हैं जिससे संसारी मनुष्य उनकी लीला व कथा सुनकर भवसागर पार उतर जावें इसलिये मनुष्यतनु पाकर उनके ध्यान व स्मरण से क्षण भर भी विमुख रहना न चाहिये कदाचित् मन चंचल मनुष्य का एकबेर परमेश्वर के चरणों में न लगे तो थोड़ा थोड़ा प्रेम उनसे नित्य बढ़ावै जिस तरह संसारी मनुष्य इच्छा जाने किसी नगर व देशकी रखकर नित्य एक एक पगभी उस राहपर चलै तो कुछ दिनों में उस स्थानपर पहुँच सक्ता है उसी तरह सूर्यरूपी हरिचरणों का ध्यान व प्रेम धीरे धीरे बढ़ाने से उसके हृदय में ज्ञानका दीपक प्रज्वलित होकर अज्ञानका अँधियारा छूटजाता है व जो कोई अपने घरसे नहीं चलता उसको दूसरे स्थानपर पहुँचना बहुत कठिन है जिस तरह तीन दिनके भूखे मनुष्य को भोजन देखनेसे धैर्य होकर ज्यों ज्यों वह ग्रास उठाकर खाता है त्यों त्यों उसे सामर्थ्य होती जाती है उसी तरह परमेश्वर का स्मरण व ध्यान करते करते मनुष्य के मनसे प्रतिदिन संसारी माया छूटकर हरिचरणों में अधिक प्रेम बढ़ता जाता है जब वे योगीश्वर यह सब ज्ञान कहचुके तब राजा जनक उठ खड़े हुये व फिर दण्डवत् करके उनसे पूछा महाराज जो मनुष्य भागवतधर्म से रहकर उसी तरह सब काम करते हैं उनका रूप किस तरह का होता है व कौन लक्षण से उनको पहिंचानना चाहिये यह सुनकर हरिनाम दूसरे भाईने

कहा हे राजन् परमधर्म रखनेवाले मनुष्य कभी हँसते कभी रोदेते हैं उनके हँसने का यह कारणहै कि किसी समय प्रसन्न होकर कहते हैं हे परमेश्वर तुम्हारा निराकाररूप किसीको दिखलाई नहीं देता इसलिये आप हरिभक्तोंपर दयालु होकर सगुण अवतार धारण करते हैं जिसमें संसारी जीव तुम्हारा स्मरण व ध्यान करके मुक्तपदवी पावैं और यह बात समझकर वे लोग रोदेते हैं कि इतनी अवस्था हमारी विना याद व चर्चा परमेश्वर के वृथा व्यतीत हुई व भक्त नारायणजी के तीन तरहपर उत्तम मध्यम निकृष्ट होकर उत्तम भक्त के ये लक्षण हैं कि वे सब जीव जड़ व चैतन्यमें परमेश्वर की शक्ति बराबर समझकर किसीसे मित्रता व शत्रुता नहीं रखते व आठों पहर हरिचरणों के ध्यान व स्मरणमें लीन व मग्न रहते हैं व जिस तरह मद पिये हुये मनुष्य अचेत होकर अपने तनु व वस्त्रकी सुधि नहीं रखते उसी तरह उत्तम भक्त अपने शरीरकी सुधि न रखकर ईश्वर के ध्यान में मग्न रहते हैं व परमेश्वर के विराट्रूप में सब संसारी जीवों को एकसा देखकर हरिभक्त व महात्मालोगों से प्रीति रखते हैं व अपने व दूसरे में कुछ भेद न जानकर स्त्री व पुत्र व धन आदिक संसारी सुखसे कुछ प्रीति नहीं रखते व तीनों लोकका राज्य सत्संग व भक्तिके समान नहीं समझते व लक्षण मध्यम भक्तके ये हैं कि वे लोग साधु व महात्माओंसे प्रीति रखकर कुसङ्गति में नहीं बैठते व किसीका बुरा न चाहकर संसारी जीवों पर दया रखते हैं पर ज्ञानी होनेसे परमेश्वर की शक्ति सब जीवों में बराबर नहीं समझते व लक्षण निकृष्ट भक्तके सुनो कि वे लोग संसारी माया मोह में फँसे रहकर किसी समय पूजा व स्मरण परमेश्वर का भी करलेते हैं जब तक मनुष्य तृष्णा नहीं छोड़ता तबतक मन उसका संसारी माया से विरक्त नहीं होता॥

तीसरा अध्याय।

तीन योगीश्वरों का राजा जनकको ज्ञान उपदेश करना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित राजा जनकने तीनों तरहके भक्तों का हाल सुनकर उन योगीश्वरों से पूछा महाराज माया परमेश्वरसे अलगहै

या नारायणजीमें मिली है सो वर्णन कीजिये यह सुनकर अन्तरिक्ष नाम तीसरे भाईने कहा हे राजन् उत्पन्न होना व मरना सब जीवों का परमेश्वर की मायासे होताहै व उस मायाको हरिइच्छा समझनी चाहिये व मायाके तीन गुण सात्त्विक व राजस व तामससे उत्पत्ति व पालन व नाश संसारी जीवों का होकर अपने कर्मानुसार सब जीव फल पाते हैं व संसारी मनुष्य मायावश होकर सदा काम क्रोध लोभ मोहमें फँसा रहताहै व परमेश्वर का स्मरण व ध्यान नहीं करता जिसमें आवागमन से छूटकर भवसागर पार उतरजावे विना दया व कृपा नारायणजी की कोई मनुष्य मायारूपी जालसे छूट नहीं सक्ता जब आदिपुरुष भगवान् को महाप्रलय होने उपरान्त फिर संसार रचने की इच्छा होती है तब वे मायाकी ओर आंख उठाकर देखते हैं उसी समय मायासे महत्तत्त्व प्रकट होकर वही सब जगत् को उत्पन्न करता है व जब त्रिभुवनपति संसार का नाश करना चाहते हैं तब उनकी इच्छानुसार उसी माया से महाप्रलय होकर ऐसा मूसलधार पानी बर्षता है कि सिवाय जलके पृथ्वी पर कुछ नहीं रहता इसलिये ज्ञानी मनुष्य को उत्पन्न व नाश होना जगत् का मायारूपी खिलौना समझकर आठों पहर अपने भवसागर पार उतरने का उपाय करना चाहिये यह सुनकर राजा जनकने पूछा जब आपलोग मायाको परमेश्वर की इच्छा बतलाते हैं तब संसारी मनुष्य उस मायाजाल से किस तरह छूटने सक्ताहै कोई उपाय इसका बतलाइये यह वचन सुनकर प्रबुद्ध नाम चौथे योगीश्वरने कहा हे राजन् जब इस बातका विश्वास हुआ कि माया नारायणजी की इच्छा है व विना आज्ञा परमेश्वरकी कोई काम पूरा नहीं होता तब मनुष्य को उचितहै कि सब काम में त्रिभुवनपतिको कर्ता व धर्ता जानकर अपनेको उस मायाका खिलौना समझै व जो कर्म आरम्भ करै उसे ऊपर इच्छा परमेश्वर के छोड़कर मनमें यह विश्वास रक्खे कि वैकुण्ठनाथ चाहैंगे तो यह काम पूरा होगा अपनेको वह काम करनेवाला न जानै व किसी के गाली देने से खेद न मानकर विना प्रयोजन अधिक न बोले व सब जीव जड़ व चैतन्यमें परमेश्वरका चमत्कार बराबर

समझकर उनपर दया रक्खै व किसी जीवको दुःख न देवे व दूसरे की स्त्री माता समान जानकर थोड़ा या बहुत जो कुछ अपने भाग्यसे मिलै उस पर सन्तोष रखकर अधिक मिलने की चाहना न करै व अकेले में बैठकर हरिचरणों का स्मरण व ध्यान करता रहै व जब दूसरों के पास बैठे तब सिवाय चर्चा व कथा परमेश्वर की वृथा बात न करै इस तरह अभ्यास रखने से संसारी माया छूटकर मन उसका हरिचरणोंमें लगजाताहै कदाचित् कोई ऐसा कहै कि बहुत मनुष्य उपाय व उद्यम करनेवाले अपनी कामना को पहुँचकर सदा प्रसन्न रहते हैं सो हे राजन् तुम इस बात का विश्वास मानो कि विना इच्छा परमेश्वरकी किसीका मनोरथ नहीं मिलता व सब तरह की हानि व लाभ त्रिभुवनपति की इच्छानुसार होता है देखो जे संसारमें उत्पन्न हुयेहैं वे एक दिन अवश्य मरैंगे सो मरती समय कोई उनसे यह बात नहीं कहैगा कि तुम स्त्री व पुत्र व हाथी व घोड़ा आदिक का नाम लेव सब इष्ट व मित्र यही कहैंगे कि इस समय परमेश्वर का नाम लेकर उन्हें याद करो जिसमें तुम्हारा परलोक बनै फिर किस वास्ते पहिले से उस परमेश्वर को याद नहीं करता कि अन्तसमय उसी के साथ काम रहताहै दूसरा कोई सहायता करने नहीं सक्ता कदाचित् तुम ऐसा कहो कि अब संसारी सुख उठाकर मरती समय परमेश्वर को याद करलेवैंगे सो तुम विश्वास करके जानो कि जब मन तुम्हारा पहिले से बीच प्रेम स्त्री व पुत्र व द्रव्यादिक में लगा रहैगा तब मरती समय परमेश्वर में मन लगना बहुत कठिन है इसलिये मनुष्य का तनु पाकर पहिले से उनके स्मरण व ध्यानमें चित्त लगाना चाहिये जो अन्तसमय काम आवै जिस तरह द्रव्य गाड़कर रखने से आठों पहर उस जगह का ध्यान मनमें बना रहता है व चोर आदिक के डरसे कभी कभी जाकर उस स्थान को देख आता है व किसी दूसरे से द्रव्य गाड़नेका हाल नहीं कहता उसी तरह उसे दिन रात वैकुण्ठनाथ को याद रखकर प्रेम रखने का हाल किसी से कहना न चाहिये यह ज्ञान सुनकर राजा जनक ने विनय की आपने कहा कि परमेश्वर की लीला व कथा सुनने व ध्यान करनेसे संसारी माया

छूटजाती है इसलिये थोड़ी स्तुति नारायणजी की सुना चाहताहूं सो दयालु होकर कहिये यह सुनकर पिप्पलायन पांचवें भाईने कहा हे राजन् उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाले तीनों लोकके वही वैकुण्ठनाथ हैं उन्हीं का प्रकाश चौरासीलाख योनिमें रहताहै पर किसी जीवके मरनेसे उनका नाश नहीं होता व किसी जीवके उत्पन्न होनेसे वे जन्म भी नहीं लेते वे अविनाशी पुरुष अपने तेजसे प्रकाशित रहकर सदा एक तरह पर सब वस्तु में मिले व सबसे बिलग रहतेहैं व सब जीवों में चलने व फिरनेकी सामर्थ्य व मनुष्यको भली व बुरी बातका ज्ञान उन्हीं की शक्तिसे होताहै और उनका प्रकाश किसीको दिखलाई नहीं देता व हाथसे पकड़ाई न देकर इस तरह बीच हृदयके छिपे रहते हैं जिस तरह पत्थर व लकड़ी में अग्नि दिखलाई नहीं देती जैसे उपाय करके पत्थर व लकड़ीमेंसे अग्नि निकलती है वैसे ज्ञानकी राह उनकी शक्ति को भी शरीरमें देखना चाहिये जिसतरह गूलरके वृक्षमें हजारों फल लगे होकर उनके भीतर मच्छड़ भरे रहते हैं उसी तरह करोड़ों ब्रह्माण्ड परमेश्वरके रोम रोममें बँधे रहकर सब जीवोंको वे पालन करतेहैं ऐसे त्रिभुवनपति का पहिंचानना बहुत कठिनहै व उनकी भक्ति व प्रीति सच्चे मनसे करै तब उनकी महिमा जानसक्ता है व मनुष्य की दशा चार तरहपर जाग्रत् व स्वप्न व सुषुप्ति व तुरीय होती हैं जाग्रत् जागने व स्वप्न नींदको कहते हैं सुषुप्ति उसे समझना चाहिये जिस तरह किसी समय मनुष्य नींद से उठकर कहताहै हम ऐसा सोये कि न जागते थे न नींद में अचेत होकर सोये रहे व तुरीय उसको कहते हैं जैसे कोई परमेश्वर के ध्यान में लीन होकर बैठा रहै व अपने तनु व वस्त्रकी कुछ सुधि न रक्खै व चारों अवस्था में परमेश्वर का प्रकाश बीच शरीरके रहता है व उन्हींकी शक्तिसे मनुष्य सब कर्म शुभ व अशुभ करते हैं और यह बात इसतरह समझना चाहिये कि जब परमेश्वर अपना चमत्कार अंगमेंसे खींच लेतेहैं तब वह मरजाताहै व उससे कोईकाम नहीं होसक्ता कदाचित् कोई ऐसा कहै कि परमेश्वर सब जगह वर्त्तमानहैं तो दिखलाई क्यों नहींदेते उसे यह उत्तर देना चाहिये कि मूर्खको दिखलाई नहीं देते व ज्ञानीसे वे छिपे नहीं रहते ॥

चौथा अध्याय।

अवतारों की कथा॥

नारदमुनिने कहा हे वसुदेव इतनी कथा सुनकर राजा जनकजी बोले हे ऋषिराज जिन दिनों मैं बालक था उन दिनों एकबेर सनकादिक मेरे पिताके पास आये थे जब मैंने हाथ जोड़कर उनसे पूछा महाराज परमेश्वरकी भक्ति व तपस्या किस तरह करनी चाहिये तब उन्होंने कुछ उत्तर न देकर हँस दिया और मुझे वह ज्ञान सुनने योग्य नहीं समझा यह वचन राजा जनकका सुनकर उपबिरहोत्र नाम छठयें योगीश्वर ने कहा हे राजन् तुम ज्ञान सुनने योग्य हो पर उन दिनों अज्ञान बालक थे इसलिये सनत्कुमार आदिक ने तुमसे कुछ ज्ञान नहीं बतलाया अब हम कहते हैं सुनो कर्म तीन तरहपर कर्म विकर्म अकर्म होता है व कर्म उसे कहना चाहिये कि ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य व शूद्र चारों वर्ण अपने अपने धर्मपर जैसा उनके वास्ते वेद व शास्त्र में लिखा है स्थिर रहैं व विकर्म वह है कि एक वर्ण का धर्म दूसरा वर्ण करै व अकर्म उसे समझना चाहिये कि जानबूझ कर चोरी व कुकर्म आदिक करके संसारीजीवोंको दुःख देवै इसलिये मनुष्य को उचित है कि नित्य पूजा व ध्यान रामचन्द्र व श्रीकृष्ण व नृसिंहजी आदिक किसी अवतार का अपने गुरु की आज्ञानुसार किया करै व स्मरण व ध्यान करना परमेश्वरका केवल एक अवतार पर होकर चौबीसों अवतारों में जिसपर मन उसका चाहै उसी तरह स्वरूपकी पूजा व भक्ति साधन करे यहसुनकर राजा जनक बोले महाराज जिस तरह आपने पूजा करनेवास्ते कहा उसी तरह दयालु होकर अवतारों की कथा वर्णन कीजिये द्रुमिल नाम सातवें योगीश्वर ने कहा हे राजन् कोई ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो परमेश्वर के सब अवतार वर्णन करसकै जो ऐसा विचार करै उसे मूर्ख समझना चाहिये कदाचित् कोई चाहे तो आकाश के तारे व बालू की रेणुका व बर्षते पानी की बूंदें गिन लेवे पर वैकुण्ठनाथ के अवतार नहीं गिन सक्ता पृथ्वी व आकाश व सूर्य व चन्द्रमा व दशों दिशा व चौदहों भुवन व चौरासीलाख योनि आदिक बीच विराट्रूप परमेश्वर के होकर

सब संसारी वस्तु के मालिक व उत्पन्न करनेवाले वही हैं जब विराट्‌रूप की नाभिसे कमलका फूल निकलता है तब उस फूल से ब्रह्मा उत्पन्न हो कर तीनों लोककी रचना करते हैं व नरनारायण का अवतार लेकर बदरी केदार में बैठे हुये केवल इसवास्ते तपस्या करते हैं जिसमें संसारी लोग उनको तप करते देखकर परमेश्वरका स्मरण व ध्यान करके भवसागर पार उतर जावैं जब इन्द्रको त्रिभुवनपति की महिमा न जानने से यह भय हुआ कि मेरा इन्द्रासन लेने वास्ते ये तपस्या करते हैं तब उसने उनका तप भंग करने की इच्छा से कामदेव व वसंतऋतु व दश अप्सरा व मंद सुगंध शीतल हवाको वहां भेजा जैसे वे सब बीच स्थान तपस्या करने नरनारायण के पहुँचे वैसे वसंतऋतु ने एक बगीचा उत्तम उत्तम फूल व फल लगाहुआ सब सामग्री व भोग व विलास समेत वहां प्रकट करदिया व मंद सुगंध शीतल हवा चलकर उस बाग में अप्सरा नाचने लगीं व कामदेव कोकिलारूप से वृक्षपर बैठ कर जब काम बढ़ानेवाली बोली बोलने लगा तब नरनारायण ने जिनका मुखारविन्द सूर्य से अधिक चमकता था जैसे आंख उठाकर उन लोगोंकी तरफ देखा वैसे कामदेव आदिक मारे डरके सूख गये व मनमें कहने लगे ऐसा न हो जो ये महापुरुष शाप देकर हमैं भस्म करदेवें यह दशा उनकी देखते ही त्रिभुवनपति अंतर्यामी ने हँसकर कामदेवादि से कहा तुमलोग मत डरो इसमें तुम्हारा कुछ अपराध न होकर इन्द्रने तुमको अपना राज्य छूटने के डरसे यहां भेजाहै सो मैं इन्द्रलोककी कुछ चाहना नहीं रखता यह वचन सुनते ही कामदेव व वसन्तऋतु आदिक ने नरनारायणके सामने हाथ जोड़ कर विनय की हे वैकुण्ठनाथ संसारी जीव कोई ऐसा नहीं है जो हमारे फन्दे में न आवै पर हमलोग आपको जो आदिपुरुष का अवतार हैं कुछ धोखा नहीं देसके जब तुम्हारा भजन व स्मरण करनेवाले अपने बलसे हमारे शिरपर लात धरकर सीधे वैकुण्ठको चलेजाते हैं तब आपपर किस का वश चलसक्ता है संसार में बहुत मनुष्य भूख व प्यास व कामदेव को अपने वश रखकर संसारी सुखकी चाहना नहीं करते पर क्रोध ऐसा बल-

वान् है कि उसके अधीन होकर वे लोग भी अपने शुभकर्म व तपस्याका फल क्षणभरमें खो देते हैं सो आपमें क्रोधका प्रवेश न होकर तुम्हारी भक्ति व प्रीति करनेवाले भी काम व क्रोध के वश नहीं होते इसलिये हजारों दंडवत् हमारी आपको पहुँचें यह वचन सुनते ही नरनारायण ने उसी समय अपनी माया से हजार सुंदरी जिनके सामने रम्भा आदि अप्सरा कुछ वस्तु नहीं हैं व कोसोंतक उनके अंगकी सुगंध उड़ती थी वहां प्रकट करादिया और वे सब लक्ष्मीपति की सेवा करनेवास्ते हाथ जोड़कर चारों तरफ खड़ी होगई उनका रूप देखते ही कामदेवादिक लज्जित होकर अपना अपना अभिमान भूल गये उन स्त्रियों पर मोहित होकर आपस में कहने लगे हमलोगों ने ऐसी रूपवती स्त्रियां कभी इन्द्रलोक में भी नहीं देखी थीं यह सुनकर त्रिभुवनपति ने कामदेवादिक से कहा तुमलोग इन सब स्त्रियोंको इन्द्रपुरी में लेजावो कामदेव ने विनय की महाराज इनको इसीजगह रहने दीजिये नहीं तो वहां लेजाने में सब देवता आपस में लड़कर मरजावैंगे यह बात सुनकर नरनारायण ने कहा इन सब में तुम्हारे निकट जो कुरूप हो उसे लेजाव जब कामदेवादिक उर्वशी नाम को नरनारायण की आज्ञानुसार अपने साथ लेकर वहांसे बिदा हुये व उन्होंने इन्द्रलोकमें पहुँचकर सब महिमा नरनारायणकी कही तब इन्द्र उन्हें पूर्णब्रह्म जानकर उनकी स्तुति करने लगे व उर्वशीका रंग व रूप देखते ही अतिप्रसन्न होकर उसे सब अप्सराओंका मालिक बनाया फिर हंसरूपी पक्षीका अवतार लेकर सनत्कुमार को उत्तर दिया व हयग्रीव अवतार धर कर मधुकैटभ दैत्यका वध किया व पाताल से वेद लाकर ब्रह्माको दिया व मत्स्य अवतार लेकर राजा सत्यव्रतको ज्ञान सिखलाया व कच्छप अवतार धरकर मन्दराचल पहाड़ अपनी पीठपर उठाया व मोहनी अवतार लेकर देवताओं को अमृत पिलाया व वाराह अवतार धरकर पृथ्वीको पातालसे निकाल लाये व वामन अवतार होकर राजा बलि से पृथ्वी दान ली व कपिलदेव अवतार धरकर देवहूती अपनी माताको सांख्ययोग ज्ञान उपदेश किया व परशुराम अवतार होकर सहस्रबाहु आदिक अनेक क्षत्रियों

का वध किया व रामचन्द्र अवतार धरकर लंकापति रावणको मारा व नृसिंह अवतार होकर प्रह्लादभक्तकी रक्षा की व श्रीकृष्ण अवतार धरकर कंसादिक राजा व अनेक दैत्योंको मारडाला व कौरवों व पांडवों से महाभारत कराके पृथ्वीका भार उतारा व बौद्ध अवतार धरकर दैत्यों को यज्ञ करने से बरजा व जब कलियुगके अन्तमें कुछ धर्म नहीं रहेगा तब कलंकी अवतार लेकर सत्ययुगका धर्म व कर्म चलावेंगे इन अवतारों में जिसपर मन चाहे उसी स्वरूपका पूजन व ध्यान करने से मनोकामना मिलकर अन्तसमय मुक्ति होती है॥

पांचवां अध्याय।

आठवें व नवें योगीश्वरोंका ज्ञान कहना॥

राजा जनकने इतनी कथा सुनकर पूछा महाराज जो लोग परमेश्वर के स्मरण व ध्यानसे विमुख रहते हैं उनकी मरने उपरान्त क्या दशा होती है चमसनाम आठवें योगीश्वर ने कहा हे राजन् चौरासी लाख जीव जड़ व चैतन्य नारायणजीकी इच्छासे उत्पन्न होकर मरने उपरान्त जीवात्मा सब किसी का फिर परमेश्वरके रूपमें मिलजाता है व सब जीवों का पालन करने व सुख देनेवाले वही आदिपुरुष भगवान् हैं जो कोई उनको उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाला तीनों लोक का जानकर दिन रात उनके स्मरण व ध्यान में लीन रहकर कहता है हे वैकुण्ठनाथ महादेव व ब्रह्मादिक देवता तुम्हारे भजन व स्मरण के प्रतापसे जो कुछ आशीर्वाद व शाप किसीको देते हैं वह बात सच होकर हरिभक्तों का सब दुःख आपकी दयासे छूटजाताहै इसलिये संसाररूपी समुद्रपार उतरनेवास्ते तुम्हारे चरणोंका ध्यान जहाज के समान समझना चाहिये हे राजन् इस तरहका ज्ञान व ध्यान रखनेवाले मनुष्य मुक्तिपदवी पर पहुँचते हैं व जो लोग मनुष्य तनु पाकर चारों वर्ण व चारों आश्रम में परमेश्वर का भजन व स्मरण नहीं करते व हरिकथा सुनने में प्रीति न रखकर संसारीमाया में फँसे रहते हैं व अधर्मकी कमाई से अपना कुटुम्ब व शरीर पालन करके परमेश्वरका चमत्कार सब जीवोंमें बराबर नहीं समझते व विना प्रयोजन

दूसरोंके साथ शत्रुता व परस्त्री व धन लेने वास्ते इच्छा रखकर जीवहिंसा करते हैं उनका कभी कल्याण नहीं होता वे मनुष्य बहुत दिन तक नरक भोगने उपरान्त चौरासी लाख योनि में जन्म पाकर अनेकतरह का दुःख पाते हैं व जो मनुष्य अपने उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाले को नहीं मानता उसे अधर्मी समझना चाहिये जिसतरह मल व मूत्र पेटसे बिलग होकर अशुद्ध होजाता है उसीतरह परमेश्वर से विमुख रहनेवाले मनुष्य स्थानभ्रष्ट होकर नरक में जाते हैं व जो ब्राह्मण अपने लाभ वास्ते दूसरों को वशीकरण व मारण व उच्चाटन बतलाकर मुक्त होने की राह नहीं सिखलाते उनको पाखण्डी व अधर्मी समझना उचित है व जो लोग सन्त व महात्मा व हरिभक्तों को तुच्छ जानकर सब जीवों में परमेश्वर का रूप बराबर नहीं देखते व वेदानुसार राह न चलकर केवलअपनास्वार्थ समझते हैं व धन पाकर धर्म नहीं करते उन्हें अभागी व पापी समझना चाहिये किस वास्ते धर्म करने से ज्ञान प्राप्त होकर तृष्णा छूटजाती है व विरक्त होनेसे मुक्तिपदवी पाते हैं देखो जब मरती समय अपना शरीर व स्त्री व पुत्र व सेवक आदिक कोई रक्षा नहीं करसक्ते तब उनके प्रेम में फँसकर नष्ट होना वृथाहै जिसतरह मनुष्य अपना शरीर पुष्ट करने वास्ते पशु व पक्षी आदिक मारकर खाताहै उसीतरह दूसरे जन्ममें वह पशु व पक्षी उसे मार-कर अपना बदला लेते हैं व मदिरा पीने व साधु व ब्राह्मण व परमेश्वरसे विमुख रहनेवालों को यमदूत बरजोरी नरक में डालकर बड़ा दुःख देते हैं इतनी कथा सुनकर राजा जनकने पूछा महाराज सब युगों में अवतार आदिपुरुष भगवान्का किसतरह पर था करभाजन नाम नवें योगीश्वर ने कहा सतयुगमें अवतार परमेश्वरका चतुर्भुजी चन्द्रमाके समान श्वेत होकर सतयुगमें सब मनुष्य धर्मात्मा व सच्चे व हरिभक्त थे व धर्मके चारों पैर बने रहकर अन्तसमय सबको वैकुण्ठधाम मिलता था व त्रेतायुग में अवतार परमेश्वरका अग्निरूपी लाल होकर तौर अपना ब्रह्मचारी के समान रखते थे व धर्मके तीन पावँ रहकर वासुदेव नामका चर्चा रहता था व द्वापरयुग में अवतार नारायणजी का श्यामरंग नीलमणि के समान

चमकता होकर धर्म के दो पावँ थे व मुकुट जड़ाऊ शिरपर रखकर पूजा परमेश्वरकी होती थी व कलियुग में अवतार लक्ष्मीपतिका श्यामरंग सूर्य के समान चमकता होकर धर्मका एक चरण रहजाता है व कलियुग के मनुष्य निर्धन रहते हैं व धनपात्र भी सूम होकर जैसा चाहिये वैसा दान व धर्म नहीं करते इसवास्ते कलियुगवासी मनुष्य केवल परमेश्वर का नाम जपने व हरिचरणों में ध्यान लगाने व उनकी कथा व लीला सुनने से भवसागर पार उतरजाते हैं परमेश्वरके शरण जानेवाले किसी देवता का डर न रखकर देवऋण पितृऋण ऋषिऋण से उऋण होजाते हैं व हरिभक्तों पर परमेश्वरकी छाया रहने में कोई उनको कुछ दुःख दे नहीं सक्ता व नारायणजी अपने भक्तोंपर दयालु होकर उनको कुकर्म करने से बचाये रहते हैं व हे राजन् कलियुग में जो कोई नित्य यह श्लोक पढ़ कर परमेश्वर की दण्डवत् करैगा उसे नारायणजी वांछित फल देकर अन्त समय उसका उद्धार करैंगे व अर्थ उस श्लोकका यह है हे श्रीनारायण जी महाराज मैं तुम्हारे कमलरूपी चरणों का ध्यान जो फूलसे भी अधिक कोमल हैं हृदय में रखताहूं तुम्हारे चरण छोड़कर दूसरा कोई ध्यान करने योग्य नहीं है जो कोई उन चरणोंका स्मरण करता है वह भाग्यवान् हो- कर उसको किसी देवता व दैत्य व मनुष्य व पशुआदिक का कुछ भय नहीं रहता व तुम्हारे चरणोंके ध्यान करनेके प्रतापसे मन मेरा काम क्रोध लोभ मोह में कि वह अधर्म की जड़ हैं नहीं फँसता जिससमय तुम्हारे कमलरूपी चरणोंको याद व ध्यान करता हूं उस समय मेरा सब मनोरथ पूर्ण होकर कोई इच्छा नहीं रहती व गंगा व यमुना व नर्मदा व सरस्वती आदिक सब तीर्थ आपके चरणों में रहकर चरण तुम्हारे सब दुःख अपने भक्तों का दूर कर देते हैं मैं आपको उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाला तीनों लोकका जानकर दण्डवत् करताहूं यह सुनाकर नवें योगीश्वर ने कहा हे राजन् सतयुग में दशहजार वर्ष तप करने से परमेश्वर प्रसन्न होते थे व बीच त्रेता के हजार वर्ष तप करने से मनुष्य फल पाता था व द्वापर में सौ वर्ष पूजा व ध्यान करने से मनुष्य का मनोरथ पूर्ण होता था व

कलियुग में एक दिन रात मनुष्य परमेश्वर को सचे मनसे एक चित्त होकर याद व ध्यान करै तो नारायणजी प्रसन्न होकर उसकी इच्छा पूर्ण कर देते हैं इसलिये सब योगी व मुनि तप व जप करनेवालों को यह इच्छा रहती है कि एक बेर हमारा जन्म भी बीच कलियुग के भरतखण्डमें होता तो थोड़ा परिश्रम करने में परमेश्वर का दर्शन पाते सो हे राजन् हमको इस बातका बड़ा पछिताबा है कि कलियुगवासी ऐसे सहज में मिलने वाले परमेश्वर को नहीं याद करते व वैकुण्ठनाथ ने गीता में अपने मुखारविन्द से कहा है कि जो कोई अपने को मनसा वाचा कर्मणा से मुझे सौंपि देवै उसको संसार में किसीतरहका दुःख व भय नहीं होता इतनी कथा सुनाकर नारदमुनिने कहा हे वसुदेव जब योगीश्वरों ने यह सब ज्ञान राजा जनक से कहा तब राजा ने विधिपूर्वक उन योगीश्वरोंकी पूजा व परिक्रमा करके बिदा किया व अपने मनसे राज्य व परिवार व धनकी प्रीति छोड़कर उसी ज्ञान के प्रतापसे सदेह वैकुण्ठ में गया सो तुम भी इसी ज्ञानपर विश्वास रखकर हरिचरणों का ध्यान करो तुम्हारी मुक्ति होजावेगी हे वसुदेव जब वैकुण्ठनाथ ने तुम्हारे घर पुत्र होकर अवतार लिया व तुम अपने प्राणसे अधिक उनको चाहते हो तब तुम्हारे भवसागर पार उतरने में क्या संदेह है पर उनको अपना बेटा जानना छोड़कर आदि-पुरुष भगवान् समझो उन्होंने केवल पृथ्वीका भार उतारने व हरिभक्तों को सुख देने वास्ते संसार में अवतार लिया है व मैं उन्हीं का दर्शन करने वास्ते सदा यहां आताहूं जब यह ज्ञान नारदमुनि से सुनकर वसुदेव व देवकी को विश्वास हुआ कि श्रीकृष्णजी परब्रह्म परमेश्वरका अवतार हैं तब दोनों मनुष्य उनके चरणोंपर गिरपड़े व पुत्रभाव छोड़कर परमेश्वर समान उनको समझने लगे व नारदमुनि वैकुण्ठनाथ से बिदा होकर ब्रह्मलोक को चलेगये शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जो कोई इस अध्याय को विधिपूर्वक कहै व सुनैगा वह सब पापों से छूटकर मुक्तिपदवी पर पहुँचैगा ॥

छठवां अध्याय।

ब्रह्मादिक देवताओं का श्रीकृष्णजी के पास आना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित नारदमुनि के जाने उपरान्त एकदिन श्रीकृष्णजी सुधर्मा सभामें बैठे थे उससमय ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व कुबेर व वरुण व दक्षप्रजापति आदिक देवता व ऋषीश्वर श्यामसुन्दर सगुणरूपका दर्शन करने वास्ते आकाशमार्गसे द्वारकामें आये व नन्दन बाग के फूल उनपर बर्षाये व दण्डवत् करके हाथ जोड़कर श्रीकृष्णजी से विनय की हे महाप्रभु जिन चरणों का ध्यान बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वर आठोंपहर अपने हृदय में रखकर मुक्ति पदवी पाते हैं उन्हीं तीर्थरूपी चरणों का दर्शन करनेवास्ते हमलोग आनकर भवसागर पार उतरना चाहते हैं हे निर्गुण निराकार आप सब जगत् के उत्पन्न व पालन व नाश करने वाले हैं व संसारी लोग यज्ञ व तप व ध्यान व तीर्थ करनेपर भी हरिच-रणों की भक्ति किये विना संसार व परलोकका सुख नहीं पाते व जबतक तुम्हारी दया से पूर्वजन्मका पुण्य सहाय नहीं होता तबतक तुम्हारे च-रणों में प्रीति न होकर हरिकथा में चित्त नहीं लगता व हम लोगों के विनय करने से आपने मर्त्यलोक में सगुण अवतार लेकर पृथ्वी का भार उतारा व एकसौ पचीस वर्ष संसारमें रहकर साधु व वैष्णवों को सुख दिया व अधर्मी व दुःखदायी राजाओं को मारकर धर्मकी रक्षा की हे त्रिभुवन-पति अब दुर्वासाऋषीश्वर के शापसे छप्पन करोड़ यदुवंशी इसतरह जल रहे हैं जिसतरह वृक्ष सूखकर भीतर से खुखला होजाता है आप सब जीवों के मालिक हैं जैसा उचित होवै वैसा कीजिये यह सुनकर श्यामसुन्दर बोले हे ब्रह्मा मैंने तुम्हारी इच्छा जान ली कंस व जरासंध व कालयवन आदिक अधर्मी राजा व दैत्योंको मारकर कौरवों व पाण्डवों से महा-भारत कराके पृथ्वीका भार उतार चुकाहूं केवल यदुवंशियों का नाश करना और रहगया है सो थोड़े दिनमें उनका भी नाश कराके वैकुण्ठ में आनपहुँचताहूं तुमलोग अपने अपने स्थानपर चलो यह सुनकर ब्रह्मा-दिक देवता उनसे बिदा होकर अपने अपने लोकको चलेगये व त्रिभु-

वनपति ने गोलोक को जाना विचारकर एक दिन राजा उग्रसेन की सभामें यदुवंशियों से कहा इनदिनों ब्राह्मण के शाप देने से द्वारकापुरी में नित्य नये नये अशकुन होते हैं इसलिये सब किसीको प्रभासक्षेत्र में चलकर स्नान व दान व यज्ञ व होम वहांपर करके यह दोष छुड़ाना चाहिये जिस तरह समुद्र में रहने से चन्द्रमा का क्षयीरोग छूट गया था उसी तरह प्रभासक्षेत्र में नहाने व दान करने से तुम्हारा दोष भी छूट जायगा जब राजा उग्रसेन आदिक सब यदुवंशी श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार प्रभासक्षेत्र में जानेवास्ते तैयारी करने लगे तब उद्धव भक्तने जो लड़कपन से उनका मित्र व सेवक था दण्डवत् करने व परिक्रमा लेने उपरान्त आंखों में आंसू भरकर त्रिभुवनपति से विनय की कि हे महाप्रभु यदुवंशियोंको प्रभासक्षेत्र में जाने से मैं जानताहूं कि आप उनका वहां नाश कराके वैकुण्ठको पधारेंगे नहीं तो तुम्हारे तीर्थरूपी चरणोंका ध्यान करने से हजारों शाप छूटजाते हैं उनको वहां भेजने का क्या प्रयोजन है जिस तरह बालापन से मैं आजतक तुम्हारी सेवामें रहा उसी तरह मुझे अपने चरणों से बिलग न करके साथ लेचलो व ऐसा वरदान देव कि किसी योनि में मेरा जन्म हो पर तुम्हारे कमलरूपी चरणोंकी भक्ति व प्रीति मेरे हृदय में बनीरहै ॥

सातवां अध्याय।

श्यामसुन्दर का उद्धव से ज्ञान कहना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जब उद्धव ने श्यामसुन्दर के साथ चलने वास्ते बहुत बिनती की तब जगत्पालने उसे अपना भक्त व मित्र जानकर कहा हे उद्धव सच है यदुवंशीलोग दुर्वासा ऋषीश्वर के शापसे जलरहे हैं आजके सातवें दिन सब यदुवंशियों का नाश होकर द्वारका समुद्र में डूब जावैगी व ब्रह्मादिक देवता मुझे बुलाने आयेथे इसलिये मैं भी साथ योगाभ्यासके तनु अपना त्यागकर वैकुण्ठको चला जाऊंगा सो तुमको भी उचित है कि पहिले से विरक्त होकर मेरे चरणों में ध्यान लगावो मैंने ब्राह्मण के शापसे तुम्हें छुड़ादिया व हे उद्धव मेरे जाने उपरान्त धर्म संसार से उठ

जायगा यह वचन सुनतेही उद्धव रोकर बोला हे त्रिभुवनपति मैंने विना ज्ञान पाये संसारी मोह छोड़ दिया तो विरक्त होने से क्या लाभ होगा इसलिये दयालु होकर ऐसा ज्ञान उपदेश कीजिये जो मरते समय तक न भूलै यह सुनकर द्वारकानाथ ने कहा हे उद्धव संसार में जो तुम देखते व सुनते हो सबको झूठा व्यवहार समझकर मन अपना हमारे चरणों में लगावो जब तुम संसारीवस्तु नाश होनेवाली से प्रेम तोड़कर मेरे अविनाशी रूपका ध्यान सच्चे मनसे करोगे तब तुम्हें मेरी माया नहीं व्यापैगी और तुम मुझे आठों पहर अपने पास देखोगे जिसतरह पौशालेपर अनेक मनुष्य इकट्ठे होकर पानी पीने उपरांत बिलग बिलग होजाते हैं उसी तरह माता व पिता व स्त्री व पुत्र थोड़े दिन साथ रहकर अन्त समय चार पगभी मरनेवाले के साथ नहीं जाते अपने स्वार्थ व जगत् को दिखलाने वास्ते चार दिन रो लेतेहैं इसलिये उनका प्रेम स्वप्नके समान झूठा समझना चाहिये केवल ज्ञान व वैराग्य व पाप व पुण्य अपने साथ जाकर उसी से दुःख व सुख प्राप्त होता है इसलिये मनुष्यको चाहिये कि अपना मरना आठों पहर याद रखकर कुकर्मों से डरता रहै व सब जड़ व चैतन्य में मेरा प्रकाश बराबर समझकर किसी जीवको दुःख न देवै जिसतरह दिन रात बदला करतेहैं उसीतरह संसारमें उत्पन्न होने व मरनेकी गति होकर यह बात कोई नहीं जानता कि मरने उपरांत कौन योनिमें हमारा जन्म होगा यह ज्ञान सुनकर उद्धवने विनय की कि हे वैकुण्ठनाथ अन्तर्यामी स्त्री व पुत्रका मोह छोड़कर विरक्त होना बहुत कठिन है मुझ अज्ञानपर दयालु होकर कोई ऐसा सहज उपाय बतलाइये जिसमें संसारी माया छूटकर तुम्हारे चरणों में भक्ति उत्पन्न होवे मुझे ज्ञानरूपी नौकापर बैठाकर भवसागर पार उतार दीजिये यह सुनकर श्यामसुन्दर बोले हे उद्धव जिसतरह हवा किसी वस्तुसे मिलावट न रखकर बिलग रहती है उसी तरह तुम भी सब वस्तु भली व बुरी को इस शरीर से अलग समझकर संसारी माया छोड़देव देखो जैसे चन्द्रमा की कला नित्य घटती बढ़ती है वैसे यह शरीर बालापन व तरुणाई व बुढ़ापा भोगकर सदा एक तरह पर नहीं रहता

जिस तरह सूर्यदेवता अपना प्रकाश पृथ्वी व पहाड़ व पानी पर बराबर रखकर किसीके साथ कुछ प्रेम नहीं रखते उसी तरह तुमभी सबकी प्रीति छोड़कर मन अपना विरक्त करलेव जैसे कबूतर व कबूतरी अपने बच्चोंकी प्रीति में फँसकर नष्ट हुये थे वैसे संसारीलोगभी स्त्री व पुत्र का प्रेम रखने से दुःख उठाते हैं यह सुनकर उद्धव ने विनय की महाराज उन दोनों पक्षियों की कथा विस्तारपूर्वक कहिये कृष्णमूर्तिने कहा हे उद्धव एक कबूतर अपनी मादी व बच्चों समेत वृक्षपर रहकर जिस तरह राजा इन्द्र इन्द्राणी से विलास करता है उसी तरह वहभी अपनी मादीसे खोते में भोग करके सुख उठाता था जब एकदिन वह कबूतर अपने बच्चे अकेले छोड़ कर मादीसमेत चारा लेनेवास्ते चलागया तब बहेलिये ने वहां आयकर उन बच्चोंको जालमें फँसालिया जब वह कबूतर व कबूतरी यह हाल बच्चों का देखकर प्रेमवश आप उस जालमें कूदपड़े तब वह बहेलिया सबको फँसाकर अपने घर लेगया देखो जिसतरह उन दोनोंने बच्चोंकी प्रीति से जालमें कूदकर अपना प्राण दिया व बच्चों ने कुछ सहायता उनकी नहीं की उसीतरह संसारी लोग स्त्री व पुत्रके मोहमें फँसकर नरक भोगते हैं तब वहांपर कोई उनकी सहायता नहीं करता इसलिये उन लोगोंके वास्ते जो दुःख में कुछ काम नहीं आते दुःख उठाना व अपना परलोक बिगाड़ना उचित नहीं है हे उद्धव पिछले युगमें यदु नाम राजा ज्ञान सीखने की अभिलाषा रखकर अनेक योगी व ऋषीश्वरों के पास जाया करता था एक दिन उसी चाहना में गोदावरी के किनारे चलागया सो वहां पर दत्तात्रेय नाम ब्राह्मण अति तेजवान् रूपको बैठे देखकर सुखपाल से उतर पड़ा व दण्डवत् करने व परिक्रमा लेने उपरांत हाथ जोड़कर विनय की हे ईश्वरको पहुँचे हुये महात्मा पुरुष इस तरुणाई में इतनी पदवी तुमने कहां से पाई तुम्हारा तेज देखने से मालूम होताहै कि आप बड़े ज्ञानी होकर अपने गुणको छिपाये हैं व संसार में रहने पर भी कुछ वस्तु अपने पास न रखकर इसतरह संसारसे विरक्त दिखलाई देते हो जिसतरह कमल का फूल पानीमें उत्पन्न होकर जलसे बिलग रहताहै व संसारी मनुष्यों

को देखताहूं कि काम क्रोध मोह लोभकी अग्नि में जलकर एक क्षण सुखसे नहीं रहते व आप इस तरह आनन्दमूर्ति दिखलाई देतेहैं जिसतरह हाथी ज्येष्ठ महीने की धूप का मारा हुआ जलमें जाकर ठण्ढा व मग्न होजाताहै इसलिये तुमसे विनय करताहूं कि जो कुछ ज्ञान व परमेश्वर की महिमा आपको मालूम हो सो दयालु होकर मुझे बतलाइये यह वचन सुनतेही दत्तात्रेयने उसकी ओर देखा व हँसकर कहा हे राजन् मैंने चौबीस गुरु अपने समझकर जो कुछ ज्ञान उनसे सीखाहै वह कहताहूं सुनो व पचीसवां गुरु मेरा यह शरीरहै जब मैंने अपने शरीरको विचारकर देखा तब मालूम हुआ कि इस तनुमें मल व मूत्र व रक्त व मांस अशुद्ध वस्तु भरी होकर सिवाय लेने नाम परमेश्वर व करने शुभ कर्म के दूसरी वस्तु उत्तम नहीं है किसवास्ते संसारी मायामें फँसकर जन्म अपना वृथा बिताऊं जब यह समझकर परमेश्वरका भजन व स्मरण करनेवास्ते अकेला अपने घरसे बाहर निकला व बौड़हों के समान चारों ओर फिरनेलगा तब लड़कों ने मुझे बौड़हा समझकर पीछे पीछे फिरना व पत्थर मारना व गाली देना आरम्भ किया व सिवाय चौबीस गुरुके जिसने मुझे गायत्री मंत्र उपदेश किया था उसे बिलग समझना चाहिये सो पहला गुरु मेरा पृथ्वी होकर उससे तीन बातें मैंने सीखीहैं मैंने एक पहाड़को देखा कि धरती से ऊँचा रहकर अनगिनत मनुष्य व पशु पक्षी आदिक जीवोंको अपने ऊपर रहने व चलने आंधी व बर्षने पानी के वह अपने स्थानसे नहीं हिलता तब मैंने विचारा कि ज्ञानीको भी संसारीमाया व चाहनामें जो हवा व पानी के समान है लपट कर अपनी जगहसे हिलना न चाहिये किसवास्ते कि तनु मनुष्यका मूठी भर मिट्टी का बनकर आयुर्दा हवाके समान बीती जाती है दूसरे वृक्षोंको देखा तो पृथ्वी में उत्पन्न होकर अपनी छाया व फल व फूलसे सब जीवोंको सुख देतेहैं व एक पैरसे खड़े रहकर वर्षाऋतु व गर्मी व सर्दीका दुःख उठाने परभी अपने स्थान से नहीं हिलते एक दिन मैंने घरसे निकलकर क्या देखा कि बहुत मनुष्य वृक्षकी छाया में बैठे थे जब वहां से ठंढे होकर जाने लगे तब किसी ने उसकी डाली व

किसीने पत्ता व फल तोड़ लिया पर वह वृक्ष कुछ नहीं बोला यह हाल उसका देखकर मैंने अपने मनमें कहा कि ज्ञानी मनुष्यों को अपना तनु व धन परोपकारके वास्ते समझकर अपना प्राणतक देने में मुकरना न चाहिये किसवास्ते कि यह शरीर मिट्टी का पुतला सदा बनता व बिगड़ता रहताहै इससे क्या उत्तम जो दूसरे के काम आवे तीसरे हमने पृथ्वी को देखा कि संसारी लोग उसकी छातीपर लात रखते हैं पर वह किसी को भला व बुरा नहीं कहती सो हमने बिचारा कि ज्ञानी मनुष्य को भी किसीकी स्तुति करने से प्रसन्न होना व दुर्वचन कहने में खेद मानना न चाहिये दूसरा गुरु मेरा हवा है मैंने हवाको सुगन्धित फूल व लहसुन आदिक दुर्गन्ध दोनोंमें बहते हुये देखकर अपने मनमें कहा ज्ञानी मनुष्य कोभी जो कुछ मीठा व कडुवा कर्मानुसार मिले वह खाकर आनन्दपूर्वक स्मरण व ध्यान परमेश्वरका करै व कुछ स्तुति व निन्दा उसकी न करै तीसरा गुरु मेरा आकाश है जिसतरह गूलरका फल भीतर से खोखला हो कर उसमें छोटे छोटे मच्छड़ भरे रहते हैं उसी तरह पृथ्वी व आकाश गोल होकर उसके भीतर सब जीव जड़ व चैतन्य वास करते हैं सो हमने इस ब्रह्माण्ड में क्या देखा कि प्रकाश सूर्यका बीच बर्तन चांदी व सोना व मिट्टीके पानी भरेहुयेमें बराबर पड़कर उसको किसीसे मिलावट व आश्रय नहीं रहता व बर्तन तोड़ने व पानी गिरानेसे वह प्रकाश फिर सूर्य में मिल जाताहै व बर्तनों में छाया पड़नेसे कुछ तेज उनका घट नहीं जाता यह हाल देखकर हमने जाना कि परमात्मा पुरुषको जिनकी शक्ति चौरासी लाख योनिमें रहती है आकाशके प्रमाण समझना चाहिये इसलिये जीवों के मरने में उनकी कुछ हानि न होकर वे अपने तेज से एक जगह प्रकाशित रहते हैं व उनकी शक्ति सब जीवों में रहने से कुछ उनका तेज कम नहीं होजाता चौथा गुरु मेरा पानी मोतीके समान उज्ज्वल होकर किसी जगह मैला जो दिखाई देता है वह कारण मिट्टी व राख आदिक मिलने का समझना चाहिये नहीं तो वह उज्ज्वल व पवित्र होकर सब जगत् को शुद्ध कर देताहै उसे हमने देखकर समझा कि ज्ञानी को भी

पानी के समान शुद्ध रहकर अपने पास बैठनेवालों को ज्ञान उपदेश करके पवित्र कर देना चाहिये जिसमें सब छोटे बड़े उसको अच्छा कहें पांचवां गुरु मेरा अग्नि है जिस में सब वस्तु डालनेसे जलजाती हैं व दूसरे दिनके वास्ते कुछ नहीं रहतीं व जो लोग अग्निमें यज्ञ व होम करते हैं उनका पाप जलकर छूट जाता है उसी तरह ज्ञानी को भी चाहिये कि जो कुछ उसको मिले उसी दिन सब खर्च करडाले दूसरे दिनके वास्ते कुछ न रक्खे व जो कोई उसे खिलादे वह खाकर अपने आशीर्वाद से खिलानेवालेका पाप छुड़ादेवे छठवां गुरु मेरा चन्द्रमाहै जिसतरह चन्द्रमा सदा एकरूप रहकर सूर्य के समीप व दूर होने से उसका तेज घटता व बढ़ताहै उसी तरह जन्म लेना व मरना संसारमें होकर वह परमात्मा पुरुष जिसका प्रकाश चौरासी लाख योनि में रहता है सबसे बिलग व सदा एकरस रहता है इसलिये हमने अपना गुरु परमात्माको भी समझा व सातवां गुरु अपना सूर्यको मानकर उनसे दो वस्तु मैंने पाई एक तो जिस तरह आठ महीनेतक सूर्य देवता समुद्र व नदी आदिक का पानी सुखाकर चार महीने वर्षाऋतु में वह पानी बर्षा देते हैं उसी तरह ज्ञानी को चाहिये कि जो कुछ मिले उस वस्तुपर तृष्णा न रखकर किसीको दे डाले दूसरे यह कि बहुतसे बर्तन पानी भरकर धूप में धर दे तो सूर्यरूपी परछाहीं बीच उन बर्तनों के दिखलाई देती है पर अनेक सूर्य दिखलाई देनेसे सूर्य देवता बहुत नहीं होजाते इसलिये मैंने जाना कि परमात्मा पुरुष एक होकर केवल उनकी छाया सब जीवोंमें रहती है आठवां गुरु मेरा कपोत नाम पक्षी है जब वह अपने बच्चों के पालने वास्ते जाल में दाना चुगने गया व बहेलिया वहजाल उठाकर अपने घर चला आया तब हमने मनमें कहा देखो जिसतरह यह पक्षी अपने बच्चों के वास्ते जाल में फँसकर नष्ट हुआ उसी तरह ज्ञानी मनुष्य संसारी प्रीति रखने से दुःख पावेगा जितना कष्ट उस पक्षी ने एक दिन में उठाया उतना सुख हजार वर्षमें भी उसको प्राप्त नहीं होता इसलिये मैं स्त्री व पुत्रका प्रेम छोड़ कर अकेला बहुत प्रसन्न रहता हूं॥

आठवां अध्याय ।

दत्तात्रेयका राजा यदुसे ज्ञान कहना ॥

दत्तात्रेय ने कहा हे राजन् नवां गुरु मेरा अजदहा सर्प है कि जबसे उसने जन्म पाया तबसे उसी जगह रहकर कहीं भोजन ढूंढ़ने नहीं गया जब हरिणादिक पशु आनकर अपना सींग उसके अंगमें चुभावते थे तब वह एक दो को उठाकर निगल जाता था इसी तरह नित्य विष्णु भगवान् उसका पालन करते थे और वह सांप किसी दिन भूखे रहजाने पर भी सन्तोष रखता था उसे देखकर मैंने समझा कि ज्ञानी को भी गृहस्थों के द्वारे मांगने वास्ते जाना अपनी पति खोना है उसी दिन से मैं किसी के घरपर भोजन मांगने वास्ते नहीं जाता जो कुछ परमेश्वर विना मांगे भेज देते हैं उसे खाकर प्रसन्न रहता हूँ व उत्तम व मध्यम भोजनका स्वाद जिह्वातक रह कर पेट में जाने से मल होजाता है दशवां गुरु मेरा समुद्र है जो वर्षाऋतु में अनेक नदियोंके मिलने से कुछ न बढ़कर गर्मी व जाड़े में भी नहीं सूखता सदा एकरूप रहकर उसके आदि व अन्त को कोई नहीं देखता उसे देखकर मैंने बिचारा कि ज्ञानी को भी समुद्र की तरह निश्चिन्त रहना उचित है लाभ व हानि होने में कुछ हर्ष व खेद करना न चाहिये ग्यारहवां गुरु मेरा पतंग है जिस तरह वह दीपक पर मोहित होकर उससे मिलनेवास्ते बेधड़क जल मरता है उसी तरह संसारी जीव अपनी स्त्री व पुत्र व धनके मोह में फँसकर अन्त समय नरक भोगते हैं इसलिये ज्ञानी को स्त्री से प्रीति न रखकर पतंग के समान परमेश्वर से प्रेम करके अपना प्राण देना चाहिये जिस में मुक्ति पदार्थ मिले जब स्त्री से प्रीति करने में दोनों पंख ज्ञान व वैराग्य के जल जाते हैं तब वह पंगुल होजाने से वैकुण्ठ में नहीं पहुँच सक्ता नरक में पड़कर अनेक तरह का दुःख भोगता है इसवास्ते मायारूपी स्त्री से अलग रहकर कभी उसके पास अकेले में बैठना न चाहिये स्त्री व धन से सुख चाहने वाले लोग पतंग के समान जलकर नष्ट होजाते हैं व स्त्री के पास बैठने में ज्ञानी मनुष्य ऐसे अन्धे व बहिरे होजाते हैं कि उनको

अपना भला व बुरा न सूझकर किसी की लज्जा नहीं रहती यही बात समझकर मैंने स्त्री की संगति छोड़ दी बारहवां गुरु मेरा शहदकी मक्खी है एकबेर मैंने क्या देखा कि उसने बड़े परिश्रम से जो शहद छत्ते में इकट्ठा किया व कृपणता से आप उसे न खाकर किसी दूसरे को भी नहीं दिया था वह शहद एक मुसहर सब मक्खियोंको जलाकर छत्तेसे निकाल कर लेगया यह हाल देखकर मैंने विचार किया कि द्रव्य बटोरनेवालों की यही दशा होती है उस दिन से दूसरे रोज के वास्ते कुछ न रखकर सब खर्च कर डालता हूं सो ज्ञानी मनुष्य को अपने भोजन प्रमाण मांग कर अधिक लेना न चाहिये धन बटोरने से मक्खियों की तरह दुःख प्राप्त होता है तेरहवां गुरु मेरा हाथी है मैंने देखा कि हाथी फांसनेवालोंने वन में गड़हा खोदकर उसको सरहरी से पाटा व काले कागज का हाथी व हथिनी बनाकर उस पर खड़ाकर दिया जब एक जंगली हाथी उसे सच्ची हथिनी समझकर कामवश वहीं दौड़ता हुआ जाकर गड़हे में गिरपड़ा तब हाथी फांसनेवालों ने रस्सा से बांधकर उसको पकड़ लिया यह दशा हाथी की देखकर मैंने विचार किया कि ज्ञानी को स्त्री की चाहना करनी उचित न होकर कठपुतलीसे भी प्रीति रखना न चाहिये जिस तरह हाथी ने हथिनी के वास्ते गड़हे में गिरकर दुःख उठाया था उसी तरह परस्त्री-गमन करनेवाले नरक में पड़कर बहुत कष्ट पाते हैं चौदहवां गुरु मेरा मधुहा मक्खी के छत्ते से शहद निकालनेवाला है जो शहद भँवरे बहुत दिनों में इकट्ठा करते हैं उसको वह एक बेर निकालकर लेजाता है उसे देखकर मैंने बिचारा कि भँवरे उस शहद को खाजाते तो वह किस तरह लेने पाता इकट्ठा करनेवालों को सिवाय दुःखके कुछ सुख नहीं होता इस लिये ज्ञानी को चाहिये कि जो गृहस्थ बहुत लड़के बाले रखकर अपने यहां द्रव्य बटोरे हो उसके यहां से अपने प्रयोजन भर मांग लाकर भोजन कर लेवे झोली बांधकर लेचलने से राह में कोई छीन लेगा पंद्रहवां गुरु मेरा हरिण है जिस तरह वह राग सुननेवास्ते जाकर बाण लगने से घायल होता है उसी तरह संसारी मनुष्य मायारूपी स्त्री का गाना व

वचन सुनकर उसके वश होजाते हैं इसलिये ज्ञानी को अपने स्थान से उठ कर दूसरी जगह जाना व स्त्री का गाना सुनना उचित नहीं है सोलहवां गुरु मेरा मछली है किसवास्ते लालच थोड़े से मांसादिक के जो कटिया में लगाकर अहेर खेलते हैं अपना प्राण देती है सो एक मछली को कटिया में फँसे हुये देखकर मैंने समझा कि ज्ञानी मनुष्य को भी उत्तम भोजन ढूंढ़ना उचित न होकर जो कुछ भला बुरा परमेश्वर की इच्छा से मिल जावे उसे खाकर पंचभूतात्मा व अपनी जिह्वा को वश में रक्खै जिसमें उसको बड़ाई मिले सत्रहवां गुरु मेरा पिंगला नाम वेश्या है एक दिन हमने राजा जनक के नगर में जाकर क्या देखा कि पिंगला वेश्या सोलहों शृंगार करके सन्ध्या समय में बीच इच्छा आवने किसी व्यसनी के आधी रात तक अपने द्वारे पर बैठी रही पर कोई चाहनेवाला उसका नहीं आया तब वह बहुत उदासी से अपने भीतर जाकर शय्या पर लेट रही पर कामरूपी मद में उसको नींद न आकर ऐसा ज्ञान उत्पन्न हुआ जैसा किसीको दशहजार वर्ष तक ध्यान करनेसे भी नहीं मिलता उस वेश्या ने मनमें बिचारा देखो बड़े शोच की बात है कि मैंने जन्म अपना वृथा खोकर स्मरण व ध्यान त्रिभुवनपति जगत्पालक का नहीं किया व परमात्मा पुरुष सच्चे मित्र का प्रेम छोड़कर संसारी मनुष्य झूंठे चाहनेवालों से प्रीति लगाई मेरे बराबर कोई दूसरा मूर्ख न होगा जैसा मैंने अपने साथ किया वैसा कोई अन्धा भी नहीं करता कि अपने मालिक को जो शरीर में वर्तमान है भूलकर नहीं देखा जिस तरह यह शरीर हवा व पानी व मिट्टी व हड्डी व मांस से बनकर नाशरूपी रस्सियों से बँधा है उसीतरह चरखा काठका डोरा से बँधा रहकर घूमताहै जैसे मकानमें अनेक द्वारे रहते हैं वैसे शरीरमेंभी नवद्वारे नाक व कानआदिक रहकर हरएक द्वारसे अशुद्ध वस्तु निकलती है सो मैंने चाहा कि इस घर में प्रसन्न रहूं अब मैंने जाना कि इस झूठे संसारमें सिवाय दुःखके कुछ सुखप्राप्त नहीं होता और केवल परमेश्वर का स्मरण व ध्यान करने व कथा सुनने से लोक व परलोक बनता है जितना मैं रुपया लेनेवास्ते जो मरने उपरांत काम

नहीं आता अपने व्यसनी को रिझाती थी उतना शृंगार करके त्रिभुवन-पति को लोभाती तो मेरा परलोक बनजाता देखो जो लोग मायारूपी रस्सी से बँधे होकर अपने दुःख में आप व्याकुल हैं उनसे मूर्खताई की राह अपना सुख चाहकर ज्ञान व वैराग्य संसारी बन्धन काटनेवालों से प्रीति नहीं लगाई इसलिये आज मैंने संसारी माया छोड़कर यह प्रण किया कि आदिपुरुष भगवान्‌से जो वैकुण्ठका सुख देनेवाले हैं प्रीति लगा कर उनके साथ विहार करूं व संसारी मनुष्यकी ओर जो विपत्ति में काम नहीं आते आंख उठाकर न देखूं व सिवाय परमेश्वर के और किसी से कुछ वस्तु न मांगूं किसवास्ते कि महात्मा लोगोंने ऐसा कहाहै कि मनुष्य जिस वस्तु की इच्छा रखता हो नारायणजी से मांगे और दूसरे किसी से कुछ इच्छा न करे परमेश्वर सब वस्तु अपने यहां रखकर यह चाहते हैं कि कोई हमसे कुछ मांगे व संसारी मनुष्य ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो सबकी इच्छा पूर्ण करसके कदाचित् ऐसा कहूं कि कोई व्यसनी न आने व द्रव्य न मिलने से यह ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ सो इस तरह कई बेर मेरे स्थानपर व्यसनी न आनकर मुझे उपास होगया था न मालूम कौन जन्म का पुण्य सहाय होने से आज यह ज्ञान मेरे मनमें आया हे राजन् वह वेश्या तीन पहर रात बीतेतक ज्ञानभरी बात विचार करतीहुई शय्यापर सो रही व उसी दिनसे अपना उद्यम छोड़कर हरिचरणों का स्मरण व ध्यान करने लगी इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित यह सब ज्ञान उस वेश्याको दत्तात्रेय के दर्शन मिलने से प्राप्त हुआ था पर वह यह बात नहीं जानती थी दत्तात्रेय ने कहा हे राजन् यह हाल पिंगलाका देखतेही मैं भी उसी दिनसे संसारी माया छोड़कर बीच स्मरण व ध्यान परमेश्वर के मग्न रहताहूं संसारी वस्तु की चाहना रखने में बड़ा दुःख होकर तृष्णा छोड़ देने व हरिभजन करने से इस तरह सुख व मुक्तिपदार्थ मिलता जिसतरह वह वेश्या अपने व्यसनी की प्रीति छोड़कर भवसागर पार उतर गई ॥

नवां अध्याय।

राजा यदुसे दत्तात्रेय का ज्ञान कहना॥

दत्तात्रेयने कहा अठारहवां गुरु मेरा चील्ह है एकदिन हमने देखा कि एक चील्ह मांसका टुकड़ा अपने चंगुल में लिये हुये उड़ी जाती थी जब दूसरी कई चील्हें वास्ते छीनने टुकड़ा मांसके उसको चोंच व चंगुल से मारनेलगीं तब उस चील्हने मनमें कहा देखो मुझे इन चील्हों से कुछ शत्रुता नहीं है केवल मांसके टुकड़े के वास्ते यह सब मुझे मारती हैं जब ऐसा समझकर उसने वह टुकड़ा गिरादिया तब दूसरी चील्हें जो मारती थीं चलीगईं और वह चील्ह आनन्द से एक वृक्षपर बैठरही उसे देख हमने विचार किया कि धनादिक रखने से परिवारवाले व चोर व ठग मेरे साथ शत्रुता करेंगे इसलिये कोई वस्तु अपने पास न रखकर आनन्दपूर्वक परमेश्वर का भजन करतारहूं व उन्नीसवां गुरु मेरा अज्ञान बालक है जो काम व क्रोध व मोह व लोभ के वश न होकर इतना विरक्त रहता है कि मणि हाथ में रखता हो और कोई मनुष्य मेवा व मिठाई के बदले उससे वह रत्न मांगे तो देडाले व सिवाय खेलनेके दूसरा उद्यम नहीं रखता व अपने घर द्वार से कुछ प्रीति न रखकर ज्ञानियों की तरह विरक्त रहता है उसको देखकर मैंने समझा कि ज्ञानीको भी निर्लोभ रहकर कुछ तृष्णा रखनी न चाहिये संसार में दो मनुष्य एक बालक अज्ञान व दूसरा ब्रह्मज्ञानी प्रसन्न होकर और सब कोई दुःख व सुख में फँसे रहते हैं बीसवां गुरु मेरा कुमारी कन्या है एक दिन मैंने गृहस्थ ब्राह्मण के घर भीख मांगने वास्ते जाकर क्या देखा कि अकेली कुमारी कन्या वहां होकर और सब घरवाले कहीं बाहर गये थे उसी समय तीन मनुष्य दूसरे नगर से उसके विवाह का संदेशा लेकर वहांपर आये सो उस छोकरी ने सबको बड़े सन्मानसे बैठाला व चावल न तैयार रहने से आप कोठरी में जाकर मेहमानों के वास्ते धान कूटने लगी जब उस समय चूड़ियां उसकी बोलीं तब उसने विचारा कि ये लोग चूड़ियों का बोलना सुनकर कहैंगे कि इनके घर एक दिनके खाने वास्ते भी चावल नहीं हैं इस बात में लज्जा समझ

कर उसने दो दो चूड़ी हाथ में रखलीं और सब चूड़ी एक एक करके तोड़डालीं तिसपर भी बोलना उनका बन्द नहीं हुआ जब उसने एक एक और तोड़कर अकेली चूड़ी रहने दी तब बोलना चूड़ी का बन्द होने से धान कूटकर मेहमानों को भोजन खिलाया यह हाल देखकर मैंने समझा कि बहुत लोगों की संगति करने से आपस में झगड़ा होता है दो मनुष्य साथ रहने से भी अनेक वार्ता होकर हरिभजन नहीं बनपड़ता इसलिये ज्ञानीको किसी से संगति व प्रीति करनी उचित न होकर अकेले हरिभजन करना चाहिये इक्कीसवां गुरु मेरा तीर बनानेवाला है एक दिन हमने बाजार में तीर बनाने वाले की दूकान पर खड़े होकर क्या देखा कि वह तीर बना रहा था उसी समय राजाकी सवारी बड़ी धूमधाम से उस दूकान के सामने होकर दूसरी ओर चली गई थोड़ी देर उपरान्त राजा के एक नौकर ने जो पीछे रहगया था आनकर तीर बनाने वाले से पूछा कि राजाकी सवारी किधर गई है उसने उत्तर दिया कि मैंने राजाकी सवारी नहीं देखी यह बात सुनकर हमने तीर बनानेवाले से कहा अभी सवारी राजाकी धूमधामसे तुम्हारे सामने होकर चलीगई है किसवास्ते झूठ बोलते हो तब वह बोला हम तीर बनाने में लगे थे इसलिये कुछ ध्यान सवारी का नहीं किया उससमय हमने अपने मनमें कहा कि तुझे भी सब इन्द्रियों को वशमें रखकर इसी तरह नारायणजी का ध्यान करना चाहिये बाईसवां गुरु मेरा सांप है जो अपने रहने वास्ते घर नहीं बनाकर चूहों के बिलमें रहजाता है उसे देखकर मैंने विचार किया कि ज्ञानी साधुको भी घर बनाना उचित न होकर जहां रात होजावै वहां स्थान अपना समझना चाहिये तेईसवां गुरु मेरा मकड़ी है जो सूतके समान तार अपने मुखसे निकालकर फिर उसे खाजाती है उसको देखकर मैंने विचार किया कि परमेश्वर को भी इसी तरह जानना चाहिये कि चौरासी लाख योनि उनसे उत्पन्न व पालन होकर अन्तसमय जीवात्मा सबका उनके रूपमें समा जाता है इसलिये ज्ञानीको मनसा वाचा कर्मणा से बीच स्मरण व ध्यान घट घट व्यापक भगवान् के लीन रहना उचित है व चौबीसवां गुरु मेरा

भृंगी कीड़ा है जिसके डरसे दूसरे कीड़े उसीका रूप होजाते हैं उसको देखकर मैंने कहा कि ज्ञानी को भी चाहिये कि परमेश्वर में इस तरह मन लगावै जिसमें उन्हीं का स्वरूप होजावै यह सब ज्ञान कहकर दत्तात्रेय बोले जो कुछ ज्ञान इन चौबीसों गुरुओं से हमने सीखा था वह तुमको सुनादिया इस ज्ञानको तुम समझकर नारायणजी का स्मरण व ध्यान करो तुम्हारी मुक्ति होजावेगी हे राजन् चौरासी लाख योनि में बहुतसा शोच व दुःख उठाकर बड़ी कठिनता से मनुष्यका तनु मिलता है इसलिये यह तनु पाकर संसारीमाया मोहमें फँसना उचित नहीं है केवल परमेश्वर का तप व ध्यान करने वास्ते मनुष्य का तनु मिलता है सिवाय इस चोले के दूसरी योनि में परमेश्वर नहीं मिलसक्ते जो कोई मनुष्य तनु पाकर हरिभजन नहीं करता वह फिर चौरासी लाख योनि में जन्म लेकर बड़ा दुःख पाता है जब इस जीव ने मनुष्य तनु पाया तो ऐसा समझना चाहिये कि वह एक पैर अपना भवसागर पार उतरने की नौकापर रख चुका जिसने इस शरीरमें शुभ कर्म किया वह दूसरा पांव भी उस नौकापर रखकर भवसागर पार उतर जाताहै नहीं तो उस नावसे चौरासीलाख योनि में गिरकर बहुत दुःख पावेगा यह शरीर कभी दुबला रहकर कभी मोटा होजाता है इसलिये नाश होनेवाले तनुका कुछ मोह करना न चाहिये जो लोग स्त्री व पुत्र व द्रव्य व हाथी व घोड़ा आदिक को अपना जान कर यह समझते हैं कि अन्त समय ये सब मेरी सहायता करेंगे उनको अवश्य नरक भोगना पड़ता है यह मन चंचल जो अपने वश नहीं रहता इसे अवश्य अपने आधीन रखना चाहिये नहीं तो जिस तरह छः चोरोंने एक रत्न चुराकर भाग न लगने से आपस में झगड़ा करके फांसी पाई उसीतरह सब इन्द्रियां अपना अपना सुख भोगने वास्ते मनको अपनी ओर खींचकर उसे नरक में डालदेती हैं व अज्ञान मनुष्य उनके वश हो कर बहुत दुःख पाता है जिस तरह संसारमें कोई स्त्री रखनेवाले नष्ट होते हैं उसी तरह मन चंचल व नाक व जिह्वा व लिंगादिक इन्द्रियों के वश होकर दुःख पाता है पहिले परमेश्वर ने पशु व पक्षी व वृक्षादिक उत्पन्न

करने से सन्तुष्ट न होकर जब मनुष्य का तनु बनाया तब आनन्द होकर कहा कि इस शरीर में ज्ञान प्राप्त होनेसे जीवन्मुक्तपदवी पर पहुँचैगा इस लिये मनुष्यतनु केवल भगवत् भजन करनेवास्ते होकर मनुष्य को संसारी मायामें लपटना न चाहिये पेट भरना व भोग करना दूसरी योनिमें भी प्राप्त होसक्ताहै पहिले से पानी भरा हुआ आग बुझावने के काम आनकर आग लगने के समय कुआं खोदने व पानी भरने में वह बुझने नहीं सक्ती हे राजन् मैं परमेश्वर का चमत्कार सब जीवों में बराबर समझकर प्रसन्न रहताहूं सो तुम्हें व सब संसारी जीवों को भी इस तनु में मुक्ति मिलने वास्ते उपाय करना उचित है नहीं तो पीछे सिवाय पछिताने के कुछ हाथ नहीं लगेगा हे उद्धव दत्तात्रेय यह सब ज्ञान राजासे कहकर तीर्थयात्रा करने चलेगये व राजा यदु उसी ज्ञानके प्रतापसे मुक्तपदवीपर पहुँचा सो तुमभी वही ज्ञान मनमें दृढ़ रखकर संसारी प्रीति छोड़देव ॥

दशवां अध्याय।

श्यामसुन्दर का उद्धव को ज्ञान सिखलाना ॥

श्रीकृष्णजीने कहा हे उद्धव संसारी मनुष्यको चाहिये कि अपने वर्ण व आश्रम का धर्म शास्त्रानुसार रखकर किसी बात की चाहना न करे यज्ञ व श्राद्धादिक देवकर्म व पितृकर्म करके गुरुकी सेवामें प्रीति रखकर गुरु का वचन सच्चा माने जब तुम मन अपना संसारी मायासे बटोरकर एकचित्त करोगे तब गुरुका उपदेश तुम्हारे हृदय में प्रवेश करेगा देखो यह शरीर शुभ व अशुभ कर्म करके अनेक जन्म पाता है इसलिये मनुष्यतनु में आत्मा को शरीर से अलग समझकर संसारी सुख व व्यवहार को झूठा समझना चाहिये विना हरिभक्ति किये व आत्माको अंग से बिलग जाने मुक्ति नहीं होने सक्ती बालापन व तरुणाई व बुढ़ापा तीनों अवस्था शरीर में होकर आत्मा सदा एकरूप रहताहै व मनुष्य अपने अज्ञान से दुःख मानकर सुख प्राप्त होने का उपाय नहीं करता यज्ञ व तीर्थ आदिक शुभ कर्म करने के फलसे संसारी जीव देवलोक में जाकर सुख भोगते हैं अवधि बीतने उपरान्त फिर मृत्युलोक में जन्म पाकर अधर्म करने के बदले नरक

भोगना पड़ता है जब तक मुक्ति प्राप्त नहीं होती तब तक वह जीव आवागमन में फँसा रहने से अनेक तरहका दुःख पावताहै इसलिये भव-सागर पार उतरनेवास्ते सिवाय हरिभजन व सत्सङ्ग के दूसरा उपाय उत्तम नहीं होता और जो तुम कहतेहो कि हमको अपने साथ ले चलो जिसमें तुमसे बिलग न हों हे उद्धव ज्ञान प्राप्त होने से वियोग का दुःख नहीं होता व तुम संसार में इन जीवोंको जो देखते हो ब्रह्मासे लेकर चींटीतक ये सब मृत्युका ग्रास हैं व मैं जन्म व मरणसे रहित होकर जब पृथ्वी का भार उतारनेवास्ते अवतार लेताहूं तब मुझे भी निर्गुणरूप त्याग करना पड़ता है इसलिये तुम्हें चाहिये कि सदा मन अपना मेरे भजन व स्मरण में लगाये रहकर बीच ध्यान हरिचरणों के लीन रहो तो वियोग का दुःख तुम्हारे हृदयमें नहीं रहैगा हे उद्धव जगत् में ज्ञान व अज्ञान दो बात प्रकट होकर जे लोग ज्ञानी हैं वे इस शरीर को वृक्षके समान जानकर उसपर दो पक्षी बैठेहुये समझते हैं उनमें एक पक्षी थोड़ा भोजन करके सामर्थ्य अधिक रखताहै उसे परमात्मा समझना चाहिये जो काम व क्रोध व मोह व इन्द्रियों के सुखसे कुछ प्रयोजन नहीं रखता व दूसरा पक्षी बहुत खानेपरभी निर्बल रहकर संसारी सुखमें प्रसन्न रहताहै उसे जीवात्मा समझना चाहिये व स्त्री व द्रव्य व सुख मिलने से प्रसन्न होकर उसके वियोग में दुःख पाता है और यह नहीं समझता कि हानि व लाभ व दुःख व सुख परमेश्वर की इच्छा-नुसार होकर उसमें दूसरे का कुछ वश नहीं चलता हे उद्धव संसारी मनुष्य के भवसागर पार उतरने वास्ते जो उपाय करना चाहिये सो कहते हैं सुनो मनमें किसी बातका अभिमान रखना व दुर्वचन कहना व दूसरेको धनपात्र देखकर डाह करना व विना प्रयोजन अधिक बोलना व स्त्री व पुत्रोंसे बहुत प्रीति करनी उचित न होकर परमात्माको शरीरसे अलग समझना न चाहिये जिस तरह काठमें आग छिपी रहकर उपाय करनेसे प्रकट होती है और काठ जलादेने से वह अग्नि उससे बिलग होकर फिर उसके साथ नहीं रहती उसी तरह प्रकाश परमेश्वर का सब जीवों में रहकर जब वे अपनी शक्ति शरीरसे खींचलेते हैं तब मरजाता है वह लोथ जलादेने से आत्माको कुछ

दुःख नहीं पहुँचता व परमात्मा का प्रकाश सब जीवों के तनुमें एकसा देखने से कुछ डर न होकर भेद समझने में अनेक तरहका भय लगा रहता है इसलिये आत्माको सब जगह बराबर जानकर संसारी मायासे छूटने वास्ते आठों पहर उपाय करना चाहिये हे उद्धव इस तरह का ज्ञान रखने वाला मनुष्य अवश्य मुक्त होता है॥

ग्यारहवां अध्याय।

श्यामसुन्दर का उद्धवको ज्ञान सिखलाना॥

केशवमूर्तिने कहा हे उद्धव संसार में दुःख व सुख मायाके गुणोंसे होकर मुझे वह माया नहीं व्यापने सक्ती जिस तरह स्वप्नमें कोई मनुष्य अनेक तरहका हर्ष व विषाद देखकर जागने उपरान्त सब झूठा समझता है उसी तरह संसारी व्यवहार झूठा होकर परमेश्वर की माया से सच मालूम होता है व जीवात्मा सबके तनुमें मेरी शक्ति होकर जबतक वह जीव मुझे नहीं पहिंचानता तब तक मुझसे बिलग रहता है व मेरा भेद जाननेवाले इस तरह मेरे स्वरूपमें लीन होजाते हैं जिस तरह शीशे में अपनी परछाहीं दिखलाई देकर उसको उलटने से फिर वह रूप नहीं देख पड़ता व मूर्ख मनुष्य शीशा अज्ञान के हाथ में रखकर अपनेको मुझ से बिलग समझते हैं ज्ञानीलोग गृहस्थाश्रम रहने व सब जगत् का काम करनेपरभी मन अपना विरक्त रखकर संसारीजाल में नहीं फँसते ज्ञान व वैराग्य दोनों मुक्ति देनेवाले होकर अज्ञानी मनुष्य को सिवाय दुःख के कुछ सुख नहीं मिलता परमेश्वर के शरण जाने में ज्ञान प्राप्त होकर उन से विमुख रहनेवाले ज्ञान नहीं पाते जिस तरह हवा सुगन्ध व दुर्गन्ध दोनों तरह की वस्तु में होकर बहती है पर दोनों से बिलग रहकर कुछ सुगन्ध व दुर्गन्धका प्रवेश उसमें नहीं होता उसी तरह ज्ञानी को भी किसी की बड़ाई करने में प्रसन्न होना व दुर्वचन कहने से खेद मानना न चाहिये जो लोग अपनी स्त्री व पुत्र व हाथी व घोड़ा आदिक का रोग देखकर मेरी माया लपटने से शोच करते हैं उनको मूर्ख समझना उचित है किस वास्ते कि उनके शोच करने से कुछ गुण नहीं निकलता सबको अपने

कर्मानुसार दुःख व सुख मिलता है इसलिये ज्ञानी को चाहिये कि हानि व लाभ व दुःख व सुख परमेश्वर की इच्छापर जानकर अपने को किसी बात में अगुआ न समझै जो कोई वेद व शास्त्र पढ़कर नारायणजी की भक्ति नहीं रखता उसका पढ़ना व्यर्थ है बूढ़ी व बांझ गाय का रखना व कर्कशा स्त्री व अधर्मी सन्तान का पालन करना धर्मकी राह है किसवास्ते कि उनसे कुछ प्राप्त नहीं होता व जो लोग धन पाकर दान व धर्म आदिक शुभ कर्म में खर्च नहीं करते व उसको अपना समझकर रख छोड़ते हैं उस द्रव्यका होना व न होना दोनों बराबर होकर उन्हें कुछ सुख नहीं मिलता इसलिये ज्ञानी को धन पाकर यज्ञ व तीर्थ व दान व धर्म में खर्च करके उसका फल परमेश्वर को अर्पण कर देना चाहिये जिसमें लोक व परलोक दोनों बन पड़ें इतना ज्ञान सुनकर उद्धव ने विनय की महाराज आपने त्रिभुवनपति होकर केवल हरिभक्तों को भवसागर पार उतारने वास्ते नरतनु धारण किया है सो दयालु होकर मुक्ति होनेका उपाय बतलाइये यह वचन सुनकर वैकुण्ठनाथने कहा हे उद्धव जो गृहस्थ संसारी काम करनेपरभी मन अपना मेरी तरफ़ लगाये रहकर मुझे अपना मालिक व उत्पन्न करनेवाला समझै व किसी का बुरा न चाहकर अधिक तृष्णा न रक्खै व अपने शरीर के समान मुझे प्यारा जानकर गुरु का बताया हुआ मंत्र जपे व हर्ष व शोच को बराबर समझकर काम व क्रोध व मोह व लोभ व भूख व प्यास के वश न होवै व सिवाय हरिभक्ति के दूसरी चाहना न रखकर ठाकुरपूजा व भजन में प्रीति करै व किसीके गाली देने से खेद न मानकर मेरी शक्ति सब जीवों में बराबर समझै व अपनी सामर्थ्य भर परोपकार करके परमेश्वर की लीला व कथा सुनने में मग्न रहै व सिवाय स्मरण व ध्यान सगुणरूप मेरेके दूसरा कुछ उद्यम न रक्खे देवस्थान उत्तम बनवाकर ठाकुर के पुष्प चढ़ाने वास्ते वाटिका लगवा देवे व जो कुछ धन घरमें हो उसे परमेश्वर का जानकर अपना न कहे व जो कुछ अच्छी वस्तु भोजनवास्ते मिले वह पहिले ठाकुरको भोग लगावै फिर उसमें ब्राह्मण आदिक चारों वर्ण व अपने कुल परिवारवालों

को थोड़ा थोड़ा देने उपरान्त आप खावे व प्रतिदिन सूर्य को दण्डवत् और अग्नि में होम करके ब्राह्मण को इच्छाभोजन खिलावे व अपनी सामर्थ्यभर दान व दक्षिणा दिया करै व गौ की सेवा आप करके सब जगह बीच जल व पृथ्वी व आकाश आदिक के हमारा चतुर्भुजीस्वरूप ध्यान में देखै व प्रतिदिन देवताओं के नाम होम व पितरों के नाम तर्पण करके तालाव व बावली व कुयें व धर्मशाला आदिक जीवोंके सुख पावने वास्ते बनवा देवे व गरीब मनुष्य व ब्राह्मणों का स्थान बनवाकर उनकी कन्या विवाहने वास्ते आप द्रव्य देवै और साधु व महात्माओं की सुधि खाने व पहिरने से लेकर इस बात का अभिमान मन में न ले आवे कि यह शुभकर्म हमने किया व दूसरे के सामने भी इसकी चर्चा व अपनी बड़ाई न करे जो लोग शुभकर्म करके अपने मुखसे कहते हैं जिह्वा में अग्नि देवता का वास रहने से उनका पुण्य जल जाता है हे उद्धव इस तरहका धर्म व कर्म रखनेवाले मनुष्य से मैं बहुत प्रसन्न रहता हूं पर विना सत्संग किये यह सब ज्ञान प्राप्त नहीं होता साधु व महात्मा की संगति करने व मेरे ध्यान धरनेसे मनुष्य ज्ञान पाकर भवसागर पार उतर जाताहै॥

बारहवां अध्याय।

वैकुण्ठनाथका उद्धवसे सत्संगका माहात्म्य कहना॥

श्रीकृष्णजी ने कहा हे उद्धव मैंने यज्ञ व तप व दान व धर्म व वैराग्य आदिक का हाल तुमको सुनाया अब संत्सग की महिमा जिससे भक्ति उत्पन्न होती है कहता हूं सुनो जैसा हमैं सत्संग प्यारा होकर भक्ति करने में जल्दी प्रसन्न होता हूं वैसा वेद पढ़ने व योगाभ्यास साधने व व्रत आदिक रखनेवालों से सुख नहीं पाता केवल सत्संग करने से मेरे चरणों में भक्ति उत्पन्न होकर संसारी जीव मुझे पहिचानते हैं और वे लोग जगत् में अपनी मनोकामना पाकर अन्तसमय आवागमनसे छूट जाते हैं देखो राजा बलि व बाणासुर व सुग्रीव व हनुमान् व जाम्बवन्त व जटायु व कुब्जा व व्रजवासी आदिक अनेक जीव मेरी भक्ति व दर्शन करने से भवसागर पार उतर गये व शबरी व निषाद आदिक अनेक जीव नीच

ऊंच जाति भक्ति करने से मुक्ति पदवी पर पहुँचे व गोपियों ने कुछ वेद व शास्त्र न पढ़ने व तीर्थ व्रत न करने व मेरी महिमा न जानने पर भी मुझे पतिभाव समझकर ऐसी प्रीति मेरे साथ की कि हमारे वियोग में उनको क्षण भर एक कल्प के समान मालूम होकर मेरे संग रास करती समय छः महीने की रात एक पलभर जानपड़ी थीं सो उन्होंने उसी प्रीति व भक्ति के प्रताप से लक्ष्मीरूप होकर वैकुण्ठवास पाया जिस तरह कोई जान व अनजान में अमृत पीने से अमर होकर उत्तम औषध खाने से सदा तरुण बना रहता है उसी तरह जाने व विना जाने मेरी भक्ति व प्रीति करनेवाले मनुष्य संसार में सुख पाकर जन्म व मरण से छूट जाते हैं जैसे तागे में दाने काठ व रुद्राक्ष व सोने आदिक के पिरोकर माला बनती है उसी तरह संसारी जीव मेरे स्वरूप में रहते हैं पर यह बात विना बतलाने गुरु व सुनने कथा व करने सत्सङ्ग के मालूम नहीं होती इसलिये संसारी मनुष्यको गुरुकी सेवा व भक्ति करनी व ज्ञानरूपी तलवारसे मायारूपी संदेह काटकर सब जीवों में परमेश्वरकी शक्ति बराबर समझनी चाहिये यह सब ज्ञान सुनकर उद्धवने विनय की हे दीनानाथ जब भक्तिकी इतनी बड़ी पदवी है तब आपने यज्ञ व तप आदिक अनेक तरहके धर्म क्यों बनाये हैं श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव यज्ञ व तप आदिक कर्म करने से भी गुण निकलता है जिसमें हरिचरणों की भक्ति उत्पन्न हो जिसने भक्तिपदार्थ पाया उसे दूसरा धर्म व कर्म करना न चाहिये॥

तेरहवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका उद्धवको ज्ञान बतलाना॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव सात्त्विक व राजस व तामस तीन गुण मायाके होकर परमात्मा इन तीनोंसे विलग रहता है जिस समय सात्त्विक शरीरमें अधिक होता है उस समय धर्म व शुभकर्मकी ओर मनुष्यका मन लगताहै व सात्त्विकी स्वभाववाले को संसार में सबलोग अच्छा कहते हैं जो मनुष्य क्रोध अधिक रखकर कुछ कर्म किया करै उसे तामसी समझना चाहिये व जिनके शरीरमें राजस अधिक होता है वे लोग सुखकी चाहना

बहुत रखतेहैं इसलिये ज्ञानी मनुष्यको उचितहै कि आठों पहर मन अपना सात्त्विककी ओर लगाये रखकर ऐसा कर्म व धर्म करता रहै जिसमें मेरी याद उसको न भूले यह सुनकर उद्धव ने विनय की हे महाप्रभु जब मनुष्य ने जाना कि यह कर्म बुरा है व इसके करनेसे मुझे दुःख होगा तब वह जान बूझकर कष्ट देनेवाला काम करके गर्भ व नरक में सदा क्यों दुःख उठाता है वैसा कर्म किस वास्ते नहीं करता जिसमें जन्म व मरण से छूटजावे कौन मनुष्य ज्ञान उसका फेरकर कुकर्म की ओर लगा देताहै यह सुनकर त्रिभुवनपतिने कहा हे उद्धव उसकी बुद्धि नष्ट करनेवाली दो वस्तु होकर उनमें एक तृष्णा है जब मनुष्यको किसी वस्तुके लेनेवास्ते चाहना हुई व दूसरा कोई उसमें बाधक हुआ तब क्रोध उत्पन्न होता है और यही दोनों तृष्णा व क्रोध सब जीवों से अशुभकर्म कराते हैं व मुझ से विमुख रखकर उनका परलोक बनने नहीं देते जिस तरह चोर व लम्पट द्रव्य लेने व परस्त्रीगमन करने वास्ते दूसरे के घर जाकर पकड़े जाते हैं उसी तरह जबतक मनुष्य मुक्तिपदवी पर नहीं पहुँचता तबतक चाहना व क्रोधके वशमें रहकर जन्म व मरणका दुःख उठावताहै जिसने काम व क्रोधको जीतकर मुझे अपना मालिक व उत्पन्न करनेवाला जाना उसको ज्ञानी व मेरा भक्त समझना चाहिये यह सुनकर उद्धवने विनय की महाराज आपने सब यदुवंशियों को किस वास्ते मुक्ति नहीं दी एक पर दया करना व दूसरे को अभागी छोड़ना क्या कारण है श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव हम पहिले तुझसे कहचुके हैं कि ज्ञान व अज्ञान के दो मार्ग हैं कदाचित् एक होता तो किसी मनुष्यको शोच व डर पूजा व भजन शुभ व अशुभ नरक व स्वर्गका न रहता हे उद्धव संसार में दो तरह के मनुष्य एक आत्माराम व दूसरे दयाराम होकर आत्माराम उसको कहना चाहिये जो आठों पहर परमेश्वर के स्मरण व ध्यान में लीन रहकर धन व संसारी सुख मिलने में हर्ष व उसकी हानि होने से कुछ विषाद नहीं करता व दयाराम उसको समझना उचित है जो संसार में द्रव्य व सुन्दर स्त्री व पुत्र आज्ञाकारी मिलने से प्रसन्न रहकर उन सबके वियोग होने में

शोच उठाते हैं इसलिये ज्ञानी मनुष्य को चाहिये कि अपने वर्ण व आश्रम के धर्मानुसार चलन रखकर अपनी क्रिया कभी न छोड़े अपने धर्म से फिरने में ब्रह्महत्याके समान पाप होता है हे उद्धव एक बेर सनत्कुमार आदिकने ज्ञानका अभिमान अपने मनमें उत्पन्न करके ब्रह्मा से यह बात पूछी थी कि संसारी मनुष्यका मन पंचभूत आत्मा से क्योंकर बिलग होता है हमनें सब तीर्थोंका स्नान किया व आठों पहर कथा व लीला परमेश्वरकी आपसमें कहते व सुनते रहते हैं तिसपर भी मन हमारा आजतक संसारी चाहना से विरक्त नहीं हुआ इसका क्या कारण है जब ब्रह्मा उसका उत्तर नहीं दे सके व दूसरे देवता जो वहां बैठे थे ब्रह्मा को हँसनेलगे तब ब्रह्माने बहुत लज्जित होकर मुझे याद किया उस समय मैं उनकी बात रखने वास्ते वहां चला गया व बीच तनु हंस पक्षी श्वेतवर्ण वाहन ब्रह्मा जो सभासे बाहर बैठा था प्रवेश करके सनकादिक के निकट चला गया व उन लोगों का अभिमान तोड़ने वास्ते बोला तुम क्या पूछते हो यह बात सुनकर सनत्कुमारने कहा तुम कौन हो तब मैंने उत्तर दिया हम व तुम बिलग न होकर शरीर के अलग रहने परभी पंचभूत आत्मा जिसको प्राण कहते हैं हमारे तुम्हारे अङ्गमें एक है इसलिये पूछना तुम्हारा वृथाहै जब तुम अज्ञान बालक की तरह प्रश्न करते हो तब ब्रह्मा जी तीनों लोकोंकी रचना करनेवाले तुमको क्या उत्तर देवैं हे सनत्कुमार जिस तरह अज्ञानी मनुष्य मनमें मनसूबा विचारकर संसार के सब सुख भोग लेते हैं पर वह सुख उनको प्राप्त नहीं होता उसी तरह संसारी व्यवहार व यह शरीर झूठ होकर परमेश्वरकी मायासे चार दिन वास्ते सच्च मालूम होता है जैसे अँधेरे में रस्सी पड़ी हुई देख कर सांप का सन्देह होजाता है वैसे अनेक शरीर नाश होनेवाले जीवात्मा बिलग बिलग दिखलाई देकर चौरासी लाख योनि में मेरा प्रकाश रहता है इसलिये शरीरको रस्सीरूपी झूठा सांप समझकर इस अंगनाश होनेवाली वस्तुसे प्रीति रखनी न चाहिये मेरी शक्ति निकल जाने से यह शरीर कुछ काम नहीं आवता जिस तरह बादल समुद्रका जल सोखकर बरसाते हैं तो फिर वह पानी

नदी व नाले की राह बहकर समुद्र में मिल जाता है उसी तरह जितने जीव जड़ व चैतन्य संसार में दिखलाई देते हैं वे सब मेरी इच्छासे उत्पन्न होकर मरने उपरान्त जीवात्मा सबका फिर मेरे रूप में समाजाता है जो लोग संसारी व्यवहार झूठा समझकर मायारूपी जाल में नहीं फँसते व विरक्त होकर हरिचरणों में सच्ची प्रीति करते हैं उन्हें तुरन्त मेरा दर्शन होकर वैकुण्ठ का सुख मिलता है जिस तरह मदिरा के नशे में मनुष्य मतवाला होकर अपने तनु व वस्त्रकी सुधि नहीं लेता उसी तरह हरिभक्त लोग भी मेरे ध्यान में लीन रहकर अपने शरीर की सुधि नहीं रखते व मैं यज्ञ व तप आदिक शुभ कर्मों का फल देनेवाला होकर सब किसी को उसके कर्मानुसार जन्मभर भोजन व वस्त्र देता हूं हे सनत्कुमार मन चाहना से कभी नहीं बिलग होता इस वास्ते हमने मत्स्यावतार धारण करके राजा सत्यव्रत को ज्ञान उपदेश किया था जिसमें संसारी मनुष्य हमारी कथा व लीला सुनकर उसी ज्ञान के प्रमाण मेरा स्मरण व ध्यान करें व संसारी तृष्णा छोड़कर हरिचरणों में प्रीति लगावें व जिस तरह संसार में पूर्व व पश्चिम आदिक चारों ओर जाने की राहें बनी हैं उसी तरह यज्ञ व तप दान व धर्म तीर्थ व व्रत सत्संग व भक्ति आदिक मेरे पास पहुँचने वास्ते रास्ते बने हैं जो मनुष्य जिस मार्ग पर चाहै उसपर सच्चे मनसे चलै मेरे निकट पहुँच जायगा सनत्कुमार आदिक यह ज्ञान सुनते ही बहुत लज्जित होकर अभिमान अपना भूल गये व अपने मनका सन्देह छोड़कर हंसरूपी भगवान्को दण्डवत् की व बहुतसी स्तुति करने उपरान्त उनसे बिदा होकर अपने स्थानपर चलेगये और हम अभिमान उनका तोड़कर वैकुंठमें चले आये ॥

चौदहवां अध्याय।

उद्धवको वेद व शास्त्रका हाल श्रीकृष्णजी से पूछना ॥

उद्धवने इतनी कथा सुनकर श्यामसुन्दर से विनय की हे दीनानाथ अनेक मुनि व योगीश्वरों ने वेद व शास्त्र में आपके मिलनेवास्ते यज्ञ व तप आदिक अनेक राहें लिखी हैं सो तुम्हारे निकट पहुँचनेका जो रास्ता

सहज हो वह बतलाइये श्रीकृष्णजी ने कहा हे उद्धव जब ब्रह्मा कमलके फूल से उत्पन्न हुये तब उन्होंने वेद जो मेरे श्वासा हैं हमारी इच्छा से पाकर भृगुऋषीश्वर आदिक अपने पुत्रों को पढ़ाया व ऋषीश्वरों ने अर्थ उसका देवता व दैत्य व गन्धर्व व विद्याधर व यक्ष व किन्नर आदिकों को सिखलाया उनमें जिनको जितना ज्ञान था उसने वह समझकर संसार में फैलाया पर उस वेदके निज अर्थको कोई नहीं पहुँचा व बाजे मनुष्य काम व क्रोध व स्त्री व पुत्र व कोई यज्ञ व तप व बाजे तीर्थ व व्रत व कोई दान व धर्मको उत्तम मानते हैं पर इन सब कर्मों से मनुष्य भवसागर पार उतरने नहीं सक्ता व जितनी वस्तु संसार में दिखलाई देती हैं एक दिन इन सबका नाश अवश्य होगा जो लोग परमेश्वरका स्मरण व ध्यान उत्तम समझकर उसमें अपना मन लगाये रहते हैं व संसारी वस्तुकी कुछ चाहना न रखकर इन्द्रलोक आदिकका सुख भी कुछ माल नहीं समझते व सिवाय भक्ति हरिचरणों की मुक्तिपदार्थ भी नहीं चाहते जो मनुष्य विना इच्छा मेरी भक्ति व सेवा करते हैं व सबको अपना मित्र जानकर किसी के साथ शत्रुता नहीं रखते उन भक्तों के लक्षण कहते हैं सुनो वे लोग आठों सिद्धियां प्राप्त रहने पर भी उनकी ओर न देखकर आठों पहर मन अपना मेरी ओर लगाये रहते हैं व मैं उनको सातों द्वीप व तीनों लोकोंका राज्य व मुक्तिपदार्थ देताहूं सोभी नहीं लेते इसलिये उनसे लज्जित रहकर उन के पीछे पीछे फिरने उपरान्त दिन रात यही विचार करता हूं कि कौन वस्तु इन्हें देकर इनकी सेवासे उऋण होजाऊं जिस जगह वे भक्त चरण अपना रखते हैं वहांकी धूरि उठाकर इस कारण अपने अंगपर मललेताहूं जिसमें करोड़ों ब्रह्माण्ड के जीव जो मेरे शरीर में रहते हैं उसके लगने से पवित्र होजावें हे उद्धव उन भक्तों के बराबर मैं अपने शरीर व लक्ष्मी व महादेवजी को प्यारा न जानकर सबसे उनको उत्तम समझताहूं जब मेरा कोई भक्त संसारी माया में लपटकर नष्ट होने चाहता है तब मैं उसके हृदय में ज्ञान प्रकाश करके कुकर्म करने से बचा लेताहूं व जो हरिकथा वार्ता सुनते समय मेरे प्रेम में डूबकर रो देते हैं उनका पाप आंसूकी राह बहकर

अन्तःकरण शुद्ध होजाता है व मच्छड़ आदिक अनजान में मरजाने का दोष उनको नहीं लगता जैसा भक्ति करने से मैं तुरन्त मिलता हूं वैसी दूसरी राह सहज मेरे निकट पहुँचनेवास्ते नहीं है जिसतरह आग में डालदेने से सोने का सब मैल छूट जाता है उसीतरह भक्ति करने से शरीर में पाप नहीं रहता पर यह सब बात चित्तके आधीन होकर यही मन संसारी माया में लपटनेसे नष्ट होता है व मेरी ओर ध्यान लगावनेवाले मनुष्य संसार में अपनी मनोकामना पाकर अन्तसमय वैकुण्ठवास पाते हैं इसलिये मनुष्य को स्त्री व लंपट पुरुषकी संगति से अलग रहकर मेरी ओर मन लगाना चाहिये जैसा उनकी संगति करने से तुरन्त मनुष्यका ज्ञान छूटजाता है वैसा दूसरी तरह नहीं बिगड़ता अब हम तुमको परमेश्वरकी ओर मन लगाने की रास्ता बतलाते हैं सुनो अकेले बैठकर पहिले मन अपना एकाग्र करे फिर अपने कमलरूपी हृदय में मेरे चतुर्भुजी स्वरूप का ध्यान लगावे जिस तरह आमकी गुठली बोते हैं तो उसके फुनगा का बकरी आदिक के खाने का भय लगा रहता है जब रक्षा करने से वह वृक्ष तैयार होजाता है तब हाथी भी उसको उखाड़ने नहीं सक्ता उसी तरह जब प्रतिदिन मेरा ध्यान व स्मरण करने से संसारी माया छूट कर वृक्षरूपी भक्ति हृदय में जड़ पकड़ लेती है तब फिर कम नहीं होती व योगाभ्यास साधने व इन्द्रियों को वश करने से अष्टसिद्धियां बनी रहती हैं सो हे उद्धव तुम हरिभक्तों को बड़ी पदवी समझकर मेरी भक्ति सच्चे मनसे किया करो तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होजायगा ॥

पन्द्रहवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीको उद्धवसे अष्टसिद्धियोंका हाल कहना ॥

इतनी कथा सुनकर उद्धव ने विनय की हे महाप्रभु आपने कहा कि योग साधने व इन्द्रियों को वश करने से अष्टसिद्धियां बनी रहती हैं सो उनमें क्या गुण है श्यामसुन्दर बोले हे उद्धव आठ सिद्धि बड़ी व दश सिद्धि छोटी होकर उनमें एक सिद्धि ऐसा गुण रखती है कि बूढ़ा मनुष्य चाहै तो अपने को लड़का बनालेवे व दूसरी छोटे शरीरको बड़ा बनाकर

तीसरी ऐसी सामर्थ्य रखती है कि अपना शरीर रुई के समान हलका बना- कर जहां चाहै वहां उड़ता हुआ चलाजावे चौथी हलकेसे भारी बनाने की सामर्थ्य रखकर पांचवीं में ऐसा गुण है कि हजारों कोसका हाल बैठा हुआ देखलेवे छठी सिद्धि से हजारों कोसकी बात सुनकर सातवीं में ऐसा गुण है जो वस्तु जहांसे चाहै मँगवालेवे आठवीं से सब देवता वश होजाते हैं यह सामर्थ्य आठों बड़ी सिद्धिमें हैं नवीं सिद्धिसे अंगपर बुढ़ापा प्राप्त न होकर दशवीं में यह सामर्थ्य है कि जिस जगह मन दौड़ावे वहां एक क्षणमें पहुँच जावे ग्यारहवीं से दूसरेका स्वरूप आप बनाकर बारहवीं में यह सामर्थ्य है कि अपने प्राण को दूसरे तनुमें प्रवेश करदेवे तेरहवीं सिद्धि से जब चाहै तब मरै चौदहवीं सिद्धिमें यह सामर्थ्य है जिसके वास्ते मन चाहै वहां जाकर उसके संगमें विहार करे पन्द्रहवीं सिद्धिसे जिस वस्तु की चाहना मनमें उत्पन्न हो वह उसी समय आनकर प्राप्त होजावे सोल- हवीं से जिसको जो आज्ञादे वह मानकर भूत व भविष्यत् व वर्तमान तीनों काल का हाल जानलेवे व सत्रहवीं सिद्धिसे दूसरेके मनकी बात जानकर कुछ गर्मी व सर्दी उसको न व्यापै अठारहवीं से जलती हुई आग व बढ़ता हुआ पानी रोककर जिसे चाहै उसको विषकी गर्मी प्रवेश करने न देवे सिवाय इन अठारह सिद्धि के जन्म व औषध व तप व मंत्र चार सिद्धि और योग साधने से मिलती हैं जन्मसिद्धिवाला जहां चाहै वहां जन्म लेवे व औषधसिद्धिवाला जिसे जो औषध देवे वह अमृत के समान गुण करै व मंत्रसिद्धिवाला मंत्र पढ़कर जो बात कहै वह सच होजावे व तप सिद्धिवाले का तप कोई विघ्न नहीं करने सक्ता है उद्धव ये सब सिद्धियां एक एक गुण रखती हैं व मैं सब सिद्धियों का फल देनेवालाहूं व उन सिद्धियों के वश करने का यह उपाय है सुनो अग्नि में गर्मी व बीच जलके सर्दी व पृथ्वी पर कड़ाई व हवाको स्पर्श व आकाश में शब्द ये पांचों बातें मेरी कृपासे हैं जो कोई इन पांचों वस्तुवों में मेरा ध्यान लगाकर सच्चे मनसे मेरी महिमा समझै उसको पहिली सिद्धि मिलती है व पांचों भूतात्मा व आकाश व अग्नि आदिक का जो ध्यान करै वह दूसरी सिद्धि

पावै व मेरे विराट्रूप का ध्यान करने से तीसरी सिद्धि व चतुर्भुजी व छोटे रूपका ध्यान रखने में चौथी सिद्धि व महत्तत्त्वरूप का ध्यान करने से पांचवीं सिद्धि व अहंकाररूप का ध्यान रखने में छठी सिद्धि व विष्णु-रूपका ध्यान लगाने से सातवीं सिद्धि व वासुदेवरूपका ध्यान धरने में आठवीं सिद्धि व निराकाररूप का ध्यान करनेवाले संसारी चाहना छोड़ कर परम आनन्द रहते हैं व परमेश्वर का श्वेतरूप ध्यान धरने में कभी बूढ़ा नहीं होता व अपने शरीर में परमात्मा का ध्यान करने से दूसरी बात सुनाई देकर सूर्यरूपी परमेश्वर में ध्यान लगाने से हजारों कोस की वस्तु दिखलाई देती है व वायुरूपी परमेश्वर का ध्यान करने से एक क्षण में जहां चाहै वहांपर चलाजावै व योगाभ्यास करके अग्नि में मन लगावै तो अपना रूप जैसा चाहै वैसा बनालेवे व अपने हृदय में आत्मा का ध्यान रखनेसे दूसरे तनुमें अपना जीव प्रवेश करने की सामर्थ्य होजाती है व सतोगुण का ध्यान करने से जिसके संग चाहै उसके साथ विहार करता फिरै व मनुष्य आठों पहर अपने मनमें यह विचार करता रहै कि सब बात परमेश्वर की आज्ञा से होती है उसको सब छोटे बड़े मानते हैं व साथ योगाभ्यास के अपना श्वास ब्रह्माण्ड में चढ़ाने से भूत व भविष्यत् व वर्तमान तीनों काल की बातें मालूम होती हैं व अग्नि व जल आदिक पांचों तत्त्व के ध्यान करनेवाले जलती हुई आग व बढ़ता हुआ पानी रोकदेने सक्तेहैं व जो मनुष्य इन्द्रियों को अपने वशमें रखकर सच्चे मनसे मेरे चरणों का ध्यान करताहै उसके सामने अठारहों सिद्धियां हाथ जोड़े खड़ी रहती हैं पर उन सिद्धियों के सुखमें फँसनेवाला मनुष्य नष्ट होकर मुझे नहीं पावता व जो लोग मेरे चरणों में ध्यान लगाये रहकर उस सुख को कुछ माल नहीं समझते वह संसार में अपनी मनोकामना पाकर अन्तसमय चतुर्भुजीरूप से वैकुण्ठवास करते हैं ॥

सोलहवां अध्याय ।

उद्धवजीसे श्रीकृष्णजीको मुख्य ज्ञान भगवद्गीताका कहना ॥

उद्धवने अठारहों सिद्धियोंका हाल सुनकर त्रिभुवनपतिसे पूछा है

दीनानाथ आप देवता व वृक्षादिकमें कहां कहां विराजते हैं श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव जिस समय महाभारत होने वास्ते अठारह अक्षौहिणी दल कुरुक्षेत्र में इकट्ठा हुआ व अर्जुन ने द्रोणाचार्य व भीष्मपितामह आदिक अपने गुरु व परिवारवालों को दुर्योधन की ओर देखकर युद्ध करना अंगीकार नहीं किया उस समय मैंने थोड़ीसी महिमा अपनी अर्जुन से कहकर विराट् रूप अपना उसे दिखलाया और उसका मोह छुड़ाकर महाभारत करायाथा वही हाल तुमसे कहताहूं सुनो जो मनुष्य अज्ञानवश सब जीवों में मेरा प्रकाश देखने न सकै तो इन सब जगह जो नाम हम सुनाते हैं अवश्य मेरा चमत्कार समझै सब जीवों में आत्मा बोलता पुरुष मैं होकर आदि व मध्य व अन्त सबको मुझे जानना चाहिये व सूर्यदेवता की बारह कला होकर हर महीने में वह अपने नये स्वरूप से प्रकाश करते हैं उसमें विष्णु नाम स्वरूप व उनचास पवन में मरीचि नाम वायु व तारागणों में चन्द्रमा व चारों वेदों में सामवेद व देवताओं में ब्रह्मा व इन्द्र व वरुण व कुबेर व स्वामिकार्त्तिक व यमराज व ग्यारहों रुद्रों में शंकर नाम महादेव व पांचों तत्त्वों में अग्नि व पहाड़ों में सुमेरु व गौवों में कामधेनु दिव्य पितरों में अर्यमा नाम पितर व प्रजापतियों में दक्ष व चारों वर्णों में ब्राह्मण व चारों आश्रमों में संन्यासी व नदियों में गंगा व रागों में दीपक व धातुओं में सुवर्ण व हाथियों में ऐरावत व घोड़ों में उच्चैःश्रवा व यज्ञों में ज्ञानयज्ञ व पुरोहितों में वसिष्ठ व स्त्रियों में शतरूपा व राजऋषीश्वरों में स्वायम्भुवमनु व युगों में सतयुग व सेवकों में हनुमान् व कथा बांचनेवालों में वेदव्यास व दानियों में राजा बलि व रत्नों में कौस्तुभमणि व घासों में कुशा व पंचगव्यों में घृत व दशों इन्द्रियों में ग्यारहवां मन व नव ग्रहों में बृहस्पति व ऋषीश्वरों में भृगु व मंत्रों में ॐकार व वृक्षों में पीपल व देवऋषीश्वरों में नारदमुनि व सनत्कुमार व वैष्णवों में कपिलदेव व सातों समुद्रों में क्षीरसागर व मनुष्यतनु में राजा व सर्पों में वासुकि व नागों में शेषनाग व दैत्यों में प्रह्लाद भक्त व पशुओंमें सिंह व पक्षियों में गरुड़ व शूरवीरों में परशुराम व वेद व

शास्त्र में गायत्री व बारहों मास में अगहन व ऋतुओं में वसन्तऋतु व पुष्पों में गुलाब व सच बोलनेवालों में सचाई व गन्धर्वों में विश्वावसु नाम गन्धर्व व अप्सराओं में पूर्वचित्ती नाम अप्सरा व पांचों भाई पांडवों में अर्जुन व विद्या जाननेवालों में शुक्राचार्य व यदुवंशियों में वासुदेव मैं हूं और वह काम जिसमें मनुष्य सन्तान उत्पन्न होने वास्ते इच्छा रखकर अपनी स्त्री से भोग करता है मुझे समझना चाहिये व जो लोग अपनी बड़ाई की चाहना रखकर ज्ञान से शुभ कर्म करते हैं वह इच्छा व ज्ञान मैं हूं व जितनी बातें छलकी हैं उनमें श्रेष्ठ जुआ व मायारूपी लक्ष्मी मैं हूं व जड़ सब जीवों की मैं होकर विना शक्ति मेरे कोई जीव चलने व हिलनेकी सामर्थ्य नहीं रखता कदाचित् कोई चाहे तो रेणुका व तारे व वर्षा की बूंदें गिन लेवै पर मेरी विभूतियों की गिनती नहीं करसक्ता हे उद्धव संसार की उत्पत्ति व पालन व नाश मेरी विभूतियों से होता है व तुम जितनी वस्तु संसार में देखते हो सब में मैं हूं इसलिये मेरे भेद व महिमा को पहुँचना बहुत कठिन है देखो संसारी मनुष्य बहुतसा अन्न व घृत आदिक जो अग्नि में यज्ञ व होम करते हैं उसके करने से यह उत्तम है कि अपनी चाहना को जो काम व क्रोध व मोह व लोभ के वश होकर कुकर्मों की ओर दौड़ती है ज्ञानरूपी अग्नि में जला देवे व ज्ञानी उसको कहना चाहिये जो अपने गुण को आदरपूर्वक एक जगह लिये बैठारहै द्वारे द्वारे फिरकर अपना अपमान न करावे व बहुत द्रव्य रखनेवालों को धनीपात्र जानना उचित न होकर जो मेरी भक्ति व प्रीति रखता हो उसे धनवान् समझना चाहिये व जो लोग अपनी स्त्री को ओट में रखते हैं उनको लज्जावान् न जानकर कुकर्मोंसे रहित रहनेवालेको श्रेष्ठ समझना उचित है व जो मनुष्य रणभूमिमें बाण व खड्गादिक घाव उठाकर बहुत युद्ध करते हैं उनको शूरवीर समझना वृथा होकर रणधीर उसे जानना चाहिये जो अपने काम व क्रोध व मोह व लोभ व इन्द्रिय व मन अति बलवान् शत्रुओं को जीतकर उनके वश न होवे हे उद्धव मैंने तुझे अपना भक्त जानकर थोड़ासा हाल सुना दिया तुम अपने मन व

इन्द्रियों को वश में रखकर मेरा ध्यान करो अठारहों सिद्धियां तुम्हारे पास बनी रहैंगी ॥

सत्रहवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका उद्धवसे चारों युगों का हाल कहना ॥

उद्धव ने यह सब महिमा त्रिभुवनपति की सुनकर पूछा हे दीनानाथ चारों युगों में कौन धर्म बड़ा होकर किस तरह लोग रहते थे श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव सत्ययुगमें श्वेतवर्ण व एक वेद होकर ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य व शूद्र चारों वर्ण उसी रूपका ध्यान व वेदानुसार सब काम करते थे व त्रेता में यज्ञावतार का ध्यान लगाकर यज्ञ होता था व एक वेद से चार वेद ऋग्वेद व यजुर्वेद व सामवेद व अथर्वणवेद तय्यार होकर ऋग्वेद व यजुर्वेद व सामवेद की क्रियानुसार यज्ञ करते थे व अथर्वणवेद केवल मंत्र व शस्त्रविद्या जानने के वास्ते है व ब्रह्मा ने अपने मुख से ब्राह्मण व भुजासे क्षत्रिय व जंघा से वैश्य पांव से शूद्र चारों वर्ण उत्पन्न किये थे व संन्यासी मेरे शिर व ब्रह्मचारी हृदय व वानप्रस्थ पसुली व गृहस्थ जंघा से प्रकट होकर ब्राह्मणका यह धर्म है कि अपने मन व इन्द्रियों को वश रखकर आचार से पवित्र रहै व जो कुछ थोड़ा या बहुत धर्मकी कमाई से मिलै उसपर सन्तोष रखकर मेरा तप व ध्यान किया करै व किसीके दुर्वचन कहने से खेद न मानकर अधिक तृष्णा न रक्खे व हरिभक्त होकर झूंठ न बोले जिसमें इतने लक्षण हों उस ब्राह्मण को अपने कर्म व धर्म पर स्थिर समझना चाहिये व क्षत्रिय के लक्षण यह हैं मुखारविन्द उसका तेजवान् व शरीर बलवान् होकर मनमें धैर्य रक्खे व शूरताई ऐसी रखता हो कि घाव लगने से घबड़ा न जावे व चाकरी व जमींदारी से अपना कुटुम्ब पालकर सामर्थ्य भर दान व दक्षिणा देवै व साधु व ब्राह्मण की भक्ति रखकर सच्चे मन से उनकी सेवा व टहल करै व वैश्यका धर्म यह है कि व्यापार व खेती व महाजनी से अपना परिवार पालै व द्रव्य उत्पन्न करने की चाहना आठों पहर मनमें रक्खे व सामर्थ्यभर दान व दक्षिणा देकर साधु व ब्राह्मणकी सेवा किया करे व शूद्र का धर्म यह है

कि ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य तीनों वर्ण की सेवा करने से जो कुछ मिले उसमें अपने दिन काटकर अधिक तृष्णा न बढ़ावे चारों वर्णोंको उचित है कि जीवहिंसा व चोरी व कुकर्म आदिकसे रहित रहकर झूंठ न बोलें व काम व क्रोध व मोह व लोभ को अपने वश रखकर ऐसा काम करें जिसमें संसारी जीव उनसे प्रसन्न रहैं व कोई उनको बुरा न कहै व चारों आश्रम का धर्म यह है कि ब्रह्मचारीको चाहिये कि गुरुके घर रहकर मनसा वाचा कर्मणा से उनकी सेवा व आज्ञापालन करै व गुरु को मनुष्य न जानकर परमेश्वरभाव समझै व स्त्री का अंग न छूकर उसके पास न बैठे क्षौर न बनवावै व जो कुछ भीख मांग लेआवे सब गुरुके सामने धरकर उन का दिया हुआ खावे कदाचित् गुरु भोजन न देवै तो मांगना उचित नहीं है कामदेव को ऐसा अपने वश रक्खे जिसमें वीर्य न गिरे व कभी स्वप्ने में वीर्य गिरजावे तो स्नान करके दशहजार गायत्री मंत्र जपै व अपना तन मन धन गुरुपर नेवछावर समझै और कोई अशुद्ध वस्तु न खावे विद्या पढ़ने व गुरुदक्षिणा देने उपरान्त गुरुसे बिदा होवै व गृहस्थी करना चाहे तो अच्छे कुल में अपने से छोटी अवस्था की कन्या विवाहे और जब वह महीनेभर उपरान्त स्त्रीधर्म से होवे तब चौथे दिन एक बेर उससे प्रसंग किया करै व गृहस्थधर्म रखकर जो अभ्यागत व संन्यासी द्वारेपर आवे उसको कुछ भोजन व वस्त्र देकर प्रसन्न करना चाहिये खाली फेर देना अच्छा नहीं होता गृहस्थाश्रम ब्राह्मणका उत्तम धर्म सुनो जो दाना अनाज काटने उपरान्त खेत में पड़ा रहजाता है उसीको चुनकर भोजन करै या दूधभिक्षा जो कोई प्रसन्नता से देवै उसे मांग ले आकर अपना कुटुम्ब पालै व मध्यम धर्म यह है कि विद्या पढ़ाने व कथा बांचने व यज्ञ कराने से अपनी जीविका रक्खे जब ब्राह्मणपर विपत्ति पड़े तब हारमान कर खेती व व्यापार व चाकरी करके अपना कुटुम्ब पालै व ब्राह्मण को अपने से छोटे वर्ण की सेवा करना न चाहिये व ब्रह्मचारी को विद्या पढ़ने उपरान्त गृहस्थी की चाहना न होवे तौ वन में जाकर परमेश्वरका तप व भजन करे जो क्षत्रिय व वैश्य गरीब ब्राह्मण मेरे प्राणरूपी को भोजन

व वस्त्र देकर सच्चे मन से उनकी सेवा करते हैं उनपर मैं बहुत प्रसन्न हो मुँहमांगा द्रव्य सन्तान देता हूं व क्षत्रिय राजा अपनी प्रजा को पुत्र के समान पालन करने व उनका दुःख छुड़ाने से संसार में यश पाकर मरने उपरान्त भवसागर पार उतर जाते हैं जब क्षत्रिय को विपत्ति पड़े तब वह व्यापार करके या वनमें अहेर खेलकर अपनी जीविका रक्खे व लाचारी से भीख मांगकर अपना पेट पाले व वैश्यवर्ण विपत्ति पड़ने से शूद्र का काम करै व शूद्रको विपत्ति पड़े तो चटाई आदिक बनाकर अपने दिन काटै ब्राह्मणको वेदानुसार अपने धर्म से रहकर प्रतिदिन संध्या व तर्पण व ठाकुरपूजन व श्राद्ध करना व अतिथि व संन्यासी को भोजन व वस्त्र देना उचित है व स्त्री व पुत्रों से अधिक प्रीति न रक्खे व मेरे चरणों का ध्यान करता रहे इसतरह कर्म व धर्म रखनेवाले चारों वर्ण व चारों आश्रम को मैं उद्धार कर देताहूं व जो लोग संसारी मायामें लपटकर धर्म व अधर्म का विचार नहीं करते उनको अवश्य नरक भोगना पड़ता है॥

अठारहवां अध्याय।

उद्धव से श्रीकृष्णजी का वानप्रस्थआदिक का धर्म कहना॥

श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव वानप्रस्थका धर्म यह है जब पचास वर्ष से अधिक अवस्था होकर मन उसका वैराग्य करनेवास्ते चाहै तो अपनी स्त्री समेत या अकेला वनमें जाकर परमेश्वर का भजन व स्मरण करै व शिरपर जटा बढ़ाकर केले के पत्ते से कोपीन बनावे प्रात व मध्याह्न व सन्ध्या तीनोंकाल स्नान करके पृथ्वीपर सोवे व गर्मी में पञ्चाग्नि तापे व बीच जाड़े के गलेभर पानी में खड़ा रहै व बरसात में बीच मैदान के बैठ कर तप करै व पृथ्वी का बोया हुआ अनाज न खावै जब इस तरह तप करने से शरीर निर्बल होकर बुढ़ाई आजावे तब संन्यास लेकर सिवाय दण्ड व कमण्डलु व कोपीनके और कुछ वस्तु अपने पास न रक्खे व सात घरसे अपने खाने भरको भोजन मांग ले आवै व राह चलते समय पृथ्वी की ओर देखता रहै जिसमें चिउँटी आदिक कोई छोटा जीव पांव के नीचे दब न जावे व अपने मन व इन्द्रियों को वशमें रखकर चित्त अपना किसी

स्त्रीकी व अच्छी वस्तुकी ओर न दौड़ावे व स्वादादिक भोजनकी चाहना न रखकर जहां से अच्छा भोजन मिलै वहां फिर न जावै व कभी झूंठ न बोलै व संसारी सुखको स्वप्नके समान झूठा समझै व आठों पहर अकेले में परमात्मा का ध्यान करता रहै व एक जगह अधिक न रहकर तीर्थों में फिरा करे व पाखण्डी मनुष्यों की संगति न रखकर किसीका डर न मानै व सदा प्रसन्नचित्त रहै और अपने सुखके वास्ते किसी के साथ शत्रुता व मित्रता न रक्खे अपना स्वभाव कोमल बनाये रहकर ऐसा मीठा वचन बोले जिसमें कोई दूसरा उससे न डरे व हानि व लाभ होने का कुछ हर्ष व विषाद न करै केवल भिक्षा लेनेवास्ते नगर व गांव में जावे व बस्ती से बाहर रहकर जिसतरह गुरुने बतलाया हो उसीतरह आठोंपहर परमेश्वर का स्मरण व ध्यान करता रहै जबतक मेरे निर्गुण रूपका ध्यान उसके मनमें न आवै तबतक सगुण रूपकी उपासना किया करे जब निर्गुणरूप ध्यान में आजावै तब सगुणरूप का स्मरण छोड़कर सब जीवों में मेरा प्रकाश एकसा समझै इसतरह के कर्म व धर्म रखनेवाले को संन्यासी जानना चाहिये केवल दण्ड व कमण्डलु धारण करने से संन्यास धर्म का फल नहीं मिलता हरिभजन करने में इन्द्रादिक देवता विघ्न करते हैं इस लिये तप व स्मरण करते समय मनको स्थिर रखना उचित है जो लोग अपने धर्म व कर्म से रहते हैं उन्हें निस्सन्देह मुक्ति मिलती है अपना धर्म छोड़ देनेवाले को चोर व ठगकी तरह नरक में दण्ड मिलता है इसलिये मेरी भक्ति चारों वर्ण व चारों आश्रम को करनी चाहिये ॥

उन्नीसवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका उद्धव से चार तरह के भक्तों की कथा कहना ॥

उद्धव ने इतना ज्ञान सुनकर पूंछा हे दीनानाथ जिस तरह संसारी मनुष्य कालरूपी सांपके मुखमें पड़े रहकर प्रतिदिन अपना सुख चाहते हैं उसी तरह मुझे भी समझकर कोई सहज राह भवसागर पार उतरने वास्ते वर्णन कीजिये श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव जो ज्ञान भीष्मपितामह ने राजा युधिष्ठिर से कहा था वही तुमसे कहते हैं सुनो संसारी मनुष्य को

चार तरहपर एक कथा पुराण सुनने व दूसरे लोगों का मरना देखकर अपनी मृत्यु विचारने व तीसरे साधु व महात्मा विरक्त पुरुषों की संगति करने व चौथे संसारी व्यवहार झूठा समझने से ज्ञान प्राप्त होता है परन्तु कथाको प्रेमपूर्वक सुनकर उसमें विश्वास रखना चाहिये ऐ उद्धव मेरे निर्गुणरूप का ध्यान करनेवालों को जीवन्मुक्त समझो और उनका लक्षण सुनो वह लोग जिस धर्म करने से मुझे पाते हैं उस कर्म का फल मुझे देकर कुछ चाहना नहीं रखते व संसार में चार तरह के भक्त होते हैं एक विपत्ति पड़ने व रोगी होने से मेरी भक्ति करता है व दूसरे ज्ञान प्राप्त करने व भवसागर पार उतरने की इच्छा रखकर व तीसरे द्रव्य व सन्तान व संसारी सुख मिलनेवास्ते मेरा ध्यान करते हैं व चौथे ज्ञानी जो मुझे परमेश्वर जानकर भक्ति करते हैं व उसके बदले कुछ इच्छा नहीं रखते उनको मैं उन तीनों से अधिक प्यारा जानताहूं हे उद्धव यज्ञ व तप व दान व धर्म व तीर्थ व व्रत आदिक सब शुभ कर्म अच्छे होते हैं परन्तु भक्ति व ज्ञानके बराबर जिससे मुझे उत्पन्न करनेवाला व मालिक जानता है यज्ञादिक नहीं होते सो तुम भी ज्ञानकी राह संसारी चाहना छोड़कर मेरी भक्ति रखते हो इसलिये अपनी मुक्ति होने में कुछ सन्देह मत समझो सिवाय इसके थोड़ासा मुख्य ज्ञान और कहते हैं सुनो मनुष्य को अपनी बड़ाई करना उचित न होकर अहङ्कार छोड़ देना चाहिये देखो नाक व कान व जिह्वा व आंख व त्वचा पांच ज्ञानइन्द्रिय व हाथ व पांव व वाक् व लिंग व गुदा पांच कर्म इन्द्रिय व ग्यारहवां मन होकर जो मनुष्य उनको संसारी सुखकी ओर लगाता है उसे अज्ञान समझना चाहिये व ज्ञानी को उचित है कि अपने मन व इन्द्रियों को संसारी माया से विरक्त रखकर मेरी ओर व ठाकुरपूजने में लगावै व संसारके आदि व मध्य व अन्तमें परमेश्वरका चरित्र जानकर मेरी कथा व लीला प्रेमसे सुने जो वस्तु खाने व पहिरने वास्ते किसी तरहकी मिले उसको पहिले मेरे नामपर अर्पण करके पीछे आप खाय व पहिने व जो तड़ाग व बावली व कुआं व बाग आदि धर्म की राह बनवावै सबका फल मुझे देकर अपने मनमें इस बातका अभिमान न रक्खै कि यह शुभकर्म

मैंने कियाहै इतनी कथा सुनकर उद्धवने पूंछा हे वैकुण्ठनाथ तप व दान व नियम व संयमका हाल वर्णनकीजिये व ज्ञानी किसको कहते हैं व मूर्खकौन कहलाता है शुभ व अशुभ कर्म करने व स्वर्ग जानेवाले व नरक व धनीपात्र व कंगाल व दाता व सूमका हाल बतलाइये श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव जीवहिंसा व चोरी आदिक कुकर्मों से बचे रहकर सच बोलना व गुरु व भगवान् में प्रीति रखकर वेद व शास्त्रका वचन सच जानना व विना प्रयोजन अधिक न बोलकर सब जीवों पर दया रखना यह संयमहै व हाथ पांव मिट्टी से मलकर धोना व स्नान व सन्ध्या व पूजा व यज्ञ व तप व श्राद्ध व तीर्थ व व्रत करना यह नियम समझना चाहिये व दान उसका नाम है कि विरक्त मनुष्य को कर्म छोड़कर मनसा वाचा कर्मणा से किसीका बुरा न चाहै व गृहस्थाश्रम भोजन व वस्त्र व पृथ्वी व सोना आदिक वस्तु ब्राह्मणों को दान करै व तप यह है कि स्त्री भोग करने का सुख छोड़ देवै व ज्ञानी वह है जो शास्त्रानुसार राह चलकर अपनी मुक्ति का शोच रक्खै व जो कोई परमेश्वरको भूलकर अपना शरीर पालन करता है उसे मूर्ख समझना चाहिये व मेरे वचन प्रमाण सब काम करना उत्तम राह होकर उसके विपरीत चलना कुमार्ग जानो व जो मनुष्य संसार में किसी वस्तुको चाहना नहीं रखते व प्रेमपूर्वक मेरे चरणों का ध्यान करते हैं उन्हें स्वर्ग पहुँचनेवाला समझो और संसारी प्रीति रखने वाले व लोभी व झूंठे मनुष्यों को नरक जानेवाला जानना चाहिये व जो लोग ज्ञानी होकर मेरी भक्ति सच्चे मनसे करते हैं उनको धनीपात्र व जिसको सन्तोष न होवै उसे दरिद्री जानना उचित है व जो कोई मूर्ख मनुष्य को सिखलाकर उसके भवसागर पार उतरने का शोच रक्खै उसे दाता समझो व जो लोग अपने मन व इन्द्रियोंको नहीं जीतकर उनके वश होरहे हैं उनको सूम जानना चाहिये हे उद्धव जो जो बात तुमने पूंछी सबका उत्तर हमने कहदिया जो कोई हमारा वचन सच जानकर उसी का प्रमाण करैगा उसके वास्ते संसार व परलोक में दोनों जगह अच्छा है॥

बीसवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका उद्धवजीसे माया छूटनेका उपाय कहना ॥

उद्धव ने विनय की हे यदुनाथ आपसे सब ज्ञान सुनकर उसका अर्थ मैंने यह समझा कि संसारी मायामोह में फँसना बुरा होकर विरक्त रहना उत्तम है सो कोई उपाय ऐसा बतलाइये जिसमें मनुष्य बीच संसारी माया के न फँसे यह बात सुनकर श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव हमने तीन तरह की राह वास्ते भवसागर पार उतरने संसारी जीवों के तुमसे कही एक ज्ञान दूसरा कर्म तीसरी भक्ति जिसको ज्ञान प्राप्त हुआ वह संसारी माया में नहीं लपटता व संसारकी प्रीति में जो फँसा है उसको शुभ कर्म करना चाहिये व जो लोग मन अपना ज्ञानकी ओर कुछ लगाये रहकर संसारी माया में भी लपटे हैं उनको भक्ति करनी उचित है जब तक मेरी कथा सुनने में प्रीति न होकर मन उसका संसारी मायासे विरक्त न होय तब तक शास्त्रानुसार कर्म करता रहै व जो धर्म स्वर्ग जाने वास्ते शास्त्रों में लिखे हैं वे कर्म करै व संसारी सुख व स्वर्ग जानेकी कुछ चाहना न रक्खै तब कर्म करने से विना इच्छा भी वह सुख मिलैगा इसलिये मनुष्यको आठों पहर परमेश्वरका ध्यान रखकर पहिले शुभकर्म करना चाहिये जब तक हाथ व पांव व नाक व कान व आंख आदिक सब इन्द्रियों में सामर्थ्य रहती है तबतक सब कर्म अच्छी तरह बन पड़ते हैं व बुढ़ापे के समय इन्द्रियों की सामर्थ्य घटजाने से कोई कर्म विधिपूर्वक नहीं बन पड़ता इस लिये कभी ऐसा विचार करना न चाहिये कि अभी तरुणाई में संसारी सुख उठा लेवैं बुढ़ापेके समय परलोकका शोच करलेवैंगे किस वास्ते कि शरीर मनुष्य का वृक्षके समान होकर कालरूपी लुहार वह वृक्ष काटने वास्ते दिन रात उसपर कुल्हाड़ा चलावता है न मालूम किस समय यह शरीररूपी वृक्ष गिरपड़ेगा इसलिये मनुष्यको संसारी प्रीति से विरक्त रहकर दिन राति अपनी मृत्यु याद रखनी व मेरे चरणोंका ध्यान करना चाहिये जिसमें उसकी मुक्ति हो दूसरा ज्ञान सुनो एक वृक्षपर दो पक्षी खोता लगा कर रहते थे जब उस वृक्षको लुहार काटने लगा तब एक पक्षीने कहा यहां

से उड़ चलो दूसरा पक्षी बोला बैठे रहो जिस तरह उड़ जानेवाला पक्षी जीता बचकर बैठे रहने में दुःख पावताहै उसीतरह संसारी माया छोड़ देने से मुक्ति प्राप्त होकर उसके साथ लिपटे रहने में आवागमनसे नहीं छूटता तीसरे मनुष्यतनु नौकारूपी जानकर गुरुको मांझीके समान समझना चाहिये सो वह नाव समुद्रमें पड़ी रहकर हवारूपी मेरे चरणों का ध्यान उसे किनारे पहुँचानेवाला है जो कोई नौकारूपी मनुष्यतनु पाकर भवसागर पार उतरनेका उपाय नहीं करता उसे बड़ा मूर्ख व आत्मघाती जानना उचितहै जबतक मनुष्य ज्ञानकी राह अपने मनको कुमार्गमें चलने से नहीं रोकता तबतक उसको अनेक तरहके दुःख प्राप्त होते हैं इसलिये मन चंचलको कुमार्ग करने से धीरे धीरे रोके तो कुछ दिन ऐसा साधन करनेसे चित्त उसका विरक्त होजाता है जब मन मनुष्यका विरक्त होकर मेरी ओर लगा तब फिर संसारी मायामें नहीं लपटता और प्रतिदिन उसे मेरी भक्ति अधिक उत्पन्न होती है जो कोई अपने वर्ण व आश्रमका धर्म व मेरे चरणोंमें प्रीति रखकर मनमें इस बातका विश्वास जाने कि हरि चरणोंका ध्यान करने के प्रतापसे संसारी माया छूट जावेगी वह मनुष्य अवश्य मुक्त होता है हे उद्धव भवसागर पार उतरनेवास्ते भक्तिके बराबर दूसरा कुछ उपाय उत्तम नहीं है व मेरे भक्त मुक्तिकी भी चाहना नहीं रखते व चारों तरहकी मुक्ति मुझसे न लेकर भक्तिको उससे अच्छा जानते हैं जिसपर मैं बड़ी कृपा करता हूं उसे भक्ति प्राप्त होती है व ब्रह्मादिक देवता उसके दर्शनवास्ते चाहना रखते हैं॥

इक्कीसवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका उद्धवजीसे भक्ति उत्पन्न होनेका ज्ञान कहना॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव जो मनुष्य यह सब सुमार्ग भक्ति व ज्ञानका जो हमने तुमसे कहाहै छोड़कर दूसरी ओर मन अपना लगाता है वह कुकर्म करने से चौरासीलाख योनि व नरक में बहुत दुःख पाकर आवागमन से नहीं छूटता जो लोग मनुष्यतनु पाकर परमेश्वरका भजन व स्मरण नहीं करते उनको बड़ा अभागी व मूर्ख समझना चाहिये व जो

मनुष्य आठों पहर अपना मरना याद रखकर शास्त्रानुसार अपने वर्णका धर्म रखते हैं संसार में उन्हींका जन्म लेना सफलहै व अपना धर्म छोड़ने के बराबर दूसरा पाप अधिक नहीं होता जैसा धर्म चारों वर्ण चारों आश्रम के वास्ते वेदमें लिखाहै वैसा कर्म करके अपने आचार व चलन से रहै तो प्रतिदिन ज्ञान व धर्म बढ़कर उसको मेरे मिलने की राह दिखलाई देती है व नियम व आचार धनी व कङ्गाल दोनोंसे निबहसक्ता है सामर्थ्यवाला मल व मूत्र करने उपरांत दूसरी धोती पहिन लेवे व कङ्गाल मनुष्य जिसके पास दूसरा वस्त्र न हो वह गीली धोती पहिनकर अपना नियम रक्खे व सूखा अन्न हवा लगने से पवित्र रहता है वह चाण्डाल के छूने से भी अशुद्ध नहीं होता व सूती कपड़ा धोने से पवित्र होकर रेशमी वस्त्रको जबतक पहिनकर दिशा फिरने न जावे व भोजन करती समय व सूतक में न पहिने तबतक शुद्ध रहता है उसे धोनेका प्रयोजन नहीं होता व तांबे व पीतल का बर्तन खटाई व राख के मांजने व चांदी धोने व सोना हवा लगने से पवित्र होता है कदाचित् किसी बर्तन या कपड़े में मल व मूत्र लगजावे तो जबतक कि दुर्गन्ध व रङ्ग न छूटै तब तक वह पवित्र नहीं होता व शरीर मनुष्य का प्रतिदिन स्नान व सन्ध्या व तर्पण व होम करनेसे शुद्ध रहता है व ज्ञानी मनुष्य को सब वस्तु ठाकुर को भोग लगाकर भोजन करना चाहिये बिना भोग लगाये कोई वस्तु खाना अपने मांसके बराबर होता है व मनुष्यको भोजन बनावती समय अपना नाम लेना उचित न होकर यह बात कहनी चाहिये कि ठाकुरजी के भोग लगाने वास्ते रसोई तय्यार करो इस तरह का अभ्यास रखनेसे सब पापोंकी जड़ व अहङ्कार छूटजाताहै व अज्ञान बालक को नियम व आचार रखना उचित न होकर पांच वर्ष की अवस्थातक कुछ पाप व पुण्य किसी बात का उसे नहीं लगता व छठवें वर्ष से लेकर बारहवर्ष की अवस्थातक कुछ हत्या आदिक होजावे तो उसका प्रायश्चित्त पिताको करना चाहिये उसके उपरांत जो कुछ पाप करे तो उसका प्रायश्चित्त आप करना उचित है व विपत्ति पड़ने से कोई अधर्म करके भी अपना पेट पालै तो दोष नहीं ल-

गता व सामर्थ्य रखकर धर्म छोड़देने में पाप होता है जिसतरह सब धर्मों का विचार करना ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य उत्तम वर्ण को उचित होकर नीच जातिके वास्ते कुछ आचार विचार नहीं रहता उसी तरह कोठे पर सोनेवाले मनुष्य को नीचे गिरने का डर होकर पृथ्वीपर सोनेवाला गिरने से नहीं डरता इसलिये जहांतक बनपड़े वहां तक अपने को अधर्म करने से बचाये रहै जितना पाप कम करैगा उतना प्रतिदिन उसके वास्ते अच्छा होगा जो लोग सुन्दर स्त्री देखने व अतर आदिक सूंघने व अच्छा भोजन खाने व कोमल शय्यापर सोने से प्रसन्न होकर सब तरहका सुख चाहते हैं उनको सिवाय दुःख के कुछ सुख नहीं मिलता व संसारी चाहना जो सब दुःख की जड़ है छोड़ देनेवाले बहुत प्रसन्न रहते हैं जिस तरह संसार में चाहना सबको दुःख देती है उसी तरह स्वर्ग में भी तीन वस्तु एक दूसरों को अपने से ऊँचे सिंहासन पर बैठे देखकर डाह करना दूसरे अपने बराबर बैठनेवाले से विरोध उठावना तीसरे नीचे बैठनेवालों को अभिमान की राह छोटा समझना दुःख देनेवाला है इसलिये स्वर्ग की भी इच्छा न रखनी चाहिये जो मनुष्य संसारी सुख व स्वर्गकी चाहना न रखकर हरिचरणों में ध्यान लगाये रहता है वह महाप्रलय तक मेरे साथ वैकुण्ठ में सुख भोगकर दूसरा जन्म नहीं पावता हे उद्धव जो लोग मुझे ईश्वर जानकर एक बेरभी सच्चे मन से मेरा स्मरण व ध्यान करते हैं वे मुझको कभी नहीं भूलते इसलिये मनुष्यको उचितहै कि शास्त्रानुसार अपना धर्म रखकर मेरे चरणों में प्रीति लगाये रहै॥

बाईसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका तत्त्वों का हाल वर्णन करना॥

उद्धव ने इतनी कथा सुनकर विनय की हे वैकुण्ठनाथ मैंने चौबीस तत्त्वों का हाल सुना पर बाजे ऋषीश्वर तीन व कोई छः व बाजे नव व कोई ग्यारह तत्त्व कहते हैं इसका भेद वर्णन कीजिये जिसमें मेरा सन्देह छूट जावे श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव संसाररूपी मायासे योगी व ऋषीश्वर कोई नहीं बचकर जो बात कहते हैं वह सच मानो मेरी माया व्यापने

से योगी व ऋषीश्वरों को भी अनेक राह दिखलाई देकर जबतक वे मेरे भेद को नहीं पहुँचते तबतक मन उनका एक बात पर स्थिर नहीं रहता जिसने ज्ञान की राह मुझे पहिंचाना उसके मन से सब भेद छूटजाता है जब तक मेरी माया के तीनि गुण सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण बराबर रहते हैं तबतक संसार की रचना होकर उन तीनों के घटने बढ़ने से जगत्की उत्पत्ति होती है और नव तत्त्व जो तुमने सुने थे उनके नाम ये हैं पुरुष महत्तत्त्व अहंकार आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी माया व ग्यारह तत्त्व जो सुने हैं उनको त्वचा व आंख नाक कान जिह्वा पांच ज्ञान इन्द्रिय हाथ व पांव व लिंग व गुदा और वाक् पांच कर्म इन्द्रिय व ग्यारहवां मन समझना चाहिये अंग को त्वचासे ठण्ढा व गर्म व कोमल व कड़ाई विचारना आंखोंसे देखना नाकसे सूंघना कानसे सुनना जिह्वा से खट्टे मीठेका स्वाद चखना हाथ से शुभ व अशुभ कर्म करना पांव से चलना लिंगसे स्त्रीका सुख भोगना गुदासे मल त्यागना वाक् से बोलना मनकी इच्छानुसार सब कर्म होते हैं हे उद्धव इन सब इन्द्रिय व अहंकार व महत्तत्त्वसे संसार उत्पन्न होताहै व छः तत्त्व जो कहते हैं उनसे पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश पंचभूतात्मा छठवां परमात्मा पुरुषको जानो जबतक मनुष्य मेरी मायामें फँसा रहताहै तबतक उसे लाखों तरहके भ्रम लगे रहते हैं जब उसने मेरी मायासे विलग होकर मुझे अपना स्वामी जान लिया तब फिर मन उसका दूसरी ओर नहीं लगता वह सब जीवोंमें मेरा प्रकाश बराबर देखता है यह सब बखेड़ा मनका होकर मनुष्य संसारीमाया में लपटनेसे मुझे नहीं पहिंचानता व इसी मनको मेरी ओर लगाने से भवसागर पार उतरजाताहै हे उद्धव मनुष्य मरतीसमय जिस ओर अपना मन लगावते हैं मरने उपरांत वही तनु उनको मिलता है व हरिचरणोंका ध्यान करने से अन्तःकरण शुद्ध होकर वैकुण्ठ में पहुँचते हैं जो लोग अपना शरीर पुष्ट करने वास्ते जीवहिंसा करते हैं उनको अवश्य नरकवास होकर चौरासी लाख योनि भोगनी पड़ती हैं देखो सोती समय शरीर एक जगह पड़ा रहकर मन कई जगह घूमने से अनेक तरह का स्वप्न देखता है व

जागने में भी मन हजारों कोसोंपर दौड़ जाता है इसलिये मनको शरीर से बिलग समझना चाहिये जिसने मायारूपी ब्रह्मांड बनाया हुआ समझ कर अपना मन वशमें किया उसने इन्द्रियादिक सबको जीतलिया व अपने मनके वश रहनेवाले संसारी माया में लपटकर नष्ट होते हैं व आत्मा में मेरा प्रकाश शुद्ध रहकर कुछ नहीं करता पर उसको भी माया के साथ फँसकर संसार उत्पन्न करना पड़ता है व मैं सतोगुणके साथ होकर ऋषीश्वर देवता व रजोगुण से मिलकर दैत्य व मनुष्य व तमोगुण में मिश्रित होकर भूत प्रेत व पशु आदिक को उत्पन्न करताहूं जिसतरह मकड़ी अपने मुखसे जाला निकालकर फिर खालेती है उसी तरह हम भी अपनी शक्ति सबके तनुमें रखकर मरने उपरांत खींच लेते हैं जैसे बहती नौकापर चढ़ने से किनारे के वृक्ष चलते हुये दिखलाई देते हैं व घूमती समय पृथ्वी व आकाश घूमता हुआ मालूम पड़ताहै वैसे सब कर्म शुभ व अशुभ संसारके मेरी माया व इच्छा से होकर मनुष्य ऐसा जानते हैं कि यह काम हमने किया इसलिये ज्ञानी मनुष्यको अपना परलोक बनाने वास्ते काम व क्रोध व मन आदिकको अपने वश रखकर किसीके गाली देने से खेद मानना न चाहिये ॥

तेईसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का उद्धव से एक ब्राह्मणका इतिहास वर्णन करना ॥

उद्धव ने यह सब ज्ञान सुनकर विनय की हे महाप्रभु यह बात बहुत कठिनहै जो गाली व कठोर वचन सुनकर क्षमा करै श्रीकृष्णजी ने कहा हे उद्धव तुम सच कहते हो तीर व तलवार के घाव मलहम लगाने से अच्छे होजाते हैं पर कठोर बात कहने से जो घाव कलेजे में पड़जाताहै वह किसी तरह नहीं मिटता पर ये सब बातें मनके कारण से होती हैं जिसने अपने मन व अहंकारको वश करलिया उसे इन बातोंका खेद नहीं होता वह सब जीवों में परमेश्वर का चमत्कार एकसा देखकर सब बातको ऊपर इच्छा परमेश्वर के समझता है व जो लोग अपने इन्द्रिय व मनके वश होरहे हैं उनको दुर्वचन कहने से क्रोध उत्पन्न होता है इस

बातका एक इतिहास तुमसे कहते हैं मन लगाकर सुनो उज्जैन नगर में एक ब्राह्मण बड़ा धनपात्र व्यापार करनेवाला रहकर ऐसा सूम व लोभी व क्रोधी व कामी था कि उसने कभी अपने जाति भाई व ब्राह्मणादिक को सुखसे भोजन करने वास्ते नहीं कहा एक कौड़ी वास्ते मित्रका शत्रु होकर अपने खाने पहिरने में भी सूमपन रखता था इसलिये बहुत धन उसने बटोरा पर सूम होने से सब परिवारवाले व स्त्री व पुत्र उससे शत्रुताई रखते थे संसारी मनुष्यके पास द्रव्य होने से आत्मा व परिवार व देवता व पितर व अतिथिको सुख प्राप्त होता है सो ये पांचों उस ब्राह्मणके शत्रु थे जब वह ब्राह्मण बूढ़ा होगया व सामर्थ्य व्यापार करने की उसमें नहीं रही तब उन्हीं पांचों के शापसे आगि लगने व चोर चुरालेजाने व लूटने राजा व पचालेने देनदारोंके सब धन उसका जातारहा व जो द्रव्य पृथ्वी में गाड़ाथा वह भी टलगया जब वह ब्राह्मण सब धन अपना खोकर खाने विना दुःखी हुआ व जाति भाई लोग उसका निरादर करनेलगे तब एक दिन बैठे हुये उसने मनमें विचारा देखो मैंने इतना द्रव्य बटोरकर कोई धर्म व कर्म परलोक बनाने वास्ते नहीं किया और न खर्च करके संसारीसुख उठाया सूमका धन इसीतरह व्यर्थ जाता है व तृष्णा रखने से सब गुण मनुष्य का नष्ट होकर यश नहीं रहता जिस तरह सुन्दर मनुष्य के मुखपर कोढ़का दाग रहने से सुन्दरताई उसकी नष्ट होजाती है उसी तरह लोभी मनुष्य तेजहीन रहकर उसे कोई अच्छा नहीं कहता देखो जिस धनको लोग उत्तम जानते हैं वह ऐसा बुरा होता है कि पहिले व्यापार करती समय अपने व बिरानेके साथ शत्रुता करने व भूंठ बोलनेसे मिलता है व रात्रि दिन उसकी रक्षा करने में चोर व डाकू व राजा व जाति भाइयों का भय लगा रहने से अच्छीतरह निद्रा नहीं आती जिसमें कोई ले न जावे व द्रव्य प्राप्त होने से वेश्यागमन व जुवा व जीवहिंसा व जातिभाइयों से अभिमान उत्पन्न होकर अनेक तरह के पाप करने में आवते हैं जिस कारण संसार में अपयश उठाकर मरने उपरान्त नरक भोगना पड़ता है परमेश्वर ने बहुत अच्छा किया जो मेरा सब धन जातारहा जिस द्रव्य में

इतने अवगुण भरे हैं उसे पाकर शुभ कर्म में खर्च करडालना चाहिये द्रव्य इकट्ठी करने से सिवाय दुःख के कुछ सुख नहीं मिलता चारदिन के जीने में मायारूपी द्रव्य व स्त्री के वास्ते बहुत मनुष्यों से शत्रुता करनी उचित नहीं है जो लोग भरतखण्ड में मनुष्यतनु पाकर बीच प्रीति द्रव्य व स्त्री पुत्रों के फँसकर नष्ट होते हैं उनका संसार में जन्म लेना व्यर्थ है और उन्हें बड़ा मूर्ख समझना चाहिये देवतालोग यह इच्छा रखते हैं कि भरतखण्ड में हमारा जन्म बीचतनु मनुष्य के होता तो इस शरीर से जितनी बड़ी पदवी को चाहते हैं पहुँचजाते सो अब बुढ़ाई आने व इन्द्रियों की सामर्थ्य घटने से मैं कुछ शुभ कर्म नहीं करसक्ता इसलिये अब जितने दिन मेरे जीनेमें हैं उतने रोज अपने आत्माको कुछ दुःख देकर बीचस्मरण व ध्यान परमेश्वर के मग्न रहूं ऐसा विचारतेही उसने विरक्त होकर संन्यास धारण करलिया व एक जगह बैठकर परमेश्वर का भजन व स्मरण करने लगा जब वह ब्राह्मण नगर में भिक्षा करने जाता था तब पुरवासी उसको पहिंचानकर पिछली बात याद करके बहुत दुःख देते थे कोई गाली देकर उस पर थूक देता व कोई दण्ड व कमण्डलु छीनकर उसको रस्सों से बाँधने उपरान्त कहता था यह बड़ा सूम व कपटी होकर अब बकुला भक्त बना है हे उद्धव इसीतरह वह ब्राह्मण अनेक दुःख पानेपर भी किसी से कुछ खेद न मानकर अपने मनमें समझता था कि मुझे कोई देवता व मनुष्य व नवग्रह व जाड़ा व बरसात व गर्मी कुछ दुःख नहीं देते सब दुःख अपने प्रारब्ध व मनसे होता है संसारी मनुष्य अपना मन चलायमान होने से शुभ व अशुभ कर्म जैसा करते हैं वैसे दुःख व सुख उनको भोगना पड़ता है जिसने अपना मन वशमें किया उसे कुछ दुःख नहीं होता और यज्ञ व तप आदिक करने का प्रयोजन नहीं रहता पर यह मन चंचल बलवान् शत्रु जल्दी वश में नहीं होता मन के कारण से सदा शत्रु व मित्र होते आये हैं व मनको रोंक लेने से कोई शत्रुताई व मित्रताई नहीं रखता मनका विचार सब होकर शरीरका किया कुछ नहीं होसक्ता किस वास्ते कि मनुष्य अपनी स्त्री को अंग से लपटा कर कन्या को भी गले

लगावता है पर मनके कारण स्त्री को लपटावती समय कामदेव सतावता है व कन्याके गले लगावने में नहीं जागता जिसने अपना मन वश में नहीं किया उसका धर्म व कर्म करना वृथा है इसलिये मनको संसारी मायासे रोंककर हरिचरणोंमें लगाना चाहिये ॥

दो० मनके हारे हारि है मनके जीते जीत। परब्रह्मको पाइये मनहीं की परतीत ॥

हे उद्धव वह ब्राह्मण अपने मनको रोंककर ऐसा ज्ञानी होगया कि शत्रु व मित्र को बराबर समझकर किसी के गाली देने व मार पीट करने से क्रोध नहीं करता था इसी तरह का ज्ञान मन में रखकर मरने उपरान्त मुक्तिपदवी पर पहुँचा इस अध्याय को सच्चे मन से कहने व सुननेवाला अपने मन व काम व क्रोधादिक के वश न होकर भवसागर पार उतर जायगा ॥

चौबीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका आदिपुरुष व मायाका हाल कहना ॥

श्रीकृष्णजीने कहा हे उद्धव आत्मापुरुष व मायाका हाल बिलग करके कहते हैं सुनो जहां आत्मापुरुष निरंकाररूप है वहां वाणी व मन पहुँचने की सामर्थ्य नहीं रखते जब उस पुरुष को संसार उत्पन्न करने की इच्छा होती है तब वह पहिले अपनी माया को जिसे प्रकृति भी कहा जाता है उत्पन्न करते हैं उसी मायासे सात्त्विक व राजस व तामस तीन गुण प्रकट होते हैं जबतक तीनों गुण बराबर रहते हैं तबतक कोई जीव उत्पन्न नहीं होता व उनके घटने व बढ़ने से संसार की चाहना होती है व मेरा प्रकाश माया में मिश्रित होनेसे महत्तत्त्व प्रकट होकर उसमें अहङ्कार उत्पन्न होता है व अहङ्कार से वैकारिक व तामस व तेजस प्रकट होते हैं वैकारिक से पंचभूत व तामस से ग्यारह इन्द्रियां व तेजस से ग्यारह देवता इन्द्रियोंके मालिक उत्पन्न होकर जबतक ये सब अलग रहते हैं तबतक ब्रह्माण्ड पुरुष प्रकट नहीं होता जब मेरी शक्ति से ये सब वस्तु इकट्ठी होजाती हैं सो वह ब्रह्माण्डरूप मेरा होकर उस स्वरूप की नाभि से एक फूल कमल का तब ब्रह्माण्डपुरुष उत्पन्न होकर बहुत दिनतक जलमें शेषनागपर शयन

करते हैं निकलता है उस फूलकी डार से ब्रह्मा उत्पन्न होकर तप करने उपरान्त रजोगुण से सब जीव उत्पन्न करके तीनों लोक की रचना करते हैं सो देवता स्वर्गलोक व दैत्य व दानव आदिक पाताललोक व मनुष्य आदिक मर्त्यलोक में रहकर अपने कर्मानुसार स्वर्ग व नरक का दुःख व सुख भोगते हैं व ब्रह्मा के एक दिनमें चौदह इन्द्र बदल जाते हैं जब ब्रह्मा का एक दिन बीतकर सन्ध्या समय वह सो रहते हैं तब कोई लोक नहीं रहता जब ब्रह्मा प्रातःकाल उठकर रचना करते हैं तब फिर सब लोक व संसार प्रकट होजाते हैं व ब्रह्मा के मरने उपरान्त सिवाय पानी के कुछ नहीं रहता पृथ्वी पानी में व पानी अग्नि में व अग्नि वायु में व पवन आकाशमें व आकाश अहङ्कारमें व अहङ्कार महत्तत्त्वमें व महत्तत्त्व माया में मिलकर वह माया मेरे निरङ्काररूपमें समाजाती है॥

पच्चीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका उद्धवसे रजोगुण व तमोगुण व सतोगुणका लक्षण वर्णन करना॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव अब हम सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण का लक्षण वर्णन करते हैं सुनो जो मनुष्य मन में दया रखकर अपनी इन्द्रियों के वश न होवे शुभ व अशुभ कर्म करने का विचार किया करे व किसीके गाली देनेसे खेद न मानकर परमेश्वर का स्मरण व ध्यान करता रहै व सच बोलकर स्वभाव में धैर्य रख व सब बातों की याद व मन में सन्तोष रखकर किसी वस्तु की चाहना न करै व ठाकुरजी की पूजा व सेवा में मन लगाये रहै ये लक्षण सतोगुण के हैं व कोई जो सुन्दरी स्त्री व उत्तम भूषण व वस्त्र व स्थान व बाग आदिक संसारी सुख की चाहना रखकर अभिमान से किसीका कहना न माने व जो शुभ कर्म करै उसमें अपना यश चाहै व सदा सामर्थ्य व द्रव्य बढ़ाने का उपाय करता रहै उसे रजोगुणी समझना चाहिये व जो मनुष्य अधिक क्रोध व लोभ रक्खै व झूंठ बोलकर जीवहिंसा करै व कुकर्म करने व मांगने से निर्लज्ज होकर लोगों के साथ झगड़ा करता रहै व आठों पहर आलस्य में भरा रहकर अधिक सोवै ये लक्षण तमोगुण के हैं व सब वस्तु को अपना समझना व

मेरा तेरा विचारना व अपने को मैं जानना यह बात तीनों गुण मिलने से होती है पर मेरा भजन व ध्यान करनेवालेको सतोगुणके प्रतापसे कुछ चाहना नहीं रहती व तीनों गुण आठ पहर बराबर न रहकर घटा बढ़ा करते हैं व सतोगुण अधिक होने से मन में हर्ष व ज्ञान उत्पन्न होता है व रजोगुण बढ़ने से संसारी सुख की चाहना होती है व तमोगुण अधिक होने से चिन्ता व क्रोध व नींद व आलस्य बढ़कर जीवहिंसा व अधर्म करनेको मन चाहता है जागना सतोगुण व सोना व स्वप्न देखना रजोगुण व उदास होकर चिन्ता में बैठ रहना तमोगुण के लक्षण समझना चाहिये थोड़ा खाना सात्त्विकी व अच्छा पदार्थ भोजन करनेवास्ते ढूंढ़ना राजसी व भूख से अधिक खाना जिसमें अजीर्ण उत्पन्न हो तामसी जानना उचित है व आत्मा तीनों में मिश्रित व सबसे बिलग रहता है व सतोगुण स्वभाववाले स्वर्ग का सुख भोगते हैं व रजोगुणी मनुष्य अपने कर्मानुसार दुःख व सुख भोगकर जन्म व मरण से नहीं छूटते व तमोगुणी लोग पशु आदिक चौरासीलाख योनि में उत्पन्न होकर अपने कर्मानुसार नरक में बड़ा दुःख पाते हैं व संसार से विरक्त होने व मेरे चरणों का ध्यान व भक्ति करनेवाले हमारे पास वैकुण्ठ में पहुँचते हैं व गृहस्थी छोड़कर वन में रहना सतोगुण व नगर व गृहस्थी में रहकर संसारी सुख चाहना रजोगुण व मद पीना व जुआ खेलना व पर स्त्रीगमन करना व कुसंगत बैठना तमोगुण व देवस्थान पूजा करना तीर्थयात्रा में रहना निर्गुणका लक्षण है व ज्ञानचर्चा रखना सात्त्विक व श्राद्ध आदिक संसारी कर्म करना राजसी व जीवहिंसा व पाप आदिक तामसी व मेरी पूजा व जपमें लीन रहना निर्गुण धर्म समझना चाहिये हे उद्धव इसीतरह सब बातों में सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण के लक्षण होकर कोई जीव तीनों गुणोंसे बाहर नहीं है इन तीनोंसे विरक्त होकर निर्गुण भक्ति व पूजा करनेवाले मेरे निकट पहुँचते हैं॥

छब्बीसवाँ अध्याय।

श्रीकृष्णजीको उद्धवसे जो ज्ञान राजा पुरूरवाको गन्धर्वलोकमें हुआ वह वर्णन करना ॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव जिसे मेरे मिलनेकी चाहना हो वह मनुष्य कभी लम्पट व लोभी व जुआरी व संसारी प्रीति रखनेवाले व अपना शरीर पालन करनेवाले व अधर्मियोंसे संगत व प्रीति न रक्खे ऐसे लोगोंकी संगत करने से भी नरक भोगना पड़ता है इसलिये साधु व महात्माओं का सत्संग करना चाहिये जिससे हरिचरणों में प्रीति उत्पन्न हो जिस तरह राजा पुरूरवा उर्वशी अप्सराकी प्रीति में फँसकर नष्ट हुआ था उसी तरह संसारी लोग स्त्री व लम्पट के पास बैठकर अपना परलोक बिगाड़ देते हैं सो हे उद्धव तुम उन लोगोंकी संगत कभी मत करना इतनी कथा सुनकर उद्धवने पूछा हे त्रिभुवनपति राजा पुरूरवाका हाल किस तरह पर है यह वचन सुनकर मुरलीमनोहरने कहा हे उद्धव जिस तरह राजा पुरूरवा इला नाम स्त्रीसे उत्पन्न होकर उर्वशी अप्सराके वास्ते गन्धर्वलोकमें जा बसा था वह सब कथा नवम स्कन्धमें लिखी है अब उसके ज्ञान प्राप्त होनेका हाल सुनो जब राजा पुरूरवाने गन्धर्वलोक में रहकर हजारों वर्ष उर्वशीके साथ भोग व विलास किया व मन उसका नहीं भरा तब मेरी इच्छानुसार एकदिन उसने ज्ञानकी राह मनमें विचारा कि इतने दिन कामदेव के वश होकर मैंने संसारी सुख उठाया पर मेरी इन्द्रियों की चाहना पूरी नहीं हुई जिस तरह अग्निमें घी डालनेसे ज्वाला बढ़ती जाती है उसी तरह इन्द्रियको जितना अधिक सुख देवै उतनी चाहना बढ़कर कभी सन्तोष नहीं होता देखो मैं बुधका बेटा ऐसा ज्ञानी व प्रतापी राजा होकर उर्वशीके जाती समय उसके पीछे इसतरह नंगा उठ दौड़ा जिसतरह गदहा कामातुर होकर गदहीको खरेदे चला जाता है व उसने मुझे ऐसा वश कर लिया जैसे नटलोग वानरको अपने आधीन करलेते हैं व मैं उसके भोग व विलास में लपटकर ऐसा अन्धा होगया कि मुझे छोटे व बड़ोंकी लज्जा न रहकर दिन रात बीतनेकी सुधि जातीरही व हजारों राजा सातों द्वीपके जो मेरे आधीन थे हमारे अज्ञानपर हँसने

लगे सचहै जो कामी पुरुष स्त्रीके वश होजाते हैं उन्हें अपना भला व बुरा दिखलाई न देकर उनका तेज व बल व ज्ञान व धर्म कुछ नहीं रहता देखो मांस की पुतलीपर जिसमें मल मूत्र व लोहू आदिक भरा रहकर सब द्वारोंसे अशुद्ध वस्तु निकलती है मैं ऐसा बौड़हा होगया कि जहां इन्द्रादिक देवता मेरे साथ लड़नेकी सामर्थ्य नहीं रखते थे वहां एक स्त्रीने जीतकर अभिमान मेरा तोड़ दिया व उसकी प्रीति में फँसकर ऐसा अपने को भूलगया कि उर्वशी के समझाने परभी मुझे कुछ ज्ञान नहीं हुआ देखो जिस शरीरको माता व पिता व स्त्री व भोजन देनेवाला व कालचक्र मृत्यु व मालिक अपना समझते हैं वह शरीर मरने उपरान्त कुछ काम नहीं आता और फिर उसे कोई एक दिन घरमें नहीं रखसक्ता इसलिये मनुष्यको उचितहै कि पहिलेसे संसारी माया छोड़कर हरिचरणों में प्रीति लगावै ऐसा विचारतेही राजा पुरूरवा उर्वशीका प्रेम छोड़कर गन्धर्वलोक से पृथ्वीपर गिरपड़ा व हरिचरणोंमें ध्यान लगाकर मुक्तिपदवी पाई हे उद्धव स्त्रीके ध्यान लगाये रहने से यज्ञ व तप व तीर्थ व व्रत व दान व धर्म आदिकका करना कुछ गुण नहीं करता व विना सत्संग ज्ञान प्राप्त नहीं होता व जो लोग अपने अज्ञानसे समुद्ररूपी सागरमें गोता खारहे हैं उनको भवसागर पार उतरनेके वास्ते सत्संग नौका समझना चाहिये अन्धेको सत्संग आंख के समान होकर जिस तरह माता व पिता अपने पुत्रका भला चाहते हैं उसी तरह संसारी मनुष्य के कल्याणवास्ते सत्संग होता है जब मनुष्यको सत्संग करने से ज्ञान प्राप्त होकर अपने शरीर व स्त्री आदिककी प्रीति छूटजाती है तब वह विरक्त होकर हरिचरणोंमें ध्यान लगानेसे मुक्ति पाताहै जबतक मायारूपी स्त्री व द्रव्यकी तृष्णा नहीं छोड़ता तबतक स्वप्नमें भी ज्ञान नहीं प्राप्त होता संसारी मनुष्यका दुःख छोड़ानेवाली केवल मेरी भक्ति व शरण होकर इससे उत्तम दूसरा उपाय नहीं है इसलिये धन चाहनेवालेको धर्म करना उचित है व जो नरक जानेसे डरता है वह सत्संगमें बैठे तो उसको ज्ञान प्राप्त होकर मुक्ति मिलैगी विरक्त पुरुष व सन्त व महात्माको मेरा स्वरूप समझना चाहिये ॥

सत्ताईसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी को उद्धवसे पूजादिक की विधि कहना ॥

उद्धवने इतनी कथा सुनकर विनय की हे दीनानाथ धर्म ब्रह्मचारी व वानप्रस्थ व योग व तप आदि का बहुत कठिन है व बिना पूजा तुम्हारी शरीर पवित्र नहीं होता ब्रह्मा व नारद व बृहस्पति व व्यासजीने वेद व शास्त्र में अनेक उपाय लिखे हैं सो दया करके अपनी पूजाकी विधि जिसके करने से संसारी लोग भवसागर पार उतर जाते हैं वर्णन कीजिये श्याम-सुन्दरने कहा हे उद्धव मेरी पूजाका अन्त नहीं है पर संक्षेप से थोड़ासा हाल उसका कहताहूं सुनो एक विधि हमारी पूजा की वेदमें दूसरी तंत्र-शास्त्रमें लिखी है सो मनुष्यको चाहिये कि प्रातसमय उठकर मेरा व अपने गुरुके चरणोंका ध्यान करै फिर उसको दिशा व दतुइनि व स्नान व सन्ध्या व तर्पण व जप करने से सुचित्त होकर मेरा सगुण रूप पूजना चाहिये व मेरी मूर्ति आठ तरह से एक पत्थर व दूसरी काठ व तीसरी सोना व चौथी चांदी व पांचवीं पीतल व छठवीं तांबा व सातवीं पृथ्वीपर चबूतरा आदिक व आठवीं मिट्टीका स्वरूप बनाकर पूजा व ध्यान करै सिवाय इसके मूर्ति रत्न व चित्रकारी कागज व दीवार व शीशेपर खींचकर जिसतरह होनेसके पूजा करना उचितहै व दोतरहपर मूर्ति मेरी होतीहै एक चल व दूसरी अचल मूर्ति ठाकुरजी आदिक जो सिंहासनपरसे उठाकर स्नान कराने उपरान्त सिंहासनपर बैठालके पूजते हैं उसे चल समझना चाहिये व जो मूर्ति शिवालय व मन्दिर आदिक में स्थापन करदेते हैं और फिर वह उठने नहीं सक्ती उसको अचल जानना उचित है सो दोनों मूर्ति चल व अचलको स्नान कराने व चन्दन लगाने उपरान्त भूषण व वस्त्र पहिनाकर धूप व दीप व माला फूल व तुलसीदल नैवेद्य से पूजन करके अतर मल देना व शीशा दिखलाना चाहिये व चित्रकारी की मूर्ति को स्नान कराना उचित न होकर कपड़े से पोछने उपरान्त पूजन करना उचित है व पृथ्वीपर चबूतरा आदिक बनाये हो उसमें पहिले भगवान्का ध्यान करके विधिपूर्वक पूजना चाहिये व जो कोई मानसी पूजा किया

चाहै वह अपने मनमें नारायणजी के स्वरूपका ध्यान लगाकर जिस तरह मूर्तिको पूजते हैं उसी तरह धूप दीप नैवेद्य आदिकसे ध्यानमें पूजन करै और हमारे पूजन करती समय ध्यान सुदर्शनचक्र व पाञ्चजन्य शंख व गदा व पद्म व धनुर्बाण व हल व मूशल मेरे शस्त्र व वैजयन्ती माला व नन्द व सुनन्द व पुण्य व सुशील व गरुड़ व विशुक व सेन व सुनाम नवोपार्षद व दुर्गादेवी व गणेश व वेदव्यास व इन्द्र आदिक देवताओंका करना चाहिये व जितनी वस्तु भोजनकी अपने को बहुत प्यारी हो उसे बनवाकर ठाकुरजीका भोग लगावे कदाचित् नित्य सब तरहका भोजन तैयार न हो सकै तो अन्नकूट आदिक पर्व के दिन ठाकुरजीका भोग लगानेवास्ते अवश्य छत्तीस व्यंजन बनवाना उचित है व जो मनुष्य प्रति दिन मिट्टीकी मूर्ति बनाकर पूजा करै उसे आवाहन व विसर्जनका मंत्र अवश्य पढ़ना चाहिये व ठाकुर पूजनेवालेको वह मन्त्र पढ़ना न चाहिये व होम करनेवाले को अग्नि में मेरा ध्यान लगाना व जल व सूर्य को भी हमारा रूप समझना उचित है व पूजा करती समय मेरे चरणों में मन लगाये रहै और पूजा करने उपरांत साष्टांग दण्डवत् करके ठाकुरजी से हाथ जोड़कर कहै हे महाप्रभु मैं तुम्हारे शरण पड़ता हूं मुझे अपना दास जानकर उद्धार कीजिये इसीतरह नित्य पूजनके उपरांत चरणामृत लेकर प्रसाद ठाकुरजीका भोजन करै व विष्णुसहस्रनाम का पाठ पढ़कर मेरी कथा व लीला सुने व भजन व स्मरण करने में दिन रात लीन रहै व जिसे परमेश्वर धन देवे वह ठाकुरमन्दिरके खर्च वास्ते गांव व जागीर देकर बाग लगवा दे जिसमें अच्छीतरह ठाकुरपूजा हो व अनेक रङ्ग के फूल सुगन्धित उनमें चढ़ा करैं पर उस बाग व गांवको बेचने या पोत व किराया लेनेकी इच्छा न रक्खै हे उद्धव मैं भक्ति व प्रीतिकी राह जितना केवल जल चढ़ावने से प्रसन्न होता हूं उतना विना भक्ति करोड़ों रुपया हरिमन्दिर में लगाने व दान देने से राजी नहीं होता जो मनुष्य सच्चे मनसे प्रति दिन इस तरह मेरा पूजन व सेवा करता है उसके सामने अठारहों सिद्धियां बनी रहती हैं व जितना फल पूजा करने व देवस्थान

बनवानेवालों को प्राप्त होता उतना पुण्य उनको भी समझना चाहिये जो लोग पूजा करने व देवस्थान बनाने का सम्मत देकर उस काम में सङ्ग देते हैं व जो लोग अपने व दूसरे की दान दी हुई पृथ्वी ब्राह्मणसे या देवस्थान आदिकका चढ़ाया हुआ बाग बजोरी छीन लेते हैं व ऐसा सम्मत देने वालों को साठिहजार वर्ष तक कीड़ा होकर विष्ठामें रहना पड़ता है॥

अट्ठाईसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी को उद्धवसे ज्ञान विरक्त होनेका वर्णन करना॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव ज्ञानी को किसी की स्तुति व निन्दा करना उचित न होकर सब जीवों में परमेश्वरका चमत्कार एकसा समझना चाहिये दूसरेकी निन्दा करनेवाले अवश्य नरक भोगते हैं इसलिये मनुष्य को उचित है कि मन अपना एक ओर लगाये रखकर ठाकुर की पूजा करती समय दूसरी ओर ध्यान न लगावे व शरीरमें एक आत्मा जो शुद्ध है उसका ध्यान आठों पहर करता रहै व यह बात मनमें विश्वास जानै कि नारायणजी मायाके गुणोंको साथ लेकर सब संसार उत्पन्न व पालन व नाश करते हैं जब मनुष्यने ऐसा विचारकर एक परमेश्वर को सच व संसारी व्यवहार झूंठा समझा तब मन उसका विरक्त होकर मेरी ओर लग जाता है व जब आत्मा मन इन्द्रियों के साथ मिलगया तब वह संसारी प्रीति में फँसकर मायाजालसे नहीं छूटता जिसतरह मनुष्य स्वप्नमें अनेक वस्तु देखकर जागने उपरान्त उसे झूंठा समझता है उसीतरह संसारी व्यवहार मिथ्या होकर केवल परमेश्वर का नाम सच जानना चाहिये हर्ष व शोच व क्रोध व लोभ व अहङ्कार व भय व प्रीति व शत्रुताई व जन्म व मरण यह सब गुण मायाके होकर आत्मा उनसे बिलग रहता है और यह संसार नट व भानमतीके खेल समान झूंठा होकर न आदि में था न महाप्रलयमें रहैगा इसलिये मनुष्य को ज्ञानरूपी तलवारसे संसारी प्रीति व मन इन्द्रियों की तृष्णा काट डालना चाहिये जब उसने संसारी माया छोड़कर अपने मन व इन्द्रियों को वशमें किया तब उसको घर व वनका रहना दोनों बराबर हैं जिसतरह सोने का अनेक गहना बनवाने

से नाम उसका पृथक् पृथक् होता है और वह सब गहना गलवा डाले तो केवल सोना कहलाता है उसीतरह संसारके आदि व अन्त व मध्यमें कांचनरूपी नारायणजी रहते हैं व उनकी इच्छासे अनेक जीव उत्पन्न होकर बिलग बिलग नाम उनका होताहै व महाप्रलय होने में सारा जगत् नाश होकर जीवात्मा सब जड़ व चैतन्यका परमेश्वरके रूप में समाजाता है जैसे सड़कमें सीपका टुकड़ा चांदीके समान चमकता हुआ देखकर कोई लोभी उठा लेवे और उठाती समय सीप समझकर लज्जित होजावै वैसे संसारी गति झूंठी समझना चाहिये जिस तरह उड़तेहुये बादलसे आकाश कुछ मिलावट नहीं रखता उसी तरह आत्मा चौरासीलाख योनिमें व्यापक रहने पर भी सबसे बिलग रहता है इसलिये मनुष्यको चाहिये कि मन अपना मायाके गुणोंसे विरक्त रखकर ऐसा हरिचरणों में ध्यान लगावै कि संसारी वस्तुकी कुछ चाहना व प्रीति न रहै जिसतरह औषध खानेसे रोग शरीरमें नहीं रहता उसीतरह अपने मन व इन्द्रियोंको वश रखनेसे संसारी तृष्णा व प्रीति छूटजातीहै जिसने मन व इन्द्रियोंको अपने वशमें नहीं किया उसका तप व स्मरण करना वृथा है जब मन मनुष्यका बीच ध्यान चरण परमेश्वरके लीन होगया तब उसे अपने शरीर व संसारकी प्रीति नहीं रहती इसलिये मनुष्य चलते फिरते सोते जागते खाते पीते मन अपना आठों पहर नारायण की ओर लगाये रहै जिसतरह सूर्य निकलने से अँधियारा रातका छूटजाता है उसीतरह मेरी भक्ति करने से अज्ञान नहीं रहता योग व तप भंग होने से जल्दी गति नहीं होती व मेरे भक्तसे कुछ अपराध भी होजाताहै तो दूसरे जन्म में उसका उद्धार करदेताहूं व आत्मा शरीर में रहने से सब इन्द्रियों को चलने व फिरने व बोलने की सामर्थ्य रहती है व जितने देवता प्रकाश अपना इन्द्रियों में रखते हैं सब देवताओं को भी वही आत्मा सामर्थ्य देखकर उनसे बिलग रहता है इसवास्ते ज्ञानी व योगियों को चाहिये कि आत्मा की ओर ध्यान लगाकर संसारी माया व मोहमें न फँसें ऐसे मनुष्योंपर पिछले जन्मके अधर्म करने से कोई दुःख भी पड़जाता है तो मैं उनका कष्ट निवारण करदेताहूं यह वचन मेरा सच्चा

मानकर नाश होनेवाले शरीर से प्रीति न रखना व इन्द्रियों को सुख देना उचित नहीं है ॥

उन्तीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका उद्धवसे मनके रोकने का ज्ञान कहना ॥

उद्धव ने इतनी कथा सुनकर विनय की हे दीनानाथ आपने कहा कि मनको रोकना चाहिये सो हवासे भी अधिक वेग रखनेवाले मनको रोकना बहुत कठिन है कोई ऐसा उपाय बतलाइये जिसमें मन रोका जावे व हरिचरणों में प्रीति उत्पन्न हो सिवाय तुम्हारे दूसरा कोई इसका यत्न बतलाने नहीं सक्ता व आपकी माया ने संसारी जीवों को ऐसा भुला रक्खा है कि विना दया व कृपा तुम्हारी कोई इस मायारूपी जाल से नहीं छूटता जहां ब्रह्मादिक देवताओं को तुम्हारा भेद जानना कठिन है वहां संसारी मनुष्य हरिचरित्र समझने की कहां सामर्थ्य रखते हैं यह बात सुनकर श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव जो कोई संसार में जन्म लेकर मेरे चरणोंका ध्यान व स्मरण करताहै तो उसको धीरे धीरे संसारी प्रीति छूटकर प्रतिदिन हरिचरणोंमें प्रेम बढ़ताहै जहां तीर्थपर मेरे भक्त व ज्ञानीलोग रहते हैं वहां उनकी संगतमें रहकर मेरा भजन व स्मरण किया करै व सब जीवोंपर दया रखकर चौरासी लाख योनिमें मेरा प्रकाश बराबर समझै व किसी जीवको दुःख न देकर जहांतक बनिपड़ै वहांतक मनसा वाचा कर्मणासे दूसरेका उपकार करै व मनमें यह अभिमान न रक्खै कि उत्तम जाति व बड़ा मनुष्य होकर कंगाल व शूद्रको किसतरह पानी पिलाऊं व उसे छूकर भोजन दूं जब तक मनुष्य प्रकाश परमेश्वर का बीच तनु ब्राह्मण व चाण्डाल के एकसा नहीं समझता तबतक वह अज्ञान है व जिसने देवता व दैत्य व मनुष्य व पशु व पक्षी आदिक चौरासी लाख योनि में परमेश्वरका रूप बराबर जाना उसे कोई दुःख देनेकी सामर्थ्य नहीं रखता वह अवश्य मुक्त होता है हे उद्धव यह सब गुप्त ज्ञान हमने आजतक किसी से नहीं कहा था सो तुझे सुनाया इसको याद रखने से तेरी मुक्ति होजावेगी व तुम भी यह ज्ञान हरिभक्त व साधु व महात्मा लोगोंको सुनाना और जो मनुष्य चोर व

लम्पट व पाखण्डी व लोभी व जुआरी व मद्यप व झूंठे हों व जीवहिंसा करके पराया उपकार नहीं मानें उनसे मत कहना जिसतरह अमृत पीनेवाले को दूसरी औषध खानेका प्रयोजन नहीं रहता उसी तरह यह ज्ञान समझनेवालोंको अपने भवसागर पार उतरने वास्ते दूसरा कुछ उपाय करना न चाहिये जो कोई यह ज्ञान व हरिकथा सच्चे मनसे सुनकर दूसरे को उपदेश करेगा उसको हम यमराजकी फाँसीसे छुड़ाकर परमपद देवेंगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित उद्धव ने यह सब ज्ञान सुनकर आंखोंमें आंसूभरलिया व श्रीकृष्णजी के सामने हाथ जोड़कर विनय की हे महाप्रभु आपने दयाकी राह ज्ञानका दीपक मेरे हृदयमें प्रकाशित करके इसतरह मायारूपी अँधेरा छुड़ा दिया जिसतरह सूर्य निकलने से कुहिरा नहीं रहता व तुम्हारी कृपा से मन मेरा विरक्त होकर स्त्री व पुत्रों का प्रेम छूटगया आपको दयाका पलटा कोई दिया चाहै तो किसी तरह उऋण नहीं होसक्ता इसलिये कमलरूपी चरणों को बार बार दण्डवत् करके यह वरदान मांगताहूं जिसमें तुम्हारा चरण छोड़कर मन मेरा दूसरी ओर न जावै यह वचन सुनकर श्रीकृष्णजी आनन्दमूर्ति ने अपनी खड़ाऊं देकर कहा हे उद्धव तुम यहां से बदरी केदार जाकर नित्य गंगा स्नान किया करो व कन्दमूल खाकर मेरे चरणों का ध्यान लगावो तुम्हारी मुक्ति हो जावैगी और अब मैं भी कलियुगवासियों के उद्धार होने वास्ते भागवत रूपी मूर्ति अपनी संसार में छोड़कर गोलोक को जाऊंगा उस कथाके पढ़ने व सुनने से संसारी मनुष्य भवसागर पार उतर जावेंगे उद्धवजी यह वचन सुनतेही श्यामसुन्दर का वियोग समझकर अति दुःखी होगये पर उनकी आज्ञा टालना उचित न जानकर खड़ाऊं का जोड़ा शिरपर धर लिया व दण्डवत् करने व परिक्रमा लेने उपरान्त मोहनीमूर्तिका स्वरूप आंखोंकी राह हृदय में रखकर उनसे बिदा हुआ व बदरिकाश्रम में जाकर त्रिभुवनपति की आज्ञानुसार स्नान व ध्यान करने लगा सो उसी ज्ञानके प्रताप से कुछदिन बीते तनु अपना साथ योगाभ्यास के छोड़कर मुक्तिपदवीपर पहुँचा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने श्यामसुन्दर को ध्यान

में दण्डवत् किया और परीक्षित से बोले हे राजन् देखो त्रिभुवनपति ने सब वेदोंका सार अमृतरूपी ज्ञान व भक्ति निकालकर ग्यारहवें स्कन्ध में उद्धवको पिलाय दिया जिस तरह देवता व दैत्यों ने समुद्र मथन करके चौदह रत्न निकाले थे उसी तरह वेदव्यासजी ने सब वेद व शास्त्र देखकर उसका सार श्रीमद्भागवत बनाया है ॥

तीसवां अध्याय ।

सब यदुवंशियों का आपसमें लड़कर नाश होना व श्रीकृष्णजी के पांव में जरा नाम केवटको बाण मारना ॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर विनय की हे मुनिनाथ श्याम-सुन्दरको शाप छुड़ाने की सामर्थ्य थी फिर किसवास्ते उन्होंने यदुवंशियों पर दया नहीं की शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित वसुदेवनन्दन परब्रह्म परमेश्वर के अवतार को जो संसारी मायासे रहित थे यदुवंशियोंका नाश करना था पर आपने उनकी पालना की थी इसलिये अपने हाथ मारना उचित न जानकर ब्राह्मण से शाप दिलवा दिया जब उद्धव बदरी केदार की ओर चले गये तब श्रीकृष्णजी ने ऐसा बिचारा कि द्वारकापुरीमें शाप नहीं व्यापैगा इस कारण यदुवंशियों को प्रभासक्षेत्र में चलनेवास्ते कहा सो त्रिभुवनपति की आज्ञानुसार सिवाय राजा उग्रसेन व वसुदेवजी के सब यदुवंशी हाथी व घोड़े व रथोंपर चढ़कर प्रभासक्षेत्र में पहुँचे व स्नान व दान करने उपरांत उस दिन तीर्थव्रत रखकर वहां टिक रहे दूसरे दिन परमेश्वर की इच्छानुसार सब यदुवंशी मदिरा पान करके मतवाले होगये व समुद्र किनारे बैठकर अपनी अपनी बड़ाई करने लगे व इसी बात पर स्नान करती समय पहिले पानी के छीटों से लड़ने लगे फिर आपस में बाण व तलवार व गदा आदिक अनेक शस्त्र चलनेलगे जिसतरह अधर्म करनेवाले वेद व शास्त्र का वचन झूंठा जानकर अपने मनमाना पाप करते हैं उसी तरह ब्राह्मण के शापसे यदुवंशीलोग श्याम व बलराम का समझाना न मानकर जब बलभद्रजी से लड़नेवास्ते दौड़े तब दोनों भाई अलग बैठकर कौतुक उनका देखने लगे जब लड़ते लड़ते शस्त्र सब

किसी के टूटकर हाथी घोड़े मारे गये तब उसी पतली को जो मूशल के चूरसे समुद्र किनारे जमी थी उखाड़कर एक दूसरेको मारनेलगा सो दुर्वासा ऋषीश्वर के शाप से वह पतली मारती समय तलवाररूपी घाव होकर सब यदुवंशी मरने लगे जैसे कुलवंती स्त्री दूसरे पुरुष को देखकर छिपजाती है वैसे क्रोध उत्पन्न होने से सब यदुवंशियों का सतोगुण व ज्ञान शरीर से जाता रहा जिस तरह बांसका वन आगि लगने से जलजाता है उसी तरह दुर्बुद्धि उत्पन्न होनेसे बाप बेटा व भाई भाई आपसमें लड़कर छप्पन करोड़ यदुवंशी नाश होगये जब सिवाय श्याम व बलराम के और कोई जीता नहीं बचा तब श्यामसुन्दर ने बलभद्रजी से कहा अब भार पृथ्वी का उतर गया इसलिये हम व तुम दोनों भाइयों को भी वैकुण्ठमें जाना चाहिये यह सुनतेही बलभद्रजीने सब वस्त्र अपना उतारि डाला व कौपीन बांधने उपरान्त सिंधुके तीर बैठकर साथ योगाभ्यास के अन्तर्धान होगये तब श्यामसुन्दर चतुर्भुजी स्वरूप धारण करके शङ्ख व चक्र व गदा व पद्म समेत समुद्र किनारे नीचे वृक्ष पीपल के जाबैठे जिस समय त्रिभुवनपति वृक्ष से उठँगे हुये दाहिना पैर अपने बांयें घुटने पर रखकर वैकुण्ठ जाने की इच्छा रखते थे उसी समय वसुदेवनन्दन की इच्छानुसार जरा नाम केवट जो बालि वानर का अवतार था धनुष बाण लेकर वहां आन पहुँचा व उसने पैर मुरलीमनोहर का दूरसे चमकता हुआ देखकर हरिण के धोखे से बाण मारा तो वही तीर जिसमें मछली के पेट से निकले हुये लोहे का फल बना था आनकर ऊपर चरण त्रिभुवनपति के लगा जब वह केवट अपना सौजा उठानेवास्ते निकट आया तब श्यामसुन्दरके पांव में घाव देखकर पीला होगया व डरके मारे कांपता हुआ हाथ जोड़कर बोला हे दीनानाथ मेरे बराबर दूसरा कोई अपराधी संसार में न होगा जिसने लक्ष्मीपति को तीर मारकर दुःख दिया इस पाप करने से मेरा उद्धार किसीतरह नहीं होसक्ता इसलिये तुम मुझे अपने हाथसे मारडालो जिसमें मेरे दण्ड पावनेका हाल सुनकर कोई दूसरा सन्त व महात्मा का अपराध न करै व हे महाप्रभु जब तुम्हारी मायाको ब्रह्मादिक देवता नहीं

जानसके तब मुझ अधर्मी व अज्ञानी को क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा को पहुँचने सकूं जब वह केवट बहुत विलाप करके ऊपर चरण मुरलीमनोहर के लोटने लगा तब श्यामसुन्दर ने हँसकर कहा तू कुछ उदास मत हो मेरी इच्छानुसार तुमसे अनजान में यह अपराध हुआ है जिसमें ब्राह्मणका शाप झूठा न हो तू धैर्य रख तेरे वास्ते वैकुण्ठसे विमान आता है यह वचन मुरलीमनोहरके मुख से निकलतेही एक विमान जड़ाऊ वहां आन पहुँचा सो त्रिभुवनपति की आज्ञानुसार वह केवट दिव्य रूप होने उपरांत विमानपर बैठकर वैकुण्ठमें चला गया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित देखो जो कोई ऐसे दीनदयालु परमेश्वर की शरण छोड़कर दूसरे का भरोसा रखता है उसे बड़ा मूर्ख समझना चाहिये उस केवटके जाने उपरांत दारुक नाम सारथीने ढूंढ़ते हुये वहां पहुँचकर जैसे मुरलीमनोहर को दण्डवत् किया वैसे त्रिभुवनपति की इच्छानुसार वह रथ घोड़ों समेत उड़कर आकाश में चला गया व श्रीकृष्णजी ने दारुक सारथी से कहा तुम द्वारका में जाकर वसुदेवजी आदिक से यदुवंशियों का हाल कहके उन्हें समझा देना कि अब द्वारकापुरी समुद्र में डूब जावैगी इसलिये सब लोग अपनी अपनी वस्तु समेत अर्जुन के साथ हस्तिनापुर चलेजावैं व हमारी ओर से अर्जुन को कहि दीजियो कि मेरे वैकुण्ठ जाने का कुछ शोच न मानकर सब स्त्री व बूढ़े व लड़कोंको अपने संग लेजावैं व हमने जो ज्ञान उसको गीता में समझाया है वही बात सच जानकर मेरे चरणों का ध्यान करता रहै व हे दारुक मेरा भजन व स्मरण करने व अपना धर्म रखने से तेरी भी गति होजावैगी यह वचन सुनतेही दारुक सारथी उनसे बिदा होकर रोता व पीटता द्वारकाकी ओर चला ॥

इकतीसवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका वैकुण्ठधामको जाना व वसुदेव आदिकका उनके शोच में मरना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब देवताओं ने उस केवटको विमान पर चढ़े हुये वैकुण्ठकी ओर जाते देखा तब ब्रह्मा व इन्द्र व कुबेर व वरुण

व गन्धर्व व विद्याधर व चारण व किन्नर आदिक सब देवता अप्सराओं को साथ लेकर अपने अपने विमानों पर गाते व बजाते व फूल बर्षाते हुये जहां पर श्यामसुन्दर बैठे थे वहां आकाश में आनकर इस इच्छा से इकट्ठे हुये कि अब द्वारकानाथ वैकुण्ठ में आते हैं चलकर मोहनीमूर्तिकी छवि देख लेवें नहीं तो फिर उस अद्भुत रूप का दर्शन कहां मिलैगा सो हमलोग भी उनको अपने स्थान पर ले जाकर दो चार दिन उनकी सेवा करैंगे ऐसा विचारकर वे लोग मुरलीमनोहर के चढ़ने वास्ते अपने अपने लोक से दिव्य विमान ले आये थे जब श्यामसुन्दर ने देवताओं को आकाश में देखा तब अपने शरीर में परमात्मा का ध्यान लगाकर आंखें बन्द करलीं व उसी शरीर से बिजुली के समान चमककर इसतरह वैकुंठ को चलेगये कि ब्रह्मादिक देवताओं को भी अच्छी तरह उनका स्वरूप दिखलाई नहीं दिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित वैकुण्ठनाथकी महिमा व भेदको पहुँचना बहुत कठिन है पर सब कोई अपनी सामर्थ्य भर उनका गुण गाते हैं देखो जो आदिपुरुष भगवान् कैसे कैसे वीरोंको मारकर गुरुका मरा हुआ बेटा यमपुरी से लेआये थे वही त्रिभुवनपति मनुष्यतनु धरने के कारण जरा नाम केवटके बाण मारने से वैकुण्ठको चले गये जब श्रीकृष्णजीका वंश जगत् में नहीं रहा तब संसार में जन्म पाकर कोई जीता न बचैगा इतनी कथा सुनाकर सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा जब दारुक सारथी ने द्वारका में पहुँचकर हाल मरने सब यदुवंशी व जाने श्याम व बलरामका वैकुण्ठधाममें वसुदेव व उग्रसेन आदिक से कहा तब सब स्त्री व पुरुष छोटे बड़े जो वहां पर थे रोते रोते व्याकुल होकर प्रभासक्षेत्रको दौड़े जब उन्होंने रणभूमिमें पहुँच कर समुद्र किनारे सब यदुवंशियों की लोथैं पड़ी हुई देखीं व श्याम व बलरामका दर्शन नहीं पाया तब वसुदेव व देवकी व राजा उग्रसेन हाय मारकर उसी जगह मर गये व रुक्मिणी व सत्यभामा आदिक आठों पटरानी मुरलीमनोहर व रेवती बलरामजी की स्त्री चिता बनाकर जल मरीं व प्रद्युम्न आदिक सब वीरोंकी स्त्रियां अपने अपने पतियों के साथ

सती होगई जब उस समय अर्जुनने भी वहां पहुँचकर यह दशा देखी व दारुकके मुखसे श्यामसुन्दरका उपदेश सुना तब उसने ऐसा शोच किया जिसका वर्णन नहीं होसक्ता पर श्यामसुन्दरने जो ज्ञान अर्जुनको गीता में कहा था वह समझकर अपने मनको धैर्य दिया व सब किसीने अपने अपने घरवालों की लोथ जलाकर शास्त्रानुसार क्रिया व कर्म किया व जिनके कुलमें कोई नहीं बचाथा उनका अर्जुनने दाह किया जब त्रिरात्री वहां पर होचुकी तब अर्जुन वज्रनाभ अनिरुद्ध के बेटा व स्त्री व बूढ़े व बालकोंको जो बचगये थे अपने साथ लेकर हस्तिनापुरको चला उस समय सिवाय स्थान रहने श्रीकृष्णजीके और सब द्वारका समुद्रमें डूबगई अबतक वहां कभी कभी मन्दिर श्यामसुन्दरका बिजुली की तरह चमकता हुआ दिखलाई पड़ताहै जब अर्जुनने हस्तिनापुर पहुँचकर यह सब समाचार कहा तब युधिष्ठिरआदिक पांचौ भाइयोंने राजगद्दी हस्तिनापुरकी परीक्षितको व राज्य इन्द्रप्रस्थ व मथुराका वज्रनाभको जो श्रीकृष्णजीके कुलमें बचा था देदिया व आप पांचौ भाई विरक्त होकर उत्तर दिशामें चले गये व हिमालयमें गलकर मुक्तपदवीपर पहुँचे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिसदिन श्रीकृष्णजी वैकुण्ठ को पधारे उसी दिन सत्य व धर्म संसारसे उठकर उनके साथ चला गया पर जो कोई इस स्कन्धको मन लगाकर पढ़ै व सुनैगा वह अनेक जन्मके पापोंसे छूटकर मुक्ति पावैगा ॥

बारहवां स्कन्ध ।

कलियुगवासी मनुष्यों व राजाओंका हाल कहना व तक्षक सांपका राजा परीक्षितको काटना व मार्कण्डेय ऋषीश्वरकी कथा ॥

पहिला अध्याय ।

शुकदेवजीको कलियुगवासी राजाओंका हाल परीक्षितसे वर्णन करना ॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर विनय की हे मुनिनाथ आपने कहा जिस दिन श्रीकृष्णजी वैकुण्ठ को गये उसीदिन सत्य व धर्म संसारसे उठगया क्या उनके पीछे कोई ऐसा धर्मात्मा राजा नहीं हुआ जो धर्मको स्थिर रखता अब यह बतलाइये कि फिर किसके वंशमें राज-गद्दी रही थी शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित श्यामसुन्दरके रहनेतक द्वापर युग था उनके पीछे कलियुग में जो राजा हुये उन्होंने सचाई व धर्म छोड़ दिया व थोड़ी आयुर्बल रहने से कुछ शुभ कर्म भी नहीं करसके थे जब श्रीकृष्णजी महाराज वैकुण्ठ धामको गये तब पांडवों के वंशमें तुम चक्रवर्ती राजा हुये व तुम्हारे उपरान्त वज्रनाभ व जनमेजय चक्रवर्ती राजा होंगे व जरासन्धका बेटा जो सहदेव था उसके वंशमें पुरुजित् नाम राजा होगा उसे चाणक मंत्री मारकर प्रदेवत् अपने पुत्रको राज्य देगा उसके वंशमें तीनसौ अड़तीस वर्षतक राजगद्दी रहैगी फिर शिशुनाग नाम राजा होगा उसके कुलमें काकौरन व क्षेमधर्मा आदिक उत्पन्न होकर तीनसौ साठ वर्ष राज्य करेंगे फिर महानन्दी राजाके विन्द नाम बेटा शूद्रीसे उत्पन्न होकर बरजोरी सब क्षत्रियोंका धर्म नष्ट करैगा व उसके डरसे सब कुलीन क्षत्री भागकर पंजाबमें जा बसैंगे व पर्वत के रहनेवाले क्षत्री शूद्रधर्म रक्खैंगे व राजा बिन्दके आठ बेटे राज्य करैंगे व उन आठों को चन्द्रगुप्तनाम दास मारकर आप राजगद्दी पर बैठजायगा व उसके

वंशमें वारीचारी व देवहूती आदिक उत्पन्न होकर हजार वर्ष तक वह राजा रहेंगे फिर कण्व नाम मंत्री देवहूती अपने राजा को स्त्री के विषय में फँसे रहने से मारकर आप राज्य करैगा उसी कुल में वसुदेव व बहुमित्र व नारायण नाम आदिक उत्पन्न होकर उनके वंशमें तीनसौ पैंतालीस वर्षतक राज्य रहैगा फिर कनल नाम शूद्र नारायण नाम अपने राजाको मारकर आप राजगद्दी पर बैठजायगा उसके वंशमें कृष्ण व पूर्णमास आदिक उत्पन्न होकर तीस पीढ़ी साढ़ेआठसौ वर्षतक राज्य करैंगे फिर उभरती शहरके रहनेवाले सात अहीर राजा होकर उन्हें मारने उपरांत कावोंका राज्य होगा व उनके पीछे चौदह पीढ़ी तक मुसल्मान राजा होकर बादशाह कहलावैंगे व एक हजार निन्नानवे वर्ष उनका राज्य रहैगा व मुसल्मानों को जीतकर दशपीढ़ी गोरखड़ राज्य करैंगे उनके पीछे ग्यारहपीढ़ी निन्नानवे वर्षतक मौनका राज्य होगा इतने लोग कलियुग में नामी राजा होकर फिर अहीर व शूद्र व म्लेच्छ राजा होंगे व कलियुगवासी राजा अपना कर्म व धर्म छोड़कर स्त्री व बालक व गौका वध करैंगे व दूसरे का धन व स्त्री व पृथ्वी बजोरी छीनकर काम व क्रोध व लोभ अधिक रक्खैंगे उनकी दशा देखने से प्रजालोग अपने कर्म व धर्म से न रहकर बहुत पाप करैंगे ॥

दूसरा अध्याय।

शुकदेवजीको कलियुगवासियोंका लक्षण कहना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित कलियुग में प्रतिदिन संसारी मनुष्य दया व सचाई छोड़देने से सामर्थ्यहीन होजावैंगे और आयुर्बल थोड़ी होने में कुछ शुभ कर्म उनसे नहीं बनपड़ेगा व राजालोग प्रजाको दुःख देकर चारों भाग अन्नका लेलेवैंगे व वर्षा थोड़ी होकर अन्न कम उत्पन्न होगा व महँगा पड़ने से सब मनुष्य खाने विना दुःख पाकर अपने अपने वर्ण व आश्रमका धर्म छोड़ देवैंगे व कलियुग में आयुर्बल मनुष्य की एकसौ बीस वर्ष की लिखी है पर अधर्म करने से पूरी आयुर्दाय न भोग कर उसके भीतर मरजावैंगे व कलियुग के अन्त में बहुत पाप करने के

कारण बीस बाईस वर्ष से अधिक कोई नहीं जीवेगा व ऐसा चक्रवर्ती व प्रतापी राजा भी कोई नहीं रहैगा जिसकी आज्ञा सातों द्वीप के राजा पालन करैं जिनकेपास थोड़ासा भी राज्य व देश होगा वे अपने को बड़ा प्रतापी समझैंगे व थोड़ी आयुर्दाय होनेपरभी पृथ्वी व धन लेनेवास्ते आपस में झगड़ा करेंगे व अपना धर्म व न्याय छोड़कर जो मनुष्य उनको द्रव्य देगा उसका पक्ष करैंगे व पाप व पुण्य का विचार न रक्खेंगे व चोरी व कुकर्म करने व झूंठ बोलने में अवस्था अपनी बिता कर दमड़ी की कौड़ी वास्ते मित्रसे शत्रु होजावेंगे व गायोंका दूध बकरी के समान थोड़ा होकर ब्राह्मणों में कोई ऐसा लक्षण नहीं रहैगा जिसे देखकर मनुष्य पहिंचानसकै कि यह ब्राह्मण है पूछने से उनकी जाति मालूम होगी व धनपात्रकी सेवा सब लोग करैंगे व उत्तम मध्यम वर्ण का कुछ विचार नहीं रहैगा व व्यापार में बल अधिक होगा व स्त्री पुरुप का चित्त मिलने से ऊँच नीच जाति आपस में भोग विलास करैंगे व ब्राह्मणलोग अपना धर्म व कर्म छोड़कर जनेऊ पहिरने से ब्राह्मण कहलावैंगे व ब्रह्मचारी व वानप्रस्थ जटा शिरपर बढ़ाकर आचार व विचार अपने आश्रम का छोड़ देवैंगे व कङ्गाल उत्तम वर्ण से धनपात्र मध्यम वर्णको अच्छा समझैंगे व मूर्ख मनुष्य झूंठी बात बनानेवाला सच्चा व ज्ञानी कहलावेगा व तीनों वर्ण के मनुष्य जप व तप व सन्ध्या व तर्पण करना छोड़कर नहाने उपरांत भोजन करलेवैंगे व केवल स्नान करना बड़ा आचार समझकर वह बात करैंगे जिसमें बीच संसार के यश होव अपनी सुन्दरताई वास्ते शिरपर बाल रखकर परलोक का शोच न करैंगे व चोर व डाकू बहुत उत्पन्न होकर सबको दुःख देवैंगे व राजालोग चोर व डाकूसे मेलकर प्रजाका धन चुरवालेवैंगे व दशवर्ष की कन्या बालक जनैंगी और कुलीन स्त्रियां दूसरे पुरुषपर चाहना रक्खैंगी व अपना कुटुम्ब पालनेवाले को सबलोग अच्छा जानकर केवल अपने पेटभरने से सब छोटे बड़े प्रसन्न रहैंगे व बहुत लोग अन्न व वस्त्रका दुःख उठावैंगे व वृक्ष छोटे होकर औषधों में गुण नहीं रहैगा व शूद्रके समान चारों वर्णका धर्म

होकर राजालोग थोड़ी सी सामर्थ्य रखनेपर सब पृथ्वी लेनेवास्ते इच्छा रक्खैंगे व गृहस्थलोग माता व पिताको छोड़कर ससुर व साले व स्त्रीकी आज्ञा में रहैंगे व निकटके तीर्थोंपर विश्वास न रखकर दूरके तीर्थों में जावैंगे पर तीर्थ नहाने व दर्शन करने से जो फल मिलते हैं उसपर उनको निश्चय न होगा व होम व यज्ञ आदिक संसार में कम होकर गृहस्थलोग दो चार ब्राह्मण खिलादेने का बड़ा धर्म समझैंगे व सबकोई धर्म व दया छोड़कर ऐसे सूम होजावैंगे कि उनसे अतिथिको भी भोजन व वस्त्र नहीं दियाजायगा व संन्यासीलोग अपना कर्म व धर्म छोड़कर गेरुआ वस्त्र पहिरने से दण्डी मालूम होंगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब अन्त कलियुग में इसी तरह घोर पाप होगा तब नारायण जी धर्म की रक्षा करनेवास्ते सम्भलदेश में गौड़ ब्राह्मण के घर कलङ्की अवतार लेवैंगे व नीले घोड़े पर चढ़कर हजारों राजा व अधर्मी व पापियों को खड्गसे मारडालैंगे जब उनके दर्शन मिलनेसे बचे हुये मनुष्यों को ज्ञान प्राप्त होजावैगा तब वह लोग पाप करना छोड़कर अपने धर्म से चलैंगे उसके आठसौ वर्ष उपरांत सतयुग होकर सब छोटे बड़े अपना धर्म करैंगे हे राजन् इसीतरह ब्राह्मण व क्षत्री व वैश्य व शूद्र चारों वर्णका वंश बराबर चलाआता है सतयुगके आदि में राजा देवापि चन्द्रवंशी जो बदरिकाश्रममें व राजा मरु सूर्यवंशी जो मन्दराचल पहाड़पर बैठेहुये तप कररहे हैं सूर्यवंशी कुलको उत्पन्न करैंगे व सतयुगके प्रवेश करने से कलियुगका धर्म जाता रहैगा देखो इतने बड़े बड़े राजा पृथ्वीपर होकर मिट्टी में मिलगये व सिवाय भलाई व बुराई के कुछ उनके साथ नहीं गया और यह शरीर मरने उपरांत कुछ काम न आनकर पड़ा रहने से इसको कौवे व कुत्ते खाजाते हैं व कीड़े पड़ने व दुर्गन्ध आवने से कोई उसके पास खड़ा नहीं होता व जलादेने से राख होजाता है जो लोग नाश होनेवाले शरीर को पुष्ट करनेवास्ते जीवहिंसा करते हैं उनको बड़ा मूर्ख समझना चाहिये जब ऐसे प्रतापी राजा नाश होकर केवल यश व अयश उनका रहगया तब वह शरीर लाखों यत्न करनेपर भी किसीतरह स्थिर नहीं रहता

इसलिये मनुष्यको उचितहै कि अपने शरीर व संसारकी प्रीति व अहंकार छोड़कर हरिचरणों में ध्यान लगावे व परमेश्वरका भजन व स्मरण करके भवसागर पार उतरजावे मनुष्यतनु पानेका यही फल है नहीं तो पीछे से बहुत पछतावेगा व हे परीक्षित तुम बड़े भाग्यवान् हौ जो अन्त समय परमेश्वर की कथा व लीला सुनने में तुम्हारा मन लगा है ॥

तीसरा अध्याय।

शुकदेवजीको राजा परीक्षितसे पिछले राजोंका हाल कहना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जो नृपति दूसरे का राज्य व धन लेने वास्ते इच्छा रखकर पिता व पुत्र व भाई भाई में लड़ मरते हैं ऐसे राजों पर पृथ्वी हँसकर कहती है देखो यह सब मृत्युका कलेवा होकर मेरे मालिक हुआ चाहते हैं व अपने बाप व दादा का मरना देखने पर भी संसारी तृष्णा नहीं छोड़ते व जितना परिश्रम दूसरे की पृथ्वी व द्रव्य व स्त्री लेनेवास्ते उठाकर अपने व बिरानेको मार डालते हैं उतना उपाय काम व क्रोध व मोह व लोभ बलवान् शत्रुओंको जीतने व अपना परलोक बनावनेवास्ते नहीं करते जब राजा पृथु व पुरूरवा व गाधि व नहुष व सहस्रार्जुन व मान्धाता व सगर व खट्वांग व धुन्धमार व रघु व तृणबिन्दु व ययाति व सर्याति व कुवलयाश्व व बलि व नृग व हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष व वृत्रासुर व रावण व भौमासुर आदिक ऐसे ऐसे प्रतापी व शूरवीर राजा सब गुण व योगाभ्यास जाननेवाले मेरे ऊपर रहकर मुझे अपना कहते कहते मरगये पर मैं किसीके साथ न जाकर अब केवल कहानी उन लोगों की रहगई तब कलियुगवासी छोटे छोटे राजा जो कुछ धर्म व पराक्रम नहीं रखते वृथा मुझे अपना जानकर आपसमें लड़ते मरते हैं इसलिये मनुष्यतनु पाकर यह चाहिये कि मन अपना संसार से विरक्त रखकर परमेश्वरकी लीला व कथा सुनै व हरिचरणोंमें प्रीति उत्पन्न करै हे राजन् तुमको कुछ संसारी चाहना रहगई हो तो इन राजाओंकी गति समझकर विरक्त होने उपरान्त हरिचरणों में ध्यान लगावो व संसारी व्यवहार झूठा होकर सिवाय फल हरिभजन के

और कुछ साथ नहीं जाता इतनी कथा सुनकर राजा परीक्षितने विनय की हे मुनिनाथ चारोंयुगों के कौन कौन धर्म हैं व बीच कलियुगके कौन उपाय करने से हरिचरणों में प्रीति उत्पन्न होती है शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित सतयुगमें धर्मके चारों पैर सत्य व दया व तप व दान बने थे व सब छोटे बड़े अपने अपने धर्म व कर्म से रहते थे व सबलोग आपस में प्रीति रखकर कोई किसीसे शत्रुता नहीं रखता था व त्रेतामें ब्राह्मण व क्षत्री व वैश्य व शूद्र अपना अपना धर्म रखकर यज्ञ आदिक करते थे परन्तु दूसरे की स्त्री गमन करने से धर्म का एकपैर टूटजाताहै व द्वापर में संसारी मनुष्य अपने यश मिलनेवास्ते यज्ञ व पूजा करते हैं परन्तु दूसरेका धन लेने व परस्त्रीगमन करने से धर्म के दो चरण टूटजाते हैं व कलियुग में तीन अंश पाप व एक भाग पुण्य होने से धर्मका एक चरण रहकर तीन पैर टूटजाते हैं व कलियुगवासी मनुष्य केवल थोड़ासा दान देना व कुछ सचाई रखकर अन्त कलियुगमें वह भी छोड़ देवैंगे इसलिये बीच कलि-युगके संसारी मनुष्य लोभी व कुरूप व अभागी अधिक उत्पन्न होकर एक दो रुपये वास्ते मनुष्य का प्राण मारडालैंगे व कुलीन स्त्रियां अपने पतिकी प्रीति छोड़कर दूसरे पुरुषसे प्रेम रक्खैंगी व जबतक पति धनपात्र रहैगा तबतक स्त्री उसकी आज्ञा में रहकर विपत्ति पड़ने से दूसरे पुरुष के पास चली जावेगी व सब लोग अच्छे भोजन व सुन्दरी स्त्री की चाहना रखकर संन्यासी आदिक गृहस्थ होजावेंगे व विपत्ति पड़ने से सेवक अपने स्वामी को छोड़कर दूसरी जगह चाकरी करेगा व सब कोई अपने स्वार्थ की प्रीति रखकर बुढ़ौती समय राजालोग अपने दासों को छोड़ादेवैंगे व बहुत मनुष्य द्रव्य व संतानकी अधिक चाहना रखकर भूत व प्रेतों को पूजैंगे व धन लेनेवास्ते बेटा मा व बापको दुःख देगा माता व पिता भी खाने के लोभसे अपना बेटा बेचडालैंगे व शूद्रलोग वैरागी व संन्यासी आदिकका वेष बनाकर दान लेने उपरान्त ब्राह्मणों को मंत्र उपदेश करैंगे व आप कथा बांचनेवास्ते ऊंचे सिंहासनपर बैठकर ब्राह्मणोंको नीचे बैठालैंगे व इसीतरह अनेक पाप संसारमें होकर हरिभजन व स्मरण कम

होजायगा व चारों युगका फल प्रतिदिन मनुष्यके शरीर में प्रकट होता है जिस समय मन जप व ज्ञान व धर्मकी ओर लगे उस समय धर्म सतयुग का समझना चाहिये व जब लोभ व तृष्णा मनमें अधिक उत्पन्न हो तब धर्म त्रेतायुगका जानो जिस समय अभिमान व कामदेव व प्रेम मन में प्रकटहो उससमय धर्म द्वापरका समझो व जब झूंठ व जीवहिंसा व क्रोध मन में अधिक उत्पन्न हो वह धर्म कलियुगका जानना उचित है राजा परीक्षितने कलियुगका लक्षण सुनते ही बहुत डरकर पूंछा हे मुनिनाथ जब कलियुग का ऐसा धर्म है तो संसारी जीव किस तरह उद्धार होंगे शुकदेवजीने कहा हे राजन् कलियुगमें यज्ञ व तप व योगाभ्यास आदिक कुछ नहीं बनपड़ता परन्तु एक बात बहुत अच्छी है दूसरे युगोंमें संसारी मनुष्य सच्चे व धर्मात्मा व दयावान् होने पर भी बहुत दिनोंतक यज्ञ व तप व पूजा नारायणजीकी व तीर्थ स्नान करने से मुक्त होते थे सो कलियुग में केवल परमेश्वर का नाम जपने व उनकी लीला व कथा सुनने व गंगा नहाने से भवसागर पार उतरजाते हैं जिस तरह अजामिल ब्राह्मण महा पापी मरते समय नारायण नाम अपने बेटेको पुकारने से वैकुण्ठ में चला गया था उसी तरह कलियुगवासी परमेश्वर का नाम लेतेही सब पापों से छूटकर पवित्र होजाते हैं दूसरे युगमें अधर्म कम होकर जब किसी से कुछ पाप होजाता था तब वह प्रायश्चित्त उसका करडालतेथे कलियुग में बहुत अधर्म होनेसे कोई प्रायश्चित्त नहीं करसक्ता इसलिये दीनदयालु परमेश्वर केवल भगवान् का नाम लेने से सब पाप छुड़ाकर सहजमें मुक्त करदेते हैं तिसपरभी कलियुगवासी अज्ञानी मनुष्य दिनरात संसारी सुखमें लपटे रहकर एक क्षण नारायणजी को याद नहीं करते व जिह्वासे वृथा बककर परमेश्वरका नाम नहीं लेते कलियुग में केवल भगवान् का नाम लेने व पूजा व ध्यान व भजन करने व उनकी कथा व लीला सुनने व भक्ति रखनेसे संसारी मनुष्योंका सब दुःख व पाप व अज्ञान छूटजाता है और जब उनके हृदयमें नारायणजीकी कृपासे ज्ञानरूपी दीपक प्रकाशित होता है तब वह मायारूपी अँधियारेसे बाहर निकलकर मुक्ति पावते हैं व मनुष्य

सतयुग में तप व त्रेता में यज्ञ व द्वापर में पूजा व कलियुग में भजन व स्मरण करने से कृतार्थ होता है सो हे राजन् तुम भी श्रीकृष्णजी सांवली सूरत का ध्यान हृदय में लगावो तो चतुर्भुजी स्वरूप होजावोगे व तुमने कलियुगवासियोंके उद्धार होनेका धर्म जो पूछा था सो संसाररूपी समुद्रसे पार उतरने वास्ते परमेश्वरकी लीला व कथा सुनना व पढ़ना सहज समझना चाहिये इससे उत्तम कोई दूसरा उपाय नहीं है और यह श्रीमद्भागवत पुराण जो ब्रह्माजी से नारदमुनिने सुनकर वेदव्यासजी को बतलाया व मैंने उनसे पढ़कर तुमको सुनाया जब यही कथा सूतजी नैमिषार मिश्रिषमें शौनक आदिक अट्ठासीहजार ऋषीश्वरों को सुनावैंगे तब यह अमृतरूपी कथा कलियुग में प्रकट होकर संसारी मनुष्य को भव-सागर पार उतारैगी ॥

चौथा अध्याय।

शुकदेवजीको अग्नि व जल व वायु आदिकका हाल राजा परीक्षितसे वर्णन करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित ब्रह्माके एक दिन में चौदह इन्द्र राज्य भोगते हैं सन्ध्यासमय दिन प्रलय होने से तीनों लोकों में सब जीवोंका नाश होजाता है व उनके दिनके प्रमाण रातभी होकर रैनिसमय ब्रह्मा सो रहते हैं और जब ब्रह्माकी आयुर्बल पूरी होकर महाप्रलय होता है तब सैकड़ों वर्ष पहिले से अवर्षण होकर काल पड़ता है सो अन्न न उत्पन्न होने से सब जीव मारे भूखके मरजाते हैं व पाताल में शेषनागजी विष उगलकर व आकाश में सूर्यदेवता अपना तेज प्रकट करके चौदहों लोकों को जला देते हैं फिर मेघपति के पानी बरसाने से पृथ्वी पर सिवाय जलके और कुछ दिखलाई नहीं देता व जल व अग्नि व वायु आ-काश में व आकाश शब्द में व यह पांच तत्त्व अहङ्कार में व अहङ्कार महत्तत्त्व में व महत्तत्त्व माया में व माया ईश्वरके रूपमें समाजाती है केवल नारायणजी अविनाशीपुरुष जिनका आदि व अन्त कोई नहीं जानता और उनके पास मन व शब्द व सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण आदिक पहुँचने नहीं सके वर्तमान रहकर जाते हैं ये लक्षण महाप्रलय

केहैं व जागना व सोना व सुषुप्ति व संसारी उत्पत्ति माया के गुणोंसे समझनी चाहिये व आदिपुरुष भगवान् को ज्ञानरूपी आंखके देखनेसे मायारूपी संसार झूठा मालूम होता है जिस तरह कपड़े में सूतके तार होते हैं उसीतरह सब जीवोंमें परमेश्वरकी शक्ति व्यापक रहती है जिसने सूर्यरूपी ज्ञान समझा उसके हृदय में काम व क्रोध व मोह व लोभका अँधियारा नहीं रहता और वह देवता व मनुष्य व दैत्य व पशु आदिक चौरासीलाख योनिको बराबर समझकर किसीके साथ शत्रुता व मित्रता नहीं रखता जिस तरह बत्ती जलने से दीपकका तेल कम होकर तेल चुकजाने उपरांत दिया बुझजाता है व जलना तेलका कुछ मालूम नहीं होता उसीतरह कालपुरुष प्रतिदिन तेज व बल व आयुर्दाय क्षीण करते करते मृत्यु पहुँचने से सब जीवों को मारडालता है व अज्ञानी मनुष्य मरना अपना याद नहीं रखता इसलिये जो कोई कालरूपी मुँह से छूटना चाहै वह हरिभजन व स्मरण करके भवसागर पार उतरजावै ॥

पांचवां अध्याय।

शुकदेवजीका राजा परीक्षित से परमेश्वरकी स्तुति वर्णन करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् श्रीमद्भागवत में सब लीला व चरित्र परमेश्वरका लिखाहै व भागवतपुराणको उन परब्रह्मका स्वरूप समझना चाहिये जिनके नाभि से कमलका फूल निकलनेसे ब्रह्माने उत्पन्न होकर महादेवको उत्पन्न किया था सो तुम तक्षक सांपके काटने व अपने मरनेका कुछ डर न रखकर सब जगह परमात्मा पुरुषको वर्तमान देखो व आदि व अन्त व मध्यमें केवल परब्रह्म अविनाशीपुरुष को जो उत्पन्न होने व मरने से रहित हैं सत्य जानो व सब व्यवहार संसारका झूठा समझो तब तुमको मालूम होगा कि कौन किसको काटता है अपने अज्ञान व परमेश्वरकी मायासे संसारी लोग उत्पन्न होना व मरना मनुष्यका मालूम करते हैं सच पूछो तो आत्मा सदा अमर रहकर कभी नहीं मरता और यह शरीर मायाके गुणोंसे बनता व बिगड़ता रहता है जिस तरह पानी भरे हुये बर्तन में छाया पड़ने से दूसरे सूर्य दिखलाई देते हैं व बर्तन

तोड़डालनेसे फिर वह छाया सूर्यमें मिलजाती है व बर्तनके तोड़नेसे सूर्य का नाश नहीं होता उसीतरह शरीर उत्पन्न होनेसे जन्म लेना व उसके नाश होने उपरांत मरना कहा जाताहै इसलिये परमात्माको सूर्यरूपी जानकर शरीर बर्तनके समान समझना चाहिये और यह शरीर पांच कर्मइन्द्री व पांच ज्ञानइन्द्री व पांच तत्त्व व मन बुद्धि सत्रह वस्तु मिलकर तैयार होताहै बुद्धि को रथरूपी व मन घोड़ा उस रथका जानना चाहिये व उस मनमें परब्रह्मका प्रकाश मिलने से शरीरको चलने व फिरने व खाने व पहिरने की सामर्थ्य होतीहै जब वह प्रकाश शरीर से निकलकर बिलग होजाता है तब शरीर मुर्दा होकर सिवाय गल व सड़जाने के कुछ काम नहीं आता व चौरासी लाख योनिमें नारायणकी शक्ति होकर बाहरभी वही परमेश्वर कालरूप से रहते हैं सो तुम अपना शरीर मायाका बनाया हुआ समझकर परमात्माको तनसे अलग जानो ब्राह्मणके शापानुसार तक्षकसांपके काटनेसे आज शरीर तुम्हारा नाश होजायगा व जीवात्मा जो शरीरसे बिलग रहता है वह नहीं मरेगा और अब तुम्हारे मरनेका समय निकट आ पहुँचा इसलिये बीच ध्यान चरण व स्मरण नाम परमेश्वर के मन लगाकर इस बातका विश्वास जानो कि अनेक जन्मके पाप नारायण नाम लेनेसे छूटजाते हैं व भागवतपुराण सुनने से अब तुम्हारी मुक्ति होने में सन्देह नहीं रहा जब तुम श्यामसुन्दरका ध्यान जिनकी कथा हमने सुनाई है करोगे तब उनकी ज्योति में लीन होने से इस शरीर छूटने का ज्ञान याद नहीं रहैगा ऐसा मूल मन्त्र जिसमें सब गुण परमेश्वरके लिखे हैं हमने तुमको सुनादिया इससे उत्तम कौन वस्तु चाहते हो इस अमृतरूपी कथा के सच्चे मनसे पढ़ने व सुननेवाले अवश्य मुक्ति पदवीपर पहुँचते हैं ॥

छठवां अध्याय।

राजा परीक्षितको तक्षक सांपका काटना ॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जब श्रीमद्भागवत सात दिन में सुनकर राजा परीक्षितका अज्ञान जाता रहा व परमात्माको शरीर

से अलग व सब जगह वर्तमान देखने में प्रीति शरीर की छूटगई तब उस ने विधिपूर्वक शुकदेवजी की पूजा करने व चरणपर गिरने उपरांत हाथ जोड़कर विनय की हे मुनिनाथ आपने मेरा संदेह व शोच छुड़ाकर मुझे उद्धार किया महात्मा व परोपकारी लोग सदा से अज्ञानी मनुष्यको जो बीच अँधियारे कुवां माया मोह स्त्री व लड़कों के पड़ा रहता है ज्ञानरूपी रस्सी थँभाकर निकालने उपरांत भवसागर पार उतार देते हैं और यह भागवतपुराण जिसके आदि व मध्य व अन्त में श्रीकृष्णजीका माहात्म्य लिखा है सुनकर मेरा मन हरिचरणों में लीन होगया इसलिये अब मुझे तक्षक सांप के काटने व अपने मरनेका कुछ डर नहीं रहा आज सातवें दिन तक्षकके काटने से मैं यह शरीर त्याग करूंगा आप आज्ञा दीजिये तो बोलना छोड़कर श्यामसुन्दर के स्वरूप का ध्यान लगाऊं शुकदेवजी ने कहा इस समय तुमको हरिचरणों का ध्यान अवश्य करना चाहिये जब यह वचन सुनकर परीक्षित आंखें बन्द करके श्रीकृष्णजी का ध्यान करने लगा व शुकदेवजी व सब ऋषीश्वर वहां से उठकर अपने अपने स्थान पर चले गये तब तक्षक सांप पहर दिन रहे अपने स्थानसे ब्राह्मण का रूप धरकर परीक्षित को काटने चला उसी समय कश्यपजी की आज्ञा से धन्वन्तरि वैद्य तुमड़ी आदिक सब औषध झोली में लेकर परीक्षित को अच्छा करनेवास्ते घर से निकले जब राह में ब्राह्मणरूपी तक्षक ने धन्वन्तरिको देखकर पूछा तुम कहां जातेहो तब उसने उत्तर दिया आज हस्तिनापुर में तक्षक सर्प राजा परीक्षित को काटैगा इसलिये मैं उसका विष उतारने जाता हूं यह बात सुनकर मायारूपी ब्राह्मण ने कहा तुम तक्षक सांप के काटे हुये को अच्छा करसक्ते हो धन्वन्तरि बोले तक्षक क्या माल है किसी तरह का सांप काटै तो मैं अच्छा कर देसक्ता हूं यह वचन सुनकर उसने कहा तक्षक सांप मैं हूं हम यहां एक वृक्ष को काटते हैं तुम फिर उसे हरा करदेव तो मुझे विश्वास हो कि परीक्षित का विष उतार सकोगे धन्वन्तरि ने कहा बहुत अच्छा जैसे तक्षक ने उसी जगह बरगद के वृक्ष में काटा वैसे वह वृक्ष एक लोहार समेत जो उस पर चढ़ा हुआ

लकड़ी काटता था तक्षक के विष से जलकर राख होगया धन्वन्तरि ब्राह्मण ने आचमन करने उपरांत संजीवनी मंत्र पढ़कर जैसे उस राख पर पानी का छींटा मारा वैसे राख से डाली व पत्ता निकलकर दो घड़ी में फिर वह वृक्ष ज्यों का त्यों तैयार होगया व लोहार लकड़ी काटनेवालाभी जी उठा यह हाल देखतेही तक्षक सांप घबड़ाकर धन्वन्तरिसे बोला हे द्विजराज तुम किस वस्तुके वास्ते चाहना रखकर परीक्षित का विष उतारने जाते हो धन्वन्तरिने उत्तर दिया हम ऐसे धर्मात्मा राजा को जिससे बहुत लोगों का भला होता है जिलाकर मुँहमांगा धन पावेंगे तक्षक बोला महाराज तुम केवल विष उतारने का मंत्र जानकर और भी कुछ ज्ञान रखते हो या नहीं धन्वन्तरिने कहा मैं भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों काल की बात जान सक्ताहूं यह बात सुनकर तक्षक ने पूंछा हे द्विजराज पहिले तुम विचारो कि राजा परीक्षित की आयुर्बल पूरी होचुकी या कुछ और भी है धन्वन्तरिने अपनी विद्या से विचारकर कहा परीक्षित की आयुर्बल पूरी होकर अब थोड़ा विलम्ब उसके मरने में रहगया है यह बात सुनकर तक्षक बोला महाराज जब ऐसा है तब तुम्हारा मंत्र उसको गुण न करैगा कदाचित् कुछ उसकी आयुर्बल और होती तो तुम अवश्य उसे जिला देते और तुम्हें द्रव्यकी चाहना है तो मुझसे लेकर अपने घर चले जाव धन्वन्तरि ने कहा बहुत अच्छा फिर तक्षक ने एक वृक्ष के नीचे उसको द्रव्य बतला दिया सो धन्वन्तरि वहां खोदकर जितना उससे उठ सका उतना द्रव्य लेकर अपने घर चला गया व तक्षक हस्तिनापुर में जाकर कीड़ारूप से एक फूल में बैठरहा जब ब्राह्मणों ने वह फूल उठाकर राजा परीक्षित को दिया तब कीड़ारूपी तक्षकने फूलसे निकलकर जैसे परीक्षित को काट लिया वैसे शरीर राजाका जलकर राख होगया व चैतन्य आत्मा दिव्य विमानपर बैठकर वैकुण्ठ में पहुँचा व तक्षक सांप वहां से उड़कर इन्द्रलोक में चला गया यह हाल देखकर जितने लोग उस जगह बैठे थे रोनेलगे व सब स्त्री व पुरुष नगरवालोंने यह समाचार सुनकर बड़ा शोच किया व जनमेजय ने परीक्षित अपने पिता को दाह देकर शास्त्रानुसार

क्रिया व कर्म उसका किया व मंत्रियों की इच्छानुसार राजसिंहासन पर बैठा व जो लोहार वृक्षके साथ जलकर फिर जी उठा था उसने हस्तिनापुर में आनकर सब हाल वहां का जो जो बात तक्षक सांप व धन्वन्तरि ब्राह्मण से हुई थी ज्यों की त्यों सब लोगों से कही यह समाचार परीक्षित के मन्त्रियों ने सुनकर तक्षक से बहुत बुरा माना जब जनमेजय को बारह वर्ष राजगद्दी पर बैठे होचुके तब उसने भी मंत्रियों से हाल मरने अपने पिता व भेंट होने तक्षक व धन्वन्तरिका सुनकर बहुत क्रोध करके कहा देखो तक्षक ने शृङ्गी ऋषि के शाप देने से मेरे पिता को काटा तो उसका दोष नहीं था पर उसने धन्वन्तरि वैद्यको राह में द्रव्य देकर हस्तिनापुर आने से वर्जा इसलिये मैं उसे अपना शत्रु समझकर इसतरह सब सांपों को अपने पिताके बदले जला डालूंगा जिसमें उनका वीर्य संसार में न रहै यह बात विचारतेही जनमेजय ने ब्राह्मण व ऋषीश्वरों को बुलाकर उनसे विनय की आप लोग कोई ऐसा यज्ञ कराइये जिसमें सब सांप जलकर मरजावैं ब्राह्मणोंने कहा बहुत अच्छा सर्पसत्र यज्ञ करने में सब सांप आपसे आनकर जलजाते हैं वही करो जब जनमेजय ने सारस्वत ब्राह्मणको आचार्य बनाकर वह यज्ञ करना आरम्भ किया तब मंत्रके प्रभाव से हजारों सांप अपनी जगह छोड़कर दौड़े हुये वहां चले आये व अपनी इच्छासे स्रुवामें बैठकर आहुति देते समय अग्निकुण्डमें गिरने व जलनेलगे जब इसीतरह करोड़ों सर्प उस यज्ञ में जलकर मरगये व तक्षक अपने प्राण के डरसे इन्द्र के शरण में जाछिपा इसलिये यज्ञशालामें नहीं पहुँचा तब जनमेजय ने ब्राह्मणों से पूछा महाराज सब सांप जलकर मरे जाते हैं पर तक्षक मेरा शत्रु अभीतक क्यों नहीं आया ब्राह्मणों ने उत्तर दिया तक्षक सांप इन्द्रकी रक्षा करने से अबतक यहां आनकर नहीं जला यह बात सुनकर जनमेजयने यज्ञ करानेवाले ब्राह्मणों से कहा महाराज हमारे शत्रुकी रक्षा करने से इन्द्रभी मेरा वैरी ठहरा सो तुम्हारा मंत्र ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जिसमें तक्षक इन्द्रसमेत यहां आनकर जल जावै ऋषीश्वरों ने उत्तर दिया परमेश्वर की दया से मंत्रमें सब सामर्थ्य है अब

हमलोग तुम्हारे कहने से वैसाही मंत्र पढ़ैंगे जैसे ब्राह्मणों ने वही मंत्र पढ़कर अग्निकुण्ड में आहुति डाली वैसे सिंहासन राजा इन्द्रका जिसके नीचे वह सर्प बैठा था तक्षक समेत उड़ा यह हाल देखकर आस्तीक नाती वासुकिनागने बृहस्पति पुरोहित से कहा इस समय आप कुछ सहायता इन्द्र व तक्षक की नहीं करते तो वह दोनों अग्निकुण्ड में जलकर मर जावैंगे तब बृहस्पति गुरुने आस्तीक को साथ लिये हुये यज्ञशाला में जाकर अंगिरसगोत्री ब्राह्मण यज्ञ करानेवालों से जो उनके कुलमें थे कहा तुम लोग आहुति देने में थोड़ी देर लगाकर यही पूर्णाहुति जनमेजय से दक्षिणा मांगलेव जिसमें इन्द्र व तक्षक का प्राण बच जावै जब मन्त्रके प्रभाव से इन्द्रका सिंहासन तक्षक समेत उड़ता हुआ यज्ञशाला में आन पहुँचा तब बृहस्पति गुरु व आस्तीकने बहुत स्तुति करने उपरान्त जनमेजयसे कहा हे राजन् परीक्षितको ब्राह्मणके शापसे मरना लिखा था इसमें तक्षक का कुछ दोष नहीं है व तक्षक सब सर्पोंका राजा होकर अमृत पीने से वह मरने नहीं सक्ता और तुम जो समझते हो कि तक्षक के काटने से हमारा बाप मरा सो यह बात ज्ञानके बाहर होकर मरना व जीना दुःख व सुख हानि व लाभ परमेश्वर की इच्छा व अपने प्रारब्ध से होता है देखो जिसतरह संसारीलोग आगि से जलने व पानी से डूबने व शस्त्रसे मारने व सांप के काटने व बाघ के खाने व स्थानके गिरने व विषके देने व अनेक रोगादिक से जैसा जिसके प्रारब्ध में लिखा रहता है मरजाते हैं पर एक बहाना होकर मृत्युका नाम कोई नहीं लेता उसी तरह तुम्हारा पिताभी अपने प्रारब्धानुसार तक्षक सांपके काटनेसे मरकर मुक्तिपदवी पर पहुँचा व तुमने एक तक्षक के बदले करोड़ों सर्प विना अपराध जलाकर मार डाले ज्ञानी व धर्मात्माको ऐसा न चाहिये अब क्रोध अपना क्षमा करके यह यज्ञ मत करो व मरना परीक्षित का अपने प्रारब्ध से समझकर और सर्पों को न जलाओ व किसी के मारने से कोई नहीं मरता व उन परमेश्वर को दण्डवत् करनी चाहिये जिनकी माया से लोगों को यह अभिमान उत्पन्न होता है कि हमने अपने शत्रु को मारकर जीत लिया

नारायणजी केवल यह बात कहनेवास्ते बनाकर मारना व जिलाना सबका अपने आधीन रखते हैं दूसरे किसी को यह सामर्थ्य नहीं है जो उसमें दम मारसके जब यह बात बृहस्पतिगुरु व आस्तीकनागसे सुनकर जनमेजयको ज्ञान उत्पन्न हुआ तब उसने ब्राह्मणों से कहा पूर्णाहुति अग्नि में मत डालो उस समय तक्षकने जनमेजयको ऐसा वरदान दिया कि जो लोग हमारा व तुम्हारा नाम स्मरण करैंगे उनको कोई सर्प न काटेगा जब जनमेजय ने ऋषीश्वरों व ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर बिदा किया तब बृहस्पति गुरु जिनकी दया से इन्द्र व तक्षक का प्राण बचा था उनको अपने साथ लेकर चलेगये व इतनी कथा सुनाकर सूतजी ने श्यामसुन्दर को ध्यानमें दण्डवत् करके शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा हमने अमृत रूपी भागवत पुराण तुमलोगों को सुनादिया इसके प्रताप से सब पाप छूट कर तुम्हारी मुक्ति होजावैगी ॥

सातवां अध्याय।

सूतजीका शौनकादिक ऋषीश्वरों से शुभाशुभ कर्मों का फल कहना ॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा इन्द्रादिक देवताओं को परमेश्वरकी यह आज्ञाहै कि जो मनुष्य जैसा पुण्य व यज्ञ व तप आदिक करे उसको वैसा स्वर्ग देना चाहिये व पाप करनेवालों को धर्मराज उनके कर्मानुसार नरक में भेज देवें व जो लोग केवल परमेश्वर का भजन व स्मरण करते हैं उनको इन्द्रपुरी से ऊपर ब्रह्मलोक में जगह मिलती है व नारायणजी की निर्गुण पूजा व भजन करनेवाले वैकुण्ठ में जाकर महाप्रलय तक वहांका सुख भोगते हैं सो राजा परीक्षित भी भागवतपुराण सुनने से श्यामसुन्दर के प्रेम में लीन होकर वैकुण्ठको चला गया जितना यज्ञ व तप व भजन व स्मरण संसारीलोग करते हैं उसमें एक वास्ते चाहने किसी अर्थ व दूसरा विना रखने इच्छा के होता है सो हमने दोनों तरहका हाल इस भागवत में तुमलोगों को सुना दिया अठारहों पुराण में श्रीमद्भागवत उत्तम है यह बात सुनकर शौनकादिक ऋषीश्वरों ने नाम अठारहों पुराणोंका पूंछा तब सूतजीने कहा ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, विष्णुपुराण,

शिवपुराण, लिंगपुराण, गरुड़पुराण, नारदपुराण, अग्निपुराण, स्कन्दपुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, मार्कण्डेयपुराण, मत्स्यपुराण, कूर्मपुराण, वाराहपुराण, नृसिंहपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, भागवतपुराण हैं इन सब पुराणों में परमेश्वर का गुण व चरित्र वर्णन किया है व किसी पुराण में सात्त्विकी व किसी में राजसी व किसी में तामसी धर्म लिखा है व श्रीमद्भागवत में केवल सात्त्विकी धर्म व भगवद्गुण वेदव्यासजीने वर्णन किये हैं सो हमने तुमको सुनाया अब और क्या सुना चाहते हो ॥

आठवां अध्याय।

मार्कण्डेय ऋषीश्वरकी उत्पत्तिको सूतजीका कहना ॥

शौनकादिक ऋषीश्वरों ने इतनी कथा सुनकर पूंछा हे सूतजी आपने परमेश्वरका गुण व चरित्र हमलोगोंको सुनाकर कृतार्थ किया सो तुम बहुत दिन चिरंजीव रहो और हमलोग अब यह सुना चाहते हैं कि हमारे कुल में मार्कण्डेय ऋषीश्वर ने परमेश्वरकी माया किसतरह देखकर वैकुण्ठनाथ का दर्शन पाया व व्यासजीने सब वेदोंको किसतरह अलग अलग वर्णन किया सूत पौराणिक ने कहा जब ब्रह्माने देखा कि कलियुगवासी मनुष्य थोड़ी आयुर्दाय होने से सब वेद पढ़ नहीं सकेंगे तब ब्रह्माके विनय करने से नारायणजी ने वेदव्यास का अवतार धारण करके वेदों का सार निकाल लिया व उसका नाम त्रिलग बिलग रखकर वह सब अपने चेलों को पढ़ाया व जो पुराण वेदों में से निकाला था उसका नाम मार्कण्डेयपुराण रक्खा यह सुनकर ऋषीश्वरों ने पूंछा पहिले यह बतलाइये कि मार्कण्डेयने इतनी बड़ी आयुर्बल किसतरह पाई थी सूतजीने कहा मृकण्डनाम एक ऋषीश्वर होकर उसके कोई पुत्र नहीं था जब उस ऋषीश्वरने सन्तान उत्पन्न होनेवास्ते देवताओंके नामपर बहुत तप व होम किया तब देवताओंने दर्शन देकर कहा हे ऋषीश्वर तेरे भाग्य में बेटा नहीं लिखा है पर तप व होम करनेके प्रतापसे तेरे एक पुत्र उत्पन्न होकर बारहवर्षकी अवस्था में मरजायगा यह सुनकर ऋषीश्वरने विनय की मैं सन्तान होनेकी इच्छा रखता हूं बारह वर्षका होकर मरजायगा तो

में सन्तोष करलूंगा जब देवताओं के आशीर्वाद से मृकण्डके पुत्र उत्पन्न हुआ तब ऋषीश्वरने मार्कण्डेय उसका नाम रखकर बड़ा हर्ष मनाया जब वह बालक बारह वर्षका हुआ तब उसके माता व पिता रोने लगे मार्कण्डेयने उनको रोते देखकर पूंछा तुमलोग किसवास्ते इतना विलाप करतेहो उन्होंने कहा अय बेटा अब तुम्हारे मरनेका दिन निकट आनपहुँचा यही समझकर हमलोग रो देते हैं यह सुनकर मार्कण्डेय बोले संसार में कोई ऐसा उपाय भी है जिसके करने से हम जीते रहैं उसके माता पिता ने कहा अय बेटा नारायणजीकी दयासे सब मनोरथ मनुष्यके पूर्ण होते हैं यह वचन सुनते ही मार्कण्डेय वनमें जाकर परमेश्वरका तप व ध्यान करनेलगा जब उसे छः मन्वन्तर तप करते बीतगये तब राजा इन्द्रने डर कर विचारा कि यह ब्राह्मण तप करके मेरा इन्द्रासन छीन लेगा ऐसा विचारतेही इन्द्रने कामदेवव वसन्तऋतु व गन्धर्व व अप्सराओंको मार्कण्डेय की तपस्या भंग करनेवास्ते भेजा सो उन्होंने हिमालय पहाड़से उत्तर ओर भद्रा नदी के किनारे जहां मार्कण्डेय शिलापर बैठा हुआ तप करता था पहुँचकर क्या देखा कि वहां घने घने वृक्षोंकी छाया होकर अनेक रंगके सुगन्धित फूल व फल लगे हैं व कोकिला व मोर आदिक अनेक पक्षी वहां बैठे हुये अपनी सोहावनी बोली बोल रहे हैं यह शोभा देख कर कामदेव आदिक मोहित होगये व जब प्रातःकाल मार्कण्डेय अग्निहोत्र करके वहां पर बैठे उसी समय अप्सरा उनके सामने नाचकर भाव बतलाने लगीं व गन्धर्वोंने अनेक बाजा बजाकर छः राग व छत्तीस रागिनी गाये व कामदेवने कोकिलारूप होकर कामरूपी बाण चलाया व वसन्तऋतुकी महिमा से बहुत उत्तम बाग वहां तैयार होकर शीतल मन्द सुगन्ध हवा बहने लगी जब नाचती समय एक अप्सरा का कपड़ा हवासे उड़गया तब वह नंगे बदन गेंद उछालती हुई मार्कण्डेयके निकट चलीआई पर मार्कण्डेयका चित्त कुछ चलायमान नहीं हुआ जब अनेक उपाय करने परभी कामदेव व अप्सरा आदिकका कुछ वश उन पर नहीं चला तब वह लोग शाप देनेके डरसे भागकर कांपते हुये इन्द्र

के पास फिर आये व बहुत लज्जित होकर कहा महाराज हमारा पराक्रम मार्कण्डेयपर कुछ नहीं चलता यह हाल सुनकर इन्द्रादिक देवताओं ने बहुत आश्चर्य माना व देवता लोग मार्कण्डेयके दर्शन वास्ते आप वहां जाकर उनकी स्तुति करने उपरांत चले आये जब इसी तरह कुछ दिन और मार्कण्डेयको तप करते बीते तब नारायणजी गरुड़पर बैठकर वहां गये व अपने चतुर्भुजी स्वरूपका दर्शन मार्कण्डेयको देकर कहा जो कुछ तुझे इच्छा हो सो वरदान मांग मार्कण्डेयने वैकुण्ठनाथ को देखते ही दण्डवत् की व परिक्रमा लेने व स्तुति करने उपरांत हाथ जोड़कर बोला हे दीनानाथ मैं अपनी आयुर्बल अधिक चाहताहूं त्रिभुवनपतिने कहा तू एक कल्पांत तक जीता रहैगा ऐसा कहकर लक्ष्मीपति वैकुण्ठ को चले गये॥

नवां अध्याय।

नारायणजीका मार्कण्डेय ऋषीश्वरको महाप्रलयका कौतुक दिखलाना॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जब मार्कण्डेय ब्रह्माके एक दिन प्रमाण आयुर्बल पावने परभी उसी तरह तप व ध्यान करता रहा तब कुछ दिन उपरांत नारायणजीने मार्कण्डेयको फिर दर्शन देकर कहा अब तू क्या चाहता है मार्कण्डेय हाथ जोड़कर बोला हे महाप्रभु अब मुझे किसी वस्तुकी चाहना नहीं है पर तुम्हारी मायाका थोड़ासा कौतुक देखना चाहताहूं जिस मायासे आप सब जीवोंको उत्पन्न करके फिर नाश कर देते हैं वैकुण्ठनाथने कहा बहुत अच्छा आजके सातवें दिन हम तुझे अपनी माया दिखलावेंगे पर तुम चैतन्य रहकर मुझे भूल मत जाना भूलने से तुम्हारा पता नहीं लगेगा मार्कण्डेय ने विनय की हे त्रिभुवनपति मैं आपको कभी न भूलूंगा जब यह बात सुनकर नारायणजी वैकुण्ठ को चले गये तब मार्कण्डेयभी वहांसे अपने स्थानपर चला आया जब सातवें दिन मार्कण्डेयने नदी किनारे बैठकर तप करतेसमय महाप्रलयको देखना चाहा तब क्या दिखलाई दिया कि एक ओरसे बड़ी आंधी उठकर मारे धूरके अँधियारा छागया यह हाल देखकर मार्कण्डेयने मन में कहा हम ने आजतक ऐसी आंधी कभी नहीं देखी फिर चारों ओरसे पानी उमड़ा

हुआ आनकर जहां वह बैठा था वहां अथाह जल होगया व उस पानी में वह गोता खाने लगा व कभी गोता खाकर जल में डूबजाता व कभी पानीके वेगसे ऊपर निकल आता था व कभी घड़ियाल आदि जलचर उसको निगल जाते व कभी अपने मुखसे उगिल देते थे जब मार्कण्डेय की समझ में हजारों वर्षतक उसका यह हाल हुआ तब वह अपने मन में बहुत लज्जित होकर कहने लगा देखो मुझसे बड़ी चूक हुई जो ऐसा वरदान मांगकर इस दशाको पहुँचा अब परमेश्वरसे यह इच्छा रखता हूं कि नारायणजी दया करके मुझको इस पानीसे जीता बाहर निकालें मार्कण्डेयको भगवान्‌जीका ध्यान करते ही जब मायारूपी जल में एक टापू व बरगदका वृक्ष दिखलाई दिया तब उसने प्रसन्न होकर मनमें कहा हे परमेश्वर मुझे किसी तरह इस टापू तक पहुँचा दे तो बरगद की डाली पकड़कर अपना प्राण बचालेऊं जब मार्कण्डेय भगवान्‌की दयासे उस वृक्षके पास पहुँच गया तो उसने क्या देखा कि एक पत्ता बरगदका दोने के समान बना होकर उसमें एक बालक बारह तेरह दिनकी अवस्था का श्यामरंग चन्द्रमुख कमलनयन अति सुन्दर सोता हुआ अपने पैर का अँगूठा हाथ में पकड़े मुँहमें डाले चूसताहै जब मार्कण्डेय निकट जाकर उस बालककी छवि देखने लगे तब बालकरूपी भगवान्‌ने अपना श्वास खींचा तो मार्कण्डेय मच्छड़की तरह उनके नाकमें घुसगया और वहांपर पृथ्वी व आकाश व सूर्य व चन्द्रमा व सातों द्वीप व नवों खण्ड व दशों दिशा व आठों लोकपाल व तालाब व वृक्ष व नगर व ग्राम व समुद्र व पहाड़ व खानि चांदी व सोना व कुटी ऋषीश्वर व मुनीश्वर व अपना स्थान आदिक सब संसारी वस्तुओं को उस स्वरूपमें देखकर आश्चर्य माना जब श्वास छोड़ते समय नाक के बाहर निकल आया तब उसने फिर उस बालकको उसीतरह देखकर चाहा कि उसे गोदमें उठाकर प्यार करें ऐसा विचारकर मार्कण्डेयने जैसे उस बालक को उठाने चाहा वैसे बालकरूप भगवान् मायारूप पानी व वृक्षसमेत अन्तर्धान होगये व मार्कण्डेय अपने समझमें करोड़ों वर्षतक मायाका कौतुक देखकर जब चैतन्य होगया तब उसने

अपने को ज्यों का त्यों नदी किनारे बैठा पाया और बिचारा तो दो घड़ीसे अधिक विलम्ब नहीं हुआ था॥

दशवां अध्याय।

महादेव व पार्वतीजीका मार्कण्डेयके पास आना॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा मार्कण्डेयने मायारूपी महाप्रलय का कौतुक देखकर ध्यानमें नारायणजीसे विनय की हे त्रिभुवनपति मुझसे बड़ा अपराध हुआ जो आपकी माया देखने वास्ते वरदान मांगा जहां तुम्हारी मायाको ब्रह्मादिक देवता न जानकर बड़े बड़े ऋषीश्वर व मुनि व ज्ञानी उस माया में फँसे रहते हैं वहां मेरी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी मायाका भेद जान सकूं जिसतरह मच्छड़ पहाड़ उठावनेकी इच्छा रखकर वह काम नहीं करसक्ता उसीतरह मैं यह वरदान मांगकर लज्जित हुआ मुझे अपने शरणागत जानकर अपराध मेरा क्षमा कीजिये मार्कण्डेयजी ऐसा कहकर बीच ध्यान परमेश्वर के लीन होगये इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले हे ऋषीश्वर परमेश्वरकी महिमा जानने वास्ते सब छोटे बड़े अपने सामर्थ्यभर परिश्रम करते हैं पर उनके भेदको पहुँच नहीं सक्के जिसने भेद जानने वास्ते गोता मारा उसका आज तक पता नहीं लगा अब हम मार्कण्डेय ऋषीश्वरका एक हाल और कहते हैं सुनो एक दिन महादेव व पार्वती दोनों मनुष्य बैल पर चढ़े बहुतसे गणोंको अपने साथ लिये हुये चले जाते थे राहमें पार्वतीजीने मार्कण्डेयको इसतरह बीच ध्यान परमेश्वरके लीन बैठे देखा जिस तरह समुद्रका पानी गंभीर रहकर विना चलने हवाके नहीं हिलता तब पार्वतीने महादेवजीसे हाथ जोड़कर विनय की हे महाप्रभु इस ऋषीश्वर को तपस्या का कुछ फल दीजिये महादेवजी ने कहा इसे किसी वस्तु की चाहना नहीं है हम इसको क्या देवैं सिवाय भक्ति व ध्यान हरिचरणों के यह मुझको भी कुछ माल नहीं समझता पर तेरे कहनेसे हम चलकर इसके साथ दो बातें करते हैं साधु व महात्माकी संगति करने में बड़ा गुण होता है जब महादेवजी पार्वती समेत मार्कण्डेयजी के पास गये तब

उनको परमेश्वर के ध्यान में ऐसा लीन देखा कि इनके जानेका हाल उसे कुछ मालूम नहीं हुआ इसलिये शिवजी ने उसके हृदयमें प्रवेश करके जिस चतुर्भुजी मूर्ति श्यामसुन्दर का ध्यान वह करता था उस स्वरूपको वहां से अन्तर्धान करके अपना प्रकाश उस जगह प्रकट किया जब मार्कण्डेय को अपने हृदय में चतुर्भुजी रूप दिखलाई न देकर एक पुरुष श्वेतवर्ण दश भुजा व तीन आंखवाला शेरकी खाल व मुण्डमाला पहिने त्रिशूल व डमरू लिये हुये ध्यान में देखपड़ा तब उसने घबराकर आंख खोलदी तो महादेवको उसी रूपसे पार्वती समेत बहुत गण साथ लिये हुये जैसे अपने सामने खड़े देखा वैसे उठ खड़ा हुआ व दण्डवत करने उपरांत परिक्रमा लेकर उनको बड़े आदरभावसे आसनपर बैठाला व विधिपूर्वक उनकी पूजन करके हाथ जोड़ कर विनय की हे दीनानाथ आप सब देवताओंके मालिक होकर सब गुणोंसे भरे हैं मैं ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो तुम्हारी स्तुति करने सकूं जिस तरह आपने दयालु होकर मुझे अपना दर्शन दिया उसी तरह मेरी हजारों दण्डवत् लीजिये और अपने आनेका कारण बतलाइये यह बात सुनतेही भोलानाथने हँसकर कहा हे ऋषीश्वर जिस महा प्रलयमें चौदहों लोक नाश होकर कोई जीव नहीं रहता उस महा प्रलयको तुमने देखा इसलिये मैं तुम्हारे दर्शन करने आयाहूं जितना ब्राह्मण व हरिभक्त व साधु मुझे प्यारे हैं उतना इन्द्रादिक देवताओं से प्रीति नहीं रखता जिस तरह मुझे अपना भक्त प्यारा मालूम होताहै उसीतरह नारायणजी के सेवकों को भी जानताहूं ज्ञानी मनुष्यको हमारे व विष्णु भगवान्के बीचमें कुछ भेद समझना न चाहिये जितना तुम्हारे ऐसे हरिभक्तोंका दर्शन पाकर संसारी मनुष्य शुद्ध होजाते हैं उतना तीर्थस्नान करने व देवताओं के दर्शन से पवित्र नहीं होते तुमको जो कुछ इच्छा हो वह वरदान हमसे मांगलेव हमारा दर्शन निष्फल नहीं होता यह वचन सुनकर मार्कण्डेय ऋषीश्वरने महादेव व पार्वतीजीको साष्टांग दण्डवत् करके विनय की हे महाप्रभु आप साक्षात् ईश्वर होकर मुझ अज्ञानी को इतनी बड़ाई देतेहैं जिसतरह कल्पवृक्ष के

नीचे जाकर मनुष्यका सब मनोरथ पूर्ण होजाताहै उसीतरह तुम्हारा दर्शन पानेसे कुछ इच्छा न रहकर केवल यही वरदान मांगताहूं जिसमें सदा बीच चरण वैकुण्ठनाथ व आपके मेरी भक्ति बनी रहै यह बात सुनकर शिवजी ने कहा तुम एक कल्पतक चिरंजीव रहकर कभी बूढ़े न होगे व तुमको सदा मेरी व नारायणजीकी भक्ति बनीरहैगी व अठारहों पुराणमें एक तुम्हारे नामसे प्रकट होगा यह वरदान देने उपरान्त शिवजी वहां से अन्तर्धान होकर कैलास पर्वतपर चले गये व सब हाल उत्पन्न होने व तपस्या करने व वरदान पावने मार्कण्डेय ऋषीश्वरका पार्वतीजीसे वर्णन किया इतनी कथा सुनाकर सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा तुमने मार्कण्डेय ऋषीश्वरका हाल जो पूंछा सो हमने सुनादिया॥

ग्यारहवां अध्याय।

शौनकादिक ऋषीश्वरोंका सूतजीसे शंख चक्र गदा व पद्म आदिक का हाल पूंछना॥

शौनकादिक ऋषीश्वरोंने इतनी कथा सुनकर पूंछा हे सूतजी परमेश्वर के पूजन करने की विधि वर्णन कीजिये और यह बतलाइये कि शंख व चक्र व गदा व पद्म व शस्त्र व वैजयन्ती माला व पीताम्बर जो आठों पहर नारायणजी धारण किये रहते हैं ये सब कौन वस्तु हैं सूतजीने कहा तुम लोग बड़ी गुप्त बात पूंछते हो इसलिये मैं वेदव्यास अपने गुरुको दण्डवत् करके कहता हूं सुनो यह ब्रह्माण्ड भगवान्‌का रूप है पृथ्वी पैर आकाश शिर आंखें सूर्य वायु नाक दशों दिशा कान लोकपाल भुजा चन्द्रमा मन यमराज दांत वृक्ष शरीर के रोयें मेघघटा शिर के बाल पहाड़ तनुकी हड्डी समुद्र पेट नदियां शरीरकी नसें होकर सब व्यवहार संसारका विराट् रूपमें समझना चाहिये जो मनुष्य उस रूपका ध्यान लगाकर सब जीवों में परमेश्वर की शक्ति बराबर देखता है व काम व क्रोध व मोह व लोभ आदिक के वश न होकर किसी से शत्रुता व मित्रता नहीं रखता व कौस्तुभमणि नारायणजी की ज्योति व वैजयन्ती माला माया व पीताम्बर चारों वेद व जनेऊ का जोड़ा ओंकार व कानों का कुण्डल सांख्य शास्त्र व योगशास्त्र व मुकुट ब्रह्मलोक व शेषनाग उनके बैठनेका सिंहासन

व पद्म सतोगुण व गदा पराक्रम व शंख जलतत्त्व व सुदर्शनचक्र अग्नि तत्त्व व खड्ग आकाशतत्त्व व शार्ङ्गधनुष कालरूप होकर परमेश्वर के तरकस में सब जीवों का कर्म भरा रहता है व वैकुण्ठ परमेश्वर का छत्र व गरुड़ वेदरूप व लक्ष्मीजी शक्ति व नन्द व सुनन्दादिक पार्षद उनकी विभूति हैं इसलिये नारायणजी अपने भक्तोंपर प्रसन्न होकर अपना भूषण व वस्त्र पहिने व शंख लिये हुये दर्शन देते हैं व उनका चरित्र कोई नहीं जानसक्ता हमने गुरु की कृपा से यह सब कथा तुमको सुनाई जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर नारायणजी का ध्यान शंख व चक्र व गदा आदिक समेत करता है तुरन्त उसपर प्रसन्न होकर उसे कृतार्थ कर देते हैं इतनी कथा सुनकर ऋषीश्वरों ने पूंछा बारहों महीने में सूर्य भगवान् नये नये रूप पृथक् पृथक् नाम से जो प्रकाश करते हैं उनका क्या कारण है सूत जी बोले सूर्य देवता एकस्वरूप भगवान्जी का है सो क्षण व घड़ी व पहर के पहिचान करनेका ज्ञान उनके प्रकाश से मालूम होता है चैत के महीने में सूर्य धाता नाम से प्रकाश करते हैं व कृतस्थली अप्सरा उनके आगे नाचकर तुम्बुरु गन्धर्व गाना सुनावता है व हेती राक्षस उनका रथ पीछे ढकेलता है व वासुकि नाग उस रथ में सर्पों की रस्सी बांधने व कृत यक्ष उसकी मरम्मत करने वास्ते बने रहते हैं व पुलस्त्य नाम ऋषीश्वर उनके साथ रहकर स्तुति करते जाते हैं व वैशाख में सूर्य का नाम अर्यमा होकर पुलह नाम ऋषीश्वर उरजा नाम यक्ष प्रहेती राक्षस व पुंजकस्थली अप्सरा व नारद गन्धर्व व कुक्षनीर नाग व ज्येष्ठमें सूर्य का नाम मित्र होकर अत्रि ऋषीश्वर व पौरुषेय राक्षस व तक्षक नाग व मेनका अप्सरा व हाहा गन्धर्व व रथस्व यक्ष व आषाढ़में वरुण नाम सूर्य का होकर वशिष्ठ ऋषीश्वर रम्भा अप्सरा हूहू गन्धर्व सहजन्य यक्ष सर्वज्ञ नाग चित्रसेन राक्षस व सावन में इन्द्र नाम सूर्यका होकर विश्वावसु गन्धर्व परमलोचा अप्सरा श्रोता यक्ष वर्य नाम राक्षस भादोंमें विवस्वान् नाम सूर्यका होकर उग्रसेन गन्धर्व व व्याघ्र नाम राक्षस असारन यक्ष भृगु ऋषीश्वर निम्लोचा अप्सरा शंखपाल नाग व कुवार में त्वष्टा नाम सूर्य का होकर जम ...

ऋषीश्वर कामल नाग तिलोत्तमा अप्सरा धृतराष्ट्र गन्धर्व बृहद्वती राक्षस सत्यजित यक्ष व कार्त्तिक में त्रिष्णुनाम सूर्य का होकर अश्वतर नाग व रम्भा अप्सरा सुवर्चा गन्धर्व सत्याजित यक्ष व विश्वामित्र ऋषीश्वर घृतापी राक्षस व अगहनमें अंशुमान नाम सूर्य का होकर कश्यप ऋषीश्वर तार्क्ष यक्ष ऋतुसेन गन्धर्व उर्वशी अप्सरा विन्दाक्षत्र राक्षस महाशंख नाग व पूस में भग नाम सूर्यका होकर सुवर्च नाम राक्षस अरिष्टनेमि गन्धर्व परण यक्ष ऋषीश्वर व करकोटक नाम नाग पूर्वचित्ती अप्सरा व माघ में पुरुष नाम सूर्य का होकर धनञ्जय नाग व वात नाम राक्षस सुषेन गन्धर्व सुरुचि यक्ष घृताची अप्सरा गौतम ऋषीश्वर व फागुन में पर्जन्य नाम सूर्यका होकर क्रतुनाम यक्ष सुवर्चा राक्षस व विश्व गन्धर्व व ऐरावत नाम सेनजिता अप्सरा सूर्य के साथ रहकर सब महीनोंमें अपना अपना काम करते हैं इतनी कथा सुनाकर सूतजीने कहा हे ऋषीश्वरो जो मनुष्य प्रातःकाल व सन्ध्यासमय सूर्य भगवान्का स्मरण करके इन सब ऋषीश्वर आदिक का नाम लेवे वह अनेक जन्म के पापों से छूटकर परम गतिको पावता है ॥

बारहवां अध्याय।

सूतजीका श्रीमद्भागवतकी सम्पूर्ण कथा कहना ॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जो कथा श्रीमद्भागवत अमृतरूपी हमने तुमको सुनाई उसके आदि से अन्त तक सब लीला व चरित्र परमेश्वरका लिखाहै पहिले व्यासजी व नारदका संवाद फिर राजा परीक्षितकी कथा जिसतरह उनको शृंगीऋषिने शापदिया था व हाल आवने शुकदेवजीका राजा परीक्षितके पास व फिर बातचीत होना नारद व ब्रह्माजी से व कथा अवतारों की व भेंट होना विदुर व उद्धव से व मुख्य ज्ञान सुनाना मैत्रेयजीका विदुर को व वर्णन करना उत्पत्ति ब्रह्माण्ड की व परमेश्वर का वाराह अवतार धरकर मारना हिरण्याक्ष का व कपिलदेव अवतार लेकर सांख्ययोग ज्ञान सिखलावना देवहूती अपनी माताको व हाल तनु त्याग करने सतीजी व यज्ञ विध्वंस होने दक्षप्रजापति का व

कथा राजा ध्रुव व पृथु व प्राचीनबर्हिष व पुरंजन व प्रियव्रतकी व हाल सातों द्वीप व सातों समुद्र व नवों खण्ड व मारना वृत्रासुर दैत्य व लेने नरसिंह अवतार व रक्षा करनी प्रह्लाद भक्त व कथा गजेन्द्रमोक्ष व लेना कच्छप अवतार वास्ते निकालने चौदहों रत्न व मथने समुद्र व राजा बलि व वामन अवतार की व हाल राजा पुरूरवा व उर्वशी अप्सरा व सूर्य-वंशी व चन्द्रवंशी व परशुराम व रामचन्द्र अवतार राजा दुष्यन्त व रानी शकुन्तला व राजा ययाति व देवयानी व यदु जिनके वंशमें श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति ने वसुदेवजी के घर अवतार धारण किया व जाना श्यामसुन्दर का गोकुल में व अनेक लीला करके सुख देना नन्द व यशोदा आदिक सब ब्रजवासियों का व फिर मथुरा में आनकर मारना राजा कंसको व युद्ध करना जरासन्ध आदिक से व बसावना द्वारकापुरी व हाल विवाहने रुक्मिणी आदिक आठों पटरानी व मारने भौमासुर व ले आवना सोलह हजार एकसौ कन्या उनके यहां से व विवाह करना अपना उनके साथ व मारना बड़े बड़े दैत्य व अधर्मी राजाओं को व कौरव व पांडवों से महाभारत कराके भार उतारना पृथ्वी का व नाश करना छप्पन करोड़ यदुवंशियों का दुर्वासा ऋषीश्वर के शापसे व चलेजाना वैकुण्ठ में हे ऋषीश्वरो हमने सम्पूर्ण कथा श्री मद्भागवत व हाल मार्कण्डेय ऋषीश्वर व कथा सूर्य भगवान् की तुमलोगों को सुनादी संसारी मनुष्यों को उचित है कि जिह्वा से आठोंपहर परमेश्वर का नाम लेकर कानों से उनकी कथा व लीला सुनें व नारायणजी के गुण व महिमा की चर्चा आपसमें रखकर थोड़ा या बहुत जहांतक बनिपड़ै हरिचरणों में ध्यान लगावें व सब जीवोंपर दया रखकर अपनी सामर्थ्यभर मनसा वाचा कर्मणा से उपकार करते रहैं मनुष्यतनु पावने का यही फल समझना चाहिये जैसा व्यासजी ने भागवतपुराण में परमे-श्वरका निर्मल यश लिखा है वैसा दूसरे पुराणों में वर्णन नहीं किया जिन शुकदेवजी महाराज की दया से हमने अमृतरूपी कथा तुमको सुनाई उन्हें बारम्बार दण्डवत् करताहूं जितना फल ब्राह्मणको चारों वेद पढ़ने से प्राप्त

होता है उतना फल एक श्रीमद्भागवत पढ़ने व सुनने में जानना चाहिये क्षत्रियको इसके पढ़ने व सुननेसे विजय व वैश्यको व्यापारमें लाभ होकर मरने उपरांत मुक्तिपदवी मिलती है व शूद्रके सब पाप छूटजाते हैं॥

तेरहवां अध्याय।

अठारहों पुराणोंका हाल॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जिन भगवान् के चरणों का ध्यान ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व उनचास मरुद्गण व कुबेर आदिक देवता व ऋषीश्वर व योगी व मुनि अपने हृदय में रखकर दिनरात उनका स्मरण व भजन करते हैं व उनके आदि व अन्तको किसी ने नहीं पाया उनको बारम्बार नमस्कार करता हूं जिन्होंने वास्ते रक्षा करने देवता व निकालने अमृतादिक चौदहों रत्नके कच्छपरूप धारण किया था उनको मेरी हजारों दण्डवत् पहुँचै हे ऋषीश्वरो अठारहों पुराणमें जितने जितने श्लोक हैं उनके हाल सुनो ब्रह्मपुराण दशहजार व पद्मपुराण पचपन हजार व विष्णुपुराण तीसहजार व शिवपुराण चौबीसहजार व श्रीमद्भागवतपुराण अठारहहजार व नारदपुराण पचीसहजार व मार्कण्डेयपुराण नव हजार व अग्निपुराण पन्द्रह हज़ार चारसौ व भविष्यपुराण चौदहहजार पांच सौ व ब्रह्मवैवर्तपुराण अठारहहजार व लिंगपुराण ग्यारहहजार व वाराहपुराण चौबीसहजार व स्कन्दपुराण इक्यासीहजार एकसौ व वामनपुराण दशहजार व कूर्मपुराण सत्रहहजार व मत्स्यपुराण चौदहहजार व गरुड़पुराण उन्नीसहजार व ब्रह्माण्डपुराण बारहहजार श्लोक हैं व श्रीमद्भागवत का सार चार श्लोक नारायणजी ने ब्रह्माजी से कहा व ब्रह्माजी ने उसका हाल नारदसे बतलाया व नारद ने व्यासजी को उपदेश किया व वेदव्यास ने अठारहहजार श्लोक में यह सब हाल विस्तारपूर्वक लिख कर भागवतपुराण उसका नाम रक्खा इस पुराणके आदि व मध्य व अन्त में सब नारायणजीका चरित्र वर्णन किया है जो लोग इस पुराणको भादों सुदी पूर्णमासी के दिन सुनहले सिंहासनपर धरकर वेद व पुराण जानने वाले ब्राह्मणों को दान करते हैं उनको परमपद मिलता है श्रीमद्भागवत

महापुराण सत्रहों पुराणों से उत्तम होकर चारों वेदों का सार इसमें लिखा है जिसतरह नदियों में गंगा व देवताओं में नारायण तपस्या करनेवालों में महादेवजी बड़े हैं उसीतरह सब पुराणों में भागवतपुराण उत्तम है इस पुराण के पढ़ने व सुनने से हमारी व तुम्हारी दोनों की गति होजावेगी जिनके नाम लेने व दण्डवत् करने से सब पाप व दुःख छूटजाते हैं उन परमेश्वर व वेदव्यास व शुकदेव महाराजको दण्डवत् करताहूं जिस तरह देवतालोग स्वर्ग में रहकर अमृत पीने से नहीं मरते उसी तरह संसार में जो लोग अमृतरूपी भागवतपुराणको सच्चे मनसे पढ़ व सुनकर उसपर विश्वास रक्खेंगे उनको संसारमें रोगादिक का दुःख न होगा व भूत प्रेत आदिक का भय छूटकर अशुभ ग्रहों का फल नहीं व्यापैगा ॥

दो० चूड़ामणसुत विमलमति गजनलाल कुमार। गो ब्राह्मण हरिचरणरत माखनलालउदार ॥

सो० विरच्यो माखनलाल श्रीमद्भाषा भागवत। सुनत कटै भवजाल अन्तसमय हरिपुर बसै ॥

जे जन परमसुजान भूली लेव सुधारि मम। बालबुद्धि अज्ञान वेद शास्त्र जानौं नहीं ॥

इति श्रीक्षत्रियवंशावतंस काशीवासी श्रीकृष्णदास मक्खनलालकृत
श्रीमद्भागवतभाषा सुखसागरे द्वादशस्कन्धः समाप्तः ॥
शुभम्भूयात् ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

पहिले उल्था इस पोथी का संवत् १९११ में श्रीकृष्णदास मक्खनलालने काशीपुरी में बनाकर छपवाया था परन्तु उस उल्था में यामिनीभाषा अधिक लिखगई थी इस कारण साधु व महात्मालोग उसे अच्छी तरह नहीं पढ़सके थे इसलिये फिर से इस पोथी को पंडित जोखूराम रहनेवाले दरयाबी व जगन्नाथप्रसाद खत्री रहनेवाले काशीजी के सम्मत करके यामिनीभाषा निकालदी व इस देशकी बोली में जो समझसके हैं लिखी ॥